।। दोसौबावन वैष्णवनकी वार्ता ।।

१-नागजीभटट

।। श्री हरिः ।।

।। श्रीकृष्णाय नमः श्रीगोपीजनवल्लभाय नमः ।।

।। श्रीगोकुलनाथजी ।।

अथ प्रथम खण्ड

अब दोसौ बावन वैष्णवनकी वार्ता श्रीगोकुलनाथजी प्रगट किये ताकौ भाव श्रीहरिरायजी कहत हैं सो लिख्यते -

भाव प्रकाश :
चौरासी वैष्णव श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके अङ्गरूप 'निर्गुण पक्ष'के मुखिया हैं. तिनकौ भाव चौरासी वैष्णवनकी वार्तामें कहि जाए हैं. उनके तीन - तीन धर्मरूप चौरासी वैष्णव राजसी, चौरासी वैष्णव तामसी (और) चौरासी वैष्णव सात्विकी इह हैं. सो ये तीनों जूथ मिलि कै दोईसौ बावन श्रीगुसांईजीके अङ्गसम्बन्धी जाननें. ये श्रीगुसांईजीके अङ्गरूप अलौकिक सर्व सामर्थ्य रूप हैं.

सो एक समै श्रीगुसांईजी अति प्रसन्नतामें श्रीरुक्मिनी बहूजीसों बातें करत हते, जो ये सगरे वैष्णव मेरे हैं, सो सगरे अङ्गकौ स्वरूप हैं. तब रुक्मिनी

बहूजीने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो - चाचा हरिवंशजी तुम्हारो कौनसो अङ्ग हैं ? तब श्रीगुसांईजीने श्रीरुक्मिनी बहूजीसों कह्यो, जो - ये चाचा हरिवंशजी मेरे नेत्रनकी स्याम पूतरीनकौ स्वरूप है.

ता पाछें एक दिन चाचा हरिवंशजीकों ठोकर लगी. सो दुःखी भए. ताही समै श्रीगुसांईजीके नेत्र दुखि आए. तब श्रीरुक्मिनी बहूजीने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो तुम्हारे नेत्र क्यों दुखत हैं ? तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो चाचा हरिवंशजीकों ठोकर लगी है सो दुःखी है, तातें हमारे नेत्र दुखत हैं. पाछें जब चाचा हरिवंशजी आछें भए तब श्रीगुसांईजीके नेत्र हू आछें व्है गए.

सो या भांति श्रीगुसांईजी आपु श्रीरुक्मिनी बहूजीकों भगवदीय वैष्णवनकौ स्वरूप जताए. तातें वैष्णवनके अपराधतें सदा डरपत रहनो. क्यों ? जो श्रीठाकुरजी अरु भगवदीयनमें कछू तारतम्य नाहीं है. सो 'पुष्टिप्रवाहमर्यादा' ग्रन्थमें श्रीआचार्यजी महाप्रभु भगवदीयकौ स्वरूप लिखे हैं. सो श्लोक -

तस्माज्जीवाः पुष्टिमार्गे भिन्ना एव न संशयः ।
भगवद्रूपसेवार्थं तत्सृष्टिर्नान्यथा भवेत् ।
स्वरूपेणावतारेण लिङ्गेन च गुणेन च ।
तारतम्यं न स्वरूपे देहे वा तत्क्रियासु वा ।।

सो पुष्टिमार्गीय जीव इह संसारके जीवन तें भिन्न हैं. यामें संशय नाहीं. भगवानकौ रूप ही हैं. भगवान्‌की सेवा ही के अर्थ जगतमें पुष्टिधर्म प्रगट करिवेकेलिए प्रगटे हैं. भगवानके स्वरूपमें, भगवानके अवतारमें भगवानके जैसें गुन हैं, भगवानके जैसी क्रिया हैं, तैसें ही भगवदीयमें लच्छन हैं. तातें भगवानमें अरु भगवदीयमें तारतम्य नाहीं है.

सो श्रीगुसांईजी आपु पूरन पुरुषोत्तम हैं. तातें ये भगवदीय हू उनके अङ्गरूप जाननें.

सो या प्रकार श्रीगुसांईजी वैष्णवनकौ स्वरूप श्रीरुक्मिनी बहूजीकों प्रत्यच्छ दिखायो. जो आगेके जीवनकों विश्वास द्दढ करिवेके तांई. तातें भगवदीय वैष्रवनकी अनेक प्रकारकी क्रिया दीसे तोहू और बात सर्वथा विचारनी नाहीं.

अब श्रीगुसांईजीके सेवक दोसौ बावन वैष्णवनकी वार्तानमें गूढ़ आसय श्रीगोकुलनाथजी कहे हैं, तहां श्रीहरिरायजी कछूक भाव प्रगट करते हैं, पुष्टिमार्गीय वैष्णवनके जनाईवेके अर्थ.

नागजी भटट

अब प्रथम सेवक सो श्रीगुसांईजीके नागजीभटट, जिनको श्रीगुसांईजी आपु 'नागिया' कहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहते हैं

भाव प्रकाश :
सो श्रीगुसांईजी नागजी भटटकों 'नागयि' कहते. सो यातें, जो नागिया सो नाग. सो जैसें शेषनागके हृदयपै विष्णु हैं, सयन करत हैं, तैसें श्रीगुसांईजी नागजी भटटके हृदयमें सदा सर्वदा स्थिति करते हैं. तहां यद सन्देह होई, जो श्रीगुसांईजी आपु भक्तवत्सल हैं. सो तो सब ही भक्तनके हृदयमें बिराजत हैं, तातें नागजी भटटकों (ही) नाग क्यों कहे ? तहां कहत हैं, जो श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी दसम स्कन्धकी सुबोधिनीजीमें मङ्गलाचरनकी प्रथम कारिका किये हैं. सो कारिका

''नमामि हृदये शेषे लीलाक्षीराब्धिशायिनम् ।
लक्ष्मीसहस्त्रलीलाभिः सेव्यमानं कलानिधिम् ।।''

सो यामें श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी कहत हैं, जो सहस्त्र लच्छमी करि लीलानतें सेवित अरु कलानके निधि ऐसे जो श्रीपुरुषोत्तम हैं, सो लीलारूप छीरसमुद्रमें मेरे हृदयरूप शेष पर बिराजित हैं. सो ता भांति श्रीगुसांईजी पूरन पुरुषोत्तम हैं, सो सकल लीला सहित नागजी भटटके हृदयमें सदा स्थिति करत हैं. या भाव तें श्रीगुसांईजी नागजी भटटको 'नागिया' कहते.

दूसरो यहू अभिप्राय है, जो नाग (जा भांति) तामस हैं, तैसें नागजी भटट हू तामस भक्त हैं. सो तामस भक्तकों श्रीठाकुरजीके प्रगट स्वरूप प्रति आसक्ति बोहोत रहत हैं. तैसे ही नागजी भटटकों हू श्रीगुसांईजीके प्रगट स्वरूपमें अधिक प्रीति है. सो क्यों जानिए ? जो एक समै नागजी भटट श्रीगोवर्द्धनधरकी सेवामें रहे. तोहू नागजी भटटकों श्रीगुसांईजीके प्रगट स्वरूपके दरसनकी इच्छा रही आवै. तातें नागजी भटटने श्रीगुसांईजीकों एक श्लोक अडेल लिखि पठायो. सो श्लोक -

''सरसि कुशेशयमप्यास्वादितुमागच्छतोऽलिनो मागे ।
यदि कनक - कमलपाने नासीत्तोषः किमन्येन ।।''

इह श्लोकमें नागजी भटटने श्रीगुसांईजीकों जल - कमल कहे हैं. अरु श्रीगोवर्द्धनधरकों कनक - कमल कहे हैं. यातें यों जानिए, जो नागजी भटटकी श्रीगुसांईजीके प्रगट स्वरूपमें अधिक प्रीति है.

और नागजी भटटकौ अलौकिक स्वरूप हैं, सो 'पद्मावती'कौ प्रागट्य है. ये ललिताजीतें प्रगटी हैं. सो उनके तामस भावकौ स्वरूप हैं. सो ललिता पद्मावती - स्वरूपसों श्रीचन्द्रावलीजीकी सेवामें सदा तत्पर रहत हैं. सो यातें, जो ललिताजीकौ प्रागट्य श्रीचन्द्रावलीजी तें हैं. तातें ललिता श्रीस्वामिनीजी और श्रीचन्द्रावलीजी दोऊनकी आज्ञाकारिनी सखी हैं. दोऊनकी सेवामें सदा तत्पर रहत हैं. क्यों ? जो ये दोऊ मुख्य स्वामिनी हैं. श्रीस्वामिनीजू आलम्बन भावरूप हैं, अरु श्रीचन्द्रावलीजू उद्दीपन भावकौ स्वरूप हैं. सो या प्रकार दोनों स्वामिनी ठाकुरके दोनों और बिराजति हैं. सो जहां दो स्वामिनी होई तहां यह भाव जाननो. सो श्रीस्वामिनीजी सदा श्रीठाकुरजीके वाम भाग बिराजति हैं अरु श्रीचन्द्रावलीजी श्रीठाकुरजीके सदा दच्छिन और विराजति हैं. यातें ये दोऊ मुख्य

स्वामिनी हैं. उनमें भेद नाहीं.

सो पद्मावती श्रीचन्द्रावलीजीकी अन्तरङ्ग सखी हैं. सो उहां लीलामें श्रीचन्द्रावलीजीकों सुन्दर सामग्री अङ्गीकार करावति हैं. तैसें ही यहां नागजी भटट श्रीगुसांईजीकों उत्तम सामग्री अङ्गीकार करायवे में सदा तत्पर रहत हैं. सो बात आम्बानके प्रसङ्गनमें प्रसिद्ध है अरु चीरके प्रसङ्गमें हू है.

या प्रकार नागजी भटट श्रीगुसांईजीके स्वरूपमें सदा मगन रहत हैं. तातें न्यारी श्रीठाकुरजीकी सेवा नाहीं पधराई. श्रीगुसांईजी पूरन पुरुषोत्तम हैं. यह ''मानसी सा परा मता'' मानसी सेवाके अधिकारी हैं. सो लीलारसमें सदा मगन रहत हैं.

ये नागजी भटट गोधरामें एक साठोदरा ब्राह्मनके (यहां) प्रगटे. सो ये चार भाई हे. तामें नागजी सबतें छोटे हैं. सो ये पढ़े बहोत. पाछें जब पिता मर्यो तब ये चारौं भाई न्यारे - न्यारे व्हे गए. सो पिता गामकौ देसाई हतो. सो वाके पास द्रव्य बोहोत हुतो. सो उन चारौंननें बांटि लियो. ता पाछें नागजीकौ ब्याह भयो. सो स्त्री दैवी मिली. पाछें कछूक दिनमें नागजी भटटकों एक बेटी भई. वाके तोरे दिन पाछें गाममें रोग फेल्यो. सो नागजी भटटके तीनों भाई मरे. पाछें राजकौ उपद्रव भयो, सो नागजी भटटकौ सब द्रव्य हू गयो. तब नागजी भटटकों बहोत दुःख भयो. सो वा गाममें श्रीआचार्यजीके सेवक राना व्यास रहत हुते. सो नागजी भटट राना व्यासके पास आई अपनो सब दुःख कह्यो. पाछें बोहोत विलाप करन लागे. तब राना व्यासने कह्यो, जो तुम अडेलमें आचार्यजी बिराजत हैं, उनकी शरन जाउ. वे ईश्वर हैं. सो उनके शरन जायवे तें तुमकों बोहोत सुख होईगो. इह लोक परलोक दोनोंमें सुख पाओगे. मैं हू श्रीआचार्यजीकौ सेवक भयो हूं. सो सुनिकै नागजी भटट गोधरा तें अडेलकों चले. सो कछूक दिनमें अडेल आई पहुंचे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वे नागजी भटट प्रथम श्रीआचार्यजीके पास नाम पाइवेकों आए. तब श्रीआचार्यजी नागजी भटटसों यह आज्ञा किये, जो नागजी ! तुम लरिका पास जाई कै नाम पाओ.

भाव प्रकाश :

सो काहेतें ? जो ये श्रीगुसांईजीके अङ्ग सम्बन्धी हैं. सो श्रीगुसांईजीमें इनकी अधिक प्रीति होइगी. तातें श्रीआचार्यजी आज्ञा किये ''तुम लरिका पास जाई कै नाम पाओ.'' और दूसरो अभिप्राय यहू है, जो अब श्रीआचार्यजीकों सन्यास ग्रहन करनो है, और अपुने बंस द्वारा आगें मार्गं (हू) चलावनो है. ताही तें श्रीठाकुरजीने ब्याह करिवेकी आज्ञा दीनी है. यों विचारीकै श्रीआचार्यजीने नागजी भटटकों श्रीगुसांईजीके पास पठाए. तहां यह सन्देह होइ, जो श्रीआचार्यजीके बडे पुत्र तो श्रीगोपीनाथजी हैं. सो उनके पास नागजी भटटकों क्यों नांय पठाए ? तहां कहत हैं, जो श्रीगोपीनाथजी मर्यादा बलदेवजीकौ अवतार हैं. सो इनकी रुचि हू साधन करिवेमें बोहोत है. और आगें पुष्टिमार्गकौ उपदेश श्रीगुसांईजी करेंगे. सो पुष्टिमार्गके विस्तार करनहारे आप ही हैं. याही तें श्रीआचार्यजीने पुष्टिमार्गके जीव श्रीगुसांईजीकों सौंपे हैं. सो पुष्टिमार्गके सिद्धान्तके मुख्य पात्र नागजी भटट हैं. तातें श्रीआचार्यजीने नागजी भटटको श्रीगुसांईजीके पास पठाए. सो नागजी भटट श्रीगुसांईजीके प्रथम सेवक भए. जैसें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके प्रथम सेवक दामोदरदास हरसानी, तैसें ही श्रीगुसांईजीके प्रथम सेवक नागजी भटट हैं.

सो नागजी भटट श्रीगुसांईजीके पास आई कै बिनती कियो तब श्रीगुसांईजी कृपा करिकै नागजीकों नाम सुनाए. पाछें ब्रह्मसम्बन्ध कराए. सो वे नागजी भटट श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय भए. पाछें नागजी श्रीगुसांईजीके पास कछूक दिन रहि कै अपुने घर आए. ता पाछें केतेक दिनकों नागजीकी बेटीकौ विवाह आयो. सो खंभाइचके वैष्णवन सुन्यो. सो वे वैष्णवन श्रीगुसांईजीके सेवक हुते. तिन (ने) आपुसमें कछू द्रव्य भेलौ करि ताकी हुंडी कराइ, एक पत्रमें बीडि, एक कासिद नागजी पास उन वैष्णवन(ने) खंभाइच तें गोधरा पठायो. ता पत्रमें वैष्णवन(ने) नागजीकों लिख्यो, जो यह द्रव्य तुम्हारी बेटीके विवाहकों पठायो है. सो तुम आछी भांति विवाह करियो. सो वह कासिद पत्र लै कै नागजीके घर गोधरामें आयो. सो वह पत्र नागजीकों कासिदने दीनो. सो पत्र बांचिकै नागजीने अपने मनमें यह विचार कीनो, जो यह वैष्णवनको द्रव्य विवाहमें खरचनो आछौ नाहीं. यह अपनो धर्म न होइ. सो बेटी तो काहूं रङ्क ब्राह्मणकों देउंगो. और यह द्रव्य तो श्रीगुसांईजीकौ है. सो श्रीगुसांईजीकों पहोंचे तो आछी बात है.

भाव प्रकाश :

काहेतें, जो नागजी गृहस्थ हैं. सो दूसरेकौ द्रव्य कैसें लेई ? और वैष्णवनकौ द्रव्यतो प्रभुनकौ है. सो नागजी लौकिक कारजमें कैसें खरचे ?

पाछें वा कासिदकों तो हुंडीकी पहोंच लिखिकै, पाछें वाकों खंभाइचकों बिदा कर्यो. और नागजी वा हुंडीकी मोहौर सराफकी दुकानतें खरीदिकै अपने घर आए. पाछें एक बांसकी लाठी पोली लै कै तामें मोहौर सब भरी. और नागजी आपु कापडीकौ भेख करि वह लाठी हाथमें लै कै श्रीगुसांईजीके पास श्रीगोकुलकों गोधरासों श्रीगुसांईजीके दर्शनार्थ चले. तब श्रीगुसांईजीने जान्यो, जो नागजी अपने घरतें मेरे दरसनकों आवत हैं. सो मारगमें एक वैष्णव डोकरी एक गाममें रहति हती. सो वह डोकरी श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी हती. तासों श्रीगुसांईजी स्वप्नमें जनाए, जो मेरो अनन्य सेवक नागजी भटट कापडीके रुपसों आवत है. तिनकों तीन दिन अपुने घर पाहुने राखियो. और नागजीकों सखड़ी महाप्रसाद लिवाइयो. और वा दिन रात्रिकों श्रीगुसांईजी नागजीकों हू स्वप्नमें कहे, जो तू काल्हि अमूक गाममें अमूकी बाईके घर तीनि दिन रहियो. सखड़ी महाप्रसाद लीजियो. सो यह डोकरी सवारे उठि सेवा करि रसोई करिकै श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो. पाछें समै भयो तब भोग सराइ अनोसर करि महाप्रसाद ढांकि कै आपु बाहिर आई कै ठाडी रही. पाछें नागजी भटट मध्याह्नके समै वा गामके बाहिर आइकै मार्गमें (ठाढ़े भए). सो नागजीकों चिन्ता भई. जो बिनु बुलाए बिनु जानें कौनके घर जइए ? और वह बाई मारगमें ठाढ़ी - ठाढ़ी चिन्ता करे, जो अज हू वे वैष्णव आए नाहीं ? या प्रकार दोउनकों चिन्ता भई. इतनेमें वह डोकरीने नागजीकों दूरि तें आवत देखे. सो वह डोकरी भक्तिभाव सों प्रेमसंयुक्त नागजी भटटके साम्हें गई. बोहोत स्नेहसों नागजीसों श्रीकृष्ण - स्मरन या डोकरीने कर्यो. पाछें नागजी भटटसों रात्रिके सब समाचार कहे. जो ऐसी आज्ञा श्रीगुसांईजीकी है. तातें तुम कृपा करि कै मेरे घरमें चलो. ऐसे बोहोत आदरसों न्यौति, अपने घर वह डोकरी नागजीकों पधराय लाई. तब नागजी अपने मनमें विचारी, जो श्रीगुसांईजी आपकी आज्ञा प्रसाद लेवेकी भई है, सो तो डोकरी यही है. परन्तु याके हाथकी सखड़ी कैसें लेवेमें आवे ?

भाव प्रकाश :
काहेतें, ये गौड ब्राह्मन है. सो ज्ञाति ब्यौहार मनमें आयो. परि ये लीलामें श्रीचन्द्रावलीजीकी सखी हैं. ‘बहूला’ इनकौ नाम है. इनकौ सुभाव सरल बोहोत है. तातें श्रीचन्द्रावलीजीकों अति प्रिय हैं. सो नागजीकों अज हू या डोकरीके स्वरूपकौ ज्ञान नाहीं है. सो इनके हृदयके भावकी (हू) खबरि नाहीं. तातें

सन्देह कियो.

तब इतने ही में वह डोकरीने नागजी भटटसों कह्यो, जे उठो स्नान करो. तब नागजीने वा डोकरीसों कह्यो, जो सखड़ी महाप्रसाद तो मैं नाहीं लेहूंगो. तब डोकरीने कही, जो तुम्हारी इच्छा होइ सो लीजो. बेगि नहाओ तो सही. तब नागजी नहायकै आय बैठे. तब वा डोकरीने नागजीकों बालभोगकौ महाप्रसाद अनसखड़ी तथा दूधकी (सामग्री) आगें धरी. सो महाप्रसाद नागजीने लियो. तब नागजीने कही, जो अब हम जाइंगे. तब डोकरीने कही, आज्ञा तीन दिनकी है. तब नागजी तहां तीन दिन लों महाप्रसाद अनसखड़ी लियो. पाछें नागजी वा बाईसों बिदा होइकै श्रीगुसांईजीके दरसनकों श्रीगोकुल चले.

भाव प्रकाश :
यहां यह सन्देह होइ, जो तीन दिनकी आज्ञा क्यों भई ? तहां कहत हैं, जो नागजी भटटकों अभी वैष्णवके स्वरूपकौ आछी भांति ज्ञान भयो नाहीं है. सो वा डोकरीके सङ्ग करि नागजीकों वैष्णवनके हृदयकौ अगाध भाव जतावनो है. तातें श्रीगुसांईजी नागजी भटटकों तीन दिन वा डोकरीके उहां रहिवेकी आज्ञा कीनी.

और सखड़ी महाप्रसाद लैनकों कह्यो, ताकौ कारन यह, जो सखड़ी है सो पूरन सनेहकौ स्वरूप है. सो जाकों पूरन सनेह वैष्णव पर होंइ सो वैष्णवकों सखड़ी महाप्रसाद लिवावे. सो वा डोकरीकौ पूरन सनेह वैष्णव पर है. तासों वा डोकरी द्वारा नागजीकों यह दान श्रीगुसांईजी आपु (कों) करनो है. तातें सखड़ी महाप्रसाद लैनकों कह्यो. और तीन दिन महाप्रसाद लै तो दृढ होंइ, यह हू अभिप्राय है.

और दूसरो कारन यह है, जो वा डोकरीके भावसों श्रीगुसांईजी नागजी भटटकों तीन दिन ऊहां सखड़ी महाप्रसाद लैनकों कह्यो. तामें वा डोकरीके भावकौ हू पोषन श्रीगुसांईजी आपु किये. परि नागजीकों या बातकौ ज्ञान अज हू भयो नाहीं है. तातें तीनों दिन अनसखड़ी महाप्रसाद लियो.

सो जा दिन नागजी श्रीगोकुलकों आई पहोंचत हुते, तासों घरी चारि पहिले श्रीगुसांईजी आप स्नान करत समै सब वैष्णवन सों कहे, जो मेरो नाग आज आयो चहिए. पाछें श्रीगुसांईजी स्नान करि धोती उपरेना पहरि अपरसकी गादी पर बिराजिकै शङ्खचक्र धरत हते. ताही समै नागजी भटट आइकै श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् कियो. तब श्रीगुसांईजीने पूछ्यो, जो नागिया ! तू कब आयो ? तब नागजीने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो राज ! अब ही आयो. तब फेरि नागजीसों श्रीगुसांईजीने पूछ्यो, जो नागिया ! तू मारगमें कौन - कौन वैष्णवके घर रह्यो ? (और) कहा कहा प्रसाद लियो ? तब नागजीने कही, महाराज ! फलानी डोकरीके घर तीन दिन लों रह्यो. और अनसखड़ी महाप्रसाद लियो. यह सुनत ही श्रीगुसांईजी कहे, जो मेरी अन्तरङ्गिनी सेवकिनीके घर सखड़ी महाप्रसाद क्यों नाहीं लियो ? ऐसें कहि श्रीगुसांईजी पीठि दे बैठें.

भाव प्रकाश :
सो यातें, जो दृढ भावकौ दान करिवके लिये (तो) तोकों वा डोकरीके ऊहां तीन दिन लों सखड़ी महाप्रसाद लैनकी आज्ञा कीनी. तोहू (तैनें) सन्देह कियो ? और वा डोकरीने (हू) अजहू सखड़ी महाप्रसाद लियो नाहीं है. सोउ अपराध भयो. सो श्रीगुसांईजी आप अप्रसन्न भए. तातें पीठि दे बैठें.

तब नागजी भटट तत्काल ही वह मोहौरनकी लाठी भण्डारमें धरिकै आपु वा डोकरीके घर जाई पहोंचे. सो डोकरीने अनसखड़ी महाप्रसाद धर्यो. तब नागजीने कह्यो, जो मैं सखड़ी महाप्रसाद लैन आयो हूं, सो सखड़ी धरो. तब वह डोकरी बोहोत प्रसन्न होइकै सखड़ी महाप्रसाद धर्यो. सो तीन दिनलों नागजी सखड़ी महाप्रसाद लै, वा डोकरीसों बिदा होंइ पाछें फेरि श्रीगोकुल चले. सो कछूक दिनमें आयकै श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् किये. तब नागजीसों श्रीगुसांईजीने पूछ्यो, जो तोकों हम इतने दिन बीचमें देख्यो नाहीं सो कहां गयो हो ? तब नागजीने बिनती करी, जो महाराज ! वा डोकरीके घर सखड़ी महाप्रसाद लैन गयो हो. सो तीन दिन सखड़ी महाप्रसाद लैकै अबही आवत हों. ये नागजीके वचन सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसपन्न भए.

भाव प्रकाश :

सो काहेतें, जो अब नागजीने वैष्णवकौ स्वरूप जान्यो. तातें श्रीगुसांईजी आप प्रसन्न भए.

पाछें नागजी महिना तीन श्रीगुसांईजीके पास रहे. (और) यह मनमें विचारे, जो बेटीके विवाहकी लगन जब बीति चुकेगी तब जाउंगो. अब ही जाउं तो मोकों बेटीकौ ब्याह करनो परे. यह विचारीकै रहे.

भाव प्रकाश :
सो यातें, जो नागजीकी प्रभुनमें आसक्ति है. सो आसक्तिवारेनकों गृहमें अरुचि होत है. सो श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी 'भक्तिवर्द्धिनी' ग्रन्थमें लिखे हैं. सो श्लोक

स्नेहाद्रागविनाशः स्यादासक्त्या स्याद्गृहारुचिः ।
यातें नागजी भटट घर गए नाहीं. जातें तो लौकिक करनो परतो.

पाछें कछूक दिन में वा भण्डारीने वह लाठी उठाई. तब भारी बोहोत ही देखी. सो लाठी लैकै श्रीगुसांईजीके पास आई बिनती करी, जो महाराज ! यह लाठी भारी बोहोत है. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो या लाठीकों फारि कै दोइ टूक करो. तब भण्डारीने लाठीकों फारी. सो मोहौर निकसी. तब श्रीगुसांईजी यह आज्ञा किये, जो यह मेरे नागकौ काम है. सो वे नागजी भटट श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते.

और नागजी भटट गोधराके देसाई हते. सो नागजीकी बेटीके विवाहकौ दिन बोहोत निकट आयो. तब भटयानीने कही, जो मेरे कछू द्रव्य नाहीं है. तातें एक चूडा और पानेतर, रोरी, लै, मैं विवाह बेटीकौ करि देउंगी.

भाव प्रकाश :
सो भटयानी हू अड़ेल जाई श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी भई है. तातें उनमें भगवद्धर्म दृढ है. सो दुःखमें धीरज छोर्यो नाहीं, (अरु) लोकलज्जा हू कीनी नाहीं.

और भटयानी लीलामें 'कन्दुकी' सखी है, श्रीयमुनाजीके यूथकी. सो इनकौ 'पद्मावती' सों बोहोत मिलाप रहत है. तातें यहां हू नागजी भटटकौ सम्बन्ध दृढ है. सो दोउनकौ एक रस रूप भाव है. तातें भटयानी नागजीके अभिप्रायकों जानि या प्रकार बेटीके विवाहकौ निश्चय कियो.

सो यह बात वैष्णवनने सुनी. सो मिलिकै सब वैष्णव गामके हाकिमके पास जाइकै सब समाचार कहे. जो नागजी भटट तो घर नाहीं हैं. भटयानी एक चूडा, हरदी, रोरी, पानेतर सों विवाह बेटीकौ करत है. यह सुनिकै गामके हाकिमने कही, जो नागजी भटटकी बेटीकौ ब्याह ऐसें क्यों होई ? पाछें वह गामके हाकिमने जो कछू विवाहको सामान हतो सो सिद्ध करिकै नागजीके घर भटयानी पास पठाइ दियो. तब नागजीकी स्त्रीने भली भांतिसों भले गृहस्थके घर अपनी बेटीकौ विवाह कियो. द्रव्य विवाहमें बोहोत लगायो. पठावनी, पहरावनी, ब्राह्मन - भोजन सब भली भांतिसों कियो. पाछें केतेक दिन पाछें नागजी भटट श्रीगुसांईजीके पास तें बिदा होइकै अपने घर आए. तब यह समाचार बेटीके ब्याहकौ प्रकार नागजीकी स्त्रीने नागजीसों कह्यो. सो सुनिकै नागजी कहे, भगवद् इच्छा, भई सो आछौ. लौकिक द्रव्य लौकिक में लग्यो. वैष्णवनकौ अलौकिक द्रव्य हतो. तातें मैं बेटीके ब्याहमें कैसें लगाउं ? पाछें यह सब समाचार खंभाइचके वैष्णव सुनिकै नागजीकी सराहना करन लागे. सो वे नागजी भटट श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते.

भाव प्रकाश :
या वार्तामें यह सिद्धान्त भयो, जो वैष्णवकों अलौकिक द्रव्य लौकिकमें सर्वथा खरचनो नाहीं. जो खरचे तो बहिर्मुख होंइ. तहां यह सन्देह होंई, जो गृहस्थकों विवाहादिक कार्यमें द्रव्य खरचे बिना कैसें चले ? तहां कहत हैं, जो विवाहादिकमें सेवाकौ सम्बन्ध विचारिकै आवश्यक खर्च प्रभुनसों बिनती करिकै करनो. प्रतिष्ठार्थ न करें. कदाचित् लोक निर्वाहार्थ खर्च करनो परे तोऊ सेवामें चित्त विक्षिप्त न होंइ यों समझ कै करें. सोऊ प्रभुनकी आज्ञा मांगिकै. दूसरो यहू

जतायो, जो भक्त अनन्य व्है कै प्रभुनकी सेवा करत है, उनकौ सब कार्य श्रीठाकुरजी आप करत हैं. सो नवम अध्यायमें भगवद्गीतामें श्रीठाकुरजीके बचन हैं. सो श्लोक

''अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते ।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम् ।''

तातें वैष्णवकों अनन्य व्है भगवदसेवामें मन लगावनो. यह उत्तम पक्ष है.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
और नागजी भटट गोधराके देसाई हते. सो हाकिमने नागजीकों बुलाइकै कह्यो, जो तुम राजनगर जाओ, देसाधिपतिके पास जाइकै मेरी जागीरकौ पटटा बढाइ ल्याओ. पाछें हाकिमने दोइसैं रुपैया दिये, जो कामदारनकों उठे सो दीजो. तब नागजी दोइसैं रुपैया लै कै एक मनुष्य सङ्ग लै कै गोधरासों चले. सो राजनगरमें आए, कपडा पहरि घोडापै असवार होइ राजनगरके बजारमें निकसे. सो तिरपोलियाके पास जब आए तहां चीर एक भारी मोलकौ बिकाऊ आयो. सो देखिकै नागजी बिचारे, जो यह चीर बोहोत सुन्दर है. श्रीगुसांईजीके पास पहुंचे तो आछौ है. पाछें नागजीने वा चीरकौ मोल कियो. सो वह चीरवारो दोइसैं रुपैया मांग्यौ. तब नागजीने दोइसैं रुपैया वाकों दै कै वह चीर लियो. पाछें फिरिकै अपने डेरा आए.

भावप्रकाश :
यामें यह सिद्धान्त जतायो, जो प्रभु उत्तम वस्तूके भोक्ता हैं. तातें जहां कछू उत्तम पदार्थ देखिए तहांतें खरीदिए. (अरु) प्रभुनकों अङ्गीकार कराइए. और कदाचित् अपनी सामर्थ्य (वा वस्तूकों खरीदवेकी) न होंइ तो (ऊ) मानसी करिए. सो मानसीमें श्रीप्रभुजीकों धराइए.

जैसे कुम्भनदासजीने आम्बानकों मानसीमें धराए. यह सनेहकौ लच्छन है.

पाछें वा चीरकों बांसकी भोंगलीमें धरिकै आपु वैरागी रुप धरि चाकरकों डेरामें राखिकै वासों कहै. जो जहां तांई मैं नाहीं आऊं तहां तांई तू निकसियो मति, घरमें रहियो. ऐसें कहि नागजी राजनगरतें श्रीगोकुलकों चले. सो रात्रि दिन चले. सो कछूक दिनमें श्रीगोकुल आई पहोंचे. ताही समै प्रथम श्रीगुसांईजी वैष्णवनसों कहे, जो आजु मेरो नाग आयो चहिए. इतनो श्रीमुख सों श्रीगुसांईजी कहे. ताही समै नागजी आई कै श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् कियो. तब श्रीगुसांईजी पूछे, नागिया ! तू कैसें आयो ? तब नागजीने बिनती करी, जो महाराज ! आपके दरसनकों बोहोत दिन भए हते, सो दर्शनार्थ आयो हूं. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा करें, जे स्नान करिकै झारी लै कै भीतर जाई महाप्रसाद लेऊ. तब नागजी स्नान करिकै झारी लै कै भीतर चीर लिये ही गए. तब नागजीके मनमें यह मनोरथ भयो, जो माताजी श्रीरुक्मिनी बहूजी यह चीर पहरिकै श्रीगुसांईजी पास पधारें, तब मैं जुगल स्वरूपके दरसन करि कै ताही समै राजनगरकों उठि जाऊं. ऐसो मनोरथ नागजी अपने मनमें करिकै भीतर महाप्रसाद लैन गए. तब श्रीरुक्मिनी बहूजी महाप्रसादकी पातरि अपने श्रीहस्तमें लै कै नागजीकों धरनकों आई. तब नागजीने दण्डवत् करिकै बिनती करी, जो महाराज ! यह चीर पहरि आपु प्रभु पास सिज्या पर पधारो. सो मैं दरसन पाउं. तब श्रीरुक्मिनि बहूजीने नागजी सों कही, जो यह चीर पहिरे देखिकै प्रभु मोसों खीझेंगे. जो ऐसो परम सुन्दर चीर तुम क्यों पहिर्यो ?

भाव प्रकाश :
सो काहेतें, जो यह उत्तम चीर सो तो श्रीस्वामिनीजीके अङ्गीकार योग्य है. सो श्रीस्वामिनीजीके बिनु धराए कैसें पहिर्यो.

तब नागजीने माताजीकौ हठ जानिकै श्रीरुक्मिनि बहूजीकों श्रीगुसांईजीकी सोंह दिखाई. और बोहोत बिनती करि कै नागजी कहे, जो यह चीर (तो) पहिर्यो चहिए. तब नागजीके आग्रहतें वह चीर खवासिनीकों सोंपाए.

भाव प्रकाश :
काहेतें, यह मर्यादा है. जो ठाकुरजीकी वस्तू होंइ सो अपने हाथमें लै. (और यह तो) अपने पहिरवेकी है तातें श्रीरुक्मिनी बहूजी खवासिनीकों आज्ञा किये.

तब खवासिनी वह चीर उठाइ पास राख्यो. पाछें नागजी महाप्रसाद लैन बैठे. सो महाप्रसाद लै कै नागजी श्रीगुसांईजीके पास आई बैठे. तब श्रीगुसांईजी नागजी सों पूछे, जो तेरो आवनो कैसें भयो ? तब नागजीने बिनती कीनी, जो महाराज ! आपके दरसन किये बोहोत दिन भए हते, सो आपुकी कृपातें पाए. अब मैं रात्रिकों जाउंगो. जब आपु पोढिवेकों पधारोगे तब मैं उठि जाउंगो. पाछें श्रीगुसांईजी सब वैष्णवनकों बिदा करि आपु सिज्या पर पोढिवेकों पधारे. तब नागजीने श्रीरुक्मिनी बहूजी पास आइकै बिनति करी, जो महाराज ! आप उह चीरकों अङ्गीकार करो. तब नागजीके हठतें श्रीरुक्मिनी बहूजी वा चीरकों पहिरे. पाछें श्रीरुक्मिनीजी श्रीगुसांईजीके पास सिज्या पर पधारे. तब नागजीकों श्रीगुसांईजी जुगल स्वरूपके दरसन दिये. सो नागजी या प्रकार दरसन करि कै दण्डवत् प्रभुनकों करि ता ठौर तें आपु ही बिदा होइकै राजनगरकों उठि चले. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीरुक्मिनी बहूजीसों पूछे, जो यह चीर कौन लायो है ? तब श्रीरुक्मिनी बहूजी श्रीगुसांईजी आगें कह्यो, जो यह चीर नागजी लै आयो है. तब श्रीगुसांईजी श्रीरुक्मिनी बहूजीसों कहे, जो यह चीर तो स्वामिनीजीके लाइक हतो. सो तुमने ऐसो सुन्दर चीर क्यों पहिर्यो ? तब श्रीरुक्मिनीजी डरपि कै श्रीगुसांईजीसों कहे, जो यह चीर तो मैं नाहीं पहिरत हती. परन्तु नागजीने तुम्हारी सपत दिवाई. तब मैं यह चीरकों पहिर्यो है. यह सुनिकैं श्रीगुसांईजी प्रसन्न होइकै चुप होइ रहे. पाछें आपु श्रीमुखतें यह बचन कहे, जो मेरो नागजी ऐसोई है. परन्तु अब रह्यो न होइगो. दरसन करि कै गयो होइगो. सो नागजी अर्द्धरात्रिके समै श्रीगुसांईजीके द्वारकों दण्डवत् करि कै तहां तें चले. सो कछूक दिनमें राजनगर आए. पाछें देसाधिपति सों मिलि कै गोधराके हाकिमकौ पटटा बढाइ कै गोधरामें आए. सो बिनु पैसा खर्चे ही पटटा बढाइ ल्याये. पाछें वह गोधराके हाकिमकों वह जागीरकौ पटटा नागजीने दीनो. तब वह हाकिम नागजीके उपर बोहोत ही प्रसन्न भयो. पाछें एक सिरोपाव आछौ वा हाकिमने नागजीकों दीनो. सो सिरोपाव पहरिकै नागजी अपने घर आए. वे नागजी श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते.

वार्ता प्रसङ्ग ३ :

और एक समै श्रीगुसांईजी द्वारिकाकों पधारे. तब तहां श्रीरनछोरजीके दरसन करिकै बिदा होइकै द्वारिकाके बाहिर आए. श्रीरामजीकौ श्रीलछ्मनजीकौ मन्दिर हतो ता ठौर आपु ठाढ़े रहे. इतनेमें नागजी आम लै कै तहां आए. सो एक टोकरामें दोइसैं आम श्रीगुसांईजीके आगें धरि भेंट करि दण्डवत् किये. तब श्रीगुसांईजी आम बोहोत सुन्दर देखिकै आज्ञा किये, जो ये आम श्रीरनछोरजीकों समर्पि आउ. और तू दरसन हू श्रीरनछोरजीके नाहीं किये है सो करत आईयो. और क्षौर करवाइ कै गोमती स्नान करिकै मेरे पास आईयो. तब नागजीने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो राज ! मेरे द्वारिका सों कहा काज है ? मोकों तो आपके दरसन भए इतने सर्व मनोरथ पूरन भए. यह सुनिकै श्रीगुसांईजी फेरि नागजी सों कहे, जो ऐसें न करिए. तू आम श्रीरनछोरजीके यहां दै कै दरसन करि आउ. जब तांई तू दरसन करिकै न आवेगो तब तांई हम तिहारे लिये इहां बैठें हैं. तू आवेगो तब हम यहां तें चलेंगे. यह सुनिकै श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मानिकै नागजी श्रीरनछोरजीके दरसनकों गए. तहां श्रीरनछोरजीके दरसन करि नागजी आम समर्पि, आप क्षौर करवाइ, गोमतीमें स्नान करि, श्रीरनछोरजी पास बिदा हौन गए. सो नागजी मन्दिरमें आई कै देखें तो श्रीगुसांईजी श्रीरनछोरजीकों बीरी अरोगावत हैं. और श्रीरनछोरजी श्रीगुसांईजीकों अरोगावत हैं. सो दरसन करिकै नागजी अपने मनमें बोहोत प्रसन्न भए. पाछें श्रीरनछोरजीसों बिदा होइकै चले. सो श्रीरामलछ्मनजीके मन्दिरमें जाई कै नागजीने श्रीगुसांईजीको दण्डवत् करि यह बिनती करी, जो महाराज ! मैं आपकी आज्ञातें श्रीरनछोरजीके दरसनकों गयो. सो मोकों सब सुखकी प्राप्ति भई. वा ठौर श्रीरनछोरजीके दरसन भए. और आपके दरसन हू भए. सो मोकों बोहोत सुख भयो. तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न होइकै यह बचन श्रीमुखतें कहे, जो ये श्रीरनछोरजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके माने हैं. तातें या ठौर मेरो सम्बन्ध है.

भावप्रकाश :

याकौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णवकों तीर्थ आदिमें जानो सो श्रीआचार्यजीकौ सम्बन्ध बिचारिकै जानो. माहात्म्य सों नहीं जानो. माहात्म्य सों जांइ तो अन्याश्रय होइ. श्रीआचार्यजीने तीन बेर पृथ्वी परिक्रमा करि सब तीर्थनकों सनाथ किये हैं. तातें वैष्णवकों श्रीआचार्यजीकौ सम्बन्ध विचारीकै तीर्थ आदि करनो. या भाव तें नागजीकों श्रीगुसांईजी क्षौर करवाइ कै गोमती स्नानकी आज्ञा किये. और श्रीरनछोरजी तो श्रीआचार्यजीके माने हैं, तातें वहां अवश्य जानो. याही भावसों

श्रीगुसांईजी हू बेर - बेर द्वारिका पधारते. सो श्रीआचार्यजीकौ सम्बन्ध विचारीकै.

पाछें नागजीकों सङ्ग लै कै श्रीगुसांईजी वा ठौर तें चले. सो 'गागासादी' गांव है, तहां आई कै डेरा किये. पाछें श्रीगुसांईजी तो आपु स्नान करिकै रसोईमें पधारे. ता पाछें नागजी थूवरके बनमें गए. ता बनमें प्रथम आम छिपाइ गए हते. सो चारसैं आम लाइकै श्रीगुसांईजीके आगें नागजीने धरे. तब श्रीगुसांईजी नागजीसों कहे, जो ये आम हम कैसें लैइ ? तू सब आम वहां श्रीरनछोरजीके यहां क्यों न लायो ? हम सों दुराव क्यों कियो ? तब नागजीने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! हम तो आपके हाथ बिकाने हैं. हमकों तो श्रीरनछोरजी आप बताए हो. तब हम श्रीरनछोरजीकों जाने हैं. और हम सब छोरिकै आपके चरन लागे हैं. तातें कृपा करिकै ये आम अङ्गीकार करिए. यह नागजीकी बिनती सुनिके श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए. तब आमनकों श्रीहस्तमें लै कै देखें. सो आम बोहोत ही सुन्दर हैं. तब श्रीगुसांईजी नागजीसों कहे, जो ये आम हम कैसें लैइ ? यह सामग्री श्रीनाथजी लाइक है. सो श्रीनाथजीद्वार पहोंचे, श्रीनाथजी अङ्गीकार करें तब हम लैइ.

भाव प्रकाश :
सो काहेतें, जे उत्तम वस्तूकों प्रीतमकों अङ्गीकार कराए बिना कैसें लीनी जांइ ? यह मारगकी रीति है. तातें श्रीनाथजीकों अङ्गीकार कराए बिना श्रीगुसांईजी आपु सर्वथा न लै. यह सनेहकौ स्वरूप जतायो.

यह सुनत ही तत्काल नागजी एक सांढ़नी लै आम दोइसैं एक और, दोइसैं दूसरी और धरिकै तहां तें श्रीजीद्वारकों चले. सो रात्रि दिन चले. सो चौथे दिन श्रीजीद्वारमें आई रामदास मुखिया भीतरियाकों दोइसैं आम दिये. और नागजीने कही, जो पहोंच बेगि लिखि देउ. तब रामदासने कही, अब ही तो तुम आए हो सो कछू दिन रहो. तब नागजीने कही, मोकों अब ही जरूर जानो है. तातें याही घरी पहोंच लिखि देउ. तब रामदासजी दोइसैं आमनकी पहोंच लिखि दिये. तब नागजी विचारें, जो अब गोकुलमें श्रीनवनीतप्रियजीकों हू दियो चहिए. मति कहूं फेरि श्रीगुसांईजी मोकों पठावें. यह विचारिकै नागजी श्रीगोकुल आई दोइसैं आम श्रीगिरिधरजीके आगें धरि दण्डवत् करि बिनती

कियो, जो महाराज ! पहोंच अब ही लिख दीजिए. तब श्रीगिरिधरजी कहे, नागजी ! तुम कछूक दिन इहां रहो. अब ही आए अब ही चलत हो ? ताकौ कारन कहा ? तब नागजीने कही, जो मोकों श्रीगुसांईजीके पास जरूर जानो है. तातें अब ही कृपा करिकै बेगि पहोंच लिखि देउ. तब श्रीगिरिधरजी दोइसैं आमनकी पहोंच लिखि दिये. तब नागजी श्रीगिरिधरजीको दण्डवत् करि कै तहां तें उतावले चले. सो रात्रि दिन चलि कै तीसरे दिन श्रीगुसांईजीके पास आई पहोंचे. सो एक सांढ़नी पै आम सातसैं भरिकै ल्याये. सो आम श्रीगुसांईजी सो छिपाई राखे. सो श्रीगुसांईजी जब स्नान करिकै रसोई करनकों पधारे, तब नागजी परचारगी करे. सो नागजी दोइसैं आम बोहोत सुन्दर संवारिकै लै आए. तामें कछू अमरस काढिकै कटोरा चारि भर्यो. और एक सौ आम संवारिकै श्रीगुसांईजी पास आए. तब श्रीगुसांईजी आम देखिकै कहै, जो नागजी ! मैं तोसों पहेले ही कह्यो हतो, ये आम श्रीनाथजी श्रीनवनीतप्रियजीके लाइक हैं. मैं पहेले कैसें लैउं ? यह सुनिके नागजीने दोउ पत्र श्रीगिरिधरजीकौ, रामदासकौ, लैकै श्रीगुसांईजीके श्रीहस्तमें दिये. सो दोउ पत्र श्रीगुसांईजी बांचिकै बोहोत ही प्रसन्न भए. पाछें नागजीसों कहे, जो श्रीनाथजी अरोगे और श्रीनवनीतप्रियजी अरोगे तहां मैं हू अरोग्यो. तू सगरे आम उहांई क्यों नांही दै आयो ? हमारे पास क्यों लायो ?

भाव प्रकाश :
यह कहे ताकौ अभिप्राय यह है, जो श्रीगुसांईजी आपु श्रीनवनीतप्रियाजी, श्रीनाथजीसों बिदा व्है परदेस पधारते. सो ता दिनतें श्रीगुसांईजी आपु विप्रयोगकौ अनुभव करते. सो विप्रयोगमें सब इन्द्रियनके स्वादकौ त्याग है. देह निर्वाहार्थ कछूक भोजन करते. तातें ऐसें कह्यो.

यह सुनिकै श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिकै नागजीने बिनती करी, जो महाराज ! हमकों श्रीनाथजी हू आप बताए और श्रीनवनीतप्रियजी हू आप बताए. तासों हमारे तो सर्वस्व आपु हो. जब आप अरोगो तब हमकों सुख होंइ. तातें आम कृपा करिकै आप अङ्गीकार करिए. हम तो एक आपके चरन कमलके दास हैं.

भाव प्रकाश :

सो यामें स्वामी - सेवक भाव प्रगट दिखाए. क्यों, जो नागजी अपनकों श्रीठाकुरजीके दास कहें, तो श्रीगुसांईजीकी बराबरी होंइ. तातें कहे, जो ''हम तो एक आपके चरनकमलके दास हैं. सो जब आपु अरोगो तब ही हमकों सुख होंइ.'' या प्रकार सेवक - भाव प्रगट दिखायो.

यह नागजीकी बिनती सुनिकै श्रीगुसांईजी अमरसकौ कटोरा और आम रसोईमें लै गए. सो भोग धरें. पाछें समै भए भोग सराए. अनोसर करि आम कछूक अरोगे.

भाव प्रकाश :
सो काहेतें, जो श्रीगुसांईजी भक्तेच्छापूरक हैं. सो नागजीके मनोरथसों आम अरोगे.

वार्ता प्रसङ्ग ४ :
और एक समै नागजी गोधरा तें श्रीगुसांईजीके दरसनकों अड़ेल आवत हुते. सो श्रीजीद्वार आए. श्रीनाथजीके दरसन किये. रामदासजी आदि सेवक टहलुवानसों भगवद् स्मरन किये. तब रामदासजी भीतरियाने नागजीसों कही, जो इहां सगरे भीतरियानकों ज्वर आवत है, सो सेवामें सञ्कोच है. तासों तुम कछू दिन श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवा करो. तब नागजी नहाइकै श्रीनाथजीकी सेवामें रहे. तब नागजीने श्रीजीद्वार तें श्रीगुसांईजीकों बिनती पत्र लिख्यो. तामें एक श्लोक लिखिकै श्रीगुसांईजीकों पत्र पठायो. सो श्लोक

सरसि कुशेशयमप्यास्वादितुमागच्छतोऽलिनो मार्गे ।
यदि कनक - कमलपाने नासीत्तोषः किमन्येन ।।

भावप्रकाश :

याकौ अभिप्राय यह है, जो जलकमल कौ आस्वाद लैवे कों मैं भंवर रूप व्है आवत हतो. सो मार्ग में कनककमल मिल्यो तामें अरूझ्यो हूं. परन्तु जलकमल कौ आस्वाद नाहीं आवत है. सो यामें नागजी भटटने श्रीगुसांईजीको जलकमल कहे हैं. सो जैसे जलकमलमें सुगन्ध रहति है तैसें श्रीगुसाईजीके भीतर ही सकल लीला रूप मकरन्द है. सो नागजी भटकों श्रीगुसांईजी आप अनुभव करावत हैं. तातें नागजी श्रीगुंसाईजीकों जलकमल कहे. और श्रीनाथजीकों कनककमल कहे हैं, सो यद्यपि श्रीनाथजी हू सकल लीला संयुक्त रसात्मक हैं. तोऊ श्रीगुसांईजीकी कृपा बिना अनुभव नाहीं. तातें कनककमल कहे.

सो यह श्लोक पत्रमें लिखे. सो पत्र श्रीगुसांईजीके पास गयो सो श्रीगुसांईजी वा पत्र कों बांचे. सो ता पत्रकौ उत्तर श्रीगुसांईजी लिखि पठाए. तामें दोइ श्लोक श्रीगुसांईजी लिखे. सो श्लोक

नात्र कुशेशयमानसमर्थयसे यत्प्रियो मधुपः ।
तस्मिंस्तुष्टे तोषः दुःस्थे दौःस्थ्यं हि निरुपमस्नेहात् ।।
यद्यलिरपिनिरुपधिभावः स्वभावतः समागच्छेत् ।
निरवधितोषोऽस्यात्रापि भवेदेवेति किं वाच्यम् ।।

भाव प्रकाश :
यामें यह कह्यो, जो सब मूलत्व कनक कमल हैं. परन्तु भाववन्तकों आस्वादित है. तातें तुम भाववन्त व्है श्रीनाथजीकी सेवा करियो, ता करिकै तुमकों सर्व रस आस्वादित होइगो. एक अर्थ यह है. अब दूसरो अर्थ कहत हैं, जो हे प्रिय मधुप ! तू कनक कमलमें अरूझ्यो है. सो तोकों तो जलकमलके ढिंग बोहोत रस मिलेगो.

या प्रकार दोइ श्लोक श्रीगुसांईजी पत्रमें लिखिकै श्रीजीद्वार नागजी पास पठाए. सो पत्र आइकै कासिदने नागजीकों दियो. सो पत्र नागजी बांचिकै श्रीगुसांईजीके दरसनकी नागजीकों बोहोत आतुरता भई. इतनेमें दोइ तीन भीतरियानकों ज्वर उतरि गयो. सो सेवामें नहाए. तब नागजीने रामदासजी सों कही, जो मैं अब श्रीगुसांईजीके दरसनकों जाउंगो. श्रीगुसांईजीके दरसन किये बोहोत दिन भए हैं. तब रामदासजीने कही, तुम्हारी इच्छा. इहां रहो तो श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवा करो. उहां जाओगे तो श्रीगुसांईजीकी सेवा करोगे. तुम कों दोउ ठौर बराबरि सुख है. यह सुनिकै नागजी श्रीगोवर्द्धननाथजीसों बिदा होईकै रामदासजी आदि सेवक टहलुवानसों बिदा होइ कै अड़ेल आए. तहां श्रीगुसांईजीके दरसन किये. तब श्रीगुसांईजी नागजीकों देखिकै बोहोत प्रसन्न भए. सो वे नागजी श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते.

वार्ता प्रसङ्ग ५ :
और एक समै श्रीगुसांइजीकों नागजीने बिनती पत्र लिख्यो. तामें यह लिखे, जो महाराज ! श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके ग्रन्थ श्रीसुबोधिनीजी, निबन्ध, और आपकी टिप्पनी और रहस्य ग्रन्थ बोहोत हैं, और मेरी बुद्धि थोरी है. सो आपु कृपा करिकै थोरे ही में मारगकौ रहस्य लिखि पठावो तो आपकी कृपा तें कछूक स्फुरे. यह नागजीने विनतीपत्र लिखिकै श्रीगुसांईजीके पास पठवायो. सो पत्र श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजी पास आयो. तब वह पत्र श्रीगुसांईजीने बांच्यो. ताके प्रतिउत्तर (में) श्रीगुसांईजी दोइ श्लोक लिखि पठाए. तिन श्लोकनमें श्रीआचार्यजीकौ प्रागट्य मार्गकौ फल और मार्गकौ रहस्य, इन दोइ श्लोकनमें सब लिखि पठायो. सो श्लोक

श्रीवल्लभाचार्यमते फलं तत्प्राकट्यमत्राव्यभिचारिहेतुः ।
तत्रोपयुक्ता नवधोक्तभक्तिस्तत्रोपयोगोऽखिलसाधनानाम् ।।१।।
यः कुर्यात्सुन्दराक्षीणां भवने लास्यनर्तने ।
तासां भावनया नित्यं स हि सर्वफलानुभाक् ।।२।।

ये दोइ श्लोक श्रीगुसांईजी नागजी भटटकों रहस्य - फलके लिखि पठाए.

ताकौ अभिप्राय यह है, जो श्रीवल्लभाचार्यजीके मार्ग विषे श्रीठाकुरजीकौ प्रागट्य है सोई फल है. तामें अव्यभिचारी भक्ति हेतु है. सो जाकों अनन्यता होंइ ताकों नवधा भक्ति हैं. और पहिले नवधा भक्ति हैं, सो तिन एक एक भक्तिकों नौ जनेंन करी हैं. ताकौ शास्त्र निरुपन करत हैं. तातें विलक्षन जो श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकौ मार्ग दसधा प्रेमलक्षना अधिक, श्रीआचार्यजी महाप्रभु प्रगट करे. सो ताकौ हेतु श्रीगुसांईजी लिखे हैं. और नवधा हैं सो महामायाकौ संयुक्त है. और इहां यह दसधा हैं सो सब कार्यमें प्रेम संयुक्त है. तातें यह दसधा भक्ति श्रेष्ठ हैं. सो प्रेमलक्षना भक्तिकौ आसय नागजीकों श्रीगुसांईजी लिखि पठाए. तामें लिख्यो, जो सुन्दराक्षी ऐसें जो ब्रजभक्त हैं तिनके भवनमें लास्यनृत्य रासादि प्रभु क्रीडा करत हैं. सो उनके भावनकी नित्य भावना करनी. तातें सर्व फलानुभव होंइ.

सो या पत्रकों नागजी बांचिकै बोहोत प्रसन्न भए.

भावप्रकाश :
सो जैसें श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीने दामोदरदासके हृदयमें गोप्य वार्ता करि, मार्गकौ रहस्य थाप्यो, तैसें ही श्रीगुसांईजीने या पत्रद्वारा नागजीके हृदयमें मार्गकौ रहस्य - फल थाप्यो. सो यह श्लोक ऐसें गूढ भावरूप हैं. तातें विस्तार नाहीं कियो.

वार्ता प्रसङ्ग ६ : और एक समै श्रीगुसांईजी द्वारिकाकों पधारे. तब नागजी सांढ़ भरिकै आम लैकै श्रीगुसांईजीके पास गए. तब आम देखिकै श्रीगुसांईजी नागजीसों यह कहे, जो नागजी ! ये आम मो पै लीने न जांइ. ऐसें नागजी श्रीमुखके बचन सुनिकै वे तो आम नागजीने उहांई छोरे. और आप वाही समै नागजी गोधराकों आए. तहां तें सांढ़ दोइमें आम भरिकै सातमें दिन श्रीनाथजीद्वार आए. तहां सांढ़ एक आम रामदासजी भीतरियाको सोंपिकै, पहोंचकौ पत्र रामदासजी पास तें लिखाइ लै कै, तहां ते श्रीगोकुल आई सांढ़ एक आम श्रीगिरिधरजीकों सोंपि, दण्डवत् करि, पहोंचके पत्र लै कै आप तत्काल चले. सो फेरि गोधरा आई कै तहां तें सांढमें आम भरि लै कै

गोधरा तें द्वारिका कों चले. सो श्रीगुसांईजी द्वारिका तें श्रीगोकुलकों पधारत हते. तहां नागजी मार्गमें आम लै कै प्रभुनके सामें जाई, दण्डवत् करि, आम नागजीने श्रीगुसांईजीके आगें राखे. और दोउ पत्र प्रभुनके श्रीहस्तमें दिये. सो वे दोउ पत्र बांचिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए. पाछें श्रीगुसांईजी रसोई करि उन आमनकौ भोग समर्पे. ता पाछें प्रभु अरोगे तब श्रीगुसांईजी श्रीमुखतें बोहोत ही सराहना करे. तब नागजी अपने मनमें बोहोत ही प्रसन्न भए. वे नागजी ऐसें भाव अनुरक्त श्रीगुसांईजीके चरनारविन्द विषे रहते. सो वे नागजी श्रीगुसांईजी पास नाम पाए, तब तें एकसो मन नागजीकौ सदा श्रीगुसांईजीकी कृपा तें रह्यो. और श्रीगुसांईजी नागजी आगें छह बेर द्वारिकाकों पधारे. सो छहो बेर श्रीगुसांईजी नागजीके घर उतरे.

भावप्रकाश :
सो श्रीगुसांईजीकी बेठक गोधरामें नागजीके घरमें हती. सो एक समै श्रीगोकुलनाथजी द्वारिका पधारे. तब गोधरा गाम मार्गमें आयो. तब आपु श्रीगोकुलनाथजी नागजीकौ घर वा गामके लोगनसों पूछें, जो हमकों नागजीकौ घर दिखावो. सो नागजीके बंसकौ तो वहां कोऊ हतो नाहीं. और घर हू गिर्यो पर्यो ढीहा होइ रह्यो हतो. सो सब ठौर गामके लोगन श्रीगोकुलनाथजीकों बताई. तोऊ तहां सब शुद्ध करिकै कनात दै कै श्रीगोकुलनाथजी भोग समर्पे. पाछें जब श्रीघनस्यामजी द्वारिकाकों पधारे तब नागजीकौ घर और श्रीगुसांईजीकी बैठक समराइकै भोग समर्प्यो.

सो वे नागजी श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. उनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए.... वार्ता ।।१।।

२-कृष्ण भटट सांचोरा

अब श्रीगुसांईजीके सेवक पद्मारावलके बेटा कृष्ण भटट सांचोरा ब्राह्मन, उज्जैनिके बासी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश :
सो कृष्ण भटट सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'रसबिलासिनी' है. ये ललिताजी तें प्रगटी हैं, तातें इनके भावरूप हैं. सो 'रसविलासिनी' श्रीचन्द्रावलीजूकी अन्तरङ्ग सखी हैं. तातें श्रीचन्द्रावलीजी आपुनी रहस्य एकान्त वार्ता इन तें कहति हैं. ता रसकौ ये विलास करति हैं. और निज सखी सहचरीनकों हू (वाकौ) अनुभव करावति हैं. या प्रकार ये रसकौ प्रकास हू करति हैं.

सो कृष्ण भटट उज्जैनिमें पद्मारावल सांचोरा ब्राह्मनके घर प्रगटे. सो पद्मारावल श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके सेवक है. उनकी वार्ताकौ भाव आगें कहि आए हैं. सो पद्मारावलके चारि बेटा हे. तामें सबन तें बड़े कृष्ण भटट हे. सो ये पढ़े बोहोत. पाछें इनकौ ब्याह भयो. स्त्री सुपात्र मिली, दैवी. सो उनके दोइ बेटा भए. गोकुल भटट अरू गोविन्द भटट. सो हू दैवी हैं, लीला सम्बन्धी. उनकौ अलौकिक स्वरूप आगें कहेंगे.

सो एक समै श्रीगुसांईजी उज्जैनि पधारे. तब कृष्ण भटट कुटुम्ब सहित सेवक भए. पाछें कृष्ण भटट श्रीगुसांईजीसों बिनती किये, जो महाराज ! अब कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो भगवत्सेवा करो. सो श्रीगुसांईजीने कृष्ण भटटकों एक लालजीकौ स्वरूप पधराइ दियो. तब कृष्ण भटट बिनती किये, महाराज ! मोकों तो राजकी सेवाकी इच्छा है. तब श्रीगुसांईजी अपनी पादुका इनको (और) पधराइ दिये. ता पाछें थौरेसे दिनमें श्रीगुसांईजी उज्जैनि तें विजय किये. सो कृष्ण भटटकों श्रीगुसांईजीकौ विरह बोहोत व्याप्यो. सो देहकी दसा कछू और व्है गई. तब श्रीगुसांईजी चाचा हरिवंशजीसों आज्ञा किये, जो इनकी अभी कच्ची दसा है. सो कछूक दिन तुम इन पास रहो. ता पाछें चाचा हरिवंशजीकों वहां (ई) राखि आप तो अड़ेल पधारे. सो कृष्ण भटटकों चाचाजीके सङ्गतें मार्गमें दृढता भई. अरू मार्गकी प्रनालिका आदि सब जानें. पाछें कृष्ण भटटके सङ्गतें बोहोत जीव श्रीगुसांईजीके सरनि आए.

सो कृष्ण भटटकी वैष्णवन पर हू प्रीति बोहोत हती. पास दस - पांच हजार रुपैया हू हतो. सो जो कोऊ वैष्णव उज्जैनिमें आवें, ताकौ ये अपने घर लै जांइ. और बोहोत प्रीति पूर्वक प्रसाद लिवावें. दो चार दिन आग्रह करि राखें. ता पाछें जब वैष्णव जाईवेकी कहे तब कृष्ण भटट रात्रिकों उनकी गांठि खड़िया खौली खरची बांधि दैते. सो या प्रकार करते, जो वैष्णवकों खबरि परे नाहीं. पाछें वैष्णव मजलि पर पहोंचि गांठि खोलते, तब वामें तें द्रव्य

निकसतो. जब जानतें, जो ये कृष्ण भटटके काम हैं. सो या प्रकार कृष्ण भटटकौ वैष्णवन पर भरभाव हतो.

और कृष्ण भटट रात्रि दिन श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजीके ग्रन्थ देख्यो करे. आए गए वैष्णवनकों हू सुनावें. ऐसी मार्ग प्रति निष्ठा. सो सदा भगवद् भावमें मगन रहते.

और कृष्ण भटट प्रतिवर्ष उज्जैनि तें श्रीगुसांईजीके दरसनकों आवते. सो महिना दोइ तीन लों श्रीगुसांईजीकी सेवामें तत्पर रहते.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै कृष्ण भटट श्रीगुसांईजीकी सेवामें तत्पर रहे. सो उन कृष्ण भटटकी सेवा देखिकै श्रीगुसांईजी उन पर बोहोत प्रसन्न भए. सो एक दिन उनके उपर कृपा करिकै सम्पूरन श्रीसुबोधिनीजीकी पोथी कृष्ण भटटकों दिये. सो कृष्ण भटटकों कछू समझ न परे. तातें श्रीगुसांईजी आप दया विचारीकै श्रीसुबोधिनीजीके गूढार्थ रूप टिप्पनीजी प्रगट किये. सो कृष्ण भटटकों श्रीगुसांईजी दिये.

भाव प्रकाश :
सो टिप्पनीजी द्वारा श्रीगुसांईजी आप कृष्ण भटट के हृदयमें पुष्टिमार्गकौ रहस्य, भावना आदि सब स्थापन किये.

सो तत्काल पोथी देखत मात्र कृष्ण भटटकों भाव स्फुर्द भयो. जो श्रीआचार्यजी महाप्रभु अपने गूढ भाव टीकामें गुप्त राख्यो हतो, सो श्रीगुसांईजी टिप्पनीजी करि तामें प्रगट किये, सो सब कृष्ण भटटके हृदयमें स्थापन कियो. सो ऐसी कृपा श्रीगुसांईजी आपु कृष्ण भटट के उपर करी.

भाव प्रकाश :

सो जा भांति श्रीआचार्यजी आपु पद्मारावलकों चन्दन, चरनामृत दियो (हतो), सो लैत ही तत्काल श्रीआचार्यजीके मार्गकौ सिद्धान्त स्फुर्द भयो. ताही भांति कृष्ण भटट कों हू पोथी देखत ही सब स्फुर्द भयो, या प्रकार जाननो.

सो ता दिनतें कृष्ण भटट अपने घर आई नित्य नेमपूर्वक श्रीसुबोधिनीजीकौ पाठ, कथा कहते. सो ता समै उनके मुख तें सब वैष्णव सुनते. सो मुख्य श्रोता तो निहालचन्द भाई रहें. और हू देसी परदेसी वैष्णव कथा सुनिवेकों आवते.

सो केतेक दिन पाछें कृष्ण भटट श्रीगोकुल आए. सो कृष्ण भटटके साथ और हू एक कुनबी वैष्णव आयो. सो कृष्ण भटटके पाछें पाछें कुनबी वैष्णव हतो. सो एक दिन श्रीनाथजीद्वारमें श्रीगुसांईजी स्नान करिकै श्रीगोवर्द्धनपर्वत पर पधारत हुते. सो आगें श्रीगुसांईजी और पाछें कृष्ण भट्ट हे. ता पाछें वह कुनबी वैष्णव हुतो. सो ता समै वह कुनबी वैष्णव कृष्ण भटटसों पूछन लाग्यो, जो भट्टजी ! तुम (ने) एक दिन कथामें यों कह्यो हतो, जो श्रीगोवर्द्धन रत्नखचित धातुमय हैं. और गोविन्द कुण्ड दूधसों भर्यो है. सो तो मैं कछू देखत नाहीं. या भांति वा कुनबी वैष्णवने कृष्ण भटटसों पूछी. सो यह बात श्रीगुसांईजीने सुनी. तब श्रीगुसांईजी आपु कृष्ण भटटसों फिरि कै कहे, जो यह वैष्णव कहा कहत है ? तब वा कुनबी वैष्णवने हाथ जोरिकै श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो महाराज ! एक दिन कृष्ण भटटने कथामें ऐसें कही हती, जो श्रीगोवर्द्धन रत्नखचित धातुमय हैं. और गोविन्द कुण्ड दूध सों भर्यो है. सो राज ! मैं कछू देखत नाहीं. तब ता समै श्रीगुसांईजी आप बोले नाहीं.

भाव प्रकाश :
काहेतें, जो आप सेवामें पधारत हते. सो ठाकुरकों अवेर होंइ. तातें श्रीगुसांईजी आप बोले नाहीं.

सो श्रीगुसांईजी तो श्रीनाथजीके मन्दिरमें सेवा करनकों पधारे. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीकों सिंगार करिकै राजभोग आर्ति पाछें श्रीगुसांईजी निज मन्दिरतें बाहिर पधारे. तब ता समै श्रीगुसांईजी पूछे, जो वह कुनबी वैष्णव कहां है ? तब वह वैष्णव बोल्यो, जो महाराज ! एक

तो कुनबी मैं हूं. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो अब तू देखि तो सही. तब वह कुनबी वैष्णव देखे तो श्रीगोवर्द्धन रत्नखचित धातुमय हैं. और देखे तो गोविन्दकुण्ड हू दूधसों भर्यो है. सो ता समै श्रीगुसांईजीने वा कुनबी वैष्णवकों ब्रजकौ ऐसो दरसन करवायो. तब वा कुनबी वैष्णवने श्रीगुसांईजीको साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै कह्यो, जो महाराज ! आप बिना मो सारिखे तुच्छ जीव उपर इतनी कृपा कौन करे ? पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धनतें नीचे पधारे. तब वह कुनबी वैष्णव गोविन्दकुण्ड उपर जायकै एक लोटी भरि लायो. पाछें वाने कृष्ण भटटकों दिखाई. और वा कुनबी वैष्णवने कृष्ण भटटसों कह्यो, जो तुम्हारी कृपा तें मोकों श्रीगुसांईजीने अलौकिक दरसन करवायो. सो यह कृपा श्रीगुसांईजीने मो पर करी है, सो तुम्हारी कृपा तें भई है. सो कृष्ण भटट श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते.

भाव प्रकाश :
यामें यह जतायो, जो यह मारग वैष्णव द्वारा फलित होत है. सो वैष्णवकौ सङ्ग अहर्निश करनो. तातें सब फलकी प्राप्ति होंइ. सो वैष्णवकी कृपातें गुरुकी कृपा होत हैं. जब गुरु प्रसन्न होंइ तब काहू वस्तूकी न्यूनता रहत नाहीं. तातें वैष्णवकौ सङ्ग है सोई सर्वोपरि है.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
और एक समै कृष्ण भटट श्रीगोवर्द्धननाथजीके भीतरिया भए हते. सो कृष्ण भटट श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ सेवा - सिंगार करत हते. परि अपने मनमें यह मनोरथ करिकै एक हू दिन चरनारविन्दकौ स्पर्श न कर्यो, जो मैं इनके चरनस्पर्श करों.

भावप्रकाश :
ताकौ हेतु यह, जो कृष्ण भटट अपने मनमें कहे, जो चरनारविन्द छूए तें कहा होत है ? जो श्रीगोवर्द्धननाथजी आप ही तें मोकों चरनारविन्दकौ स्पर्श करावेंगें तब जानिए, जो श्रीनाथजी मो पर कृपा करी. और यों तो श्रीनाथजीके चरनस्पर्श मांखी हू करत है. परन्तु उनकों ज्ञान तो नाहीं है. सो जब श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु कृपा करीकै श्रीगुसांईजीकी कानि तें आप ही अपने चरनारविन्द दोऊ मेरे मस्तक पर धरेंगे तब हों जानूंगो जो श्रीगोवर्द्धननाथजी

चरनारविन्दकौ स्पर्श कराए.

सो या प्रकार सेवा करत कृष्ण भटटकों बोहोत दिन भए. सो यह मनोरथ कृष्ण भटटके मनकौ श्रीनाथजीने जान्यो. तब एक दिन श्रीनाथजीकौ सिंगार श्रीगुसांईजी करते हते. तब श्रीगुसांईजी सों श्रीनाथजीने कह्यो, जो देखो ! कृष्ण भटटकों एते दिन सेवा करत भए. परि इन कबहू अपने मन सों चरनारविन्दकौ स्पर्श नाहीं कियो. तब कृष्ण भटट वा समै पास ठाढ़े पंखा करत हते. तब श्रीगुसांईजी कृष्ण भटटकी ओर देखिकै आप पूछें, जो कृष्ण भटट श्रीगोवर्द्धननाथजी कहा कहत हैं ? तब कृष्ण भटटने साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! श्रीगोवर्द्धननाथजी आप सत्य कहत हैं. परि एक बिनती मेरी हू श्रीगोवर्द्धननाथजी सों पूछें, जो कृष्ण भटटकों तुम्हारे चरनारविन्दकी योग्यता भई है ? सो आप कृष्ण भटटकों स्पर्श करवावोगे ? जब आज्ञा देऊ तब मैं चरनारविन्दकौ स्पर्श करों. तब श्रीगुसांईजी आपु कृष्ण भटटके बचन सुनि बोहोत प्रसन्न भए.

भाव प्रकाश :
सो यातें, जो कृष्ण भटटने दीनता प्रगट करि अपने हृदयकौ अभिप्राय जतायो.

पाछें श्रीगुसांईजीने श्रीनाथजीसों बिनती करी, जो बावा ! कृष्ण भटटके बचन सुनें ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीगुसांईजीके बचन सुनिकै कृष्ण भट्टसों कृपा करिकै कहे, जो कृष्ण भटट आगे आऊ. और श्रीनाथजी मुसिकाइकै अपनो दक्षिन चरनारविन्द चौकी तें ऊचों कियो. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो कृष्ण भटट ! तुमारे बड़े भाग्य हैं. जो अब तुम चरनारविन्दकौ स्पर्श करो. तब कृष्ण भटट श्रीगुसांईजीके बचन सुनिकै उत्कण्ठासों मुग्ध भाव होइ गए. सो वा समै कछू बानी स्फूर्द न भई. तब श्रीगुसांईजी कृष्ण भटटकी यह दसा देखिकै अपने श्रीहस्त सों कृष्ण भटटके हाथ पकरिकै श्रीगोवर्द्धननाथजीके चरनारविन्दकौ स्पर्श करवायो. तब कृष्ण भटटकों बानी स्फुर्द भई. सो प्रथम तो श्रीगुसांईजी आपकों कृष्ण भटटने साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् चरनस्पर्श करिकै हाथ अपने नेत्र हृदयसों स्पर्श करवायो. ता पाछें कृष्ण भटटने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! आपके चरन

प्रतापतें ये चरनारविन्द मेरे हृदयारूढ होऊ. तब श्रीगुसांईजी कृष्ण भटटकौ शुद्ध भाव जानिकै श्रीगोवर्द्धननाथजीके सन्मुख आशीर्वाद दिये, जो तथास्तु. सो कृष्ण भटट श्रीगोवर्द्धननाथजीके चरनस्पर्श श्रीगुसांईजीके सानिध्य करे सो करे. फेरि ता दिन पाछें कृष्ण भटटने श्रीगोवर्द्धननाथजीके चरनस्पर्श करे नाहीं.

भाव प्रकाश :
सो काहेतें, जो भाव दृढ भए पाछें क्रियाकी अपेक्षा रहत नाहीं.

वार्ता प्रसङ्ग ३ :
और एक समै कृष्ण भटटने श्रीनाथजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मोकों ब्रजभक्तन सहित आपकी लीलाके दरसन देऊ. तब श्रीनाथजीने कृष्ण भटटसों यह कही, जो कृष्ण भटट ! वे दरसन तो सहज ही में अलौकिक देहसों होत है, या देहसों तो कबहू न होंइ. सो उन कृष्ण भटटकों श्रीनाथजी दरसन दैते, बातें करते, और या प्रकार चरन स्पर्श कराए, परि ब्रजभक्तन सहित लीलाके दरशनकी तो नाहीं करे.

भावप्रकाश :
सो काहेतें, जो अलौकिक स्त्रीभाव बिना पुरुष देह तें ब्रजभक्तन सहित लीलाके दरसन न होंइ. सो स्त्रीभावकौ दान तो श्रीस्वामिनीजीके हाथ है. तातें वे कृपा करें तब ही होंइ. यातें श्रीनाथजी नाहीं करे.

ता पाछें कृष्ण भटट (ने) श्रीगुसांईजीकों ब्रजभक्तन सहित लीलाके दरसनकी बिनती करी. और कह्यो, जो महाराज ! श्रीनाथजी तो नाहीं करे. कहैं, जो या देहसों नाहीं होत. सो आप कृपा करिकै दरसन करवाओ तब होंइ. तब श्रीगुसांईजी कृष्ण भटटकों कहे, जो श्रीनाथजी तो बालक हैं, यहां देखि तो सही. सो कृष्ण भटट देखे तो कोटानकोटि जूथ ब्रजभक्तनके, श्रीनाथजीके सिज्या मन्दिरमें सेवा

करत हैं. कोऊ सिज्या सम्हारत हैं. कोऊ आभरन सम्हारत हैं, कोऊ पीकदान, कोऊ जारी, कोऊ बंटा, कोऊ चादर लिये ठाड़े हैं. ऐसें असङ्ख्य ब्रजभक्तनके दरसन श्रीगुसांईजी कृष्ण भटटकों करवाए. सो दरसन होत ही कृष्ण भटट थकित व्है रहै. सो देहानुसन्धान न रह्यो. पाछें श्रीगुसांईजीने लीलाकौ आच्छादन कियो. तब कृष्ण भटट कहे, महाराज ! यह क्यों ? तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो कृष्ण भटट ! अभी तोकों यहां सेवा करनी है.

भाव प्रकाश :
यामें यह जताए, जो श्रीगुसांईजी श्रीचन्द्रावलीजी हैं, तातें स्वामिनी रूप हैं. सो उनकी कृपातें कृष्ण भटटकों अलौकिक स्त्रीभावकी प्राप्ति भई. तब लीलाके दरसन भए. सो श्रीगुसांईजी कर्तुम्, अकर्तुम्, अन्यता कर्तुम्, सर्व - सामर्थ्य युक्त हैं. जो काय श्रीनाथजी (हू) न किये, सो आप कियो, ऐसें परमदयाल हैं. तातें जीवकों श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजीकौ आश्रय दृढ़ राखनो. ता करि सब फलनकी प्राप्ति होंइ. सो श्रीगुसांईजी श्रीसर्वोत्तममें श्रीआचार्यजीकौ नाम 'अदेयदान दक्षश्च' कहे हैं. ताही भांति आप हू हैं, यह प्रगट दिखाए.

वार्ता प्रसङ्ग ४ :
और कृष्ण भटट अपने घर उज्जैनिमें रहते. सो वैष्णव तापीपुरके, गुजरातके, तथा दक्षिनके श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजीके दरसनकों आवत हते. सो उज्जैनिमें कृष्ण भटटके घर उतरते. तिन वैष्णवनकौ कृष्ण भटट बोहोत भांति समाधान करते. उन वैष्णवनकों कृष्ण भटट दिन पांच सात अपने घर पाहूने राखते.

भावप्रकाश :
सो काहेतें, जो कृष्ण भटट जानते, जो ये वैष्णव मेरे घर बोहोत दिनके श्रमित आए हैं. सो ऐसें जानिकै कृष्ण भटट उनकों पांच सात दिन पाहुने राखते. तातें उनकौ श्रम निवृत्त होंइ.

पाछें जब कृष्ण भटट सों बिदा हौते तब रात्रिमें उन वैष्णवनकी गांठि खड़िया आप कृष्ण भटट खोलिकै देखते. सो जा वैष्णवकी गांठिमें थोरी खरची देखते ताकी गांठिमें रुपैया १००) एक सौ बांधि दैते. और प्रसादकी गांठि छोटी बांधिकै धरते. सो वे गांठिनवारे धनी न जानते. सो वे वैष्णव जब निद्राके बस हौते तब ता समै बांधि देते. सो या भांति सों करते. सो वे वैष्णव कोऊ जानते नाहीं. सो वैष्णव मजलि पर जाई कै अपनी गांठि खोलते, तब वे जानते जो यह काम कृष्ण भटटके हैं. या प्रकार सगरे आपुसमें चर्चा करते. या प्रकार सगरे वैष्णवनकी सेवा कृष्ण भटट करते.

भाव प्रकाश :
सो या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो कृष्ण भटट वैष्णवनकी सेवा अपनी बड़ाईके अर्थ नाहीं करते. गुप्त रीतिसों करते. सो काहूकों जानि नाहीं परे. तातें बड़ाईके अर्थ सेवा करनी नाहीं, स्नेह भावसों करनी. तामें बड़ाई माहात्म्यकी अपेक्षा रहत नाहीं. या प्रकार दीनतासों स्नेहपूर्वक सेवा करनी, यह सिद्धान्त भयो.

और जब वैष्णव कृष्ण भटटसों बिदा हौते तब कृष्ण भटट उन वैष्णवनसों कहते, जो तुम सब श्रीगोकुल जाई कै कछूक कमाइ आईयो. ऐसो जाई कै मति करियो जामें कछू गांठिकौ खोइ आओ.

भाव प्रकाश :
ताकौ अभिप्राय यह, जो श्रीठाकुरजीके दरसन करो सो हृदयमें राखियो. और जो कोऊ श्रीगोकुलमें रहत हैं, तिनकौ दोष हृदयमें मति धरियो. यह कमाइवे खोइवेकौ कहे.

सो कृष्ण भटटकी शिक्षा वे वैष्णव मानते तिनकौ कल्यान हौतो. यह उपदेश करि कृष्ण भटट वैष्णवनकी बिदा करते.

वार्ता प्रसङ्ग ५ :

और एक समै उज्जैनिके सगरे वैष्णव मिलिकै विचार करन लागे, जो भाई ! श्रीठाकुरजी कौन भांति प्रसन्न होंई ? तब उनमें एक वैष्णवने कह्यो, जो भाई ! अमूके बड़े भगवदीय वैष्णव हैं, तिन पास चलिए. तब वे सब वैष्णव वा वैष्णवके घर आए. तिनसों श्रीकृष्ण - स्मरन करि यह पूछें, जो भाई ! श्रीठाकुरजी कौन भांति प्रसन्न होंइ ? तब उन वैष्णवन तें वा वैष्णवने कही, जो भाई ! श्रीठाकुरजी तो या प्रकार प्रसन्न. होंइ जो रीतानुसार शुद्धभाव सों श्रीठाकुरजीकी सेवा करे. और समै समै के भोग सामग्री श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी, श्रीगुसांईजीकी आज्ञा प्रनालिका लिखी है ता प्रनालिका प्रमान सेवा करे. तो श्रीठाकुरजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी श्रीगुसांईजीकी कानितें मानें. तब जानिए, जो श्रीठाकुरजी याकी सेवा मानें. तब उन वैष्णवन वा वैष्णवसों पूछ्यो, जो सेवा मानी क्यों जानिए ? तब वा वैष्णवने उन वैष्णवन सों कही, जो ताके चारि अनुभव हैं. प्रथम तो अनायास वैष्णव घर आवे. ताकौ अपनी सक्ति प्रमान समाधान करे. और दूसरे, स्वरूपमें याके मनमें आनन्द उपजे. जो देखो, साक्षात् श्रीनन्दरायकुमार श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी कानितें मेरे हाथकी रसोई तथा जलकी लोटी अङ्गीकार करत हैं. तीसरे, जा भावसों यह श्रीठाकुरजीकौ सिंगार धरावे ताही भावसों श्रीठाकुरजी याकों दरसन देई. चोथें, श्रीठाकुरजी आगें यह श्रीआचार्यजीकी कानि तें भोग समर्पे तामें श्रीठाकुरजीके अरोगे पाछें नाना भांतिकै स्वाद आवें. और थारकौ प्रसान निघटे नाहीं. ए चार लक्षन प्रभुनकी सेवा प्रसन्नताके हों ता जानत हूं. तब वे वैष्णव वाहू वैष्णवकों साथ लै कै एक वैष्णवके घर पांच वैष्णव आए. ता वैष्णवकों ये पांचो वैष्णव श्रीकृष्ण - स्मरन करि यह बिनती करे, जो भाई ! श्रीठाकुरजी कौन भांति प्रसन्न होंई. तब वा वैष्णवने इन पांचो वैष्णवनसों यह कह्यो, जो भाई ! तब हों तो यह जानत हों, जो श्रीठाकुरजी तब प्रसन्न होंइ, जब स्वामिनीजी कृपा करि प्रसन्न होंइ. तब स्वामिनीजी याके उपर कृपा करि ठाकुरजी सों कहे. तब जानिए, जो श्रीठाकुरजी याके उपर प्रसन्न भए. तब इन पांचो वैष्णवन या वैष्णवसों पूछ्यो, जो श्रीस्वामिनीजी प्रसन्न भए क्यों जानिए ? तब वा वैष्णवने पांचों वैष्णवनसों यह कह्यो, जो श्रीस्वामिनीजी तो प्रसन्न भए तब जानिए जब याकौ दृढ विश्वास होंइ. अनन्यता एकसी इतनी ठौर आवें. श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी, श्रीनाथजी, श्रीस्वामिनीजी, और वैष्णवनमें एकसो भाव होंइ. तब जानिए, जो या जीव उपर श्रीस्वामिनीजी कृपा करे. तातें यह मार्ग है सो केवल श्रीस्वामिनीजीकी कृपाकौ है. तातें यह मार्ग श्रीस्वामिनीजीकौ है. तातें श्रीस्वामिनीजी प्रसन्न होंइ तो श्रीठाकुरजी या जीवकों अनुभव जनावे. तब जानिए जो श्रीठाकुरजी प्रसन्न भए. ता पाछें तहां तें सब वैष्णव मिलि कै यह विचार करे, जो भाई. आपुन

सगरे कृष्ण भटट पास चलिए. ये बड़े भगवदीय हैं. उन हू सों यह बात पूछिए. तब देखिए, जो वे कृष्ण भटट कहा कहें ? सो सगरे वैष्णव कृष्ण भटट पास आए. ता समै कृष्ण भटट तो आप श्रीठाकुरजीकी सेवामें हते. सो सेवासों पहोंचि राजभोग धरि कृष्ण भटट मन्दिरमें तें बाहिर आए, तब श्रीकृष्ण - स्मरन करि कृष्ण भटट पास बैठे. पाछें पूछ्यो, जो आज तुम सब मिलिकै कैसें पधारे हो ? पाछें इन वैष्णवन कृष्ण भटटसों बिनती करी, जो भटजी ! श्रीठाकुरजी कौन भांति सों प्रसन्न होंइ. तब कृष्ण भटटने उन वैष्णवनसों पूछी, जो तुम दोइ ठौर पूछन गए हते, तिन तुमसों कहा कह्यो ? तब उन वैष्णवन कृष्ण भटटसों कह्यो, जो एक ठौर तो यह कही, जो श्रीठाकुरजीकी भक्ति करिए मार्गोक्त प्रकारसों, तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होंइ. और दूसरी ठौर यह कही, जो श्रीस्वामिनीजी कृपा करें तो श्रीठाकुरजी प्रसन्न होंइ अनुभव जनावें. तब कृष्ण भटटने उन वैष्णवनसों कह्यो जो ये दोइ बात तो ग्रन्थोक्त हैं. परि श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी अपने आनन्दमें हैं. तातें वा ठौर दूसरेकी तो स्फूरना नाहीं. क्यों, जो वे दोऊ लीला परवस हैं. अपने स्वरूपमें मगन हैं. तातें उनकी एक अन्तरङ्ग सखी है, सो वह सखी निरन्तर दोउनके निकट ही रहति है. जब वह सखी प्रसन्न होंइ तब वह सखी उनकी स्तुति करे. तब श्रीठाकुरजी, स्वामिनीजी बोहोत ही प्रसन्न होंइ और उन भक्तनके मनोरथ सिद्ध होंइ. परि ताकी एक और सखी है. सो वह सखी बाहिरकौ सब कामकाज करति है. और वह सखी कुंजादिक संवारति है. और वह सखी सिज्या आभरन संवारति है. और वह सखी कुंजके द्वार मधुरे स्वरसों गान करति है. दोउनकौ विविध गुनगान करति है. सो सखीकों या जीवकी बिनती करनी. सो जब वह बाहिरकी सखीकों यह जीव बिनती करे. तब वह बाहिरकी सखी अपनी निज स्वामिनी - सखीसों समै पाइ बिनती करे. तब वह निकटकी सखी तिनके मनमें भाव धरि, जा समै श्रीठाकुरजी, श्रीस्वामिनीजी प्रसन्न मन उत्साहमें बिराजे होंइ, तब वह सखी वा भक्तकी बात सुधि करिकै प्रभुन आगें सब बिनती करे. तो श्रीठाकुरजी वा भक्त उपर प्रसन्न होंई. तहां कृष्ण भटटने श्रीगुसांईजीकी विज्ञप्तिकी सर्व बात कही. सो श्लोक

सखि बहुधापि निरुक्तश्चरणस्पृष्टोऽपि जीविताधीशः
नो मनुते निज सङ्गममहह कथं तत्र किं कुर्मः ।।

यह श्लोक कहे. तातें जे सर्वदा भगवदीय श्रीठाकुरजीकौ अनुभव जानत होंइ ताकै आगें यह जीव दीनता करे. और हमकों तो श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजीके सेवक प्रसन्न होंइ तब श्रीआचार्यजी महाप्रभु, श्रीगुसांईजी प्रसन्न होंइ. सो याही भांति सों उन वैष्णवनके आगें कृष्ण भटटने अपने मार्गकी सब परिपाटी कही. तब उन वैष्णवनके मनकौ सन्देह मिट्यो. सो वैष्णव सुनिके बोहोत प्रसन्न भए. तब इतनेमें कृष्ण भटटने श्रीठाकुरजीकौ राजभोग सरायो, तब उन वैष्णवनसों कह्यो, जो तुम दरसन करो. तब उन वैष्णवनने श्रीठाकुरजीके दरसन किये. पाछें कृष्ण भटटके आग्रहसों उहांई महाप्रसाद लियो. ता पाछें वे सगरे वैष्णव कृष्ण भटटसों श्रीकृष्ण स्मरन करि कृष्ण भटटके घरतें अपने अपने घर आए. सो वे कृष्ण भटट श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे.

भावप्रकाश :
यामें यह जताए जो दूती द्वारा जसें कामी स्त्री - पुरुषनके कार्य होत हैं, तैसेंइ यहां दूतीरूप भगवदीय जानने. सो वे जब प्रसन्न होंइ तब प्रभुनकों मिलाइ दै. तातें 'शिक्षापत्र'में कह्यो है.

तदीयेषु च तद्बुद्ध्या भरः स्थाप्यो विशेषतः ।
यथा दूतीषु भवति विषयीणां मति स्तथा ।।

यातें तदीय जो भगवदीय हैं, उनमें विशेष करिके भगवद्भावकौ स्थापन करनो. सो कैसें ? जैसें विषयी स्त्री - पुरुष दूतीमें राखे हैं. सो याकौ भाव या कीर्तनमें है

सखीयों ! याद दिवावति रहियों ।
समै पाइ कै दसा हमारी कबहू जुगल सों कहियों ।
करि मनुहारि जोरि कर दोऊ मेरी व्यथा उल्हैयों ।

जो कछू क्रोध करें ता उपर बिनती करि करि सहियों ।
केलि काज अरु कोप समै त्यजि सुख में रुख लहियों ।
कहियो कबहूक धाइ कै बांह 'हरिदास' की गहियों ।

वार्ता प्रसङ्ग ६ :

और एक समै श्रीगुसांईजीने श्रीगोकुल तें आपु कृष्ण भटटकी उपर कृपा करि कै एक पत्र लिखि कै भेज्यो. जो कृष्ण भटट एक बार यहां आईयो. सो बेगि ही आईयो. सो श्रीगुसांईजी कौ एक ब्रजवासी कृष्ण भटटके पास उज्जैनिमें आई कै कृष्ण भटटकों वह पत्र दियो. सो कृष्ण भटटने प्रभुनकौ पत्र माथें चढाइ कै बांच्यो. पाछें कृष्ण भटटने वा ब्रजवासीकौ भली भांतिसों समाधान कर्यो. सो पत्र बांचत ही कृष्ण भटट श्रीगोकुलकों चलै. सो अपने घरतें कृष्ण भटट वा प्रभुनके ब्रजबासीकों साथ लै उज्जैनि तें एक मजलि आए. सो रात्रिकों कृष्ण भटट सोए तब कृष्ण भटटके सेव्य श्रीठाकुरजीने यह जनायो, जो कृष्ण भटट ! तो बिना मोकों तो यहां सुहात नाहीं. या प्रकार श्रीठाकुरजीने कृष्ण भटट सों जनाई. तब कृष्ण भटटके साथ एक वैष्णव हतो. ताकों ता ठौर तें कृष्ण भटटने अपनी स्त्रीकों कहाई, जो जा बातमें श्रीठाकुरजी सुखारे रहें. ताही प्रकारसों तुम श्रीठाकुरजीकी सेवा करियो. मैं श्रीगुसांईजीके दरसन करिकै बेगि ही आवत हूं. सो वह वैष्णव घण आई कै भटयानीसों कृष्ण भटटके समाचार कहे. पाछें दूसरि मजलिपै फेरि श्रीठाकुरजी कृष्ण भटटकों जनाए. जो मोकों तो बिना सुहात नाहीं. तब एक वैष्णव फेरि भटयानीके पास पठायो. तासों कृष्ण भटट समाचार कहे. जो जामें श्रीठाकुरजी प्रसन्न रहे, सो प्रकार तू सेवा करियो. सो वह वैष्णव भटयानी पास आई कै ये समाचार कहे. पाछें तीसरी मजलि पर फेरि श्रीठाकुरजीने कृष्ण भटटसों जनाई, जो तो बिना मोकों सुहात नाहीं. तब श्रीठाकुरजीतें कृष्ण भटटने कह्यो, जो महाराज ! मोकों तो श्रीगुसांईजीने बुलायो है तहां जात हूं, हों तो. और तुमकों तो मोकों श्रीगुसांईजीने दिखाए है. तातें मेरे माथे तुम बिराजत हो. तिन प्रभुन पास आप सों न जाईए तोहू वे कृपा करि बुलाइ पठावें तब निठुराई करें क्यों बनि आवें ? तातें बावा ! मैं श्रीगोकुल जाई श्रीगुसांईजीके दरसन करिकै बेगि ही आवत हूं. तब कृष्ण भटटके ए बचन सुनिकै श्रीठाकुरजी बोहोत प्रसन्न होंइ आज्ञा दीनी, जो तू

जा. पाछें कृष्ण भटट ठाकुरजीकौ समाधान करि अपने घर पठाइकै आपु श्रीगुसांईजी पास श्रीगोकुल आए.

भावप्रकाश :
यामें यह जताए, जो गुरुके कार्यार्थ श्रीठाकुरजीकी आज्ञा न बनि आवें तो बाधक नाहीं. क्यों ? जो गुरुकी प्रसन्नता सों ठाकुर आप हू तें प्रसन्न होत हैं. और ठाकुर तीन बेर जताए, सो कृष्ण भटटकी परीक्षार्थ. जो देखैं, कृष्ण भटटकी श्रीगुसांईजीमें कैसी प्रीति है ? सो कृष्ण भटटको तो श्रीगुसांईजीमें एकरस प्रीति है. तातें श्रीठाकुरजीकी आज्ञा न मानी. तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होंइ आज्ञा करे, जो 'तू जा.'

सो ता समै श्रीगुसांईजी श्रीयमुनाजी स्नानकों पधारे हते. तहां आई कै कृष्ण भटटने श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करी. तब श्रीगुसांईजी कृष्ण भटटकों यह कहे, जो कृष्ण भटट ! तू आयो ! तब कृष्ण भटट अति उत्कण्ठासों प्रभुन आगें दण्डवत् करि यह बिनती करे, जो महाराज ! आपने अपुनो जानि सुधि करिकै बुलायो, तब क्यों न आऊं ? तब श्रीगुसांईजी कृष्ण भटटके ये बचन सुनिकै अतिप्रसन्न होंइ यह आज्ञा प्रभु फेरि कृष्ण भटटसों करे, जो कृष्ण भटट स्नान करो. तब कृष्ण भटट श्रीगुसांईजीके साथ श्रीयमुनाजीमें स्नान करे. पाछें प्रभुनके साथ श्रीनवनीतप्रियजीके मन्दिरमें आए. तब श्रीगुसांईजी तो श्रीनवनीतप्रियजीकौ राजभोग सरावन भीतर पधारे. ता समै कृष्ण भटट पास ठाढ़े रहे. पाछें भोग सर्यो तब कितनीक सेवा श्रीनाथजीके सम्बन्धतें श्रीगुसांईजीकी कृपा तें कृष्ण भटट करे. पाछें समै भयो तब किवाड़ खोलि राजभोग आर्ति करि अनोसर श्रीनवनीतप्रियजीकों कराइ श्रीगुसांईजी आप बाहिर पधारिकै अपनी बेठकमें बिराजे. ता समै कृष्ण भटट श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि पास बैठे. तब श्रीगुसांईजी तो सर्व बात जानत हते. परि तो हू श्रीगुसांईजी कृष्ण भटटसों पूछे, जो कृष्ण भटट ! तेरे श्रीठाकुरजी आछी भांति बिराजत हैं ? तब कृष्ण भटटने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराजकी कृपा तें श्रीठाकुरजी तो आछी भांति बिराजत हैं. परि मोकों आपके पास आवत समै या प्रकार श्रीठाकुरजी हठ करि रहे. तब श्रीगुसांईजी सुनिकै चुप करि रहे. पाछें श्रीगुसांईजी भोजन करिवेकों पधारे. तब कृष्ण भटटकों अपने साथ भोजनकों प्रभु भीतर लै पधारे. तब कृष्ण भटटसों श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो कृष्ण भटट ! तू घर क्यों नाहीं गयो ? तब कृष्ण भटटने कह्यो, जो महाराजकौ पत्र आयो हतो. तामें राज

लिखी हती, जो कृष्ण भटट ! तू बेगि आईयो. सो महाराजकी आज्ञा मैं कैसें लोपूं ? श्रीठाकुरजी तो मैं आपके बताए जाने हैं. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी प्रसन्न व्है कहे, जो ऐसें न करिए. श्रीठाकुरजी कहे सो करिए.

भाव प्रकाश :
क्यों ? जो श्रीआचार्यजी महाप्रभु 'विवेकधैर्याश्रय' ग्रन्थमें आज्ञा करे हैं. सो श्लोक

अभिमानश्च सन्त्याज्यः स्वाम्यधीनत्वभावनात् ।
विशेषतश्चेदाज्ञा स्यादन्तः करणगोचरः ।
तदा विशेषगत्यादि भाव्यं भिन्नं तु दैहिकात् ।

तातें ठाकुरकी आज्ञा प्रमान चलनो. यही सेवककौ धर्म है. परि कृष्ण भटटतो श्रीगुसांईजीके सेवक हैं. तातें श्रीगुसांईजीकी आज्ञा प्रमान चले. तब श्रीठाकुरजी हू प्रसन्न भए. और गाढी प्रीतिमें आज्ञाकौ उल्लङ्घन बाधक नाहीं, यहू जतायो.

वार्ता प्रसङ्ग ७:
और एक समै कृष्ण भटट घर न हते. तब नागजी भटट गोधराके आए. सो कृष्ण भटटके घर आए. तब नागजी भटटने कृष्ण भटटके श्रीठाकुरजीके दरसन किये. पाछें नागजी उन भटयानी सों कहे, जो तुम मोकों भीतर श्रीठाकुरजीके सिज्या मन्दिरमें श्रीपादुकाजी बिराजत हैं, तिन के कृपा करि दरसन करावो. तब उन भटयानीने नागजी भटटकों भीतर लै जाई कै श्रीपादुकाजीके दरसन कराए. तब नागजी श्रीपादुकाजीके दरसन करि दण्डवत् करि बोहोत प्रसन्न भए. ता पाछें कृष्ण भटटके घर नागजी महाप्रसाद लै कै चलन लागे. तब नागजीने भटयानी सों चलती बार श्रीकृष्ण स्मरन करि यह बचन कह्यौ, जो कृष्ण भटट जब घर आवें तब उनसों मेरो श्रीकृष्ण स्मरन कहियो. और यह कहियो, जो नागजी वैरागी आयो हतो. सो दरसन करि प्रसाद लै श्रीगोकुलकों गयो. सो नागजीके चले पाछें कृष्ण

भटट घरी आधकमें बाहिरतें घर आए. तब भटयानीने कृष्ण भटटसों ए समाचार कहे. जो नागजी वैरागी दरसन करि प्रसाद लै या प्रकार श्रीगोकुलकों गए. तब कृष्ण भटट अपने मनमें सोच करन लगे, जो नागजी वैरागी तो कोऊ मेरी पहिचानकौ वैष्णव नाहीं. तातें नागजी भटट गोधराके ही आए दीसत हैं. उन नागजी बिनु भीतरके दरसनकौ भेद कौन पावै ? जो आपु ही कहिकै श्रीपादुकाजीके दरसन करे. तब कृष्ण भटटने अपनी स्त्रीसों पूछी, जो उनकों चले कितनीक बार भई है? तब स्त्रीने कृष्ण भटटसों कही, जो घरी आधक भई है. सो सुनिकै कृष्ण भटट घर तें नागजी भटटकों मिलिवेकों चले. और नागजी कृष्ण भटटके घरतें निकसे. सो मारगमें जात बराबर पाछेंकों देखत जांइ. जो अब कृष्ण भटट आवत होंइगे. सो जब कृष्ण भटट घर तें निकसे तब नागजी भटटकी दृष्टि दूरितें कृष्ण भटटकों आवत देखे. सो नागजी भटट पहिचानकै वाही ठौर ठाढ़े होंइ रहे. पाछें जब कृष्ण भटटने नागजी भटटकों देखे तब दोऊ जन परस्पर चलिकै मिलि भेटें. सो दोऊनके मनमें अति आनन्द भयो. तब कृष्ण भटटने नागजीसों कही, जो तुमकों यों न चहिए. जो मोसों मिले बिना आए. तब नागजीने कृष्ण भटटसों कही, जो मोकों श्रीगोकुल उतावल ही जानो है. तातें तुम तें मिले बिना तिहारे घरतें निकस्यो. तब कृष्ण भटट बोहोत हठ करि नागजी भटटकों उहां तें पाछें फेरि अपने घर लिवाइ ल्याये. तब राजभोगके दरसन दोउ जनेंनने करे.

भावप्रकाश :

सो सनेहकी यह रीति है, जो सनेही अपने घर आवें तो मिले बिना रह्यो नांय जाई. सो कृष्ण भटट (और) नागजी भटटकौ आपसमें बोहोत सनेह है. तातें कृष्ण भटट नागजीकों बुलाइवेकों गए. सो पाछें घर बुलाइ ल्याये.

ता पाछें मन्दिरसों कृष्ण भटट पहोंचीकै बाहिर आए. तब नागजीसों कृष्ण भटटने कह्यो, जो नागजी भाई ! उठो प्रसाद लेहु. तब नागजीने कह्यो, जो मैं अब ही तो तुम्हारे घर तें बालभोगकौ प्रसाद लै कै निकस्यो हूं. तातें अब ही तो मोकों प्रसाद लेवेकी इच्छा नाहीं. तब कृष्ण भटटने नागजीसों बोहोत मनुहारि करिकै कही, जो थोरीसी सखड़ी लीजिये. तब नागजीकों लेवेकी रुचि तो हती नाहीं तोहू कृष्ण भटटके बोहोत आग्रह तें सखड़ी प्रसाद लीनो. पाछें प्रसाद लै दोऊ जन एक ठौर में एकान्त जाई बैठे. सो वा कोटडीके किवाड़ दै दोऊ जनें वार्ता करन लागे. सो जब दूसरे दिन भटयानीने राजभोग समर्प्यो तब इन पास भटयानी द्वारे ठाढ़ी होइ पुकारी, जो

श्रीठाकुरजीकों राजभोग आयो है. तातें उठो स्नान करो. तब ए दोऊ जन बाहिर आए. ऐसी दशा इनकी भगवद्वार्ता करत होइ गई. जो कछू देहानुसन्धान न रह्यो. और देहाध्यास इनकों व्याप्यो नाहीं. पाछें दोऊ जन दांतिन करि स्नान करि मन्दिरमें कृष्ण भटट जाई श्रीठाकुरजीकौ भोग सरायो. पाछें समै भयो तब नागजी श्रीठाकुरजीके दरसन करि श्रीपादुकाजीके दरसन करि अति प्रसन्न भए. पाछें दोउ जनें प्रसाद लै कै फेरि वाही ठौर बैठि भगवद्वार्ता करन लागे. सो वा दिन किवाड़ भीतरतें दीने हते. सो वार्ता करत तीसरे दिन उठे. भगवद् रसमें ऐसे मत्त भए, जो कछू देहानुसन्धान न रह्यो. इनकों कछू देहाध्यास व्याप्यो नाहीं. सो फेरि स्नान करि श्रीठाकुरजीकी सेवा करि प्रसाद लै वाई ठौर जाई दोउ जनें फेरि वार्ता करन लागे. सो वार्ता करत सातवें दिन उठे. सो ऐसी भांति भगवद् रससों दोउ जन छके रहे. सो एक बाईकौ प्रसङ्ग कहत हते. सो बाही रसमें छके दोउ जन उठि ठाढ़े भए. तब नागजीभाईने कृष्ण भटटसों कही, जो चलिए जो वा बाईके घरकों चलिए. सो ताके प्रथम दिन वा बाईसों श्रीठाकुरजी जनाए, जो सवारे तेरे घर कृष्ण भटट आदि छह वैष्णव आवेंगे. तासों तू सब सामग्री सवारि राखियो. सो वह बाई वा दिन सगरी सामग्री संवारि रसोईमें सिद्ध करि रसोई करि श्रीठाकुरजीकी सेवासों पहोंचि राजभोग समर्पिकै घरके द्वार उपर आई बैठी. सो कृष्ण भटटकौ मार्ग देखन लागी. इतने ही कृष्ण भटट आपु अकेले आए. पाछें वा बाईने श्रीकृष्ण स्मरन कियो. तब कृष्ण भटटसों वा बाईने पूछ्यो, जो और पांच वैष्णव कहां हैं ? तब कृष्ण भटट जान्यो, जो याकों श्रीठाकुरजी प्रथम ही जनाए हैं. जो तेरे घर छह वैष्णव आए हैं. तब कृष्ण भटट उन पास आई नागजी आदि सगरे वैष्णवनको लिवाइ आए. तब वह बाई सगरे वैष्णवनसों श्रीकृष्ण स्मरन करि अति आनन्द पाइ उन वैष्णवनकों अपने घर पधराए पाछें समै भए श्रीठाकुरजीकौ राजभोग सराइकै किवाड़ खोले. सो सगरे वैष्णव श्रीठाकुरजीके दरसन करि बोहोत प्रसन्न भए. पाछें वह बाई अनोसर करवाइकै इन सब वैष्णवनकों प्रसाद भली भांति सों लिवायो. ता पाछें ए सब वैष्णव वा बाईके घर वार्ता करन लागे. ऐसें वा बाईके घर चालीस दिन रहे. परि वार्ताके रसमें छके रहे. पाछें नागजी भाई उहां सों कृष्ण भटट पासतें बिदा होइ श्रीगोकुलकों चले. तब कृष्ण भटट अपने घर आए.

सो नागजी भटट केतेक दिनमें श्रीनाथजीद्वार आई श्रीनाथजीके दरसन करि तहां ते श्रीगोकुलमें आई श्रीगुसांईजीके दरसन करि दण्डवत् करे. पाछें नागजीसों श्रीगुसांईजी यह पूछे, जो नागिया ! तोकों मार्गमें दिन बोहोत भए ? तब नागजीने श्रीगुसांईजीसों दण्डवत् करि कृष्ण

भटटके सब समाचार कहे. तब श्रीगुसांईजी नागजीके बचन सुनिकै चुप करि रहे. पाछें फेरि श्रीगुसांईजी नागजीभाई सों कृष्ण भटटके कुसल समाचार पूछे. सो सर्व समाचार पूछे. सो सर्व समाचार कृष्ण भटटके नागजीभाईने श्रीगुसांईजीके आगें कहे. तब श्रीगुसांईजी कृष्ण भटटके कुसल समाचार पूछि कै श्रीठाकुरजीकी सेवाके समाचार पूछे. सो सर्व समाचार नागजीके मुख तें सुनिकै श्रीगुसांईजी कृष्ण भटटके उपर बोहोत प्रसन्न भए. ता पाछें एक दिना कृष्ण भटट श्रीगोकुल आइकै श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् किए.

वार्ता प्रसङ्ग ८ :
और एक समै उज्जैनिके सगरे वैष्णव मिलिकै कृष्ण भटटके घर आए. तब कृष्ण भटट अति आनन्दसों उन वैष्णवनसों श्रीकृष्ण स्मरन करिकै बैठारे. तब उन वैष्णवनने कृष्ण भटटसों रासकी बिनती करी. तब उन वैष्णवनसों कृष्ण भटट कहे, जौ रासकौ उत्सव तो ब्रजकौ है. तातें तुब ब्रजमें जाई रास देखि आवो. और ठौर रास बने नाहीं. तब उन वैष्णवन फेरि कृष्ण भटटसों बिनती करी, जो हमारो मनोरथ तो अब है, और ब्रज तो हमसों दूरि है. तासों हमकों आज्ञा होंई तो हम सब सामान रासकौ सिद्ध करि लावें. तब उन वैष्णवनकौ बोहोत आग्रह कृष्ण भटटने जान्यो. तब कृष्ण भटट उन वैष्णवनसों कहे, जो पूरनमासीके दिन रास तुम्हारे आग्रहतें करेंगे. सो जब पूरनमासी आई, सो ता दिन समस्त वैष्णव समाज लै कै आए. सो कृष्ण भटटने तब रास करवायो. सो सांझकों कृष्ण भटटने सब स्वरूपनकों सिंगार करवायो. पाछें श्रीठाकुरजीके स्वरूपकौ सिंगार करि उनके माथे मुकुट धरायो. तब सगरे स्वरूप सिद्ध भए. तब पास एक वैष्णव की लरिकिनी बैठी ही. तासों कृष्ण भटट कहे, जो तू इन सब स्वरूपनकों अंजन संवारि कै दै. सो वह वैष्णवकी लरिकिनी बोहोत ही विचित्र सुघर हती. तानें सब स्वरूपनकों अंजन आछी भांति संवारि दीनो. पाछें सर्व स्वरूपनकों मण्डलमें पधराइ कृष्ण भटट आछी भांति दरसन करि कै उन स्वरूपनकों पृथक् - पृथक् दण्डवत् करे. तब उन स्वरूपनमें साक्षात् पुरुषोत्तम (कौ) आवेस भयो. तब सगरे वैष्णव दण्डवत् करे.

भावप्रकाश :
सो पुष्टिमार्गकी यह रीति है, जो भावना तें स्वरूप पधारें. जैसें मर्यादामार्गमें वेदमन्त्रन तें आवाहन होत हैं, तैसेंइ पुष्टिमार्गमें भगवदीयनके भाव करि

स्वरूपकौ आविर्भाव होत है. सो श्रीआचार्यजी 'संन्यासनिर्णय' ग्रन्थमें कहे हैं. सो श्लोक

भावो भावनया सिद्धः साधनं नान्यदिष्यते ।

सो भावकी सिद्धि भावना तें ही होत है. तातें या मार्गमें भावना करि सब फलकी सिद्धि है. सो कृष्ण भटटके हृदयमें लीला सहित भावात्मक कृष्णाकी स्थिति हैं. तातें उनकी भावना तें लीला संयुक्त पुरुषोत्तमकौ आविर्भाव भयो. ऐसें जाननो.

ता पाछें वे सगरे स्वरूप नृत्यकौ आरम्भ करन लागे. सो वा समै अलौकिक नृत्य भयो. सो बाजेंइ बाजे, सो अलौकिक. सो वा समै अलौकिक दरसन भयो. सो सब वैष्णव अपने अपने मनमें बोहोत प्रसन्न भए. ऐसो अलौकिक सुख वा समै भयो. परि एक कृष्ण भटटके हृदयमें बोहोत खेद भयो. जो, हाइ ! मैं श्रीठाकुरजीकों बोहोत श्रम करायो. ऐसो बोहोत ताप कृष्ण भटटने अपने मनमें कर्यो. सो नेत्रन तें जलकौ प्रवाह चल्यो. सो श्रीठाकुरजी तो परम दयाल हैं. सो वा समै कृष्ण भटटकी बिनती मानी. सो सगरे वैष्णवन (कों) अलौकिक सुख दियो. ऐसें प्रभु भक्तवत्सल हैं. और जो लरिका मुख्य स्वरूप बन्यो हतो ताकों तीन दिन तांई अपने स्वरूपकी खबरि रही नाहीं. पाछें वह लरिका चौथे दिन सावधान भयो. पाछें दूसरे वर्ष फेरि वेही रासधारी आए. तब कृष्ण भटटसों उन वैष्णवनने कह्यो, जो वे रासधारी आए हैं. तातें तुम रास करवाओ तो आछी है. तब कृष्ण भटटने नाहीं करी. पाछें उन वैष्णवन मिलिकै रास करायो. परि वह सुख, सो न भयो. तब सब वैष्णव अपने मनमें जानें, जो यह कृष्ण भटट बिना सोभाकी रास और कौन दिखाइवे योग्य हैं ? यह निर्धार उन वैष्णव अपने मनमें कर्यो. सो वे कृष्ण भटट ऐसें भगवदीय हते.

वार्ता प्रसङ्ग ९ :

और एक समै वसन्त पञ्चमीके दिन थौरीसी चतुर्थी हती. सो कृष्ण भटटने जानी नाहीं. सो उज्जैनिमें वा दिन इन कृष्ण भटटने अपने घर श्रीठाकुरजीकों वसन्त पञ्चमीकौ मण्डान कर्यो. सो वा समै राजभोग सराइ अपने श्रीठाकुरजीकों कृष्ण भटट वसन्त खिलावत हते.

तब श्रीनाथजीद्वारामें श्रीगोवर्द्धन पर्वत उपर वा समै श्रीनाथजीकौ राजभोग सराइकै श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीकों बीरा अरोगावत हते. तब तहां श्रीनाथजीने रामदासजी भीतरियाकों वसन्त खेलके दरसन दिये. तब रामदासजी भीतरियाने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! आज श्रीनाथजी वसन्त कौनके घर खेले हैं ? तब श्रीगुसांईजीने रामदासजी भीतरियासों कही, जो आज वसन्त श्रीनाथजी उज्जैनिमें कृष्ण भटटके घर खेले हैं. ता पाछें केतेक दिनकों कृष्ण भटट उज्जैनितें श्रीगोकुल आई श्रीगुसांईजीके दरसन करि दण्डवत् करि आगें बैठे. तब श्रीगुसांईजी कृष्ण भटटसों पूछे, जो कृष्ण भटट अबके तुम वसन्त पञ्चमी कौनसे वार करी हती ? तब कृष्ण भटटने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! अमूके वारके दिन वसन्त पञ्चमी करी हती. तब श्रीगुसांईजीने कृष्ण भटट सों कही, जो वा दिन तो उदियात् थौरी चतुर्थी हती. ता दिन तुम अपने घर वसन्त श्रीठाकुरजीकों खिलाए. सो तुम्हारे घर श्रीनाथजी पधारिकै वसन्त खेले. सो ह्यां राजभोग सरावतमें मोकों श्रीनाथजी जनाए और रामदास भीतरियाकों दरसन दीने. तब रामदासजी आगें तुम्हारे नाम बताए. सो समाचार आज मिलै. तासों तुम तिथि विचारिकै उत्सव कर्यो करा.

भावप्रकाश :
क्यों ? जो श्रीआचार्यजीने सेवामें शास्त्रनकी मर्यादा हू राखी है. सो श्रीप्रभुनके उच्छव आदि आछै शुद्ध दिन घरी नक्षत्र देखिकै करने. काहेतें, जो श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु उत्तम वस्तूके भोक्ता हैं.

और वसन्त खेलमें श्रीप्रभुनसों रह्यो जात नाहीं. तातें श्रीआचार्यजीकौ सम्बन्ध हैं तहां दोरिकै जात हैं. सो श्रीगुसांईजी यह दिखाए, जो वा दिन श्रीनाथजीकों उज्जैनि पर्यन्त पधारनो पर्यो. तासों प्रभुनकों श्रम भयो.

और यहू जताए, जो स्नेह सहित जो सेवा करत हैं, ताकी सेवा निश्चय करिकै श्रीनाथजी आप अङ्गीकार करत हैं.

तब कृष्ण भटटने श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो महाराज ! अबके तो मैं बिना जाने कियो. अब या प्रकार न करूंगो. तासों अब तें तिथि

विचारिकै कर्यो करूंगो. ता पाछें श्रीगुसांईजी प्रति वर्ष तिथि पत्रमें सों उत्सव लिखिकै कृष्ण भटटके घर पठावते. ता प्रमान कृष्ण भटट अपने घर उज्जैनिमें उत्सव करते.

पाछें केतेक दिन कृष्ण भटट श्रीगुसांईजी पास रहिकै ता पाछें श्रीगुसांईजीसों बिदा होइकै अपने घर उज्जैनिकों आए. उन कृष्ण भटट उपर श्रीगुसांईजी या प्रकार कृपा करते. सो या प्रकार श्रीगुसांईजी समझाइकै कृष्ण भटटकों उपदेश करते.

सो कृष्ण भटट जहांलों श्रीगुसांईजी पास रहते, तहां लों नित्य मङ्गला आर्तिके दरसन करिकै श्रीयमुनाजीके पार जाते. सो 'वादके' तलाव उपर जाइकै देह कृत्य करि राजभोग समै श्रीगुसांईजी पास श्रीगोकुलमें आवते. या प्रकार कृष्ण भटट श्रीगुसांईजीके दरसनकों श्रीगोकुलमें आवते. या प्रकार कृष्ण भटट श्रीगुसांईजीके दरसनकों श्रीगोकुलमें रहते तहांलों ऐसें नित्य करते.

वार्ता प्रसङ्ग १० :
और एक समै कृष्ण भटट और निहालचन्दभाइ दोउ जन उज्जैनिसों श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजीके दरसनकों आए. सो श्रीगुसांईजीके दरसन करि बोहोत प्रसन्न भए. पाछें एक दिन कृष्ण भटट और निहालचन्दभाई दोउ जन श्रीगोकुलतें महावनकी और जात हते. सो एक गुफा एकान्त सी इन दोउन की दृष्टि परी. ता ठौर ए दोउ जन जाई बैठें. सो स्थल आछौ देखि उहां भगवद्वार्ता करन लागे. सो तीन दिवस होइ गए. वार्ताके रसमें कछू देहानुसन्धान रह्यो नाहीं. तब चौथे दिन राजभोग आर्ति करि श्रीगुसांईजी अपनी बैठकमें बिराजे. तब सगरे वैष्णव प्रभुन आगें दण्डवत् करन आए. तब उन वैष्णवनसों श्रीगुसांईजी पूछे, जो आज तीन दिनतें कृष्ण भटट और निहालचन्दभाई हू दोउ जन दीसत नाहीं. तब उन वैष्णवन श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! हम हू कों आज तीन दिनतें ए दोऊ जन दीसत नाहीं. तब श्रीगुसांईजी उन वैष्णवनसों कहे, जो तुम महावनकी और एक टीला पर चढि कै देखो. सो वे कहूं तिहारी दृष्टि परे तो उनकों इहां लिवाइ ल्याओ. सो वे वैष्णव श्रीगुसांईजीकी आज्ञातें महावनकी और उनकों देखिवेकों निकसे. सो एक टीला पर चढिकै देखे तो एक गुफा है. ताके आगें दोउ जन बैठे हैं. तब ए वैष्णवन इन दोउन पास जाई कहें, जो तुमकों श्रीगुसांईजी बुलावत हैं. आज चौथे दिन

तुम्हारी दोउनकी सुरत प्रभुन करी. सो उन वैष्णवनके बचन सुनत ही कृष्ण भटट और निहालचन्दभाई दोउ जन ताही समै श्रीगुसांईजी पास उन वैष्णवन साथ आई प्रभुनकों दण्डवत् करे. ता समै श्रीगुसांईजी भोजन करि बीड़ा अरोगत हते. इतनेइ ये आई दोऊ जन प्रभुनकों दण्डवत् करे. तब श्रीगुसांईजी इनसों पूछे, जो तुम आए ? तब इन प्रभुनसों बिनती कीनी, जो महाराज ! आप सुरत करें तब हम क्यों न आवें ? पाछें ए दोउ जन श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि अपुने डेरा आए. सो इनकौ भाव श्रीगुसांईजी जानि इनसों कछू पूछे नाहीं. सो श्रीगुसांईजी तो प्रभु हैं, अन्तर्यामी हैं. तातें ढूंढिवेकों उन वैष्णवनकों महावनकी और पठाए. पाछें वे निहालचन्दभाई और कृष्ण भटट श्रीगुसांईजी पासतें बिदा होइकै उज्जैनिकों आए. वे दोउ प्रभुनके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते.

वार्ता प्रसङ्ग ११ :
और श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुलमें श्रीसुबोधिनीजीकी कथा कहते. सो सर्व वैष्णव श्रीमुखकी कथा सुनते. तामें दोइ वैष्णव हते. सो उन वैष्णवनकों एक दिन सन्देह उपज्यो. तब उन वैष्णवनने श्रीगुसांईजीसों पूछ्यो, जो महाराज ! हम आपके श्रीमुखतें कथा सुनी. परि कछू समझ परी नाहीं. सो कहा कारन है ? जो हमारो सन्देह निवृत्त होइ ? या ठौर यह कैसें हैं ? तब उन वैष्णवनसों श्रीगुसांईजीने कह्यो, समझायो, उत्तर हू कर्यो. परि तोहू उन वैष्णवनकौ सन्देह निवृत्त न भयो. तब उन वैष्णवनकों श्रीगुसांईजी आज्ञा करे, जो तुम कृष्ण भटट पास दोउ जन जाउ. वे तिहारो सन्देह निवृत्त करेंगे. तब दोउ वैष्णव श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मांगिकै कृष्ण भटट पास उज्जैनिकों चले. सो जाई पहोंचे. सो जा समै ये दोउ वैष्णव कृष्ण भटटके घर गए ता समै कृष्ण भटट अपने श्रीठाकुरजीकों राजभोग धरि तिवारीमें बैठे पाठ करत हते. तहांसों कृष्ण भटट उठिकै भेटे. और कृष्ण भटट इन दोउ वैष्णवनकों प्रभुनके पठाए जानिकै अपने मनमें बोहोत प्रसन्न भए. पाछें इनसों कृष्ण भटट श्रीकृष्ण स्मरन करिकै इनकों बैठारे. तब कृष्ण भटटने अकस्मात् एक श्लोक श्रीभागवतकौ कह्यो. सो ता श्लोककौ व्याख्न आपही तें उन दोउ वैष्णवनकों देखिकै कह्यो. ताकौ भाव कह्यो. सो सुनत ही उन वैष्णवनकौ सन्देह निवृत्त भयो.

भावप्रकाश :

या वार्तामें यह सन्देह है, जो श्रीगुसांईजीके समझाए तें उन वैष्णवनकौ सन्देह न गयो. और कृष्ण भटटके कहेतें सन्देह निवृत्त भयो, ताकौ कारन कहा ? तहां कहत हैं, जो वह कथा श्रीभागवत दशमस्कन्ध 'वेणुगीत'के प्रसङ्गकी ही. ताकौ श्लोक

बर्हापीडं नटवरवपुः कर्णयोः कर्णिकारम् ।
बिभ्रद्वासः कनककपिशं वैजयन्तिं च मालाम् ।।

सो या श्लोककौ श्रीगुसांईजी आप व्याख्यान किये. सो भगवत्स्वरूप परक किये. परि उन वैष्णवनकी तो श्रीगुसांईजीके स्वरूपमें आसक्ति है. तातें सन्तोष नाहीं भयो. सो सन्देह रह्यो. तब श्रीगुसांईजी उन वैष्णवनकों कृष्ण भटट पास भेजें. सो कृष्ण भटट अकस्मात् या श्लोककों श्रीगुसांईजी परक किये. सो कैसें ? जो या श्लोकमें उद्‌बुद्ध सिंगारकौ वरनन है. सो उद्‌दीपन रूप है. सो कृष्ण भटटने उद्‌दीपन भावसों श्रीगुसांईजीके स्वरूपकौ नीकी भांति वरनन कियो. सो कृष्ण भटटके हृदयमें श्रीगुसांईजी आप बिराजत हैं. तातें इन द्वारा श्रीगुसांईजी आप उन वैष्णवकों अपनो अलौकिक स्वरूप जतायो. तब उन वैष्णवनकौ सन्देह निवृत्त भयो.

तब दोउ वैष्णव सुनिकै अपने मनमें बोहोत प्रसन्न भए. पाछें कृष्ण भटट भोग सरावन मन्दिरमें गए. सो भोग सराइ बीरा अरोगाइ किवाड़ खोले. तब वे वैष्णव दरसन करि बोहोत प्रसन्न भए. पाछें कृष्ण भटट आर्ति करि श्रीठाकुरजीकों अनोसर कराइकै इन वैष्णवनकों प्रसाद लिवाए. तब दोउ वैष्णव कृष्ण भटटसों बिनती करे, जे कृष्ण भटटजी ! हम तो श्रीगोकुलकों जाइंगे. तब उन वैष्णवनसों कृष्ण भटटने कह्यो, जो वैष्णव तुम आज ही आए और आज ही चलिवेकौ विचार करत हो ? तब उन वैष्णवन कृष्ण भटटसों कही, जो हम जा कारन आए हते सो कारन तो हमारो पूरन भयो. तब कृष्ण भटटने उन वैष्णवनसों कह्यो, जो वह बात तुम हमसों कहो. तब उन वैष्णवन कृष्ण भटट आगें सर्व अपने समाचार विस्तार पूर्वक सों कहे. पाछें कृष्ण भटट उनसों बिनती करि दिन चारि उन वैष्णवनकों अपने पास राखे. सो उन वैष्णवनसों मिलिकै कृष्ण भटट वार्ता प्रसङ्ग करते. तब वे वैष्णव बोहोत प्रसन्न अपने मनमें होते. पाछें वे वैष्णव कृष्ण भटटसों बिदा मांगिकै श्रीगोकुल आई कछू दिनमें श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करे. तब श्रीगुसांईजी उन पर प्रसन्न होइ कै यह

बचन श्रीमुखतें प्रभु वा समै कहे, जो तुम्हारो सन्देह निवृत्त भयो ? पाछें वे दोउ वैष्णवनने साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै कह्यो, जो महाराज ! आपकी कृपातें निवृत्त भयो. पाछें दोउ वैष्णव एकाग्र मनसों श्रीगुसांईजीकी कथा सुनिवे आवते. ता पाछें अपने कोटड़ीमें दोउ जनें आई आपुसमें वरनन वा कथाकौ करते.

सो वे कृष्ण भटट श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते.

वार्ता प्रसङ्ग १२ :
और एक समै परदेसी वैष्णव दसबीस मिलिकै कृष्ण भटटके घर आए हते. तहां परदेसमें उन वैष्णवन सुनी हती, जो कृष्ण भटटके घर श्रीठाकुरजी मांगि - मांगि कै अरोगत हैं. तातें वे सब वैष्णव मिलिके कृष्ण भटटके घर उज्जैनिमें आए. तब सब वैष्णव कृष्ण भटटसों श्रीकृष्ण स्मरन करिकै बैठे. सो इतनेइमें श्रीठाकुरजीकौ राजभोग सर्यो. तब उन सब वैष्णवन श्रीठाकुरजीके दरसन किये. ता पाछें कृष्ण भटट श्रीठाकुरजीकी राजभोग आर्ति करिकै आपु बाहिर आए. तब कृष्ण भटटने उन सब वैष्णवनसों कह्यो, जो तुम सब उठो, महाप्रसाद लेउ. तब सब वैष्णव उठिकै स्नान किये. पाछें वे सब वैष्णव स्नान करिकै प्रसाद लैनकों बैठे. ता समै कोऊ वैष्णव तो कछू मांगे और कोऊ वैष्णव कहे, जो अमूकी वस्तु तो बोहोत आछी भई है. और प्रसाद लैत ही जांइ.

और वैष्णवन यह बात परदेसमें सुनी हती, जो कृष्ण भटटके इहां श्रीठाकुरजी मांगि - मांगि कै अरोगत हैं. सो एक वैष्णवने कृष्ण भटटसों पूछी, जो हमने सुनी हैं, जो तिहारे इहां श्रीठाकुरजी मांगि - मांगि कै अरोगत हैं. तब कृष्ण भटटने कह्यो, जो ये सब वैष्णव मांगि - मांगि कै लेत हैं सो कहा तुम देखत नाहीं ? इन वैष्णवनके हृदयमें श्रीठाकुरजी आपु बैठे हैं. सो वे ही मांगि - मांगि के लैत हैं. तातें या प्रकार सों श्रीठाकुरजीको मांगनो जाननो.

भावप्रकाश :

सो जाकौ अन्तःकरन कोमल होइगो, और शुद्ध होइगो, अरु जाकों श्रीपूरनपुरुषोत्तमकी कृपा होइगी, सोई यह बात जानेगो. तातें यह भाव, बिना कृपा जान्यो न जांइ. यह तो महा कठिन बात है. और कृष्ण भटटके सेव्य श्रीठाकुरजी हैं. सो तो इन कृष्ण भटटसों मांगि - मांगि कै लेत हैं. अरु बातैं करत हैं. सो तो कृष्ण भटट जाने, और जा उपर श्रीगुसांईजीकी कृपा होइगी सोई जानेगो.

सो कृष्ण भटट श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते.

वार्ता प्रसङ्ग १३ :
बहौरि एक समै चाचा हरिवंशजी और कृष्ण भटट रात्रिकों एकान्तमें बैठिके भगवद्वार्ता करत हते. ता समै कृष्ण भटटने चाचा हरिवंशजीसों कही, जो कहूं सोंधाकी सुवास आवत हैं. तब चाचा हरिवंशजीने कही, जो यहां कहूं वह छेल चिकनिया आयो होइगो. यह सुगन्ध तो उन ही की है.

भावप्रकाश :
सो या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णव (जब) जहां एकान्तमें बैठिकै भगवद्वार्ता करत हैं, तहां श्रीनाथजी आप निश्चय पधारत हैं. क्यों ? जो श्रीगोवर्द्धननाथजी आप वैष्णवनकी वार्ता सुनिवेकै बड़े व्यसनी हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १४ :
बहौरि एक समै श्रीगुसांईजी उज्जैनि पधारे. सो उज्जैनिमें कृष्ण भटटके घर पधारे. सो ता समै कृष्ण भटटके घर दस पन्द्रह ब्राह्मन जुरिकै आए हते. सो वे वेदोक्त कर्म करत हते. सो उन ब्राह्मनन श्रीगुसांईजीसों पूछ्यो, जो महाराज ! कृष्ण भटट वेदोक्त कर्म नाहीं करत हैं, और हम ब्राह्मन होइकै इनके पात्र छूवैं तब वे पात्र काढ़ि डारत हैं. और महाराज ! ये हू गृहस्थ हैं और हम हू गृहस्थ हैं. जैसें हमारे सन्तति, संसार व्यवहार सब होत हैं, सो ऐसें इनके हू सब होत हैं. सो महाराज ! कृष्ण भटट भेले क्यों नाहीं भए ? सो याही

भांतिसों उन ब्राह्मनन श्रीगुसांईजीसों पूछे. तब श्रीगुसांईजी उन ब्राह्मननकों इतनो उत्तर दियो, जो श्रीठाकुरजीकी सेवा करत इन ब्राह्मननकौ वेदोक्त कर्म रहि जात हैं सो उनके पलटे तिनके ऋषिश्वर जो हैं वे कर्म करत हैं. तहां ऐसो बचन है

तस्य कर्म ये कुर्वन्ति तस्य कोटि महेश्वराः ।

यह वाक्यतें (जो) वैष्णव ब्राह्मन भगवद्सेवा करत है, तिनके सर्व कर्म ऋषिश्वर करत हैं. और हम कर्म करत हैं, सो कौनके लिये करत हैं ? तहां दृष्टान्त

जो कोईकौ लरिका है. और वाकों यज्ञोपवित दियो है. अरु वाकों सन्ध्या सिखाइ है. ता पाछें वाकों सन्ध्याके समै सन्ध्या कराए. तहां लिखे हैं, जो यह लरिका सात दिन तांई सन्ध्यावन्दन नाहीं करे तो वाकों शूद्रवत् जाननो. तहां ऋषिश्वरनकौ वाक्य (यहू) है, जो यह लरिका शूद्र नहीं होंइ. क्यों, जो यह लरिकाकौ यज्ञोपवित दीनो हैं. ताकौ देवेवारो तो सन्ध्यावन्दन करत है. तातें वह लरिका शुद्रवत् नाहीं होंइ.

भावप्रकाश :
याकौ आसय यह है, जो श्रीगुसांईजी जितने वेदोक्त कर्म करत हैं वे सब अपने सेवकनके लिये ही करत हैं. क्यों, जो वैष्णव सेवामें रात्रि दिन तत्पर रहत हैं. तातें उनतें वेदोक्त कर्म नाहीं बनि आवे हैं. सो उनके (लिये) श्रीगुसांईजी आपु करत हैं. सो श्रीगुसांईजी सर्वोत्तममें श्रीआचार्यजीकौ नाम कहे हैं, जो ‘स्वदासार्थेकृताशेषसाधनः’. सो यह भाव जाननो. तातें ब्राह्मन - वैष्णवकों भगवत्सेवाके समै वेदोक्त कर्म न बनि परें तो कछू बाधक नाहीं है. तातें भगवत्सेवा सर्वोपरि है. वासों अवकाश मिले तब वेदोक्त कर्म करने. यह मार्गकी रीति है.

और उन ब्राह्मननकों उत्तर दीनो, जो ‘‘भोर भए जानिए’’ सो ता समै श्रीगुसांईजी इतनो ही कहे. तब उन ब्राह्मनन अपने मनमें विचार

कियो, जो भोर भए जानिए सो कहा ? पाछें कृष्ण भटटने श्रीगुसांईजीसों पूछ्यो, जो महाराज ! भोर भए जानिए सो कहा ? तब श्रीगुसांईजीने कृष्ण भटटसों कह्यो, जो एक बडो घर है, और रात्रि अंधियारी है. सो ता घरमें केतेक मनुष्यनकों दीसत है. और केतेक मनुष्य तो रात्रिके अंध हैं. सो जब सूर्य उदय होइगो तब देखेंगे. सो तैसे ही यह संसार है. तातें याकों तो भगवदीय होइगो सो देखेगो. और जाके भगवद् सम्बन्ध है सो तो संसार छोरिकै जाईगो. और जाके भगवद् सम्बन्ध नांही है सो तो या संसारमें रहेगो. सो इतनो कहिकै श्रीगुसांईजी आपु पोढें.

भाव प्रकाश :

यामें यह जतायो, जो जाकों ज्ञान नाहीं सो तो अन्ध है. उनकों निकटकी वस्तू हू दीसत नाहीं. और जो ज्ञानी है उनकों सब ज्ञान है. वे शास्त्रनके भीतर हू के भेदकों समुझत हैं. सो ''भोर भए जानिए'' ताकौ अर्थ यह, जो ज्ञान व्है तब हृदयमें प्रकाश होंइ. जब सब बात आप ही तें स्फुर्द होइगी. तातें भगवत्सेवा ऐसो पदार्थ है. जिनके आगें लौकिक वैदिक सब तुच्छ हैं. सो भगवत्सेवाकौ ऐसो माहात्म्य श्रीगुसांईजी आप कृष्ण भटटकों समुझाए.

वार्ता प्रसङ्ग १५ :

और जब कृष्ण भटट और चाचा हरिवंशजी मिलते तब भगवद्वार्ताकौ प्रसङ्ग करते. सो प्रसङ्गमें दिन दोइ तीन बीति जाते. परि वे जानत नाहीं. और उन दोउ जनेंनकों देहानुसन्धान कछू न रहतो. तब ता समै कृष्ण भटटकी स्त्री श्रीठाकुरजीकी सेवा सम्बन्धी कार्य करती. और जब कोऊ वैष्णव ऊहां आवतो, तब वेई वैष्णव कृष्ण भटट तथा चाचा हरिवंशजीकों सावधान करते. तब दोउ जनें सावधान होइकै भगवद् वार्ताके आवेसमें तें उठते.

भावप्रकाश :

यामें यह जतायो, जो भगवद् वार्ता ऐसो पदार्थ है. जातें देहाध्यास हू छूटि जात है. तातें भगवद्वार्ता भगवदीयके साथ मिलिकै नित्य करनी.

सो या भांति सों उन दोऊ जनैनके उपर श्रीगुसांईजी आप बोहोत ही प्रसन्न रहते. तातें वे कृष्ण भटट श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे.

वार्ता प्रसङ्ग १६ :

और एक समै उज्जैनिमें कृष्ण भटटके सरीरकों कष्ट बोहोत भयो. तब तहां वैष्णव दोइ चारि कृष्ण भटटके देखिवेकों आए. तिन वैष्णवनसों कृष्ण भटटने कह्यो, जो भाई ! तुम मोकों श्रीगोकुल लै चलो. मैं श्रीगुसांईजीके, बालकनके तथा श्रीनाथजीके दरसन करूंगो. तब मेरो मन प्रसन्न होइगो. तब कृष्ण भटटके बेटा गोकुल भटट एक डोली करि ल्याये. तामें कृष्ण भटटकों बैठारि श्रीगोकुलकों चले. सो उज्जैनि तें मजलि चार कृष्ण भटटकों ले आए. तहां एक 'लहरज' गाम हतो. तहां कृष्ण भटटकी देह छुटी. तब कृष्ण भटटतो लीलामें प्राप्त भए. सो गोकुल भटट अपने मनमें बोहोत खेद करन लागे. और अपने मनमें कहे, जो कृष्ण भटट सारिखे वैष्णवकौ यों क्यों होइ ? जो ये श्रीगोकुल पहोंचते तो आछौ हतो. नांतर अपने श्रीठाकुरजीके सन्निधान ही रहते. या प्रकार गोकुल भटट पश्चात्ताप करन लागे.

सो दुःख बोहोत ही भयो. पाछें गोकुल भटट कृष्ण भटटकौ संस्कार करिकै तहां सों अपने घर उज्जैनिकों फिरि चले, सो घर आए. पाछें इनकी क्रिया सब गोकुल भटटने आछी भांति करी.

भावप्रकाश :

और जा दिन कृष्ण भटटकी देह छुटी ता दिन श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ सिंगार श्रीगोकुलनाथजी करत हते. सो ताही समै कृष्ण भटटकी देह छुटी. सो सिंगार करत समै ही कृष्ण भटट दरसनकों आए. सो कृष्ण भटट श्रीनाथजीकों दण्डवत् करी. तब श्रीगोकुलनाथजीने कृष्ण भटटसों पूछी, जो कृष्ण भटट तुब कब आए ? तब कृष्ण भटटने श्रीगोकुलनाथजीको दण्डवत् करि बिनती कीनी, जो महाराज ! हों अब ही आयो हूं. तब श्रीगोकुलनाथजी श्रीनाथजीकों सिंगार करि आरसी दिखाई. पाछें गोपीवल्लभ भोग धरिकै रसोईकी दिस बाहिर आए. तब रामदासजी भीतरियासों श्रीगोकुलनाथजी पूछे, जो रामदासजी ! कृष्ण भटट

आए हैं सो कहां है ? तब रामदासजीने श्रीगोकुलनाथजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! कृष्ण भटटकों श्रीनाथजीके मन्दिरमें जात तो देखे, परि मन्दिरके बाहिर निकसत तो उनकों न देखे. तब श्रीनाथजीके मन्दिरसों पहोंचि कै आपु श्रीगोकुलनाथजी भोजन करि उज्जैनिकों गोकुल भटटके नामकौ पत्र लिखिकै अपनो घरू एक ब्रजवासी पठायो. ता पत्रमें श्रीगोकुलनाथजीने यह लिख्यो, जो अमूक दिन कृष्ण भटट या समै श्रीनाथजीके मन्दिरमें आए हे. सो मन्दिरमें जात तो देखे और फेरि देखे नाहीं. सो कहा समाचार है ? सो वह पत्र लैकै ब्रजवासी उज्जैनिमें जाई पहोंच्यो. तब ब्रजवासीने वह पत्र गोकुल भटटके घर जाई गोकुल भटटके हाथमें दियो. सो पत्र गोकुल भटट माथे चढाइ दण्डवत् करिकै बांचे. तब गोकुल भटट अपने मनमें बोहोत प्रसन्न भए. और वह सन्देह गोकुल भटटकौ निवृत्त भयो. पाछें वा ब्रजवासीकौ गोकुल भटटने बोहोत सन्मान कर्यो. ता पाछें गोकुल भटट श्रीगोकुलनाथजीकों वा पत्रकौ प्रतिउत्तर लिख्यो. ता पत्रमें गोकुल भटटने बोहोत बिनती लिखि पठाई. और कछूक भेंट पठाई.

और जा दिन गोकुल भटटने यह पत्र प्रभुनकौ बांच्यो. ता दिन बड़ी उत्सव गोकुल भटटने अपने घर कर्यो. और बोहोत वैष्णव वा दिन प्रसाद लेवेकों अपने घर बुलाए. उन वैष्णवन (हू) बोहोत उत्सव कर्यो. पाछें सगरे वैष्णवन भेंट करी. तब गोकुल भटट हू भेंट करिकै सब भेंटकी हुंडी कराइकै वा ब्रजवासीकों दै कै वा ब्रजवासी हू कौ गोकुल भटटने आछी भांति सामाधान कियो. सो कछूक दिनमें वा ब्रजवासीने श्रीगोकुलमें आई श्रीगोकुलनाथजीकों वह पत्र दियो. सो पत्र बांचिकै श्रीगोकुलनाथजी बोहोत प्रसन्न भए. पाछें फिरि वा पत्रकौ प्रतिउत्तर श्रीगोकुलनाथजीने गोकुल भटट, गोविन्दभटटके नाम कौ लिखि पठायो.

सो कृष्ण भटटके दोइ बेटा गोकुल भटट, गोविन्द भटट हे. सो बडे भगवदीय हे. सो गोकुल भटट अहर्निश श्रीसुबोधिनी देखते. और गोविन्द भटट श्रीआचार्यजी कृत कारिका श्रीसुबोधिनी (की) अहर्निस देखते. और कृष्ण भटटकी स्त्री भटयानी रसोई कर्यो करती. सो श्रीठाकुरजीकी सेवामें अहर्निस मगन रहती. सो वह ऐसी भगवदीय हती, जो श्रीठाकुरजी वासों बोहोत सानुभावता जतावते.

भाव प्रकाश :
काहेतें ? ये भटयानी लीलामें 'महीनन्द' हैं, तिनकी स्त्री हैं. 'वसुधा' इनकौ नाम है. सो इनकौ श्रीठाकुरजीमें बालभाव है. तातें यहां हू बालभावसों

श्रीठाकुरजीकी सेवा करति है.

सो जैसें लौकिक लरिका खांइ खेलें और भुख लगे तब रोटी मांगे, और प्यास लगे तब पानी मांगे, तैसें ही श्रीठाकुरजी इन तें मांगते. ऐसी कृपा श्रीठाकुरजी भटयानी उपर करते.

और जा भांति श्रीआचार्यजी महाप्रभु पद्मारावलके उपर कृपा करते, ऐसी कृपा अब श्रीगुसांईजी कृष्ण भटट उपर करे. सो वे कृष्ण भटट श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे. तातें इनकी वार्ता अनिर्वचनीय है. सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२।।

३-चाचा हरिवंशजी क्षत्री

अब श्रीगुसांईजीके सेवक चाचा हरिवंशजी क्षत्री पूरबके, पटनाके पास कोस दोइ पर एक गाम है, तहां रहते, तिनको वार्ताकौ भाव कहत है

भावप्रकाश :
ये चाचा हरिवंशजी राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'चन्द्रकला' हैं. सो चन्द्रकला ललिताजी तें प्रगटी हैं तातें इनके भावरूप हैं. इन पर श्रीचन्द्रावलीजीकी बोहोत प्रीति हैं. काहेतें ? ये अन्तरङ्ग सखी हैं, दूति कार्यमें बोहोत प्रवीन हैं. चन्द्रकी कला जैसो इनकौ प्रकाश है. तातें इनकां देखिकै सब भक्त अरु ठाकुर आप हू मोहित होत हैं. सो चन्द्रकला श्रीठाकुरजी अरु भक्तनकौ मिलाप करावति हैं, रतिकौ हू बढावति हैं. सो ये रतिपथकौ विस्तार करनहारी हैं. तातें यहां हू चाचा हरिवंशजी द्वारा मार्गकौ विस्तार भयो है. सो क्यों जानिए ? जो चाचा हरिवंशजीकी बिनती सों श्रीगुसांईजी आप 'शृङ्गाररसमण्डन' आदि मार्गके प्रकाशके ग्रन्थ किये. और चाचा हरिवंशजीकी आचार - क्रिया देखिकै बोहोत से दैवी जीव मोहित व्है व्है सरनि आए. सो इनकौ ऐसो प्रभाव, जो ये जा मार्ग व्है निकसते तहांके अनेक जीव सरनि आवते.

और श्रीगुसांईजीने चाचा हरिवंशजीकों नाम सुनाइवेकी आज्ञा दीनी है. तातें इनने बोहोत वैष्णव किये हैं. सो या प्रकार इन द्वारा मार्गकौ विस्तार भयो जानिए.

ये पूरबमें पटनाके पास कोस दोइ पर एक क्षत्रीके घर जन्में. सो वा क्षत्रीके चारि बेटा हे. तामें चाचाजी सब तें छोटे हे. सो ये बरस पांचके भए तब इनके माता पिता मरे. सो ये बोहोत पढ़े नाहीं. इनकौ ब्याह हू भयो नाहीं. सो जनम ही सों बाल ब्रह्मचारी, गृहस्थाश्रम कछू जानत नाहीं. सो जहां कथा वार्ता होंई तहां जांइ. ऐसें करत चाचा हरिवंशजी बड़े भए. तब अकेले तीरथकों चले. सो कासीजीमें आए. तहां बोहोत दिनलों साधु - सन्यासीनकौ सङ्ग कियो. परि चित्तमें व्यग्रता रहे. कछू चैन परे नाहीं. रात्रि - दिन भगवानकी प्राप्तिकी चिन्ता लगी रहे.

ऐसें करत कछूक दिनमें श्रीगुसांईजी कासीजी पधारे. तहां एक दिन श्रीगुसांईजी आप 'मनिकर्निका' घाट पर स्नान करन पधारे. ता समै तहां सन्यासीन तें शास्त्रार्थ भयो. सो बात आगें (?) कहि आए हैं. सो ता समै चाचाजी श्रीगुसांईजीके दरसन पाए. सो वा शास्त्रार्थमें सन्यासी निरुत्तर भए. सो देखिकै चाचाजी श्रीगुसांईजीके निकट आए. पाछें चाचाजी श्रीगुसांईजीकौ तेज - प्रताप देखि बिनती किये, जो महाराज ! कृपा करि मोकों भक्तिमार्गमें अङ्गीकार करिए. हों बोहोत दिनलों भटक्यो. बोहोत साधु पुरुषनकौ सङ्ग हू कियो. परि चित्तमें चैन अबलों नहीं पायो. आज आपके दरसन करत ही चित्त प्रसन्न होत है. आपके वचनामृत सुनिकै अलौकिक आनन्द होत है. तातें आप अनुग्रह करि मोकों अङ्गीकार करिए. तब श्रीगुसांईजी चाचा हरिवंशजीकों आज्ञा किए, जो चाचाजी ! हम तो तुम्हारे लिए ही यहां लों आए हैं. तुम काहू बातकी चिन्ता मति करो. गङ्गाजीमें स्नान करो. हम तुमकों जल ही में सरनि लेइंगे. पाछें चाचाजीकों गङ्गाजीमें स्नान कराइ, श्रीगुसांईजी आप चाचाजीकों जल ही में नामनिवेदन कराए. तब चाचाजीकों श्रीगुसांईजीके स्वरूपकौ ज्ञान भयो. पाछें श्रीगुसांईजी उनकों अपने सङ्ग राखे. सो श्रीगुसांईजीकी कृपा तें चाचाजी पुष्टिमार्गके आचार क्रिया आदि सब सीखे. सो पुष्टिमार्गकौ धर्म, सिद्धान्त आदि सब हृदयारूढ भयो. सो ऐसी कृपा श्रीगुसांईजी आप चाचाजी उपर किये. पाछें श्रीगुसांईजी चाचाजीसों नित्य एकान्तमें भगवद् वार्ता करते. सो श्रीगुसांईजीके अनुग्रहतें चाचाजीमें भगवद् रसको आवेश निरन्तर रहतो. तामें ये अहर्निश छके रहते. सो इन न्यारी श्रीठाकुरजीकी सेवा पधराई नाहीं. सो श्रीगुसांईजीकी आज्ञासों परदेस जाते, श्रीनाथजीकी भेंट लावते. और वैष्णवनकों मार्गकौ स्वरूप, रहस्य आदि सब कहते.

और जैसें श्रीआचार्यजी महाप्रभुननें श्रीगोपीनाथजी श्रीगुसांईजीकों मार्गकी शिक्षा देवेकों अपनी पाछें दामोदरदास हरसानीकों राखे हे, ता प्रकार श्रीगुसांईजीने सात बालकनकों मार्गकौ रहस्य समझाइवेके तांई चाचाजीकों भूतल पर राखे. सो चाचाजी श्रीगुसांईजीके तिरोधान पों बालकन तें कथा सुनिवेके मिष तें उनकों मार्गकी रहस्यवार्ता कहते. सो सातों बालक और श्रीगुसांईजीके सगरे परिवारके चाचाजी की बोहोत कानि राखते. सो चाचाजी बोहोत बरसलों भूतल उपर रहे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वे चाचा हरिवंशजी बोहोत वृद्ध हते. तातें उनसों सब कोऊ चाचा कहते. सो एक समै चाचा हरिवंशजीकों श्रीगुसांईजीने अड़ेल तें गुजरातकों पठाए. तब ता समै श्रीगुसांईजी अड़ेलमें रहत हते, तहां तें पठाए. तब चाचा हरिवंशजीने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! मैं राजके चरन - कमल छोरिकै कहां जाऊं ? मैं राजके बिना कहां रहूंगो ? तब श्रीगुसांईजीने चाचा हरिवंशजी सों कह्यो, जो तुम गुजरातमें राजनगर 'असारुवा' में नित्य भाइला कोठारी सों मिलत रहियो. मैं तुमकों ऊहां नित्य दरसन देऊंगो.

भाव प्रकाश :
काहेतें ? जो भाइला कोठारीकी आसक्ति श्रीगुसांईजीमें दृढ़ है. तातें उनके भावतें श्रीगुसांईजी आप ऊहां नित्य बिराजत हैं. और दूसरो यहू अभिप्राय है, जो चाचाजीके सङ्गसों भाइला कोठारीके भावकौ पोषन हू होइगो. तातें श्रीगुसांईजी आप चाचाजीकों ऊहां पठाए.

तब चाचा हरिवंशजी श्रीगुसांईजीके बचन सुनिकै श्रीगुसांईजी सों बिदा होइकै गुजरातकों चले. सो राजनगर आए. सो माला प्रसाद चरनोदक सब वैष्णवनकों दिये. तहां ते 'असारुवा' में आए. सो भाइला कोठारीके घर उतरे. तहांके सब वैष्णव चाचाजीकों मिलिवेकों आए. सो चाचाजीकों देखिकै बोहोत प्रसन्न भए.

भाव प्रकाश :

काहेतें ? जो चाचाजीमें श्रीनाथजी श्रीगुसांईजीकी अङ्गीकति कौ सम्बन्ध दृढ़ हैं. तातें उनकों देखिकै वैष्णवनकों श्रीनाथजी श्रीगुसांईजीकी सुधि आई. सो बोहोत प्रसन्न भए. तातें प्रीतिकौ यही लक्षन है, जो अपने सनेहीकौ रञ्च हू सम्बन्ध दीसे तहां दौरिकै जांइ.

पाछें चाचा हरिवंशजीने तहांके सगरे वैष्णवनकों प्रसाद दिये. कछूक दिन 'असारुवा'में चाचाजी रहे. सो भाइला कोठारीके घर नित्य श्रीगुसांईजी चाचा हरिवंशजीकों दरसन देते. पाछें वा ठौरके सब वैष्णवन भेंटकौ द्रव्य भेलो करि चाचा हरिवंशजीकों सोंप्यो. तब भाइला कोठारीसों चाचाजी पूछे, जो उत्तम वस्तू बरास, चोवा, अगल, आछी ये सामग्री कहां पाइए ? और तहां उत्तम वस्तू होंइ तो श्रीठाकुरजीके लिये लै जाईए. तब कोठारीने चाचाजीसों कह्यो, बोहोत उत्तम और सब वस्तू तो खम्भाइचमें पाइए ! सो चाचाजी पास द्रव्य भेंटकौ हतो ताकी हुंडी कराइ चाचाजी खम्भाइचकों चले. सो खम्भाइच जाई पहोंचे. सो खम्भाइच तें थोरी सी दूरि 'नारायनसर' तलाव है. तहां चाचा हरिवंशजी आए. सो 'नारायनसर' तलाव पर उतरे. चारि वैष्णव चाचा हरिवंशजीके साथ हते. तहां रसोई करि भोग समर्पिकै महाप्रसाद लियो. रात्रि समै सोइ रहै. प्रातः काल देह कृत्य, न्हाइ, तिलक करि नरगमें आए. सो सब नगरमें फिरे परि वैष्णव कोऊ चाचाजीकों न मिल्यो. सो वहांके लोगनसों चाचाजी पूछन लागे, जो यहां भलो मनुष्य इतबारी सांच बोलतो कोनसो है ? यह माधौदास सों चाचाजी पूछे. तब माधौदास दलाली करते. सो माधौदासने चाचाजीसों कह्यो जो जैसो तुम पूछत हो तैसो तो एक बजाज है. तातें तुम मेरे साथ आओ तो मैं तुमकों वाकी हाट बताऊं. सो माधौदास चाचाजीकों सहजपाल दोसीकी हाट पर लै गए. तहां चाचाजी आई बैठे. सो चाचाजीकां जो जो ऊंची वस्तू चहियत हती सो सब सहजपाल दोसीने चाचाजीकों दिखाई. तामें जो कछू चाचाजीकों रुची सो लीनी. पाछें चाचाजी सहजपाल दोसीकों हुंडी रुपैया चारि हजारकी दीनी. और सहजपालकों चाचाजी कहे, जो तुम्हारी वस्तूके रुपैया होंइ सो लीजियो. और हमारो द्रव्य बढ़े सो हमकों फेरि दीजियो. ऐसें कहिकै चाचाजी वाकी हाटसों उठन लागे. तब सहजपालने बतासे इलायचीदाने चाचाजीके आगें राखे. तब चाचा हरिवंशजीने सहजपाल दोसी सों कह्यो, जो यह तो हमारे काम न आवे. तब सहजपाल दोसीने चाचा हरिवंशजीसों कह्यो, जो ये तुम्हारे साथ मनुष्य हैं तिनकों देऊ. तब फेरि चाचाजी सहजपाल सों कहे, जो ये वस्तू हमारे कोईके काम न आवे. पाछें चाचाजी सहजपाल सों कहे, जो तुम्हारे मनुष्यनकों हू कछू देनो. सो यह हमारी ओर तें तुम अपने मनुष्यनकों

बांटि देऊ. पाछें उनसों बिदा होइकै 'नारायनसर' तलाब पर आए. तब चाचाजीके साथ माधौदास दलाल इनकौ ठिकनो देखनकों आए. सो मार्ग मध्य चाचाजीसों माधौदासने पूछ्यो, जो तुम्हारो सम्प्रदाय कहा है ? तब चाचाजीने माधौदास सों कह्यो, जो हमारो सम्प्रदाय वल्लभी है. सो श्रीवल्लभाचार्यजी प्रगट भए तिन मायावाद खण्डन कियो. भक्तिमार्ग दृढ़ स्थाप्यो. सो श्रीवल्लभीमार्ग प्रगट कियो. तिन श्रीआचार्यजीके पुत्र श्रीविटठलनाथजी हैं. सो अड़ेल मध्य बिराजत हैं. जिन विष्णुस्वामि मार्ग दृढ़ करि वा मार्ग मध्य सेवा प्रकार उनकौ सार है, सो आपु लैकै वल्लभी मार्ग प्रकास्यो. सो हम श्रीविटठलनाथजी श्रीगुसांईजीके सेवक हैं. यह बात चाचाजीके मुखकी सुनिकै माधौदास इनकौ डेरा देखिकै, आइकै, माधौदासने ये सब बात चाचाजीकी सहजपाल दोसी आगें कही. तब यह बात माधौदासकी सुनिकै सहजपाल दोसी विस्मित भए. पाछें सहजपाल दोसी, माधौदास, दलाल जीऊ पारिख ये तीनों जनें आपुसमें मित्र हते. सो यह बात सहजपाल दोसीने जीऊ पारिखसों कही. सो ये तीनों जनें एकत्र होइ कै तीसरे प्रहर चाचा हरिवंशजीके डेरा पर गए. ता समै चाचाजी और वे चारि वैष्णव प्रसाद लैकै कीर्तन करत हते. सो ये तीनों जनें आइकै घरी दोइ बैठें. तब कीर्तन होइ चूके पाछें चाचाजीने एक थेली महाप्रसादकी खोली. अपने सङ्ग वैष्णव हते तिनकों थोरो थोरो प्रसाद दियो. और तीनोंनकों हू थोरो थोरो प्रसाद दियो. पाछें और थोरो इन तीनोंन कों घर लै जाईवे कों प्रसाद दियो. सो इन तीनों जनेनकौ प्रसाद लेत ही मन फिर्यो. जो आपनु हू या मार्गके वैष्णव हूजिये. इनकौ यह मार्ग सर्वोपर है. यह धर्म आगें सब धर्म तुच्छ हैं. ऐसी इन तीनोंनके मनमें आई. सो वे आपुसमें विचार करि रात्रिकों तो आप अपने घर आए. पाछें प्रातःकाल फेरि तीनों जन एकइ सङ्ग 'नारायनसर' तलाव पर आए. पाछें ये तीनों जन चाचा हरिवंशजी पास आइकै बिनती करी, जो चाचाजी ! तुम हमकों नाम देऊ. हम हू कों वैष्णव करो. तब चाचाजी उनसों कहे, जो हमारे धनी श्रीविटठलनाथजी अड़ेल में बिराजत हैं. तिन पास जाइकै तुम नाम निवेदन करो. उनके पास जाइकै तुम सेवक होऊ. तब फेरि उन तीनोंनने चाचाजीसों बिनती करी, जा अब तो तुम एक बेर हमकों नाम सुनाओ. पाछें हम श्रीगुसांईजीके दरसनकों अड़ेल जांइगे. यों बोहोत ही उनने चाचाजीसों बिनती करी. तब चाचाजी अति हठ जानिकै नाम तीनों जनेनकों सुनाए. पाछें सहजपाल दोसीने चाचाजीसों बिनती करी, जो अब तुम कृपा करिकै हमारे घर पधारो. सो चाचाजीकों सङ्ग लै कै सहजपाल दोसी घर आए. तहां घरके सगरेनकों चाचाजी पास नाम दिवायो. पाछें सहजपाल दोसीने चाचाजीसों भक्तिभाव (सम्पन्न) होइकै पूछ्यो, जो चाचाजी ! अब कछू हमारी वस्तू श्रीगुसांईजीकों अङ्गीकार होइगी ? तब चाचाजी सहजपाल दोसीसों कहे, जो अब तुम भगवद् भक्त भए. अब जो कछू तुम सामग्री

वस्तू पठाओगे सो सब श्रीठाकुरजी श्रीगुसांईजी द्वारा अङ्गीकार करेंगे.

भाव प्रकाश :
काहेतें ? जो आचार्यजीके मार्गकी यह रीति है जो वैष्णव बिना काहूकी वस्तू (सत्ता) श्रीठाकुरजी अङ्गीकार न करें. वैष्णव सनेह पूर्वक जो वस्तू देह, वेइ श्रीठाकुरजी अङ्गीकार करत हैं.

तब सहजपाल दोसी अपने मनमें बोहोत प्रसन्न होइकै यथासक्ति भेट श्रीगुसांईजीकों पठाए. और वह सर्व सामग्री सहजपाल दोसी भेंट करे. हुंडी सब चाचाजीकों फेरि दीनी. पाछें जीऊ पारिखने चाचाजीकों अपने घर पधराए. तब उंचो मखमल और जरी ताफ़ता और भीमसेनी कपूर बड़ी बड़ी डेली और हू सामग्री बोहोत श्रीगुसांईजीकों भेंट जीऊ पारिख पठवाए. पाछें माधोदास दलाली करते सो अपनी यथासक्ति श्रीगुसांईजीकों भेंट पठवाए. पाछें चाचाजीकों सहजपाल दोसीने थोरेसे दिन अपने घर राखे. पाछें आचार्यजीके मार्गकी सर्व प्रनालिका चाचाजीसों पूछे. यह मार्गकी प्रनालिका चाचाजीसों तीनों जनेंन पूछिकै सब सीखी. पाछें चाचाजी उनसों बिदा होंई कै सर्व वस्तु लै कै राजनगर आए. पाछें राजनगरकौ सर्व काम करिकै तहां तें अड़ेलकों चले, सो आई पहोंचे. तहां श्रीगुसांईजीके दरसन करि चाचाजी दण्डवत् करि वह सर्व सामग्री श्रीगुसांईजीके आगें धरी. सो सर्व वस्तू देखिकै श्रीगुसांईजी चाचाजीके उपर बोहोत प्रसन्न भए. तब चाचाजी परदेसके सब समाचार श्रीगुसांईजी आगें कहे. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए.

पाछें चाचाजी खम्भाइच सों चले ता पाछें थोरेसे दिननमें सहजपाल दोसी, जीऊ पारिख माधौदास दलाल ये तीनों जनें अपने देस तें काशीयात्राकौ नाम करिकै घरकी शृङ्खुला तोरिकै श्रीगुसांईजीके चरनारविन्दकौ ध्यान करि अड़ेलकों केवल दर्शनार्थ ही चले. सो थोरेसे दिननमें अड़ेल आई पहुंचे. पाछें ए तीनों जन श्रीगुसांईजीकौ दरसन चाचाजीसों मिलिकै करे. तब अपने मनमें ये वैष्णव बोहोत ही प्रसन्न भए. पाछें तीनों जनेंनकौ नाम चाचाजी श्रीगुसांईजी आगें समझाईकै कहे. पाछें प्रभुनसों आज्ञा मांगिकै चाचाजी इन तीनों जनेंनकों श्रीगुसांईजी पास समर्पन करवायो. तब इनकौ मन समर्पन करत अत्यन्त प्रसन्न भयो. पाछें इन तीनों जनेंन (ने) श्रीगुसांईजीसों या

मार्गकौ सिद्धान्त सब पूछ्यो. सो श्रीगुसांईजी इनसों सब समझाइकै आछी भांति कहे. सो सुनिकै बोहोत प्रसन्न भए. ऐसी कृपा श्रीगुसांईजी इन उपर करी. पाछें ए तीनों जन कछू दिन श्रीगुसांईजी पास रहे. तब माधौदास कछू कीर्तन नए आप करते. सो एक दिन माधौदास सों चाचाजी कहे, जो माधौदास तुम कीर्तन करत हो, सो श्रीगुसांईजीकों सुनाओ. तो तुम्हारी बानी अचल होंइ. तब वाही समै माधोदासने यह कीर्तन चाचाजीके आगें श्रीगुसांईजीकों सुनायो. ता पदकी कारिका

धन्य कालिन्दी धन्य वृन्दावन धन्य श्रीगोकुल बास ।
माधौदास के धनी श्रीविटठल पूरी हमारी आस ।।

यह पद सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत ही प्रसन्न होइकै श्रीमुखतें चाचाजीसों कहे, जो चाचाजी ! हमकों श्रीगोकुल बास अवश्य करनो. यह बचन आप वा समै श्रीमुख सों कहे. पाछें ये वैष्णव थोरे दिन श्रीगुसांईजी पास रहिकै खम्भाईच तीनों जनें आए.

भाव प्रकाश :
सो माधौदास लीलामें 'चन्द्रकला' की सखी हैं. 'कोकिलकण्ठी' इनकौ नाम है. सो इनकौ कण्ठ कोकिला सारिखो है. तातें इनकी बानी श्रीठाकुरजीकों बोहोत प्रिय है. और सहजपाल दोसी लीलामें 'चन्द्रभान' गोप हैं. और जीऊ पारिख 'महीमान' हैं. तातें इनको श्रीचन्द्रावलीजी पर वात्सल्य भाव है. सो यहां हू श्रीगुसांईजीमें इनकी एकसी प्रीति रही.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
और एक समै श्रीगुसांईजी चाचाजीकों गुजरात पठाए. सो चाचा हरिवंशजी प्रभुनकी आज्ञा पाइकै गुजारत जात हते. तहां मार्ग मध्य एक ठौर चाचाजी भूले परे. सो महा अरन्यमें चाचाजी जाई परे. सो तीन दिनलों जङ्गल ही में रहे. पाछें चलत चलत चौथे दिन एक बगुला

उड़त देख्यो. तब चाचाजीने जान्यो, येहं कोऊ जलकौ स्थल है. यों विचार करत जांई. सो थोरीसी दूरि पर देखे तौ एक गाम छोटोसो हतो, सो आयो. तहां एक कुआं हतो. ता कुआं उपर चाजाजी जांइ ठाढ़े रहे. सो एक स्त्री जल भरत हती. और चाचाजीके सङ्ग तीन वैष्णव और हते. सो इन चारों जनेंनकों कुआं पर ठाढ़े देखिकै वह स्त्री आप जल भरत तें लेज कुआं पर छोरिकै आप दूरि न्यारी जांइकै ठाढ़ी रही. तब वैष्णवन कसेंडी, डोरी, काढ़िकै जल कुआंमें तें काढ्यो. पाछें देह कृत्य करि दांतिन करि स्नान करि तिलक करि जप पाठ करिकै नित्य नेमसों पहोंचिकै चलन लागे. सो जब लगि इनने अपनो नित्य नेम कियो तब लगि वह स्त्री कुआंके पास ठाढ़ी रही. और कोई गामके मनुष्य जल भरनकों आवे तिनकों वह स्त्री दूरि हीतें पाछें फेरि देइ. पाछें चाचाजी वा ठौर तें चलन लागे. तब वह स्त्री चाचाजीकों दूरि तें पांवन परि बिनती करि, अपने घर इन चारोंकों सेन दैकै पधराइ लै गई. पाछें वाकी बात तो कछू समुझी परे नाहीं. सो वह सेननमें हाथसों बात समुझावें. पाछें अपने घरके पास गाइनकौ खरिक हतो. ता ठौर इन चार्यों जनेंनकों बैठारिकै आपु गाममें गई. तहांसों और एक स्त्री बोली में समुझत हती ताकों साथ लै कै बनमें जांइ आछें आछें फल एक टोकरामें भरिकै लाइकै चाचाजीके आगें धरे. तब चाचाजी वा स्त्रीसों कहे, जो इनकौ तू मोल लेइ तो ये फल हमारे काम आवे. तब दूसरी स्त्रीने वासों हरिवंशजीके बचन समुझाइकै कहे. वह तो कछू यह बोली समुझत नाहीं हती. सो स्त्रीके बचन सुनिकै वा स्त्रीने वा स्त्रीसों कही, जो हों तो मोल तो लेत नाहीं. और तू इनसों पूछि, जो ये फल तुम्हारे काम क्यों न आवे ? सो मोसों तुम समुझाइकै कहो. तब वा दूसरी स्त्रीने हरिवंशजीसों कही, जो यह तो मोल तो लेत नाहीं. और तुम ये फल क्यों नाहीं लेत ? सो ताकौ हेतु आप मोसों कहो. तब वा स्त्रीसों हरिवंशजी कहे, जो यह मोल लेइ तो टोकरीके फल हमारे काम आवें. नाहीं तो हम वैष्णव बिना काहूकी कछू वस्तू लेत नाहीं. तब वा स्त्रीने चाचाजीके वचन वासों सर्व समुझाइकै कहे. तब स्त्रीने वा स्त्रीसों अपनी भाषामें समुझाइकै कही, जो तू इनसों कहि, जो ये मोकों वैष्णव करे. पाछें ये इन फलनकों अङ्गीकार करे. तब वा दूसरी स्त्रीने वाके बचन सब हरिवंशजी सों समुझाइकै कहे. पाछें वाकौ अति आग्रह जानिकै वा दूसरी स्त्रीसों यह चाचा हरिवंशजी कहे, जो तू यासों कहि, जो वैष्णवनकों तो अभक्ष्य कछू न खानो. तब फेरि वासों हरिवंशजीके बचन वा दूसरी स्त्रीने कहे. तब फेरि वा स्त्रीने अपनी बोलीमें वा स्त्रीसों कही, जो तू इनसों पूछी देखि, जो वैष्णव भये पाछें कहा वस्तू खानी और कहा वस्तू न खानी ? तब वा स्त्रीने हरिवंशजीसों वाके बचन समुझाइकै कहे, जो यह खाइवेकौ प्रकार पूछति है. तब चाचाजी वासों कहे, जो अन्न वैष्णवकों खानो. और फल फलादिक खाने. सो अन्नमें तो मसून न खानी. और

फलनमें गाजर, मूरी, गूलर, और गन्धमूल, (तरबूच) ये चारों वस्तू न खानी. सो ये वस्तू छोरे तो हम वैष्णव करें. और ये फल लेंइ. नांतर यासों हमारो कछू प्रयोजन नाहीं.

भावप्रकाश :
यामें यह जतायो, जो वैष्णवकों खाइवे पीवेकौ बोहोत विचार राखनो. अवैष्णवकी वस्तू सर्वथा ग्रहन न करनी. मोल दैकै लेनी. काहेतें ? जो वा पर लौकिक जीवनकी सत्ता है. सो अन्य सम्बन्ध रूप है. तातें वाकों ठाकुर पुष्टिमार्गकी रीतिसों अङ्गीकार करत नाहीं. सो वाके लिये तें बुद्धि भ्रष्ट होंइ. बहिर्मुखता प्राप्त होंइ. यहां यह सन्देह होंइ, जो या स्त्रीने तो चाचाजीकों भक्तिभाव पूर्वक बनमें तें फल तोरिकै दिये हैं. सो उन फलन पर तो काहू जीवकी सत्ता है नाहीं. सो क्यों नांय लिये ? तहां कहत हैं, जो यह स्त्री अपने साथकी स्त्रीकों बनमें लै जांइकै उन फलनकों तोरि लाई. तब उन फलन पर याकी सत्ता भई. औय यद्यपि या स्त्रीने वे फल चाचाजीकों भक्तिभाव पूर्वक समर्पे तोऊ याकों मार्गकी रीतितें भगवद् सम्बन्ध तो भयो है नाहीं. तातें याकी सत्ताके फल चाचाजी लिये नाहीं. काहेतें ? ये अन्य सम्बन्ध रूप है. तातें वैष्णवकों, श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीके मार्गकी रीतिसों जाकों भगवद् सम्बन्ध न भयो होंई ताकी कोई वस्तु लेनी नाहीं.

और वैष्णवकों मसूर, गाजर, मूरी आदिकौ निषेध कियो है. सो यातें, जो वे सब तामसी हैं. उनके लिये तें बुद्धि भ्रष्ट होंई, लीला प्राप्तिमें अन्तराय परे. काहेतें ? तामसी वस्तु प्रभु अङ्गीकार करत नाहीं. सो वाके लिये तें प्रतिबन्ध होंइ. यह सिद्धान्त जतायो.

तब वह दूसरी स्त्री सर्व हरिवंशजीके बचन वा स्त्रीसों समुझाइ कै कहे. तब वह स्त्री अपने मनमें हरिवंशजीके बचन सुनिकै बोहोत प्रसन्न भई. पाछें वाने दूसरी स्त्रीसों कही, जो इनने तो मोकों दुस्तर संसार तें छुड़ाई. तासों तू इनसों कहि, जो तुम कही सो बोहोत उत्तम वार्ता है. यातें ये मो पर कृपा करिकै मोकों बेगि वैष्णव करे. सो वाके वचन वा दूसरी स्त्रीने सब हरिवंशजीसों कहे. तब हरिवंशजी वाकी बोहोत आर्ति जानिकै वा दूसरी स्त्रीसों कहे, जो यह स्नान करि दूसरे नये कपड़ा पहरिकै काहूकों छूवे नांही. या प्रकार आवे तब हम याकों वैष्णव करें. पाछें हरिवंशजीके बचन वा बाईने वासों समुझाइकै कहे. तब वह बाई स्नान करि वाही प्रकार अपरस ही में

हरिवंशजी पास आई. तब हरिवंशजी वाकों नाम सुनाए. और वाकों समझाइकै हरिवंशजी कहे, जो यह नाम नित्य तू स्नान करि अपरस वस्त्र पहरिकै लीजियो. तब फेरि वानें हरिवंशजीसों बिनती करी, जो अब आप इन फलनकों अङ्गीकार करो. तब हरिवंशजी जल मंगाइकै फल सब धोइ, भोग धरिकै तीनों वैष्णव वह बाई सहित चौथे दिन फल लिये. पाछें फेरि वा बाईने हरिवंशजीकों यह मार्गकी सब रीति पूछी, जो अब मैं कौन भांति रहूं ? तब हरिवंशजी वासों कहे, जो तेरे घरमें सब बासन है सो काढ़ि डारि. और नए बासन मंगाइ. सो कोरे बासन न्यारे राखियो. पाछें घरमें तें सर्व काढ़िकै एक नयो बासन भरिकै वासों सब घर पोति शुद्ध करिकै नए बासनमें जल भरियो. पाछें वा स्त्रीने घरकी सब वस्तू अपनी बड़ी सौतके घर पठाइ दीनी. और चांवर, सीधो, नए बासनमें बूरा, तूअर, आदि सर्व सामान घरमें हतो सो हरिवंशजीकों सर्व वस्तू दिखाई. जो वस्तू हरिवंशजीने कही, जो यह काम आवें सो घरमें राखी. और जाकों नाहीं हरिवंशजी करें सो वा सौतके घर पठाइ दीनी. पाछें वाने हरिवंशजीसों बिनती करी, जो यामें तें कछू तुम अङ्गीकार करोगे ? तब हरिवंशजी वासों कहे, जो अब तेरो सब हमारे काम आवेगो.

भाव प्रकाश :
काहेतें ? जो अब भगवत्सम्बन्ध भयो. तातें इनकी सब वस्तूकों हू भगवत्सम्बन्ध भयो जानिए.

तब मालके चांवर काढ़े, तूअरकी दारि काढ़ी. बाजरीकौ नयो चुन करवायो. कछू बनमें तें साक बीनिकै मंगायो. सर्व सामग्री भेली करिकै हरिवंशजीसों कही, जो अब तुम रसोई करो. तब हरिवंशजीने रसोई करिकै श्रीनाथजीकों भोग धर्यो. पाछें समै भयो तब भोग सरायो. उन वैष्णवनकी पातरि करी. पाछें सर्व पांचों जनें एक ही साथ प्रसाद लियो. पाछें रसोई करिवेकी रीति सब वा बाईकों हरिवंशजीने दिखाई. पाछें हरिवंशजी उहांतें चलन लागे. तब वा बाईने हरिवंशजीसों कही, जो अब ही तो तुमकों हों चलन न देहुंगी. यह गाम सब भीलनकौ है. सो भील सब आवेंगे. तब हों तुम्हारे सङ्ग भीलनकों करि देउंगी. सो तुमकों बस्तीमें पहुंचाइ आवेंगे. और हम यह गामके भीलनके सरदार हैं. और इहां तें आगें बड़ो जङ्गल है. तहां जनावर बोहोत रहत हैं. तासों तुम रहो, मार्ग तुम्हारो जान्यो नाहीं. तुम आगें जाइकै भटकोगे, खेद पाओगे. तासों भीलनकों आवन देहु. वे तुमकों सरे दगरे लों पहोंचाइ आवेंगे. तब चाचाजी वाके बचन सत्य

मानिकै वाकौ शुद्ध भाव जानिकै वाके घर तीन दिनलों रसोई करी. सो तीन दिनामें वा बाईकों सब अपने मार्गकी रीति बताई. त्यों (ही) वह बाई आपु अपनी रुचि बढाइकै हरिवंशजीकी बात प्रमान करन लागी. तब तीसरे दिन गाममें सब भील आए. तिनके साथ उह बाइकौ धनी आयो. सो वह बाई धनीकी खबरि सुनिकै घरकौ द्वार रोकिकै बैठी. पाछें वाकौ धनी वाके घरके द्वार आइकै ठाढ़ो रह्यो. तब वा बाईन अपने धनीसों कही, जो तुम अब अपनी दूसरीर स्त्रीके घर जाऊ. हों तो वैष्णव भई हों. अब मेरो तुम सों कछू सम्बन्ध रह्यो नाहीं. ऐसें ऐसें कठिन बचन कहि वाने धनीकों अपने घरमें पेंठन न दीनो. सो वह वा दिनतो वाके द्वारके आगें खाट डारिकै परि रह्यो. पाछें वाके और देह सम्बन्धी हते तिननें वाकों पहिली स्त्रीके घर जेंवन पठायो. सो वह जें आइकै वाहीके द्वारें खाट डारिकै सोयो. तब रात्रिकों हरिवंशजी और वैष्णव सब कीर्तन करत हते. सो वह द्वार पर्यो पर्यो सुनिकै बोहोत आनन्द पायो. तब वह अपनी स्त्रीसों कह्यो, जो तू इनसों कहिकै मोहूकों वैष्णव करवाइ. ये तो कोऊ बड़े महापुरुष दीसत हैं. तासों तू इनसों हमारी बिनती करि. तब धनीके बचन सुनिकै स्त्रीने धनीसों कह्यो जो ये कहेंगे सो तुम करोगे ? तब वानें स्त्रीसों कही, जो ये कहेंगे सोई हों करुंगो. परि तू इनसों इतनो पूछियो. तब स्त्रीने धनीकी उत्कण्ठा जानिकै ये सब समाचार हरिवंशजी आगें प्रसन्न मनसों कहे. जो मेरो धनी बिनती करत है, जो मोहूकों वैष्णव करो. आप कहोगे सो मैं करुंगो. तब वाके बचन सुनिकै हरिवंशजी वासों कहे, जो खेती करो. और जो कोई तुम सों लरन आवे तासों तुम हू लरो. परि तुम काहूके औरके गाम पर चढ़िकै लरन मति जैयो. सो ये हरिवंशजीके बचन सुनिकै स्त्रीने धनीसों जाइकै कहे. तब वह सर्व रात्रि आनन्दमें चिन्तन करत ही रह्यो. पाछें सवारो भयो. तब हरिवंशजी दन्तधावनकों वैष्णवनकों सङ्ग लैकै चले. तब वह लाठी लैकै हरिवंशजीके आगें चल्यो. सो जब हरिवंशजी दांतिन करन लागे तब वाने चाचाजीसों बिनती करी, जो अब मो उपर कृपा करि नाम सुनाओ. पाछें आप पधारो. तब चाचाजी उहांई स्नान किये. और वासों हरिवंशजी कहे, जो तू दन्तधावन करि, अपनो प्रथम कर्म सब छोरिकै स्नान करि, नइ धोवती पहरि, नइ चादरि ओढ़िकै अपरस ही में हम पास आऊ. तब हम तोकों वैष्णव करें. तब वह भील हरिवंशजीकी आज्ञा प्रमान घर जाई शुद्ध होइकै हरिवंशजी पास आइकै दण्डवत् करी. तब वाकी आर्ति देखिकै चाचाजी वाकों नाम सुनाए. पाछें वाकों सेवक भयो जानिकै वा गामके सगरे भील स्त्री पुत्रादि सहित हरिवंशजीके सेवक वैष्णव भये. ता पाछें सबही मिलिकै हरिवंशजीकों और तीन दिनलों राखे. सबन हरिवंशजीसों मार्गकी रीति भांति पूछी. सो हरिवंशजी प्रथम वा बाईकों कहि आए हते. ता रीतसों ए सब भीलनकों बताए. पाछें वे सबही भील हरिवंशजीके कहे प्रमान सब गाममें एकसो आचरन करन लागे.

ता पाछें सगरे भीलन हरिवंशजीकों सोनो तथा कपड़ा भेंट अपनी अपनी सक्ति प्रमान करत भए. सो बड़ी बड़ी तीन गांठि भई. पाछें चौथे दिन हरिवंशजी सों रसोई करवाई. प्रसाद चाचाजी वैष्णव सहित लिये. ता पाछें भील वे गांठि लैकै हरिवंशजीकों 'इडलपुर' (इडर) पर्यन्त पहोंचाइ गए. सो जब हरिवंशजी सहरमें उतरे तब वह भील हरिवंशजीकौ पत्र लैकै आज्ञा मांगिकै बिदा होइकै हरिवंशजीकों दण्डवत् करिकै सब भील अपने घर आए. पाछें सबन अपनो कर्म छोरिकै वे भील वैष्णव - आचरन करि खेती करन लागे. और जो कछू खांइ सो श्रीनाथजीकों भोग धरिकै खाते. सो हरिवंशजीने वा बाइके उहां श्रीनाथजीके प्रसादी वस्त्र पधराइ दिये हते. उनकों वे भोग धरते. पाछें हरिवंशजी इडलपुर तें राजनगर आए. तहां सों खम्भाइच होइकै हरिवंशजी श्रीनाथजीकी श्रीगुसांईजीकी बोहोत भेंट लैकै चले.

ता पाछें एक दिन श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार सेवाकों पधारे तब श्रीनाथजी एक दिन श्रीगुसांईजीसों जनाए, जो हरिवंशजी भीलनकों सेवक करे हैं, तामें एक भीलके घर सेवा पधराई है. सो वह भील नित्य जूंठन करिकै मोकों भोग धरतु है.

भाव प्रकाश :
यामें यह जतायो, जो वैष्णव स्नेहपूर्वक कैसी ही वस्तू सामग्री श्रीनाथजीकों धरें, ताकों प्रभु आप श्रीगुसांईजीकी कानि मानिकै निश्चय अङ्गीकार करत हैं.

सो बात श्रीनाथजीके श्रीमुखकी सुनिकै श्रीगुसांईजीने अपने मनमें राखी. पाछें कछूक दिनमें हरिवंशजी श्रीनाथजीद्वार आई श्रीगुसांईजीके श्रीनाथजीके दरसन करि अति प्रसन्न भए. तब श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीकी सेवासों पहोंचिकै तरहटी होइकै अपनी बैठकमें प्रभु आई बिराजे. तब हरिवंशजी उहां दण्डवत् करि परदेसके सर्व समाचार कहे. तामें जब हरिवंशजी वा भीलको प्रसङ्ग कहे तब श्रीगुसांईजी हरिवंशजीसों श्रीनाथजीके श्रीमुखके बचन कहे. तब हरिवंशजी श्रीनाथजीके श्रीमुखके बचन श्रीगुसांईजीके श्रीमुखतें सुनि श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि, वाही समै एक वैष्णवकों साथ लै कै हरिवंशजी भीलनके गामकों चले. सो कछूक दिननमें वा बाईके घर हरिवंशजी जाई पहोंचे. तब वा गामके भीलन बोहोत ही आनन्द पायो. पाछें उन भीलनसों हरिवंशजी रसोईकौ प्रकार भोग धरिवेकौ प्रकार सब पूछे. तब हरिवंशजी आगें उन सब समाचार कहे. पाछें भीलन कही, जो लोंनकी वस्तू धरत हैं सो तो प्रथम चाखिकै धरत हैं. जो लोंन की ठीक परे. सो यह बात

सुनिकै हरिवंशजी बरजे. वा बाईसों कहे, जो चाखी सामग्री तो सब जूंठन भई. सो अपनी जूंठन श्रीठाकुरजीकों क्यों धरिए ? यह तुम सेवा करत अनर्थ, अपराध करत हो. तब वा बाईने हरिवंशजीसों कही, जो यह भेद हम कहा जाने ? अब तुम आज्ञा करोगे सो हम करेंगे. यह वा बाईकौ भोरो भाव जानि हरिवंशजी वा गाममें वा बाईके घर तीन महीना लों रहे. पाछें हरिवंजीने वाकों सर्व सेवाकौ प्रकार बतायो और वह अपरस उनकी कढ़ाइ नई अपरस सबनके घर हरिवंशजी करवाए. पाछें उनकों सेवा रसोई भोग धरिवेकौ सब प्रकार बतायो. और श्रीनाथजीके श्रीमुखके बचन सब वा बाईके आगें हरिवंशजी कहे. तब वह बाई अपने मनमें बोहोत प्रसन्न भई. सो उन भीलनकों हरिवंशजीकी कानितें या प्रकार अङ्गीकार किये. पाछें वह भीलनी बड़ी भगवदीय भई.

भाव प्रकाश :

सो यह भीलनी रामावतारमें 'शबरी' ही. सो वाने श्रीरामचन्द्रजीकों प्रेमसों जूठे बेर अरोगाए हे. सो यातें, जो मति कहूं विषैला कीराकौ खायो कोऊ होंइ. क्यों, जो श्रीरामचन्द्रजी परम सुकुमार हैं. तातें उनकों दुःख न होउ. या प्रकार स्नेहसों श्रीरामचन्द्रजीकों जूंठे बेर अरोगाए. सो सनेह है सो पुष्टिकौ स्वरूप है. तातें वा भीलनीकौ या जन्ममें अङ्गीकार भयो. सो यहां हू (इन) श्रीनाथजीकों प्रथम जूंठो अरोगायो.

और लीलामें ये 'पुलिन्दिनी' के यूथमें हैं. इनकौ नाम 'संझ्यावली' है. सो जैसें संझ्या फूलत है. ता भांति इनकौ मन सदा प्रफुल्लित रहत है.

पाछें भीलनीने श्रीठाकुरजीके पात्र न्यारे, और जलघरा न्यारो, अपने पात्र सब न्यारे, या भांति चाचाजीके कहे प्रमान कियो. पाछें सखड़ी जूंठन सब समझन लागी. सो वा बाईकी सङ्गतितें सगरे मिलि, और एक सौ मन करि, वा बाईसों पूछिकै भील सर्व काम करते. पाछें हरिवंशजी वा बाई पास तें श्रीगुसांईजी पास चले. तब उन मिलिकै भीलन यथासक्ति श्रीगुसांईजीकों भेंट पठाई. पाछें वे भील हरिवंशजीके सङ्गतें भले कृपापात्र भए.

भाव प्रकाश :

या वार्तामें यह जतायो, जो वैष्णवकौ सङ्ग होंइ तो या जीवकौ जैसो मन होंइ तैसो फल प्राप्त होंइ. जद्यपि फलकी प्राप्ति तो प्रभुनकी इच्छा होंइ (तब होइ) तोउ यह जीव अपनी ओर तें तो उत्तम सङ्गही करे. तो कब हू याकौ मन न फिरे. तासों यह मन एक ठौर लगावनो.

वार्ता प्रसङ्ग ३ :
और एक समै चाचाजी गुजरातकों जात हते. सो ये अपने मार्ग चले जात हते. सो मार्गमें एक रजपूत अपुनी बेटीकों सुसरारितें अपने घरकों लै जात हतो. सो मार्गमें चले जात चाचाजीकों उन दोउनसों भेंट भई. तब मजलिकौ गाम आयो. तब एक बागमें जाइकै सब उतरे. पाछें वह रजपूत गाममें सीधा लेनकों गयो. और हरिवंशजीके हू सङ्गके वैष्णव गाममें सीधा लैन गए. पाछें चाचाजीने वा रजपूतकी बेटीसों पूछ्यो, जो तुम्हारे कुलमें कोऊ वैष्णव भयो है ? तब वा रजपूतानीने हरिवंशजीसों कह्यो, जो तुम कृपा करोगे तो वैष्णव होंइगे. पाछें हरिवंशजी अपने मनमें विचार करे, जो सामग्री अति उत्तम यह भगवद् भोग योग्य है. परन्तु वैष्णव बिनु, यह सामग्री श्रीनाथजी कौन भांति अङ्गीकार करे ? यह सोच करत भए.

भावप्रकाश :
यहां यह सन्देह होंइ, जो अलीखानकी बेटीकों श्रीनाथजीने पहिले ही अङ्गीकार करी. ता पाछें वह श्रीगुसांईजीकी सरनि आई. तातें यहां चाचाजी ऐसें क्यों विचारे ? तहां कहत हैं, जो सरनि भए बिनु श्रीआचार्यजीके मार्गकी रीतिसों दृढ़ अङ्गीकार नाहीं. तातें पुष्टि रसकी प्राप्ति होत नाहीं. याही तें अलीखानकी बेटीकों श्रीनाथजीने अङ्गीकार करी, तोउ श्रीनाथजी वासों श्रीगुसांईजीके सरनि जांइ वैष्णव होइवे की कहे. नांतर रसानुभव भए पाछें सरनिकौ कहा प्रयोजन ? सो पुष्टिमार्गकी रीतिसों वैष्णव होंइ तो जीवकों स्वतन्त्र भक्ति - रसकौ दान व्है. तातें वल्लभाख्यानमें गोपालदासजी कहे हैं, जो

भक्तिमार्गी जीव स्वतन्तर, केवल भक्त न थाय ।

सो भक्तिमार्गीय जीव स्वतन्त्र भक्तिरसके अधिकारी है. परि आप ही तें उनकों वा रसकी प्राप्ति नाहीं. यासों पुष्टिमार्गमें सरनिकी अपेक्षा है. गुरु

बिना दृढ़ सरनागति नाहीं. तातें चाचाजी सोच करत भए. सो भगवदीय परम उदार होत हैं. तातें या प्रकार याकों स्वतन्त्र भक्तिरसके दानकौ बिचार कियो.

तब फेरि हरिवंशजीसों वा रजपूतकी बेटीने बिनती कीनी, जो तुम मोकों वैष्णव करोगे ? यह आर्ति बोहोत चाचाजीने वा स्त्रीके मनकी जानी. तब हरिवंशजी वासों कहे, जो तू अपने पितासों कहियो. पाछें हम तोकों वैष्णव करेंगे. पाछें वाकौ पिता सीधा लैकै आयो. तब बेटीने अपने पितासों कही, जो आपुन वैष्णव होंइ तो आछी बात है. तब वा रजपूतने बेटीसों कही, जो मेरे हू मनमें यह बात हती. सो इहां कौन आपुनकों वैष्णव करेगो ? तब वाने पितासों कही, जो अपने सङ्ग ये जो हैं, सो बड़े भगवदीय हैं. तासों तुम इनसों बिनती करोगे तो आपुनकों ये वैष्णव करेंगे. तब बेटीके बचन सुनिकै वह रजपूत बोहोत प्रसन्न भयो. पाछें वह रजपूत आप ही सों हरिवंशजीसों बिनती कर्यो, जो तुम हमकों नाम सुनाओ. यह कृपा करो. तब हरिवंशजी प्रसन्न होइकै वा रजपूतसों कहे, जो तुम वैष्णव होउगे ? तब वे दोउ जनें हरिवंशजीसों बिनती बोहोत करे. तब हरिवंशजी उनकी उत्कण्ठा देखिकै वाही समै उन दोउनकों श्रीगुसांईजीको स्मरन करि ध्यान करि, नाम सुनाइ माला दै वैष्णव करे. पाछें रसोई करि भोग धरि हरिवंशजी प्रसाद लिये. पाछें वाइ बागमें सन्ध्या पर्यन्त भगवद्वार्ता करे. पाछें रात्रिकों गाममें जाइकै सोइ रहे. पाछें सवारे उठि चले. सो मजलि वार्ता करत कछू जानी न परी. या भांति मजलि जाई पहोंचे. तब वा रजपूतसों बेटीने कही, जो आज इनकों अपने घर पधराइ लै चलिए. तब बेटी सों पिताने कही, जो यह तो तैंने आछी बात कही. तब वह रजपूत हरिवंशजीसों बिनती करिकै श्रद्धापूर्वक अपने घर पधराइ कै लै गयो. पाछें एक सुन्दर ठौर हती ता ठौर हरिवंशजीकों उतारे. पाछें रसोईकौ सर्व सामान सिद्ध करि घरमें ते हरिवंशजी सों भली भांति रसोई करवाई. सो हरिवंशजी रसोई करि श्रीनाथजीकों भोग धरि प्रसाद लियो. पाछें रात्रिकों कीर्तन करिकै श्रीनाथजीकों हरिवंशजी यह बिनती करे, जो बावा ! यह अभुक्त सामग्री है, अति उत्तम है. तासों आपु इहां पधारिकै यह सामग्रीकों अङ्गीकार करिए. सो हरिवंशजीकी बिनती तें श्रीनाथजी वा ठौर पधारे. पाछें श्रीनाथजी वाकों अङ्गीकार कर्यो. पाछें सवारे हरिवंशजी श्रीनाथजीकों मन्दिर पठाइकै आप आगेंकों चले. ता पाछें प्रातःकाल वा रजपूतानीकों ज्वर आयो. सो उत्थापनके समै वह रजपूतानी भगवल्लीलामें प्राप्त भई.

भाव प्रकाश :

क्यों ? जो श्रीनाथजीके परस तें इनकौ देह अलौकिक भयो. सो अलौकिक वस्तू लौकिकवारेनके पास कैसें रहे ? तातें ये ततछिन लीलामें प्राप्त भई. सो जैसें कृष्णदास अधिकारीने वेश्याकी छोरीकों लीलाकी प्राप्ति कराई तैसैइ यहां चाचाजीद्वारा या रजपूतकी बेटीकौ लीलाकी प्राप्ति भई. यह भाव जाननो. सो श्रीनाथजीनें याकों या प्रकार अङ्गीकार करी.

और लीलामें ये रजपूतकी बेटी 'चन्द्रकला'की सखी है. वाकौ नाम 'नवीना' है. सो 'नवीना'में छिन - छिन प्रति नूतनता प्रगट होत है. ऐसी वह रस रूप है. तातें श्रीठाकुरजी वाके पाछें - पाछें डोलत हैं. सो यहां हू चाचाजी द्वारा श्रीनाथजी या प्रकार याके घर पधारिकै याकों अङ्गीकार किये सो यह देह छोरि लीलामें प्राप्त भई. तातें भगवदीयनकौ एक क्षनकौ सङ्ग हू संसारकों मिटावनहारो है.

और जा रात्रिकों श्रीनाथजी पधारे हते. ताके प्रातःकाल श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीके उहां आपु स्नान करि शङ्खनाद कराइकै मन्दिरमें श्रीनाथजीके दरसन करिकै श्रीगुसांईजीने पूछ्यो, जो बावा ! आज रसमसे रगमगे क्यों हो ? और आज कछू और ही भांति चितवत हो. सो यह कारन कहा है ? तब श्रीगुसांईजीसों श्रीनाथजीने यह कही, जो हमकों आज रात्रि हरिवंशने एक नई वस्तू समर्पी हती. तहां रात्रिकों हम गए हते. पाछें मङ्गल भोग धरि वह दिन श्रीगुसांईजीने लिख राख्यो. ता पाछें भोग सराइ आर्ति करि सिंगार करि श्रीनाथजीकों राजभोग समर्प्यो. पाछें समै भयो तब भोग सराइ राजभोग आर्ति करि बेगि ही श्रीनाथजीकों अनोसर करवाए. पाछें उत्थापन वा दिन कछूक अवारो श्रीगुसांईजी करवायो. पाछें श्रीनाथजीकों श्रमित जानिकै श्रीगुसांईजी बेगिही सेन आर्ति करि श्रीनाथजीकों पोढ़ाए.

भाव प्रकाश :
यामें यह जतायो, जो जा दिन प्रभुनकों श्रम होंइ ता दिन बेगि सेवासों पहोंचि अनोसर कराइए.

पाछें केतेक दिनमें हरिवंशजी श्रीगोकुल आई श्रीगुसांईजीकौ दरसन करि साम्हे दण्डवत् करी. तब श्रीगुसांईजीने हरिवंशजी सों कह्यो, जो तुम परदेसमें जाइकै ऐसें काम करत हो ? सो श्रीमुखके बचन सुनिकै हरिवंशजी अपने मनमें डरपिकै श्रीगुसांईजी सों यह बिनती करी,

जा राज ! कछू अनुचित बनि आई होइगी तो आप प्रभु हो जीवको दोष क्षमा करोइगे. तब श्रीगुसांईजी वह दिन निकासि हरिवंशजी सों कही, जो श्रीनाथजीकों तो उहां लों पधारिवेकौ श्रम करनो पर्यो. तब हरिवंशजी श्रीगुसांईजीके बचन सुनिकै कहे, जो राज ! वस्तू परम सुन्दर देखिकै मनमें यह आई तो खरी. जो यह वस्तुकों श्रीनाथजी अङ्गीकार करें तो भली बात है. तब श्रीगुसांईजीने हरिवंशजीसों कही, जो सेवक कौ तो यही धर्म है. परि प्रभुनकों तो श्रम होंइ. तासों जो कार्य करनो सो बिचार कै करनो. जामें श्रीनाथजीकों श्रम न होंइ. और अपनो धर्म रहे. सो कार्य श्रीठाकुरजीकौ सेवककों करनो. और वह तो भगवद् लीलाकों तुम द्वारा श्रीनाथजीकी कृपातें प्राप्त भई. वाकों तो अलौकिक सिद्धि भई. परि ये तो बालक अज्ञान हैं. मिश्रीके लालच ज्यों बालक सर्प ग्रहन (कों) जाई, परि वाकों सर्पकौ तो ज्ञान नाहीं. तासों जो श्रम होइ तो बालककी सेवा माता पिताकों करनी परे. जैसें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके सेवक रामदासजी आप अपरसता छोरिकै सिपाइगीरीकी चाकरी करी. परि श्रीठाकुरजीकों श्रम तो न करवायो. तब रामदासजीकों देखिकै श्रीआचार्यजी महाप्रभु श्रीमुखतें रामदासजीकों धन्य - धन्य कहे. तातें वैष्णवनकों तो श्रीनाथजीके विषे ऐसो रामदासजीकौ सो स्नेह राखनो. तब हरिवंशजी श्रीगुसांईजीके बचन सुनिकै चुक करि रहे. हरिवंशजी श्रीगुसांईजीकों प्रतिउत्तर न दिये.

भाव प्रकाश :
या वार्तामें यह सिद्धान्त भयो, जो पुष्टिमार्गमें बालभाव सों सेवा है. सो मुग्ध बालककी तरह श्रीठाकुरजीकों जानि सेवा करनी. सो (जैसें) मुग्ध बालककी चिन्ता उनके मा बापकों रहत हैं, ता भांति श्रीनाथजीकी चिन्ता श्रीगुसांईजीकों सदासर्वदा रहति हैं. तातें श्रीगुसांईजी चाचाजी सों या प्रकार कहे. परि चाचाजी तो प्रौढ भावमें मगन रहत हैं. तातें उनकों तो यही उचित हतो. सो उनकों कछू बाधक नाहीं. और स्वामीके आगें सेवककों विशेष बोलनो हू उचित नाहीं. तातें वे चुप करि रहे. सो अपनो भाव प्रगट न कियो.

वार्ता प्रसङ्ग ४ :
और एक समै श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे. सो एक गाममें जाई डेरा किये. तब अपने साथके एक ब्रजवासीकों श्रीगुसांईजीने सीधो लैन पठायो. सो वह ब्रजवासी श्रीगुसांईजीकी आज्ञा प्रमान सीधो सामग्री सब गाममें सों लायो. तब वा ब्रजवासीने श्रीगुसांईजी सों बिनती

करी, जो महाराज! या गाममें एक हू वैष्णव नाहीं. तब वा ब्रजवासीसों श्रीगुसांईजी वा समै श्रीमुख तें यह बचन कहे, जो या मार्ग हरिवंशजी कब हू आए न होइंगे. जो हरिवंशजी या मार्ग कबहू आवते तो कोई एक तो वैष्णव होतो. वे चाचा हरिवंशजी ऐसें भगवदीय हते. जो जा मार्ग होइकै परदेस जाते तहां गाम गाम प्रति वैष्णव करत जाते. सो श्रीगुसांईजी या भांति हरिवंशजीकी सराहना अपने श्रीमुखसों करत हते.

वार्ता प्रसङ्ग ५ :

बहौरि एक समै हरिवंशजी और कृष्ण भटट उज्जैनिकों जात हुते. सो मार्गमें एक क्षत्री श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक गाममें रहत हतो. सो वा वैष्णव ने अपनी दुकान उपर तें हरिवंशजीकों पहिचाने. सो वह दुकान तें उतरिकै वाने हरिवंशजीकों दण्डवत् करी. पाछें वह क्षत्री हरिवंशजीकों अपनी हाट उपर लै गयो. तब हरिवंशजीकों बैठारिकै बिनती करी, जो हरिवंशजी ! जल लेहुगे ? तब हरिवंशजीने अपनी कसेंडी दीनी. सो वा क्षत्रीने हरिवंशजीकी कसेंडी तो रहन दीनी और वह अपनी कसेंडी भरि लायो. ताही कसेंडी सों हरिवंशजीने जल लियो. पाछें हरिवंशजी जल लै कै उठि चले. तब वा क्षत्रीने हरिवंशजी सों बिनती करी, जो अबकै इत सों जब पाछें फिरो तब मेरे घर पधारियो. तब हरिवंशजी वा क्षत्रीसों कहे, जो या मार्ग आवेंगे तो तेरे घर आवेंगे. यह वा क्षत्रीसों कहिकै हरिवंशजी आगेकों चले. तब मार्गमें कृष्ण भटटने हरिवंशजी सों कही, जो हरिवंशजी ! या क्षत्रीकौ कछू आचार तो दीसत नाहीं. तातें तुम याकी कसेंडी सों जल क्यों लियो ? तब हरिवंशजी कृष्ण भटटसों कहे, जो मोकों तो या क्षत्रीके आचरनकी तो सुधि नाहीं, परि यह क्षत्री श्रीगुसांईजीके पास नाम सुनिवे बैठ्यो हतो तब हों हू वा समै श्रीगुसांईजीके पास बैठ्यो हतो. सो समै मोकों सुधि आई गयो. तासों हों वाकी दुकान पर बैठिकै वाकी कसेंडीसों जल पियो. सो हरिवंशजीकों वैष्णवन में या प्रकार सर्वात्मभाव सिद्ध भयो है. तातें उनकौ वैष्णवनमें सरल भाव है. सो कृष्ण भट यह बात समुझे तातें चुप करि रहे.

पाछें केतेक दिन पाछें हरिवंशजी उज्जैनि सों फिरे. तब वा गाममें आए. पाछें हरिवंशजी वा क्षत्रीकी दुकान उपर गए. तब वह क्षत्री बोहोत आदर करि हरिवंशजीकों अति आनन्द सौं अपने घर पधराइ आछी भांति सीधा देइ हरिवंशजी सों रसोई करवाई. सो हरिवंशजी

वाके घर रसोई करि श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पि समयानुसार भोग सराइ कै हरिवंशजी प्रसाद लियो. पाछें रात्रि भई तब वा क्षत्रीने रुपैया हजार तीन कौ वित्तसो घरमें सोनो, रूपो, गहनो, रोकड़ि सब मिलाइकै हरिवंशजीकों सोंप दियो. जो यह तो श्रीगुसांईजी पास ले जैयो. मेरे तो इहां थोरे ही में चल्यो जात है. यातें धनीकी वस्तू धनीके पास पहोंचे तो भली बात है. सो हरिवंशजी वह वस्तू लै श्रीगुसांईजी पास श्रीगोकुल आए. सो सर्व मंगाइ श्रीगुसांईजी आगें वा क्षत्रीकी दण्डवत् करि प्रभुनकी दृष्टि पथ करवाइ कै हरिवंशजीने वह सर्व वस्तू भंडारीकों सोंपी. सो वह क्षत्री वैष्णव ऐसो सर्वात्म भाववन्त हतो.

वार्ता प्रसङ्ग ६ :
और एक समै श्रीगुसांईजी रात्रिकों लघुबाधा करिवेकों चौकमें आए. तहां हरिवंशजी चौकमें ठाड़े हते. सो श्रीगुसांईजी हरिवंशजीसों वार्ता करन लागे. सो वार्ता करत दोउ जन देहानुसन्धान भूले. ऐसी अनिर्वचनीय वार्ता चली, जो कछू देहकी स्फुर्ति न रही. ता समै श्रीगुसांईजीके श्रीहस्तमें बड़ी झारी हती. ताकौ उ भार श्रीगुसांईजीने न जान्यौ. और हरिवंशजीकों हू स्फुर्ति इतनी न रही, जो प्रभुनके श्रीहस्तमें तें झारी तो लैहु. ऐसें वार्ता करत रसावेस दोउ जनें भए, जो देहानुसन्धान भूले. और रात्रि - दिन गरमीके हते. पाछें खवासने आइकै श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! उठिवेकौ समै भयो है. तब श्रीगुसांईजी तो वहां ते उठे. पाछें देह कृत्य करि तेल लगाइ स्नान करिकै श्रीगुसांईजी तो मन्दिरमें पधारे. सो सब कार्य वार्ताके आवेसमें ही प्रभु निकासे. और हरिवंशजीकों तो वार्ताके आवेसमें तीन दिन पर्यन्त देहानुसन्धान न रह्यो.

वार्ता प्रसङ्ग ७ :
और एक दिन हरिवंशजी स्नान करि श्रीगिरिराज उपर मन्दिरमें जाई मन्दिर आगें ठाढ़े रहे. तब हरिवंशजी देखे तो श्रीनाथजी भर निद्रामें पोढें हैं. तब शङ्खनादकौ समै हतो. परि हरिवंशजी शङ्खनाद करिवे न दीने. सो भीतरिया सर्व ठाढ़े रहे. इतने ही श्रीगुसांईजी स्नान करिकै पर्वत उपर मन्दिरमें पधारे. तब श्रीगुसांईजीने भीतरियानसों पूछी, जो शङ्खनाद काहे न किये ? तब भीतरियान श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! हम तो शङ्खनाद करावत हते. परि हमकों हरिवंशजी बरजे. तातें हम सगरे ठाढ़े होंइ रहे हैं. तब श्रीगुसांईजी पूछे, जो

हरिवंशजी ! अब लों शङ्खनाद क्योंन करन दीनो. तब चाचाजीने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! श्रीनाथजी भर निद्रामें पोंढे हते. तासों हों इनकों शङ्खनाद करत बरज्यो हूं. तब श्रीगुसांईजी हरिवंशजीके बचन सुनिकै चुक करि रहे. पाछें श्रीगुसांईजी आपु शङ्खनाद करवाइ मङ्गल भोग समर्पिकै बाहिर आई बिराजे. तब भीतरियानसों श्रीगुसांईजी यह कहे, जो श्रीठाकुरजीकौ समै बीतीत न होंन दीजे. समै होंइ तब मन्दिर आगें तारी बजाई शङ्खनाद करवाइकै श्रीठाकुरजीकों जगाइये. यह श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीके सेवकनसों समुझाइकै श्रीमुखतें कहे. ता दिन तें भीतरिया सेवा श्रीनाथजीकी श्रीगुसांईजीकी आज्ञा प्रमान करन लागे.

भावप्रकाश :
या वार्तामें यह जतायो, जो श्रीआचार्यजी महाप्रभुनने सेवामें बालभाव राख्यो है. सो बालककों सूर्योदय पहिले जगावने चहिए. नांतरु बालककी बुद्धि मन्द होवें. यह बातकी शिक्षा श्रीगोपीनाथजीकों श्रीआचार्यजी आप दीनी है. सो बात आगें कहि आए हैं. तातें श्रीगुसांईजीने श्रीनाथजीके सेवकनकों या प्रकार समझाइकै कह्यो.

वार्ता प्रसङ्ग ८ :
और एक बार श्रीगुसांईजी भोगके समै सिज्या मन्दिरमें पधारत हते. सो श्रीनाथजी श्रीगुसांईजीके सन्मुख देखि रहे. तब चाचाजी बाहरसों श्रीनाथजीके दरसन करत हते. सो श्रीनाथजीकी दृष्टि श्रीगुसांईजीकी ओर देखिकै चाचाजीने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! आप कहां पधारत हों ? श्रीनाथजी तो आपकी और देखत हैं. तब श्रीगुसांईजी चाचाजीसों कहे, जो कहा करिए ? यह काम तो कर्यो चहिए. पाछें जब लों श्रीगुसांईजी सिज्या मन्दिरमें पहोंचि आए तब लगि श्रीनाथजीकी दृष्टि श्रीगुसांईजीकी और ही रही. या भांति श्रीगुसांईजीकी कृपातें चाचाजीकों श्रीनाथजी सरलतासों दरसनकौ अनुभव करावते.

वार्ता प्रसङ्ग ९ :
और एक समै श्रीगुसांईजी पास हरिवंशजी बैठे हते. सो काहू बातमें श्रीगुसांईजीकों चाचाजी उपर रिस आई. सो पास पीढ़ा पर्यो हतो. सो

चाचाजीकों मार्यो. तब दिन दोइ विप्रयोगमें रहे.

भावप्रकाश :
काहेतें ? जो चाचाजी पर श्रीगुसांईजी आपकौ बोहोत सनेह हतो. तातें चाचाजीकों कष्ट भयो जानि आप दिन दोइ विप्रयोगमें रहे.

वार्ता प्रसङ्ग १० :
और एक दिन श्रीगुसांईजी अति प्रसन्नतामें श्रीरुक्मिनी बहूजीसों बातें करत हुते. जो ये सगरे वैष्णव मेरे हैं. सो सगरे मेरे अङ्गनकों स्वरूप हैं. तब श्रीरुक्मिनी बहूजीने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो हरिवंशजी तुम्हारो कौनसो अङ्ग है ? तब श्रीगुसांईजीने श्रीरुक्मिनी बहूजीसों कह्यो, जो ये हरिवंशजी मेरे नेत्रनकी श्याम पूतरी हैं. पाछें एक दिन चाचाजीकों ठोकर लगी सो कष्ट भयो. तब श्रीगुसांईजीके हू नेत्र दुखि आए. तब श्रीरुक्मिनी बहूजीने पुछी, जो तुम्हारे नेत्र क्यों दुःखत हैं? तब प्रभुनने कही, जो हरिवंशजीकों ठोकर लगी हैं ताकौ कष्ट हैं. तातें हमारे हू नेत्र दुःखत हैं. पाछें (जब) चाचाजी आछें भए तब आपके नेत्र हू आछें व्है गए. या प्रकार श्रीगुसांईजी अपने वैष्णवनकौ स्वरूप श्रीरुक्मिनी बहूजीकों प्रत्यच्छ दिखायो.

वार्ता प्रसङ्ग ११ :
और एक बेर चाचाजीने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! आप निरन्तर श्रीगोकुलमें बिराजिए. और परदेस मैं ही जाऊंगो. यह बात हरिवंशजीकी श्रीगुसांईजी सुनिकै हरिवंशजी सों श्रीगुसांईजी आप कहे, जो तोकों यही काम सों पास ना राख्यो हतो. यह कहिकै प्रभु चुप करि रहे. वा समै श्रीगुसांईजीकौ स्वरूप हरिवंशजीके मनमें तें विस्मरन व्है गयो. पाछें हरिवंशजीकों गुजरात पठाए. यहां श्रीगुसांईजी आसुरव्यामोह लीला दिखाए. सो हरिवंशजीने श्रीगुसांईजीकौ स्वरूप जान्यो नाहीं. ऐसें प्रभुन अपुनो स्वरूप आपही आच्छादन कर लियो. यही प्रभुनकी लीला है. नांतरु हरिवंशजीके मनमें लौकिक बात क्यों आवे ? श्रीगुसांईजीने वार्ता प्रसङ्गके लिये हरिवंशजीकों अपने पास राखे हते. सो चाचाजीके मनमें जब लौकिक आई तब यह सबकों विस्मरन भयो. सो बुद्धि प्रेरक तो प्रभु आप ही हैं.

भावप्रकाश :
सो जैसें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनने श्रीइल्लमागारुजीसों 'निकसो' 'निकसो' कहवायो, पाछें गृहकौ त्याग कियो. याही भांति श्रीगुसांईजीने चाचाजी सों निरन्तर श्रीगोकुलमें बिराजवेकी कहवाई. सो प्रभु भक्तकों प्रेरना करि उनकी इच्छानुसार आप कार्य करत हैं. सो कैसे ? जैसें माधवदासकौ मनोरथ गोकुल बास कौ भयो तब आपने श्रीगोकुलमें बसिवेकौ उपाय कियो. याही प्रकार चाचाजीसों श्रीगोकुलमें निरन्तर बिराजवेकी कहवाइ कै श्रीगुसांईजी आप लोक रीतिसों अन्तर्धान भए. और चाचाजीकों वा समै गुजरात यातें पठाए, जो चाचाजीकौ श्रीगुसांईजीमें स्नेह अधिक है. तातें चाचाजीकों श्रीगुसांईजीकी आसुरव्यामोह लीला देखिकै अत्यन्त कष्ट होतो. यासों श्रीगुसांईजीने चाचाजीकों गुजरात भेजकै पाछें तें आप अन्तर्धान लीला किये. यह स्नेहकी रीति है.

वार्ता प्रसङ्ग १२ :
और एक समै हरिवंशजी श्रीनाथजीके लिये सामग्री लै कै श्रीगोकुल तें चले. सो यमुनाजीके घाट पर आए जब सांझ होंइ. सो नाव कोऊ मिलि नाहीं. तब चाचाजी अपने मनमें विचारें, जो कल उत्सव है, सो सवारे छह घरी रात रहेगी तब ये सामग्री चहियेगी. तातें ये सामग्री रात्रिकों सिद्ध भई चहिए. और श्रीनाथजीद्वार तो कोस दस दूरि पर है. सो कैसें पहोंचेंगे ? तब साथके वैष्णवसों कही, जो मैं जा ठौर पांऊ धरों ता ठौर तू पांऊ धरत जैयो. पाछें चाचाजी आगें - आगें भगवत् नाम लेते जांइ और श्रीयमुनाजीमें पांऊ धरत जांइ. सो वह वैष्णव हू चाचाजीके पांऊ के उपर पांऊ धरत चले. तब कछूक दूरि तो गये, पाछें वा वैष्णवनें अपने मनमें विचारी, जो चाचा हरिवंशजीके पांऊ पर पांऊ क्यों धरों. मैं हूं अपने मुखतें भगवत् नाम लैत चल्यो जाऊगो. पाछें वह वैष्णव तो अपने मुखतें भगवत् नाम लैत पांऊ न्यारो धर्यो. तब वैष्णव तो श्रीयमुनाजीमें डुबन लाग्यो. तब वानें पुकार्यो. तब चाचा हरिवंशजीनें वा वैष्णवसों कह्यो, जो मैं तोसों कही हती, जो जा ठौर मैं पाऊं धरों ता ठौर तू धरियो. सो न्यारो क्यों धर्यो ? तब वा वैष्णवने अपने मनकी बात चाचाजीसों कही. जो चाचाजी ! मैंने तो अपने मनमें विचार्यो, जो हो हूं भगवत् नाम लेत चलों. न्यारो पाऊं धरों. तब चाचाजीने कह्यो, जो मैनें भगवत् नाम लियो, सो तो श्रीठाकुरजीने सुन्यो है. और तेरो अजहू नाहीं सुन्यो. ता पाछें हरिवंशजी वा वैष्णवकी बांह पकरिकै वाकौ पार लैकै चलें. सो वा वैष्णवकों ऐसो माहात्म्य बताए.

ता पाछें हरिवंशजी श्रीनाथजीद्वार आए. तहां श्रीगुसांईजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् किये. पाछें सामग्री भण्डारमें सोंपि आप घर जाइकै सोए. पाछें वा वैष्णवनें श्रीगुसांईजीसों अपने सर्व समाचार कहे. और पूछे, जो महाराज ! चाचाजीने कह्यो, जो मैने भगवत् नाम लियो सो तो श्रीठाकुरजी सुन्यो है. और तेरो अजहू सुन्यो नाहीं ! सो कहा ? तब श्रीगुसांईजी आप आज्ञा किये, जो जब तांई प्रभु जीवकौ कियो सुमिरन - सेवा अङ्गीकार करे नाहीं तबलों वह दृढ़ होंइ नाहीं. और दृढ़ भए बिनु फलकी सिद्धि नाहीं. सो चाचाजीकों भगवत् नाम दृढ़ भयो है. तातें उनमें अष्टाक्षर (कौ माहात्म्य) प्रगट रूपतें बिराजत हैं. और तुम्हारे अभी दृढ़ नाहीं. तातें भगवदीयके सङ्गकी अपेक्षा है. तब वा वैष्णवने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो महाराज ! चाचाजी में अष्टाक्षर (कौ महात्म्य) प्रगट रूपमें बिराजत है सो कैसें दीसे ? तब श्रीगुसांईजी वा वैष्णवकों आज्ञा किये, जो तुम चाचाजीके घर जाऊ. तहां तुमकों वह प्रगट दिखेगो. तब वह वैष्णव चाचाजीके घर गयो. सो उहां देखे तो हरिवंशजी सोए हैं और उनके रोम रोममें तें अष्टाक्षरकी ध्वनि निकसत हैं. सो यह देखिकै वा वैष्णवकौ सन्देह निवृत्त भयो.

भावप्रकाश :
या वार्तामें यह सन्देह होंइ, जो पुष्टिमार्गमें प्रभु जीवकौ बरन करत हैं, तब जीव सरनि आवत है. सो सरनि आए जीवकौ सेवा सुमिरन प्रभु आप अङ्गीकार करत ही हैं. तब यहां यह क्यों कहे, जो प्रभु अङ्गीकार करें तब दृढ़ होंई ? तहां कहत हैं, जो प्रभु कृपा करिकै जीवकों अपनी ओर तें सरनि लैत हैं. परि जीवकौ भाव जब लों स्थायी न होंइ तब लों वाकौ कियो साधन फले नाहीं. तातें जीवकौ प्रभुनके सरनिकी भावना, अष्टाक्षर आदि निरन्तर करत रहनो. भगवदीयकौ सङ्ग करनो. भगवद् सेवामें तत्पर रहनो. जब वाकौ भाव स्थिर होंइ. तब स्थायी भावतें लियो नाम, सेवा आदि सब तत्काल फलै. यह सिद्धान्त दिखायो.

वार्ता प्रसङ्ग १३* :
*** ये चिन्ह वाले प्रसङ्ग श्रीहरिरायजीके स्वतन्त्र हैं.**

और एक बेर गुजरातके वैष्णवनने चाचाजीसों बिनती करी, जो हमारे तो लौकिकउ प्रबल है. तातें हम श्रीगोकुल जांइ सकत नाहीं. तासों हमकों श्रीगोकुलनाथजीके दरसन कैसें होंई. ऐसी उन वैष्णवन बिनती करी. तब चाचाजी राजनगर जांइकै श्रीगोकुलनाथजीकों यह बिनती पत्र लिखि, मनुष्य घरकौ पठायो. जो राज ! आप श्रीद्वारिकाजी न पधारोगे तो श्रीवल्लभकुल कोऊ श्रीद्वारिकाजी न पधारेंगे. तातें एक बेर तो आप अवश्य करि श्रीद्वारिकाजीकों पधारिए. सो वह चाचा हरिवंशजीकौ बिनती पत्र मनुष्य लै कै चल्यो. सो कछूक दिनमें श्रीगोकुलमें आइकै श्रीगोकुलनाथजीकों दियो. सो चांपाभाई भण्डारीने श्रीगोकुलनाथजीके आगें वह पत्र बांचि सुनायो. पाछें श्रीगोकुलनाथजीने चांपाभाईसों कह्यो, जो हमकों तो श्रीद्वारिकाजी अवश्य जानो है. सो श्रीगोकुलनाथजीने प्रथम ही प्रथम सङ्कल्प कर्यो हतो, जो मेरे द्रव्य निमित्त परदेस न जानो. परि श्रीद्वारिकाजीकौ माहात्म्य विचार्यो. और चाचा हरिवंशजीने लिख्यो. तासों आपु श्रीगोकुलनाथजी श्रीद्वारिकाजीकों पधारे. सो प्रथम राजनगर पधारे. तहां थोरेसे दिन रहिकै श्रीगोकुलनाथजी श्रीद्वारिकाजी पधारे. सो दिन तेरह श्रीद्वारिकाजीमें रहे. पाछें फिर श्रीगोकुलनाथजी राजनगर पधारे. तब चाचा हरिवंशजी श्रीगोकुलनाथजीके साथ हुते. पाछें श्रीगोकुलनाथजी श्रीगोकुल पधारे.

सो चाचाजीकों श्रीगोकुलनाथजी परदेस ही में छोरि आए हते. सो केतेक दिनमें चाचाजी परदेस तें श्रीगोकुल आइकै द्रव्य श्रीगिरिधरजीकों सोंपि आपु श्रीनाथजीके दरसनकों चाचाजी आए. सो तहां पर्वत उपर चाचा हरिवंशजी श्रीनाथजीके दरसन करिकै रामदासजी भीतरियासों चाचाजी पूछे, जो रामदासजी ! अब कहा समाचार है ? तब रामदासजी चाचा हरिवंशजीसों कहे, जो चाचाजी ! समाचार तो तब कहिवेमें आवें जो कछू बाकी छोरि पधारे होंई. परि अब तो एक बेटा श्रीगोकुलनाथजी हैं. यह इतनो बचन रामदासजी चाचा हरिवंशजीसों कह्यो. पाछें चाचाजीसों रामदासजीने पूछ्यो, जो तुम्हारे कहा समाचार है ? तब चाचाजी रामदासजीसों कहे, जो रामदासजी ! अब तो पञ्चाध्याई सगरी पाठ करियत है.

ताकौ हेतु यह है, जो तब तो एक श्लोक कहते ताकौ आपु श्रीगुसांईजी अर्थ करते. ताके आवेसमें कितनेक दिन पर्यन्त छके रहते. सा

अब पाठ हू करे होत नाहीं, ऐसो समै आयो है. सो वह समै तो प्रभुनके साथ ही गयो.

वार्ता प्रसङ्ग १४* :
और एक समै श्रीगोकुलनाथजी और श्रीघनश्यामजी ए दोऊ भाई बैठे आपुसमें वार्ता करत हते. ताही समै चाचा हरिवंशजी श्रीगोकुलनाथजीके दरसनकों बैठकमें आए. तब चाचाजी दण्डवत् करिकै श्रीगोकुलनाथजीसों श्रीघनश्यामजीसों कहे, जो बावा ! और वार्ता कहा कहत हो ? अब अपनी पोथी सम्हारो. सो ए दोऊ भाई चाचा हरिवंशजीके बचन उपदेश करि मानत भए. सो दूसरे दिनतें श्रीगोकुलनाथजी और श्रीघनश्यामजी श्रीभागवतकी टीका श्रीसुबोधिनीजी श्रीगुसांईजी कृत टिप्पनी यह अहर्निश बांचते. और हरिवंशजी पास बैठे सुनते. ऐसें अहर्निश रसावेसमें रहते. और ताहीके भावकौ विचार करते. यों करत जहां कहूं न समझि परे तो श्रीघनश्यामजी श्रीगिरिधरजी पास जाई कै पूछते. तब प्रथम श्रीघनश्यामजीसों श्रीगिरिधरजीनें पूछ्यो, जो बावा ! अब यह देखत हो ! यह कहि रहे. और वा समै श्रीगिरिधरजीकों अश्रुपात होइ आए. प्रभुनकौ स्मरन हृदयावेश भयो. सो एक मुहूर्त लों कछू देहानुसन्धान न रह्यो. पाछें श्रीघनश्यामजीकों उत्सङ्गमें बैठारि मुख चूमिकै कह्यो, जो तुम देखत हते ? तब श्रीघनश्यामजी श्रीगिरिधरजीसों कहे, जो श्रीवल्लभ दादा देखत हैं. यह बचन सुनिकै श्रीगिरिधरजी श्रीघनश्यामजी उपर बोहोत प्रसन्न भए. पाछें जो कछू श्रीघनश्यामजी पूछन आवते ताकौ अभिप्राय आछी भांति समुझाइकै श्रीगिरिधरजी श्रीघनश्यामजीसों कहते. और आज्ञा करते, जो यह श्रीवल्लभ बिना कौन देखे ? यह श्रीगोकुलनाथजी एकान्त बैठे चाचा हरिवंशजी आगें कहे.

सो एक समै श्रीगिरिधरजीके बचन श्रीबालकृष्णजीने सुने. तब एक दिन श्रीगोकुलनाथजीके पास श्रीबालकृष्णजी कथा होत समै आए. तब श्रीबालकृष्णजी श्रीगोकुलनाथजीसों कहे, जो श्रीवल्लभ ! तुम मोंको श्रीसुबोधिनी सुनाओ. तब श्रीगोकुलनाथजीने श्रीबालकृष्णजीसों कही, जो दादा ! आप बड़े हो. सो तुब बड़े आगें मैं कैसें कहूं ? तब श्रीबालकृष्णजीने श्रीगोकुलनाथजी सों कह्यो, जो यामें तुमकों कछू बाधा नाहीं. तासों तुम मोकों कथा अवश्य सुनाओ. पाछें शोभा बेटी मुख्य श्रोता और श्रीबालकृष्णजी, श्रीघनश्यामजी इतने जनें एकान्त बैठिके कथा श्रीगोकुलनाथजीके श्रीमुखतें सुनते. ता ठौर दोई वैष्णव जान पावते. सो एक तो चाचा हरिवंशजी और एक

निहालचन्दभाई. इतनेंन आगें श्रीगोकुलनाथजी कथा अपनी बेठकमें बैठिकै कहते. सो निहालचन्दभाई या कारनसों कथामें जान पाते, जो निहालचन्दने कृष्ण भटट पास बोहोत बार कथा सुनी है. और कृष्ण भटट, चाचा हरिवंशजी और निहालचन्दभाई इन तीनों जनेंन श्रीगुसांईजीके श्रीमुखतें कथा सुनिकै पाछें आपुसमें बैठिकै श्रीसुबोधिनीजीकौ बिचार करते. वाहीके रसमें छके रहते. तासों निहालचन्दभाई श्रीगोकुलनाथजीकी कथामें चाचा हरिवंशजीकी आज्ञा तें जान पावते. तातें श्रीगोकुलनाथजी इन आगें कृपा करिकै कथा कहते.

और श्रीगुसांईजीके पाछें हरिवंशजी सर्व छोरिकै श्रीगोकुल बास कर्यो. सो श्रीगोकुलनाथजीके श्रीमुखसों श्रीसुबोधिनी सुनते. ताके रसमें अहर्निश मगन रहते.

सो वे हरिवंशजी प्रभुनके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।३।।

४-मुरारीदास सूर्यद्विज ब्राह्मन

अब श्रीगुसांईजीके सेवक मुरारीदास सूर्यद्विज ब्राह्मन, पूरबमें रहते, तीनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं.

भावप्रकाश :
सो मुरारीदास सात्त्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'मन्दाकिनी' है. ये विशाखाजीतें प्रगटी हैं. तातें इनके भावरूप हैं. इनकी बाललीलामें आसक्ति है. सो मन्दाकिनी नन्दालयकी सेवामें सदा तत्पर रहति हैं. तातें श्रीठाकुरजी इन पर प्रसन्न हैं. श्रीचन्द्रावलीजीकों सगरे खेलके मिलापकौ भेद ये बतावति हैं. तातें श्रीचन्द्रावलीजीकों बोहोत प्रिय हैं.

ये मुरारीदास पूरबमें एक सूर्यद्विज ब्राह्मनके जन्मे. सो बरस छहके भए. तब इनके माता पिता मरे. पाछें ये अपने काकाके यहां रहे. सो काकाने इनकों पढ़ाए. सो कछूक पढ़े. ता पाछें ये बरस पन्द्रहके भए तब इनकों एक सन्यासीकौ सङ्ग भयो. सो मुरारीदास वा सन्यासीके साथ कासीजी आई रहे. घरमें काहूसों कह्यो नाहीं. सो इनके काका आदि सगरे मुरारीदासकों ढूंढे. परि पाए नाहीं. तब सब हार मानिकै बैठि रहे.

सो ता समै श्रीगुसांईजी कासीजी बिराजत हे. तहां श्रीगुसांईजी आप मनिकर्निकापै स्नान करत हे. ताही समै मुरारीदास हू स्नान करनकों तहां आए. सो श्रीगुसांईजीके दरसन करत ही मगन व्है गए. (सो) घरी एक ठाढ़े होइ रहे. पाछें श्रीगुसांईजी मुरारीदासकों दैवी जीव जानि बुलाए. जो मुरारीदास ! आयो ? तब मुरारीदास दण्डवत् करि बिनती कियो, जो महाराज ! हों आपकी कृपा भई तो आयो, बोहोत दिन भटक्यो. सो अब आप कृपा करि सरनि लीजिए्य तब श्रीगुसांईजी आज्ञा कीनी, जो गङ्गाजीमें स्नान करि लै. हम तोकों सरनि लेइंगे. पाछें मुरारीदास स्नान किये. तब श्रीगुसांईजी आप मुरारीदासकों नाम निवेदन करायो. पाछें मुरारीदासकी कच्ची दसा जानि श्रीगुसांईजी कछूक दिन इनकों अपनी पास राखे. सो मुरारीदासकौ श्रीगुसांईजीकी कृपातें मार्गकौ स्वरूप स्फुर्यो. तब इन कह्यो, जो महाराज ! मोकों श्रीठाकुरजी पधराइ देऊ. मेरो मनोरथ सेवा करनकौ है. तब श्रीगुसांईजी इनकों लालजीकौ स्वरूप पधराइ दियो. और आज्ञा किये, जो इनकी बालभावसों सेवा करियो. तोकों ये सब अनुभव करावेंगे. तब मुरारीदास श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि श्रीठाकुरजीकों सम्पुटमें पधराइ अपने घर आए. सो घर खासा करि भगवत्सेवा करन लागे. परि वहां कछू व्यावृत्ति नाहीं. तातें मुरारीदास अपने गामतें व्यावृत्तिके अर्थ पटना आए. एक कायस्थके चाकर रहे. सो तहां लिखिवेकौ काम करे. रुपैया पांच महिना पावे. पाछें कछूक दिनमें वह कायस्थ मर्यो. तब मुरारीदास तहां तें उठि चले. सा गौड़देश आए.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

वे मुरारीदास गौड देसमें जाई नारायनदास पास चाकर रहे. सो वे नारायनदास 'दाऊद' पात्साहके चाकर कुल्ल - कुल्लां दीवान हते. सो वाके उहां जो कछू नारायनदास करे सो वाके सगरे राज भरमें होइ. सो मुरारीदास जाइकै नारायनदासके पास चाकर रहे. परि मुरारीदास कबहू नारायनदासकों माला तिलक न दिखाए. और मुरारीदास अपनी वैष्णवता न जनाए. तहां नारायनदास सिरकारमें मुरारीदासकौ बारह

रुपैयाकौ महिना करन लागे. तब मुरारीदासने नारायनदास सों कही, जो हों तो रुपैया आठकौ महीना लेहुंगो. परि हों पहर दिन चढे तुम्हारे पास आयो करोंगो. और जब घरी दोइ दिन पाछिलो रहेगो तब हों जायो करोंगो. यह करार तें तुम्हारे मनमें आवे तो चाकर मोकों राखो. नांतरु नाहीं करो. सा यह बात मुरारीदासके मुखतें सुनिकै सगरी सभा आश्चर्यवन्त होइ रही. जो भाई ! याने यह कहा मांग्यो ?

भाव प्रकाश :
क्यों ? जो और मनुष्य तो चाकरीकौ द्रव्य जादा मांगे और ये तो हम कहत हैं वासों हू थोरो कहत है ? सो नारायनदास और सगरी सभा वा भेदकौ समुझे नाहीं. तातें चक्रत व्है रहे.

पाछें मुरारीदासने कह्यो सो नारायनदास माने. सो मुरारीदासके कहे प्रमान नारायनदासने मुरारीदासकों चाकर राखे. सो मुरारीदास जब दरबारमें जाते तब इनके तेजके आगें नारायनदास चाकरसे लगते. और कोई लिखिवेकौ काम चार पहर दिनमें करे, सो मुरारीदास उनसों सरल चारि घरीमें लिखे. सो मुरारीदासकों देखिकै नारायनदास और सब कोई विस्मित होइ रहे. परि मुरारीदासकौ भेद नारायनदास हू न जाने.

और मुरारीदासके माथे श्रीगुसांईजीके पधराए श्रीबालकृष्णजीकी सेवा बिराजति हैं. सो श्रीठाकुरजी मुरारीदाससों बोहोत ही सानुभावता जनावते. श्रीठाकुरजी प्रत्यच्छ मुरारीदाससों वार्ता करते. जो प्रभुनकों चहियत सो मुरारीदास पास मांगि लेते. और जो वा समै मुरारीदास प्रभुनकों वह वस्तू न देते तब श्रीबालकृष्णजी प्राकृत बालककी नांइ झगरो मुरारीदाससों करते. तब मुरारीदास प्रभु जानिकै जो कछू श्रीठाकुरजी मांगते सोई वस्तू तत्काल श्रीबालकृष्णजीके श्रीहस्तमें देते. या भांति मुरारीदास अलौकिक लीलाकौ अनुभव आस्वादन करते. सो वे मुरारीदास रात्रि प्रहर एक पाछलीसों उठि देह कृत्य करि स्नान करि मन्दिरमें जाई रसोई कछूक करि श्रीठाकुरजीकों जगाइ बालभोग धरते. फेरि रसोईमें जाई समै भए भोग सराइ श्रीठाकुरजीकी मङ्गला आर्ति करि, सिंगार करि, सिंगारभोग धरते. पाछें रसोईमें जाई सर्व सेवासों पहोंचि भोग सराइ आर्ति करते. ता पाछें रीति अनुसार सामग्री ठलाइ प्रभुनकों पलना झुलाइ, राजभोग समर्पि सिज्याकी सेवा करि

रजप करि, समयानुसार भोग सराइ आर्ति करि अनोसर करते. सो मुरारीदास श्रीठाकुरजीकों अनोसरकी झारी भरिकै कछू सामग्री चवेना आगें धरते. पाछें मुरारीदास प्रसाद लैकै कपड़ा पहरिकै जब दरबारकों जान लगते तब श्रीठाकुरजी मुरारीदासके पाछें - पाछें लागे डोलते. तब नाना भांतिके खिलोना मुरारीदास श्रीठाकुरजीके श्रीहस्तमें दैकै कहते, जो आज हों तिहारे काजे यह आछी वस्तू लै आऊंगो. तब श्रीठाकुरजी मुरारीदासकौ अञ्चल छोरते. तब घरके द्वारकौ तारो दे बाहिर जाते. तब श्रीठाकुरजी नीचे उतरि भीतरतें घरकी सांकरि दैकै खेलते. सो जब सन्ध्या समै मुरारीदास द्वारपै जाइकै पुकारते, जो सांकिर खोलो. तब श्रीठाकुरजी द्वार पास आइकै पूछतें, जो तू आज हमारे काजे कहा सामग्री लायो है? तब मुरारीदास कछू फल फलादिक ल्याये होते तिन सबनकौ नाम लैते. तब श्रीठाकुरजी भीतरकी सांकरि खोलते. और कोई दिन मुरारीदास सामग्री तो बजारतें लावते, परि श्रीठाकुरजीके हास्यावलोकनकों सामग्री दुराइ राखते. और प्रभु जब किवाड़ खोलन पधारते तब श्रीठाकुरजी वाइ प्रकारसों पूछते. तब मुरारीदास कहतें, लाला ! आजु तो कछू सामग्री पाई नाहीं. तब श्रीठाकुरजी कहते, जो हम हू आज सांकरि न खोलेंगे. तब मुरारीदास बाहिरतें बोहोत मनुहार करते. तब सब सामग्रीकौ नाम लैते तब श्रीठाकुरजी सांकरि खोलते. पाछें मुरारीदास द्वार भीतरकी सांकरि दै कै जब चौकमें जाते तब ही मुरारीदाससों श्रीठाकुरजी झगरो करत उपर चढते. सो सामग्री जब मुरारीदास संवारि धोइकै प्रभुन आगें धरते तब श्रीठाकुरजी अरोगते.

भाव प्रकाश :

तहां यह सन्देह होंइ, जो मुरारीदास स्नान करे बिना श्रीठाकुरजीकों मेवा भोग कैसें धरते ? यह तो श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके मार्गकी रीति नाहीं है ? और श्रीठाकुरजी हू मुरारीदासकों नहाये बिना स्पर्श कैसें करे ? तहां कहत हैं, जो भगवत्स्वरूपमें दोइ प्रकारके स्वरूप हैं. एक सर्वोद्धारक (और) दूसरो भक्तोद्धारक. सो आगें कहि आए हैं. सो यहां भक्तोद्धारक स्वरूपसों श्रीठाकुरजी मुरारीदासकों सर्व सुख दैत हैं. क्यों ? जो भक्तोद्धारक स्वरूपकों अपरसकी अपेक्षा नाहीं. ये तो प्रेमके चाहक हैं. सो मुरारीदासकौ प्रेम देखिकै निज स्वरूपमें सों प्रगट होंइ मुरारीदासके पास पधारते. सो बालककी नांई सर्व सुखकौ अनुभव मुरारीदासकों करावते.

तब मुरारीदास स्नान करि रसोई करते. पाछें सेन भोग धरि श्रीठाकुरजीकी रसोई पोति, भोग सराई, आर्ति करि, पाछें श्रीठाकुरजीकों पोढाइ

बाहिरकी टहलसों पहोंचि प्रसाद लै दूसरे दिनकौ सीधो सामग्री बीनि रसोईमें धरिकै, मुरारीदास सोवते. या प्रकार मुरारीदास चाकरी करन जाते. पाछें जब सांझकों दरबार तें घर आवते तब नौतन - नौतन फलादिक साग जो कछू बजारमें देखते सो थोरो - थोरो सब लै आवते. परि कछू सामग्री लिये बिना घर न आवते. सो जा दिन कछू उत्थापनकों फलफलादि ना मिलते ता दिन कछू सूको मेवा पसारीकी हाट तें लै घर आवते.

भाव प्रकाश :
क्यों ? जो उत्थापन भोगमें मेवा अवश्य चहिए ये पुलिन्दिनीके भावसों (सेवा) है. सो श्रीगोवर्द्धनकी कन्दारनमें श्रीठाकुरजी जागे हैं तब पुलिन्दिनी फल फूल मेवा भोग धरत हैं.

या प्रकार भावसों मुरारीदास श्रीबालकृष्णजीकों लाड़ लड़ावते. परि यह भेद कोऊ न जानतो.

पाछें केतेक दिनमें नारायनदासने मुरारीदासके पाछें जासुस लगायो. सो वह जासुससों नारायनदासने कही, जो तू ऐसी भांति इनके साथ रहियो, जो ये जाने नाहीं. सो मुरारीदास जब दरबारतें उठते तब वह जासुस इनके पाछें - पाछें जातो. सो सर्व क्रिया इनकी देखतो. पाछें जब ये मुरारीदास किवाड़ खुलाइकै भीतर जाते, तब वह जासुस नारायनदास पास आई सब समाचार जो इहां आई देखतो सो सब कहतो. परि भीतरकी बातकौ भेद न पावतो. सो नारायनदासके मनमें आतुरता बोहोत भई. तब नारायनदास मुरारीदाससों पूछे, परि मुरारीदास नारायनदास कों अपने मनकी बात न कहे.

भाव प्रकाश :
काहेतें ? जो नारायनदास अभी वैष्णव है नाहीं. सो वैष्णव बिना उनके आगें अपनो धर्म कैसें प्रकास करे ? करे तो धर्म जांई. तातें मुरारीदास अपनो भेद न कहते.

सो एक दिन मुरारीदास सांझके समै दरबारसों घरकों चले. तब नारायनदास मुरारीदासके पाछें - पाछें इनके घरलों आए. सो ये तो अपने नित्यकी रीतिसों घरकों आए. सो जाइकै घरके किंवाड़ दैन लागे. तब फिरिकै मुरारीदास देखे तो नारायनदास ठाड़े हैं. सो मुरारीदाससों नारायनदासने कही, जो मुरारीदास ! हम आजु तिहारो घर देखन आए हैं. तब मुरारीदासने नारायनदाससों कही, जो अब तो मैं तुम्हारे चाकर नाहीं. मेरे तुम्हारे बचन है सो सांझ तांई तुम्हारे काममें रह्यो. फेर सवारे प्रहर दिन चढे तिहारी चाकरीमें आऊंगो. तुम मेरे पाछें - पाछें क्यों आए ? यह कहिकै मुरारीदासने किवाड़ दै लिये. परि नारायनदासकों अपने घरमें आवन न दीने.

भाव प्रकाश :
काहेतें ? जो मुरारीदासकों एक श्रीठाकुरजीकौ आश्रय है. तातें उन नारायनदासकौ भय नाहीं कियो. और मुरारीदास जाने, जो नारायनदासकी सांची आतुरता होइगी तो दीनतासों फेरि हू आवेगो. तातें एक बेर आवन नाहीं दियो.

तब नारायनदास अपने घर फिरि आए. परि नारायनदासने मुरारीदासकी बात देखिकै मनमें जान्यो, जो ये कोई महापुरुष हैं. अपनो स्वरूप कोईकों दिखावत नांही है. पाछें जब दूसरे दिन राजद्वार तें सांझ समै घरकों चले तब नारायनदास वाही प्रकार मुरारीदासके घर आए. सो जब ही मुरारीदास किवाड़ दैन लागे तब नारायनदास मुरारीदासके पांवन परि बोहोत बिनती करे. तब नारायनदासकी बिनती जानिकै नारायनदासकों मुरारीदासने अपने घरमें आवन दिये.

भाव प्रकाश :
सो यातें, जो जाने, दैवी जीव बिना ऐसी दीनता और में न होंइ. और लीलामें नारायनदास ‘प्रेमलता’ हैं. सो ‘प्रेमलता’ ‘मन्दाकिनी’ की सखी हैं. तातें यहां हू मुरारीदास द्वारा इनकौ अङ्गीकार है. यासों नारायनदासकी दीनता देखि मुरारीदासने उनकों घरमें आवन दीने.

पाछें नारायनदास मुरारीदाससों बोहोत बिनती करि पूछत भए, जो मुरारीदास तुम्हारी कौन सम्प्रदाय है ? और तुम्हारे घरमें दूसरो तो कोई सहायताकों दीसत नाहीं. तातें तुम घरमें आई कहा करत हो ? तब मुरारीदास नारायनदासकी बोहोत दीनता जानि, मुरारीदास नारायनदाससों कहे, जो हमारी श्रीवल्लभी सम्प्रदाय है. हमारे गुरु प्रभु श्रीगुसांईजी हैं. तिनके हम सेवक हैं. तब तो नारायनदास मुरारीदासके पांवन पर्यो. और मुरारीदाससों नारायनदासने बिनती करी, जो मुरारीदास ! तुम मोकों अपनो सेवक करो. तब मुरारीदासने नारायनदाससों कह्यो, जो सेवककौ तो श्रीगुसांईजी इहां पधारे तब ही जोग बने. के तुम अड़ेल जाऊ तो यह जोग बने. के तुम इहांसों प्रभुन पास मनुष्य पठाओ तब जो उत्तर आवे सो हम करें. तब नारायनदासनें मुरारीदाससों कही, जो मुरारीदास ! हमकों तो श्रीगुसांईजी आप कछू जानत नाहीं. तातें तुम कृपा करि बिनती पत्र लिखिकै सिरकारसों मनुष्य कासिद पठाओ. पाछें मुरारीदास श्रीठाकुरजीकी सेवा करन गए तहां लगि नारायनदास मुरारीदासके घर बैठे रहे. पाछें जब मुरारीदास श्रीठाकुरजीकी सेवासों पहोंचि चुके तब नारायनदासने फेरि मुरारीदाससों बिनती करी, जो अब आप पत्र श्रीगुसांईजीकों लिखि देऊ, तो हों कचहरीमें जाइकै कासद जोड़ी चलती करों. ऐसें मुरारीदाससों कहिकै मुरारीदास पास दोइ पत्र नारायनदासने लिखवाइ लिये. पाछें नारायनदास अपनी कचहरी आई जोड़ी दोइ कासिदनकी वे पत्र दै अड़ेलकों पठाई. तिन कासिदनसों नारायनदासने कही, जो मेरे पास इन पत्रनकौ उत्तर बेगि लाओगे तिनकों हों इनाम देऊंगो. सो वे कासिद नारायनदासके, बेग ही श्रीगुसांईजी पास आई पहोंचे. सो मुरारीदासके पत्र कोई वैष्णवने बांचिकै श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो राज ! इन पत्रनकौ उत्तर मुरारीदासकों कहा लिखिवेमें आवे ? तब श्रीगुसांईजी अपने श्रीहस्तसों अष्टाक्षर लिखि दिये. और श्रीमुखतें कहे, जो मुरारीदासकों लिखि देऊ यह, जो अपने श्रीठाकुरजी आगें नारायनदासकों तुम नाम सुनाइयो. और हम हूं कछूक दिनमें आवत हैं. सो श्रीगुसांईजीकी आज्ञा प्रमान मुरारीदासकों लिखि पठाए. तब श्रीगुसांईजीके इहां तें वह उत्तरकौ पत्र लै कै वे कासिद च्यारों चले. सो थोरेइ दिनमें नारायनदास पास आए. तब नारायनदास उन कासिदनके उपर बोहोत प्रसन्न भए. सो एक - एक मोहौर और एक - एक पाग दै उनकों बिदा करे. पाछें नारायनदास आपु ही मुरारीदासके घर आई वह पत्र मुरारीदासके हाथमें नारायनदासने दियो. सो पत्र मुरारीदासने बांचिकै नारायनदाससों कह्यो, जो अब तुम स्नान करो. तब नारायनदास उहांई स्नान करे. पाछें मुरारीदास श्रीठाकुरजीकौ राजभोग सराईकै नारायनदासकों श्रीगुसांईजीके पत्र द्वारा उपदेश कर्यो. पाछें नारायनदासकों मुरारीदासने श्रीकृष्ण स्मरन करे. तब नारायनदासने मुरारीदास सों बिनती करी, जो अब तुम यह अनुचित क्यों करत हो ? जो हमकों तुम प्रनाम करे ? तब मुरारीदासने

नारायनदास सों कही, जो अब तो हमारे तुम्हारे श्रीकृष्ण स्मरनकौ व्यवहार भयो है. तातें तुम और भाव मनमें मति लाओ. पाछें नारायनदासकों मुरारीदासने श्रीबालकृष्णजीके दरसन कराए. सो दरसन करि नारानदास बोहोत प्रसन्न भए. पाछें नारायनदास, मुरारीदास घर प्रसाल लै दरबार आए. ता दिनतें नारायनदास नित्य मुरारीदासके घर श्रीठाकुरजीके दरसनकों आवते. और काहू दिन जब दरसन न पावते तब ता दिन नारायनदास मुरारीदासके साथ सांझकों आई दरसन करिकै प्रसाद लैते. पाछें श्रीगुसांईजी पास पांचमे दिन नारायनदास कासिद पठावते. तामें यह लिखते, जो राज ! बेगि पधारिए. यों जब श्रीगुसांईजी नारायनदासकी बोहोत ही आर्ति जाने, और मुरारीदासने हू जानी, जो नारायनदासके मनमें श्रीगुसांईजीके दरसनकी बड़ी अभिलाषा है. तब मुरारीदासने श्रीगुसांईजीकों बिनती पत्र लिखि पठायो. तब प्रभु अड़ेल तें पुरुषोत्तमपुरी पधारिवेकौ विचार किये. और जब ही नारायनदाससों मुरारीदासनें यह कही, जो अब श्रीगुसांईजी थोरेइ दिनमें इहां पधारत हैं. तब नारायनदास अपने मनमें बोहोत ही प्रसन्न भए. और जा दिनतें नारायनदास मुरारीदास पास नाम पाए ता दिनतें नारायनदास मुरारीदासकी बोहोत कानि करते. और नारायनदास अपने मनमें मुरारीदासकों या प्रकार जानते, जो मेरे सर्वस्व हैं सो मुरारीदास हैं. सो नारायनदास मुरारीदासकी सङ्गतितें ऐसें भगवदीय भए. तातें सङ्ग करनो तो भगवदीयकौ करनो.

सो वे मुरारीदास श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं. सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।४।।

५-नारायनदास दीवान कायस्थ

अब श्रीगुसांईजीके सेवक नारायनदास कायस्थ, दीवान, गौड़देशके बासी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत है

भावप्रकाश :
नारायनदास राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'प्रेमलता' है. ये विशाखाजीतें प्रगटी हैं, तातें इनके भावरूप हैं. सो 'प्रेमलता' नारायनदासकौ प्रागट्य और 'प्रेमलता' की एक अन्तरङ्ग सखी है 'गौराङ्गिनी'. सो इनकी स्त्री वीरांकौ प्रागट्य.

सो प्रेमलताकी आसक्ति बाललीलामें बोहोत है. तातें ये नन्दालयमें अष्ट प्रहर रहति हैं. तहां 'मन्दाकिनी' सों इनकौ सदा मिलाप रहत है. ये दोऊ सखी हैं. सो दोनो श्रीचन्द्रावलीजीकी परम सहायक हैं. श्रीठाकुरजी श्रीचन्द्रावलीजीके मनोरथकी सब सामग्री 'प्रेमलता' सिद्ध करि देति हैं. तातें ये श्रीचन्द्रावलीजीकों प्रिय हैं. और 'गौराङ्गिनी' निकुञ्च लीलामें प्रवीन है. ये श्रीचन्द्रावलीजीकी निकुञ्जलीलामें सदा तत्पर रहति हैं. इनकौ अङ्ग बोहोत सुन्दर गौर वरन हैं, श्रीस्वामिनीजी सदृश. तातें इनकों देखिकै श्रीठाकुरजीकों श्रीस्वामिनीजीकी सूधि आवति हैं. तासों ये श्रीठाकुरजीकों हू बोहोत प्रिय हैं.

सो एक दिन श्रीचन्द्रावलीजी नन्दालयमें श्रीठाकुरजीसों मिलनकों आई. तहां प्रेमलता मिली. उनसों श्रीचन्द्रावलीजी कह्यो, जो प्रेमलता ! देखि तो श्रीजसोदाजी कहा करति हैं ? तब प्रेमलता जाइकै देखें तो श्रीजसोदाजी दहीं बिलोवति है. सो प्रेमलता आइकै श्रीचन्द्रावलीजीसों कह्यो, जो श्रीजसोदाजी तो, दहीं बिलोवति हैं. तब श्रीचन्द्रावलीजी श्रीठाकुरजीकों मिलनकों आङ्गनके द्वार व्है पधारी. पाछें वाही समै विशाखाजी तहां आई. सो विशाखाजीकों प्रेमलता मिली. सो उन पूछयो जो प्रेमलता ! श्रीठाकुरजी कहां हैं ? तब प्रेमलता कह्यो, जो श्रीठाकुरजी तो आंगनके पाछें बिराजत हैं. तब विशाखाजी उहां गई. सो दूरि ही तें श्रीचन्द्रावलीजी और श्रीठाकुरजीकों देखे, तब श्रीठाकुरजी हू इन देखी. सो सञ्कोच कियो. तब श्रीचन्द्रावलीजी पाछें फिरिकै देखे तो विशाखाजी दूरि ठाड़ी हैं. सो श्रीठाकुरजी तो तत्काल वहां तें पधारे. तब श्रीचन्द्रावलीजीने विशाखाजीसों कह्यो, जो विशाखा ! तैनें यह कहा कियो ? सो विशाखाजी तो कांपन लागी. तापाछें बिनती करिकै अपराध क्षमा करवायो. और प्रेमलताकी सब बात विशाखाजीने चन्द्रावलीजीसों कही. जो प्रेमलतानें श्रीठाकुरजी यहां बताए तब मैं आई हों. तब श्रीचन्द्रावलीजी विशाखाजीकों साथ लै प्रेमलताके पास आई. सो प्रेमलतासों श्रीचन्द्रावलीजी कह्यो, जो प्रेमलता ! तैनें विशाखाजीसों मेरे आईवेकी क्यों नाहीं कही ? तब प्रेमलता चुप करि रही. तब श्रीचन्द्रावलीजी कह्यो, जो तैनें श्रीठाकुरजीके मिलनमें अन्तराइ कियो. तासों तोकों हू अन्तराइ होइगो. सो ता अपराधसों प्रेमलता भूतल पै आई

सो प्रेमलता गौड़देशमें एक कायस्थके जन्मी. सो नारायनदास भए. और इनकी अन्तरङ्गिनी सखी 'गौराङ्गिनी' वाही गाममें दूसरे कायस्थके घर प्रगटी. सो वीरां भई. सों ये दोऊ नौ - दश बरसके भए तब दोउनके माता पिताने दोऊनकौ ब्याह कियो. सो नारायनदासकौ पिता राज्यकौ दीवान हतो. सो पात्साहकी उन पर बोहोत निघा रहती. राज्यमें वह करतो सोई होतो. सो नारायनदासकौ पिता नारायनदासकों अपनी पास राखे. राजद्वारमें जांइ तहां हू

नारायनदासकों साथ लै जांइ. सो नारायनदास राजद्वारके काममें बड़े प्रवीन भए. पाछें नारायनदास बरस पच्चीसके भए तब नारायनदासकौ पिता मर्यो. तब पात्साहने नारायनदासकों दीवानगीरी सोंपी. सो नारायनदास राजकाज ऐसो करे, जो पात्साह इनके बस व्है गयो. अरु सब लोग (हू) नारायनदासकी बोहोत सराहना करन लागे. पाछें नारायनदासकों मुरारीदासकौ सङ्ग भयो. सो प्रकार मुरारीदासकी वार्तामें उपर कहि आए हैं. सो मुरारीदासके सङ्ग तें जा प्रकार नारायनदास श्रीगुसांईजीके सेवक भए सो अब कहत हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वे नारायनदासकों श्रीगुसांईजीके दरसनकी आर्ति बोहोत भई. तब मुरारीदाससों नारायनदासने कही, जो मुरारीदास बिनती पत्र लिखिकै मनुष्य अड़ेलकों बिदा करो. तब पहिलें ही नारायनदासके पास श्रीगुसांईजीकौ बधैया आयो. सो वा बधैयाने नारायनदाससों कह्यो, जो प्रभु कोस साठि उपर नावमें पधारे आवत हैं. सो काल्हि सांझ समै इहां पधारेंगे. तब नारायनदास वाही समै मुरारीदासकों साथ लै कै चले. सो नावमें पांच सात मनुष्य और वह बधैया, नारायनदास, मुरारीदास एई बैठे. तब तत्काल नाव दोराई.

भाव प्रकाश :

सो यह सनेहकी रीति है, जो प्रभु पधारे तब साम्हे जांइ पधराइ लावने, उत्साह पूर्वक.

और वा बधैयाने मुरारीदाससों कही, जो मोसों श्रीगुसांईजीने कही है, जो नारायनदासकों नावमें सावधानतासों राखियो. हमारी नाव जब नारायनदासकी नाववारेनकों दीसेगी तब नारायनदाससों नाववारे हमारी नावके समाचार कहेंगे. तब नारायनदास हमारी नावकों देखिकै देहानुसन्धान भूलि जाईगो. तासों उठि दोरेगो. सो वाकों गङ्गाजीकी खबरि न रहेगी. तातें तुम सावधान रहियो. जब नावसों नाव बांधी जाई तब नारायनदासकों छोरियो, यों कही.

भाव प्रकाश :

काहेतें ? श्रीगुसांईजी आप अन्तरजामी हैं. तातें लीलाकौ सब प्रकार जानत हैं. तासों पहिले ही सों सावधान किये.

सो जब ही नाव चली तब ही नारायनदासने मलाहनसों कही, जो तुम मोकों काल्हि दुपहरकों श्रीगुसांईजीकी नावके दरसन करावो तो हों तुमकों माला एक सोनेकी पहिराऊं. तब मलाहन नाव बोहोत उतावली चलाई. सो नारायनदासके कहे प्रमान ही श्रीगुसांईजीकी नावकौ प्रथम मलाहनकौ दरसन भयो. तब मलाहन नारायनदाससों सलाम करिकै कह्यो, जो साहिब ! श्रीगुसांईजीकी नावके वे दरसन होत है. सो मलाह दूरिसों श्रीगुसांईजीकी नावकौ नारायनदासकों दिखाई. तब तो नारायनदास प्रेममें विवस होइ तत्काल उठिकै अपनी नावमें सों श्रीगुसांईजीकी नावके सन्मुख चलत ही भए. तब मुरारीदास आदि नारायनदासकों पकरि राखे. पाछें मुरारीदास श्रीगुसांईजीकी और - और वार्ता करिकै नारायनदासकों आप्यायन(?) कराइ बैठारे. तब मुरारीदाससों चर्चामें नारायनदास लागे. परि मनतो नारायनदासकौ श्रीगुसांईजीकी नाव विषे हतो. सो जब ही श्रीगुसांईजीकी नाव निकट आई तब ही मलाहन तत्काल नावसों नाव बांधी. पाछें मुरारीदासने नारायनदासकों छोरे. सो नारायनदास श्रीगुसांईजीके चरनारविन्द उपर प्रनाम करते ही अचेत होइ गए. मानो प्रान निकसि गए.

भाव प्रकाश :
काहेतें ? जो प्रभुन या भांति अलौकिक रूपसों नारायनदासकों दरसन दिये. सो दरसन होतही नारायनदास वा स्वरूपमें मगन व्है गए. सो लोगनकों अचेत से दीसे.

सो मुरारीदासके अतिरिक्त सब कोऊ रोवन लागे. तब श्रीगुसांईजी मुसिकाइ मुरारीदासकी और देखिकै कहे, जो तुम सब यहांतें दूरि होइ जाऊ. तब वे सगरे सरकि गए. तब श्रीगुसांईजी औट कराइकै नारायनदासके मस्तक उपर श्रीहस्त फेर्यो. और नारायनदासके कानमें आप 'श्रीकृष्णः शरणं मम' यह मन्त्र सुनाए. तब तो नारायनदास जागिकै सावचेत होइ, ठाढ़े होइ, श्रीगुसांईजीकौ मुखारविन्द अवलोकन करि, दरसन करत भए. तब श्रीगुसांईजी नारायनदाससों पूछे, जो नारायनदास ! अब तांई तुम कहां हते ? तब नारायनदास बिनती करि कहे, जो महाराज ! हों तुम्हारे चरनारविन्द नीचे आछी भांति पर्यो हो. आप यह कहा कियो! तब श्रीगुसांईजी नारायनदास तें कहे, जो अबही

तुमकों सेवा करनी हैं. पाछें नारायनदास बोहोत भक्तिभावसों श्रीगुसांईजीकों अपुने घर पधराए. पाछें आप और घरके समर्पन लिए. पाछें श्रीगुसांईजी अपने पादुकाजीकी सेवा नारायनदासके माथे पधराए. ता पाछें नारायनदासकी दसा देखिकै श्रीगुसांईजी चलिवेकी कहि न सके. तब एक समै नारायनदाससों गोविन्द भटटने कही, जो नारायनदास ! अब तुम श्रीगुसांईजीकी बिदा करो. तब नारायनदास गोविन्द भटटके बचन सुनि 'हां जी' करि रहे. परि कोई दिन पधारिवेकी चर्चा न करे. यों करत केतेक दिन बीते तब एक समै श्रीगुसांईजीके साथमें दोइ ब्रजबासीनकों पानीकौ उपद्रव भयो. तब तो नारायनदास अपने मनमें डरपिकै श्रीगुसांईजीसों बिनती करि कहे, जो राज ! इहांको पानी आछौ नाहीं. तातें राज ! अब आप पधारिए. पाछें नारायनदास श्रीगुसांईजीकों बिदा किये. सो श्रीगुसांईजी पुरुषोत्तमपुरी होंइ आए. पाछें दिन दोइ चार बागहीमें श्रीगुसांईजी नारायनदासके आग्रहसों बिराजे. ता पाछें श्रीगुसांईजी अड़ेल पधारे. सो जहां लों श्रीगुसांईजी नारायनदासके घर बिराजे तहां लों नारायनदास नित्य नौतन सामग्री धोती, उपरेना, बागा, सिज्या, वस्त्र, चरन वस्त्र पर्यन्त सब नए नएई करते. या भांति नारायनदास श्रीगुसांईजीकी सेवा करते. तातें श्रीगुसांईजी अड़ेलतें प्रति वर्ष नारायनदासकों प्रसादी गद्दल पठावते. ऐसी कृपा श्रीगुसांईजी नारायनदास उपर करते.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

और एक समै श्रीगुसांईजी श्रीरुक्मिनी बहूजी, शोभा बेटीजी और श्रीगिरिधरजी या प्रकार सब कुटुम्ब सहित श्रीजगन्नाथराइजीके दरसनकों पुरुषोत्तम क्षेत्र पधारे. सो प्रभु श्रीजगन्नाथजीमें महीना एक लों पुरुषोत्तमपुरीमें बिराजे. सो जा समै श्रीगुसांईजी श्रीजगन्नाथराइजी सों बिदा भए तब जो कछू अपने साथ सामान हतो सामग्री, डेरा, पात्र, घोड़ा, बरघ, ऊंट, यह सब श्रीगुसांईजी श्रीजगन्नाथराइजीकी भेंट करिकै पुरीसों बिदा भए. जो - जो अङ्ग उपर अङ्ग - वस्त्र पहिरे हते सो तो रहे. और सर्व भेंट करि पधारे.

भावप्रकाश :

यहां यह बड़ो सन्देह है, जो श्रीगुसांईजी आप पुष्टिमार्गके चलावनहारे हैं. सो पुष्टिमार्गमें तो श्रीगोवर्द्धननाथजी ही मुख्य हैं, सर्वस्व हैं. सो श्रीजगन्नाथराइजीकों सर्व भेंट क्यों किये ? तहां कहत हैं, जो श्रीजगन्नाथराइजीमें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकौं सम्बन्ध है. या भावसों श्रीगुसांईजी आप श्रीजगन्नाथजीके दरसनकों बेर

- बेर पधारत हैं. और भेंट हू करत हैं. तातें श्रीआचार्यजीकौ सम्बन्ध जानि श्रीजगन्नाथरायजीके दरसन आदि करने. यह सिद्धान्त भयो. दूसरो अभिप्राय यहू है, जो श्रीगुसांईजी भक्तिमार्गके आचार्य हैं. तातें जहां कहूं भक्तिमार्गकी रीतिसों भगवत्स्वरूप बिराजत होंइ वहां आचार्यनकों अवश्य जानो चहिए. तातें श्रीगुसांईजी हू श्रीजगन्नाथराइजीके दरसनकों जात हैं, भेंट करत हैं. या प्रकार श्रीगुसांईजी आप भक्तिमार्गकी मर्यादाके रक्षक हैं. यह गौन भाव है.

सो पांवन ही चारों स्वरूप पुरीमें सो पधारे. यह प्रभुनकी इच्छासो नारायनदासने प्रथम ही अपने घर बैठे जानी. तातें नारायनदासने प्रथम ही अपने घर बैठे जानी. तातें नारायनदास इतनो सामान प्रथम ही अपने ह्यां तें श्रीगुसांईजीके सन्मुख चलाए हते. तिनके साथके मनुष्यनतें नारायनदासने यह कहि दियो हतो, जो यह सब सामान तुम पुरीके बाहिर रहि कोस एकके उपर राखियो. और, जो तुम पुरीके भीतर लै जाहुगे तो यह सर्व श्रीगुसांईजी श्रीजगन्नाथराइजीकी भेंट करि देंइगे. तिन वस्तूनके नाम सुखपाल ।।३।। घोड़ा ।।२।। ऊंट ।।१।। बरद - वानी, डेरा, कनात, पात्र सामग्री, आभूषन, वस्त्र दोऊ भांतिके, सिज्या और जो कछू वस्तू चहिए ये सब पठवाए. सो नारायनदासके मनुष्य श्रीगुसांईजीके आईवेकौ पेंड़ो देखिकै जहां नारायनदास बैठिवेकी कहे हते ताही ठौर वे मनुष्य बैठे हते. तब जब ही श्रीगुसांईजी पुरीमें तें पांवन पधारे इतने ही उन वह सब सामग्री श्रीगुसांईजीकी भेट करि नारायनदासकी दण्डवत् करिकै बिनती करी. जो महाराज ! यह सब नारायनदास आपकों भेंट पठाए हैं. आप अङ्गीकार करिए. तब श्रीगुसांईजी उन मनुष्यनसों पूछे, जो तुम यह सब वस्तू पुरीके भीतर काहे न लाए ? तब उन मनुष्यन श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! हमकों नारायनदासकी यही परवानगी ही. तासों हम उहां न लाए. तब श्रीगुसांईजी अपने मनमें नारायनदास उपर बोहोत प्रसन्न भए. पाछें एक सुखपालमें तो श्रीगुसांईजी आपु बिराजे. और एक सुखपालमें श्रीरुक्मिनी बहूजी बिराजे. और एक सुखपालमें श्रीशोभा बेटीजी बिराजे. और श्रीगिरिधरजी घोड़ा उपर असवार भए. पाछें ता ठौरतें बीस कोसकों कूंच कर्यो. सो 'कोकुवा' गाममें पधारे. तहां नारायनदास प्रभुनके साम्हें आइकै श्रीगुसांईजीकों बोहोत ही भक्तिभावसों अपने घर पधराइ ल्याये. सो सत्ताईस दिन श्रीगुसांईजी उहां बिराजे. सो नारायनदास नित्य नौतम सामग्री नित्य नए वस्त्र करावते प्रभुनके. परि नारायनदासकौ मनमें तो यह मनोरथ रह्यो, जो याही भांति प्रभु एक बरस इहां बिराजे तो हों भली भांतिसों सेवा करों. परन्तु कहा करें ? श्रीरुक्मिनी बहूजीकों गर्भाधान है. तासों नारायनदास प्रभुनकों बेगि ही बिदा करे. तब इतनो सामान और हू चलते समै नारायनदास भेंट किये. श्रीरुक्मिनी बहूजीकों तो पदिक सुध्धां माला पांच अति उत्तम मुक्ताफलनकी भेंट करे. और

श्रीशोभाबेटीजी और श्रीगिरिधरजीकों बोहोत आभुषन भेंट किये. पाछें श्रीगुसांईजी आगें बोहोत द्रव्य भेंट करिकै नारायनदास बिनती करे, जो महाराज ! एक बार याही प्रकार हों बिनती पत्र लिखि पठाऊं तब आपु कृपा करिकै पधारोगे. तब श्रीगुसांईजी नारायनदासकी आर्ति देखि अति प्रसन्न होंइ कै कहैं, जो नारायनदास ! तेरो मनोरथ सिद्ध होइगो.

और एक स्वरूप नारायनदासकों प्राप्त भयो हतो. तिनकों श्रीगुसांईजी वा समै नारायनदासके घर पाट बैठारे हते. तिनकी सेवा नारायनदास श्रीगुसांईजीकी आज्ञा प्रमान करते. पाछें श्रीगुसांईजी नारायनदासके देसतें अड़ेल पधारे. तब बालक सब साम्हें प्रभुनकों पधरावनकों पधारे. तामें और सब भाई तो प्रथम श्रीगुसांईजी पास पधारे. और श्रीरघुनाथजी तो प्रथम श्रीरुक्मिनीजी पास गए. सो सुखपालमें माताजीके पास जाई बैठे. तब श्रीरुक्मिनीजी वह हार अपने श्रीकण्ठ तें उतारिकै श्रीरघुनाथजीकों पहराइ दिये. सो श्रीरघुनाथजी वह माला श्रीकण्ठमें पहरिकै श्रीगुसांईजीकों मिले. पाछें श्रीरघुनाथजी श्रीगुसांईजी पास बिराजे तब और बालकन श्रीरघुनाथजीसों पूछी, जो यह पदिक कौन पासतें तुम पहरि आए. तब श्रीरघुनाथजीने कही, जो हमकों तो माताजीने यह पदिक दियो है. तब वे तीनों भाई श्रीरुक्मिनीजी पास आई दण्डवत् करि कहे, जो माताजी ! जैसो पदिक श्रीरघुनाथजीकों दियो है तैसो पदिक हमहूकों देउ. तब श्रीरुक्मिनीजी पदिक तीन उन तीनों भाईनकों दिये. सो अति आनन्दसों पदिक पहरि माताजी पासतें तीनों भाई फिरे. सो श्रीगुसांईजी पास आई बिराजे. तिनके नाम श्रीगोविन्दरायजी. श्रीबालकृष्णजी. श्रीगोकुलनाथजी. ए तीनों भाई पदिक ऐक ही से पाइ अति प्रसन्न भए.****

**** यह पदक वाला प्रसङ्ग कृष्ण भटटकी पोथीका है.

पाछें श्रीगुसांईजी आपु घर पधारे. और नारायनदास और नारायनदासकी स्त्री ये दोऊ जन श्रीठाकुरजीकी सेवा भली भांतिसों करन लागे. सो नारायनदास तो श्रीठाकुरजीकों जगाइ मङ्गला भोग धरि जप करि समै भए भोग सराइ मङ्गलार्ति करते. पाछें श्रीठाकुरजीकों स्नान कराइ सिंगार करि सिंगार भोग धरि नारायनदास दरबारकों जाते. सो नारायनदास आपु इतनी सेवा करते. और वीरां रसोई करि श्रीठाकुरजीकों राजभोग धरि सब रसोई पोति भोग सराइ राजभोग आर्ति करि श्रीठाकुरजीकों अनोसर करि वह प्रसाद ठलाइ ढांकि राखती.

पाछें जब दरबार तें नारायनदास घर आवते तब वह सीरो महाप्रसाद नारायनदास स्त्री पुरुष दोऊ जन अति आनन्दसों लेते. और नारायनदासने अपने घरके आगें दोऊ और वैष्णवनके उतरिवेकों न्यारी - न्यारी कोटड़ी करि राखी हती. और वैष्णवनके लिये सीधा सामान वीरां या प्रकार फटकि बीनिकै सिद्ध करि राखती. जैसें श्रीठाकुरजीके लिये सब सामग्री संवारती तैसें ही वह वैष्णवनके लिये सब सामग्री संवारिकै सिद्ध करि राखती. सो वे दोऊ जन नारायनदास और उनकी स्त्री वीरां श्रीठाकुरजीमें और वैष्णवनमें भाव एकसो राखते.

और नारायनदास तो दिनमें राजद्वारमें रहते. और इहां घर, जो जैसो वैष्णव आवतो ताकौ तैसो ई सन्मान वीरां करती. पाछें नारायनदास जब दरबारसों आवते तब उन वैष्णवनसों मिलते. सो उनसों नारायनदास खबर, वार्ता श्रीगुसांईजीकी पूछते. पाछें सवारे जब दरबारकों जाते तब नारायनदास वैष्णवकों श्रीकृष्ण स्मरन करत जाते. तब वैष्णवनकों देखिकै नारायनदास अपने मनमें अति प्रसन्न होते. पाछें उन वैष्णवनकों यथासक्ति खरच देते. सो वे वैष्णव अपनी इच्छासों जाते तब तो जाते, परि आप तें नारायनदास कबहू वैष्णवनकों बिदा न करते. और वीरां नित्य उनकों सीधो पहोंचावती. और वीरां वैष्णवनसों परदा कबहू न राखती. ऐसो जाकौ वैष्णवनसों सरल भाव होंइ, ताकों श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी क्यों न कृपा करें ?

वार्ता प्रसङ्ग ३ :
और एक समै नारायनदासने श्रीगुसांईजीकों बिनती पत्र लिख्यो. तामें यह बिनती प्रभुनकों लिखि पठाई, जो महाराज ! इहां मेरे पास कोई वैष्णव नाहीं ऐसो, जासों चर्चा वार्ता करिए जासों मन बिगरे नाहीं. चर्चा वार्ता बिना मन ठिकाने रहत नाहीं. तासों आप कृपा करिकै काहू वैष्णवकों मेरे पास पठाओगे. सा या भांति पत्र लिखिकै पठायो. वाके साथ श्रीगुसांईजीकों भेंट हुंडी बोहोत पठाई. सो वह मनुष्य अड़ेल आयो. तहां श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि यह नारायनदासकौ पत्र और हुंडी सोंपि दीनी. सो श्रीगुसांईजी आप ही वह पत्र बांचे. और चाचा हरिवंशजी प्रभुन पास बैठे हते तिनकों वह पत्र बंचायो. पाछें श्रीगुसांईजी चाचा हरिवंशजीकों यह आज्ञा दिये, जो चाचाजी ! तुम नारायनदास पास जाहु. तब चाचा हरिवंशजी श्रीगुसांईजी आगें बिनती करी, जो महाराज ! आपुकी आज्ञा तें आपुके चरनारविन्द

छोरिकै गौड़ देसमें जाऊंगो, सो मेरी कहा गति होइगी ? तब श्रीगुसांईजी चाचाजीसों कहे, जो तुम जहां होहुगे तहां हों तुमकों नित्य दरसन देहुंगो. तब चाचा हरिवंशजी अड़ेल तें श्रीगुसांईजी पासतें बिदा होसकें नारायनदासके पास गौड़ देसकों चले, सो चाचाजी केतेक दिनमें नारायनदास पास जाई पहोंचे. सो नारायनदास जब राजद्वारसों आए तब चाचा हरिवंशजीने नारायनदाससों श्रीकृष्ण - स्मरन कर्यो. तब नारायनदास अति आनन्दसों घोड़ा तें उतरि चाचाजीकों मिले. पाछें नारायनदास चाचाजीकौ हाथ पकरि अपने घर पधराइ प्रसाद लिवाए. पाछें चाचाजी और नारायनदास बैठे दिन रात्रि भगवद्वार्ता कर्यो करें. तब नारायनदासकौ दरबार जानो छूंटि गयो. पाछें केतेक दिनकों नारायनदास वार्ताके रसमें विवस भए. सो प्रसाद लेनो, सेवा सब छूटी. मानो विकल भए होंइ यह विवस्था नारायनदासकी भई. तब राजद्वारमें तो नारायनदासकौ काम, सो नारायनदास बिना सब बंद भयो. तब राजद्वारकौ मनुष्य नारायनदासके घर आइकै काहू मनुष्यतें पूछ्यो. तब काहू एकने ऐसें राद्वारके मनुष्यसों कही, जो एक वैरागी मथुरासों आयो है. तिन नारायनदासकों बावरो करि डार्यो है. सो ये समाचार सुनिकै वा राजद्वारके मनुष्यने पात्साहके आगें जाई कहे. जो साहिब ! नारायनदासके तो ये समाचार हैं. तब पात्साहने वाही समै यह हुकम कर्यो, जो वा वैरागीकों मो पास अब ही लै आओ. नांतरु नारायनदासकों आछौ करि दरबार पठावे. यह बात कहि वा पात्साहने नारायनदासके घर चाचाजीकों बुलावन मनुष्य बिदा करे. पाछें यह खबरि काहू वैष्णवने चाचा हरिवंशजीके आगें आई कही. तब चाचाजीने अपने मनमें विचार कियो, जो नारायनदासकों अब ही आछौ कियो चहिए. सो चाचा हरिवंशजी स्नान करि नारायनदासके श्रीठाकुरजीकों अभ्यङ्ग - स्नान कराइ वह चरनोदक नारायनदासके उपर छिरक्यो और कछूक प्यायो. तब तत्काल ही नारायनदासकी विकलता मिटिकै नारायनदास आछें भए. मन ठिकाने आयो.

भावप्रकाश :
काहेतें ? जो अभ्यङ्गमें आमला रहत है. सो आमला स्वरूप - विस्मृति करावनहारो है. तातें नारायनदासकी विकलता मिटी. और दूसरो अभिप्राय यहू है, जो चरनोदक लिये तें सीतल भक्ति होत हैं. तातें नारायनदासकों चरनोदक तें विकलता मिटी, सीतलता भई, से स्वस्थ भए.

पाछें नारायनदासने चाचाजीसों कह्यौ, जो चाचाजी ! वा अवस्थामें तो मोकों बोहोत सुख हतो. तुम यह कहा करे ? जो मेरो मन वा

ठौरतें निकार्यो. अब फेरि यह अवस्था क्यों भई ? तब चाचा हरिवंशजीने नारायनदाससों कह्यो, जो अबही तुमकों योंही चहिए. सो चाचा हरिवंशजी अपने मनमें यह विचारे, जो अब ही इनकों या भावकी योग्यता नाहीं. पाछें नारायनदासकों चाचाजी सावधान करे. जो तुम अब ही राजकाज करो. ता करिकै तुमसों सेवा प्रभुनकी बनि आवे सो करो. परि मन श्रीगुसांईजीके चरनारविन्दमें राखियो. इतने तुमकों राजद्रव्य बाधा न करेगो.

भाव प्रकाश :
काहेतें ? जो राजद्रव्य अनर्थ करनहारो है. सो श्रीगुसांईजीके स्मरन चिन्तनसों वह बाधा करेगो नाही. ऐसो प्रभुनकौ प्रताप है.

पाछें नारायनदास कपड़ा पहरि दरबार गए. फेरि कामकाज ब्यौहार प्रथम करत हुते ताही प्रमान करन लागे. पाछें कछूक दिन चाचाजी नारायनदास पास रहिकै प्रसन्नतासों नारायनदाससों सीख मांगिकै गौड़देश तें चाचा हरिवंशजी चले. सो कछूक दिनमें श्रीगुसांईजी पास श्रीगोकुलजीमें आए. तहां श्रीगुसांईजीको दण्डवत् करि चाचा हरिवंशजीने ये सब समाचार नारायनदासके विस्तारपूर्वक प्रभुन आगें कहे. तब श्रीगुसांईजी आप सुनिकै चुप करि रहे.

पाछें जा दिन नारायनदास राजद्वारमें गए ता दिन वा पात्साहने बोहोत द्रव्य खरच्यो. सो नारायनदास उपर वह पात्साह ऐसो प्रसन्न रहतो. और नारायनदासकी स्त्री वीरां ऐसी रूपवान हती जो नित्य सिंगार करि स्नान करि श्रीठाकुरजीके मन्दिरमें जाई. तब वाकौ कोऊ मनुष्य न जाने. मानों अप्सरा जात हैं. ऐसी वाकी दिव्य देह हती. सो वह वीरां नित्य अपने हाथसों श्रीठाकुरजीकी सेवा टहेल करती. परि और काहू बाईकों सेवाकी टहल न देती. और वह वीरां ऐसी सुकुमारि हती, जो पान खांइ सो पीक वाके गरे में उतरे, सो सब बाहिरतें ज्यों की त्यों दीसे. जो पास बैठ्यो होंइ सो जाने, जो याने पान खाए हैं. परि वह श्रीठाकुरजीकी सेवा और वैष्णवनकी सेवा तो अपने हाथ ही करती. तातें वा वीरांकी सराहना श्रीगुसांईजी आप बारबार श्रीमुखतें करते. और वा वीरां सों श्रीठाकुरजी बोहोत सानुभवता जनावन लागे. वह वीरां श्रीगुसांईजी, श्रीठाकुरजीकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती.

वार्ता प्रसङ्ग ४ :

और एक समै श्रीगुसांईजी फेरि नारायनदास उपर कृपा करि नारायनदासकों दरसन देवेकों गौड़देश पधारे. सो नारायनदासके घर दिन पांच सात रहे. पाछें जलके उपद्रव तें कोस पांच सात उपर एक गाम हतो. ता ठौर जल आछौ हतो. वहां कौ जल विकार न करतो. तासों श्रीगुसांईजी वा गाममें जांइ रहे. सो नारायनदास दोइ बार श्रीगुसांईजीके पास दरसन करिवेकों नित्य जाते. और फिर अपने गाम आवते. पाछें राजद्वारकौ सर्व काम करते. या प्रकार नारायनदास नित्यप्रति करते. सो एक दिन पात्साह आगें काहूने नारायनदासकी चुगली करी, जो हजरत ! नारायनदासके गुरु अमूके गाममें इहांसों सात कोस उपर उतरे हैं. तिन पास नारायनदास दोउ बार जात हैं. और ता ठौरतें फिरि आवत हैं. तब एक दिन वा पात्साहने नारायनदाससों पूछ्यो, जो तू वा गाममें नित्य दोइ बार क्यों जात है ? तब नारायनदासने पात्साहसों कह्यो, जो मेरे गुरु वा गाममें जांइ उतरे हैं, तासों उहां मैं जात हों. तब पात्साहने नारायनदाससों कही, जो तू उहां दोइ बार जात है और फिरि आइकै इहां हूं कौ काम सब करत है. तब नारायनदासने पात्साहसों कही, जो वहां हू जायो चहिए और इहां हूं कौ कामकाज सब कर्यो चहिए. तब पात्साह नारायनदासकौ मन गुरुमें अनुरक्त जानिकै नारायनदासकों यह परवानगी दीनी, जो नारायनदास ! जहां तांई तेरे गुरु वा गाममें रहें तहां तांई तू उहांइ तें हमारो कामकाज करियो. और तू उहांइ रहियो. तब नारायनदास अपने मनमें बोहोत प्रसन्न भए. पाछें पांचमें सातमें दिन नारानयदास दरबार करि जाते. सो एक दिन वा पात्साहने नारायनदास सों कही, जो तू अपने गुरुकों पूछि देखियो, जो हमकों उनके देखनकी बड़ी इच्छा है. तब नारायनदासने पात्साहसों कह्यो, जो वे तो तिहारी जातिकौ मुख देखत नाहीं. तब पात्साहने नारायनदाससों फेरि कह्यो, जो उनसों तू एक बार पूछियो तो सही. ताकौ वे तोसों कहा उत्तर करे हैं ? सो समाचार तू हमसों कहियो. ऐसें जब बोहोत बार पात्साहने कही, तब एक बार नारायनदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! या पात्साहकों तिहारे दरसनकी बोहोत अभिलाषा है. तासों हों जब दरबार जात हों तब वह मोसों कहत हैं, जो क्यों रे, नारायनदास ! तू पूछ्यो है के नाहीं ? तातें अब आप आज्ञा करो सो हों वासों जाई कहों. तब श्रीगुसांईजीने नारायनदास पास यह कहवाइ, जो तू तो कछू कहे मति. और वह जब आपुसों पूछे तब तू नाहीं हू मति करे.

भावप्रकाश :
याकौ अभिप्राय यह है, जो पोत्साह दैवी जीव है. क्यों ? जो दैवी बिना ऐसी आर्ति नाही होवें. तातें उनकौ मनोरथ पूरन करनो है. परि पहिलें आप ही कहवावें तो इनके बुलाइवेकी अपेक्षा यह मनमें आवे, तो नरायनदासकौ बिगार होंइ. जासों श्रीगुसांईजी आप ऐसें नारायनदासकों कहे.

सो जब नारायनदास दरबार आवत भए तब वा पात्साहने नारायनदाससों प्रथम ही यह पूछी, जो क्यों रे नरिया ! तू पूछ्यो हतो ? तब नारायनदासने कही, जो आछी बात है, एक बार तुमकों दरसन होइंगे. तब वह पात्साह अपने मनमें बोहोत आनन्द पाइ अति ही प्रसन्न होंइकै नारायनदास सों कह्यो, जो हों तो आजतें तीसरे दिन आऊंगो, तू आगें जा. तब नारायनदासने ये सब समाचार श्रीगुसांईजीके आगें आइकै कहे. तब प्रभु सुनिकै चुप करि रहे. पाछें नारायनदासने वा दिन बिछायत करि राखी. सो वह पात्साह उत्थापनके समै आई श्रीगुसांईजीकौ दरसन कर्यो. पाछें दण्डवत् करिकै ठाढ़ो रह्यो. तब श्रीगुसांईजी वाकों बैठिवेकी आज्ञा किये. तब वह पात्साह प्रभुनकी आज्ञा पाइ दण्डवत् करिकै बैठ्यो. पाछें वा पात्साहने पुरुषोत्तम जानि प्रभुनकों हाथ जोरे. ता पाछें श्रीगुसांईजीसों बिनती कर्यो, जो महाराज ! तुम कछू मनुष्य नाहीं, जो कन्हैया आज तांई हमने सुने हैं सो आजु अपनी नजरसों देखे. तातें आपु कोई अवतारी पुरुष दीसत हो. और यह नारायनदास धन्य है. सो केतेक दिनसों आपकी टहल करत हैं. ऐसे बोहोत सराहना करि वा पात्साहने कह्यो, जो धन्य मेरो यह देस है, जहां आप पधारे हो. और हों हूं धन्य हों, जो आपुको दरसन पायो. इतनो कहिकै पात्साहने पाछें नारायनदाससों कह्यो, जो तेरी कृपा तें हों इनके दरसन पायो. जो तू मेरे इहां रहत हतो, और अरज कर्यो तो मैने इनकौ दरसन पायो. मेरे बड़े भाग्य हैं. जासों तुमसे प्रधान मेरे पास है. तब ऐसें पात्साहने बोहोत बड़ाई करी. और श्रीगुसांईजीकी बोहोत सराहना करी. तब श्रीगुसांईजी खासाकौ थान रुपैया नवकौ नारायनदास हाथ पात्साहकी नजरि करायो. तब पात्साहने दण्डवत् करि फेरि श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! ऐसें तो आपुकी कृपातें मेरे हू इहां बोहोत हैं. परि एक कछू आपके श्रीअङ्गकौ प्रसादी वस्त्र पाऊं. तब श्रीगुसांईजी आपु वा समै उपरेना ओढें हते सो कृपा करिकै नारायनदास हाथ दिवायो. सो वा पात्साहने माथें चढाइ दण्डवत् करिकै अपनी पाग उपर वा उपरेनाकों बांध्यो. पाछें वह पात्साह श्रीगुसांईजीसों बिदा मांगिकै अपने घर गयो. ता दिनतें वह पात्साह नारायनदासकी बोहोत कानि राखतो.

पाछें थोरे से दिन गए तब नारायनदासने श्रीगुसांईजीकों अपने घर पधराए. तब वह पात्साह फेरि श्रीगुसांईजी पास दरसनकों आयो. पाछें श्रीगुसांईजी नारायनदासकौ मनोरथ पूरन करिकै आपु अड़ेल पधारिवेकौ विचार प्रभुन कियो. तब नारायनदास पहोंचावन चले. और पहिले जब श्रीगुसांईजी चलिवेकौ विचार करे, तब नारायनदासकी और ही विवस्था होइ जांइ. तब श्रीगुसांईजी चाचा हरिवंशजीकों कहे, जो चाचाजी ! कछू ऐसो उपाइ करिये; जो हमारे चलत नारायनदासकों कष्ट न होंइ. पाछें चाचा हरिवंशजीने नारायनदासके सेव्य श्रीठाकुरजीकों अभ्यङ्ग - स्नान कराइकै वह चरनोदक नारायनदासके उपर छिरक्यो. अरु कछू मुखमें मेल्यो. तब नारायनदासकौ मन फिर्यो. तब नारायनदास भली भांति प्रसन्न होइकै श्रीगुसांईजीकौ बिदा करे. सो नारायनदास थोरीसी दूरिलों प्रभुनकों पहुंचावन आए. तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न होंइकै नारायनदासकों बिदा करे. पाछें नारायनदासने चाचा हरिवंशजीकी बोहोत मनुहार करी. ता पाछें नारायनदास अपने घर आए.

वार्ता प्रसङ्ग ५ :
और एक समै श्रीसत्याजी, श्रीगोपीनाथजीकी बेटीजी श्रीजगन्नाथराइजीके दरसनकों पधारे. तब मार्गमें नारायनदासकौ गाम आयो. सो यह खबरि नारायनदासने सुनी. तब अपनें मनुष्यमार्गमें रखवारीकों नारायनदासने पठवाए. सो जब थोरी सी दूरि नारायनदासकौ गाम रह्यो तब मनुष्य नारायनदासकों खबरि करी. जो साहिब ! अमूकी ठौर बेटीजी पधारे हैं. तब नारायनदास साम्हें जांइकै श्रीसत्या बेटीजीकों अपने घर पधराइ ल्याये. सो नारायनदासके घरतें थोरी सी दूरि बन्दीखानेकौ घर हतो. सो एक सङ्ग सगरे बन्दीवान पुकारन लागे. तब श्रीसत्या बेटीजीने वीरां सो पूछी, जो वीरां यह सोर कैसो होत है ? तब वीरांने बिनती करिकै श्रीसत्याजीसों कही, जो महाराज ! ये राजद्वारके बन्दुवा हैं. तिनकों राजाने बन्दीखाने दिये हैं. सो ये सगरे पुकारत हैं. तब श्रीसत्याजी कहे, जो इनकों इकठोरे क्यों मूंदि राखे हैं. तब वीरांने श्रीसत्याजीसों फेरि बिनती करी, जो ये कोई राजाकौ काम बिगारे, वा गाममें चोरी करे. सो वा पास राजा दाम मांगत है. सो वे देत नाहीं. तासों एक बड़ो घर इनके मूंदवेकौ करि राखे हैं. तामें ये सगरे परे रहत हैं. तब श्रीसत्याजीने वा वीरांसों फेरि पूछी, जो ये बापड़े खात कहा होइंगे ? तब वीरांने सत्याजीसों फेरि बिनती करी, जो महाराज ! इनकों राजद्वार में तें आध - आध पाव काचे चना मनुष्य पाछें सांझकों मिलत है. सो वे चना खाइकै ये बापड़े परे रहत हैं. तब श्रीसत्याजी वा समै यह कहे, जो अरे दैया! ये बापड़े सब

भूखे रहत हैं ? इतनी कही. ता पाछें थोरीसी बार भई तब वीरांने सत्याजीसों कही, जो महाराज ! उठो स्नान करिकै रसोई करो. तब श्रीसत्याजीने वीरांसों कही, जो हम तो जब या गामके बाहिर जाइंगे तब रसोई करेंगे. तब वीरांने श्रीसत्याजीसों कही, जो महाराज ! यह कहा ? तब श्रीसत्याजी वीरांसों कहे, जो जा गाममें नित्य इतने मनुष्य भूखे रहत हैं ता गाममें जल पान कैसें लियो जांइ ? तासों हों तो या गामके बाहिर जांइ स्नान करिकै रसोई तहां करोंगी. तब श्रीसत्याजीके ये बचन सुनिकै वीरांने एक मनुष्य नारायनदास पास पठायो. ता मनुष्यसों वीरांने समुझाइके कह्यो, जो उन तें कहियो, जो घर बोहोत ही जरूरकौ काम है. तातें तू उनकों अपने साथ ही लिवाइ लाइयो. सो वा मनुष्यने नारायनदाससों ये समाचार जांइ कहे. तब नारायनदास सुनिकै तत्काल ही अपने घर आए. तब नारायनदाससों वीरांने श्रीसत्या बेटीजीके सर्व समाचार कहे. तब नारायनदासने फेरि तत्काल पात्साह पास जांइकै अरज करी, जो साहिब ! उन बन्दीवाननकों दिन बोहोत भए हैं. जो तुम कहो तो इनकों जो कछू द्रव्य थोरो बोहोत (ये) देइ, सो लिखाइ पटाइकै फेरि इनकों कामकी बहाली सोंपिए. तो फेरि अपने घरमें ये द्रव्य बोहोत देइंगे. तब वा पात्साहने नारायनदास सों कह्यो, जो आछी बात है. सो नारायनदास बन्दीखानेके पास आई निकसे. तब वे बन्दीवान इन नारायनदासकों देखिकै बोहोत ही सोर करि उठे. तब नारायनदास दरवाजो खुलाइ कै उन सगरेनकों बाहिर निकसवाइ लिए. तब उनन कही, साहिब ! हमकों खलास करो. तब नारायानदास उनसों कहे, जो तुम दाम क्यों नहीं भरत हो ? तब उन नारायनदाससों कही, जो हमतो इहां रुके हैं ! तातें दाम कौन भरे ? तब नारायनदासने नवीसिंदा बुलाए. पाछें एककौ एक आपुसमें जामिन लै दण्ड चुकाइ नारायनदास (ने) सगरे बन्दुवा छोरि दिये. पाछें उनके माथे दण्ड कर्यो हतो सो फरद पात्साहकों बांचि सुनाई. और उनके सर्व समाचार कहे. तब पात्साह नारायनदास उपर बोहोत प्रसन्न भयो. पाछें नारायनदास दरबार तें अपने घर आई श्रीसत्याजीकों दण्डवत् करि बिनती करी, जो राज ! आपकी कृपातें सब बन्दीवानकों छुडाइ आयो हूं. सो वे सगरे अपने - अपने घरकों गए. तब श्रीसत्याजी नारायनदास उपर अति प्रसन्न होंइ, उठिकै स्नान करिकै रसोई करि श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पि, समयानुसार भोग सराइ, आपु भोजन करिकै नारायनदासकों और वीरांकों पातरि धरे. सो नारायनदास प्रसाद लै दरबार गए. इतने ही यह बात काहूनें पात्साह आगें नारायनदासकी चुगली करी. जो हजरत ! नारायनदासके गुरुकी बेटी नारायनदासके घर उतरी है. तिन कछू कही है. तासों नारायनदासने सगरे बन्दूवा छोरि दिए हैं. तब नारायानदाससों पात्साहने पूछी, जो आज तैनें सगरे बन्दूवा एक ही बेण छोरि दिए, सो यह कहा काम कर्यो ? तब नारयनदासने पात्साहसों कही, जो हजरत ! नित्य पचास रुपैया तो

उनकौ खरच दरबारसों लगतो. और आमदनी कछू हती नाहीं. तासों एककौ जामिन एक करिकै छोरि दिए हैं. और अपने घरके श्रीबेटीजीके सर्व समाचार पात्साह आगें नारायनदासने कहे. तातें एक ही बार सब बन्दूवा छोरे हैं. तब नारायनदासकी गुरुभक्ति देखिकै पात्साह नारायनदास उपर बोहोत प्रसन्न भयो. पाछें उन बन्दीवाननके तें थोरो - थोरो द्रव्य आवन लाग्यो. तब नारायनदासने पात्साहसों फेरि अरज करी, जो देखो हजरत ! काल्हि तो उन बन्दीवाननकों छोरे हैं. और आज ही इतनो द्रव्य आई पहोंच्यो है. और जो वे बन्धेइ रहते तो आज द्रव्य कहांसों आवतो ? और ये भाजि तो सकत नाहीं. काहेतें, जो आपुसमें एककौ एक जामिन है. तातें अपनें तो पैसानसों काम है, कछू इनकों बन्दीखानेमें देवेसों काम नाहीं. पाछें यह बात नारायनदासकी सुनिकै पात्साह नारायनदास उपर बोहोत प्रसन्न भयो. और एक सिरोपाव दै नारायनदासकों घर पठायो. सो सिरोपाव पहरि नारायनदास तत्काल ही अपने घर आइकै श्रीसत्या बेटीजीकों दण्डवत् करे. पाछें केतेक दिन श्रीसत्याजी आप नारायनदासके घर बिराजे. ता पाछें पुरुषोत्तमपुरी श्रीजगन्नाथराइजीके दरसनकों श्रीसत्या बेटीजी पधारे. सो तहां श्रीजगन्नाथराइजीके दरसन करि कछू दिन रहि पाछें फिरे. सो श्रीसत्याजी फेरि कछूक दिन नारायनदासके घर बिराजे, आइकै. पाछें जब श्रीबेटीजी अड़ेलकों बिदा मांगे तब नारायनदासने श्रीसत्याबेटीजीकों बोहोत आभरन, पहरावनी, रोकड़ि भेंट करी. और कितनो सामाना नारायनदास श्रीगुसांईजीकों भेंट पठाए. पाछें मार्गमें अपनो रसालो, असवार दै श्रीसत्याजीकों श्रीगुसांईजीके पास पहोंचते करे. सो मनुष्य नारायनदासके श्रीसत्या बेटीजीकों पहोंचाइकै श्रीगुसांईजीकौ पत्र लिखाइकै वे नारायनदास पास आए. तब नारायनदासकों वह श्रीगुसांईजीकौ पत्र दै कै वे मनुष्य सीख मांगिकै अपने घर गए. पाछें वा पत्रकों माथे चढाइकै नारायनदासने बांच्यो. सो बांचिकै बोहोत आनन्द पायो. उन नारायनदास उपर श्रीगुसांईजी ऐसी कृपा करते. सो श्रीसत्या बेटीजी श्रीगुसांईजी पास आइकै नारायनदासकी बोहोत बड़ाई करि सराहना करी. तब श्रीगुसांईजी सत्या बेटीजीसों कहे, जो वह मेरो नारायनदास ऐसोइ है.

वार्ता प्रसङ्ग ६ :
और एक समै काहूने नारायनदासकी चुगली पात्साह आगें करी. जो हजरत ! नारायनदास आपकी सिरकारतें उत्तम - उत्तम वस्त्र बुने जात हैं तिन कारीगरके घर ही सों लालच दै कै आप लैत हैं. सो इहां कोई कारीगर उत्तम वस्त्र लाइ सकत नाहीं. यह वाकी बात सुनिकै पात्साह चुप करि रह्यो. पाछें एक दिन पात्साहने नारायनदासकों एकान्त बुलाइकै पूछ्यो. जो नारायनदास ! मेरे कपड़ा कारीगर

बुनत हैं तामें सों तू क्यों बीनि लेत है ? तब नारायनदासने पात्साहसों कह्यो, जो हजरत ! वस्त्र तो लेत हूं. और तो सब सिरकारमें लिये जात हैं. तब पात्साहने नारायनदासतें पूछ्यो, जो तिनकों तू कहा करत है ? तब नारायनदासने पात्साहसों कही, जो हजरत ! हों उन वस्त्रकों अपने गुरुके घर पठावत हूं. तब पात्साहने नारायनदाससों पूछ्यो, जो तू उन वस्त्रकौ दाम कहां सों देत है? तब नारायनदासने पात्साहसों कही, जो हजरत ! उन वस्त्रनके दाम हों अपने पासतें देत हूं. तब पात्साहने नारायनदास सों कही, जो उन वस्त्रनके दाम तू मति देइ. हमारी सिरकार सों दियो करि. तब नारायनदासने पात्साहसों कह्यो, जो हजरत ! आप तो जानत ही हो, जो हों आपकी सिरकारसों दाम दै कै वस्त्र पठाउं तो वे तो प्रभु हैं, अङ्गीकार न करें. और यह तुम्हारी ही और तें जानोगे. जो मेरे उपर आपकी रयाइत न होंइ तो ये ऐसें अलौकिक वस्त्र मेरे हाथ कैसें आवते ? तब वह पात्साह नारायनदासके वचन सुनिकै नारायनदास उपर बोहोत ही प्रसन्न भयो. ता दिन तें वा पात्साहने नारायनदासकौ सवायो महीना करि दियो. और पात्साहने कही, जो नारायनदास ! जो तेरे घर खरच चहिए सो दरबारकी ओर सों लियो करि. और या महीनानकी तो वस्त्र सामग्री तू अपने गुरुनके उहां पठायो करि.

भावप्रकाश :
तातें सत्सङ्ग ऐसो पदार्थ है. जो नारायनदास जैसें भगवद्भक्तकी सङ्गति तें या म्लेच्छ हू की बुद्धि ऐसी भई.

पाछें वा चुगली करनवारेकौ महोड़ो स्याम होइ गयो.

भाव प्रकाश :
यामें यह जतायो, जो कोऊ वैष्णवकौ अपराध करे तो वाकौ कियो अपराध वाहीकों बाधा करे. वैष्णवकौ कछू बिगार न होंइ.

वार्ता प्रसङ्ग ७ :
और वे नारायनदास, जो वस्त्र अति उत्तम श्रीगुसांईजी पास पठावते सो श्रीनाथजी और घरके ठाकुरजी, और श्रीगुसांईजी, और सात हू

बालकनके श्रीअङ्गमें वे वस्त्र अङ्गीकार होते. और हू बचि रहते. तामें पाग तो ऐसी उत्तम नारायनदास पठावते, जो वा पर पानी छिरकते तब वाके तारन दीसते. ऐसें पचतोलिया पाग नारायनदास प्रतिवर्ष श्रीगुसांईजीकों पठावते. जो भिंजोइकै बांधे तो बांधतमें सूकि जांइ. और जो भिंजोइके सुकाइवेकों भूमिमें डारे तो उठावती बार दीसती नाहीं. सो वा ठौर पानी छिरकते तब पाग दीसती. ऐसें सूक्ष्म वस्त्र पठावते.

वार्ता प्रसङ्ग ८ :

और एक समै भण्डारमें कछू द्रव्य चहियत हतो. तब आठ हजारकी हुंडी नारायनदास उपर करी. सो हुंडी लिखि नारायनदास पास कासिद पठायो. ता कासिदकों चले तिन दिन भए. इतने ही नारायनदासकी पठाइ हुंडी श्रीगुसांईजीके पास आई पहोंची. तब चांपाभाई भण्डारीने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो राज ! आपु तो हुंडी नारायनदास उपर करी. और नारायनदासकी पठाइ हुंडी आजु इहां आई पहोंची है, तासों अब कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजी चांपाभाई भंडारीसों कहे, जो कोई मनुष्य पठाइकै वह हुंडी पाछी फेरि मंगाइ लेहु. तब चांपाभाई भंडारीने फेरि श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो महाराज ! वह तो कासिद दूरि जाई पहोंच्यो. वाकों अब कौ चल्यो मनुष्य कहां भेटेगो ? जो वाकों पाछो फिरावे ? तब श्रीगुसांईजी चांपाभाईसों कहें, जो अब तो भई सो भई. सो श्रीगुसांईजीकी लिखि हुंडी जा दिन नारायनदास पास पहुंची ता दिन नारायनदास अपने घर बड़ो उत्सव करत भए. बोहोत भेंट काढ़ि धरे. और वीरां सों नारायनदास कहे, जो आजु मो उपर श्रीगुसांईजी बड़ी कृपा करे. सो मोकों अपनो जानिकै मेरे उपर हुंडी करी है. ता दिन नारायनदास बोहोत प्रसन्न भए. पाछें वा हुंडीके दाम तत्काल पठाइ और वा दिनकी हुंडी कराइ श्रीगुसांईजीकों बिनतीपत्र लिखिकै वा मनुष्यकों महाप्रसाद लिवाइकै नारायनदासने बिदा कियो. ता पत्रमें नारायनदास यह लिखे, जो राज ! इतने दिननमें मेरे उपर आज अति कृपा करी हैं. और हों तो पतित दासानुदास हों. ऐसें नारायनदास श्रीगुसांईजीकों बोहोत बिनतीपत्र लिखि पठाए. सो वही मनुष्य फेरि श्रीगुसांईजी पास आयो. और नारायनदासकौ पत्र वा मनुष्यनें श्रीगुसांईजी आगें दियो. सो चांपाभाईने बांचि सुनायो. और वा पत्रके भीतर जो हुंडी हती सो श्रीगुसांईजी आगें धरि, चांपाभाइने नारायनदासकी दण्डवत् करी. तब नारायनदासकौ पत्र सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए. सो वे नारायनदास श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे.

वार्ता प्रसङ्ग ९ :

बहौरि एक समै नारायनदासने चाचा हरिवंशजीकों पत्र लिख्यो. तामें नारायनदासने यह लिख्यो, जो श्रीगुसांईजीकों प्रतिवर्ष कितनो खरच बैठे है ? सो जो तुम मोकों लिखि पठावो तो मैं इहां तें तितनो द्रव्य पठायो करों. यह पत्र घरू मनुष्य हाथ नारायनदासने चाचा हरिवंशजीके पास पठायो. सो वह पत्र वा मनुष्यने चाचाजीकों दियो. ता पत्रकों बांचिकै चाचाजी बोहोत प्रसन्न भए. सो नारायनदासकौ पत्र चाचा हरिवंशजीने श्रीगुसांईजीके श्रीहस्तमें दियो. ता पत्रकों बांचिकै आप प्रभु वा समै श्रीमुखतें यह बचन कह्यो, जो यह वैष्णव तो भलो हतो. परि अब तो काम सों गयो. हमारे घरकौ खरच कहा जीव चलावेगो ? हमारो खरच तो चलावनहारो चलावत ही है. ता पत्रकौ प्रतिउत्तर चाचाजी कछू लिखे नाहीं. यह लिखि पठाए, जो या पत्रकौ प्रतिउत्तर पाछें तें लिखि पठावेंगे. पाछें थोरेसे दिनमें नारायनदासकी देहमें रोग उत्पन्न भयो. तब नारायनदासके घर पात्साह नारायनदासकों देखन आयो. तब पात्साहने वैद्यनसों कही, जो कोई नारायनदासकों नीको करे तो वह मांगे सो मैं वाको देहुंगो. परि परमेश्वर आगें काहूकौ चारो नाहीं. पाछें नारायनदासकी स्त्री वीरांकौ पात्साहने बोहोत समाधान कर्यो. और वीरांसों पात्साहने कह्यो, जो अब नारायनदासकों देत हूं सोई तोकों तेरे जीवन पर्यन्त देहुंगो, तू अपने मनमें कछू और मति विचारियो. तू मेरी धर्मकी बेटी है. सो जैसें मैं अपनी बेटीकी प्रतिपालना करत हूं तैसे ही तेरी प्रतिपालना करोंगो. तू अपने मनमें काहू बातकी चिन्ता मति करियो. ऐसें कहि कै वह पात्साह अपने घर गयो. ता पाछें नारायनदासने अपनी स्त्रीसों भली भांति समुझाई. जो तू श्रीठाकुरजीकी सेवा भली भांतिसों करियो. तब वीरांने नारायनदाससों कही, जो मैं तो जा वेषसों सेवा करी है ताही वेषसों जो प्रभु सेवा मोसों करावेंगे सो तो सेवा करोंगी.

भावप्रकाश :

यामें यह जतायो, जो मैंने आज तांई श्रीठाकुरजीकी सेवा पतिभावसों सोरह हू सिंगार करिकै करी है. सो तुम्हारे पाछें ये सिंगार नहीं होंइ. काहेतें ? जो लोक विरुद्ध दीसे. तातें मैं तुम्हारे सङ्ग ही लीलामें आऊंगी. या भावसों वीरांने ऐसें कह्यो.

तब नारायनदासकों महा चिन्ता उपजी. सो दिन तीन लों नारायनदास भूमि - सिज्या रहे. पाछें चौथे दिन जब वीरां स्नान करिकै

श्रीठाकुरजीके मन्दिरमें गई तब सिज्या मन्दिरमें जाइकै देखें तो एक श्रीठाकुरजी तो सिज्या पर नहीं है. और सगरी सामग्री यथास्थित हैं. सो श्रीठाकुरजी अन्तर्धान भए. ऐसे वा समै वीरांकौ भासमान् भयो. पाछें वीरां मन्दिरसों बाहिर आइकै ये समाचार नारायनदाससों कहे. सो नारायनदासने यह सुनत ही देह छोरी. तब वीरां घर हीमें चिता करिकै नारायनदासके सङ्ग ही जरति भई. उन दोउ जननकी सङ्ग ही क्रिया भई.

पाछें केतेक दिन बीते तब यह समाचार श्रीगुसांईजी पास आए. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत दुःख पाए. तब वा समै प्रभु आप श्रीमुखतें यह कहे, जो नारायनदास भलो वैष्णव हतो. परि याके मनमें हमारे घरके खरच चलाइवेकी आई तासों गयो.

भाव प्रकाश :
यामें यह जातायो, जो सेवकको सदा सावधानीसों रहनो. ये तो ईश्वरके घर हैं. इनकौ खरच चलावन योग्य कौन है ? ये अपनो खरच आपु ही चलावत हैं. जीवकी कहा सामर्थ्य है, जो इनकौ खरच चलावे ? सो नारायनदासके मनमें यह आइ, सो भली करत बुरी भई. तासों भगवदीयनकों दीनता राखनी.

सो नारायनदासने श्रीगुसांईजीकी और श्रीनाथजीकी तनुजा वित्तजा सेवा भली भांतिसों करिकै प्रभुनकों प्रसन्न करे. सो प्रथम जब चाचा हरिवंशजी नारायनदासके घर गए हे तब नारायनदासने चाचाजीसों बिनती करी हती. जो चाचाजी ! मो उपर ऐसी कृपा करो, जो श्रीठाकुरजीकों भोजन करत देखिए. पाछें अपने श्रीठाकुरजीकों नारायनदासने भोग समर्प्यो. ता पाछें छिन एक रहिकै चाचा हरिवंशजीने नारायनदाससों कह्यो, जो नारायनदास ! अब तुम देखो. तब नारायनदास देखे. परि श्रीठाकुरजी तो तेजःपुंज हैं. तासों नारायनदासकों धारना न भई. तहां तांई प्रभुनकी कृपा भई. परि छिन एकमें जीवबुद्धिसों बिगरि गई. तातें भगवदीयनकों सावधान रहिकै दीनता सों काम करनो.

सो वे नारायनदास श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं. सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।५।।

६-विटठलदास कायस्थ

अब श्रीगुसांईजीके सेवक विटठलदास कायस्थ, दिल्हीतें परे कोस दोइ पर एक गाम है, तहां रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं.

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'वल्लवी' है. ये विशाखाजीतें प्रगटी हैं, तातें इनके भावरूप हैं. सो वल्लवीमें गूढ़ भावकौ प्रकार बोहोत है. ये नन्दालयमें गूढ़ रीतिसों श्रीठाकुरजीतें सदा मिलति हैं. सो या प्रकार जो कोऊ जानें नाहीं. सो एक समै प्रेमलता नन्दालयमें श्रीठाकुरजीकों खिलावति हुती. तब इन छल करि श्रीठाकुरजीकों अपनी गोदिमें लिये. पाछें कोइ एक कुञ्जमें जांइ इन श्रीठाकुरजीसों प्रार्थना करी, जो महाराज ! मो पर कृपा करि मेरो मनोरथ पूरन कीजिए. तब श्रीठाकुरजी हंसिकै आज्ञा किये, जो ये बात प्रेमलता जानेगी तो श्रीयशोदाजीसों कहिकै तोकों नन्दालयमें आवन न देघी. तो तू कहा करेगी ? तातें मोकों बेगि नन्दालयमें लै चलि. तब वल्लवीने और हू बिनती कीनी, जो महाराज ! यह समो मुकरिवेकौ नांही है, तातें बेगि कृपा कीजिए. पाछें श्रीठाकुरजी वल्लवीकी बोहोत आर्ति जानि इनकौ मनोरथ पूरन कियो. सो बात एक सखीने जानी. सो वा सखीने प्रेमलतासों जांइ कही. तब प्रेमलता खीझिकै वल्लवीसों कहे, जो क्योंरी ? तू मोतें छल कियो ? या प्रकार प्रेमलता बोहोत ही अप्रसन्न भई. ता अपराध करि वल्लवी भूतल पर आई.

सो ये दिल्हीतें परे कोस दोइ पर एक गाम है, तहां एक कायस्थके जन्मे. सो वह कायस्थ राजद्वारमें चाकर हो. सो वाके पास द्रव्य बोहोत हतो. सो उन विटठलदासकों पढ़ाए. राजकाजमें हू प्रवीन किये. पाछें विटठलदास बरस पच्चीसके भए तब वह कायस्थ मर्यो. तब विटठलदास जात्राकों चले. सो मथुरा आए. तहां विश्रान्त न्हाइ, ब्राह्मननकों दान दक्षिना दै श्रीगोकुल आए. ता समै श्रीगुसांईजी ठाकुरानी घाट पर सन्ध्यावन्दन करनकों पधारे हे. सो विटठलदासकों दरसन भए. सो दरसन होत ही विटठलदासकौ मन श्रीगुसांईजीके स्वरूपमें लग गयो. तब इन श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! कृपा करि मोकों अपनो जानि सरनि लीजिए. तब श्रीगुसांईजी विटठलदासकों दैवी जीव जानि आप कृपा करि कहे, जो श्रीयमुनाजीमें स्नान करि अपरस ही

में मन्दिरमें आइयो. तहां हम तोकों सेवक करेंगे. पाछें श्रीगुसांईजी आप तो मन्दिरमें पधारे. सो भोग सराइ श्रीनवनीतप्रियजीकी राजभोग आर्ति किये. इतनेमें विटठलदास स्नान करि अपरस ही में मन्दिरमें आए. तहां श्रीगुसांईजी आप विटठलदासकों नाम निवेदन कराए. पाछें श्रीनवनीतप्रियजीकों अनोसर कराइ, श्रीगुसांईजी आप अपनी बैठकमें पधारे. सो विटठलदास हू बैठकमें आइ बैठे. पाछें विटठलदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! अब मोकों कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजी आप विटठलदाससों कहे, जो तुमतें और कछू बनेगो नाहीं, तातें 'विवेकधैर्याश्रय'कौ नित्य पाठ करियो. ता करि भगवद्धर्म सिद्ध होइगो. तब विटठलदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! 'विवेकधैर्याश्रय'कौ स्वरूप कृपा करि समझाइए. तब श्रीगुसांईजी विटठलदासकों 'विवेकधैर्याश्रय'कौ स्वरूप अर्थ सहित विस्तार पूर्वक समझाए. सो सब विटठलदास अपने हृदयमें धारन किये. सो अहर्निश वाके भावमें छके रहते. ऐसे करत कछूक दिन बीते. तब विटठलदास श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मांगि अपने घर आए. पाछें वासन - पात्र सब बदले. और वैष्णवनकी रीतिसों रहन लागे.

सो विटठलदास प्रतिवर्ष श्रीगुसांईजीके दरसनकों श्रीगोकुल आवते. सो उत्तम - उत्तम सामग्री जो मिलती सो सब लावते. सो सब श्रीगुसांईजीकों भेंट करते. सो श्रीगुसांईजी इन पर सदा प्रसन्न रहते. ऐसें करत कछूक दिनमें विटठलदासकौ द्रव्य सब निघट्यो. तब ये चाकरी करनकों विचार किये. सो गौड़देश आए.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो विटठलदास कायस्थ आइ नारायनदासके पात्साह पास चाकर रहे. परि अपनी वैष्णवता नारायनदासकों न जनाई. दरबारकी चाकरी करते. कब हूं कोई विटठलदाससों पूछे, जो तुम्हारो मार्ग कहा है ? तब वासों विटठलदास कहते, जो हमारो मार्ग तो वैष्णव है. सो नारायनदास न जानते. पाछें केतेक दिनकों नारायनदासने पात्साहसों कहिकै विटठलदासकों परगने पै पठायो. तब परगनेकों कमाइकै विटठलदास नारायनदास पास आए. सो नारायनदासकों वा परगनेकौ हिसाब विटठलदासने सब समझाइ दियो. तामें कछू दाम विटठलदासके पास बाकी रहे. तब नारायनदासने विटठलदाससों कह्यो, जो ये दाम तुमपै सिरकारके बाकी रहे हैं सो भरि दिये चहिए. तब विटठलदासने नारायनदाससों कह्यो, जो अब तो दाम मों पास है नाहीं. जो दूसरे परगने पर पठाओगे तामें भरि देउंगो. तब नारायनदासने विटठलदासकों बन्दीखाने दियो. सो तीसरे दिन विटठलदासकों नारायनदास निकारिकै एक सौ एक कोरड़ा मरावते. सो मार

खांत - खांत विटठलदासकी देह सड़ि गई. परि भगवद् सम्बन्ध नारायनदासकों विटठलदास न जनाए.

भाव प्रकाश :
काहेतें ? जो वैष्णवता दिखाइकै अपनो कारज करें तो धर्म जांइ. तातें इन अपनी वैष्णवता न जताई.

पाछें जब विटठलदास बोहोत ही बेहाल भए तब नारायनदासने विटठलदासकों छोरि दियो. पाछें विटठलदासकौ सरीर आछौ भयो तब नारायनदासने मारनो तो छोरि दियो. और विटठलदासकों नारायनदासने बन्दीखानेमें केद राखे. पाछें केतेक दिनमें श्रीगुसांईजी श्रीजगन्नाथराइजीकों पधारे. तब बधैयाने नारायनदास पास आइकै खबरि करी, जो श्रीगुसांईजी इहां तें निकट आइ पहोंचे हैं. सो सुनिकै नारायनदास बोहोत प्रसन्न होंइकै श्रीगुसांईजीके सन्मुख जान लागे. तब विटठलदासने नारायनदाससों कही, जो तुम श्रीगुसांईजीके दरसनकों जात हो. तातें तुम मोसों आज्ञा करो तो मैं हूं तुम्हारे सङ्ग श्रीगुसांईजीके दरसनकों चलों. तब नारायनदास विटठलदाससों कहे, जो फिटरे! तें मोकों अब तांई क्यों न जनाई ? जो मैं श्रीगुसांईजीकौ सेवक हूं. तब विटठलदासने नारायनदाससों कह्यो, जो नारायनदास हों तो तेरी चाकरी करन आयो हूं. परि कछू तुम्हारे हाथ वैष्णवता बेचन नाहीं आयो. तब तो नारायनदास विटठलदासकों छोरि दिये. तब विटठलदास जामा पहरिकै श्रीगुसांईजीके सन्मुख नारायनदासके सङ्ग ही गए. तहां जांइकै विटठलदासने श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् कर्यो. तब श्रीगुसांईजीने हंसिकै विटठलदाससों पूछ्यो, जो तू इहां कब सों आइ रह्यो है ? तब विटठलदासने प्रभुन आगें बिनती करी, जो राज ! थोरे से दिननसों नारायनदासके पास हों रहत हूं. तब श्रीगुसांईजी फेरि विटठलदाससों कहे, जो विटठलदास ! हमकों तेरी खबरि पाए बोहोत दिन भए हते. पाछें श्रीगुसांईजीके आगें नारायनदास और विटठलदास दोऊ प्रभुनके निकट ही बैठें. सो नारायनदासकौ मोहोंड़ो सूकि गयो. तब श्रीगुसांईजी आप रसोई करि श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो हतो. तब विटठलदाससों प्रभुन पूछी, जो विटठलदास ! आगें तो तू आछी तरहसों रहतो. और अब तो तू बोहोत सूकि गयो है ताकौ कारन कहा ? तब विटठलदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो राज ! यहांके पात्साहकी चाकरी करत हुतो. सो वाने मोकों बन्दीखानेमें दियो हतो. तासों या शरीरकी यह व्यवस्था भई. तब श्रीगुसांईजी विटठलदाससों कहे, जो विटठलदास ! यह तू नारायनदाससों क्यों न कह्यो ? तब विटठलदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो राज ! चाकरी करी

परि माला कैसें बेचि जांइ ? यह तो देहकौ भोग है, ताकों तो भुगत्यो (ही) चहिए. परि अपनो धर्म काहूकों क्यों जनायो जांइ ? तब विटठलदासके दृढ़ताके बचन सुनिकै श्रीगुसांईजी विटठलदाससों कहे, जो विटठलदास ! तू धन्य, धन्य है. सो नारायनदासकौ मोहोंड़ो बोहोत सुपेद होंइ गयो. तब फेरि तो प्रभु भोग सरावन पधारे. तब विटठलदाससों यह कहे, जो विटठलदास ! आज तू इहांइ प्रसाद लीजियो. तब विटठलदास श्रीगुसांईजीसों बिनती करे, जो महाराज ! मेरी देह आछी नाहीं. तासों हों स्नान नाहीं कर्यो. तब श्रीगुसांईजी विटठलदाससों यह आज्ञा किये, जो तू इहांइ न्हाइ ले. और खवास सों कहे, जो विटठलदासकों स्नान कराइ दीजियो. सो प्रभुनकी आज्ञा मानिकै विटठलदासने न्हाइवेकों जामा उतार्यो. तब नारायनदास कांप्यो. पाछें विटठलदासकों खवासने स्नान कराइ दियो. सो स्नान करिकै विटठलदास बैठे हते. तब श्रीगुसांईजी पातरि धरिवेकों पधारे. सो प्रभु विटठलदासकी देह देखिकै कांपे. पाछें श्रीगुसांईजी विटठलदाससों पूछे, जो विटठलदास ! यह देहमें कहा भयो है ? तब विटठलदासके नेत्र भरि आए. पाछें विटठलदासने प्रभनसों बिनती करी, जो महाराज ! मो पर मार परी ही. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो ऐसो तोकों कौनने मार्यो ? तब विटठलदास नारायनदासकी ओर देख्यो. तब श्रीगुसांईजी नारायनदाससों पूछे, जो नारायनदास ! तू ऐसी भांति वैष्णवकों क्यों मार्यो है? तब नारायनदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! मैं इनकों वैष्णव जान्यो नाहीं. तब फेरि श्रीगुसांईजी नारायनदाससों कहे, जो तें याकों वैष्णव न जान्यो. परि जीव तो जान्यो होतो. सो वैष्णवकों ऐसी निर्दयता न चहिए. वैष्णवकों जीव मात्र उपर दया राखी चहिए. तब नारायनदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो राज ! यह मोसों बड़ो अपराध पर्यो है. पाछें नारायनदास विटठलदासकों बोहोत आग्रह करे. परि विटठलदास नारायनदास पास न रहे. जब ही श्रीगुसांईजी उहां तें विजय किये तब ही नारायनदासके देस तें विटठलदास हू चले. श्रीगुसांईजीके साथ के साथ ही विटठलदास निकसे. परि फेरि वहां विटठलदास न रहे.

भाव प्रकाश :
काहेतें ? जो अब नारायनदास विटठलदासकों वैष्णव जाने. तातें न रहे.

सो वे विटठलदास श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. सो इनकी वार्ता कहां तांइ कहिए ? वार्ता ।।६।।

७-रूपमुरारीदास क्षत्री

अब श्रीगुसांईजीके सेवक रूपमुरारीदास क्षत्री, अम्बालयमें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये रूपमुरारीदास राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'चित्रांकिनी' है. ये चित्रा तें प्रगटी हैं, तातें इनके भावरूप हैं. सो चित्राङ्किनी कुञ्ज - निकुञ्जमें अनेक भांतिके चित्र बनावति हैं. तातें ये श्रीठाकुरजीकों बोहोत प्रिय हैं.

सो रूपमुरारीदास अम्बालयमें एक क्षत्रीके जन्मे. सो वह क्षत्री देसाधिपतिकौ चाकर हो. सो देसाधिपतिके साथ सिकारकों जातो. सो देसाधिपति उन पर बोहोत प्रसन्न रहतो. पाछें ये वृद्ध भयो. तब रूपमुरारीदासकों अपने सङ्ग राखन लाग्यो. सो रूपमुरारीदास सिकारमें सङ्ग रहते. ता पाछें कछूक दिनमें वह क्षत्री मर्यो तब देसाधिपतिने रूपमुरारीदासकों चाकरीमें राखे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वे रूपमुरारीदास देसाधिपतिके चाकर रहे. सो देसाधिपतिके सङ्ग रूपमुरारी सिकारकों जाते. सो एक समै देसाधिपतिके डेरा 'गोवर्द्धन' में 'मानसीगङ्गा' पर भए. तब रूपमुरारीदास सिकारकों पूंछरीकी ओर आए. तहां बाजकौ सिकार किये. पाछें बाज लिये घोड़ा पर असवार होंइ रूपमुरारीदास पूंछरीतें चले, सो गोविन्दकुण्ड पर आए. ता समै श्रीगुसांईजी गोविन्दकुण्ड उपर सन्ध्या वन्दन करत हे. सो रूपमुरारीदासकों श्रीगुसांईजीके दरसन भए. सो श्रीगुसांईजी आप रूपमुरारीदासकों कोटि कन्दर्प लावन्यरूप सों दरसन दिये. सो रूपमुरारी वही सिकार साज पहिरें आइकै श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करे. पाछें रूपमुरारीदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! मेरी तो यह

अवस्था है. और अब तो मैं आपकी सरनि आयो हूं. तातें आप मेरो अङ्गीकार करिए. तब श्रीगुसांईजी रूपमुरारीदाससों कहे, जो तू स्नान करि आऊ. हम तेरो अङ्गीकार करेंगे. तब रूपमुरारीदास कपड़ा उतारिकै अति प्रसन्नतासों स्नान करि श्रीगुसांईजी पास आइ दण्डवत् करि प्रभुके सन्मुख ठाढ़े रहे. पाछें श्रीगुसांईजी वा रूपमुरारीदासकों कृपा करिकै नाम सुनाए. तब रूपमुरारीदास और वस्त्र पहरि श्रीगुसांईजीके साथ ही श्रीगोवर्द्धन पर्वत पर आइ श्रीनाथजीके मन्दिरमें जांइ बैठे. पाछें समै भयो तब श्रीनाथजीके दरसन रूपमुरारीदासने किये. ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीकों अनोसर कराइ पर्वत तें नीचे पधारि, आपु भोजन करि, आपु ही रूपमुरारीदास आगें पातर धरी. तब रूपमुरारीदास आज्ञा प्रभुनसों मांगिकै तामें तें कछूक प्रसाद लिये. पाछें रूपमुरारीदास वा पातरिकी गांठि बांधि सिरहाने धरि सोवते.

भाव प्रकाश :

काहेतें ? वह अनसखड़ी महाप्रसादकी पातरि हती. तातें ऐसें करते.

सो जहां तांई रूपमुरारीदासकी देह रही तहां तांई वा पातरिकौ प्रसाद नित्य लिये. पाछें और कछू प्रसाद लैते. सो वह पातरि मार्गमें तो खवास पास रहती और डेरा तथा घरमें सिरहाने धरि सोवते. सो वे रूपमुरारीदास प्रभुनकी कृपातें ऐसे भगवदीय भए.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

और रूपमुरारीदास पर श्रीगुसांईजी श्रीगिरिधरजी बोहोत कृपा करते. उन रूपमुरारीदाससों श्रीगिरिधरजी एकान्त वार्ता करते. लीलाकौ सब रहस्य कहते. और श्रीनाथजीके सिंगार होत में रूपमुरारीदास श्रीगिरधरजीकी आज्ञा तें श्रीनाथजीकौ दरसन ठाड़े - ठाड़े कर्यो करते. ऐसी उन पर कृपा श्रीगिरिधरजी आप करते.

सो वे रूपमुरारीदास श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे. तातें इनकी वार्ता अनिर्वचनीय है. सो कहां तांई कहिए ? वार्ता ।।७।।

८-माधौदास क्षत्री

अब श्रीगुसांईजीके सेवक माधौदास क्षत्री, काबुलमें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये माधौदास तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'मकरन्दिनी' है. ये चित्रातें प्रगटी हैं, तातें इनके भावरूप हैं. सो मकरन्दिनीके अङ्गतें विविध भांतिकी मकरन्द आवति हैं. ता मकरन्दकी लालचसों श्रीठाकुरजी आप भंवर व्है मकरन्दिनीके पाछें - पाछें लागे डोलत हैं.

सो माधौदास काबुलमें एक क्षत्रीके जन्मे. सो बालपने तें इनकौ चित्त कथा वार्तामें रहे. जहां कहूं कथा - वार्ता होंइ तहां जांइ. ऐसें करत ये बरस पन्द्रहके भए. तब इनके माता - पिता मरे. पाछें माधौदासकौ ब्याह तो भयो नाहीं. सो माधौदासकौ पिता बजाज हतो. वाके कपड़ानकी हाट हती. ता हाट पर माधौदास बैठन लागे. सो निर्वाह भली भांति चल्यो जातो.

सो एक दिन माधौदास कछू कार्यार्थ हरद्वार आए. ता समै श्रीगुसांईजी हू हरद्वार पधारे हे. तहां श्रीगुसांईजी आप गङ्गाजीके तीर पर सन्ध्या करत हे. ता समै माधौदास हू गङ्गाजी न्हान आए. तब इन श्रीगुसांईजीके दरसन पाए. सो दरसन करत ही चक्रत से व्है रहे. ता बिरियां चाचाजी श्रीगुसांईजीके साथ हे. सो इन माधौदास चाचाजीसों पूछ्यो, जो ये कौन है ? इनकौ कहा नाम है ? और ये रहत कहां है ? तब चाचाजी माधौदाससों कहे, जो ये श्रीवल्लभाचार्यजीके पुत्र हैं. इनकौ नाम श्रीविटठलनाथजी हैं. ये अड़ेलमें रहत हैं. इन विष्णुस्वामि सम्प्रदाय दृढ़ करि ताकौ सार जो सेवा प्रकार ताकौ प्रकास कियो है. सो वल्लभी मार्ग कहावत है. इह सुनत ही माधौदासने चाचाजीसों कह्यो, जो मोकों इनकौ सेवक कीजिए. हों इनकी सरनि जाऊंगो. सो ऐसी कृपा मों पर कीजिए, तातें हों इनकौ सेवक होउं. तब चाचाजी श्रीगुसांईजीसों बिनती किये, जो महाराज ! माधौदास सेवक होंन की कहत है. तब श्रीगुसांईजी माधौदासकी ओर देखे. सो वा समै माधौदासकों श्रीगुसांईजीके दरसन साक्षात् पुरुषोत्तम कोटि कन्दर्प लावन्यरूपसों भए. सो दरसन होत ही माधौदास मूर्च्छित व्है गए. तब श्रीगुसांईजी आप माधौदास पर वेद - मन्त्र पढ़ि जल छिरके. तब ये सावधना भए. पाछें इन बिनती कीनी, जो महाराज !

आपने यह कहा कियो ? मैं तो परम सुखमें हतो. तहां सों निकास्यो ? तब श्रीगुसांईजी आप हंसिकै आज्ञा किये, जो माधौदास ! अभी तोकों देरि है. पाछें माधौदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मोकों कृपा करि अपनो सेवक कीजिए. तब श्रीगुसांईजी आप आज्ञा किये, जो गङ्गाजीमें स्नान करि. हम तोकों सेवक करेंगे. तब माधौदास गङ्गाजीमें स्नान किये. पाछें श्रीगुसांईजी आप कृपा करि माधौदासकों नाम निवेदन कराइ सेवक किये. पाछें श्रीगुसांईजी जहां लो हरद्वार बिराजे तहां लों माधौदास श्रीगुसांईजीके पास रहि टहलमें तत्पर रहे. और श्रीगुसांईजीके श्रीमुखतें नित्य कथा हू सुने. ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारे. सो माधौदास हू श्रीगुसांईजीके सङ्ग श्रीगोकुल आए. सो कछूक दिन श्रीगोकुलमें रहे. श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन किये. ता पाछें श्रीगुसांईजी माधौदासकों सङ्ग लै श्रीनाथजीद्वार पधारे. तहां पर्वत पर जांई श्रीनाथजीके दरसन किये. सो दरसन होत ही माधौदास देहानुसन्धान भूलि गए. सो श्रीगुसांईजीकी कानितें श्रीनाथजी माधौदासकों या प्रकार दरसन दिये, जो माधौदासकौ मन श्रीनाथजीमें गड़ि गयो. या प्रकार दरसन करत कछूक दिन बीते. तब श्रीगुसांईजी माधौदाससों आज्ञा करें, जो माधौदास ! अब तुम अपने घर जाहु. अब तुमकों काल, देस कछू बाधा न करेगो. तुम सुखेन काबुलमें रहो. श्रीनाथजी तुमकों वहां ही दरसन देइंगे. पाछें माधौदास श्रीनाथजीकों हृदयमें पधराइकै चले. सो कछूक दिनमें अपने घर आए. उहां नित्य आठौं समैकी मानसी करे. सो जैसें श्रीगुसांईजीके श्रीमुखसों कथामें 'गौ - चारन' आदि लीलाकौ वरनन पहिले सुन्यो हतो ता प्रकार माधौदास नित्य मानसी करे. सो श्रीनाथजी उनकों श्रीगुसांईजीकी कानितें उहांई ऐसें दरसन देते. और सब लीलाकौ अनुभव करावते.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

वे माधौदास काबुलमें रहते. सो वे परम भगवदीय कृपापात्र हते. सो उनकों श्रीगुसांईजीकी कृपा तें श्रीनाथजी काबुलमें दरसन देते. नित्य माधौदासकों सर्व समैकौ अनुभव उहांई जानि परतो. ऐसी कृपा श्रीनाथजी माधौदास उपर करते. परि माधोदास काबुलमें रहते, सो जैसो वहांकौ कपड़ा वहांके मनुष्यनकौ वेष है तैसैई भेख सों माधौदास रहते. जो कोई अनजान्यो जातो सो यों न जानतो, जो ये वैष्णव है. सो माधौदास कपड़ानकी हाट करते. पाछें केतेक दिनकों देसाधिपतिके पठाए रूपमुरारी कछू कार्यार्थ काबुल गए. सो एक दिन सन्ध्या आर्तिके समै भैया रूपमुरारी काबुलके बाजारमें कछू सोदा लैन निकसे. सो उहां रूपमुरारी काहु वैष्णवकी हाट देखे. परि कोई वैष्णव न जान्यो जांइ. उहांके सगरे लोक एकसे ही दीसे. पाछें मार्गमें जात रूपमुरारीने माधौदासकों ठाढ़े हाट उपर उपरेनाकौ अञ्चल फिरावत देखे. तहां रूपमुरारी ठाढ़े रहे. जब माधौदास अञ्चल फिराइ चुके. तब रूपमुरारी माधौदासकी हाट उपर पूछे, जो तुम कौन हो ? सो वे

माधौदास पहिचाने न परे, जो ये वैष्णव हैं. तब उन माधौदासने रूपमुरारीसों पूछी जो तुम्हारो कहा नाम है ? तब रूपमुरारीने अपनो नाम बतायो. पाछें रूपमुरारीने माधौदास सों पूछ्यो, जो तुम्हारो नाम कहा है ? तब माधौदासने अपनो नाम रूपमुरारीसों कह्यो. पाछें रूपमुरारीने माधौदास कह्यो, जो तुम कौनके सेवक हो ? तब रूपमुरारीसों माधौदासने कह्यो, जो हम तो श्रीगुसांईजीके सेवक हैं. तब तो रूपमुरारी अति आनन्द पाए. पाछें माधौदासने रूपमुरारीदाससों पुछ्यो, जो तुम कौन लोग हो ? कौनके सेवक हो ? तब रूपमुरारीने माधौदाससों कह्यो, जो हम तो क्षत्री हैं और श्रीगुसांईजीके सेवक हैं. तब तो माधौदास अति आनन्द पाय रूपमुरारीसों भेटे. पाछें श्रीकृष्ण स्मरन करिकै माधौदासने रूपमुरारीकों अपनी हाट उपर बैठारे. पाछें माधौदासने रूपमुरारीसों श्रीगुसांईजीके कुसल समाचार पूछे. तब रूपमुरारीने माधौदास आगें सब कहे. पाछें रूपमुरारीने माधौदाससों पूछी, जो माधौदास ! तुम अञ्चल कहा फेरत हते ? तब माधौदासने रूपमुरारीसों कही, जो श्रीगुसांईजीकी कृपा तें मोकों श्रीनाथजी इहांई नित्य दरसन देत हैं. तब रूपमुरारीने माधौदाससों पूछी, जो तुम अञ्चल क्यों फेरत हते ? तब माधौदासने रूपमुरारीसों कह्यो, जो श्रीनाथजीकों वा समै सन्ध्या आर्ति होत हती. तातें हों अञ्चल फेरत हतो. पाछें जब आर्ति होइ रही तब हों दण्डवत् करिकै बैठ्यो. सो ये माधौदासके बचन सुनिकै रूपमुरारी अपने मनमें बोहोत ही विस्मित भए. तब रूपमुरारीदासने विचार कियो, जो इन माधौदासके बड़े भाग्य है. जो ये ह्यां रहत हैं और कहां श्रीनाथजी बिराजत हैं ? सो इहांसों पांचसौ कोस मार्ग पर बिराजत हैं. तहां तें इनकों दरसन देत हैं ! सो जो यह बात सांची है तो इनके भाग्यकौ पार नाहीं. तब रूपमुरारी आश्चर्य मानिकै माधौदास सों पूछे, जो आज श्रीनाथजीकौ कहा सिंगार हतो ? तब रूपमुरारीसों माधौदासने कह्यो, जो वागो तो आज जंगाली रङ्गकौ हतो. और आज श्रीबालकृष्णजी सिंगार किये हैं. पाछें और हू सर्व सिंगार श्रीनाथजीके माधौदासने भैया रूपमुरारीके आगें कहे. तब रूपमुरारीने वह दिन लिखिकै वह सिंगार लिखि वह बालक हू कौ नाम लिखि राख्यो. पाछें रूपमुरारीसों माधौदासने बिनती करी, जो रूपमुरारीदासजी ! अब तुम मो पर कृपा करिकै मेरे घर पधारो. पाछें रूपमुरारीदासके मनुष्य पाछें रहे हते, तासों एक मनुष्य माधौदासकी हाट उपर उनकों देखिवेकों बैठायो. और आपु तो रूपमुरारी उन माधौदासके साथ उनके घर गए. तब माधौदासने रूपमुरारीसों बिनती करी, जो आप मो उपर कृपा करिकै आज रसोई ह्यांई करो. पात्र माटीके कोरे मंगाइकै जल नयो मंगाउं. तब रूपमुरारीने माधौदाससों कह्यो, जो जलपात्र सब तुम्हारोइ सरंजाम हमारे काम आइ जाइगो, तासों तुम नयो साज कछू मति मंगावो.

पाछें रूपमुरारी तहां स्नान करि रसोई करि श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पिकै, माधौदासकी हाट उपरसों वा दूसरे वैष्णवकों बुलाई, भोग सराई, वा वैष्णव सहित रूपमुरारी दोउ जनेंन भली भांतिसों प्रसाद लियो. पाछें रूपमुरारी अपने डेरा आइ वाही समै रामदासजी भीतरियाकों वे सब समाचार लिखि पत्रमें, एक घरू मनुष्य पठायो. सो पत्र रामदास पास आयो. ता पत्रकों रामदासजी बांचिकै वा दिनाकौ सिंगार वागो श्रीगुसांईजीके बालककौ नाम सब आछी भांति लिखि पठायो. सो पत्र लैकै मनुष्य रूपमुरारीदास पास आयो. तब रामदासजीके पत्रके सब समाचार और माधौदासके बचन वा दिनके दोउनकी एक विधि मिलि गई. तब रूपमुरारी उन माधौदासकी बोहोत ही सराहना किये. जो या वैष्णवके बड़े भाग्य है. जो ये रहत तो काबुलमें हैं और इनकौ मन दृष्टि ब्रजमें हैं. तातें इन समान कोऊ भाग्य - पुरुष और नाहीं है. श्रीगुसांईजी आपु कृपा करिकै इनकों दिव्य दृष्टि दिये हैं. तातें ये या सुखकौ प्रभुनकी कृपातें अवलोकन करत हैं. यह काबुल कितनी दूरि अनार्य देस है. तहां श्रीनाथजी इनकों नित्य दरसन देत हैं. तातें इनके भाग्यकौ कहा कहनो ?

भाव प्रकाश :
सो या वार्तामें यह सिद्धान्त जतायो, जो पुष्टिमार्गीय वैष्णवनकों देस, काल कर्म बाधा करत नाहीं. जहां अपने प्रभु सुखसों बिराजे वाही देस वैष्णवनके लिये उत्तम हैं. क्यों ? जो म्लेच्छ देसमें हू प्रभु अपने जनकों या प्रकार अनुभव जतावत हैं. तातें वैष्णवकों एक सेवा ही कौ आश्रय करनो.

और प्रथम माधौदास हरिद्वारमें श्रीगुसांईजी पास नाम पाए हते. ता पहिले श्रीगोकुलजी और वृन्दावन ब्रज कछू हू माधौदासने देख्यो न हतो. सो श्रीगुसांईजी पास नाम पाये पाछें सर्व दरसन कर्यो. पाछें अपने देस काबुल गए. तहां प्रभुनकी कृपा ऐसी भई, जो श्रीनाथजी माधौदासकों उहांई दरसन देन लागे. और श्रीगुसांईजी माधौदासके हृदयमें अलौकिक लीला स्थापित अपने प्रताप तें करे. तातें ये माधौदास हृदयकी अलौकिक दृष्टिसों सर्व देखन लागे. सो वे माधौदास श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।८।।

९-हरजी कोठारी

अब श्रीगुसांईजीके सेवक हरजी कोठारी, भाइला कोठारीके भतीजा, राजनगर असारुवामें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये हरजी सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'सुरङ्गी' है. ये चित्रातें प्रगटी हैं, तातें इनके भावरूप हैं.

सो हरजी गुजरातमें बेनी कोठारी हे, ताके घर जन्मे. ये बेनी कोठारी तीन भाई हे. सो बेनी कोठारी जा प्रकार श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके सेवक भए, सो तो नरहरि सन्यासीकी वार्तामें कहि आए हैं. और भाइला कोठारी और जैता कोठारी ये दोउ भाई श्रीगुसांईजीके सेवक भए. इनकी वार्ता आगें कहेंगे.

भावप्रकाश :
सो एक समै श्रीगुसांईजी द्वारिकाकों पधारे. सो राजनगरके मार्गमें बेनी कोठारीकौ गाम आयो. तहां एक बगीचामें डेरा किये. सो बेनी कोठारी तो हे नाहीं. तातें हरजीकी मा हरजीकों लै श्रीगुसांईजीके दरसनकों आई. ता समै हरजी बरस छहके हे. सो हरजीकी मा ने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! हरजीकों सरनि लीजिए. सो श्रीगुसांईजी बेनी कोठारीकौ बेटा जानि हरजीकों कृपा करिकै नाम निवेदन करायो. ता पाछें हरजीकों श्रीगुसांईजी अपुनो जूंठन महाप्रसाद अपने श्रीहस्तसों दिये. सो महाप्रसाद लेत ही हरजीकों श्रीआचार्यजीकी जन्म लीलाकौ अनुभव भयो. सो बानी स्फुर्द भई. सो ताही समै हरजी अपनी मा कों बौलिकै पद गावन लागे. सो पद -

राग : धनाश्री

प्रगटे ए ‘मा’ श्रीवल्लभदेव, श्रीलछमन भट गृहे बधाइयां ।।
मङ्गल सुहेलरा ।। टेक ।।
गावे ए ‘मा’ गीत रसाल, सबै सुहागिनि आइयां ।। मङ्गल.
ब्राह्मन ए ‘मा’ वेद पढ़ाय, देत असीस सुहाइयां ।।
मोतिन ए ‘मा’ चौक पूराय, बन्दनवार बधाइयां ।। मङ्गल.
घर घर ए ‘मा’ दुन्दुभी बजाय, पहौप अञ्जुली बरखाइयां ।
दीने ए ‘मा’ बहु विधि दान, नरनारीन पहराइयां ।। मङ्गल.
धन्य धन्य ए ‘मा’ एलम्मागारु, आसा सबै पूजाइयां ।
सब दिन ए ‘मा’ सुख सम्पति राज, ‘हरजीवन’ मन भाइयां ।। मङ्गल.

सो यह पद सुनिकै श्रीगुसांईजी आप हरजी उपर बोहोत प्रसन्न भए. सो ताही समै श्रीगुसांईजी आप अपनो चर्वित उगार हरजीकों दिये.

पाछें श्रीगुसांईजी आप उहां ते विजय किये. सो राजनगर व्है द्वारकाजी पधारे. तहां कछूक दिन रहे. फेरि राजनगर आइ तहां ते अड़ेल पधारे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै उन हरजी कोठारीने आपु श्रीगुसांईजीके ‘सहस्त्रनाम’ कौ ग्रन्थ सुन्दर करिकै प्रभुन आगें निवेदन कर्यो. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी हरजी कोठारी उपर बोहोत प्रसन्न भए. पाछें जब श्रीगुसांईजी कब हू राजनगर पधारते, तब भाइला कोठारी तीनों भाईनके घर उतरते. तामें श्रीगुसांईजी भाइला कोठारीके घर तो बैठक करते. तहां तो बिराजते. और हरजी कोठारीके घर प्रभु रसोई करते. और जैता कोठारीके घर रात्रिकों श्रीगुसांईजी पोंढते. या प्रकार श्रीगुसांईजी इन तीनोंनके मनोरथ सिद्ध करते.

भाव प्रकाश :
काहेतें ? लीलामें ये तीनों श्रीचन्द्रावलीजीकी अन्तरङ्ग सखी हैं. सो हरजी तो 'सुरङ्गी' सखीकौ प्रागट्य हैं. और भाईला कोठारी 'कौमोदिनी' है. सो श्रीस्वामिनीजीकी सखी चम्पकलता है, ताके राजस भाव रूप (ये) हैं. सो श्रीचन्द्रावलीजीमें इनकी बोहोत आसक्ति हैं. और जैता कोठारी 'ब्रजभामा' है. सो हू श्रीचन्द्रावलीजीकी अन्तरङ्ग सखी हैं.

सो उनके द्वारे एक कोठकौ वृक्ष हतो. ताकें तरें श्रीगुसांईजी चरन प्रक्षालन करते. सन्ध्यावन्दन करते. वे तीनों श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।९।।

१०-भाईला कोठारी

अब श्रीगुसांईजीके सेवक भाईला कोठारी, राजनगर असारुवामें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश : ये भाईला कोठारीकौ लीलाकौ अलौकिक स्वरूप उपर हरजी कोठारीकी वार्तामें कहि आए हैं. सो भाईला कोठारी राजनगर तैं कछूक दूरि एक गाममें एक बनियाके प्रगटे. सो ये तीन भाई हे. बेनी कोठारी, भाईला कोठारी, जैता कोठारी. सो इनकौ पिता राजनगरमें हाकिमके उहां रहतो. सो कोठार करतो. सो पिता मर्यो पाछें वा हाकिमने इन तीनों भाईनकों कोठारपै राखे. तब ये तीनों भाई राजनगर आसारवा आई रहे.

ता पाछें बेनी कोठारी नरहरि सन्यासीकौ सङ्ग पाई श्रीआचार्यजीके सेवक भए. सो ते नरहरि सन्यासीकी वार्तामें कहि आए हैं. पाछें श्रीगुसांईजी प्रथम बार जब द्वारिका पधारे, तब भाईला कोठारी, जैता कोठारी राजगनरमें आपकी सरनि आए, सेवक भए. ता पाछें दोउ भाईन श्रीगुसांईजी सों बिनती करि

श्रीगुसांईजीकों अपने घर असारुवा पधराए. तहां सगरे कुटुम्बकों सेवक कराए. पाछें भाईला कोठारीने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो राज ! अब कहा कर्तव्य है ? तब श्रीगुसांईजी आप आज्ञा किये, जो भगवत्सेवा करो. सो एक लालजीकौ स्वरूप श्रीगुसांईजी भाईला कोठारीकों आप अपनो पास तें पधराई दियो. तब भाईला कोठारीने बिनती करी, जो राज ! मोकों तो आपकी सेवा करनेकौ मनोरथ है. तब श्रीगुसांईजी अपनी पादुका दिये.

और जैता कोठारीकौ दूसरो नाम मथुरा कोठारी हतो. सो ये श्रीगुसांईजीके स्वरूपमें सदा मगन रहते. इन (ने) श्रीठाकुरजी, श्रीआचार्यजी (और) श्रीगुसांईजीके बोहोत पद किये हैं. सो श्रीगुसांईजी सदा इन पर प्रसन्न रहते.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वे भाईला कोठारी श्रीगुसांईजीकों पधरायवेकों बारबार पत्र अति आतुरतासों लिखते. जो राज ! एक बार बेगि पधारें. ऐसें पत्र भाईला कोठारीके श्रीगुसांईजीके पास बोहोत आए. तब एक समै श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल तें अचानक श्रीरनछोरजीके दरसन करिवेकों और भाईला कोठारीकौ मनोरथ पूरन करिवेकों द्वारिकाजीकों प्रभु तत्काल चले. सो तहां तें श्रीगुसांईजी 'सीकरी फतेपुर' पधारे. सो घरतें प्रभु जब चलत भए, तब तो न चांपाभाई अधिकारीकों जताए और न सङ्करभाई भण्डारीकों जताए. योंही एकाएकी सीकरी फतेपुर पधारे. तब वा समै फतेपुर बीरबल हतो, तिन सुनी. जो श्रीगुसांईजी इहां पधारे हैं. तब बीरबल साम्हें आई दण्डवत् करि श्रीगुसांईजीकों अपने डेरा पधराय अपने ही डेरा पास श्रीगुसांईजीकौ डेरा ठाढ़ो करवायो. पाछें बीरबलने वा ठौर प्रभुनके दोइ चारि मुकाम करवाए. पाछें चांपाभाई सङ्करभाई दोउं जनेंन श्रीगुसांईजीके दरसन करि दण्डवत् करि प्रभुनसों पूछी, जो राज ! काहूसों कहे बिना आप अचानक परदेस क्यों पधारत हो ? तब श्रीगुसांईजी चांपाभाई, सङ्करभाई सों कहे, जो भाइला कोठारीके देखे बिना बोहोत दिन भए हैं. तासों अबके एक बार गुजारत पधारुंगो. यह श्रीमुखके बचन सुनिकै चांपाभाई, सङ्करभाई चुप करि रहे.

पाछें चांपाभाईसों बीरबलने पूछी, जो ऐसी उतावलिसों श्रीगुसांईजी पधारत हैं, सो कहा कारन है ? तब चांपाभाई बीरबलसों कहे, जो भण्डारमें करज बोहोत भयो है, तातें गुजरातके परदेसकों पधारत हैं. तब बीरबलने चांपाभाईसों पूछी, जो करज कितनोक भयो है ? जो

तासों (ऐसी) उतावलिसों पधारत हैं ! तातें करज भयो होइ सो मोसों कहो, ता करजके द्रव्यकों हों चुकाइ देहुंगो. और तुम श्रीगुसांईजीकों परदेस पधारत सों राखिकै घर पधराओ. सो श्रीगुसांईजी तो अन्तरजामी हैं. तातें इन दोउनके मनकी बात जानि गए. पाछें प्रभु बीरबलकों खबरि किये बिना आधी रात्रिके समै फतेपुर सों आगेकों पधारे.

भाव प्रकाश :

सो काहेत ? जो श्रीगुसांईजीकौ यह सङ्कल्प है, जो द्रव्य निमित्त परदेस सर्वथा न जानो. तातें आप द्वारिकाजीके दरसन निमित्त गुजरात पधारते. और दैवी जीवनकों अङ्गीकार करते. परि चांपाभाईकों अधिकार पाई लौकिक बुद्धि भई. सो बीरबल सों या भांति कह्यो. और बीरबल जद्यपि श्रीगुसांईजीकौ सेवक है, तोउ दुसङ्ग पाइ बहिर्मुख व्है रह्यो है. तातैं करजकौ द्रव्य चुकाईवेकी कही. सो श्रीगुसांईजी इन पर अप्रसन्न व्है उतावलिसों आधी रात्रिकों ही तहांते पधारे. काहूकों कह्यो नाहीं. तातें वैष्णवकों प्रभुनके, गुरुनके कार्यमें लौकिक बुद्धि सर्वथा न करनी. यह सिद्धान्त जतायो. जो लौकिक बुद्धि करि नारायनदास दीवान सारिखेनकों अन्तराय भयो. सो आगें कहि आए हैं. तातें वैष्णवकों बोहोत संमारिकै बोलनो.

सो यह खबरि तो बीरबलको बड़े सवारे भई. जो श्रीगुसांईजी तो गुजरात पधारे. सो श्रीगुसांईजी आप तो बेगि ही राजनगरमें भाईला कोठारीके घर जाई पहोंचे. पाछे भाईला कोठारीके मनमें जो - जो मनोरथ हुते सो सर्व करे. ता पाछें भाईला कोठारीके घर श्रीगुसांईजी थोरे से दिन बिराजि कै द्वरिकाजी पधारि श्रीरनछोरजीके दरसन करि, तहां ते वाही मार्ग फिरि आई, थोरेसे दिनन मे श्रीगोकुल पधारे. और घर पधारे कौ पत्र बीरबलकों लिखे. सो पत्र देखिकै बीरबल अति ही विस्मित होई रह्यो. वे भाईला कोठारी श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. तिनकों आप सुधि करि कै दरसन दैन पधारते.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

और एक समै श्रीगुसांईजी असारुवामें बिराजत हते. तहां चाचा हरिवंशजी श्रीगुसांईजी सों बिनती करि चाचा हरिवंशजी कहे, जो महाराज

! भाईला कोठारीके माथे करज बोहोत भयो है. ऐसें तीन बेर बिनती चाचाजी प्रभुन आगें करे. तब श्रीगुसांईजी चाचाजी सों कहे, जो चाचाजी ! द्रव्यकी तो कितनीक बात है, परि जैसो मन अब कोठारीकौ है तैसो द्रव्य पाइकै हनो नाहीं. यह श्रीमुखके बचन सुनि कै चाचा हरिवंशजी चुप करि रहे. पाछेह भाईला कोठारीने यह बात काहू द्वारा सुनी. तब ये अपने मनमें बोहोत दुःख पाइ कै कहे, जो हों तो यह बात कछु जानत हूं नाहीं. मति श्रीगुसांईजीमे मनमें यह आई होंई, जो चाचाजी द्वारा कोठारीने बिनती करी होइगी. यह कोठारी अपने मनमें बोहोत डरपिकै श्रीगुसांईजी पास आइकै दण्डवत् करिकै बिनती करे. जो महाराज ! मोकों आपके चरनारविन्द बिना और काहू वस्तूकी अपेक्षा नाहीं है. और राजने श्रीमुखतें यह वचन कह्यो, जो आगें वह दसा न रहेगी. सो काहेत ? सो मोसों आप कृपा करिकै कहिए. तब श्रीगुसांईजीने भाईला कोठारीकौ समाधान कर्यो. जो मैं यह नाहीं कही, जो पाछें यह दसा नाहीं रहेगी. परि द्रव्य ऐसी वस्तू है. और हू श्रीगुसांईजी कोठारीकौ समाधान कर्यो, जो हम यह जानत हैं, जो तेरे मनमें यह बात कबहू न आवेगी. और तेरी बुद्धि मोमेंते कबहू अन्यत्र न फिरेगी. यह आशीर्वाद प्रभु प्रसन्न होंइकै भाईला कोठारीकों दिये. सो वे भाईला कोठारी श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र हे.

भावप्रकाश :

यामें यह सिद्धान्त जतायो, जो द्रव्य पाय बुद्धि निर्मल रहे नाहीं. दीनता होत नाहीं. तातें प्रभु अपने जनकों निष्किञ्चन करत हैं. और भाईला कोठारी तो श्रीगुसांईजीके अन्तरङ्ग सेवक हैं. सो इनकी बुद्धि तो द्रव्य पाये तें हू कबहू मलीन होई नाहीं. यह तो स्वकीय जन शिक्षार्थ यह बात कही. जो कोऊ छोटो पात्र होंई तो द्रव्य पाइ विमुख व्है जांई. तातें कोठारीके मिष करि इतनो जतायो. और यहू अभिप्राय है, जो निष्किञ्चन होंई तब प्रभुनकी विशेष कृपा जाननी. तो सर्व भावकी सिद्धि होंई.

वार्ता प्रसङ्ग ३ :

और एक समै श्रीगुसांईजी राजनगर असारुवामें बिराजत हते. तब काहूने गुजरातके देसाधिपति आगें चुगली करी. सो एक धोलकामें ‘लाछबाई’ और वाकौ भाई दोउ जन एक ही घरमें रहत हते. सो लाछा बाईकौ अमल सगरी गुजरातमें हतो. सो चुगली करनवारेने, ‘बाज

बहादुर' एक खोजा वा बाईके आगें सरनाम हतो, तासों मिलिकै जांइ चुगली करी. जो श्रीगोकुलसों एक फकीर आयो है. सो राजनगरमें कोठारीकी बहनि सों मिलिकै रहत है. और वह फकीर बड़ो महापुरुष कहावत हैं. तब वा लाछाबाईने बाज बहादुरकों परवानगी दीनी, जो तुम असारुवामें जाइकै न्याय करिकै आऔ. तब वह बाज बहादुर असारुवामें श्रीगुसांईजी उपर चढि आयो. सो यह खबरि वाके आवत पहिले श्रीगुसांईजीने सुनी. तब प्रभु तो भीतर पधारे. सो वा बैठकमें 'बाछा बघेला' और 'झबोजी' राजपूत गरासिया तथा कोठारी ऐसें दस पांच जनें बैठे हते. इतने ही बाज बहादुर बैठकमें आई बैठ्यो. ताही समै श्रीगुसांईजी गादी उपर आई बिराजे. तब वह बाज बहादुर उठि श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिकै फेरि बैठ्यो. ता पाछें बाज बहादुरने श्रीगुसांईजीसों अपनी बोलीमें कछू बात करी. ताकौ प्रतिउत्तर श्रीगुसांईजी भली भांतिसों वाहीकी बोलीमें वाकों समुझाइकै दिये. तब तो वह बाज बहादुर अपने मनमें बोहोत ही प्रसन्न भयो. और श्रीगुसांईजी वाकों समुझावतमें अपनी ईश्वरता जताए. तब तो बाज बहादुरने अपने मनमें जानी, जो ये तो साक्षात् ईश्वर हैं. तासों ये बावरे लोग मोकों लरायो चाहत हैं. सो जा दिन बाज बहादुर श्रीगुसांईजी पास आयो हतो, तब बरखाके दिन हते. परि वा देसमें मेह न बरसतो हतो. तातें लोग सगरे बिलबिलाय रहे हते. तब बाज बहादुरने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! पानी बिना प्रजा बोहोत दुःख पावत है. तब श्रीगुसांईजी वासों कहे, जो वर्षा तो बोहोत होइगी. तब वह बाज बहादुर श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिकै चलन लाग्यो. तब वाकों श्रीगुसांईजी एक बीरा दिये. तब वह बीरा माथें चढाई बाज बहादुर फेरि श्रीगुसांईजीसों बिनती कर्यो, जो महाराज ! एक कछू ऐसी वस्तू अपने हाथसों देहू, जो आठ पहर मेरे माथे उपर रहे. तब श्रीगुसांईजी अपने श्रीहस्तसों वाकों एक सुपारी दिये. सो सुपारी वह लै माथे चढाईकै, अपनी पागके खूंटमें बांधिकै श्रीगुसांईजीसों दण्डवत् करिकै अपने घरकों बाज बहादुर चल्यो. तब मार्गमें अकस्मात ही ऐसी बर्षा भई, जो जैसें तैसें करिकै वह बाज बहादुर घर पहोंच्यो. तब वह बाज बहादुर अपने मनमें बोहोत ही प्रसन्न भयो. पाछें घर जाइकै बाज बहादुरने ये समाचार लाछाबाईके आगें कहे. तब लाछाबाईने यह हुकम वा समै कियो, जो जाने यह चुगली करी है वा चुगलकों अब ही खरच करि डारो. जो कोई फेरि एसो काम न करे. यह हुकम कर्यो. सो यह बात वा चुगलकी माताने सुनी, जो याकों मारिवेकौ हुकम भयो है. तब यह अपने बेटाकों लै कै श्रीगुसांईजीकी सरनि आइकै बिनती करी, जो महाराज ! मेरे बेटाकों तो ठौर मारत हैं. तातें अब आपकी सरनिमैं पुत्र अपनेकों लै कै आई हों. तब श्रीगुसांईजी बाज बहादुरकों कहवाई पठाए, जो तुम काहूकों मारियो मति. तब बाज बहादुर श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मानिकै अपने मनुष्यनकों बरज्यो. पाछें और काहू दिन बाज बहादुर

वाकों दरबारमें बुलाइकै कह्यो, जो अबके तो तोकों हों श्रीगुसांईजीकी आज्ञा तें छोर्यो हूं. परि अब तैनें काहूकी झूंठी चुगली करी तो हों तोकों ठौर ही मारूंगो. यह कहि उनकौ समाधान करि दियो. पाछें श्रीगुसांईजी केतेक दिनकों श्रीगोकुल पधारे.

भावप्रकाश :
या वार्तामें यह जतायो, जो वैष्णवकों जीव मात्र पर दया करनी. कैसोहू चोर चुगल होंइ तो हू अपनो बस चले जहां तांई वाकों उबार लेनो.

सो वे भाईला कोठारी श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. सो इनकी वार्ताकौ पार नाहीं सो कहां तांइ कहिए. वार्ता ।।१०।।

११-भाईला कोठारीके जमाई

अब श्रीगुसांईजीके सेवक गोपालदास, भाइला कोठारीके जमाई, सों वे रूपपुरामें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये गोपालदास सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'सारङ्गी' है. ये चम्पकलता तें प्रगटी हैं. तातें इनके भावरूप हैं. और सारङ्गीकी एक अन्तरङ्ग सखी हैं. ताकौ नाम 'गोमति' है. सो यहां गोपालदासकी स्त्री गोमति भई.

ये गोपालदास 'रूपपुरा'में एक बनियाके जन्मे. और 'गोमति' असारुवामें भाइला कोठारीके जन्मी. सो गोपालदास जन्मत ही सों मूंगे, कछू बोले नाहीं. सो काहेत ? जो ये पहिले जन्ममें 'नरसी महेता' हे. सो उन प्रभुनकों अनेक भांति बिनती करि श्रम करवायो है. ता अपराधते ये मूंगे भए. पाछें ये बरस पांचके भए तब भाइला कोठारीकी बेटी गोमतिसों इनकी सगाई भई.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वे गोपालदास भाइला कोठारीके जमाई हते. सो प्रथम जब श्रीगुसांईजी भाईला कोठारीके घर पधारे, तब कोठारीने सगरे कुटुम्बकों नाम निवेदन कराई दण्डवत् कराए. पाछें जब गोपालदासकों नाम निवेदन कराई दण्डवत् करावन लागे, तब श्रीगुसांईजी पूछे, जो कोठारी. यह कौन है ? ता समै गोपालदास बरस नौ के हते. तब कोठारीने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! यह गोमतीकौ वर है. तब श्रीगुसांईजी कोठारीसों हंसिकै कहे, जो गोमतीकौ बर तो सागर है. और यह बालक तो सूधो मुग्ध है. तासों जोड़ा कैसे बन ? तब कोठारीने फेरि श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो राज ! यह आपकी कृपातें सागर होंई जाईगो. तब श्रीगुसांईजी भाईला कोठारीकौ जमाई जानि, अपनी गोदिमें बैठाई, आप कृपा करिकै अपनो अधरामृत गोपालदासके मुखमें दिये. सो उगार लैत ही गोपालदासकी अति उज्ज्वल बुद्धि होइ गई. तब गोपालदास श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिकै श्रीवल्लभाख्यानकौ आरम्भ करे. सो कारिका -

वन्दों श्रीविटठलवर सुन्दर नव घनश्याम तमाल ।।

यह 'कडवा' सम्पूरन गोपालदासने श्रीगुसांईजीके आगें गाई सुनायो. तब श्रीगुसांईजी और भाईला कोठारी सुनिकै बोहोत प्रसन्न भए. पाछें श्रीगुसांईजी गोपालदाससों यह आज्ञा करे, जो गोपालदास ! श्रीआचार्यजीकौ गुनगान करो. तब गोपालदास फेरि श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि दूसरे आख्यानकौ गान करे. ताकी कारिका -

श्रीलक्ष्मण सुत श्रीवल्लभरायजी, सुमिरन करतां दुष्कृत जायजी ।

यह आख्यान गोपालदास श्रीगुसांईजी आगें गाए. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो अब यह गोमतीकौ बर सागर भयो. यह आशीर्वाद श्रीगुसांईजी गोपालदासकों दिये. पाछें सात आख्यान और हू गोपालदास किये.

भाव प्रकाश :
सो या वार्तामें श्रीगुसांईजी आपु अपने भक्तनकौ उत्कर्ष जताए. जो भाईला कोठारी द्वारा श्रीगुसांईजी आप गोपालदासकों सागर होंनकी कहे. सो बानी तत्काल फलित भई. तातें गोपालदास हू आगें गाए हैं, जो ''भक्तजन पद रज प्रतापे, सकल सरियां काज ।''

वार्ता प्रसङ्ग २ :
पाछें ता गोपालदास (ने) श्रीठाकुरजीके पद एकसे गुजराती भाषामें नरसी महेताकौ भोग दै कै बोहोत ही करे.

भावप्रकाश :
सो काहेतें, जो इनकों अपने पूर्व स्वरूपकौ ज्ञान भयो. जो हों नरसी महेताकौ अवतार हूं. सो वा जन्ममें मैंने मर्यादा रीतिसों प्रभुनकों माहात्म्य गायो है. तातें अब पुष्टि प्रकारसों पद गाउं. जासों वा बानीकों पुष्टि सम्बन्ध होंई.

सो उन गोपालदास उपर श्रीगुसांईजी या प्रकार कृपा करि सागर करे.

और एक समै श्रीगुसांईजी श्रीगोकुलतें चाचा हरिवंशजीकों यह आज्ञा करे, जो चाचाजी ! तुम गुजरात जाउ. तब चाचा हरिवंशजी श्रीगुसांईजीसों यह बिनती करे, जो राज ! हों आपके दरसन बिना कैसें दिन निर्वाह करूंगो ? तब श्रीगुसांईजी यह आज्ञा किये, जो चाचाजी ! तुम भाईला कोठारीसों और गोपालदाससों मिलत रहियो. और हों हूं तुमकों दरसन देत रहुंगो. तब चाचाजी प्रभुन पास आज्ञा मांगि गुजरात गए. सो जा दिनतें चाचाजी श्रीगोकुल छोर्यो. ता दिनतें नित्य श्रीगुसांईजी चाचाजीको दरसन देते. या प्रकार चाचा हरिवंशजी गुजरात जाई पहोंचे. पाछें नित्य चाचाजी भाईला कोठारीसों और गोपालदाससों मिलत रहते. वे गोपालदास श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे. तातें उनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।११।।

१२-मानिकचन्द क्षत्री

अब श्रीगुसांईजीके सेवक मानिकचन्द क्षत्री, सो वे आगरामें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये मानिकचन्द तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम ‘रागिनी’ है. ये चम्पकलता तें प्रगटी हैं, तातैं इनके भावरूप हैं. और रागिनीकी एक सखी हैं. तिनकौ नाम ‘अनुरागिनी’ है. सो यहां मानिकचन्दकी स्त्री भई.

ये आगरेमें गोपालपुराके निकट दोउ क्षत्रीके घर पास हते, तहां दोउ जन्म लिये. सो उन दोउ क्षत्रीके परस्पर बोहोत मित्रता हती. तातें दोउ जनें कही, जो अपने बेटा, बेटीकौ विवाह करें तो आछौ. पाछें बड़े भए तब दोउनकौ विवाह किये. सो मानिकचन्दकौ पिता राजद्वारमें चाकर हतो. सो द्रव्य बोहोत भेलो कियो. पाछें कछूक दिनमें पिता मर्यो. तब मानिकचन्द राजद्वारमें चाकर रहे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वारतें अड़ेलकों पधारे. तब आगरेमें मानिकचन्दके घरके पाछें एक वैष्णवकों घर हुतो. तहां श्रीगुसांईजी जांइ उतरे. सो उष्णकालके दिन हुते. सो सांझकों अटारी उपर झरोखा बजारके हे, तहां श्रीगुसांईजी बिराजे हते. ताके सन्मुख मानिकचन्दकौ घर हुतो. सो मानिकचन्दकी स्त्री अपनी अटारी उपर चढी हुती. सो स्त्रीकों श्रीगुसांईजीके दरसन भए. तब प्रभु साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम आनन्द मात्र कर पाद मुखोदरादि सर्व अङ्ग या रीतिके दरसन श्रीगुसांईजी मानिकचन्दकी स्त्रीकों दिये. सो वह तो प्रभुनके दरसन करत मात्र थकित होत भई. पाछें तो या स्त्रीकों अपने देहकौ अनुसन्धान भूल्यो. ता पाछें जब रात्रिकों मानिकचन्द राजद्वारतें आए तब मानिकचन्दने लोंडीसों पूछ्यो, जो वह कहां है ? तब लोंडीने मानिकचन्दसों कही, जो अटारी उपर बेठी हैं. तब मानिकचन्द अटारी उपर चढे. परि वा स्त्रीने मानिकचन्द आए जानें नाहीं. वाकी दृष्टि तो एक श्रीगुसांईजीके स्वरूपमें आसक्त हती. तब मानिकचन्दसों स्त्रीनें

कही, जो देखो, साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम जो कहियत हैं सो बिराजत हैं. सो स्त्रीके बचन सुनि मानिकचन्द हूं श्रीगुसांईजीके दरसन करि थकित होंइ रहे. सो श्रीगुसांईजी रात्रि प्रहर सवा गई तहां लों उहां बिराजे रहे. पाछें प्रभु पोढिवेकों पधारे. तब लगि ये स्त्री - पुरुष उहांई ठाढ़े रहे. श्रीगुसांईजीके दरसन कर्यो करे. पाछें मानिकचन्द हू उठे. तब स्त्रीसों कहे, जो उठो. तब स्त्रीने मानिकचन्दसों कही, जो अब कहां जाईए ? पाछें स्त्री - पुरुष सगरी रात्रि उहांई बैठे रहे. सो जब प्रातःकाल भयो तब देह कृत्य करि दोउ जन स्नान करिकै श्रीगुसांईजी पास जांइ, दण्डवत् करि, बिनती प्रभुनसों करें. जो राज ! हमकों कृतार्थ करो. तब श्रीगुसांईजी उन दोउ स्त्री - पुरुषकों कृपा करिकै नाम निवेदन कराए. सो मानिकचन्द ताही समै श्रीगुसांईजीके सन्मुख यह बधाई गाई -

राग : देवगन्धार

चहुं जुग वेद बचन प्रतिपार्यौ
धर्म ग्लानी भई जब ही जब तब तब तुम बपु धार्यौ ।
सत्ययुग श्वेत वाराह रूप धरि हिरण्याक्ष उर फार्यौ ।
त्रैता राम रूप दसरथ गृह रावन कुल ही संहार्यौ ।
द्वापर ब्रज बूडत तें राखी सुरपति पांयन पार्यौ ।
कंसादिक दानव सब मारे वसुधा भार उतार्यौ ।
अब श्रीवल्लभ गृह प्रगट होइकै मायावाद निवार्यौ ।
'मानिकचन्द' श्रीविटठलप्रभुकौ पुरुषोत्तमरूप निहार्यौ ।

एसे ऐसे बोहोत पद मानिकचन्दने श्रीगुसांईजीके आगें गाए. तामें श्रीगुसांईजीकों मानिकचन्द पूरन पुरुषोत्तमरूपसों देखे हैं. या प्रकार

मानिकचन्दने श्रीगुसांईजीकों पूरन पुरुषोत्तम दृढ़ करि जानें. सो ऐसो मानिकचन्दकौ दृढ़ भाव देखि श्रीगुसांईजी आप मानिकचन्द उपर बोहोत प्रसन्न भए. पाछें मानिकचन्दने श्रीगुसांईजीकों बिनती करि अपने घर पधराए. सो श्रीगुसांईजी दिन तीन लों उहां बिराजे.

पाछें जब श्रीगुसांईजी अड़ेलकों पधारन लागे तब ए दोउ जन एक - एक वस्त्रसों घरके बाहिर ठाढ़े रहे. पाछें मानिकचन्दने चांपाभाईसों कही, जो या घरमें जो कछू होई सो सगरो तुम लै जाहु. यह घरमें जो कछू है सो सर्व श्रीगुसांईजीकौ हैं. पाछें अपने घोड़ा तबेलामें हते सो, और उंट सब सामान मंगाईकै श्रीगुसांईजीकी भेंट करि दिये. सर्वस्व मानिकचन्द भटट करि समर्पन करे. पाछें मानिकचन्दसों श्रीगुसांईजी यह आज्ञा करे, जो आज तुम दोउ जन इहांई प्रसाद लीजियो. सो तीन दिन श्रीगुसांईजी उहां और हू बिराजे. पाछें चौथे दिन अड़ेलकों विजय करे. तब मानिकचन्द एक ऊंटकी डोरी स्त्रीकों गहाए. और एक ऊंटकी डोरी आप पकरिकै साथ ही चले. और कितनो ही सामान मानिकचन्दने घरकौ बेच्यो. ताके दामकी छहत्तण हजारकी हुंडी भई. पाछें थोरीसी दूरि गाम बाहिर जांइकै मानिकचन्द श्रीगुसांईजीकी पालकीके साथ चले. सो ऊंट तो प्रथम ही आगें चले. और वैष्णवनकी बिदा करत प्रभुनकों विलम्ब भयो. पाछें सुखपालतो बेगि ही ऊंटनकों जांइ पहोंची. तब श्रीगुसांईजी खवाससों पूछे, जो यह ऊंटके साथ स्त्री जन कौन चली जात है ? तब वह खवास दोरिकै देखें तो मानिकचन्दकी स्त्री है. पाछें वह खवास श्रीगुसांईजी पास आई बिनती कर्यो, जो महाराज! मानिकचन्दकी स्त्री है. तब श्रीगुसांईजी ऊंट थम्भाइ वा ठौर पालकी थम्भाइकै वा खवाससों पूछे, जो मानिकचन्द कहां है ? तब खवासने बिनती करी, जो मानिकचन्द तो आपके पीछे चले आवत हैं. तब श्रीगुसांईजी मानिकचन्दकों बुलाइकै मानिकचन्दसों यह आज्ञा आप करे, जो मानिकचन्द ! अब तुम फिरो. तब मानिकचन्द तो चुप करि रहे. पाछें स्त्रीने श्रीगुसांईजीसों उत्तर कर्यो, जो महाराज! अब हम कहां जांइ ? हमकों तो तुम्हारे चरन - कमल बिना और आश्रय नाहीं. तब श्रीगुसांईजी वा स्त्रीकों बोहोत भांति समुझाइ बार - बार यही आज्ञा करे, जो तुम अब पाछें फिरो. तब वा स्त्रीनें प्रभुन प्रति कही, जो राज ! मोकों तो आपु घरकी टहल जो सोंपोगे सो हों करूंगी. और नांतरु उपरा थापूंगी. परि हमकों तो और ठौर नाहीं है, जो तहां हम जांइ. जो मोकों आप अपने साथ न लै जाउ तो मोकों इहां काहूके हाथ बेचिकै मेरे दाम होंइ सो आप लै पधारो. जाके हाथ मोकों बेचोगे ताहीके घरकी टहल हों आछी भांति करूंगी. परि हमकों तिहारे चरन - कमल बिना और आश्रय नाहीं. तब श्रीगुसांईजी इनकौ बोहोत समाधान कर्यो. परि इन न मानी. तब श्रीगुसांईजी इनसों कहे, जो हों तुम

पास एक वस्तू मांगत हूं. सो तुम मोकों देहु. और मैं तुमकों एक वस्तू देत हूं, सो तुम मो पास तें लेहु. तब वा स्त्रीने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! और वस्तू हमारे पास कहा है ? जो आप मांगत हो ? एक यह देह है, सो तो हम तुमही कों समर्पे हैं. सो तो तुम्हारोइ है. आप यह देहकौ चाहो सो करो. और हम पास देवेकों कछू है नाहीं. तब श्रीगुसांईजी मानिकचन्दसों कहें, जो तुम हमारो कह्यो मानो. ऐसें ही श्रीगुसांईजी मानिकचन्दनकी स्त्री सों कहे, जो तू तो घरमें रहिकै सेवा करि. और मानिकचन्दसों प्रभु कहे, जो तुम ब्यौहार करो. तब वा स्त्रीने श्रीगुसांईजीसों कही, जो महाराज ! हों सेवा करि कहां जानूं ? और प्रभुनसों मानिकचन्दने कही, जो महाराज ! ब्यौहार काहेसों होइ ? हमारे पास तो कछू द्रव्य नाहीं. तब श्रीगुसांईजी पास भण्डारी ठाढ़ो हतो. तासों प्रभुन कह्यो, जो मानिकचन्दकी भेंट कहा भण्डारमें आई है ? तब भण्डारीने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! मानिकचन्दने छहत्तर हजारकी हुंडी कराइ भण्डारमें दीनी है. और इनने घरमें तिनुका पर्यन्त कछू राख्यो नाहीं. तब श्रीगुसांईजी वासों पूछी, जो ब्यौहारकौ कहा चहिए ? तब मानिकचन्दने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! दस हजार रुपैया होंइ तब ब्यौहार होंइ. तब श्रीगुसांईजीने भण्डारीसों कह्यो, जो वा द्रव्यमें सों दस हजार रुपैया मानिकचन्दकों देहु. तब मानिकचन्दने श्रीगुसांईजीसों कही, जो महाराज ! मैं तिहारो द्रव्य लै कहा करुंगो ? तब श्रीगुसांईजी मानिकचन्दसों कहे, जो या द्रव्यसों कमाओ. पाछें हमारे द्रव्य हम पास पठाइ दीजियो. तब मानिकचन्दने फेरि श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो राज ! आपकौ द्रव्य लेहु सो तो रिन माथें भयो. और या द्रव्यसों उद्यम करा ? और या देहकी तो स्थिति नाहीं. कदाचित् देह परे, और आपकौ द्रव्य भण्डारमें न भर्यो गयो होंइ, तो मेरे माथे रिन रहि जांई. तातें आपके द्रव्यसों उद्यम न करुंगो. तब श्रीगुसांईजी मानिकचन्दसों कहे, जो कमाई दीजो. और जो यों करत रहि जाईगो तो तेरे माथे रिन नाहीं. पाछें श्रीगुसांईजी मानिकचन्दकी स्त्रीसों यह कहे, जो हों देत हों सो तू लै. हों तुम उपर प्रसन्न हों. और श्रीगुसांईजी बचन दै कै वा स्त्रीसों यह कहे, जो हों पांच महीना श्रीनाथजीद्वारमें रहत हूं. सो मैं श्रीनाथजीद्वारमें चारि महिना रहूंगो. और एक महिना आवत जात तुम्हारे घर रहूंगो. पाछें श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मानि मानिकचन्द अपने घर आए. तब श्रीगुसांईजी मानिकचन्दके माथे लालजीकी सेवा पधराए. सो कछूक दिन आपु सेवा करि वा स्त्रीकों सर्व सेवाकौ प्रकार समुझाए. सो जब श्रीगुसांईजी सेवा करते तब मानिकचन्द स्त्री - पुरुष दोउ जन जांई ठाढ़े रहते. सो सर्व सेवाकौ प्रकार मानिकचकों श्रीगुसांईजी समुझाइकै कहे. तब वे दोऊ जन मानिकचन्द और उनकी स्त्री आछी भांतिसों सेवा करन लागे. पाछें वा द्रव्यसों मानिकचन्द कमावते. सो एक भागसों तो निर्वाह करते. और तीन भागकौ द्रव्य भेलो करते. सो थोरेई दिनमें द्रव्य

कमाए. सो जब श्रीगुसांईजी मानिकचन्दके घर पधारे. तब वे दस हजारकौ तोडा प्रभुनके आगें धरे. पाछें मानिकचन्दने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! यह अपनो द्रव्य लेहु. और मोकों उरिन करो. आपकी कृपासों अब मेरे पास द्रव्य उद्यम लाइक है. तातें अब हों आपकौ रिन काहेकों राखा ? तब श्रीगुसांईजी मानिकचन्द उपर अति प्रसन्न होंइकै वा समै यह श्रीमुखतें कहे, जो के और के समर्पन राजा बलिने कर्यो. और के समर्पन मानिकचन्दने कर्यो.

भाव प्रकाश :
यहां यह सन्देह होंई, जो राजा बलिने समर्पन कियो सो तो कछू लियो नाहीं. और मानिकचन्द तो वामें तें ब्यौहारकों द्रव्य लिये. सो हू रिन काढ़िकै. तातें यह समर्पन कैसें कह्यो जांई ? तहां कहत हैं, जो राजा बलिकौ समर्पन मर्यादा रीतिकौ है. सो प्रभु आप दान लियो है. सो दानकी वस्तू पाछी लीनी नहीं जांई. और यह तो पुष्टिमार्गकी रीतिसों समर्पन कियो है, स्नेह करि. तातें लोकमें जा भांति स्वामि - सेवककौ ब्यौहार होत है ता प्रकार यहां हू है. सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु 'सिद्धान्त - रहस्य' ग्रन्थमें लिखे हैं, सो श्लोक -

तस्मादादौ सर्वकार्ये सर्ववस्तु समर्पणम् ।
दत्तापहारवचनं तथा च सकलं हरेः ।।
न ग्राह्यमिति वाक्यं हि भिन्नमार्गपरं मतम् ।।
सेवकानां यथा लोके व्यवहारः प्रसिद्ध्यति ।।

तातें मानिकचन्द लोक ब्यौहारकी नांई रिन काढ़िकै द्रव्य लियो. सो हू श्रीगुसांईजीकी आज्ञा तें. तातें मानिकचन्दकौ समर्पन उत्तम है. यह भाव जाननो.

पाछें जब महिना एक भयो तब श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार होइकै फेरि अड़ेलकों पधारे. या प्रकार श्रीगुसांईजी प्रति वर्ष मानिकचन्दके घर एक महिना रहते. ऐसी कृपा मानिकचन्द उपर श्रीगुसांईजीकी हती.

वार्ता प्रसङ्ग २* :
*** यह प्रसङ्ग कृष्ण भटटकी पोथीको है.**

और एक समै मानिकचन्दके बेटाकौ विवाह हतो. सो मानिकचन्द बिनतीपत्र लिखिकै श्रीगुसांईजीकों अपने घर पधराए. सो श्रीगुसांईजी श्रीगोकुलजीतें आगरे पधारे. पाछें केतेक दिनकों श्रीगोकुलनाथजीकौ जन्म दिवस आयो. तब श्रीगुसांईजी श्रीगिरिधरजीकों श्रीगोकुल कहाई पठाए, जो तुम श्रीवल्लभके जन्म दिवसकौ कामकाज करियो. हों तो इहांसों ब्याह भए पाछें आऊंगो. पाछें जब मानिकचन्दके बेटाकौ विवाह होंइ रह्यो, तब श्रीगुसांईजी मानिकचन्दसों बिदा होंइकै श्रीगोकुल पधारे. ऐसी कृपा श्रीगुसांईजी मानिकचन्द उपर करते. वे मानिकचन्द स्त्री - पुरुष श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१२।।

१३-एक ब्राह्मन बंगालेका

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक ब्राह्मन कपड़ाकी दलाली करतो. सो बंगालेमें रहतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम ‘आनन्दी’ है. ये रतिकला तें प्रगटी हैं, तातें इनके भावरूप हैं.

ये बंगालेमें एक गाम है, तहां एक ब्राह्मनके जन्म्यो. पाछें बरस ग्यारहकौ भयो तब इनकौ ब्याह भयो. सो स्त्री साधारन मिली. लीला सम्बन्धी नाहीं. पाछें ये बरस बीच पच्चीसकौ भयो. तब इनकौ पिता मर्यो. तब ये कपड़ाकी दलाली करन लाग्यो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो प्रथम एक बंगालेकौ साथ मथुराजीमें आयो. ता साथमें सोदागर बोहोत आए. पृथ्वीपतिके देसकों सोदागर कपड़ा बेचन जात हते. तिन सोदागरनकों मिलिकै ये ब्राह्मन दलाली करतो. सो वह ब्राह्मन सामर्थ्यवान् हतो. सो अपनी जीविकाकों ब्राह्मन हूं मथुरामें उन सोदागरनके साथ आयो. पाछें वे व्यौपारी तो मथुराजीमें रहे. और वा साथमें वैष्णव हते, सो श्रीगोकुलकों श्रीगुसांईजीके दरसनकों चले. तिनके साथ यह ब्राह्मन हू श्रीगोकुल आयो. सो सगरे वैष्णवनके साथ ब्राह्मन हू ने श्रीगुसांईजीके दरसन पाए. तब श्रीगुसांईजीके दरसन करत ही वा ब्राह्मनके मनमें यह आई, जो हों इनकौ सेवक होउं तो आछी बात है. यह विचारिकै ब्राह्मनने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! अब आप मोकों अपनो सेवक करो. तब वाकों स्नान कराई श्रीगुसांईजी नाम निवेदन कराए. पाछें वाही सङ्गके साथ वह ब्राह्मन अपने सोदागरनके कपड़ा दिल्लीमें बिकवायो. ताकी दलालीकौ द्रव्य गांठि बांधि अपने देस बंगालेमें आयो. तब वाके मनमें यह मनोरथ उपज्यो, जो या द्रव्यकौ एक ऐसो उत्तम परकालो लेहु, ताकौ श्रीगुसांईजीके श्रीअङ्गकौ बागो ब्योंताउं. सो एक परकालो थान रुपैया अढाइसैंकौ अति उत्तम लियो. वा थानके रुपैया डेढसैं हांसिल लागे तब सहरके बाहिर निकसन पावे. तब वा ब्राह्मनने वा थानकों एक बांसके नलुवामें धरिकै लाठी करि वह बाहिर निकस्यो. सो स्त्रीकों हू सङ्ग लै चल्यो.

भाव प्रकाश :

काहेत ? जो इनकों श्रीगुसांईजीके दरसन कराई नाम निवेदन करवानो है.

तब दरवानने जानी, जो ब्राह्मन है, सो यह स्नान करन जात है. और यह तो वह परकालो लै कै घरतें निकस्यो. सो श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजी पास कछूक दिननमें आई दण्डवत् करि वह परकालो काढ़ि प्रभुनके आगें धर्यो. सो श्रीगुसांईजी वा परकालेकों देखिकै अति प्रसन्न भए. सो वा समै श्रीगुसांईजी यह बचन कहे, जो यह परकालो तो श्रीनाथजीके योग्य है.

भाव प्रकाश :

काहेत ? जो उत्तम वस्तूके भोक्ता प्रभु हैं. तातें उत्तम वस्तु प्रभुनकों समर्पनी. यह दासकौ धर्म है.

यह कहि वाही समै दरजी बुलाइ श्रीनाथजीकौ बागो ब्योंतायो. सो बागो वाई दिन सिद्ध भयो. पाछें वह बागो लै सवारे ही वैष्णव स्त्री - पुरुषकों साथ लै श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार पधारि, आप स्नान करि पर्वत उपर मन्दिरमें पधारि, श्रीनाथजीके दरसन करि राजभोग धरे. पाछें समै भए भोग सराइ किवाड़ खोले. तब वह ब्राह्मन श्रीनाथजीके दरसन करिकै अपने मनमें बोहोत ही प्रसन्न भयो. पाछें दूसरे दिन श्रीगुसांईजी वह बागा श्रीनाथजीकों अङ्गीकार कराए. तब वह ब्राह्मन वैष्णव श्रीनाथजीकौ दरसन करिकै अति प्रसन्न भयो. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीकी सेवासों पहोंचिकै पर्वततें नीचे पधारे. तब यह ब्राह्मन बारबार प्रभुनकों दण्डवत् करि अपने जन्मकों सुफल करिकै मानत भयो. पाछें ब्राह्मनने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! ये स्त्री जनकों नाम निवेदन कराइए. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो यह साधारन जीव है. तातें इनकों नाम सुनावेंगे. पाछें श्रीगुसांईजी कृपा करि इनकों नाम सुनायो. ता पाछें वा ब्राह्मनके मनमें एक वार्ता उपजी. जो यह परकालो तो श्रीनाथजी अङ्गीकार किये. परि एक परकालो ऐसोऔर हू लाउं तो वामें तें अबके श्रीगुसांईजीकौ बागो होंइ. तब तो मेरो जीवन सुफल है. तातें यह विचार करि श्रीगुसांईजीसों बिदा होंइकै अपने देस बंगालेकों चल्यो. सो कछूक दिनमें स्त्री - पुरुष घर आए. पाछें कछूक दिनमें ब्राह्मन अपनी स्त्रीसों कहे, जा अपने खरचकौ काम तो भिक्षा मांजिकै चलावेंगे. और दलालीकौ द्रव्य आवे सो भेलो करिए तो भली बात है. तब स्त्रीने कही, जो अपनो निर्वाह दलालीमें आछी भांति होत है. तुम ऐसी बुद्धि कहांतें सीखि आए हो ? तब ब्राह्मनने स्त्रीसों कह्यो, जो ये सगरे लोग अपनी अपनी वृत्ति छोरत नाहीं तो हम अपनी वृत्ति क्यों छोरे ? हमारे तो अति उत्तम वृत्ति भिक्षा मांगिवेकी है. ताकों क्यों छोरे ? सो ब्राह्मनने स्त्रीसों अपनो मनोरथ जतायो नाहीं.

भाव प्रकाश :
काहेतें ? जो इनकी बुद्धि लौकिक है. सो लौकिक बुद्धिवारेकों अलौकिक बात सर्वथा कहनी नाहीं. नांतरु कलेस होंइ. यह सिद्धान्त जतायो.

पाछें वाही रीति अपनों निर्वाह वह ब्राह्मन करन लाग्यो. ता पाछें फेरि द्रव्य परकाले लाइक भेलो भयो. तब फेरि वह वैष्णव वेसोइ

परकालो लाइकै फेरि वाही प्रकार वह श्रीगोकुलकों चल्यो. सो थोरेसे दिननमें श्रीगुसांईजी पास आई दण्डवत् करिकै वह परकालो आगें धर्यो. तब श्रीगुसांईजी वा परकालेकों देखिकै यह बचन कहे, जो ऐसोइ परकालो आगें हू एक वैष्णव लायो हतो. सो वा परकालेकों श्रीनाथजी अङ्गीकार करे. तब वा वैष्णवने श्रीगुसांईजीसों दण्डवत् करि बिनती करी, जो महाराज ! वह हू परकालो मैं ही लायो हतो. तब तो श्रीगुसांईजी वाके उपर बोहोत प्रसन्न भए. पाछें वह परकालो आपु श्रीहस्तसों खवासकों सोंपन लागे. तब या वैष्णवनने श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि बिनती करी, जो महाराज ! वह परकालो तो श्रीनाथजीने अङ्गीकार कर्यो. और या परकालाकौ बागा आपु अङ्गीकार करो. सो दरसन करिकै हों अपने घर जाउं. तब श्रीगुसांईजी वा वैष्णवसों कहे, जो श्रीठाकुरजी तो बारबार उत्तम वस्तूकों अङ्गीकार करत हैं. और हम तो कब हूं अङ्गीकार करेंगे. और ऐसी वस्तू इहां तुम द्वारा ही आवे सोई पावे. नांतरु कौन इहां लावत है ? पाछें वा वैष्णवसों प्रभुन कही, जो यह थान तो मन्दिर योग्य है. तब वा वैष्णवनें श्रीगुसांईजीके बचन सुनिकै बिनती करी, जो महाराज ! ये तो ईश्वरनके घर हैं. इहां कौनसी बातकी न्यूनता है ? परि मेरे तो मनमें यह मनोरथ है, जो आपु या थानकौ बागा अङ्गीकार करो. यह दरसन करिकै हों अपने घर जाउं. तब श्रीगुसांईजी दरजी बुलाइ कितने बागा तो श्रीनवनीतप्रियजीके करवाए. पाछें अपनो बागा ब्योंतायो.

भाव प्रकाश :
यामें यह जतायो, जो उत्तम वस्तू स्वामिकों अङ्गीकार कराए बिना सेवककों सर्वथा न लेनी. नांतरु बाधक होंई.

तब वह वैष्णव बोहोत प्रसन्न भयो. पाछें दरजी वे बागा सब सिद्ध करि ल्यायो. तब श्रीगुसांईजीने एक बागा तो श्रीनवनीतप्रियजीकों धरायो. पाछें आपु मन्दिरसों पहोंचि भोजन करि श्रीगुसांईजी विश्राम करि वा बागाकों पहरिकै गादी पर बिराजे. सो दरसन करिकै वह वैष्णव अपने मनमें बोहोत प्रसन्न भयो. पाछें जहांलों वह वैष्णव श्रीगोकुल रह्यो तहांलों श्रीगुसांईजी आपु नित्य एक बार वा बागाकों पहिरते. पाछें केतेक दिनकों वह वैष्णव श्रीगुसांईजीसों बिदा होंइकै अपने देसकों चल्यो. तब श्रीगुसांईजी वा ब्राह्मनकों सगरे समाचार पूछे, जो तू बंगालेमें कहा उद्यम करत है ? तब वाने प्रभुन आगें सब समाचार कहे. तब श्रीगुसांईजी वाकी दसा देखिकै बोहोत प्रसन्न भए. पाछें वा वैष्णवने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो राज ! आपकौ नाम 'भक्तेच्छापूरकायनमः' सुनत हते, सो आपु अनुभव करवाए. तातें

आपकौ नाम मैं सहस ही जान्यो अब जो आज्ञा पाउं तो मैं अपने घरकों चलूं ? तब श्रीगुसांईजी अति आनन्दसों वाकों बिदा करे. सो थोरेसे दिननमें वह ब्राह्मन बंगालेमें अपने घर आयो. सो जा दिन वह अपने घर जांइ पहोंच्यो ता दिन वाके पिताकौ श्राद्ध दिन हतो. सो याकी स्त्री ब्राह्मनी प्रथम दिवस कहूं सों उरदकी दारि और तेल मांगिकै लाई हती. सो दारि भिंजोइ धोइ पीसिकै वाके बरा करति हती. इतने ही यह ब्राह्मन घर आई पहुंच्यो. तब वह ब्राह्मनी याकौ देखिकै कही, जो भली भई ! जो तुम घर आई पहोंचे. आज तिहारे पिताकौ श्राद्ध दिन हो. तातें मैं बरा किये हैं. पाछें वा ब्राह्मनीने ब्राह्मनसों कही, जो अब तुम शुद्ध श्राद्ध जांइकै बेगि करि आओ. तब ब्राह्मनने वा स्त्रीसों कह्यो, जो श्राद्ध दिन कैसो होत है ? पाछें जब रसोई होंइ रही, तब स्त्रीने ब्राह्मनसों कही, जो रसोई सिद्ध भई है. तब वह ब्राह्मन स्नान करिकै श्रीनाथजीकों भोग समर्प्यो. सो बरा थोरेसे हते. तब ब्राह्मनने स्त्रीसों पूछी, जो घरमें कछू मिठाइ है ? तब ब्राह्मनीने कही, थोरोसो गुर तो है. पाछें वा ब्राह्मनीने गुर पास लाइ धर्यो. तब वह ब्राह्मन अति आनन्दसों प्रेमसंयुक्त होंइ श्रीनाथजीकौ ध्यान कर्यो. सो अपने बागाकौ दरसन करि गयो हतो ताही स्वरूपकों अपने हृदयमें आनिकै वह बिनती कर्यो, जो महाराज ! यानें यह सामग्री लौकिक बुद्धिसों करी हती. परि अब आप या सामग्रीकों अङ्गीकार करोगे. पाछें वे बरा और गुर बोहोत भक्तिभावसों प्रभुन आगें वा ब्राह्मनने भोग समर्प्यो. तब श्रीनाथजी इहां गिरिराज परतें उहां बंगालेमें या ब्राह्मनके घर पधारिकै बरा और गुर वाकौ प्रेम देखिकै अरोगे.

भाव प्रकाश :

या वार्तामें यह बड़ो सन्देह है, जो ब्राह्मनने श्राद्धकी सामग्री श्रीनाथजीकों कैसें धरी ? यह श्रीआचार्यजीके मार्गकी रीतिसों विरुद्ध है. और श्रीनाथजी वा सामग्रीकों क्यों अरोगे ? तहां कहत हैं, जो यह सामग्री तो वा ब्राह्मनकी स्त्रीने श्राद्धके निमित्तसों करी हती. परि ब्राह्मनके मनमें तो श्राद्धकौ सङ्कल्प है नाहीं. और ता दिन घरमें कछू हती नाहीं. तातें ब्राह्मनने शुद्ध भावसों यह सामग्री श्रीनाथजीकों धरी. सो श्रीनाथजी वा ब्राह्मनकी बिनतीसों वाकौ भाव देखि शुद्ध प्रेम देखि प्रसन्नतासों अरोगे. काहेंते, जो श्रीनाथजीकौ नाम ‘भक्तमनोरथपूरक’ है. सो जो कोऊ भक्ति भावसों श्रीनाथजीकों जो कछू धरत है, सो प्रभु अवश्य अरोगत है. यह सिद्धान्त भयो.

सो जब श्रीनाथजी वाके घर पधारे तब ही वा ब्राह्मनने जान्यो. और जब याके घरसों आरोगिकै श्रीनाथजी अपने मन्दिरमें पधारे, तब वा ब्राह्मनकों जताए. जो अब हम तेरे बरा और गुर आरोगिके जात हैं. तब वह ब्राह्मन अपने मनमें बोहोत प्रसन्न होइकै अपने जनमकों सुफल करिकै मानत भयो. जो धन्य मेरो भाग्य है. जो मेरे घर श्रीनाथजी पधारे. और श्रीगुसांईजीकी कानितें ये बरा और गुर अरोगे. और श्रीनाथजी तो याके घर पधारे हते, सो वाही समै पर्वत पर मन्दिरमें श्रीगुसांईजीने श्रीनाथजीकों राजभोग समर्प्यो हतो. सो श्रीनाथजी तों उहां ब्राह्मनके घर पधारे. पाछें श्रीगुसांईजी तो यह बात जाने नाहीं. सो जब समै भयो तब श्रीगुसांईजी राजभोग सराइ, आर्ति करि अनोसर करि पर्वततें नीचे पधारि आपु भोजन करिकै विश्राम करे. ता समै श्रीगुसांईजीकों निन्द्रा न आई हती. इतने ही श्रीनाथजी एक लाल छरी श्रीहस्तमें लिये श्रीगुसांईजी पास पधारे. तब श्रीगुसांईजी दण्डवत् करि अपनी पर्यङ्क उपर श्रीनाथजीकों पधराइ, श्रीमुख चुम्बन करि, कपोल पर हाथ फिराइ पूछे, जो बावा ! आजु ऐसें अनमने क्यों बिराजे हो ? तब श्रीनाथजीने श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो हों तो आजु भुखो हूं. तब श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीसों पूछे, जो अबही तुम राजभोग अरोगे हो और हू जो आपकों चहिए सो चलो हों देउं ? तब श्रीनाथजी श्रीगुसांईजीसों कहे, जो हों तो राजभोग सर्यो तब आयो हतो. तासों राजभोग हों नाहीं अरोग्यो.

भाव प्रकाश :
याकौ अभिप्राय यह, जो भक्तोद्धारक स्वरूपसों नाहीं अरोग्यो. सर्वोद्धारक स्वरूपसों अरोग्यो हूं. सो तिहारे भावतें मैं भूखो हूं.

तब तो श्रीगुसांईजी विस्मित होइकै श्रीनाथजीसों पूछे, जो बावा ! ऐसें आप कहां पधारे हते ? तब श्रीनाथजी श्रीगुसांईजीसों कहे, जो तुम्हारे सेवक बंगालेकौ ब्राह्मन परकाला वारो ताके घर बरा और गुर अरोगन पधार्यो हतो. और वाके घरके सर्व समाचार श्रीनाथजीके श्रीगुसांईजीसों कहे. तब श्रीनाथजीके बचन सुनिकै श्रीगुसांईजीकौ हृदौ भरि आयो. पाछें श्रीनाथजी तो श्रीगुसांईजीके पास तें पर्वत उपर अपने मन्दिरमें पधारे. और श्रीगुसांईजी सगरे भीतरियानकों स्नान कराइ कहे, जो बेगि ही राजभोगकी सामग्री सर्व जन मिलिकै रसोई सिद्ध करो. तब भीतरिया सर्व मिलिकै रसोई करन लागे. और श्रीगुसांईजी आप स्नान करि पर्वत उपर मन्दिरमें पधारि शङ्खनाद कराइ एक थाल लडुवानकौ भोग समर्प्यो. तब ही रसोईयाने श्रीगुसांईजीकों खबरि करि, जो महाराज ! रसोई सिद्ध भई है. पाछें भोग सराइ

श्रीगुसांईजीने राजभोग श्रीनाथजीकों समर्प्यो. समयानुसार भोग सराइ आर्ति करि अनोसर करवाइ श्रीगुसांईजी पर्वततें नीचे पधारि अपनी बैठकमें बिराजिकै बङ्गालेकों पत्र लिखि ब्रजवासी दोइ वा वैष्णवके पास पठाए. ता पत्रमें प्रभुन लिख्यो, जो अमुके दिन तुमने श्रीनाथजीकों कहा समर्प्यो हतो ? सो याकौ प्रतिउत्तर तुम हमकों लिखि पठाइयो. सो ब्रजवासी दोउ बंगालेमें वह वैष्णवके घर जांइ पहोंचे. तब वह वैष्णव अपने मनमें अति प्रसन्न भयो. पाछें उन ब्रजवासीन श्रीगुसांईजीकौ पत्र वाके हाथ दीनो. और वा दिनके सर्व समाचार श्रीनाथजीद्वारके वाके आगें कहे. तब वह प्रेम उत्कण्ठित होंइ अति भक्तिभावसों प्रभुनके पत्रकों माथे चढाइ दण्डवत् करि बांचिके वह वैष्णव अपने मनमें अति प्रसन्न भयो. पाछें उन ब्रजवासीनकों उतराइ, आछी भांति रसोई कराइ, प्रसाद लिवाए. पाछें रात्रिकों वा वैष्णवने वा पत्रकौ प्रतिउत्तर लिख्यो. तामें बोहोत भांतिसों श्रीगुसांईजीकों बिनती लिखी. और वा दिनकौ सर्व प्रकार लिखि पठायो. और लिख्यो, जो महाराज ! यह श्रीनाथजीने आपकी कानितें सर्व मानि लियो. तातें मेरे बड़े भाग्य हैं. और लिख्यो, जो राज ! सो बरा हू थोरे हते. पाछें उन दोउ ब्रजवासीनकों भली भांतिसों समाधान करि श्रीगुसांईजी पास पठाए. सो थोरेसे दिननमें ब्रजवासी बंगालेतें श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजी पास आई वा वैष्णवकौ पत्र दियो. सो वा वैष्णवकौ पत्र आपु ही कृपा करि श्रीगुसांईजीने बांच्यो. तब श्रीगुसांईजी अपने मनमें बोहोत प्रसन्न भए. पाछें प्रभुन वह पत्र चाचा हरिवंशजीकों दै सब समाचार कहे. तब चाचाजीकौ हृदय भरि आयो. सो वह ब्राह्म ब्राह्मन श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१३।।

१४-गनेश व्यास

अब श्रीगुसांईजीके सेवक गनेश व्यास, श्रीमाली ब्राह्मन, पश्चिममें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :

ये गनेश व्यास सात्त्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम ‘प्रमोदिनी’ है. ये ‘रतिकला’ तें प्रगटी हैं, तातें इनके भावरूप हैं.

ये गनेश व्यास पश्चिममें एक श्रीमाली ब्राह्मनके घर जन्में. सो गनेश व्यास दोइ चारि महिनानके भए तब ही इनके मा - बाप मरे. पाछें इनकौ एक काका हतो, सो वह इनकों अपने घर लै गयो. तहां ये बड़े भए. सो बरस बीसके भए. तब एक सङ्ग पश्चिमतें मथुराजी जात हतो. ता सङ्गमें येहू चले. सो कछूक दिनमें सङ्ग मथुराजी आयो. तामें गनेश व्यास हू आए. सो उन दिनन श्रीगुसांईजी मथुराजी बिराजत हे. सो श्रीगुसांईजी विश्रान्त घाट पर सन्ध्यावन्दन करत हे. तहां गनेस व्यासने श्रीगुसांईजीके दरसन पाए. सो गनेश व्यास श्रीगुसांईजीसों बिनती किये, जो महाराज ! मैं अनाथ हूं. मेरे माता - पिता कोऊ है नाहीं. सो मैं आपकी सरनि आयो हूं. तातें कृपा करि आप मोकों अपनो सेवक कीजिए (और) कछू टहल दीजिए. तब श्रीगुसांईजी वाकौ दैवी जीव देखि कहे, जो श्रीयमुनाजीमें न्हाइ लै, हम तोकों सेवक करेंगे. सो गनेश व्यास श्रीयमुनाजीमें स्नान करि श्रीगुसांईजीके निकट आए. तब श्रीगुसांईजी गनेश व्यासकों नाम निवेदन कराए. पाछें श्रीगुसांईजी आप कृपा करि गनेश व्यासकों अपनी परचारगीकी टहल दीनी. सो गनेश व्यास प्रीति पूर्वक सेवा करन लागे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वे गनेश व्यास एक समै श्रीठाकुरजीकी सामग्री लै द्वारिकाकों जात हते. सो एक दिन सांझकों एक गामके बाहिर भए और गामकों जात हते. तब मार्गमें मेह बोहोत आयो. सो इत उत देखें तो कछू छाया नाहीं. तब थोरीसी दूरि एक सिखरबन्द एक देहरा दीस्यो. सो दोरिकै गनेश व्यास तहां गए. तब तहां देखे तो वामें एक देवी है. और सर्व सामान वा पास धर्यो है, परि मनुष्य कोऊ नाहीं. तब अपने मनमें गनेश व्यासने विचार कियो, जो कोई पुजारी रहत है. सो कहूं गाममें गयो है. अब आवत होइगो. यह विचारि करिकै ये तो बाहिर छायामें सामग्री धरि बैठि रहे. पाछें जब रात्रि बोहोत गई तब तो तहां कोई आयो नाहीं. परि वह (देवी) ऐसी जागती जोति हती, सो अपनी वस्तुकी आप रखवारी करती. और वाकों राजाकी ओर सों नित्य बलि आवती. सोई खांइकै बैठि रहती. और जो कोई पुजारी आवतो तो वाकों खांइ जाती, और गामनमें प्रसिद्ध हती. सो नित्य पूजा आवती. सो सामग्री सब आप ही भेली करिकै धरत जाती. सो कोई एक मनुष्य रात्रिकों वा देवीके दरसनकों आयो. तिन गनेस व्याससों कही, जो तुम इहां मति सोइयो. इहां कोई पुजारी तो सोवत नाहीं. और कोई रहि सकत नाहीं. तब गनेश व्यासने वासों पूछी, जो ताकौ कारन कहा है ? तब वाने गनेश व्याससों कह्यो, जो कोई इहां सोवत है, रहत है, ताकों यह देखी खांत है. तब वह मनुष्य तो देवीके दरसन करिकै गनेश व्याससों ये समाचार कहिकै चल्यो

गयो. तब तो गनेश व्यास निधरक होंइ देवीके मन्दिरके भीतर जांइकै किवाड़ दै सामग्री एक कौनेमें धरि वा देवीकों न्हवाइकै नाम सुनाइ वाके गरेमें प्रसादी माला बांधी. वाकों वैष्णव करे. पाछें देखे तो देहरामें कोऊ सर्व वस्तू धरि गयो है. यह प्रकार देखिकै देहराकों धोयो. पाछें रात्रिकों वहांइ रहे. अपने पास प्रसाद हतो सो लिये. तहां एक कूआं हतो ताकौ जल पीए. और सोइ रहे. और वाही रात्रिकों वा देवीने वा राजाकों स्वप्न दियो, जो मोकों अब नित्यकी सी बलि मति पठाईयो. अब हों वैष्णव भई हों. तातें अब यह बलि मैं न खाउंगी. मोकों रसोई करिवेकों इहां कोई एक पुजारी राखि देहु. सो रसोई करि मोकों धरेगो सो हों खाऊंगी. तब वह राजा तो बोहोत विस्मत भयो. पाछें सवारे गनेश व्यास तो सामग्री लै आगें कों चले. और वह राजा बड़े सवारे वा देवीके दरसनकों आयो. तहां देखे तो काहूने देहरा धोयो है. देवीकों न्हवायो है. और देवीके गरेमें माला बांधी है. तब तो वह राजा यह देखिकै बोहोत ही प्रसन्न अपने मनमें भयो. पाछें वा देवी पास एक पुजारी राखि दियो. और नित्यकौ सीधो कर दियो. सो वह रसोई करि देवीकों धरतो. पाछें वह आप खांतो.

भाव प्रकाश :

सो भगवदीयकौ स्वरूप ऐसो जाननो. जिनतें देवी देवता तीर्थ आदि सब कृतार्थ होत हैं. और भगवदीय ऐसें दयालु होत हैं, जो मार्ग जांत सहज ही देवीकों कृतार्थ करे.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

और श्रीगुसांईजी वा गनेश व्यास उपर बोहोत रिस करते. परि गनेश व्यास अपनो मन न बिगारते. वे ऐसें भगवदीय हते. ज्यों - ज्यों श्रीगुसांईजी रिस करते, त्यों - त्यों ये अपने मनमें अति प्रसन्न होते. और अपने मनकों कहते, जो प्रभु मोसों सदा सर्वदाइ रिस कर्यो करो. मोकों जो आपु अपनो दास जानत है तो मो उपर रिस करत हैं. नांतरु रिस और सों क्यों न करे ?

भावप्रकाश :

यामें यह जतायो, जो अपुनो होंइ ताही सों रिस करी जांइ.

सो वे गनेश व्यास प्रभुनकी रिसकों ऐसो गुनो मानते.

पाछें केतेक दिनकों गनेश व्यासकी देह छूटी. तब काहु वैष्णवने कहूं खबरि सुनी. सो श्रीगुसांईजी आगें आई कही, जो राज ! गनेश व्यासकी देह छूटी. यह सुनिकै श्रीगुसांईजीके रोमाञ्च होंइ आए. तब वाही वैष्णवने श्रीगुसांईजीकों पुलकित जानिकै बिनती करी, जो महाराज ! आपु तो वा गनेश व्यास उपर बोहोत रिस करते. और अब वाकी खबरि सुनिकै रोमाञ्च क्यों होंइ आए ? तब श्रीगुसांईजी वा वैष्णवसों कहे, जो गनेश व्याससो कोई मेरो ऐसो सेवक होंनो कठिन है. न है और न होंइ. जा उपर हों या प्रकार रिस करतो. और वह गनेश व्यास अपने मनमें शिक्षा करि मानतो. मोसों वह कबहू मन न बिगारतो. वह मेरो ऐसो अन्तरङ्ग सेवक हतो. यह श्रीगुसांईजीके श्रीमुखके बचन सुनिकै वह वैष्णव चुप करि रह्यो. वे गनेश व्यास श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. सो इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१४।।

१५-हरिदास खवास

अब श्रीगुसांईजीके सेवक हरिदास खवास, सनाढ्य ब्राह्मन, मथुराजीके बासी, जिनकों श्रीभागवत सुनत मूरछा आई, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम ‘सरला’ है. इनकौ स्वभाव सरल बोहोत हैं. ये रतिकला तें प्रगटी हैं, तातें इनके भावरूप हैं.

सो हरिदास मथुरामें एक सनाढ्य ब्राह्मनके घर जन्में. सो बालपनेसों ही मुग्ध अवस्था, इनकी. कछू लौकिक व्यवहार आदिकौ ज्ञान नाहीं. माता -

पिता इनकी मुग्ध अवस्था देखि बड़ो खेद करे. जो इनकौ ब्याह कैसें होइगो ? या प्रकार बोहोत चिन्ता करे. पाछें ये बरस आठके भए तब इनकों एक पण्डितके पास पढिवेकों पठाए. सो कछूक पढ़े. पाछें मथुरामें महामारी फैली. तामें माता - पिता मरे. तब हरिदास विचार कियो, जो अब कहा करनो ? कछू समुझ परै नाहीं. तब श्रीयमुनाजीके तीर विश्रान्त पर जांइ बैठे. सो बोहोत रुदन कियो. ता समैं श्रीगुसांईजी तहां सन्ध्यावन्दन करत हे. सो श्रीगुसांईजी हरिदासकों देखे. ताही समै खवास पठाइ हरिदासकों अपनी पास बुलाए. सो हरिदास श्रीगुसांईजीकी पास आए. तब श्रीगुसांईजी हरिदासकों कहे, हरिदास ! रोवत क्यों है ? तब हरिदास कह्यो, जो महाराज ! या संसारमें मेरो कोई है नाहीं. और मैं कछू जानत नाहीं. तातें अब मैं आपके सरनि आयो हूं. मोकों आप अपनी पास राखो. मैं दीन हूं, अनाथ हूं. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो तू चिन्ता मति करे. श्रीयमुनाजीमें स्नान करि लै. हम तोकों अपनो सेवक करेंगे, और अपनी पास राखेंगे. तब तो हरिदास प्रसन्न व्है श्रीयमुनाजीमें स्नान कियो. पाछें श्रीगुसांईजी नाम सुनाइ निवेदन कराए. और आज्ञा करी, जो अब तू हमारी खवासी करि. ता दिनतें हरिदास श्रीगुसांईजीकी खवासी करन लागे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वे हरिदास श्रीगुसांईजीकी खवासी करते. सो एक समै हरिदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! मेरो मनोरथ आपुकै श्रीमुख तें भागवत सुनिवेकौ है. तब श्रीगुसांईजी हरिदाससों यह आज्ञा करे, जो तू उज्जैनि जा. तहां कृष्ण भटट तोकों श्रीभागवत सुनावेंगे. और मोकों तो कथा कहिवेकों घरी दोइ घरीकौ अवकास है. परन्तु सम्पूरन श्रीभागवत कब लगि कहूं ? सगरे श्रीभागवत कहिवेकों तो एक पहरकौ अवकास होंइ, तब पांच बरसमें सम्पूरन श्रीभागवत पूरन होंइ. तातें तू उज्जैनि कृष्ण भटटके पास जा. वे तोकों आछी भांतिसों श्रीभागवत कहि सुनावेंगे. तब श्रीगुसांईजीकौ पत्र एक हरिदास कृष्ण भटटकों लिखाइ लै कै श्रीगुसांईजीसों बिदा मांगिकै उज्जैनिकों चले. सो कछूक दिनमें उज्जैनि जांइ पहोंचे. तब तहां हरिदास कृष्ण भटटसों मिलि वह श्रीगुसांईजीकौ पत्र कृष्ण भटटकों दिये. सो कृष्ण भटट अति आनन्द पाइ वह पत्र माथें चढाइकै बांचे. तब कृष्ण भटट अति आनन्द पाए. तब हरिदासने कृष्ण भटटसों कही, जो मैनें श्रीगुसांईजीसों बिनती करी हती, जो महाराज ! मोकों आप श्रीभागवत सुनावो. तब श्रीगुसांईजीने मोसों यह आज्ञा करी, जो तू उज्जैनि जा. तोकों कृष्ण भटट भागवत सुनावेंगे. तातें हों तुम्हारे पास आयो हूं. तासों तुम मोकों श्रीभागवत सुनावो. तब कृष्ण भटटने हरिदास खवाससों कही, काल्हि दिन नीको है. तातें काल्हि आरम्भ करेंगे. सो दूसरे दिन कृष्ण भटटने 'भ्रमरगीत'कौ

आरम्भ कर्यो. ताकौ प्रसङ्ग चलायो. सो सुनत ही हरिदासकों मूरछा आई. सो मूरछा हरिदासकों प्रहर एक लों रही. पाछें औषध करत सावचेत भए. तब कृष्ण भटटने पोथी बांधी. तब हरिदासने कृष्ण भटटसों कही, जो भटजी ! आगें प्रसङ्ग चलावो. तब कृष्ण भटटने हरिदाससों कह्यो, जो हों श्रीगुसांईजीकों कहा प्रति उत्तर देहुंगो ? जो हों दूसरों प्रसङ्ग कहूंगो तो तुम्हारी अन्यथा गति होंइ जाईगी.

भाव प्रकाश :
काहेतें, अभी हरिदासकी कच्ची दसा है. सो इनकौ अवधारन होत नाहीं. तातें देह छूटी जांइ.

तब हरिदास कृष्ण भटटजीसों बिदा होंइ कछूक दिनमें श्रीगोकुल श्रीगुसांईजीकी पास आई दण्डवत् करि सब समाचार कहे. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी चुप करि रहे. पाछें फेरि हरिदास श्रीगुसांईजीकी खवासी करत हते, ताही भांति सों प्रभुनकी टहल करन लागे !

वार्ता प्रसङ्ग २ :
और एक समै एक वैष्णवने एक रुपैया श्रीगुसांईजी आगें भेंट धर्यो. सो गादीके आगें वह रुपैया धर्यो हतो. और श्रीगुसांईजी तो आप भीतर भोजनकों पधारे हते. सो श्रीगुसांईजी जब भोजन करिकै बैठकमें पधारे तब हरिदाससों पूछे, जो हरिदास ! इहां तें रुपैया कहां गयो ? तब हरिदासने श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो महाराज ! ताख में धर्यो है. तब श्रीगुसांईजी यह शिक्षा दिये, जो हरिदास ! यह द्रव्य पर्यो रहन दीजे, परि तू आज पाछें फेरि कबहू मति उठाइयो. सो यह शिक्षा हरिदासने मानि लीनी.

वार्ता प्रसङ्ग ३ : बहौरि एक समै श्रीगुसांईजी भोजनकों पधारे हते. सो एक चादर सुकाइवेकी आज्ञा हरिदाससों करिकै आपु तो भोजनकों पधारे. इतने ही हरिदास सिज्या बिछाइ रहे हते, (तहां) ता समै एक नागर ब्राह्मनी हरिदाससों बात करन लागी. सो हरिदास वाकी बातनमें चादर सुकावनो भूलि गए. सो दोउ जनें बातें करत हुते, इतनेइ श्रीगुसांईजी भोजन करिकै पधारे. सो दूरि तें इन दोउनकों बातें करत देखिकै आपु ठाढ़े होंई रहे. पाछें वह बाई तो बातें करिकै उठि गई. तब ही श्रीगुसांईजी बैठकमें पधारे. और हरिदाससों कहे, जो

हरिदास ! अज हू यह चादर सुकाई नाहीं ? तब हरिदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती करीं, जो राज ! वा बाईसों बातनमें सुधि भूलि गयो. तब श्रीगुसांईजी हरिदासकों यह शिक्षा दिये, जो हरिदास ! आज पाछें तू काहूकी स्त्रीसों फेरि बातें मति करियो. सो वे हरिदास वा दिनतें काहूकी स्त्रीसों बातें न करते.

सो इन हरिदास उपर श्रीगुसांईजी या प्रकार कृपा करते. सो हरिदास खवास श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१५।।

१६-मधुसूदनदास गौडिया ब्राह्मण

अब श्रीगुसांईजीके सेवक मधुसूदनदास गौडिया ब्राह्मन, वृन्दावनमें रहते, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं.

भावप्रकाश :
ये मधुसूदनदास तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'बन्दिनी' है. बन्दिनी इन्दुलेखा तें प्रगट हैं, तातें इनके भावरूप हैं.

ये मधुसूदनदास गौडदेसमें एक ब्राह्मनके जन्मे. सो वह ब्राह्मन 'रूप - सनातन'कौ सेवक हुतो. सो वह प्रति वर्ष अपने गुरुके दर्शनार्थ वृन्दावन जातो. तहां कछूक दिन रहि गुरुनकी टहल करतो. पाछें गुरुनकी आज्ञा पाइ अपने देस आवतो. या प्रकार करतो. ऐसें करत मधुसूदनदास बरस बीसके भए. तब वह मधुसूदनदासकों हू अपने साथ वृन्दावन लै चल्यो. सो वृन्दावनमें आई मधुसूदनदासकों हू रूप - सनातनकौ सेवक किये. पाछें मधुसूदनदास अपने पिताके साथ वृन्दावन रहे. सो वृन्दावनकी लता - पतानकी शोभा देखि मधुसूदनदासकौ मन वृन्दावनमें लगि गयो. ता पाछें कछूक दिनमें मधुसूदनादासकौ पिता देस चलन लाग्यो. तब मधुसूदनदास पितासों कह्यो, जो हों तो अब ब्रज - वृन्दावन छोरिकै तुम्हारी सङ्ग नाहीं आऊंगो. मेरो मन तो यहां लग्यो है. तातें हों तो अब ब्रजमें ही रहुंगो. तब पिताने इनकों बोहोत समुझाइ कह्यो, जो बेटा ! अभी तो तू बालक हैं. तेरो ब्याह हू भयो नाहीं. और मैं वृद्ध भयो

हूं. तातें तू अभी मेरे साथ देसकों चलि. मेरे मरे पाछें तेरी इच्छा आवे वहां रहियो. परि मधुसूदनदास न माने. तब पिता हरिकै अपने देसकों चल्यो. सो जाती बिरियां इन रूप - सनातनसों बिनती करी, जो ये बालक हैं. सो मैं तुम्हें सोंपी जात हूं. तब रूप - सनातन कही, जो कोई बातकी चिन्ता मति करो. तुम सुखेन जाऊ. इनको मैं अपनी पास राखुंगो. तब पिता मधुसूदनदासकों कछू खरच दै देसकों गयो. पाछें मधुसूदनदास तो निःशङ्क व्है ब्रजमें विचरन लागे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वे मधुसूदनदास एक समै श्रीगुसांईजी पास श्रीगोकुल आए. तब मदुसूदनदास और के सेवक हते. सो श्रीगोकुल आए तब श्रीगुसांईजीके दरसन करे. तब मधुसूदनदासके मनमें यह आई, जो इनके सेवक हूजिये तो आछी बात है. सो वाही समै मधुसूदनदास श्रीगुसांईजीसों बिनती करे, जो महाराज ! मो उपर कृपा करिकै आप मोकों अपनो सेवक करो. तब श्रीगुसांईजी इनकी आर्ति जानि तब ही इनकों स्नान कराइ नाम निवेदन कराइ आपु प्रभु भोजनकों पधारे. तब मधुसूदनदासकों श्रीगुसांईजी यह आज्ञा करे, जो मधुसूदनदास ! आज प्रसाद लेवेकों तुम इहांइ आईयो. तब वा दिन तो मधुसूदनदास प्रसाद उहांइ लिये. पाछें दूसरे दिन मधुसूदनदास पाक करत हते. सो ता समै श्रीगुसांईजी भोजनकों भीतर पधारत हते. सो मधुसूदनदासकों प्रभुन देख्यो. तब श्रीगुसांईजी ता ठौर पधारि मधुसूदनदासकों पूछे, जो मधुसूदनदास ! तुम पास कछू द्रव्य है ? तब मधुसूदनदासनें श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! खरच तो थोरोसो है, गांठि में. तब श्रीगुसांईजी यह आज्ञा मदुसूदनदाससों श्रीमुख तें करे, जो मधुसूदनदास ! आज तो तुम इहां प्रसाद लो. और सवारे अपने घर जइयो. तब मधुसूदनदासने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो महाराज ! जहां लों मेरी गांठिमें द्रव्य है, ताहां लों तो रसोई करि प्रसाद लेहुंगो. और जब द्रव्य निघटेगो तब कोरी भिक्षा करी निर्वाह करूंगो. परि आपुके चरनारविन्द नीचे पर्यो रहुंगो. तब श्रीगुसांईजी दोइ दिनतो प्रसाद मधुसूदनदासकों भीतर लिवाए. तीसरे दिन मधुसूदनदास आज्ञा मांगि रसोई करन लागे. सो जब खरच निघट्यो तब मधुसूदनदास कोरी भिक्षा करन लागे. सो जब दिन चारि भिक्षा करत भए तब एक दिन श्रीगुसांईजी मधुसूदनदासकों पूछे, जो मधुसूदनदास ! अब कैसें निर्वाह करत हो ? तब मधुसूदनदास अपने सर्व समाचार श्रीगुसांईजी आगें कहे, जो महाराज ! दिन दोइकौ खरच हतो. तब तो सवारेइ रसोई करि भोग धरि राजभोग भए पाछें प्रसाद लेतो. और अब तो भिक्षा मांगि रात्रिकों सिद्ध करि राखत हूं. सो सवारेइ रसोई करि

श्रीठाकुरजीकों भोग धरि वह प्रसाद ढांपिके दरसनकों आवत हूं. सो दरसन करिकै प्रसाद लै कै फेरि भिक्षा करन जात हूं. तब श्रीगुसांईजी मधुसूदनदासकों पूछे, जो भिक्षा कौन - कौनके घरकी लावत हो? तब मधुसूदनदास प्रभुनसों बिनती करे, जो वैष्णवनके घर तें, भटटजीनके घर तें और भीतरिया, ब्रजबासीनके घरन तें लावत हूं. और बनियानकी हाटनसों मांगिकै निर्वाह करत हूं. तब श्रीगुसांईजी मधुसूदनदाससों कहे, जो और सबनके घरसों भिक्षा लीजियो. परि भटटजीनके तथा भीतरियानके घरसों एक कनिका मति लीजियो.

भाव प्रकाश :
सो काहेतें ? जो वे श्रीगुसांईजीके घरकौ सङ्कल्प्यो द्रव्य लेत हैं. तातें उनके घरकी सत्ता लै तो वैष्णवकों सर्वथा बाधक होंइ. सो आगें विष्णुदास छीपाकी वार्तामें कहि आए हैं.

तब मधुसूदन श्रीगुसांईजीके बचन सुनिकै त्यों ही करन लागे. पाछें केतेक दिनकों श्रीगुसांईजीने उन मधुसूदनदासकों श्रीनाथजीके बीरानकी सेवा सोंपी. सो मधुसूदनदास भली भांतिसों श्रीनाथजीके पाननकी सेवा करन लागे. और उष्णकालके दिनमें गरमी जब बोहोत होंइ तब मदुसूदनदास चारि प्रहर रात्रिकों पंखा करते. ऐसें करत केतेक दिन भए. सो एक दिन श्रीगुसांईजी पानघरमें पधारे. तहां देखे तो मधुसूदनदासकी आंखि निन्द्रामें झूकी रही है. आलस्य बोहोत ही नेत्रनमें भरि रह्यो है. परि पंखा हाथसों चल्योइ जात हैं. तब श्रीगुसांईजी मधुसूदनदासकी या प्रकारकी सेवा देखिकै बोहोत प्रसन्न भए. परि श्रीगुसांईजी पधारे सो मधुसूदनदासने न जानी. वे मधुसूदनदास श्रीनाथजीके पाननकी सेवा देह रही तहां तांई या प्रकार करे.

भाव प्रकाश :
या वार्तामें यह जतायो, जो वैष्णवकों सेवामें ऐसो व्यसन चहिए. तब प्रभु प्रसन्न होंइ. और तबही जीव कृतार्थ होंइ. सो श्रीआचार्यजी 'भक्तिवर्द्धिनी' ग्रन्थमें कहत हैं. सो श्लोक

“यदा स्याद् व्यसनं कृष्णे कृतार्थः स्यात् तदैव हि”

सो मधुसूदनदासकों सेवाकौ या प्रकार व्यसन सिद्ध भयो हतो.

तातें श्रीगुसांईजी उन मधुसूदनदास उपर सदा कृपा करते. बोहोत प्रसन्न रहते. वे मधुसूदनदास श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१६।।

१७-रूपचन्दनन्दा क्षत्री

अब श्रीगुसांईजीके सेवक रूपचन्दनन्दा क्षत्री, सो वे आगरामें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
सो रूपचन्दनन्दा ‘राजस’ भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम ‘सोनजूही’ है. ये ‘इन्दुलेखा’ तें प्रगटी हैं, तातें इनके भावरूप हैं. सो सोनजूही श्रीचन्द्रावलीजीकी ‘अष्टोत्तरशत’ अन्तरङ्ग सखीनकी मुखिया हैं. श्रीचन्द्रावलीजीके हार्दकों जाननहारी हैं. और ‘सोनजूही’की एक सखी हैं. ताकौ नाम ‘सुगन्धिनी’ है. सो इहां हरिचन्दा भए. रूपचन्दनन्दाके भाई.

ये दोउ आगरामें एक क्षत्रीके जन्मे. सो वह क्षत्री बड़ो द्रव्यमान् हतो. सो वाके दो बेटा (हे). एक कौ नाम रूपचन्दनन्दा और दूसरेकौ नाम हरिचन्दा. ये दोउ भाई बालपने तें वैराग दसामें रहते. इनकौ चित्त लौकिकमें लगे नाहीं. ये बरस दस बारहके भए तब पिताने दोउनकौ ब्याह कियो. तोउ ये दोउ भाई वैराग दसामें ही रहैं. सों रूपचन्दनन्दाकौ पिता वासुदेवदास छकड़ाकौ जजमान हतो. तातें वासुदेवदास छकड़ा अपनी जजमानीकों प्रति वर्ष आगरा इनके घर आवते.

सो (जब) रूपचन्दनन्दा बरस तीसके भए तब इनकौ पिता मर्यो. ता पाछें एक समै वासुदेवदास आगरा आए. सो इनके इहां उतरे. तब रूपचन्दनन्दाने वासुदेवदासकों पूछ्यो, जो प्रोहितजी ! या देहसों श्रीठाकुरजीके चरनारविन्दकी प्राप्ति कैसें होंइ ? साक्षात् दरसन कैसें होंइ ? तब वासुदेवदासने इनकों दैवी जीव जानि कह्यो, जो श्रीगुसांईजी श्रीविटठलनाथजी साक्षात् पुरुषोत्तम हैं. तातें श्रीगुसांईजीकी सरनि जाऊं तो सब मनोरथ सिद्ध होंइ. तब रूपचन्दनन्दाने ये बात अपने भाई हरिचन्दासों कही. तब हरिचन्दाने कह्यो, जो चलो ! श्रीगुसांईजीके सेवक हूजिए. तब दोउ भाईनने वासुदेवदास छकड़ासों कह्यो, जो प्रोहितजी ! हमकों कृपा करिकै श्रीगुसांईजीके सेवक करावो. तब इन दोउ भाईनकौ आग्रह देखि वासुदेवदास छकड़ा कहें, जो तुम हमारे साथ अड़ेल चलो. श्रीगुसांईजी उहां बिराजत हैं. तब दोउ भाई वासुदेवदास छकड़ाके साथ अड़ेलकों चले. सो कछूक दिनमें अड़ेल आई पहोंचे. तहां श्रीगुसांईजीके दरसन पाए. सो साक्षात् कोटि कन्दर्प लावन्य रूपसों श्रीगुसांईजी आप दोउ भाईनकों दरसन दिये. तब दोउ भाई चक्रत से व्है रहे. पाछें वासुदेवदास छकड़ाने सर्व समाचार श्रीगुसांईजीसों कहे. जो महाराज ! ये दोउ भाई मेरे जजमान क्षत्री हैं. सो आगरामें रहत हैं. दैवी जीव हैं. तातें आपकी सरनि आए हैं. सो कृपा करिकै सरनि लेहू. तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न व्है, दोउनकों कहे, जो जाऊं, त्रिवेनीमें स्नान करि आऊ. सो दोउ भाई त्रिवेनीमें स्नान करे. पाछें श्रीगुसांईजीके पास आई दोउ हाथ जोरे ठाड़े व्है रहे. तब श्रीगुसांईजी कृपा करि दोउ भाईनकों श्रीनवनीतप्रियजीकें सन्निधान नाम निवेदन कराए. सो वाही समै दोऊ भाईनकों श्रीनवनीतप्रियजी अनुभव जताए. जो साक्षात् दरसन दिये. तब दोउ भाई गद्‌गद् व्है श्रीगुसांईजीके दण्डवत् करि बिनती करी, जो महाराज ! आजु हमारो जन्म सुफल भयो. जो राजके चरनारविन्द पाए. अब हमकों कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजी दोउ भाईनसों कहे, जो घरमें रहिकै भगवत्सेवा करो. तब रूपचन्दनन्दाने बिनती कीनी, जो राज ! हमकों तो सदा आपके चरनारविन्द मिले येही अभिलाषा है. तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न व्है कुमकुम मंगाई एक वस्त्र पर दोउ चरनमें कुमकुम लगाइ छापकै दोउ भाईनकों दिये. और आज्ञा किये, जो इनकी सेवा करियो. पाछें दोउ भाई श्रीगुसांईजीके पास कछूक दिन अड़ेलमें रहि सेवाको रीति सीखे. ता पाछें आज्ञा मांगि अपने देस आगराकों आए. ता पाछें कछूक दिनमें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारे. तब आगरामें रूपचन्दनन्दाके घर बिराजे. सो रूपचन्दनन्दाने भक्ति - भावसों श्रीगुसांईजीकों अपने घर पधराए. और स्त्रीजन आदि सबकों नाम निवेदन करवाए. पाछें श्रीगुसांईजी तहां तें श्रीगोकुल पधारे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वे रूपचन्दनन्दा एक समै श्रीगुसांईजीके दरसनकों श्रीगोकुल आए. तहां राघौदास गुजराती ब्राह्मन, सो वे श्रीसुबोधिनीजी श्रीगुसांईजी पास पढ़े हते. तिनकौ रूपचन्दनन्दासों मिलाप भयो. वे राघौदास श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजी पास सदैव रहते. सो एक दिन राघौदासके मनमें आई, जो चाचा हरिवंशजी तो कछू पढे नाहीं. और परदेसमें जांइकै भेंट बोहोत लावत हैं. और मोंते श्रीगुसांईजी कहे, तो हों तो पढ्यो हूं (तातें) भेंट बोहोत लाउं. यह राघौदासके मनकी बात श्रीगुसांईजी जानें. सो प्रभु तो अन्तरजामी हैं. तातें इनके मनकी बात जानि गए. ता समै श्रीगुसांईजी हाथ पांव धोइवेकों पधारे हे. तहां तैं बाहिर पधारे. तब इतनो बचन कहत पधारे -

पाषण्डप्रचुरे लोके कृष्ण एव गतिर्मम ।

तब ता समै प्रभुन आगें रूपचन्दनन्दा, राघौदास, और हू बोहोत वैष्णव पास ठाढ़े हते. सो यह बात रूपचन्दनन्दाने परमानन्द सोनीसों पूछी, जो यह श्लोक कहा कारन पर श्रीगुसांईजी पढ़त पधारे. तब परमानन्द सोनीने रूपचन्दनन्दासों कही, जो श्रीगुसांईजी पढ़त पधारे सो तो कछू काल बलावेश देखिकै ही पढ्यो होइगो. तब रूपचन्दनन्दाने अपने मनमें बिचारी, जो यह बात परमानन्द सोनी कहा जाने ? यह तो 'अक्षरचटटा' है. याकौ भेद कौन जानें ? सो ये रूपचन्दनन्दा और परमानन्द सोनी दोउ जनें बतरात हते, इतने ही इनके पास राघौदास आय ठाढ़े रहे. तब रूपचन्दनन्दा जानि गए. जो यह कछू कारन इनकौ ही दीसत है. पाछें श्रीगुसांईजी भोजन करिकै पोढ़त हते तब रूपचन्दनन्दाने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! यह बचन आप वा समै कौन ऊपर पढ़त पधारे हते ? तब श्रीगुसांईजी रूपचन्दनन्दासों कहे, जो रूपचन्दनन्दा ! तू कछू समझ्यो नाहीं ? तब रूपचन्दनन्दाने श्रीगुसांईजीसों यह बिनती करी, जो महाराज ! आपु प्रभु हो. आपकी यह अगाध बानीकों जीव कौन जानिवेकों समर्थ है ? तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न होंइ रूपचन्दनन्दासों कहे, जो राघौदासके मनमें अपनी योग्यता आई. परि इतनी तो राघौदासनें न जानी, जो कोई भेंट वैष्णव देत हैं सो हरिवंशजीकों तो जानिकै भेंट देत नाहीं. भेंट वैष्णव देत है सो भगवदीय हैं. वे अपने मनमें कछू और समुझिकै भेंट पठावत हैं. तब रूपचन्दनन्दाने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! मेरे मनमें तो वाही समै ऐसी आई हती. जो यह कछू कारन राघौदासकौ है. परन्तु यह भेद न जान्यो हतो. सो अब आप कृपा करिकै जनाए. उन रूपचन्दनन्दा ऊपर श्रीगुसांईजी या प्रकार कृपा करते.

भाव प्रकाश :
या वार्तामें यह जतायो, जो जैसें धनमद, राजमद, बाधक हैं, ऐसेंइ विद्याकौ मद हू बाधक हैं. तातें अहङ्कारतैं सदा डरपत रहनो. अहङ्कार धर्मकौ नाम करत है.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
और एक समै श्रीगुसांईजी आगरे पधारे. तब रूपचन्दनन्दाके घरसों रथ चलायो. प्रथम खवाससों खबरि, मंगाई, जो देखि तो रूपचन्दनन्दा घर है ? तब खवास घर जांइकै पूंछि आयो. सो वा समै रूपचन्दनन्दा घर न हते. तब खवासने नाहीं करी. तब श्रीगुसांईजी आगेंकों रथ चलाये.

भावप्रकाश :
काहेतें ? स्त्रीजन आदि घरके सब साधारन वैष्णव हे. तातें श्रीगुसांईजी वा समै रूपचन्दनन्दाके घर न पधारे.

सो भाना कपूरके घर प्रभु पधारे. तहां श्रीगुसांईजी वस्त्र खोलिकै, ऊपरेना माथेसों लपेटिकै, कान ऊपर जनेउ चढाइकै, हाथ पांव धोइवे चौकमें पधारे हते. इतने ही कहूं सहरमें रूपचन्दनन्दाने सुनी, जो श्रीगुसांईजी पधारे हैं. तब रूपचन्दनन्दा दोरेई आए. सो भाना कपूरके द्वार पर भीर देखिकै घरमें गए. तहां दूर ही तें प्रभुनके दरसन करिकै उहां तें त्योंही अपने घरकों रूपचन्दनन्दा चले.

भाव प्रकाश :
सो काहेतें ? जो ए राजसी भक्त हैं. तातें यह जान्यो, जो श्रीगुसांईजी अपुनो जानेंगे तो आपु ही घर पधारेंगे. तातें दुर ही तें दरसन करि रूपचन्दनन्दा चले. बिनती नाहीं किये.

सो श्रीगुसांईजी वही प्रकार उहां तें त्योंही रूपचन्दनन्दाकों देखिकै रूपचन्दनन्दाके पाछें पाछें रूपचन्दनन्दाके घर पधारे. तब रूपचन्दनन्दा अपने मनमें बोहोत प्रसन्न भए. पाछें श्रीगुसांईजी रूपचन्दनन्दाके घर ही हाथ पांव धोइ स्नान करि रसोई करि, भोग धरि, प्रसाद लै, विश्राम करिवेकों पधारे. तब श्रीगुसांईजी रूपचन्दनन्दासों पूछे, जो रूपचन्दनन्दा ! तू उहां आयो तब हमकों दण्डवत् करिकै त्योंही पाछौ फिरि आयो सो कहा ? और हम तो तेरे घर बिना बुलाए ही पधारे. सोउ तेरे पाछें - पाछें चले आए. तेरे घर आए. सो कारन तो तू हमसों कहि. तब रूपचन्दनन्दाने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! आप यह अपनो घर छौरिकै उहां क्यों पधारे हते ? तब श्रीगुसांईजी रूपचन्दनन्दासों कहे, जो हम तो तेरे खबरि मंगाइ लई हती. परि तू वा समै घर हतो नाहीं. तातें हम उहां पधारे. तब रूपचन्दनन्दाने प्रभुनसों यह बिनती करी, जो महाराज ! हों तो घर न हतो. परि घर तो इहां सों कहूं गयो न हतो. तब श्रीगुसांईजी रूपचन्दनन्दाके बचन सुनिकै चुप करि रहे.

पाछें भाना कपूरके घर सगरे वैष्णव विचार करन लागे, जो इतनी बार श्रीगुसांईजीकों क्यों भई ? तब काहूने कही, जो श्रीगुसांईजी तो भोजन करिकै रूपचन्दनन्दाके घर पोंढे हैं. तब सगरे सेवक सब सोंज रूपचन्दनन्दाके ही घर लै आए. पाछें थोरेसे दिन श्रीगुसांईजी रूपचन्दनन्दाके घर बिराजे. ता पाछें श्रीगुसांईजी फेरि श्रीगोकुलकों विजय करे. उन रूपचन्दनन्दा ऊपर श्रीगुसांईजी या प्रकार कृपा करते.

वार्ता प्रसङ्ग ३ :

बहौरि एक समै श्रीगुसांईजी रूपचन्दनन्दाके घर पधारे हते. सो एक दिन गादी तकिया ऊपर बिराजे हते. ता समै श्रीगुसांईजीके मनमें यह आई, जो अबलक घोड़ा अमुके रङ्गकौ ताके ऊपर मखमली साज अमूके रङ्गकौ होंइ तो ता घोड़ा ऊपर चढिकै श्रीनाथजीद्वार जाईए. ता समै रूपचन्दनन्दा नकासमें हते. सो रूपचन्दनन्दाने यह श्रीगुसांईजीके मनकी बात प्रभुनकी कृपातें उहांइ जानी. सो जैसो घोड़ा श्रीगुसांईजीने विचार्यो हतो तैसोइ घोड़ा, तैसोइ मखमली सब साज सिद्ध करिकै रूपचन्दनन्दा वा घोड़ाकी बागडोरि पकरिकै चाबुक लै आई ठाढ़े रहे. और श्रीगुसांईजीसों रूपचन्दनन्दाने बिनती करी, जो महाराज ! घोड़ा सिद्ध है. सो घोड़ा देखिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न

भए. पाछें वाही समै श्रीगुसांईजी वा घोड़ाके ऊपर चढिकै श्रीनाथजीके दरसनकों पधारे.

सो वे रूपचन्दनन्दा श्रीगुसांईजीके ऐसें अन्तरङ्ग सेवक कृपापात्र हते. जो श्रीगुसांईजीके मनकी या प्रकार जानते. वे रूपचन्दनन्दा श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. तातें उनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१७।।

१८-माधौदास कायस्थ

अब श्रीगुसांईजीके सेवक माधौदास कायस्थ, सहारनपुरके, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत है

भावप्रकाश :
ये माधौदास सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'सारसिनी' है. ये इन्दुलेखा तें प्रगटी हैं, तातें इनके भावरूप हैं.

ये माधौदास सहारनपुरमें एक द्रव्यमान् कायस्थ हतो, ताके घर प्रगटे. सो वा कायस्तके और कोऊ सन्तती नाहीं. तातें वह माधौदास पर बोहोत प्रीति करे. सो माता - पिता दोउ माधौदास पर सनेह राखे. ऐसें करत माधौदास बरस अठारहके भए. तब माधौदास कछू कार्यार्थ दिल्ली आए. ता समै श्रीगुसांईजी आप दिल्ली बिराजत हे. तहां 'निगमबोध' घाट पर श्रीगुसांईजी आप स्नान सन्ध्या करनकों पधारते. सो एक दिन माधौदास निगमबोध घाट पर श्रीयमुनाजी न्हान आए. सो इन श्रीगुसांईजीके दरसन पाए. सो माधौदास श्रीगुसांईजीके दरसन करि चक्रत से व्है रहे. ऐसो तेज प्रभुनकौ माधौदास देखे. पाछें माधौदासकी ओर श्रीगुसांईजी आप कृपा करि देखे. तब माधौदास श्रीगुसांईजीसों बिनती किये, जो महाराज ! कृपा करि मोकों सेवक कीजिए. तब श्रीगुसांईजी माधौदासकों पूछे, जो तुम कौन हो ? कहां रहत हो ? तब माधौदास श्रीगुसांईजीसों बिनती करि कहे, सो महाराज ! हों कायस्थ हूं. सहारनपुरमें रहत हों. आज आपकी बड़ी कृपा भई जो आपके दरसन पाए. तातें अब आप बेगि मोकों सेवक कीजिए. आपकी सरनि बिना मेरो जन्म अबलों वृथा गयो. अब बेगि कृपा कीजिए. तब श्रीगुसांईजी माधौदासकी आर्ति देखि माधौदासकों न्हवाइ नाम निवेदन कराए. पाछें माधौदास बिनती किये,

जो महाराज ! अब कहा कर्तव्य है ? तब श्रीगुसांईजी माधौदासकों मार्गकी प्रनालिका समुझाइ आज्ञा किये, जो तुम भगवत्सेवा करो. तब माधौदास कहे, जो महाराज ! घरमें मा - बाप सैवी हैं. तातें सेवा कैसें होंइ ? तब श्रीगुसांईजी माधौदासकों आज्ञा किये, जो तू अपने हाथसों रसोई करि मानसीमें भोग धरि प्रसाद लीजो. काहूके हाथकौ कछू लीजो मति. तोकों आपही तें मार्ग स्फुरेगो. ऐसो श्रीगुसांईजी आप माधौदासकों आशीर्वाद दिये. पाछें माधौदास श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मांगि अपने घर सहारनपुर आए.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वे माधौदास श्रीगुसांईजी पास नाम निवेदन पाए. और माधौदासके माता पिता सैव बहिर्मुख हते. तिन यह बात जानी. तब तिन माधौदासकों न्यारो करि दिये. सो द्रव्य कछू माधौदासकों नाहीं दियो. परि माधौदामस तो भगवदीय हते. सो कछू या बातकौ हरख विषाद माने नाहीं. परि वह पिता इनकौ ऐसो दुष्ट हतो, जो जब माधौदासकों देखतो, तब अपने मनमें बोहोत खेद पावतो. और या प्रकार गामके लोगनसों कहतो, जो यह माधौदास अब वैष्णव भयो है. तातें यह मेरे कामकौ नाहीं. ऐसें करत केतेक दिन भए. सो वह जब आप बरस पचहतरकौ भयो तब उन अपने मनमें विचार कियो, जो मैं प्रथम विषय दुराचार बोहोत कर्यो है. तासों अब बने तो तीर्थयात्रा करिए. यह विचार करि माधोदासकौ पिता अपनी स्त्रीकों साथ लै और रुपैया हजार चार घर तें लै कै तीर्थयात्राकों चल्यो. और सगरो द्रव्य ऐसी ठौर धर्यो, जो माधौदास न जाने. सो घरतें चलिकै दिल्लीके उरेकों जब चल्यो, तब मथुरिया (चोबे) कोस दसबीस पर साम्हे आइकै उनकों लै आए. तहां उन मथुरियान माधौदासके पितासों कह्यो, तो तुम तीर्थयात्राकों जात हो, तो गुरुमुखी होंइकै जाऊंगे तो तीर्थयात्राकौ तुमकों फल होइगो. तब उन अपने मनमें विचार्यो, जा मोकों ये द्रव्यके लालचसों द्रव्य लेवेके लिये कोस बीस ऊपर तें लिवाइ ल्याये हैं. सो मेरे गुरु होंइकै कहा मोकों कृतारथ करेंगे ? तातें मैं सरन जाऊंगो तो माधौदासके गुरुकी सरन जाऊंगो. यह भाव वाके मनमें निद्धार उपज्यो. सो काहुकौ कह्यो वानें न मान्यो. और वे दोउ स्त्री - पुरुष मथुरातें सूधे प्रयागकों चले. सो कछूक दिनमें प्रयाग जांइ पहोंचे. तहां ते अड़ेल आए. तब द्वारपालके हाथ श्रीगुसांईजीकों खबरि कराई, जो महाराज ! माधौदासकौ पिता आयो है. सो पोरियाने प्रभुनकों खबरि करी. तब श्रीगुसांईजीने वाकों भीतर बुलायो. तब वे दोउ जन स्त्री - पुरुष भीतर जांइ श्रीगुसांईजीके दरसन करिकै अति आनन्द पाए. तब उनकों श्रीगुसांईजी बैठिवेकी आज्ञा दिये. तब वे दण्डवत् करिकै बैठे. तब श्रीगुसांईजी

वासों माधौदासके समाचार पूछे. पाछें माधौदासके पिताने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! मै जब तें बारह बरसकौ भयो तब तें विषयके आचरन आज पर्यन्त हू कर्यो है. सो करत अब जब वृद्ध भयो हूं तब छूटे हैं. तातें राज ! अब आप मेरो अङ्गीकार करो. तब श्रीगुसांईजीने वासों यह आज्ञा करी, जो तुम दोउ जनें स्नान करि आवो. तब वे दोउ जनें स्त्रीपुरुष स्नान करि आई श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करे. तब श्रीगुसांईजी कृपा करि उनकों नाम निवेदन कराए. तब ही उनकौ मन सब ठौर तें फिर्यो. तब उन अपनी स्त्रीसों कही, जो अब हों आगें कहां जाऊं ? मेरे मनके दोस तो सब दूरि भए. सो नित्यप्रति अड़ेलही में बैठे रहे. और श्रीगुसांईजीके दरसन कर्यो करे. यों करत बोहोत दिन भए. तब एक दिन श्रीगुसांईजी यासों पूछे, जो तुम तीर्थयात्राकों नाहीं जात सो कहा ? तब उह श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! अब हमारे तीर्थयात्रासों कहा काम हैं ? हों तो राजके द्वार बैठ्यो रहूंगो. और आपके दरसन कर्यो करूंगो. मेरे तो ऐसो मनोरथ है. तब श्रीगुसांईजी उनसों कहे, जो यों न करनो. भगवदीयनकों लौकिक हू राख्यो चहिए. तब उनके पास चार हजारकी हुंडी हती सो भण्डारमें दिये. और करज मांगिकै, प्रोहितसों लै कै, गया जांइ श्राद्ध करिकै अड़ेलमें पाछें फिरि आइकै श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करे. सो अड़ेलमें आए पाछें माधौदासके पिताने माधौदासकों ये समाचार लिखिकै, और घरमें जहां द्रव्य धर्यो हतो सो सब ठिकानो लिखिकै, एक मनुष्य अपने देस पठायो. तामें यह लिख्यो, जो इतनी सब ठौर तें द्रव्य लै कै बेगि इहां तू एक बार आईयो. सो वह पत्र माधौदासके पास पहोंच्यो. ता पत्रकों बांचिकै माधौदास बोहोत प्रसन्न भए. पाछें माधौदास सगरो द्रव्य लै कै श्रीगुसांईजीके दरसनकों अपने देस तें अड़ेलकों चले. सो कछूक दिनमें तहां जांइकै श्रीगुसांईजीके दरसन करे. तब वे दोउ जन माधौदासके माता - पिता श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! हम आपके चरनारविन्दके दरसन पाए हैं सो या माधौदासके प्रतापसों पाए हैं. और माधौदासके पिताने कह्यो, जो महाराज ! इतने दिनतें हों माधौदासके ऊपर अप्रसन्नता राखतो. तातें अब हों माधौदासके पांवन परूं तो अब कछू बाधा तो नाहीं ? सो, जो कछू राज आज्ञा देहु सो हों करूं. तब श्रीगुसांईजी वासों कहे, जो तुमकों उचित तो यों ही है. परि माधौदास तुम्हारो बेटा है. तब वे अति प्रसन्नतासों माधौदासकों गरें लगाइकै मिले. और उनने माधौदासकों मुख चूम्यो. और माधौदाससों कहे, जो बेटा ! यह सब तेरी कृपातें हमकों श्रीगुसांईजीके चरनारविन्दकी प्राप्ति भई. नांतरु हमकों श्रीगुसांईजीके चरनारविन्दकी प्राप्तिकौ संसर्ग कहां तें होतो ? जो यह चरनारविन्दकों पावते ? तब माधौदास ये बचन पिताके सुनिकै तासों कहे, जो प्रभु सर्व समर्थ हैं. इनकों मन फेरत कछू हू विलम्ब न जाननो. परि अपने अङ्गीकृतकों प्रभु छोरे नाहीं. माधौदासके ये बचन सुनि माता

- पिता दोउ जन अति प्रसन्न भए. पाछें माधौदास घरसों जो द्रव्य ल्याये हते सो सर्व अपने पिताकों सोंप्यो. ता सगरे द्रव्यकों माधौदासके पिताने श्रीगुसांईजीके भण्डारमें दियो. पाछें वे द्वार ऊपर बैठे रहते. तब उनसों श्रीगुसांईजी यह आज्ञा करे, जो तुम दोउ जन स्त्री - पुरुष फूलनकी सेवा कर्यो करो. और महाप्रसाद भीतर लीजियो. और दरसन कर्यो करियो.

भाव प्रकाश :
काहेतें ? ये दोउ श्रीयमुनाजीके जूथके माली - मालिनि है. सो पुरुषकौ नाम तो 'गेंदुवा' है, और स्त्रीकौ नाम 'सुरजमुखी' है. सो यहां हू श्रीगुसांईजी आप उनकों फूलनकी सेवा सोंपे.

पाछें केतेक दिन माधौदास श्रीगुसांईजी पास रहिकै प्रभुनतें बिदा मांगिकै अपने देसकों आए. सो माधौदास जब पिता पासतें बिदा होंइकै अपने देसकों चलन लागे तब वाके पिताने अपने घरमें जो और द्रव्य हतो सो सब माधौदासकों बताइ दियो. पाछें माधौदास अपने घरकों चले सो कछूक दिनमें तहां जांइ पहोंचे. इनके माता - पिता दोउ जन श्रीगुसांईजीके पास रहे.

भाव प्रकाश :
तातें सङ्गकौ यह प्रभाव है. सो सङ्गति तो या जीवकों अवश्य करनी. उन माधौदासके प्रतापसों दोउ जनकौ कार्य भयो.

वे माधौदास श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१८।।

१९-बाप - बेटा कायस्थ

अब श्रीगुसांईजीके सेवक कायस्थ बाप - बेटा, हिंसारमें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये बाप बेटा दोउ तामस भक्त हैं. लीलामें बाप तो ‘व्रजाङ्गना’ है. और बेटा ‘व्रजवल्लभा’. सो ‘व्रजाङ्गना’ प्रेममञ्जरीतें प्रगटी हैं. तातें उनके भाव - रूप हैं. और ‘व्रजाङ्गना’ की एक सखी है, अन्तरङ्गिनी. सो व्रजवल्लभा है. सो इहां बेटा भयो.

ये दोउ बाप बेटा कायस्थ हिंसारमें रहते. सो चाकरीके लिये दिल्ली आए. तहां पृथ्वीपतिके इहां चाकर रहे. सो द्रव्य बोहोत कमायो. पाछें एक समै दोउ बाप बेटा ओड़ परगनामें कछू कार्यार्थ गए. तहां तें मथुरा वृन्दावन दरसनकों आए. सो वहांके दरसन करि पाछें दोउ बाप बेटा श्रीगोकुल आए. सो ठकुरानी घाट पर टाढ़े रहे. तहां श्रीगुसांईजी आप सन्ध्यावन्दन करत हे. सो इन श्रीगुसांईजीके दरसन किये. ता समै श्रीगुसांईजी इन बाप बेटानकों देखि कछूक मुसिकाए. तब दोउ आपसमें विचार कियो, जो ये हमें देखि मुसिकाए तामें कछू कारन दीसे है. पाछें बापने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! आप हमें देखि हंसे ताकै कारन कहा है ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो हम तो योंही अपने सेवकनसों बातें करत हंसे हैं. तब फेरि वा कायस्थने बिनती करी, जो महाराज ! यह बात तो अवश्य कहि चहिए. हम तो अज्ञानी जीव हैं, तातें कछू समुझत नाहीं. तब श्रीगुसांईजी वाकी दीनता देखि, आज्ञा करें, जो तुम अपनो स्वरूप भूलि (कै) इत उत भटकत हो. तातें हम तुम्हें देखि हंसे. काहेतें ? (हम जाने) जो ये अपनो जन्म योंही खोवत हैं. तब तो वा कायस्थने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! अब तो आप कृपा करिकै हमारे स्वरूपकौ ज्ञान कराइए. हमकों अपनी सरनि लीजिये. आप सांचि कहत हैं, जो हम अपनो जन्म यों ही खोवत हैं. तब श्रीगुसांईजी उनकी आतुरता जानि इन दोउनकों आज्ञा किये, जो तुम श्रीयमुनाजीमें स्नान करि बेगि मन्दिर में आऊ. हम तुम दोउनकों उहां सरनि लइंगे. तब वे दोउ बाप बेटा बेगि श्रीयमुनाजीमें स्नान करि मन्दिरमें आए. तहां श्रीगुसांईजी इन दोउनकों श्रीनवनीतप्रियजीके सन्निधान नाम निवेदन कराए. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप अनोसर कराइ बैठकमें पधारे. तहां ये दोउ बाप बेटा आई श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् किये. और बिनती करी, जो महाराज ! हम अज्ञानी जीव हैं. तातें कृपा करि हमें अपने स्वरूपकों ज्ञान कराइए. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो पहिले तुम यहां प्रसाद लेउ, ता पाछें तुमकों सब समझावेंगे. तब दोउ बाप बेटा प्रसन्न व्है उहां बैठे. पाछें श्रीगुसांईजी भोजनकों पधारे. इतने में चाचाजी तहां आए. ता पाछे श्रीगुसांईजी भोजन करि, आचमन करि बीरी लै गादी तकियान पर बिराजे. तब चाचाजीने श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करी. पाछें श्रीगुसांईजी चाचाजीसों आज्ञा किये, जो चाचाजी ! ये दोऊ बाप बेटाकों कछुक दिन तुम्हारे पास राखि मार्ग कौ सिद्धान्त समझावो. सो इनकों अपने स्वरूपकौ, श्रीठाकुरजीकें

स्वरूपकौ, मार्गकी प्रनाली आदिकौ ज्ञान होंई. पाछें श्रीगुसांईजी दोऊ बाप बेटानकों आज्ञा दिये, जो तुम जांइ महाप्रसाद लेऊ. सो दोऊ महाप्रसाद लियो. पाछें श्रीगुसांईजीकों आई दण्डवत करी. पाछें प्रभु तो आप पोढिवेकों पधारे. तब चाचाजी वे बाप बेटानकों लै अपने घर आए. तहां चाचाजीने उनकों निवेदनकौ स्मरन करायो. तब सगरो मार्ग आप ही स्फुर्यो. ताही समैं श्रीठाकुरजीकौ, श्रीगुसांईजीकौ और अपने स्वरूपकौ ज्ञान इन दोउनकों भयो. सो चाचाजीके छिनक सङ्ग करि दोउन पर श्रीगुसांईजी आप ऐसी कृपा करी. पाछें दोउ बाप बेटा निवेदनके स्मरनमें छके रहते. इन दोउनकी यह दसा देखि श्रीगुसांईजी इन दोउनकों आज्ञा करे, जो अब तुम अपने घर जाऊं. अब तुमकों संसार व्यापेगो नाहीं. तब ये दोउ बाप बेटा श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मांगि अपने देस आए.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
वे दोउ देसाधिपतिके चाकर हते. सो उनकों परगनो कमाइवेकों देसाधिपतिने पठाए. पाछें कछूक दिन उनकों परगनो कमावत भए, तब काहूनें चुगली करी. तब देसाधिपतिनें उनसों परगना तागीर करि उनकों अपने पास बुलाए. सो उनके माथे देसाधिपतिनें, राजा टोडरमलनें रुपैया हजार बीसकौ दण्ड किये. पाछें उन दोउनकों राजा टोडरमलने बन्दीखाने दिये. सो केतेक दिन भए तब इन दोउन अपने मनमें विचार करिकै अपने प्रोहितकों अपने देसमें अपने घर पठायो. और इनन प्रोहितसों यह कह्यो, जो गहनों तथा घर बेंचिकै, कछू द्रव्य उधार करिकै, हुंडी कराइ लाओ. जो इहां तें छूटिए. सो वह ब्राह्मन उनके देस जांइ, गहनों - पातो बेंचिकै, कछू करज करिकै रुपैया हजार चौदहकी हुंडी कराइकै, फेरि इनके पास आगरेमें आयो. सो वह हुंडी उनकों सोंपी. और सगरे घरके समाचार कहे. पाछें वा ब्राह्मनकों तो वाके घर पठायो. और पिताने अपने बेटासों कह्यो, जो यह द्रव्य सवारें राजाकों देइकै छूटेंगे. वाकी छह हजारकौ वायदो करिकै छूटेंगे. तब वा बेटाने पितासों कही, जो एक बिनती तुम मेरी सुनो. पाछें तो तुम्हारे मनमें आवे सो करियो. जो आपुन यह द्रव्य देइंगे, सो राजा यह द्रव्य हू लेइगो और आपुन सों कहेगो, जो और हू छह हजार भरोगे तब छूटन पाओगे. अपनो कर्यो वायदो राजा मानेगो नाहीं. तातें यह द्रव्य हू अपने हाथसों जाईगो. और आपुनकों वह छोरेगो हू नाहीं. और यह तो जब अपनो भोग पूरन होइगो तब यह आपुनकों योंही छोरि देइगो. और यह घरकौ जो द्रव्य है, सो तो श्रीठाकुरजीकौ है. सो रिनकौ द्रव्य है. सो अपने माथे ब्रह्मरिन होइगो. तासों मेरी बुद्धि जो मानो तो यह हुंडी श्रीगुसांईजीकों याही प्रोहितके हाथ श्रीगोकुलमें पठाइ देहु. और आपुन जब निवेदन करे

हते, तब यह पढ़े, जो गृहान्, दारान्, सुतान्, ये सर्व समर्पन किये हैं. तातें यह द्रव्य दिये आपुन छूटनहार नाहीं. पाछें और हू राजाकों भरम परेगो. जो इनन इतनो द्रव्य दियो है तो और हू द्रव्य इन पास होइगो. तातें आपुनकौ राजा छोरेगो नाहीं. यह बात पितासों बेटाने समुझाईकै कही. तब बेटाके ये बचन सुनिकै यह पिता बोहोत प्रसन्न भयो. और पिताने कह्यो, जो बेटा ! स्याबास तेरी धीरजताकों. जो या समै तेरी यह बुद्धि रही है. तातें अब यह सगरो द्रव्य तो सवारे श्रीगोकुल श्रीगुसांईजीकों पठावनो. और आपुनके जब भोग पूरन होंइगे, तब छूटेहींगे. नांतरु इहांइ मरेंगे. तो परलोकमें तो कछू बाधा नाहीं. यासों तू धन्य है. जो तू मेरो याहू समै में धर्म राख्यो. अब योंही करनो. पाछें सवेरो भयो तब वा प्रोहित ही कों बुलायो. तब वासों इन कही, जो हमकों तो श्रीगुसांईजीकौ बोहोत द्रव्य देनो है. परि भलो, अब तो हम पास और द्रव्य तो है नाहीं. तासों तुम अब यह द्रव्य श्रीगुसांईजी पास श्रीगोकुल पहोंचतो करिकै प्रभुन आगें हमारी दण्डवत् कहोगे. और इहां तो इतनो द्रव्य दिये हू हमारो छूटकारो होत नाहीं. तातें तुम यह हुंडी चांपाभाई भण्डारीकों सोंपि आओ. और एक बिनती पत्र इनन प्रभुनकों लिख्यो. सो वह प्रोहित आप नामधारी हतो. तासों वह इनकौ कह्यो मानिकै श्रीगोकुलकों उठि चल्यो. सो श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजी पास वह प्रोहित आई पहोंच्यो. पाछें वह प्रोहित चांपाभाई भण्डारीसों इनके सर्व समाचार कहिकै वह बिनती पत्र और हुंडी सोंपी. पाछें चांपाभाई, प्रोहितके ये समाचार सुनिकै सब श्रीगुसांईजीसों कहे. जो महाराज ! अपने भण्डारकौ ता द्रव्य वा पास कछू बाकी नाहीं. परि वे दोउ कायस्थ आपके सेवक हैं. सो उनन अपने प्रोहितके हाथ यह हुंडी दिवाइ पठाई है. और आप वे बन्दीखानेमें परै हैं. तब तो श्रीगुसांईजीने चांपाभाईसों कही, जो अब तो यह द्रव्य भण्डारमें राखो. पाछें श्रीगुसांईजी चाचा हरिवंशजीकों बुलवाईकै एक पत्र प्रभुन बीरबलकों लिख्यो. तामें यह लिखे, जो ये दोउ कायस्थ हमारे सेवक हैं. सो वे दोउ राजा टोडरमलके इहां बन्दीखानेमें हैं. तिनकों तुम छुड़ाई दीजो. इनके माथे बीज हजार रुपिया दण्ड भयो है. सो द्रव्य हम रिन काढ़िकै तुमकों पठाइ देहिंगे. पत्रमें प्रभुन यह लिख्यो. सो चाचा हरिवंशजीकों समुझाइकै कह्यो. पाछें चाचाजीके साथ एक ब्रजवासी दै कै श्रीगुसांईजी चाचा हरिवंशजीकों बिदा किये. सो चाचाजी प्रभुन पास तें बिदा होइकै आगरे आए. पाछें चाचाजी वा ब्रजबासी साथ उन बाप बेटा कायस्थनकों बन्दीखानेमें कहि पठाए, जो अब तुम चिन्ता मति करियो. तुमकों छुडाइवेकों चाचा हरिवंशजीकों श्रीगुसांईजीने आप पत्र लिखि, दै कै पठाए हैं. तब वा ब्रजवासीने उहां बन्दीखानेमें जाइकै उनतें ये समाचार कहे. तब वे वैष्णव वा ब्रजवासी सों पूछे, जो वह श्रीगुसांईजीके हस्ताक्षरनकौ पत्र कहां है ? तब वा ब्रजवासीने उन वैष्णवनसों कह्यो, जो वह पत्र तो मेरी पागमें है. तब उन वैष्णवन वा

ब्रजवासीसों कह्यो, जो तुम हमकों वा पत्रकौ दरसन करावो. तब वा ब्रजवासीने वह पत्र पागमें तें खोलिकै उनके हाथमें दियो. तब वे वैष्णव वा ब्रजवासीसों रुपैया एक दै कै कह्यो, जो याकौ सौदा तुम बजारतें लै आवो. तब वह ब्रजवासी तो बजारमें सौदा लैन गयो. पाछें इन वैष्णवन अपने मनमें विचार कर्यो. जो या पत्रमें श्रीगुसांईजी यह लिखे बीरबलकों, जो ये दोउ कायस्थ हमारे हैं. तासों बीरबल कौन है ? ताकों यह पत्र दीजिये ? सो उनन वा पत्रकौ माथे चढाइके समाचार बांचिकै उहांई दुबकायो.

भाव प्रकाश :
काहेतें ? जो श्रीगुसांईजी बीरबलकों पत्रमें लिख्यो, जो हम रिन काढिकै तुमकों बीस हजार रुपैया चुकाइ देइंगे. सो यामें प्रभुनकों श्रम होंई. तातें हमारो धर्म रहे नाहीं. यों जानि इन बाप बेटानने श्रीगुसांईजीकौ पत्र दुबकाय दियो.

पाछें वह ब्रजवासी बजार तें सब सौदा लै, वा ठौर उन पास आई, वह सौदा उनकों दै कै उन पास ब्रजवासीने वह पत्र मांग्यो. तब उनन ब्रजवासीसों कह्यो, जो वह पत्र तो हम पास तें खोइ गयो. पाछें वा ब्रजवासीने उनके सब समाचार आइकै हरिवंशजीसों कहे. पाछें अपने सर्व समाचार हरिवंशजीसों कहे, जो वह पत्र मो पै सों उनन देखिवेकों लीनो हतो. और मोकों एक रुपैया दै कै सौदा बजारसों मो पास मंगायो. पाछे मैं बजारसों आइकै उन पास वह पत्र मांग्यो. तब उनन कही, जो वह पत्र तो हमारे पाससों खोइ गयो. तब हरिवंशजी वा ब्रजवासी तें कहे, जो पत्रकौ काम तो हतो, परन्तु यह तो निकट ही कौ काम है. और बीरबल हू अपनो कह्यो मानेगो. तासों इहां तो हों काम चलाइ लेहुंगो. और परदेसमें जो कहूं ऐसें पत्र जात रहे तो कहा विवस्था होंइ ? तब वह ब्रजवासी सुनिकै चुप करि रह्यो. पाछें दूसरे दिन हरिवंशजी बीरबलसों मिले तब बीरबल हरिवंशजीकौ बोहोत समाधान करि, बोहोत भक्तिभावसों श्रद्धापूर्वक भेंटिकै, अपने घर पधराइ, प्रभुनके कुसल समाचार पूछि, हरिवंशजीकों अपने पास बैठारिकै बीरबलने बिनती करी, जो हरिवंशजी ! मोसों श्रीगुसांईजीने आज्ञा कीनी होंइ सो आप कृपा करिकै कहो. तब हरिवंशजीने जो कछू पत्रमें श्रीगुसांईजीने लिख्यो हतो सो समाचार बीरबलसों कहे. तब बीरबलने हरिवंशजीसों कह्यो, जो आजु तो हों प्रसाद लियो हूं. परि काल्हि तो प्रसाद तब लेउंगो जब उन दोउनकों छुड़ाइकै लाउंगो. पाछें बीरबल दरबारसों सांझके समै अपने घर आयो. पाछें घरतें सवारे बीस थेली रुपैयानकी हाथीकी अम्बारी ऊपर धरि,

आपु वाही हाथीपै बैठिकै राजा टोडरमलके घर आए. तब राजा टोडरमलसों बीरबलने कही, जो वे हिंसारके कायस्थ बाप बेटा दोउ जनें तुम्हारे बन्दीखानेमें हैं. तिनके माथे तुम बीस हजार रुपैया दण्ड कर्यो है. सो वे श्रीगुसांईजीके सेवक हैं. तासों श्रीगुसांईजीने बीस हजार रुपैया रिन काढिकै द्रव्य मेरे पास पठायो है. सो वह द्रव्य आप लीजिये. और उन कायस्थनकों छोरिए. वे श्रीगुसांईजीके सेवक हैं. तब राजा टोडरमलने बीरबलसों कही, जो वे कायस्थ श्रीगुसांईजीके सेवक हैं. और प्रभुन यह द्रव्य रिन काढिकै पठायो है. और तुम द्रव्य लै कै मेरे घर आए हो. तो हों द्रव्यकौ कहा करूं ? योंही उन कायस्थनकों पात्साहसों कहिकै छुड़ाइ देउंगो. पाछें वाही समै पात्साह पास राजा टोडरमल जांइकै कह्यो, जो हजरत ! फलानो परगनो उजार पर्यो है. सो वह फलाने कायस्थ बिना समरेगो नाहीं. और वे कायस्थ तो मेरे इहां बन्दीखाने हैं. तिनके माथे बीस हजार रुपैया दण्ड कर्यो है. सो उन पास अब तो पैसा नाहीं है. वे कहत हैं, जो हमकों परगने पर पठावो तो तुमकों द्रव्य कमाईके देइ. तासों आपकौ हुमक होंइ तो उनकों छोरि परगनेकौ सिरोपाव दै कै बिदा करिए. तब वह पात्साहने राजा टोडरमलसों कही, जो आछी बात है. उन कायस्थनकों छोरिकै मेरे पास लाओ. तब वाही समै उनकों बन्दीखानेसों छुराइ पात्साहके सन्मुख ठाढ़े किये. तब पात्साहने उनकों सिरोपाव दै बीज हजार रुपैया दण्डके हे, सोउ माफ करिकै यह हुकम कर्यो, जो वह परगनो तुम आछी भांति बसाइयो. सो उनकों सिरोपाव पहराइ, राजा टोडरमल अपने घर लाइ, बीरबलसों सब समाचार कहिकै उन दोउ कायस्थनकों सोंपि दिये. तब बीरबल उन दोउनकों सङ्ग लै, अपने घर आई, हरिवंशजीकों सोंपि दिये. तब हरिवंशजी बीरबल उपर बोहोत प्रसन्न भए. पाछें वे दोउ हरिवंशजीकों दण्डवत् करि, मिलि, भेंटिकै बोहोत बिनती करे. जो प्रभुनकी कृपासों यह सर्व कार्य भयो है. जो प्रभुनकी कृपा हम उपर भई तो हम छूटे. और सगरो दण्ड माफ होइकै दूसरे परगनाकौ सिरोपाव पायो. यों कहि वे दोउ अति आनन्द पाइ हरिवंशजीसों बोहोत बिनती करे. पाछें हरिवंशजी सवारे बीरबलसों बिदा होइकै श्रीगोकुलकों चलन लागे. तब वे बीस थेली बीरबलने श्रीगुसांईजीकी भेंट पठाइ. सो लै कै हरिवंशजी आगरे तें श्रीगोकुल श्रीगुसांईजी पास आई, वे बीस हजार रुपैया बीरबलकी ओर तें श्रीगुसांईजीकी भेंट धरिकै ये सब समाचार हरिवंशजी श्रीगुसांईजी आगें कहे. तब श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए. पाछें वे कायस्थ राजकौ प्रबन्ध बांधिकै परगनेकों कमावन चले. तब फेरि पितासों बेटाने कही, जो यह सर्व पदार्थ आपुनकों प्राप्त भयो है, सो श्रीगुसांईजीकी कृपातें भयो है. जो श्रीगुसांईजी आपुनकों अपने सेवक जाने, तब आपुन इहां सों आछी भांति छूटे हैं. तासों एक बार तो अब इहां सों आछी भांति छूटे हैं. तासों एक बार तो अब इहां सों श्रीगोकुल चलिकै, श्रीगुसांईजीके दरसन करिकै, ता पाछें परगनो कमावन चलेंगे.

सो वे बाप बेटा दोउ बीरबलसों बिदा होइकै श्रीगोकुल श्रीगुसांईजीके दरसनकों आए. तहां श्रीगुसांईजीके दरसन अति आनन्दसों करि दण्डवत् करि ठाढ़े रहे. तब श्रीगुसांईजी उनकों आज्ञा दिये, जो बैठो. तब वे दण्डवत् करिकै अति आनन्दसों बैठे. पाछें श्रीगुसांईजी उनसों पूछे, जो तुम आछें हो ? तब इनन अति उत्कण्ठित होंइकै प्रभुनसों कह्यो, जो राजने अपने सेवक करि जाने, तो तब हम आछें क्यों न होइंगे ? आपुकी कृपासों वा ठौर तें छूटे. और दूसरो परगनो पात्साहके हजूरसों पाए. या प्रकार बोहोत ही बिनती उनन प्रभुन आगें करी. तब ता उपर श्रीगुसांईजी बोहोत ही प्रसन्न भए. पाछें पिता श्रीगुसांईजीसों बिनती कर्यो, जो महाराज मोकों यह कृपा आपुकी कृपासों भई है. जो या पुत्रकी ही बुद्धि प्रमान भई है. नांतरु मेरे कहीं ठौर न हती. यह बड़ो धैर्यवान् है. ऐसें पिताने पुत्रकी बड़ाई प्रभुन आगें करी. सो सब प्रथमके समाचार सुनिकै श्रीगुसांईजी उनकौ ऐसो शुद्ध भाव जानिकै प्रभु उन उपर बोहोत प्रसन्न भए. पाछें बाप बेटा दोइ दिन श्रीगुसांईजी पास रहि, आज्ञा मागिकै, परगनो कमावनकों चले. सो परगने पर जांइ पहोंचे. पाछें वह परगनो बसायो. तहां तें बोहोत द्रव्य लै कै पात्साहकों टोडरमल राजाकी मारफत पहोंचायो. और कितनो द्रव्य श्रीगुसांईजीकी भेंट पठायो और अपने माथे रिन हतो सो दीनो. प्रोहितकों बोहोत प्रसन्न कर्यो. पाछें प्रतिवर्ष पात्साहकों बोहोत बोहोत द्रव्य पठावन लागे. सो टोडरमल पात्साहसों कहे. तब वह पात्साह उन पर बोहोत प्रसन्न भयो. और वे कितनो द्रव्य प्रतिवर्ष श्रीगुसांईजीकों पठावते वे ऐसें भगवदीय हते. उनकौ मन देखिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न होते. वे बाप बेटा कायस्थ दोउ जन श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. तातें उनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां ताई कहिए ? वार्ता ।।१९।।

२०-दोइ भाई पटेल

अब श्रीगुसांईजीके सेवक दोई भाई पटेल, गुजरातमें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत है

भावप्रकाश :

ये दोउ भाई सात्विक भक्त हैं. लीलामें बड़े भाईकौ नाम तो 'तरङ्गिनी' है. और छोटे भाईकौ नाम 'मुग्धा' है. सो 'तरङ्गिनी' श्रीयमुनाजीके जूथकी हैं. और

‘मुग्धा’ राधा सहचरीकी सखी प्रेममञ्जरी है, ताकी ये सखी हैं. ये दोउ प्रेममञ्जरी तें प्रगटी हैं, तातें इनके भावरूप हैं.

सो ये दोउ भाई गुजरातमें एक कुनबी पटेलके घर जन्में. सो इनके माता - पिता इन दोउनकों बालक छोरिकै मरे. तब ये दोउ अपने काकाके घर रहे. सो काका वैष्णव हतो. तातें श्रीगुसांईजी जब खम्भाईच पधारे, तब इन हू कों श्रीगुसांईजीके सेवक कराए. पाछें ये दोउ बरस बीस, बाइसके भए. तब इनकौ काका मर्यो. तब ये दोई भाई ब्रजकी यात्राकों निकसे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो एक समै एक साथ गुजरातकौ श्रीनाथजीके दरसनकों गुजरातसों चल्यो. ता सङ्गमें ये दोउ भाई पटेल हू श्रीनाथजीके दरसनकों चले. सो केतेक दिनमें वह साथ श्रीनाथजीद्वार आई पहोंच्यो. सो सगरेन (ने) श्रीगुसांईजीके दरसन करे. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीकों अनोसर करवाइकै पर्वततें नीचे आइकै अपनी बैठकमें बिराजे. तब साथके सगरे वैष्णव श्रीगुसांईजीके दरसनकों आवत हते. तिनमें सगरेनके पहिले ये दोउ भाई पटेल आई श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि कहे, जो महाराज ! हमारो मन कछूक दिन ब्रजमें रहिवेकौ है. तासों हमकों आप श्रीनाथजीकी सेवा बतावो सो करेंगे. और आप जो महाप्रसाद धरोगे सो हम लेइंगे. और आप जो प्रसादी वस्त्र देउगे सो पहिरेंगे. सो उन दोउ भाईनमें छोटो भाई सूधो हतो. और बड़ो भाई बांको. सो छोटे भाईमें कछू ज्ञान न हतो. ताकों तो श्रीगुसांईजीने श्रीनाथजीकी गांइनके खिरक झारिवेकी सेवा सोंपी. गांइनकौ घास नीरिवेकी टहल बताई. और एक भाई चोकस हतो. ताकों श्रीनाथजीके जलघरामें स्नान कराइवेकी सेवा सोंपी. सो वे दोउ अति आनन्दसों प्रभुनकी आज्ञा पाइ श्रीगुसांईजीकी सेवा करन लागे. तब जो भाई जलघरामें न्हायो हतो, सो तो अपनी टहलसों पहोंचि कै प्रसाद लै पांचमें सातमें दिन भाई पास जातो. और जाकों गांइनकी सेवा सोंपी हती, सो तो अति प्रेमसों श्रीनाथजीकी गांइनकी टहल इतनी करतो, जो दोउ बार तो गांइनकौ खिरक या प्रकार झारतो, जो फेरि कहूं वा ठौर कांकर न रहे. वह अपने मनमें यह बिचारतो, जो इहां श्रीनाथजी पधारत हैं. सो प्रभुनके चरनारविन्द अति कोमल हैं. तासों कांकर रहेंगे तो मोकों अपराध परेगो. या प्रकार वह पटेल गांइनकौ खिरक झारतो. और घास तथा न्यार गांइनके आगें बीनिकै नीरतो. वामें कछू कांकर न्यारमें न रहे. और घासमें कोई जनावर न रहन पावे. चौमासेमें खिरक आछी भांति सूंततो. तासों ठौर कोरी रहती. सो गांइ अति

सुख पांवती. यह या प्रकार दिन - दिन रुची बढाइकै गांइनकी टहल करतो. सो वाकी पातरि करि भीतरिया धरि राखते. तब अवारो सो ये सेवासों पहोंचतो तब जांइ श्रीगुसांईजीके दरसन करिकै पाछें प्रसाद लेतो. कबहूं कबहूं प्रसाद लैन सांझकों जातो. यों करत केतेक दिन भए तब श्रीगुसांईजीसों भीतरियाने जांइकै कहि, जो महाराज ! याकी पातरि अज हूं परी है. यह तो समैसिर आवत नाहीं. तासों आप यासों कछू कहो. जो यह समै पर आई करि अपनी पातर तो लै जांइ. तब वह पटेल दूसरे दिन श्रीगुसांईजीके दरसनकों आयो. तब श्रीगुसांईजी वासों कहे, जो पटेल ! तुम पातरि अपनी बेगि ही लै जायो करो. तब वह श्रीगुसांईजीसों दण्डवत् करि कह्यो, जो भलें महाराज. यह कहि फेरि खिरकमें जांइ सेवा करन लाग्यो. सो पातरिकी सुधि भूलि गयो. या प्रकार मन लगाइ गांइनकी सेवा करन लाग्यो. सो वाकौ मुग्ध भाव जानिकै श्रीनाथजी वा उपर बोहोत प्रसन्न भए. वाकौ सेवाके आवेशमें खाइवेकी सुधि हू न रहती. तासों श्रीनाथजी वाकों कब हूं दरसन देते. और वाकों प्रभु प्रसाद लैवेकों पठावते. तउ वह सेवासों पहोंचतो तबही जातो. ऐसो वाकौ मन श्रीनाथजीकी गांइनकी सेवामें अनुरक्त हतो.

तब एक दिन वाकों श्रीनाथजी एक सिज्या - भोगकौ लडुवा उहांई दियो. सो वह खांइकै सेवा करन लाग्यो. पाछें वा दिन वह पातरि लैन न गयो. तब भीतरियाने फेरि श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! वह आज पातरि लैन अज हू आयो नाहीं. तब श्रीगुसांईजी वाकों रात्रिकों बुलाइकै पूछे, जो पटेल ! तुम आजु अब लों पातरि लैन क्यों न आए ? तब वा पटेलने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! ''मन्हें श्रीनाथजी एक लडुवा आप्यो हतो तेमांथी थोडो खाधो छे, ने थोडो म्हारे पासे बांध्यो छे. तेथी भूख नथी. तो पातल लेइने शूं करूं ?'' तब श्रीगुसांईजी वाके बचन सुनिकै श्रीनाथजीकी कृपा जानि वा उपर बोहोत प्रसन्न भए. पाछें यह बचन श्रीगुसांईजी वासों कहे, जो पटेल ! वह लडुवा तेरे पास है ? तब वा पटेलने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो ''महाराज ! आधो लडुवा मारे पासे छे. सो वाने लडुवाकी गांठि खोलिकै वह आधो लडुवा श्रीगुसांईजीके आगें धर्यो. तब श्रीगुसांईजीने रामदासजी भीतरियाकों वह लडुवा दिखायो. सो रामदासजी वह सिज्या - भोगकौ लडुवा देखिकै अति विस्मित होंइ रहे. ता दिनातें रामदासजी वाकी पातरि आछी भांति अपने हाथन करि ढांपि राखन लागे. सो शयन आर्ति लों जो वह पातरि लैन न जातो, तो वाके भाई हाथ पातरि वहांई पहोंचती करते. या प्रकार वाकौ मन गांइनकी सेवामें अनुरक्त हतो.

भाव प्रकाश :
या वार्तामें यह जतायो, जो कोऊ गायनकी सेवा आछी भांति करें तो श्रीनाथजी आपही तें वा पर प्रसन्न होंइ.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
और वह पटेल सूधो हतो, श्रीगुसांईजीकौ नाम हू न जानतो. सो एक दिन वह अपने मनमें सोच करत श्रीगुसांईजीके पास बैठ्यो हतो. जो ''हूं तो ऐमनूं नाम जानतो नथी तो शूं करिने कहूं, ने दण्डवत् करूं ?'' यह सोच करत हतो. इतने ही श्रीबालकृष्णजी तहां पधारि दण्डवत् करिकै श्रीगुसांईजीसों बिनती करिकै कहे, जो काकाजी ! भोजनकों पधारिए. तब तो यह श्रीबालकृष्णजीके बचन सुनिकै वह पटेल अपने मनमें बोहोत प्रसन्न भए. वाकौ निष्कपट शुद्धभाव जाने. पाछें श्रीगुसांईजी तो भोजनकों पधारे. तब वह पटेल काकाजी महाराज कहि उठि चल्यो. तब वाके बचन सुनिकै वैष्णव और श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए. तब आपु श्रीगुसांईजी हंसिकै श्रीमुखतें उन वैष्णवनसों कहे, जो हमारे एक यह नयो भतीजा काकाजी कहिवेकों आयो है. पाछें श्रीगुसांईजी तो वा समै भोजनकों पधारे. पाछें वह पटेल जब श्रीगुसांईजी पास आवतो तब या प्रकार कहि दण्डवत् करतो. और खिरकमें जातो (तब कहतो) जो काकाजी महाराज ! यह बचन सुनि वा समै जो प्रभुन पास बैठे होंइ, तिन सहित श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न होते. और जब ही श्रीगुसांईजी वाकों दूरितें आवत देखते तब ही वैष्णवनसों कहते, जे अब काकाजी कहिवेकों आई रह्यो है. इतने ही वह काकाजी महाराज कह्यो. तब श्रीगुसांईजी सहित सब वैष्णव वाके बचन सुनिकै बोहोत प्रसन्न भए. और वाकों दूरि तें आवत देखते तब ही सब बोहोत प्रसन्न होंइ चुप रहते.

सो एक दिन कोई वैष्णवने वा पटेल तें कह्यो, जो जाकों तुम काकाजी कहत हो तिनकौ नाम ता श्रीविटठलनाथजी श्रीगुसांईजी है. तासों तुम श्रीगुसांईजी कहि दण्डवत् कर्यो करो. तब वा पटेलने वा वैष्णवसों कह्यो, जो ''हूं तो तारूं कह्यूं मानूं नाहीं. तू तो मने ऐम कहवावीने काकाजी थी रीस करावीश !'' यह कहिकै वाकौ बचन न मान्यो. तब श्रीगुसांईजी सों वा वैष्णवने कह्यो, जो महाराज ! मैं

तो आपकौ नाम यासों कह्यो हो. परि याके तो कछू मनमें न आई. तब फेरि दूसरे दिन श्रीगुसांईजीके दरसनकों वह पटेल आयो. सो काकाजी महाराज कहि बेठिकै बिनती कर्यो, जो ''महाराज ! ए सघला वैष्णव मलीने मन्हे तमथी रीस करवाने ऐम ऐम कहे छे. जे तू काकाजी मा कहीश, ने एम कह्यो करि. ते नाम काल्हि ऐंणे भाई लीधूं हतूं. ते मने नाम सुधि रह्यूं नथी. ने ऐवडूं मोटूं नाम मारी जीभथी केम उकलशे ते हूं कहूं ? तेथी हूं तो तमने सूधो नाम काकाजी कह्यो करीश.'' तब श्रीगुसांईजी वाकौ शुद्ध भाव जानि यह आज्ञा आपु श्रीमुखतें करे, जो पटेल ! तारी जीभथी उकले तेज नाम तू कह्यो करि. यह श्रीगुसांईजीकी वह पटेल आज्ञा पाय बोहोत प्रसन्न भयो. और वा वैष्णवसों पटेलने कह्यो, ''जे जूओ ! हवे अपने काकाजी ए शूं कह्यूं ? भूंडा ! तूं तो मने काल्हि केटली वात कही हती ?'' तब वह वैष्णव सुनिकै चुप करि रह्यो. पाछें वह पटेल तो श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिकै अपने खिरकमें आवत भयो. तब श्रीगुसांईजी वा वैष्णवसों कहे, जो यह पटेल बापड़ो सूधो है, कछु समुझत नाहीं. तासों हम याकों गांइनकी टहल उपर राख्यो है.

पाछें तो चौमासाके दिन आए. तब श्रीनाथजीकी गांइन तरेंकी वह पटेल कीच सूंतत रहे. तासों वा कामके आगें वाकों छुटकारो न होंइ. सो प्रसाद लेवे न जांइ. तासों जो श्रीनाथजी वाकों कछू देते सोई खांईके वह टहल कर्यो करे. परि पातरि लैन न जातो. सो श्रीनाथजी हू वासों कहते, जो तू पातरि लाइकै पाछें टहल करियो. तब वह पटेल श्रीनाथजीसों कहतो, जो ''बाबा ! तमे ता बालक छो, तेथी तमे मन्हे बालक बुद्धि आपो ते हूं केम मानूं ? हमणां सांझ थाशे. तो सरवे गांइ भींज्या मांहे बेसशे.'' या प्रकार श्रीनाथजीके हू बचन न मानतो. सो वाइ दिन रात्रि बोहोत गई. और मेह बरसत हतो. तासों रात्रिकों पातरि लेवेकों न जांइ सक्यो. सो काम करत हार गयो हतो. और मध्याह्नकों जो कछू श्रीनाथजीनें दियो हतो, सोइ खांइ रात्रिकों सोइ रह्यो. पाछें जब श्रीनाथजी पोढें तब ही झारी, वीरा, बंटा लै कै श्रीनाथजी वा समै खिरकमें वा पटेलके पास पधारन लागे. इतने ही श्रीनाथजीसों श्रीस्वामिनीजीने कही, जो ऐसे बरसते मेहमें कहांको पधारत हो ? तब श्रीनाथजीने श्रीस्वामिनीजीसों कही, जो श्रीगुसांईजीकौ एक नयो भतीजा प्रगट भयो है. सो वह गांइनकी टहल आछी भांति करत है. तानें आज प्रसाद नाहीं लियो है. अपनी आस करत वह सोइ रह्यो है. तासों हम वाकों यह प्रसाद लिवाइ आवें. तब श्रीस्वामिनीजीनें श्रीनाथजीसों कह्यो, जो हम हूं श्रीगुसांईजीके भतीजाकों देखन चलेंगे. पाछें श्रीनाथजी और श्रीस्वामिनीजी दोउ वा समै खिरकमें पधारे. सो वा पटेलकों श्रीनाथजीने जगायो. तब वह पटेल उठिकै श्रीनाथजीकों श्रीस्वामिनीजीकों दण्डवत् कर्यो. पाछें श्रीनाथजी

वाकों दोउ लडुवा खवाइ अपनी झारीसों जल पिवाइ, बीरा दै, झारी बंटा उहांई छोरिकै, दोउ स्वरूप पर्वत उपर मन्दिरमें पधारे. तब वह पटेल बीरा खांइके सोय रह्यो.

भाव प्रकाश :
सो प्रभु भक्तवत्सल हैं. तातें अपने भक्तकौ नेक हू दुःख सहन करि सकत नाहीं. याही तें ऐसें मेहमें हू श्रीठाकुरजी या पटेलकों खवाइवेकों आए. और श्रीस्वामिनीजी इनकों राधा सहचरीकौ सम्बन्ध जानि दरसन दिये. क्यों, जो नन्दालयमें श्रीस्वामिनीजी आप ही राधा सहचरी रूपसों बिराजति हैं. तातें निज परिकर पर श्रीस्वामिनीजी आपकी सहज प्रीति हैं.

पाछें जब सवारे श्रीगुसांईजी स्नान करि शङ्खनाद करवाइ मन्दिरमें श्रीनाथजीकों जगावनकों पधारे, तब श्रीगुसांईजी सिज्या पास देखे तो बंटा, झारी, दोइ बीरा नाहीं. पाछें श्रीगुसांईजी और झारी बंटा धरिकै वा समै काम चलायो. पाछें जब श्रीनाथजी जागे तब श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीके दोउ कपोलन पर अपनो श्रीहस्त फेरिकै पूछे, जो बाबा ! झारी, बंटा, बीरा दोइ, कौनकों दै आए हों ? तब श्रीनाथजी अरसात श्रीगुसांईजीसों कहे, जो तुम्हारे नये भतीजा पास रात्रिकों खिरकमें भूलि आए हैं. वह तो रात्रिकों मेह बरसतमें आई न सक्यो. सो पातरि लैन आयो नाहीं. तासों हम दोउ जनें रात्रिकों खिरकमें पधारे हते. सो वाकों प्रसाद लिवाइकै आय सोय रहे. वा समै अवार भई. तासों झारी, बंटा वहांई छोरि आए. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीकों मङ्गल भोग धरिकै बाहिर पधारे तब एक ब्रजवासी पठायो. ता ब्रजवासीसों चलत समै यह कहे, जो तू झारी बंटा छूइयो मति. वा पटेल पास खिरकमें देखिकै चल्यो आईयो. सो ब्रजवासी खिरकमें जांइकै देखें तो पटेल तो सोयो है. और श्रीनाथजीके बंटा झारी दोउ वाके सिरहाने पास धरे हैं. सो ये समाचार वह ब्रजवासी आइकै श्रीगुसांईजीसों कह्यो. तब श्रीगुसांईजी चुप करि रहे. पाछें और एक ब्रजवासीकों श्रीगुसांईजी पठाए. तासों यह आप कहे, जो तू दूरि तें वा झारी बंटाकी रखवारी या भांति करियो, जो वह पटेल न जाने. पाछें वह झारी बंटा लै घरकों आवे, तब तू वाके पाछें - पाछें चल्यो आईयो. सो वह ब्रजवासी वा पटेलकी दृष्टि बचाइ बैठ्यो. वह झारी बंटा दूरितें देखत रह्यो. पाछें सवारे वह पटेल जाग्यो. तब देखे तो श्रीनाथजी झारी बंटा इहांइ भूलि गए हैं. तब वाने झारी बंटा तो एक गवाखेमें उठाइ धरे. और आप गांइनकी टहल नित्य करतो ताही

प्रकार अपनी टहल निधरकता सों कर्यो कर्यो. पाछें जब मध्याह्न भए और टहलसों पहोंच्यो तब वह पटेल झारी बंटा लै श्रीगुसांईजीके दरसनकों आयो. पाछें 'काकाजी महाराज !' कहि दण्डवत् करी. पाछें कह्यो, जो ''आ पोतानुं झारी बंटा ल्यो. रात्रे श्रीनाथजी मने लाडु बे खवडावी गया. ने ए बेहू वस्तूने मूकी चाल्या आव्या.'' तब श्रीगुसांईजी वाकों देखिकै बोहोत प्रसन्न भए. पाछें श्रीगुसांईजी ये सब समाचार रामदासजी भीतरिया सों कहे. और श्रीगुसांईजी रामदास भीतरियानसों यह आज्ञा करे, जो या पटेलकी पातरि खिरक ही में आजु (तें) पहोंचती करवाइयो.

भाव प्रकाश :
काहेतें, जो इनके लिये प्रभुनकों इतनो श्रम करनो पर्यो.

सो ता दिनसों भीतरिया जब परोसना करि अपने घर प्रसाद लिये पाछें वा पटेलकी पातरि खिरक ही में सब भीतरिया अपने अपने ओसरे पहोंचावन लागे. सो वाकों बोहोत अवार होंइ जाती, तो श्रीनाथजी वाकौ खेद सहि सकत नाहीं.

वार्ता प्रसङ्ग ३ :
बहौरि एक दिन श्रीनाथजी वाकों अपने भोजन करत समै ग्वालन पास बैठार्यो. सो आछी भांतिसों वाने प्रसाद लियो. सो जा ठौर भीतरिया धरि गयो हतो ता ठौर वह पातरि धरी रही. तब दूसरे दिन पातरि धरन भीतरिया गयो. तब तहां देखे तो पातरि काल्हि ही की धरी है. तब वा भीतरियाने वा पटेलसों पूछी, जो पटेल ! तू काल्हि प्रसाद क्यों न लियो ? तब भीतरियासों पटेलने कही, जो ''हूं तो हवे श्रीनाथजी साथे जिमु छुं. तेथी तमो मारी पातरि शूं करवाने मूकी जाओ छो ?'' यह बचन वा पटेलके यह भीतरिया सुनिकै श्रीगुसांईजीसों जांइ कह्यो. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी चुप होइ रहे. फेरि जब दूसरे दिन श्रीगुसांईजीके दरसनकों वह पटेल आयो, तब वा पटेलसों श्रीगुसांईजीने कही, जो पटेल ! तू दोइ दिनतें अपनी पातरि क्यों नाहीं लैत ? तब पटेलने श्रीगुसांईजीसों कही, ''जो काकाजी ! हूं तो श्रीनाथजीनी ग्वालमण्डलीमां जिमुं छुं. तो ए पातरि लईने शुं करूं ? मन्हे तो त्यांनां जिमे भूख लागती नथी.'' यह बचन वा

पटेलकौ सुनिकै श्रीगुसांईजीकौ हृदौ भरि आयो. सो वा पटेल उपर श्रीनाथजी ऐसी कृपा करते.

भावप्रकाश :
तासों जीवकों श्रीठाकुरजीकी सेवामें ऐसो शुद्ध भाव राखनो. वह पटेल ऐसो भोरो हतो. सो वा उपर श्रीनाथजी ऐंसी कृपा करते. और श्रीनाथजीके पाइवेमें बड़ो उपाइ है, सो गांइनकी सेवा है. गांइनकी सेवा जो कोऊ मन लगाइकै करें तो श्रीनाथजी थोरेइ दिननमें वा उपर या भांति प्रसन्न होंइ. तातें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके मार्गमें गांइनकी सेवाकौ यह प्रभाव है.

वार्ता प्रसङ्ग ४ :
पाछें केतेक दिनकों श्रीनाथजीके सिंघद्वारकौ पोरिया कहूं गामकों गयो हतो. तब श्रीगुसांईजीसों अधिकारीने कह्यो, जो महाराज ! अब सिंघद्वारकी पोरी पर बैठिवेकी कौनकों आज्ञा करत हो ? तब श्रीगुसांईजीने वा पटेलकों बुलावाइवेकों एक ब्रजवासी पठायो. सो वा ब्रजवासीने जांइकै वा पटेलसों कही, जो पटेल ! तोकों श्रीगुसांईजी बुलावत हैं. तब वा पटेलने वा ब्रजवासीसों कह्यो, जो ''हूं तो काम छोडीने तारा श्रीगुसांईजी पासे नथी चालतो. हूं इहांथी तारा श्रीगुसांईजी पासे जाऊं तो, ने, मारा काकाजी सांभले तो मारी पातरि काकाजी न मूके.'' यह बचन वा पटेलके सुनिकै वह ब्रजवासी श्रीगुसांईजीसों आइकै सर्व समाचार कह्यो. तब श्रीगुसांईजीने वा ब्रजवासीसों कह्यो, जो ऐसें कहे तें वह न आवेगो. तासों तू अबके जांइकै वासों यह कहियो, जो तोकों काकाजी बुलावें हैं. तासों तू बेगि चलि. तब वह तेरे साथ ही चल्यो आवेगो. तब फेरि वह ब्रजवासी उहां जांइकै वा पटेलसों कह्यो, जो पटेल ! तोकों काकाजी बुलावत हैं. तब तो वह पटेल वा ब्रजवासीसों पहिलें श्रीगुसांईजी पास दोरि आइकै कह्यो, जो ''काकाजी महाराज ! मने शूं कहो छो ?'' तब श्रीगुसांईजी वा पटेलसों कहे, जो पटेल ! तू श्रीनाथजीकी सिंघपोरीकी रखवारी पै बैठ्यो करि. तब वा पटेलने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो काकाजी ! ''मने तो त्यां खिरकमां गमतूं हतुं. हवे तम्हे इहां कहो छो तो हूं इहां बेसीश. परि पातरि तमे मूकशो के नहिं मूको ?'' तब श्रीगुसांईजी वाके बचन सुनिकै बोहोत प्रसन्न भए. पाछें आप श्रीमुखतें वा पटेलसों आज्ञा करे, जो ''पटेल ! हूं तने पातरि मूकीश. जे कांई तने वली जोइए ते तू श्रीनाथजीना प्रसादी भण्डाररमांथी लेजे.'' तब श्रीगुसांईजीने प्रसादी भण्डारी सों कह्यो, जो यह पटेल जो जा समै प्रसाद

मांगे सोई दीजियो. यह तोकों मेरी आज्ञा है. और जो कबहू या पटेलने मेरे आगें आइकै यह कही, जो महाराज ! हमकों यह वस्तू भण्डारीने नहीं दीनी तो हम तेरे उपर रिस करेंगे. तब वह भण्डारी श्रीगुसांईजीके बचन सुनिकै अपने मनमें वा पटेलकौ डर बोहोत मानतो. और वह पटेल हू अपने खाइवेइ जितनो भण्डारी पास तें लेतो. और सिंघपोरीकी रखवारी आछी भांतिसों करतो. सो मध्याह्नकों श्रीगुसांईजी वाकों पातरि अपनी पातरि साथ पठावते. ऐसी वा उपर श्रीगुसांईजी कृपा करते.

पाछें एक दिन श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीकों पोढाइ अपनी बैठकमें जांइ पोढे. पाछें रात्रि जब आधी गई तब श्रीनाथजी श्रीस्वामिनीजीके पाछें ब्रजभक्तनके जूथ सहित पधारे. तब या प्रकार नूपुरके शब्द अनवट विछियानके पाइलनके तता कटि सूत्रनके शब्दनसों पधारे. सा यह आभरनके शब्द सुनिकै वह पटेल जागि पर्यो. पाछें हाथमें लाठी लै सिंघपोरि घेरिकै ठाढ़ौ रह्यो. तब श्रीनाथजी श्रीस्वामिनीजीकी ओर देखिकै हंसे. पाछें श्रीनाथजी प्रथम वा पटेल पास पधारिकै कहे, जो पटेल ! तू हमकों जान दै. तब वा पटेलने श्रीनाथजीसों कह्यो, जो ''महाराज ! तम्हे कांइ घहेला थया छो ? जो ऐटली रात्रि गये वनमां बाइडीयो सहित घरेनुं लूगडां पहरीने पधारो छो ? ने एटला घरेनामांथी कोई पाडी आओ तो पछे काकाजी मने रीस करे. ने कहे, जो तू अहीं बैठ्यो हतो ने श्रीनाथजीने रात्रिनी वेला तें केम जवा दीधा ? ने घरेनुं तो तमे पाडी आओने काकाजी म्हारे उपर रीस करीने सवारे मने पातरि न मूके तो हुं शूं करूं ?'' यह बचन सुनिकै श्रीनाथजी अपने मनमें बाहोत प्रसन्न भए. और वाकों एक अपने श्रीकण्ठतें हार उतारिकै दिये, जो यह हार तू श्रीगुसांईजीकों दीजियो. और कहियो, जो यह हार श्रीनाथजीने दियो है. तब श्रीगुसांईजी तेरे उपर न खीजेगें. यह श्रीनाथजीने वा पटेलकों हारकी सेंधानी दीनी. और वाकौ समाधान बोहोत भांतिसों कर्यो. तब वा पटेलने दरवाजो खोल्यो. पाछें वह तो एक और ठाढ़ौ होंइ रह्यो. तब प्रथम तो श्रीनाथजी पधारे. पाछें अनेक जूथसों श्रीस्वामिनीजी दोउ पधारे. ता पाछें कितने जूथ और हू ब्रजभक्तनके पधारे. सो सबनकौ दरसन वा पटेलने पायो. तब तो यह अपने मनमें बोहोत ही विस्मित भयो. और यह बचन वा समै कह्यो. ''जो एटली बायडीओ घरमां जातां तो न जोई. ने एटलीने गरमां ठाम नथी. ते ए सहु क्यां रहेती हशे. ने हवे हूं एउने पाछ्ल जाऊं तो खरो. ए वनमां जइने शुं करे छे ?'' यह अपने मनमें निश्चय करिकै वह पटेल उन ब्रजभक्तन पधारे पाछें सिंघपोरिके किवाड़ दै कै आप हू पाछें - पाछें निकल्यो. सो वा समै श्रीनाथजी श्रीवृन्दावन परासोली पधारे. ता ठौर जांइ श्रीयमुनाजीके तट बिराजे. पाछें यह तो एक कुञ्जके तरै दुबकिकै बैठि रह्यो. ता पाछें

श्रीनाथजी नृत्यारम्भ करें. सो रासमण्डलके याने दरसन करे. पाछें ब्रजभक्त नृत्य करत श्रमित भए. तब तो श्रीनाथजी श्रीयमुनाजीके निकट जांइ बिराजे. और तब वह पटेल वा कुञ्ज तें निकरिकै जा ठौर रासमण्डल भयो हतो ता ठौर तें यह आभरन बीनन लाग्यो. सो कितनेक आभरन याने बीने. पाछें एक रास श्रीनाथजीने श्रीयमुनाजीके किनारे कर्यो. पाछें वहां श्रमित भए. तब फेरि कुञ्जमें ब्रजभक्तन सहित पधारे. तब यह श्रीयमुनाजीके घाट उपर जांइ आभरन बीने. सो तिन रासमें आभरनसों याकी झोरी भरि गई. पाछें रात्रि घरी चारि हती. तब श्रीनाथजी तो अपने मन्दिरमें पधारे. और यह श्रीगुसांईजी पास बैठकमें गयो. ता समै श्रीगुसांईजी तेल लगावत हते. सो यह जांइ काकाजी महाराज कहि वह आभरनकी गांठि श्रीगुसांईजीके आगें धरी. पाछें प्रथमसों जहां पर्यन्त श्रीनाथजी मन्दिरमें पधारे सो सर्व समाचार कहि, यह पटेलने श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, ''जूओ काकाजी ! एटलां घरेनां त्यां पाडी आव्या हता. ते हूं न जात तो कौन लै आवतो ? ने एटली वस्तू ज्यारे मन्दिरमां घटे त्यारे तमे मने पूछता. ने हूं तो जानतो नहीं ते हूं तमने कहेत. त्यारे तमे मारा उपर रीस करीने पातरि न मूकत. तो हूं शूं करतो ?'' तब श्रीगुसांईजी वाके बचन सुनिकै बोहोत प्रसन्न भए. पाछें वह पटेल काकाजी महाराज कहि सिंघपोरि पर आई बेठ्यो. वा उपर श्रीनाथजी या प्रकार कृपा करि रासके दरसन करवाए.

भावप्रकाश :

काहेतें, ये कुमारिकाके जूथकी सखी हैं. तातें दरसन दिये.

पाछें श्रीगुसांईजी स्नान करि पर्वत उपर श्रीनाथजीके मन्दिरमें पधारि शङ्खनाद करवाइकै श्रीनाथजीकों जगाए. तब श्रीगुसांईजीसों श्रीनाथजी हंसिकै कहे, जो आछौ पोरिया राख्यो है. तब श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीसों कहे, जो आप हू वा उपर भली कृपा करो हो. तब दोउ जन परस्पर मुस्कराईकै चुप करि रहे. पाछें मङ्गला - भोग धरिकै श्रीगुसांईजी सिंघद्वार पर पधारे. तब वा पटेलसों श्रीगुसांईजी आज्ञा करे, जो आज पाछे तू श्रीनाथजीकों कबहू मति बरजियो. और तू कबहू साथ मति जैयो. जहां श्रीनाथजी पधारे तहां पधारन दीजियो. हम तेरे उपर रिस न करेंगे. और आज तें सिंघपोरिकौ एक किवाड़ खुलो रखियो.

भाव प्रकाश :
काहेतें, जो श्रीनाथजीकों पधारनमें श्रम न परै. सो ता दिनतैं यह रीति चली, जो सिंघपोरिके किवाड़ दोउ कबहू बंद न रहे.

तब वह पटेल श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि भलो कहिकै बैठि रह्यो. पाछें कबहू श्रीनाथजी कहूं पधारते तो वह पटेल ता दिन पाछें बरजतो नाहीं. परि श्रीनाथजी वा उपर ऐसी कृपा करते, जो पधारत समै वाकों नित्य दरसन देत पधारते. श्रीनाथजी वा पटेल पर या प्रकार कृपा करते. सो यह पटेल श्रीगुसांईजीकी कृपा तें ऐसो भगवदीय भयो. तातें याकी वार्ता कहां ताई कहिए. वार्ता ।।२०।।

२१-एक पटेल मालावालो

अब श्रीगुसांईजीके सेवक एक पटेल अकिञ्चन, गुजरातमें रहतो, जा ने श्रीगुसांईजीकों माला समर्पी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
यह पटेल राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'मालिनी' है. सो मालिनी प्रेममञ्जरी तें प्रगटी हैं. तातें इनके भाव रूप हैं.

ये गुजरातमें एक कुनबी पटेलके घर जन्म्यो. सो जन्मत ही इनकौ पिता मर्यो. पाछें ये बरस पन्द्रहकौ भयो, तब इनकी माता हू मरी. तब घरमें द्रव्य तो कछू हतो नाहीं. तातें ये मजूरी करि अपनो निर्वाह करन लाग्यो.

सो एक समै श्रीगुसांईजी द्वारिकाजीकों पधारे. सो मार्गमें या पटेलकौ गाम आयो. तहां एक तलाव पर श्रीगुसांईजी आप डेरा किये. ता समै यह पटेल तहां माटी खोदत हुतो. सो इन श्रीगुसांईजीके दरसन पाए. सो दरसन करत ही याके मनमें यह आई, जो ये कोई महापुरुष हैं. तातें इनकी सरनि जाईए तो आछौ. पाछें यह पटेल श्रीगुसांईजीसों बिनती कियो, जो महाराज ! कृपा करि मोकों अपनो सेवक कीजिये. मैं आपकी सरनि आयो हूं. सो या प्रकार दीनता

देखि श्रीगुसांईजी आप वा पटेलकों कृपा करि सेवक किये. नाम निवेदन कराए. तब और हू बोहोत से दैवी जीव श्रीगुसांईजीकी सरनि आए. सो सबकों श्रीगुसांईजी आप सेवक किये, ता पाछें दूसरे दिन श्रीगुसांईजी आप द्वारकाजी पधारे. तहां कछूक दिन बिराजिकै पाछें अड़ेलकों विजय किये.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै एक साथ वैष्णवनकौ गुजरातसों श्रीनाथजीके श्रीगुसांईजीके दरसनकों चल्यो. ता साथमें एक पटेल श्रीगुसांईजीकौ सेवक हतो. (सो हू चल्यो) तानें प्रथम श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी पधारे हते तब नाम निवेदन पायो हतो. और तबही श्रीगुसांईजीके वाने दरसन पाए हते. ता बातकों बोहोत दिन भए हते. सो वह (पटेल के) गाम तें साथ श्रीगोकुलकों चल्यो. तब और मनुष्य तो अपने अपने खरचकौ सामान करिकै चले. और वा पटेलके पास कछू द्रव्य न हतो. परि याके मनमें श्रीगुसांईजीके दरसनकी अभिलाषा बोहोत हती. सो अपने मनमें यह निर्द्धार करिकै घरसों निकल्यो. जो जहांलों कोऊ वैष्णव प्रसाद लिवावेगो तहां लों वाके इहां प्रसाद लेउंगो. नांतरु साथमें चुकटी मांगिकै अपनो निर्वाह करत चल्यो जाऊंगो. यह निर्द्धार करि घरसों चल्यो. सो याही प्रकार चुन मांगत चल्यो आवे. सो केतेक दिनकों श्रीनाथजीद्वार आय पहोंच्यो. सो सगरे वैष्णव श्रीनाथजीके दरसन करिकै अति आनन्द पाए. पाछें श्रीनाथजीकी शयन आर्ति भई. तब वह सगरो साथ 'रुद्रकुण्ड' उपर आय डेरा कियो. पाछें रात्रिकों रसोई करि प्रसाद लै सगरे आपुसमें अपनी अपनी गांठिकौ द्रव्य भेंटकों जाकों जैसी सक्ति हती सो ता प्रमान काढ़त भए. और अपनी फेंटमें बांधत गए. और आपुसमें कहे, जो भाई ! काल्हि श्रीगुसांईजी दरसन देइंगे. तासों वा समै कौन गांठि खोलन बैठेगो. तातें अपनी अपनी भेंट उपर राखो.

भाव प्रकाश :
यामें यह अभिप्राय जतायो, जो प्रभु सन्मुख, गुरु सन्मुख कबहू रीते हाथ न जानो.

तब यह पटेल अपने मनमें सोच करन लाग्यो, जो ये तो अपनी अपनी भेंट काढ़ि लिये हैं. और मेरे पास तो कछू भेंटकौ द्रव्य नाहीं. सो हों कहा श्रीगुसांईजीकी भेंट करूंगो ? और काहूसों करज काढि भेंट करूंगो तो मेरे पास कछू देवेकों तो है नाहीं. जो वाकों पाछें

देउंगो. और वे तो आप प्रभु हैं. तासों मेरी गति सर्व जानत ही हैं. सो यह सोच करत याकों तो चार प्रहर रात्रि निद्रा नाहीं आई. पाछें वे तो सगरे वैष्णव बड़ेई सवारे उठि चले. तब यहू सोच करत उठि चल्यो. सो यह तो सोच करत चल्यो जात हतो. तब मार्गमें एक बाग आयो. ता बागमें जूही बोहोत फूली हती. सो एक याके पास अंगोछाकौ टूक हतो. सो यानें वा मालीकों दै कै और बिनती करी, जो मोकों तू एक माला लाइक जूहीके फूल तोरि देहि, तो हो अपने गुरुकी भेंट करूंगो. तब वा मालीने याकौ अंगुछा तो फेरि दियो. और याकी दीनता जानिकै वा मालीने कह्यो, जो तू अपने हाथसों जैसी माला भावे तेसी करि लै. तब तो वह बोहोत प्रसन्न होंइकै, मालीकी आज्ञा मांगिकै एक माला जूहीकी करिकै लै निकर्यो. सो वा मालाकों लिये अति उत्कण्ठासों नाना भांतिकै मनोरथ करत चल्यो. जो और सगरे वैष्णव तो श्रीगुसांईजीके आगें नाना प्रकारकी भेंट करेंगे. और हों यह माला श्रीगुसांईजीके श्रीकण्ठमें धराउंगो. तब मेरी माला देखिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न होइंगे. परि अब हों बेगि बेगि या सङ्गके साथ जांइ पहोंचों तो आछी बात है. पाछें यह वैष्णव श्रीगुसांईजीके चरन कमलकौ ध्यान करिकै चल्यो. सो याकी आर्ति श्रीगुसांईजी सहि न सके. सो प्रभु वा दिन बड़े सवारें श्रीनाथजीके सिंगारकों पधारे. तब आप तो घोड़ा उपर असवार भए. और वैष्णव दोइ चारि प्रभुनके साथ हते. तिन वैष्णवनसों श्रीगुसांईजी प्रथम ही कहे हते, जो एक सङ्ग गुजरातकौ आवत है. तामें एक पटेल अकिञ्चन है. सो वह एक माला संवारिकै बोहोत सुन्दर मेरी भेंटकों लावत है. और वह सब साथके पाछें हैं. सो वाकी मालाकौ प्रथम अङ्गीकार होंइ रहे ता पाछें और सब वैष्णव भेंट करन पावे. ताके पहिले कोऊ भेंट न करे. सो यह कहत आप बेगि - बेगि घोड़ा चलाए.

और इहां ज्यों - ज्यों मालाकों धाम लागे त्यों त्यों वा वैष्णवकों सोच होइ है. सो श्रीगुसांईजीसों वाकौ ताप सह्यो जात नाहीं तासों श्रीगुसांईजीने बेगि बेगि घोड़ा चलायो. सो वह सब साथ मार्ग ही में मिल्यो. तब वे सब वैष्णव प्रभुनकों दण्डवत् करे. पाछें बिनती करे, जो महाराज ! रञ्च घोड़ा राखिए तो हम सगरे भेंट करें. तब उन वैष्णवनसों प्रभुनके साथके वैष्णवन कह्यो, जो घोड़ा तो एक पटेल माला करिकै तुम्हारे साथमें सबके पाछें आवत है, वह जहां मिलेगो तहां घोड़ा थम्भेंगे. इतनो कहत ही पधारे. सो अति उतावलिसों वा पटेलके पास प्रभुनकौ घोड़ा जांइ पहोंच्यो. तब वा पटेलने श्रीगुसांईजीके दरसन पाए. सो प्रभु जब निकट पधारे तब वा पटेलने श्रीगुसांईजीकों माला पहराइ दण्डवत् कियो. सो सरीर विस्मरन होंइ गयो.

भाव प्रकाश :
क्यों ? जो श्रीगुसांईजीके स्वरूपानन्दमें मगन होंइ विह्वल व्है रह्यो. सो देहकी सुधि न रही.

पाछें प्रभु घोड़ा तें उतरिकै वा पटेलके माथे श्रीहस्त धरि, वाके कानमें अष्टाक्षर उपदेश किये. तब वह पटेल जाग्यो. तब श्रीगुसांईजी वा पटेलसों कहे, जे पटेल ! हों तेरी मालाके लिये श्रीगोकुल तें साम्हें आयो हूं. और तू तो मेरे चरनारविन्दमें लीन भयो चाहे. सो ये सगरे तेरे साथके हमकों कहा कहेंगे ? अब ही तो तोसों आगें सेवा करावनी है. यह बचन कहत जांइ, और बीच बीच में बार बार मालाकी सराहना करत जांइ. तब वा पटेलने अपने सर्व समाचार श्रीगुसांईजी आगें दीनता सों बिनती करे. जो महाराज ! आप प्रभु हो. दीनवत्सल हो. दयानिधान हो. पतितपावन हो. तासों आपुकी उपमा कहिवेकों कौन जीवकी सामर्थ है ? तातें अपने दासकी सेवा आप अङ्गीकार करत हो.

इतने ही वह सब साथ पाछें तें दोरि आई श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि सगरे बिनती करी. पाछें अपनी अपनी भेंट धरी. तब वे सगरे अपने मनमें चकित होइ रहे. पाछें श्रीगुसांईजी फेरि घोड़ा उपर असवार होइकै श्रीनाथजीद्वार पधारि, स्नान करि, पर्वत उपर मन्दिरमें जांइ, श्रीनाथजीकी राजभोग आर्ति करि, बैठकमें आई बिराजे. तब हू वा मालावारे पटेलकों प्रभु निकट बुलाए. तब वे सगरे वैष्णव विस्मित होंइ रहे. तासों श्रीगुसांईजी करुनासागर हैं. पाछें वा पटेलकों श्रीगुसांईजी कृपा करिकै श्रीनाथजीके फूलघरकी सेवा सोंपी. वह पटेल श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२१।।

२२-एक विरक्त जा ने हथेलीमें डोल झूलायो

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक विरक्त, ब्रजमें पर्यटन करतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'रसिका' है. ये भगवद्रसमें सदा मगन रहति हैं. सो रसिका 'कलकण्ठी'तें प्रगटी हैं, तातें उनके भाव रूप हैं.

यह पूरबमें एक क्षत्रीके घर जन्म्यो. सो ये बालपने तें ही वैराग्य दसामें रहे. खाइवे पीवेकी कछू सुधि नाहीं. माता - पिता जो खाइवेकों दै, सो खांइ. पहिरवेकों दै सो पहरि लैं. और जहां कहूं कथा वार्ता होंइ तहां जांइ. सो माता - पिता बेटाकी यह दसा देखि बड़ी चिन्ता करन लागे. जो याकौ ब्याह कैसें होइगो ? याके तो सरीर सुखकौ हू विचार नाहीं है. यों करत यह बरस बीसकौ भयो. तब एक सङ्ग मथुराजीकों चल्यो. तब इनके मनमें आई, जो हों हूं या सङ्गके साथ मथुरा बृन्दाबन दरसनकों जाऊं तो आछौ. सो वाही समै ये सङ्गके साथ चल्यो. सो माता - पिता जान्यो नाहीं. पाछें माता - पिता ढूंढ्यो बोहोत, परि पायो नाहीं. तब हार मानि बैठि रहे. और ये तो मथुराजी सङ्गके साथ आयो. तहां विश्रामघाट दरसनकों आयो. ता समै श्रीगुसांईजी तहां श्रीसुबोधिनीजीकी कथा कहत हते. सो यह कथा सुनिवेकों बैठ्यो. सो श्रीगुसांईजीके श्रीमुखकी कथा सुनिकै बड़ो प्रसन्न भयो. पाछें अपने मनमें कहन लाग्यो, जो मैनें कथा तो बोहोत सुनी, परि आजकौ सो सुख पायो नाहीं. तातें इनके सेवक व्है नित्य कथा सुनिये तो आछौ. पाछें इन श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मोकों सरनि लीजिये. मेरो मन आपुके पास रहिकै नित्य कथा सुनिवेकौ है. तब श्रीगुसांईजी इनकों दैवी जीव जानि सरनि लिये. नाम निवेदन कराए. पाछें कछूक दिन अपने पास राखि कथा सुनाई. सो कथाके मिष करि श्रीगुसांईजी वाकों ब्रजके स्वरूपकौ अनुभव करायो. सो याके ब्रजकौ स्वरूप हृदयारूढ व्है रह्यो. सो ये ब्रजके भावमें सदा मगन रहतो. पाछें श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मांगि ये विरक्त दशासों ब्रजमें बिचरन लाग्यो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वह विरक्त एक ठौर ब्रजमें बैठतो नाहीं. फिर्योई करतो. सो एक दिन चुकटी मांगिकै कोकिला बनमें बाटी दारि करत हतो. सो इतने ही उनकों सुधि आई, जो आजु तो डोल - उत्सवकौ दिन है. तब तो अपने मनमें बोहोत ही खेद करन लाग्यो. जो देखो ! प्रथम सुधि आवती तो और हू एक दो गाम तें चुकटी मांगि लावतो. तासों चोखा, घी आनतो. तो आछी भांति रसोइ करि भोग धरतो. परि मोकों अब पाछें सुधि आई है. यों अपने मनमें बोहोत ही सोच कर्यो. पाछें कह्यो, जो हों कहा करूं ? जो प्रभुनकी इच्छा, भई सो सही. पाछें

रसोई करिकै थोरीसी बाटी रहन दीनी. और थोरीसी बाटी (सों) श्रीठाकुरजीकों राजभोग धर्यो. पाछें एक कुञ्जमें डोलकौ भाव कर्यो. वासों लता इत उत लपटाइ, बांधि, श्रीठाकुरजीकों भोग सराइ, पाछें आप वा कुञ्जमें ठाढ़ो रहिकै, श्रीठाकुरजीकों, दोउ हाथनकी हथेली ताकौ पटुलीकौ भाव करे, तामें श्रीठाकुरजीकों डोल झूलाए. सो अति आनन्दसों डोल गावन लाग्यो. पाछें भाव ही तें श्रीठाकुरजीकों खिलाए. और बाटी और दारि तीनो समै भोग समर्प्यो. पाछें श्रीठाकुरजीकों अनोसर करवाए.

भाव प्रकाश :
या वार्तामें यह जतायो, जो वैष्णवकों उत्सवकौ दिन भूलनो नाहीं. वा दिन यथासक्ति भावपूर्वक ठाकुरकों सामग्री अवश्य करनी. काहेतें ? जो प्रभु बालक हैं. सो उत्सवनकौ पैडो देखत हैं. तातें वैष्णवनकों उत्सवनकौ लोप सर्वथा न करनो.

सो इन प्रथम श्रीगुसांईजीसों बिनती करी हती, जो महाराज ! मोकों कछू सेवा पधराओ. तब श्रीगुसांईजी इनसों कहे, जो तुम एक ठौर तो कहूं रहत नाहीं. तो श्रीठाकुरजीकी सेवा कौन भांति करोगे ? तब इन श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! हों तो या प्रकार ब्रजमें फिरूंगो. परि आप जो सेवा पधराओगे तिन श्रीठाकुरजीसों पूछि लीजो. तब श्रीगुसांईजी इनके बचन सुनिकै बोहोत प्रसन्न होंइकै याके माथे श्रीनवनीतप्रियजीकी सेवा पधराए. तिन श्रीनवनीतप्रियजीकों यह विरक्त अपनी सक्ति प्रमान सेवा या प्रकार करतो. सो सब सेवा भाव युक्त करे. तासों श्रीगुसांईजी वासों बोहोत प्रसन्न भए रहें. पाछें यह डोलकौ प्रकार सर्व श्रीनवनीतप्रियजीने वाही दिन श्रीगुसांईजीसों कह्यो. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए. पाछें केतेक दिनकों वह विरक्त श्रीगोकुल आय श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिकै बैठ्यो. तब श्रीगुसांईजी वासों पूछे, जो वैष्णव ! श्रीठाकुरजी कहां बिराजत हैं ? तब वा वैष्णवने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! आप मेरे स्थलके समाचार तो सर्व जानत ही हो, तासों श्रीठाकुरजी मेरे साथ ही बिराजत हैं. तब श्रीगुसांईजी वा वैष्णवसों कहे, जो अबकौ तुम डोलोत्सव कौन ठौर कौन प्रकार कर्यो ? तब या वैष्णवने अपने मनमें जानी, जो श्रीनवनीतप्रियजीने प्रभुनकों जनाई तो सही. पाछें याने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज! आप तो सर्व जानत ही हो. तातें आप आगें कहा जनावनो ? जो कोई न जानतो होंइ ताकों जनाइये. तब श्रीगुसांईजी वा विरक्तसों कहे, जो तेरे प्रकार तो जानें ? तब वाने डोलोत्सवकौ सर्व प्रकार कह्यो. तब

याके बचन सुनिकै श्रीगुसांईजी कहे, जो तू याहू प्रकार प्रभुनकों डोल तो झूलायो. हों तो उपर बोहोत प्रसन्न भयो हूं. तब वह वैष्णव गद्‌गद् कण्ठ होंइकै श्रीगुसांईजीसों बिनती कर्यो, जो महाराज ! मेरी तो यह अवस्था है. परि श्रीठाकुरजी बड़े हैं. तातें आपकी कानिसों मानि लेत हैं. तब श्रीगुसांईजी वा उपर बोहोत प्रसन्न भए. वह विरक्त श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२२।।

२३-एक विरक्त परिक्रमावालो

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक और विरक्त, गिरिराजकी परिक्रमा करतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'सुदेवी' है. सो सुदेवी कलकण्ठी तें प्रगटी हैं, तातें इनके भाव रूप हैं.

ये पूरबमें एक ब्राह्मनके जन्म्यो. सो बरस बीस - पच्चीसकौ भयो तब वा गाम तें एक सङ्ग मथुराजी यात्राकों चल्यो. सो वा सङ्गमें येहू मथुराजी आयो. सो विश्रान्त पर स्नान कियो. पाछें काहूने कह्यो, जो यहां तें कोस सात पर श्रीगोवर्द्धन पर्वत है. तहां श्रीगोवर्द्धननाथजी आप बिराजत हैं. सो साक्षात् कृष्णकौ स्वरूप हैं. परम सुन्दर मनोहर हैं. सो उनके दरसन किये तें कृतार्थता होत हैं. तब तो यह ब्राह्मन मथुराजी तें गोवर्द्धन आयो. तहां गोपालपुरमें आई श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. सो दरसन करत ही यह ब्राह्मन मुग्ध व्है गयो. सो कछू सरीरकी हू सुधि न रही. पाछें टेरा आयो. तब यह सावधान व्है विचार करन लाग्यो. जो भाई ! ऐसें दरसन छोरिकै अब तो कहूं नहीं जानो. चुकटी मांगि निर्वाह करूंगो परि श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन न छोरूंगो. या प्रकार यह ब्राह्मन अपने मनमें निर्धार कियो. सो ऐसें करत कछूक दिन बीते. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी या ब्राह्मनकों स्वप्नमें दरसन दै आज्ञा किये, जो तू श्रीगुसांईजीकौ सेवक हूजियो. तब तू कृतार्थ होइगो. तब वह ब्राह्मन श्रीगुसांईजीकौ सेवक भयो. नाम - निवेदन पायो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वा विरक्तनें यह नेम लियो, जो एक परिक्रमा नित्य श्रीगिरिराजकी करनी. सो वह नित्य बड़े सवारें उठिकै श्रीगोवर्द्धनकी परिक्रमा करन जांइ. सो श्रीनाथजीके दरसन आई करें. पाछें श्रीगुसांईजी तथा कोई और बालक श्रीनाथजीद्वारमें होंइ तिनके दरसन कर. पाछें यह गामनमें चुकटी करन जांइ. सो कोरी चुकटी करि ल्यावे. ताकी रोटी करि श्रीनाथजीकी ध्वजाकों समर्पिकै प्रसाद लेइ. या भांति अपने दिन निर्वाह करे. सो एक दिन याके मनमें यह आई, जो भाई ! मोकों इतने दिन श्रीगुसांईजीके दरसन करत भए. परि मोसों श्रीगुसांईजी कबहू बोलत नाहीं. सो कारन कौन भांति जान्यों जांइ ? यह याके मनमें सन्देह रहे. सो चिन्ता कर्यो करे. पाछें केतेक दिनकों अन्नकूट उत्सव आयो. तब याके मनमें आई, जो आज तो परिक्रमाकों भोग आवेगो तब जाऊंगो. तातें अब तो कछू टहल करूं. सो याने श्रीनवनीतप्रियजीके मन्दिरतें श्रीगिरिराजकी पूजा होत हैं, तहांलों प्रथम तो सर्व मार्ग छी भांति झार्यो. पाछें पैंड़ेमें कहू एक कांकर रहन न दीनो. या प्रकार कांकर बीने. सा याके मनमें यह भाव आयो, जो या मार्गमें आज श्रीठाकुरजी और श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धनपूजाकों पधारेंगे. तासों मार्ग आछौ करूंगो तो मेरी सेवा होइगी. और श्रीठाकुरजीके तथा श्रीगुसांईजीके चरन अति कोमल हैं. सो कांकरकौ स्पर्श न होइगो. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजीकों लै गोवर्द्धन - पूजाकों तो मार्ग व्है पधारे. सो मार्ग सुन्दर देखिकै श्रीठाकुरजी और श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए. पाछें वा समै श्रीगुसांईजी चुप करि रहे. ता पाछें जब श्रीगोवर्द्धन - पूजा करिकै श्रीनाथजीकों बड़ो भोग धरिकै आप अपनी बैठकमें पधारे, तब काहू वैष्णवने श्रीगुसांईजीसों याकी सेवाकौ प्रकार कह्यो. तब श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए. पाछें वह वैष्णव श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करन आयो. सो वह तो नित्य दण्डवत् करतो ताही प्रकार दण्डवत् करिकै बैठ्यो. तब श्रीगुसांईजी यासों हंसिकै कहे, जो वैष्णव आयो ? तब तो यह फेरि श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि बिनती कर्यो, जो महाराज ! इतने दिनमें आप आज कृपा करि मोसों बचन उच्चार करे हो. और आज तांई कबहू बोलत न हते. सो कारन मोसों कृपा करिकै कहिए ? तब श्रीगुसांईजी वा वैष्णवसों कहे, जो वैष्णव ! इतने दिनतें तो तुम अपनी देहकौ साधन करत हते. और आज तो तुम साधन छोरिकै सेवा करे. तासों आज हम तुम तें बोले.

भाव प्रकाश :

काहेतें, जो प्रथम श्रीआचार्यजी महाप्रभु एक सेवा, यही साधन या जीवकों कहे हैं. सो श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके ये बचन हैं

'सेवायां वा कथायां वा'

भाव प्रकाश :
याकौ तात्पर्य यह है, जो जीवकों अन्य साधन करि वृथा काल न खोवनो. प्रथम तो सेवा करे. पाछें कथा कहे, वा सुने. यह प्रकार सेवाकौ उपदेश श्रीआचार्यजी महाप्रभु करे. तातें या मार्गमें सेवा तूल्य और साधन नाहीं.

सो यह बचन कहि आपु तो प्रभु मन्दिरमें पधारे. और यह वैष्णव तो ता दिनतें सेवाकों फल जानि साधन छोरिकै सेवा करन लाग्यो. तब तें श्रीगुसांईजी वा उपर बोहोत प्रसन्न रहते. यह विरक्त प्रभुनकों प्रसन्न जानिकै आप हू बोहोत प्रसन्न रहतो.

भाव प्रकाश :
तातें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके मार्गमें सेवा सार है. यह श्रीगुसांईजी वा विरक्त द्वारा सब जीवनकों उपदेश करे.

पाछें वह विरक्त श्रीगुसांईजीकी कृपा तें भलो भगवदीय भयो. तातें वाकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२३।।

२४-कृष्णदास कायस्थ

अब श्रीगुसांईजीके सेवक कृष्णदास कायस्थ, पूरबके, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'नीलवर्णी' है. सो नीलवर्णी, कलकण्ठी तें प्रगटी हैं, तातें इनके भावरूप हैं.

सो ये पटना तें उरेमें कोस दस पर एक गाम है, तहां एक कायस्थके घर जन्में. वह कायस्थ एक म्लेच्छ पास चाकर हुतो. सो परगनो कमावतो. तातें वा म्लेच्छकी याके उपर बोहोत निघा रहती. पाछें कृष्णदास बरस तीसके भए. तब वह कायस्थ मर्यो. तब वा म्लेच्छने कृष्णदासकों चाकर राख्यो. ता पाछें कछूक दिनमें कृष्णदासकों वा म्लेच्छने कछू कार्यार्थ दिल्ली भेजे. तहां कृष्णदासकों एक मर्यादामार्गी वैष्णवकौ सङ्ग भयो. सो उन वैष्णवने कृष्णदासकों कह्यो, जो तुमने मथुरा बृन्दाबनके दरसन किये ? तब कृष्णदास कह्यो, जो हों तो या मुलकमें प्रथम बार आयो हूं. तब वा वैष्णवने कह्यो, जो मथुराजीमें जांइ श्रीयमुनाजीके स्नान अवश्य करने चहिए. वा बिना मनुष्य जन्म सगरो वृथा है. तातें तुम यहां लों आए हो तो मथुरा - वृन्दावनके दरसन करि श्रीयमुनाजीमें स्नान करि अपनो जन्म कृतार्थ करो. तब कृष्णदास उहां तें चले. सो मथुराजी आए. वहां श्रीयमुनाजीमें स्नान किये. पाछें श्रीगोकुल बृन्दाबन व्है गोवर्द्धन आए. तहां मानसीगङ्गामें स्नान करि कृष्णदास तहां ते गोपालपुर आए. सो पर्वत उपर जांइ श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. ता समै श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजीकी राजभोग आर्ति करत हे. सो कृष्णदासकों श्रीगुसांईजीके दरसन भए. सो दरसन करत ही कृष्णदासके मनमें आई, जो इनके सेवक हूजिये तो आछो. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीकों अनोसर कराय पर्वततें नीचे अपनी बैठकमें पधारे. तब कृष्णदासने बिनती करी, जो महाराज ! मोकों सेवक कीजिये. सो कृष्णदासकी दीनता देखि, श्रीगुसांईजी आप कृष्णदासकों नाम सुनाए. पाछें आप कृष्णदाससों आज्ञा किये, जो काल्हि तुमकों श्रीनाथजीके सन्मुख निवेदन करावेंगे. सो आज व्रत करि काल्हि सवेरे न्हाईकै बेगि अइयो. पाछें दूसरे दिन कृष्णदासकों श्रीगुसांईजी आप श्रीनाथजीके सन्निधान निवेदन कराए. तब कृष्णदास बिनती कीनी, जो महाराज ! अब कहा कर्तव्य है ? तब श्रीगुसांईजी कृष्णदासकों आज्ञा किये, जो तोकों वैष्णवनकी सेवा दीनी. तातें तू वैष्णवनकों प्रसन्न राखियो. ता पाछें कृष्णदास श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि, आज्ञा मांगि अपने देस आए.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वे कृष्णदास एक म्लेच्छ पास चाकर रहते. तिन कृष्णदास पास जो कोऊ वैष्णव आवतो ताकों चाकर सिरकारमें रखाइकै काम

सोंपते. और जो कोऊ वैष्णव चाकरी न करतो ताकों अपनी गांठि तें द्रव्य दै कै व्यौपार करावते. (और) जो कोऊ और देस जाईवेकों द्रव्य मांगतो तो ताहूकों द्रव्य देते. परि काहूकों कृष्णदास नाहीं न करते. उन वैष्णवन पास तें खत तो मंडाइ लेते. परि द्रव्य दै कै काहू पास मांगते नाहीं. ऐसें करत केतेक दिन भए. तब वा म्लेच्छने कृष्णदासकों बन्दीखाने दियो. सो तीसरे दिन वा म्लेच्छने फेरि कृष्णदासकों अपने हजूर (में) बुलाइकै बीस हजार रुपैया कृष्णदास पास सों दण्ड मांग्यो. तब कृष्णदास वासों कहे, जो मेरे पास तो द्रव्य नाहीं, सो तुमकों देहुं. तब वाने फेरि बन्दीखानेमें कृष्णदासकों दिवाइ दियो.

सो केतेक दिनकों कृष्णदासकौ प्रोहित बन्दीखानेमें कृष्णदास पास आय कृष्णदाससों कह्यो, जो तुम क्यों बैठि रहे हो ? तब कृष्णदास अपने प्रोहित सों कहे, जो बीस हजार रुपैया मो पास तें दण्ड मांगत हैं. तब वह प्रोहित कृष्णदास सों कह्यो, जो तुम देत क्यों नाहीं ? तब कृष्णदासने प्रोहित सों कह्यो, जो कहां तें देहुं ? मेरे पास तो द्रव्य कोई नाहीं. तब प्रोहितने कृष्णदाससों कही, जो तुम पास वैष्णवनके खत तो रुपैया हजार पचीस वा तीसके हैं, तिनमें सों देंत क्यों नाहीं ? तब कृष्णदासने प्रोहितसों पूछ्यो, जो वे खत कहां हैं ? तब प्रोहितने कृष्णदाससों कही, जो वे खत तो सब मेरे पास हैं. तब कृष्णदासने प्रोहित सों कही, जो वे खत ल्याओ, तुमने भली सुधि दिवाई. फेरिकै कृष्णदासने कही, जो मोकों तो सीत बोहोत लगत है. तासों तुम अङ्गीठी करि ल्याओ. सो प्रोहित एक अङ्गीठी करि ल्यायो. पाछें वासों खत मंगायकै कृष्णदास कहे, जो तुम स्नान करिकै मेरे पास आवो. तहां तांई हों इन खतनकों बांचि राखत हूं. पाछें तुमही दरबारमें दै आईयो. सो वह प्रोहित तो स्नान करनकों गयो. पाछें कृष्णदास उन खतनकों बांचि बांचिकै अङ्गीठीमें डारि सगरे खत जराइकै चुम होइकै बैठि रहे. पाछें कृष्णदास पास प्रोहित स्नान करिकै आयो. तब प्रोहितने कृष्णदाससों कह्यो, जो वे खत ल्याओ. हों दरबारमें जाइकै दै आऊं. तब कृष्णदासने वा प्रोहितसों कह्यो, जो अरे अधर्मी ! तू तो मेरो धर्म पहिलें ही खोयो हो, परि प्रभु मेरो धर्म क्यों खोवें ? जो या समै तैनें यह खत राखि छोरे ? सो तोकों वे खत दै कै वैष्णवनकों सताउं ? और हों सुख करुं ? मेरे एक देहके काजे अनेक वैष्णवनकों सतावतो, तो उन वैष्णवनके सराप तें तो मेरो धर्म नष्ट हो जातो. अब तो मेरे या देहके भोग पूरे होंइगे तब ही छूटोंगो, नाहीं तो यह देह छूटेगी: तोउ धर्म तो मेरो न जाईगो ? यों कहिकै वा प्रोहितकों तो कृष्णदासने बिदा कियो. और आपु तो कृष्णदास उहां बैठि रह्यो. पाछें दूसरे दिन कृष्णदासकों वा म्लेच्छने बुलायो. सो कृष्णदास वा आगें जांइ ठाढ़े रहे. पाछें वाने कृष्णदाससों

कह्यो, जो बीस हजार रुपैया दै. तब कृष्णदासने वा म्लेच्छ सों कह्यो, जो मेरे पास तो कछू नाहीं. तब फेरि वा म्लेच्छने कृष्णदाससों कह्यो, जो दस ही हजार दै. तब हू कृष्णदासने नाहीं करी. तब वा म्लेच्छने जान्यो, जो यह कृष्णदास पास कछू द्रव्य नाहीं है. पाछें वाही समै कृष्णदासकी बेड़ी कढाइ और सिरोपाव पहराइ परगने पर पठायो. सो फेरि कृष्णदास परगनो आछी भांति कमात हते.

भाव प्रकाश :

या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो जीवकों भगवद्धर्ममें दृढ विश्वास राखनो. भगवद्धर्मकी आगें देहादिके सुख तुच्छ करि जानने. सो दुःख परे तोउ अपने धर्मकौ त्याग न करनो. सो जीव धर्म न छोरे तो श्रीठाकुरजी याकी सहाइ करें. श्रीठाकुरजी तो अपने अनन्य भक्तनकौ दुःख सहि सकत नाहीं. काहेतें जो श्रीठाकुरजीकौ मृदुल स्वभाव है. तातें जीवकों एक अनन्य ब्रत राखनो.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

पाछें केतेक दिनकों श्रीरुक्मिनी बहूजीकी खबरि कृष्णदासने सुनी. तब कृष्णदास अपने मनमें बोहोत खेद पायो. पाछें क्षौर करवायकै कृष्णदासने अपने मनमें यह विचार्यो, जो अब यह देह रह्यो कछू कामकौ नाहीं. तातें अब यह देह छूटे तो आछी बात है. और आपुनकों आत्महत्या हू करनी उचित नाहीं. पाछें एक म्लेच्छ वा गाम उपर चढिकै (आयो) ता लराईमें कृष्णदासने देह छोरी.

भावप्रकाश :

सो भगवदीयनकों जो काम करनों सो विचार कै करनो. कोऊ बातमें अन्याश्रय (अरु) कलङ्क न लागे सो काम करनो.

पाछें कृष्णदासकी खबरि वा म्लेच्छने सुनी तब वह म्लेच्छ अपने मनमें बोहोत पश्चात्ताप करन लाग्यो. पाछें वह अपनी सभामें कहतो, जो कृष्णदाससो मनुष्य मोकों कोऊ मिलिवेकौ नाहीं. ऐसें कहिकै वह म्लेच्छ बारबार सभामें पश्चाताप करतो. तातें तबके म्लेच्छ हू वैष्णवकी सङ्गति करि या प्रकार वैष्णवकौ स्वरूप जानतें. तातें जो कृष्णदासने अपनो धर्म राख्यो तो कृष्णदासकों श्रीठाकुरजी वा म्लेच्छकौ हृदौ

प्रेरिकै सहाइ भए.

सो वे कृष्णदास श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए । वार्ता ।।२४।।

२५-जनार्दनदास कायस्थ

अब श्रीगुसांईजीके सेवक जनार्दनदास कायस्थ और गोपालदास सहगल क्षत्री, सिंहनन्दके बासी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें ललिताजीकी सखी 'रत्नप्रभा' हैं, ताकी ये दोउ सखी हैं. 'बिमला' और 'निर्मला' इनकौ नाम हैं. सो विमला तो जनार्दनादस कायस्थ भए. और निर्मला गोपालदासकौ प्रागट्य. सो दोउ रत्नप्रभा तें प्रगटी हैं, तातें इनके भावरूप हैं.

ये सिंहनन्दमें एक कायस्थ, एक सहगल क्षत्री, (ये) दोउ पास पास रहत हते, तहां जन्म दोउ लिये. सो कायस्थके घर जनार्दनदास प्रगट भए. ताके केतेक दिन पाछें वा क्षत्रीके उहां गोपालदास जन्में. सो जनार्दनदास गोपालदास बरस पांच सातके भए तब तें दोउनमें प्रीति बोहोत. सो दोउ विरक्त वैरागीनके पास जांय. कथा - वार्ता सुने. ऐसें करत ये दोउ बरस बीस - बाईसके भए तब दोउनके माता - पिताने इनकौ ब्याह कियो. पाछें कछूक दिनमें दोउनके माता - पिता मरे. तब ये दोउ म्लेच्छके चाकर रहे. घरकों सम्हारन लोग. परि दोउनकी साधु - वैरागिनमें प्रीति बोहोत. जो कोऊ साधु वैरागी गाममें आवतो ताकौ ये भली भांति समाधान करे. वाकौ उपदेश सुने. या प्रकार ये दोउ रहते.

सो एक दिन वासुदेवदास छकड़ासों ये दोउनकों मिलाप भयो. सो वासुदेवदास छकड़ा सो दोउन कह्यो, जो वासुदेवदास ! कोई ऐसो महापुरुष हैं, जो हमकों भगवान्‌के मिलिवेकौ प्रकार समुझावें ? तब वासुदेवदास दोउनकों दैवी जीव जानि कहे, जो तुमने आज लों अनेक साधु - वैरागिनकौ सङ्ग कियो

सो उनने तुमकों कहा कह्यो ? तब दोउ जनें वासुदेवदाससों कहे, जो कोऊ तो तप करनकों कहत हैं, तो कोऊ सन्यासी होंनकी कहत हैं, (और) कोऊ कहत हैं, जो दान पुन्य करो. ता करि प्रभु प्रसन्न होत हैं. और काहू कह्यो, जो पूजा पाठ उपासना आदि किये तें प्रभु प्रसन्न होत हैं. परि हमकों तो ये कछू समुझ परत नाहीं. कछू रुचत नाहीं. या कालमें ये सब साधन कैसें होंई ? तब वासुदेवदास कह्यो, जो तुम हमारी बात मानो तो हम तुमकों एक बात कहें ? तब जनार्दनदास, गोपालदास दोउ हाथ जोरिकै कहें, तुम जो कछू कहोगे सो हम मानेंगे. तब वासुदेवदास कह्यो, जो कछूक दिनमें अड़ेल तें श्रीगुसांईजी आप थानेश्वर पधारत हैं. सो तुम उनकी सरनि जइयो. वे तुमकों सब बात समुझावेंगे. तब तो ये दोउ प्रसन्न भए. पाछें कछूक दिनमें श्रीगुसांईजी आप थानेश्वर पधारे. तब इन सुनी, जो श्रीगुसांईजी थानेश्वर पधारे है. तब ये दोऊ थानेश्वर आई श्रीगुसांईजीके दरसन किये. पाछें ये दोउ श्रीगुसांईजीसों हाथ जोरि बिनती किये, जो महाराज ! हमकों वासुदेवदास छकड़ाने आपकौ नाम लै, कह्यो है, जो तुम उनकी सरनि जइयो. सो महाराज ! हम आपकी सरनि आए हैं. सो कृपा करि हमकों सेवक करिए. और महाराज ! हमारे मनमें बोहोत दिनसों प्रभु प्राप्तिकी चिन्ता रहत हैं. सो ताकौ उपाइ कृपा करि हमकों समुझाइए तो आछौ. तब श्रीगुसांईजी दोउनकौ शुद्ध भाव देखि आज्ञा करे, जो तुम सरस्वतीजीमें न्हाइ आओ. हम तुमकौ सरनि लै प्रभु - प्राप्तिकौ मार्ग समझावेंगे. तब तो दोउ अति प्रसन्न व्है सरस्वती न्हान गए. सो न्हाइकै अपरसही में श्रीगुसांईजी पास आई ठाड़े रहे. तब श्रीगुसांईजी आप दोउनकों कृपा करि नाम निवेदन कराए. पाछें दोउनकों निवेदनकौ स्वरूप समुझाइ कहें, जो प्रभु तो सर्वतन्त्र स्वतन्त्र हैं. तातें कोई साधन करि उनकों प्राप्त करनो चाहे तो वे सर्वथा प्राप्त न होंई. वे तो अपनी कृपातें आप ही प्रसन्न व्है जीवकों प्राप्त होत हैं. तब दोउन श्रीगुसांईजीसों बिनती किये, जो महाराज ! उनकी कृपा कैसे प्राप्त होंई ? तब श्रीगुसांईजी दोउनसों प्रसन्न व्है आज्ञा किये, जो प्रभुनकी सरनि जात हैं ता पर प्रभुकी कृपा होत हैं. तातें मन, वाचा, कर्म करि उनकी सरनि रहनो. यही प्रभु - प्राप्तिकौ एक मात्र उपाइ है. सो तुमकों या निवेदन मन्त्रद्वारा हमने यह उपाइ बतायो है, ताकौ तुम हृदयमें धारन करियो. या प्रकार श्रीगुसांईजीके बचन सुनि ये दोउ हाथ जोरि बिनती किये, जो महाराज ! प्रभु - प्राप्तिकौ उपाइ तो प्रभु ही जानें. तातें आपने या प्रकार सरल उपाइ दिखायो, सो आप प्रभु हो. आपके बिना या प्रकार निवेदनकौ विलक्षन मार्ग और कौन जानि सके ? सो या प्रकार जनार्दनदास गोपालदास श्रीगुसांईजीकों ईश्वर करि माने, अपने स्वामि जाने ! पाछें जहांलों श्रीगुसांईजी थानेश्वर बिराजे तहां लों इन दोउं सेवक भाव तें श्रीगुसांईजीकी टहल किये. सो ये दोउ निवेदनके भावमें सदा मगन रहते.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वे जनार्दनदास और गोपालदास ए दोउ चाकर हते. सो एक समै जाके पास जनार्दनदास, गोपालदास चाकर रहते, ताके देसमें श्रीगुसांईजी आपु पधारे. सो ये दोउ जनें अपनी स्त्री लरिका लै कै वा समै घुड़सारमें आई रहे. और घरमें श्रीगुसांईजीके डेरा कराए. पाछें सगरे घरनकी तारी भण्डारीकों सोंपि आए. और भण्डारीसों जनार्दनदास गोपालदास कहे, जो चहिए सो सर्व घरमें तें खरच करियो. और अपनो सीधो दोउ जने बजारसो मंगावे. और माटीके पात्रनमें रसोई करिकै काम चलावे. पाछें जब श्रीगुसांईजी चलिवेकौ विचार करे. तब ये दोउ जन भण्डारीसों कहे, जो कछू या घरमें सामान है सो सब तुम्हारो है. गहेनां, पात्र, कपड़ा, अन्न, खाट, पीढा, जो कछू तिहारे काम आवे सो तो राखो. नाहीं तो ताकों बेचिकै दाम करि अपने साथ लै जाऊ. तब भण्डारीने जनार्दनदास गोपालदासके कहे प्रमान श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मांगिकै दाम किये. पाछें श्रीगुसांईजी तहां तें विजय किये. तब ये दोउ जन वा घरमें आई रहे.

भाव प्रकाश :

या वार्तामें स्वामि - सेवक भाव दृढ जतायो. काहेतें, जो जनार्दनदास गोपालदास दोउ श्रीगुसांईजीके सेवक हैं. सो स्वामीके आगें सेवककों अपनी सब वस्तू निवेदन करनी चहिए. या भाव तें जनार्दनदास गोपालदासने अपनी सब वस्तू श्रीगुसांईजीकों समर्पन करी.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

पाछें केतेक दिनकों ये दोउ जन मुलतानकी ओर परगनो कमावन चले. सो जांइ पहोंचे. तहां कोऊ चारि भाट एक दिन आए. तिन भाटन इनके बाप दादेकौ जस बड़ी बार लों बरनन कर्यो. परि इनने वा बातमें चित्त न दियो. पाछें काहूने उन भाटनसों कह्यो, जो तुम श्रीआचार्यजीके तथा श्रीगुसांईजीके कवित्त छन्द पढोगे तब तिहारो ये दोउ जन समाधान करेंगे. तब वे भाट श्रीआचार्यजीके श्रीगुसांईजीके कवित्त छन्द पढन लागे. सो सुनिकै ये दोउ अति प्रसन्न होइकै उन भाटनकौ समाधान किये. पाछें वे अपने घर आए.

भावप्रकाश :

या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो भगवदीय अपनो जस चाहत नाहीं. वाकों तो अपने स्वामीकौ जस सुने तैं ही सुख होत हैं. तातें जनार्दनदास गोपालदास

श्रीआचार्यजीके श्रीगुसांईजीके कवित्त छन्द सुने तब प्रसन्न भए.

तहां तें केतेक दिन पाछें ये दोउ जन और परगनेकों चले. सो जनार्दनदास वा परगने उपर जाई पहोंचे. ता परगनेमें जनार्दनदास आप तो मुसरफी करते. और गोपालदास तहसीलदारी करते. सो वा परगनेमें एक म्लेच्छ दरोगा रहे. सो मुलककौ पैसा सब गोपालदासके हवालें रहे. सो गोपालदास वैष्णवनकों प्रसाद लिवावे. और हू कितनो द्रव्य श्रीगोकुल श्रीगुसांईजी पास पठावे. सो केतेक दिन पाछें हिसाब करन, जाकौ परगनो कमायो हतो ताके पास ये तीनों जन गए. ताकों हिसाब सब समझावन आए. तब गोपालदासके माथे दाम बोहोत बाकी रहे. सो वा म्लेच्छने गोपालदास जनार्दनदासकौ और वा दरोगा म्लेच्छकौ इन तीनोंनके महिना काटि लिये. परन्तु तोउ वाके द्रव्यकौ पूरो न पर्यो. तब वा दरोगा म्लेच्छने वा सिरदारसों कह्यो, जो इन दोउ जनेंनकों दूरि करिए. तब वा सिरदारने दरोगासों कह्यो, जो इनके प्रतापतें तो तेरो मेरो भलो होत है. तासों इनकों दूरि क्यों करिए ? तब वा दरोगाने कह्यो, जो तुम हमारो महिना क्यों काटे हो ? तब वा सिरदारने वा दरोगाकौ द्रव्य दियो. जनार्दनदासकौ हू द्रव्य जनार्दनदासकों दियो. गोपालदासके माथे द्रव्य रह्यो. सो गोपालदासकों माफ किये. पाछें फेरि इन तीनों जनकों सिरोपाव दै परगना कमावन पठाए.

भाव प्रकाश :
तातें भगवदीयनके सङ्गतें तबकै म्लेच्छन हू की बुद्धि ऐसी रहती. यासों भगवद्भक्तकौ सङ्ग करनो.

वे गोपालदास जानर्दनदास श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे. इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ? वार्ता ।।२५।।

२६-हरिदास बनिया मेरताके

अब श्रीगुसांईजीके सेवक हरिदास बनिया, मेरताके, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो प्रथम मेरतामें कोई वैष्णव न हतो. वा मेरताकौ राजा जेंमलजी रजपूत महा सैव हतो. तासों सगरो गाम राजाके धर्ममें चलतो. सो एक वार श्रीगुसांईजी श्रीरनछोरजी दरसनकों द्वारिकाजीकों पधारे. तब मेरताके बाहिर श्रीगुसांईजीके डेरा भए. सो वा दिन सांझकों हरिदास गाम बाहिर आए हते. तहां श्रीगुसांईजीके दरसन हरिदासने करे. पाछें तो हरिदासके मनमें यह आई, जो हम तो इनके सेवक होइंगे. तब वा समै श्रीगुसांईजी चौकी उपर बैठे सन्ध्यावन्दन करत हते. इतने ही हरिदास श्रीगुसांईजी आगें दण्डवत् करि बिनती किये, जो महाराज ! मोकों आपु कृपा करिकै नाम सुनाओ. हों ता आपुकौ सेवक होउंगो. तब हरिदासकी अवस्था बरस अठारहकी हती. सो वाही समै श्रीगुसांईजीने हरिदासकों नाम सुनायो. पाछें निवेदन करायो तब हरिदास अपने घर आई अपनी स्त्रीकों और अपनी बेटीकों वाही समै श्रीगुसांईजी पास लिवाइ जांइकै नाम निवेदन करवाए. पाछें हरिदास यथासक्ति भेंट करि श्रीगुसांईजीसों बिदा मांगि अपने घर आए.

पाछें केतेक दिनकों श्रीगुसांईजी द्वारिकातें पाछें फिरि आई, मेरताके बाहिर वाही प्रकार डेरा किये. तब प्रभुनकों पधारे जानि हरिदास दरसनकों आए. तहां आई हरिदास दरसन श्रीगुसांईजीके करि दण्डवत् करि बिनती करे, जो महाराज ! मोकों कछू सेवा आपु कृपा करिकै पधराइ देहु. तब श्रीगुसांईजी उनके माथें भगवद् सेवा पधराए. पाछें सवारे भए हरिदास श्रीगुसांईजीकों अपने घर पधराए. तब श्रीगुसांईजी श्रीठाकुरजीकों स्नान कराइ अङ्गवस्त्र करि सिंगार - बागा रितु अनुसार धराइ भोग समर्पि आपु रसोइ करि भोग सराइ राजभोग श्रीठाकुरजीकों समर्प्यो. पाछें समै भए भोग सराइ आर्ति करि अनोसर करवाइ श्रीठाकुरजीकों, आपु भोजन करिकै उन तीनोंनकों पातरि धरिकै श्रीगुसांईजी तों पोढिवे पधारे. पाछें विश्राम करि उत्थापन समै श्रीगुसांईजी गादी - तकिया पर बिराजे. तब हरिदासने श्रीगुसांईजीसों सर्व सेवाकौ प्रकार पूछिकै प्रभुनकों विजय तिलक कर्यो. सो बिदाकी भेंटमें हरिदासके घरमें जो कछू हतो, सो सर्व श्रीगुसांईजीकों समर्प्यो. पाछें तहां तें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुलकों विजय करे. तब ये हरिदास थोरीसी दूरिलों श्रीगुसांईजीकों बिदा करि अपने घर आए. पाछें श्रीठाकुरजीकी सेवा हरिदास भली भांतिसों करते.

भावप्रकाश :
सो हरिदास लीलामें ‘रत्नप्रभा’ की सखी हैं. ‘प्रवालिका’ इनकौ नाम है. ये तामस भक्त हैं, रत्न तें प्रगटी हैं, तातें इन के भाव रूप हैं. और प्रवालिकाकी दोइ सखी हैं. सो उन कौ नाम एक कौ ‘उजियारी’ है. एक कौ नाम ‘सीतला’ है. सो हरिदासकी बेटी ‘उचियारी’ कौ स्वरूप और हरिदासकी स्त्री ‘सीतला’ कौ प्रागट्य जाननो. सो ये दोऊ यहां हू हरिदासको सेवामें सहायक भई.

सो यों सेवा करत ही हरिदासकों केतेक दिन बीते. तब काहूने जेंमलजीसों जांइकै हरिदासकी चुगली करी. जो एक बनिया हरिदास अपने गाममें रहत हैं. सो वह एकादसी पाछली करत हैं. और तिहारे मन्दिरमें दरसनकों नाहीं आवत. यह वाकौ बचन सुनत ही हरिदासके उपर राजाने बोहोत ही बुरो मान्यो. सो वाही समै राजाने अपने चार मनुष्य हरिदासके बुलावनकों पठाए. और उन मनुष्यनसों राजाने यह कह्यो, जो अब ही हरिदासकों यहां बुलाइ लावो. सो मनुष्य हरिदास पास आई हरिदाससों कहें, जो तुमकों अबही जेंमलजीने बुलाए हैं, तासों तुम बेगि चलो. सो हरिदास वाही समै उन मनुष्यनके साथ जेंमलजीके दरबारमें आई सलाम करि ठाढ़े रहे. तब मनुष्यन राजासों कह्यो, जो हरिदास आए हैं. तब राजा जेंमलजी रिस करि हरिदाससों कहे, जो क्यों रे हरिदास ! तू हमारे मन्दिमें दरसन क्यों नाहीं करत ? और तू पाछली एकादसी क्यों करे है ? तब हरिदासने रिस करिकै जेंमलजीसों कही, जो जेंमल ! या तेरे गाममें रहे तासों कहा तेरो धर्म करेंगे ? तो सारिखे राजा हमारे प्रभुनके दरसनकी अभिलाषा करत अनेक द्वार पर परे हैं. तू तो इहां अपने मनकौ बड़ो राजा कहावत है ? तब हरिदासके बचन सुनिकै राजा बोहोत क्रोध कर्यो. सो कह्यो जो देखो तो यह बनिया कौनकी हिमायत सों बोलत है ? तातें याकों तुरत ही खरच करि डारो. सो वा हरिदासकों वे मनुष्य मारनकों लै चले. सो राजाकी बहनिने ये सब समाचार, न्यावकौ प्रकार, अपनी लोंडीके मुख सुन्यो. सो वह राजाकी बहनि हू श्रीगुसांईजीकी सेवकनी हती. तानें जान्यो, जो यह वैष्णव नाहक मार्यो जात है. सो वे अपने द्वार पर आई ठाढ़ी रही. पाछें जब ही वे मनुष्य हरिदासकों दरबारसों सङ्ग लै कै जनानी ड्योढ़ीके आगें आए, इतने ही वह राजाकी बहनि बाहिर निकसि हरिदासकों हाथ पकरिकै अपने महलमें लिवाइ गई.

भाव प्रकाश :

काहेतें, लीलामें ये ‘प्रवालिका’ की सहचरी है. इनकौ नाम ‘प्रेममञ्जरी’ है. सो दोउनकौ भाव मिलत हैं. तातें दोउनमें अधिक प्रीति है. और प्रेममञ्जरीकी एक सखी है. ताकौ नाम ‘किसोरी’ है. सो इहां राजा जेंमल भये.

तब वे मनुष्य आई राजासों ये समाचार कहे. जो महाराज ! वा हरिदासकों तो तुम्हारी बहनि हाथ पकरि हमारे हाथसों छुराइकै भीतर लै गई. तब तो राजा ये समाचार सुनिकै अति क्रोधित भयो. जो देखो ! मेरी बहनिने अजहू काहू पुरुषकौ मुख देख्यो नाहीं. सो बनियाकौ हाथ पकरिकै महलमें लै गई है. तासों मेरो नाम जेंमल खरो तब, जो प्रथम तो या बहनिकों मारों. पाछें बनियाकों मारों. यह अपने मनमं निर्द्धार करिकै हाथमें एक तरवार नांगी लै जेंमलजी अपने बहनिके घरमें आए. तहां देखे तो बहनिनें हरिदासकों एक चौकीके उपर बैठाए हैं. और आप ठाढ़ी - ठाढ़ी वाको पंखा करति हैं. सो यह राजा जेंमलजी जांइकै बहनिके आगें ठाढ़ो भयो. तब वा बहनिनें राजाकों क्रोधित जानिकै हंसिकै कह्यो, जो वीरा ! तू तो आज अपनो घर खोयो होतो. परि ऐसी प्रभु क्यों करे ? जो हमारे कुलकौ नास होंइ ? जा गाममें एक हू वैष्णव होंइ तो वह सगरे गामकौ उद्धार करे. तातें तू अब इनके पांवन परि. यह तो श्रीगुसांईजीकौ सेवक वैष्णव है. याके माथे त्रैलोक्याधिपति बिराजत हैं. तातें इनकौ अपराध क्यों करिए ? तब राजाने कही, तो अब हों कहा करों ? पाछें यह राजा अपने मनमें डरपिकै हरिदासके पांइ छू कै अपने दरबार गयो.

और राजाने अपनी बहनिसों कह्यो, जो तू इनकी आछी भांतिसों सेवा करियो. इनकों प्रसन्न करिकै मेरो अपराध छिमा करायके घर पठाइयो. यह कहि राजा तो दरबार, हरिदाससों बिनती करिकै गयो. तब राजाके गए पाछें राजाकी बहनिने हरिदाससों कही, जो हरिदासजी ! जल लेहु. तब हरिदासने कह्यो, जो हों तो अपने घरके अतिरिक्त और कहूं जल लैत नाहीं. तब राजाकी बहनिने जान्यो, जो यह अब ही मोकों वैष्णव जाने नाहीं. तब हरिदासकौ हाथ पकरिकै राजाकी बहनिने अपने महलमें लिवाइ जाइकै अपने श्रीठाकुरजीके दरसन हरिदासकों करवाए. सो श्रीगुसांईजी वाके माथे बिराजते. सो प्रभुनके हस्ताक्षर हते. तिनके दरसन हरिदासने आछी भांतिसों करे. तब हरिदासने साष्टाङ्ग दण्डवत् करी. और बोहोत प्रसन्न भए. पाछें जल हू तहां लियो. तब हरिदासने राजाकी बहनिसों पूछ्यो, जो तुम कौन प्रकार श्रीगुसांईजीके सरनि आए हो ? तब राजाकी बहनिने हरिदाससों कह्यो, जो मैं बरस बीसकी हती. तब एक दिन हों अपनी अटारी

उपर चढी हती. तब श्रीगुसांईजी अमूके बागमें डेरा किये हते. सो मैं प्रभुनके दरसन पाए. तब मैं एक बिनती - पत्र लिखि एक लोंडीके हाथ प्रभुन पास पठायो. ता पत्रमें मैंने अपने घरके सर्व समाचार लिखि पठाये. जो महाराज ! मेरे घरकी तो सङ्गति या भांतिकी है. तासों मेरो आवनो तो आपकै दरसनकौं होइ सकत नाहीं. और आपहूकौ पधारिवो मेरो घर होत नाहीं. सङ्ग मोकों अति दुष्टनकौ है. और मेरो तो उद्धार कर्यो चहिए. हों तो आपकी दासी हूं. तासों आपु मोकों काहू प्रकार अपनी सेवक करो. और या पत्रकौ प्रतिउत्तर हू पत्रमें आप कृपा करिकै लिखि पठाओगे. तब वा लोंडीने जाइकै मेरो पत्र श्रीगुसांईजीके श्रीहस्तमें दियो. सो पत्र प्रभुन बांच्यो. पाछें श्रीगुसांईजी मेरी बोहोत आर्ति जानि मो उपर कृपा करिके 'निवेदन'कौ पत्र लिखि पठायो. ता पत्रमें यह प्रकार प्रभुन लिख्यो, जो तू स्नान करिकै अपरसमें यह पत्र बांचियो. सो प्रभुनकी आज्ञा प्रमान कियो. पाछें मैं सेवा पधराइवेकौ बिनतीपत्र लिखि पठायो. तब श्रीगुसांईजी आप कृपा करिकै नित्यकौ तथा बरस दिनके सर्व उत्सवकौ प्रकार प्रनालिका लिखि पठाए. सो हों या प्रकार प्रभुनकी आज्ञा प्रमान सेवा करत हों. तब राजाकी बहनिके समाचार सुनिकै हरिदास बोहोत आनन्द पाए. पाछें हरिदासकों वाने सांत करि घर पठाए. सो हरिदास अपने घर आए.

पाछें यह बात केतेक दिनमें श्रीगोकुलामें श्रीगुसांईजी सुने. तब आपु श्रीगुसांईजी श्रीगोकुलतें श्रीरनछोरजीके दरसनकों द्वारिकाजी पधारत हे. सो आप जब मेरताके पास आए तब अपने मनुष्यनसों श्रीगुसांईजी यह आज्ञा करे, जो मेरताकों बांयों छोरि चलियो. वा गामकी राह छोरि दीजियो. तब श्रीगुसांईजी मेरताकी सींव छोरिकै पधारे. तब हरिदास आगें जाई श्रीगुसांईजीके दरसन करि दण्डवत् करे. पाछें श्रीगुसांईजीसों बिनती करि उहां डेरा कराए. तब हरिदासने श्रीगुसांईजी आगें भेंट करी. और राजाकी बहनिनें भेंट पठाई हती सो भेंट करि दण्डवत् कर्यो. तब श्रीगुसांईजीने हरिदासकों सर्व समाचार पूछे. सो हरिदासने सर्व समाचार प्रभुन आगें कहे. तब श्रीगुसांईजी हरिदासके बचन सुनिकै बोहोत प्रसन्न भए. पाछें टोकरी खोलि भोग धरि श्रीगुसांईजी कछू भोजन करि आगेकों पधारे.

पाछें जेंमलजीसों बहनिने कह्यो, जो देखि भाई ! तू वैष्णवकौ अपराध कर्यो. तो अबकै श्रीगुसांईजी तेरे गामकी सींवमें हू होइकै न पधारे. और ही गाममें भए जात हैं. देखि ! वह धूरि उड़त है. सो प्रभु द्वारिकाजीकों पधारे हैं. तब जेंमलजीने अपनी बहनिसों कह्यो, जो तू

मोसों कहे तो हों श्रीगुसांईजीकौ रथ पाछो फिराइ मंगाउं. तब बहनिने राजासों कही, जो यह काम जोरकौ नाहीं. यह काम है सो दीनताकौ है. तासों अब जो, जब श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी तें पाछें फिरें तब तू दीनता करिकै अपने गाममें पधराइयो. तब जेंमलजीने बहनिसों कह्यो, जो बोहोत भलें. फिरती बेर अपने गाममें पधराउंगो. पाछें राजाने द्वारिकाजीसों और मेरतासों डाक चौकी बेठारि दीनी. जो श्रीगुसांईजी जब द्वारिकाजीसों फिरें, और जहां जहां डेरा होंइ तहां तहांकी खबरि सब मोसों करियो. या प्रकार डाक - चौकी वारेन सों जेंमलजीने कहि दई. सो नित्यकी खबरि जेंमलजी पास आवें. श्रीगुसांईजी श्रीरनछोरजीके दरसन करिकै फिरे तब गाम गामके डेरानकी खबरि जेंमलजी पास आईवो करी. तब राजा प्रभुनकों अपने गामके निकट पधारे जानि एक मनुष्य हरिदास बनियाकों बुलाइवेकों पठायो. सो हरिदास आयकै राजाके दरबारमें ठाढ़े रहे. तब वह जेंमलजी हरिदासके हाथ पकरिकै एकान्त ठौर लै जांइ राजा जेंमलजी हरिदाससों बिनती कियो. जो आज श्रीगुसांईजीके डेरा अमूके गाममें है. तासों काल्हि आपुन इहांसों चलिकै प्रभुनके दूसरे दिन दरसन करि अपने गाममें डेरा करवाइये. परि जो तुम मेरो अपराध क्षमा करि मेरे उपर दया करिकै मोकों अपने साथ लै कै प्रभुनकौ दरसन कराओ. जो तुम्हारी कृपा तें हम कृतारथ होइंगे. तुम वैष्णव हो तासों हम उपर यह कृपा अवश्य करो. या प्रकार जेंमलजीने हरिदाससों बोहोत ही बिनती करी. तब हरिदास राजाकौ शुद्ध भाव जानि कृपा करिकै प्रसन्न होइकै राजासों कह्यो, जा आछी बात है. तब दूसरे दिन हरिदासकों साथ लै राजा बाहिर गामके आयो. जब श्रीगुसांईजीकी खबरि निकट बोहोत ही पधारेकी सुनी तब जा मार्ग होइकै प्रभु प्रथम पधारे हते ता मार्गमें जांइ ठाढ़ो होइ रह्यो. पाछें श्रीगुसांईजीने जेंमलजीकी फौज देखी. तब काहूसों पूछ्यो, जो यह फौज कौनकी है ? तब वानें श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! यह फौज तो मेरताके राजा जेंमलजीकी है. तब वाके ये बचन सुनिकै श्रीगुसांईजीने अपनो रथ और ही मार्गकों हांक्यो. तब जेंमलजी ता मार्गमें हरिदासकों साथ लै, दौरि जांइकै श्रीगुसांईजीके रथके आगें राजा जेंमलजी लोटि गयो. पाछें रथ सारथीने ठाढ़ो राख्यो. तब हरिदास श्रीगुसांईजीसों दण्डवत् करि बोहोत प्रकारसों बिनती कियो, जो महाराज ! यह जेंमलजी आपकों पधरावन आयो है. सो दण्डवत् करिवेकी बिनती करत है. तब प्रभुन जेंमलजीकों दण्डवत् करनकी आज्ञा करी. तब हरिदासने जेंमलजीपैं प्रभुनकों दण्डवत् कराई. पाछें जेंमलजीने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! धन्य भाग्य हरिदासके हैं, जो यह आपकी सरनि हैं. आपु याके प्रभु गोकुलाधिपति कहावत हो. मैं तो महा अज्ञान हूं. मैं तो हरिदास पर अति मन्द बुद्धि ठानी हती. परि जाके माथे आप सारिखे प्रभु बिराजत हो, तासों जीवकी गति कौन प्रकार बाधक करे. तातें महाराज ! अब तो हों आपकी सरनि हूं.

आपकी इच्छामें आवे सो मेरो करो. परि एक बार तो मोकों आपु इहांई कृपा करिकै नाम सुनाइकै पाछें मेरे गाममें पधारिए. यह कृपा मेरे उपर करिए. या प्रकार जेंमलजी राजाने श्रीगुसांईजीसों बोहोत बिनती करी. तब श्रीगुसांईजी वाकौ शुद्ध भाव जानिकै वाइ ठौर स्नान कराइ नाम सुनायो. पाछें आपु श्रीगुसांईजीने रथ फिरायो. सो जेंमलजीके गाममें पधारिकै हरिदास बनियाके घर डेरा किये. सो जहां सों जेंमलजीने नाम पायो तहां सों जेंमलजी प्रभुनके रथके साथ पांवन पांवन आयो. पाछें प्रभुनके डेरा हरिदासके घर करवाइकै राजा अपने घर गयो. ता पाछें राजा जेंमलजीने सगरे गाममें ढंढेरा पिटाइ दियो. जो भाईरे ! जो कोई श्रीगुसांईजीकौ सेवक न होइगो सो मेरे गाममें न रहन पावेगो. सो सब गाम श्रीगुसांईजीके पास नाम पायो. पाछें राजा जेंमलजी अपनी बहनि पुत्रादिक सगरेनकों नाम निवेदन करवायो. पाछें श्रीगुसांईजीकों अपने घर पधराए. तब श्रीगुसांईजी राजाकों श्रीठाकुरजीकौ स्वरूप दै, पञ्चामृत स्नान कराइ, आपु उहांइ रसोई करि, श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पिकै समयानुसार भोग सराइ आरती करि, अनोसर करवाइ आपु भोजन करि विश्राम उहांइ करे. पाछें श्रीठाकुरजीकी सेवाकौ प्रकार सर्व राजाने श्रीगुसांईजीसों पूछ्यो. सो प्रभुन सर्व बतायो. ता पाछें जेंमलजी राजाने केतेक दिन श्रीगुसांईजीकों मेरतामें राखे. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारन लागे. तब राजासों प्रभुन यह कह्यो, जो तोकों पूछनो होइ सो हरिदाससों पूछियो. तब राजा बोहोत प्रसन्न होंइ श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि बोहोत भेंट धरिकै प्रभुनकों श्रीगोकुलकों बिदा किये. पाछें श्रीगुसांईजी जेंमलजी सों बिदा होंइकै हरिदासके घर एक दिन बिराजे. ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुलकों विजय किये. तब सगरो गाम श्रीगुसांईजीकों पहोंचावन आयो. पाछें सबनकों, राजाकों, हरिदासकों श्रीगुसांईजी घर पठाय, आपु प्रभु श्रीगोकुलकों पधारे.

भाव प्रकाश :

या वार्तामें भगवदीयनकौ प्रताप श्रीगुसांईजी जगत विख्यात प्रगट करे. जो जा गाममें एक हू वैष्णव होंइ तो काहू समें वा गामकौ उद्धार निश्चय होंइ तामें सन्देह नाहीं, यह जतायो.

पाछें केतेक दिनकों यह बात समाचार नागजी भटट गोधराके नें सुने. जो जेंमलजी सब मेरता सहित श्रीगुसांईजीके सेवक भए हैं. तब नागजी भटट गोधरातें मेरतामें आइकै जेंमलजी पास चाकर रहे. सो नागजीकों राजा कारकुन करिकै केतेक दिन पाछे पृथ्वीपति पातसाह

पास पठायो. तब नागजीसों जेंमलजीने कही, जो तुम पृथ्वीपति पास जांइ हमारो काम करि आओ. तब नागजी राजाकौ काम करि श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजी पास आई भेंट बोहोत करि दिन एक दोइ प्रभुन पास रहिकै फेरि मेरताकों आए. तब श्रीगुसांईजी नागजीकों आछी भांति बिदा किये. सो नागजी मेरता आई जेंमलजी राजाकों पृथ्वीपतिकौ परवानो दियो. सो जेंमलजी नागजी उपर बोहोत प्रसन्न भए. पाछे जेंमलजी आगें नागजी कुल्ल दीवान भए.

सो वह जेंमलजी राजा बहनिके उपदेशसों ऐसो वैष्णव भयो.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
और हरिदास बनियाके एक बेटी हती. सो वह बेटी बड़ी भई. जब हरिदास सोच करन लागे, जो अपनी ज्ञातिमें तो कोऊ वैष्णवकौ बालक है नाहीं, जो वाकों दीजिये. ऐसें सोच हरिदास बोहोत ही करन लागे. परि कोऊ लरिका कहूं नजरि न आयो. पाछें एक दिन हरिदास अपने प्रोहितकों बुलाइ वाके साथ अपनी बेटीकों दै, कछू द्रव्य विवाहकों दै, वा प्रोहितसों हरिदासने यह कह्यो, जो प्रोहितजी ! या लरिकीकौ तुमही कहूं आछौ घर, वर, देखिकै इहां तैं दूरि देसमें कहूं याकौ विवाह करि आओ. सो प्रोहित एक बार तो बर देखिवेकों गयो. सो द्वारिकाजीके मार्गमें एक बर सों हरिदासकी बेटीकी सगाई करि, पाछें फिरि आइकै, इहां तैं वा लरिकीकों सङ्ग लै जांइकै वहां विवाह करि आयो. पाछें ये सब समाचार वह प्रोहित हरिदाससों कह्यो. जो अमूके गाममें अमूके बनियाके छोहराकों तिहारी बेटीकी सगाई करि, विवाह आछी भांति करि आयो हूं. तब हरिदास प्रोहितके बचन सुनि चुपि करि रहे. पाछें वा प्रोहितकों यथासक्ति दै हरिदास बिदा किये.

वे हरिदास श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे. सो सगरे गाम सहित राजा जेंमलजीकों वैष्णव कियो. ता दिनतें जेंमलजीकों जो कछू पूछनो होंइ सो हरिदाससों पूछिकै काम करते. और राजा जेंमलजी वा दिनतें हरिदासकी बोहोत कानि मानिकै डरपत रहतो. वे हरिदास श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२६।।

२७-माणिकचन्द, हरिदासके जमाई

अब श्रीगुसांईजीके सेवक मानिकचन्द, हरिदास बनियाकों जमाई, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वह प्रोहित याकौ विवाह करिकै चल्यो गयो. अब अपने घर आई माथो बांधिकै सोय रही. घरमें सगरेनकौ अनाचार देखिकै याके मनमें बोहोत ही ग्लानी उपजी. और याने अपने मनमें यह निर्द्धार कियो, जो इनकौ पानी हों तो पीवनो नाहीं. योंही परी रहूंगी. सो कोईक दिनमें तो देह छूटेगी. यों करत दिन दोइ तीन परी रही. तब एक दिन वाकी सासने खीझिकै कह्यो, जो बहू ! तू खात पीवत नाहीं सो कहा तू हमारे हत्या दैन आई है ! तू खात पीवत नाहीं सो कारन कहा है ? हमकों कहि तो सही. तब या बहूने श्रीगुसांईजीकौ स्मरन कर्यो, जो महाराज ! पिता - माताने तो मेरो त्याग कियो. जो मोकों या दुःसङ्गकौ मुख देखनो पर्यो. अब मैं काहूसों कहों सुनो नाहीं तोउ मेरी हत्यातें डरपत हैं. और मेरे मनकौ सङ्कल्प है सो तो आपु सब जानत हो. तासों अब तो तुम मेरी सहाइ करोगे तो मेरो कह्यो याके मनमें आवेगो. या प्रकार बोहोत ही आर्तिसों श्रीगुसांईजीसों हरिदासकी बेटीने प्रार्थना करिकै अपनी सासतें निधरकता सों बोली, जो सासुजी ! हों तो जब पानी पीउंगी जब अपने हाथ अपनो पानी भरि लाउंगी. पाछें हों ही रसोई करूंगी. वह मेरो पानी कोऊ छूवे नाहीं. तो तो मेरे पानी पियो जांइ. नांतरु यह मेरी हत्या मेरे पिता माताके उपर है. जो उनने मोकों अपने घर तें काढ़ि प्रोहित हाथ इहां विवाह करवायो. कै तुम सगरे मेरो कह्यो मानो तो जल पीउं. और तब ही अन्न खाउंगी. तब सासने कही, जो बहू ! जामें तेरो भलो होंइ सोई तू करि. तब अपनी साससों याने कह्यो, जो सासुजी! ये सगरे पानीके बासन नए मंगाओ. और ये रसोईके बासन नए मंगाओ. और हों ही पानीके बासन भरि लाउंगी. पाछें हों ही सब रसोई करि एक पातरि अपनी न्यारी करि धरूं. पाछें वह सब अन्न तुमकों तुम्हारे बासननमें ठलाइ देहुंगी. तब तुम्हारी इच्छामें आवे सो करो. फेरि मेरी रसोईकों कोऊ छूवन न पावे. तब सास (ने) बहूके ये बचन सुनिकै पात्र नए रसोईके मंगाइ दिये. पाछें सासने बहूसों कही, जो बहू ! अब तेरी इच्छामें आवे सो तू करि. जामें तेरी प्रसन्ना

होंइ. हम तोसों कोऊ कछू कहें, बोलेंगे नाहीं. तब वह बहू उठि स्नान करिकै जल भरि लाई. पाछें रसोई करि पातरि एक परोसि श्रीनाथजीकों भोग समर्पिकै साससों कही, जो अब तुम अपने बासन लाओ. तिनमें हों सर्व रसोई ठलाइ देउं. तब सासने अपने बासन ल्याइ धरे. तिनमें वह सर्व रसोई ठलाइ दीनी. आपु अपनी रसोईके पात्र मांजिकै न्यारे धरिकै रसोई पोतिकै घरके सबजन जें रहे, ता पाछें आप भोग सराय प्रसाद लियो. पाछें सीधो सब आछी भांति रसोईकौ बीनि राखे. जल अपनो भरि राखे. सो बड़ेई सवारें उठिकै रसोइ नित्य या प्रकार करिवो करे. सो सगरे घरके देखिकै याकौ आचार, विस्मित होंइ रहे. जो भाई ! अब तो कछू काम होत घरमें जान्यो जात नाहीं. सो या प्रकार करत हरिदासकी बेटीकों केतेक दिन होंइ गए. तब एक वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ सेवक वा गाममें रहत हतो. तिन याकौ या सब प्रकार सुन्यो. पाछें एक दिन वह वैष्णव अपनें घरसों पहोंचिकै हरिदासकी बेटीके घर आयो. तब याने वा वैष्णवकौ स्वरूप जान्यो.

भावप्रकाश :

सो यह वैष्णव लीलामें श्रीयमुनाजीकी सखी हैं. इनकौ नाम 'वैष्णवी' है. सो ये यहां नागर ब्राह्मनके घर जन्म्यो. सो एक समै श्रीगुसांईजी द्वारिकाजीकों पधारत हैं. तब या गामकी सींव पर श्रीगुसांईजी आप डेरा किये. ता समै यह ब्राह्मन श्रीगुसांईजीकौ सेवक भयो. पाछें श्रीगुसांईजी इनकों एक लालाजी सेवाकों पधराय आज्ञा करे, जो तू इनकी सेवा नीकी भांति सों करियो. सो ता दिनतें यह ब्राह्मन गुप्त प्रकारसों श्रीठाकुरजीकी सेवा करतो. काहेतें, ये जैनीनकौ गाम है. सो कहूं आचार - विचार दीसत नाहीं. यातें यह ब्राह्मन या प्रकार अपने ठाकुरकी सेवा करतो, जो कोऊ जाने नाहीं.

सो यह वा वैष्णवकों श्रीकृष्ण - स्मरन कर्यो. पाछें वा वैष्णवने या हरिदासकी बेटीसों पूछ्यो, जो तू कौन गामकी है. और कौनकी बेटी है ? कौनकी सेवक है ? तब याने अपने सर्व समाचार कहे. तब तो याकी बात सुनिकै वा वैष्णवकौ हृदौ भरि आयो. पाछें वा वैष्णवसों हरिदासकी बेटी अपने निर्वाहके सब समाचार कहिकै बिनती करी, जो एक बार तुम मोकों कृपा करिकै दरसन दै जायो करो. तब वा वैष्णवने यासों कह्यो, जो मोकों तेरे पास तेरे घरके नित्य आवत जानेंगे तो तोकों तेरे घरके सब खेद करावेंगे. तासों मेरो नित्यकौ तो आवनो न होइगो. कबहू काहू समै पाइकै आऊंगो. तब याने वा वैष्णवसों कही, जो तुमही मोकों अपनो घर बताइ देउ तो

हों ही तुमसों जल भरत समै श्रीकृष्ण - स्मरन करत जाऊंगी. तब वैष्णवने हरिदासकी बेटीसों कह्यो, जो यह हू बात कछू कामकी नाहीं. तेरी अवस्था और है. और तू तो अपने शुद्ध भावसों आवेगी; परि इहांके लोग महादुराचारी हैं. सो तेरे घरकेन सों कहेंगे. तोउ तोकों खेद होइगो. तासों एक बार हों ही तेरे घर आई श्रीकृष्ण - स्मरन करि जायो करूंगो. एसें कहि वह वैष्णव अपने घर गयो. पाछें वह वैष्णव नित्य अपने घरसों पहोंचिकै याके घर आइकै श्रीकृष्ण - स्मरन यासों करि जांइ. ता पाछें यह प्रसाद लेती. सो एक दिन वह वैष्णव सवारे याके घर आवनो भूलि गयो. और प्रसाद लै कै अपने कामकों गयो. पाछें हरिदासकी बेटीने तो अपनी पातरि ढांपि राखी. सो जब वह वैष्णव तीसरे प्रहर अपने घर उत्थापनके समै न्हान लाग्यो. तब वाकों सुधि आई. जा आजु हों हरिदासकी बेटीसों श्रीकृष्ण - स्मरन नाहीं करि आयो. सो वह स्नान करि श्रीठाकुरजीसों पहोंचिकै वाके घर आय श्रीकृष्ण - स्मरन करि अपने घर गयो. पाछें वह वा दिन रात्रिके समै प्रसाद लैन बैठी. तब वाकी सास वा पास आई वासों पूछी, जो बहू ! तू आज या समै क्यों जेंवत है ? तब याने अपनी साससों कह्यो, जो इहां गाममें मेरो एक गुरुभाई है. सो वह नित्य एक बार मोकों दरसन दै जात है. ता पाछें हों प्रसाद लेति हों. तब सासने बहूसों कह्यो, जो बहू ! तू धन्य है. जाकों अपने गुरु उपर ऐसी दृढ भक्ति है. तासों अब सवारे जब वह दरसन तोकों दैन आवे, तब तू वाके दरसन मोहूकों करवाइ दीजियो. तब तो बहू सासके बचन सुनिकै अपने मनमें बोहोत प्रसन्न होंइकै कही, जो अब इनकौ मन श्रीगुसांईजी फेर्यो दीसत है. जो इनकों वैष्णव उपर यह भाव उपज्यो है. पाछें सवारे वह वैष्णव इनके घर आयो. तब हरिदासकी बेटीने वा वैष्णवसों श्रीकृष्ण - स्मरन करि अपने घरके प्रथम दिनके सब समाचार कहे. सो वह वैष्णव याके बचन सुनिकै अपने मनमें बोहोत प्रसन्न होंइकै कह्यो, जो श्रीगुसांईजी सर्व सामर्थ्यवान् हैं. प्रभु हैं. उनकों जीवकौ मन फेरत विलम्ब न जानिये. परि अब तो ऐसी दीसत है, जो तेरे द्वारा इन सबनकौ प्रभु उद्धार करेंगे.

भाव प्रकाश :
काहेतें, ये दैवी जीव हैं. लीलामें सासकौ नाम तो 'कल्यानी' है. सो श्रीयमुनाजीके जूथकी है. और मानिकचन्दकौ नाम 'सुमति' है. सो 'सुमति' 'रत्नप्रभा'तें प्रगटी हैं. तातें इनके भावरूप है. ये सात्विक भक्त हैं.

तब वैष्णवके ये बचन सुनि यह बोहोत प्रसन्न होंइकै वा वैष्णवसों बोली, जो तिहारे आशीर्वादतें इनकौ कल्यान होइगो. तुमे बड़े भगवदीय हो. मोकों यह दीसत है, जो मेरे उपर श्रीगुसांईजीकी बड़ी कृपा है. जो पिता - माताने तो मेरो त्याग कियो. जैसें दूधमें तें मांखी काढ़िकै न्यारी करे. परि दूध आपसों मांखीकों कबहूं न न्यारी करे. परि कहा करे, वह दूध और वह मांखी आधीन पराए हैं. तासों वह न्यारी करि डारत हैं. तैसें स्त्रीकौ जन्म है सो माता - पिताके आधीन है. वह जाकों सोंपि देइ ताके आधीन होंइ रहनो परत है. परि वे पिता - माता हू कहा करें ? कालके आधीन है. लोकापवाद तें वेउ डरपत हैं. तातें वेउ कन्याकों बड़ी भए पाछें राखि सकत नाहीं. सो यह सर्व प्रभुनके हाथ तीनोंनकी डोरि है. तासों प्रभुन अपनेनकी डोरि दृढ़ करि गही है. सो छोरत नाहीं. तातें अपने जीवकों सङ्ग मिलाइ देत हैं. सो इहां श्रीगुसांईजी मोकों तुम्हारी सङ्गति अनायास मिलाइ दिये. तातें प्रभु जो श्रीगुसांईजी, सो परम दयाल हैं. याके ये बचन सुनिकै वह अपने मनमें बोहोत प्रसन्न होंइकै कह्यो, जो यह तो हरिदासकी बेटी है. जा हरिदासने राजा जेंमलजी सहित सगरे मेरताकौ उद्धार कर्यो है. ता हरिदासकी यह बेटी है. तो याकी ऐसी निर्मल बुद्धि होंइ ताकै कहा करनो ? पाछें वा बहूने जांइकै अपनी साससों कह्यो, जो सासुजी ! वह वैष्णव मोकों श्रीकृष्ण - स्मरन करन आयो है. तिनकों हों बैठारि आई हों. तुम उनके दरसनकों चलोंगी ? के वे अपने घरको जांइ ? तब वाकी सास वाके बचन सुनिकै अति आनन्द पाइ, वा वैष्णवके दरसनकों आई. सो आवत ही वा वैष्णवके पांवन परिकै वा वैष्णवसों कही, जो हमारे कुलकौ तो या बहूने उद्धार कियो. तब वह वैष्णव अपने मनमें वाकौ शुद्धभाव जानिकै बोहोत प्रसन्न भयो. तब वाकी सासने वा वैष्णवसों बिनती करी, जो यह बहू तो हमसों कछू भेद जनावत नाहीं. तासों तुम हम उपर कृपा करि अपनो प्रकार सुनाओ. तब वा वैष्णवने हरिदासकी बेटी ओर देख्यो. तब याने सेन ही में नाहीं करी.

भाव प्रकाश :
सो यातें, जो अभी आर्ति और हू बढैं तो आछौ. क्यों, जो आर्ति बढ़े बिना वस्तू फलेगी नाहीं. तासों बहूने सेन ही में नाहीं करी.

तब वा वैष्णवने वाकी साससों कह्यो, जो अब तो मोकों काम है. तासो हों तो या समै जाऊंगो. पाछें और दिन तुमसों यह समाचार कहूंगो. तब वाकी सास सुनिकै चुप करि रही. पाछें वा बाईने एक बिनती और करी, जो तुम मोकों और याकों नित्य एक बार दरसन

दै जायो करो. हमारे घरकौ कोऊ तुमसों कछू कहिवेकौ नाहीं. काल्हि तुम सवारे न आए हते तो यह रात्रिकों जेंई हती. तासों यह कृपा तो तुम हम उपर बेगि ही कर्यो करियो. हम तो सब तुम्हारे सेवक हैं. तब यह वैष्णव भलें कहिकै उठि चल्यो. पाछें वाकों नित्य दरसन दैन आवे तब वाकी सास नित्य वा वैष्णवसों कहे, जो मोकों अपनी सम्प्रदाय कब कहोगे ? यों कहत कहत इनकों बोहोत दिन बीते. तब वाकी आर्ति बोहोत जानी. तब एक दिन वा वैष्णवसों हरिदासकी बेटीने सेनही में कह्यो, जो तुम या मेरी सासतें कहो, जो तुमकों हमारी प्रथा सुनिकै कहा करनो है ? तब वाकी सासतें वा वैष्णवने कही, जो तुमकों हमारी प्रथा सुनिकै कहा करनो है ? तब वाकी सासने वा वैष्णवसों बिनती करी, जो तुम्हारो मार्ग अति उत्कृष्ट है. जो मोकों सुनिवेकी इच्छा है. तब वा वैष्णवने वाकी साससों कह्यो, तुम अन्यमार्गीय हो. तुम यह मार्ग सुनिकै कहा करोगे ? यह मार्गकी चर्चा हम अन्यमार्गीय आगें कहत नाहीं. तब याने कह्यो, जो तुम हमकों सेवक करो. तब वा वैष्णवने वासों कह्यो, जो हम तो काहूकों सेवक करत नाहीं. तासों सेवक करनवारे तो प्रभु श्रीगुसांईजी श्रीविटठलनाथजी महाराज श्रीगोकुलमें बिराजत हैं. तासों सेवक (कौ) तो वे प्रभु जब इहां पधारें तब ही जोग बनें. तब वाकी सासने वा वैष्णवसों बोहोत प्रार्थना करी. तब वा वैष्णवने अपनी सम्प्रदाय वल्लभी बताई. तब तो वह अपने मनमें बोहोत प्रसन्न होंइकै वा वैष्णवसों कही, जो तुम हमकों एक पत्र श्रीगुसांईजीकों लिखि देउ तो, हम एक मनुष्य अपने घरकौ पठाइकै वा पत्रकौ उत्तर श्रीगुसांईजी पासतें मंगावे. तब वाकों पत्र एक वा वैष्णवने श्रीगुसांईजीके नामकौ लिखि दियो. तब वह पत्रकों एक मनुष्यके हाथ दै श्रीगुसांईजी पास श्रीगोकुल पठायो. सो मनुष्य श्रीगोकुल आयकै श्रीगुसांईजीकों वह पत्र दियो. ता पत्रकौ जुवाब श्रीगुसांईजीनें वा वैष्णवकों कृपा करिकै यह लिख्यो, जो तुम इन सगरेनकों या पत्र द्वार नाम सुनाईयो. हम हू कछूक दिनमें इहां ते द्वारिकाजीकों आवत हैं. यह पत्र लिखिकै वा मनुष्यके हाथ दिये. तब वह मनुष्य श्रीगुसांईजीसों बिदा होंइकै मानिकचन्दके घर आयो. पाछें मानिकचन्दकी माताकों यह पत्र दियो. तब वह अति प्रसन्नतासों वा पत्रकों माथें चढ़ाइकै वा वैष्णवकों बुलाइ पठायो. सो वह वैष्णव प्रभुनकौ पत्र आयो जानिकै अति उत्कण्ठासों वाके घर आयो. तब मानिकचन्दकी माताने वा पत्रकों वा वैष्णवके हाथमें दीनो. तब वह वैष्णव दण्डवत् करि वा पत्रकों माथें चढ़ाइकै बांच्यो. सो सब समाचार बांचिकै चुप करि रह्यो. पाछें और समाचार सुनाइकै वह वैष्णव अपने घर गयो. पाछें फेरि रात्रिकों श्रीठाकुरजीसों पहोंचिकै हरिदासकी बेटी पास वह वैष्णव आयो. तब प्रभुनकौ पत्र वाकों बांचि सुनायो. तब वह पत्रके समाचार सुनि अपने मनमें बोहोत प्रसन्न होंइ रही. पाछें वा वैष्णवनें हरिदासकी बेटीसों वा पत्रकौ विचार पूछ्यो. तब हरिदासकी बेटीने वा वैष्णवसों

कही, जो याकौ प्रतिउत्तर तुमसों काल्हि कहूंगी. तब वह वैष्णव वा समै तो अपने घर गयो. पाछें याने अपनी साससों कही, जो सासुजी ! पत्र तो प्रभुनकौ आयो. तामें या वैष्णवकों आज्ञा हू आई है. यह हों पत्र बांचत समै देखी हूं. परि अब तो या वैष्णवके हाथ यह बात है. तब वह सास बहूके बचन सुनिकै अपने मनमें बोहोत खेद करिकै बहूके पांइन परिकै कही, जो या वैष्णवनें तो मोसों दुराव कर्यो. और यह तेरी आज्ञामें है. तासों तू हमारी बिनती अब यासों करे तो हमारे सगरेनकौ उद्धार होंइ. तब वा बहूनें सबनकौ शुद्ध भाव एसो जान्यो. तब बहूने साससों कही, जो हों वा वैष्णवसों प्रार्थना करूंगी. तब वह सास चुप करि रही. पाछें दूसरे दिन जब वह वैष्णव हरिदासकी बेटी पास आयो तब हरिदासकी बेटीनें वा वैष्णवसों कही, जो अब इनकौ शुद्धभाव तो श्रीगुसांईजी उपर भयो. तातें अब तो तुम्हारी इच्छा आवे सो करो. तब बहू फेरि इत उत फिरिकै वा वैष्णवकों घरमें बुलाइ सासके देखत वासों बोहोत प्रार्थना करी. तब वाके कहे तें वा वैष्णवने उन सगरेनकों स्नान करवाइ, श्रीगुसांईजीकौ पत्र एक चौकी उपर धरि प्रभुनकी आज्ञा प्रमान उनकों नाम उपदेश कर्यो. पाछें श्रीकृष्ण - स्मरन करि वह वैष्णव अपने घर आयो. पाछें दूसरे दिन उन सगरेन वा वैष्णवसों पूछी, जो अब तुम हमकों मार्गकी प्रनालिका कहो. तब वा वैष्णवने उनसों कही, जो सब प्रनालिका तुम्हारी बहू तुम्हारे आगें कहेगी. तब वे सगरे घरके जो कछू काम करते सो सब वा बहूसों पूछते. तब जो बहू कहती सोई वे सब करते. वह हरिदासकी बेटी ऐसी प्रभुनकी कृपापात्र हती.

भाव प्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णवकौ कैसो हू सङ्कट आय परै तोउ धैर्य धारन करि एक श्रीगुसांईजीके चरनारविन्दकौ स्मरन करनो. क्यों ? जो श्रीगुसांईजीकौ आश्रय किये तें सर्व कार्यकी सिद्धि तत्काल होत है. श्रीगुसांईजी परम दयाल भक्तवत्सल हैं. तातें अपने भक्त पर तत्काल दया करत हैं. और दूसरो (अभिप्राय) यह है, जो भगवदीय वैष्णवके रञ्च सङ्ग तें जीवनकौ उद्धार सहजमें होत है. तातें भगवदीय वैष्णव पर निष्कपट भावसों स्नेह राखनो. वाके कहेकौ विश्वास करनो. यह पुष्टिमार्ग वैष्णव द्वारा ही फलित होत हैं. तातें वैष्णवकौ (अपनो) सर्वस्व जानि ताकौ सङ्ग करनो. यह जतायो.

पाछें केतेक दिनमें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुलतें श्रीरनछोरजीके दरसनकों द्वारिकाजीकों पधारे. सो वा गाममें आइकै वा गाम बाहिर कुआं उपर श्रीगुसांईजीके डेरा भए. ता कुआं उपर हरिदासकी बेटी हू जल भरन आई. इतने ही एक ब्रजबासी हू वा कुआंपै जल भरन आयो. तब

वासों हरिदासकी बेटीने पूछ्यो, जो ये डेरा कौनके हैं ? तब वा ब्रजवासीने हरिदासकी बेटीसों कह्यो, जो ये डेरा तो श्रीगुसांईजीके हैं. तब तो यह वा ब्रजबासीकौ बचन सुनि अति उत्कण्ठासों जलकौ बासन घर धरिकै साससों कही, जो श्रीगुसांईजी इहां पधारि अमूके बागमें डेरा किये हैं. जो तुम्हारें दरसनकों आवनों होंइ तो आईयों. और हों तो जात हूं. यह कहि अति उन्मत्त दसासों जांइकै दूरितें श्रीगुसांईजीके दरसन करत भई. सो ता समै प्रभु स्नान - चौकी पर ठाढ़े कटि पर्यन्त स्नान करत हते. इतने ही याकों दुरितें उन्मत्त दसासों आवति देखिकै, जाकौ मन केवल चरनारविन्दमें लीन है और देह कागदकौ पूतरा पवन बस उड्यो चल्यो आवत होंइ, ता प्रकार याकों आवति देखिकै प्रभु वाइ प्रकार खडाउं पहरिकै वाके सन्मुख पधारे. सो वाके हाथ श्रीगुसांईजी अपने श्रीहस्तमें पकरिकै ठाढ़ी करी, ययह वचन वा समै वासों बोले, जो अमूकी ! तू कहां जात है ? हों तो तेरे काजे वहां डेरा छोरि स्नान करत तें इहां आयो हूं. सो जब श्रीगुसांईजी याकौ हाथ पकरि कै ठाढ़ी करी, और यह बचन श्रीमुखतें प्रभु वासों कहें, तब वाकों चैतन्यता भई. सो श्रीगुसांईजीके चरनारविन्द पर लौटि जांइकै बोहोत ही रुदन यह करन लागी. तब श्रीगुसांईजी याकौ समाधान करि अपने डेरा पास पधारे. तब श्रीगुसांईजी वासों यह श्रीमुख(तें) बचन कहे, जो अमूकी ! तू तो धीर है. हरिदासकी बेटी है. तेरे काजे तो अबके हम द्वारिकाजीकों आए हैं. तू ऐसो खेद क्यों करत है ? मोकों तो तेरी चिन्ता हती. तासों हों तो पास आयो हूं. अब तू कछू, चिन्ता मति करे. जब तू हमकों प्रसन्न होंइकै बिदा करेगी तब हम आगेको चलेंगे. या भांति बोहोत बचनसों श्रीगुसांईजी वाकौ समाधान किये. तब वाने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! आप मेरो या भांति समाधान न करोगे तो और कौन मेरो समाधान करे ? मेरो धैर्य तो आपके हाथ हतो. तो आपकी कृपासों धैर्य रह्यो. नांतरु मोकों या जगमें कहूं बैठिवेकों ठौर न हती. मोकों माता - पिताने तो मध्य समुद्रके धार पटकी हती. परि आपके आश्रयतें आपके नाम रूपी जहाज उपर चढिकै पार लगी. सो मोकों आपकी कृपा ता दिन जानी परी. जा दिन या गाममें वा वैष्णवसों भेंट करवाए. तब मैं अपने मनकों जानी, जो मोकों प्रभुन तो नाहीं छोरी. जो याहू गाममें एक वैष्णव तादृशी नित्य चर्चा करन और श्रीकृष्ण - स्मरन करन आवत है. या प्रकारसों हरिदासकी बेटीने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी. तब श्रीगुसांईजी याकी बिनती सुनिकै बोहोत प्रसन्न भए. पाछें प्रभु स्नान करि मुद्रा धरत हते. इतने ही वह वैष्णव श्रीगुसांईजीके दरसनकों आयो. सो श्रीगुसांईजीके दरसन करि दण्डवत् करि भेंट धरिकै ठाढ़ो होंइ रह्यो. तब श्रीगुसांईजी वाकों बैठिवेकों आज्ञा दिये. तब वह वैष्णव दण्डवत् करि प्रभुनके सन्मुख बैठ्यो. पाछें वा हरिदासकी बेटीने वा वैष्णवकी प्रभुन आगें बोहोत ही सराहना करी. सो सुनिकै

श्रीगुसांईजी बोहोत ही प्रसन्न भए. पाछें हरिदासकी बेटीके श्वसुरपक्षके सगरे कुटुम्बी आई श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि वा बहूकी प्रभुन आगें बोहोत ही प्रशंसा करन लागे. जो महाराज ! हमकों जो आपके चरनारविन्दकी प्राप्ति भई है, सो या बहूके प्रतापसों. नांतरु हम मन्दभागी आपके स्वरूपकों कहा जानते ? हमारे तो कुलदीपक यह बहू ही है. या प्रकार सगरे वाकी सराहना श्रीगुसांईजी आगें करन लागे. पाछें श्रीगुसांईजी मुद्रा धरि सन्ध्या करि रसोईमें पधारे. तब वे सब बैठि रहे. पाछें प्रभु भोग धरि बाहिर पधारे. तब इन मानिकचन्द आदि सबन श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! अब आप कृपा हम उपर करिकै हम सबनकों नाम सुनाइये. तब उन सबनसों श्रीगुसांईजी यह आज्ञा किये, जो सवारे तुमकों नाम सुनावेंगे. तब श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि सगरे अपने घर आए. पाछें सब बड़े सवारें उठिकै बहूसों सर्व प्रकार पूछिकै स्नान करि श्रीगुसांईजी पास आय दण्डवत् करे. तब उन सबनकों श्रीगुसांईजी नाम सुनाय सबनकों वा दिन उपवासकी आज्ञा दिये.

भाव प्रकाश :
काहें तें, ये सब जैनी हैं. सो उनकों कछू आचार - विचार है नाहीं. तातें उपवास करायो.

तब उनन बिनती करि श्रीगुसांईजीकों अपने घर पधराय आछी भांति पाक करवाए. सो श्रीगुसांईजी पाक करि भोग धरि महाप्रसाद लिये. पाछें आप सगरे वा दिन उपवास करे. तब दूसरे दिन इन सबनकों श्रीगुसांईजी निवेदन करवाय उनके माथे सेवाकों एक स्वरूप श्रीबालकृष्णजीकौ पधराए. तब उन श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! हम तो कछू सैवाकौ प्रकार जानत नाहीं. तब श्रीगुसांईजी हरिदासकी बेटीकों सब सेवाकौ प्रकार समुझायकै उन सबनसों कहे, जो तुम अपनी बहूसों सब सेवाकौ प्रकार पूछि लीजियो. तब वे सगरे घरके श्रीगुसांईजीके श्रीमुखके बचन सुनिकै बोहोत प्रसन्न भए. वे मानिकचन्द आदि सगरे हरिदासकी बेटीकी सङ्गतितें ऐसी भांति वैष्णव भए. पाछें श्रीगुसांईजीकों अपनी श्रद्धा प्रमान बोहोत आछी भांतिसों बिदा करे. पाछें इनसों श्रीगुसांईजी बिदा होंइकै श्रीरनछोरजीके दरसन करन द्वारिकाजीकों पधारे.

तब यह हरिदासकी बेटी अपने घर श्रीठाकुरजीकी सेवा आछी भांति प्रभुनकी आज्ञा प्रमान करन लागी. सो हरिदासकी बेटीकों श्रीबालकृष्णजी थोरेई दिननमें सानुभावता जनावन लागे. यह हरिदासकी बेटी सर्व सामग्री रसोईकी बोहोत सुन्दर करती. सो श्रीठाकुरजी आछी भांतिसों अरोगते. सो एक दिन मानिकचन्दकी मातानें रसोई करि श्रीठाकुरजीकों भोग धर्यो. तब वा दिन रात्रिकों मानिकचन्दकी मातासों श्रीठाकुरजी कहे, जो मोकों तो तेरी बहूके हाथकी रसोई रुचत है. पाछें वह हरिदासकी बेटीसों श्रीठाकुरजी कहे, जो आज तैनें रसोई क्यों न करी ? हों अरोग्यो तो आज सही. परि मोकों तेरी सासके हाथकी रसोई रुचत नाहीं. मोकों तो तेरे ही हाथकी रसोई आछी लगत है. तासों तू ही नित्य रसोई करियो. पाछें वाई दिन रात्रिकों श्रीठाकुरजीने श्रीगुसांईजीसों यह बात कही, जो आज मानिकचन्दकी माताने रसोई करी हती. सो हों अरोग्यो तो सही. परि मोकों रसोई हरिदासकी बेटीके हाथकी बोहोत रुचत है. तातें मानिकचन्दकी मातासों तुम इहां तें पधारती बार बरजियो. कहियो, जो तू रसोई अपनी बहूके हाथ कराइयो. पाछें जब श्रीगुसांईजी द्वारिकातें फिरे, तब बधैया गाममें आयो. तब मानिकचन्द और वह वैष्णव जांइकै आगें श्रीगुसांईजीकों अपने घर पधराइ ल्याये. पाछें श्रीगुसांईजी हरिदासकी बेटीसों वा दिनके समाचार कहे, जो तेरी करी रसोई श्रीबालकृष्णजी या प्रकारसों अङ्गीकार करत हैं. तब हरिदासकी बेटीने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! हों तो कछू करि जानत नाहीं. परि श्रीठाकुरजी परम दयाल हैं. जो तुम्हारी कानितैं मेरी करी रसोई अरोगत हैं. याकौ ये बचन सुनिकै श्रीगुसांईजी वा हरिदासकी बेटी उपर बोहोत प्रसन्न भए. पाछें ताही समै श्रीगुसांईजी मानिकचन्दकी मातासों कहे, जो तुम वृद्ध हो, तातें तुमसों बने सो उपरकी सेवा करिवो करो. और यह हरिदासकी बेटीकों नित्य रसोईमें न्हवायो करो. अभी यह बालक है. और रसोईकौ काम बालक ही कौ है. तब मानिकचन्दकी माताने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! श्रीठाकुरजी आप हमारे माथे पधराये ता दिन पाछें मैं एक दिन रसोई करी ही. सो मेरी करी रसोई श्रीठाकुरजीकों रुची नाहीं. और मोसों रसोई होंस सकत हू नाहीं. यह बचन मानिकचन्दकी माताके सुनिकै श्रीगुसांईजी चुप करि रहे. अपने मनमें श्रीगुसांईजी जाने, जो श्रीबालकृष्णजी इनहूंकों यह बात जनाए हैं. पाछें श्रीगुसांईजी वासों यह आज्ञा करिकै आप चुप करि रहे. ता पाछें श्रीगुसांईजी वा वैष्णवके घर पधारे. सो वह वैष्णव बोहोत भक्तिभावसों श्रीगुसांईजीकों अपने घर पधराए. पाछें श्रीगुसांईजी स्नान करि, रसोई करि, श्रीठाकुरजीकी सेवा करि, वाकों पातरि धरि, महाप्रसादकी आज्ञा करिकै विश्रामकों पधारे. पाछें वह वैष्णव महाप्रसाद लै श्रीगुसांईजी पास आई, दण्डवत् करि प्रभुनकी आज्ञा पाइकै बैठ्यो. तब श्रीगुसांईजी वा वैष्णवसों हरिदासकी बेटीके समाचार पूछे. तब वाने जा दिन तें याकौ सङ्ग भयो हतो ता दिन

तें सर्व साङ्गोपाङ्ग समाचार श्रीगुसांईजी आगें वा वैष्णवने निरूपन करे. तब याकी दसा वा वैष्णवसों सुनिकै श्रीगुसांईजी वा उपर बोहोत प्रसन्न भए. पाछें दिन दोइ वा वैष्णवके घर आपु बिराजे. तीसरे दिन मानिकचन्दके घर श्रीगुसांईजी फेरि पधारे. सो जब ही श्रीगुसांईजी चलिवेकौ नाम लै तब ही हरिदासकी बेटी बोहोत ही हठ करे. सो श्रीगुसांईजी दोइ चारि दिन रहि जांइ. या प्रकार महिना दोइ श्रीगुसांईजी मानिकचन्दके घर बिराजे. ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुलकों विजय करे. तब मानिकचन्द यथासक्ति भेंट करि थोरीसी दूरि पहोंचावन आए. तब श्रीगुसांईजी मानिकचन्दसों यह आज्ञा करे, जो यह हरिदासकी बेटी है सो मेरी अनन्य सेवक है. तासों जो याके कहेमें रहेगो ताकौ कल्यान ही होइगो. पाछें यह बचन कहिकै श्रीगुसांईजी उन मानिकचन्दकों बिदा किये. और आप आगें पधारे. और मानिकचन्द अपने घर आई श्रीगुसांईजीके श्रीमुखके बचन अपने घरमें सगरेन आगें कहे. तब मानिकचन्दके बचन सुनिकै सगरे चुप करि रहे. वह हरिदासकी बेटी श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
पाछें केतेक दिनकों हरिदास आप श्रीरनछोरजीके दरसन करनकों द्वारिकाजीकों चले. सो मानिकचन्दके गाममें ही आए. तब मानिकचन्दने अपनी स्त्रीकी उनहारिसों हरिदासकों पहिचाने. सो हरिदास तो आगेकों चले जात हते. तब मानिकचन्द अपनी हाटतें उतरि हरिदासके पांवन परि श्रीकृष्ण - स्मरन करिकै अपनी हाट उपर लिवाइ ल्याये. तब हरिदास अपने मनमें तो जान्यो, जो यह है तो वैष्णव सही. पाछें हरिदास मानिकचन्दकी हाट उपर बैठिकै पूछे, जो तुम कौनके सेवक हो ? और कौन ज्ञाति हो ? और कहा तुम्हारो नाम है ? तब मानिकचन्दने अपनो नाम, गाम, ज्ञाति सब हरिदास आगें कह्यो. पाछें श्रीगुसांईजीके सेवक कहे. तब तो हरिदास अपने मनमें बोहोत ही खेद करन लागे. जो देखो ! अपनी ज्ञातिकौ यह बर श्रीगुसांईजीकौ सेवक निकट ही हतो. परि हमने न जान्यो. नांतरु हम अपनी बेटी याहीकों विवाहि देते. कौन जाने वह प्रोहित वा बापड़ीकौ कौनसे गाममें कौनकै घर विवाह करि आयो है ? वह मेरी बेटी या वर योग्य हती. तब मानिकचन्दने हरिदाससों पूछ्यो, जो तुम्हारो नाम कहा है ? और कौनके सेवक हो ? कहा तुम्हारी ज्ञाति है ? तब हरिदास अपनो नाम, गाम, ज्ञाति सब मानिकचन्द आगें कहे. पाछें श्रीगुसांईजीके सेवक बताए. तब तो मानिकचन्द अति आनन्द पाय हरिदासके पांयन लागि, मिलि, बोहोत सराहना करे. जो हरिदासजी ! आज तुम हमकों कृतारथ करे. जो हमारी हाट उपर पधारे. अब तो सीधो लेहु.

घर चलि रसोई करि प्रसाद लेहु. तब हरिदास वा हाटसों सीधो लै मानिकचन्दके साथ मानिकचन्दके घरकों चले. सो मानिकचन्द तो उहां जांइ अपनी स्त्रीसों कहे, जो तेरे पिता हरिदासजी द्वारे ठाढ़े हैं. तिनकों तूं जांइकै भीतर लिवाइ लाउ. तब हरिदासकी बेटीने अपने पति मानिकचन्दसों कही, जो तुम तो मेरी हांसी करत हो. मेरे पिता इहां कहा कारन आवेंगे ? तब मानिकचन्दने स्त्री सों कह्यो, जो तुम एक बार घरके द्वारें जाइकै देखो तो खरी. तब स्त्री द्वारें आई देखें तो पिता द्वार उपर ठाढ़ो है. तब वह पांवन परि मिली. तब हरिदास अति आनन्द पाई बेटीके साथ घरमें भीतर गए. तब वह बोहोत खेद करि रोवन लागी. और हरिदास हू बोहोत गद्गद् कण्ठ होइ वाकौ समाधान कर्यो. पाछें वह सीधो लै बीनि फटकि, स्नान करि रसोई करन लागी. तब वाने पितासों कही, जो अब तुम उठिकै स्नान करो. तब हरिदास उठि स्नान करि मन्दिरमें जांइ उत्थापन करे. सो श्रीबालकृष्णजीके दरसन करि अति आनन्द पाय श्रीठाकुरजीकी सर्व सेवासों पहोंचि शयन भोग धरि हरिदास बाहिर आय बैठें. तब बेटीने पितासों कही, जो तुम तो मोकों बीच धारामें पटकी हुती. परि मोकों श्रीगुसांईजीने कृपा करिकै बचाई. नातरु मोकों कहूं ठौर न हती. और मैनें तो तुम्हारे माथे हत्या देवेकौ विचार अपने मनमें कर्यो हतो. परि श्रीगुसांईजीने इनकौ मन मेरी सास द्वारा फेर्यो. तब इनकौ एक वैष्णव द्वारा मन फिर्यो. तातें यह सर्व कृपा तुम श्रीगुसांईजीकी जानियो. ये बचन बेटीके सुनि हरिदास बोहोत लज्या पाइ, मन्दिरमें जांइ, भोग श्रीठाकुरजीकौ सराई, आर्ति करि, श्रीठाकुरजीकों पोढाइ, प्रसाद लीने. पाछें मानिकचन्दके माता - पिता आदि सगरे हरिदाससों मिले. अपनी बहूकी सराहना बोहोत करे. तब हरिदास उनके बचन सुनिकै बोहोत ही आनन्द पाए. पाछें मानिकचन्दकी माताने श्रीठाकुरजीके रसोई करिवेके सर्व समाचार जा दिनके कहे. तब हरिदास बेटीकी उपमा सुनिकै अपने मनमें बोहोत प्रसन्न भए. पाछें मानिकचन्दने वा वैष्णवकों खबर करी, जो हरिदासजी हमारे घर पधारे हैं. तब वह वैष्णव हरिदासकों मिलिवेकों मानिकचन्दके घर आय हरिदासकों मिले. पाछें हरिदासने वा वैष्णवकों अपने पास बैठारिकै कुसल समाचार पूछे. ता पाछें बेटीने पितासों कही, जो यह धीर है, और यह कृपा जो सब भई है सो इनकौ प्रताप जानियो. और सगरे मानिकचन्दके घरके वा वैष्णवकी सराहना करन लागे. तब वैष्णवने इनसों कह्यो, जो तुम मेरी सराहना करत हो सों क्यों करत हो ? सराहना तो हरिदासजीकी करो. जाके प्रतापसों तुमकों श्रीगुसांईजीके चरनारविन्दकी प्राप्ति भई. और ये हरिदासजी ऐसें भगवदीय हैं, जिनने राजद्वारमें श्रीगुसांईजीकौ डङ्का या प्रकार बजायो. जो मेरता सहित राजा जेंमलजी श्रीगुसांईजीकी सरनि आए. इनके धैर्यकी उपमा करो. जो अपनो प्रान देनो कर्यो. परि श्रीगुसांईजीकौ आश्रय न छोर्यो. इनके धैर्यकी उपमा कहा जीव करेगो ? पाछें या प्रकार परस्पर

बतराइ यह वैष्णव अपने घर गयो. पाछें हरिदास बड़े सवारे देहकृत्य करि चलन लागे. तब बेटी बोहोत खेद करन लागी. तब हरिदासने बेटीसों कही, जो बेटी ! याही प्रकार तेरी माता तेरे मिलिवेकों खेद बोहोत करत हैं. तासों हों एक बार पाछो घर जाऊंगो. तहांसों हों तेरी माताकों इहां तो पास तेरे मिलिवेकों लिवाइ लाउंगो. तब जो तेरी इच्छामें आवे तब तू हमकों इहांसों बिदा करियो. तब पिताके ये बचन सुनिकै बेटी अति प्रसन्न होंइ पितकों घरकों बिदा कर्यो. सो हरिदास मेरतामें अपने घर आई बोहोत सामग्री बासन कपड़ा और जो दाइजेकौ सामान सर्व होत है सो सिद्ध कराए. तब अपनी स्त्रीसों हरिदासने ये बेटीके सब समाचार कहे. तब स्त्रीने कही, जो हों तो अब एक बार अपनी बेटीसों मिलोंगी. तासों तुम बेगि मोकों लिवाइ चलो. सो वाने बेटीके लिये बोहोत गहनो लियो. और श्रीठाकुरजीकों सङ्ग पधराय लै, सब सामान लै घर तें चले. तब एक मनुष्य बेटी पास पठायो. ता सों ये समाचार बेटीसों कहाए, जो हमारे साथ श्रीठाकुरजी पधारत हैं. तातें एक घर अपने पासकौ खासा कराइ जल भराइ चूल्हा कराइ राखियो. जो श्रीठाकुरजी पधारें पाछें अवार न होंइ. तब वे मानिकचन्द अति आनन्द पाइ घर सिद्ध कराय राख्यो. सो हरिदास तो आवत ही वा घरमें पधारे. और हरिदासकी स्त्री तो अपनी बेटीके पास गई. पाछें हरिदास तो सब वस्तू भाव पधराइकै श्रीठाकुरजीकी सेवामें स्नान करे. और ये तो मा - बेटी भेंटिकै अति आनन्द पायकै वह तो बेटीके मन्दिरमें न्हाइ मन्दिरसों पहोंचिकै बेटीकों अपने घर लिवाइ ल्याई. पाछें इहां दोउ स्नान करि हरिदास रसोई करत हते तहां ये दोउ जांइकै इनन रसोई करी. पाछें हिलिमिलिकै श्रीठाकुरजीकी सेवा करिकै भोग धरि समयानुसार भोग सराइकै जब ही हरिदासकी बेटी मन्दिरमें जांइ श्रीठाकुरजीके चरन - परस करे, तब श्रीठाकुरजी वाके उपर बोहोत प्रसन्न होंइकै वासों कहे, जो अमूकी ! तू आछी है ? तब यह श्रीठाकुरजीसों बोली, जो अब तो तुम योंही कहोगे. जो हों आछी न होती तो तुम मेरे पास कौन भांति पधारते. परि तुम तो आछें हो ? जो मेरी खबरि प्रथम न राखी. अब मोसों पूछे, जो अमूकी ! तू आछी है ? यह सब निठुराई मैं तुम्हारी जानी. परि तुम तो श्रीगुसांईजीके बस हो. तातें तुम्हारी निठुराई इहां न चली ! यह वाके निठुर बचन सुनिकै श्रीठाकुरजीने हंसिकै अपने चरनारविन्द पसार दिये. तब वाने श्रीठाकुरजीके चरन - परस किये. श्रीठाकुरजी अपनी स्व - इच्छासों कराए. वह हरिदासकी बेटी ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती.

पाछें मानिकचन्द आदि सगरेनकों हरिदासने प्रसाद लेवेकों अपने घर बुलाए. सो वे सगरे हरिदासके घर आइकै प्रसाद भली भांतिसों

लिये. पाछें वह सब दाइजाकौ सामान जो हरिदास अपने घर तें ल्यारे हते, सो सबनकों सब पहराइ दीने. पाछें केतेक दिन हरिदास वा गाममें रहे. ता पाछें हरिदास द्वारिकाजी जांइ तहां श्रीरनछोरजीके दरसन करिकै पाछें फेरि मानिकचन्दके गाममें आए. तहां केतेक दिन रहे. पाछें मानिकचन्दकों साथ लै कै अपनी बेटीकों साथ लै कै हरिदास मानिकचन्दके गामसों स्त्री सहित श्रीठाकुरजी सहित चले. सो कछूक ही दिनमें मेरता गाममें अपने घर आए. पाछें मानिकचन्दकों हरिदासने बोहोत दिन लों मेरतामें राखे. ता पाछें हरिदास बोहोत द्रव्य दै कै मानिकचन्दकों और बेटी अपनीकों प्रसन्न करि मेरतासों बिदा करिकै उनके गाम घर पठाए. ता पाछें हरिदास परस्पर आप उनकों बुलावते. और आप हू हरिदास काहू समै बेटीकों मिलन जाते. या प्रकार दोउ जन अति प्रसन्न भए रहते.

भावप्रकाश :
तातें जीवकों सङ्गति चहिए. जो या जीवकों सङ्गति भगवदीयकी होंइ तो श्रीनाथजी या उपर निश्च कृपा करें. मनकी गम्य सङ्गति तें उत्कर्ष होंइ.

वह हरिदासकी बेटी श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ? वार्ता ।।२७।।

२८-एक नागर ब्राह्मण बड़नगरा

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक नागर ब्राह्मन बड़नगरा, गुजरातमें रहतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'दिव्यरत्ना' है. सो इनकी देह दिव्य रत्नके समान दमकति है. ये पुलिन्दिनीके यूथमें हैं. 'गति उत्तालिका' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भाव - रूप हैं.

ये गुजरातमें एक बड़नगरा नागर ब्राह्मनके घर जन्म्यो. सो वह नागर सैव हतो. वाकों महादेवजीकौ इष्ट हतो. सो बेटा बरस बारकौ भयो तब वाकों एक वैष्णवकों सङ्ग भयो. सो वह वैष्णव याके घरके पास रहत हतो. यह श्रीगुसांईजीकौ सेवक हतो. वाके इहां नित्य भगवद्वार्ता होंइ. सो यह ब्राह्मनकौ लरिका नित्यवाके उहां जांइ वार्ता सुने. सो एक दिन यह बात वा ब्राह्मनने जानी. तब वह अपने बेटाकों समुझाय कह्यो, जो बेटा ! अपने तो सैव हैं. अपने इष्ट तो महादेवजी हैं. तातें महादेवजीकी कथा - वार्ता छोरि और की न सुननी. ऐसें बोहोत कह्यो. परि यह बात बेटाके मनमें न आई. सो यह तो वा वैष्णवके उहां नित्य जांइ. श्रीठाकुरजीके दरसन हू करे. वह वैष्णव वाकों प्रसाद दै सोउ खांय. या प्रकार यह लरिका वैष्णवनकौ सङ्ग करे. सो एक दिन वा ब्राह्मनने अपने बेटाकों बोहोत मार्यो. और कह्यो जो क्योंरे ! मैं तोकों इतनो समुजायो तोउ तू समुझ्यो नाहीं ? हमारे कुलकौ व्रत भङ्ग कियो ? महादेवकों छोरि औरके दरसन करत है, प्रसाद लेत है ? और वैष्णवकौ सङ्ग करत है ? ता पाछें वह ब्राह्मनने अपने बेटाकों घरमें मूंदि घरकौ तारौ मार्यो. सो बाहिर निकसन न दै. खांइवेके समै वाकों खाइवेकों दै आवे. परि यह लरिका कछू खांइ, पीवे नाहीं. ऐसें करत तीन दिन भए. तब यह लरिका निश्चेष्ट होंइ रह्यो. तब तो वह ब्राह्मन डरप्यो. जाने, जो यह मरि जाईगो. पाछें वा ब्राह्मनने बेटाकों छोर्यो. तब बेटा तो घरतें निकसि कोऊ जाने नाहीं या भांति वा वैष्णवके घर गयो और अपने सब समाचार वा वैष्णवसों कहे. जो हों या प्रकार तीन दिन भूखो रह्यो, तब निकसन पायो हूं. तब वा वैष्णवने वाकों महाप्रसाद खवायो. पाछें जल पिवायो. फेरि कह्यो, जो अब तू अपने घर जा. उहां ही रहि. यहां मति आयो करि. नाहक कलेस होंइ सो आछौ नाहीं. परि यह लरिका मान्यो नाहीं. यह तो नित्य भगवद्वार्ता सुनिवेकों आवे. ऐसैं करत वह बरस बीसकौ भयो. तब वह ब्राह्मन मर्यो. पाछें यह निःसङ्ग व्है वा वैष्णवके घर जान लाग्यो. सो भगवद्वार्ता बोहोत रुचि करि सुनतो. ता पाछें एक दिन याने वा वैष्णवसों कह्यो, जो तुम मोकों वैष्णव करो. अब मेरे कोई प्रतिबन्ध नाहीं. तब वा वैष्णवने कह्यो, तो तुम गोकुल जांइ श्रीगुसांईजीके सेवक होउ, वैष्णव होउ. हम हूं उनके सेवक हैं. या कालमें श्रीगुसांईजी श्रीविटठलनाथजी ही एक सांचे गुरु हैं. काहेतें, उनके अधीन श्रीगोवर्द्धननाथी आप रहत हैं. तातें उनकी सरनि गए तों जीव कृतार्थ होत है. तब तो वह वैष्णवसों पूछ्यो जो श्रीगुसांईजी श्रीविटठलनाथजी आप कहां बिराजत हैं ? तब वा वैष्णवने कही, जो वे तो आप श्रीगोकुल बिराजत हैं. तब यह नागर ब्राह्मन यात्राकै मिस श्रीगोकुलकों चल्यो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वह नागर तीर्थयात्रा करत श्रीगोकुल आयो. तहां वा नागरकों श्रीठकुराणी घाट उपर श्रीगुसांईजीकौ दरसन अलौकिक भयो. तब वा

नागरने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! कृपा करिकै मोकों सरनि लीजे. तब श्रीगुसांईजी आप वा नागरसों यह आज्ञा किये, जो तुम श्रीयमुनाजीमें स्नान करो. पाछें हम तुमकों सेवक करेंगे. तब वह नागर श्रीयमुनाजीमें स्नान करि प्रभुन पास आई हाथ जोरि ठाढ़ो भयो. तब श्रीगुसांईजी आप कृपा करिकै वाकों सरनि लिये. नाम समर्पन करवाए. तब वा नागरने श्रीगुसांईजीसों बिनती करि कह्यो, जो महाराज ! मेरी ज्ञातिके बहिर्मुख हैं. सो मोकों दुःख देइंगे. तब श्रीगुसांईजी वाकों एक गोवर्द्धन - सिला दै कै कहें, जो तोकों सङ्कट परे तब तू इनकों दूधसों न्हवाइकै अभ्यङ्ग करिकै यथा सक्ति सामग्री भोग धरियो. पाछें प्रार्थना करियो.

भाव प्रकाश :
यामें यह जतायो, जो वैष्णवकों कछू सङ्कट आई परे तो श्रीगोवर्द्धनकी सरनि जानो. उनकी प्रार्थना करी. काहेंतें, ठाकुर तो लीला परवस हैं. तातें उनकों प्रार्थना किये तें श्रम होत हैं. और श्रीगोवर्द्धन विष्णुकौ स्वरूप हैं. तातें ये सदा वैष्णवनकी रक्षा करत हैं. आगें हू इनन ब्रजकी रक्षा कीनी है. तातें ठाकुरने श्रीगोवर्द्धनकों अपनो कुलदेवता मान्यो है या भाव तें वैष्णवकों हू श्रीगोवर्द्धनकी सेवा - पूजा करनी. और दूध न्हवाइवेकौ अभिप्राय यह है, जो दूध है सो उज्ज्वल भक्तिरसकौ स्वरूप है. सो श्रीगोवर्द्धन आप हरिदासवर्य हैं. तातें ये भक्तिरससों सदैव स्नान करत हैं. ता करि ये ठाकुरकों प्रिय हैं.

पाछें वह नागर तीर्थ करिकै अपने घर आयो. तब श्रीगोवर्द्धन सिलाकों भोग धरिकै सगरी ज्ञातिकों ब्रह्मभोज करवायो. तब सबन आई तिलक माथे माला गरे में देखी. सो यासों पूछिकै क्रोध करिकै सब चलन लागे. तब इन, उनसों कही, जो तूम क्यों जात हो ? तब उन सबन या नागर सो कही, जो तू महादेवकों छारिकै माला पहिर्यो. तातें हम ता तेरे हाथकौ न खांइगे. तब याने उनसों कही, जो याकौ जुवाब हों तुमकों एक घरीमें देउंगो. पाछें यह श्रीगोवर्द्धन सिलाकों दूधसों न्हवाइ अभ्यङ्ग करि (और) सामग्री आगें उनके धरिकै दण्डवत् करि बिनती करिकै कह्यो, जो महाराज ! मेरी लाज तुम्हारे हाथ है. नांतरु मोकों ये ज्ञातिके दुष्ट नागर हैं सो रहन न देइंगे. तब यासों श्रीगिरिराजजी कहे, जो मेरे प्रसादकी इनकों योग्यता नाहीं है. परि इनकों माहात्म्य दिखाउंगो. पाछें श्रीगिरिराजने सब देवता बुलाए. सा विमान पर द्वै एक घरीमें सब आइकै प्रसादकी सुगन्ध लैन लागे. और हाथ जोरि जोरि कै नमन करन लागे. पाछें ब्राह्मननके देखत सब स्वर्गकों गए. सो वह माहात्म्य सब ब्राह्मननने हू देख्यो. सो सब इन ब्राह्मनके पांइन परे. पाछें इन ब्राह्मनने सबकों सीधो दिवाइ

दियो. तामें कितनेक दैवी हते सो पाछें तें वैष्णव भए.

सो यह नागर श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२८।।

२९-एक सनाढ़्य ब्राह्मण

अब श्रीगुसांईजीको सेवक एक सनाढ़्य ब्राह्मन, सो वह मथुराजीमें रहतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'प्रमदा' है. सो प्रमदा 'गतिउत्तालिका' तें प्रगटी हैं. तातें इनके भावरूप हैं. और प्रमदा श्रीयमुनाजीके यूथमें हैं. तातें श्रीयमुनाजीके स्वरूपकों ये नीकी भांति जानति हैं. श्रीयमुनाजी द्वारा भगवद्रसकी प्राप्ति भई है. तातें श्रीयमुनाजीमें प्रमदाकी प्रीति हैं.

ये मथुरामें सनाढ़्य ब्राह्मनके जन्म्यो. सो बरस बीसकौ भयो. ता समै श्रीगुसांईजी आप अड़ेल तें विजय करि मथुराजीमें आई बिराजे. तहां श्रीगुसांईजी आप नित्य विश्रान्त घाट सन्ध्या करनकों पधारते. पाछें केसोरायजीके दरसनकों पधारते. सो एक दिन यह ब्राह्मन केसोरायजीके दरसनकों गयो हतो. ता समै श्रीगुसांईजी आप केसोरायजीके मन्दिरमें मथुरिया चोबेन सों श्रीयमुनाजीकौ माहात्म्य कहत हते. सो या ब्राह्मनने यह बात सुनी. तब तो यह ब्राह्मन अपने अपने मनमें विचार कियो, जो इनकी सरनि जांई इनके सेवक हूजिये तो आछौ. पाछें श्रीगुंसाईजी आप केसोरायजीके दरसन करि अपने घर पधारे. तब यह ब्राह्मन हू श्रीगुसांईजीके सङ्ग ही सङ्ग आयो. पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीनवनीतप्रियजीकी राजभोग आर्ति किये. ता पाछें अपनी बैठकमें आई बिराजे. तब यह ब्राह्मन दोउ हाथ जेरि बिनती कियो, जो महाराज ! कृपा करि मोकों सेवक कीजिये. तब श्रीगुसांईजी याकौ शुद्धभाव देखि या ब्राह्मनकों नाम सुनाये. पाछें एक व्रत कराइ दूसरे दिन निवेदन कराए. तब यह ब्राह्मन श्रीगुसांईजीसों फेरि बिनती कियो, जो महाराज ! कृपा करि मोकों श्रीयमुनाजीकौ स्वरूप समुझाइए. तब श्रीगुसांईजी याकी दीनता देखि ताही समै 'यमुनाष्टपदी' करि वाकों दीनी. पाछें श्रीगुसांईजी आप या ब्राह्मनकों आज्ञा किये, जो तू याकौ पाठ नित्य करियो.

तब यह ब्राह्मन बिनती कियो, जो महाराज ! हम अज्ञानी जीव हैं, तातें कृपा करि याकौ भाव समुझाइए तो आछौ. तब श्रीगुसांईजी याकों 'यमुनाष्टपदी'कौ भाव खोलिकै कह्यो. तब तो यह ब्राह्मन श्रीयमुनाजीके स्वरूपमें मगन होंइ गयो.

पाछें वह ब्राह्मन श्रीगुसांईजीसों बिनती कियो, जो महाराज ! कृपा करि मोकों श्रीयमुनाजीकी सेवा पधराइ दीजिए. तो हों इनकी सेवा करूं. तब श्रीगुसांईजी आप या ब्राह्मनकों श्रीयमुनाजीकी रेनुका एक थेलीमें दै कहे, जो तू इनकी आछा भांति सेवा करियो. तोकों श्रीयमुनाजी कृपा करि सब अनुभव जतावेंगे. पाछें यह ब्राह्मन श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि घर आयो. ता दिनतें यह ब्राह्मन श्रीयमुनाजीकों स्वरूपात्मक करि जानन लाग्यो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो उह ब्राह्मन श्रीयमुनाजीकौ अपरसमें परस करें, पान करें. श्रीयमुनाजीमें पांव (हू) न धरें. सगरो कार्य कुआंके जलसों करे. प्रभुनकी झारी अपरसमें श्रीयमुनाजल ल्याई भरें. सो श्रीमथुराजीके वैष्णव श्रीगुसांईजीके बालकनसों कहे, जो वाकी परीक्षा लेउ. तब श्रीगिरिधरजी नाहीं किये. जो वैष्णवकी परीक्षा लेनी नाहीं. काहेतें ? ये अपराध है. पाछें और बालक मिलिकै वाकों नाव पर बैठारिकै लै गए. बीचमें पुलिन हो तहां जांइ बिराजे. और नाववारेनसों कहे, जो पार जा. बुलावें तब अइयो. इतने करत प्रहर दिन रह्यो. तब उन बिनती करी, जो महाराज ! मेरो न्हाइवेकौ समै भयो है. नाव मंगाइए. सो नाव मंगायकै सगरे बालक नाव पर चढे. और वासों कहे, तू पुलिनमें बैठि. हम कहें तब तू नाव पर चढियो. सो वह बैठ्यो रह्यो; पुलिनमें. और वे तो नाव चलाइ पार आए. तब तो वह महा चिन्ता आर्त्तसो प्रनित होंन लाग्यो. तब कमल प्रगट भए. और श्रीयमुनाजी याकों दरसन दै कै यासों कहे, जो या पर चढिकै तू जा. तब वह आयो. सो यह बात सब बालकनने पार तें देखी. सो सब बालक याही सराहना करन लागे. पाछें सब मिलिकै श्रीगिरिधरजीसों यह प्रकार कह्यो. तब श्रीगिरिधरजी कहे, जो यमुनाष्टक (यमुनाष्टपदी ?) याहीकों फलित भयो.

भाव प्रकाश :
या वार्तामें यह जताए, जो वैष्णवकों श्रीयमुनाजीकौ परस बिना अपरसके न करनो. न्हावें तो प्रथम कुआंके जलसों न्हाय. ता पाछें श्रीयमुनाजीमें स्नान

करनो. और वैष्णवकों टेक राखनी. काहेतें ? वैष्णवकों टेक ही बड़ो धर्म है. जो टेक हती तो या ब्राह्मनकों श्रीयमुनाजी प्रगट दरसन दै अपनो अलौकिक स्वरूप जतायो. अलौकिक कमल प्रगट किये.

तातें इनकी वार्ता अनिर्वचनीय है. सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२९।।

३०-एक रजपूत

अब श्रीगुसांईजी कौ सेवक एक रजपूत, द्वारिकाजी के मारगमें रहतो, तिनकी वार्ता कौं भाव कहत हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल तें श्रीद्वारिकाजी श्रीरनछोरजीके दरसनकों पधारत हते. तहां मार्गमें एक गाममें डेरा किये हते. सो उहां एक रजपूतकों श्रीगुसांईजीकौ दरसन भयो. सो साक्षात् श्रीपूरन् पुरुषोत्तम श्रीयशोदोत्सङ्गलालित श्रीनन्दरायकुमारकौ दरसन वा रजपूतकों भयो. तब वा रजपूतके मनमें यह आई, जो इनके सेवक हुजिये तो आछौ है. पाछें वा रजपूतने दण्डवत् करि दोउ हाथ जोरिकै श्रीगुसांईजीसों बिनती करि कह्यो, जे महाराजाधिराज ! आप मो उपर कृपा अनुग्रह करिकै मोकों अपनो सेवक करिए. यह वाकी दीनता सुनि वाकी आर्ति जानि श्रीगुसांईजी आप कृपा करिकै वा रजपूतकों नाम सुनाय सेवक लिये. तापाछें केतेक दिनमें वह रजपूत श्रीगुसांईजीकौ लीला - विस्तार सुनि असवारी करिकै दोर्यो. सो हिमालयकों चल्यो.

भावप्रकाश :
काहेतें ? ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'रसालिका' है. ये 'गतिउत्तालिका' तें प्रगटी हैं. तातें इनके भावरूप है. सो रसालिका श्रीचन्द्रावलीजीके स्वरूपमें अनुरक्त हैं. तातें यहां हू श्रीगुसांईजीके स्वरूपमें आसक्ति भई. सो अन्तर्धान लीला सुनत ही याकौ चित्त विक्षिप्त भयो.

सो दूसरी मजलि श्रीगुसांईजी वा रजपूतकों दरसन दै, बचन दियो, जो तोकों नित्य दरसन देउंगो. तू दुःख मति पावे. तब वह रजपूत श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिकै अपने घर आयो. दुःख सब गयो.

सो वह रजपूत श्रीगुसांईजीकौ बड़ो कृपापात्र भगवदीय भयो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।३०।।

३१-एक सेठकी बेटी

अब श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी एक सेठकी बेटी, लाहौरमें रहती, जाने चाचाजीके कहिवेतें अपने धनीकों जहर दियो. तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं.

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'राईन' है. ये 'मनसुखा' गोपकी बेटी हैं, तातें इनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वह सेठकी बेटी लाहौरमें काहू बहिर्मुखके घर ब्याही हती. सो पहिले तहां न तो वैष्णव (जांइ) न कोई वल्लभकुल जांइ. न भगवद्धर्म. सो वह सेठकी बेटीने कच्चे चना खांइकै बरस एक निर्वाह कियो. यह बात श्रीगुसांईजी जानी. तब श्रीगुसांईजी वा उपर कृपा करिकै उहां चाचा हरिवंशजीकों पठाए. सो चाचा हरिवंशजी वा गाममें जांइ पहोंचे. तहां एक बगीचामें डेरा कियो. परन्तु वह सेठकी बेटीसों और चाचा हरिवंशजीसों एक महिना लों मिलाप न भयो. तब चाचा हरिवंशजी चुकटी मांगन लागे. तब वा सेठकी बेटीकौ घर आयो. तहां वह सेठकी बेटी चुकटी दैन आई. तब वा सेठकी बेटी चाचाजीकों तिलक - कण्ठी देखि जाने, जो ये कोऊ वैष्णव हैं. तब तो वह सेठकी बेटी हरिवंशजीसों पूछ्यो, जो तुम कौनके सेवक हो ? तब हरिवंशजी जानें, जो येही वह लरिकिनी है. तब हरिवंशजी

कहे, जो हम श्रीगुसांईजीके सेवक हैं. तब वह सेठकी बेटी, हरिवंशजीकों पहिचानि श्रीकृष्ण - स्मरन करि रोवन लागी. सो बोहोत ही रोई. पाछें हरिवंशजी वह सेठकी बेटीसों पूछ्यो, जो तू क्यों रोवति है ? तोकों ऐसो कहा दुःख है ? तब वह सेठकी बेटीने हरिवंशजीसों कह्यो, जो हों श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी हूं. मेरे मा - बाप हू श्रीगुसांईजीके सेवक हैं. वे गुजरातमें रहत हैं. परि उनन मेरो ब्याह यहां या बहिर्मुखके घर कियो है. सो सगरो घर धर्मकौ विरोधी है. आचार - विचार कछू है नाहीं. यह म्लेच्छ देस है. वैष्णव, वल्लभकुल, कोऊ यहां आवत नाहीं. अब मैं कहा करूं ? मैनें बरस एक लों कच्चे चना चवाई दिन निकासे हैं. इतनो कहि वह फेरि रोवन लागी. तब हरिवंशजी वाकों समझायकै कहें, जो तू रोवे मति. तेरे लिये तो मोकों श्रीगुसांईजीने यहां लों पठायो हैं. तातें अब तू हों कहों सो करि. पाछें वह सेठकी बेटी रोवत तें बंद रही. तब चाचाजी कहें, जो प्रभु बड़े दयाल हैं. तातें अपने जनकी सुधि क्यों न लै ? अब तेरो सब दुःख निवृत्त होइगो. तू धैर्य धरि एक उपाय करि. सो तू अपने धनीकों जहर दै. तब वह सेठकी बेटीने चाचाजीकौ बचन मानिकै अपने धनीकों जहर दियो. सो वह धनी मर्यो. सो घरके सब रोवन लागे. तब वह सेठकी बेटीनें अपने श्वसुर पक्षके सब मनुष्यनसों कह्यो, जो यह गामके बाहिर बगीची है, तहां एक महापुरुष हैं. ताके पास तुम जांइकै बिनती करो, तो वह महापुरुष मेरे यह धनीकों जिवावें. यह मैनें सुपनेमें देख्यो. तब वे सब गाम बाहिर बगीचीमें चले गए. सो तहां जांइ चाचा हरिवंशजीसों सबन बिनती करी, जो तुम हमारे वह मनुष्यकों जिवावो, तो हमकों तुम जीव दान देउ. तब हरिवंशजीने उनसों कह्यो, जो तुम सगरे घरके वैष्णव होउ तो वह तुम्हारो मनुष्य जीवे. तब उन सबननें हरिवंशजीसों कह्यो, जो तुम कहोगे सोई हम सब करेंगे. परन्तु तुम वाकों जिवावो, तो हम सबन उपर आप बड़ी ही कृपा करो. तब हरिवंशजीने चरनामृत दियो. सो उननें लै जांइकै वाके मुखमें घोरिकै डार्यो. तब वह जीयो.

भाव प्रकाश :

या वार्तामें यह बड़ो सन्देह है, जो हरिवंशजी सारिखे भगवदीय सेठकी बेटीकों या प्रकार जहर दैनकों क्यों कहे ? वे तो सर्व समर्थ हैं. क्षनमें चाहें तो सगरे घरवारेनकों वैष्णव करि सकत हैं. तातें ऐसो लोक विरुद्ध कार्य करिवेकों क्यों कहे ? तहां कहत हैं, जो चाचाजी या सेठकी बेटीकौ प्रारब्ध पूर्व सम्बन्ध जाने. जो पूर्व जन्ममें यह एक राजाकी बेटी ही. सो वह राजा बड़ो अभिमानी हतो. वह अपने घरमें बेटीकों बड़ी होन न दै. जो कोऊ बेटी होंइ ताको जहर दै मरवाइ डारे. काहेतें, जो बेटीके ब्याहकी मांग और तें करनी परे. तातें नीचो देखनो परे. यासों ऐसें करे. सो या बेटीकों हू राजाने जहर दै

मरवाइ डारी. सो वह राजा या जन्ममें याकौ धनी भयो है. सो अब यह सेठकी बेटी या जन्ममें याकों जहर दै मारेगी. यह बात चाचाजीने जानी. तातें यह प्रारब्ध - कर्म पूरो करनकों चाचाजीने या प्रकार या सेठकी बेटीसों कह्यो. नांतरु फेरि हू यह कार्य करनो परतो. तातें ऐसें कह्यो. पाछें चाचाजी प्रभुनकौ स्मरन करि चरनामृत दियो. तातें वाकौ नयो जन्म भयो. या प्रकार दोउनके प्रारब्ध - कर्म मिटे. सो भगवदीय ऐसें दयालु होत हैं, जो जन्म - जन्मके प्रारब्ध क्षनमें मिटाइ देत हैं.

पाछें उन सबनसों हरिवंशजी कहे, जो अब तुम सब स्नान करि अपरसमें वस्त्र नए कोरे पहरि आवो, वा मनुष्य सहित. तब हम तुमकों वैष्णव करें. सो वे सब घरके वा मनुष्य सहित स्नान करि नए वस्त्र कोरे पहरि आई हरिवंशजी पास बिनती करे, जो अब आप हम उपर कृपा अनुग्रह करिकै हम सबनकों वैष्णव करो. तुम्हारी कृपा तें हमारो मनुष्य जीयो है. तुम तो कोई बड़े महापुरुष हो. तब चाचाजी उन उपर कृपा करि उन सबनकों नाम सुनाय वैष्णव किये. तब वे सब बोहोत ही प्रसन्न भए.

ता पाछें चाचाजी उन सबन तें कहे, जो अब जैसें यह बहू कहे तैसेई तुम करियो. तो सुख पाओगे. या प्रकार सबकों समझाइ चाचाजी तहां तें चले. सो श्रीगोकुल आए. पाछें यह सब प्रकार चाचाजी श्रीगुसांईजी आगें कहे. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए.

सो वह सेठकी बेटी श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती. जो सगरे कुटुम्बीनकों सेवक कराइ उनकौ उद्धार कियो. और श्रीगुसांईजी वाकी आर्ति सहि न सके. वाके लिये आप कृपा करिकै वा पास हरिवंशजीकों पठाए. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।३१।

३२-एक कुम्हार

अब श्रीगुसांईजीके सेवक एक कुम्हार, गुजरातकौ तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं.

भावप्रकाश :

ये सात्त्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'परमानन्द' है. सो परमानन्द 'मनसुखा' गोपकौ भतीजा है. ये श्रीठाकुरजीकी अन्तरङ्ग लीलामें सहायक है. तातें चन्द्रकलाकी इन पर प्रीति हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो एक समै श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे. तहां वा कुम्हारकों श्रीगुसांईजीकौ दरसन भयो. तब वा कुम्हारके मनमें यह आई, जो इनकौ सेवक हूजिये तो आछौ है. पाछें वा कुम्हारने साष्टाङ्ग दण्डवत् करि हाथ जोरिकै श्रीगुसांईजीसों बिनती करि कह्यो, जो महाराज ! आप कृपा करिकै मोकों नाम सुनाइये. तब श्रीगुसांईजी करूनानिधानकों दया आई. सो वा कुम्हारसों कहे, जो तू न्हाइकै नई धोती पहरिकै नयो उपरेना ओढ़ि आऊ, तब तोकों नाम सुनावेंगे. तब वह कुम्हार जांइ, न्हाईके नई धोती पहरि नयो उपरेना ओढ़िकै आई प्रभुनके सन्मुख ठाढ़ो भयो. तब श्रीगुसांईजी आप कृपा करिकै वाकों नाम सुनाए. पाछे श्रीगुसांईजी तो द्वारिकाजी होंइ श्रीरनछोरजीके दरसन करिकै श्रीगोकुलकों पधारे. सो कछूक दिनमें श्रीनवनीतप्रियजीके राजभोग आर्तिके दरसन किये.

ता पाछें केतेक दिनकों चाचा हरिवंशजी गुजरातके परदेसकों गए. तब गुजरातमें या कुम्हारके घर चाचा हरिवंशजी गए. सो घरमें याके में कछू सीधो नाहीं. तब (वह) बजारमें गयो. तहां एक जिमींदारने या कुम्हारसों कह्यो, जो तू कुआं खोदेगो ? तब याने कही, जो हां, हां ! कुआं खोदूंगो. परन्तु चार दिन पीछे खोदूंगो. ऐसें वा जिमींदारसों यह कुम्हार कहि वा पासतें रुपैया एक ल्याय चाचा हरिवंशजीकों चारि दिन बिनती करिकै राखे. पाछें हरिवंशजी द्वारिकाजीकों चले. और वह कुम्हार वा जिमींदारकौ कुआं खोदन लाग्यो. सो उपर तें हजारन मन माटी गिरी. ताकें तरें रह्यो. तहां कह्यो 'श्रीवल्लभ' 'श्रीविठ्ठल'. इतने रञ्च पोलो भयो. सो भीतर यही जपे. इतनेमें चाचाजीसों काहूने कह्यो, जो अमूकौ कुम्हार कुआंमें दब्यो है. तब चाचाजी फिरि आए. तहां देखे तो वाके घरके रोवन लागे. कुआं दिखाए. पाछें चाचाजी माटी कढ़ाइ निकारे. ता पाछें चाचाजी उहां तें द्वारिका गए.

भाव प्रकाश :

या वार्तामें यह जतायो, जो भगवदीय वैष्णव घर आवे ताकौ समाधान आछी भांतिसों स्नेहपूर्वक करनो. द्रव्यकौ सौकर्य न होंइ तोउ उधारो लाइकै करनो. परि विमुख न रहनो. क्यों ? जो भगवदीयनकी कृपा तें जीवकों सदा सर्वदा कल्यान होंइ. सो चाचाजीकी कृपातें या कुम्हारकौ जीव बच्यो. तातें भगवदीयकी सेवा ऐसो पदार्थ है.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

बहौरि एक दिन वह कुम्हारके भाई पाहुने आयो. ताके लिये मेवा मिश्रि डारिकै लडुवा किये. और पानी न हुतो सो कुम्हारी लैनकों गई. वाकौ मन लडुवामें. इतने दोइ कुम्हार वैष्णव आए. तिनकों या कुम्हारने लडुवा खवाई दीने. सो वह कुम्हारी दौरि आइकै देखिकै आगिसी लागी. पाछें भाईकों रोटी करि खवायो. सो यह कुम्हार घरमें जो आछी वस्तू देखे सो वैष्णवकों देई. बासन, कपरा, तब स्त्रीने और कुम्हार कियो. तब वह कुम्हार बोहोत प्रसन्न भयो. पाछें अकाल पर्यो. तब वह कुम्हारी कुम्हार भूखे मरे. इहां नित्य वैष्णव आय मण्डली करें. तब वह कुम्हारी आयकै या कुम्हारके पांइन परिकै कही, जो अब तुम मोकों घरमें राखो. तब इन कह्यो, जा अब घरमें नाहीं. द्वार बाहिर रहो. प्रसाद देहिंगे.

भावप्रकाश :

काहेतें, जो कुम्हारी धर्मकी विरोधी है. इनके सङ्ग तें या कुम्हारकौ मन बिगरे. तब बहिर्मुखता प्राप्त होंइ. तातें उनकों घरमें राखी नाहीं. और वैष्णवकौ यह धर्म है, जो जीव मात्र पर दया राखनी. तामें यह तो स्त्री हैं. तातें प्रसाद दैनकी कही.

वह कुम्हार श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो. सो वाकों श्रीगुसांईजीकी कृपा तें श्रीगुसांईजी उपर ऐसो दृढ़ विश्वास हतो. तातें उनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।३२।।

३३-गोविन्ददास खवास

अब श्रीगुसांईजीके सेवक गोविन्ददास खवास, सनाढ़्य ब्राह्मन, मथुरामें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'नृत्यकला' है. सो नृत्यकला 'मनसुखा' गोपकी छोटी बेटी हैं. तातें इनके भावरूप हैं. ये नृत्यमें बोहोत प्रवीन हैं. यातें श्रीचन्द्रावलीजीकों अतिप्रिय हैं. ये श्रीचन्द्रावलीजीके यूथकी हैं.

ये गोविन्ददास मथुरामें एक सनाढ़्य ब्राह्मनके जन्मे. सो वे बड़े भए, बरस बीस पच्चीसके. तब इनकों रागरङ्गकौ इस्क लग्यो. सो वेस्या भवैयानके सङ्ग रहे. नाच तमासो देख्यो करे. सो कछूक दिनमें गोविन्ददास नृत्य करिवो सिखे, सङ्ग करि. और गान हू करन लागे. पाछें गोविन्ददास नृत्य ऐसो करते, जो सब कौउ इनकौ नृत्य देखि मोहित व्हे जाते. सो गोविन्ददास बडे प्रसिद्ध भए. ता पाछें एक समै श्रीगुसांईजी मथुरा पधारे. तब काहूने गोविन्ददास तें कह्यो, जो श्रीगुसांईजी यहां पधारे हैं. अमूक ठौर बिराजत हैं. सो उनकों नृत्य - सङ्गीत बोहोत प्रिय हैं. यह बात सुनिकै गोविन्ददास श्रीगुसांईजीके दरसनकों आए. सो दरसन करत थकित व्है गए. पाछें श्रीगुसांईजी गोविन्ददासकों सावधान किये. और आज्ञा किये, जो गोविन्ददास तुम अपनो नृत्य श्रीनवनीतप्रियजीकों दिखाउ. ताही समै श्रीनवनीतप्रियजीके सिंगारके दरसन खुले. सो गोविन्ददास श्रीनवनीतप्रियजीके सन्मुख नृत्य करन लागे. सो नृत्य करत करत गोविन्ददास रसमें तदाकार होंइ गए. वा समै श्रीनवनीतप्रियजीने हू गोविन्ददासकों अलौकिक रीतिसों दरसन दिये. सो दरसन होत ही मुर्च्छित व्है गए. पाछें टेरा खिंच्यो. तब श्रीगुसांईजी गोविन्ददासकों टेरि कै कहे, जो गोविन्ददास ! उठो तुमकों नवनीतप्रियजीके सदैव ऐसें ही दरसन होइंगे. तब गोविन्ददास ठाढ़े भए. पाछें श्रीगुसांईजीसों बिनती किये, जो महाराज ! मोकों कृपा करि सरन लीजिए. सदैव आपके चरनमें राखिए. तब श्रीगुसांईजी कृपा करि गोविन्ददासकों नाम निवेदन कराए. ता पाछें चर्वित ताम्बुल दिये. सो लेत ही गोविन्ददासकों श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी के स्वरूपकौ ज्ञान भयो. तब गोविन्ददास श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजीके पद करन लागे. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए. पाछें गोविन्ददासकों श्रीगुसांईजी कृपा करि अपनी खवासी

दिये.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
ये गोविन्ददास श्रीगुसांईजीकी खवासी करते. और श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजीकौ सेवा - सिंगार करे तब यह गोविन्ददास घूंघरूं बांधिकै श्रीनवनीतप्रियजीके आगें नृत्य करें. सो एक समै श्रीराधाअष्टमीके दिन राजभोगतें पहोंचिकै श्रीगुसांईजी सगरे बालकन सहित रावल पधारे. इहां श्रीशोभा बेटीजीनें श्रीनवनीतप्रियजीकों उत्थापनकी झारी भरी. पाछें भोग समै गोविन्ददास नृत्य श्रीनवनीतप्रियजीके आगें करन लागे. रसमें तदाकार भए. सो एक पगके घूंघरूं तूट्यो. तब श्रीनवनीतप्रियजीने अपने चरनके नूपुर गोविन्ददासकों पहिराये. सोउ सुधि गोविन्ददासकों कछू नाहीं. पाछें घरी चारि रात्रि गई तब श्रीगुसांईजी सब बालकन सहित रावल तें श्रीगोकुल आए. सो सुने, जो श्रीनवनीतप्रियजीके भोगकौ समै है. तब श्रीगुसांईजी मन्दिरमें आई कछू कहन लागे. तब श्रीनवनीतप्रियजीने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो तुम बोलो मति. पाछें अर्द्धरात्रि समै नृत्य रह्यो. तब शोभा बेटीकों सुधि आई. तब सन्ध्याभोग सेनभोग इकठो धरि, समै भए भोग सराइ, सेन आर्ति करिकै, शोभा बेटीजी श्रीनवनीतप्रियजीकों सेन कराए. वे गोविन्ददास खवास श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. सो सदैव समैके समै श्रीनवनीतप्रियजीके सन्निधान नृत्य करते. सदा प्रेम तें रस मत्त भरे रहते. बड़ेई कृपापात्र हते. तातें उनकी वार्ताकौ पार नाहीं है. सो इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।३३।।

३४-एक ब्राह्मण गुजरातकौ

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक ब्राह्मन गुजरातकौ बासी, ताकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वह ब्राह्मन गुजरात तें ब्रजकों आयो हतो. सो प्रथम श्रीमथुराजी आई विश्रान्त स्नान कियो. पाछें वह ब्राह्मन अपने मनमें विचार्यो. जो

श्रीगोकुल बड़ो धाम सुनत हैं, तातें तहां चलिकै एक बार श्रीगुसांईजीकौ दरसन. श्रीगोकुलजीकौ दरसन तो करिये. ता पाछें ब्रजयात्रा परिक्रमा सब करि लेउंगो. यह विचारिकै वह ब्राह्मन श्रीमथुराजी तें श्रीगोकुल आयो. ता समै श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजीकों राजभोग धरिकै आप श्रीठकुरानी घाट उपर मध्याह्नकी सन्ध्यावन्दन करिवेकों पधारे हते. तहां वा ब्राह्मनकों श्रीगुसांईजीकौ दरसन भयो. तब वा ब्राह्मनने अपने मनमें विचारी, जो इनकौ सेवक हूजिये तो आछौ है. पाछें वा ब्राह्मनने श्रीगुसांईजीसों दण्डवत् करि हाथ जोरिकै बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! मो उपर कृपा करिकै आप मोकों अपनो सेवक करिये. तब श्रीगुसांईजी आपने वा ब्राह्मनसों कह्यो, जो तुम यह श्रीयमुनाजीमें स्नान करिकै हम पास आओ तो, हम तुमकों नाम समर्पन दै कै अपनो सेवक करें. तब वह ब्राह्मन श्रीयमुनाजीमें स्नान करिकै श्रीगुसांईजीके पास आयो. तब श्रीगुसांईजी वा उपर अनुग्रह करिकै वा ब्राह्मनकों नाम - समर्पन कराए. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजीके मन्दिरमें पधारे. तब वासों आज्ञा किये, जो अब तेरो कहा मनोरथ है ? तब वानें कह्यो, जो महाराज ! एक श्रीनवनीतप्रियजी और श्रीगोवर्द्धननाथजीकी झांकी करिकै पाछें ब्रजकी यात्रा परिक्रमा करूंगो. तब श्रीगुसांईजी मन्दिर पधारत समै वा ब्राह्मनकों सङ्ग लै पधारे. सो वह ब्राह्मन तो बाहिर जगमोहनमें प्रभुनकी आज्ञा पायकै बैठ्यो. और आप श्रीगुसांईजी भीतर मन्दिरमें पधारि श्रीनवनीतप्रियजीकौ राजभोग सराय, आचमन मुखवस्त्र करि, बीरी अरोगाइकै किवाड़ दरसनके खोलि राजभोग आर्ति श्रीगुसांईजी किये. सो दरसन करि श्रीनवनीतप्रियजीके, वह ब्राह्मन बोहोत प्रसन्न भयो. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजीकौ अनोसर कराय अपनी बैठकमें पधारि वह ब्राह्मनसों कहे, जो ब्राह्मन ! आज तुम इहांई प्रसाद लीजियो. यह वासों कहिकै आप श्रीगुसांईजी भीतर भोजनकों पधारे. सो भोजन करि आचमन करि बीरा आरोगि वा ब्राह्मनकों महाप्रसादकी पातरि जूठन धरी. सो महाप्रसाद लै कै वह ब्राह्मन अत्यन्त प्रसन्न भयो. पाछें श्रीगुसांईजी आप बैठकमें विश्राम करन लागे. तब वह ब्राह्मनने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! आज्ञा होंइ तो सवारे मैं श्रीगिरिराज जांइकै श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करि, पाछें ब्रज - परिक्रमा करूं. तब श्रीगुसांईजी आप कहे, जो बोहोत आछौ. पाछें श्रीगुसांईजी विश्राम करि उत्थापन समै उठि, स्नान करि, श्रीनवनीतप्रियजीकों उत्थापन कराइ भोग, सन्ध्या, शयनकी सब सेवासों पहोंचिकै अपनी बैठक में आई गादी - तकिया उपर आप बिराजे. सो उत्थापन तें शयन पर्यन्तके सगरे दरसन श्रीनवनीतप्रियजीके करि वह ब्राह्मन बोहोत प्रसन्न भयो. पाछें सवारे वह ब्राह्मन श्रीगिरिराज गयो. तहां जांइ श्रीगोवर्द्धननाथजीके राजभोगकी आर्तिके दरसन करिकै अति ही प्रसन्न भयो. ता पाछें ब्रजयात्राकों गयो. सो करिकै ब्रजयात्रा, श्रीगोकुल आई श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिकै वह ब्राह्मनने बिनती करी,

जो महाराजाधिराज ! मेरो सेवाकौ मनोरथ है. सो मोकों सेवा पधराय दीजिए.

भावप्रकाश :

क्यों, जो ये 'रोहिनीजी' की सखी हैं. इनतें प्रगटी हैं. तातें इनके भावरूप हैं. इनकौ नाम 'गोपदेवी' हैं. ये राजस भक्त हैं. सो गोपदेवी नन्दालयमें श्रीठाकुरजीकी सेवामें सदा तत्पर रहत हैं. तातें यहां हू सेवाकौ मनोरथ भयो.

तब श्रीगुसांईजी मथुराजी पधारे. तब यह ब्राह्मन हू प्रभुनके सङ्ग मथुरा गयो. तहां बजारमें होंइकै श्रीगुसांईजी पधारे हते. सो एक भरिया स्वरूप बोहोत करि लिये, बैठ्यो हतो. तब श्रीगुसांईजी वह ब्राह्मनसों कहे, जो यह भरिया पास तें तू वह स्वरूप कछू नोछावरि दै कै लै आऊं. तब वह ब्राह्मन भरियाकों नोछावरि दै कै स्वरूप लै आयो. सो श्रीगुसांईजी आप दृष्टि भरि वह स्वरूप देखे. सो स्वरूप बोहोत सुन्दर हतो. वह बालकृष्णजी हते. तिनके श्रीहस्तनमें कड़ा हते. सो देखिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न व्है वा ब्राह्मनकों आप आज्ञा किये, जो तू याकों पधराय ल्याउं. तब या ब्राह्मनने हाट पर आई वा भरियासों कह्यो, जो ये कड़ा तू अपने बड़े करि लै. तब वह भरियाने या ब्राह्मनसों कह्यो, जो अब तो सांझ भई है, तातें काल्हि बड़े करि लेउंगो. और काल्हि ही तू इनकों लै जइयो. तब वह वैष्णव ब्राह्मनने अपने हाथसों कड़ा तो बड़े करि लिये. सो वा कड़ानकों अपने पास राखे. पाछें स्वरूपकों उहांई राखि वह श्रीगुसांईजीके पास आयो. सो श्रीगुसांईजीकी पोरी पर आई बैठ्यो. तब प्रभु ब्रजबासीके लरिकाकौ स्वरूप करिकै श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो फलानों वैष्णव मेरे कड़ा उतारि ल्यायो है. ऐसें तीन बार कह्यो.

भाव प्रकाश :

या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो श्रीगुसांईजीकी दृष्टि परे तें वह साक्षात् स्वरूप सिद्ध भयो. सो अब वह हाटपें कैसें रहै ? तातें कड़ानके मिष करि ठाकुर यह जतायो. और या ब्राह्मन वैष्णवपें सेवा करवावनी है. तातें याकौ विश्वास दृढ़ करिवेके तांई या प्रकार कहे.

तब श्रीगुसांईजी वा वैष्णव ब्राह्मनकों बुलायो. पाछें यह बात कहि श्रीगुसांईजी वाकों खीझे. तब वह वैष्णव ब्राह्मन श्रीगुसांईजीसों सब बात कह्यो. ता पाछें अर्द्धरात्रि जांइ उह भरियासों कह्यो, जो उह स्वरूप दै. तब वा भरियाने उह स्वरूप दियो. सो स्वरूप लै आई वह ब्राह्मनने श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो महाराज ! वह श्रीबालकृष्णजीकौ स्वरूप ल्यायो हूं. तब श्रीगुसांईजी वा स्वरूपकों पञ्चामृत स्नान कराइ, अङ्ग - वस्त्र करिकै ऋतु अनुसार वस्त्र वागा सिंगार करि भोग धरि, वा ब्राह्मनके माथे सेवा पदराइ, सब सेवाकी रीति भांति नित्यकी वर्ष दिनके उत्सवनकी बताइ दिये. सो वह ब्राह्मन सेवा करन लाग्यो. तब थोरेई दिनमें प्रभु सानुभावता जनावत लागे. वह ब्राह्मन श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो. सो वाकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।३४।।

३५-एक सनोढ़िया ब्राह्मण

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक सनोढ़िया ब्राह्मन, ब्रजमें रहतो, ताकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वह सनोढ़िया ब्राह्मन आई श्रीगुसांईजीसों बिनती करि कह्यो, जो महाराज ! मोकों कृपा करि नाम दीजिये. तब श्रीगुसांईजी कृपा करि वा ब्राह्मनकों नाम सुनाए. ता ब्राह्मनके एक बहिन हती. सो वह ब्राह्मन अपनी बहिनकै घर गयो. तब याकों बोहोत आदर करिकै बहिनने अपने घरमें राख्यो. सो बहिनके, द्रव्य बोहोत सम्पत्ति देखी. सो द्रव्य सम्पत्ति देखिकै वह ब्राह्मनने बहिनकों जहर दैकै मारी. गहना द्रव्य सब लै आयो. पाछें सवेरे घरके लोगन वाकौ संस्कार कियो. जाने, जो भाई मारि गयो है. भले मनुष्य हते तासों प्रगट नाहीं करे. सो कछूक दिन पाछें वा ब्राह्मनकी देह छूटी. तब विषधर सर्प भयो. सो मथुराके और गोकुलके बीचमें 'मई'के घाट पर रहे. सो आवते जातें मनुष्यकों देखिकै वह सर्प दौरे. तब मारग छूटि गयो. सो श्रीगुसांईजी मथुराजी पधारे तब मईके घाट पर, जहां वा सर्पकौ बिलो हतो, तहांई श्रीगुसांईजीने डेरा किये. सो भीर देखिकै वह सर्प बिलमें धसि गयो. परन्तु दाव विचारे, जो कब काटों ? ऐसो क्रोधमें वह सर्प भर्यो. तब श्रीगुसांईजी जल मंगाई दस लोटानसों चरन धोए. सो चरनामृत वाहिके बिलेमें वा सर्पके पास गयो. ताकों वह पीयो. और

वाकी सगरी देहमें लग्यो. तब वा सर्पकों पूरव जन्मकी सुधि आई. सो अपने बिले तें वह बाहिर निकरिकै फैन नंवायके श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् कियो. तब श्रीगुसांईजी कृपा करिकै वाके फैन उपर चरन धरे. सो सर्प तत्काल देह छोरिकै ब्राह्मनकी देह पायो. तब देखिकै सगरे वैष्णव चकित होंइ रहे. पाछें श्रीगुसांईजी नाम निवेदन कराए. तब वह देह छोरि कृतार्थ भयो. सो वैष्णव सब श्रीगुसांईजीसों पूछे, जो महाराज ! यह कौन हुतो ? (और) याकी ऐसी गति क्यों भई ? तब श्रीगुसांईजी सब वैष्णवकों समुझाइकै कहे, जौ ये लीलाकौ जीव हतो. वहां यह 'तमसादेवी' है. सो तामस (भक्त) हैं. 'रोहिनीजी'के यूथकी. सो जब श्रीयशोदाजीने ठाकुरजीकों बांधे तब ये दाम ल्याई. यह बात रोहिनीजीने जानी. तब सराप दिये. ता अपराधतें ये ब्रजमें एक सनाढ़्य ब्राह्मनके यहां जन्म्यो. पाछें याने द्रव्यके लोभ तें अपनी बहिनिकों जहर दै मारी. तातें यह सर्प - योनि पायो. परि यह हमारी सरनि आयो हतो. तातें चरनामृत पाई मुक्त भयो.

यह बात श्रीगुसांईजीके श्रीमुखतें सब वैष्णव सुने. सो बोहोत प्रसन्न भए. पाछें येहू अपने अपने भाग्यकी सराहना करन लागे. जो हमहूकों श्रीगुसांईजीकौ सरनि प्राप्त भयो हैं, तातें हमहू निश्चय कृतार्थ होंइगे.

भावप्रकाश :
काहेतें ? जो श्रीगुसांईजी पूरन पुरुषोत्तम हैं. सो इनके सरनि मात्रतें जीव निश्चय कृतार्थ होत हैं. क्यों ? जो या पुष्टिमार्गमें प्रभु आप अपने जीवनकौ प्रमेय बल तें उद्धार करत हैं. जीवके साधनकी अपेक्षा राखत नाहीं. ऐसें प्रभु परम दयाल हैं.

सो यह ब्राह्मन श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो. सो याकौ आप प्रमेयबल तें उद्धार कियो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।३५।।

३६-मा, बेटा, बहू

अब श्रीगुसांईजीके सेवक मा, बेटा, बहू, गुजरातके तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
सो लीलामें माता तो विशाखाजीकी सखी हैं. 'स्यामा' इनकौ नाम है. और स्यामाकी एक सखी हैं. उनकौ नाम 'रामदे' है. सो यह बेटा है. और बहू लीलामें 'श्रीरोहिनीजी'की सखी हैं. इनकौ नाम 'स्याम - सनेहिनी' है. रात दिन श्रीठाकुरजीमें इनकौ मन रहत है. सो नन्दालयमें बावरी सी डोलति हैं. तातें सब कोऊ इनकौ स्याम - सनेहिनी कहत हैं. ये रोहिनीजीकों अति प्रिय हैं. इनके यूथकी हैं. तातें इनके सात्त्विक भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो श्रीगुसांईजी श्रीगोकुलतें गुजरात पधारे. सो मा, बेटा श्रीगुसांईजीके पास आइकै बिनती करिकै कह्यो, जो महाराज ! आप कृपा करिकै हमकों अपने सेवक करिये. तब इन मा - बेटान तें श्रीगुसांईजीने यह आज्ञा करी, जो तुम दोउ स्नान करिकै नए वस्त्र पहरिकै हम पास आओ. जब हम तुमकों सेवक करें. तब वे दोउ मा - बेटा स्नान करि नए वस्त्र पहरि श्रीगुसांईजी पास हाथ जोरिकै आई ठाढ़े भए. तब श्रीगुसांईजी आप कृपा करिकै उन दोउनकों नाम निवेदन कराइकै कहे, जो आज तुम इहांइ महाप्रसाद लीजियो. पाछें आप श्रीगुसांईजी भोजन करि आचमन करि बीरी आरोगि उन दोउ मा - बेटानकों महाप्रसादकी पातरि अपने श्रीहस्तसों श्रीगुसांईजी धरी. तब वे दोउ मा - बेटा अति आनन्द पाइकै महाप्रसाद लिये. पाछें श्रीगुसांईजी भोजन करि विश्राम किये. पाछें उत्थापन समै श्रीगुसांईजी उठिकै उन मा - बेटानकों सब सेवाकौ प्रकार नित्यकौ तथा उत्सवकौ आप कृपा करि बताय दिये. सो मा - बेटा भगवत्सेवा पधराइ लै जांईकै प्रीति पूर्वक सेवा करन लागे. तब श्रीठाकुरजी थोरेई दिनमें प्रसन्न होंइकै सानुभावता जनावन लागे. पाछें कितनेन दिनकों या बाईके बेटाकौ विवाह भयो. सो बहू भोरी आई. तब बेटा तो कहूं गाम गयो. और श्रीगुसांईजी गाम बाहिर पधारे. तब सास श्रीगुसांईजीके दरसनकों गई. सो दरसन करिकै प्रभुनसों बिनती करि गई, जो महाराज ! बहूकों सेवक करियो. पाछें बहूसों सासने कही, जो श्रीगुसांईजी आप कहे सो तू कहियो. सो प्रभु या बहूसों कह्यो, जो आऊ बैठि. तब या बहूने हू ऐसें ही कही, जो आऊ बैठि. ये सुनिकै श्रीगुसांईजी हंसे और जान्यौ, बहू भोरी है. तब श्रीगुसांईजी उठिकै वाके पास आयकै तीन बार अष्टाक्षर मन्त्र कह्यो. सो बहूने हू अष्टाक्षर मन्त्र कह्यो. इतनेमें

काहू वैष्णवने सास तें ये बात जांइकै कही, सो सास श्रीगुसांईजी पास आई अपराध क्षमा कराइ बिनती करि, बहूकों समर्पन श्रीगुसांईजी पास करवायो. पाछें प्रभु सास तें कह्यो, जो अब श्रीठाकुरजीकी सेवा या बहूके पास कराइयो. तब सासने कही, जो महाराज ! ये तो बावरी है. सेवामें कहा समझेगी ? तब श्रीगुसांईजीने आज्ञा करी, जो श्रीठाकुरजी आप सिखाय लेइंगे.

भाव प्रकाश :
काहेतें, जो ये भोरी है. और लीलाकौ सम्बन्ध अब दृढ़ भयो. तातें श्रीठाकुरजी इन पर बेगि कृपा करेंगें.

ता पाछें कछूक दिनमें सासकों अटकाव भयो. तब सासने बहूसों कह्यो, जो श्रीठाकुरजीकों सिंगार करिकै दरपन दिखाइयो. सो हंसत मुख होंइ तो प्रसन्न जानियो. यह कहिकै बहूतें, सास तो नदी पर जांइ बैठी. तब बहूने सिंगार कियो, परि श्रीठाकुरजी हंसे नाहीं. तब फेरि बहूने सिंगार पलट्यो. तोउ हंसे नाहीं. एसें वाने आठ बेर श्रीठाकुरजीकौ सिंगार पलट्यो. तब पीछले प्रहर प्रभु हंसे.

भाव प्रकाश :
सो काहेतें ? जो पुष्टिमार्गमें (जब लों) आर्ति न होंइ तब तांई प्रभु अनुभव न जतावे. सो बहूकों आर्ति कराइवेके तांई आठ बेर सिंगार पलटायो. तब बहू श्रमित व्है दुःखी भई. तब आर्ति उत्पन्न भई. तब प्रभु वा पर कृपा करि हंसे.

ता पाछें नित्य ही श्रीठाकुरजी वाके सङ्ग हास्य - विनोद करते. या प्रकार सानुभावता जनावन लागे. जो चहितो सो वा पास तें प्रभु मांगिकै अरोगते. पाछें वह श्रीठाकुरजीसों कहती, जो कछू सेवामें भूल परेगी तो हों अपने पीहर चलि जाऊंगी. सो वह बहू बोहोत ही भोरी हती. वासों श्रीठाकुरजी जा प्रकार कहते ताही प्रकार वह करती.

पाछें पांचमें दिन सास सेवामें न्हाई. तब वह सिंगार करन बैठी. ता समै सासकों नींदकौ झोका आयो. तामें श्रीठाकुरजी कहे, जो मोकों

सिंगार बहूके हाथकौ बोहोत आछौ लागे हैं. तातें तू रसोईकी सेवा करि, और बहू मेरो नित्य सिंगार करेगी. ता दिनतें बहू नित्य सिंगार करन लागी. सो बहूसों श्रीठाकुरजी हास्य विनोद आदि करि सब रसकौ अनुभव करावते. सो वे मा, बेटा, बहू श्रीगुसांईजीके बड़ेई कृपापात्र भगवदीय हे. सो उनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।३६।।

३७-पीरजादी, अलीखान पठाणकी बेटी

अब श्रीगुसांईजीके सेवक अलीखान पठान, ताकी बेटी पीरजादी, महावनमें रहती, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये अलीखान बच्छगांयमें एक बाछिल गौरवा क्षत्रीके घर जन्मे. पाछें अलीखानकौ पिता दिल्लीमें सिपाहीगिरी करन लाग्यो. तहां इनकों पठाननकौ सङ्ग भयो. ता सङ्ग करि येहू पठान भयो. सो इन अपने बेटाकौ नाम अलीखान धर्यो. तब तें अलीखानकौ पिता अपनो कुटुम्ब लै दिल्ली आय रह्यो. पाछें अलीखान बरस बीस पच्चीसके भये तब इनकौ पिता मर्यो. तब तें पात्साहने अलीखानकों अपने पास राखे. सो अलीखानकों पात्साह जागीर कमावन भेजतो. तहां ये जांते. ता पाछें अलीखानकौ ब्याह भयो. सो एक बेटी भई. ताकौ नाम पीरजादी राख्यो. सो अलीखान वा बेटीकों बोहोत ही प्यार करे.

और अलीखानकौ घर हिन्दुनकी बाखरिमें हतो. तहां कितनेक वैष्णव हू रहत हते. सो पीरजादी बरस पांचकी भई तब तें वैष्णवनके लरिकान सङ्ग खेले. सो वे लरिका ठाकुरकौ खेल खेलते. तामें ठाकुरकों न्हवाय, सिंगार करि भोग धरते. पाछें प्रसाद आपसमें बांटते. तामें पीरजादी हू वह प्रसाद लेती. सो पीरजादीकौ मन ठाकुरके खेलमें लगि गयो. सो येहू ऐसें खेलन लागी. ता पाछें कछूक दिनमें अलीखानकों पात्साहने तवीसाके परगना पर भेजे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो उन अलीखानने तवीसाकौ परगनो पायो. सो महावनमें अलीखान आई रहे. सो वे अलीखान बनके हाकिम भए. पाछें एक समै ब्रज

देखिवेकों अलीखान निकसे. सो अलीखान ब्रज देखिकै बोहोत प्रसन्न भए. सो अलीखानने ब्रजकौ स्वरूप नीके जान्यो. और अलीखानकौ मन ब्रजमें बोहोत आसक्त भयो. सो ब्रजके दरसन करि अलीखान घर आए. तब ब्रजके गामनमें डौड़ी फेरी. जो भाई ! जो कोई ब्रजके रूखनके पतौआ तथा डार तोरेगो ताके हाथकी अङ्गुरी हों तोरूंगो. या प्रकार अलीखान ब्रजकी रखवारी करते. आपु नित्य ब्रजमें भ्रमन करते. सो कोऊ एक पतौआ तौरन न पावे.

सो एक दिन अलीखान तो अपने चोंतरा पर बैठे हते. ता ठौर एक तेली तेल बेचन आयो. सो तेलकी कूपीकौ महोंडो नए पतौवानसों ढांपिकै बांध्यो हतो. सो अलीखानने देख्यो. और वा तेलीके साथ एक बरध हतो. ताके हांकिवकों एक हरी लकड़ी हाथमें हती. सो अलीखानने मुनष्यनसों कह्यो, जो या तेलीकों इहां पकरि ल्याओ. तब वे मनुष्य वा तेलीकों पकरि ल्याईकै अलीखानके साम्हे ठाढ़ो कियो. तब अलीखान कचहरीसों उठिकै आई, वा तेलीसों पूछ्यो, जो तू ये डार - पात कौनसे रूखके तोर्यो है. सो रूख मोकों दिखाउ. तब या तेलीके साथ - साथ अलीखान गए. तब वा तेलीने वह रूख बतायो. तब अलीखानने वा तेलीसों कह्यो, जो यह सब तेल है सो तू या वृक्षके मूलमें सींचि दै. तब वह तेली बोहोत बिनती करन लाग्यो, कह्यो, जो साहिब ! मैं जान्यो नहीं. तासों मेरी तकसीर माफ करो. तब अलीखानने वा तेली सों कह्यो, जो आज तो हों तेलके बासन ही डराइकै छोरत हूं. परि और दिन जो डार पात तोरत देखूंगो तो तेरे हाथ पांव आछी भांति तुराउंगो. तासों आज तो तू न जान्यो. तासों यह दण्ड करनो. तब या तेलीके बासन तेलके भरे हते, सो वा वृक्षके मूलमें डारिकै अपने घरकों वह गयो. तब अलीखान अपने घर आए. पाछें ता दिनतें सगरे लोग अलीखानसों डरपन लागे. वे अलीखान या प्रकारसों ब्रजकी रखवारी करते.

सो एक दिन अलीखान रोटी खांइके सोए हते. पाछें सोइकै उठे. सो देखे तो एक बारी ढाकके पतौऔ तोरत है. ताके पास अलीखान आप गए. तब वा बारी सों अलीखानने पूछ्यो, जो इतने पतौवा तू क्यों तोरत है ? तू इन पतौवानकों कहा करेगो ? तू कौनकौ मनुष्य है ? तब वा बारीने अलीखानसों कह्यो, जो ए पतौवा तो श्रीगोकुलकों श्रीगुसांईजीके गरकों पातरि दोनानके लिये तोरि लै जात हों. सो हों तो श्रीगुसांईजीकौ बारी हूं. तब वा बारीसों अलीखानने कह्यो, जो तू तो बड़ी ठौरकौ नाम लियो. तासों हों तेरे पास एक वस्तू मांगत

हों. जो आज तो तैं पतौवा तोरे सो तोरे. परि आज पाछें एक - एक ढाकतें दस - दस पतौवा तू मांगिकै तोरियो ! एक ही ढाकपै तें मति तोर्यो करियो. इतनो तू मोकों मांग्यो दै. तब तें वह बारी वाही प्रकार करन लाग्यो. और अलीखानसों बारीने कह्यो, जो अब तुम अपने मनुष्यनसों कहि राखियो, जो मोसों वे कछू कहे नाहीं. तब अलीखान अपने चोकीदारनसों कह्यो, जो एक श्रीगुसांईजीको बारी अमूके नाम करिकै है, ताकों तो पतौवा तोरिवेकी परवानगी है. और वा सिवाय कोई और पतौवा एक तोरन न पावे. या प्रकार अलीखान ब्रजके वृक्षनकी रखवारी करते.

भाव प्रकाश :
या वार्ताको अभिप्राय यह है, जो ब्रजके वृक्ष अलौकिक हैं. सो पद्मपुरानमेंब्रजकौ स्वरूप बरनन कियो है. तहां कह्यो है, सो श्लोक

वृक्षे वृक्षे वेणुधारी पत्रे पत्रे चतुर्भुजः ।
यत्र वृन्दावनं तत्र लक्ष्यालक्ष्यकथा कुतः ।।

या प्रकार बृन्दावनके वृक्ष - वृक्ष वेनुधारी श्रीगोवर्द्धनधर रूप हैं. और तिनके पत्रसों चतुर्भुजरूप हैं. यासों वृक्ष भगवदीय हैं. तातें वैष्णवनकों ब्रजकी वृक्षावली सर्वथा तोरनी नाहीं. तोरे तो अपराध लगे. और श्रीठाकुरजीके अर्थ तोरे तो कछू बाधा नाहीं. परि जादा पत्र तोरने होंइ तो एक ही वृक्ष पें तें सर्वथा न लेने. थोरे - थोरे सब पें तें मांगिकै लेने.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
सो अलीखानके एक बेटी रूपवती हती. सो वाकों अलीखान बोहोत ही प्यार करते. सो वह बेटी जब बड़ी भई तब वानें अलीखानसों कही, जो बाबाजी ! मोकों खेलिवेकों एक न्यारो मन्दिर करवाइ देउ. तब वा अलीखानने कारीगर बुलाइ आछौ दिन देखिकै मन्दिर बनवायवेकों कारीगर लगाए. सो नींव खोदतमें एक स्वरूप श्रीठाकुरजीकौ बोहोत सुन्दर निकर्यो. सो वह स्वरूप अलीखानने अपनी

बेटीकों खेलिवेकों दीनो. तब वा स्वरूपसों वह खेलन लागी. जो कछू अपनी देहकों करे ता प्रकार श्रीठाकुरजीकों हू लाड़ लडावे. सो वा स्वरूपकों सुन्दर जल सों न्हवाइ वस्त्र पहराइ आभरन धराइ वा स्वरूपकों आछी भांति पधराय खेलन लागी. सो खेलत - खेलत वा स्वरूपसों बोहोत आसक्ति भई. सो वाकौ वा स्वरूपसों स्नेह करत तन्मयता भई. सो वा स्वरूपसों इह ऐसी आसक्त भई, जो वा स्वरूप बिना क्षन एक रहि सके नाहीं. ऐसो वाकौ मन वा स्वरूपमें आसक्त भयो. सो जब याकी आर्ति बोहोत श्रीठाकुरजी जाने तब याकौ साक्षात्कार भयो. सो एक दिन प्रभुन दरसन दीनो. सो वह रात्रिकों सोई हती तब वाकों दरसन दीनो. सो याकों चारि प्रहर रात्रि सोच करत ही बिती. और वह अपनी सिज्या उपर वा स्वरूपकों ढूंढन लागी. सो वह स्वरूप तो याकों दरसन दै कै अन्तर्धान भयो. पाछें यह तो सोच करत ही रहीं. सो सवारो होंइ गयो. तब यह खाट उपर तें उठे नाहीं. सो याने अपने मनमें यह निर्द्धार कर्यो. जो अब तो मोकों दरसन देइंगे तब ही हों उठोंगी. नांतरु अपने प्रानकों त्याग करूंगी. यह निर्द्धार कियो. पाछें उन अपनो यह प्रन लियो. सो श्रीठाकुरजी वाकी आर्ति सहि न सके. वाई ठौर साक्षात् श्रीबृन्दाबनचन्दकौ दरसन वाकों दैकै कहे, जो अब तो तू उठि, स्नान करिकै कछू रसोई करिकै मोकों भोग धरि. अवार भई है, तासों मोकों भूख लागी है. तातें अब तू उठि. तब वह उठी. पाछें स्नान करि रसोई करि भोग धरि आप प्रसाद लियो. ता पाछें फेरि रात्रिकों वाहीसों श्रीठाकुरजीने रास कर्यो. ता दिनसों प्रभु वासों सानुभाव भए. सो नित्य खेलें, इच्छा आवे सो मांगि लै, वा पास तें. या प्रकार श्रीठाकुरजी वासों नित्य विहार करते. वाकों छोरिकै छिन एक न्यारे न होते. यों करत केतेक दिन बीते. तब एक दिन अलीखानने अपनी बेटीकौ स्वरूप देख्यो. जो याकौ स्वरूप तो फिर्यो है. पाछें अपने मनमें अलीखानने विचार्यो, जो याकों कहा भयो ? यह आश्चर्य मनमें करन लाग्यो. पाछें अलीखानने ये समाचार अपनी स्त्रीसों कहे, जो मोकों बेटीकौ स्वरूप और भांति दीसत है. सो वह स्त्री बेटीकौ स्वरूप देखिकै अलीखानसों कही, जो याकों कोई पुरुष मिल्यो है. तब अलीखानने महलकी अति गाढी चौकी बेठारी. पाछें रात्रिकों वे सब चौकीदार पहरा दैत हते. सो जब अर्धरात्रि भई तब भीतर रागरङ्ग होन लाग्यो. सो ताल पखावज नूपुर किंकिनीके शब्द होंइ. सो सब बाहिरके आदमी सुनते. परि उनकों कछू ज्ञानमें न आवतो. सो ये सब समाचार सवारें उन मनुष्यननें अलीखानसों कहे. तब अलीखाननें उन मनुष्यनसों कह्यो, जो आज हों रात्रिकों देखूंगो. सो वा दिन रात्रिकों जब रागरङ्ग होने लाग्यो, तब ही उन मनुष्यन अलीखानसों खबर करी. तब अलीखान उठिकै बेटी घर आगें आई, किवाड़की सन्ध हती ता सन्धमें सों झांक्यो तो रागरङ्ग तो सुने, परि कछू दृष्टिमें आवे नाहीं. तब सवारो होंन आयो. तब तो रागरङ्ग रहि गयो. पाछें

अलीखान तो अपने घर आयो. फेरि सांझ भई. तब सगरे मनुष्यनकों बिदा करिकै आप अकेलो द्वार पर खपूवा बांधि कै अलीखान बैठयो. सो जब रात्रि प्रहर डेढ़ गई तब फेरि भीतर रागरङ्ग होने लाग्यो. तब अलीखानने अपने मनमें यह निश्चय कियो, जो आज भीतर कोऊ मनुष्य तो जान पायो नाहीं. और इतने बाजे तो मनुष्यके बाजत तो कहूं सुने नाहीं. तासों यह तो कछू श्रीठाकुरजीकी रचना है. सो तो वे जब कृपा करें तब ही देखिवेमें आवे. पाछें साक्षात् कन्हैयालालजी श्रीबृन्दाबनचन्द्रजी आप रास करत हैं. और अनेक यूथ ब्रजभक्तनके गान करत हैं. तामें अपनी बेटीकों हू ठाढ़ी देखी. सो देखिकै अलीखान अपने मनमें अत्यन्त आनन्द पाए. सो तत्काल दरसन करत ही मूर्छित होंइकै वाही द्वार आगें परे. तब घरी चारिमें अलीखानकों चेत भयो. तब जाग्रत होंइकै कान दै कै सुनिवे लागे. तो बाजें - बाजें कछू बजत नाहीं. तब वाही सन्धकी राह देखे तो श्रीठाकुरजी और बेटी एक आसान पर बैठे हैं. सो श्रीठाकुरजी वाके गरेमें श्रीहस्त धरिकै बीरा अरोगत हैं. पाछें फेरि उठे. सो परस्पर गरेमें हाथ धरिकै नृत्य करन लागे. ता समै अलीखान इत उत देखन लागे. सो उहां तो कहूं चेंटीकौ हू प्रवेश न हतो. तहां और कौन जांइ सके ? तब वा सन्धसों देखे तो कछू और भांति दीसे नाहीं. तब अपनी कमरि तें खपुवा काढ़ि किवाड़में एक छेद करिकै आछी भांति अलीखान दरसन करन लागे. सो साक्षात् श्रीबृन्दाबनचन्दके श्रीकन्हैयालालके दरसन किये. तब तो अलीखानकों मूर्छा आई. सो फेरि घरी चारमें सावधान भए. तब फेरि दरसन करन लागे. सो सवारो भए प्रभु मुकुट धरें नटवर भेष धरि नृत्यके श्रमित बिराजत हैं. पाछें अति अरसाते दोउ जनकै दरसन करिकै फेरि अलीखानकों मूर्छा आई. उहांई द्वारपें परे. इतने सवारो भयो. तब बेटीने किवाड़ खोले. तहां देखे तो द्वार आगें पिता पर्यो है. तब दोउ हाथनसों वाने थाम्भिकै वाकों बेठ्यो कियो. पाछें अपने दोउ हाथ पिताके माथे उपर फेरिकै यह बचन वह बोली, जो बाबाजी ! बाबाजी ! उठो सवारो भयो है. तब अलीखानकी मूर्छा जागी. सो सावचेत भए. पाछें अलीखान बेटीके पांवन परिकै यह बचन बेटीसों कह्यो, जो बेटी ! तू धन्य, धन्य, धन्य है. अब तू मोकों श्रीकन्हैयालालके दरसन कराय. तब बेटीनें पितासों वा समै यह बचन कह्यो, जो आज पूछि देखूंगी. सो वा दिन रात्रि भई तब श्रीठाकुरजी पांव धारे. तब वा पीरजादीने श्रीठाकुरजीसों पूछ्यो, जो महाराज ! मेरो पिता आपके दरसनकी अभिलाखा करत है. जासों आप जो आज्ञा मोसों करो सो मैं वासों कहूं. तब श्रीठाकुरजी वासों यह आज्ञा करे, जो तुम सवारे ही वहां श्रीगोकुलमें दोउ बाप बेटी जांइ श्रीगुसांईजी पास नाम पाय आवो. तब दरसन होंइगे. तब अलीखानकी बेटीने फेरि श्रीठाकुरजीसों बिनती करी, जो महाराज ! हम तो यह सुनत हैं, जो श्रीगुसांईजी तो म्लेच्छकौ मुख देखत नाहीं तो हमकों नाम उपदेश कौन प्रकार करेंगे ?

तब श्रीठाकुरजी अलीखानकी बेटीसों कहे, जो मैं श्रीगुसांईजीसों कहूंगो. वे मेरी आज्ञा तें तुमकों नाम उपदेस देइंगे. और तुम सवारे ही श्रीठकुरानी घाट उपर जांइ बैठियो. तहां वे स्नान करनकों पधारेंगे. तब तुमकों वे अपने सेवक हाथ बुलाइकै नाम उपदेश करेंगे. यह बचन कहि श्रीठाकुरजी तो पधारे.

भावप्रकाश :
या वार्तामें यह बड़ो सन्देह है, जो अलीखान और अलीखानकी बेटीकों श्रीठाकुरजी आप कृपा करिकै रासकै दरसन दिये. बेटीकों रासके सब सुखकौ अनुभव करायो. तोउ श्रीठाकुरजी आप उनसों श्रीगुसांईजीके सेवक होंनकी क्यों कहे ? तहां कहत हैं, जो जद्यपि बेटीके विरह ताप करिकै श्रीठाकुरजी वाके रङ्ग रास - बिलास किये. वाकों सब प्रकारकौ सुख दियो. और बेटीके सम्बन्ध करिकै अलीखानकों हू दरसन भयो. परि श्रीगुसांईजीके सम्बन्ध बिना यह दृढ़ न होंइ. क्यों, जो श्रीठाकुरजी स्वतन्त्र हैं. अपनी इच्छा तें वाकों सुख दिये. परि श्रीगुसांईजीके सम्बन्ध बिना पुष्टि रीतिसों बंधे नाहीं. पुष्टिमार्गमें श्रीठाकुरजी श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजीके बस हैं. तातें पुष्टिमार्गीय जीवन पर श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजीकी कानितें श्रीठाकुरजी नित्य कृपा करत हैं. तातें श्रीठाकुरजी, अलीखान और अलीखानकी बेटीसों श्रीगुसांईजीके सेवक होंनकी कहे.

पाछें श्रीठाकुरजी श्रीगुसांईजीसों कहे, ये दोउ म्लेच्छ बाप - बेटी आज श्रीठकुरानी घाट उपर आई बैठेंगे. सो जब तुम स्नानकों पधारो तब उन दोउनकों नाम सुनाईयो. यह मेरी आज्ञा हैं. पाछें श्रीठाकुरजीके ये सब बचन बेटीने अलीखान आगें समुझाइकै कहे. तब अलीखान बेटीके बचन सुनिकै अति प्रसन्न भयो. पाछें बड़े सवारे उठि दोउ जन देहकृत्य करि महावनतें श्रीगोकुलमें श्रीठकुरानी घाटकी सिढ़ी उपर आइकै बैठि रहे. पाछें दिन प्रहर डेढ़ चढे श्रीगुसांईजी अपने घर श्रीनवनीतप्रियजीकों राजभोग धरिकै श्रीयमुनाजी स्नानकों पधारे. सो श्रीगुसांईजी स्नान करिकै धोती पहिरत हते तब अलीखान बाप - बेटी दोउ जन श्रीगुसांईजीकी दृष्टि परे. तब श्रीगुसांईजी एक वैष्णवसों कहे, जो वे दोउ जन बैठे हैं, तिनकों हमारे पास बुलाइ ल्याओ. तब वह वैष्णव जांइ अलीखानसों कह्यो, जो तुम देउ जनकों श्रीगुसांईजी बुलावत है. तब ये दोउ जन अति आनन्द पाइकै श्रीगुसांईजीके सन्मुख आइकै दण्डवत् करिकै ठाढ़े होंइ रहे. तब श्रीगुसांईजी श्रीमुखतें कहे. जो अलीखान ! आगे आऊ. तब ये दोउ जन थोरीसी दूरि आगें जांइ ठाढ़े भए. पाछें अलीखान दण्डवत् करि

श्रीगुसांईजीसों बिनती करे, जो महाराज ! हम तो आपकी सरनि हैं. तब उनकी बिनती सुनिकै श्रीगुसांईजी कृपा करिकै पिता - पुत्री दोउनकों श्रीयमुनाजीके निकट बुलाइकै नाम सुनायो. तब वाही समै अलीखानने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! हम म्लेच्छ कौन अपराधतें भए ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो अलीखान ! यह बात कहिवेकी नाहीं. तब फेरि अलीखानने बिनती करी, जो महाराज ! यह बातकौ भेद आपसों न पावेंगे तो जीव यह पूर्वजन्मकी बात कहिवेकों कौन समर्थ है ? जो हमकों यह बात कहेगो ? तातें, महाराज ! आप ही यह बात कहन योग्य हो. सो कृपा करिकै यह बात तो कही ही चाहिए. तब श्रीगुसांईजी उन अलीखानसों कहे, जो अलीखान ! सुनो -

तुम प्रथम जन्ममें दक्षिनके कावेरी रङ्गनाथ ठाकुर हैं. तिनकी सेवा करत हते. सो एक दिन श्रीठाकुरजीके पोढिवेकौ समै हतो. सो तुम श्रीठाकुरजीकी सिज्या संवारत हते. और यह तुम्हारी बेटी श्रीठाकुरजी आगें नृत्य करत हुती. श्रीठाकुरजीके किवाड़ खुले हते. ता समै दरसन होत हुते. इतने ही एक बड़ो राजा वाही समै श्रीठाकुरजीके दरसनकों आयो. तब तुम श्रीठाकुरजीकी सिज्या संवारत तें छोरिकै वा राजाकौ समाधान करन लागे. और यह तिहारी बेटी श्रीठाकुरजीके सन्मुख नृत्य करत हती, सो श्रीठाकुरजीकों छोरिकै राजाके सन्मुख हावभाव कटाक्ष करन लागी. ता अपराधतें तुम म्लेच्छ भये हो.

और श्रीगुसांईजी उन उपर कृपा करिकै अलीखानसों यह आज्ञा करे, जो अलीखान ! हम हमारे सेवकनकों कबहू छोरे नाहीं. तातें तुम हमारे हो. ये बचन श्रीगुसांईजीके श्रीमुखतें सुनि अलीखान अपने मनमें बोहोत प्रसन्न होंइ दण्डवत् करि अपने घर आए. पाछें श्रीगुसांईजी मुद्रा धरि सन्ध्या करि श्रीनवनीतप्रियजीके मन्दिरमें पधारे.

पाछें रात्रि भई. तब अलीखानने अपनी बेटीसों कही, जो बेटी ! तू मेरी बिनती श्रीठाकुरजी पधारे तब सुधि करि करियो. जे मैं हू तेरी कृपा तें श्रीठाकुरजीकौ दरसन पाऊं. तब बेटीने अलीखानसों कह्यो, जो हों कहूंगी तो सही. आगें तो वे प्रभु हैं. जो कछू इनकी इच्छामें आवे सो सही बात है. तब फेरि अलीखानने कही, जो तू कहियो तो सही. पाछें उनकी इच्छा तो मुख्य है ही. तब रात्रिकों श्रीठाकुरजी

ब्रजभक्तन सहित इहां पधारि आप ही तें वा अलीखानकी बेटीसों पूछे, जो तुम दोउ जन श्रीगुसांईजी पास नाम सुनि आए ? तब अलीखानकी बेटीने श्रीठाकुरजीसों बिनती करी, जो महाराज ! नाम पाइ आए. तब फेरि श्रीठाकुरजीने वासों कह्यो, जो अलीखान कहां है ? तब याने बिनती करी, जो महाराज ! दरसनकी अभिलाषा करत द्वारे ठाढ़ौ है. तब वासों प्रभुन यह आज्ञा करी, जो वाकों भीतर बुलावत क्यों नाहीं ? तब अलीखानकी बेटी अति आनन्द पाइ अपने पिताकों भीतर बुलाइ ल्याई. तब अलीखान भीतर आई दण्डवत् करि अति आनन्द पाए.

पाछें अलीखान आप पखावज बोहोत सुन्दर बजावते. सो श्रीठाकुरजीकी आज्ञा मांगिकै पखावज अलीखानने ता ठौर वा दिन रासमें अति आनन्दसों बजाई. सो अलीखानकी पखावज बाजत सुनिकै श्रीठाकुरजी बोहोत प्रसन्न भए. ता दिनतें नित्य श्रीठाकुरजी अलीखानकों नृत्य समै पखावज बजाइवेकों बुलाइकै दरसन देते.

भाव प्रकाश :
सो यातें, जो अलीखान लीलामें श्रीयमुनाजीके यूथमें है. इनकौ नाम 'रसरङ्गिनी' है. सो रसरङ्गिनी मृदङ्ग बजावनमें परम चतुर हैं. तातें उनकी मृदङ्ग सुनि श्रीठाकुरजी अति प्रसन्न होत हैं. सो यहां हू पखावजकी सेवा किये. और पीरजादी 'शुभ आनना'की सखी हैं. उन तें प्रगटी हैं. ये तामस भक्त हैं. इनकौ नाम 'सलौनी' है. सो वाकौ स्वरूप बोहोत मनोहर है. और ये नृत्यमें निपुन हैं. तातें सलौनीसों श्रीठाकुरजी सदा हिले रहत हैं. सो यहां हू या भांति बस भए.

या प्रकारसों श्रीनाथजी अलीखान उपर कृपा श्रीगुसांईजीकी काननितें करते.

वार्ता प्रसङ्ग ३ :
और एक समै महावनमें अलीखानकी बेटीने काहू वैष्णवके मुख सुनी, जो श्रीगुसांईजी कथा कहत हैं. सो वा वैष्णवसों पूछी, जो

श्रीगुसांईजी कथा कहनकों कौन समै बिराजत हैं ? तब वा वैष्णवने अलीखानकी बेटीसों कह्यो, जो प्रहर डेढ़ दिन रहे तब प्रभु कथाकौ प्रारम्भ करत हैं. सो उत्थापन समै स्नान करनकों उठत हैं. तब ये समाचार बेटीने अलीखान आगें कहे, जो श्रीगुसांईजी या समै कथा कहत हैं तातें तुम चलो तो आपुन कथा सुनिवेकों श्रीगोकुल चलिए. यह मेरी इच्छा है. तब अलीखान बेटीके ये बचन सुनिकै बोहोत प्रसन्न भयो. ता दिनतें अलीखान बाप - बेटी दोउ कथा सुनिवेकों आवते. तब श्रीगुसांईजी पोथी खोलते, कथा कहिवेकों. सो ये दोउ जन श्रीगुसांईजीके श्रीमुख तें श्रीभागवत सुनते. सो यह चर्चा वैष्णव आपुसमें करते. जो देखो ! दोउ म्लेच्छ हैं तिनकों द्वारतें कथा कहन समै मनुष्य पठाइकै श्रीगुसांईजी बुलावत हैं. तब कथा कहनकों पोथी खोलत हैं. और इनकों श्रीगुसांईजी श्रीभागवत सुनावत हैं. या प्रकार आपुसमें सब वैष्णव चर्चा करन लागे. परि डरपिकै कोई श्रीगुसांईजीसों पूछि न सके. सो प्रभु तो अन्तर्यामी हैं. तातें इन वैष्णवनके मनकों आसय जानि गए. तब एक दिन अलीखान बाप - बेटी दोउ आई बैठें. तब आप कथा कहनकों पोथी खोलत हते. सो वे सगरे वैष्णव श्रीगुसांईजीके सन्मुख बैठे हते. तिन वैष्णवनसों श्रीगुसांईजी पूछे, जो काल्हि हम कौनसो प्रसङ्ग कथामें कह्यो हो ? सो सब तुम हमकों सुनावो. तब वे सब वैष्णव आपुसमें एक - एककौ मुख देखन लागे. परि काहूसों कथाकौ प्रसङ्ग प्रभुनकों न बतायो गयो. तब श्रीगुसांईजी चुप करि रहे. पाछें श्रीगुसांईजीने अलीखानकी बेटीसों पूछी, जो काल्हि हम कहा कथा कहे हते ? तब अलीखानकी बेटी श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि बिनती करी, जो महाराज ! आपकी आज्ञा होंइ तो हम जा दिनतें कथा सुनत हैं ता दिनतें काल्हि पर्यन्त (की) कथाकी बिनती करें. और आज्ञा होंइ तो कल्हिकी कथाकी बिनती करें. तब इनके बचन सुनिकै श्रीगुसांईजी उन वैष्णवनसों कहे, जो अब तिहारे मनकौ सन्देह निवृत्त भयो ? के और हू मनमें सन्देह है ? तो कहो. सो वे सगरे वैष्णव लज्या पाइ चुप करि रहे.

सो वे अलीखान बाप - बेटीकौ ऐसो मन श्रीगुसांईजीकी कृपा तें हतो.

वार्ता प्रसङ्ग ४ :
और अलीखान एक समै घोड़ा फेरत हते. सो श्रीगुसांईजीने देख्यो, जो यह भलो घोड़ा है. तब यह बात चिरवादारने अलीखानसों कही, जो या घोड़ाकी सराहना श्रीगुसांईजीने अपने श्रीमुखतें बोहोत करी है. सो यह बात अलीखान सुनि वा घोड़ापै नयो साज बांधिकै

श्रीगुसांईजीकी भेंट पठाय दियो. सो घोड़ा लै मनुष्य द्वार जांइ ठाढ़ौ रह्यो. पाछें भीतर पोरियासों श्रीगुसांईजीकों खबरि कराई. सो पोरिया भीतर जांइ श्रीगुसांईजीसों बिनती कर्यो. जो महाराज ! अलीखानने घोड़ा पठायो है. सो मनुष्य वा घोड़ाकों लिये द्वार पर ठाढ़ौ है. तब श्रीगुसांईजी घोड़ा राखिवेकी नाहीं किये. सो ये समाचार वा पोरियाने वा घोड़ाके साथके मनुष्यसों कहे. तब वह मनुष्य घोड़ा लै, पाछें अलीखान पास आइकै श्रीगुसांईजीके सब समाचार कहे. जो साहिब ! वे तो यह घोड़ा पाछो फेरि पठाए, राख्यो नाहीं. तब अलीखान अपने मनमें विचारे, जो हमारे द्रव्यकों प्रभु कौन भांति अङ्गीकार करेंगे ? ता दिनतें अलीखान वा घोड़ापै चढते नाहीं. और वा चिरवादारकों हू न चढन दैते. वह घोड़ा बंध्योई रहतो. जैसें नेग दानों मसालो पावत हतो तसेई नेग नित्य पायो करतो. और जब अलीखानकी असवारी निकरती तब वा घोड़ाकौ सिङ्गार करिकै अलीखान अपनी दृष्टि आगें कोतल (में) राखतो. और अलीखान भावसों श्रीगुसांईजीकी असवारी करावते. सो वा घोड़ाके आगें अलीखान दण्डवत् करिकै पाछें दूसरे घोड़ा पर चढ़ते. और बरस दिनके बरस दिन दसहराकों वा घोड़ाकौ साज सब नयो पलटते. सो वा घोड़ाकौ प्रसादी प्रथमकौ साज अपने घोड़ा उपर बांधते. और कहते, जो या घोड़ाकी सराहना श्रीगुसांईजी करे हैं. यह भाव हतो. वे अलीखान बाप - बेटी दोउ ऐसें भगवदीय हते. तातें ईनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।३७।।

३८-एक ब्राह्मणी, उज्जैनिके पास रहती

अब श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी एक ब्राह्मनी उज्जैनितें चार कोस ऊरेमें एक गाम है, तहां रहती, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत ह

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'चन्द्रमुखी' है. सो चन्द्र जैसो जिनकौ मुख है. सो चन्द्रमुखी 'शुभ आनना'तें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं. सो चन्द्रमुखीकौ रसविलासिनीसों बोहोत मिलाप है. रसविलासिनी श्रीठाकुरजीकी एकान्त वार्ता चन्द्रमुखीसों कहति हैं. सो एक दिन चन्द्रमुखीने श्रीठाकुरजी अरु विसाखाजीके एकान्तकी बात भामा सखीसों कही. सो विसाखाजीने वह बात सुनी. तातें सराप दियो, जो भूमि पर गिरो.

सो उज्जैनितें कोस चारि उरेमें एक गाम है. तहां एक द्रव्यपात्र सांचोरा ब्राह्मन रहतो. ताके घर इनकौ जन्म भयो. सो ये बरस आठकी भई तब मा - बापने इनकौ विवाह कियो. पाछें बरस बीस पच्चीसकी भई तब गाममें महामारी फैली. सो मा, बाप, धनी सब मरे. तब घरमें ये अकेली रही. सो बोहोत रोवे. गामके लोग बोहोत समुझावे परि काहूकी न माने. ऐसें कछूक दिन बीते. पाछें काहूने कही, जो अमूकी ! तू उज्जैनिमें कृष्ण भटटके इहां कथा - वार्ता सुनिवे (कों) जायो करि. कृष्ण भटट कथा - वार्ता बोहोत सुन्दर करत हैं. तातें तेरो दुःख दूरि होयगो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वह बाई ब्राह्मनी उज्जैनि तें चारि कोस ऊरेमें एक गाम हतो तहां रहति हती. सो तहांतें वह बाई कृष्ण भटटके घर आवें. सो श्रीगुसांईजीकी वार्ता कृष्ण भटटके घर सुनती. सो वाकौ मन बोहोत श्रीगुसांईजी उपर आसक्त भयो. वाकों बोहोत आर्ति श्रीगुसांईजीके दरसनकी भई. सो एक समै श्रीगुसांईजी उज्जैनिकों पधारे. तब वा बाई ब्राह्मनीने सुनी, जो श्रीगुसांईजी उज्जैनिकों पधारे हैं. तब वह बाई ब्राह्मनी अति उत्कण्ठासों श्रीगुसांईजीके दरसनकों वा गाममें आई. श्रीगुसांईजीके दरसन करि दण्डवत् करि एक दिस न्यारी ठाढ़ी होंइ रही. ता समै उज्जैनिके बोहोत वैष्णव नाम पाइवेकों आए हते. तिनकों श्रीगुसांईजी नाम उपदेश करत हुते. सो सगरे नाम पाइ रहे, तब वह बाई ब्राह्मनी हू श्रीगुसांईजी पास नाम पाइवे आई. पाछें श्रीगुसांईजी उज्जैनिमें कृष्ण भटटके घर पधारे. तहां रसोई करि श्रीठाकुरजीकों भोग धरि श्रीगुसांईजी भोजन करि विश्राम करे. ता पाछें रात्रिकों सब वैष्णव फेरि श्रीगुसांईजी पास दरसनकों आए. तिन वैष्णवन कह्यो, जो महाराज ! वह ब्राह्मनी तो बिभिचारिनी है. ताकों आप बागमें नाम क्यों सुनाए ? तब श्रीगुसांईजी उन वैष्णवनसों कहे, जो या बातमें तुम कहा लेउगे ?

भाव प्रकाश :

यह कहि यह जतायो, जो हमारे सिद्धान्तसों तो जहां तांई जीव ठाकुरमें अनन्य नहीं होंइ, इन्द्रियनकौ अन्य विनियोग होंइ, तहां तांई वह सर्व इन्द्रियन करिके व्यभिचारि ही है. और दूसरो अभिप्राय यहू है, जो पुष्टिमार्गमें दैवी जीव कैसो उ क्यों न होंइ ताकौ निश्चय अङ्गीकार है. काहेतें, या मार्गमें प्रभु जीवकी

कृति देखत नाहीं है. अपने प्रमेयबल तें उद्धार करत हैं. तातें प्रभुनकी सरन निरन्तर रहनो यही जीवकौ एक कर्तव्य है. काहेतें, जो सरनस्थ जीवनकों प्रभु निश्चय उद्धार करत हैं. सो श्रीआचार्यजी 'कृष्णाश्रय' ग्रन्थमें प्रभुनसों विज्ञप्ति किये हैं. सो श्लोक

शरणस्थ समुद्धारं कृष्णं विज्ञापयाम्यहम् ।

यातें पुष्टिमार्गमें भगवानकी कृपा (ही) मुख्य हैं. जीवकी योग्यताकौ विचार नाहीं. तातें सरन आए जीव पर निश्चय कृपा होत हैं.

पाछें वह बाई कृष्णभटटके घर आइकै रही. जहां पर्यन्त श्रीगुसांईजी कृष्ण भटटके घर बिराजे तहां पर्यन्त वह बाई हू कृष्ण भटटके घर ही श्रीगुसांईजीकी सेवामें रही. सो श्रीगुसांईजीकी परचारगी और टहल करती. पाछें वा बाईने कृष्ण भटटसों बिनती करी, जो मोकों श्रीगुसांईजीसों कहि समर्पन करावो. तब वा बाईकी आर्ति देखिकै कृष्ण भटटने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! या बाईकौ मनोरथ समर्पनकौ है. तब श्रीगुसांईजी वाकौ शुद्ध भाव जानिकै समर्पनकी आज्ञा करे. पाछें दूसरे दिन वा बाईकों श्रीगुसांईजीने समर्पन करवायो. सो वह बाई कृष्ण भटटके सङ्ग तें भगवद्भाव सम्पन्न भई. तब वा बाईने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! अब कछू मोकों सेवा सोंपिये. तब श्रीगुसांईजी वाकों सेवा करिवेकों श्रीनाथजीकौ बागा पधराइ दिये. पाछें श्रीगुसांईजी कृष्ण भटटसों बिदा होंइकै श्रीगोकुलकों पधारे. ता पाछें कृष्ण भटटने वा बाईकों श्रीनाथजीके बागाकौ श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ स्वरूप करि दियो. वह सेवा पधराइ वह बाई अपने गाममें आई रही. सेवा प्रकार सब कृष्ण भटटकों पूछिकै ता प्रकार आछी भांतिसों अपने घर सेवा करन लागी. सो वह बाई अति प्रीतिसों श्रीनाथजीकी सेवा करती. सो सेवा करत बोहोत दिन भए. तब वा बाईसों श्रीनाथजी सानुभावता जनावन लागे. त्यों - त्यों वह बाई मन लगाइकै सेवा करन लागी. पाछें वा बाईसों श्रीनाथजी प्रत्यच्छ बातें करन लागे. वा बाईके पास तें जो वस्तू चहिये सो श्रीठाकुरजी मांगि लैन लागे. और वा बाईकों सेवा करत समै बोहोत अनुभव श्रीनाथजी जतावन लागे. त्यों - त्यों वह बाई अति रुचिसों सेवा करन लागी. और श्रीनाथजी जो वस्तू मांगते सो वस्तू घरमें होती तो वाही समै धरती. जो वस्तू घरमें न होती तो बेगि - बेगि श्रीठाकुरजीसों पहोंचती, पाछें प्रसाद लै उज्जैनि जांइ वह वस्तू ल्याइकै उत्थापन समै श्रीनाथजी आगें भोग धरिकै वह बाई प्रभुनसों बिनती

करती, जो महाराज ! अमूकी वस्तू लीजिए. तब श्रीनाथजी वा वस्तूकों अति आनन्दसों अङ्गीकार करते. या प्रकार वह बाई केतेक बरस भली भांतिसों सेवा करी. सो कृष्ण भटटसों बोहोत मिलाप राखती. और काहू समै कृष्ण भटटके सेव्य श्रीठाकुरजीकों कछू चहियतो सो वा बाई पास मांगते. सो वह बाई रात्रि प्रहर डेढ़ रहे तब अपने घर तें वह वस्तू लै कृष्ण भटटके घर आई, वह वस्तू कृष्ण भटटकों सोंपिकै अपने घर प्रातःकाल आई, वह बाई श्रीठाकुरजीकी सेवा करें. श्रीठाकुरजी ऐसें वा बाईकों सानुभावता जनावत हते. तातें कृष्ण भटट वा बाई पर बोहोत हित करते. परि निहालचन्द भाई वा बाई सों कहते, जो बाई ! तू सावधान रहियो. तू श्रीगुसांईजीकी कृपा तें वस्तू बड़ी पाई है, तासों श्रीठाकुरजीकी सेवा सावधानीसों करियो. यह उपदेश वा बाईसों निहालचन्द भाई करत रहते. सो वह बाई निहालचन्द भाईकी बात शिक्षा करि मानती. सो वह बाई श्रीठाकुरजीकी सेवा रुचिसों करती.

पाछें एक दिन वह बाइकी चर्चा निहालचन्द भाई आगें कृष्ण भटट करे. तब निहाचन्दने कृष्ण भटटसों कह्यो, जो भटटजी ! या बाईने वस्तू बड़ी पाई है. और पात्र तो ओछो है. तासों ठहराय तब जानिए. या प्रकार कृष्ण भटटसों निहालचन्द भाईने कह्यो. सो या प्रकार निहालचन्द भाई कबहू - कबहू कृष्ण भटटसों कहत रहते. तब कृष्ण भटट सुनिकै चुप करि रहते. ऐसें करत केतेक दिन बिते. सो एक समै एक साक्त गामकी सहनगी लै भूमि भरन आयो. ताकौ डेरा वा बाईके घर पास भयो. सो एक दिन वह बाई अपने घरमें बैठी चांवर बीनत हती. तब या साक्तने देखी. सो वह साक्त आइकै वा बाईसों पूछ्यो, जो बाई ! तू ऐसें सुन्दर चांवर कौनक काजे या भांति बीनति है ? तू चांवर बड़ी बारमें बोहोत जतनसों बीनति है, सो तेरे कहा है ? तब वा बाईने वा साक्त सों कह्यो, जो मेरे घरमें श्रीठाकुरजीकी सेवा है. सो मैं यह चांवर अपने श्रीठाकुरजीके लिये बीनति हों. तब वा साक्तने वा बाईसों पूछ्यो, जो तेरे श्रीठाकुरजीकी सेवा है, सो मोकों तू अपने श्रीठाकुरजीके दरसन करावेगी ? तब वा बाईने समै भए वा साक्तकों अपने श्रीठाकुरजीके दरसन करवाए. पाछें वह साक्त दरसन करि भूमि नापन गयो. तहां कितनीक भूमि वा बाईकी हती. जो खेतके रखवारेने कही, जो साहिब ! यह भूमि वा बाईकी है. सो वा साक्तने दोरी भरतमें कछू थोरी भरी. तब वह साक्त भूमि नापकै आयो. तब वा साक्तने वा बाईसों कह्यो, जो बाई ! मैं तेरी भूमि जानिकै इतनो तोकों अहसान कर्यो हूं.

भाव प्रकाश :
सो लौकिक मनुष्यकी यह रीति है, जो अपने किये अहसान (कों) दूसरेकों कहि दिखावे. अरु भगवदीय काहू पर अहसान करें, जो सर्वथा कहे नाहीं. सो यह साक्तने या प्रकार वा बाईसों कह्यो.

तब वा बाईने वा साक्तसों कह्यो, जो पूत ! तैं मोकों जिवाई. ऐसें वा बाईने वा साक्तसों कह्यो. तब वाके घर तें श्रीठाकुरजी श्रीगुसांईजीके घर पधारे.

भाव प्रकाश :
सो काहेतें, जो (या बाईकों बाचिक) अन्याश्रय भयो. अन्यमार्गीयकौ अहसान मोल लियो. तातें वैष्णवकों बोहोत सम्भारिकै बोलनो. अन्यमार्गीसों सम्भाषन (हू) न करनो. जो बोलनो तोहू बिचारिकै बोलनो. परि अहसान सर्वथा न लैनो. यह सिद्धान्त भयो. और अपने श्रीठाकुरजीके दरसन अन्यमार्गीकों न करावने, यहू जतायो.

सो पधारत समै श्रीठाकुरजी कृष्ण भटटसों जनाए, जो वा बाईने अन्याश्रय कर्यो है. तातें हम तो अब श्रीगुसांईजीके घर पधारत हैं. पाछें कृष्ण भटटसों जनाइकै निहालचन्द भाईके घर श्रीठाकुरजी पधारे. ता समै निहालचन्द भाई प्रसाद लै सोवत हते. सो श्रीठाकुरजीने निहाचन्द भाईकों स्वप्नमें जनाई. ता समै निहाचन्द भाई चौंकि उठे. सो कपड़ा पहरि निहाचन्द भाई कृष्ण भटटके घर आए. सो कृष्ण भटटसों कहे, जो भटटजी ! वा बाईके घर तें श्रीठाकुरजी उठे. सो मोकों यह प्रभु कहत पधारे. जो वा बाईके घर सेवामें हम न रहेंगे. जो या बाईने तो अन्याश्रय कर्यो है. तासों हम तो श्रीगोकुल जात हैं. सो यह सुनिकै निहाचन्द भाईसों कृष्ण भटट हू ने कह्यो, जो याही तें भटटजी हों तुम तें कहत हतो, जो यह बाई पात्र ओछो है. और वस्तू बड़ी पाई है. ठहराय तब जानिये. सो ये बचन निहाचन्द भाईके सुनिकै कृष्ण भटट चुप करि रहे.

पाछें घरी चारिमें वह बाई उत्थापन समै स्नान करि मन्दिरके किवाड़ खोलिकै भीतर जांइ (देखे) तो सिंघासन उपर श्रीठाकुरजी नाहीं. और सब सामग्री यथास्थित है. तब वह बाई श्रीठाकुरजीकों गादी उपर देखे नाहीं. तब वह बाई बोहोत रोवन लागी. सो खेद बोहोत करन लागी. सो खेद करत अपने गाम तें उज्जैनिमें कृष्ण भटटके घर आई. ता समै कृष्ण भटट और निहालचन्द भाई दोउ बैठे हते. सो यह बात कृष्ण भटटके घर आइकै वह बाई बोहोत ताप करि रोइकै कही. तब वा बाईसों कृष्ण भटटने कह्यो, जो बाई ! हमारे श्रीठाकुरजी बनज - ब्यौपार करत नाहीं है, जो ऐसें लोगनकों दिखाइये. और वे लोग ऐसी भांति वैष्णव जानि अहसान करें तो वैष्णवता तो बिकानी. तातें अब तोसों वे तो सेवा सर्वथा न करावेंगे. अब तू अपने मनकों जाने सो करि. तब वह बाई कृष्ण भटटके ये बचन सुनिकै चुप करि रही. पाछें हारिकै अपने घर गई.

तातें या जीवकों अन्याश्रय तै या प्रकार डरपत रहनो. पाछें श्रीनाथजी वा बाईके घर तें श्रीगुसांईजी पास पधारे. तब या बाईके सब समाचार श्रीनाथजीने श्रीगुसांईजीसों कहे. तब श्रीगुसांईजी प्रभुनके बचन सुनिकै चुप करि रहे. तातें यह फल अन्याश्रयकौ दिखाए.

भावप्रकाश :

सो श्रीगुसांईजी विज्ञप्तिमें कह्यो है. सो श्लोक -

अन्यसम्बन्ध गन्धोपि कन्धरामेव बाधते ।

यामें कह्यो, जो अन्य सम्बन्धकौ गन्ध हू कन्धराकौ बाध करनहारो हैं. सो वैष्णवकों अन्य सम्बन्ध तें डरपत रहनो.

सो यह बाई श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।३८।।

३९-मथुरादास क्षत्री

अब श्रीगुसांईजीके सेवक मथुरादास क्षत्री, गोपालपुरके जाकों श्रीगुसांईजीने त्याग कियेकौ कह्यो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'प्रेमवल्लरी' है. सो प्रेमवल्लरी 'शुभ आनना' तें प्रगटी हैं. तातें इनके भाव - रूप ह

ये मथुरादास गोपालपुरमें एक क्षत्रीके जन्मे. सो बरस तीसके भए. तब एक वैष्णवकौ सङ्ग पाई, श्रीगोकुल आई, श्रीगुसांईजीके सेवक भए. ता दिनतें ये नित्यप्रति श्रीगोकुल श्रीगुसांईजीके दरसनकों जाते. सो श्रीसुबोधिनीजीकी कथा सुनिकै ता पाछें वे अपने घरकों आवते.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै श्रीगुसांईजी अपनी बेठकमें बिराजे हते. तब पास पांच सात वैष्णव बैठे हते. ताही समै मथुरादास आए. सो श्रीगुसांईजीको दण्डवत् करि पाछें आज्ञा पाइ बैठें. ता पाछें मथुरादास श्रीगुसांईजीसों बिनती किये, जो महाराज ! आपकी सृष्टिमें और श्रीआचार्यजीकी सृष्टिमें कितनो बिलगि है ? तब ये बात सुनिकै श्रीगुसांईजी तो चुप करि रहे. पाछें एक दिन वेई वैष्णव सगरे प्रभुन आगें बैठे हते. तब या मथुरादासकों श्रीगुसांईजी बुलाइकै कहें, जो वैष्णव ! मैं तेरो त्याग कियो. सो श्रीगुसांईजीके बचन सगरे वैष्णवनने सुने. पाछें सगरे वैष्णव अपने - अपने घर आए. ता पाछें वह मथुरादास हू लज्जित होंइकै अपने घर आए. सो ता दिनतें कोऊ वैष्णव मथुरादाससों श्रीकृष्ण - स्मरन करें. कोऊ वासों बोलेउ नाहीं. कोऊ वाकों पास बैठारे नाहीं ता उपर जो कोऊके घर वह जांइ तो वैष्णव ये बचन वासों कहे, जो भाई ! तू हमारे घर क्यों आवत हैं ? तेरो तो श्रीगुसांईजीने त्याग कियो है. तासों तू हमारे घर मति आवे. या प्रकार सगरे वैष्णव वासों कहे. सो मथुरादासकों जलपान करें तीन दिन भए. तब चौथे दिन मथुरादासने अपने मनमें यह निर्द्धार कियो, जो अब या देहकौ त्याग करनो. सो चौथे दिन गाम बाहिरकों चले. तहां मार्गमें एक डोकरीकौ घर मिल्यो. सो वह डोकरी श्रीआचार्यजी

महाप्रभुनकी सेवकिनी हती. तब मथुरादासने अपने मनमें विचार्यो, जो यह श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीकी सेवक हैं. ता सों तो या समै श्रीकृष्ण - स्मरन करत जांइ. सो मथुरादास तो वा डोकरीके घर आए. ता समै वह डोकरी अपने श्रीठाकुरजीकौ राजभोग धरि बाहिर बैठी हती. सो यह वैष्णव जांइ श्रीकृष्ण - स्मरन कियो. तब वह बाई बोहोत प्रसन्न होंइकै मथुरादासकों भक्तिभावसों बैठारिकै बिनती करी, जो हों तो अब वृद्ध भई हों. तातें नित्य मोसों श्रीगुसांईजीके दरसनकों जायो जात नाहीं. परि प्रभु बड़े दयाल हैं जो आजु कृपा करिकै बिना बुलाए मेरे घर अपने वैष्णवकों या समै पठायो है. तासों प्रभुनकी कृपाकौ पार नाहीं.

भाव प्रकाश :
यामें यह जतायो, जो जब प्रभु प्रसन्न होंइ तब ही वैष्णव अचानक अपने घर आवें. सो सूरदासजीने गायो है

प्रभु जन पर प्रसन्न जब होंई ।
तब वैष्णव जन दरसन पावे पाप रहे नहीं कोई ।
हरिलीला उर आवे ताके सकल बासना नासे ।
'सूरदास' निश्चय विचार करि हरि स्वरूप जब भासे ।

या प्रकार वैष्णवके स्वरूपकौ ज्ञान या डोकरीकों हतो.

ता पाछें वा बाईने मथुरादाससों कही, जो उठो ! स्नान करो. तब तो मथुरादासकों रुदन आई गयो. तब वा बाईने यासों कही, जो तुम दिलगीर क्यों होत हो ? सो कारन तो मोसों कहो. तब मथुरादासने अपने सब समाचार वा बाईसों कहे, जो मोकों श्रीगुसांईजी और सब वैष्णवन त्याग कर्यो है. तासों हों अपनी देहकौ त्याग कर्यो चाहत हूं. सो आज मोकों चौथो दिन है, जल पान नाहीं लीनो. तब वा बाईने या वैष्णवसों कह्यो, जो भलो ! तुम लरिकानके कहेकौ बुरो मानत हो ? ये तो श्रीगुसांईजी बालक हैं. इनकी बातकौ बावरो होंइ

सो बुरो मानें. तातें उठो, स्नान करि दरसन करि मन्दिरसों पहोंचि आपुन दोउ श्रीगुसांईजीके दरसनकों चलेंगे. तब मथुरादासने उहां स्नान कर्यो. पाछें भोग सराइ दोउ जन श्रीठाकुरजीसों पहोंचिकै श्रीगुसांईजीके दरसनकों आए. तब या वैष्णवने श्रीगुसांईजीको दण्डवत् करी. तब श्रीगुसांईजी वा वैष्णवकों पूछे, जो वैष्णव ! तुम चारि दिन लों दीसे नाहीं सो कहूं गए हते कहा ? तब या बाईने श्रीगुसांईजी आगें या वैष्णवके सब समाचार कहे. तब श्रीगुसांईजी श्रीमुखसों कहे, जो हम तो यासों कछू कह्यो नाहीं. याकौ त्याग कर्यो नाहीं. तब श्रीप्रभुके बचन सुनिकै यह वैष्णव या बाईकी बात सत्य मानिकै पुलकित होंइ श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् कर्यो. तब श्रीगुसांईजी उन सगरे वैष्णवनसों कहे, जो देखो वैष्णव ! श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी सृष्टि ऐसी है.

भाव प्रकाश :
सो कहा ? जो श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी सृष्टिमें सुदृढ प्रीति हैं. सो जानत है, जो या मार्गमें त्याग सर्वथा न होंइ. तातें या वैष्णवकों मरत तें जीवायो. सो जैसें अच्युतदासने भगवानदास भीतरिया पै अनुग्रह कियो ता भांति या डोकरीने हू या मथुरादास पै अनुग्रह कियो. तासों श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी सृष्टिकौ कहा कहनो ?

तब वे सगरे वैष्णव अपने मनमें प्रभुनके बचन सुनिकै चुप करि रहे. पाछें वह बाई वा वैष्णवनकों दण्डवत् करवाइ आपु दण्डवत् करी. तब उनकों कृपा करिकै श्रीगुसांईजी दोउ बीरा दिये, पाछें वा वैष्णवकों वह बाई अपने घर लिवाइ ल्याई. सो आछी भांतिसों वाकों महाप्रसाद लिवाइकै प्रसन्न करि वाके घर पठायो. जब वह बाई श्रीगुसांईजीके पास तें उठिकै अपने घर गई तब श्रीगुसांईजी वा बाईके सब समाचार उन वैष्णवनके आगें आप श्रीमुखतें कहि बोहोत सराहना करें. तब सगरे वैष्णव सुनिकै चुप करि रहे. वह बाई श्रीआर्चायजीकी ऐसी सेवकिनी हती. सो मथुरादासकों वाकी सङ्गति तें श्रीगुसांईजीके स्वरूपकौ ज्ञान भयो.

सो मथुरादास श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय भये. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।३९।।

४०-एक वैष्णवका लरिका, दक्षिण का

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक वैष्णवकौ लरिका, दक्षिनकौ, ताको वार्ताकौ भाव कहत हैं -

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो एक समै श्रीगुसांईजी आप दक्षिनके परदेसकों पधारे हते. सो आप रात्रिके समै कथा कहत हते. सो एक दिन वा वैष्णवके लरिकानें श्रीगुसांईजीके श्रीमुखतें कथा सुनी. सो वा दिन कथामें यह प्रसङ्ग सुन्यो, जो ठाकुरजी आप ब्रजमें नित्य - लीला करत हैं. जो गोचारन लीला करिकै श्रीनटवर वेष धरिकै ग्वाल सहित गांइन सहित मुरली बजावत हैं. सो नित्य - लीला या रीतिसों करत हैं. और सन्ध्या समै घर आवत हैं. ता समै सन्ध्या - आर्ति श्रीयशोदाजी करत हैं. सो ऐसो प्रसङ्ग सुनिकै वा वैष्णवके लरिकाने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी. और पूछी, जो महाराजाधिराज ! अज हू यह लीला है ? तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख सों कहे, जो यह तो लीला नित्य ही है. तब तो वा वैष्णवके लरिकाकों बोहोत ही चटपटी लागी. सो रह्यो न जांइ. और मनमें यह लगन लागी, जो कब ब्रज जाऊं ? और मैं ऐसें दरसन करूं ?

पाछें एक दिन कछूक खरची लै कै वह वैष्णवकौ लरिका उहां तें चल्यो. और अपने घरमें काहू सों कछू कह्यो नाहीं. बिना पूछे ही उठि गयो. और आगें जांइकै माता - पिता सों कहाइ पठाई, जो मैं श्रीगोकुल होंइकै आऊंगो. सब ब्रजके दरसन करिकै. सो कोईक दिनमें वह वैष्णवकौ लरिका श्रीगोकुलजीमें आइकै पहोंच्यो. पाछें गोवर्द्धन आयो. सो जा ठिकाने श्रीगुसांईजी आप कहे हैं ता ठिकाने वह वैष्णवकौ लरिका बैठिकै देखन लाग्यो. सो यह रटना लागी, जो श्रीप्रभुजी आप अब कब पधारेंगे ? सो याही भांतिसों देखत - देखत सांझ परी. सो लौकिक ग्वाल गांइ तो आवत देखी, परि जैसें श्रीगुसांईजी आप श्रीमुखसों कहे हते, सो, ता बातकौ तो लेस हू न देख्यो. सो इतने तो सूर्य हू अस्त भयो. तब तो वैष्णवके लरिकाकों बडो ही आश्चर्य भयो. जो श्रीगुसांईजी तो कब हू झूठ बोले नाहीं. और मैनें तो कछू इहां देख्यो नाहीं. सो वह तीन दिन लों वाही ठौर बैठ्यो रह्यो. सो वा वैष्णवके लरिकाके हृदयमें बड़ो ताप भयो. पाछें

तीसरे दिन हू सूर्य अस्त भयो. तब तो वा वैष्णवके लरिकाकों बोहोत कलेस भयो. और विचार्यो, जो श्रीगुसांईजी तो कब हू झूठ बोले नाहीं, और मैनें तो कछू देख्यो नाहीं. तातें यह देह मेरी त्याग करूंगो. जो यह देह मेरे कौन कामकी है ? यह विचारि वा वैष्णवके लरिकाने अपने मनमें निश्चय कियो. तब श्रीगोवर्द्धनधर वाकौ ताप सहि न सके. सो श्रीप्रभुजी आप विचारे, जो या लरिकाकौ अब दरसन देनो. तब इतनेई वा वैष्णवकौ लरिका देखे तो अलौकिक घरी दोइ दिन बादरमें सों निकस्यो है. सो वा वैष्णवकौ लरिका विचारन लाग्यो, जो बादरमें तें मोकों कहा भ्रम भयो है ? पाछें निश्चय कियो, जो सांचे ही दिन दीसत है. तब वा वैष्णवके लरिकाकों धीरज भयो. ता पाछें श्रीगुसांईजी जा प्रकार कथामें आपने श्रीमुखसों कह्यो हतो ताई प्रकारसों श्रीठाकुरजीने वा वैष्णवके लरिकाकों दरसन दीनो. सो वाही समै वा वैष्णवके लरिकाने देख्यो तो प्रथम अनेक सोने रुपेकी सिंग वारी और बड़े - बड़े कजरौटे नेत्रवारी गायें दीसी. सो जूथ के जूथ चली आवति हैं. वाके सोने रुपेके खूर हैं. बड़े - बड़े वाके थन हैं. सो थननमें सों दूध श्रवति जाति है. और बछरनकी सुधि करिकै रांभति - रांभति बेग - बेग ब्रजकों आवति हैं. सो उनकी खूरनकी रजन तें आकाश आच्छादित होंइ गयो है. तिनके पाछें - पाछें असङ्ख्य ग्वालनकों वा वैष्णवके लरिकाने देखे. सो परस्पर गाते - बजाते चले आवत हैं. उनके बीचमें श्रीठाकुरजी आपु श्रीदामा सखाके कन्धा पर श्रीहस्त धरे पधारत हैं. आगें बलदेवजी हैं. सो श्रीठाकुरजीने मोरपीच्छकौ मुकुट धारन कियो है. काननमें अनेक प्रकारके फुलनके गुच्छ हैं. पीताम्बर धारन कियो है. धातुनके अनेक भांतिके चित्र किये हैं. गुञ्जामाला, बनमाला आदि सिंगार कियो है. अलकावलि पै गौरज लागी है. तातें मुखारविन्द परम सुशोभित होंइ रह्यो है. कमलसे नेत्रमें प्रसन्नता छाई रही है. श्रीहस्तमें मुरली है. और मन्द - मन्द हास्यसों सगरे ग्वाल - गोपनकों मुग्ध करत हैं. या भांति वा वैष्णवके लरिकाकों श्रीठाकुरजी आप दरसन दिये. पाछें वा वैष्णवके लरिकाके निकट आय अपने श्रीहस्तसों श्रीगोवर्द्धनधरने वाकों अपनी मण्डलीमें ऐंच लियो. पाछें नन्दालयमें ल्याये वहां तीन दिन लों वाकों अपने पास राख्यो. खवायो पिवायो. अपने साथ सिज्यामें सुवायो. या प्रकार वाकों बोहोत सुख दियो.

भावप्रकाश :

काहेतें ? यह वैष्णवकौ लरिका लीलामें 'गोपदेवी' है. सो 'मधुरेक्षना' तें प्रगटी हैं. तातें इनके सात्विक भावरूप हैं. ये कुमारिकाके जूथमें हैं. तातें ठाकुर

आप उनकों या प्रकार नन्दालयमें राखि तीन दिन लों अपनी निकट सिज्यामें लै पोढें.

ता पाछें वा वैष्णवके लरिकाकों फिरिकै चटपटी लागी. जो कब घर जाऊं ? और कब श्रीगुसांईजी सों लीलाके समाचार कहों ? और या वैष्णवके लरिकाकी दसा तो और ही होंइ गई. तब श्रीठाकुरजी आप वा वैष्णवके लरिकाकों उनके घर पहोंचायो.

भाव प्रकाश :
सो काहेतें ? जो वा वैष्णवकौ लरिका अपने मा - बापकों कहे बिना ब्रजकों आयो हतो. सो मा - बापकौ मन वा लरिकामें बोहोत हुतो. तातें श्रीठाकुरजीने वा वैष्णवके लरिकाकौ पाछौ घर भेज्यो. क्यों जो जब लौं लौकिक वारेनकी आसक्ति रहे तब लों वा जीवकी नित्यलीलामें स्थिति सम्भवे नाहीं. और दूसरो अभिप्राय यहू है, जो श्रीगुसांईजीके बचन लोकमें सत्य करि दिखावने हैं. तातें ठाकुरने वा वैष्णवके लरिकाकों अपने घर भेज्यो.

सो श्रीगुसांईजी जहां कथा कहत हते ता समै (तहां) जांइकै याने दरसन किये. और वैष्णव सब बैठे हुते. सो तिनमें यहू श्रीगुसांईजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै बैठ्यो. पाछें श्रीगुसांईजी आप कथा कहि चुके. तब वा वैष्णवके लरिकाकों श्रीगुसांईजी पूछे, जो तू इतने दिनतें दीसत नाहीं, सो तू कहां गयो हतो ? तब वा वैष्णवके लरिकाने श्रीगुसांईजी आगें ब्रजकी लीलाके सब समाचार कहे. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी आप आज्ञा किये, जो पात्र तो छोटो है और दान तो बड़ो भयो है. सो या पात्रमें ठहरेगो नाहीं. ता पाछें वा वैष्णवके लरिकाकी प्रातःकाल देह छूटी. तब लीलामें जांइकै प्राप्त भयो. तातें ब्रज है सो अलौकिक हैं. या में कछू सन्देह नाहीं है. जो वैष्णव होंइ सो सर्वथा सन्देह नाहीं करे. सो यह नित्यलीला ब्रजकी सदैव है. जो कृपा अनुग्रह तें दृष्टि आवे. सो श्रीठाकुरजी आप श्रीगुसांईजीकी कानितें दैवी जीवनके उपर कृपा करत हैं.

सो वह वैष्णवकौ लरिका श्रीगुसांईजीकौ ऐसो परम भगवदीय हतो. जो जाकों श्रीठाकुरजी आप कृपा करिकै साक्षात् दरसन दीने. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं सो कहां तांई कहिये. वार्ता ।।४०।।

४१-एक अदना गरीब ब्राह्मण

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक अदना एक गरीब ब्राह्मन, मथुराजीमें रहतो. तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'रूपदेवी' है. ये 'मधुरेक्षना' ते प्रगटी हैं. तातें इनके भाव - रूप हैं. सो रूपदेवीकौ स्वरूप बोहोत सुन्दर हैं. मानो साक्षात् रूपकी मूरति हैं. सो एक दिन श्रीठाकुरजीने मधुरेक्षनासों रूपदेवीकी बोहोत सराहना कीनी. सो बात मधुरेक्षनाने रूपदेवीसों कही. जो आज श्रीठाकुरजीने तेरी बोहोत सराहना कीनी है, तातें तू उन तें मिलि. तब रूपदेवीने कह्यो, जो मिलनो कहा होंई ? सो तो हों कछू जानति नाहीं. और श्रीठाकुरजीकों कछू काम होंइगो तो आप ही तें मिलेंगे. तब श्रीठाकुरजी यह बात सुने. पाछें 'काम - दूतिका' सहचरीसों श्रीठाकुरजी कहे, जो तू रूपदेवीकों समुझाईकै यहां लै आऊ. मैं यहां बैठ्यो हूं. तब काम - दूतिका रूपदेवीके पास आई. सो रूपदेवी भेद यह बातकौ समुझ गई. सो रूपदेवी तहां तें चलन लागी. तब काम - दुतिका रूपदेवीसों कहे, जो रूपदेवी ! श्रीठाकुरजी तोकों याद करत है. तातें तू बेगि चलि. हों तोकों लैन पठाई हूं. श्रीठाकुरजी बिलास - बट पै तेरो पैंड़ो देखत हैं. तब रूपदेवी गर्वसों कहे, जो हों तो अभी आय सकत नाहीं. तब काम दूतिका कहे, जो तोकों रूपकौ गर्व है. तातें तू श्रीठाकुरजीके बुलाइवे पै हू नाहीं आवति है. सो ताकौ फल तू पावेगी. और श्रीठाकुरजीके तो तो सारिखी अनेक ब्रजभक्त हैं, जो सदा मिलिवेकों चाह करति हैं. यह कहि काम - दुतिका श्रीठाकुरजी पास आई कहे जो महाराज ! वह तो आवति नाहीं. तब श्रीठाकुरजी रूपदेवी पर अप्रसन्न व्है और कुञ्जमें पधारे. सो रूपदेवी रूपकौ गर्व करि अपराध कियो. ता अपराध तें यह भूतल पै आई.

सो मथुराजीमें एक ब्राह्मनके जन्म लियो. सो वह ब्राह्मन गरीब हतो. सो जब याकौ लरिका बरस चौदहकौ भयो तब वह मर्यो. पाछें यह लरिका भिक्षा मांगि अपनो निर्वाह करन लाग्यो. सो एक समै श्रीगुसांईजी मथुराजीमें बिराजत हे. तब यह लरिका भिक्षा मांगत - मांगत श्रीगुसांईजीके ड़ेरा पै आयो. तब श्रीगुसांईजी वाकों गरीब जानि अपने श्रीहस्तसों महाप्रसाद दियो. सो या लरिकाने खायो. सो खांत ही याकी बुद्धि फिरी. तब तो यह लरिका दुसरे दिन फेरि

श्रीगुसांईजीके दरसनकों आयो. सो दरसन करि यह श्रीगुसांईजीसों बिनती कियो, जो महाराज ! हों गरीब ब्राह्मन हूं. तातें कृपा करि मोकों अपनो सेवक कीजिए. मैंने काल्हि महाप्रसाद लियो तातें यह ज्ञान भयो, जो आप पूरन पुरुषोत्तम हो. तातें अब हों आपकी सरनि आयो हूं. तब श्रीगुसांईजी वाकों दैवी जीव जानि सरनि लिये. पाछें कछूक दिन अपनी पास राखि मार्गकी प्रनालिका, सिद्धान्त आदि सब समुझायो. ता पाछें यह ब्राह्मन श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मांगि श्रीनाथजीद्वार आय रह्यो. तहां चुकटी करि देहनिर्वाह करतो. जहां भगवद्वार्ता होंई तहां सुनिवे जातो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो भगवदीच्छासों एक समै या ब्राह्मनके सरीरमें कोढ़ निकस्यो.

भाव प्रकाश :
काहेतें, इन (ने) लीलामें रूपकौ गर्व कियो है, तातें कोढ़ निकस्यो.

सो वह अपने मनमें बोहोत ही पश्चात्ताप करन लाग्यो. पाछें यह श्रीगोवर्द्धननाथजीसों बोहोत ही प्रार्थना करन लाग्यो. सो यह वैष्णव कहे, जो महाराजाधिराज ! मेरो कोढ़ खोईए. तब श्रीठाकुरजीने श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो वह वैष्णव मोकों दुःख देत है. जे कचू हों वैद्य ते नाही हों, सो याके कोढ़कों दूरि करों. तब श्रीगुसांईजी वा वैष्णवसों बोहोत खीजे. और वा वैष्णवसों कही, जो तू दवाई करि. श्रीगोवर्द्धननाथजीसों क्यों प्रार्थना करत है ? तब वा वैष्णवने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो महराजाधिराज ! मोकों तो अन्याश्रय करनो नाहीं है. जो हों और कौनसों कहों ? और मेरे तो श्रीप्रभुजी आप हैं. तब श्रीगुसांईजी श्रीमुखसों आज्ञा किये, जो फलाने गाममें फलानो वैष्णव है. जो वह वेश्याके घर रहत है. ताकौ तू दरसन करि आऊ. तो तेरो रोग तत्काल जाईगो. तब वह वैष्णव अपने घर तें कछू खरची लै कै वा गामकों चल्यो. सो उहां जांइ पहोंच्यो. पाछें गाममें गयो तब वा वैष्णवने वा वेश्याकौ घर पूंछिकै वा वेश्याके घर गयो. देखे तो वा वेश्याकी सिज्या उपर दोउ जनें परस्पर गरे में बांह मेलें बैठें हैं. और महोंडे आगें अस्तोविस्त अभक्षाभक्ष धर्यो है. तब वा वैष्णवने जांइकै श्रीकृष्ण - स्मरन कियो. पाछें वा वैष्णवने पूछी, जो तुम कौन हो ? तब या वैष्णवने अपनो सर्व वृतान्त कह्यो. तब तो वह

सुनत ही उठि ठाड़ो भयो. सो अति आनन्दसों नृत्य करन लाग्यो. और अपने मुखसों कहन लाग्यो, जो मोसें पतितनकों श्रीगुसांईजी आप सुधि करत है ? तब वा वैष्णवकों बड़ो ही आश्चर्य भयो. और कही, जो श्रीगुसांईजी आप सुधि करत तो हैं. जो इतनो सुनत ही दसमें द्वार तें प्रान पानान्तर गए. और वा वैष्णवके सरीरमें तें तत्काल सब ठौर तें कौढ़ जात रह्यो.

भाव प्रकाश :

या वार्तामें यह जतायो, जो वैष्णवकी उपरकी क्रिया देखिकै कछू और बात सर्वथा न विचारनी. कैसो हू जीव होंइ, परि श्रीआचार्यजीके मार्गमें वाकौ अङ्गीकार भयो है, ताकों प्रभु आप सर्वथा छोरत नाहीं. श्रीआचार्यजी श्रीगुसांईजी आप अपने प्रमेयबल तें वाकौ उद्धार करत हैं. छिनक में विरहकौ दान करि वाके सगरे दोषकों निवृत्त करत हैं. सो कैसें ? जैसें अन्तर्गृहगताके सगरे पाप - ताप प्रभुके विरह - मात्र तें जरि गये. ता भांति श्रीआचार्यजी आप विरह रूप तें हृदयमें प्रवेश करि जीवके सगरे पापनकों छिनमें नास करत हैं. ऐसें आप परम दयाल कारुनिक हैं. यह बात या वैष्णव द्वारा श्रीगुसांईजी आप प्रगट किये.

पाछें वा कोढ़वाले वैष्णवकों अपने मनमें अन्तःकरनमें धिःक्कार आयो. जो रोग मेरो रहतो तो भलो हो. परि मेरे लिये वैष्णवकी देह छूटी सो आछी नाहीं. ता पाछें यह वैष्णव अपने मनमें बोहोत ही पश्चात्ताप करत अपने घर आयो. पाछें श्रीठाकुरजीके मन्दिरमें गयो. तब देखे तो उहां वह वैष्णव ठाढ़ो दरसन करत हैं. तब या वैष्णवनें वा वैष्णवसों श्रीकृष्ण - स्मरन कीनो. ओर कह्यो, जो यह कहा है ? तब वा रोगवारे वैष्णव तें वानें कह्यो, जो भाई ! एकान्त चलि गोप्य वार्ता करें. सो एकान्त बिना यह बात कही न जांई. तब दोउ जन एकान्तमें बैठिकै गोप्य वार्ता करन लागे.

भाव प्रकाश :

सो यह वैष्णव लीलामें 'रूपदेवी'की सहचारिनी है. 'श्रीदेवी' इनकौ नाम है. ये दोउनके भाव मिलत हैं. सो श्रीदेवीने रूप देवीकों सगरी लीलाकी बात कही.

पाछें रोगवारे वैष्णवने वासों पूछ्यो, जो तुम पूर्व जन्ममें कौन हते ? तब उन कह्यो, जो मैं पूर्व जन्ममें सिंहनन्दमें एक क्षत्रीके घर जन्म्यो. पाछें श्रीआचार्यजीकौ सेवक भयो. सो सेवा बोहोत भांतिसों करत हुतो. और कुबुद्धि हू करत हुतो. जो वैष्णव आवतो ताके मूंडमें टोला देतो. और बड़ेनके आगे वैष्णवनकी चुगली करत हतो. ता अपराध तें मेरी वह गति भई हती. परि श्रीगुसांईजी या जीवकी बांह पकरी, सो ताकों छोरत नाहीं है.

भाव प्रकाश :
सो या वार्तामें यह सिद्धान्त भयो, जो अन्याश्रय नाहीं करनो. श्रीठाकुरजीकौ अपने कार्यार्थ श्रम नाहीं करवावनो. और वैष्णव मात्रकों काहू प्रकारसों कुढावनो नाहीं. जो यह मार्ग (शुद्ध) अद्वैत है. सो याकी सराहना कहां तांई करिये ?

सो वह वैष्णव कोढ़वालो यह सुनिकै बोहोत ही प्रसन्न भयो. सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो बडो ही कृपापात्र भगवदीय हुतो. जिनके उपर आप श्रीगुसांईजी सदैव प्रसन्न रहते. उनकों अपुनो स्वरूप जतायो. महात्म्य प्रगट कियो. तातें उनकी वार्ता कहां तांइ कहिए. वार्ता ।।४१।।

४२-एक वैष्णव जाने सर्प मार्यो

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक वैष्णव, गौरवा क्षत्री महावनकौ, जानें सर्प मार्यो हतो, ताकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'दुर्गा' है. ये 'मधुरेक्षना' तें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं.

ये महावनमें एक कायस्थके उहां जन्म्यो. सो महावनके हाकिमकौ सगरो काम वह कायस्थ करतो. सो बेटा बरस बारह चौदहकौ भयो तब तें वह कायस्थ इनकों सङ्ग ही राखतो. सो बेटाकों सगरो काम सिखावें. पाछें कछूक दिनमें वह कायस्थ मर्यो. तब हाकिमने वाके बेटाकों वाकौ सब काम सोंप्यो. सो एक समै वह कछू कार्यार्थ मथुराजी आयो. सो ता समै श्रीगुसांईजी आप मथुराजीमें बिराजत हते. सो मथुराजीमें मायावादीनसों शास्त्रार्थ होंइ रह्यो हतो. तामें श्रीगुसांईजी आप जीतें. तब श्रीगुसांईजीकौ तेज - प्रताप देखि बोहोतसे दैवी जीव आपकी सरन आए. ता समैं ये हू आपके सरनि आयो. पाछें ये कछूक दिन श्रीगुसांईजीके पास रहि मार्गकी सब प्रनालिका जान्यो. ता पाछें श्रीगुसांईजीसों बिनती करि भगवत्सेवा पधराई. हस्ताक्षर पधराए. पाछें आज्ञा लै अपने घर आयो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वह वैष्णव नित्य जैसें उठे सो तैसें ही प्रातःकाल उठिकै देहकृत्य दन्तधावन करिकै स्नान करें. पाछें श्रीठाकुरजीकी सेवा करे. रसोई करिकै भोग धरें. ता पाछें भोग सराइकै वैष्णवकों महाप्रसाद लिवावें. और हाथनकी सेवा हाथसों करें. और मुखसों भगवन्नाम लेतो जांइ. जो भगवन्नाम क्षन एक छोरे नाहीं. सो उष्णकालके दिन हते. और वैष्णव प्रसाद लैनकों आयो नाहीं, कोऊ. तब बुलाइवेकों जात हतो. सो पैंडेमें सर्प पर्यो हतो सो सरके नहीं. तब तो याकों घरी दोइ ठाढ़े भई. बोहोतेरो उपाय कियो, परि मार्ग देह नाहीं. तब वैष्णव कायो होंइकै कह्यो, जो मेरो दोष नाहीं है. तब पाछें वैष्णवने वह सर्प मार्यो. तब वा सर्पकी नागिननें वा वैष्णवकौ पीछो कियो. जो मैं या वैष्णवकों सर्वथा खाउंगी. परि वह वैष्णव रात्रि - दिन भगवद् नाम लियो ही करें. तातें दाव पावे नाहीं.

पाछें एक दिन यह वैष्णव और अवैष्णव तें बातैं करन लाग्यो. तब वा सर्पनी ने अपने मनमें विचार्यो, जो अब मेरो दाव है. सो वा सर्पनीनें दौरिकै वा वैष्णवकों खायो. तब वह वैष्णव तो मर्यो. तब और वैष्णव गामके कहन लागे, जो ऐसे वैष्णवकी मृत्यु ऐसी क्यों भई चहिए ? तब श्रीगुसांईजी आप बिराजे हुते और सब वैष्णव बैठे हते. तब एक वैष्णवने बिनती श्रीगुसांईजीसों करी, जो महाराजाधिराज ! जो फलाने वैष्णवकों सर्पनीने खायो, सो मर्यो. सो वह ऐसो वैष्णव हतो ताकी ऐसी मृत्यु क्यों बूझिए ? तब श्रीगुसांईजी आप आज्ञा किये, जो वाकों पूर्व जन्मकौ बैर हुतो. और श्रीगुसांईजी आप दृष्टान्त दै कहें, जो सर्प रूपी यह काल है. सो,

जो वैष्णव भगवन्नामकौ छोरिकै और बात करत है तिनकों यह काल खात हैं. सो श्रीगुसांईजी आप यह आज्ञा वैष्णवनसों किये.

भाव प्रकाश :
सो या वार्तामें यह जतायो, जो वैष्णवकों जीव हिंसा सर्वथा करनी नाहीं. और अन्यमार्गीकौ सङ्ग नाहीं करनो. अहर्निश भगवन्नाम लैनो. तातें काल बाधा करे नाहीं.

सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।४२।।

४३-एक साहूकारके बेटाकी बहू

अब श्रीगुसांईजीके सेवक एक साहूकारके बेटाकी बहू, गुजरातमें रहती, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
सो वह साहूकार गुजरातमें रहत हतो. ताके एक बेटा हतो. सो वाकौ ब्याह अपनी जातिमें वा साहूकारने कियो. सो बहू बोहोत ही सुन्दर नवयौवना आई. वह दैवी जीव हती. श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी हती. सो बड़ी भगवदीय हती. वाके नेत्रनमें श्रीगोवर्द्धननाथजी झलकत हते. सो वाने अपने धनीसों कह्यो, जो मैं तो श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी हूं. तातें श्रीगुसांईजीके सेवक बिना काहूके हाथकौ खान - पान नाहीं करूंगी. तातें जो तुम श्रीगुसांईजीके सेवक होउ तो मेरो तुम्हारे बने. तब बेटाने पूछयो, जो श्रीगुसांईजी कौन हैं ? तब बहूने कह्यो, जो श्रीगुसांईजी साक्षात् ईश्वर हैं. वे श्रीगोकुलमें रहत हैं. तब तो बेटाने अपने बाप सों ये सब समाचार कहे. तब वा साहूकारने कह्यो, जो अब ही श्रीगोकुल चलो. हम हू श्रीगुसांईजीके सेवक होंई कृतार्थ होंईगे. पाछें सब जनें श्रीगोकुल आई श्रीगुसांईजीके सेवक भए. तब वा साहूकारके बेटाकी बहूने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! कृपा करिकै सेवा पधराइ दीजिये. तब श्रीगुसांईजी आप कृपा करि एक लालाजीकौ स्वरूप उनके माथें पधराय दियो. पाछें कछूक दिन रहि सेवाकी रीति भांति जानें. ता पाछें वह साहूकार,

वाकौ बेटा, बहू आदि सब श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मांगि अपने देसकों आए. सो आछी रीतिसों सेवा करन लागे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै महाप्रसाद लै कै वह बहू झरोखामें बैठी हुती. श्रीठाकुरजीके बीरानकी सींक करत हुती. ता समै एक म्लेच्छकी द्दष्टि वा झरोखाकी ओर गई. तब वा स्त्रीकौ मुख वा म्लेच्छने देख्यो. तब वानें पूर्व जन्मकौ सम्बन्ध जान्यो.

भाव प्रकाश :
सो काहेतें ? जो या बहूके नेत्रमें वा म्लेच्छकों श्रीगोवर्द्धननाथजीके साक्षात् दरसन भए. तब वाकों बिसन भाव भयो. तातें पूर्वजन्मकी स्मृति भई.

सो वा स्त्रीकों नित्य वह म्लेच्छ देखे बिनु अन्न नहीं खांइ. सो वह म्लेच्छ नित्य वाके द्वार पैं जांइ बैठे. सो जब वा स्त्रीकौ मुख देखे तब जलपान वह म्लेच्छ करे. नांतरु ऐसें ही ठाढ़ो रहे. जब कोई पूछे तब वह म्लेच्छ कहे, जो या स्त्रीकौ मुख देखोंगो तब अन्न लेहुंगो. सो ऐसें नित्य वह करे. परि देखे बिना रहे नाहीं. और जो जब वह दिखाई न देई तो तब लों एक दिन दोइ दिन चारि दिन भूखो ही मेरे. परि कहूं जांइ नाहीं. सो ऐसें करत वाके सगे सहोदर, जाति, पार परोसी जानन लागे. और लौकिकमें गाममें वा देसमें वा स्त्रीकी निन्दा बोहोत ही होंन लागी. तब वा स्त्रीके घरके महा चिन्ता करन लागे, जो अब कहा करिए ? जो यह म्लेच्छ तो नित्य ही पीछे पर्यो है. सो ऐसें बोहोत उपाय करिकै वा म्लेच्छ हू कों बोहोत ही समुझायो. परि वह म्लेच्छ हू माने नाहीं. और दिन - दिन निन्दा तो बोहोत ही होंन लागी. तब वा स्त्रीके घरके मनुष्यने विचार कियो, जो अब कहा करिए ? जो कहूं परदेसमें जाईए तो यह अपवाद मिटे. तब वा बहूने अपने घरकेन तें कह्यो, जो मैं तुम्हारे घरमें बुरी आई. जो मेरे आए तें ऐसी निन्दा होत है. और घर हू छोरनो आयो. और देस हू छोरनो आयो. तातें और देस जाईवेकौ विचार करत हो तो एक बिनती मैं करों, जो तुम सबनके मनमें आवे तो. तब वाके सुसरने कह्यो, जो कहि हम प्रसन्न हैं. तब वा बहूने कही, जो मेरी ओर तें निन्दा भई है सो बुरो. और घर छूटे देस छूटे सो बुरे तें बुरो. इतनो भलो है, जो और देस न जाईए. एक श्रीगोकुल जाईए तो भलो है. तब तहां श्रीगुसांईजीके दरसन होइंगे. जो सातो स्वरूपनकौ दरसन

होइगो. श्रीयमुनाजीकौ दरसन होइगो. और श्रीगुसांईजीके सब बालकनके दरसन होइंगे. और सम्पूरन ब्रजभूमिके दरसन होइंगे. सो यह मैं बिनती करत हों. अब तुम प्रसन्न होउ सो बात करो. तब तो सब घरके वा बहूके बचन सुनिकै बोहोत ही प्रसन्न भए. कहे, जो स्याबास बहू ! तैनें आछी बात कही. यह उपद्रव उठ्यो है सो आछें ही कों उठ्यो है. जो ''निजेच्छातः करिष्यति''. श्रीप्रभुजी आप करेंगे सो उत्तम ही करेंगे. जो इतनेमें यह दुष्ट हू भूलि जाईगो. ऐसो निश्चय अपने मनमें विचारिकै सवेरे ही एक दोइ गाड़ी भाड़े करिकै उन गाड़ीनमें सब वस्तू धरिकै सिद्धि करिके राखी. तब दूसरे दिन सब तैयारी करी. तब वा म्लेच्छने गाड़ी देखिकै गाड़ीवान सों पूछ्यो, जो यह गाड़ी कौनकी भरी है ? और कहांको जाईगी ? तब वा गाड़ीवानने वा म्लेच्छ सों कही, जो अमूके साहूकारके घरके सब श्रीगोकुल जात हैं. तब ऐसें सुनिकै वह म्लेच्छ हू साथ चलिवेकों तैयार भयो. ता पाछें वे सब गाड़ी जुड़ाइकै चले. सो कोस दोइ चारि पर गए. तब देखें तो वह दुष्ट म्लेच्छ हू पाछें तें आवत हैं. तब सबन अपनें मनमें बिचार्यो, जो जाके लिये घर छोर्यो हतो सो तो रोग साथ ही है. सो ऐसें करत कोईक दिनमें श्रीगोकुलमें जांइ पहोंचे. तब ये सब नावमें बैठे. और वा नाव वारे मलाह सों साहूकारने कह्यो, जो यह एक म्लेच्छ हमारे साथमें नहीं है. तासों या म्लेच्छकों नावमें मति बैठारियो. याकों पार मति उतारियो. ऐसें वा साहूकारनें उन मलाहनसों कहिकै वा म्लेच्छकों नावमें बैठन न दीनो. ता पाछें और सब पार उतरि गए. और वह म्लेच्छ श्रीयमुनाजीके कांठे बैठ्यो रह्यो. और उन सबनने जांइकै श्रीगुसांईजीके दरसन किये. ता पाछें श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन खुले. सो राजभोग - आर्तिके दरसन करिकै परम आनन्द पाए. ता पाछें अनोसर कराइ कै श्रीगुसांईजी आप बैठकमें पधारे. तब वा साहूकारसों श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें कहे, जो तुम रसोई मति करियो. आज महाप्रसाद इहांई लीजियो. और तुम कितने जनें हो ? तब वा साहूकारने कह्यो, जो महाराज ! हम तो चार जनें हैं. तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुखसों कहे, जो तुम तो पांच जनें हो. चारकौ नाम तुम क्यों कहत हो ? तुम्हारे साथमें एक वैष्णव और आयो है. जो ताकों तुम बुलाओ. तब इन साहूकारनें श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! यों तो साथमें अनेक आवत हैं. परि हमारे घरके तो हम चार ही मनुष्य हैं. और तो चाकर हैं सो सीधो पावत हैं. तब फेरि श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो चाकरन (की) कहा है ? परि वह तो तुम्हारे साथ ही आयो है. जो तुम सों वाकौ स्नेह बोहोत ही हैं. तासों वाकों बुलाओ. ता पाछें श्रीगुसांईजी तो आप भोजनकों पधारे. सो भोजन करि आचमन लै मुख शुद्धार्थ बीरा आरोगिकै उनकों महाप्रसादकी पातरि पांच धराई. तब फेरिकै श्रीगुसांईजी श्रीमुखसों आज्ञा करे, जो तुम पांच ही जनें महाप्रसाद लेउ. वा पांचमें वैष्णवकों बुलाईकै तुम सब सङ्ग ही महाप्रसाद लेउ. सो ऐसें

श्रीगुसांईजी आज्ञा करिकै आप तो भीतर पधारे. ता पाछें ये चारों जनें तो बैठे ही रहे. पाछें श्रीगुसांईजी आप फेरि बाहिर पधारे, तब देखें तो महाप्रसाद धर्यो है. और चारों वैष्णव बैठे हैं. तब श्रीगुसांईजी श्रीमुखसों कहे, जो तुम बैठि क्यों रहे हो ? तब वा साहूकारने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! हमारे सङ्गमें तो कोई पांचमो वैष्णव है नाहीं. जो एक तो मैं, एक मेरी बहू, एक मेरो बेटा, एक बेटाकी बहू. ये हम चार ही जने हैं. और तो कोई है नाहीं. और तो ऐसें साथमें बोहोत हैं. सो बिना जाने कौनकों बुलावें ? और आप आज्ञा करिकै पधारे, जो तुम पांचो ही वैष्णव बैठिकै महाप्रसाद लीजो. तातें हम बैठि रहे हैं. तब श्रीगुसांईजी श्रीमुखसों आज्ञा किये, जो तुम पार कौनकों छोरि आए हो ? सो ऐसें अनुचित तुमकों नहीं चहिये. जो वह तो परम कृपापात्र भगवदीय है, वाकों अवश्य बुलावो. तब तो वह साहूकार अपने मनमें खिस्याइकै चुप करि रह्यो. पाछें कछू बोल्यो नाहीं. तब श्रीगुसांईजीने एक मनुष्यकों बुलाईकै कह्यो, जो तू नाव ल्याइकै पार जा. सो उहां एक वैष्णव बैठ्यो है. सो आसुरी देह सम्बन्धी है. सो वाकों तू बुलाइ ल्याउ. ता पाछें व मनुष्य नाव लिवाइकै पार गयो. सो वाकों नावमें बैठारिकै लै आयो. तब वा मनुष्यने आइकै श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! वह वैष्णव आयो है. तब श्रीगुसांईजी आप वा मनुष्यसों कहे, जो वाकों ठकुरानी घाट पर स्नान कराइ नये वस्त्र पहराइकै लिवाइ ल्याउ. तब उह तो वाकों श्रीठकुरानी घाट स्नान कराइ नये वस्त्र पहराइकै लिवाइ ल्यायो. तब वाने श्रीगुसांईजीकों आयकै दण्डवत् कीनी. ता समै वाकों श्रीगुसांईजीके पूरन पुरुषोत्तम के दरसन भए. तब वाकों बोहोत ही आनन्द भयो. सो वाई आनन्दमें श्रीगुसांईजीके सन्मुख देखि रह्यो. तब श्रीगुसांईजी हू वाकों कृपा - कटाक्ष सो देखिकै वाकों नाम उपदेश दै, दृष्टि द्वारा ही निवेदनकौ दान किये. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीमुखसों आज्ञा करे, जो अब तुम पांचों जन महाप्रसाद लेउ. तब एक पातरि वाकों धरी. तब श्रीगुसांईजी एक साङ्गामांची धराइकै बीचमें बिराजे. सो एक और तो वह वैष्णव इकलोइ महाप्रसाद लै. और एक ओर वे चारों जनें महाप्रसाद लै. और श्रीगुसांईजीकों निरखते जांइ. और महाप्रसाद लेत जांइ. इतनें ही उहां तें उठिकै श्रीगुसांईजी भीतर पधारे. और वह इकलोइ (जो) महाप्रसाद लेत हो, सो, ताकों तो पातर पै बैठी ही मूर्छा आई. सो गिरि पर्यो. जो अत्यन्त विरह ताप भयो. सो वाकी देह छूटि गई. तब इतने ही सोर भयो. सो सब वैष्णव कहन लागे, जो देखो ! यह कहा भयो ? सो इतने ही श्रीगुसांईजी आपु सुने. तब श्रीगुसांईजीके रोमाञ्च होंइ आए. और हृदय भरि आयो. ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीमुखसों आज्ञा किये, जो ऐसें प्रेमी भक्त होने दुर्लभ हैं. तब सब वैष्णव और जो वह साहूकार वाके साथ आयो हतो तासों श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो तुम याकों श्रीयमुनाजीके किनारे पर

लै जांइकै अग्नि - संस्कार करि आवो. तब वे वैष्णव आनाकानी करन लागे. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा करे, जो तुम या बातमें कछू सन्देह मति करो. यह तो अलौकिक जीव है. याकी देहकौ विचार तुम अपने मनमें मति ल्याओ. जो यामें तुमकों कछू बाधक नाहीं है. जो स्नान मात्र तें ही शुद्ध होउगे. अब याकौ संस्कार करि आओ. ता पाछें याकी बात हों तुमसों कहुंगो. तब वे वैष्णव वाकों श्रीयमुनाजीके किनारे लै जांइ काष्ट मंगाइकै अग्नि - संस्कार कियो. ता पाछें न्हाइ शुद्ध होंइ अपने घर आए. ता पाछें दूसरे दिन श्रीगुसांईजी अपनी बैठकमें बिराजे हते. सो उत्थापन तें पहिले श्रीगुसांईजी सदैव कथा कहत हते. ताही भांति कथा कहत हते. तब उन वैष्णवन श्रीगुसांईजी पास आइकै बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! आप आज्ञा कीनी हती, जो याकों अग्निसंस्कार करि आओ पाछें याकी बात कहोंगो. सो अब आप कृपा करिकै कहिए. यह पूर्व जन्मकौ कोन है ? और याकी देहकौ सम्बन्ध ऐसें कैसें भयो है ? और याकी या रीतिसों अकस्मात् मृत्यु कैसें भई ? सो वह सब हमसों कहिए. तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुखसों आज्ञा किये, जो वैष्णव हो ! सुनो.

जो या साहूकार वैष्णवके साथ यह आयो हतो. सो याके बेटाकी बहूसों वाकी आसक्ति हुती. सो स्त्री - पुरुष सब बैठे हुते. तब श्रीगुसांईजी श्रीमुखसों आज्ञा किये, जो यह पूर्व देसमें पटनाके पास आगें कोस चार पांच उपर एक गाम है, तहां यह पूर्व जन्ममें ब्राह्मन हतो. सो परम भगवदीय कृपापात्र वैष्णव हतो. सो यह बाई याकी स्त्री हती. सो ये दोउ जनें भगवदीय कृपापात्र हते. सो ये दोउ जनें भगवत्सेवा बोहोत ही भली भांतिसों करते. जो श्रीठाकुरजी आप इनसों प्रत्यच्छ बातें करते. जो श्रीठाकुरजी आप इनसों प्रत्यच्छ बातें करते. और रात्रिकों स्त्री - पुरुष दोउ जनें परस्पर भगवद्वार्ता करते. सो यों करत - करत सब रात्रि बितीत होंइ जाती. और ये दोउ जन लौकिक व्यवहार कछू जन्म पर्यन्त जाने ही नाहीं. और इन दोउनकै परस्पर अत्यन्त स्नेह हतो. सो अलौकिक स्नेह हुतो. सो एक समै यह ब्राह्मन कहूं भिक्षार्थकों गयो हुतो. और पीछेसों एक वैष्णव आयो. सो इनके घर वह वैष्णव कबहूक आवतो जातो. सो भगवद्वार्ता करतो. सो दोइ चारि घरी बैठतो. तब यह बाई भगवद्वार्ता करती सो सुनतो. और वाकौ घर नेंक दूरि हतो. सो एक दिन वह वैष्णव आयो. तब वा बाईकों पूछ्यो, जो तुम्हारो धनी कहां है ? तब वा बाईने कह्यो, जो धनी तो ये मन्दिरमें बिराजे हैं. और जिनके भेलें रहति हूं सो तो वे भिक्षाकों गए हैं. सो अब आवेंगे. तुम बैठो. ता पाछें आसन डारि दियो. सो ता पर वह वैष्णव बैठ्यो. तब वा वैष्णवनें भगवद्वार्ता चर्चा या बाईसों करी. तब या बाईने कछू सन्देह पूछ्यो. तब वा वैष्णवनें कह्यो, जो बाई ! यह बात तो एकान्तकी

है. और तुम्हारो घर रस्ताकौ है. सो कोऊ निकसतो जातो आवतो सुने तो भलो नहीं है. तब वा बाईने किवाड़ दै कै आंगल मारि दई. ता पाछें वह वैष्णव तें वह बाई धीरे - धीरे वार्ता करन लागी.

तब इतने ही में वह बाईकौ पति आयो. सो देखे तो किवाड़ लगे हैं. तब वह बोहोत ही पुकार्यो. तब वाकी स्त्रीने किवाड़ खोले. तब वह ब्राह्मन घरमें आयकै देखे तो वह वैष्णव एकान्तमें बैठ्यो है. तब वाकों देखत ही वा ब्राह्मनके मनमें दोष आयो. तब दोउ जनेंन पर दोष भयो. तब ब्राह्मननें अपने मनमें विचारी, जो मेरी स्त्रीकी तो किसोर वय है. और यह वैष्णव हू नव यौवन है. और मेरे तो लौकिक सम्बन्धकौ त्याग है. और मोसों यह स्त्री हू कहत हैं, जो मेरे तो या कार्यसों प्रयोजन नाहीं. और ये दोउ जनें किवाड़ मारिकै एकान्त ठौरमें बैठे हैं. सो कछू भलाई नाहीं दीसत है. सो ऐसो अपने मनमें विचार कियो. पाछें वह वैष्णवने भगवत्स्मरन कर्यो. परि वासों यह रोष करिकै दोष ल्याइकै बोल्यो नाहीं. तब वाहू वैष्णवने अपने मनमें जान्यो, जो याके मनमें तो दोष आयो. ता पाछें वह वैष्णव तो अपने घर गयो. पाछें यह ब्राह्मन अपने घरमें अपनी स्त्री सों सीझिकै कह्यो, जो तुम दोउ जनें किवाड़ मारिकै कहा करत हते ? तब वा स्त्रीने जो प्रकार भयो हतो सो सब कह्यो. भगवद्वार्ता भई सो सब वानें अपने पतिके आगें कही. परन्तु या ब्राह्मन वैष्णवने मानी नाहीं. ता पाछें वा वैष्णवसों द्वेष राखत रह्यो. मिलि बैठे, श्रीकृष्ण - स्मरन करे. परि मनमें कौ द्वेष मिटे नाहीं. परन्तु स्त्रीने तो पतिसों प्रेम बोहोत ही राख्यो हतो, अन्तःकरन सों. सो काहेतें, जा स्त्रीने पतिसों प्रतिज्ञा करी हती. परि ब्राह्मन वैष्णवने मानी नाहीं. तब केतेक दिननमें भगवद् इच्छातें वा ब्राह्मन वैष्णवकी देह छूटी. तब वह म्लेच्छ भयो.

भाव प्रकाश :
सो काहेतें ? जो याने वैष्णव पर दौष बुद्धि कीनी, (और) तासों द्वेष कियो. तातें म्लेच्छ योनी प्राप्त भई. सो जो कोऊ वैष्णव पर या प्रकार लौकिक बुद्धि करे ताकों हीन योनिमें जन्म लैनो परे. यह सिद्धान्त जतायो.

और वाकी स्त्रीकी देह छूटी सो यह बाई बैठी है. यह इनके पूर्व जन्मकौ वृत्तान्त कह्यो. और अबके जन्ममें या बाई पर एक दिन या

म्लेच्छकी दृष्टि परी. तब या बाईके नेत्रन द्वारा श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन वा म्लेच्छकों भए. सो तब ही तें याकों आर्ति भई. सो नित्य या स्त्रीकों देखे. तब याके नेत्रनमें वाकों श्रीप्रभुजीके दरसन होंई. और लौकिक निमित्त तो वह नहीं देखे. सो ये लौकिक दुर्बुद्धि या बातकों कहा जानें ? जो वा म्लेच्छने तो या बाईकों पहचानी हैं. और याने वाकों नहीं पहचान्यो है. और वाने तो तुमसों इतनो कियो, जो नित्य देखिवे आवतो. और तुमकों वाके पीछे घर छोरिकै इहां लों आवनो पर्यो. सो ऐसें सब वैष्णवन सहित वा साहूकारसों श्रीगुसांईजी आज्ञा आप श्रीमुखतें किये. और यानें जब मोकों देख्यो. तब याकों मेरे दरसन भए, श्रीस्वामिनीजीके भावसों. जैसें लीलामें होंई हैं तैसें ही भए हैं. ता पाछें जब हों भीतर गयो तब याकों विरह करिकै जो ताप उपज्यो, सो मूर्छा आई. सो तब ही याकी देह छूटी. सो अब या म्लेच्छकों मेरी दृष्टि द्वारा सम्बन्ध भयो है. तातें यह लीलामें पहोंच्यो. अब याकों कछू कर्तव्य रह्यो नाहीं. और यह बाईकों ज्ञान अजहूं नाहीं है. तातें यह यहां अटकी है. सो लौकिक सम्बन्धी देहके सङ्गादिमें याकौ मन अटक्यो है. सो वाकौ मद है.

भाव प्रकाश :

यहां यह बड़ो सन्देह है, जो या बहूके नेत्रमें तो श्रीगोवर्द्धननाथजी आप झलकत हैं. ऐसी यह भगवदीय हैं. तोउ याकों अज हू ज्ञान नाहीं भयो. और वा म्लेच्छकों या बहूके दरसन मात्रतें अपने स्वरूपकौ ज्ञान भयो. ताकौ कारन कहा ? तहां कहत हैं, जो या बहूकों श्रीगुसांईजीकी कृपा तें श्रीगोवर्द्धनानाथजीमें प्रीति है. श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ ध्यान करत हैं. तातें श्रीगोवर्द्धननाथजी इनके नेत्रनमें झलकत हैं. परि देहादिमें याकी अलौकिक बुद्धि भई नाहीं. काहेतें ? जो वाकों वैष्णवनकौ सङ्ग नाहीं है. सो वैष्णवनके सङ्ग बिनु यह बुद्धि प्राप्त न होंई. तातें याकों देहादिककौ लौकिक मद है. सो अलौकिक स्वरूपकौ ज्ञान होत नाहीं. और वा म्लेच्छकों दीनता भई. तातें श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपा भई, जो तत्काल विरह ताप करि लीलामें प्राप्त भयो. तातें भगवदीयकों सदा दैन्य राखनो. देहादिके दुःसङ्ग तें सर्वथा डरपत रहनो. और वैष्णवनकौ सङ्ग अहर्निश करनो. यह जतायो.

सो या बाईकों देह - सम्बन्धी मद अपने मनमें तें छूटेगो तब यहू लीलामें बाईकै समीप ही पहोंचेगी. ये दोउ श्रीकृष्णावतारमें बहिन - भाई हे. जो ऐसें श्रीगुसांईजी आपने श्रीमुख तें जीवनके उपर दया करिकै इनकौ साङ्गोपाङ्ग पूर्वजन्म तें लै कै सो या जन्म तांईकौ वृत्तान्त सम्पूरन कह्यो. तब वा स्त्रीकों विरह - ताप भयो. सो विरह - ताप अत्यन्त ही भयो. सो एक मुहूर्तमें वा स्त्री हू की देह छूटी. तब वह

साहूकारके बेटाकी बहू भगवत् लीलामें जांइकै प्राप्त भई. तब सब वैष्णव वाहूकौ संस्कार करि आए. तब वा स्त्रीके देह सम्बन्धीनसों अनुग्रह करिकै श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो तुमकों याकौ सूतक कछू लगे नाहीं. काहेतें, जो ये तो दोउ परम भगवदीय भक्त हते. सो ये दोउ निकुञ्ज रासादिक लीलामें पहोंचे हैं. अब इनकों कछू कर्तव्य रह्यो नाहीं हैं. ऐसें कहत ही हृदौ भरि आयो.

भाव प्रकाश :
सो ये दोउ लीलामें श्रीचन्द्रावलीजीके यूथके हैं. सो बहूकौ नाम 'कामा' है. ये 'भद्रा'के राजस भावकौ स्वरूप हैं. इनतें प्रगटी है. तातें इनके भावरूप हैं. और वह म्लेच्छकौ नाम 'काम - आतुरी' है. सो ये दोउ श्रीठाकुरजीकी सेवामें सदा तत्पर रहति हैं. निकुञ्जादि संवारति हैं. दोउनकौ भाव मिलत हैं. सो दोउ श्रीचन्द्रावलीजीकी सहायक हैं.

सो वह साहूकारके बेटाकी बहू और म्लेच्छ श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. तिनके उपर श्रीगुसांईजी आप सदा ही प्रसन्न रहते. जो कृपा करिकै ऐसो माहात्म्य दिखायो. तातें इनकी ऐसी वार्ता बोहोत ही हैं. सो इनकी वार्ताकौ पार नाहीं. तातें कहां तांई कहिए.वार्ता ।।४३।।

४४-श्यामदास, आंजणा कुणबी

अब श्रीगुसांईजीके सेवक श्यामदास, आंजना कुनबी, सो वह गुजरातके हे, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'प्रेमकली' है. ये 'भद्रा'तें प्रगटी हैं. तातें इनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुलजी तें द्वारकाजी श्रीरनछोरजीके दरसनकों पधारत हते. सो गुजरातमें होंइकै द्वारिकाजी जांई श्रीरनछोरजीके दरसन करिकै पाछें फिरे. सो श्रीगुसांईजी चले. सो मार्गमें एक गाम आयो. सो वा गाममें श्यामदास आंजनो कुनबी रहत हतो. सो उनने श्रीगुसांईजीके दरसन करे. तब श्यामदासने अपने मनमें विचार कियो, जो श्रीगुसांईजीके सरन जैये तो आछौ है. सो श्यामदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! आप कृपा करिकै मोकों सरनि लीजिये. तब श्रीगुसांईजीने श्यामदाससों कह्यो, जो तुम जांइकै स्नान करि आओ. तब श्यामदास स्नान करिवे गयो. सो स्नान करि आयो. पाछें श्रीगुसांईजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै कह्यो, जो महाराज ! मैं स्नान करिकै आयो हूं. तब श्रीगुसांईजी श्यामदासकों सरनि लिये. पाछें श्रीगुसांईजी रसोई करि श्रीठाकुरजीकों भोग धरि समयानुसार भोग सराइ प्रभुन आप भोजन करि आचमन करि श्यामदासकों आज्ञा किये, जो श्यामदास ! तुम इहांई महाप्रसाद लीजियो. पाछें श्यामदासकों आपने जूंठनकी पातरि धरि. सो श्यामदासने महाप्रसाद लियो. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप विश्राम करे. पाछें दूसरे दिन श्रीगुसांईजी उहांतें विजय किये. सो श्यामदासकों सङ्ग लै कै फेरि द्वारिकाजी श्रीरनछोरजीके दरसनकों चले. तहां जांइ दरसन करिकै उहां तें चले सो श्रीगोकुल आए. और श्यामदास तो गुजरात ही में रहे.

पाछें एक समै श्यामदासकों एक गुगलीने पूछ्यो, जो तुम्हारी कौन ज्ञाति है ? तब श्यामदासने वा गुगलीसों कह्यो, जो हमारी ज्ञाति तो हम जानत नाहीं है. और मेरे माता - पिता तो बालकपनेमें मरि गए हते. सो मोकों तो बालक छोर्यो हतो. तातें मोकों तो कछू ठीक है नाहीं, जो मैं कौन ज्ञाति हूं. और हमारे माता - पितासों कौन काम है ? हमारो सर्वस्व धन श्रीगुसांईजी हैं. सो जिननें श्रीगोवर्द्धननाथजीके स्वरूपकौ ज्ञान बतायो है. और उनही की सरनि लिये हैं. और मेरो उद्धार तो श्रीगुसांईजी आपने कर्यो है. ताते हमारे ज्ञातिसों कहा प्रयोजन है ? तब गुगलीने मुसकाईकै कह्यो, जो देखो ! इनकों कैसी दृढ़ता है ? जो कछू संसारकी बातकौ तो लेस हू नाहीं है. ता पाछें वह गुगली श्यामदाससों कछू कह्यो नाहीं और कछू बोल्यो हू नाहीं.

और श्यामदास तो उहां केतेक दिन रहिकै पाछें श्रीगुसांईजीके दरसनकों श्रीगोकुलकों चले. सो गुजरात तें श्रीगोकुल आय श्यामदासने

श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन राजभोग - आर्तिके किये. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप सेवासों पहोंचिकै अपनी बैठकमें पधारे. तब श्यामदास श्रीगुसांईजीके दरसनकों गए. सो तहां जांइकै श्रीगुसांईजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करी. तब श्रीगुसांईजी श्यामदाससों पूछे, जो श्यामदास ! तुम कब आए हो ? तब श्यामदासने श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो महाराजाधिराज ! अब ही आयो हूं. तब श्रीगुसांईजी आप भोजनकों पधारे. सो भोजन करि आचमन करिकै श्यामदाससों प्रभुन कह्यो, जो श्यामदास ! उठो, महाप्रसाद लेहु. तब श्यामदास स्नान करिकै महाप्रसाद लैनकों गए. सो श्रीगुसांईजी आप अपने श्रीहस्तसों श्यामदासकों पातरि धरी. तब श्यामदासने महाप्रसाद लियो. पाछें श्रीगुसांईजी आपने तो अपनी बेठकमें जांइकै विश्राम कियो. और श्यामदास तो श्रीगुसांईजीके चरनारविन्दकी सेवा करन लागे. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप जागे. सो श्रीनवनीतप्रियजीके उत्थापनकौ समै भयो हतो. तब श्रीगुसांईजी आप स्नान करि मन्दिरमें पधारी शङ्खनाद कराइ श्रीनवनीतप्रियजीकों उत्थापन भोग धरि शयन भोग, आर्ति पर्यन्त सेवासों पहोंचिकै अपनी बैठकमें पधारे. सो श्यामदास दरसन करिकै बोहोत ही प्रसन्न भए. पाछें श्रीगुसांईजी उहां केतेक दिन रहिकै श्रीनाथजीद्वार पधारे सो श्यामदास हू प्रभुनके सङ्ग चले. सो श्रीगिरिराज आइकै श्रीगुसांईजी तो आप स्नान करिकै श्रीगोवर्द्धननाथजीके राजभोगकौ समौ हतो, तातें पर्वत उपर मन्दिरमें पधारिकै भोग सरायो. तब श्यामदास श्रीगोवर्द्धननाथजीके राजभोग आर्तिके दरसन करिकै बोहोत ही प्रसन्न भए. और कहे, जो धन्य मेरो भाग्य है. जो श्रीगुसांईजीकी कृपासों ऐसें दरसन पाए. ता पाछें अनोसर करिकै श्रीगुसांईजी श्रीगिरिराज तें नीचे उतरिकै अपनी बैठकमें बिराजे. तब श्यामदास हू सङ्ग आए. तब श्रीगुसांईजी श्यामदाससों पूछे, जो श्यामदास ! श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करे ? तब श्यामदास श्रीगुसांईजीको साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै कहे, जो महाराजाधिराज ! आप तो कृपासिन्धु हो. आपुकी कृपा तें मो सारिखे पतितकों ऐसें दरसनकौ सुख भयो, ऐसें श्यामदासने बिनती कीनी. तब श्यामदासकौ सरल स्वभाव देखिकै श्रीगुसांईजी आप बोहोत प्रसन्न भए. ता पाछें श्यामदासकौ ऐसो मनोरथ भयो, जो बनयात्रा करिए तो आछौ है. तब श्यामदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! मेरो मनोरथ बनयात्रा करिवेकौ है. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो बोहोत आछौ. तब श्यामदास श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिकै बनयात्राकों चले. सो बनयात्रा करिकै पाछें श्रीगिरिराज आई श्रीगिरिराजजीके दरसन करि श्रीगुसांईजीके दरसन किये. पाछें श्यामदास उहां ही रहे. तब श्रीगुसांईजी इन श्यामदासकों फूलघरकी सेवा दिये. तब श्यामदासने श्रीगुसांईजीकों बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! फूलनकौ कहा स्वरूप है ? तब श्रीगुसांईजीने आज्ञा करी, जो ब्रजभक्त जो श्रीगोपीजन हैं, तिनके चित्त हैं सो ये फूल हैं. सो श्रीठाकुरजीके अङ्गकौ स्पर्श करत हैं. सो

सुनिकै श्यामदास बोहोत प्रसन्न भए. सो फूलनकों ब्रजभक्तनकौ चित्त जानिकै पांव लगन न देते. और धोए बिना हाथ न लगावते. और कुम्हलाय न जांय ऐसो जतन करते. ता पाछें फेरि एक दिन श्यामदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! फूलनकौ ऐसो स्वरूप, विनकों सुई है सो कैसें परोए जांई ? तब श्रीगुसांईजीने आज्ञा करी, जो सुई है सो सूची है. सो ब्रजभक्तनके चित्तमें भगवत्सम्बन्धकी सूचना करत हैं. वा सूचनासों ब्रजभक्तनके चित्त बोहोत प्रसन्न होत हैं. तातें खिलत हैं. सो ऐसें जाने हैं, जो अब भगवत्सम्बन्ध (कौ) हमकों सूचन भयो है. अब हमारो सिघ्र अङ्गीकार होइगो. ये सुनिकै श्यामदासकौ सब सन्देह गयो. पाछें भावसों सेवा करते.

सो एक दिन श्यामदास देखे तो ब्रजभक्तनके यूथनके यूथ फूलघरमें दीसे. तब श्यामदासने पूछी, जो मैं तुमकों पहचानत नाहीं हूं. तब ब्रजभक्तननें आज्ञा करी, जो पुष्पनकी माला तू अङ्गीकार करावत है सो हमारो स्वरूप हैं. हम तेरे भावसों प्रसन्न होंइकै श्रीगुसांईजीकी कानितै तोकों दरसन देत हैं. तू कछू मांगि. तब श्यामदासने दोउ हाथ जोरि बिनती करी, जो मेरो चित्त कोई दिन ये सेवा छोरिकै और कहूं न जांई. तब ब्रजभक्तनने कह्यो, जो तथास्तु ! ऐसें ही होइगो. फेरि श्यामदासने ये बात श्रीगुसांईजीसों बिनती करी. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो जिनकौ छेल्लो जन्म होवे है, तिनसों श्रीठाकुरजी कछू अन्तराय नहीं राखे हैं. और ऐसें जीवनके लिये यह मार्ग प्रगट भयो है. पाछें जहां तांई श्यामदासकी देह चली तहां तांई और कछू विचार न कियो. सेवा ही करत देह छोरी. ता पाछें वैष्णवन वाकौ संस्कार कियो. सो ये समाचार वैष्णवन श्रीगुसांईजी आगें कहे. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत ही सराहना करे. जो देखो ! कैसो सूधो मुग्ध स्वभाव हतो ! जो अपनो शरीरकी हू सुधि रहती नाहीं. सो वे श्यामदास श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. जिनके उपर श्रीगुसांईजी आप सदैव प्रसन्न रहते. और अपनी सरनि लै कै अपने स्वरूपकौ ज्ञान श्रीगुसांईजीने इन श्यामदासकों बतायो. तातें उन श्यामदासकी बात कहां तांई कहिए.

भाव प्रकाश :

या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो भगवत्सेवा स्वरूपात्मक हैं. सो जो कोऊ भाव विचारिकै सेवा करें वाकों अनुभव होंइ. यामें सन्देह नाहीं. वार्ता ।।४४।।

४५-छज्जो ब्राह्मणी सनाढ्य

अब श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी छज्जो ब्राह्मनी सनाढ्य, भामिनी बहूजीकी खवासी करत हुती, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत है

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'कलहान्तरिता' है. सो इनकों कलह प्रिय हैं. सो 'भद्रा'तें प्रगटी हैं, तातें इनके भाव रूप हैं.

ये मथुरामें एक सनाढ्यके जन्मीं. सो बरस दसकी भई तब इनकौ ब्याह मा - बापने ज्ञातिके लरिकासों कियो. ता पाछें यह बरस पचपनकी भई, तब याकौ धनी मर्यो. और घरमें याकौ काहू तें बने नाहीं. सबसों कलह करे. सो कोऊ यासों बोले नाहीं. तब वे श्रीगोकुल आई श्रीगुसांईजीकी सरनि भई. ता पाछें श्रीगुसांईजीकी आज्ञातें श्रीभामिनी बहूजीकी खवासीमें रही. सो खवासी ऐसी करे, जो भामिनी बहूजी याकी उपर प्रसन्न रहते. परि याकौ सुभाव कलह करिवेकौ बोहोत. तातें श्रीगुसांईजीके सब बालक और घरके यासों अप्रसन्न रहते.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो छज्जो श्रीगुसांईजीके बालकनसों नित्य कलह करती. सो श्रीगिरिधरजी, श्रीगुसांईजी बोहोत दुःख पावते. तब एक दिन श्रीगुसांईजी कहे, जो है रे कोई ! जो या रांडकी नाक काटे. सो तहां एक 'भगवन्त' नामकौ श्रीगुसांईजीकौ सेवक ठाढ़ो हतो. ताने अपने मनमें विचार कियो, जो छज्जोकी नाक मैं काटों तो आछौ है. परि एकान्तमें काटोंगो. जो कोई जान न पावे. सो एक दिन एकान्त पाय वह छज्जोकी नाक काट्यो. पाछें वह वहां तें निकसि गयो. तब श्रीगिरिधरजीने सुनी, परि काहूसों कछू कह्यो नाहीं. सो श्रीभामिनी बहूजीने श्रीगिरिधरजी सों बिनती करी, जो आप वाकों कछू शिक्षा दो. तब श्रीगिरिधरजी कहे, जो करिये कहा ? अपनो कछू बस नहीं. काहेतें ? ये श्रीगुसांईजीकौ सेवक है. तातें हम वातें कछू कहि सकत नाहीं. पाछें श्रीगुसांईजी आप सुनी. तब श्रीगुसांईजी आप बाहिर निकसिकै वा भगवन्त उपर बोहोत ही खीझे. परि भगवन्त पायो नाहीं. पाछें वह भगवन्त कितनेक दिन पाछें छांनेसीक आइकै श्रीगुसांईजीकों साष्टाङ्ग

दण्डवत् करिकै मिल्यो. तब श्रीगुसांईजी भगवन्त सों कह्यो, जो क्यों रे कुजात ! तें वा छज्जो ब्राह्मनीकौ नाक काट्यो ? तो सों कौनने कह्यो हतो ? तब भगवन्तने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! मैं कहा करों ? महाराजकी आज्ञा हती. सो श्रीमुखके बचन कैसें मिथ्या होंइ ? ता पाछें श्रीगुसांईजी आप कछू बोलि सके नाहीं. तब वह भगवन्त सेवा करन लाग्यो.

भाव प्रकाश :

या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो श्रीगुसांईजी आप पूरन पुरुषोत्तम हैं. सो आपकी बानी असत्य सर्वथा न होंई. और दूसरो अभिप्राय यह है, जो प्रभुकौ स्वभाव बड़ो दयालु है. तातें अपने जनकी तनक सेवाकौ हू प्रभु मेरुके समान मानि लेत हैं. और समुद्र जैसे अपराधकों एक बूंदकी समान हू गिनत नाहीं है. सो सूरदासजी गाए हैं

राग : धनाश्री

देखो देखो हरि जू कौ एक सुभाई ।
अति गम्भीर उदार उदधि जानि सिरोमनि राई ।।
तिनका सो अपने जनकौ गुन मानत मेरू समान ।।
समझ दास अपराध सिन्धु सम बूंद न ऐको मान ।।
बदन प्रसन्न कमल ज्यों सन्मुख देखत है हों ऐसे ।
विमुख भए कृपा या मुखकी जब देखो तब तैसे ।
भक्त विरह कातर करुनामय डोलत पाछें लागें ।
'सूरदास' ऐसें स्वामीकों कित दीजे पीठ अभागे ।

सो प्रभु ऐसें दयालु हैं. तातें या ब्राह्मनीके अपराधकों आपने थोरीसी शिक्षा दै निवृत्त कियो. नांतरु याकौ कहूं ठिकानो न हतो. सो वैष्णव शिक्षाकों

अनुग्रह करि माने. तो अपराधकी निवृत्ति होंइ. और वल्लभकुलके अपराध तें सदा डरपत रहनो, यहू जतायो.

सो छज्जो ऐसी कृपापात्र भगवदीय ही. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।४५।।

४६-वेणीदास छीपा

अब श्रीगुसांईजीके सेवक बेनीदास छीपा, सो वह सहजादपुरमें रहतो तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्त्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'कृष्ण रङ्गा' है. सो इनकौ कृष्ण जैसो वर्ण है. ये 'श्यामा' तें प्रगटी हैं. तातें इनके भावरूप है.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै श्रीगुसांईजी आप सहजादपुर पधारे हते. सो तहां छीपा वेनीदासकों श्रीगुसांईजीके दरसन भए. सो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम स्वरूपके दरसन भए. तब बेनीदास छीपाने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! मोकों आप कृपा करिकै नाम - निवेदन कराइए. तब श्रीगुसांईजीने बेनीदास छीपासों कह्यो, जो तुम जांइकै स्नान करि आवो. सो बेनीदास जांइ, स्नान करि, अपरस ही में आइकै श्रीगुसांईजीके आगें हाथ जोरिकै ठाढ़े भए. तब श्रीगुसांईजी बेनीदासकों नाम - निवेदन कराए. पाछें घरकेनकों बुलाइ बेनीदास श्रीगुसांईजीके सेवक कराए. ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पि भोग सराइ, आप अनोसर कराइ, भोजन करिकै पोढे. सो ऐसें करत कितनेक दिन श्रीगुसांईजी आप उहां बिराजे. ता पाछें बेनीदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! कछू सेवा पधराय दीजिए. तब श्रीगुसांईजीने बेनीदासकों एक लालजीकौ स्वरूप सेवा करिवेकों पधराइ दियो. पाछें बेनीदासकों काहूने कह्यो, जो नील रङ्ग होत हैं, सो श्रीठाकुरजीके काम नाहीं आवत है. तब श्रीगुसांईजीसों बेनीदासने बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! हम ऐसें सुनी हैं, जो

नीलके वस्त्रकों श्रीठाकुरजी अङ्गीकार करत नाहीं हैं. तब श्रीगुसांईजीने बेनीदाससों कह्यो, जो रङ्गवेमें कछू दोष नाहीं है. परि नीलकौ श्रीठाकुरजीकों बागा - वस्त्र नहीं अङ्गीकार होत है. जो सबमें उत्तम तें उत्तम वस्तु होंइ है सो श्रीठाकुरजीकों अङ्गीकार होत है. तब बेनीदासने एक छींटकौ परकालो बोहोत ही उत्तम हतो सो भेंट कियो. तब श्रीगुसांईजी वह छींटकौ परकालो देखिकै बोहोत ही प्रसन्न होंइकै कहे, जो देखो ! कैसी उत्तम वस्तू महीन श्रीठाकुरजी लाइक है ! तब बेनीदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! एक परकालो और एसोई है. सो आप आज्ञा करो तो ल्याउं. तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख तें बेनीदास सों कहे, जो बोहोत आछौ. तब बेनीदास छीपाने वा परकाले में कछू काम हतो सिद्ध करनो, सो सिद्ध करिकै श्रीगुसांईजीके आगें ल्याइ धर्यो. और बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! या परकालेमें कछू काम हतो सो डांड़ दैकै आपके पास ल्यायो हूं. तब श्रीगुसांईजी आप बेनीदासके बचन सुनिकै वाकौ सरल स्वभाव देखिकै बोहोत प्रसन्न भए. सो ऐसें बात करत - करत ही बोहोत रोमाञ्च होंइ आए. जो तदनुरूप होंइ गए. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप बेनीदासकी दसा देखिकै बोहोत ही दिन लों उहां रहे. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप उहां तें बिदा होंइकै श्रीगोकुलकों विजय किये. सो वा बेनीदास छीपाने श्रीगुसांईजीकों बोहोत ही द्रव्य भेंट कियो, और श्रीगोवर्द्धननाधजीकी भेंट पठाई.

ता पाछें बेनीदास छीपा श्रीगोकुल आए. सो श्रीगुसांईजीकी कृपा तें श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन किये. सातों स्वरूपनके दरसन किये. और बालकनके दरसन किये. सो दरसन करिकै बोहोत ही प्रसन्न भए. और श्रीगुसांईजीकौ दरसन कियो. सो कोटिकन्दर्पलावन्य साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम माधुरी मूरतिके दरसन कियो. और श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजीके सेवा सिंगारसों पहोंचिकै राजभोग - आर्ति करि अनोसर करि आइकै अपनी बैठकमें बिराजे. तब सब वैष्णव दण्डवत् करनकों आए. सो दण्डवत् प्रभुनकों करिकै अपने - अपने घरकों गए. ता पाछें बेनीदास हू तहां आई दण्डवत् करि बैठे. ता पाछें श्रीगुसांईजी भोजन करिवेकों पधारे. सो भोजन करिकै बैठकमें आए. तब श्रीगुसांईजीने बेनीदाससों कह्यो, जो बेनीदास ! उठो महाप्रसाद लेहु. तब बेनीदास हू दण्डवत् करिकै महाप्रसाद लियो. तब श्रीगुसांईजी तो आप विश्राम करे. और बेनीदास ठाढ़े - ठाढ़े पंखा कर्यो करे. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप जागे. सो स्नान करिकै श्रीनवनीतप्रियजीकों भोग समर्प्यो. ता पाछें सेन - आर्ति पर्यन्तकी सब सेवा (सों) पहोंचिकै श्रीनवनीतप्रियजीकों अनोसर करिकै अपनी बैठकमें पधारिकै गादी - तकिया उपर आज बिराजे. सो ऐसें दरसन करत बेनीदास बोहोत दिन श्रीगोकुलमें रहे. ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों

श्रीनाथजीद्वारकों पधारे. सो बेनीदास हू सङ्ग आए. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीके राजभोगकौ समौ हतो. सो श्रीगुसांईजी आप तहां स्नान करि श्रीगिरिराज उपर मन्दिरमें पधारि श्रीगोवर्द्धननाथजीकों राजभोग समर्पि समय भए भोग सराइ आर्ति किये.

सो बेनीदास छीपा श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करिकै तन्मय होंइ गए. सो दहानुसन्धान भूल गये. तब उहां मन्दिरमें मूर्छा खांइकै गिरे. तब तो श्रीगुसांईजीने बेनीदासकों हेला पार्यो. सो बेनीदासकों चेत भयो. ता समै बेनीदास श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! ऐसे आनन्दसों बाहिर क्यों निकास्यो ? तब श्रीगुसांईजीने आज्ञा करी, जो अभी तो तुमकों कारज बोहोत करने हैं. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीकों अनोसर करिकै नीचे अपनी बैठकमें आई गादी तकिया उपर बिराजे.

सो बेनीदासकों हू अपने साथ नीचे बैठकमें ल्याये. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप भोजनकों पधारे. तब बेनीदाससों कहे, जो बेनीदास ! आज इहांई महाप्रसाद लीजो. पाछें श्रीगुसांईजी आप भोजन करि अपनी बैठकमें पधारे. और अपनी जूंठन बेनीदासकों दिये. सो लै कै बेनीदास बोहोत ही आनन्द पाए. ता पाछें कितनेक दिन श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करिकै बेनीदास छीपाने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महराजाधिराज ! आपकी आज्ञा होंइ तो बनयात्रा करि आऊं. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो बोहोत आछौ. पाछें बेनीदास श्रीगुसांईजीकी आज्ञा लै कै बनयात्राकों गए. सो ब्रजके दरसन करिकै बेनीदास अति आनन्द पाए. पाछें श्रीगिरिराज आइकै श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारे. सो बेनीदास हू श्रीगुसांईजीके सङ्ग श्रीगोकुल आइकै श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन किये. ता पाछें बेनीदासके उपर श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए. पाछें केतेक दिन रहिकै बेनीदास श्रीगुसांईजीसों बिदा मांगिकै कहे, जो महाराजाधिराज ! आज्ञा होंइ तो मैं अपने देसकों जाऊं. तब श्रीगुसांईजी बेनीदासकों प्रसाद और महाप्रसादी उपरेना दिये. ता पाछें बेनीदास श्रीगुसांईजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै बिनती किये, जो महाराज ! मेरे घर श्रीठाकुरजी बिराजे हैं सो श्रीनाथजीके दरसन दैई, ऐसी कृपा करो. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो श्रीठाकुरजी पुष्टिमार्गीय जीवनके सकल मनोरथ पूरन करत हैं. पाछें बेनीदास श्रीगोकुल तें चले. सो कछूक दिनमें अपने घर सहजादपुरमें आए. सो सबनकों मिले. और घरमें श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लागे. तब श्रीठाकुरजी बेनीदासके मनोरथ प्रमान दरसन दैन लगे. जैसें मनोरथ करत तैसें दरसन देते.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो कोऊ सरल भाव करि श्रीठाकुरजीकी सेवा करें ताकों श्रीठाकुरजी बेगि अनुभव जतावें.

ऐसें बोहोत दिन लों बेनीदास सेवा करे. ता पाछें बेनीदासकी देह छूटी. सो अग्निसंस्कार करि उनके घर जो कछू और द्रव्य हुतो सो श्रीगोकुल पठाइ दिये. और ये समाचार बेनीदासके काहू वैष्णवने श्रीगुसांईजी आगें कहे. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें बेनीदासकी बोहोत सराहना करिकै कहे, जो बेनीदास भलो वैष्णव हतो. वे बेनीदास छीपा श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. जिनके उपर श्रीगुसांईजी सदा प्रसन्न रहते. तातें उनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।४६।।

४७-एक क्षत्राणी गुजरातकी

अब श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी एक क्षत्रानी, गुजरातमें रहती, ताकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम ‘सुखदा’ है. ये ‘श्यामा’ तें प्रगटी हैं. तातें इनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै श्रीगुसांईजी आप गुजरात पधारे हते. सो द्वारिकाजी श्रीरनछोरजीके दरसनकों पधारे हते. सो श्रीगुसांईजी आप गुजरातके मार्गमें उतरे हते. तहां श्रीगुसांईजी आप श्रीठाकुरजीकी सेवा करि रसोई करि श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पि समयानुसार भोग सराइ आप भोजन करिकै बिराजे हते. ता समै एक क्षत्रानीने आइकै श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! मोकों आप कृपा करिकै नाम

सुनाईये. तब श्रीगुसांईजीने वा क्षत्रानीसों कह्यो, जो तू जांइकै स्नान करि आऊ. तब वह क्षत्रानी स्नान करिकै आई. परि वह क्षत्रानी ढीट बोहोत हती. सो आइकै ठाढ़ी भई. तब श्रीगुसांईजी आप नाम सुनाइवेकों आई बिराजे. सो नाम सुनावे, परि वह क्षत्रानी नाम कहे नाहीं अरु देख्यो ही करे. तब श्रीगुसांईजी वासों रिस करि कह्यो, जो क्योंरी ! कहा सुनत नाहीं है ? और बात तो मुखसों बकवोई करति है. और अब तो बोलत हू नाहीं है. और कछू सुनत हू नाहीं है. तब वा क्षत्रानीने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! बलिहारी जाऊं. मैं इतने ही के लिये बोली नाहीं हों. सो ऐसें वा क्षत्रानीके बचन सुनिकै श्रीगुसांईजी आप बोहोत ही वा क्षत्रानीके उपर प्रसन्न भए.

भाव प्रकाश :
काहेतें ? याने श्रीगुसांईजीकी रिसकौ गुन करि मान्यो.

ता पाछें श्रीगुसांईजी आप वाकौ नाम सुनाइ दूसरे दिन निवेदन कराए. तब वा क्षत्रानीने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! मोकों श्रीठाकुरजीकी सेवा पधराइ दीजिये. तब श्रीगुसांईजीने वाकों श्रीठाकुरजीकी सेवा पधराइ दै कै सब सेवाकी रीति सिखाई. ता पाछें वह बाई श्रीठाकुरजीकी भली भांतिसों सेवा करन लागी. पाछें वा बाईने श्रीगुसांईजीकों बोहोत ही भेंट करी. और श्रीगोवर्द्धननाथजीकों भेंट पठाई. ता पाछें श्रीगुसांईजी वा बाईसों बिदा होंइकै द्वारिकाजी श्रीरनछोरजीके दरसनकों पधारे. सो तहां श्रीरनछोरजीके दरसन करिकै कितनेक दिन लों आप उहां रहे. पाछें उहां ते श्रीगुसांईजी विजय करि श्रीगोकुलकों पधारे. पाछें वह बाई श्रीठाकुरजीकी सेवा बोहोत ही भली भांतिसों करन लागी. सो श्रीठाकुरजी वा बाईकों सानुभावता जनावन लागे. बातें करते. जो कछू चहियतो सो वा बाई पास तें मांगि लेते. ऐसी कृपा श्रीठाकुरजी वा क्षत्रानीके उपर करते. सो वह क्षत्रानी श्रीगुसांईजी आपकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती. ताके उपर श्रीगुसांईजी आप सदाई प्रसन्न रहते. तातें उनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।४७।।

४८-दुर्गादास ब्राह्मण

अब श्रीगुसांईजीके सेवक दुर्गादास ब्राह्मन, गङ्गापुत्र, पुरबमें रहते, ताकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामसी भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'कल्यानी' है. ये 'श्यामा' तें प्रगटी हैं, तातें इनके भावरूप है.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै वैष्णवकौ सङ्ग मथुरा आयो हतो. ता सङ्गमें दुर्गादास हू श्रीगोकुल आए हते. सो श्रीगुसांईजीके दरसन करे. सो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तमक दरसन भए. तब दुर्गादासने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! मोकों नाम निवेदन कराइए. तब दुर्गादाससों श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो तुम जांइकै श्रीयमुनाजीमें स्नान करि आओ. तब दुर्गादास श्रीयमुनाजीमें स्नान करि आए. तब श्रीगुसांईजीने दुर्गादासकों नाम - निवेदन करवायो. तब दुर्गादासने श्रीगुसांईजीके आगें यथासक्ति भेंट धरी. और बोहोत ही दीनता करिकै कह्यो, जौ महाराजाधिराज ! मैं दासानुदास हों. मैं बड़ो ही अपराधी हूं. सो मो सारिखे पतितकौ आप ही अङ्गीकार कियो. और काहूकी सामर्थ्य हती नाहीं.

पाछें श्रीनवनीतप्रियजीकौ राजभोगकौ समो हतो; तहां श्रीगुसांईजी पधारे. सो श्रीनवनीतप्रियजीकों राजभोग धरि समयानुसार भोग सराइ आर्ति करिकै दरसनकों बुलाये. सो दुर्गादास तहां मन्दिरमें आई श्रीनवनीतप्रियजीकौ दरसन करिकै बोहोत ही प्रसन्न भए. पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीनवनीतप्रियजीकी सेवासों पहोंचिकै अपनी बेठकमें पधारे. तब सब वैष्णव दरसन करिवेकों आए. तब दुर्गादास हू श्रीगुसांईजीको दण्डवत् करिकै बैठें. ता पाछें श्रीगुसांईजी तो आप भोजन करिवेकों भीतर पधारे. तब दुर्गादाससों कह्यो, जो आज तुम इहांई महाप्रसाद लीजियो. पाछें श्रीगुसांईजी आप भोजन करिकै दुर्गादासकों महाप्रसादकी पातरि धरि. तब दुर्गादासने महाप्रसादल लीयो. ता पाछें श्रीगुसांईजी अपनी बैठकमें पधारिकै विश्राम करे. पाछें विश्राम तें उठिकै आप अपने गादी - तकिया उपर बिराजे. तब श्रीगुसांईजीने

दुर्गादाससों कह्यो, जो दुर्गादास ! अब तुम्हारे मनमें कहा मनोरथ है ? सो कहो. तब दुर्गादासने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! एक बेर वनयात्रा और श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ दरसन करिए तो आछौ है. तब श्रीगुसांईजी आप आज्ञा किये, जो बोहोत आछी बात है. तब दुर्गादास श्रीगुसांईजीसों बिदा होंइ कै चले. सो श्रीगिरिराज आई श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करिकै दुर्गादास तो बोहोत ही प्रसन्न भए. पाछें केतेक दिन दुर्गादास उहांई रहे. ता पाछें दुर्गादास बनयात्राकों गए. सो परिक्रमा करि श्रीगोकुल आइकै दुर्गादासने श्रीगुसांईजीके दरसन किये. तब श्रीगुसांईजीने दुर्गादाससों कह्यो, जो दुर्गादास ! तुम कब आए ? तब दुर्गादास श्रीगुसांईजीसों बिनती करि कहे, जो महाराजाधिराज ! अब ही आवत हों. ता पाछें श्रीनवनीतप्रियजीके उत्थापनकौ समौ हतो. सो श्रीगुसांईजी आप मन्दिरमें पधारिकै श्रीठाकुरजीकों उत्थापनभोग धर्यो. समै भए भोग सराइ झारी भरिकै दरसनके किवाड़ खोले. तब दुर्गादासने श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन करे. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप शयन पर्यन्तकी सेवासों पहोंचिकै अपनी बैठकमें पधारे. तब दुर्गादास हू श्रीगुसांईजी पास आई बैठे. पाछें दुर्गादासने बिनती श्रीगुसांईजीसों करी, जो महाराजाधिराज ! मोकों सेवा करिवेकी इच्छा है. तब श्रीगुसांईजी दुर्गादासकों श्रीनवनीतप्रियजीके वस्त्र पधराय दिये. पाछें दुर्गादास श्रीगुसांईजीसों कहे, जो महाराजाधिराज ! आज्ञा होंइ तो मैं अपने देसकों जाऊं. और दुर्गादासने श्रीगुसांईजी आगें भेंट राखी. तब श्रीगुसांईजीने हंसिकै दुर्गादाससों कह्यो, जो दुर्गादास ! कहा यह नईसी करत हो ?

भावप्रकाश :

सो यातें कह्यो, जो ये गङ्गापुत्र हैं, तातें पूज्य हैं. सो इनकी भेंट लीनी न जांइ. या अभिप्राय तें श्रीगुसांईजी आप ऐसें कहे.

तब दुर्गादासनें श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो महाराजाधिराज ! बलि जाऊं. तुम जब नई करी, तब हमें हू नई करनी परी. तब श्रीगुसांईजीने दुर्गादाससों कह्यो, जो हम कहा नई करी ? तब दुर्गादास श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! ये माला तुम पहराई हैं. तातें अब तो हम निर्द्धार करिकै तुम्हारे भए हैं. अब तो भेंट राखनी उचित है. और पहिले तो न राखते सो सत्य. परि अब तो राखी चहिए. ता पाछें श्रीगुसांईजीने भेंट राखी. पाछें दुर्गादास श्रीगुसांईजीसों बोहोत प्रनयति करिकै आज्ञा लै अपने देस गाममें आए.

सो दुर्गादास भले वैष्णव भये. जिनके सङ्ग तें बोहोत वैष्णव भए. और श्रीठाकुरजीकी सेवा बालककी न्यांई करन लागे. सो श्रीठाकुरजी दुर्गादासकों सानुभाव जतावन लागे. बालककी न्यांई जो चाहे सो मांगि लेते. और बाललीलाकौ अनुभव करावते. ता पाछें केतेक दिन दुर्गादास उहां रहे. पाछें दुर्गादासकी देह छूटी. तब सब वैष्णवन मिलिकै संस्कार दुर्गादासकौ कियो. सो वे दुर्गादास श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय भए. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।४८।।

४९-पुरुषोत्तमदास, पुष्करना ब्राह्मण

अब श्रीगुसांईजीके सेवक पुरुषोत्तमदास, पुष्करना ब्राह्मन, कासी के बासी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'त्रिबेनी' है. ये कुमारिकाके यूथमें हैं. 'प्रवीना' तें प्रगटी हैं. तातें इनके भावरूप हैं. सो त्रिबेनी नन्दालयकी सेवामें सदा तत्पर रहति हैं.

सो एक समै श्रीगुसांईजी आप कासीमें बिराजत हते. तहां आप मनिकर्निका स्नानकों नितप्रति पधारत हे. सो एक दिन श्रीगुसांईजी आप मनिकर्निका घाट पर स्नान करि सन्ध्या करत हे. ता समै पुरुषोत्तमदास हू गङ्गाजीमें स्नान करत हुते. सो इन दरसन पाए. सो पुरुषोत्तमदासकों श्रीगुसांईजीके दरसन साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम कोटि कन्दर्पलावन्य ऐसें भए. सो पुरुषोत्तमदास थकित व्है रहे. सो ये बड़ी बेर लों देख्यो करे. तब श्रीगुसांईजी पुरुषोत्तमदासकों दैवी जीव जानि पूछे, जो तुम कौन हो ? यहां ऐसें क्यों ठाढ़े होंई रहे हो ? तब पुरुषोत्तमदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मैं पुष्करना ब्राह्मन हों ? कासीमें रहत हों. मेरे माता - पिता कोऊ है नाहीं. दो अक्षर जानत हूं. तातें श्रीमद्भागवत बांचि अपनो निर्वाह करत हूं. सो आज विधाता मेरे दाहिनी भई है. तातें मैं साक्षात् पूरन पुरुषोत्तमके दरसन पाए. अब मैं आपके सरनि हों. सो कृपा करि मोकों आपुनो सेवक कीजिए. सो पुरुषोत्तमदासकी या भांति दीनता देखि श्रीगुसांईजी आप बोहोत प्रसन्न भए. पाछें कृपा करि पुरुषोत्तमदासकौ नाम निवेदन कराइ, सेवक किये. तब पुरुषोत्तमदास श्रीगुसांईजीसों बिनती

करे, जो महाराज ! अब मेरो कहा कर्तव्य है ? तब श्रीगुसांईजी आप पुरुषोत्तमदाससों कहे, जो आज पाछें भागवतकी जीविका सर्वथा मति करियो. और तो तेरी इच्छा होंइ सो करियो. तब पुरुषोत्तमदास कहे, जो महाराज ! आप कृपा करि मोकों अपनी टहल देउ तो भलो है. अब मैं जगह - जगह कहां भटकोंगो ? तब श्रीगुसांईजी आप पुरुषोत्तमदासकौ सरल सुभाव देखि उनकों अपनी पास राखे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो श्रीगुसांईजी कासीजी तें पुरुषोत्तम क्षेत्रकों श्रीजगन्नाथरायजीके दरसनकों पधारे. सो पुरुषोत्तमदास श्रीगुसांईजीके सङ्ग चले. तहां पुरुषोत्तमदासने श्रीगुसांईजीकों सखड़ी महाप्रसाद अरोगायो.

भाव प्रकाश :

काहेतें, ये पुरुषोत्तम क्षेत्र है. तातें वैष्णवनके हाथसों श्रीजगन्नाथराइजीकौ सखड़ी महाप्रसाद लैनकी मर्यादा श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी आप राखी हैं. तातें पहिले हू श्रीगुसांईजी आप बीरजो कै हाथ तें श्रीजगन्नाथराइजीकौ सखड़ी महाप्रसाद अरोगे हैं.

वार्ता प्रसङ्ग २* :

यह प्रसङ्ग कृष्ण भटटकी पोथीका है. बोहोरि एक समै पुरुषोत्तमदासने श्रीगुसांईजी सों कह्यो, जो महाराजाधिराज ! गोपीनाथदास भीतरियाने मोकों कह्यो, जो श्रीगोकुलनाथजी आप तो ईश्वर हैं. जो कोईकों रुपैया दै कै प्रसन्न करत हैं. और कोईकों पात्र दै कै प्रसन्न करत हैं. तब श्रीगुसांईजी आपने पुरुषोत्तमदाससों कह्यो, जो हां, हां, पुरुषोत्तमदास ! श्रीवल्लभ ऐसोई है. तब पुरुषोत्तमदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! आप तो श्रीमुखके अधरामृतके बचन सींचिकै वैष्णवनकों पसन्न करत हो. तब श्रीगुसांइजीने पुरुषोत्तमदाससों कह्यो, जो जाकों रुपैया दैत हैं सो तो अप्रसन्न होत हैं.

भावप्रकाश :

काहेतें, जो वैष्णव होंई सो तो गुरु द्रव्य लै नाहीं.

सो या प्रकार पुरुषोत्तमदासकों श्रीगुसांईजी आप शिक्षा दिये.

ता पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों पुरुषोत्तमदासकों सङ्ग लै कै श्रीनाथजीद्वार पधारे. सो स्नान करि पर्वत उपर श्रीगोवर्द्धननाथजीके मन्दिरमें पधारि श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ आप सिंगार किये. पाछें राजभोग समर्पि, समै भए भोग सराइ, राजभोग - आर्तिके समै पुरुषोत्तमदासकों बुलाईकै दरसन कराए. सो दरसन करिकै पुरुषोत्तमदास बोहोत ही प्रसन्न भए. और कह्यो, जो धन्य मेरो भाग्य है. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीगोवर्द्धननाथजीकों अनोसर करवाइकै श्रीगिरिराज पर्वततें नीचे उतरिकै अपनी बैठकमें आई बिराजे. तहां पुरुषोत्तमदास हू आई श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिकै बैठे. पाछें पुरुषोत्तमदासने पूछ्यो, जो महाराज ! मर्यादामार्गमें और पुष्टिमार्गमें भेद कहा ? तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो मर्यादामार्गमें साधनकी मुख्यता अरु कर्मके फलकी इच्छा रहत है. और पुष्टिमार्गमें स्नेह पूर्वक कृष्ण - सेवा निष्काम भावसों करे हैं. और भगवदीयकौ सङ्ग करि भगवदनुग्रहकौ बल विचारिकै केवल निःसाधनपनेकी भावना करे. भगवद्धर्मकौ आचरन करे ये मुख्य हैं. और लौकिक वैदिक तो लोगनकों दिखायवेके तांई करे. मुख्यता तो भगवद्धर्मकी है. जामें ठाकुरकौ सुख होंइ सो भगवद्धर्म कहिए. और सब गौन भाव है. पाछें श्रीगुसांईजी आप पुरुषोत्तमदासकों 'सिद्धान्तरहस्य' आदि सब ग्रन्थ अभिप्राय सहित पढ़ाए. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप भोजनकों पधारे. सो पुरुषोत्तमदासकों पातरि धराई. पाछें श्रीगुसांईजी आप भोजन करि छिनक विश्राम करे. ता पाछें जगे.

और पुरुषोत्तमदास हू महाप्रसाद लै कै उठे. तब पुरुषोत्तमदासने फेरि श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! श्रीठाकुरजी पीतारम्बर काहेकों पहिरत हैं ? और श्रीस्वामिनीजी नील वस्त्र काहेकों धरत हैं ? तब श्रीगुसांईजीने आज्ञा करी, जो श्रीस्वामिनीजीकौ गौर वर्ण है, कञ्चन जैसो. सो श्रीस्वामिनीजीके बिना श्रीठाकुरजी क्षन हू रहत नाहीं. ऐसेंई श्रीठाकुरजीकौ श्याम वरन है. सो सिंगार रस रूप हैं, जामें अगाध रस भर्यो है. सो श्रीस्वामिनीजी या स्वरूप बिना क्षन हू रहि सकत नाहीं. सो दोउनकौ गाढ़ौ प्रेम हैं. तातें ये दोउ

नीलाम्बर पीताम्बर धारन करत हैं. ता करि दोउकै प्रेमकौ सूचन होत हैं. सो श्लोक

रूपं तवैतदतिसुन्दरनीलमेघे प्रोद्यत्तडिन्मदरहरं ब्रजभूषणाङ्गि ।
एतत्समानमिति पीतवरं दुकूलमूराबुरस्यपि बिभर्ति सदा सनाथः ।।

भाव प्रकाश :
सो याकौ भाव सूरदासजी गाए हैं. सो पद

बलि बलि बलि कुंवरि राधिका नन्दसुवन जासों रति मानी ।
तू अति चतुर वे चतुर - सिरोमनि प्रीति करो कैसें रहे छानी ।
''वे जो धरत तन कनक पीतपट सो तो सब तेरी गति ठानी ।
ते पुनि श्याम सहज वे शोभा अम्बर मिष अपने उर आनी ।''
पुलकि रोम अब ही व्है आयो निरखि रूप निज देह सयानी ।
'सूर' सुजान सखीके बूझै प्रेम - प्रकास भयो विहसानी ।

सो या प्रकार दोउ जन परस्पर प्रेमकौ प्रकास करत हैं. यह भाव जानना.

ये सुनिकै पुरुषोत्तमदास या रसमें मगन व्है गए. ता पाछें पुरुषोत्तमदासकों श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवामें राखे. सो जीये तहां लों सेवा कीनी. सो श्रीगुसांईजीकी कृपा तें पुरुषोत्तमदासने भली भांतिसों श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवा कीनी. सो श्रीगोवर्द्धननाथजी

पुरुषोत्तमदासकों सानुभावता जनावन लागे. ता पाछें कितनेक दिनमें पुरुषोत्तमदासकी देह छूटी. सो सब वैष्णव मिलिकै अग्नि - संस्कार कियो. सो वे पुरुषोत्तमदास पुष्करना ब्राह्मन श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय भए. जिनके उपर श्रीगुसांईजी सदा प्रसन्न रहते. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।४९।।

५०-लक्ष्मीदास दोषी

अब श्रीगुसांईजीके सेवक लक्ष्मीदास दोषी, गुजरातके बासी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :

ये 'राजस' भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'वनराजी' है. ये 'प्रवीना' तें प्रगटी हैं, तातें इनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो एक समै श्रीगुसांईजी आप गुजरातकों पधारे हते. सो लक्ष्मीदासके गाममें श्रीगुसांईजीके डेरा भए हते. तहां श्रीगुसांईजीके दरसनकों लक्ष्मीदास आए हते. तब श्रीगुसांईजीने लक्ष्मीदासकों अपनो स्वरूप दिखायो. सो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तमके दरसन लक्ष्मीदासकों श्रीगुसांईजीके भए. तब लक्ष्मीदासने श्रीगुसांईजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै बिनती करी, जो महराजाधिराज ! मोकों कृपा करिकै नाम दीजिए. तब श्रीगुसांईजी आप कृपा करिकै लक्ष्मीदासकों नाम सुनाए पाछें निवेदन करायो. सो लक्ष्मीदास द्रव्यपात्र हुते. तातें श्रीगुसांईजी सों बिनती किये, जो कृपानाथ ! मोकों स्वरूप सेवाकी इच्छा है. तातें कृपा करि भगवत्स्वरूप पधराय दीजिये. तौ हों सेवा करों. तब श्रीगुसांईजी आप लक्ष्मीदासकों एक लालजीकौ स्वरूप पधराय दिये. ताकी ये राजवैभवसों नीकी भांति सेवा करते.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

ता पाछें एक समै अन्नकूटकी भेंट श्रीगोवर्द्धननाथजी की पहिले ही भई हती. सो श्रीगुसांईजीने बोहोत ही प्रसन्न होंइकै अपने श्रीहस्तसों वैष्णवनके पास तें पहिलें एक रुपैया लियो हतो. तब लक्ष्मीदास दोषीने श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो महाराजाधिराज ! यह बात तो आछी नाहीं करी है. तब श्रीगुसांईजीने लक्ष्मीदास सों पूछ्यो, जो कैसें आछी नाहीं करी है ? तब लक्ष्मीदासनें श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! (हाथ सों) नहीं लीजे. तब श्रीगुसांईजी चुप व्है रहे. ता पाछें केतेक दिन पाछें या बातके उपर श्रीगुसांईजी बोहोत ही प्रसन्न भए. तब लक्ष्मीदासने श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो महाराजाधिराज ! आप तो बड़े हो, ईश्वर हो. आप तो सर्वदा करत ही हो. जो उनकौ तो एसोई स्वभाव ही है. जैसें चन्द्रमा अठारह भार वनस्पतीकों अपने अमृत करिकै सींचत है. और इतनो नाहीं जानत हैं, जो मैं इनकों जिवावत हों. सो काहेतें ? जो इनकौ सहज स्वभाव ही है. परि कहा कौनसों बूझिये ? जो उहां तो थोरो रह्यो सो आश्चर्य है.

भावप्रकाश :
याकौ अभिप्राय यह है, जो श्रीगुसांईजी आप तो ईश्वर हैं. आपकों द्रव्यकी कछू न्यूनता नाहीं है. सदा सर्वदा अन्नकूट आदि सब करत ही हैं. परि जीवनकी उपर कृपा करिवेकौ आपकौ सहज सुभाव है. तातें श्रीगुसांईजी आप वैष्णवनसों श्रीगोवर्द्धननाथजीके अन्नकूटकी भेंट अपने श्रीहस्तसों लिये. या प्रकार जीवनकी उपर अति करुना करी. परि 'कहा कोनसों बूझिए'. ताकौ तात्पर्य यह, जो कौनके मनमें कहा है ? सो कैसें जानि परे ? यामें यह कह्यो, जो सब कोऊ या भावकों समुझत नाहीं. तातें कितने यों आश्चर्य करत हैं, जो श्रीगोवर्द्धननाथजीके इहां द्रव्यकी न्यूनता है. तासों श्रीगुसांईजी आप श्रीहस्तसों यह भेंट लेत हैं. सो जो कोऊ या प्रकार जानत हैं तिनकौ बिगार होत हैं. या भावसों लक्ष्मीदास श्रीगुसांईजीसों कहै, जो ''यह बात आछी नाहीं करी है''. सो या बातकों समुझि श्रीगुसांईजी आप लक्ष्मीदास पर प्रसन्न भए. सो यह बात ऐसी है.

सो यह लक्ष्मीदासकी बात सुनिकै श्रीगुसांईजी आप बोहोत ही प्रसन्न भए. और कहे, जो लक्ष्मीदास बड़े ही कृपापात्र भगवदीय हैं. जिनकों ऐसो स्वरूपकौ ज्ञान है.

ता पाछें श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी श्रीरनछोरजीके दरसनकों पधारे. सो लक्ष्मीदास हू श्रीगुसांईजीके सङ्ग ही हुते. सो श्रीरनछोरजीके दरसन

करिकै बोहोत ही प्रसन्न भए. ता पाछें श्रीगुसांईजीने श्रीठाकुरजीकों रसोई करिकै भोग समर्प्यो. भोग सराई श्रीगुसांईजी आप भोजन किये. और लक्ष्मीदास हू महाप्रसाद लिये. ता पाछें कितनेक दिनलों श्रीगुसांईजी द्वारिकाजीमें रहिकै श्रीरनछोरजीके दरसन किये. पाछें श्रीगुसांईजी उहां तें विजय किये. सो गुजरातमें लक्ष्मीदासके घर पधारि रसोई करि श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो. भोग सराइ आप भोजन किये. और सब ब्रजबासी टहलवान हू महाप्रसाद लियो. सो रात्रिकों उहांही रहे. ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुलकों पधारे. तब लक्ष्मीदासने श्रीगुसांईजीकों बोहोत ही भेंट करी. श्रीगोवर्द्धननाथजीकों भेंट पठाई. और थोरीसी दूरि आप पहुंचावन आये. पाछें लक्ष्मीदास श्रीगुसांईजीकों बिदा करिकै अपने घर आए. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुल पधारे. और लक्ष्मीदास अपने घरमें श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लागे. पाछें लक्ष्मीदास लौकिक व्यवहार सब छोरे. सो ऐसें करत काल व्यतीत करि दियो. सो उनकौ ऐसो सरल स्वभाव हतो. सो कहां तांई कहिए ? अहर्निश भगवद्वार्तामें ही जन्म व्यतीत कियो. परन्तु कछू और वार्तामें घरी पल वृथा नहीं गंवायो. वैष्णव कोऊ आवतो तासों बोहोत ही स्नेह शिष्टाचार राखते. वैष्णवकों भगवद् स्वरूप करिकै जानते. भगवदीय आवे तिनसों साम्हे जांइकै मिलते. भगवद्वार्ता, जो पूछते सो कहते. अहर्निश वे भगवद्वार्तामें मन राखते. अन्य वार्तामें समुझते ही नाहीं. सो वे लक्ष्मीदास श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. जिनके उपर श्रीगुसांईजी आप सदा प्रसन्न रहते. तातें उनकी वार्ताकौ पार नाहीं. सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।५०।।

५१-ध्यानदास क्षत्री

अब श्रीगुसांईजीके सेवक ध्यानदास क्षत्री, गुजरातके बासी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत है

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'मनसादेवी' है. ये 'प्रवीना' तें प्रगटी हैं. तातें इनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो एक समै श्रीगुसांईजी आप द्वारिकाजी श्रीरनछोरजीके दरसनकों पधारे हते. तहां ध्यानदासने श्रीगुसांईजीसों नाम पायो हतो. ता पाछें एक समै ध्यानदास श्रीगुसांईजीके दरसनकों श्रीगोकुल आए. तहां श्रीनवनीतप्रियजीके आगें निवेदन कियो. तब तें ध्यानदास श्रीगुसांईजीके पास ही रहे. सो क्षन एक दूरि न रहे. जहां श्रीगुसांईजी पधारे तहां ही ध्यानदास सङ्ग रहे.

और जगन्नाथदास श्रीगुसांईजीके पास रहत हुते. सो वे जगन्नाथदासके हाथमें पद्मकौ चिह्न हतो. सो जा वस्तू में तें ये कछू निकासते सो फेरि बढ़ि जाती. सो घटती नाहीं. सो जगन्नाथदास भोरे बोहोत हते. सो उनकों या बातकी खबरि नाहीं.

भाव प्रकाश :
सो जगन्नाथदास लीलामें श्रीयमुनाजीके यूथके हैं. 'कीरति' इनकौ नाम है. सो ये श्रीगोकुलमें एक क्षत्री वैष्णवके घर जन्मे. सो वा क्षत्री वैष्णवकों सन्तति न हुती. तातें उनने अपने हृदयमें विचार्यो, जो मोकों पुत्र होंइ तो मैं श्रीगुसांईजीकी भेंट करूंगो. पाछें भगवद् इच्छा तें पुत्र भयो, ताकौ नाम जगन्नाथ धर्यो. सो जगन्नाथ बरस दसके भये. पाछें वा क्षत्री वैष्णवने श्रीगुसांईजीके पास आय बिनती करी. जो महाराज ! मैनें ऐसो सङ्कल्प कियो हतो, जो मेरे पुत्र होंइ तो मैं आपकों भेंट करों. सो ये पुत्र भयो है. तातें आप इनकों सरनि लै अपनी टहलमें राखिये. तब श्रीगुसांईजी जगन्नाथदासकों दैवी जीव जानि अपने पास राखे. सो वाके हाथमें पद्म श्रीगुसांईजी आप देखे. तातें उनकों श्रीगुसांईजी आप अपनी भेंट राखिवेकों आज्ञा किये. सो जगन्नाथदास श्रीगुसांईजीके सङ्ग ही रहते. सो श्रीगुसांईजीकी भेंट सम्हारते. सो जगन्नाथदासकौ सुभाव सरल बोहोत. सो काहूको रञ्च दुःख हू देख्यो न जांइ. तातें जब कोऊ श्रीगुसांईजीके पास मांगन आवे तब जगन्नाथदास अपनी पासके द्रव्यमें तें उनकों देते.

सो एक समै श्रीगुसांईजीके इहां भिक्षुक बोहोत आए हते. सो जगन्नाथदास पास श्रीगुसांईजीके भेंटके पैसा हते. सो भिक्षुक मांगिवेकों आए तब जगन्नाथदास सबकों एक - एक पैसा देत गए. तब ध्यानदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! जगन्नाथदास सबकों पैसा देत हैं, सो ये कहां सों देत है ? तब ध्यानदासकों श्रीगुसांईजी आप कहे, जो कोऊ सत्कर्म करत है ताकी सहायता प्रभु आप करत हैं.

और वैष्णवकों निर्दोष वस्तूनमें दोषारोपन सर्वथा न करनो. और जो करत हैं सो आप ही दूषित होत हैं. तासों तुम वैष्णव हो सो दोष रहित हो. सो काहेकों दोषारोपन करत हो ? ए सुनिकै ध्यानदास बोहोत प्रसन्न भए. और ता दिनतें नेम लियो, जो आज पाछें भगवद् ध्यान छोरिकै कोईके दोष नहीं देखूंगो. सो ता दिनसों जन्म पर्यन्त ध्यानदासने काहूके दोष नाहीं देखे. सो वे ध्यानदास श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. सो इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।५१।।

५२-एक सेठ राजनगरका

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक सेठ राजनगरकौ बासी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये 'राजस' भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'पयोनिधि' हैं. ये 'मनआतुरी' तें प्रगटी हैं. तातें इनके भावरूप हैं.

सो यह सेठ राजनगरमें एक बनियाके घर जन्म्यो. सो वह बनिया बोहोत ही द्रव्य - पात्र हतो. सो एक समै श्रीगुसांईजी राजनगर पधारे हे. तब वह बनिया आप अपने बेटा कुटुम्ब सहित श्रीगुसांईजीकौ सेवक भयो हतो. पाछें वह मर्यो तब वाकौ बेटा यह सेठ, सो श्रीगोकुल आयो. सो इनन श्रीगुसांईजीकी बोहोत सेवा करी. पाछें श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! मोकों भगवत्सेवा पधराय दिजिये. तब श्रीगुसांईजी इनकौ एक लालाजीकौ स्वरूप पधराय दियो. और आज्ञा किये, जो इनकी नीकी भांति सेवा करियो. पाछें यह सेठ कछूक दिन श्रीगोकुल रहि, श्रीगुसांईजीसों सब सेवाकी रीति जानि अपने देस राजनगरकों आयो. तहां श्रीठाकुरजीकी भली भांतिसों सेवा करन लाग्यो. आए गए वैष्णवनकों महाप्रसाद लिवावे. काहूके खरची न होंइ ताके खरची देई. या भांतिसों सेवा करे.

वार्ता प्रसङ्ग१ :
सो एक समै दस हजार वैष्णवनकौ साथ राजनगरमें आयो. सो श्रीगोकुल जात हतो. तब या सेठने रुपैया दश हजार श्रीगुसांईजीकों भेंट पठायो. और जा वैष्णवकों खरची नाहीं हती ताकों खरची दियो. और घरमें श्रीठाकुरजी सामग्री बोहोत अरोगते. सो नित्य वैष्णवन महाप्रसाद लेते. सगरे वैष्णव वाकी बड़ाई करते. सो दस हजार वैष्णव गुजरातिके श्रीगोकुलकों आए. सो सब वैष्णवने उह सेठकी बड़ाई श्रीगुसांईजीके आगें बोहोत करी. ता समै चाचा हरिवंशजी और नागजीभाई पास बैठे हते. सो उह सेठकी बड़ाई श्रीगुसांईजीके आगें सब वैष्णवनके मुख तें सुनिकै चाचा हरिवंशजीकी ओर, नागजीभाईकी ओर, श्रीगुसांईजी आप मुसिकाईकै देखे. तब नागजी भटट और चाचा हरिवंशजी श्रीगुसांईजीसों बिनती किये, जो महाराजाधिराज ! वह सेठ आपकौ सेवक है. ताकी यह बड़ाई होंइ सो उचित ही है. और आप वह सेठकी बड़ाई सुनिकै कछू बोले नाहीं, मुसिकाइकै हमारी और कृपाकटाक्ष करिकै देखे, ताकौ कारन कहा है ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो भेंट मनोरथ दोई प्रकारको हैं. एक तो द्रव्यकों तुच्छ जानिकै मनोरथ करत हैं. तिनकों सञ्कोच दैन्यता बोहोत होत है. ता करि प्रभु बेगि प्रसन्न होत हैं. और जो द्रव्यकों पदार्थ जानिकै भेंट करत हैं तिनकों दैन्यता सिद्धि नाहीं होत है. उनकों अपनो उत्कर्ष मनमें रहत हैं, जो यह मनोरथ आछी भांति भयो. या प्रकार उपर दिखावें, सबकों जतावें. ता मनोरथमें भगवत - सन्तुष्टि नाहीं है.

यह सुनिकै उह दस हजार वैष्णवनमें चारि वैष्णव बोहोत समुझत हते. सो तिननें श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! हम तो अपने देसमें सेठके समान और कोईकों जानत नाहीं है. सो आप उनकी बड़ाई सुनिकै प्रसन्न नाहीं होत ताकौ कारन कहा है ? तब श्रीगुसांईजी हंसिकै कहे, जो वैष्णव धर्म बोहोत कठिन है. सूक्ष्म है. काहू तें जान्यो जात है नाहीं. जब सङ्ग करिकै झीनी द्दष्टिसों उनके ह्रदयकौ भाव देखिए तब जान्यो जांइ. तब उन चारों वैष्णवन श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! ऐसें वैष्णवकों आपु कृपा करि बतावो तो चारि रात्रि उनकौ सङ्ग करिए. तब श्रीगुसांईजी उन चारों वैष्णवनकों कृपा करि कहे, जो आगरेमें स्त्री - पुरुष कनोजिया ब्राह्मन रहत हैं. सो आगरेमें जांइ सन्तदासजीसो पूछि लीजो. तिनकौ सङ्ग करियो. तब चारों वैष्णव श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि तत्काल आगरेकों चले दूसरे दिन. सो वे वैष्णव आगरेमें आई, प्रथम सन्तदासजीके घर गए. तब सन्तदासजी बोहोत आदर सन्मान किये. श्रीगुसांईजीके कुसल समाचार पूछे. और कहे, जो वैष्णव कहा कार्यार्थ या गाममें आए हो ? तब चारों वैष्णव सन्तदासजीसों कह्यो, जो हमकों श्रीगुसांईजी

फलाने स्त्री - पुरुष वैष्णव हैं तिनके पास पठाए हैं. तब सन्तदासजी उन चारों वैष्णवनकों सङ्ग लै जाइकै वे स्त्री - पुरुष जहां रहत हते ता घरकौ द्वार बताइ आए. जाने, जो श्रीगुसांईजी कहा जानिए कौन अर्थ इनकों पठाए हैं ? (तातें) अपनेकों बीचमें रहनो नाहीं. यह बिचारिकै सन्तदासजी अपने घर आए. तब वे चारों वैष्णव उह घर भीतर गए. सो स्त्री तो रसोई सिद्ध करि चुकी हती. और वाकौ पुरुष सिंगार करि भोग धरिकै बाहिर आयो हतो. इतनेमें इन वैष्णवन जांइकै भगवद - स्मरन कियो. सो पुरुषने इनसों पूछ्यो, जो वैष्णव तुम कहां तें आए हो ? तब चारों वैष्णवन कही, जो हमकों श्रीगुसांईजी तुम्हारे पास पठाए हैं. सो हम श्रीगोकुल तें आए हैं. या प्रकार श्रीगुसांईजीकौ, श्रीगोकुलकौ, नाम सुनत मात्र ही वा पुरुषकौ मन विह्वल होंइ गयो. सो तत्काल अपरसमें तें दोरिकै चारों वैष्णवनकों परम प्रीतिसों मिले. पाछें चारों जनेंनकों अपने घरमें उतारि दिये. पाछें वा ब्राह्मनने उन वैष्णवनसों कही, जो तातो पानी करूं, यहीं न्हाउ. तब उन वैष्णवन कही, जो राजभोग - आर्तिके दरसन करिकै श्रीयमुनाजी न्हाय आवेंगे. तातें अब तो तुम अपनी सेवामें जो कार्य करत हो सो करो. तब वह ब्राह्मन वैष्णव न्हाइकै फेरि मन्दिरमें गयो. अपनी स्त्रीसों कह्यो, जो चार वैष्णवनकों श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल तें पठाए हैं. सो बड़ी कृपा श्रीगुसांईजी हम उपर करी. जो हमकों सम्हारत हैं. तब स्त्रीने कही, जो श्रीगुसांईजी परमदयाल हैं. जो हम सारिखे निःसाधन जीवकों सम्हारत हैं. पाछें स्त्रीने कही, जो घी थोरो है. सो मैं राजभोग धरति हों तहां तांई लावोगे. तब वह वैष्णव कटोरी लै माथें पाग धरि तत्काल बजामें गयो. सो एक बनियाने तत्काल घी लियो हतो. सो ताय - छानि कै अपने बासनमें करत हतो. ताही समै वैष्णवने आइकै कही, जो पाव सेर घी के दाम होई सो लेहु. और बेगि हमकों घी देहु. तब बनियाने पाव सेर घी दियो. सो वैष्णव तत्काल घी लै कै परम हरखसों चल्यो.

सो वैष्णव अपने घर आई ता आनन्दमें न्हाइवेकी, पागकी, सुधि रही नाहीं. सो रसोई करिकै भीतर जांइ जहां स्त्री राजभोग धरत हती तहां यह पुरुष हू भोग धर्यो. मानसी सेवाकौ भाव स्त्री - पुरुष विचारत हते. ता करिकै स्त्रीकों हू कोऊ सुधि ना आई. या प्रकार राजभोग दोउ जनें धरिकै बाहिर आई स्त्री - पुरुष श्रीनन्दरायजीके घरकी सेवाकौ, ब्रजभक्तनके घरकी सेवाकौ, तथा श्रीवृषभानजीके घरकी सेवाकौ, राजभोगकौ भाव विचार करन लागे.

भाव प्रकाश :
यामें यह जतायो, जो वैष्णवकों भगवत्सेवा ब्रजभक्तनके भावसों करनी. तातें निरोध सिद्ध होंई. और भोग धरे पाछें समयानुसार अरोगवेकी भावना करनी. सो कैसें ? जैसें सीतकाल होंइ तो नन्दालयमें ठाकुर भोजन करत हैं. कबहूक ब्रजभक्तनके घर न्योंतें हैं, तहां भोजन करत हैं. या प्रकार भाव विचारनो.

उष्णकालमें छाककी भावना करनी. श्रीयमुना पुलीन, सघन, बन, श्यामढ़ाक आदि ठौरमें ठाकुर गाय चरावत हैं. तहां सखा मण्डली सहित प्रभु हास्य - विनोद करत हैं. ता समै आपकों क्षुधा लागी है. सो वृक्षनपैं चढिकै घरकी छकहारीनकों देखत हैं. कबहूक छकहारी पैंड़ो भूलि जाति हैं. सो प्रभु आप बेनु बजावत हैं. ता मारग अनेक छकहारी सीस पर सामग्रीनके डला लै लै कै ता ठौर आवति हैं. तहां और हू अनेक ब्रजभक्तनके घरकी छाक आवत हैं. तब श्रीठाकुरजी सखानकों अपनी जूंठन देत हैं. तहां अनेक प्रकारके खेल होत हैं. कबहूक छीनत हैं, झपटते हैं. कबहूक हास्य - विनोद करत हैं. सङ्केत होत हैं. या प्रकार अनेक भावना करनी.

और वर्षाॠतुमें प्रिया - प्रीतम बनमें पधारे हैं. तहां बनकी शोभा निरखि रहे हैं. ऐसेंमें मेह आवत हैं. तब श्रीस्वामिनीजी भींजत हैं. तब श्रीठाकुरजी अपनी कामरकी खोई करि तामें उनकों ढांपत हैं. तहां अनेक प्रकारके मनि जटित, रत्न जटित कुञ्ज आदि हैं. तामें प्रिया - प्रीतम बिराजत हैं. तहां सखीजन अनेक भांतिकी सामग्री लावति हैं. सो श्रीठाकुरजी प्रियाजीकों मनुहार करि लिवावत हैं. तब श्रीस्वामिनीजी कहत हैं, जो पहिले आप अरोगिये. या प्रकार दोनों परस्पर मधुर बचन कहत हैं. सो शोभा ललितादि सखीजन देख रही हैं. ता पाछें ललिता दोनोकों अरोगावति हैं. ऐसें अनेक प्रकारकी भावना करनी. सो श्रीआचार्यजीके मार्गकी रीति है, जो वैष्णव शुद्ध ह्रदय तें जैसी भावना करत हैं तैसी रीति सों श्रीप्रभु आप साक्षात् अङ्गीकार करत हैं. सो श्रीगुसांईजी श्रीवल्लभाष्टक में कहत हैं. सो श्लोक

यस्मादस्मिन् स्थितौ यत्किमपि कथमपि क्वाप्युपाहर्तुमिच्छ त्यद्धा तद् गोपीकेशः स्ववदनकमले चारुहासे करोति ।।

सो या पुष्टिमार्गमें वैष्णव जो कछू, जा भांति, जा जगे, प्रभुनकों अरोगाइवेकी इच्छा करत है वाकों साक्षात् गोपीजननके ईस जो श्रीकृष्ण ताही भांति

ताही ठौर अपने मुखकमलमें हंसत - हंसत अति प्रीतिसों अङ्गीकार करत हैं. तातें वैष्णवको या प्रकार भावना करनी और जाकों भावना ह्रदयमें न स्फूरे ताकों अष्टसखा तथा और हू भगवदीयनके कीर्तन गावने. ता करि प्रभु भोग अरोगत हैं. यह निश्चय है.

और इहां चारों वैष्णवन देख्यो, जो वह बजार तें वैष्णव घी ल्यायो सो पाग सहित. (तातें) सगरी अपरस छुवायो. तब चारों वैष्णव अपने मनमें विचार करन लागे, जो श्रीगुसांईजी हमकों पठाए हैं. सो वैष्णव तो आछौ है. स्नेह बोहोत हैं. परन्तु आचार - क्रिया तो कछू नाहीं है. तातें अब इहां महाप्रसाद तो लियो न जांइ. तब दूसरे वैष्णवने कही, जो चलो ! अपने श्रीगोकुल चलिए. तब चारों जनें विचारि कियो, जो एक वैष्णव तो सबकौ खड़ीया लै कै गामके द्वारके उपर चलिकै बैठो. और हम तीन जनें राजभोग - आर्तिके दरसन करिकै श्रीयमुनाजी न्हाइवेके मिस पाछें चले चलेंगे. तब एक वैष्णव सबके खड़ीया लै कै गामके द्वार उपर आई बैठ्यो. पाछें राजभोग सरवेकौ समै भयो. तब स्त्री - पुरुष दोउ जन भीतर राजभोग सराइ, बीरा अरोगाइ, आर्तिकौ समौ भयो तब वह ब्राह्मननें उन वैष्णवकों दरसन करनकों बुलाए. तब तीनों जनें दरसनकों गए. सो श्रीठाकुरजीने जान्यो, जो मोसों ये कपट करि दरसन करनकों आए हैं. मेरो दास निष्कपट है, जासों यह कपट कियो. तातें इनकों दरसन देनो उचित नाहीं है. या प्रकार श्रीठाकुरजी विचारिकै उनकों दरसन न दिये. तब इन तीनों जनेंन अपने मनमें जानी, जो यह वैष्णव उपर तें दिखाइवेके लिये प्रेम करत हैं. भगवद्धर्म नाहीं है. सो श्रीठाकुरजी तो हैं नाहीं. भगवद् चर्चा किनके लिये करे ? तातें अब इहां तें बेगि जैये तो आछौ है. या प्रकार श्रीठाकुरजी इन तीनों वैष्णवनकौ मन उदास करि दिये. पाछें वा ब्राह्मन वैष्णवनें राजभोग - आर्ति करी. तब तीनों जनें मन्दिरमें तें बाहिर आए. तब वह स्त्री तो श्रीठाकुरजीकौ अनोसर कराइवेमें रही. और वह पुरुष वैष्णव इनके पास आई बोहोत बिनती करी, जो बेगि न्हाइकै महाप्रसाद लेहु, तुम्हारो एक वैष्णव साथकौ कहां गयो है ? तब इन तीनों जनेंन कही, जो एक वैष्णव श्रीयमुनाजी न्हायवेकों गयो है. सो हम हूं श्रीयमुनाजी न्हाइ आवें. तब तुम कहोगे सो करेंगे. तब वा ब्राह्मन वैष्णवने कही, जो बेगि न्हाइकै अइयो. मार्गके चले हो सो भूखे होउगे. तब वे तीनो वैष्णव तहां तें चले सो आगरेके द्वार उपर आए. तहां देखे तो वह चौथो वैष्णव बैठ्यो है. तब उन पूछ्यो, जो तुम तीनों जनें दरसन करि आए ? तब इनने कह्यो, जो दरसन कहा करे ? तहां तो श्रीठाकुरजी ही नाहीं है. और सामग्री, झारी, सिंघासन, पिछवाई इत्यादिक तो तहां सब हैं. परन्तु श्रीठाकुरजी तो नाहीं है. तातें यह वैष्णव उपर तें स्नेह बोहोत जनावत हैं. और भीतर कछू धर्म नाहीं है. तातें बजार तें घी लै

आइकै रसोईमें चल्यो गयो. उपर वैष्णवनमें बोहोत स्नेह जनावत हैं. सो कोई वैष्णवनें श्रीगुसांईजीके आगें याकी बड़ाई करी है. तातें श्रीगुसांईजीतो बालक हैं. परम भोरें हैं. सो जानें, जो यह वैष्णव बोहोत आछो है. यह तीनों जनेंनके बचन सुनिकै उह एक वैष्णवनें कही, जो भली भई, जो वाके घरकौ कछू जलपान महाप्रसाद नाहीं लियो. नांतरु सगरी बुद्धि भ्रष्ट होंइ जाती. तातें अब तुम इहां तें बेगि चलो. मति कहूं ढूंढिवेकों आवे तो आछौ नाहीं. तब चार्यो जनें अपनी खड़ीया वस्तूभाव लै कै तहां तें चले. सो गऊघाट आइकै चारों जनें रहे.

'और इहां आगरेमें स्त्री - पुरुष वैष्णवननें जान्यों जो वे वैष्णव श्रीयमुनाजी न्हाइकै आवे तो महाप्रसाद लेंई. सो उत्थापनकौ समै भयो. वैष्णव तो नाहीं आए. तब स्त्रीने कही, जो मैं न्हायकै श्रीठाकुरजी सों पहोंचत हों. और तुम श्रीयमुनाजीके घाट पर तथा सन्तदासजी आदि वैष्णवके घर ढूंढिकै समाचार लै आवो. तब स्त्रीनें न्हाइकै श्रीठाकुरजीकों उत्थापन करायो. और पुरुष प्रथम तो सगरे श्रीयमुनाजीके घाट पर ढूंढ्यो. पाछें सन्तदासजी आदि सगरे वैष्णवके घर ढूंढि हारिकै प्रहर एक रात्रि गए अपने घर आयो. तब स्त्रीनें कही, वैष्णव कहूं न मिले ? तब पुरुषने कही हमारो महाअपराध है. हमारे उपर श्रीगुसांईजीके वैष्णव कैसें कृपा करें ? हमारे में ऐको धर्म नाहीं है. केवल दोष करिकै भरे हैं. या प्रकार दोउ स्त्री - पुरुष अपनो दोष विचार करन लागे. और महाप्रसाद न लेइवेकौ सङ्कल्प किये.

भाव प्रकाश :
काहेतें, जो श्रीगुसांईजी कृपा करिकै वैष्णवकों पठाए. सो वैष्णव उदास होंइकै हमारे घरतें उठि भए. अब हमकों प्रसाद लेनो, जीवनो उचित नाहीं है. या प्रकार अपनो दोष विचार्यो. यह मार्गकी रीति है, जो निरन्तर अपनो दोष विचारनो. तातें दीनता सिद्ध होंई. तब प्रभु प्रसन्न होंइ अपनो अनुभव जतावे. दूसरेके दोष हृदयमें लावे तो अपनी गांठि हू कौ जांई. दीनता सिद्ध न होंई. महा अपराधी होंई.

ऐसो विचार करिकै महाप्रसाद सब राजभोगकौ सेन भोग तांईकौ गांइकौ खवाय दियो. पाछें दोउ स्त्री - पुरुष महा चिन्ता करिकै परि रहे. सो जब मध्य रात्रि गई, ताही समै श्रीठाकुरजी श्रीमदनमोहनजी कहे, जो वैष्णव ! तुम काहेकों दुःख करत हो ? वे चारों वैष्णव तो

श्रीगोकुलकों गए. तुम बजार तें घी ल्याए. सो तुम तो परम आनन्दमें हुते. देहानुसन्धान भूले. सो पाग सहित बजारके पांव रसोईमें आइकै तुम राजभोग धरे. सो मैं तो भली भांतिसों प्रसन्न होंइकै अरोग्यो. और वे चारों जनें तुम्हारो दोष देखे. तातें मैं उनकों राजभोग - आर्ति समै दरसन नाहीं दियो. सो वे चारों जनें श्रीगोकुलकों गए. अब तुम भूखे क्यों रहे ? या प्रकार श्रीठाकुरजीने उनसों कह्यो, जो तुम अपने मनमें खेद मति करो. तब स्त्री - पुरुष ने कही, जो महाराज ! या बातमें तो हम ही भूले. श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीकी बांधी मर्यादा है सो हम उल्लङ्घन किये. बजार तें होंइकै रसोईमें आए. सगरी अपरस छुइ गई. सो वैष्णवकों तो देखिकै अभाव होंइ तो, यह तो मार्गकी रीति है. तुम उन चारों वैष्णवनकों दरसन क्यों नाहीं दियो ? तब श्रीठाकुरजीने कह्यो, जो तू जानिकै मार्गकी रीति उल्लङ्घन नाहीं कियो. प्रेममें विवस होंइकै रसोईमें आयो. सो प्रेम है सो तो मेरो स्वरूप हैं. सो मेरो स्वरूप जब भयो तब वासों वा समै कछू हू छूइ जांइ नाहीं. जानिकें कछू अनाचार करे तो वाके उपर मैं अप्रसन्न होउं. तब स्त्री - पुरुषने कही, जो महाराज ! अब तो हमसों महाप्रसाद तो न लियो जाईगो. वैष्णव चार मेरे घरतें भूखे गए. यह सुनिकै श्रीठाकुरजी हंसिकै चुप होंइ रहे.

भाव प्रकाश :

सो काहेतें, जो इन स्त्री - पुरुषकौ भगवद्धर्म दृढ़ देख्यो. सो वैष्णवकौ यह धर्म है, जो अपने घर जो कोऊ आवें ताकों प्रसाद लिवाइकै लै. और यह तो श्रीगुसांईजीके पठाए वैष्णव आए हे. तातें उनकों प्रसाद लिवाए पहिले आप प्रसाद कैसें लैई ?

पाछें प्रातःकाल भयो. तब स्त्री - पुरुषने जानी जो श्रीठाकुरजीकी अपरस छुइ गई. तातें सब काढ़िकै नई अपरस करि मङ्गला तें लै कै राजभोग लों पहोंचि महाप्रसाद सब गांइनकों खवाइकै दोनो जनें भूखे ही बैठि रहे.

भाव प्रकाश :

यहां यह बड़ो सन्देह है, जो श्रीठाकुरजीने या वैष्णवतें कह्यो, जो ''प्रेम है सो मेरो स्वरूप है, तातें वा समै कछू हू छूई जांइ नाहीं'' फेरि या वैष्णवने अपरस क्यों काढी ? श्रीठाकुरजीकी आज्ञा हू नाहीं मानी ? याकौ कहा कारन ? तहां कहत हैं, जो ये वैष्णव श्रीआचार्यजीकौ सेवक है. सो सेवककौ यह

धर्म है, जो अपने स्वामीकी आज्ञा प्रमान चले. तातें श्रीआचार्यजीके मार्गकी रीति प्रमान चले तो श्रीआचार्यजी प्रसन्न होंई. सो श्रीआचार्यजीके मार्गकी यह रीति हैं, जो जानें पाछें अपरस छूइ जाई. जब लों ज्ञान न होंइ तब लों कछू दोष नाहीं. सो या वैष्णवने जब जान्यो तब अपरस निकासी. और श्रीआचार्यजीकी बांधी मर्यादाकों ठाकुर हू अनुसरत हैं. तातें वैष्णवकों श्रीआचार्यजीकी मर्यादा अनुसार सेवा करनी. तातें ठाकुर हू प्रसन्न होंई. और ठाकुरने कह्यो जो ''वा समै कछू हू छूइ न जांई''. सो वा समै तो न छूयो. परि अब तो वह प्रेमकौ आवेश है नाहीं. क्यों ? जो ज्ञान भयो है. सो ज्ञानमें अपरस छूइ जांई. और ठाकुरने हू परीक्षार्थ यह बचन कह्यो, जो ''वा समै कछू हू छूई न जांई''. याकौ अभिप्राय यह, जो देखे ! यह वैष्णव मेरे बचन प्रमान चले हैं कै आचार्यजीकी मर्यादा अनुसार चले हैं ? सो या वैष्णवकों तो श्रीआचार्यजी महाप्रभुकौ दृढ़ आश्रय हैं. तातें इन अपरस निकासी. सो ठाकुरजी हू प्रसन्न भए.

पाछें उहां वे चारों वैष्णव गऊघाट तें घरी दोइ रात्रि पिछली रही तब उठिकै श्रीगोकुलकों चले. सो सवा प्रहर दिन चढ्यो ता समै श्रीगोकुल आये. सो श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजीकों राजभोग धरिकै श्रीठकुरानीघाट मध्याह्नकी सन्ध्या करिवेकों पधारे हते. ता समै उन चारों वैष्णव आईके श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् कियो. सो श्रीगुसांईजी उन चारों वैष्णवनके उपर अप्रसन्न होंइकै पीठि दै बैठे.

भाव प्रकाश :
काहेतें प्रभुके पीठिमें बहिर्मुखता रहत है. सो जानें जो ए चारों वैष्णव बहिर्मुख हैं. तातें इनकों पीठिकौ दरसन करावनो.

तब चारों वैष्णवननें श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! हमारो कहा अपराध है ? हम आपके कहेतें आगरेमें वैष्णव पास होंइ आए. यह सुनिके श्रीगुसांईजी खीझिकै कहे, जो हम तुमकों उन वैष्णवके उपरकी क्रिया देखिवेकों नाहीं पठाए. उहां दोइ चारि दिन रहिकै उन वैष्णवनके हृदयकौ भाव देखते तो जानते. उलटो वैष्णवकौ अपराध कियो. ता करिकै उन वैष्णवके श्रीठाकुरजीने दरसन तुमकों नाहीं दियो. सो वे स्त्री - पुरुष अब ही तांई कछू खायो नाहीं. महाखेद करत हैं. सो मेरे हृदयमें महादुःख होत है. यह सुनत ही वे चारों वैष्णव श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिकै फेरि आगरेकों चले. सो रात्रिकों गऊघाट फेरि आई रहे. महाप्रसाद चारों वैष्णवन नाहीं

लियो. आपुसमें कह्यो, जो हमारी चारों जनेंनकी बुद्धि भ्रष्ट होंइ गई. जो श्रीगुसांईजी आपुनकों पठाये हते. सो श्रीगुसांईजीके बचनकौ विश्वास नाहीं रह्यो. पाछें प्रातःकाल बेगि ही उठिके चारों वैष्णव चले. सो आगरेमें स्त्री - पुरुष ब्राह्मन वैष्णवके घर गए. सो स्त्री न्हाइकै राजभोगकी रसोई करत हती. और पुरुष सिंगार कवि भोग धरिकै श्रीठाकुरजीकों, आप बाहिर आई बैठ्यो हतो. सो इन चारों वैष्णवनकों देखिकै वह ब्राह्मन वैष्णव दोरिकै इनके पांइन परिकै कह्यो, जो वैष्णव ! हम तुम्हारो महा अपराध कियो. तुम्हारो अपराध हमसों भयो. तब उन चारों वैष्णवन कह्यो, जो तुम्हारो अपराध हम सों भयो. सो हमारे उपर श्रीठाकुरजी अप्रसन्न होइकै हमकों दरसन नाहीं दिये. और श्रीगुसांईजी हू अप्रसन्न होंइकै हमकों दरसन नाहीं दिये. सो अब तुम हमारो अपराध क्षमा करो. तुम जैसें कहोगे तैसेंई हम अब करेंगे. यह सुनिकै वा ब्राह्मन वैष्णवकौ हृदय भरि आयो. और कह्यो, जो वैष्णव बैठो. प्रभु सब आछी करेंगे. पाछें वा ब्राह्मन वैष्णवने कही, जो तातो पानी तैयार है, न्हाओ. तब उन चारों वैष्णवकों वह ब्राह्मन वैष्णव न्हवायो. तब वे चारों वैष्णव न्हाइकै अपनो नित्य नेम हतो सो करन लागे. पाछें राजभोग धरिकै स्त्री बाहिर आई. उन चारों वैष्णवनकों भगवद् - स्मरन करिकै बोहोत भांतिसों दैन्यता करी, जो हमारो अपराध क्षमा करो. हम संसारमें परे हैं, दोष रूप होंइ रहे हैं. यह सुनिकै चारों वैष्णवन कही, जो तुम धन्य हो. और तुम्हारो धर्म परम उत्तम है. जो श्रीगुसांईजी श्रीमुखतें तुम्हारी सराहना करत हैं. हम तुम्हारो स्वरूप जाने नाहीं. तातें इतनों दुःख पाए.

भाव प्रकाश :
सो यह ब्राह्मन वैष्णव लीलामें 'मृदु भाषिनी' हैं. और ब्राह्मन वैष्णवकी स्त्री 'कोमलाङ्गी' है. ये दोउ श्रुतिरूपाके जूथके हैं. और ये चारों वैष्णव इन दोउनकी दो - दो सहचरी हैं. इनके नाम 'हंसगामिनी' 'ब्रह्मानन्दिनी' 'कोकिला' और 'कलावती' हैं. सो हंसगामिनी और ब्रह्मानन्दिनी मृदुभाषिनीकी सहचरी हैं. और कोकिला और कलावती ये दोउ कोमलाङ्गीकी सहचरी हैं. सो इन चारों सहचरीनके भावकौ पोषन मृदुभाषिनी और कोमलाङ्गी करति हैं. तातें यहां हू श्रीगुसांईजी आप उनकों चारों वैष्णवनकों इन वैष्णव पास पठाए. परि पहिले उन वैष्णवन इनकौ स्वरूप जान्यो नाहीं. तातें दुःख पाए. पाछें श्रीगुसांईजी आप रिसके मिष अनुग्रह करि उनकों फेरि पठाए. तब उन चारों वैष्णवनकों इन वैष्णवनके स्वरूपकौ ज्ञान भयो. और इनके सङ्ग तें अपने स्वरूपकौ हू ज्ञान भयो.

पाछें समै भयो तब स्त्रीने राजभोग सराय आचमन कराय बीरी अरोगाई. पाछें राजभोग - आर्तिकौ समै भयो तब चारों वैष्णवकों दरसनकों बुलाए. सो श्रीठाकुरजी चारों जनेंनकों क्रोध सहित दरसन दिये. तातें चारों जनेंनकों महा भय लागी.

भाव प्रकाश :
सो काहेतें ? जो ठाकुर वैष्णवनके अपराध तें अप्रसन्न होत हैं. सो सूरदासजी गाए हैं

हम भक्तन के भक्त हमारे ।
सुनि अर्जुन प्रतिज्ञा मेरी यह ब्रत टरत न टारे ।
भक्तन काज लाज हों छांडों पाउं प्यादे धाऊं ।
जहां जहां भीर परे भक्तनकों तहां तहां जांइ छुडाऊं ।
जोई बैर करे भक्तन सों सो बैरी निज मेरो ।
देखि बिचारि भक्तन के नाते रथ हांकत हूं तेरो ।
भक्तनके जीते हों जीतों भक्तन हारे हारूं ।
'सूरदास' जो भक्त विरोधी सो चक्र सुदरसन मारूं ।

सो उन चारों वैष्णवनने इन ब्राह्मन स्त्री - पुरुष वैष्णवनकौ अपराध कियो. तातें उनकों ऐसें दरसन दै भय उत्पन्न कियो. परि ये चारों वैष्णव हू श्रीगुसांईजीके सेवक हैं. तातें या प्रकार भय कराय पूर्व दोषकी निवृत्ति करी. पाछें अनुग्रह कियो, सो अब कहत हैं.

पाछें अनोसर भयो. तब चारों जनें आपुसमें कहे, जो श्रीठाकुरजी दरसन तो दिये. परन्तु महाक्रोध संयुक्त हैं. अब यह स्त्री - पुरुष जो कहे तैसेंई करिकै जब इन दोउ जनेंनकों प्रसन्न करिये तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होंइगे.

पाछें स्त्री - पुरुष चारों जनेंनके पास आइकै कहे, जो जा प्रकार तुम प्रसन्न होंइ तैसेंई करो. चाहो अनसखड़ी प्रसाद लेहु, चाहो सखड़ी प्रसाद लेहु. कोई बातकौ सञ्कोच मति करियो. यह सुनिकै चारों जनेंन कही, तुम्हारे श्रीठाकुरजी जो सामग्री अरोगे हैं सो धरो. तामें प्रथम तो सखड़ी की पातरि धरो. अब हमारे मनमें सन्देह नाहीं. तब चारों वैष्णवकों स्त्री - पुरुषने महाप्रसादकी सखड़ी अनसखड़ी पातरि धरी. सो चारों वैष्णवन बोहोत ही प्रसन्न होंइकै महाप्रसाद लिये. पाछें उठि हाथ धोइ, कुल्ला किये. तब उन स्त्री - पुरुषने इन चारों वैष्णवनकों बीरी दिये. सो इनन खांई. पाछें वे दोउ वैष्णव गांइकों एक पातरि धरि बाहिर आए. ता पाछें वे दोउ जनें महाप्रसाद लै चौका दैकै चारों वैष्णवके पास स्त्री - पुरुष आई बैठे. सो भगवद् चर्चा करन लागे. सो उत्थापनके समै उठे. पाछें सेन लों पहोंचिके चारों वैष्णवनकों महाप्रसाद लिवाए. स्त्री - पुरुष एक समै लेते, फेरि नाहीं लेते. पाछें रात्रिकों फेरि भगवद् वार्ता करन बैठे. सो मङ्गलाके समै उठे. या प्रकार पन्द्रह दिन बीते. सो चारों वैष्णवनके रोम - रोम में भगवद्रस भरि गयो. सो चारों वैष्णव उन स्त्री - पुरुष कों दण्डवत् करिकै कहे, जो धन्य तुम वैष्णव हो. जिनकों यह रस श्रीगुसांईजी दान किये हैं. पाछें चारों जनें जब दरसन करन गए तब श्रीमदनमोहनजी कृपादृष्टि सों अवलोकन किये. ता करिकै चारों वैष्णवके रोम - रोम प्रफुल्लित होंइ गए. पाछें अनोसर भयो. तब चारों जनें प्रसन्न होंइकै उन स्त्री - पुरुष पास तें बिदा मांगे. तब स्त्री - पुरुषने कही, जो कछू दिन और हू रहो. तुम सारिखे वैष्णव तो महा दुर्लभ हैं. यह तो श्रीगुसांईजी कृपा करिकै पठाए हैं. तातें इतनो सम्बन्ध भयो. नाहीं तो हमकों वैष्णवकौ दरसन कहां ? यह सुनिकै चारों वैष्णवने बिनती करी, जो हम एक बार तुमकों अप्रसन्न करिकै गए तब श्रीगुसांईजी हमारे उपर अप्रसन्न भए. तातें जब तुम प्रसन्न होंइकै हमकों बिदा करोगे तब ही हम जाइंगे. तब स्त्री - पुरुषने कही, जो तीन रात्रि तुम और हू हमारे पास रहो. तब तहां तीन रात्रि और हू चारों वैष्णव रहे. पाछें चौथे दिन राजभोगकी आर्ति करिकै दरसन करिकै चारों वैष्णव महाप्रसाद लिये. पाछें स्त्री - पुरुष चारों वैष्णवके पास आए. तब चारों वैष्णवनने बिदा मांगी. तब स्त्री - पुरुष यथासक्ति श्रीगुसांईजीकों भेंट दै कै कहे, जो सब बालकन सहित दण्डवत् हमारी श्रीगुसांईजीकों करियो. समस्त वैष्णवकों भगवद् स्मरन करियो. और तुम कृपा करिकै फेरि बेगि ही आईयो. पाछें दोउ जनें पहोंचावनकों चले. सो आगरेके द्वार लों आए. तब चारों वैष्णवनने बोहोत बिनती करी. पाछें दोउ वैष्णव स्त्री - पुरुषकी बिदा कीनी. तब दोउ जनें अपने घर आए. वे चारों वैष्णव श्रीगोकुलकों चले. सो ऐसें भगवद् रसमें छके, जो गेलमें चल्यो नहीं जांइ. सो

बारह दिनमें श्रीगोकुल उत्थापनके समय आए. ता समै श्रीगुसांईजी आप पोढि उठिकै गादी - तकिया उपर बिराजे हते. सो चारों वैष्णवकों दूरि तें श्रीगुसांईजीने भगवद्‌रसमें मगन आवत देखें. तब चाचा हरिवंशजी सों श्रीगुसांईजीने कही, जो चाचाजी ! अब इन चारोंनकों वैष्णवनकौ सङ्ग भयो. पाछें चारों जनें आई श्रीगुसांईजीके चरनकमलकों दण्डवत् करि बिनती किये, जो महाराजाधिराज ! जो आप आज्ञा करे हते वैसेई दोउ हैं. हम अज्ञान करि बाहिरकी क्रिया देखिकै वैष्णवकौ अपराध किये. ता करिकै आप हू हम उपर अप्रसन्न भए. और उन स्त्री - पुरुषके ठाकुर श्रीमदनमोहनजी हू अप्रसन्न होंइकै हमकों दरसन न दिये. पाछें वैष्णव प्रसन्न भए तब श्रीठाकुरजी हू प्रसन्न भए और आप हू प्रसन्न भए. सो आपकी कृपा तें ऐसें वैष्णवकौ दरसन भयो. यह सुनिकै श्रीगुसांईजी कहे, जो वे स्त्री - पुरुष बोहोत आछी भांति सेवा करत हैं. उनके मनमें लौकिकावेस एक दिन हू नाहीं आवत है. सदा भगवद् भावमें मगन रहत हैं. सो उन हू कों हरिवंशजीके सङ्ग तें ऐसी अनन्यता दृढ़ भई है. सो वैष्णवके सङ्ग बिना मार्ग हृदयारूढ न होंइ. या प्रकार श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख तें उन स्त्री - पुरुषकी बोहोत ही सराहना किये. सो वे स्त्री - पुरुष परम भगवदीय हुते. और वह सेठ हू श्रीगुसांईजीकौ कृपापात्र हतो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।५२।।

५३-एक रजपूत मही कांठाका

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक रजपूत गरासिया, कांठेकौ, ताकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :

ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम ‘केलिनी’ है. ये पुलिन्दिनीके यूथमें हैं. ‘मन आतुरी’ तें प्रगटी हैं. तातें इनके भावरूप हैं. और ‘केलिनी’ की एक सखी हैं. ताकौ नाम ‘रामा’ है. सो वह रजपूतकी स्त्री भई.

सो ये मही नदीके कांठे एक गाम हतो तहां रजपूत गरासियाके जन्म्यो. सो वह गरासिया वहांके राजाकौ हांसिल उघावतो. सो बेटा बरस अठारहकौ

भयो तब वह गरासिया मर्यो. पाछें राजाने याकौ वा कामपै राख्यो. सो ये हांसिल उघावतो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै श्रीगुसांईजी आप परदेसकों पधारत हते. सो मार्गमें एक गाम आयो. सो तहां आप उतरे हे. और यह रजपूत वा गाममें राजाकौ हांसिल वाकी लैनो हतो सो राजरीतिसों लेत हतो. सो वा समै श्रीगुसांईजी आप वाहनिमें बिराजे. सो पधारत हते. सो वा रजपूतकों श्रीगुसांईजीके साक्षात् पूरन पुरुषोत्तमके दरसन भए. तब वह रजपूत श्रीगुसांईजीके समीप आयकै साष्टाङ्ग दण्डवत् कीनी, और बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! हों तो महा अपराधी हूं. महा पतित हूं. लोगनकों सतायकै हांसिल लेत हों. तासों यह बिनती करत हों. सो हों आपकौ गुलाम हूं. ताकों कृपा करिकै दरसन तो दिये. अब अनुग्रह करिकै मेरो अङ्गीकार करो. मैं दासानुदास हूं. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो तुम तो लेहनो लेत हो. तब वा रजपूतने बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! अब लेहनो कैसो ? अब अङ्गीकार करो. और कृपा करिकै गुलामके गाम पधारिए. तब वा रजपूतकी बोहोत ही दैन्यता देखि श्रीगुसांईजी वा रजपूतकों नाम सुनायो. निवेदन करवायो. सो तब वा रजपूतने साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै और बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! अब ऐसो उपाय बताईये जासों इहां मन लागे. तब श्रीगुसांईजी वाके माथे कृपा करि लालाजीकौ स्वरूप और अपने दोउ चरन कुमकुम सों छापि वस्त्र पधराए. सो वह रजपूत आपके अनुग्रह तैं सेवा भलीभांतिसों करन लाग्यो. तब वाके घरमें गामके सब सेवक भए. और सेवा की रीति, मार्गकी रीति सब वाकों बताई. पाछें श्रीगुसांईजी आप उहां ते विजय किये. तब वा रजपूतने भेंट बोहोतसी कीनी. सो गामके कोस एक तांई पहोंचावन आए. और यह बिनती कीनी, जो जैसो दरसन दियो है सो तैसे ई कृपा करिकै फेरि बेगि दरसन देउंगे राज !. पाछें श्रीगुसांईजी उहांतें कछूक दिननमें श्रीगोकुल पधारे.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
और एक दिन श्रीगुसांईजी दांत कुचरते हे. सो दांतन में तें एक ज्वारिकौ बुबला निकस्यो. सो ता समैं चाचा हरिवंशजी ठाढ़े हते. तब चाचा हरिवंशजीने श्रीगुसांईजीसों पूछ्यो, जो राज ! यह कहा है ? तब श्रीगुसांईजी आज्ञा आप किये, जो अमूके देसमें एक रजपूत

वैष्णव है, तानें ज्वारिके पकें भोग धरे हैं. ताकौ बुबला है. तब चाचा हरिवंशजीने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! ऐसो कहा समर्प्यो है सो दांतनमें उरझ्यो है ? तब श्रीगुसांईजी आप चाचा हरिवंशजीसों कही, जो जांइकै देखि आवो. तब चाचा हरिवंशजी श्रीगोकुल तें चले. सो थोरेसेक दिननमें जांइ पहोंचे. तब वा गाममें गये तो रजपूत वैष्णवने सुनी, जो श्रीगुसांईजीके परम कृपापात्र बड़े भगवदीय हरिवंशजी पधारे हैं. तब वह रजपूत हरिवंशजीकों अपने घर लै गयो. बड़े सन्मानसों आछी जगेमें उतारे. पाछें हाथ जोरिकै साम्हें ठाढ़ो भयो. और बिनती करे, जो धन्य मेरो भाग्य ! जो आपको पधारनो भयो. तब हरिवंशजीने पूछ्यो, जो तुम्हारे श्रीठाकुरजीकौ कहा समै है ? तब वा रजपूतने कह्यो, जो राजभोग आयो है. तब हरिवंशजीने पूछी, जो रसोई कौन करे, भोग कौन समर्पे हैं ? तब वा रजपूतने कही, जो स्त्री रसोई करे है, भोग समर्पे है. आप चलो देखो. अपने मार्गकी रीतिसों धरे हैं. तब हरिवंशजी वाके श्रीठाकुरजीके मन्दिरमें गए. टेरा सरकायकै देख्यो. तब वा रजपूतने हू देख्यो. सो देखे तो श्रीठाकुरजी उलम्बिकै भोजन करे हैं. सो चौकी दूर हती. तब वह रजपूत पांचों कपरा पहेरें ठाढ़ो हतो. सो मन्दिरमें जांइकै चौकी सरकाई. तब यह हरिवंशजी देखिकै चुप व्है रहे. सो कछू कह्यो नाहीं. सो पाछें भोग सरायो. तब वा रजपूतने हरिवंशजीसों कही. जो महाप्रसाद लेहु. तब हरिवंशजीने कह्यो, जो मैं तो मेरे हाथसों करिकै लेत हों. काहेतें, जो तहां आचार नाहीं देख्यो. और कपरा पहेरे हाथ धोए नाहीं. चौकी ऐसेंई सरकाई. पाछें यह हरिवंशजीके आगें सीधो ल्याय धर्यो. जो सब रसोईकी त्यारी करि दई. तब वा रजपूतनें कही, जो तुम रसोई करो और महाप्रसाद लेहुगे तो पीछे हम लेइंगे. तब तो हरिवंशजी तत्काल न्हायकै रसोई करि, भोग धरि, भोग सरायकै महाप्रसाद लियो. पाछें रजपूत स्त्री - पुरुष दोउ जनेंन महाप्रसाद लियो. पाछें हरिवंशजी वा रजपूतसों पूछे, जो अमूके महिनामें अमूके दिन तुमने श्रीठाकुरजीकों कहा समर्प्यो हतो ? और नित्य तें अधिक कहा सामग्री धरी ही ? तब उनन कही, जो जब यह ज्वारिके पेंक धरे हे. तब चाचा हरिवंशजी सुनिकै चुप व्है रहे. ता पाछें हरिवंशजी वा रजपूतसों बिदा होंइकै चले. तब वा रजपूतने श्रीगुसांईजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै कहाई. और भेंट पठाई. श्रीगुसांईजीकों श्रीगोवर्द्धननाथजीकों. पाछें चाचा हरिवंशजीकों आछी रीतिसों बिदाय किये. सो थोरेसेक दिननमें श्रीगोकुल आए. तब श्रीगुसांईजी आपके पास बैठकमें गए. सो दरसन किये, दण्डवत् करी. तब वा वैष्णव रजपूतने भेंट पठाई ही. सो भण्डारीकों सोंपी. तब वह श्रीगोवर्द्धननाथजीकी भेंट न्यारी धराई. सो वा रजपूत वैष्णवकी ओर तें दण्डवत् करी. तब तहां श्रीगुसांईजी आपने चाचा हरिवंशजी कह्यो, जो महाराज ! देख्यो. परि वाके इहा महाप्रसाद तो नहीं लीनो. और आचार कछू देख्यो नाहीं. तातें नहीं लीनो. तब श्रीगुसांईजी आप

हरिवंशजीसों आज्ञा किये, जो तुम वा वैष्णव रजपूतके घर आचार देखिवेकों गए हे सो देखि आए. परि और हू कछू तुमने देख्यो ? और वाकौ स्नेह वात्सल्यता तो नहीं देख्यो. और यह आचार देख्यो. परि हमकों तो वैष्णवकों प्रेम प्रीति है और मनकी दैन्यता है सो देखनी है. वाकी कृतिसों कहा काम है ?

भावप्रकाश :

यामें यह जतायो, जो पुष्टिमार्गमें प्रभु जीवकी कृति देखत नाहीं. क्यों, जो स्नेहसों प्रभु बस होत हैं. जहां स्नेह होई तहां कृतिकौ प्रयोजन नाहीं. पुष्टिमार्गमें प्रमेयबल तें प्रभु आप जीवकौ उद्धार करत हैं. सो श्रीगुसांईजी विज्ञप्तिमें आज्ञा करत हैं, सो श्लोक

कियान्पूर्वं जीव स्तदुचितकृतिश्चापि कियती भवान् यत्सापेक्षो निजचरणदाने बत भवेत ।

जासों वैष्णवके हृदयकौ स्नेह सर्वोपरि है. स्नेह विना कृति फलित होत नाहीं.

सो इह वैष्णवकों वैष्णव उपर ममत्व चहिए. और तहां वैष्णवके उपर लगन देखनी है. सो इह वाने कपड़ा पहिरे मन्दिरमें चौकी सरकाई. परि श्रीगोवर्द्धननाथजी आप तो प्रीतिसों अरोगे. सो यह आचार नहीं देख्यो. सो आगें भगवदीय गाये हैं.

भजि सखी भाव - भाविक देव ।
कोटि साधन करो कोऊ तोऊ न मानै सेव ।
धुम्रकेतु - कुमार मांग्यो, कौन मारग प्रीत ।
पुरुष तें त्रिय - भाव उपन्यो, सबै उलटी रीत ।
बसन - भूषन पलट पहिरे, भाव सौं संजोइ ।

उलटि मुद्रा दई अङ्कन, बरन सूधे होइ ।
वेद विधि कौ नेम नहीं, जहां प्रेमकी पहचान ।
ब्रजवधू बस किये मोहन, 'सूर' चतुर सुजान ।

सो उहां कृति नहीं देखी है. तातें वैष्णवकी कृति न देखनी. यह श्रीजीकी कृपाकौ लक्षन है. सो श्रीगुसांईजी आप चाचा हरिवंसजीकों समुझाईकै कहे.

सो वह रजपूत श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो. जाकी श्रीगुसांईजी सराहना करते. श्रीठाकुरजी आप हू वाकों अनुभव जतावते. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।५३।।

५४-एक पटेल, जिसके लिये गाड़ी पठाई

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक पटेल कुनबी, गुजरातकौ बासी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये 'सात्विक' भक्त हैं. लीलामें इनका नाम 'अगुंरी' है. ये 'मनुआतुरी' तें प्रगटी हैं. तातें इनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै श्रीगुसांईजी श्रीरनछोरजीके दरसनकों द्वारिकाजी पधारे हे. तहां मार्गमें यह पटेल कुनबी सेवक भयो हतो. सो श्रीगुसांईजीके दरसन भए बोहोत दिन भए हते. तासों या पटेलने विचार कर्यो, जो श्रीगुसांईजीके दरसनकों श्रीगोकुल जानो. सो यह अकिञ्चन हतो.

सो एक समै एक साथ श्रीगोवर्द्धननाथजी तथा श्रीगुसांईजीके दरसनकों गुजरात तें चल्यो. सो ता साथमें बड़े - बड़े द्रव्यपात्र चले. सो यह पटेल हू ता साथमें चल्यो. सो काहूके साथ टहल करत अपनो पेट भरत आवत हतो. सो वा पटेल (कों) चाकरी सों छुराइ दीनो. तब वह पटेलनें अपने मनमें विचार कियो, जो अब तो श्रीगोवर्द्धननाथजीके श्रीगुसांर्सजीके दरसन करिकै जाऊंगो घरकों. अब पाछें कौन फिरे ? यह निर्द्धार करिकै वह वैष्णव वाही साथमें चल्यो. पाछें जब मजलि दोइ श्रीनाथजीद्वार रह्यो तब वा वैष्णवकों ज्वर आयो. सो वह एक मजलि तो हरें हरें सांझ परत आय पहोंच्यो. पाछें मजलि एक जब श्रीनाथजीद्वार रह्यो तब वा पटेलने अपने सङ्गके वैष्णवनसों कह्यो, जो भाई ! काल्हि मोकों कोई गाड़ी उपर चढाय कै लै चले तो हों तुम्हारे प्रताप तें श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन पाउं. तब वे तो सब द्रव्यपात्र हुते. सो द्रव्यके मदमें काहूने याकी बात मानी नाहीं. तब यह सगरेनकों कहिकै चुप करिकै बैठि रह्यो. ता पाछें याकों तो चारि प्रहर रात्रि यह सोच मनमें भयो, जो मेरी देहकी तो यह विवस्था है. और काल्हि कैसें मोकों श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन होंइगे ? यों चित्तमें बोहोत ताप भयो. सो याकौ ताप श्रीगोवर्द्धननाथजी आप सहि न सके. तब वाही समै श्रीगोवर्द्धननाथजीने श्रीगुसांईजीसों आयकै सब समाचार कहे. और श्रीगोवर्द्धननाथजीने श्रीगुसांईजीसों कही, जो अमूके गाम यह साथ है. तहां यह गाड़ी याही समै पठाईयो. और इन वैष्णवकों सन्ध्या - आर्ति समै एक दिन दरसन कराइयो. गाड़ीवानसों यह कहि दीजियो, जो वाही पटेलकों अकेलो गाड़ी उपर चढावें और कों नाहीं. यह श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीगुसांईजीकों कहिकै मन्दिरमें पधारे. तब श्रीगुसांईजी उठिकै देखे, तो रात्रि घरि चारि अथवा पांच पिछली बाकी है. तब श्रीगुसांईजी अपनी खासा गाड़ी मंगाये. वाकों सर्व समाचार समुझायकै कहें. और कहें, जो वा सङ्ग तें वह पटेल प्रथम इहां आवे. सो वा गाड़ीवाननें गाड़ी बेगि चलाई. सो सवेरो होत में वा गाड़ी सङ्गमें जांइ पहोंची. तब वे सगरे साथके दांतन करत हते. तिनसों गाड़ीवानने पूछ्यो, जो अमूको पटेल कहां है ? तब तो वे सगरे साथके वा गाड़ीवानके बचन सुनिकै अति आश्चर्यवन्त होंइ रहे. जो भाई ! वा उपर तो श्रीगुसांईजी बड़ी कृपा करी हैं. जो आप वाकों गाड़ीमें बैठायकै बुलावत हैं. तासों अब वह पटेल काहू भांति अपनी गाड़ीमें बैठे तो आछी बात होंई. वह तो आपुनके पास आयो हतो. परि अपुन कोई याकी बात मानी नाहीं. और यह पटेल जो कछू आपुनकी श्रीगुसांईजी आगें कहेगो ता आपुन उपर श्रीगुसांईजी रिस करेंगे. तातें अब तो याकों अपने साथ ही गाड़ीमें बैठाय लै जानो. यह सगरे साथके सोच करत ही रहे. इतने वा गाड़ीवानने वा पटेलकों पुकार्यो. तब वह पटेल

उठिकै आयो. तब गाड़ीवानने वा पटेलसों कह्यो, जो या गाड़ी पर तू बेगि आऊं, अवेर होइगी. तोकों श्रीगुसांईजी बेगि - बेगि बुलाए हैं. तोकों प्रभु अपनी खासा गाड़ी असवारीकी पठाई है. सो घरी चारिमें इहां आयो हूं. तासों हों ताकों घरी चारिमें सगरे साथके पहिले दरसन श्रीगोवर्द्धननाथजीके कराउंगो. तातें तू बेगि असवार होंई. तब वह पटेलकों प्रभुनकी अतुल कृपा जानि रोमाञ्च होंइ आयो. ता पाछें दण्डवत् करिकै वा गाड़ी उपर असवार भयो. इतने ही गाड़ी चलाई. सो और सगरे मोकों धोवत रहे और देखत रहे. और यह पटेल तो गाड़ीमें बैठिकै पवनके बेगसों चल्यो. सो श्रीनाथजीके सिंगार समै आय पहोंच्यो. तब वा गाड़ीवानने खबर कराई, जो महाराज ! अमूको पटेल मन्दिरकी तिवारीमें ठाढ़ो है. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीगुसांईजी परस्पर मुसिकाइकै बोहोत प्रसन्न भये. तब श्रीगोद्धनाथजी कहे, जा याकों याही समै दरसन करावो. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो यह मर्यादा तो नाहीं. ता उपर आज्ञा होंइ आपकी सो हमकों करनो. तब श्रीगुसांईजीके बचन सुनिकै श्रीगोवर्द्धननाथजी चुप करि रहे.

भाव प्रकाश :
काहेतें, जो याकों अभी सख्यभक्तिकौ दान श्रीगोवर्द्धननाथजी आप कियो नाहीं. सो सख्यता बिना सिंगार होत समै काहूकों दरसन न होंई. यह मार्गकी मर्यादा है.

ता पाछें सिंगार जब होंइ रह्यो तब सगरेनके पहिले याकों दरसन भयो.

ता पाछें सिंगारके किवाड़ खुले. पाछें वह वैष्णव श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करि अति आनन्द पायो. ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीकों गोपीवल्लभ भोग धरिके श्रीगुसांईजी बाहिर पधारे. तब वा पटेलकों बाहिर निकट बुलायो. तब वह पटेल दण्डवत् करिकै ठाढ़ौ रह्यो. सो अति आनन्दकौ आवेस वा पटेलके मनमें प्रभुनकी कृपा तें आयो. सो वह मुग्ध सो ठाढ़ो होंइ रह्यो. वाकी देहमें प्रान रञ्चकके से रहि गए. तब वाकी दसा प्रभुन जानी. तब एक लोटी जल मंगायकै रामदासजी भीतरियासों कहे, जो तुम छुवायकै याकों बेगो चरनोदक देऊ. नांतरु याकी अब ही देह छुटत हैं. तब श्रीगुसांईजीकौ चरनोदक रामदासजी छुवायके दिये. ता पाछें श्रीगुसांईजी एक अञ्जुली जल हाथमें

लै अष्टाक्षर पढ़िकै वा पटेल उपर छिरक्यो. तब तो वह पटेल सावधान भयो.

भाव प्रकाश :
सो या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो चरन हैं सो सीतल भक्ति है. तातें चरनोदक लिये तें स्वास्थ्यता प्राप्त होत है. और अष्टाक्षर सरन भावकौ देनहारो है. सो हू चित्तकों स्थिर करत है. तातें या पटेल वैष्णवकों इन दोऊन तें स्वास्थ्य प्राप्त भयो. नांतरु अति आनन्द करि अस्वास्थ्यतामें याकी देह छूट जाती. यह भाव जतायो.

पाछें श्रीगुसांईजी वाकों सर्व समाचार पूछे. जो पटेल ! तुम कहां हते ? तब पटेलने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! आप तो पाग बांधत हते. और मैं आपकी पाग लिये बंधावत हतो. सो आपके दरसन मोकों कोटी कन्दर्पलावन्य रूपसों भए. श्रीनाथजीके स्वरूपसों आपने कृपा करि दरसन दिये. तब श्रीगुसांईजी यह बात सुनिकै बोहोत ही प्रसन्न भए.

ता पाछें श्रीगुसांईजी सिंघपोरिके पोरियासों कहे, जो आज गुजरातकौ सङ्ग आवत है. तामें सों कोऊ पर्वत उपर चढन न पावे. ता पाछें राजभोग समै सब साथ आयो. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों पर्वत उपर चढन लाग्यो. तब सिंघपोरिके पोरियाने वाकों कोईकों चढन न दिये. तब वे सगरे आपुसमें कहन लागे, जो या पटेलने श्रीगुसांईजीसों कह्यो है तासों आपुनकों यह पोरि भीतर जान देत नाहीं. ता पाछें वा पटेलने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! यह साथ आयो है. ताकों यह पोरिया भीतर नाहीं आवन देत हैं. तब श्रीगुसांईजी वा पटेलके बचन सुनिकै चुप व्है रहे. ता पाछें राजभोग - आर्ति भई तहां लों वा साथके वैष्णव श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन न पाये. ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजीकों अनोसर करवायकै पर्वत तें नीचे पधारिकै अपनी बेठकमें पधारे. तब वे सब वैष्णव श्रीगुसांईजीकी बैठकमें आय बिनती करे, जो महाराज ! हम कहा अपराध कर्यो है ? जो श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन न पाए. तब एक बार तो उनकी बिनती सुनिकै श्रीगुसांईजी चुप करि रहे. ता पाछें घरी दोइकों फिर उनन श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! हमारो अपराध कृपा करिकै कहिए. तब उनसों श्रीगुसांईजी कृपा करिकै है, जो तुम्हारो अपराध कहा है सो तुम जानत ही हो. जो हमसों कहा

पूछत हो ? तुम सगरे लक्ष्मी मदान्ध हो. परि श्रीगोवर्द्धननाथजी तो करुनानिधान हैं. दीनबन्धु हैं. तासों तुमकों आज श्रीगोवर्द्धननाथजी सन्ध्या - आर्तिके समै दरसन देइंगे. सवारे तुम कोऊ दरसनकों आईयो मति. और तुम आये तब सों वा पटेलने तुम्हारी बिनती होइ बेर करी मोसों. परि हों कहा करों ? मोकों श्रीगोवर्द्धननाथजीकी यह आज्ञा है तासों तुमकों दरसन न भयो. तब सगरे वैष्णव श्रीगुसांईजीके श्रीगोवर्द्धननाथजीके श्रीमुखके बचन सुनिकै आपुने जन्मकों धिक: धिक: करन लागे. ता पाछें श्रीगुसांईजी भोजनकों पधारे. ता पाछें उन वैष्णवन वा पटेलसों कहे, जो भाई ! तू हमारी बिनती श्रीगुसांईजीसों करे तो हम कछूक दिन श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करन पावें. तब वा वैष्णवसों पटेलने कह्यो, जो हां ! मैं तुम्हारे आगे श्रीगुसांईजीसों बिनती करूंगो. पाछें आप प्रभु हैं, माने सो सही. पाछें श्रीगुसांईजी भोजन करिकै बैठकमें पधारे. तब वा पटेलने उनकी ओर सों बिनती करी. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो यह सामर्थ मेरी तो नाहीं. प्रभु चाहें ताकों दरसन देहि. न चाहे ताकों न देहि. याकों हों कहा करों ? अब तो मोकों श्रीगोवर्द्धननाथजीकी यह आज्ञा भई है. ता पाछें और हू पूंछिकै हों सांझकों याकौ प्रतिउत्तर देऊंगो. तब वैष्णवन जानी, जो यह सर्व कारन श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ है. याने तो कछू अपनी चुगली करी नाहीं. ता पाछें वह वैष्णव सब 'रुद्रकुण्ड' उपर डेरा किये. ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीके शङ्खनाद भये. तब सगरे आयकै द्वारे ठाढ़े रहे. परि दरसन सो न पाए. याही प्रकार भोगके हू दरसन भए. ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीकों श्रीगुसांईजी सन्ध्याभोग धरे. ता समै पूछे, जो बावा ! अब वे दरसनकों आवे ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीगुसांईजीसों कहे, जो आजु तो दरसन देहुंगो परि और दिन तो उनकों दरसन न होइगो. तब श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजीसों अति हठ कर्यो. जो महाराज ! जीव हैं. आप इतनी मनमें क्यों बिचारत हो ? तब श्रीगुसांईजीकी बिनती सुनिकै श्रीगोवर्द्धननाथजी दिन तीनकी आज्ञा दिये. ता पाछें श्रीगुसांईजी जब और बिनती करन लागे तब श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीगुसांईजीसों कहे, जो अब तुम मोकों बिनती करोगे तो हों मोनोंगो नाहीं. तासों आपु कछू अब मोकों कहो मति. तब श्रीगुसांईजी चुप करि रहे. ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीकों भोग धरिकै बाहिर पधारे. तब वाही पटेलसों उन वैष्णवनकों बाहिरसों बुलाए.

ता पाछें वह पटेल इनकों लिवायकै अपने साथ भीतर लै गयो. तब वे नाना भांतिसों श्रीगोवर्द्धननाथजीकों दण्डवत् करे. ता पाछें समय भयो तब श्रीगुसांईजी भोग सरावन पधारे. ता पाछें भोग सरायकै किवाड़ खोले. तब इन सबन वा पटेलकों आगें लै कै श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करे. पाछें दरसन करिकै अति आनन्द पाए. ता पाछें दरसन करिकै सगरे पर्वत तें नीचे उतरि अपनी बैठकमें

बिराजे. तब वे सब वैष्णव श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि बैठे. तब श्रीगुसांईजी उन वैष्णसों कहे, जो अति हठ हम कियो तब श्रीगोवर्द्धननाथजी यह आज्ञा करे, जो इनकों तीन दिन दरसन कराइयो. ता पाछें फेरि हम कछू कहिवेकौ बिचार कर्यो इतने ही हमकों श्रीगोवर्द्धननाथजी बरजे. जो अब हों तुम्हारो कह्यो मानोंगो नाहीं तासों हम चुप करि रहे. ता पाछें उन वैष्णवनसों श्रीगुसांईजी यह कहे, जो अब तुम तीन दिन दरसन करिकै जहां जानो होंइ तहां चलियो. परि इहां दरदनकौ हठ मति करियो. और हू उनकों श्रीगुसांईजी यह उपदेस दियो, जो आज पाछें वैष्णव कहे सो बचन मान्यो करियो. और वैष्णवकौ तिरस्कार मति करियो. प्रभु द्रव्यसों (जैसें) प्रसन्न न होंई तैसें वैष्णवकी सेवासों प्रसन्न होत हैं. वैष्णवकों चाकर करिकै न जानिए. ता पाछें वह वैष्णव सब वा पटेलके पांवन परे.

भाव प्रकाश :
सो या वार्तामें यह जातयो, जो वैष्णवकौ अपराध प्रभु सहन करि सकत नाहीं. और गुरु हू वैष्णवके अपराधकौ क्षमा करत नाहीं. तातें वैष्णवके अपराध तें सदा डरपत रहनो. और वैष्णवमें दोष बुद्धि हू न करनी. नांतरु प्रभु अप्रसन्न होत हैं.

सो वह पटेल श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।५४।।

५५-निहालचन्दभाई,जलोटा क्षत्री

अब श्रीगुसांईजीके सेवक निहालचन्दभाई, जलोटा क्षत्री, उज्जैनिके, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'मकरन्दिनी' है. ये 'ध्रुवनन्दन' तें प्रगटी हैं. तातें इनके भावरूप हैं.

ये उज्जैनिमें एक जलोटा क्षत्रीके जन्में. सो वह क्षत्री पद्मारावलके घरके पास रहत हुतो. तातें बालपने तें निहालचन्दभाई, कृष्णभटटके सङ्ग रहते. जब कृष्णभटट श्रीगुसांईजीके सेवक तब ये हू सेवक भए है. तब निहालचन्दभाई श्रीगुसांईजीसों बिनती करि श्रीठाकुरजीकी सेवा पधराई है.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो उन निहालचन्दभाईकों श्रीआचार्यजीके, श्रीगुसांईजीके ग्रन्थ तथा श्रीसुबोधिनीजीमें रुची बोहोत हती. तातें निहालचन्दभाई और कृष्ण भटटकौ बोहोत मिलाप रहेतो. सो कृष्ण भटट ग्रन्थ तथा कथा सुबोधिनीजी निहालचन्दभाईकों अहर्निस सुनावते. ता पाछें वार्ता करते. या प्रकार दोऊ जनें वार्तामें छके रहते. सो श्रीठाकुरजी निहालचन्दभाईकों सानुभावता बोहोत ही जनावते.

सो एक समै निहालचन्दभाई उज्जैनि तें श्रीगोकुलकों आवत हते. सो निहालचन्दभाईकों भूमिया पकरि लै गए. उनकी वस्तू भूमिया सब लूटि लीनी. निहालचन्दभाईकों अंधारे घरमें दै राखे. तब वा भूमियाकों मखियाने कह्यो, जो सवारे इन सगरनकों खरच करि डारो. और रात्रिकों वह भूमिया आगें सोये. तब निहालचन्दभाईके साथ एक वैष्णव और हतो. सो दोऊ जनेंनने बिचार कर्यो. तब निहालचन्दभाईने वा वैष्णवसों कह्यो, जो सोच कहा करत हो ? भीतर अन्तःकरनमें आनन्द मानो. जो लिखी है सो मिटिवेकी नाहीं. तातें यही अपने भागिमें होइगी. तातें वृथा काल काहेकों खोवत हो ? तातें मनमें आनन्द मानिकै अपने भागि पर निर्द्धार (करि) प्रभुनकौ भजन करो. तब दोऊ जनें अति आनन्द पाइकै प्रभुनकौ कीर्तन करन लागे. सो भूमियाकी महतारी वैष्णव हती. सो चाचाजी द्वारा श्रीगुसांईजीकी सेवक भई है. सो तिनने इनके कीर्तन सुने. तब वा बाईने अपनो एक मनुष्य पठायो. सो मनुष्यसों कहि दीनो, जो तू इन दोऊनसों पूछि आऊ, जो ये कौन हैं ? कौनके सेवक हैं ? सो वह बाईकौ मनुष्य इन पास आइकै पूछ्यो, जो तुम कौनके सेवक हो ? परि वा मनुष्यसों निहालचन्दभाईने कह्यो नाहीं. कीर्तन करिवो करे. कीर्तनके आवेसमें कछु स्फुर्द न भई. सो कछु मनुष्यकौ जवाब दियो नाहीं. तब वह मनुष्य बड़ी बेर तांई ठाढ़ो रहिकै वा बाईके पास फिरिकै आयो. इनके समाचार कहे. जो वे तो वैष्णव हैं, कीर्तन करत हैं. परि बोलत नाहीं है. तब वा बाईने अपने बेटा भूमियासों कहि पठाई, जो आजकौ साथ तुम लूटे हो तोमें दोइ वैष्णव है. सो वै कीर्तन करत हैं. परि बोलत नाहीं. उनके गरेमें माला हैं. उनकौ तू घात मति करियो. जो तू उन दोऊनकौ घात करेगो तो हों तेरे उपर मरूंगी. ता पाछें

सवारो भयो तब वह मुखिया आई बैठ्यो. ता पाछे सगरेनकों वा घरमें तें काढ़े. ता पाछें वान इनके गरेमें माला देखी. तब पहिचाने जो ये वैष्णव हैं, तिनकों तो राखो. और अपने मनुष्यनकों वा भूमियाने कह्यो, जो और सन सगरेनकों मारो. तब निहालचन्दभाईने वा भूमियाके मुखियासों कह्यो, जो पहिलें तो तुम मोकों मारो. ता पाछें इन सगरेनकों मारो. तब वा भूमियाके मुखियाने निहालचन्दभाईसों कह्यो, जो तुम दोऊ जनें तो वैष्णव हो, तासों तुमकों न मारेंगे. और साथकेनकों तो मारेंगे. तुम्हारे ये कहा लागत हैं ? तब निहालचन्दभाईने वा भूमियासों कही, जो ये सब हमारे हैं. तातें ये हमकों लागते हैं. तातें तुम्हारे जो कछू करनो होंइ सो प्रथम हमसों करो. ता पाछें इन सगरेनकों मारियो. यह निहालचन्दभाईकौ बोहोत ही आग्रह देखि मुखियाने सगरेनकों जीवत छोरे. तब मुखियाने निहालचन्दभाईसों कह्यो, जो कोई पुकारे ताकौ कहा करनो ? तब निहालचन्दभाईने कह्यो, जो सबनके बदले तुमकों हम लिखि दैं, जो हमारो कछु गयो नाहीं है. पाछें निहालचन्दभाईने वा भूमियाकों लिखि ता पाछें सगरे साथकों निहालचन्दभाईने यह कहि दियो, जो कोऊ काहूके आगें कहियो मति. सो या प्रकार कहिकै निहालचन्दभाईने सगरेनकों छुराए. तब वा सङ्गके सगरे मनुष्य निहालचन्दभाईसों कहे, जो हम सगरे तुम्हारी कृपा तें जीवत छूटे. या प्रकार सगरेनने निहालचन्दभाईकी बोहोत ही बिनती करी. ता पाछें वा भूमियाने निहालचन्दभाई और वा वैष्णव इन दोऊनकी जो कछू वस्तू लीनी ही सो (वह) सब फेरि दैन लाग्यो. तब निहालचन्दभाई वा भूमियासों कहे, जा सबनकों फेरि देहु तो मेरी ही फेरि देऊ. नांतरु मेरी काहेकों फेरि देत हो ? तब वह भूमिया निहालचन्दभाईके बचन सुनिकै बोहोत ही प्रसन्न भयो. ता पाछें सगरे साथकौ जो कछू लीनो हतो सो सगरे साथकों फेरि दियो. और एक वस्तू वा भूमियाने इन दोऊनकों दीनी. और वा दिन सगरे साथकों सीधो दै कै आछी भांतिसों रसोई कराई. ता पाछें वा भूमियाने अपने मनुष्य दै सगरे साथकों सरे दगरा तांई तो पहोंचाय दियो. सो निहालचन्दाभाई ऐसें भगवदीय हे. जो प्राणान्त कष्ट आयो परि आपनो धर्म न बतायो.

भाव प्रकाश :

तातें या मार्गकौ यह प्रकार है, जो वैष्णव - धर्म गोप्य राखनो. और परोपकार जैसो कोई पदार्थ नाहीं. दूसरेकों जहां तांई होंइ सके प्रान दै कै हू बचावनो. यह वैष्णवकौ धर्म है.

ता पाछें वह साथ निहालचन्दभाईके सङ्गमें श्रीगोकुल जांइ श्रीगुसांईजीकौ सेवक भयो. और एक - एक वस्त्र सगरेन अपने पास राखत भए. और सब श्रीगुसांईजीकी भेंट करत भए. ता पाछें थोरो - थोरो द्रव्य अपने नाम श्रीगुसांईजीके भण्डार तें लै कै यह द्रव्य खात अपने देसमें आए. पाछें द्रव्यकी हुंडी करायकै श्रीगोकुल भेजी. और श्रीगुसांईजीकों पत्र लिख्यो. सो पत्र बांचिकै श्रीगुसांईजी बोहोत ही प्रसन्न भए. वे निहालचन्दभाई श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।५५।।

५६-ज्ञानचन्द सेठ आगरे

अब श्रीगुसांईजीके सेवक ज्ञानचन्द सेठ, आगरेमें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'अनङ्गिनी' है. सो अनङ्गिनी 'ध्रुवनन्दन' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

ये ज्ञानचन्द आगरेमें एक बनियाके प्रगटे. सो वह बनिया बोहोत द्रव्यपात्र हुतो. सो सराफिकी दुकान करतो, दास जननमें. परि वाके कोऊ सन्तति नांय. सो वह बोहोत दुःख पावे. तब काहूने वा बनियासों कह्यो, जो तुम अपने घर एक सदाव्रत खोलो. तो काहू साधु बैरागिनकी कृपासों तुम्हारें सन्तति होंई. तब वाने अपने घर सदाव्रत खोल्यो. सो ब्राह्मन, साधु, वैरागी, विरक्त जो कोऊ आगरेमें आवें सो वा बनियाके उहां तें सदाव्रत पावे. सीधो सामान जो चहिए सो सब वह बनिया देतो, अपने हाथसों. ऐसें करत कछूक दिनमें वा बनियाके एक बेटा भयो. सो वाकौ नाम वानें ज्ञानचन्द धर्यो.

सो ज्ञानचन्द बरस चौदहके भए. तब वा बनियानें इनकौ ब्याह कियो. पाछें केतेक दिनमें ज्ञानचन्दके माता - पिता मरे. ताके थोरे दिन पाछें इनकी बहू मरी. सो ज्ञानचन्द व्याकुल भए. सो ज्ञानचन्दकौ मन कहूं लगे नाहीं. सो गाममें जहां कहूं कथा - वार्ता होंइ तहां जांई. तब एक दिन काहू वैष्णवने ज्ञानचन्दसों कह्यो, जो तुम सन्तदासजीके घरकी कथा - वार्ता सुनो तो तुमकों बोहोत आनन्द होइगो. परि सन्तदासजी बल्लभी वैष्णव बिना और काहूकों

अपने घर आवन देत नाहीं. तातें तुम बल्लभी वैष्णव होऊ तो यह जोग बने. ज्ञानचन्दने वा वैष्णवसों पूछयो, जो बल्लभी वैष्णव कैसें होंई ? तब वा वैष्णवने कह्यो, जो तुम श्रीगोकुल जांइ श्रीगुसांईजीके सेवक होंइ बल्लभी वैष्णव होऊं . तब ज्ञानचन्द वा वैष्णव तें पूछे, जो श्रीगुसांईजी कौन हैं ? तब वा वैष्णवने कह्यो, जो श्रीगुसांईजी साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम हैं. श्रीगोकुलमें बिराजत हैं. तब तो ज्ञानचन्द कछूक खरची लै आगरे तें चले. सो श्रीगोकुल आए. तहां श्रीगुसांईजीके दरसन पाए. सो ता दिन श्रीगुसांईजीको जन्म दिवस हतो. सो ज्ञानचन्द देखें ता जहां तहां श्रीगोकुलमें आनन्द बधाई होंर्ह रही है. घरघरमें बन्दनवार तोरन बंधे हैं. सब सुहासिनी मिलि मङ्गलगीत गाय रही हैं. श्रीगुसांईजी आप केसरि - स्नान करि केसरी धोती - उपरेना श्रीहस्त तें धरत हैं. ताही समै ज्ञानचन्द श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् किये. तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न व्हे ज्ञानचन्दकी ओर देखें. ता पाछें ज्ञानचन्दसों कहे, जो ज्ञानचन्द ! तू कब आगरेसों आयो ? सो श्रीगुसांईजीके बचन सुनिकै ज्ञानचन्द आश्‍चर्यवन्त होंइ रहे. और मनमें बिचारे, जो श्रीगुसांईजीने तो मोकों कब हू देख्यो नाहीं. और मैं हू श्रीगुसांईजीके दरसन कबहू पाए नाहीं. और इन तो मेरो नाम लै कै पूछयो ! तातें कछू कारन दीसे हैं. पाछें ज्ञानचन्द अपने मनमें बिचार कियो, जो ये साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम हैं. इन बिना यह भेद कौन जानि सके ? पाछें ज्ञानचन्द श्रीगुसांईजीसों बिनती कियो, जो महाराज ! हों अबही चल्यो आवत है. तब श्रीगुसांईजी हरिदास खवासके पास जल मंगाई अपनो चरनोदक ज्ञानचन्दकों दियो. तब तो ज्ञानचन्दकों सकल लीला सहित श्रीगुसांईजीके अलौकिक स्वरूपके दरसन भए. तब ज्ञानचन्द श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! कृपा करि मोकों अपनो सेवक कीजिये. मैं बहोत दिनसों बिछर्यो हूं सो आज राजके चरनारविन्द प्राप्त भए हैं. तातें अब देरि मति कीजिये. बेग सरन लीजिए. तब श्रीगुसांईजी ज्ञानचन्दकी ऐसी आर्ति जानि उनकों नाम सुनायो. ता पाछें दूसरे दिन निवेदन करायो. सो ज्ञानचन्दकों अपनो स्वरूप स्फुर्यो. तब ज्ञानचन्द अति प्रसन्न भए. ता पाछें इन श्रीगुसांईजीकी जन्म - लीलाके दरसन किये हे, ताकों हृदयमें धारन किये. सो ज्ञानचन्द लीलामें सदा मगन रहते. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप ज्ञानचन्दकों श्रीआचार्यजीके ग्रन्थ, अपने ग्रन्थ जो हते सो सब ज्ञानचन्दकों दिये. पाछें ज्ञानचन्द कछूक दिन श्रीगोकुल रहे. ता पाछें श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मांगि अपने घर आगरेकों आए. सो ज्ञानचन्द नित्यप्रति श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजीके ग्रन्थकौ पाठ करे. और लीला - रसमें मगनर रहें.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो जब श्रीगुसांईजी आप आगरे पधारते तब ज्ञानचन्दके घर उतरते. ऐसी कृपा श्रीगुसांईजी ज्ञानचन्दके उपर करते. सो केतेक दिननमें ज्ञानचन्दकी देह असक्त भई. तब ज्ञानचन्दकों भूमिशयन कराए. तब सगरे वैष्णव ज्ञानचन्दके घर आए. तब उनसों ज्ञानचन्दने कह्यो, जो

तुम सगरे जो कोऊ आवत होऊ सौ सब कोई मो उपर कृपा करिकै भगवद् नामकौ उच्चार करो. तब वे सगरे वैष्णव भगवद् नामकौ उच्चार करन लागे. सा कोऊ 'पञ्चाध्याई', कोऊ 'बेनुगीत' कोऊ 'जुगलगीत' कोऊ 'गीतगोविन्द' कोऊ 'कीर्तन' करे. या प्रकार सगरे वैष्णव भगवद् नामकौ उच्चार करन लागे. सो ज्ञानचन्द अति आनन्दसों श्रवन करन लागे. ता पाछें जब अपनो समय निकट आयो तब ज्ञानचन्द वैष्णवनसों कहै, जो सुनो ! एक समै श्रीगुसांईजीके जन्म दिन पर श्रीगुसांईजी केसरि - स्नान करिकै केसरी धोती - उपरेना श्रीहस्त तें धरत हे. ताही समै हों जांइ दण्डवत् कियो. तब प्रभुने जान्यो, जो पाछें सों आयो है. तब श्रीगुसांईजी हरिदाससों जल मंगवाईकै चरनोदक दिये. और कृपा करिकै मोसों श्रीगुसांईजी पूछे, जो ज्ञानचन्द. तू कब आगरेसों आयो है ? तब हों श्रीगुसांईजीसों बिनती कियो, जो महाराज ! अब ही चल्यो आवत हूं. ताही समै श्रीगुसांईजीकौ ज्ञानचन्द ध्यान करिकै सगरे वैष्णवनसों श्रीकृष्ण - स्मरन करिकै तत्काल देह छोरे. सो वे ज्ञानचन्द श्रीगुसांईजीके स्वरूपमें ऐसे आसक्त हते. सो वे ज्ञानचन्द नवीन देह धरिकै श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजीकों जांई कै दण्डवत् करी. तब श्रीगुसांईजीने पूछी, जो ज्ञानचन्द ! तू कब आयो ? तब ज्ञानचन्दने श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो महाराज ! हों अभी आयो हूं. इतनेमें श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन खुले. तब ज्ञानचन्द दरसन करिकै लीलामें प्राप्त भए. सो वे ज्ञानचन्द श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।५६।।

५७-जदुनाथदास क्षत्री

अब श्रीगुसांईजीके सेवक जदुनाथदास क्षत्री, धारुके चाकर, सो जोनपुरमें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

वार्ता प्रसङ्ग १ :
ये धारुके (राजाके) चाकर हते. सा वे जोनपुरमें रहत हते. सो जोनपुरमें एक हाथीकौ हवालदार हतो. ताकी स्त्री बोहोत ही सुन्दर रूपवन्ती हती. सो श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी हती. बड़ी भगदीय हती. सो एक दिन जदुनाथ कहूं जात हते. सो वा स्त्रीकों जदुनाथने देख्यो. सो ता दिन तें वे जदुनाथकों यह विस्मय पर्यो, जो ऐसें हू लोग या धरती पर हैं ? ता पाछें वाकौ मुख देखे तब जदुनाथ

जलपान करे. ऐसी वाकों आसक्ति भई. सो वह स्त्री नित्य दांतन करत हती तहां एक मोखा हतो. ता मोखा साम्हनें ही जदुनाथकौ घर हतो. सो नित्य वाकों दांतन करत समै देखतो. पाछें अपनो कामकाज करतो.

सो एक दिन वा स्त्रीनें जान्यो, जो यह मो उपर ऐसो आसक्त है, तासों याकौ मन तो देखो. तब वह स्त्री एक दिन सोयकै अवारी उठी. सो जदुनाथ वा दिन वाकौ मुख सवारे देखन न पायो. तब यह बोहोतही दुःखित होंइकै दरबारकौ समै भयो सो घोड़ा उपर चढिकै दरबार गयो. ता पाछें दरबारसों फिर्यो. तब जदुनाथ वा स्त्रीकों देखिवेकों वा स्त्रीके आगें आयो. तब वह तो सोई हती. सो खरे मध्याह्नकौ समै हतो. तब जदुनाथने अपनो घोड़ा तो अपने मनुष्यके साथ घर पठाय दियो. और जदुनाथ वा मनुष्यसों कहे, जो तू तो रोटी करियो. हों तो पाछें सों आवत हूं. सो वह मनुष्य तो डेरा गयो. वह घोड़ा बांधिकै रसोई करिकै बड़ीबार लों इनकी बाट देख्यो. पाछें वह खांइकै इनकों ढांपि सोय रह्यो. ता पाछें वह स्त्री सोयकै तीसरे प्रहर उठी. तब लोण्डीने वा स्त्री आगें पानी आनि धर्यो. सो वा दिन वह माथो मींडिकै न्हान बैठी. तब वाने अपनी लोण्डीसों कह्यो. जो तू देखि तो ठाढ़ी व्है कै मार्गमें कोई आवत जात तो नाहीं है ? तो हों बेगि न्हाय लेऊ. तब वह लोण्डी याकों बड़ीबारकौ खड़ो देखिकै मुसकानी. तब वानें लोण्डीसों पूछ्यो, जो तू मुसिकानी काहे सों ? सो कहि. तब लोण्डी वासों कहे, और तो कोई आवत जात नाहीं. परि वह दईकौ मार्यो तोकों देखिवेकों दोइ प्रहरकौ ठाढ़ौ है. तब वा स्त्रीने लोण्डीसों कही, जो वह बावरो है, सो ठाढ़ो है. जैसो वाने अपनो मन मेरेमें लगायो है तैसो वह परमेसुरमें लगावे तो याकौ काम होंइ. मेरी देहमें कहा विसेस है, जो याने प्रीति बांधी है ? सो यह दोऊ जनेंकी बात जदुनाथने सुनी. ताही समै जदुनाथ वा लोण्डीकों बुलाईकै सन्देसो पठावत भयो, जो परमेसुरसों मिलिवेकौ उपाय अब तू ही बताउ.

भावप्रकाश :

काहेतें, जो ये दोऊ लीलाके जीव हैं. सो जदुनाथ लीलामें ‘रूप - रसिका’ है. सो प्रभुनके रूपमें सदा मुग्ध रहत हैं. और यह स्त्रीकौ नाम ‘गज - गामिनी’ है. सो इनकी चालि हाथीकी सी है. तातें श्रीठाकुरजी इनकों अपनी पास राखत हैं. इनकी चालि आप सिखत हैं. सो ‘रूप - रसिका’ श्रीठाकुरजीके मिलनके उपाइ ‘गज - गामिनी’ तें पूछति हैं. सो जा भांति ‘गज - गमानि’ कहति हैं ताही भांति ‘रूप - रसिका’ प्रभुनके मिलनके उपाइ

करत हैं. काहेतें, ये प्रभुनके रूप पर आसक्त हैं. तातें प्रभुन बिना क्षन एक रह्यो जात नाहीं. सो ‘रूप - रसिका’ श्रुतिरूपाके यूथकी हैं, ये ध्रवनन्दकी बेटी हैं. उन तें प्रगटी हैं. तातें उनके तामस भावरूप हैं. और ‘गज - गामिनी’ हू ‘श्रुतिरूपा’ के यूथकी हैं. सो दोऊनमें परस्पर प्रीति है. तातें यहां हू ‘गज - गामिनी’ तें ‘रूप - रसिका’ नें प्रभुनके मिलनकौ उपाइ पूछयो.

सो वा स्त्रीने कहि पठायो, जो श्रीवल्लभकुलमें श्रीविटठलनाथजी श्रीगुसांईजी प्रगट भए हैं. सो वे आप ही परमेसुर हैं. उनके पास जांइकै तू उनकौ सेवक होऊ. इतने बचन वाके, लोण्डीने जदुनाथसों आइकै कहे. तब जदुनाथ अपने डेरा आए. सगरे चाकरनकों महीना चुकाय दिये. और जो द्रव्य अपुने पास रह्यो, ताकी हुंडी करइ लियो. और आप एक गुदरी कराइ तामें वह हुंडी धरिकै वैरागीकौ स्वरूप धरिकै चले. तब जदुनाथने यह अपने मनमें निर्द्धार कर्यो, जो जब लों श्रीगुसांईजीके दरसन न पाऊंगो तब लों फलहार करूंगो. जब जांइकै प्रभुनके दरसन करूंगो, उनके पास नाम पाऊंगो, तब जांई कछू रसोई करि लेउंगो. यह सत्य प्रतिज्ञा करिकै जदुनाथ अपने घर तें निकरे. सो जबही जोनपुरसों इह जदुनाथ चले इतनेई वैष्णव सब श्रीगुसांईजीके सेवक जात हते. सो श्रीगुसांईजी प्रथम ही बधैया गाममें पठाए हते. सो सगरे मिलिकै वैष्णव प्रभुनकों पधरावन जात हते. तिनाकें जदुनाथसों भेंट भई. जो तुम सगरे आज या समै कहां जात हो ? तब जदुनाथसों उन वैष्णवन कही, जो श्रीगुसांईजी इहां पधारे हैं. तिनकौ बधैया गाममें आयो हतो. तासों हम श्रीगुसांईजीकों पधरावनकों जात हैं. तब जदुनाथने कह्यो, जो जिनकों तुम पधरायवेकों जात हो सो वे श्रीगुसांईजी कौनके कुलमें प्रगटे हैं ? कौनके वे पुत्र हैं ? उनकौ नाम कहा है ? तब उन वैष्णव जदुनाथसों कहे, जो सुनि ! श्रीगुसांईजी श्रीवल्लभकुलमें प्रगटे हैं. श्रीवल्लभाचार्यजीके पुत्र हैं. श्रीविटठलनाथजी उनकौ नाम है. तब जदुनाथ उन वैष्णवनके साथ अति उत्कण्ठासों चले. सो श्रीगुसांईजी जोनपुर तें थोरी सी दूरि हते. सो रथ प्रभुनकों प्रथम जदुनाथने साष्टाङ्ग दण्डवत् कर्यो. और अति उत्कण्ठासों जदुनाथने यह दोहा प्रभुन आगें पढ्यो. सो दोहा

गिर्यो जो मनिया कांचकौ, गांठि हुतो ‘जदुनाथ’ ।
सो ढूंढत बाहिर गयो, पर्यो पदारथ हाथ ।।

यह दोहा सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत ही प्रसन्न भए. ता पाछें जदुनाथने सब समाचार प्रभुन आगें कहे. तब तो श्रीगुसांईजी वा उपर बोहोत ही प्रसन्न भए. ता पाछें श्रीगुसांईजी जोनपुरमें पधारे. सो श्रीगुसांईजी एक वैष्णवके घर डेरा किये. तहांतें 'गोमती' नदी तीर्थ है, तहां स्नान करिवेकों पधारे. ता पाछें श्रीगुसांईजी स्नान करिकै बिराजै तब जदुनाथने प्रभुनसों बिनती करी, जो महाराज ! अब मोकों आप अपुनो सेवक करो. तब श्रीगुसांईजीने जदुनाथकों स्नानकी आज्ञा दिये. तब जदुनाथ स्नान करिकै अपरसमें ठाढ़ो रहिकै साष्टाङ्ग दण्डवत् कर्यो. तब श्रीगुसांईजी वा उपर कृपा करिकै नाम सुनायो. ता पाछें 'जदुनाथदास' (ऐसो) उनकौ श्रीगुसांईजीने नाम धर्यो. ता पाछें वा जदुनाथदासकी गांठि द्रव्य हुतो सो सब श्रीगुसांईजीकों जदुनाथदासने वाही समै भेंट कर्यो.

ता पाछें वह श्रीगुसांईजीके साथ कितेक दिनकों श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों श्रीनाथजीद्वार आयो. तब जदुनाथदास श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करिकै अति प्रसन्न भए. ता पाछें जदुनाथदास कछूक दिन श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवा करिकै श्रीगोवर्द्धननाथजीकों ऐसें प्रसन्न करे, जो श्रीगोवर्द्धननाथजी जदुनाथदाससों थोरेई दिनमें सानुभावता जनावन लागे. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीकों जो चहियतो सो जदुनाथदाससों कहते. सो जदुनाथदास श्रीगुसांईजी आगें जांइकै कहते. जो यह वस्तू श्रीगोवर्द्धननाथजीकों चहियत है. सो श्रीगोवर्द्धनानथजीकों श्रीगुसांईजी जदुनाथदास द्वारा समर्पावते. तातें श्रीगोवर्द्धननाथजी इन पर बोहोत ही प्रसन्न रहते. जदुनाथदास सो श्रीगोवर्द्धननाथजी प्रत्यच्छ बातें करते. सो सर्व वार्ता जदुनाथदास श्रीगुसांईजीके आगें कहते. सो श्रीगुसांईजी जदुनाथदासके बचन सुनिकै बोहोत ही प्रसन्न होते. ता पाछें जदुनाथदास हू श्रीगुसांईजीकों प्रसन्न जानिकै आप हू अपने मनमें बोहोत ही प्रसन्न रहते. और जो कछू जदुनाथदास श्रीगुसांईजीसों कहते, सो श्रीगुसांईजी करते. सो श्रीगुसांईजी जदुनाथदासके बचन सत्य करि मानते. और श्रीगोवर्द्धनाथजीकी कृपा जदुनाथदास उपर हुती सो सब श्रीगुसांईजी जानते. और जदुनाथदास कहेते, जो ''पर्यो पदारथ हाथ'' सो ताकौ अनुभव श्रीगुसांईजी या प्रकार करवाए. वे जदुनाथदास श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए.

भाव प्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो या मार्गमें आसक्ति मुख्य हैं. सो आसक्ति वारेकों प्रभु बेगि अङ्गीकार करत हैं. वार्ता ।।५७।।

५८-पाथो गुजरी

ब श्रीगुसांईजी सेवकिनी पाथो गुजरी, आन्योरमें रहती, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'चपला' है. सो चपला 'मन्मथमोदा' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप है. इनकौ श्रीठाकुरजीमें बालभाव है.

ये भवनपुरामें एक गुजरके घर जन्मी. सो पाथो बरस दसकी भई तब इनकौ ब्याह एक आन्योरके गुजरसों भये. पाछें कछूक दिनमें वाकौ गौना भयो. तब ये आन्योरमें आई. तहां श्रीगुसांईजी तें नाम पायो. सो देवदमनमें वाकी बालपने तें प्रीति बोहोत. सो नित्य दरसनकों जांइ. सो वाकौ शुद्ध प्रेम देखिकै श्रीगोवर्द्धननाथजी वा पर बोहोत कृपा करते. ता पाछें कछूक दिनमें पाथोके दो बेटा भये.

सो पाथोके घर श्रीगोवर्द्धननाथजी पधारते. जो चहिए सो मांगि लेते. ऐसी कृपा श्रीगोवर्द्धननाथजी पाथो गुजरी पर करते. वा पाथो गुजरीके लरिकानके सङ्ग श्रीगोवर्द्धननाथजी आप खेलते. काहेतें ? ये लीलामें दोउ गोप हैं. एककौ नाम 'नरुआ' है. और दूसरेकौ 'गरुवा' है.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक दिन वह पाथो गुजरी अपने बेटाकों दहीं - भातकी छाक करिकै ल्याई. सो अपने घर तें वह बनकों जात हती. ता समै श्रीगोवर्द्धननाथजी गोविन्दकुण्ड उपर पर्वतकी छायामें ठाढ़े हते. ता ठौर पाथो गुजरी छाक लै कै आई निकसी. तब श्रीगोवर्द्धननाथजीने वा पाथो गुजरीसों कह्यो, जो अरी मैया ! यामें कहा है ? तब पाथो गुजरीने श्रीगोवर्द्धननाथजीसों कही, जो पूत ! यामें तो दहीं - भात है. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी पाथो गुजरीसों कहे, जो यामें यह छाक कौनकों लै जात है ? तब वा पाथो गुजरीने श्रीगोवर्द्धननाथजीसों कही, जो

मेरो बेटा सवारे ही बनमें गयो है. सो घरमें रोटी न हती तासों भूखो गयो है. ताकों हों छाक पहोंचावन चली जाति हूं. तब श्रीगोवर्द्धननाथजीने पाथो गुजरीसों कह्यो, जो मोकों भूख बोहोतही लागी है. तासों यह छाक तो तू मोसों दै जांइ तो आछौ करे. तब पाथो गुरजीने श्रीगोवर्द्धननाथजीसों यह बचन कहे, जो पूत ! मेरो बेटा भूखो होइंगो. तब श्रीगोवर्द्धनानथजी वा पाथोसों कहे, जो तू अपने बेटाकों घरमें हांडीमें, और ओदन हैं सो लै जईयो. और यह तो मोकों परोसि जा. और मैं बोहोत ही भूखो हों. तब वा पाथो गुजरीने श्रीगोवर्द्धननाथजीसों कही, जो लेहु. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी वा पाथो गुजरीसों कहे, जो आऊं, मेरे थारमें तू परोसि जा. तब श्रीगोवर्द्धननाथजीके पाछें - पाछें वह पाथो गुजरी मन्दिरमें आई. सो देखे तो किवाड़ सब मन्दिरके खुले हैं. पौरिया सोयो करे. तब पाथो आप मन्दिरमें गई. श्रीगोवर्द्धननाथजी आगें थार परोस्यो. ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी अरोगन लागे. और पाथो गुजरी तो तहां परोसिकै अपने घर आई.

भाव प्रकाश :
या वार्तामें बोहोत सन्देह हैं, जो बेटाके निमित्तकी छाक कैसें अरोगे ? और अनोसरमें पाथोकों श्रीगोवर्द्धननाथजी मन्दिरमें लै जांई कै वाके हाथकी छाक क्यों अरोगे ? यह तो श्रीआचार्यजीमहाप्रभुनके मारगकी रीति नाहीं है. सो श्रीगोवर्द्धननाथजी ऐसें कैसें किये ? तहां कहत हैं, जो पाथो गुजरी और उनके बेटानकौ श्रीठाकुरजी तें साक्षात् सम्बन्ध भयो है. और ये ब्रजवासी हैं. तातें इनमें भिन्न भाव श्रीगोवर्द्धननाथजी आप न राखते. सख्य भाव राखत हैं. सो जैसें कृष्णावतारमें ग्वाल - बालनकी छाक लूटिकै खाते, जूठी हू खाते. तैसें ही यहां पाथो गुजरीके स्नेह - बस होंई श्रीगोवर्द्धननाथजी आप उनके सङ्ग वैसी ही लीला करते. और अनोसरमें ब्रजभक्तनकों सेवाकौ अधिकार है. तातें श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप अनोसरमें पंखा आदिकी सेवा न राखे. सो पाथो गुजरी ब्रजभक्त हैं. तातें उनकों यह अधिकार श्रीगोवर्द्धननाथजी आप दिये. तासों अनोसरमें मन्दिरमें जांईकै हाथकी छाक अरोगे. सो यह श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके मारगकी रीति अनुसार जाननो. विपरीत नाहीं.

ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी आप दहीं - भात अरोगे. सो थारमें श्रीगोवर्द्धननाथजीके श्रीहस्तकी अंगुरिनकी लकीर उपटी हैं. सो थार श्रीगोवर्द्धननाथजी आगें धर्यो रह्यो. और थोरो सो दहीं - भात हू थारमें रह्यो हतो. सो उत्थापनके समै श्रीगुसांईजी स्नान करिकै पर्वत

उपर चढिकै शङ्खनाद करवाइकै मन्दिरमें पधारे. सो श्रीगुसांईजी भीतर जांइकै देखे तो श्रीगोवर्द्धननाथजी आगें थार धरयो है. और अंगुरिनकी लीक हू थारमें उपटी हैं. सो देखिकै श्रीगुसांईजीने ता बातकौ खेद कियो. सो प्रथम तो प्रभु रूपा पौरियाकों बुलाइकै पूछे, जो रूपा ! इहां कौन आयो हतो ? तब रूपाने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! इहां तो कोऊ नाहीं आयो. परि मोकों कछू निद्रा आई गई. तबकी तो नाहीं जानत हों. परि मेरे आगें तो कोऊ आयो गयो नाहीं. तब श्रीगोवर्द्धननाथजीकी बात श्रीगुसांईजी जानें. काहेतें ? जो रूपा कब हू सोवे नाहीं सो आज क्यों सोवे ? तातें इह काम श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ ई है. यह निर्द्धार श्रीगुसांईजी अपने मनमें करे. तब श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजीसों पूछे, जो बावा ! यह कौन पैं मांगिकै अरोगे हो ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीगुसांईजीसों कहे, जो आज यह दहींभात पाथो गुजरीसों मांगिकै अरोग्यो हूं. तब श्रीगुसांईजी चुप करि रहे.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
और एक समै श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों पाथो आई. तब श्रीगोवर्द्धननाथजीकों भोग आयो हतो. सो किवाड़ न खुले हते. ता समै पाथो दरसनकों आई तब पाथो गुजरी श्रीगोवर्द्धननाथजीकों बाहिर तें उराहनों देन लागी. ये बचन पाथो गुजरीनें श्रीगोवर्द्धननाथजीसों कहे, जो इहां तो अब तू राजा होंइकै घरमें बैठ्यो है. किवाड़ा दै कै अरोगत है. जो कोऊ देखन न पावे. अब तेरे अति ठकुराई भई. तासों हमकों कौन भीतर जान दै ? ऐसो बचन पाथो गुजरीनें बोहोत ही कहि - कहि श्रीगोवर्द्धननाथजीकों सुनाए. तब वाही समै मन्दिरमें किवाड़ खुलि गए. तब वह पाथो गुजरी श्रीगोवर्द्धननाथजी पास भीतर मन्दिरमें गई. ता दिन तें पाथो गुजरी दरसनकों आवें तब मुरककै दरसन पावती. कोऊ पाथो गुजरीकों बरजतो नाहीं. वह पाथो गुजरी मन्दिरमें भीतर जांईकै दरसन करिकै आवती. वा पाथो गुजरीकों समै बेसमैकी कछू अटक नाहीं. वह पाथो गुजरीकौ श्रीगोवर्द्धननाथजीसों ऐसो सम्बन्ध हतो.

और जब श्रीगोवर्द्धननाथजी कुनवाराकौ भोग अरोगे तब श्रीगोवर्द्धननाथजीके इहां गायवेकों पाथोकौ सर्व कुटुम्ब आवे. उन पाथो गुजरीकौ नेग हो. सो यह पाथोकी बात कहां तांई कहिए ? उनकी बात वेई जानें. वह पाथो गुजरी श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ? वार्ता ।।५८।।

५९-एक धोबी श्रीनाथजीका

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक धोबी, गोपालपुरमें रहतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. अन्तर्गृहगतामें हैं. लीलामें इनकौ नाम 'श्रीदेवी' है. ये 'मन्मथमोदा' की बेटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं. सो एक समै चन्द्रकलाने 'श्रीदेवी' तें कह्यो, जो श्रीदेवी ! तू प्रभुनकों यह कहि आऊ, जो श्रीचन्द्रावलीजी आपकों याद करें हैं. सो बेगि पधारो. तब श्रीदेवीने कह्यो, जो अभी तो मोकों मेरी मैया बुलावत हैं. तातें वहां जाऊंगी. तब चन्द्रकलाने कह्यो, जो श्रीठाकुरजी 'सौरभकुञ्ज' में बिराजत हैं. सो कितेक दूरि है ? तत्काल कहिकै चली आऊ. और यह बीरा श्रीचन्द्रावलीजीने पठायो है सो श्रीठाकुरजीकों दीजो. तब श्रीदेवी बीरा लै कै चली. सो सौरभकुञ्जमें आई. तब श्रीगुसांईजी कहे, अरी श्रीदेवी ! आज तू यहां कैसें आई ? तब श्रीदेवी कहे, महाराज ! आज मेरो मनोरथ पूरन करो. हों बोहोत दिन तें आपकौ भजन करति हों. सो मेरो ताप निवारन करिए. तब श्रीठाकुरजी मुसिकाए. सो श्रीदेवी जाने, जो श्रीप्रभुजी मो पर प्रसन्न हैं. तातें वह बीरा आपुन खांइ श्रीठाकुरजीकों आलिङ्गन करन लागी. सो इतनेईमें चन्द्रकलो तहां आई. सो उनने यह बात देखी. सो श्रीदेवीने जान्यो. सो डरपिकै न्यारी ठाढ़ी व्है रही. ता समै मुखकी पीक श्रीठाकुरजीके वस्त्र पर परी. सो श्रीठाकुरजी अप्रसन्न भए. तब चन्द्रकलाने सराप दियो, जो श्रीदेवी ! ताकों मैनें कहा करिवेकों भेजी ही और तैनें यह कहा कियो ? उहां तो श्रीचन्द्रावलीजीकों छिन - छिन अधिक - अधिक विरह होंइ रह्यो है. तामें तैनें यह विलम्ब कियो ? और छल कियो ? श्रीठाकुरजीके वस्त्र पैं पीक डारी. सो अब श्रीठाकुरजीकों वस्त्र पलटतमें हू विलम्ब होइगो. सो तैनें अनुचित कार्य कियो. तातें तू हीन योनिमें गिरि. तब तो श्रीदेवी कांपन लागी. पाछें वह चन्द्रकलाके पांवन परी. तब चन्द्रकलाने कह्यो, जो प्रभु तेरो उद्धार करेंगे.

सो यह गांठौलीमें एक धोबीके जन्म्यो. सो बड़ो भयो तब गोपालपुरमें रहिवे लाग्यो. तहां श्रीगुसांईजी तें नाम पायो. पाछें श्रीनाथजीके वस्त्र धोयवेकी सेवा करन लाग्यो. सो श्रीगुसांईजी वाकों नेग बांधि दियो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वह धोबी श्रीगोवर्द्धननाथजीके वस्त्र धोवतो सो बोहोत सावधानीसों धोवतो. सो एक समै श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार पधारे हुते. तब एक दिन श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवामें पहोंचिकै ता पाछें भोजन करिकै पाछें गोविन्दस्वामिकी कदम्बखण्डी पांव धारे. ता पाछें वहां सों हरजीकी पोखर पांव धारे. तब वह धोवी श्रीगोवर्द्धननाथजीके वस्त्र धोवत तें देख्यो. सो देखें तो वस्त्र बोहोत ही जतनसों घने - घने प्रेमसों भावसों धोवत हतो. परि सिला पर न पछांटे. तब देखिकै श्रीगुसांईजीने वासों पूछ्यो, जो तू ऐसें वस्त्र हाथ पर धोवत है सो काहेतें ? जो सिला पर क्यों नहीं पछांटिकै धोवत है ? ऐसें पूछ्यो. तब वा धोबीने कह्यो, जो श्रीमहाराजाधिराज ! श्रीगोवर्द्धननाथजीके श्रीअङ्गके विनियोगके वस्त्र हैं. तो हों कैसें सिला पर पछांटों ? तातें ऐसें धोवत हों.

भाव प्रकाश :
यह कहि यह जतायो, जो ये वस्त्र हू अलौकि भक्तनके भावकौ स्वरूप हैं. तातें हों इनसों ऐसी निठुराई कैसें करों ?

तब ऐसें बचन सुनिकै, ऐसें जतनसों धोवत देखिकै, श्रीगुसांईजी बोहोत ही प्रसन्न भए. पाछें श्रीगुसांईजी वा धोबी तें कह्यो, जो तू कछू मांगि. मैं तो पर प्रसन्न हों. तब वा धोबीने कह्यो, जो मोकों मोक्ष दीजें. और मेरी पृथ्वीमें सेवा चले. वैभवसों युक्त माहात्म्य चले. तब श्रीगुसांईजी धोबीसों कह्यो, जो तैं मांग्यो सो दीनो.

भाव प्रकाश :
सो याने हीन वस्तू मांगी. काहेतें ? हीन वर्ण है. तात हीन बुद्धि है. सो तुच्छ वस्तू मांगे. और लीलामें ये 'अन्तर्गृहगता' में है. सो सगुण हैं, सकाम हैं. तातें यहां हू लौकिक कामना रही.

पाछें श्रीगुसांईजी तो अपने घर पांव धारे. पाछें केतेक दिन पाछें वाकौ काल आयो. तब वाकी देह छूटी. ता पाछें सायुज्य मोक्ष भई.

पूजा चली.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

सो एक समै चाचा हरिवंसजी और एक वैष्णव दोउ जनें गुजरात जात हते. तब मार्गमें एक बड़ो गाम आयो. तहां आयकै मजलि उतरे. सो एक बनियाकी हाटसों सीधो सामग्री सब लै कै, ता पाछें गामके बाहिर जांइकै, जलके स्थल निकट जांइकै, पाछें रसोई करिकै श्रीठाकुरजी आगें भोग धरिकै ता पाछें दोउ जनेंन महाप्रसाद लियो. पाछें गाममें आयकै वा बनियाकी हाटमें बैठे. सो दिन थोरो सो रह्यो हो. तहां सब कोऊ लोग जात हते. और वह बनिया हू हाटकों बढ़ायकै चल्यो. तब चाचा हरिवंसजीके साथके वैष्णवने वा बनियासों पूछ्यो, जो तुम कहां जात हो ? और ये सगरे लोग कहां जात हैं ? और इहां यह देहरामें कहा है ? तब वा बनियाने कह्यो, जो यह राजाके श्रीठाकुरजी हैं. यहां वैभव घनो है ! सुन्दर मन्दिर बोहोत मनिजटित काम है. देखिवे सारिखी जगह है. और श्रीठाकुरजीके आभरन हू घने हैं. उंचे मोलके हैं. और चौकी सिंघासन कनक मनिजटित हैं. और वस्त्र, चन्दरवा, पीछेवाई घने उंचे जरी मखमलके हैं. और गजमोतिनकी झालरि और तोरन माला हैं. और पात्र सब कञ्चनके हैं. ऐसें वैभव घनो - घनो बतायो. और (कह्यो) जो तुम हू चला देखो तो खरे ? तुम घनी ठौर श्रीठाकुरजीकौ दरसन कर्यो होइगो. परि ऐसें कहूं नाहीं है. तब वैष्णव साथकेनें हरिवंसजीसों कह्यो, जो या बनियाने इतनी बड़ाई करी तातें चलो देखो तो खरे ? देखिवेमें कहा लागे ? श्रीठाकुरजी हैं. ऐसें कहिकै घनो आग्रह कीनो. तब हरिवंसजीने कह्यो, जो तुम जांइकै देखि आऊ. तब वा वैष्णवनें कह्यो, जो तुम हू चलो तो हों जाऊं. ऐसो घनो आग्रह कीनो. तब हरिवंसजीने कह्यो, जो तुम जांइकै देखि आऊ. तब वा वैष्णवनें कह्यो, जो तुम जांइकै देखि आऊ. तब वा वैष्णवने कह्यो, जो तुम हू चलो तो हों जाऊं. ऐसो घनो आग्रह कीनो. तब हरिवंसजी और वह वैष्णव दोउ जनें वहां देखनकों गए. तब वैष्णव द्रव्यकौ वैभव घनो देख्यो. ता पाछें राजाने घरकी कञ्चन थारीमें आर्ति करी. तब अनेक बाजा बाजत हैं, अनेक लोग ठाढ़े हैं. तब श्रीठाकुरजीकों देखिकै हरिवंसजीने मूड हलायो. और कह्यो, जो भलो धोबीकौ बनाव है. सो मूड हलावत राजाने देख्यो. तब राजाने अपने खवाससों कह्यो, जो वे दोउ जनें परदेसी ठाढ़े हैं उनकों लै जांइकै कोटड़ीमें रोको. तब वा खवासने उन दोउ वैष्णवनकों पकरिकै कोटड़ीमें रोकिकै तारो मारिकै कह्यो, जो राजाकौ कोऊ काम है. तब हरिवंसजीने वा साथके वैष्णवसों कह्यो, जो तू हठ कीनो और अन्यमार्गीयके श्रीठाकुर

देखे, और उनके मन्दिर गए, सो अपने श्रीठाकुरजीकों सुहावे नाहीं. तातें श्रीठाकुरजीने ऐसो कर्यो, जो बन्धमें पारे. परि भले, अनुचित तो कछु नाहीं. अपने माथें श्रीगुसांईजी बिराजत हैं. परि तुरत तो यह फल भयो.

भावप्रकाश :
सो या वार्ता तें यह जतायो, जो पुष्टिमार्गीय ठाकुरके सिवाय अन्य ठाकुरके पास सर्वथा न जानों. उनकों देखनो नाहीं, प्रसाद लेनो नाहीं. नांतरु अन्याश्रय होंई. सो श्रीआचार्यजीमहाप्रभु 'विवेकधैर्याश्रम' ग्रन्थमें कहते हैं. सो श्लोक -

अन्यस्य भजनं तत्र स्वतो गमनमेव च ।
प्रार्थनाकार्यमात्रेऽपि ततोऽन्यत्र विवर्जयेत् ।।

तातें वैष्णवकों अन्याश्रय तें बोहोत सावधान रहनो. अन्याश्रय समान और कोऊ अपराध नाहीं.

पाछें सेवा तें पहोंचिकै राजा घर आयो. तब खवास सों बोल्यो, जो वे दोउ जनें रोके हैं, जो उनकों ल्याउ. तब दोउनकों राजा पास ल्याये. तब राजा चाचा हरिवंशजीसों कह्यो, जो मेरे श्रीठाकुरजीकों तुमने देखिकै मूड काहेकों हलायो ? सो बात कहो. तब चाचा हरिवंशजीने कह्यो, जो हम तो सहज ही मूड हलायो हैं. तब राजाने कह्यो, जो ये बात तो तुम मोकों कहो. हमकों समुझाओ. यह बात तो सर्वथा कही चाहिए. नांतरु छोरूंगो नाहीं. और रोकूंगो. तब चाचा हरिवंशजीने कह्यो, जो तेरे श्रीठाकुरजी तो हमारे श्रीठाकुरजीकौ धोबी है. यातें हम मूड हलायो. तब राजाने कह्यो, जो हों कैसें मानों धोबी ? तब हरिवंशजीने कह्यो, जो तुम मानो तैसें करिए, परि धोबी तो है. ता पाछें हरिवंशजीने कह्यो, जो तेरे मनमें प्रतीत नाहीं तो हमारे पास हमारे श्रीठाकुरजीके वस्त्र हैं. सो आपु चलिकै तुम्हारे श्रीठाकुरजीके मन्दिरमें धरि आओ. और वे वस्त्र धोईकै आछें आहार - कुंदी घड़ी करि धरे तब तो तेरे प्रतीत आवें ? तब राजाने कह्यो, जो चले ऐसें करिए. ता पाछें राजा और हरिवंशजी उनके श्रीठाकुरजीके मन्दिरमें गए. तब श्रीगोवर्द्धननाथजीके वसन्त ऋतुके वस्त्र

हरिवंशजीके पास हते, सो काढ़िकै एक चौकी उपर वस्त्र बिछायकै धरे. और राजाके श्रीठाकुरजीसों हरिवंशजीने कह्यो, जो यह वस्त्र श्रीगोवर्द्धननाथजी आपके हैं. सो आछी रीतिसों पहिलें धोवत हते तैसेंई धोईकै कुंदी घड़ी करिकै दीजो. जैसेंई सदा तुम्हारी रीत है तैसेंई करियो. ऐसें कहिकै पाछें द्वार मारि तारो मारिकै बाहिर आए. ता पाछें हरिवंशजी बाहिर द्वारमें सोय रहे. ता पाछें प्रातःकाल उठिकै राजा और हरिवंशजी मन्दिरमें जांइकै मन्दिरके किवाड़ खोले. तब देखे तो वस्त्र सब आछें धोयकै चोवाके दाग सब काढ़िकै घड़ी करिकै आहार - कुंदी करिकै आछें सुधारि संवारिकै धरे हैं. तब चाचा हरिवंशजीने राजासों कह्यो, जो अब तो धोबी बन्यो ? तेरे प्रतीति तो आई ? तब राजाने कह्यो, जो प्रतीति तो आई. परि यह बात मोसों विचारिकै कहिये, जो यह धोबी कैसो ? और श्रीठाकुरजी कैसें भए ? तब हरिवंशजीने कह्यो, जो यह पहिले हमारे श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ धोबी हतो. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीके वस्त्र धोवत हतो. सो एक समै हमारे गुरु श्रीविटठलनाथजी, सो जा पोखर पर यह धोवत हुतो तहां पांव धारे. तब याकों वस्त्र धोवत देख्यो. सो बोहोत ही जतनसों हाथसों मोड़िकै धोवे. तब श्रीगुसांईजीने पूछ्यो, जो यह वस्त्र हाथसों मोड़िकै क्यों धोवत है ? सिला पर पछांटत नाहीं सो क्यों ? तब वा धोबीने कह्यो, जो यह श्रीठाकुरजीके वस्त्र हैं. सो प्रभु समान हैं. तातें सिला पर कैसे पछांटो ? यातें ऐसें धोवत हूं. तब यह बात सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए. तब कह्यो, जो तेरे मनोरथ होंइ सो तू मांगि. मैं तो पर बोहोत प्रसन्न हों. तब धोबीने कह्यो, जो मोकों सायुज्य मुक्ति देहु. और लौकिकमें पूजा मानता चले. जैसें श्रीठाकुरजीकी सेवा करे तैसें मेरी सेवा करे. तब श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो जा ऐसें ही होइगो.

भाव प्रकाश :

यहां यह बड़ो सन्देह है, जो सायुज्य मुक्ति भए पाछें तो वह जीव प्रभुनके तेजमें मिलि जाति है. तो लोकमें वाकी पूजा कैसे चले ? तहां कहत हैं, जो ये धोबी पुष्टिमार्गीय हतो. तातें पुष्टिकी रीतिसों वाकों सायुज्य - मुक्ति श्रीगुसांईजी आप दिये. सो तामें श्रीप्रभुनके अङ्गमें जैसें अन्तर्गृहगताकी स्थिति भई, ता भांति याकी स्थिति भई जाननी. सो यह सायुज्य मुक्ति मर्यादा तें विलक्षन है. यामें प्रभुनकी इच्छा होंइ तब वह जीव पाछो बाहिर प्रगटे. और उनतें प्रभु रासादि विहार करें. ता पाछें फेरि प्रभुनके हृदयमें वाकी स्थिति होंई. और मर्यादामार्गीय सायुज्य मुक्तिमें तो तेजमें तेज लीन व्है जांई. फेरि न निकसे. सो यह धोबी आधिदैविक भावरूप तें तो सायुज्यकों प्राप्त भयो. और वह आध्यात्मिक रूप तें श्रीठाकुरजी व्है लोकमें पूजायो. या प्रकार जाननो.

ता पाछें केतेक दिनमें वाकी देह छूटी और वाही समै तुम्हारे श्रीठाकुरजीकी प्रतिष्ठा भई. सो वह धोबीकौ जीव हो सो तुम्हारे श्रीठाकुरजीके स्वरूपमें प्रवेश भयो, आवेश भयो, सो यह ठाकुरजी हैं. सो मैं देखिकै पहिचाने हैं. तब मैं मूड हलायो. जो देखो धोबीकी कौन मानता चली है ? यह ऐसी बात है. सो वह धोबी श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ? वार्ता ।।५९।।

६०-धोबी राजा मारवाड़का

अब श्रीगुसांईजीके सेवक एक धोबी राजा, मारवाड़में रहतो, सो हरिवंशजीकी सङ्गतिसों वैष्णव भयो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं.

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'रतिधामा' है. सो ये 'मन्मथमोदा' तें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं. ये चन्द्रकलाके यूथकी हैं. चन्द्रकला इन पर प्रीति बोहोत राखति हैं. ये श्रीठाकुरजीके सेवा - सिंगार आछी भांतिसों करति हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वह राजा, धोबी श्रीठाकुरजी भए ताकी सेवा करतो. सो धोबीके समाचार राजाने पूछे सो सब हरिवंशजीने विस्तार करिकै कहे. ता पाछें राजा बोल्यो, जो भले, अब तो इतने दिन बिनु जाने सेवा करी सो तो करी. परि अब मैं कहा करों ? तब हरिवंशजीने कह्यो, जो एक बात हों कहों जो तुम मानो तो. तब राजाने कह्यो, जो कहिए हों सर्वथा मानोंगो. तब हरिवंशजीने कह्यो, जो तुम श्रीगोकुल जांई श्रीगुसांईजीके सेवक होउ. ता पाछें और सेवा श्रीगुसांईजीके पास तें पधराय ल्याउ. सो न्यारो मन्दिरमें इहां करि तहां श्रीठाकुरजी न्यारे बैठारिकै सेवा करो. और इन श्रीठाकुरजीकी सेवा जैसें चलि जाति है याही रीतिसों चलाउ. जैसें वैभवसों भीतरिया टहेलुवा सेवा करें हैं

वैसें. तामें न्यून कछू मति करो.

भाव प्रकाश :
काहेतें, ये श्रीनाथजीकौ धोबी है. और श्रीगुसांईजीने इनकों वर दियो है. सो ए श्रीगुसांईजीकी दीनी ठकुराई है. तातें वैभव घटाइवेकी चाचाजी नाहीं किये.

और दिनमें एक बार तुम जाऊ सो नमस्कार मात्र करि आओ. सो जा भांतिसों जैसें हरिवंशजी कहे, तैसें ही राजा कर्यो. और श्रीगोकुलकों अपनी स्त्री कुटुम्ब लै कै थोरेसेक दिनमें आयो. ता पाछें श्रीगुसांईजी सों बिनती करिकै नाम - निवेदन कीनो. तब भेंट बोहोत ही करी. पाछें थोरेसेक दिन उहां ही रहिकै मार्गकी रीति सब सीखे. ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करे. ब्रजकी परिक्रमा करी. ता पाछें श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! मोकों सेवाकौ मनोरथ है. सो मेरे माथे स्वरूपसेवा पधराइए. तब श्रीगुसांईजीने एक स्वरूप मंगाईकै ताकी प्रतिष्ठा करिकै पञ्चामृतसों स्नान करवाईकै सिंगार करिकै ता पाछें राजाकों श्रीठाकुरजी पधराई दिये. पाछें राजा श्रीगुसांईजीसों बिदा होईकै अपने देसकों मारवाड़कों चल्यो. सो थोरेसेक दिनमें घरकों आयो. ता पाछें एक मन्दिर नयो घनो सुन्दर करवायो. पाछें आछौ मुहूर्त देखिकै श्रीठाकुरजी मन्दिरमें पधराए. ता पाछें सुन्दर सामग्री करिकै श्रीठाकुरजीकों भोग धर्यो. पाछें आर्ति अनोसर करिकै वैष्णव बुलाइकै मन्दिरमें ही प्रसाद लियो. ता पाछें भली भांतिसों सेवा करन लाग्यो. दिनमें अपने हाथनसों सेवा करे. रात्रिमें बैठे भगवद् वार्ता करे. सो वे धोबीके श्रीठाकुरजी भए हे, सो रात्रिकों आइकै एकान्तमें बैठिकै राजा और वैष्णव भगवद् वार्ता कीर्तन करे सो सब सुनें. तब केतेक दिन पाछें एक दिन रात्रिमें वाने राजाकों स्वप्नमें कह्यो, जो मोकों तुम तुम्हारे श्रीठाकुरजीके मन्दिरमें द्वार बाहिर एक गवाखामें बैठारो. और तुम्हारे श्रीठाकुरजीकौ राजभोग सरावो ता पाछें वा महाप्रसादमें तें एक पातरि परोसिकै मेरे आगें धरो. और न्यारो मेरे लिये कछू मति करो. और मेरे मन्दिरकौ वैभव है सो सब श्रीनाथजीद्वार पठाउ. ऐसें स्वप्नमें राजासों कह्यो. तब राजाने ऐसेंई कियो.

ता पाछें केतेक दिन पाछें हरिवंशजी गुजरात तें आवत हते. तब राजाके घर आइकै उतरे. तब हरिवंशजीके साथमें और हू वैष्णव बीस

पचीस साथ हुते. सो वह राजा भली भांतिसों वैष्णवनकों तथा हरिवंशजीकों मिलि, भेंटे. पाछें डेरा बैठाए. रसोईके समै सामग्री सब पहोंचाए. भली भांतिसों रसोई करिकै सबन श्रीठाकुरजीकों भोग धरिकै महाप्रसाद लियो. ता पाछें सवारे हरिवंशजी चलन लागे. तब राजाने बोहोत ही आग्रह करिकै राखे. पाछें नित्य चलिवेकी कहे, तब राजा नाहीं करे. कहे, जो भले, काल्हि चलियो. आजकौ दिन तो और हू रहो. तब ऐसें करत एक मास राखे. ता पाछें घनीसी भेंट राजाने श्रीगुसांईजीकों तथा श्रीगोवर्द्धननाथजीकों चाचाजीके साथ दीनी. ता पाछें घनी मनुहारि करिकै बोहोत बिनती करिकै हरिवंशजीकों बिदाय किये. थोरीसी दूरि हरिवंशजीकों पहोंचावनकों गए. और ता भांति फिरि घर आयकै सेवा करन लागे. सो राजा वैष्णवन विषे ममत्व घनो राखत हो. सो वैष्णवसों घनो दासत्व दीनता राखे. वैष्णवसों मिलिकै भगवद्वार्ता कीर्तन करतो. वैष्णवनकों महाप्रसाद नित्य लिवावतो. और जो वैष्णव द्रव्य मांगे ताकों द्रव्य देई. और व्यावृत्तिकों लगावे. और वैष्णवसों काहू बात सों दुराव नाहीं करे. वैष्णवके कहेकौ सदा विश्वास राखे. वैष्णव जैसें कहे तैसेंई करे. बचन उथापतो नाहीं. सदा विश्वास ही राखतो. रात्र दिवस भगवल्लीला वैष्णवनमें छक्यो ई रहे. सेवा बहु भली भांतिसों करे. सामग्री बोहोत ही सुन्दर होती. सो श्रीठाकुरजीकों समर्पिकै महाप्रसाद आप वैष्णवनसों मिलिकै लेतो. श्रीठाकुरजी हू सानुभावता जनावन लागे. चहियो सो मांगि लेते. आप अरोगते तब बातें करते. श्रीगुसांईजी हू वा पर घने प्रसन्न रहते. और हरिवंशजी गुजरात जांई और आवे तब चाचाजी राजाके घर उतरते. दिन पांच दस रहते. रात्रिकों भगवद् वार्ता कीर्तन करते. मार्गकौ सिद्धान्त गोप्य वार्ता होंइ सो सब हरिवंशजी वा राजासों कहे. वा राजा उपर हरिवंशजी सदा प्रसन्न रहते. राजा हू हरिवंशजीकी कान घनी राखतो. भली भांतिसों हरिवंशजीकी सेवा करें. घने - घने मनोरथसों हरिवंशजीकों रसोई करवावे, महाप्रसाद लिवावें. राजा हरिवंशजीकी आज्ञा प्रमान चले. सो वह राजा श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।६०।।

६१-पटेलका बेटा पटवारीकी बेटी

अब श्रीगुसांईजीके सेवक एक पटेलकौ बेटा और पटवारीकी बेटी, दोउ गोधराके बासी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो उन दोउनकों परस्पर बोहोत प्रीति हुती. सो दोउ जनें एक पंड्याके घर बालक अवस्थामें पढ़िवेकों बैठे हुते. सो दोउनकौ आपुसमें सनेह घनो हुतो. सो केतेक दिनकों पटवारीकी बेटीकौ विवाह भयो. तब वह बड़ी भई. सो एक गाम कोस बीस पर हतो. तहां विवाह करि दीनो. ता पाछें केतेक दिनकों वह सयानी भई. तब वाके सुसरारिकौ आनो आयो. तब वाके माता - पिताने बिदा करि दीनी. तब वा गाड़ीमें बैठिकै सब कोऊ बिदा करिकै पाछें फिरें. तब वह पटेलकौ बेटा उ बिदा करिवेकों गयो हुतो. सो जब वह गाड़ीमें बैठिकै चली तब वह पटेलकौ बेटा एक रूख पर चढ्यो. सो उपर चढ़िकै देखन लाग्यो. सो जबलों गाड़ीकी धूरि हू द्दष्टि परी तबलों तो देख्यो कर्यो. और धूरि हू द्दष्टि नाहीं परी तब वह पटेलकौ बेटा निरास भयो. सो मनमें दुःख ल्याइकै रोयो. और आंखि मींचत भयो. सो मूर्छा खांइकै वा रूख पर तें गिर्यो. सो प्रान निकसि गयो. पाछें वाके देह सम्बन्धी कुटुम्ब सब आइकै जुरे. ता पाछें वाही रूखके नीचे वाकौ संस्कार कियो. ता पाछें वहां ही एक चोंतरा कियो. पाछें केतेक दिनमें वह पटवारीकी बेटी पाछी फिरिकै अपने माता - पिता के घर आई. तब मुहूर्त आछौ नाहीं हुतो. सन्ध्या समै गाममें जांइवे कौ मुहूर्त हतो. सो वह गामके बाहिर बागमें उतरे. ता पाछें साथके मनुष्यने वा बागमें रसोई करी. तब वह पटवारीकी बेटी इत उत देखन लागी. तब चोंतरा देख्यो. तब इन साथके मनुष्यनसों पूछ्यो, जो यह चोंतरा कैसो भयो है ? यह कहा है ? यह चोंतरा पहिले तो यहां न हुतो. तब इन साथके ब्राह्मनने कह्यो, जो यह चोंतरा तो वह पटेलकौ बेटा अमूकौ, तोसों घनी प्रीति हती ताकौ है. तब इन स्त्रीने पूछ्यो, जो वाकौ चोंतरा कैसो ? वह कहां मर्यो ? तब इन ब्राह्मनने कह्यो, जो यह यहांई मर्यो. तब इन स्त्रीने पूछ्यो, जो ये कैसें मर्यो ? औ कब मर्यो ? सो समाचार मोसों विस्तार करिकै कहिए. तब वह ब्राह्मनने कह्यो, जो सुनि ! जा दिन तू तेरे सुसरारिकों चली ता दिना सब कोई तोकों बिदा करिकै घरकों आए. और यह पटेलकौ बेटा तो या रूख पर चढ्यो. सो जब लों तेरी या गाड़ीकी धूरि याकी द्दष्टि परी तब लों तो देख्यो कर्यो. और धूरि हू द्दष्टि नाहीं परी तब वाकों तो तेरो विरह - ताप भयो. सो मूर्छा खांइकै या रूखके उपर तें गिर्यो. सो देह छोरी. सो ऐसी बात वा पटेलके बेटाकी वा स्त्रीने सुनी. तब वाहूकों विरह - तापकौ कलेस भयो. सो अत्यन्त भयो. पाछें मूर्छा खांइकै धरनी पर गिरी. पाछें स्त्रीने वाही ठौर देह छोरी. तब वाहूके देह सम्बन्धी सब कोऊ खबरि सुनिकै आई जुरे. ता पाछें वाकौ संस्कार वहां ही वाही बागमें करे. पाछें वा पटेलके बेटाके चोंतराके समीप वाकौ हू चोंतरा कर्यो.

ता पाछें केतेक दिनकों भगवद् ईच्छा तें श्रीगुसांईजी गोधरा पांव धारे. तब वाही बागमें उतरे. ता पाछें वैष्णव सब आयकै जुरे. तब सब वैष्णव दण्डवत् करि बैठे. इतने ही श्रीगुसांईजी उन वैष्णवनसों पूछ्यो, जो इहां दोउ चोंतरा कैसे हैं ? तब उन वैष्णवन सब समाचार चोंतराके कहे. और वे दोउ जनें पटेलके बेटा और पटवारीकी बेटीके प्रीतिके और मृत्युके समाचार सब कहे. इतने ही श्रीगुसांईजीकी द्दष्टि वा सरवा पर गई. तब देखे तो वे दोउ जनें भूत भए हैं. सो वे रूख पर बैठें देखे. तब श्रीगुसांईजीने पहिचाने. ता पाछें आप सब वैष्णवनकों बिदा किये. वैष्णव दोइ चार मुखिया रहे. ता पाछें श्रीगुसांईजी उठिकै वा रूख नीचे गए. जांइकै ठाढ़े रहे. और उन दोउ जनेंकौ नाम लै कै पुकारे. इतने ही वे दोउ जनें आंइकै ठाढ़े रहे. ता पाछें श्रीगुसांईजी उन दोउनकों चरनपरस करवायो. अष्टाक्षर मन्त्र कानमें कह्यो. और चरनोदक जल मंगइकै दीनो. इतने ही उनकी वे देह दोनकी छूटी. अलौकिक देहकी प्राप्ति भई. इतने ई श्रीठाकुरजीकी दूती आई, चारि. सो ठाढ़ी भई. तब श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् किये. ता पाछें श्रीगुसांईजीने आज्ञा करी, जो तुम इन दोउनकों निकुञ्ज देस और ‘तुलसी - कुञ्ज’ में लै जाऊ. इनकों श्रीठाकुरजीकी लीलामें प्रवेश कराओ. तब वे दूति दोउनकों भगवल्लीलामें पहोंचाए.

ता पाछें उन वैष्णवन श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! ये पूर्वजन्ममें दोउ जनें कौन हे ? सो हमकों आप कृपा करिकै कहिए. और इनकों ऐसी प्रीति कैसें भई ? तब श्रीगुसांईजी कह्यो, जो यह दोउ जनें निजधाममें श्रीचन्द्रावलीजीकी सखी हैं. सो पुरुष तो लीलामें ‘कामकला’ है और स्त्रीकौ नाम ‘रति’ है. ये दोउ ‘कलहंसी’ के सात्विक भावरूप हैं. सो दोउनकों समप्रीति सदाकी घनी है. सो कोऊक दोष अपराध तें कितनेक भक्त लीला सम्बन्ध में तें मित्र - भावके बिछुरे हे, ता समै के ये दोउ बिछुरे हैं. ता पाछें तो अनेक जन्म भए. सो कहां लों कहिए ? परि ये पूर्वजन्ममें दोउ पूरव दिशामें कान्यकुब्ज गाम है, तहां ब्राह्मन स्त्री - पुरुष दोउ जनें हुते. सो भगवत्सेवा करत चार प्रहर दिन बीते. और रात्रिमें दोउ जनें भगवद् वार्ता करे. कीर्तन करे. ऐसें स्त्री - पुरुष दोउ जनें करे. परि लौकिक व्यवहार कछू जानें नाहीं. ऐसें जन्म पूरो कियो. परस्पर प्रेम अत्यन्त हो. सो पुरुषकौ अन्त समै आयो तब उन स्त्रीने कह्यो, जो तुम्हारे पीछे हों निर्वाह कैसें करोंगी ? ऐसें कहिकै रोवन लागी. तब उन पुरुषने कह्यो, जो तू ही अन्न त्याग करिकै प्रान त्याग करियो. ता पाछें वाकी

देह छूटी. ताकौ संस्कार कर्यो. पाछें वा स्त्रीने सेवा तो और ब्राह्मनके घर दीनी. और आप तो अन्न त्याग करिकै केतेक दिनमें देह छोरी. सो इन दोउनकी यह गति भई. भगवद्भावकौ अभाव कर्यो तातें ऐसो भयो. अब इनकों कछू दोष बाधक नाहीं. लीलामें पहोंचे. सो वह पटेलकौ बेटा और पटवारीकी बेटी दोउ श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय भए. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए.

भावप्रकाश :
या वार्तामें यह जतायो, जो भगवत्सेवा सर्वोपरि पदार्थ हैं. तातें लौकिक प्रीति करि सेवा छोरत हैं ताकी यह गति होत हैं. तासों वैष्णवकों विचारिकै चलनो. वार्ता ॥६१॥

६२-एक राजा भवैयावाला

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक राजा, गुजरातकौ, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'रास - रसिका' है. सो रास - रसिका प्रभुनके रासादि लीलानके ध्यानमें सदा निमग्न रहति हैं. ये 'कलहंसी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

सो एक समै श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी श्रीरनछोरजीके दरसनकों पधारे. सो मार्गमें या राजाकौ गाम आयो. तहां डेरा किये. तब राजासों काहूने कही, जो आज तो एक महापुरुष अपने गामके बाहिर डेरा किये हैं. सो उनकौ तेज - प्रताप बोहोत हैं. उनके साथ बोहोतसे मनुष्य हू हैं. सो इनके दरसनकों गामके लोग - लुगाई सब जात हैं. ये बड़े सिद्ध कहावत हैं. तब राजाने कही, जो हम हू उनके दरसनकों चलेंगे. सो राजा बोहोत से मनुष्यनकों साथ लै श्रीगुसांईजीके दरसनकों आयो. सो ता समै श्रीगुसांईजी आप सन्ध्यावन्दन करत हे. सो राजाकों ऐसें दरसन भए मानो साक्षात् तेजःपुञ्ज अग्नि होंई. तब राजा

दण्डवत् करि बिनती कियो, जो महाराज ! कृपा करि मोकों अपुनो सेवक कीजिये. हों आपकौ दास हूं. तब श्रीगुसांईजी राजाकी दीनता देखि प्रसन्न भए. पाछें राजाकों नाम सुनायो. ता पाछें राजाने बिनती करी, जो महाराज ! कृपा करि मेरे घर पधारिये. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो हम काल्हि तेरे इहां आवेंगे. ता समै चाचा हरिवंशजी साथ हे. सो राजाने उनसों पूछी, जो मोकों श्रीगुसांईजीकौ स्वरूप मार्गकौ स्वरूप कृपा करिकै समुझाइए. तब चाचाजीने श्रीगुसांईजीकौ स्वरूप, मार्गकौ स्वरूप सब आछी भांतिसों समुझायो. ता पाछें राजाने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! मोकों निवेदन कराई भगवत्सेवा पधराय दीजिये. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो आज तुम ब्रत करो. और काल्हि तुमकों निवेदन करावेंगे. तब भगवत्सेवा हू पधराय देंगे. पाछें दूसरे दिन राजाने श्रीगुसांईजीकों अपने घर पधराए. तब राजा सहकुटुम्ब श्रीगुसांईजीके सरनि आयो. निवेदन पायो. पाछें राजाकों श्रीगुसांईजी एक लालाजीकौ स्वरूप पधराय दियो. सो राजाके आग्रह सों श्रीगुसांईजी आप उनके घर तीन दिन बिराजे. सो श्रीगुसांईजी आप श्रीठाकुरजीकी सेवा किये. पाछें सब रीति भांति, मानसी प्रकार आदि सब राजाकों सिखाये. ता पाछें राजासों बिदा होंइ श्रीगुसांईजी तो आप द्वारकाजी पधारे. ता दिन तें श्रीगुसांईजीकी कृपासों राजाके हृदयमें भगवत्स्वरूप लीला सहित आय बिराज्यो. सो राजा वा रसमें छक्यो रहतो. पाछें राजकाज सब दीवानकों सोंप्यो. आप काहूसों विशेष बोले हू नाहीं भगवन् नामकौ उच्चारन रात दिन करे. लौकिक रङ्गराग सब छोरि दिये.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वह राजा कब हू काहू सों रीझें नाहीं, काहू सों सम्भासन हू करे नाहीं. भली भांतिसों सेवा करे. वैष्णवकों घरमें उतारे. सीधो सामग्री भली भांतिसों देही. आग्रह करिकै घने दिन राखें. ता पाछें चले तब भली भांतिसों बिदाय करे. द्रव्य मांगे ताकों द्रव्य देहि. उद्यम व्यावृत्तिकों लगावे. वैष्णवकों आदर सों आसन देइकै बैठावे. आप बैठे भगवद् वार्ता करे. भली भांतिसों वैष्णवकी सेवा करे. द्रव्य और देह अन्य विनियोग न होंन देहि. अन्य कोऊ आवे तासों कार्य प्रमान बोले. मौन साधि रहे. काहू बात सों रीझिकै काहूकों कछू देवे नाहीं.

सो एक भवैया महा चतुर हो. सो सब देसान्तर फिरि रिझाय सबनकों, द्रव्य घनो कमाय ल्यायो. कदाचित् कोऊ काहू बाततें नाहीं रीझे, और कृपा न होई काहूकों कछू देवे नाहीं, ताहूकों यह भवैया रिझावें. और द्रव्य घनो सो लेई. सो सब देस फिरिकै वा राजाके नगरमें

आयो. तब राजद्वार जांइकै राजाके लोग - प्रधाननसों मिल्यो. तब राजाके लोग - प्रधानन सबने वा भवैयासों कह्यो, जो तू या गाममें मति रहे. मति खरच खांय. इहांकौ राजा काहूसों रीझत नाहीं. काहूकों कछू देत नाहीं. ऐसें प्रधानने कह्यो. तब भवैयाने कह्यो, जो काहूकों रीझत नाहीं तो भले. परि हों तो भवैया, जो राजाकों रिझाये बिनु गाम तें जीवत नाहीं जाऊं. इहां बैठ्यो बरस दोइ चारि खरच खाउंगो. और राजाकों रिझाउंगो. एक बेर राजा मेरो ख्याल देखें. ता पाछें देखें कैसें नाहीं रीझत ? और कदाचित् मेरो ख्याल नाहीं देखत तो या गाममें तें जीवत न जाऊंगो. इहां आपघात करिकै मरोंगो. ऐसें निर्द्धार वा भवैयाने कर्यो. ता पाछें एक बार राजद्वारमें फिरि जांइकै उन लोक - प्रधाननसों वह भवैया मिल्यो. और कह्यो, जो तुम्हारे राजासों मेरी बिनती समाचार कहो, जो मेरो ख्याल एक बेर देखे. ता पाछें भले कछू मति दीजो. परि ख्याल भेख सब दिखाए बिनु तो हों जाऊंगो नाहीं. ऐसें निर्द्धार करिकै वा भवैयाने कही. सो वह खवास - प्रधान सब समाचार राजासों जांइ कहे. परि राजा उत्तर न देहि, बोले हू नाहीं. ऐसें करत एक वर्ष बीत्यो. सो और देस कमायकै ल्यायो हतो सो सब खायो. और बनियाकी हाट तें उचापति करिकै सो खांड़ रुपैया खांये. खरच भारी हो. गाड़ी घोड़ा मनुष्य घने सङ्ग हुते. ता पाछें एक दिना जांइकै भवैया राजद्वार लांघवेकों बैठ्यो. वस्त्र सब जराय दिये. और सब कोऊ समुझावें परि वह भवैया माने नाहीं. कहे, जो कै तो राजा राजसभा करिकै मेरो ख्याल देखे. ता पाछें भले मोकों कछू मति दीजियो, नांतरु मैं मरोंगो. तब राजाके माथें हत्या देउंगो. तब हों जलपान करोंगो. ऐसें करत दिन तीन चारि बीते. तब प्रधाननें जांइकै राजासों बिनती करिकै कह्यो, जो साहिब ! वह भवैया अपने द्वार आयकै बैठ्यो है. वस्त्र सब जराय दीने. पानी नाहीं पीवत. दिन चारि बीतें वासों हम घनो समुझायो परि वह भवैया मानें नाहीं. हठमें पर्यो है. वह कहत है, जो मैं सब देसान्तरकी कमाई खाई. और बनियाकौ रिन करिकै खायो है. तातें राजा एक दिन मेरो ख्याल देखें, नांतरु मैं मरोंगो. देह त्याग करोंगो. तातें आप एक दिन सभामें आयकै बैठो. ता पाछें हम गामके देसाई लोग और साह लोग सबकों बुलावेंगे. सो सबन पास वाकों द्रव्य दिवावेंगे. ता पाछें तुम्हारी इच्छा मानेसो दीजियो. ऐसी घनी - घनी प्रधानने बात कही. तब राजाने सभामें बैठिकै कही, जो भले, सभामें बैठेंगे. ता पाछें प्रधानने भवैयासों बुलायकै कही, जो हम तेरे लिये राजासों घनो कह्यो है. सो रात्रिकों तुम्हारो ख्याल देखेंगे. तातें तुम अपने डेरा जाऊं. जें कै कछु खांयकै ता पाछें गामके पटेल पटवारी और सब लोग साहूकार सबकों बुलावेंगे. तुम्हारो सब साजि लै कै आईयो. ऐसें कहिकै वाकों उठायो. ता पाछें रात्रिकों सब सभा भेली भई. तब राजा खांयकै बैठ्यो. ता पाछें गामके पटेल पटवारी और सब लोक साहूकार सब बुलवाये. ता पाछें वह, भवैया सब अपनो सब साज लै कै

आयो. तब उन ख्याल रच्यो. सो वह भवैया ख्याल घने - घने वेस ल्यायो. तमासो आछौ कियो और आछौ गायो. जो - जो स्वाङ्ग करतो तथा ख्याल करतो सो सब कियो. कसर कछू राखी नाहीं. परि राजा तो नीचो माथो करिकै बैठ्यो. सो उंचो देखे नाहीं. ऐसें साहूकारकौ ख्याल रच्यो. सो रात्रि घरी चार - पांच रही तब लों वह भवैया सब पचिहारे. परि राजा तो रीझत नाहीं. तब उन भवैयाने अपने - अपने मनमें विचार्यो, अब कहा उपाय कीजे ? रात्रि तो थोरीसी रही. और राजा तो रीझत नाहीं. तातें सवारो होइगो तब सभा सब उठिकै जांइगी. तब मेरो प्रन वृथा होइगो. तब मोकों मरनो परेगो. और मेरी अपकीर्ति होइगी. तातें अब कहा उपाय कीजे ? ऐसें मनमें सोच करन लाग्यो. ता पाछें विचार्यो, जो राजाके खवाससों पूछिये, जो तुम्हारो राजा कौन बात सों रीझत हैं ? ऐसें विचारिकै वा भवैयानें राजाके खवासकों सेन करिकै बुलायो. ता पाछें एकान्त स्थलमें जांइकै वासों पूछ्यो, जो तुम्हारो राजा कौन बातसों रीझत हैं ? देखो, तुम हम सब पचिहारे चारि प्रहर रात्रि, परि राजा उंचो देखत नाहीं, तातें अब कहा कीजे ? मैंनें तो ऐसो प्रन कर्यो है, सन्मुख देखि प्रतिज्ञा करी है, जो राजाकों रिझाये बिनु या गाममें तें जीवत नाहीं जानो. सो अब राजा तो रीझत नाहीं, तातें अब कहा कीजे ? कौन उपाय कीजे ? सो तुम बतावो. जो कदाचित् राजा रीझे और हमकों कछू देही तो हम आधो भाग तुमकों देहिंगे. ऐसें हमारो बचन है. परि मेरो जीवन बचे. नांतर मेरो मरन है. तब वा खवासने वा भवैयासों कह्यो, जो हमारो राजा तो एक वैष्णव बिनु और बातसों रीझत नाहीं. तातें तुम वैष्णवकौ भेख ल्याउ तो राजा तुरत रीझे. ऐसें कहिकै राजाने वा भवैयाकों सब वैष्णवके लच्छन सिखाय कहे. तब जैसें खवासने बतायो तैसें भेख वैष्णवकौ वा भवैयाने कर्यो. तब ता पाछें भेख सिद्ध भयो. तब सभामें आयो. तब सब सभा तथा राजासों 'जयश्रीकृष्ण' कर्यो. हाथ जोरें. इतने ही सुनिकै राजा उठि ठाड़ो भयो. और वा भवैयाकों देखिकै जांइकै मिल्यो, भेट्यो. हाथ पकरिकै अपनी गादी ऊपर ल्यायकै बैठार्यो. आगें हाथ जोरिकै ठाढ़ो भयो. तब राजाने पांचो वस्त्र नवीन उंचे मंगायकै वाकों पहिराये. और कङ्कन, कुण्डल, मुद्रिका, पोहोंची, चौकी तथा मुक्ताहार, कञ्चनहार, कण्ठसरी, सिरपेच, जराउ, ऐसें सब सिंगार सो पहिरायो. और घोड़ा, एक रथ, एक सुखपाल, एक खासा साज संयुक्त दिये. और एक बड़ो गाम दियो. एक सहस्त्र रुपैया दीने. और सबनकों यथासक्ति सीधो दीनो. पाछें कह्यो, जो मोकों कछू और हू आज्ञा देउ. सो जैसें सेवा कहिये तैसें करों. ऐसें हाथ जोर्यो रह्यो.

भाव प्रकाश :

यहां यह बड़ो सन्देह है, जो वा भवैयाने वैष्णवकौ भेख राजाकों रिझायवेकों, दिखायवेकों लियो है, कछू सांचो तो है नाहीं. राजा हू या बातकों जानत हैं. तोउ ऐसो आदर राजा कैसें कियो ? और भगवद् विनियोगकी सब वस्तू सोनाके कुण्डल आदि या भवैयाकों कैसें दियो ? तहां कहत हैं, जो वैष्णवकौ वेष है वह भगवत्स्वरूप है. जा भांति राजाकौ सिपाही राज्यकौ वेष धारन करत हैं, तब राजा हू वाकों मानत है. और वा राजाकी प्रजा हू वाकौ आदर करत हैं. तैसें वैष्णव वेष भगवानके पारसदनकौ वेष है. तातें, जो भगवानके सेवक हैं, भगवदीय हैं, वे वा वेषकौ आदर करत हैं, नमन करत हैं, और सत्कार करत हैं. सो राजा वा वेषकों देखत ही ठाड़ो भयो, नमन कियो. कछू भवैयाकौ राजा सत्कार नाहीं कियो. दूसरो अभिप्राय यहू है, जो वा भवैयाकों राजा भेट्यो तब वाकौ स्पर्श भयो. ता स्पर्श करि वामें राजाके हृदयकौ भगवद् भाव आविर्भूत भयो. सो कैसें, जैसें अग्निके परस तें लोहा हू अग्नि होंइ जात है. पारसके परस तें लोहा सोना होंइ जात है. तैसें या भगवदीय राजाके हृदयमें लीला सहित प्रभु बिराजत हैं. सो उनके परस तें वा भवैयाके हृदयमें हू भगवद्भाव आयो. सो वा भगवद् भावकौ राजाने सत्कार कियो, वाकौ सिंगार पहेरायो और नमन आदि कियो. यातें भाव ही मुख्य पदार्थ है. भाव ही तें मूर्तिमें हू भगवानकौ प्रादुर्भाव होत है. सो वह ऐसो पदार्थ है. तातें वैष्णवमें भगवद् भाव राखनो. यासों प्रभु प्रसन्न होत हैं.

पाछें और लोगन और प्रधान और देसाई पटेल उ घनो कछू दीनो. द्रव्य घनो आयो. ता पाछें सवारो भयो. तब वह भवैया वेसें ही वैष्णवके भेखसों ही अपने डेरा गयो. ता पाछें डेरामें जात ही फिरिकै देखे तो पाछें स्त्रीजन चारि जनि भौंडी सी दूरगन्ध सरीरमें आवे ऐसी देखी. तब वा भवैयाने वासों पूछ्यो, जा तुम कौन हो और मेरे पाछें काहेकों आवति हो ? तब उन स्त्रीनें कह्यो, जो हम चारि हत्या हैं. सो तेरे सरीरमें रहति हैं. एक गौहत्या, एक ब्राह्मन हत्या, एक स्त्री हत्या, एक बालक हत्या ऐसें चारजनी हैं. सो तैनें वैष्णवकौ वेस लियो है तातें हम बाहिर निकसी हैं. यह वेस उतारेगो तब हम तेरे सरीरमें पीछे प्रवेश करेंगी. तब भवैया कह्यो, जो मैंने तो या जन्ममें काहूकी हत्या करी नाहीं है ? सो तुम यह कहा कहत हो ? तब उन स्त्रीन कह्यो, जो तैंने लोगनकों रिझायवेके तांई इन चारोंनकै भेख आगें किये हे. तब झूठे ही इनकी हत्याकौ स्वाङ्ग हू दिखायो है. सो तोकों इन चारोंनकी हत्या लागी है. वही हम चारों जनी हैं.

भाव प्रकाश :

याकौ आसय यह है, जो धर्मकी सूक्ष्म गति है. काहूकौ मन तें हू अपराध करे तो वाकों दोष लागत है, ऐसें शास्त्रमें कह्यो है. और जो - स्वरूप

बनायकै वाकौ अपराध करे ताकी हत्या लागे तामें तो कहनौ ही कहा है ? याही सों वासुदेवदास छकड़ाकों श्रीआचार्यजी बरजे, जो स्वरूप बनायो वाकों खण्डित नाहीं करनो. प्रतिष्ठा न भई तो कहा भयो ? स्वरूपकी भावना तो कीनी है. तातें वैष्णवकों मनसा, वाचा, कर्मना अपराध तें सदा डरपत रहनो, यह जतायो.

तब भवैया कह्यो, जो कदाचित् यह वेस नाहीं उतारों तो तुम कहा करोंगी ? तब हत्या बोली, जो तब तो हम तेरे पास नाहीं आय सकति. हम और कहूं जांइगी. ता पाछें वह भवैया वैष्णवकौ वेस उतार्यो नाहीं. पाछें वैष्णव भयो.

भाव प्रकाश :
या वार्तामें वैष्णवके वेसकौ माहात्म्य दिखायो. जो वैष्णवकौ वेस ऐसो है, जातें हत्या हू दूरि रहति है. परि मुख्य भाव तो यह है, जो भगवदीय राजाके परस तें हत्या दूरि भई. काहेतें, उनके हृदयमें श्रीआचार्यजी महाप्रभु बिराजत हैं. सो उनके सामने हत्या कैसें रहि सके ? जो रहे तो जरि जांइ. तातें राजाकौ परस होत मात्र वे दूरि निकसि ठाढ़ी भई. और भवैयाकौ हृदय हू शुद्ध भयो. तातें इनकौ वैष्णवताकौ ज्ञान भयो. और ये वैष्णव भयो. तातें भगवदीय वैष्णवसों निष्कपट भाव सों मिलनो, भेंटनो. जातें हृदय शुद्ध होंइ. भगवद् भावकौ सम्बन्ध होंइ. यह सिद्धान्त जतायो.

सो वह राजा श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।६२।।

६३-दया भवैया

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक दयो भवैया, गुजरातमें एक गाममें रहतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :

ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम ''बहुरूपिनी है. सो ये श्रीठाकुरजी और श्रीस्वामिनीजी दोउनकों भांति - भांतिके रूप धारन करि रिझावति हैं. और श्रीठाकुरजी (और) श्रीस्वामिनीजी दोउनकों छद्म कलामें ये सहायक होति हैं. तातें इन पर दोउ स्वरूप प्रसन्न रहति हैं. ये 'कलहंसी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

सो ये गुजरातके एक गाममें एक भवैयाके घर जन्म्यो. सो बालपनेसों नाच, गान, और स्वांगमें निपुन हो. दया भवैया इनकौ नाम है. सो जब ये बड़ो भयो तब भवाई, तमासा करन लाग्यो. पाछें देस - विदेस जान लग्यो. और राजा महाराजा सबकों रिझाय खूब द्रव्य कमायो. पाछें ये वैष्णव भयो सो प्रकार ऊपर कहि आए हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वह भवैया वा राजाके पास आयो. तब राजानें सन्मान करि अपने पास बैठायो. तब वा भवैयाने राजासों एकान्त बैठिकै हत्यानके समाचार कहे. हत्यान कह्यो सो सब कह्यो और दूरि तें हत्या दिखाई. तब राजाने कह्यो, जो वैष्णव धर्म ऐसोई है. ऐसी धारन है. तातें या वैष्णव धर्म तें और सब तुच्छ हैं. या समान और धर्म तो नाहीं. तब वा भवैयाने राजासों कह्यो, जो सो तो सांची बात है. ऐसो दीसत हैं, जो वैष्णवके वेस मात्र तें हत्या निकसिकै न्यारी भई. सो जो कोऊ वैष्णवता जानि निःप्रपञ्च होइ ताकौ कहा कहनो ? ता पाछें वा भवैयानें राजासों फिरि कह्यो, जो अब तुम मोकों कृपा करिकै वैष्णव करो और नाम सुनावो. तब राजाने वा भवैयासों कह्यो, जो तुम्हारो कार्य श्रीगुसांईजी तें होइगो. उनकी कृपा बिनु तो यह भक्तिमार्ग स्फूरत नाहीं. तातें तुम अड़ेल जाऊ. तब वा भवैयाने राजासों कह्यो, जो हमकों श्रीगुसांईजीकों एक बिनती पत्र लिखिकै देउ. तब राजाने भवैयासों कह्यो, जो भले. तब राजानें श्रीगुसांईजीसों बिनती - पत्र लिख्यो. तामें भवैयाके समाचार सब लिखें. ता पाछें वह भवैया अपने स्त्री - पुत्र सब लै कै अड़ेलकों चल्यो. सो थोरेसेक दिनमें उहां जांइ पोहोंच्यो. ता पाछें श्रीगुसांईजीकों दरसन करि दण्डवत् कर्यो. ता पाछें वह राजाकौ पत्र दियो. सो पत्र श्रीगुसांईजीने बांच्यो. ता पाछें भवैयासों सब समाचार पूछें. सो भवैयाने सब समाचार कहे. हत्यान जो कह्यो सो हत्यानकी सब बात कही. ता पाछें श्रीगुसांईजीनें कृपा करिकै वा भवैयाकों नाम सुनायो. ता पाछें व्रत करायकै समर्पन करवायो. पाछें श्रीगुसांईजी भोजनकों पधारे. ता पाछें महाप्रसादकी

पातरि वा भवैयाकों दीनी. वाकी स्त्री - पुत्र सब सेवक भए. पाछें कोईक दिन उहां रहिकै श्रीगुसांईजी पास कथा सुनी. मार्गकी रीति सब श्रीगुसांईजीसों पूछी. सो श्रीगुसांईजीनें सब कृपा करिकै वाकों सुनाई. समझाई, ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार पधारे. सो भवैया हू श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों श्रीनाथजीद्वार श्रीगुसांईजीके साथ चल्यो. सो थोरेसेक दिनमें श्रीनाथजीद्वार जांइकै पहोंच्यो. ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करे, भेंट करी. पाछें ब्रजपरिक्रमा श्रीगुसांईजीके साथ करी. घनो सुख भयो. ता पाछें श्रीगुसांईजीसों बिदा होंइकै श्रीठाकुरजीकी सेवा पधराय अपने देस आयो. सो अपनो घर बेचिकै सब कुटुम्ब लै कै वा राजाके नगरमें जांइकै रह्यो. ता पाछें राजासों मिलि श्रीगुसांईजीके सेवक होंइवेकै सब समाचार कहे. सो राजा बोहोत प्रसन्न भयो. पाछें घर एक रहिवेकों दियो. ता पाछें वह श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लाग्यो. सो सेवासों पहोंचिकै राजा और भवैया दोउ जनें भगवद्वार्ता करते. सो बोहोत आनन्द होतो, सुख होतो. भगवद्रसमें छके रहते. राजा याकी बोहोत कानि राखतो. ता पाछें भवैया हू दया भलो वैष्णव भयो. मार्गकी रीति सब समुझन लाग्यो. श्रीठाकुरजी वासों बोलतें बातें करते. श्रीठाकुरजी वा भवैयाकौ सानुभावता जनावन लागे. सो सब राजाके सङ्ग तें सुख पायो.

भाव प्रकाश :
या वार्तामें यह सिद्धान्त भयो, जो काहू रीतिसों तादृशी वैष्णवकौ सङ्ग करनो. सङ्ग वैष्णवकौ करे तो सब सुख होंइ. मार्गकी रीति हू स्फुरे. सो वैष्णव सिंगाररूप हैं. उनके कहेकौ विश्वास राखनो. तातें श्रीठाकुरजी कृपा करें. या भक्तिमार्ग तादृशीके सङ्ग तें स्फुर्द होत है. तातें और उपाय सब नीचो है. श्रीआचार्यजीके तथा श्रीगुसांईजीके स्वरूपनकौ विचार करे तो सुमति होंइ. ता करि तादृशी वैष्णवकी सङ्गति मिले विश्वास आवे.

सो वह भवैया श्रीगुसांईजीकौ ऐसो टेककौ कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।६३।।

६४-एक कुनबी, जिसकी धोवतीके छींटासे कोढ़ मिटा

अब श्रीगुसांईजीके सेवक एक पटेल कुनबी, गुजरातकौ बासी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम ‘उजियारी’ है. ये ‘माधवी’ तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
एक समै श्रीगुसांईजी आप गुजरात पधारे हे. तब यह कुनबी सरनि आयो हो. सो याकौ बोहोत सरल भाव हतो. तादृशी वैष्णव और स्वमार्गीय वैष्णव पर याकौ बोहोत स्नेह हतो. सो एक बार गुजरात सों चाचा हरिवंशजीके सङ्ग यह कुनबी वैष्णव श्रीगुसांईजीके दरसनकों श्रीगोकुल जात हतो. सो मार्गमें एक गाममें डेरा कर्यो हतो. सो तहां नदी पै न्हात हतो. तब तहां थोरीसी दूरि पर एक ब्राह्मनकी स्त्रीकों गलित कोढ़ निकस्यो हतो. सो वाके कीड़ा परि गए हुते. सो दुःख पावती. सो वाके एक पुत्र हतो. सो नदी पर आइकै वाकों धोईकै कीड़ा काढ़तो. वाके सरीर में कहूं शुद्ध अङ्ग रह्यो नाहीं. सो वह कुनबी वैष्णव न्हाईकै धोवती पछांटतो हतो. वाकी धोवतीकौ छींटा वा स्त्रीकों लग्यो. सो पांवमें जा ठौर छींटा लग्यो हतो सो वा ठौर छूवत ही शुद्ध भयो. वा छींटाके आसपास एक - एक अङ्गुरिया अङ्ग शुद्ध भयो. तब बाईनें अपने बेटासों कह्यो, जो ए कौन हो ? जो धोवती धोवत हतो ? जो मोकों याकी धोवतीके छींटा लगे ? ऐसें कहत मात्र ही देखें तो वा ठौर चारि अङ्गुरिया शुद्ध भई है. तब फिरिकै अपने बेटासों कह्यो, जो बेटा ! तू देखि, जो जा ठौर याकी धोवतीकौ छींटा लग्यो है, ताके आसपास सरीर नीकौ भयो. तातें तू देखि ये कोन हैं ? तब वा छोराने कह्यो, जो ये तो कोऊ महापुरुष दीसत हैं. जाके धोवतीके छींटा मात्र तें सरीर नीकौ भयो. तब वा बाईने कह्यो, जो याकों कहा कहनो ? ये तो बड़े महापुरुष हैं. तातें तू मोकों इनके पास लै जा. सो वा स्त्रीकों ऐसें छींटा लगत मात्र ही वैष्णवके स्वरूपकौ ज्ञान भयो. ता पाछें वह स्त्री और वाकौ पुत्र दोउ जनें वा वैष्णवके पास आयकै वाके पांवन परे. और वा वैष्णवकों हाथ जोरिकै कह्यो, जो तुम्हारी धोवतीके छींटा मात्रसों देखो मेरे सरीर इतनो नीकौ भयो. ऐसें कहिकै सरीर दिखायो.

भाव प्रकाश :

या वार्तामें यह सन्देह होंइ, जो वैष्णवकी धोवतीके छींटा लगत मात्र तें कोढ़ आछौ भयो ताकौ कहा कारन ? तहां कहत हैं, जो वैष्णवकी धोवती धोये तें हृदय शुद्ध होत है. त्रिविध ताप नास होत हैं. सो रानाव्यासकी वार्तामें आगें कहि आए हैं. तो कोढ़ जांइ तामें कहा कहनो ? और धोवतीके छींटाकौ तो मिष है. परि ये दोउ मा - बेटा दैवी जीव हैं. लीलामें मा कौ नाम 'चन्दन' है और बेटाकौ नाम 'चनौठी' हैं. सो ये दोउ 'उजियारी' की सखी हैं. सो एक समै चन्दनने उजियारीके आगें रूपकौ गर्व कियो. ता अपराध सों ये भूतल पर आई. कोढ़ भयो. और चनौठी हू वा समै बरजी नाहीं. तातें ये हू भूतल पर आई. अनेक जन्म पाए. पाछें भागिजोग तें या प्रकार कुनबी वैष्णवकौ मिलाप भयो. तब धोवतीके छींटाके मिष वाकों वैष्णवके स्वरूपकौ ज्ञान भयो. तब दीनता भई. ता करि अपराधकी निवृत्ति भई.

ता पाछें वा स्त्रीने वैष्णवसों कह्यो, जो हों पीड़ा घनी - घनी भोगत हों. तातें तुम महापुरुष हो. सो तुम कछू ऐसो उपाय करो, जो यह पीड़ा निवृत्त होंई. ऐसें कहि बोहोत बिलबिलायकै रोई. तब वा वैष्णवकों दया आई. तब चाचा हरिवंजीकों यह बात बाईके दुःखकी कही. और कह्यो, जो याकों कछू कृपा कीजें. ता पाछें चाचा हरिवंशजीसों कहिकै वा स्त्रीकों, वाके बेटाकों, नाम दिवायो और श्रीगुसांईजीकौ चरनोदक दियो. और वा बाईसों कह्यो, जो या चरनोदकमें और रज मिलायकै तेरे सरीरकों लगाउ. सो वा बाईकों चरनोदरककौ जल लगत मात्र ही पीड़ा सब निवृत्त भई. और कीड़ा परे हते सो सब मरि गए. वाकों चैन भयो. तब वा बाईने कह्यो, जो अब मैं कहा करों ? तब वा वैष्णवने कह्यो, जो तुम मा - बेटा दोउ जनें हमारे सङ्ग श्रीगुसांईजीके दरसनकों श्रीगोकुल चलो. तब उन मा - बेटाने कह्यो, जो भले. ता पाछें उन मा - बेटाने कछूक गहनो पास हो सो सब बैचिकै खरची करिकै अपनो घर काहू भले मानसकों सोंपिकै ता पाछें मा - बेटा दोउ जनें उन वैष्णवनके सङ्ग श्रीगोकुलकों चले. सो थोरेसेक दिनमें जांइ पहोंचे. तब श्रीगुसांईजीके दरसन करे, दण्डवत् कियो. पाछें श्रीगुसांईजीसों सब समाचार कहे. तब श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो श्रीआचार्यजीकौ बल - प्रताप ऐसोई है. परि वैष्णवके स्वरूपकों जान्यो चाहिए. ता पाछें श्रीगुसांईजी दोउनकों नाम निवेदन करायो. पाछें महाप्रसादकी पातरि धरी. पाछें वा वैष्णवने स्त्रीसों कह्यो, जो श्रीगुसांईजी स्नान करत हैं ता ठौरकौ कीच तेरे सरीरकों लेपन करि. पाछें स्नान करियो. ऐसें नित्य करियो. सो वा स्त्रीने ऐसें ही नित्य कर्यो. ऐसें करत दिन पांच सातमें सरीर नीकौ भयो, सुन्दर. ता पाछें वह मा - बेटा कितनेक दिन तांई श्रीगोकुलमें रहि श्रीगुसांईजीके श्रीमुखकी कथा सुनी. मार्गकी रीति सब सीखी. पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों आए. तब

श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करि मा - बेटा ब्रजकी प्ररिक्रमा करी. ता पाछें श्रीगुसांईजीसों बिदा होंइकै वा वैष्णवके सङ्ग अपने देसकों आए. सो वह मा - बेटा ब्राह्मन भले वैष्णव कृपापात्र भगवदीय भए. सो वा वैष्णव कुनबीकी छींट और सङ्ग तासों भए. वाकौ कौढ़ गयो. तातें ताहसी वैष्णवकी सङ्गति ऐसी है. सो वह कुनबी वैष्णव और वह मा - बेटा ब्राह्मन श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।६४।।

६५-गङ्गाबाई क्षत्राणी महावनकी

अब श्रीगुसांईजीके सेवक गङ्गाबाई क्षत्रानी, वह महावनमें रहती तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :

ये तामस भक्त हैं. लीलामें 'भृङ्गिनी' इनकौ नाम है. ये 'माधवी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं. भृङ्गिनी श्रीठाकुरजीके पाछें - पाछें डोलति हैं. ऐसी इनकी व्यसन अवस्था है. तातें श्रीठाकुरजी इन पर सदा प्रसन्न रहत हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वह गङ्गाबाईकी माता रूपवती बोहोत ही सुन्दर जाकी छांया धरतीमें पर ऐसी हती. और वाके पास द्रव्य हू बोहोत हतो. सो एक समै श्रीगुसांईजी महावनमें पधारे हते. तब एक वैष्णवके घर उतरे. सो वाके निकट वह क्षत्रानी रहति हती. सो वानें श्रीगुसांईजीकों देखे. तब वाकों काम भयो. बोहोत ही आसक्त भई. सो इन श्रीगुसांईजीसों नाम पायो. पाछें नित्य श्रीगसुंईजीको देखे बिनु चैंन न परे. पति सों छिपकै जांई. दरसन करे.

भाव प्रकाश :

सो वह क्षत्रानी लीलामें 'अन्तर्गृहगता' हैं. सो वह श्रीठाकुरजीमें कामबुद्धि राखति ही. सो यहां हू श्रीगुसांईजीमें कामबुद्धि करी.

सो नित्य श्रीगोकुल आवती. श्रीगुसांईजीकों देखिकै निरखिकै अपने घरकों जाती. परि मनमें वाके विषयभाव भयो. तातें नित्य विचारे, जो एकान्त कदाचित् पाउं तो मेरो मनोरथ पूरन होंइ. परि दांव पावे नाहीं. ऐसें केतेक दिन बीते, दांव पावे नाहीं. ता पाछें एक दिना वानें समयो विचारिकै श्रीगुसांईजीके छीवे पधारिवेके पहिले ही आप उहां जांइकै छिपि रही. ता पाछें श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो मेरो मनोरथ पूरन करो. तब श्रीगुसांईजीने नाहीं करी. और कह्यो, जो या बातमें हम नाहीं हैं. ता पाछें वा क्षत्रानीने घनो आग्रह कियो. तोउ श्रीगुसांईजीने नाहीं करी. और कह्यो, जो या बातमें हठ मति करि. नहीं तो तेरो बूरो होइगो.

भाव प्रकाश :
काहेतें, जद्यपि श्रीगुसांईजी आप पूरन पुरुषोत्तम हैं. परि आप आचार्यरूप धारन कियो है. तातें आप शास्त्रनकी मर्यादाकौ पालन करत हैं. सो शास्त्रनमें परस्त्री - गमन निषिद्ध है. और दूसरो अभिप्राय यह है, जो भक्तिमार्गमें काब बाधक है. काहेतें, जो विषयसों आक्रान्त जीवनके हृदयमें प्रभुनकौ आवेस सर्वथा होत नाहीं. तातें श्रीआचार्यजी 'सन्यासनिर्णय' ग्रन्थमें कहत हैं. सो श्लोक

विषयाक्रान्तदेहानां नावेशः सर्वदा हरेः ।।

सो या प्रकार भक्तिमार्गमें कामकों बाधक कह्यो है. सो आप तो भक्तिमार्गकी मर्यादाके रक्षक हैं. तातें मर्यादा विरुद्ध कार्य कैसें करे ? तासों या प्रकार कह्यो.

और लीलाके भावमें हू देखें तो प्रभुकी इच्छा होंइ तब अन्तर्गृहगतानके साथ प्रभु रमन करत हैं. सो अन्तर्गृहगता स्वतन्त्र भक्त नाहीं है. जासों उनकी इच्छानके अनुसार प्रभु उनकों सुख देत नाहीं. काहेतें, उन जार - भाव करि प्रभुनकौ भजन कियो. तातें सायुज्य प्राप्त भई. तब उनकी स्थिति प्रभुनके हृदयमें

भई. तातें जब प्रभु विचारें, जो अब या सम इन भक्तनकों स्वरूपानन्दकौ अनुभव बाह्य रीतिसों करावनो है, तब उनकों प्रभु आप हृदयमें तें बाहिर काढत हैं. और तिनसों प्रभु आप अपनी इच्छासों रमन करत हैं. सो इहां वा क्षत्रानीने अपनो मनोरथ कियो. सो प्रभुनने नाहीं करी. काहेतें, यह कार्य सायुज्य मुक्तिवारे भक्तनकी मर्यादासों विरुद्ध है. या प्रकार श्रीगुसांईजी नाहीं किये.

तब वानें श्रीगुसांईजीसों दीनता करि कह्यो, जो महाराज ! आप प्रभु हो बड़े हो. मेरो मनोरथ पूरन न करो तो और कौन करेगो ? ईश्वरकों तो दासकौ मनोरथ पूरन कर्यो चहिए. ऐसें बोहोत ही दीन अस्तुति - बचन कहे. चरनारविन्द पर माथो मेलिकै रही. और कह्यो, मेरो मनोरथ आप सों निरूपन कर्यो है. ता पाछें आप प्रभु हो अपनी ओर देखिकै भावें सो करो. हों तो आपकी सरनि आई हों. तब ऐसी दीनता सुनिकै श्रीगुसांईजी आप कहे, जो तू अब तो घर जा. तेरो मनोरथ तेरे घर बैठे ही पूरन होइगो, ऐसो मेरो बचन है. तातें तू अब तो अपने घरकों जा.

भाव प्रकाश :
यामें यह जतायो, जो अब क्षत्रानीने श्रीगुसांईजीकों प्रभु जानें. काहेतें, दीन बचन कहि सरनि मार्गकौ ग्रहन कियो. जार - भाव काम - बुद्धि गौन भई. तब श्रीगुसांईजी आप भक्तिमार्गकी, सरनमार्गकी मर्यादा राखनकों ऐसें बचन कहे, जामें शास्त्रनकी मर्यादा, लीलानकी मर्यादा दोउ रहे. तातें भक्तकौ मनोरथ पूरन करिवेकौ बचन दिये. सो प्रभु गीताजीमें कहे हैं, सो श्लोक

''ये यथा मां प्रपद्यन्ते तां स्तथैव भजाम्यहम्''

यामें यह जतायो, जो कोऊ मोकों जा भाव करि भजत है, ताकों मैं हू ता भाव करि भजत हूं. सो यह भक्तिमार्गकी रीति है. तातें श्रीगुसांईजी आप वा बचनकौ प्रतिपालन करत है. सो नन्ददासजी गाए हैं. सो पद

राग : सारङ्ग

जयति रुक्मिनिनाथ पद्मावती - प्रानपति विप्रकुल - छत्र आनन्दकारी ।
दीप बल्लभवंस जगत निस्तम करन कोटि उडुराज सम तापहारी.
जयति भक्तजन - पति पतित पावन करन कामीजन कामना पूरनचारी ।
मुक्ति - काङ्क्षीय जन भक्तिदायक प्रभु सकल सामर्थ्य गुन गनन भारी ।
जयति सकल तीरथ फलित नाम स्मरन मात्र बास ब्रज नित्य गोकुल बिहारी ।
'नन्ददासनि' नाथ पिता गिरिधर आदि प्रकट अवतार गिरिराजधारी ।।

सो या पदमें नन्ददासजी कहे हैं, जो 'कामीजन कामना पूरनचारी''. तातें जो जैसी कामना करत है ताकों प्रभु आप ता रीतिसों पूरन करत हैं. याहीतें श्रीगुसांईजी आप वा क्षत्रानीकों कहे, जो ''तेरो मनोरथ तेरे घर बैठे ही पूरन होइगो''. काहेतें ? आप पूरन पुरुषोत्तम है, सर्व सामर्थ्र्ययुक्त हैं.

पाछें वह क्षत्रानी अपने घरकों आज्ञा मांगिकै जात भई. ता पाछें वह क्षत्रानी एक दिन सोवत हुती. तब रात्रि सोवत तें स्वप्नमें उन जान्यो, जो श्रीगुसांईजीसों मेरो सङ्ग भयो. ता पाछें वाकों ताही दिनसों गर्भ स्थिति भई. पाछें गर्भके दिन पूरन भए तब वा क्षत्रानीकों बेटी जन्मी. सो महारूपकी रासि भई. ता पाछें वाकौ नाम गङ्गाबाई धर्यो.

भाव प्रकाश :
इहां यह सन्देह होंइ, जो स्वप्नमें सङ्ग होंइ तातें गर्भ कैसें रहे ? तहां कहत हैं, जो शास्त्रनमें सृष्टि चार प्रकारकी कही हैं. स्वेदज, अण्डज, वीर्यज और स्वप्नसृष्टि. तातें स्वप्न हू के सङ्ग तें सृष्टि होत हैं. तामें आश्चर्य नाहीं. और श्रीगुसांईजी आप पूरन पुरुषोत्तम हैं. सर्व सामर्थ्र्ययुक्त हैं. तातें या प्रकार स्वप्न द्वारा वाकौ मनोरथ पूरन कियो. जामें आचार्य - मर्यादा भक्ति - मर्यादा दोउ रही.

पाछें वह कन्या कछूक बड़ी भई. तब श्रीगुसांईजी पास नाम निवेदन करवायो. पाछें इन श्रीठाकुरजीकी सेवा पधराई. सो भली वैष्णव कृपापात्र भगवदीय भई. ता पाछें केतेक दिनमें गङ्गाबाईके माता - पिता मरि गए. तब वह घरमें इकली रही. सो नित्य श्रीठाकुरजीकी सेवासों पहोंचिकै पाछें सन्ध्या समै वहां तें चले. सो श्रीगुसांईजी पास श्रीगोकुल आवें. सो रात्रिकों श्रीगुसांईजी याकों श्रीसुबोधिनीजी श्रीभागवत कहते. सो वह सुनती. ता पाछें तत्काल गङ्गाबाई वाही भावके कीर्तन करि श्रीगुसांईजीकों सुनावती. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी गङ्गाबाईकी उपर बोहोत ही प्रसन्न रहतें. ता पाछें गङ्गाबाई रात्रिकों वहांई सोवती. पाछें सवारे उठिकै श्रीयमुनाजीमें स्नान करिकै श्रीगुसांईजीकों दरसन दण्डवत् करिकै, श्रीगुसांईजीकी सेवा करिकै श्रीठाकुरजीके दरसन करिकै सब वैष्णवनकों भगवत्स्मरन करें, पाछें महावन जांई. पाछें श्रीठाकुरजीकों जगाय भोग धरे, सिंगार करें, रसोई करें. ता पाछें श्रीठाकुरजीकों राजभोग धरे. समै भए भोग सराय, आर्ति करि अनोसर करे. पाछें वैष्णवनकों बुलायकै महाप्रसाद लिवावें. ऐसें नित्य करें. और कोऊ वैष्णव काहू दिना न मिले तो वा दिना आपु उपवास करें.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
और गङ्गाबाईने 'श्रीविटठल गिरिधरन'की छापके कीर्तन छन्द बोहोत ही किये हैं. और अपने श्रीठाकुरजी तथा श्रीगोवर्द्धननाथजी आप उन तें सानुभाव हते. प्रत्यच्छ बातें करते, बोलते, मांगि लेते, अरोगते, ऐसी कितेक वार्ता हैं. सो श्रीगुसांईजी, तथा और बालक बहू - बेटी, गङ्गाबाईकी घनी कानि राखते.

भावप्रकाश :
सो गङ्गाबाई सौ बरस उपर पांच च्यारि अधिक लों भूतल पें रही. सो एक दिन पात्साहकौ उपद्रव घनो भयो. श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीगिरिराज पर्वतसों उठे. और श्रीठाकुरजी हू श्रीगोकुलतें उठे. सो मेवाड़में आए. ता समैं गङ्गाबाई साथ हुती. सो मारवाड़में 'रूपनगर' कृष्णगढ़ आए. तब उहां तें आगेंकों चलें. तब थोरीसी दूरि मार्गमें श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ रथ अटक्यो. सो आगें चले नाहीं. सो श्रीगुसांईजीके बालक तथा वैष्णव घने ही पचिहारे. परि रथ सरके नाहीं. तब गङ्गाबाईकी गाड़ी पाछें हुती. तब काहू बालक कह्यो, जो गङ्गाबाईकों बुलाउ, जो लरिकाकों समुझावें. ता पाछें गङ्गाबाई आई. तब रथके टेरा दूरि करिकै

श्रीगोवर्द्धननाथजीके कानमें कह्यो, जो तेरे मनमें कहा है ? यहां सगरेकौ मूड कटावनो है ? पृथ्वीपति असुरनकी फोजें पाछें चली आवत हैं. और तुम तो हठ लै कै बठे हो. सो आगें चलत क्यों नाहीं ? ऐसें समुझायकै कह्यो. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कह्यो, जो मोकों कमल मंगाइ देउ, तो रथ चले. तब गङ्गाबाई कह्यो, जो इहां कमल कहां है ? तब श्रीनाथजीने कह्यो, जो या पर्वतके पीछे तलाव है. तहां कमल बोहोत हैं. सो मोकों मंगाय देहु. तब गङ्गाबाईनें सब बालकनसों कह्यो, जो लरिकानें कमलके लिये हठ कर्यो है. ताके लिये रथ अटक्यो है. तातें या पर्वतके नीचे एक तलाव है. सो ब्रजबासी दोइ पठवायकै उहां तें कमल मंगावो. ता पाछें पौहों करजी (पुष्करजी) के तलावमें तें ब्रजबासी पठवाइकै कमल मंगायकै गङ्गाबाईकों दिये. सो गङ्गाबाईने कमल लै कै श्रीगोवर्द्धननाथजीकों दीने. और कह्यो, जो बावा ! अब इहां तें बेगि ही चलिए. तब श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ रथ चल्यो. सो जोधपुर आइकै बसे. ता पाछें जोधपुरवारे राजाने घनो आदर सन्मान कर्यो. राखिवेकौ आग्रह बोहोत कियो. परि श्रीगोवर्द्धननाथजी नाहीं रहे. ता पाछें उहां तें चले सो थोरेसेक दिनमें मेवाड़ पधारे. ता पाछें राना उदेपुरवारे साम्हें आइकै पधराइ लै गए. पाछें बोहोत आग्रह करि राखे.

सो गङ्गाबाई श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय ही. तातें इनकी वार्ता बोहोत हैं. सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।६५।।

६६-राजा जोतसिंघ

अब श्रीगुसांईजीके सेवक राजा जोतसिंघ, सो वह दक्षिनमें पंढरपुरके उरें कोस बीस उपर रहतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम ‘कालिन्दी’ है. ये ‘माधवी’ तें प्रगटी हैं, तातें इनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वह राजा प्रथम तो एक ‘रासाई’ देवीकौ उपासक हतो. सो वह देवीकी पूजा करतो. सो बोहोत वैभव संयुक्त करतो. ऐसें बोहोत

दिन बीते. सो वह राजाकौ एक प्रोहित हतो. सो वह कोस पचीस पर एक गाम हतो तहां रहतो. वा प्रोहितके एक बेटा हुतो. सो वह श्रीगुसांईजीकौ सेवक हुतो. परम कृपापात्र वैष्णव हुतो. सो केतेक दिनकों भगवत् इच्छा तें वाकौ पिता मर्यो. ता पाछें केतेक दिनमें भगवत् इच्छा तें वह पुत्र राजापैं आयो. वाकी माताने पठवायो. सो राजाके गाम आय पहोंच्यो. ता पाछें राजाके द्वार गयो. तब राजा देवीके देवालयमें हुतो. सो इनने द्वारपै पूछ्यो. जो राजा कहा करत हैं ? तब द्वारपालने कह्यो, जो राजा तो दैवीके देवालयमें है. वहां तें बोहोत अवेरो आवेगो. और तुम तो ब्राह्मन हो, प्रोहित हो. तुमकों जरूर होंइ तो देवालयमें जाहु. तब वानें मनमें विचारी, जो भलें ! देवालयमें देखों तो खरो, जो कहा दैवत है ? वैभव कहा है ? ऐसें विचारिकै प्रोहितकौ पुत्र देवालयमें गयो. ता समैं राजा देवीकी पूजा करिकै कञ्चन थारमें कपूर धरिकै आर्ति करत हुतो. ता समै अनेक बाजे बाजत हुते. और गन्धर्व गान करत हुते. और सब लोग आर्ति गावत हुते. और देवीकों भूषन वस्त्र उंचे बहु मोलके पहराए हुते. और जड़ाउ सिंघासन धर्यो है. और कञ्चन मनि मुक्तासों देहरो जगमग होंइ रह्यो है. और अनेक वैभवको पार नाहीं, कहां तांई कहिए ? सो वह प्रोहितके बेटाकों सब राजाकौ प्रोहित जानिकै आगें आनि ठाढ़ो कियो. सो देहरीके निकट भीतर आप राजा आर्ति बड़ी बेर लों करत हैं. इतने ही प्रोहितके बेटाने देवीकों देखी. ता समै राजाने आर्ति तो और मनुष्यनकों दीनी. और आपु अनेक बिनती स्तुति करन लाग्यो. और कह्यो, जो हे देवी ! तो समान और दैवत त्रिभुवनमें नाहीं. ऐसें बात - बचन प्रोहितके बेटाने सुनिकै मूड हलायो. तब मूड हलावत राजाने देख्यो. ता पाछें राजा सेवा - पूजा तें पहोंचिकै देहराके द्वारकों तारौ मारिकै अपने घरकों गयो. तब उंचे आसन बैठ्यो. इतने ही प्रोहित - पुत्र आयो. तब राजा प्रोहित जानिकै उठि ठाढ़ो भयो. और आसन दैकै बैठार्यो और पूजा कीनी. आदर बोहोत ही कीनो. ता पाछें वा राजाने वा प्रोहितसों पूछ्यो, जो मेरी बिनती सुनिकै देखिकै तुम मूड काहेकों कहा समुझिकै हलायो ? तब वा प्रोहितने कह्यो, जो यह बात तो न कहोंगो. और कहों तो तुम बुरो मानो. तब राजाने कह्यो, जो यह बात तो सर्वथा कही चहिए. और हों बुरो नाहीं मानोंगो. प्रसन्न होउंगो. मेरो बचन है. तब बोहोत ही आग्रह कीनो. तब वा प्रोहितनें सबकौ दूरि करवाइकै ता पाछें राजा तें कह्यो, जो तुम बिनतीमें कह्यो, जो हे रासई देवी ! तो समान और देवी त्रिभुवनमें नाहीं. तातें मैं मूड हलायो है. ऐसो बचन सुनिकै. काहेतें ? दैवत तो एक त्रिभुवनमें श्रीविटठलनाथजी में हैं, जिनके सेवकके रासाई सारिखी दासी अनेक परी हैं. तब राजाने कह्यो, जो ये कैसें मानों ? तब प्रोहितनें कह्यो, जो तुम पंढरपुर चलो, तो हों दिखाउं. ता पाछें राजा असवारी दल सब साजिकै वा प्रोहितकों सब साथ लै कै पंढरपुरकों चल्यो ! सो पंढरपुर पहोंचे. तब श्रीविटठलनाथजीकौ

दरसन कर्यो. तब राजानें मूड हलायो, जो तुम ऐसी ही बड़ाई करत हो ? कहां मेरी रासाईकौ वैभव और इहां तो उत्तम वस्त्र हू नाहीं. तब वह प्रोहित सुनिकै चुप करि रह्यो. ता पाछें राजा तो मन्दिर बाहिर निकर्यो. तब वा प्रोहित तो पाछें रहिकै श्रीविटठलनाथजी सों कर जोरिकै बिनती करी. जो महाराजाधिराज ! राजाकों वैभव संयुक्त दरसन दीजें. और याकौ सन्देह दूरि करि अङ्गीकार कीजें. ऐसें कहिकै प्रोहित हू राजाके डेरा आयो. सो राजाकौ दल बोहोत हुतो. तातें बाहिर डेरा कीने हुते. तब इतने ही तुरत श्रीविटठलनाथजीने इहां बनमें थोरीसी दूरि एक बड़ो नगर बसायो, अद्भुत सिद्ध कर्यो. और एक गृहस्थ साहूकारकौ भेख करिकै एक सुन्दर सुखपालमें बैठिकै राजा पास मिलिवेकों आए. तब बड़ो प्रताप तेजस्वी पुरुष अलौकिक रूप गुन सील गुनातीत सील सर्वोपरि आभरन भूषित सुन्दर अमूल्य वस्त्र भूषित श्रीमुखकी कांति रविकी समान ऐसो स्वरूप प्रताप देखिकै राजा उठिकै ठाढ़ो भयो. उंचे आसन बैठारे. राजा हाथ जोरिकै सन्मुख बैठ्यो. और प्रोहित हू स्वरूप तेज पहिचानि दण्डवत् करिकै बैठ्यो. पाछें राजाने पूछ्यो, जो आप कहां ? कौन ? कृपा करि कहिये ? तब साहूकारने कह्यो, जो तुम सब हमारे घर पधारो. हमारो मनोरथ है, जो तुम्हारी पहुनाई करें. यों कहि सबनकों नोंते. तब प्रोहितने कह्यो, जो राजा ! सर्वथा इनके घर चलो. उहां तुमकों एक कौतिक दिखाउंगो. ता पाछें राजा सादी असवारीसों उनके साथ चल्यो. सो वा नगरमें सब आए. तब नगरकी सोभा देखिकै घनो प्रसन्न भयो. ता पाछें उन साहूकारने अपने मन्दिरके निकट एक वाड़ो मन्दिर घनो सुन्दर हतो तहां राजाकों बैठारे. सो स्थल और वैभव आसन देखिकै राजा चकित भयो. सो ऐसो अद्भुत कहूं देख्यो नाहीं और सुन्यो नाहीं. ऐसो जो वस्तू और लोक और स्त्री और स्थल सब विचित्र ही हैं. ता पाछें राजा और प्रोहित एक झरोखामें बैठे हैं. सो अनेक सहस्त्र स्त्री घनी सुन्दर सर्व सिंगार आभरन वस्त्र भूषित दिव्य सो हाथन कञ्चन घट लिये जल भरत ही. तब उनमें रासाई हू जल भरिकै आई. सो राजा उनकौ रूप देखिकै चकित होंइ रह्यो. तब वह प्रोहित बोल्यो, जो वह हरी चुनरी वाली स्त्री कौन हैं, तुमने पहिचानी ? तब राजाने कह्यो, जो मैं तो नाहीं पहिचानी. तब प्रोहितने कह्यो, जो तुम चलो, नीचे उतरिकै मार्गमें ठाढ़े रहें ! वे जल भरिकै फिरि आवेगी सो तुमकों दिखाउंगो. तब मार्गमें आइकै राजा और प्राहित दोउ ठाढ़े रहे. इतने ही वह स्त्री सब पाछी जल भरिकै आई. तब सबनकों देखी. पाछें रासाई आई. तब वाकौ पल्ला गहि प्रोहितनें पकरिकै ठाढ़ी करिकै वासों पूछ्यो, जो तुम कौन हो ? और राजाकों दिखाइकै कह्यो, जो याकौ मुख देखि और पहिचानो. तब वह स्त्री हू राजाकों पहिचानिकै लजिजत भई. तब राजाने कह्यो, जो तुम तो रासाई हो, तुम आई कहां तें ? और ये जल कौनकौ भरत हो ? तब रासाई बोली, जो सांची कहूं जो मानो तो. और ये प्रोहित सब

जानत हैं. तातें मिथ्या चले हू नाहीं. ता पाछें रासाई कह्यो, जो यह साह हमारो धनी हैं. हम सब देवी इनके दासनकी दासी हैं. सो आज इनके सम्भ्रम है. सो हम सब जनी जल भरति हैं. और सदैव हम इनकी तथा इनके दासनकी सेवामें रहति हैं. ता पाछें वा प्रोहितनें वाकों छोरि दीनी. पाछें वह जल लै कै गई. इतने ही राजाकों बुलावो आयो. तब राजा तथा प्रोहित और राजाके लोग सबनकों कञ्चनथार बेलामें अनेक साग पाक मनोहर परम सुन्दर भोग विलाससों प्रसाद लिवायो. ऐसें लै कै सब दल मनुष्य और अश्व, गज आदि सब असवारी मात्र, सबनकों एक ही सारिखो प्रसाद लिवायो. घास दानो नाहीं. दानाकी ठौर सबनकों मिष्टान्न पकवान खवायो. यथेष्ट यथारुचिसों. ता पाछें सबनकों सुगन्ध बीरा दिये. ता पाछें राजा बिदा होंईकै अपने डेरा गयो. तब रात्रि भई तब राजा सोई रह्यो. ता पाछें प्रातःकाल उठिकै देखे तो वह नगर हू नाहीं और वहां कछू नाहीं. तब राजाने प्रोहितसों पूछ्यो, यह कहा प्रकार है ? तब प्रोहितने कह्यो, जो हों तुमसों कहत हुतो रासाई देवीकी बात और श्रीविटठलनाथजीकी महिमा. सो तुम प्रत्यच्छ देखी. सो मैं श्रीविटठलनाथजीसों बिनती करी, तातें तुमकों ऐसौ कौतिक दिखायो.

ता समै राजाकौ विरह - ताप भयो और प्रोहितके पांवन परि रह्यो. और कह्यो, जो मोकों वेसें ही स्वरूपके दरसन करावो. तब प्रोहितने कह्यो, जो वह स्वरूप तो अड़ेल जाऊं तब उहां देखो. उहां श्रीविटठलनाथजी अवतार प्रगट भयो है. तातें उहां दीसे. तब राजाकों आतुरता बाढ़ीं. तब उहां तें मजलि चले. सो रात्रि - दिन करिकै थोरेसेक दिनामें अड़ेल जांइ पहोंचे. ता पाछें श्रीगुसांईजीकौ दरसन कर्यो. सो पहिले जैसें वा घरमें देखे वेसें ही स्वरूपकौ दरसन भयो. ता पाछें श्रीगुसांईजीसों प्रोहितने बिनती करी, जो महाराज ! कृपा करिकै राजाकों नाम निवेदन कराईए. ता पाछें श्रीगुसांईजीने राजाकौ नाम निवेदन करायो. पाछें राजाने उहां रहिकै मार्गकी रीति सब सीखी. पाछें श्रीगुसांईजी पास बिदा होत समै राजानें भेंट बोहोत करी. और सेवाकों एक स्वरूप पधरायो. ता पाछें श्रीनाथजीद्वार आयकै श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ दरसन कर्यो. पाछें ब्रज परिक्रमा करिकै एक दिन और रहि अपने देसकों चले. ता पाछें जैसें वा प्रोहितनें कह्यो, ताही रीति सब करन लाग्यो. वे रासाई देवी एक ब्राह्मनकों दीनी और श्रीठाकुरजीकौ स्वरूप श्रीगुसांईजीके पास तें ल्यायो हतो सो मार्गकी रीतिसों उनकी सेवा करन लाग्यो. और प्रोहित मिलिकै सेवा करें. रात्रिमें बैठे दोउ जनें भगवद् वार्ता करें. ऐसें करत श्रीठाकुरजी सानुभावता जतावन लागे, प्रत्यच्छ बोलें, बात करें. ऐसी घनीक बातें हैं. सो सब वह, प्रोहित वैष्णवकी सङ्गतिसों भयो. तातें वह

प्रोहितकी हू राजा बोहोतसी मर्यादा राखतो.

भावप्रकाश :
या वार्तामें यह जतायो, जो वैष्णवनकी सङ्गति ही तें मोक्ष पदार्थ हैं. सो सर्वथा तादृशी वैष्णवनकौ सङ्ग करनो, जातें सब बात स्फुरे. और सब सुख होंई. तादृशी वैष्णवनके प्रभु सर्वथा आधीन रहत हैं. उनकों अनुसरत हैं. तातें उनकी कृपा तें याही देहसों भगवल्लीलाकौ हू अनुभव होत है. और तो कहा कहैं ? नूतन देह हू प्राप्त होत है. तातें सर्वथा ऐसें वैष्णवकौ सङ्ग करनो. सेवा करनी.

सो वे जोतसिंघ राजा श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ? वार्ता ।।६६।।

६७-एक प्रोहित, राजा जोतसिंघका

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक ब्राह्मन प्रोहित, जोतसिंघ राजाकौ, सो पंढरपुर तें कोस पच्चीस पर एक गाम है, तहां रहतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं.

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम ‘सौभाग्य - सुन्दरी’ हैं. ये श्रीयमुनाजीके यूथकी हैं. श्रीयमुनाजीकी आज्ञा पाई, भक्तनके भाग्य - सौभाग्यकों सिद्ध करति हैं. तातें सबकों प्रिय हैं. सो ‘सौभाग्य - सुन्दरी’ ‘हरनी’ तें प्रगटी हैं तातें इनके भावरूप हैं.

ये दक्षिनमें पंढरपुर तें कोस पच्चीस पर एक गाम है तहां एक ब्राह्मन प्रोहितके उहां जन्म्यो. सो वह ब्राह्मन राजा जोतसिंघकौ प्रोहित हतो. सो यह बेटा बरस बाईसकौ भयो तब एक रात्रि इनकों स्वप्न आयो. तामें श्रीविटठलनाथजीके दरसन भए. सो श्रीविटठलनाथजीने वाकों दिव्य ऐश्वर्य सहित दरसन

दिये. पाछें नींद खुली, तब वाकों चटपटी लगी, श्रीविटठलनाथजीके दरसनकी. सो सवेरो होत ही ये पंढरपुरकों चल्यो. सो घरी छहमें पंढरपुर आई पहोंच्यो. तब इन श्रीविटठलनाथजीके दरसन किये. सो स्वप्नकौ वह ऐश्वर्य याकों न दीस्यो. तब तौ ये उदास व्है उहांई बैठि रह्यो. सो यानें दिनभर कछू खायो नाहीं. पानि हू न पियो. बोहोत विरह - ताप कियो. ऐसें करत दिन तीन बीते. तब श्रीविटठलनाथजी या ब्राह्मनकों स्वप्नमें कहे, जो काल्हि अड़ेल तें श्रीगुसांईजी इहां पधारत हैं. उनकी तू सरनि जइयो. तब तोकों मैं मेरे अलौकिक ऐश्वर्यकौ दरसन कराउंगो. तातें तू अब कछू खांइ पी लै. तब या ब्राह्मनने श्रीविटठलनाथजीकी आज्ञा मानि जलपान कियो. पाछें दूसरे दिन श्रीगुसांईजी पंढरपुर पधारे. तब आप श्रीविटठलनाथजीके दरसनकों पधारे. सो या ब्राह्मनकों श्रीगुसांईजी आप श्रीविटठलनाथजीके रूपसों दरसन दिये. तब तो वह ब्राह्मन प्रसन्न व्है बिनती कियो, जो महाराज ! मोकों सरनि लीजिए. तब श्रीगुसांईजी मुसिकाइकै आज्ञा किये, जो ब्राह्मन हम तोकों जानत हैं. श्रीविटठलनाथजी की तो पर कृपा भई है. तातें तू बेगि स्नान करि अपरस ही में आऊं. हम तोकों यहांई सरनि लेइंगे. पाछें डेरा जाईंगे. तब तो ब्राह्मन स्नान करि अपरस ही में आय ठाढ़ौ रह्यो. तब श्रीगुसांईजी आप उनकों नाम - निवेदन करवाए. सो नाम - निवेदन हौत मात्र या ब्राह्मनकों दिव्य दृष्टि प्राप्त भई. सो याकों श्रीविटठलनाथजीके अलौकिक ऐश्वर्यकौ दरसन भयो. पाछें ब्रजलीलाकौ अनुभव होन लाग्यो. तब यह रसमग्न होंइ गयो. तब श्रीगुसांईजी आप या ब्राह्मनकों अपनो चरनोदक दें स्वस्थ कियो. पाछें आप आज्ञा करें, जो ब्राह्मन अब तुम अपने घर जाऊ, वहां तुमकों ऐसोई दरसन नित्य होइगो. सो मानसीमें मगन रहियो. ज्यादा काहूसों बोलियो मति. दैवीजीव जो कोऊ दीसे ताकों उपदेश करियो. और काहूसों कछू व्यवहार राखियो मति. ता पाछें वह ब्राह्मन श्रीगुसांईजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करि बिनती कियो, जो महाराजकी कृपासों यह सुख प्राप्त भयो. नांतरु मैं कछू लाइक नाहीं हतो. सो आप प्रभु हो जैसें आज्ञा करो तैसें करों. पाछें श्रीगुसांईजीकी आज्ञा पाइ यह ब्राह्मन अपने घर गयो. ता पाछें श्रीगुसांईजी उहां ते विजय किये. सो दक्षिन पधारे. पाछें या ब्राह्मनने राजा जोतसिंघकों उपदेश कियो. श्रीविटठलनाथजीके ऐश्वर्यके दरसन करवाई वैष्णव कियो. सो बात उपर कहि आये हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वा राजा जोतसिंघके एक पुत्र भयो. तब छटे दिना छटी, वाके अद्दष्टमें लिखिकै निकसी. तब प्रोहितने छटीकौ पल्लो पकरिकै ठाढ़ी राखी. तब पूछ्यो, जो तैं या राजाके पुत्रके अद्दष्टमें कहा लिख्यो है ? तब छटीनें कह्यो, जो याके राज तो नहीं लिख्यो है. और सिकार करिकै नित्य एक पसु मार लावेगो. ताकों बेचिकै निर्वाह करेगो. ऐसें कहिकै वह छटी गई. ता पाछें वा प्रोहितने सब लिखि राख्यो. पाछें

केतेक दिनकों भगवद् इच्छातें वा राजाकों दूसरो पुत्र भयो. ताके छटीके दिना फेरि उहां जांइकै प्रोहित बैठ्यो, जो फिरिकै छटी आई. सो अदृष्टमें लिखिकै निकसी. तब वा प्रोहितने वाकौ पल्लो पकर्यो. तब फिरिकै कह्यो, जो याके अदृष्टमें कहा लिख्यो है ? तब वा समै छटीने कह्यो, जो याके हू राज नाहीं. और कछू उद्यम कर सके नाहीं. यातें एक बांडीया बलद याके द्वारे सदा रहेगो. सो बलद पर लकरीके भारा लावेगो. सो बेचिकै निर्वाह करेगो. ता पाछें बिधिना तो गई. तब वा प्रोहितने वेहू लिखि राख्यो. ता पाछें केतेक दिनकों राजाके एक बेटी भई. तब फिरिकै बिधिना सों वा प्रोहितने पूछ्यो, जो उहां कहा लिख्यो है ? तब बिधिनाने कह्यो, जो यह वेश्यावृत्ति करेगी. सो एक बिसनी याके आयकै रहे. तामें निर्वाह करेगी. ता पाछें प्रोहितने वेहू दिन लिखि राखे. ऐसें सब बात लिखि राखी.

पाछें भगवद् इच्छा तें वह राजा तो मर्यो. ता पाछें और राजानें वाकौ गाम लूट्यो, मार्यो. सो लोग तो भागे. तब राजाके बेटा बेटी हू भागे. मनमें डरपे, जो मति कोऊ हमकों बन्दीखानेमें रोके. तातें भागे. सो मिलिकै एक सङ्ग हू न भागे. सो कोऊ कित, कोऊ कित ऐसें भागे. सो ये तीन भाई - बहनि हू न्यारे - न्यारे गाममें रहे. सो केतेके दिन पाछें वा प्रोहितके मनमें उनकी आई. जो वे तीन जीव तो दैवी हैं. और वह दुःख पावत होइगें. तातें उनकी खबरि लैते तो भली.

भाव प्रकाश :
काहेतें, वे तीनो लीलामें ‘सौभाग्य सुन्दरी’ की सखी हैं. उनकौ नाम ‘लीला’, ‘बीना’, ‘प्रवीना’ हैं. ये तीनों श्रीयमुनाजीके यूथकी हैं. सो वा प्रोहितकों इनके स्वरूपकौ ज्ञान हैं, तातें दया आई.

ता पाछें वह प्रोहित उहां तें चल्यो. सो जहां वह बड़ो पुत्र रहतो ता गाममें आयो ता पाछें वाके स्थलकों ढूंढ़िकै वाके घर गयो. ता समै वह राजाकौ बेटा सिकार खेलिकै आवत हुतो. सो प्रोहितकों देखिकै मनमें बोहोत ही दुःख करिकै रोयो, और कह्यो, जो मेरी यह अवस्था है. ता पाछें प्रोहितकों आसन पर बैठारिकै आज्ञा मांगिकै सिकार बेचनकों गयो. तब वहां बैचिकै पैसा चारि ल्यायो. सो पैसा प्रोहित आगें धरे और कह्यो, जो हों पैसा ल्यायो हूं. सो सीधो सामग्री ल्याइकै रसोई करिकै भोजन करो. तब प्रोहितने कह्यो, जो यह

पैसा तो तुम लै कै निर्वाह तुम्हारो करो. और मोकों ता काहू बातकी न्यूनता नाहीं. ता पाछें प्रोहितने समाचार सब पूछे. तब वाने समाचार सब कहे, जो नित्य एक सिकार ल्यावत हों. सो बेचिकै पैसा तीन चारि आवत हैं, कबहू दोउ आवत हैं. ऐसें निर्वाह करत हों. तब प्रोहितने कह्यो, जो सवारें तू सिकारकों जांइ तब मोसों कहियो. हों तेरे सङ्ग चलूंगो. और हों कहों ता पर तू चोट करियो. ता पाछें रात्रिकों सोय रहे. तब प्रातःकाल उठिकै प्रोहित हू वाके सङ्ग चल्यो. सो मार्गमें पसु घने - घने मिले. तब प्रोहितकों पूछ्यो, जो इनकों हों मारों ? तब प्रोहितने नाहीं करी. जो कहे, मति मारे. ऐसें करत एक जलकौ बड़ो स्थल हुतो. उहां एक वृक्ष नीचे छांयामें बैठें दोउ. तब वाके मोहोंड़े आगें और पसु आवें. तब वह प्रोहितसों कहे, जो सुनो, याकौ अरध रुपया आवेगो. तब प्रोहितनें नाहीं करी. पाछें घनें - घनें आवें तोउ प्रोहित नाहीं करे. ऐसें करत हस्ती आईवेकी बेर भई. तब दोउ जनें वा रूख पर चढ़िकै बैठें. तब बोहोत हस्ती आए. तब वा प्रोहितनें तामें कौ एक हस्ती दिखायकै कह्यो, जो या हस्तीकों मारि. तब वा रजपूत राजाके पुत्रनें बान चलायो, सो वा हस्तीकों लाग्यो. तब वह हस्ती गिर्यो. ता पाछें और हस्ती तो निकरि गए. पाछें वा रूख पर तें उतरिकै वा प्रोहितने कह्यो, जो याकौ मस्तक चीरिकै याकै मोती लेहु. सो वाने मोती काढ़ि लीने. पाछें मोती लै कै दोउ जनें घर आए. तब प्रोहितने कह्यो, जो अब या मोतिनकों तुम बेचि आओ. रुपैया दस हजार आवे तो दीजो. ता पाछें मोती बेचे. ताके दस हजार रुपैया आए. तब आनिकै प्रोहितके आगें राखे. तब प्रोहितने कह्यो, जो सुनि, यह द्रव्य सुख तें खांइकै आनन्द करो. हमारे तो कछू चहिए नाहीं. तुम तुम्हारे खरचो, खाओ. और ऐसी रीतिकौ हस्ती आवे तब तुम वाकों मारियो. और काहू पसुकों मति मारो. तेरे हाथ मोती आवेगो नाहीं. तातें वाहीकों मारियो. ऐसें कहिके सिखि दीनी. सो वह राजाकौ पुत्र वैसें ही करे. पाछें प्रोहित दिन चारि उहां रह्यो. ता पाछें प्रोहितनें वासों पूछ्यो, जो तेरो छोटो भाई कहां है ? तब वाने ठिकानो बतायो. तब प्रोहित उहां तें बिदा होइकै चल्यो. सो जहां वह राजाकौ पुत्र रहत हतो ता गाममें आयकै वाके स्थल जांइकै, उनकों पूछ्यो. सो वह कहूं गयो हतो, सो वाके द्वारें बैठि रह्यो. ता पाछें केतेक बेरिकों वह लकड़ा बलद पर लादिकै आयो. तब प्रोहितकों देखिकै मनमें खिस्याईकै दुःख पायो. ता पाछें मिल्यो, भेट्यो, कुसल समाचार आपुसमें पूछे. तब वह राजाके पुत्रने समाचार सब कहे, जो एक बांडीया बलद है सो याके उपर काष्ट ल्यायकै बेचिकै निर्वाह करत हों. तब प्रोहितने कह्यो, जा आज तू काष्ट हू बेचियो और बलद हू बेचियो. बलद पाछौ घरकों मति ल्याओ. तब ऐसो सुनिकै वाकों दुःख लाग्यो. तब मनमें बिचार्यो, जो देखो, मेरे अदृष्टकी बात है. अब बलद बेचोंगो तो काल काष्ट काहे पैं लाउंगो ? सो सिर पर लावनो परेगो. बलदके रुपैया कितेक दिन पहोंचेंगे

? और जो कदाचित् प्रोहितकौ कह्यो न मानोंगो तो ये सराप देइगो. तातें सर्वथा बेचनो तो खरो ही. ऐसें बिचारिकै काष्ट और बलद दोउ बेचे. सो बलदके रुपैया बीस आए. और काष्टकौ आधो रुपैया आयो. सो ल्यायकै प्रोहितके आगें राखे. तब प्रोहित कह्यो, जो याकों तुम खरचो, खाओ. हमारे तो काहू बातकी न्यूनता नाहीं. ता पाछें वह रुपैया उनके घर धरे और सीधो सामग्री ल्यायकै रसोई चलती करी. पाछें प्रोहितकों सीधो दैन लागे. तब प्रोहितने नाहीं करी. जो जब तुम राज उपर बैठोगे तब लेहिंगे. अब तो कछू हमारे चहिये नाहीं. काहूकी अपेक्षा नाहीं. तब वाने कह्यो, जो सो बात तो या जन्ममें दीसत नाहीं. तब प्रोहितने कह्यो, जो प्रभुजी सब करन समर्थ हैं. प्रभुकों काहू बातकी न्यूनता नाहीं. तातें काल्हि राज करोगे मनमें विश्वास राखो. ऐसें कह्यो. पाछें सीधो सामग्री ल्यायकै रसोई करिकै ता पाछें सोय रहे. पाछें प्रातःकाल उठिकै मनमें विचार्यो, जो आज माथें काष्ट लावनें परेंगे. बलद तो गयो. ऐसें विचारिकै द्वार खोलिकै जहां नित्य वह बलद बांधतो ताई ठौर पर देखे तो वेसोई बांड़ौ बलद बन्ध्यो है. तब प्रोहितसों पूछ्यो, यह कहा है ? तब प्रोहितने कह्यो, जो तुम कछू चिन्ता मति करो. तेरे द्वारे तें बांडो बलद हटेगो नाहीं. तातें सुखेन काष्ट बलद साथ बैचि. ता पाछें वह काष्ट लेवेकों बलद लै कै चल्यो. सो काष्ट ल्यायकै सुधो बलद हु बेच्यो. पाछें घर आय रुपैया प्रोहितके आगें धरे. तब प्रोहितनें कह्यो जो घरमें धरि. ऐसें प्रोहित दिन चार उहां रहिकै पाछें वाकों पूछ्यो, जो तुम्हारी बहनिकी कहा गति है ? कहां है ? तब वाने कह्यो, जो वे तो अमूके गाममें है, वेश्यावृत्ति करत है. तब वह उहां ते बिदा होंईकै चल्यो सो वह राजकन्याके गाममें आयो. ता पाछें वह प्रोहित वेश्याके घर गयो. तब वह प्रोहितकों देखिकै घनी लजानी. तब प्रोहितने समाधान कियो. तो तुम काहेकों दुःख करत हो ? ये तो भाग्यकी बात है. तुम कहा करो ? कहा चारो हैं ? पाछें वह प्रोहितकों सीधो देन लागी. सो प्रोहितनें नाहीं लीनो. और कह्यो, जो मेरे तो न्यूनता नाहीं. ता पाछें आप अपनी गांठिकौ सीधो ल्यायकै तलाव पर जांइकै स्नान करिकै रसोई करिकै श्रीठाकुरजीकों भोग धरिकै ता पाछें महाप्रसाद लियो. पाछें वा वेश्याके घर आयो. तब पूछ्यो जो तेरो निर्वाह कैसें होत है ? तब वह रोवन लागी. तब रोवत तें प्रोहितने राखी, सावधान किये. पाछें वेश्याने कह्यो, जो कोईक दिन टका, कबहुक दोइ टका, कबहुक चारि टका आवत हैं. तासों देह - निर्वाह करत हों. तब प्रोहितने कह्यो, जो आज कोऊ तेरे आवे तो मोसों पूछिकै वासों संयोग करियो. पहिलें पूछिकै पाछें हामी भरियो. तब संझाकों एक बिसनी आयो. सो टका देन लाग्यो. तब वाने प्रोहितसों पूछ्यो, तब प्रोहितनें नाहीं करी. तब दोइ टका दैन लाग्यो तब फिरिकै प्रोहितसों पूछ्यो. तब हू नाहीं करी. ता पाछें फिरि गयो. पाछें घरी एक पाछें और कोऊ दूसरो बिसनी आयो. सो पावला दैन

लाग्यो. तब प्रोहितसों पूछ्यो. तब हू नाहीं करी. पाछें आधौ देंन लाग्यो. तब हू नाहीं करी. ता पाछें फिरि गयो. ता पाछें घरी एक पाछें और कोऊ तीसरो बिसनी आयो. तब पांच रुपैया लों चढ्यो. तब प्रोहितसों पूछ्यो, तब हू नाहीं करी. ता पाछें रुपैया दस दैन लाग्यो. तब वानें प्रोहितसों समझायकै पांवन परिकै कह्यो, जो दस रुपैया आवत हैं. सो तो मैं कबहू देखे हु नाहीं. आज तुम्हारे प्रतापसों आवत हैं. मेरे दोइ चारि महिनाकी खरची आवत है, तातें तुम आज्ञा देउ. तब प्रोहितनें कह्यो, काहेकों उतावलि करति हैं ? आज तेरे लक्ष रुपैया आवेंगे. और तोकों कोऊ कछू कहैं परि माने मति. जब कोऊ लक्ष रुपैया देहि तब वासों संयोग करियो. ता पाछें वह मनमें खेद करन लागी. जो लक्ष्य रुपैया मोकों कौन देवेगो ? और यह कहांते आयो है ? ऐसें विचारे. इतने ही और एक, एक सौ रुपैया दैन लाग्यो. तब हू प्रोहितनें नाहीं करी. ता पाछें और कोऊ आयो वह सहस्त्र पर्यन्त दैन लाग्यो. परि वह प्रोहितनें नाही करी. ता पाछें मध्य रात्रिकों एक जनो आयो. सो दस सहस्त्र दैन लाग्यो. तब हू प्रोहितनें नाहीं करी, ता पाछें वीस पचीस सहस्त्र पर्यन्त चढ्यो, परि नाहीं करी. ऐसें करत रात्रि प्रहर एक रही ता समैं एक बिसनी बड़ो राजा आइकै अर्ध लाख दैन लाग्यो. तबहू नाहीं करी. पाछें चढत - चढत लक्ष रुपैया आनिकै दीनें. तब प्रोहितसों पूछ्यो, जो आज्ञा होइ तो संयोग करो, लक्ष देत है. तब प्रोहितने कह्यो, जो तू कैसें अविश्वास करत ही ? जो इतने रुपैया कौन देगो ? सो अब दीनेकै नाहीं ? तातें धीरज राखें तो सब कछू होंइ, परि विश्वास चाहिये. भलें, अब तो तेरे घरमें तो काहू बातकौ सञ्कोच नाहीं. परि रुपैया लक्षमें एक हू न्यून मति लेई. कोऊ कछू समुझावें तो मानें मति. रुपैया लक्ष दै वाकौ सङ्ग करि. ता पाछें वह नित्य ही ऐसें करन लागी. जो कोऊ लक्ष दै ताकौ सङ्ग करे. सो नित्य पीछली रात्रि ताहीकों उन कोऊ आइकै रहे. ता पाछें प्रोहित दिन आठ दस लगि उहां रहिकै ता पाछें गाड़ी एक मोल लीनी. मनुष्य दोइ चारि चाकर राखे. ता पाछें वा स्त्रीकों गाड़ीमैं बैठारिकै पाछें उहां तें चले. सो या बांडीया बलदवारे राजाकौ पुत्र हतो ता गाममें आये. ता पाछें वह भाई - बहनि प्रोहित मिले. तब वाहूकी गांठि द्रव्य थोरोसो भयो हो. सो उहां तें वा पास हू एक गाड़ी मोल तीन बलद लीने. ता पाछें उहां तें चले. सो इनकौ बड़ो भाई रहतो ता गाममें आये. ता पाछें वाके हू पास द्रव्य घनो भयो. तब अश्वगज, मोल लीने. पाछें असवार मनुष्य बोहोत चाकर मोल राखे. और अपने देसकों चले. तब बड़ो भाई और प्रोहित दोउ जनें हाथी उपर अम्बारीमें बैठे. और छोटो भाई घोड़ापैं असवार भयो. और वह उनकी बहनि, सो सुखपालमें बैठी. ऐसें राजनीतिसों चले. तब मार्गमें बिधिना देवी एक डोकरीकौ स्वरूप धरिकै पांवन सूंडमें होंइकै इतकों निकसी. सो महावत बरजे. जो अरी डोकरी ? तू मरेगी, कौन है ? इतकी उत पांवन सूंडमें काहेकों फिर्यो करति है ? डरपत

नाहीं ? इतकी उत फिर्यो करे है ? पाछें महावतने प्रोहितसों कह्यो, जो सुनोजी साहिब ! यह डोकरी न जानें कौन है ? सो मरिवे तें डरपत नाहीं. यह मरिवेकों ही कहा आई है ? जो हाथीके पांव सूंडमें होंइकै इतकी उत निकसति है. हों तो घनो बरज्यो परि ये तो सुने नाहीं, उत्तर नाहीं देत, न जाने कहा है ? तब प्रोहितने पहिचानी. तब हाथी ठाड़ो रखायकै वा डोकरीकौ हाथ पकरिकै एक स्थलमें लै जांइकै वासों पूछ्यो, जो ऐसें तू काहेकों करति हैं ? मरिवेकों काहेकों बिचारति हैं ? डरपत नाहीं ? तब छटीने कह्यो, जो हों मरों तो भलो, परि यह आपदा ऐसी हैं. नित्य कहां तांई भुक्तों ? घने - घने कुटिलसों काम परत हैं, परि हों सबनकों सूधे करति हों ? परि तुम मोकों सूधि करी. तासों तुम सो और त्रिभुवनमें नाहीं मिल्यो. तब प्रोहितने कह्यो, जो ऐसी कहा है ? तब बिधिना बोली, जो हों नित्य मोतिनकौ हस्ती कहां तें ल्याउं ? और जो नाहीं ल्याउं तो मेरो लेख मिथ्या होत है. सो त्रिभुवनमें मेरो लिख्यो नाहीं फिरे. मैं लिख्यो, जो एक सिकार याकों नित्य मिलें और पहिलो निसानों बांन वृथा नाहीं जांई. और तुम तो याकों बरज्यो, जो मोतीके हस्ती बिना काहूकों मारे मति. सो नित्य हों कहां तें ल्याउं ? और दूसरेके लिये नित्य बांडौ बलद कहां तें ल्याउं ? और वा स्त्रीके लिये लक्ष रुपैयावारो बिसनी कहां तें ल्याउं ? सो मैं बोहोत हेरान भई हों. तातें तुम हरिजन हो. सो हों, तुम्हारे पांवन परति हों. जो तुम मोकों जीवावो. मो पर कृपा करो. और कोऊ होतो तौ मैं और हू उपाय करती. वाकों दुःखी देती. परि तुम हरिजन हो, तातें मेरी कछू चले नाहीं. सो ऐसी निठुराई मति करो. तातें तुम इनकौ ऐसो नेम छुराइ देउ. तब प्रोहितने कह्यो, जो तू बचन मोसों दै, जो मैं इनकों राज - सिंहासन पर बैठाउं तब तू मेरी आज्ञा तें इनकों राजकाजमें विघन मति करे, सहायता करि. इतनो बचन मेरो माने तो तेरी ये बात हों मानों. वाकौ नेम छुराइ देउ. और तेरो बचन हू सत्य रहे. तब बिधिना ने कह्यो, जो मेरो बचन है. अब इनकों हों राजकाजमें बिघन न करोंगी. और चाहना करिकै राजकाज करोंगी. तब प्रोहितने कह्यो, जो काज करनहारे तो हमारे श्रीगुसांईजी हैं. उनके प्रताप तें सब भलो ही होंइ. ता पाछें बिधिनाकों बिदाय कीनी.

भाव प्रकाश :

या वार्तामें यह सन्देह है, जो या प्रोहितमें अलौकिक सामर्थ्य हती. सो आगें हू राजाकी वार्तामें कहि आए हैं. तातें इननें ये तीनोंनके लेखकों पहिले ही तें क्यों नाहीं मिटाये ? इतनो कष्ट काहेकों पायो ? तहां कहत हैं, जो यह प्रोहितकों प्रभुनकी दीनी सामर्थ्य है. सो चाहे तो विधाताके लेखकों हू मिटाय

सकत हैं. परि भगवद इच्छा बिना यह मर्यादा कैसें मिटाई जांइ ? काहेतें ? यहू प्रभुनकी बांधी मर्यादा है. सो वैष्णव वाकौ लोप कैसें करें ? सो या प्रोहितने मर्यादा हू राखी और अपनी सामर्थ्य हू जताई. सो हरिजनमें यह सामर्थ्य हैं, जो विधाता हू उनके पांय परति हैं. उनके डरपति हैं. और आज्ञा पाइ कार्य करति है. यहू जतायो. सो सूरदासजी गाए हैं. सो पद -

राग : धनाश्री

जाकों नेक स्यामकौ बानों ।
ताके निकट न जांइ जन कोऊ कहा रङ्क कहा रानौ ।
माला कण्ठ तिलक बिराजत अरु चन्दन लपटानौ ।
सङ्ख चक्र गदा पद्म बिराजत सो कहा रहेगो छानौ ।
रविसुत कहत पुकार पुकारी सुनिकै दूत अकुलानो ।
'सूरदास' कहत यह हितकी समज सोच जिय जानो ।

सो प्रभुनके जन तें यम हू डरपत हैं. सो यह ऐसी बात हैं. तातें वैष्णव तें सर्वोपरि कोऊ नाहीं. वैष्णव चाहे सोई करें. तामें आश्चर्य नाहीं. तातें विधाताने हू या प्रोहितके बचन मानें.

पाछें वा प्रोहित राजाके पुत्रसों कह्यो, जो अब कछू पसु - पक्षी मारियो मति. मृतिकाकौ तथा चित्रकौ बनायकै ताकों दूरि धरिकै निसान मारनो. और जीव मति मारनो. पाछें दूसरे पुत्रसों कह्यो, जो आज पाछें बलद मति बेचे, रहन दीजौ. और वा बेटीसों कह्यो, जो आप पाछें लक्ष रुपैयाकौ अटकाव मति करे. जैसें पहिले करती वैसे ही थोरो घनो लै कै सङ्ग करि. परि कोऊ उत्तम बरन उत्तम पुरुष सों सङ्ग करियो. नीच सों मति करे. ऐसें तीनोंनकों समुझायकै कह्यो. पाछें उन दोउनने अपनो देस छुराई, सर करि, राज करन लागे. और जो कछू प्रोहित कहें सोई करे. आज्ञा प्रमान रहे. ता पाछें श्रीगुसांईजीकों प्रोहितने वा गाममें पधराये. तहां ये तीनों जनें श्रीगुसांईजीके सरनि

आय वैष्णव भए. ता पाछें श्रीठाकुरजी पधराय सेवा करन लागे. नीकी भांति सों सेवामार्गकी रीतिसों सेवा करते. जैसें वह प्रोहित आज्ञा करें ताही रीति सेवा करन लागे. ता पाछें रात्रिकों प्रोहित कथा - वार्ता करें, कीर्तन करें. ऐसें करत कछूक दिनमें श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे. ऐसी केतिक बात हैं, सो कहां तांई कहिए ? सो प्रोहितके सङ्ग सों इन तीनोंन पर श्रीठाकुरजी अनुग्रह किये. तातें वैष्णव तादृशीकौ सङ्ग करनो. सो वह प्रोहित श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र वैष्णव हो. उनकी वार्ता कहां तांई कहिए ?
वार्ता ।।६७।।

६८-दोउ विरक्त, एक तादृशी, एक साधारन

अब श्रीगुसांईजीके सेवक दोउ विरक्त, तामें एक तादृशी हतौ, और एक साधारन हतो, सो दोउ सङ्ग रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तादृशी विरक्त सात्त्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'कुञ्जादेवी' है. ये 'हरनी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं. और कुञ्जादेवीकी एक सहचरी हैं ताकौ नाम 'गुञ्जादेवी' है. सो इनकौ वर्ण गुञ्जा फलके समान आरक्त है. ये श्रीचन्द्रावलीजीकी आज्ञाकारिनी हैं.

ये तादृशी गुजरातमें, एक गाममें एक ब्राह्मनके जन्म्यो. सो बालपने सों ही ये साधु - सन्यासीनके सङ्गमें रहे. तातें यह विरक्त - वैरागीकी नांई फिरवो करे. सो इनके मा - बाप इनकों बोहोत बरजे. कहें, जो बेटा अब ही तें तू या प्रकार रहत हैं. सो आगें तेरो ब्याह कैसें होइगो ? जातिके कहा कहेंगे ? तातें तू आछौ पहरि ओढि. आछें मनुष्यके साथ बैठ्यो करि. तब बेटा कह्यो, जो हों तो पूरव जन्मकौ वैरागी हूं. तातें मोतें कोऊ प्रीति करियो मति. हों ब्याह करूंगो नाहीं. और ता पर जो कोऊ मोमें सनेह करेगो वह निश्चय मरेगो. ये मेरो बचन है. सो या प्रकार वह सबनसों कहे. तब तो मा - बाप इनसों बोले नाहीं. जानें, जो ऐसोई लिख्यो होइगो. या प्रकार यह लरिका बरस सोलहकौ भयो. तब एक दिन एक मर्यादामार्गीय वैष्णव वा गाममें आयो. तब यह लरिका वाके पास जांइ कहे, जो मेरे तीर्थ - यात्रा करनी है. तातें जो तुम कृपा करि मोकों अपने सङ्ग लै चलो तो हों आऊं. तब वा

वैष्णवने कह्यो, जो मैं हू तीर्थ - यात्राकों निकस्यो हूं. चारों धामकी यात्रा करूंगो. तेरे चलनो होंइ तो चलि. तब तो यह बोहोत प्रसन्न भयो. पाछें यह वा वैष्णवके साथ घर तें चल्यो. सो मा - बाप जाने नाहीं ता प्रकार चल्यो. पाछें दूसरे दिन मा - बाप जान्यो. तब वाकौ बोहोत ढूंढे. परि पायो नाहीं. सो दुःख पाइकै चुप व्है रहे. और यह लरिका वा वैष्णवके सङ्ग द्वारिकाजी आयो. सो श्रीरनछोरजीके दरसन किये. सो कछूक दिन उहां रहि ता पाछे ये दोउ बदरीकाश्रमकों चले. सो मथुराजी आये. तहां ये दोउ श्रीयमुनाजीमें स्नान किये. पाछें मथुराजीकी सोभा देखि यह लरिका आश्चर्यवन्त व्है रह्यो. तब इन बिचार कियो, जो कछूक दिन मथुराजी रहनो. पाछें गोकुल - बृन्दाबन व्है बदरीकाश्रमकों जानो. तब मर्यादामार्गीय वैष्णवने यासों कह्यो, जो हों तो बदरीकाश्रम जाऊंगो. तेरे चलनो होंइ तो चलि. तब याने कह्यो, जो हों तो अब ही मथुराजीमें रहोंगो. तुम्हारे जानो होंइ तो भलेई जाऊ. तब वह वैष्णव बदरीकाश्रमकों गयो. पाछें यह लरिका कछूक दिन मथुराजीमें केसौरायजीके दरसन कियो. पाछें सब स्थलनके दरसन किये. ता पाछें यह श्रीगोकुलकों चल्यो. सो प्रथम रावलमें आयो. सो भागजोगि तें ता दिन श्रीगुसांईजी रावलमें बिराजत हुते. सो श्रीगुसांईजी श्रीयमुनाजीपै सन्ध्यावन्दन करन पधारे हे. तहां इन श्रीगुसांईजीके दरसन पाये. सो श्रीगुसांईजीकों पल हू पलक मारे बिनु देख्योई करे. काहू सों कछू बोले बतरावे नाहीं. ऐसे घरी एक लों देख्यो कर्यो. सो श्रीगुसांईजीके स्वरूपकौ याकौ ज्ञान भयो. तब श्रीगुसांईजी आप वासों कहे, जो अमूके ! तू कब कौ आयो है ? तब यानें कह्यो, जो महाराजाधिराज ! मोकों तो आये बोहोत दिन भये. परि राजके चरनारविन्द आज पाये हैं. तातें आज हों कृतार्थ भयो. अब कृपा करि बेगि अङ्गीकार कीजिए. नांतरु कहा जानिए, जो कहा होंइ ? यह सरीरकौ कछू भरोंसो नाहीं. या मनकौ हू ठिकानो नाहीं. कहा जानिए घरी पाछें कहा होंई. तातें कृपा करि बेगि सरनि लीजिए. सो या प्रकार श्रीगुसांईजी याकी आर्ति जानि कहें, जो श्रीयमुनाजीमें न्हाइ लेउ. हम तोकों सरनि लै अङ्गीकार करेंगे. पाछें यह श्रीयमुनाजीमें न्हाइ श्रीगुसांईजीके सन्मुख आई ठाड़ो रह्यो. तब श्रीगुसांईजी आप कृपा करि वाकों नाम - निवेदन दै सरनि लिये. पाछें इन श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! अब कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजी आप कृपा करि वासों आज्ञा किये, जो तू 'सन्यासनिर्णय' ग्रन्थकौ पाठ करिवो करि. तातें तोकों यह मार्ग स्फुर्द होइगो. और काहूकौ सङ्ग करे मति. एक ठौर रहे मति. मानसी सेवा कर्यो करि. तातें तोकों सब लीला स्फुरायमान होइगी. ता पाछें श्रीगुसांईजी या वैष्णवकों साथ लै श्रीगोकुलजी पधारे. सो यह वैष्णव श्रीगोकुल आयो. सात स्वरूप सात मन्दिरके दरसन किये. ता पाछें श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मांगि यह वैष्णव श्रीगोवर्द्धनकों चल्यो. सो श्रीगोवर्द्धन आय, श्रीगोपालपुर जांइ श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. सो बोहोत सुख पायो. पाछें ब्रज - परिक्रमा करत ब्रजमें फिरन लाग्यो. एक ठौर रहे नाहीं. सो 'सन्यासनिर्णय' कौ पाठ करिवो करे. और सदा मानसीमें मगन रहे. सो यह तादृशी भयो.

पाछें कछूक दिनमें यह श्रीगोकुल आयो. तब एक और विरक्त श्रीगुसांईजीकौ सेवक इन पास आयो. वह साधारन वैष्णव हतो. परि याकों सत्सङ्गकी आर्ति बोहोत रहे. तासों ये या तादृशी विरक्त पास आई बिनती कियो, जो मोकों कृपा करि तुम अपनी टहलमें राखो तो हों तुम्हारी टहल करों. और तुम्हारे सारिखेनकौ सङ्ग हू मिले. तब यह तादृशी वैष्णव कहे, जो श्रीगुसांईजीकी आज्ञा काहूकौ सङ्ग करिवेकी नाहीं है. तातें हों काहूकों अपने सङ्ग राखत नाहीं. तब यह साधारन विरक्त श्रीगुसांईजी पास आयो. और इन श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! मार्गकौ स्वरूप स्फुरे ऐसी कृपा कीजिए. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो अमूके तादृशी वैष्णवकौ सङ्ग करि. तब इन वैष्णवने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो राज ! वह तो काहूकों अपनी पास राखत नाहीं. और कहत हैं, जो मोकों श्रीगुसांईजीकी आज्ञा नाहीं. तातें आप वाकों आज्ञा करो तो वह सङ्ग राखे. तब वाकौ सङ्ग मिले. तब श्रीगुसांईजी वा तादृशी वैष्णवकों बुलवाईकै आज्ञा किये, जो या वैष्णवकों तुम सङ्ग राखो. तब श्रीगुसांईजीकी आज्ञा प्रमान वा तादृशी वैष्णवने या वैष्णवकों अपनी पास राख्यो. ता दिनतें ये दोउ सङ्ग रहते.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो उनके सङ्ग एक और हू वैष्णव रहतो. ये हू विरक्त साधारन हतो. उनकों श्रीगुसांईजीकी आज्ञा हुती, जो तू याके सङ्ग रहे. और वा तादृशी विरक्तकों आज्ञा हुती, जो तुम याकों आवन देहु. सो दोउ जनें साथ फिरें.

ऐसें करत एक दिन वे दोउ द्वारिकाजी जात हुते. सो भगवद् इच्छा तें एक ठौर रसोई करिकै श्रीठाकुरजीकों भोग धर्यो. ता पाछें महाप्रसाद लीनो. पाछें वा साथके वैष्णव सों कह्यो, जो तुम चलो हों आवत हों. सो वह आगें चल्यो. सो दो गेल आई. तहां वह दूसरी गेल गयो. तब तादृशी तो दूसरे गाम जांइकै सोय रह्यो और वह दूसरो वैष्णवसो एक गाममें जांइकै बैठ्यो. सो पहिले तो वा वैष्णवके वियोगकौ विरहताप घनो हुतो.

पाछें वा गाममें एक वेश्या नृत्य करत हती. सो वह वैष्णव वहां नृत्यमें जांइकै बैठ्यो. सो उहां तल्लीन होंइ गयो. सो कछू सुध नाहीं रही. सो ऐसें दिन तीन लों उहांई बैठ्यो रह्यो. सो रात्रि सब नृत्य देखें. दिनमें ऐसें ही विवसता सों उहां बैठ्यो रहे. तब वह तादृशी

वैष्णव विरक्त वाकों ढूंढत फिरे. और कह्यो, जो श्रीगुसांईजीने वह वैष्णव मोकों सोंप्यो है तातें याकी सर्वथा ठीक करी चाहिए. ता पाछें चौथे दिन उहां आयकै देखे तो यहां रात्रिके समै वेश्याके ख्यालमें विवस भयो है. सो पुकार्यो. परि उत्तर देवे नाहीं. तब हाथसों पकरिकै खेंच्यो. तो हू कछू सुधि नाहीं. ता पाछें वह बुलावे तो उत्तर देत नाहीं. बावरो सो डगमग होंइ रह्यो. कछू बोले नाहीं, कछू कहे नाहीं. तब वा तादृशीकों बोहोत चिन्ता भई. जो हों श्रीगुसांईजीकों कहा उत्तर देउंगो ! पाछें वाकों महाप्रसाद लेवेकों पूछ्यो, तो हू न बोले. इतनेमें भगवद् इच्छासों ब्यार चली. सो वा तादृशीके चरननकी रज वाके मुखमें गई. पाछें वा वैष्णवनें वाके मुखमें जल कर्यो. तब वह रज पेटमें गई. तब तुरत ही उछांट भयो. तब नीलो, पीरो, कारो, जल हो, सो व्यथा सब पेटमें तें निकसी. भीतर अन्तःकरन शुद्ध भयो. ता पाछें बोल्यो सब समाचार कहे. ता पाछें उहां तें दोउ जन चले. परि बातमें कछू समुझ नाहीं परी. ता पाछें केतेक दिनकों फिरत - फिरत श्रीगोकुल आये. श्रीगुसांईजीकौ दरसन कर्यो. पाछें श्रीगुसांईजीसों वा तादृशी विरक्तने कह्यो, जो महाराज ! एक दिना यह वैष्णव मोसों बिछुर्यो, भूल पर्यो. सो एक गाममें वेश्याकौ नृत्य देख्यो. तहां लीन भयो, बिवस भयो. सो कछू देहकी सुधि रही नाहीं. सो मैं बोहोत ढूंढ्यो. सो चौथे दिना पायो. सो नृत्यमें बैठ्यो हो सो पुकार्यो. परि सुने नाहीं. उत्तर देवे नाहीं. ता पाछें हाथसों पकरिकै घसीटिकै बाहिर ल्यायो. परि सुधि नाहीं. तब मोकों चिन्ता भई. कलेस भयो. ऐसें करत ब्यारि चली. ता पाछें याकों मैं थोरो सो जल पिवायो. तब ही याकों उछांटि भई. सो नीलो पीरो कालो जल गिर्यो. सो मोकों दुर्गन्धकौ सो लग्यो. ता पाछें मैंनें आचमन कुल्ला करवायो. इतने ही पाछें सावधानता भई. ता पाछें यानें सब समाचार कहे, (सो) सब सुने. परि कछू समझ्यो नाहीं. सो बात आप कृपा करिकै कहो. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो यह तोसों बिछुर्यो. सो वाके मनमें आई, जो अब तो हों सब बात समुझ्यो. सो अब मेरे सङ्गकौ काम कहा ? तातें सङ्गकौ अभाव भयो. यातें श्रीठाकुरजीने वियोग करायो.

भाव प्रकाश :

यामें यह जतायो, जो मनमें रञ्च हू योग्यता आवे तो वैष्णवकौ सङ्ग दुर्लभ होंई. काहेतें, जो तब प्रभु अप्रसन्न होत हैं. तातें सङ्ग हूं छूटि जात हैं. तासों वैष्णवकौ सङ्ग दास भाव तें करनों, तो फलित होंई. दीनता आवे. तब अपनकों सदा सर्वदा न्यून समझे. वैष्णवके स्वरूपकौ हू ज्ञान होंइ. यह सिद्धान्त भयो.

ता पाछें लौकिक जो आसुरी तिनकौ सङ्ग भयो. उनके पास बैठ्यो तब उनकौ परस भयो. पाछें वा वेश्याके पांवनकी रज उड़िकै याके मुखमें गई. पाछें थुंक निगल्यो. तब वह भीतर प्रवेश कर्यो. तब अविद्या बढ़ी. आसुरी माया तें मोह भयो. ता पाछें मेरी कानि तें, मेरो सम्बन्ध विचारि तुमने याकी सुधि करी, याकों ढूंढ्यो. पाछें हाथ पकरि पास बैठार्यो. ता समैं चरन सम्बन्धी जो रजकी कनिका याके मुखमें गई. पाछें तुमने जल पिवायो. तब वह रज पेटमें उतरी. तब वा रजकौ बल - प्रताप भयो. और प्रबल बल कर्यो. तब वा पहली रजके सङ्ग - विधिकौ जो आवेस सो सब उछांटिकै बाहिर काढ्यो. तब याकों सुधि आई.

भाव प्रकाश :
या वार्ताकौ यह अभिप्राय है, जो लौकिकवारेनकौ सङ्ग सर्वथा न करनो. काहेतें ? उनके सङ्ग तें, परस तें लौकिक आवेस होत हैं. और जो कदाचित् वाके पांवनकी धूरि मुखमें जांइ तो स्वरूप हू की विस्मृति होत हैं. अविद्या बढत हैं. आसुरावेस होत हैं. तातें तादृशी वैष्णवकौ सङ्ग करनो. उनके परस तें, उनकी चरनरज लिये तें बुद्धि निरमल होत हैं. काहेतें ? जो तादृशी वैष्णवके हृदयमें श्रीआचार्यजी आपु सदा सर्वदा बिराजत हैं. सो आचार्यजी कैसे हैं ? जो 'हूताश' रूप हैं. उनके छिनक सम्बन्ध परस तें अनेक जन्मनकौ आसुरावेस पाप, ताप, सब जरि जात हैं. बुद्धि निरमल होत हैं. तब भगवल्लीला हृदयमें प्रवेश होत हैं. तातें तादृशी वैष्णवकौ नितप्रति दासत्व भाव करि सङ्ग अवश्य करनो. और उनमें श्रीआर्चायजी बिराजत हैं. तातें उनकी सर्वदा भावना करनी. सदा ही उनमें प्रेम राखनो. यह एसी बात है.

सो वह वैष्णव विरक्त दोउ जनें श्रीगुसांईजीके श्रीमुखके बचन सुनिकै पाछें सदा दोउ सङ्ग ही फेर पास रहे. और सदा समप्रीति राखें. अभाव कबहू नाहीं करे. वे दोउ वैष्णव विरक्त श्रीगुसांईजीके सेवक ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे. तातें उनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।६८।।

६९-एक कुञ्जरी

अब श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी एक कुञ्जरी, मथुराकी बासी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
सो यह कुञ्जरी 'तामस' भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'सोहिनी' है. ये पुलिन्दिनीके यूथमें है. सो नित्य प्रति नए मेवा सिद्ध करिकै उत्थापनके समै श्रीठाकुरजीकों कन्दरानमें अरोगावति हैं. तातें श्रीठाकुरजी इन पर बोहोत प्रसन्न रहत हैं. सो एक दिन यह सुन्दर मेवा नई - नई भांतिके सिद्ध करिकै श्रीठाकुरजीकों अरोगावति ही. ता समैं श्रीश्यामलाजू वहां पधारी. तब इन तनक उंचे स्वरसों कह्यो, जो अबही श्रीठाकुरजी उत्थापन - भोग अरोगत हैं, तातें आप निकट मति पधारो. सो यह कहत समै सोहिनीके मुख तें एक छींटा उड़िकै मेवानमें पर्यो. तब श्रीश्यामलाजूने कह्यो, जो तोकों ऐसो अभिमान आयो, जो मोकों बरजे ? और तू प्रभुनकों अपनो जूठो अरोगावति हैं ? तातें जा भूतल पर गिरि, म्लेच्छ - योनिकों प्राप्त होउ. सो ता अपराध तें याने मथुरामें एक कुञ्जरीके यहां जनम पायो. सो ये 'हरनी' तें प्रगटी हैं. तातें इनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै वह कुञ्जरी अपने घर तें अदरख और ताती रोटी खांइकै चली. सो आगरे जात हती. सो. उष्णकालके दिन हते. सो घाम तें व्याकुल भई. सो 'औरङ्गाबाद' तें उरे कोस एक उपर एक रूख उहां बनमें हतो सो ताके नीचें परि रही. सो उहां तृषा करिकै व्याकुल ही. इतने ही श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार पधारे. तब श्रीगुसांईजी खवाससों पूछे, जो यह कहा है ? तब खवासने श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो महाराज ! एक म्लेच्छनी है. तब श्रीगुसांईजीने वाकी ओर देख्यो. सो म्लेच्छनीनें श्रीगुसांईजीकी ओर हाथसों बतायो, जो मैं प्यासी हों. तब श्रीगुसांईजीने खवाससों कह्यो, जो याकों बेग ही जल प्यावो. तब खवासने श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो महाराज ! इहां तो काहूके पास जल नाहीं, और तलाव कूआं हू निकट नाहीं. तब श्रीगुसांईजीने खवाससों कह्यो, जो हमारी झारीमें जल होइगो. तब खवासने कही, जो महाराज ! झारी छुई जाईगी. तब श्रीगुसांईजीने खवाससों कह्यो, जो जारी तो और आवेगी परि फेरि या म्लेच्छनीके प्रान कहां तें आवेंगे ? तातें बेगि जल प्यावो.

भाव प्रकाश :
यह कहि यह जतायो, जो वैष्णवकों जीव मात्र पर दया करनी.

पाछें खवासने वा झारीमें तें श्रीनवनीतप्रियजीकौ महाप्रसादी जल वा कुञ्जरीके मुखमें प्यायो. तब वह कुञ्जरी सावधान भई. वाकी बुद्धि फिरी. ता पाछें श्रीगुसांईजीकौ दरसन कियो. सो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम श्रीनन्दनन्दन देखें. तब वा म्लेच्छानीने उठिकै श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो महाराज ! मैनें कन्हैयाजी सुने हते. सो आज मैनें नैननसों देखे. तातें तुम 'गुसांईयां' सांचे हो. सो मोकों जिवाई.

ता पाछें वह आगरा जानो भूलि गई. और श्रीगोकुलकों आई. तहां बैठकके द्वारे बैठि रहे. सो वैष्णव महाप्रसाद लेहि तब जूठन उबरें सों मांगि लेही. आदरपूर्वक लै. ऐसें करत कछूक दिनमें श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार तें पाछें श्रीगोकुल पधारे. सो श्रीगुसांईजीके दरसन या कुञ्जरीकों भए. ऐसें नित्य श्रीगुसांईजीके बाहिर भीतर पधारत दरसन करें. और उहां बैठि रहें. नित्य जूठन महाप्रसाद लेई. पाछें उहां ही बैठकके सन्मुख हाट मांडिकै बैठी. ता पाछें देह सम्बन्धीसों कह्यो, जो हों तो श्रीगोकुलमें रहुंगी. इहां लाभ घनो है. और इहां कोऊं कुञ्जरी नाहीं, सो वस्तू कोऊ चहिए. तातें हों तो इहां रहोंगी.

पाछें वह कुञ्जरी श्रीगोकुलमें हाट मांडिकै रही. सो वह कुञ्जरी सुन्दर मेवा ल्यायकै द्वारपें बैठि रहे. पाछें वह श्रीगुसांईजीके मनुष्यनतें कहे, जो ए मेवा तुम राखो. तब वे मनुष्य कहें, जो तू मोल कहे तो लेंइ, तो यह हमारे काम आवें. नांतरु श्रीगुसांईजीके सेवक बिना काहूकी सत्ता प्रभु अङ्गीकार करत नाहीं. तब वह कुञ्जरीकों आतुरता भई जो हों इनकी सेवक होंउ तो भली बात है. और मेरो धन हू भगवद् अर्थ आवें. यातें कछू उपाय कीजे. ऐसें विचारिकै एक दिना वा कुञ्जरीने वैष्णव खवासकों देख्यो. तब वा कुञ्जरीने वाकों पुकारिकै एकान्त बैठिकै वासों पूछ्यो. जो सुनो तुम बड़े भगवदीय हो, कृपापात्र हो. और हों तो महामूढ अज्ञान हूं, और असुर हूं. तुम्हारी कृपातें तुम्हारी जूठनके प्रतापतें मोकों ज्ञान भयो. श्रीगुसांईजीकौ साक्षात् पूरन पुरुषोत्तमकौ दरसन भयो. तातें मैं जानों, जो इन समान और

कोई नाहीं. और तुम हू इनके सेवक हरिजन कृपापात्र हो. तातें हों तुम्हारी सरनि हूं, और आश्रय नाहीं. ऐसें कहिकै वा वैष्णवकों हाथ जोरि पांवन परि रही. और कह्यो, जो मेरी लज्जा अब तुम्हारे हाथ है. तातें हों तुमकों एक बात पूछत हूं. जो मेरी गांठिमें द्रव्य हजार रुपैया है. सो मेरो द्रव्य और देह भगवत् काज कैसें आवें सो बात आप कहिए ? और मेरो अङ्गीकार श्रीगुसांईजी आप कैसें करे ? सो उपाय कहिए ? तब वा वैष्णव खवासने कह्यो, जो सुनि, तेरो देह - सम्बन्ध खोटो है, आसुरी है, तातें तेरे विचार कठिन है. परि भगवद्इच्छा तें जो मोकों सूझे सो हों कहूं ? सो तू माने तो श्रीठाकुरजी अङ्गीकार करेंगे. तब वाने कही, जो आप बेगि कृपा करि कहिए. हों त्योंही करूंगी. तब वा वैष्णवने कह्यो, जो तू इहांई हाट मांडि और नौतन वस्तू घनी उत्तम तें उत्तम मेवा तरमेवा और साग बिनु रितुकौ सोहू बड़े - बड़े सहर नगर तें ढूंढिकै ल्याउ. नांतरु कोऊ मनुष्य राखिकै वा पास मंगाउ. और वा वस्तूकों जतन तें राखि. जो भगवत् अङ्गीकारकी वस्तू हैं ऐसें विचारिकै मति कहुं अपवित्र जल तथा और वस्तूकौ परस होंइ, मति पांव लगे, मति मुख तें छींटे उड़े. उत्तम जलसों हाथ धोई, उत्तम जल छांटिकै बोहोत जतनसों राखि. और कोऊ ग्राहक आवें तो हलकी वस्तू दिखावनी और मोल दूनो कहनो. सो वह ग्राहक लै नाहीं. और श्रीगुसांईजीके वैष्णव आवें तो ताकों उत्तम वस्तू होंइ सो दिखावनी और वह मोल पूछे तब आधो मोल कहनो. तब वह सामग्री सुन्दर जानिकै और सस्ती जानिकै लै लेंगे. तब तेरो देह और द्रव्य दोउ अङ्गीकार होइगो. सो ऐसें नित्य तेरे इहां तें लेइंगे. सो सुन्दर वस्तू देखिकै श्रीगुसांईजी वासों पूछेंगे, जो ये वस्तू कहां ते ल्याये ? तब वे तेरो नाम लेइंगे. जो महाराज ! इहां अपने द्वारें अमूकी कुञ्जरी है ताकै इहां तें ल्यायो हूं. सो मोल थोरो लेत है और सांच बोलत है. ऐसो सुनिकै श्रीगुसांईजी हू तो पर प्रसन्न रहेंगे. या प्रकार नित्य करियो. सो तेरो द्रव्य थोरेसेक दिनमें भगवद् अङ्गीकार होइगो. और देह हू अङ्गीकार होइगी. पाछें तू ताप करियो. जो मोतें कछू नाहीं बनि आवत हैं. सो यह देह कौन काम आवेगी ? तब तेरो ताप श्रीठाकुरजी निवारेंगे. श्रीप्रभु सर्व सामर्थ्य सहित हैं. ऐसें वा वैष्णवने कह्यो. सो वा कुञ्जरीने वैसें ही कियो. जो आछी वस्तू नौतन आवे सो कहूं तें ढूंढ़िकै मंगवावे. सो वैष्णव देखे तब श्रीगुसांईजीसों कहे, जो अमूकी वस्तू मेवा साग आयो है. तब श्रीगुसांईजी मंगावें. तब वैष्णव लेवे. तब आधो द्रव्य लेहि. तब श्रीगुसांईजी और वैष्णव वस्तू देखिकै बोहोत प्रसन्न होंई. जो ऐसी और कहूं नाहीं मिले. ता पाछें चहिए सो वा पास मंगवावें. ऐसें करत थोरेसेक दिनमें द्रव्य निघट्यो. सब भगवद् अङ्गीकार भयो. ता पाछें वह कुञ्जरी ताप - कलेस करन लागी. जो अब तो मोतें कछू बनि आवत नाहीं. तातें यह देह छूटे तो भलो है. ऐसें मनमें ताप - कलेस बोहोत ही करें. और कोऊ वैष्णव वस्तू लेवेकों आवे और पूछे तो

कहे, जो मेरे तो नाहीं. ता पाछें वह फिरि जाहि. तब वह मनमें बोहोत दुःख करे. ऐसें करत नित्य ताप करत ओर हू खानपान थोरो करे. यों करत थोरेसेक दिनमें वा कुञ्जरीकी देह असक्त भई. तब अन्न जल हू छोर्यो. पाछें बोहोत दुःख पावे, परी रहें. और वाके कोऊ खबरि लेवे नाहीं. तब काहू दिना श्रीगुसांईजी सुधि करें, जो पहिलें मेवा साग घनो सुन्दर आवतो सो तो अब आवत नाहीं. तब वैष्णव कहे, जो महाराज ! कुञ्जरी घनी भली ही, परि अब तो वह मरिवेकों परी है. सो दिना द्वे चारिमें मरेगी. परि घनी भली मनुष्य हती, आपके नाम सों बोहोत प्रसन्न रहती.

ता पाछें श्रीगुसांईजी एक दिना राजभोग धरिकै श्रीयमुनाजी पधारत हे. सो ता समै वा कुञ्जरीकों घनो कष्ट दुःख हो, बोले नाहीं. और लोग तथा छोरा देखिवेकों ठाढ़े हे. सो श्रीगुसांईजीने पूछ्यो, जो यह भीर कहा है ? तब वा वैष्णवने कह्यो, जो महाराज ! वह कुञ्जरीकी हाट है. जो अपने मेवा और साग आवतो और आप सराहते. सो वह मरेगी, घनी दुःखी है. बोलत हू नाहीं. सो वाकों देखिवेकों भीर खड़ी हैं. ऐसें श्रीगुसांईजी सुनिकै असरन सरनगति दया - समुद्रसो पांव धारे. तब सब कोऊ दूरि किये. तब वह कुञ्जरी श्रीगुसांईजीके दरसन करि चरन पर सीस धरि रही. और कह्यो, जो महाराज ! मेरे इन चरनन बिनु और आश्रय नाहीं; और ठौर नाहीं. आप ईश्वर हो, बड़े हो सब जानत हो. जो याके सांच है कै नाहीं ? अन्तरजामी हो. सो मनकी सब जानत हो मुख करि कहा कहूं ! मेरी लाज आपके हाथ है. ता पाछें भली बिचारो सो करो. और बोहोत कहिवेकी नाहीं काहेतें ? मेरो देह सम्बन्ध घनो नीच है. तातें हों घनो कहा कहुं ? ऐसें कहिकै रोवन लागी. तब श्रीगुसांईजीने वाकौ समाधान कियो. जो तेरो मनोरथ सब जानत हों. तू काहू बातकी चिन्ता मति करे. प्रभु सर्व करन समर्थ हैं. ऐसें कहिकै वाके कानमें अष्टाक्षर मन्त्र सुनायो. और श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ चरनोदक और महाप्रसाद और अपनो चरनोदक और माला वैष्णव पास मंगवायकै वाकों दीनी. ता पाछें वाकौ समाधान करिकै श्रीयमुनाजीपैं पधारे. सो ताही समै वा कुञ्जरीकों श्रीगुसांईजीकौ साक्षात् श्रीगोवर्द्धननाथजी संयुक्त श्रीस्वामिनीजीकौ दरसन भयो. ता पाछें श्रीगुसांईजी स्नान - सन्ध्या करिकै मन्दिरमें पांव धारे. इतने ही वाकों विरह - ताप भयो. सो अत्यन्त भयो. ता पाछें थोरीसी देरिमें देह छूटी. सो समाचार श्रीगुसांईजीने सुने. तब वाकौ संस्कार करवायो. ता पाछें श्रीगुसांईजीने श्रीमुख तें कह्यो, जो अब याकों कछु और बाधक नाहीं. सो वह कुञ्जरी महावनमें एक ब्राह्मनके घर जन्म लै कै अलौकिकमें प्राप्त होइगी.

भाव प्रकाश :
या वार्तामें यह जतायो, जो प्रभु परम दयाल हैं. जो कोऊ दृढ़ आश्रय करि द्वारपें रहत है ताकी सुधि प्रभु आप लैत हैं. और वाकी थोरीसी सेवाकों हू आप बोहोत करि मानत हैं. ऐसें श्रीगुसांईजी परम दयाल हैं. उनकौ आश्रय वैष्णवकों सर्वथा करनो. और उत्तम भगवदीयकौ सङ्ग करनो.

सो वह कुञ्जरी श्रीगुसांईजीकी सेवक ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती. तातें उनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।६९।।

७०-हतित पतित राक्षस

अब श्रीगुसांईजीके सेवक हतित पतित राक्षस, महीकांठाके, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वे हतित पतित गुजरातकी धरतीमें महीके कांठे एक अश्वस्थकौ पेड़ हतो तहां एक खोरिमें रहते. सो एक समै चाचा हरिवंशजी और वैष्णव गुजरातके श्रीनाथजीद्वार कों जात हुते. सो मार्गमें भूले परे. सो वा खोरिमें जांइकै निकसे. तब वा रूख उपर तें दोउ भाई राक्षस हतित पतित आइकै इन वैष्णवनके सन्मुख ठाढ़े भए. तब बड़े पर्वत से विकराल देखे. तब वैष्णव अपने मनमें डरपें. और कह्यो, जो भाई ! यह इहां कहां तें आए ? ये कौन है ? पाछें उन वैष्णवनने चाचा हरिवंशजीसों कह्यो, जो यह कौन आनिकै गेल रोकिकै आगें ठाढ़े हैं ? तब चाचा हरिवंशजीनें आगें आइकै उनसों पूछ्यो, जो तुम कौन हो ? कहा कारन इहां आइकै ठाढ़े हो ? तब उन हतित पतितनें कह्यो, जो हम तो राक्षस हैं. तुम सबनकों हम खाइंगे. तुमकों खांइवे (के) निमित्त इहां आए हैं. तब चाचा हरिवंशजीने हतित पतितसों पूछ्यो, जो तुम ठाढ़े काहेकों हो ? खांत क्यों नाहीं ? तब उन राक्षसननें कह्यो, जो हमकों तुम्हारे निकट आवत ताप लागत हैं, तातें ठाढ़े हैं. तुम्हारे नजीक आय सकत नाहीं. ता पाछें चाचा हरिवंशजीने फिरि कह्यो, जो तुम काहेकों गैल रोकें ठाढ़े हो ? तुम हमकों

खांइ सकोगे नाहीं. हमारे देहमें तो चौद लोककौ नाथ बिराजत हैं. तातें तुम गेला छोरि देहु. तब वह दोउ भाई राक्षस बोले, जो तुम बड़े वैष्णव भगवद्भक्त हो. तुम महापुरुष हो. हम तुम्हारे दरसनकों आए हैं. सो हमकों दरसन भए. तातें हमकों ज्ञान भयो. सो तुम हमारो उद्धार करिकै जाऊ. हमकों प्रेतयोनीकी पीड़ा तें छुडाउ. तब चाचा हरिवंशजीने कह्यो, जो तुम या नदीमें न्हाइ आऊं. ता पाछें वे दोउ भाई नदीमें न्हाइकै ठाढ़े भए. तब चाचा हरिवंशजीने उनकों नाम - अष्टाक्षर मन्त्र कानमें कह्यो. और माला दोउनकों कण्ठमें पहिराई. और चरनोदक तथा महाप्रसाद उनके मुखमें मेल्यो. इतने ही उनकी प्रेत - देह छूटी. अलौकिक दिव्य देह भई. ता पाछें वे दोउ चाचा हरिवंशजीके पांवन परि रहे, हाथ जोरि रहे. पाछें दोउ भाईन बिनती करिकै कह्यो, जो तुम बड़े भगवदीय हो. हमारी प्रेत - पीड़ा तुम बिनु कौन दूरि करें. ऐसें तुमसे त्रिभुवनमें नाहीं. तातें हम तुम्हारो कहा उपकार करें ? ऐसो हमपैं पदारथ नाहीं. ऐसें बिनती दोउ भाई घनी - घनी करी. पाछें श्रीगुसांईजीकी कृपा बल - प्रतापतें श्रीठाकोरजीके दूत इन दोउनकों लीलामें पहोंचाए.

भावप्रकाश :
सो या वार्तामें चाचा हरिवंशजी वैष्णवकौ स्वरूप जताए. जो - वैष्णव काहू तें डरपत नाहीं. काहेतें, जो उनके हृदयमें काल हू के काल ऐसें श्रीठाकुरजी आप बिराजत हैं. तातें काल कर्म सब उनतें डरपत हैं. सो परमानन्ददासजी गाए हैं

राग : सारंग
हरिकौ भक्त माने डर काके ।
जाके करजोरें ब्रह्मादिक देत सबै दण्डौती जाके ।
सिंघ सखा करि ग्राम बसावे यह विपरीत सुनी नहीं देखी ।
हाथी चढ़े कुकर की सङ्का यहधों कौन पुरानन लेखी ।
सुगम लोग अरु विगम मूढमति कृपासिन्धु समरथ सब लायक ।
'परमानन्ददास'कौ ठाकुर दीनानाथ अभयपद दायक ।।

और वैष्णव बड़े दयाल होत हैं. जो कोऊ उनकौ अपकार करें ताहूकौ ये उपकार करत हैं. वाकों जनम मरन तांईकौ कष्ट छुरावत हैं. सो सूरदासजी गाए हैं

राग : धनाश्री
ऐसो भक्त तरे और तारे ।
परम कृपाल परम दीनबन्धु सरन गहे वाकौ दुःख निवारे ।।
सबसों मैत्री सत्रु नहीं कोई वाद विवाद सबनसों हारे ।
हरिकौ नाम जपे निस बासर संसय सोक ताप निवारे ।
काम क्रोध ममता मद मत्सर माया मान मोह भ्रम हारे ।
निरलोभी निरवैर निरन्तर कृष्ण रूप जब हृदय विचारे ।
हरिकौ नाम सुने अरु गावे कृष्ण भजन करि दुःख ही दुरावे ।।
'सूरदास' हरि रूप मगन भये गुन औगुन का पर नहीं आवे ।।

सो चाचाजी ऐसें भगवद्भक्त हैं. तातें ये राक्षस उनके सरन आए तब इन श्रीगुसांईजीकौ सुमिरन करि उनकों नाम सुनायो. सो उनदोउनकों गुरुकौ सम्बन्ध भयो. तातें उन दोउनकौ उद्धार भयो, लीलामें प्राप्ति भई. सो जैसें वा रजपूतकी बेटीकों लीलाकी प्राप्ति भई तैसे इहां हू जाननो.

ता पाछें सब वैष्णव तथा चाचा हरिवंशजी श्रीगुसांईजी पास श्रीगोकुल आए. श्रीगुसांईजीके दरसन किये. पाछें साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै समै देखिकै श्रीगुसांईजीसों दोउ भाई राक्षसके समाचार सब चाचा हरिवंशजीनें कहे. और श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! ये दोउ भाई पूरव जनममें कौन हते ? और कौन पून्यतें इनकों ये समागम भयो, उद्धार भयो ? सो सब बात आप हमसों कृपा करिकै

कहिये. तब श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो ये दोइ भाई पूरव जनमके वैष्णव हते. सो ये श्रीमाली ब्राह्मन गुजरातके बासी हुते. सो भगवत् सेवा भली भांतिसों करते. परि अकिञ्चन हुते, सो एक समै ब्रजकों तीर्थयात्राकों गये हुते. सो तीर्थयात्रा करि घरकों आवत हुते तब मार्गमें एक हरिवंशजन वैष्णव रहत हुतो. सो वाके घर ये दोउ भाई गए. तब वह वैष्णव तो घर नाहीं हतो. कहूं गाम कामकाजकों गयो हतो. वाकी स्त्री घर हुती. तब वा स्त्रीनें वैष्णव जानिकै घरमें उतारे. ता पाछें सीधो सामग्री सब दीनी. पाछें उन दोउ भाईनने उहां तें कूपमें तें जल काढ़िकै और न्हाइकै भोग धर्यो. पाछें महाप्रसाद लै कै रात्रिकों कीर्तन करे. ता पाछें वा स्त्रीने ये दोउकों वाके घर भीतर ही सुवाये. सुन्दर आसन सिज्या बिछाय दीनी. तब ता पर सोइ रहे. ता पाछें वा स्त्रीके सरीरपैं गहनो बोहोत हतो. घरमें बोहोत सम्पन्न हती. तब मध्यरात्रिकों दोउ भाई जागें. तब छोटे भाईने बड़े भाईसों कह्यो, जो या स्त्री पास गहनो बोहोत हैं और याके घरमें और कोऊ नाहीं. तातें आपुन याकों मारिकै मुख मूंदिकै सब गहनो उतारि लै जाईए. ऐसें दोउ भाई विपरीत बुद्धि विचारिकै उठिकै इत उत देखन लागें. तब एक छुरि देखिकै, लै कै, एक भाईने वा स्त्रीकौ मुख वस्त्रसों मूंद्यो. एक भाईने वाकी छाती पर चढिकै वाकों दो एक ठौर छुरीकी मारिकै वाकौ गहनो सब उतारि लियो. पाछें उहां तें दोउ भाई भाजे. सो रात्रिकों कोस दस बीस निकसि गए. पाछें वा स्त्रीनें सावधान होंइकै मुखमें तें डूचा काढ्यो, पाछें पुकारी. तब लोग सब आई जुरे. सवारो भयो. पाछें हाकिमके मनुष्य आगें सब समाचार कहे. सो हाकिमने मनुष्य दस उनके खोजकों पठाए, दोराए, परि पाये नाहीं. ता पाछें वाकौ पति घरकों आयो. तब तानें सब समाचार सुने. तब वा स्त्रीसों कह्यो, जो बात सब बिस्तारिकै कहो. ता पाछें वह अपनी स्त्रीसों खीझ्यो. बोहोत कह्यो, जो तें उनकों घरमें काहेकों उतारे ? आज पाछें ऐसो काम नहीं करिए. तब उन स्त्रीने कह्यो, जो मैं वैष्णव जानिकै उतारे ता पाछें वा स्त्रीकों मलमपटटी करी. सो थोरेसेक दिनमें वह स्त्री आछी भाई.

पाछें वह दोउ भाई मार्गमें जात हुते, घरकों. सो मार्गमें चोर ठगन भाल राखी. सो वह चोर ठग इनके पाछें लागे. सो नदीके कांठे वा खोरिमें उनकों भूलायकै लै गए. वहां उन दोनोंनकों ठौर मारे. ता पाछें गहनो वित्त सब चोरि ले गए हते सो सब लिये. सो वा दिन तें दोउ भाई ब्राह्मन राक्षस भए हैं. प्रेतयोनि उन पाई. सो वा बातकों पांचसौ बरस भए. ए विष्णुस्वामि सम्प्रदायके वैष्णव हे. सो श्रीठाकुरजीने सुधि करि कृपा करी. तब तम्हारे वैष्णवनके दरसन भए. तब इनकौ दोष निवृत्त भयो. तब इनकों ज्ञान भयो. अब हमारो

सम्बन्ध पाय इनकी गति भई. लीलामें पहोंचे.

भाव प्रकाश :
काहेतें, ये लीलामें 'नरो' 'वरो' दोउ सखी हैं. 'चित्रलेखा' तें प्रगटी हैं, तातें उनके तामस भावरूप हैं. ये 'चन्द्रकला'के यूथकी हैं. सो इहां चाचा हरिवंशजी द्वारा श्रीगुसांईजीकौ सम्बन्ध पाय लीलामें प्राप्त भए. तहां यह सन्देह होंइ, जो इन दोउनकों ब्रह्मसम्बन्ध तो भयो नाहीं हैं. सो लीलामें कैसें प्राप्त भए ? तहां कहत है, जो जैसें कृष्णदास द्वारा वा वेश्याकी छोरीकों लीलामें प्राप्ति भई. पाछें लीलामें ललिताजीने श्रीस्वामिनीजी द्वारा ब्रह्मसम्बन्ध करवायो. तैसें इन दोउनकों चन्द्रकलाने श्रीचन्द्रावलीजी द्वारा ब्रह्मसम्बन्ध करवायो, यह जाननो.

तातें वैष्णवकों विचारिकै चलनो. महद अपराध तें ऐसी गति होत हैं. परि वैष्णवके सङ्गतें, दरसन तें, भगवद् प्राप्ति भई. तातें तादृशी वैष्णवकी सङ्गति ऐसी है. ऐसें श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें कहे. सो चाचा हरिवंशजी और वैष्णव सुनिकै बोहोत ही प्रसन्न भए.

सो वे हतित पतित श्रीगुसांईजीके दोउ ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।७०।।

७१-दोउ वैष्णव विरक्त जिननें कीड़ा देखे

अब श्रीगुसांईजीके सेवक दोउ वैष्णव विरक्त, सो दोउ साथ रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये दोउ राजनगर तें कोस पांच उरेमें एक गाम है, तहां दोउ ब्राह्मनके जन्मे. सो ये दोउ ब्राह्मनके घर एक ही बाखरिमें हे. तातें ये दोउ लरिका सङ्ग खेले, सङ्ग खांय पीये. या प्रकार दोउनमें प्रीति बोहोत बढ़ी. पाछें दोउ बरस पांच - सातके भए तब इन दोउनके माता - पिता इनकों एक पण्ड्याके उहां

पढिवेकों बैठाये. सो एक तो कछूक पढ्यो. और दूसरो सूधो हतो, सो कछू पढ्यो नाहीं. ता पाछें दोउनके माता - पिताने दोउनकै ब्याह किये. तब दोउनकी स्त्री आईं. सो वे दोउ महाकुपात्र आईं. आसुरी सबनकों गारी देय कलेस करें. जो वस्तू पावे सो चुरायकै मा - बापकों दै आवें. सो घरके सब महादुःख पावें. ऐसें करत कछूक दिनमें दोउनके मा - बापने देह छोरी. तब ये दोउ आपुसमें विचार किये, जो भाई. अब घरमें रहनो उचित नाहीं. काहेतें, जो घरमें नित्य कलेस होत हैं, तातें कहूं और ठौर जांइ तो आछौ. ऐसें दोउ विचारि किये. पाछें घरमें काहूसों कहे बिना रात्रिकों चले. सो राजनगर आई रहे. तहां भिक्षा मांगिकै देह - निर्वाह करन लागे. वैराग्य दशामें रहे. काहूसों ज्यादा बोले नाहीं, काहूके पास बिना काम बैठे नाहीं. या प्रकार रहे.

सो एक समै ये दोउ भिक्षाकों असारुवा आए. तहां भाईला कोठारीके घर आए. ता समै श्रीगुसांईजी आप भाईला कोठारीके घर बिराजत हे. सो कोठके वृक्ष नीचे चरन पखारत हे. तहां इन दोउन श्रीगुसांईजीके दरसन पाए. तब श्रीगुसांईजीकौ तेज - प्रताप देखि चक्रत व्है रहे. दोउ हाथ जोरि ठाढ़े रहे. तब श्रीगुसांईजी आप दोउनकी और देखि मुसिकाईकै आज्ञा किये, जो तुम दोउ ऐसें जगह - जगह क्यों भटकत हो ? कछू भगवद्भजन करो तो कृतार्थ होउ. सो श्रीगुसांईजीके बचन सुनि दोउनकों बोध भयो. जानें, जो ये कोई महापुरुष हैं. नांतरु बिनु जाने बिनु पहिचाने ऐसें कौन कहे ?

पाछें ये दोउ हाथ जोरिकै बिनती किये, जो महाराजाधिराज ! हम तो भगवद् भजनमें कछू समुझत नाहीं. कलेसके मारे घर छोरि या प्रकार जगह - जगह भटकत हैं. आज आपके दरसन तें परम आनन्द पायो. अब हम आपकी सरनि आए हैं. तातें कृपा करि सरनि लै भगवद्भजनकौ प्रकार समुझाइए. सो या प्रकार दोउनकी दीनता देखि श्रीगुसांईजी आप बोहोत प्रसन्न भए. ता समै भाईला कोठारी पास ठाढ़े हे. तिनसों प्रभु आप आज्ञा किये, जो भाईला ! इन दोउनकों स्नान कराइ अपरसमें हमारे पास ल्याउ. तब भाईला कोठारी दोउनकों अपने घरके भीतर लै जांइकै स्नान कराए. पाछें नई धोवती उपरेना पहिरवेकों दिये. सो दोउन पहरि, कंठी पहरि, तिलक चरनामृत लै अपरस ही में श्रीगुसांईजी पास आप ठाढ़े रहे. तब श्रीगुसांईजी आप कृपा करि दोउनकौ नाम - निवेदन कराए. पाछें दोउनकों आज्ञा किये, जो तुम कछूक दिन इहां रहि भाईला कोठारीकौ सङ्ग करो. श्रीआचार्यजीके ग्रन्थनकौ पाठ करो. तातें तुमकों मार्ग सब स्फुरायमान होइगो. तब ये दोउ भाईला कोठारीके उहां रहे. सो जहां लों श्रीगुसांईजी बिराजे तहां लों प्रभुनकी टहल, आए गए वैष्णवनकी टहल, जो होंई सो सब करे. नित्यप्रति श्रीगुसांईजीके वचनामृत सुने. और श्रीआचार्यजीके ग्रन्थनकौ पाठ करें. सो उनमें एक चोकस हतो. सो वह नित्य श्रीगुसांईजी आप पोढें तब चरन दाबे, रहस्य वार्ता पूछे. या प्रकार रहे. ता पाछें भाईला कोठारीसों जो बात समुझमें न आवें सो पूछे. सो वह श्रीगुसांईजीकौ

कृपापात्र भयो. और दूसरो साधारन हतो. सो वाकों श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो तू इनके साथ रहे. ये जो कहे सो करियो. पाछें श्रीगुसांईजी आप तो श्रीगोकुल पधारे. ता पाछें ये दोउ विरक्त दसामें रहते. दोउ साथ फिरते.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो उनकों श्रीगुसांईजीकी आज्ञा हुती, जो तुम दोउ साथ फिरो. तामें एक कृपापात्र हतो और एक साधारन हुतो. सो वा साधारन विरक्तसों श्रीगुसांईजीकी आज्ञा हुती, जो यह वैष्णव कहे सो करियो.

भाव प्रकाश :
काहेतें, ए दोउ लीला सम्बन्धी हैं. सात्त्विक भक्त हैं. लीलामें एक कौ नाम 'मङ्गला' है. सो तो यहां कृपापात्र भयो. और दूसरेकौ नाम 'वामा' है. सो यहां साधारन विरक्त भयो. सो 'मङ्गला'की सहचरी हैं. तातें श्रीगुसांईजीने इन दोउनकों साथ फिरिवेकी, रहिवेकी आज्ञा करी. सो वा कृपापात्रके सङ्ग तें या सहचरीकौ कारज होंई.

सो केतेक दिन पाछें एक बड़ो गाम नगर हतो. सो तहां गए. सो वा गाममें एक बाई डोकरीके घर उतरे. सो ता गाममें और हू एक वैष्णव हुतो. ताके घर राजस बोहोत हुतो. सो ताके घर वैष्णव न्योते हते. सो वा बाईकों वैष्णव बुलावनकों आए. तब उहां ओर हू दोउ वैष्णव विरक्त देखें. तब वा वैष्णवने इनकों बुलाए न्योते. और अपने घर बुलायकै ले गए. ता पाछें श्रीठाकुरजीकौ राजभोग सरायो. पाछें श्रीठाकुरजीकी आर्ति करी. पाछें श्रीठाकुरजीकौ दरसन कर्यो. सो उन श्रीठाकुरजीकौ वैभव देख्यो. तब वह कृपापात्र मनमें कह्यो, जो सब आछौ है. परि श्रीठाकुरजी तो महा क्रोधमें हैं, अनमने हैं. तब मनमें कह्यो, जो भाई ! श्रीठाकुरजी ऐसें क्यों हैं ? ऐसें आश्चर्य भयो. ता पाछें सब वैष्णवकी पातरि धरी. तब वाकी पातरि परोसत वा तादृशी वैष्णवकी दृष्टि परी. तब देखें तो सामग्रीमें सब कीड़ा बिलबिलात हैं. और विपरीत सो देख्यो. तब उन साथके वैष्णव सों कह्यो, जो तुम इहां ते चलो. इहां तो विपरीत है. ऐसें समस्यामें कह्यो. परि तोउ वह न मानें. वानें अपने मनमें कह्यो, जो ऐसो सुन्दर महाप्रसाद छोड़िकै क्यों जाईए ? वाकौ मन तो मिष्टान्न घने प्रकारके देखिकै

ललचानो. ता पाछें वे तादृशी तो इतनो कहिकै उहां ते दृष्टि चुकाइकै निकसि भाज्यो. सो वा बाईके घर तें अपनो खड़ीया लै कै चल्यो. वा गाममें नाहीं रह्यो. जो मति कोऊ बुलायकै आग्रह करे. सो तीन कोस पर एक गाम हतो. तहां जांइकै रसोई करिकै श्रीठाकुरजीकों दारि - अङ्गाकरीकौ भोग धर्यो. ता पाछें महाप्रसाद लियो. पाछें रात्रिकों ता गाममें रहे.

ता पाछें साथके वैष्णवसों और वैष्णवने कह्यो, जो तुम्हारे साथकौ वैष्णव कहां गयो ? तब उनने कह्यो, जो कहा जानें ? ता पाछें उन बाईके घर ढूंढि आए. तब वा बाईने कह्यो, जो वह तो इहां ते खड़िया लै कै गयो. और अमूके गाम गयो. ता पाछें सब वैष्णवने महाप्रसाद लियो. ता पाछें साथकौ वैष्णव वा बाईके घर आयो. तब वा बाईसों पूछ्यो, जो वह वैष्णव कहां गयो ? तब वा बाईनें कह्यो, जो वे तो अमूके गाम इहां ते तीन कोस हैं उहां गयो. और मोसों कह्यो, जो तुम वा वैष्णवसों कहियो, जो काल्हि पहर दिन चढेगो तब लों हों तेरी गेल देखोंगो. तुम बेगि आवोगे. ऐसें मोसों कहिकै गयो है. ता पाछें वह वैष्णव सोयो. तब रात्रिमें स्वप्नमें जाने, जो रुधिर मांस हों भक्षन करत हों. ऐसें और हू कितनेक विपरीत देखे. ता पाछें सवारे बेगि ही उठिकै चल्यो. सो वा वैष्णवसों जांइ मिल्यो. सो वह वैष्णव याकी गेलमें आयकै बैठ्यो हतो. पाछें वासों कही, जो तें रात्रि कछू देख्यो ? तब वैष्णवने कही, जो मैं स्वप्नमें ऐसें देख्यो. ता पाछें वा वैष्णवने वासों कह्यो, जो तू मोकों छुवे मति. मैं तो उहां वैष्णवके घर महाप्रसादमें कीड़ा बिलबिलात देखे. और श्रीठाकुरजी हू अप्रसन्न देखे. तब तोसों कहिकै वहांतें भाज्यो. तो मेरो धर्म रह्यो. और तें नाहीं मान्यो, इन्द्रियकौ स्वाद, कर्यो. तातें अपनो धर्म खोयो. परि भले, अब तो तू मेरे पाछें - पाछें चल्यो आउ. और मोकों छूवे मति. सो काहेतें, जो श्रीगुसांईजीने मोतें कह्यो है, जो याकों तेरे साथ राखियो. कहूं छोरियो मति. तातें आज्ञा माननो. पाछें श्रीगुसांईजी पास जांइकै यह सब समाचार कहेंगे. सो श्रीगुसांईजी श्रीमुखतें कहें सो खरी. पाछें मार्गमें चले. मजलि उतरे. सो वह तादृशी भिक्षा मांगि लावें. ता पाछें उपरा बीनि लावें. पाछें जलके समीप जांइकै रसोई करें. श्रीठाकुरजीकों भोग धरे. पाछें पातरि दोइ परोसे. साथके वैष्णवकी पातरि दूरि धरें. पाछें महाप्रसाद दोउ जनें लेई. परि कछू वस्तू सामग्री वाकों छुवन न देही. ऐसें करत केतेक दिनमें श्रीगोकुल जांइ पहोंचे. ता पाछें श्रीगुसांईजीकौ दरसन कर्यो, दण्डवत् करी. पाछें वा तादृशी वैष्णवनें जो कछू प्रकार भयो और कीनो, सो सब विस्तारिकै श्रीगुसांईजीसों समाचार कहे. और पूछ्यो, जो राज ! ऐसो विपरीत काहेतें देख्यो ? वाके कहा विपरीत हैं ? सो आप हमसों कृपा करिकै कह्यो चाहिए. तब श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो वाके एक बेटी हती.

सो एक गृहस्थकों दीनी. सो वाके पास एक सहस्त्र रुपैया हते. सो वह याके पास धरिकै कहूं देसान्तरकों गयो हतो. सो भगवद् इच्छातें वह मर्यो. सो बेटीकौ विवाह तो भयो नाहीं हतो. सगाई करी हती, मांगी हती. सो वाके मरेके समाचार सुनिकै पाछें यानें और ठौर रुपैयाके लालच काहू वृद्ध गृहस्थ सों बेटीकौ विवाह करि दीनो. ता पाछें भगवद् इच्छा तें केतेक दिनमें वह मर्यो. तब वाकौ द्रव्य और बेटी घरमें ल्यायकै राखी. और वाके सब कुटुम्ब हतो तासों लरिकै हाकिमकों कछू द्रव्य दै कै और के भाग, लागे, कछु काहूकों नाहीं दीनो. सब राख्यो. सो वा बेटीके द्रव्यसों सब सामग्री करी है. और अपुनो नाम कियो है. सो श्रीठाकुरजी अरोगत नाहीं. और यह मेरी कानि देत है, तासों श्रीठाकुरजीकों क्रोध चढ़त है. सो एक तो बेटीके सम्बन्धीके बेटाकौ द्रव्य लीनो. सो वाकौ हृदय कल्प्यो. सो काहूकौ अन्तःकरन दुःखायकै ल्यावे सो वाकों ताप होंई, दुःख पावें. ताकों कलेस सन्ताप होत है. तब वाकौ रूधिर सूकत है. सो वाकौ रूधिर वा द्रव्यमें आवत है. ऐसो द्रव्य श्रीठाकुरजी अङ्गीकार करत नाहीं. और जो कोऊ कलेसकौ द्रव्य लेत हैं ताकौ मन प्रसन्न होत है. तातें वाकौ रूधिर मांस बढ़त हैं. और वाकौ रूधिर सूक्यो. सो जानें द्रव्य खायो ताके उदरमें आयो. सो मनुष्य राक्षस तुल्य है. और बेटीकौ द्रव्य महानिषिद्ध है. श्रीठाकुरजीके कामकौ नाहीं. और वेउ असुच भयो. सो कीड़ा मांस तुल्य बेटीकौ द्रव्य है. सो बेटीके घरकौ जो कछू वस्तू जल पर्यन्त असुच हैं. वाके सम्बन्धी कोऊ कछू वस्तूकों हाथ छुवनो उचित नाहीं. वस्तू तथा द्रव्य पर मन करे सो श्रीठाकुरजीके काम न आवे. यातें तोकों दोइ अपराध परे. एक तो तेनें वैष्णव तादृशीकी आज्ञा न मानी. और वह द्रव्यकी सामग्री भई सो तेनें खाई. तातें तोकों ऐसो भयो. ऐसें श्रीगुसांईजीने वा साथके वैष्णवकों जतायो. वह अन्न लीनो ताकों कहि सुनायो.

भाव प्रकाश :

या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णवकों शुद्ध वस्तू, शूद्ध सत्ता श्रीठाकुरजीकों अङ्गीकार करावनी. काहूकों अप्रसन्न करिकै (और) काहू तें छलकपट करिकै कोऊ वस्तू - द्रव्य आदि लेनो नाहीं. ऐंसी वस्तू - द्रव्य श्रीठाकुरजी अङ्गीकार करत नाहीं. तातें शुद्ध वस्तू श्रीगुसांईजीकी कानि तें श्रीठाकुरजी रुचिसों अपने श्रीमुखमें अङ्गीकार करत हैं.

तातें मारगकी मर्यादा प्रमान सेवा करनी तो श्रीठाकुरजी प्रसन्न होंइ. श्रीआचार्यजी श्रीगुसांईजीकी कानि याही प्रकार प्रभु माने. जो श्रीआचार्यजी

श्रीगुसांईजीकी मर्यादा अनुसार सेवा होंइ. नांतरु प्रभु पुष्टि - प्रकार सों अङ्गीकार करत नाहीं. यह सिद्धान्त भयो.

ता पाछें वा वैष्णवने श्रीगुसांईजीसों पूछ्यो, जो महाराज ! अब तो भयो सो तो भयो. परि यह अपराध अब कैसें छूटे ? तब श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो अब एक संवत्सर पर्यन्त नित्य विरह ताप - कलेस करे, जो हों वैष्णव तें बाहिर पर्यो. और मनमें तो आचार - धर्म ठीक राखिकै करें. परि उपर लौकिकमें वैष्णवनमें विरक्तता दिखावें. तब सब कोऊ तेरी निन्दा करे. ता पाछें तू मेरी पास आईयो. सो वाने एक संवत्सर श्रीगुसांईजीने कह्यो ऐसें कियो. तब वाकी निन्दा हू बोहोत ही भई. ता पाछें श्रीगुसांईजीने वाकों अष्टाक्षर उपदेश फिरिकै दीनो. पाछें वैष्णवसों कह्यो, जो अब तुम याकौ परस करो. सो यह ऐसी बात हैं.

भाव प्रकाश :
यामें यह जतायो, जो पुष्टिमार्गमें विरह - ताप ही मुख्य हैं. तातें सगरे दोष छिनमें निवृत्त होत हैं. जीव शुद्ध होत है. और निन्दा तें अप्रसन्न होनो नाहीं. काहेतें, निन्दा दोषकी निवृत्ति करनहारी है.

सो वे दोउ विरक्त वैष्णव श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र सेवक हे. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।७१।।

७२-एक साठोदरा नागर ब्राह्मण

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक नागर साठोदरा ब्राह्मन, गुजरातकौ, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये गोधरा तें कोस दस परेमें एक गाम है, तहां एक द्रव्यपात्र नागर ब्राह्मनके जन्म्यो. सो यह लरिका बरस पांचकौ भयो तब इनके माता - पिता दोउ मरे.

तब उनकौ एक काका हतो. सो वह यह लरिकाकों अपने पास राख्यो. पाछें यह बरस अठारहकौ भयो तब वह काका हू मर्यो. तब यह सब द्रव्य लै गोधरा आई रह्यो. तहां इनकों राग - रङ्ग कौ इस्क लाग्यो सो वेश्या - भवैयानमें जान लाग्यो. नृत्य गान हू करन लाग्यो. या प्रकार रहे. पाछें एक दिन या ब्राह्मनसों एक वैष्णवकौ मिलाप भयो. सो बात करत में वैष्णवने याकों दैवी जीव जानि कह्यो, जैसो मन राग - रङ्गमें है तैसो ठाकुरमें लागे तो कारज होंई. तब या नागर ब्राह्मन पूछ्यो, जो ठाकुर कौनकों कहियत हैं ? तब वाने कह्यो, जो ठाकुर श्रीकृष्ण हैं. जिननें ब्रजमें प्रगट होंइकै ब्रज - गोपिन तें रास कियो हैं. ऐसें वे रसिक सिरोमनी हैं. सो उनमें मन लगे तो कारज होंई. नांतरु सब वृथा हैं. ता पाछें फेरि या नागर पूछ्यो, जो उनमें मन कैसे लगावें ? तब वा वैष्णवने कह्यो, जो वे सब रसके भोक्ता हैं. तातें या जगतमें जो कछू उत्तम पदार्थ हैं, ताकौ वेही भोग करत हैं. यासों तुम उनकों उत्तम उत्तम सामग्री सुन्दर, उत्तम वस्त्र, बीरा, सुगन्ध, आभूषन आदि समर्पो. और उनके आगें नृत्य - गान हू करो. या प्रकार मन लगाउ. ये सब राग - रङ्ग उनके लिये करोगे तो फल - रूप होईगो. नांतरु ये सब बन्धन करनहारे हैं. संसारकौ उत्पन्न करत हैं. पाछें नरकमें लै जात हैं. ता पाछें या नागरने फेरि पूछ्यो, जो - ये सब प्रभु अङ्गीकार कैसें करें ? तब वा वैष्णवने कह्यो, जो आज काल्हि श्रीठाकुरजी श्रीगुसांईजीके बसमें हैं. तातें श्रीगुसांईजीकी सरनि जाईवे तें उनकी कानि तें ये सब अङ्गीकार करत हैं.

तब या नागरने वासों पूछ्यो, जो श्रीगुसांईजी कौन हैं, कहां रहत हैं ? सो कृपा करि मोकों कहिए. तब वा वैष्णवने कह्यो, जो श्रीगुसांईजी श्रीवल्लभाचार्यके पुत्र हैं. उनकौ नाम श्रीविटठलनाथजी हैं. ये ईश्वर हैं. सो श्रीगोकुलमें रहत हैं. तब या नागरने अपने मनमें निश्चय कियो, जो अब तो इनके सरनि अवस्य जानो. पाछें वा वैष्णवसों कहे, जो तुम हमकों श्रीगुसांईजीके सरनि जांइवेकौ प्रकार कहो. हम श्रीगोकुल जांइकै उनके सरनि होंई. तब वा वैष्णवने कह्यो, जो सरनिकौ प्रकार तो श्रीप्रभु आप तुमकों समुझावेंगे. परि एक बात हों कहत हों, जो श्रीगुसांईजी कछूक दिनमें यहां पधारेंगे. ऐसी खबरि आई हैं. सो उनकौ बधैया गाममें आयो है. और विशेष समाचार तो नागजी भटट जानत हैं. तातें तुम नागजी भटटकों मिलो. उनकौ सङ्ग करो. वे श्रीगुसांईजीके बड़े कृपापात्र भगवदीय हैं. तातें उनके सङ्ग तें तुम्हारो कारज हू होइगो. ता पाछें यह नागर ब्राह्मन नागजी भटटके घर गयो. सो नागजी भटट सों सब समाचार कहे. तब नागजी भटट कहे, जो तुम कछू चिन्ता मति करो. प्रभु तो परम दयाल हैं. अपने जीवकौ अङ्गीकार आप करत हैं. आज काल्हि में वे यहां पधारेंगे. तब तुम उनके सेवक हूजियो. या प्रकार नागजी वाकौ समाधान किये. पाछें वह नागर ब्राह्मन अपने घर आयो. परि वाकों चित्तमें चैन परे नाहीं. नित्य प्रति सांझ - संवार नागजी भटटके घर आवे. श्रीगुसांईजीके समाचार पूछे. ऐसें करत कछूक दिनमें श्रीगुसांईजी गोधरा पधारे. तब

नागजी भटटने याके सब समाचार श्रीगुसांईजीसों कहे. तब श्रीगुसांईजी याकी ओर देखि कहे, जो जीव तो उत्तम है. पाछें याकों न्हवाई नाम - निवेदन कराए. तब यह नागर ब्राह्मन श्रीगुसांईजीसों बिनती कियो, जो महाराज ! भगवत्सेवा पधराय दीजिये. तब श्रीगुसांईजी कृपा करि वाकों श्रीमदनमोहनजीकौ स्वरूप पधराइ दिये. पाछें सब सेवाकी रीति बताए. ता पाछें आज्ञा किये, तो राग - रङ्ग पूर्वक इनकी सेवा करियो. श्रीठाकुरजी आप तो पर प्रसन्न होइंगे. सो या प्रकार प्रभु आप आशीर्वाद दिये. पाछें वह नागर श्रीगुसांईजीकों भेंट धरि श्रीठाकुरजीकों पधराई अपने घर आयो. सो भली भांतिसों सेवा करन लाग्यो. और वा वैष्णवकौ नित्य सङ्ग करन लाग्यो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वा गाममें एक वैष्णव हतो. थोरीसी दूरि रहतो. सो वाके और याके दोउनकौ परस्पर मेल हतो. सो रात्रिकों मिलि बैठें, वार्ता करें. और जल दोउ जनें परस्पर रहिकै साथ ही भरें. तब वह वैष्णव वाके घरके आगें होंइकै निकसे. तब वाकों पुकारे. सो एक दिना दोउ आपसमें मिलिकै जल भरनकों जाते. सो मार्गमें एक वेश्याकौ घर हतो. सो वाकें एक छोरी परम सुन्दर हती. बरस बारह - तेरह की हुती. सो वाकों नृत्य सिकावते, गान सिखावते. सो घूंघरू पांवनमें बांधिकै वे घरमें नृत्य करत हती. पखावज बाजें. सो इन वैष्णवनें देख्यो. तब वहां ठाढ़ो व्है कै वा वेश्याकी छोरीकों देखें. सो देखें तो दैवी जीव है. वाके मुख पर भगवत तेज बिराजत है. तब ए वैष्णव उहां गागरि लिये ही उहां वाकों देखनकों ठाढ़ो भयो. सो वाकों निरखिकै देखें. तब वा साथके वैष्णवनें यासों कह्यो, जो इहां ठाढ़ौ रहनो उचित नाहीं, तातें चलिये. तब वा वैष्णवनें कह्यो, जो नेक तो ठाढ़ो रहि, यहां कछूक कौतिक है. ता पाछें वा वैष्णवने कह्यो, जो हों तो जात हूं, तुम पाछें तें आईयो. वेसें कहि कै ये तो चल्यो. सो जल भरिकै अपने घर आयो. ता पाछें अपनी स्त्रीसों सब समाचार कहे, जो सुनि, अमूको वैष्णव तो विषयी दीसत है. अब ही याकौ विषय गयो नाहीं. मार्गमें वेश्याके द्वार ठाढ़ो है. विषयमें लुब्ध भयो है. तातें अब याकी सङ्गति उचित नाहीं. तातें वह अपुने द्वारें पुकारे, तब तू नाहीं करियो. वे तो घर नाहीं ऐसें कहियो.

ता पाछें वह वैष्णव नागर ब्राह्मननें वह छोरीकों दैवी जीव देखिकै वाकी मातासों कह्यो, जो तेरी छोरीकों आज रात्रि मेरे घर पठावेगी ? चारि पहर रहन देई. तब वानें कह्यो, जो सुखेन राखि. परि एक मोहौर सोनेकी लेहुंगी. तब वानें कह्यो, जो भले, बुलावनकों आउंगो. ता

पाछें श्रीठाकुरजीकों उत्थापन - भोग धरि पाछें सन्ध्या - आर्ति करिकै पाछें वा वेश्याके घर गयो. वाकी छोरीकों अपने घर बुलाइ ल्यायो. ता पाछें वाकों सरीरकौ उबटना करिकै न्हवाई. ता पाछें सरीर माथो पोंछिकै आभुखन सब पहिरायकै नवीन वस्त्र सारी चोली पहिराइकै ता पाछें मन्दिरके द्वार सानिध्य बैठारिकै कानमें अष्टाक्षर मन्त्र कह्यो. पाछें माला पहिरायकै श्रीआचार्यजी तथा श्रीगुसांईजी तथा श्रीगोवर्द्धननाथजी तथा अपने सेव्य स्वरूपकौ चरनामृत दीनो. ता पाछें महाप्रसाद दीनो. तब वह वेश्याकी छोरी संस्कृत बोलन लागी. ता पाछें आप न्हायकै श्रीठाकुरजी पास तें खिलौना चोपड़ उठायकै जलकी झारी भरी. पाछें भोग, बीरा, सिंघासनके उपर धरिकै दीया दौई श्रीठाकुरजी पास मन्दिरमें चौमुखा राखे. दीया मन्दिरके बाहिर द्वार पर हू राखे. ता पाछें वेश्याकी छोरीसों कह्यो, जो अब तू श्रीआचार्यजीकौ चिन्तन करि, श्रीगुसांईजीकौ चिन्तन करि, दण्डवत् करिकै मन ठिकाने राखिकै, जैसी तो में सामर्थ्य - पराक्रम होंइ, तोकों आतव होंइ, सो राखे मति. श्रीठाकुरजीके आगें कछू प्रपञ्च मति राखे. पाछें वह दण्डवत् करिकै नृत्यकौ प्रारम्भ कियो. पाछें वह दण्डवत् करिकै रासके कीर्तन गावन लाग्यो. शरद रितु हती. सो वेश्याने अलापचारी करी. श्रीआचार्यजीकौ तथा श्रीगुसांईजीकौ नाम लेत ही वाके सरीरमें भगवत् आवेस भयो. और संस्कृत 'रास पञ्चाध्याई'के श्लोक बोलन लागी. सो देह - भाव भूली. सो चारि प्रहर नृत्य भयो. सो वह वैष्णव और वह वेश्या और श्रीठाकुरजी रसाविष्ट भए. सो ये दोउ देहाध्यास भूले. सो प्रातःकाल भयो. तउ सुधि ना रही. और वा वेश्याकी छोरीकों बुलावन आए. सो वाकों पुकारि किवाड़ ठोककै गए. ता पाछें थोरीसी बेरकों एक वैरागी ताके झालर बाजी, तब सुधि भई. जो इतनो दिन चढ्यो है. ता पाछें स्नान करिकै मन्दिरमें गयो. रसोई सिंगार करिकै श्रीठाकुरजीकों राजभोग धर्यो. ता पाछें महाप्रसाद लै कै पाछें अपरस ही में जल भरन गयो. सो वा वैष्णवकों पुकारें. परि काहूने उत्तर नाहीं दियो. तब किवाड़ झंझोर्यो. तब वाकी स्त्री बोली, जो वे तो घर नाहीं. ता पाछें रात्रिकों उह वैष्णव आयो नाहीं. तब यानें मनमें विचार्यो, जो भाई ! वानें मेरो दोष विचार्यो. तब मनमें ताप भयो. जो वैष्णवनकौ सङ्ग छूट्यो. सो भली नाहीं भई. ता पाछें वा वैष्णवकी स्त्रीसों श्रीठाकुरजीने कह्यो, जो हम तो श्रीगोकुलकों जात हैं. तब वा स्त्रीने कह्यो, जो काहेकों जात हो ? तब श्रीठाकुरजीने कह्यो, जो तेरे धनीनें वा वैष्णवसों काहेकों बिगारी ? वे तो अलौकिक वैष्णव है. वानें श्रीठाकुरजी आगें नृत्य करवायो. सो वह वेश्याकी छोरी हू अलौकिक है. सो दोष मनमें ल्यायकै बिगारी, तातें हम जात हैं.

भाव प्रकाश :

काहेतें, यह ब्राह्मन लीलामें ‘ब्रजनागरी’ है. श्रीचन्द्रावलीजूकी अन्तरङ्ग सखी हैं. श्रीचन्द्रावलीजीके साथ रासमें गान करति हैं. ये ‘चित्रलेखा’ तें प्रगटी है. उनके राजस भावकौ स्वरूप हैं. और यह वेश्याकी छोरी ‘ब्रजनागरी’की सहचरी ‘नृत्यनिपुना’ हैं. सो ये नृत्यमें बोहोत निपुन हैं. सो जा समै ‘ब्रजनागरी’ गान करति हैं ता समै ये नृत्य करति हैं. सो एक समै श्रीठाकुरजी इनकों नृत्य करनकों कहे. तब इन कही, जो मैं अब ही तो नृत्य करूंगी नाहीं. मेरे काम है. तातें श्रीठाकुरजी अप्रसन्न भए. ता अपराध तें यह वेश्याके इहां जन्मी. परि यह ब्राह्मननें याकों पहिचानी. सो इनकों या प्रकार उद्धार कियो. सो बात तो यह वैष्णव जानत नाहीं. तातें उपरकी चेष्टा देखि अभाव कियो. सो श्रीठाकुरजी वाकों न जताये. परि श्रीगुसांईजीकौ अङ्गीकृत हैं तातें इनकी स्त्रीकों जताये. सो या प्रकार वा पर अनुग्रह कियो.

तब वा स्त्रीनें श्रीठाकुरजीसों कह्यो, जो महाराज ! आप तो पांव मति धारो. हों मेरे धनीसों कहिकै वा वैष्णवके इहां पठावत हों. ता पाछें वा स्त्रीनें अपने धनीसों सब समाचार कहे, श्रीठाकुरजीनें कह्यो सो सब बात कही. ता पाछें वह तुरत ही उठिकै वा वैष्णवके घर आयकै पुकार्यो.

भाव प्रकाश :

काहेतें, ये दोउ स्त्री - पुरुष दैवी जीव हैं. लीलामें ये दोउ ‘ब्रजनागरी’की सहचरी हैं. स्त्रीकौ नाम ‘भामिनी’ है. और पुरुषकौ नाम ‘ब्रजदेवी’ है. तातें इनकों अपनो दोष स्फुर्यो. तब स्वरूपकौ ज्ञान भयो. सो तुरत वा वैष्णवके घर आय पुकार्यो.

तब वा वैष्णवने किवाड़ खोले तब याके पांवन परि रह्यो. और कह्यो, जो मेरो अपराध क्षमा करो. हों चुक्यो हों तुम्हारो अपराध विचार्यो. ता पाछें दोउ जन मिलि भगवद् वार्ता करि आनन्द भयो.

भाव प्रकाश :

सो या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो तादृशी वैष्णवकी कृति नाहीं देखनी.

सो वह वैष्णव नागर ब्राह्मन श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हुतो. सो उनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।७२।।

७३-वेश्याकी छोरी

अब श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी वेश्याकी छोरी, जानें श्रीठाकुरजी आगें नृत्य कियो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं.

भावप्रकाश :
ये 'तामस' भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'नृत्य - निपुना' है. सो साठोदरा ब्राह्मनकी वार्तामें उपर कहि आए हैं. ये नन्दरायजीके गांइनमें 'मदोन्मत्त' बिजार हैं ताके भाव - रूप हैं. सो बिजार श्रीठाकुरजीकौ स्वरूप हैं. काहेतें, ये गांइनमें स्वच्छन्द बिहार करत हैं. सो कैसें, जैसें श्रीठाकुरजी ब्रजभक्तनमें विहार करत हैं ता भांति. और गांइ है सो ब्रजभक्तनकौ स्वरूप हैं. ब्रजभक्तके जैसें नेत्र हैं ऐसें इनहू के नेत्र हैं, कजरौटे. ब्रजभक्तनकौ जैसो मुग्ध भाव है ऐसो इन हू कौ है. जब श्रीठाकुरजी बेनु बजावत हैं तब ब्रजभक्त सब कारज छोरि वा बेनुके नादकौ एक ध्यान व्है श्रवन करत हैं, सब सुधि बुधि बिसर जाति हैं. ताही भांति ये गांइ हू तृन आदि छोरिकै उंचे कान करि एक चित्तसों बेनुके नादकों सुनत है. नादामृतकौ कान रूपी दोनन तें पान करत हैं. तातें ये ब्रजभक्तके भावरूप हैं. याही तें श्रीठाकुरजीकौ गांइ बोहोत प्रिय हैं. सो छीतस्वामी गाए हैं -

राग : पूर्वी
आगें गांइ पाछें गांइ इत गांइ उत गांइ,
गोविन्दाकों गांइनमें बसिवोई भावें ।।
गांइनके सङ्ग धावें गांइनमें सचुपावें,

गांइनकी खुर - रेनु अङ्ग सों लगावें ।।
गांइन सों ब्रज छायो वैकुण्ठ विसरायो,
गांइनके हेत गिरि कर लै उठावें ।।
‘छीतस्वामी’ गिरिधारी विटठलेस वपु धारी,
ग्वारियाकौ भेख किये गांइनमें आवें ।।

सो ये ‘नृत्यनिपुना’ श्रीठाकुरजीकी अन्तरङ्ग सखी हैं. तातें श्रीठाकुरजी इन पर सदा प्रसन्न रहत हैं. इन अपने नृत्य करि श्रीठाकुरजीकों बस किये हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ः

सो या वेश्याकी छोरीने वा वैष्णव तें नाम पायो. सो बात तो उपर कहि आए. पाछें सवारो भयो तब वाके घरके मनुष्य बुलावन आए तब वाकों पुकारें. परि वह वेश्याकी छोरी कछू उत्तर देवे नाहीं, बोले नाहीं. ता पाछें वाकों घर ले गए. पाछें याकी माता तथा लोग कछू पूछे, पुकारें, परि उत्तर कछू नाहीं देई. बावरी सी नेत्र फेरिकै देखें. तब सब कोऊ कहें, जो ए तो बावरी भई है. याकों कछू भयो है. ता पाछें वेश्याने बुलाइकै घने - घने उपाय किये. परि कछू होवे नाहीं. पाछें सगरेनसों नजर चुकायकै वा वैष्णवके घरकों गई. ता पाछे वहां आछें बोलि, बात करि, उहां महाप्रसाद लियो. पाछें वाके घरके लोग सगरे ढूंढि हारे. तब काहुनें उहां बताई. सो उहां तें घरके मनुष्य आइकै ले गए. फिरि पाछें और हू दृष्टि चुकाइकै वैष्णवके घर आई. तब वाकी माता और घरके लोग सब वा वैष्णवसों लरे. राजद्वार वा वैष्णवकों ले गए. राजद्वार पुकारें, कहें, जो याने ना जानें कहा कियो, सो हमारी छोरी रात्रि याके घर रही और बावरी भई है. तब वा हाकिमने वा वैष्णवसों पूछ्यो. तब वा वैष्णवनें कह्यो, जो मैं तो कछू कर्यो नाहीं. हों याकों बावरी काहेकों करों ? ये तो मेरे घर आये पहिले ही ऐसी है. और बावरी कों हों कहा करो ? मेरे बावरी करिकै कहा करनो है ? ये तो मेरे घर ऐसें ही आइकै बैठे है. तब हों याकों भूखी कैसें राखों ? सो हों दोइ रोटी देत हूं.

मेरे कछू यासों प्रयोजन नाहीं. पाछें राजद्वारके लोगन हू कह्यो, जो याकों कहा परी है, जो तेरी छोरीकों बावरी करे. और यह बावरी करिकै कहा करेगो ? ता पाछें वह घर गई. तब बावरी सी दीसें कछू बोले नाहीं. तब सब कोऊ घरके मनुष्य वासों दिक भए. और कह्यो, जो ये तो हमारे कामसों गई. अब याकों खवावनो वृथा है. ता पाछें वा वैष्णवके घर जांइ तो वाकों कोऊ बुलावे नाहीं. और कदाचित् घरके लोग तथा और कोऊ अन्यमार्गीय बुलावें, बतरावें, तो वासों बावरी बात करें, कछू कौ कछू उत्तर देहि. नांतरु बोले नाहीं. तातें सब कोऊ लौकिकमें तो जानें, जो बावरी है. और अलौकिकमें तथा वा वैष्णवके साथ भगवद् वार्तामें सेवामें तथा श्रीठाकुरजीके सानिध्यमें तो घनी चतुर घनी हुंसियार रहे. ता पाछें केतेक दिनकों श्रीगुसांईजी उहां पांव धारे. तब वह उन साथकौ वैष्णव हतो तहां उतरे. तब वह वैष्णव और वह वेश्या श्रीगुसांईजीके दरसन किये. ता पाछें दरसन करिकै श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! याकों नाम - निवेदन कृपा करिकै दीजें. और सब समाचार वा वेश्याके श्रीगुसांईजी आगें कहे. तब श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो अब तैनें नाम तो दीनो है. तब वा वैष्णवने कही, जो महाराज ! मैंने नाम दीनो है सो आपकौ सुमिरन करिकै और भगवदर्थ कार्य जानिकै दीनो है. कार्य तो कर्यो चाहिए. तब श्रीगुसांईजीने कृपा करिकै वा वेश्याकों नाम - निवेदन करवायो. ता पाछें वह भली वैष्णव अलौकिक कृपापात्र भगवदीय भई. सो वा वैष्णवके, अहर्निश सब सेवा सम्बन्धी कार्य परचारगी करे. रात्रिकों दोउ जनें भगवद्वार्ता कीर्तन करें. ता पाछें वा वैष्णवकौ द्रव्य निघट्यो. सो उदरार्थ व्यावृत्तिकों जांई. तब श्रीठाकुरजी मन्दिरमें तें याकों पुकारे. और कहे, जो अमूकी ! तू इहां आऊ. तब यह मन्दिर खोलिकै जांइ. तब उहां श्रीठाकुरजी वासों बात करे, हंसे, बोलें, हास्यादिक करे. और हू अनिर्वचनीय सुख दें. सो कह्यो न जांइ. और कदाचित् यह सेवामें होंइ और जांइ नाहीं सके तो श्रीठाकुरजी मन्दिर तें याके पास आई बैठें. ऐसें नित्य करें.

सो एक दिना वह श्रीठाकुरजीके मन्दिरमें बैठिकै हांसी करत हती. इतनेमें वह वैष्णव आयो. तब वानें वेश्याकों कह्यो, जो तें साम्हें मन्दिरके किवाड़ क्यों खोले ? और तू बिनु अपरस कैसें मन्दिरमें गई. सो गारी दीनी. खीझ्यो बोहोत ही. तब श्रीठाकुरजी बोले, जो तू याकों काहेकों खीजत है ? याकों तौ मैं कह्यो तब यानें किवाड़ मन्दिरके खोले. और मैं बुलाई तब मन्दिरमें आई है. ता पाछें वा वैष्णवने श्रीठाकुरजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै बिनती करी, जो महाराज ! मैं चूक्यो सो मैं यासों कह्यो. अब कछू कहों नाहीं. ता पाछें

श्रीठाकुरजी कह्यो, जो याकों मेरो सिंगार - सेवा करन देउ. मेरी आज्ञा है. इतनी लौकिक कहा परी है ? ता पाछें वेश्या माथें तें न्हाइकै अपरस वस्त्र पहरिकै तिलक करिकै सिंगारादि सब करिकै पाछें मन्दिर सम्बन्धी सेवा करन लागी. वह वैष्णव रसोई करें. और श्रीठाकुरजीकों भोग धरें. और परोसें. और सब काज या बाई करें. सो परम सनेह संयुक्त कारज करे. तातें श्रीठाकुरजी या बाई पर बोहोत प्रसन्न रहते. और वैष्णव पहोंचिकै उदर निर्वाहार्थ जांइ तब यह बाई किवाड़ मारिकै सेवा करें. तब श्रीठाकुरजी याके पाछें - पाछें फिरे. और ये जहां बैठे तहां श्रीठाकुरजी हु बैठें. सो यानें अपने पास एक मांची करिकै राखी ही. ता पर श्रीठाकुरजी आय बैठें, बात करें, और हु सुख देहि. ऐसें नित्य करें. सो जो बात होंइ सो रात्रि सब वा वैष्णवसों कहें. पाछें वह वैष्णव या बाई पर सदा प्रसन्न रहे. रसोई सामग्री जो करें सो या बाई सों पूछिकै करें. यह बाई कहें सो श्रीठाकुरजीकों घनि रुचिसों श्रीठाकुरजीकों रूचे वेसो करें. श्रीठाकुरजीके मनकी बात यह बाई जानें. ऐसी केतिक बातें हैं सो अनिर्वचनीय हैं. सो वह बाई श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी ऐसी कृपापात्र भगवदीय भई. इनकी वार्ता कहां तांई कहिए.

भाव प्रकाश :

या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो पुष्टिमार्गमें कछू नियामक नाहीं. प्रभुनकौ अनुग्रह ही नियामक है. सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु 'सिद्धान्तमुक्तावली' ग्रन्थमें आज्ञा किये हैं, सो श्लोक

अनुग्रहः पुष्टिमार्गे नियामक इति स्थितिः ।

तातें इहां छोटो बड़ो कोऊ नाहीं. जा पर कृपा होंइ जांइ सोई बड़ो. सो या वैष्णवके सङ्ग तें वा वेश्याकी छोरी पर श्रीठाकुरजीकी कृपा भई. सो ऐसी भई, जो या वैष्णव हू तें ज्यादा भई. तातें या मार्गमें प्रभु कुल, जाति, कृति कछू देखत नाहीं. जो कोऊ श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीके सरनिमें आवत हैं ताकौ प्रभु अपने प्रमेय बल तें उद्धार करत हैं. याही देहसों स्वरूपानन्दकौ दान करत हैं. ब्रजभक्तनकी गतिकों प्राप्त करावत हैं. सो यह पुष्टिमार्ग ऐसो है. वार्ता ।।७३।।

७४-वाघाजी रजपूत

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक वाघाजी राजपूत, गुजरातकौ बासी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
सो ये वाघाजी राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'चारुमति' है. सो 'मदोन्मत्ता' के भावरूप हैं. ताकी एक सखी हैं. वाकौ नाम 'चारुमुखी' हैं. सो यहां वाघाजीकी स्त्री भई. सो दोउनमें अत्यन्त स्नेह है. ये दोउ श्रीठाकुरजीकी अन्तरङ्ग सखी हैं.

सो गुजरातके एक गाममें ये दोउ रजपूतके इहां जन्मे. सो बरस आठ - दस के भए तब दोउनके माता - पिताने दोउनकौ ब्याह कियो. पाछें कछूक दिनमें स्त्री बड़ी भई तब अपने घरकों आई. सो वाघाजीकी स्त्री बड़ी सुपात्र पतिव्रता हती. सो वाघाजीकी आज्ञामें रहे. पाछें वाघाजी बरस बीसके भये तब राजमें चाकर रहे. सो एक दिन श्रीगुसांईजी द्वारकाजीकों पधारत हे. सो मार्गमें वाघाजीकौ गाम आयो. तहां श्रीगुसांईजी आप ड़ेरा किये. सो वाघाजीने श्रीगुसांईजीके साथ रथ, घोड़ा मनुष्य बोहोत देखे. तब वाघाजी श्रीगुसांईजीके मनुष्यन तें पूछे, जो ये कौन राकाजी फौज आई है ? आज कहा है ? तब एक ब्रजबासीने कह्यो, जो ये राजा नाहीं. ये राजानके हू राजा महाराजाधिराज हैं. आचार्य हैं, जगतगुरु हैं. बड़े - बड़े राजा इनके सेवक हैं. तब वाघाजीने पूछ्यो, जो इनकौ नाम कहा हैं ? ये कहां रहत हैं ? तब ब्रजबासीने कह्यो, जो ये श्रीविटठलनाथजी श्रीगुसांईजी हैं. ये श्रीगोकुलाधिपति हैं. तब तो वाघाजीकों श्रीगुसांईजीके दरसनकी उत्कण्ठा भई. पाछें वा ब्रजबासीसों कही, जो तू मोकों इनके दरसन करावेगो ? तब उन कह्यो, जो देखि वे ठाढ़े हैं. तब वाघाजी देखे तो साक्षात् श्रीगोवर्द्धनधर ठाढ़े हैं. ऐसो स्वरूप तेज - प्रताप देख्यो. तब तो वाघाजी आय श्रीगुसांईजीकों बिनती कियो, जो महाराज ! मोकों कृपा करि अपनो सेवक कीजिए. आज मेरे भाग्य उदय भए जो साक्षात् कोटि कन्दर्पलावन्य पूरन पुरुषोत्तमके दरसन भए. तब श्रीगुसांईजी वाघाजीकों दैवी - जीव जानि सरनि लिये. पाछें वाघाजीनें बिनती करी, जो महाराज ! मेरे घर पधारिकै मेरी स्त्रीकों हू सरनि लीजिए. पाछें श्रीगुसांईजी वाघाजीकौ बोहोत आग्रह देखि कृपा करि उनके घर पधारे. पाछें स्त्रीकों नाम सुनायो. पाछें दोउनकों उपवास कराय दूसरे दिन निवेदन करवाए. ता पाछें वाघाजीने बिनती

करी, जो महाराज ! कृपा करि भगवत्सेवा पधराय दीजिए. तो हम सेवा करें. तब श्रीगुसांईजी उनकों भगवत्स्वरूप पधराय दियो. और वाघाजीके घरके पास एक वैष्णव रहत हुतो. सो श्रीगुसांईजीकौ सेवक हुतो. सो श्रीगुसांईजी वाघाजीसों आज्ञा किये, जो या वैष्णवसों सब सेवाकी रीति पूछि लीजो. ता पाछें श्रीगुसांईजी तो उहां तें विजय किये. सो वाघाजी रजपूत वा वैष्णवके पास तें सब सेवाकी रीति सीखे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वह वाघाजी रजपूत और उनकी स्त्री दोउ जनें श्रीठाकुरजीकी सेवा नीकी भांतिसों करते. सामग्री घनी सुन्दर नवीन करिकै श्रीठाकुरजीकों समर्पते. सो नित्य वैष्णवकों लिवावते. नित्य एक दो वैष्णव महाप्रसादकों आवते. उनके नेम हुतो. जो कोऊ वैष्णव महाप्रसादकों कदाचित् न आवें ता दिन उपवास करें, महाप्रसाद सब गांइकों देही. और स्त्री आप भूखे सोई रहें. ऐसें उनकौ नेम हुतो.

और वाघाजी राजद्वारमें चाकर हुते. सो एक दिना श्रीठाकुरजीकों तवापूरी चनाकी दारकी सखड़ीमें करी. और सवारें उठिकै एक वैष्णवकों न्यैत्यौ. सो श्रीठाकुरजीकों सिंगार करिकै सिंगार - भोग धरिकै बाहिर आए. इतने ही राजद्वारकौ मनुष्य आइकै कह्यो, जो राजाकी अब असवारी सीघ्र सिकारकों जात है. सो तुमकों बेगि बुलाये हैं. तब वाघाजीने अपनी स्त्रीसों कह्यो, जो हों तो राजाकी अब असवारीमें जात हों सो अब `रि - सुदोसो आऊंगो. तातें तुम राजभोग श्रीठाकुरजीकों धरि भोग सरायकै आर्ति अनोसर करिकै वा अमूक वैष्णवकों मैं न्यौत्यौ है सो हों वाकों कहत जात हों, सो तुम बेगि ही जइयो. सो वह आवेगो. सो वाकों महाप्रसाद लिवायकै ता पाछें महाप्रसाद ढांकि राखियो. जब हों आऊंगो तब आपुन महाप्रसाद लेइंगे. ऐसें कहिकै वस्त्र पहरिकै हथियार बांधिकै घोड़ा उपर जीन करिकै असवार होंइकै चले. तब मार्गमें वैष्णवकौ घर हुतो. सो वाकों पुकारिकै कह्यो, जो तुम बेगि घर जांइकै महाप्रसाद लीजियो. हों तो राजाकी असवारीमें जात हों. ता पाछें स्त्रीनें श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो. सो घ्यो हो थोरोसोक वाके पास. सो श्रीठाकुरजीकों समर्प्यो. ता पाछें वह वैष्णव बेगि ही आयकै बैठि रह्यो. ता पाछें श्रीठाकुरजीने वाघाजीकों राजाकी असवारीमें जनायो, जो तवापूरीमें घ्यो थोरोसोक है सो मेरे गरेमें खूंचत है. सो मैं कैसें अरोंगों ? तब वाघाजी रजपूतनें घोड़ा तुरत ही घरकी और कों फेर्यो. और घोड़ाकों ऐंड़ दीनी. और चाबुक द्वे चारि खेंचिकै मारे. तब घोड़ा भाज्यो. सो तुरत ही वायुवेगसों घर आयो. ता पाछें तुरत ही घोड़ासों उतरि घरमें आयकै घृतकौ पात्र लीनों.

सो बजारसों घृत ल्यायकै घरमें आयकै टेरा सरकायकै नेत्र मूंदिकै बटेरामें घ्यो भोग धर्यो. ता पाछें आप तुरत ही घोड़ापें असवार होंइकै घोड़ाके ऐंड़ करिकै राजाकी असवारीमें जांइ मिले. सो उतावलिमें पनही की हू सुधि न रही. सो ता पाछें सुधि आई, जो देखो ! हों पनही पहिरे ही मन्दिर में गयो. सो उचित नाहीं कीनो. ता पाछें वह वैष्णव बैठ्यो हतो सो वानें देख्यो, जो पनही पहिरे ही मन्दिरमें गयो. सो याकों कछु आचारकौ ठीक नाहीं. तातें इनके बिनु जाने महाप्रसाद लियो, सो तो लियो. परि अब लेनो उचित नाहीं. ऐसें विचारिकै उहां तें अनबोले ही उठिकै अपने घर आयो. ता पाछें अपनी स्त्रीसों सब समाचार बात कहे. और कह्यो, जो वाघाजी रजपूत तथा वाकी स्त्री बुलायवेंकों आवें तो सुखेन नाहीं करि कहियो, जो वे तो महाप्रसाद लै कै कहूं गाम गए हैं. कछू लौकिक व्यवहार कार्यार्थ गए हैं. ता पाछें वाघाजी रजपूतकी स्त्री तो कछू यह बात जानें नाहीं. वे तो भीतर रसोई पोतती हती. सो पहोंचिकै भोग सरावनकों गई. तब देखे तो मन्दिरमें घृतका बटेरा भर्यो है. तब मनमें आश्चर्य होंइ रही, जो यह कहा है ? मति श्रीठाकुरजी ल्याये होंइ. ता पाछें राजभोग सरायो. आर्ति अनोसर करिकै ता पाछें बाहिर आई देखें तो वैष्णव नाहीं. तब द्वारें आइकै पुकारी. तब कोऊ बोले नाहीं. तब द्वारें आइकै पुकारी. तब कोऊ बोले नाहीं. ता पाछें वह स्त्री कपड़ा पहरिकै वा वैष्णवके घर बुलावनकों गई. तब द्वारिपै द्वे - चारि बेर पुकारी. तब वा स्त्रीनें कह्यो, जो वे तो कछूक तुरत उतावलो कार्य हो सो घर महाप्रसाद ले कै गामकों गए हैं. तब वह आय महाप्रसाद ढांपि आप और सेवामें लागी. ता पाछें उत्थापनकों वाघाजी रजपूत घर आए. तब स्त्रीसों पूछ्यो, जो वह वैष्णव महाप्रसाद लै गयो ? तब स्त्रीनें नाहीं करी. और कह्यो, जो वे तो इहां आयकै बैठ्यो हो, सो मैं राजभोग धरिकै बाहिर आई तब बैठ्यो देख्यो. और राजभोग सरावन गई तब देखों तो इहां तो कोई नाहीं. ता पाछें आर्ति अनोसर करिकै वा वैष्णवके घर गई. तब वा वैष्णवकी स्त्रीनें कह्यो, जो वे तो महाप्रसाद लै कै गाम गए. ता पाछें घर आयकै महाप्रसाद धर्यो है ढांपिकै. और स्त्रीने पूछ्यो, जो न जानें मन्दिरमें घृतकौ कटौरा भरिकै कौन धर्यो है ? तब वाघाजी रजपूतने कह्यो, जो मोकों श्रीठाकुरजीनें जनायो, जो रूखी तवापूरी मेरे गरेमें खूंचत हैं. घ्यो थोरो है. तब तुरत ही आयकै घ्यो धरिकै ता पाछें हों असवारीमें गयो. तब वह वैष्णव बैठ्यो देखि गयो हैं. परि मोकों उतावलिमें कछू पनही की सुधि न रही आई. सो पनही पहिरे ही मन्दिरमें घ्यो धर्यो. सो मोकों पाछें उहां गयो तब सुधि आई. तब ही हों मनमें विचार्यो, जो मति वा वैष्णवके मनमें आवें. सोई भयो. सो उह आचारकौ विचारि करि पाछो गयो.

पाछें वाघाजी रजपूत वा वैष्णवके फेरिकै घर आय बुलावन गए. परि वह वैष्णव घरमें मिल्यो नाहीं. वाकी स्त्रीनें कह्यो, जो वे तो आये नाहीं, न जाने कौन गाम गए ? और कब आवेंगें सो तो कह्यो नाहीं. ऐसें वा वैष्णवकी स्त्रीनें कह्यो. तब वाघाजी रजपूत अपने घर फिरिकै आए. ता पाछें श्रीठाकुरजी पोढें. ता पाछें पहोंचिकै स्त्रीनें कह्यो, जो यह महाप्रसाद तो गांइकों दीजो. सो महाप्रसाद गांइकों दीनो. और आप भूखे दोउ सोय रहे. और वाघाजी स्त्रीसों खीझ्यो, जो तैं घ्यो थोरोसो काहेकों धर्यो ? तातें श्रीठाकुरजीकों उहां लों पधारनो पर्यो और एती उपाधी भई. तब स्त्रीने कह्यो, जो हों तो नित्य धरती हती सो धर्यो. मैं तो ऐसी जानी नाहीं, समुझी नाहीं.

भाव प्रकाश :
सो या वार्तामें यह जतायो, जो सेवा मनोरथ बोहोत सावधानीसों करनो. सामग्री वस्तूभाव सब सोच समझिकै राखनी. काहू बातकी न्यूनता रहे नाहीं. नांतरु प्रभुनकों श्रम होत हैं.

ता पाछें सवारें उठिकै फिरिकै रसोई करि श्रीठाकुरजीकों भोग धर्यो. पाछें फिरिकै वाघाजी रजपूत वा वैष्णवकों बुलावनकों गए. परि मिल्यो नाहीं. ऐसें सन्ध्या पर्यन्त दोइ तीन बार वा वैष्णवकों बुलायवेकों गए. परि वह वैष्णव मिल्यो नाहीं. तब दूसरे दिना हू महाप्रसाद गांइनकों दीनो. और स्त्री आप दोउ भूखे सोई रहे.

भाव प्रकाश :
काहेतें, यह मारगकी रीति हैं, जो न्यौत्यौ वैष्णव जब तांई महाप्रसाद अपने घर न लेई तहां तांई आपु प्रसाद न ले. तब दास भाव सिद्ध होंइ. ताप होंइ, दीनता आवें. अपने दोषकौ स्फुरन होंइ. तब प्रभु प्रसन्न होंइ.

ता पाछें वा वैष्णवके सेव्य श्रीठाकुरजीने वा स्त्रीसों कह्यो, जो हम तो जात हैं. तब वा स्त्रीने श्रीठाकुरजीसों कह्यो जो आप काहेकों जात हो ? तब श्रीठाकुरजीने कह्यो, जो तेरो धनी वाघाजी रजपूतके घरसों काहेकों भूख्यो आयो ? वा पास ता वाके श्रीठाकुरजीने घ्यो मांग्यो

हतो. सो उतावलिसों आयकै घ्यो धर्यो. सो उतावलिसों पनही की और कपड़ानकी सुधि रही नाहीं तो कहा भयो ? यह तो प्रेमकी रीति है.

भाव प्रकाश :
यहां यह सन्देह है, जो श्रीठाकुरजीने ऐसे क्यों कह्यो ? श्रीआचार्यजीके मारगकी रीति तो यह है, जो अपरस ही में भोग धरें. और जो कदाचित् प्रेममें विह्वल व्है अपरस भूलि जांइ तोहू सुधि आईवे पें अपरस निकासे. सो हू वाघाजीने नाहीं निकासी है ? तहां कहत हैं, जो वाघाजीने घृतकौ कटोरा नेत्र मूंदिकै टेरा सरकाइकै अलग धर्यो है. सो घृत है सो तो रस है. तातें रस छूवे नाहीं. और अपरस छूई नाहीं है. जो अपरसके पात्र आदि छूवते तो अपरस निकासिते. प्रेममें पनही, कपड़ाकी सुधि रही नाहीं. सो प्रेम तो भगवत्स्वरूप हैं. वातें मर्यादा कैसें छूवे ? सब मर्यादा प्रेमकौ प्रगट करनके तांई है. सो तो वाघाजीमें सिद्ध भयो. तातें श्रीठाकुरजीने या प्रकार कह्यो. तहां कोऊ कहे, जो श्रीआचार्यजी तथा श्रीगुसांईजीके सेवकनकों तो पहिले ही सों प्रेम सिद्ध है. तातें सेवामें अपरस मर्यादा काहेकों राखत हैं ? तहां कहत हैं, जो साधारन अवस्थामें मर्यादाकौ पालन अवश्य करनो. काहेतें, ये श्रीआचार्यजीकी प्रगट कीनी मर्यादा है. सो श्रीआचार्यजी पुष्टिमार्गके प्रगट करनहार हैं. तातें उनकी आज्ञा प्रमान सेवाकी कृति करनी. तब प्रभु प्रसन्न होंइ. तातें कल्पित प्रकारसों सेवा नाहीं करनी. सो श्रीआचार्यजी 'नवरत्न' ग्रन्थमें कहत हैं. सो श्लोक

सेवाकृतिर्गुरौराज्ञा बाधनं वा हरीच्छया ।

तातें सेवाकी कृति गुरुकी आज्ञानुसार करनी चाहिए. हरि इच्छा सों बाध आवे तामें दोष नाहीं. यों समझिकै श्रीआचार्यजी श्रीगुसांईजीके सेवक साधारन अवस्थामें वा मर्यादाकों अनुसरत हैं. सो यह मर्यादाके अनुसरन तें श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी प्रसन्न होंइ. तातें उनकौ आश्रय सिद्ध होंइ. या भाव तें श्रीआचार्यजी श्रीगुसांईजीके सेवक मर्यादाकौ पालन करत हैं. परि जब प्रभुनकी विशेष आज्ञा होंइ तब प्रेमकौ भर होंइ. तब प्रेममें विह्वल होंइकै मर्यादा स्वतः छूटि जात हैं. सो बाधक नाहीं. काहेतें ? श्रीआचार्यजी 'विवेकधैर्याश्रय' ग्रन्थमें कहत हैं. सो श्लोक

विशेषतश्चेदाज्ञा स्यादन्तःकरणगोचरः ।
तदा विशेष गत्यादि भाव्यं भिन्नं तु दैहिकात् ।।

तातें प्रभुनकी विशेष आज्ञा होंइ तो ता प्रकार वैष्णवकों अनुसरनो. सो वह बाधक नाहीं. तातें इहां वाघाजीकों आज्ञा भई तब उननें भोगकौ टेरा सरकाय घ्यो धर्यो. सो उचित ही कियो है. ता समै वाघाजीने नेत्र मूंदे. सो हू श्रीआचार्यजीकी मर्यादाकौ पालन कियो. काहेतें, भोग समै ब्रजभक्त प्रभुनकों सामग्री अरोगावत हैं. सो ता समै दृष्टि करनो जीवकौ अधिकार नाहीं है. तातें श्रीआचार्यजीने टेराकी रीति राखी है. तातें वाघाजीने नेत्र मूंदिकै घ्यो कौ कटोरा धर्यो. सो मारगकी रीति करी.

परि तेरे घनीनें तो घर आयकै महाप्रसाद लियो. और वे तो स्त्री - पुरुष दोउ जनें दोइ दिना भये भूखे हैं. तातें ऐसें निठुराई करी, जो वे वैष्णव तुम्हारे लिये भूखे रहे. और तुम महाप्रसाद आनन्दमें लो. तातें हम तें यहां रह्यो जात नाहीं. ऐसें स्वप्नमें कह्यो.

भाव प्रकाश :
सो ये स्त्री - पुरुष दोउ लीलामें चारुमतिकी सहचरी हैं. स्त्री तो ‘भक्तिनी’ है और पुरुषकौ नाम ‘आनन्दिनी’ है. तातें उन पर कृपा करि यह बात जताई. नांतरु स्वामिनी - द्रोह होतो. तो दोउनकौ बिगार होतो. तातें प्रभु परम दयाल हैं.

तब वह स्त्री चोंकिकै उठी. यह सब समाचार अपने पतिसों कहे. तब वह वैष्णव तुरत ही वस्त्र पहरिकै वाघाजी रजपूतके द्वारें आइकै पुकार्यो. तब वाघाजीने किवाड़ खोले. तब हाथ जोरिकै पांवन परि रह्यो. और कह्यो, जो मेरो अपराध क्षमा करो, जो मैं महाप्रसाद अपने घर लियो. और तुमकों दोउ दिना भूखे राखे. ऐसो करम कियो. ता पाछें श्रीठाकुरजीने स्वप्नमें स्त्रीसों कही सो सब बात वाघाजी रजपूतसों कही. और आप आचारकों बिचारे सो सब सांची बात अपनो दोष कह्यो. ता पाछें वा वैष्णवने वाघाजी रजपूतसों कह्यो, जो अब तुम स्त्री - पुरुष महाप्रसाद लेहु. और मेरो अटक राखो तो मोकों हू तुम देहु. सो हों लेहु. तब वाघाजी रजपूतने कह्यो, जो

महाप्रसाद तो हम गांइनकों दीनो. रञ्चक हू राख्यो नाहीं. तब वा वैष्णवने घनो आग्रह हठ कियो. और कह्यो, जो तुम आज्ञा करो तो हों बालभोगकौ प्रसाद मेरे घर तें ल्याउं. तब वाघाजी रजपूतनें अपनी स्त्रीसों कह्यो, जो कछू बालभोगकौ महाप्रसाद अपने है ? तब स्त्रीनें कह्यो, जो थोरो सो तो है. ता पाछें वह महाप्रसाद वा वैष्णवकों दीनो. और स्त्री - पुरुषने हू थोरोसो लियो. ता पाछें वह समाधान करिकै अपने घरकों गयो. ता पाछें वह दूसरे दिना सवारे ही उठिकै श्रीठाकुरजीकों जगाय बालभोग धरिकै बेगे बिनु बुलाये वाघाजी रजपूतके घर आयकै बैठि रह्यो. ता पाछें वाघाजी रजपूत श्रीठाकुरजीकी सेवा - सिंगार तें पहोंचिकै स्त्रीने रसोई करिकै ता पाछें राजभोग समर्प्यो. ता पाछें समयो भयो. ता पाछें श्रीठाकुरजीकों भोग सरायकै आर्ति अनोसर करिकै ता पाछें वह वैष्णव आप स्त्री तीनों जनें महाप्रसाद लियो. ता पाछें आनन्द भयो.

भाव प्रकाश :
तातें वैष्णवकी आर्ति श्रीठाकुरजी सहि सके नाहीं. सांचे मनतें आर्ति होंइ ताके सकल मनोरथ श्रीठाकुरजी पूरे करें.

वह वाघाजी रजपूत श्रीगुसांईजीके सेवक ऐसें टेकके कृपापात्र भगवदीय हते. तातें उनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए ? वार्ता ।।७४।।

७५-बीरबलकी बेटी

अब श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी बीरबलकी बेटी, आग्रामें रहती तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'रसिकप्रिया' है. ये 'मदोन्मत्ता' के भावरूप हैं. श्रीठाकुरजीकी अन्तरङ्ग सखी हैं. तातें श्रीठाकुरजीकों अत्यन्त प्रिय

है.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै श्रीगुसांईजी आगरे पांव धारे. तब एक वैष्णवके घर उतरे. ताके पास बीरबलकौ घर हुतो. सो उष्णकालके दिन हते. श्रीगुसांईजी छ्जा, झरोखामें बैठे हते. तब झरोखामें तें बीरबलकी छोरीनें देखे. सो अद्भूत स्वरूप देख्यो. तब याके मनमें आई जो इनके सेवक हुजिए तो भलो है. ता पाछें अपने पितासों पूछी, जो तुम कहो तो हों श्रीगुसांईजीके सरनि जाऊं. सेवक होउं. तब बीरबलने कह्यो, जो सुखेन होउ. पाछें वह राय पुरुषोत्तमदासके घरकी स्त्रीनसों जांइकै मिली. वे श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी ही. उन सों कह्यो, जो तुम मेरी बिनती श्रीगुसांईजीसों जांइ कहो, जो मोकों सेवक करें. तब उन स्त्रीननें श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! बीरबलकी बेटी बिनती करति हैं, जो मोकों नाम निवेदन करवावो. तब श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो भले. पाछें नाम दीनो. तब श्रीगुसांईजीसों बीरबलकी बेटीनें आत्मनिवेदनकी बिनती करी. तब श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो, काल्हि ब्रत करि. तब आत्मनिवेदन करावावेंगे. पाछें ब्रत कर्यो. ताके दूसरे दिन आत्मनिवेदन करवायो. ता पाछें श्रीगुसांईजी एक मास उहां रहे. सो नित्य कथा कहते. सो बीरबलकी बेटी वैष्णवनकी स्त्रीन में बैठि कथा सुनती. सो जितनी बात श्रीगुसांईजी कहें उतनी बात सब हृदैमैं लिखि राखे. ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती. ता पाछें श्रीगुसांईजी तो श्रीगोकुल पांव धारे. पाछें यह उनके घर रात्रिकों वैष्णव और आवे, तो सो भगवद्वार्ता करे. तब उन स्त्रीनमें बैठिकै यह सुने. उन वैष्णवनकी स्त्रीसों घनो मिलाप राखे. मिलिकै चले.

सो एक समै पृथ्वीपतिने बीरबलसों पूछ्यो, जो बीरबल ! साहिब कौन रीतिसों मिलत हैं ? तब वाने घने - घने उत्तर दीने परि ठीक नाहीं परी. नाहीं मानें. ता पाछें बीरबलने घने - घने स्वामीनसों पूछी, वृन्दावनीनसों पूछ्यो. सो सब पृथ्वीपतिसों कह्यो, परि ठीक नाहीं परी. पृथ्वीपतिनें कह्यो, जो ऐसी बात तो हों नाहीं मानों. और या बातकौ उत्तर बेगि देहु. नांतरु तेरो वित्त घर सब लूटि लेउंगो. तब बीरबल महा चिन्ताग्रस्त होंइकै बैठे. तब बेटीनें पूछ्यो, जो बावा ! तुम ऐसें अनमने काहेतें हो ? तब बीरबलनें कह्यो, जो तुम या बातमें कहा जानों ? राजकाजके उत्तरकी कठिन है. तब बेटीनें कह्यो, जो यह बात तो मोकों सर्वथा कही चहिए. ता पाछें हों समझोगी तो

उत्तर देउंगी, नांतर नाहीं. परि कही तो चहिए. तब बीरबलनें अपनी बेटीसों सब समाचार कहे. जो पृथ्वीपति ऐसें पूछत हैं, जो साहिब कौन रीतिसों मिलत हैं ? ताकौ उत्तर देत हों परि मानत नाहीं. और जितने पण्डित और स्वामी और वृन्दावनी सबनसों पूछ्यो. परि उत्तर ठीक नाहीं पर्यो. तब पृथ्वीपतिनें कह्यो, जो या बातकौ उत्तर और प्रमान देहु, नांतरु घर और बार सब छीन लेउंगो. ऐसे कह्यो, तातें हों चिन्तातुर हों. और अब कहा उपाइ कीजें ? तब वा बीरबलकी बेटीने कह्यो, जो तुम श्रीगोकुल श्रीगुसांईजी पास गए हुते ? उनसों पुछ्यो हतो ? तब बीरबलनें कह्यो, जो उनसों तो हों नाहीं पूछ्यो. तब बेटीनें कह्यो, जो तुम श्रीगुसांईजीसों श्रीगोकुल जांइ पूछो. जो याकौ कहा उत्तर देत हैं ? यह उत्तर उन बिना नाहीं मिलेगो. ईश्वरकी बातमें ईश्वर ही जानें. तातें तुम सर्वथा श्रीगोकुल ही जाऊ. तहां तुरत ही उत्तर मिलेगो. या बातमें सन्देह मति करो. ता पाछें तुरत ही बीरबल श्रीगोकुलकों चले. सो उत्थापनके समै आई पहोंचे. सो श्रीगुसांईजीकी खबरि वैष्णवसों पूछी. तब वैष्णवन कह्यो, जो श्रीगुसांईजी सेवामें हैं. तब बैठकमें बेठि रहे. ता पाछें श्रीगुसांईजी सेवासों पहोंचिकै बाहिर पांव धारे. तब बीरबलने श्रीगुसांईजीसों दण्डवत् करिकै बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! राजसों एक बात पूछनी है. सो आप एकान्त बैठिकै सुनो. हों कहों. ता पाछें श्रीगुसांईजीने सबकों दूर कीनें. पाछें सब समाचार कहे. जो पृथ्वीपतिने कह्यो, जो याकौ उत्तर कहा है ? तब श्रीगुसांईजीनें कह्यो, जो याकौ उत्तर तो हम और पृथ्वीपति मिलें जब सन्देह निवृत्त होंइ. यातें उनकी या बातकी सुनिवेकी आतुरता होंइ तो वे मेरे पास आवेंगे. तब हों याकौ सन्देह निवृत्त करि देउंगो. तातें तुम पृथ्वीपतिसों कही, जो ऐसें कह्यो है. जो तुम्हारो प्रयोजन होंइ तो तुम उहां जाऊ. ऐसें कहिकै इहां आवे तो इहां पठवाइयो, हम उत्तर देइंगे. तब बीरबल पाछें आगरे गयो. ता पाछें पृथ्वीपतिसों समाचार कहे. पाछें बीरबल तो घर गयो. ता पाछें पृथ्वीपति बिचार्यो - यह काम चौडेकौ नाहीं. एकान्तकौ है. ऐसें बिचारिकै आप इकलो कोऊ पहिचनाने नाहीं, ऐसें इकलोई घोड़ा पर आप ही जीन करिकै पाछली रात्रिमें उठिकै सहजहीमें असवारीकौ बहानों करिकै हथियार बांधिकै चल्यो. सो श्रीगोकुल आयो. ता समै श्रीगुसांईजी राजभोग धरिकै स्नान - सन्ध्या करिवेकों पधारे हते, श्रीयमुनाजी पैं. तब पृथ्वीपतिने श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करी. तब श्रीगुसांईजीने पहिचान्यो, जो पृथ्वीपति आयो है. तब श्रीगुसांईजीनें सबनकों दूरि करिकै ता पाछें पृथ्वीपतिसों पूछ्यो, जो तुम कैसें करिकै आए हों ? कहा पूछत हो ? सो पूछिये. तब पृथ्वीपति कह्यो, जो साहिब कौन रीतिसों मिलत हैं ? तब श्रीगुसांईजीनें कही, जैसें हम तुम मिले.

भाव प्रकाश :
यामें यह कह्यो, जो जैसें लौकिकमें तुम पृथ्वीपति सबनसों बड़े हो. सो और मनुष्य तुमसों मिलिवेकी करें तब घने - घनेनकों प्रसन्न करिवेकौ उपाइ करे. परि तुम्हारी इच्छा बिनु तो मिलनो दुर्ल्लभ है. और कदाचित् तुम मिलनो बिचारो ताकौ तुम तुरत ही मिलो. और वाकी आर्ति भाजे. और ऐसें हम तुमकों मिलनो बिचारे, तो उपाइ करें. परि मिलनो कठिन है. और तुम मिलनो बिचारे, तो तुरत ही मिले. ऐसें जीव बिचारत ही बिचारत और उपाय करत घने - घने दिन बीते, परि मिलनो कठिन है. और प्रभुजी बिचारें, जो जीवकों हों मिलों तो यामें कछू बिलम्ब नाहीं.

यह श्रीगुसांईजीने श्रीमुखतें कह्यो. तब पृथ्वीपति ऐसें बचन सुनिकै अत्यन्त प्रसन्न भयो. और कह्यो, जो तुम्हारे सेवक लोग तुमसें कन्हैया कहत हैं सो तुम सांचे ही कन्हैया हो. या बातमें सन्देह नाहीं. ता पाछें कह्यो, जो तुम कछू मो पास मांगो. मैं तुम पर बोहोत ही प्रसन्न हों. तब श्रीगुसांईजीनें कह्यो, जो हमारे तो काहू बातकी ईच्छा नाहीं. तब और हू कह्यो, जो भले, परि मो जैसी सेवा कछू तो कृपा करिकै कहिये. ऐसो घनो आग्रह हठ करिकै कह्यो. तब श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो भले, ऐसो तुम बोहोत हठ करत हो, तो एक घोड़ा ऐसो होंइ, जो घरीमें पांच कोस चले. और बोहोत सुधो होंइ. चाल बोहोत सुन्दर होंइ. जो असवारीमें चैन पावें. और तुम्हारी ओरतें 'औरङ्गाबाद' में एक मनुष्य रहे. सो पार ही रहे. श्रीनाथजीद्वार जांहि जब सङ्ग चले. पाछें औरङ्गाबादमें घोरा राखे. पाछें अपने घर जांइकै पृथ्वीपतिने राजा टोडरमलकों बुलाइकै कह्यो, जो अमूको घोड़ा ऐसी रीतिसों औरङ्गाबादमें राखो. और उहांके हाकिमकों लिखो, जो याकौ खरच और मनुष्यकौ खरच और रोजगार सब अपने राजद्वार तें पावे. और घोड़ाकौ जतन. वा पर मनुष्य ऐसो रहे सो घोड़ाके साथ चले. और जा समै श्रीगुसांईजी आज्ञा करें ता समै सिद्ध करिकै राखें, श्रीगुसांईजीकी आज्ञामें रहे. ऐसी कहिकै बोहोत रीतिसों भय बतायकै कही, जो या बातमें रञ्चक हू चुको मति. और या बातमें चूक परेगी तो मोतें बुरो कोई नाहीं. ऐसें कही. ता पाछें जैसें पृथ्विपतिने कह्यो तैसें ही राजा टोडरमलनें कर्यो. सो दिन घरी चारि चढे ता समै घोड़ा सिद्ध करिकै सिंगार करिकै पार श्रीयमुनाजीके तीर आनि ठाढ़ो राखे. सो श्रीगुसांईजी घर श्रीनवनीतप्रियजीकौ सिंगार करिकै गोपीवल्लभ भोग धरिकै ता पाछें वस्त्र पहरिकै नावमें बैठिकै पार उतरि तुरत ही घोड़ा पर असवार होंईकै श्रीनाथजीद्वार पांऊ धारे. तब तुरत ही गोविन्दकुण्डमें स्नान करिकै श्रीगिरिराज उपर पांऊ धारे. सो श्रीगोवर्द्धननाथजी आदि स्वरूपनकौ सिंगार करिकै गोपीवल्लभ भोग धरिकै श्रीगोवर्द्धननाथजीसों बिदा होइकै श्रीगोकुलकों पांव धारे. सो

घोड़ा तें उतरिकै नावमें बैठिकै पार उतरे. तब घोड़ा 'मोहनपुर'में जांइकै बांधे. सो चार घास दाना सब राजद्वार तें पावें. और श्रीगुसांईजी बैठकमें वस्त्र सब उतारिकै खवासकों दे, ता पाछें आपु श्रीगुसांईजी श्रीयमुनाजीमें स्नान करिकै अपरस ही में पांव धारे. सो श्रीनवनीतप्रियजीकी आर्ति करे. ता पाछें अनोसर कराइ आप भोजन करें. ऐसी प्रकार आप नित्य करें.

सो बीरबलकी बेटीकों श्रीगुसांईजीके स्वरूपकौ ऐसो ज्ञान हतो. यह बात इन बिना कोऊ जानें नाहीं. सो वह श्रीगुसांईजीकों साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम करिकै जानती. उह बीरबलकी बेटी श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र सेवकिनी हती. भगवदीय हती. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।७५।।

७६-एक कुनबी, शङ्खाहुलीकी मालावालो

अब श्रीगुसांईजीके सेवक एक कुनबी, गुजरातकौ बासी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं.

भावप्रकाश :
ये 'तामस' भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'बादामी' है. ये श्रीठाकुरजीकौ 'सुवा' है, ताके भावरूप हैं. ये 'सुवा'कों देखिकै श्रीठाकुरजीकों श्रीस्वामिनीजीकी नासिकाकी सुधि आवत हैं. तातें वाकों अहर्निश अपनी कुञ्जमें राखत हैं. वाकों नादामृतकौ पान करावत हैं. ताके पान किये तें वा सुवाकों अनेक प्रकारके भाव प्रकट होत हैं. सो सब साक्षात् होत हैं. सो उन भावनकौ एक यूथ है. ता यूथकी 'बादामी' सखी हैं.

ये गुजरातमें एक कुनबीके इहां जन्म्यो. सो बरस पन्द्रह बीसकौ भयो. पाछें श्रीगुसांईजी द्वारिकाजीके दरसनकों दुसरी बार जब गुजरात पधारे तब याके गाममें मुकाम भयो हतो. तब ये हू और वैष्णवनके सङ्ग सेवक भयो हतो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो एक साथ गुजरात तें श्रीनाथजीके दरसनकों श्रीनाथजीद्वार आवत हुतो. सो ता साथमें वह कुनबी हू आवत हुतो. परन्तु वाके पास कछू खरचकों नाहीं. सो साथमें सब वैष्णवनकी टहल करत आवे. और वैष्णवनके उहां फिरतो प्रसाद लेत आवे. सो कबहू काहूके कबहू काहूके प्रसाद लेई. ऐसें करत साथ जब श्रीगोकुलके निकट आयो. तब सब वैष्णवनके तो आनन्द भयो. सो अपनी भेंट संजोवन लागे. और वह कुनबी वैष्णवकों महा चिन्ता उपजी. जो मेरे पास तो कछू है नाहीं मैं खाली हाथनसों श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् कैसें करोंगो ? तब कुनबी वैष्णवनें अपने मनमें विचारिकै उहां भूमि पर घासमें संखाहुलीके फूल बोहोत आछें देखे, ताकों बीनिकै, एक फूलनकी माला कीनी. सो वह माला हाथमें लै भींजे कपरा सों लपेटिकै लिये चल्यो आवत हतो. तब वा कुनबीके मनमें सोच बोहोत होंन लाग्यो. जो ये फूल कुम्हलाइ जाइंगे तब मैं कहा करोंगो ? तब श्रीगुसांईजी तो अन्तरजामी दीनबन्धु (है) सो आपु भोजन करिकै, घोड़ाके उपर असवार होइकै श्रीयमुनाजीके पारकों चले. ता समै श्रीगुसांईजी मनमें विचारे, जो संखाहुलीके पुष्प तो अत्यन्त कोमल होंइ. सो वह मेरे वैष्णवने माला करी है सो माला कुम्हलाइ जाईगी तो वाकों दुःख बोहोत ही होइगो. तब वह वैष्णव पर कृपा करिकै श्रीगुसांईजी वाके सन्मुख पधारे. सो वह वैष्णवनें श्रीगुसांईजीकों देखे. तब वैष्णवके मनमें बड़ो आनन्द भयो. तब श्रीगुसांईजी वह वैष्णवसों कही, जो वह संखाहुलीके पुष्पकी माला लाउ. तब कुनबी वैष्णवने माला पहिराइकै श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् कियो. तब श्रीगुसांईजी तत्काल उहां तें फिरे. तब वह वैष्णव श्रीगुसांईजीके साथ श्रीगोकुल आयो.

उह कुनबी श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें उनकी वार्ता कहां तांई कहिए ? वार्ता ।।७६।।

७७-एक कुनबी, जानें गोपाल घासमें नाचत देखें

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक और कुनबी, गुजरातकौ बासी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :

ये 'सात्विक' भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'चारूगोप' है. सो वह 'सुवा'के भावरूप हैं. श्रीठाकुरजीकौ सखा है. परम मुग्ध हैं. नन्दालयकी गांइनमें रहत हैं. तातें श्रीठाकुरजी इन पर सदा प्रसन्न रहत हैं. सो गुजरातमें एक कुनबीके जन्म्यो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो एक समै गुजरातके वैष्णवनकौ साथ श्रीगोकुलकों श्रीगुसांईजीके दरसन निमित्त श्रीब्रजके निमित्त आवत हतो. सो वा साथमें वह कुनबी हू आवत हुतो. सो ताकी गांठिमें कछू खरच नाहीं हतो. सो मार्गमें उपरा बीनत चले. सो मजलि जांइकै उतरे. तब वे उपरा वैष्णवनकों बांट देतो. सो वे वैष्णव रसोई करें. ताकी टहल करत आवें. वे वैष्णव वाकों महाप्रसाद लिवावे. सो फिरतो - फिरतो सबके महाप्रसाद लेतो आवे. ऐसें करिकै श्रीगोकुल आई पहोंच्यो. तब श्रीगुसांईजीके दरसन करे. ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार पधारे. तब वह कुनबी हू साथ गयो. तहां श्रीगुसांईजी पास नाम पायो. पाछें श्रीगुसांईजी वा उपर परम कृपा करिकै आप ही तें वाकों आत्म - निवेदन करवायो. पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ दरसन कियो. तब वह कुनबी बोहोत ही प्रसन्न भयो. तब वा कुनबीसों श्रीगुसांईजी पूछ्यो, जो तू अपने उहां कहा काम करत हुतो ? तब कुनबीने कह्यो, जो महाराजाधिराज ! मैं तो उहां गांइ चरावत हतो. तब श्रीगुसांईजीने श्रीगोवर्द्धननाथजीकी गांइ चराइवेकी आज्ञा दीनी. जो तू प्रसन्न होंइकै श्रीगोवर्द्धननाथजीकी गांइ चराइयो. तब श्रीगुसांईजीने ग्वालनसों कह्यो, जो याकों तुम नित्य गांइनमें ले जाऊ. और महाप्रसादी रसोईमें प्रसाद लेवेकों कह्यो, जो याकों महाप्रसाद नित्य लिवायो करो. सो वह तो वा दिन तें नित्य श्रीगोवर्द्धननाथजीकी गांइ चरायो करे. और महाप्रसाद रसोईमें लेई. सो गांइनकी सेवा मन लगायकै करे. सो वाने गांइनकी सेवा या भांति सों कीनी जैसें श्रीठाकुरजीकी सेवा करें. गांइनकों अपनी चादरसों पोंछें. गांइनकों कछू जीव जन्तु लगन न पावे. ठौर स्वच्छ राखें. सो गांइनकी सेवा देखिकै श्रीगोवर्द्धननाथजी बोहोत प्रसन्न भए. तब वाकों गांइनमें श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ दरसन भयो. तब वहां बनमें श्रीगोवर्द्धननाथजी छाक बांटते. तब वाहूकों श्रीगोवर्द्धननाथजी लडुवा चारि देते. तब यह वैष्णव तामें तें दोइ लडुवा तो राखि छोरतो, सो रात्रिकों खातो. तब तें वह कुनबी श्रीगोवर्द्धननाथजीकी महाप्रसादी रसोईमें कबहू जेंवन जातो नाहीं. तब वासों रसोईयाने पूछी, जो तू रसोईमें महाप्रसाद लेवे क्यों नाहीं आवत ? तब वा कुनबीने कह्यो, जो मेरो पेट तो उहांई वनमें लडुवानसों भरि

जात है. तातें मैं रसोईमें जेंवन काहेकों आऊं ? तब रसोईयाने पूछी, जो उहां तोकों बनमें लडुवा कहांतें मिले हैं ? तब या कुनबी वैष्णव कह्यो, जो लडुवा तो मोकों श्रीगोवर्द्धननाथजी बनमें जब छाक बांटत हैं तब उहांई मोहूकों चार लडुवा देत हैं. तब वा रसोइयानें यह बात श्रीगुसांईजीके आगें कही, जो महाराज ! या कुनबीकों तो श्रीगोवर्द्धननाथजी बनमें लडुवा देत हैं. तब श्रीगुसांईजी कहें, जो सेवा ऐसोई पदार्थ है. जो गांइनकी सेवा अन्तःकरनपूर्वक आछी रीतिसों करे, ताकों श्रीगोवर्द्धननाथजी इहांई दरसन देत हैं.

भाव प्रकाश :

सो काहेतें, जो श्रीगोवर्द्धननाथजी तो भक्तनके आधीन हैं. सो भक्तनमें ब्रजभक्त सब तें श्रेष्ठ हैं. तातें श्रीगोवर्द्धननाथजी ब्रजभक्तनके परवस हैं. सो ब्रजभक्त उनकों जा भांति नचावत हैं, ताही भांति ये नाचत हैं. जा भांति बैठारे ता भांति बैठे हैं. उठावें तब उठे हैं. ऐसें आधीन रहत हैं. सो ब्रजभक्तनकों स्वरूप ये गांइ हैं. तातें गांइनकी सेवाकों श्रीगोवर्द्धननाथजी ब्रजभक्तनकी सेवा मानत हैं. यातें बेगि प्रसन्न होत हैं. सो गांइनकी सेवा ऐसो पदार्थ है. सो वैष्णवकों गांइनकी सेवा भावपूर्वक नित्य करनी, जातें श्रीगोवर्द्धननाथजी बेगि प्रसन्न होंइ.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

बहुरि एक समै अरिंगमें रास भयो. सो सब वैष्णव देखनकों गए. तब वह कुनबी वैष्णव हू रास देखनकों साथ गयो. सो उहां रासधारीने यह कीर्तन गायो.

राग : मालव

नाचत रासमें गोपाल सङ्ग मुदित घोषनारी ।
तरुतमाल स्यामलाल कनकबेलि प्यारी ।
चलनितम्ब किंकिनी कटि लोल बंक ग्रीवा ।
राग तान मान सहित वेनुगान सींवा ।

स्त्रमजलकन सुभर भरे रङ्ग रेन सोहें ।
'कृष्णदास' प्रभु गिरिधर ब्रजजन मन मोहें ।

सो यह पदमें ''नाचत रासमें गोपाल'' कह्यो. तब ही यह सुनिकै वह कुनबी वैष्णव कह्यो, जो ''नाचत घासमें गोपाल'' सो ऐसो सुनिकै सब वैष्णवनकों बड़ो आश्चर्य भयो. तब सब वैष्णव यह बात श्रीगुसांईजीसों पूछी, जो महाराज ! यह वैष्णव कहा कहत हैं ? तब श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो ए दोउ सत्य बचन कहत हैं. काहेतें, जो रासधारी गावत हैं, जो ''नाचत रासमें गोपाल'' सो तो श्रीभागवतमें कह्यो है सो कहत हैं. और यह वैष्णव, जो कहत है, जो ''नाचत घासमें गोपाल'' सो यों सत्य कहत हैं, जो गांइनके साथ घासनके बीचमें खिरकमें श्रीगोवर्द्धननाथजी नित्य ही नृत्य करत हैं. तातें यह तो अपनी देखी बात कहत हैं. सो सेवा ऐसोई पदार्थ है. जासों श्रीगोवर्द्धननाथजी प्रसन्न होत है. श्रीगोवर्द्धननाथजीकों तो गाय बोहोत प्यारी हैं. सो वह कुनबी वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो, जासों श्रीगोवर्द्धननाथजी ऐसें अनुभव जनावते. तातें उनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।७७।।

७८-एक ब्राह्मण, गङ्गाजीके तीर रहता

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक ब्राह्मन, वह श्रीगङ्गाजीके तीर उपर रहतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'बिछिया' है. ये 'सुवा'के भावरूप हैं. और बिछियाकी एक सखी और हैं. ताकौ नाम 'रामकटोरी' है. सो या ब्राह्मनकी स्त्री भई. सो ये पूरवमें दोउ ब्राह्मनके घर जन्मे. सो बरस दस - बारहके भए तब दोउनके माता - पिताने इनकौ ब्याह कियो. पाछें ये बड़े भए. तब दोउनमें प्रीति बोहोत हती. सो एक दिना यह ब्राह्मन अपनी स्त्रीकों लै श्रीजगन्नाथराइजी गयो. तहां इन दोउ श्रीगुसांईजीके दरसन पाए. ता समै श्रीगुसांईजी श्रीजगन्नाथराइजीके मन्दिरके निकट श्रीभागवतकी कथा कहत हुते. सो बोहोत लोग कथा सुनत हते. सो येहू कथा सुनिवेकों बैठे. सो कथा सुनत

ही दोउनकौ मन फिर्यो. तब दोउन कह्यो, जो ये तो कोई बड़े महापुरुष हैं. तातें इनकी सरनि जइए तो आछौ. सो कथा पुरी होत ही दोउ स्त्री - पुरुष श्रीगुसांईजीसों बिनती कियो, जो महाराज '! हमकों सरनि लीजिए. और या संसार तें उद्धार होंइ ऐसी कृपा कीजिए. तब श्रीगुसांईजी दोउनकों दैवी जीव जानि आप सरनि लिये. नाम सुनायो. पाछें दूसरे दिन निवेदन करायो. ता पाछें दोउन बिनती किये, जो महाराज ! अब कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजी कहे तुम भगवत्सेवा करो. तब दोउन बिनती किये, जो महाराज ! कृपा करि स्वरूप - सेवा पधराई दीजिए. ताकी हम सेवा करें. तब श्रीगुसांईजी उनकों एक लालजी पधराइ दिये. पाछें आज्ञा किये, जो तुम इनकी सेवा करियो. इन तें तुमकों बोहोत सुख होइगो. पाछें ये दोउ कछूक दिन उहां रहिकै श्रीगुसांईजीकी टहल किये. मारगकी रीति सब सीखे. ता पाछें श्रीगुसांईजीसों बिदा होंइ अपने घर आए. पाछें दोउनने विचार कियो, जो गाममें रहनो उचित नाहीं. तातें कहूं गङ्गाजीके तीर एक एकान्तमें रहिये तो भलो है.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वह ब्राह्मन वैष्णव स्त्री - पुरुष गाम छोरिकै गङ्गाजीके तीरपैं आए. तहां अपने रहिवेकौ घर गङ्गाजीके तीर पर करि एकान्तमें रहन लागे. सो उहां तें एक गाम थोरीसी दूरि हतो. सो उहां वे स्त्री - भरतार दोउ जनें रहते. परि वह ब्राह्मन गाममें न रहे. सब तें न्यारो रहे. सो वा ब्राह्मनके घरमें एक गांइ हुती. और वह ब्राह्मन एक दिनकौ सीधो अपने घरमें राखतो. तब सवारे ही उठिकै देहकृत्य दन्तधावन करिकै स्त्री - भरतार दोउ जनें स्नान करिकै श्रीठाकुरजीकी सेवा करते. वाकी स्त्री तो श्रीठाकुरजीकी रसोई करती. और उनकौ पुरुष श्रीठाकुरजीकी सेवा - सिंगार करिकै और सब टहल करतो. सो वह राजभोग श्रीठाकुरजीकों समर्पिकै श्रीगङ्गाजी - स्नानकों जातो. तब वह स्त्री रसोई पोतिकै बासन मांजि धरे. इतने भरतार गङ्गाजी तें स्नान करि आवें. इतने राजभोग सराइवेकौ समै होंइ. तब भोग सराइकै श्रीठाकुरजीकौ अनोसर करिकै गांइकों पातर धरें. ता पाछें वह ब्राह्मन वैष्णव तो भिक्षा मांगनकों जांइ. और वह ब्राह्मनकी स्त्री गांइ चरावनकों जांइ. और उहां श्रीगङ्गाजीके तीर तें दूब हू खोदिकै श्रीगङ्गाजीमें धोइकै गांठि बांधिकै अपने घरकों ले आवे. सो एक टोकरामें धोईकै गांइकों खवावे.

भाव प्रकाश :

ताकौ भाव यह है, जो मति कहूं गांइके पेटमें रज जांइ तो दूधमें रज आवे. सो वह दूध श्रीठाकुरजी अरोगत हैं. तातें या भांति सों गांइकौ जतन करे.

और वह ब्राह्मन गाम दोइ तीन आसपासके जांइकै कोरी भिक्षा मांगिकै जितनो खरच होंइ तितनो जुरे तब अपने घर आवे. तब वह अन्न ल्यासकै अपनी स्त्रीकों सोंपे. सो वह स्त्री बीनि फटकिकै जाकौ जैसो प्रकार करनो होंइ तैसे ही सब सामग्री सिद्ध करिकै राखें. सवारे नित्यकौ नेग जा भांति करनो होंई सोई करें. बालभोग तथा राजभोग सरायकै ता पाछें तीन पातरि परोसिकै वाही नित्यकी रीति करें. ऐसें सर्वदा चलो जांइ. या भांति सों नित्य निर्वाह करिकै उहां रहे.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

बहोरि एक और ब्राह्मन पण्डित हतो. सो देस - विदेसके पण्डितनसों वाद करि जीते ऐसो पण्डित हतो. सो वा ब्राह्मन पण्डितके साथ डेढसें विद्यार्थी रहते. सो देस - देसके पण्डितनकों जीतिकै अपने घरकों जात हुतो. तब मार्गमें एक बड़ो नगर आयो. सो वा समै वा नगरकौ राजा क्रीडा करन बाहिर निकस्यो हतो. सो राजाके साथ वाके राजलोगनके महाल हते. सो वह अपने वैभवसों निकस्यो हतो. सो कोऊ तो सुखपालमें, कोऊ रथके उपर, या भांतिसों वह क्रीडा करन निकस्यो हतो. सो ता समैं वह पण्डित ब्राह्मनने अपने मनमें कह्यो, जो धिक्कार मेरे जन्मकों, जो मैं पण्डिताईकौ सुख तो लीनो है. परि मोकों या सुखकौ परस तो कबहू न भयो. तब वह ऐसो विचारिकै हाइ - हाइ करन लाग्यो, जो ऐसो सुख मैं कैसें भुक्तों ? तब वा पण्डित ब्राह्मननें अपने साथके विद्यार्थी हते और पुस्तक हते सो सब अपने घरकों पठाइ दिये. तब उहां वह पण्डित इकलोई रह्यो. तहां श्रीगङ्गाजीके तट विषे एक महादेवजीकौ स्थल हुतो. तब वह पण्डित ब्राह्मन जांइकै उहां महादेवजीके धरने पर्यो. सो वानें उहां दिवस तीन चार पांच तांई लङ्घन किये. तब महादेवजीने वा पण्डित ब्राह्मनसों पूछ्यो, जा तू ह्यां क्यों लङ्घन करत है ? तब वा पण्डित ब्राह्मननें कही, जो मैं तो वा राजाके सुखकों मांगत हों. वह सुख मैनें बोहोत आछौ देख्यो है. सो सुख मोकों देउ. तातें मैं इहां लङ्घत हों. तब महादेवजीने कह्यो, जो वह राज्य तो तेरे भाग्यमें नाहीं. तातें राज्य तो मैं तोकों न देउंगो. तू तो बहोतेरो पढ्यो है, तातें तू अपने मनमं विचारि देखि, जो तेरे भाग्यमें राज्य है कै नाहीं ? तातें राज्य तो भाग्य बिना पावे ही नाहीं. और हों तोकों एक मनि देत हों. सो तू मनि ही लेउ. या मनि तें द्रव्य हू तेरो होइगो. तब वा द्रव्य करिकै तोकों

सब सुख होइगो. तब वह पण्डित ब्राह्मन मनि महादेवजी पास तें लै कै चल्यो, उहां तें. तब वह पण्डित ब्राह्मन अपने मनमें विचार करन लाग्यो, जो यह द्रव्य तो भयो, परि जौबन बिनु स्त्रीकौ भोग तो होइगो नाहीं. तब यह पण्डित ब्राह्मननें अपने मनमें विचार कियो, जो अब मैं तप करों. तप करिकै जौबन मांगों. तब जौबन अवस्था मांगिकै मैं अपने घरकों जाऊं. तब मैं उहां जांइकै ऐसौ सुख भुक्तों. ऐसें विचारिकै वह पण्डित ब्राह्मन तप करिवेकों चल्यो. सो श्रीगङ्गाजीके तीरके विषे जहां वह वैष्णव ब्राह्मनको घर हतो ता ठौर आइकै देखें तो वह वैष्णव ब्राह्मण बैठ्यो है. और वह स्थल अति अद्‌भुत सुन्दर है. तुलसीकौ पुष्पनकौ बन फूल रह्यो है. ऐसो उत्तम स्थल देख्यो. पाछें वह ब्राह्मन पण्डित बैठ्यो. तब घरी दोइ पाछें वह वैष्णव ब्राह्मन सेवा तें पहोंचि बाहिर आयो. तब देखे तो एक ब्राह्मन बैठ्यो है. तब वा पण्डित ब्राह्मन नें वा वैष्णव ब्राह्मनकों नमस्कार कियो. तब वा वैष्णव ब्राह्मन हू ने नमस्कार करिकै वा पण्डित ब्राह्मनकों पूछ्यो, जो तुम कहां तें आवत हो ? तब वा पण्डित ब्राह्मनने कह्यो, जो हों तो देस - देस फिरत इहां आई निकस्यो हूं. इतने में तो घर भीतर राजभोग समर्पिवेकी बिरियां भई. तब भीतर जांइकै श्रीठाकुरजीकों राजभोग समर्पिकै वह वैष्णव फिरि बाहिर बैठ्यो. तब वा वैष्णव ब्राह्मननें वा पण्डित ब्राह्मनसों कही, जो आज तुम महाप्रसाद श्रीठाकुरजीकौ इहांई लीजियो. तातें तुम अब बैठो. सो श्रीगङ्गाजीमें स्नान, ध्यान, सन्ध्या, नित्यकर्म करि आवो. ता पाछें वह पण्डित ब्राह्मन श्रीगङ्गाजी जांइकै स्नान करि नित्यकर्म करि जप करिकै आयो. इतने ही इहां श्रीठाकुरजीकौ राजभोग सरायो. सो वे वैष्णव ब्राह्मन नित्य तो तीन पातरि परोसत हते. तब ता दिन वा वैष्णवने चारि पातर परोसी. तब एक पातरि तो प्रथम ही गांइकै आगें धरी. और एक पातरि वा पण्डित ब्राह्मनके आगें धरी. तब वा पण्डित बाह्मननें महाप्रसाद लियो. और दोइ पातरि आप दोउ स्त्री - पुरुषने प्रसाद लियो. ता पाछें वह पण्डित ब्राह्मन रात्रिकों उहां ही सोय रह्यो. पाछें जब प्रातःकाल भयो तब तो चातुर्मास लाग्यो. सो चातुर्मासमें गमन तो निसिद्ध है. तब वा पण्डित ब्राह्मननें वा वैष्णव ब्राह्मनसों कह्यो, जो वैष्णवजी ! अब तो चातुर्मास लाग्यो है. तातें मैं तो महिना दोइ तीन तो इहां ही रहूंगो. तब वा वैष्णव ब्राह्मनने कह्यो, जो भले, सुखेन रहो. तुम्हारी इच्छा. तब वा दिन तें वह वैष्णव ब्राह्मननें भिक्षा अधिक मांगी. जब जान्यों, जो नित्य तें सवायो भयो तब वह वैष्णव ब्राह्मन अपने घरकों आयो. पाछें वानें स्नान करिकै अपने नित्यकौ काम कियो. ऐसें करत जब थोरेसे दिन भए तब वा पण्डित ब्राह्मननें या वैष्णव ब्राह्मनके चिन्ह देखे. तब वा पण्डित ब्राह्मननें मनमें विचारी, जो या वैष्णव ब्राह्मनकों तो महाकष्ट भोग आयो है. तब वह पण्डित ब्राह्मन अपने मनमें बोहोत खेद करन लाग्यो. सो वह पण्डित ब्राह्मन सामुद्रक पढ्यो हतो. तातें वा पण्डित ब्राह्मनकों सब ज्ञान

हतो. जो या वैष्णव ब्राह्मनकों तो महाकष्ट भोग आयो है. सो काल्हि दस घरी दिन चढे भीतर राजाके मनुष्य आवेंगे. सो याके माथें चोरीकौ कलङ्क दै कै याकों पकरि लै जांइगे. तब वह राजा या वैष्णव ब्राह्मनकों सूरीपें चढाईकै मरवाय डारेगो. सो ऐसो भोग या वैष्णव ब्राह्मनकों वा पण्डित ब्राह्मनकी दृष्टिमें आयो. तातें वह पण्डित ब्राह्मन आप महा चिन्तामें ग्रस्त भयो. सो वह पण्डित ब्राह्मन मनमें विचार करन लाग्यो, जो मैं तो सर्वथा या वैष्णव ब्राह्मनके साथ जाऊंगो. सो उहां जांइकै वा राजासों मैं लरूंगो. मैं वा राजासों ऐसें कहूंगो, जो या वैष्णव ब्राह्मनके बदले तुम मोकों मारो. परि मैं तो या वैष्णव ब्राह्मनकों मारन न देउंगो. ऐसें वह पण्डित ब्राह्मन अपने मनमें सङ्कल्प - विकल्प करिवो कर्यो. परि वह वैष्णव बाह्मन तो कछू जानें नाहीं.

सो यह वैष्णव ब्राह्मन तो श्रीठाकुरजीके सेवा - सिंगार सों जब पहोंच्यो, तब वह भीतर श्रीठाकुरजीकौ राजभोग सरायकै सुमरन करन लाग्यो. तब वैष्णव ब्राह्मनकी आंखि लागि गई. सो वाकों निद्रा आई गई. सो वा ब्राह्मनकों महाघोर स्वप्न भयो. सो वा स्वप्नमें ऐसो देख्यो, जो जानों वा राजाके मनुष्य मोकों लैनकों आए हैं. सो मेरे माथे चोरीकौ कलङ्क लगाइकै मोकों पकरिकै वा राजाके आगें जांइकै मोकों ठाढ़ो कीनो है. तब वा राजानें अपने मनुष्यनकों आज्ञा दीनी, जो याकों सूरी देउ. सो वे मनुष्य लै जांइकै सूरीपें बैठायकै खेंच्यो. या वैष्णव ब्राह्मनकौ मारि डार्यो. ऐसो स्वप्न ता समै वा वैष्णवकों भयो. तब इतने ही वह निद्रामें तें चौंकि उठ्यो. सो सब समाचार वह वैष्णव ब्राह्मनने अपनी स्त्रीके आगें कहे. स्वप्नकी सब बात कही. तब वैष्णव ब्राह्मनसों वह स्त्री बोली, जो तुम्हारो प्रारब्ध - भोग हतो सो निवृत्त भयो. तातें तुम अब उठो. तब वह वैष्णव ब्राह्मन उठिकै श्रीगङ्गाजीमें स्नान करनकों चल्यो.

भाव प्रकाश :
काहेतें, स्वप्नमें चाण्डालकौ परस भयो और मृत्यु दोष हू भयो है. तातें छुई गयो. सो या मारगमें भावना मुख्य है. सो भावना मात्र तें वैष्णव छुई जात है. सो धर्मकी ऐसी सूक्ष्म गति है. तातें सेवा सुमरनके समै वैष्णवकों ब्रजभक्तनकी अनेक लीला हैं तिनकी भावना करनी. तातें हृदय शुद्ध होंइ और भाव हू की सिद्धि होंइ. सो भावना ऐसो पदार्थ है.

सो वह वैष्णव ब्राह्मन अपने घरमें तें बाहिर आयो, तब देखें तो द्वार पर पण्डित ब्राह्मन बैठ्यो है. तब वा वैष्णव ब्राह्मननें पण्डित ब्राह्मनसों पूछी, जो पण्डित ब्राह्मनजी ! आज तुम न्हाए नाहीं सो कहा ? तब वह पण्डित ब्राह्मननें कही, जो मोकों तो एक बड़ो ही सन्देह उपज्यो है तातें आजु तो मैं न्हाउंगा नाहीं और महाप्रसाद हू न लेहुंगो. तातें तुम सुखेन महाप्रसाद लेउ. तब वा वैष्णव ब्राह्मननें कह्यो, जो पण्डितजी ! आजु मैं तुम्हारो सब सन्देह दूरि करोंगो. तातें तुम सुखेन उठिकै न्हाओ. यह सन्देह कितनीक बात है. तब वह पण्डित ब्राह्मन और वैष्णव ब्राह्मन दोउ जनें मिलिकै श्रीगङ्गाजी न्हाइवेकों गए. तब वा वैण्णवनें वा पण्डित ब्राह्मनसों पूछी, जो कहो पण्डितजी ! आज तुमकों कहा सन्देह उपज्यो है ? सो तुम हमारे आगें कहो. तब वा पण्डित ब्राह्मननें कही, जो वैष्णवजी ! आज तुमकों या प्रकारकौ काल साक्षात् आयो हतो. तातें वह भोगकौ समय तो टरि गयो. तातें अब मैं अपने मनमें विचार करत हूं, जो कहा मेरो पढ्यो वृथा भयो ? मैं तो बोहोत पण्डित हूं और मैंनें देस - देसके पण्डित वाद करिकै हराए हैं. सो सब कहा वृथा भयो ? तातें मोकों यह सन्देह भयो है. तब वा वैष्णव ब्राह्मननें कह्यो, जो पण्डितजी ! यह सब मेरो भोग तो मोकों भयो. मैं श्रीठाकुरजीकी सेवा करिकै ता पाछें भगवद् स्मरन करत हतो. सो ता समै मोकों महाघोर निद्रा आई. ता निद्रामें मोकों यह सब अवस्था भई. सो मैं जाग्यो तब मैंनें अपनी स्त्रीके आगें सब ये समाचार कहे. तब मेरी स्त्रीनें कही, जो तुम्हारो प्रारब्ध - भोग हतो सो सब श्रीठाकुरजीने निवृत्त कियो. ताहीतें अब मैं न्हाइवेकों आयो हूं. ता पाछें दोउ जनें श्रीगङ्गाजीमें न्हाइकै महाप्रसाद लियो. तब वह पण्डित ब्राह्मन अपने मनमें विचार करन लाग्यो, जो याकौ साक्षात् भोग हतो सो सहजही में निवृत्त कैसे भयो ? तातें जानियत हैं, जो याकौ स्वामी बलवान है. तातें ऐसें जानि परत हैं, जो या वैष्णव धर्म समान और कोई धर्म नाहीं. तब दूसरे दिन वह पण्डित ब्राह्मननें वा वैष्णव ब्राह्मनसों कह्यो, जो तुम मोका अब नाम देहु. और तुम्हारे धर्मकी प्रनालिका परिपाटी सब तुम हमारे आगें कहो. तब वह वैष्णव ब्राह्मन बोल्यो, जो हमारे गुरु तो श्रीगुसांईजी हैं. सो वे द्वारिका पधारे हैं. सो महिना पांचमें श्रीगोकुलजी पधारेंगें. तब तुम उनके पास जांइकै सेवक हूजियो. तब वा पण्डित ब्राह्मननें कही, जो वा बातकों तो दिन बोहोत चाहिए. और तब तांई मेरो सरीर छूटे तो मैं ऐसें कौ ऐसो रहों. तातें तुम मोकों नाम देहु. तब वा पण्डित ब्राह्मनसों वा वैष्णव ब्राह्मनने कह्यो, जो तुम तो बड़े हो. और बड़े पण्डित ब्राह्मन हो. तातें मोतें तो नाम दियो न जांई. सो ऐसी बात तो कबहू न होइगी. तब वा पण्डित ब्राह्मननें कही, जो तुम मोकों नाम देउगे नाहीं तो मैं तुम्हारे माथें मरूंगो. तब तुमकों हत्या चढेगी. नाहीं तो तुम मोकों नाम सुनावो. ता पाछें वा वैष्णव ब्राह्मनने नाम सुनायो. और वा पण्डित ब्राह्मनसों कह्यो, जो

अब तुम या नामकौ सुमरन करो. तब वह पण्डित ब्राह्मननें दूसरे दिन न्हाइकै नामकौ सुमरन कियो. पाछें वा पण्डित ब्राह्मननें वा वैष्णवजीसों कह्यो, जो अब कछू तुम्हारे घरकी टहल हमकों देउ. तब वा ब्राह्मनने वा पण्डित ब्राह्मनसों कह्यो, जो भले. जो आज तें या गांइके लिये दूब खोदिकै तुम ही लायो करो. तब वह पण्डित ब्राह्मन तो दूब खोदिवेकों गयो. और वह वैष्णव ब्राह्मन भिक्षा मांगनकों गयो. सो जब भिक्षा मांगिकै वह अपने घर आयो तब वा वैष्णव ब्राह्मननें वा पण्डित ब्राह्मन तें कही, जो मेरे पास एक वस्तू है सो मैं तुमकों देत हूं सो तुम लेहु. तब वा वैष्णव ब्राह्मननें कही, जो पण्डित ब्राह्मन ! तुम्हारे पास ऐसी कहा वस्तू है ? तब वा पण्डित ब्राह्मननें वह मनि हती सो वा वैष्णव ब्राह्मनकों दीनी. तब उन पण्डित ब्राह्मन तें कही, जो या मनि तें कहा होंई ? तब वा पण्डित ब्राह्मनने कही, जो यासों सुवर्न जितनो चहिए तितनो होंइ. तब वा वैष्णव ब्राह्मनसों पूछी, जो यह मनि तुमने मोकों दीनी ? या भांति वासों वा वैष्णव ब्राह्मननें तीन बार पूछी. तब तीनों बार या पण्डित ब्राह्मननें यह कही, जो यह मनि मैनें तुमकों दीनी. तब वा वैष्णव ब्राह्मननें वह मनि लै कै श्रीगङ्गाजीमें डारि दीनी. तब वह पण्डित ब्राह्मन तो वा ब्राह्मनसों लरन लाग्यो. जो तुम मेरी मनि देउ. मैनें तो मनि बोहोत ही कष्ट तें लीनी हती. और तुमने तो एक छिनहीमें गङ्गाजीमें डारि दीनी. तातें कै तो तुम मेरी मनि देउ नांतरु तुम्हारे माथें अब ही मरूंगो. तब वा वैष्णव ब्राह्मननें वा पण्डित ब्राह्मन तें पूछी, जो तुम्हारे यह मनि कौन काम आवत है ? तुम्हारी मनि तें कहा होत हैं ? तब वा पण्डित ब्राह्मननें कही, जो यह मेरी मनि तें तो सोना होत है. तब वा वैष्णव ब्राह्मनके द्वारें एक न्हाइवेकी पत्थरकी सिला परी हती. सो वा पण्डित ब्राह्मनकों दिखाई. और पण्डित ब्राह्मनसों कह्यो, जो या पत्थरसों तुम लोहा घिसि देखो तो, याहू तें सोना बोहोत होत हैं. जो यासों सोना होंइ तो यह पत्थर तुमही लीजियो. तब वा पण्डित ब्राह्मनके पास वाके पानी पीवनकौ कमण्डल हतो. सो वा कमण्डलकी पेंदीसों लोहा लग्यो हतो. तब वा पण्डित ब्राह्मननें वा पत्थरसों वह कमण्डल लगायो. तब वह लोहा हतो सो सुवर्न होंइ गयो. तब वा वैष्णव ब्राह्मननें वा पण्डित ब्राह्मनसों कह्यो, जो तुम सुनो ! या गङ्गाजीके तीर ये जितने कंकर परे हैं, सो ए कांकर नहीं हैं, ए तो सर्व मनि हैं, तातें तुम्हारी इच्छामें आवे सो मनि लेओ. तब वह पण्डित ब्राह्मन अपने मनमें कहन लाग्यो, जो इनकौ धर्म तो अब ाधारन हैं. तब वह पण्डित ब्राह्मन वा वैष्णव ब्राह्मनके पांवन पर्यो. तब वह पण्डित ब्राह्मन कहन लाग्यो, जो वैष्णव ! मैं तो अपराधी हूं. तातें तुम मेरो अपराध अब छिमा करो. ता पाछें वह पण्डित ब्राह्मन बाहिर आयो. पाछें पण्डित ब्राह्मनकौ तो ज्ञान भयो, जो यह वैष्णव ब्राह्मन तो कोई बड़ो महापुरुष हैं. और इनकौ धर्म हू सबन तें बड़ो है. और इनके स्वामी बराबर कोई नाहीं. पाछें वैष्णव

ब्राह्मन तो उहांई रह्यो. और वह तो श्रीगोकुल आयो. सो श्रीगुसांईजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै ता पाछें दरसन करे. पाछें निवेदन कियो. सो पण्डित ब्राह्मन श्रीगुसांईजीकौ कृपापात्र भगवदीय भयो.

भाव प्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो लौकिक व्यवहार सब तुच्छ करि जाननें. एक श्रीठाकुरजीकों ही सर्वस्व करिकै जानने. तो प्रभु अपने जनकौ कष्ट प्रारब्ध सहजमें भुगतवाइ लेत हैं. एसो अनुग्रह करत हैं. और वैष्णवके सङ्गकौ ऐसो प्रताप है, जो वह पण्डित ब्राह्मन हू श्रीगुसांईजीकौ कृपापात्र सेवक भयो.

सो यह वैष्णव ब्राह्मन श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।७८।।

७९-गोपीनाथदास ग्वाल

अब श्रीगुसांईजीके सेवक गोपीनाथदास सों श्रीगोवर्द्धननाथजीकी गांइनके ग्वाल हे, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. सो नन्दरायजीकी गांइनके ग्वाल हैं, तिनके ये मुखिया हैं. लीलामें इनकौ नाम 'गोवर्द्धन' ग्वाल है. ये श्रीठाकुरजीकौ अन्तरङ्ग सखा हैं. तातें श्रीठाकुरजीकों अति प्रिय है. ये 'रत्ना' तें प्रगटे हैं, तातें इनके भावरूप हैं.

ये गोपालपुरमें एक सनाढ्यके जन्में. सो बालपने तें श्रीगुसांईजीके सेवक भए हैं. पाछें श्रीनाथजीकी गांइनकी सेवामें रहे. ता पाछें ब्याह भयो लरिका हू भए. तब सब घरकेनकों श्रीगुसांईजीके सेवक कराए. ता पाछें ये बड़े भए. तब श्रीगुसांईजी उनकों सब ग्वालनके मुखिया किये. सो गांइनकी रखवाली नीकी भांतिसों करते. तातें इन पर श्रीगोवर्द्धननाथजी आप बोहोत प्रसन्न रहते. साक्षात् बातें करते, इनसों खेलते कूदते. सो ये निसङ्क सबसों बोलते. शुद्ध

भाव हतो. तातें श्रीगुसांईजी हू इन पर सदा प्रसन्न रहते.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै श्रीनाथजीकी भैंसि खोइ गई. तब गोपीनाथदास ग्वाल श्रीगुसांईजीके अति कृपापात्र भगवदीय हते. सो गोपीनाथदास ग्वाल भैंसि खोजिवेकों गए. सो श्रीनाथजी तहां खेलत हते. तब गोपीनाथदास ग्वालनें श्रीनाथजीकों बिनती करिकै पूछ्यो, जो महाराज ! एक भैंसि खोइ गई है सो बताय देहु. तब श्रीगोवर्द्धननाथजीनें गोवर्द्धनकी पूंछरी ओर श्रीगिरिराजकी कन्दराके आगें बताई दीनी. तब तहां तें गोपीनाथदास ग्वाल खोज लै आए.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
बोहोरि एक समै श्रीनाथजीके उत्थापन समै भोगमें तें आठ लडुवा बूंदीके गए. तब सोर भयो. सो भीतरिया सब सोर करन लागे, जो भोग तें तें लडुवा क्यों घटे ? परि कछू जानि न परें, जो लडुवा कहां गए ? सो लडुवा बन विषे लै जांइकै श्रीनाथजीनें गोपीनाथदास ग्वालकों दिये हते. सो गोपीनाथदास ग्वाल सन्ध्याके समै घर आए. तब लरिकान कही, जो बावा ! आज श्रीनाथजीके भोगमें तें आठ लडुवा गए हैं. तब गोपीनाथदास कछू बोले नाहीं. ता पाछें सेनआर्ति भई. श्रीनाथजी पोढें. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगिरिराज उपर तें नीचे पधारे. तब अपनी बैठकमें आयकै बैठें. तब गोपीनाथदास ग्वालनें आयकै श्रीगुसांईजीसों पूछी, जो महाराज ! आज उपर मन्दिरमें सोर कहा होत हतो ? तब श्रीगुसांईजीनें कह्यौ, जो आज आठ लडुवा श्रीनाथजीके भोग में तें गए. तब वे लडुवा गोपीनाथदास ग्वाल पास हते. सो काढिकै दिखाइ दिये. और कही, जो महाराज ! ये लडुवा हैं. तामें तें द्वै मोकों दिये हैं. और सबनकों बांटि दिये हैं. सो वे गोपीनाथदास ग्वाल श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र सेवक हते. जिन तें श्रीनाथजी सदा सानुभाव रहतें.

भावप्रकाश :
या वार्तामें यह सन्देह है, जो जा सामग्रीकों श्रीठाकुरजीके श्रीहस्तकौ परस होंइ सो तो सर्वथा घटे नाहीं. काहेतें, जो श्रीठाकुरजीके श्रीहस्तमें पद्म रहत हैं.

यातें जितनी सामग्री लेत हैं उतनी ही वामें और होंइ जात हैं. तातें यामें तें आठ लडुवा क्यों घटे ? तहां कहत हैं, जो प्रभु सर्व करन समर्थ हैं. जब जैसी इच्छा होंइ तैसो खेल होंइ. यामें कछू नियामक नाहीं. श्रीठाकुरजीकी इच्छा ही नियामक है. सो मन्दिरके सेवकनकौ नेग बांधिवेके तांई श्रीनाथजीकौ यह कौतुक है. सो या समै ग्वालनकौ नेग बांधिवेके तांई यह कार्य कियो है, ऐसें जाननो. और ग्वालबाल सब भूखे हे, सो प्रभु अपने अन्तरङ्ग सखानकौ कष्ट कैसें सहे ? तातें ये लडुवा उनकों दिये. या प्रकार भक्तवत्सलता प्रकट करनके तांई यह कौतुक कियो ऐसें जाननो.

वार्ता प्रसङ्ग ३ :

और एक समै श्रीगुसांईजी उष्णकालके दिननमें श्रीनाथजीद्वार पधारे हते. तब श्रीगुसांईजीनें श्रीनाथजीकौ सिंगार करिकै राजभोग समर्प्यो हतो. पाछें समै भए तब भोग सरायकै अनोसर करिकै आप नीचे पधारे. तब भोजन करिकै बीड़ा अरोगिकै ता पाछें आप पोढें हते. ता समै गोपालदास भीतरिया अपनी धोवती धोइकै खरे मध्याह्नके समै पूछरी तें आवत हते. तब ता समै गोपालदास सों श्रीनाथजीने कही, जो गोपालदास ! तुम जांइकै श्रीगुसांईजीसों कहियो, जो हमकों भूख बोहोत लागी हैं. तब वे गोपालदास अपनी धोवती सूकाइ बैठकमें श्रीगुसांईजी पोढे हे तहां आए. सो गोपालदास देखे तो श्रीगुसांईजी भरि निद्रामें पोढे हैं. तब गोपालदासने श्रीगुसांईजीसों चरन दाबिकै यह कह्यो, जो महाराज ! श्रीनाथजीनें कही है, जो हमें भूख बोहोत लागी है. यह कहि मोसों आप पूंछरीकी ओरकों गए हैं. तब यह बात सुनत ही श्रीगुसांईजी तत्काल सीघ्र उठिकै तुरत ही स्नान करिकै उपर मन्दिरमें आप पधारे. तब सिखरन - भात और पना तथा दूसरी सीतल सामग्री तुरत ही सिद्ध करिकै एक परातमें धरि कै गांठि बांधिकै माथें पर चढाइकै श्रीगुसांईजी पूंछरीकी ओरकों चले. ता समै पैंडेमें घाम बोहोत हती. ता समै श्रीगुसांईजीके पांवनमें फलका परत हते. सो आप उराहने पांवन चले जात हते. और सेवक हू कोई साथ लियो नाहीं. ता समै आप अकेले ही जात हते. सो ता समै श्रीगोपीनाथदास ग्वाल पूंछरीकी ओर तें आवत हते. सो गोपीनाथदासके साथ एक लरिका हतो. तब ता समै वा लरिकासों गोपीनाथदासने पूछी, जो या समै या ठौर अकेलो नांगे पांवन कौन चल्यो आवत हैं ? तातें क्योंरे लरिका ! कैधों विटठलनाथजी श्रीगुसांईजी तो न होंइ ? तब वा लरिकानें कही, जो हां हां विटठलनाथजी हैं तो सही. तब देखिकै श्रीगुसांईजीसों गोपीनाथने बिनती कीनी और कह्यो, जो महाराजाधिराज ! ऐसी घाममें नांगे पांवन कहां जात हो ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो श्रीनाथजी कहां बिराजत है, सो मोकों बताउ. उनकों भूख लागी है. तातें मैं छाक ल्यायो हूं. तब गोपीनाथदासने बिनती कीनी, जो

महाराजाधिराज ! तुमकों किन बहकाए हैं ? जो या बिरिया तुम चले जात हो ? और तुम्हारे पांवनमें फलका परत हैं. और तुम जाके लिये चल जात हो, सो वाकों कहा ऐसी जरूर परी है ? जो ऐसी घाम में तुम बाहिर निकसे हो ? और तुम सों जिनने ऐसी बात कही है, सो ताकौ नाम तुम मेरे आगें कहत क्यों नाहीं हो ? ताकों मैं ठौर ही मारों. जो दूसरी बेर फेरिकै ऐसो झूंठ न बोले. तातें तुम इहां तें पाछें फिरो. ऐसी बात श्रीगुसांईजी सों गोपीनाथदास ग्वालने बोहोत कही. परि श्रीगुसांईजी तो ठाढ़े - ठाढ़े सुनत ही रहे. सो गोपीनाथदास ग्वालकों कछू उत्तर दीनो नाहीं. परि आप घाममें बोहोत व्याकुल भए. तब फेरिकै गोपीनाथदासनें श्रीगुसांईजीसों कही, जो भलें, अब तो इहां लों आए हो तो आगें हू होंइ आओ. पाछें श्रीगुसांईजीके साथ गोपीनाथदासने वह लरिका करि दीनो. और वा लरिकासों गोपीनाथदासनें कही, जो इनके साथ जा. सो वह बड़ो ढाक देखियत है. सो उहां तांई उनके साथ चल्यो जइयो. और उहां तें बड़ो बोहोत दूर एक श्यामढाक है. सो जब वह तेरी द्दष्टि परे तब तू इनकों दूर ही तें दिखायकै पाछें फिरि अइयो. और जो तू आगें जाईगो तो हों तोकों मारोंगो. सो गोपीनाथदास तो उहांइ ठाढ़े रहे. तब वह लरिका श्रीगुसांईजीके साथ गयो. तब दूरि ही तें श्यामढाक इनकी द्दष्टि पर्यो. तब वह लरिका तो पाछें फिरि आयो. और श्रीगुसांईजी तो आगें पधारे. तब आप आगें जांइ देखें तो श्यामढाकके नीचे श्रीनाथजी बैठें हैं. और सब गांइ दूरि चरत हैं. और आगें सब ग्वाल ठाढ़े हैं. सो वा ढाककी छांह बोहोत सीतल है. तब श्रीगुसांईजीकों दूरि तें आवत देखिकै श्रीनाथजी बोहोत प्रसन्न भए. तब श्रीनाथजीने श्रीगुसांईजीसों कही, जो बोहोत ही भली भई, जो तुम आए. हमकों भूख बोहोत ही लागी हती. तब श्रीनाथजीने श्रीगुसांईजीकों बैठिवेकी आज्ञा दीनी, जो तुम बैठो. तब श्रीगुसांईजी उहां ही बैठें. तब श्रीनाथजीनें श्रीबलदेवजीकों आज्ञा दीनी, जो तुम यह सामग्री सब छोरिकै ल्याउ. तब श्रीबलदेवजी सब सामग्री छोरिकै ल्याए. तब श्रीनाथजी सब सामग्री अरोगे. और बाकी रही हती सो सब ग्वालनकों बांटि दीनी. ता पाछें श्रीनाथजीने श्रीबलदेवजीसों कही, जो अब तुम बैठो.

पाछें श्रीनाथजीने श्रीगुसांईजीसों कही, जो तुम आए सो बोहोत भली करी. आज हम बड़े भूखे हे. पाछें श्रीनाथजी तो वा स्थल तें उठे. तब श्रीनाथजीने श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो अब तुम निज मन्दिरमें जाओ. तब श्रीगुसांईजी तो 'अप्सराकुण्ड' पधारे. तब आइकै सब वस्त्र भिंजोयकै आप उहां ही स्नान करिकै अपरसता सों श्रीगिरिराज पर्वत उपर पधारे. तब ता समै संखनादकौ समय हतो. सो उहां जांइकै

संखनाद कियो.

भावप्रकाश :
या वार्तामें यह बड़ो सन्देह है, जो श्रीनाथजी आप भूखे भए तो अनोसरकौ बंटा क्यों नाहीं लियो ? और श्रीगुसांईजीकों हू क्यों नाहीं जतायो ? श्रीगुसांईजीकों ऐसो परिश्रम क्यों दियो ? काहेतें, आप दोउ एक स्वरूप हैं. तासों श्रीगुसांईजीकों परिश्रम पर्यो सो तो आप ही कौ भयो. तहां कहत है, जो श्रीनाथजीकों श्यामढाकमें सीतल सामग्री अरोगिवेकी इच्छा भई. सो तो अनोसरके बंटानमें हती नाहीं. और गोपालदास द्वारा कहवाई सो तो विशेष अनुग्रह प्रगट करनार्थ. सो समै समै पर रामदासजी आदि सेवकन द्वारा ऐसी आज्ञा श्रीनाथजी आप करत हैं. सो श्रीगुसांईजी विशेष अनुग्रह जानि ता आज्ञाको यथार्थ पालन करत हैं. काहेतें, आप जद्यपि ईश्वर हैं, तोउ दास भाव प्रगट करत हैं. सो स्वकीयनकों ज्ञापनार्थ. यामें श्रीगुसांईजी आप अपनी अकिञ्चनता हू प्रगट करत हैं. सो यह पुष्टिमार्गकी रीति है, जो काहूके द्वारा विशेष आज्ञा होंइ तो परम अनुग्रह जाननो. यातें श्रीगुसांईजीकों नाहीं जतायो.

सो वे गोपीनाथदास ग्वाल श्रीनाथजीके तथा श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।७९।।

८०-दोउ कुनबी, जिननें माला - तिलक छुपाए

अब श्रीगुसांईजीके सेवक दोइ कुनबी, गुजरातके बासी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये दोउ सात्विक भक्त हैं. लीलामें एककौ नाम 'प्रतिमा' है और दूसरेकौ नाम 'मनोहारिनी' है. ये दोउ 'रत्ना' तें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

ये दोउ कुनबी गुजरात तें श्रीगोकुल आई श्रीगुसांईजीके सेवक भए. पाछें श्रीगुसांईजीकी आज्ञा पाइ श्रीनाथजीकी सेवा करन लागे. तब एक दिन उन दोउ भाईनके मनमें ऐसी आई, जो हम श्रीनाथजीकी सेवा तो करत हैं, परि कछू मनोरथ तो करि सकत नाहीं. तब एक दिन दोउ जनें अपने मनमें ऐसो विचारि करिकै उहां तें श्रीनाथजीकी सेवा छोरिकै दोउ भाई चले. सो उहां तें कितनीक दूरिं एक जनो तलाव खुदावत हतो. सो उहां उन कुनबीने देख्यो. तब उन दोउ भाईन जांइके उनसों पूछ्यो, जो तुम हमकों इहां मजूरी करनकों राखोगे ? तब उन कही, जो तुम सुखेन रहो. तुम हू मजूरी करो. तब दोउ भाई मजूरी करनकों रहे. तब उन अपने गरेमें तें माला उतारिकै अपनी पागमें बांधी. सो पाग माथे पें रहि आवे. पाछें तिलक धोइकै उहांकौ काम करन लागे.

भाव प्रकाश :
सो या वार्तामें यह जतायो, जो वैष्णवता छिपाइकै मजूरी करते.

तब उहांके कारीगर तथा मौसल जे हते और उहांके तलाव खुदावनहारे जे हते सो वह सब कोई उन दोउ जनेंन पर प्रसन्न रहें. और येहू दोउ जनें सबनतें चोगुनो काम करें. पाछें मोसल सबनकों चवेनी बांटे तब दोउ जनें तो वा चवेनीके पलटें कोरो ही नाज लेंहि. तब वह चवेनीकौ बांटनवारो और सबनके बांटते जासों इनकों दूनो बांट देई. तब वे रात्रिकों जब अपने ठिकाने आवे तब वे सीधो एक ठौर धरिकै एक कोरो घड़ा उतारिकै न्यारो धरें. तब परदनी पहरिकै माला पहरि स्नान करिकै अपरसता सों एक जनों रसोई करें. और एक जनों उपरकी टहल करें. तब वे न्हायकै तिलक मुद्रा धरिकै प्रथम तो जप करें. ता पाछें सब काज करें. सो रसोई करिकै श्रीठाकुरजीकौ भोग सराइकै दोउ भाई महाप्रसाद लेई. पाछें पहोंचिकै सोय रहें. या भांतिसों नित्य करें.

सो एक दिना वह इनकी मजूरी चुकावत हतो. सो वेहू वैष्णव हुतो. तब वानें इन दोउ जनेंनकों माला तिलक शुद्ध देखें. काहेतें, वा दिना ए माला - तिलक उतारिवो भूल गये हते. सो वानें जानी, जो ये तो दोउ भाई वैष्णव है. तब वानें अपने मनमें विचारी, जो ये दोउ जनें इहां मसकत बोहोत करत हैं. और ये रोजगार तो थोरो ही पावत हैं. तातें ये मजूरी बोहोत पावे तो आछौ. पाछें सवारो भए उन

दोउ जनेंनसों वानें कही, जो भलेजू भले, तुमकों तो हमने पहचाने हैं. तातें तुम तो दोउ वैष्णव हो. और श्रीगुसांईजीके सेवक हो. और तुमने तो हमकों अपनी वैष्णवता जनाई नाहीं. तब दोउ जनें सुनिकै कछू बोले नाहीं. तब इन दोउ जनेंन अपने मनमें विचारी, जो अब तो आपुन वैष्णव जानि परे. तातें अब तो इहां ते चलिए. अब तो इहां रहिवेकौ काम है नाहीं. तब इन दोउ जनेंन ऐसो विचार कियो. और वा दरोगाने ऐसो विचारि कियो, जो आज मैं इन दोउ जनेंनकों काम और ही ठौर सोंपों. सो वाकौ सिरदार पैसा बांटत हुतो. तासों वा मोसलने कही, जो ये दोउ जनें आए हैं. सो उनकों जो कहूं भली ठौर काम सोंपिए तो भलो है. तब उहां और हू कहन लागे, जो ये तो भले मनुष्य हैं. तातें ऐसो विचार तो निश्चय कीजिए. और वे तो दोउ जनें वैष्णव हते. सो अपनी मजूरीके पैसा लै कै अपने डेरा आयकै, तब रसोई करिकै श्रीठाकुरजीकौ भोग समर्पिकै पाछें महाप्रसाद लै कै तब मजूरीके जो पैसा आए हते सो दोउ जनेंन आधे - आधे बांटि लीनें. सो जब रात्रि प्रहर एक गई तब उहांतें दोउ जनें चले. सो कोस पन्द्रह आए. तब उहां इनकों प्रातःकाल भयो. तब उहां दांतिन पानी कियो. पाछें फेरि चले सो कोस बीस चले. तब उहां रात्रिकौ एक ठिकाने रसोई करिकै श्रीठाकुरजीकौ भोग समर्पिकै भोग सराय दोउ जन महाप्रसाद लिये. पाछें रात्रिकों सोय रहे. तब दूसरे दिन सवारे उहांतें फेरि चले. सो श्रीनाथजीकौ दरसन कियो. ता पाछें उन श्रीगुसांईजीकौ दरसन कियो. फेरि साष्टाङ्ग दण्डवत् कीनी. तब श्रीगुसांईजीनें पूछि, जो तुम दोउ जनें कहां गए हते ? तब इन कही, महाराजाधिराज ! एक दिन श्रीनाथजीकी सेवा करत हमारे मनमें एसीही आई हती, जो श्रीनाथजीकी हम सेवा तो करत हैं, परि श्रीनाथजीकों हमने कोई सामग्री करवाई नाहीं. तातें महाराज ! हम दोउ जनें उहां मजूरीकों गए हते. सो मजूरी करिकै राज हम पैसा ले आए हैं. तब वे पैसा हते सो सब श्रीगुसांईजीके आगें राखे. और अपने मनमें जो - जो मनोरथ हतो सो सब मनोरथ कहि सुनायो. तब वे पैसा हते सो सब श्रीगुसांईजीने श्रीनाथजीके भण्डारमें दिये. तब जो - जो सामग्री उन दोउ भाईन कही, सो सामग्री सिद्ध करवाइवेकौ श्रीगुसांईजी आज्ञा दिये. तब उन दोउ जनेंननें उहांकी सब बात श्रीगुसांईजीके आगें कही. जो महाराज ! हमकों रोजगार तो बोहोत ही भलो बन्यो हो. परि महाराज ! उननें हमकों पहिचानें. जो ये तो भले वैष्णव हैं. तातें महाराज ! हम उहां तें भाजे. सो महाराज ! इहां हमने आयकै राजके चरनारविन्द देखे. तब श्रीगुसांईजीनें अपने श्रीमुखतें कही, जो स्याबास ! तुम्हारो धर्म रह्यो. तातें वैष्णवकौ तो यही धर्म है. पाछें श्रीगुसांईजीनें आज्ञा दीनी, जो अब तुम जो पहिलें श्रीनाथजीकी सेवा करत हते, सोई तुम करो. सो प्रसन्न होंइकै और श्रीठाकुरजीकी सेवा जानिकै तुम सेवा करियो.

भाव प्रकाश :
सो या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णवकों अपनो धर्म गोप्य राखनो. काहूके आगें प्रगट करनो नाहीं. और जो अपनो धर्म दिखाइकै द्रव्यादि लेत हैं वह वैष्णव नाहीं. ताकों धर्म सर्वथा सिद्ध न होंइ. ऐसी धर्मकी सूक्ष्म गति है.

सो वे दोउ भाई श्रीगुसांईजीके ऐसें परम कृपापात्र भगवदीय भए. तातें उनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।८०।।

८१-एक परम वैष्णव, जो वृक्षके साथ भगवद्वार्ता करतो

अब श्रीगुसांईजीके सेवक एक परम वैष्णव, गुजरातके बासी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'भावोद्‌बोधिका' है. ये भावनकौ उद्‌बोधन करनहारी हैं. ये 'रत्ना' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

यह गुजरातमें एक गाममें एक ब्राह्मनके जन्म्यो. सो एक बेर श्रीगुसांईजी द्वारकाजी श्रीरनछोरजीके दरसनकों पधारत हे. तब याके गाम बाहिर एक तलाव पर एक वृक्ष नीचे डेरा भये. तब इन श्रीगुसांईजीके दरसन पाए. सो कोटिकन्दर्पलावन्य ऐसें दरसन पाए. तब यानें अपने मनमें विचार कियो, जो ये ईश्वर हैं. तातें इनके सरनि जइए तो आछौ. पाछें यानें श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! कृपा करि मोकों सेवक कीजिए. तब श्रीगुसांईजी याकों दैवी जानि सरन लिये. नाम निवेदन कराए. पाछें आप उहां तें द्वारिकाजी पधारे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वा गाममें एक वही वैष्णव रहत हतो. सो वा गाममें और कोऊ दूसरे वैष्णवकौ घर न हुतो. सो वा वैष्णवकौ गाम मार्गमें हतो. सो श्रीगुसांईजी एक वार द्वारिकाजी पधारे हते. सो आप वही मार्ग आए हुते. ता समै खबरि भई, जो श्रीगुसांईजी इहां पधारत हैं. तब वह वैष्णव सुनत ही आप आगें जांइकै वा मार्गके बीचमें आइकै वह ठाढ़ो भयो. सो श्रीगुसांईजीकों अवलोकन करिकै, इनके चरनारविन्द पर माथो धरिकै साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै, तब फेरि बिनती करी. और अपने घर तांई श्रीगुसांईजीकों पधराय ल्यायो. परि वाकौ घर तो निपट छोटो हतो. तोउ आप उहांही डेरा करवाए. तब श्रीगुसांईजी वा वैष्णवके आग्रह सों उहां ही भोजन किये. पाछें पोढें. पाछें वा वैष्णवनें श्रीगुसांईजीके साथके ब्रजवासी टहलुवानकों भली भांति सों रसोई करवाई. सो उन ब्रजवासीन ता दिना महाप्रसाद उहां ही लियो. पाछें उत्थापनके समै श्रीगुसांईजी गादी तकियान उपर बैठे हते. तब ता समै वह वैष्णव श्रीगुसांईजी पास बैठिकै चरनारविन्दकी सेवा करत हतो. तब ताही समैं वा वैष्णवसों श्रीगुसांईजीनें पूछ्यो, जो इहां तेरो निर्वाह कैसें करिकै कौन भांतिसों चलत है ? ता वा वैष्णवने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! एक बार आप इहां पहिलें पधारे हते. तब इहां एक वृक्षके नीचे महाराजनें डेरा कियो हतो. तहां महाराजनें मोकों सरनि लियो हतो. तब आप कोटि कन्दर्पलावन्य रूपकौ वहां दरसन हू दियो. सो या वृक्षने हू नाम - निवेदन मन्त्र सुन्यो हतो अरु आपके पूरन पुरुषोत्तमके दरसन पाए हते. तब तें मैनें यह जानी, जो यह वृक्ष तो कोई वैष्णव है. तातें महाराज ! मैं नित्य वाही वृक्षके नीचे जांइ बैठत हूं. और वा वृक्ष अब ों, राज ! मैं तुम्हारे ही नाम लै लै कै गुनानुवाद करत हों. ता पाछें अपने घरकों उठि आवत हों. तब श्रीगुसांईजी तो वा वैष्णवकी बात सुनिकै बोहोत ही प्रसन्न भए. तब श्रीगुसांईजीनें श्रीमुख तें कही, जो मैंने तो लौकिक बात पूछी हती और या वैष्णवनें तो अलौकिकता सों उत्तर दियो.

भाव प्रकाश :
यामें यह जतायो, जो वैष्णवकों सदा सर्वकाल अलौकिक बुद्धि राखनी.

पाछें श्रीगुसांईजीनें वा वैष्णवसों पूछी, जो कहो वैष्णव ! वह वृक्ष कहां हैं ? तब वा वैष्णवनें कही, जो महाराज ! वह वृक्ष तो गामके बाहिर है. तब श्रीगुसांईजीनें ताही समै अपनो घोड़ा मंगायो. पाछें श्रीगुसांईजी वा घोड़ा उपर असवार होंइकै आप वा वृक्षकों देखिवेकों

पधारे. तब वह वैष्णव हू श्रीगुसांईजीके साथ चल्यो. सो वा गामके बाहिर वह वृक्ष हतो, सो तहां श्रीगुसांईजी पधारे. तब दूरि ही तें वा वैष्णवनें वह वृक्ष श्रीगुसांईजीकों बतायो. जो महाराज ! वह वृक्ष तो यह है. तब वा वृक्षनें दूर ही तें श्रीगुसांईजीकों देखे. तब वह वृक्ष उपरकी साखान सहित नीचे नम्यो. तब श्रीगुसांईजी तो वा वृक्षके नीचे पधारे. तब वह वृक्ष अपनी साखान करिकै श्रीगुसांईजीके चरनारविन्दकौ परस कियो. पाछें श्रीगुसांईजीके चरनारविन्दकौ परस करत मात्र वह वृक्ष मूल तें उखरि पर्यो. तब वृक्षकों श्रीगुसांईजीनें अङ्गीकार कियो.

तब वैष्णवनें श्रीगुसांईजीसों पूछी, जो महाराजाधिराज ! यह वृक्ष पूर्व जन्ममें कौन हो ? सो कृपा करिकै कहिए. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो यह लीलाकौ जीव है श्रीनन्दरायजीके उहांकौ ग्वाल है. 'पेंचू' याकौ नाम है. सो कोई अपराध करिकै यह भूतल पर आयो. पाछें वैष्णव भयो. परि यह विषयी बोहोत हतो. तातें यानें वृक्षकौ जन्म पायो. पाछें नाम - निवेदन मन्त्र सुनि यह पुष्टिमार्गीय भयो. सो अब तुम्हारे सङ्ग करि याकौ सर्वाङ्ग अङ्गीकार भयो और लीलामें प्राप्त भयो.

भाव प्रकाश :
यामें यह जतायो, जो तादृशी वैष्णवकौ सङ्ग सर्वोपरि है. उनके सम्बन्ध मात्र तें जड़नकी हू या प्रकार गति होत हैं.

पाछें श्रीगुसांईजीसों वा वैष्णवनें बिनती करी, जो महाराज ! अब मोकों कितनो विलम्ब है ? तब वा वैष्णवके उपर श्रीगुसांईजीनें कृपा करिकै कही, जो तोपें इतने दिना तांई मैं या देहसों सेवा करवाउंगो. सो ताकौ प्रमान कह्यो. और ता पाछें तेरी यह लौकिक देह छूटेगी और लीलामें प्राप्त होइगो. तब श्रीगुसांईजीके श्रीमुखके बचन सुनिकै वह वैष्णव बोहोत ही प्रसन्न भयो.

पाछें श्रीगुसांईजी वा वृक्षके उहां तें अपने डेरा पधारे. तब रात्रिकों श्रीगुसांईजी उहांई रहे. पाछें प्रातःकाल भयो. तब उहां तें श्रीगुसांईजीनें विजय कियो. तब वा वैष्णवनें अपने घरमें जो कछू हतो, सो ताही समैं श्रीगुसांईजीकों सब समर्प्यो. पाछें श्रीगुसांईजी तो द्वारिका पधारे.

तब थोरेसे दिननमें वा वैष्णवने विप्रयोग करि देह छोरी. तब वह वैष्णव अलौकिक लीलामें प्राप्त भयो. सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो भगवदीय कृपापात्र हतो. तातें उनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।८१।।

८२-एक गोड़िया ब्राह्मण

अब श्रीगुसांईजीके सेवक एक गोड़िया ब्राह्मन, ब्रजमें रहतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'मोरसिरी' हैं. ये 'रसप्रकाशिका' तें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं.

ये गौड देसमें एक ब्राह्मनके जन्म्यो. पाछें बड़ो भयो तब व्रजयात्रा करनकों आयो. सो वानें श्रीवृन्दावनके दरसन किये. सो बृन्दावनके दरसन करत ही वाकौ मन उहां आकर्षित भयो. सो ता पाछें वह श्रीवृन्दावन छोरिकै कहूं गयो नाहीं. सो वृन्दावनमें गोडिया बोहोत हुते. सो वह गोड़िया सब ब्रजबासीनकी टहल करत हुते. तामें येहू रह्यो. सो ब्रजबासीनकी टहल करि अपनो निर्वाह करतो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै श्रीगुसांईजी श्रीबृन्दाबन पधारे हते. सो इह गोडियाकौ ऐसो मनोरथ भयो, जो मैं श्रीगुसांईजीके पास जांइकै नाम पाऊं तो बोहोत भलो है. सो इह गोड़िया ऐसो विचार करिकै श्रीगुसांईजीके पास आयो. तब समै पायकै वानें श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! मो पर कृपा करिकै मोकों नाम दीजिये. तब वा गोडियासों श्रीगुसांईजीनें पूछी, जो तुम कौन हो ? तब गोडियाने कही, जो महाराज ! हम गौड़ देसके हैं, ब्राह्मन हैं. गोड़िया कहावत हें. सो महाराज ! मो पर कृपा करिकै जो तुम हमकों नाम देउ तो हमारो भलो होंइ. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो तुम्हारो भलो तो योंही होइगो. तब श्रीगुसांईजीसों वा गोड़ियाने कही, जो महाराज ! हमकों नाम

देउ तो हमारो भलो होंइ. तब श्रीगुसांईजी उनसों कही, जो तुम माला - तिलक करिकै मजूरी करोगे तब तुमकों वैष्णव जानिकै तुम्हारी वस्तू सब कोई लेइगो. तुमकों वैष्णव जानिकै भिक्षा हू देइंगे. और तुम घास तथा लकड़ी हू बेचोगे तो तुमकों वैष्णव जानिकै लेइंगे. तब तुम्हारी वैष्णवता बिकाइगी. तातें तुम जो ऐसें ही रहो तो भले हैं. तब वा गोड़ियानें दोउ हाथ जोरिकै फेरि श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! माला तो मैं गोप्य राखोंगो. तिलक हू मैं जलकौ करूंगो. सो महाराज ! मैं औरनकों माला तिलक न दिखाउंगो. तब यह सुनिकै श्रीगुसांईजी वा उपर प्रसन्न होंइकै वाको नाम दियो. तब फेरिकै आप दयाल वा पर अनुग्रह कियो. सो आप ही तें वाकों समर्पन करवायो. पाछें श्रीनवनीतप्रियजीके वस्त्र सेवा करनकों पधराय दिये. तब वा गोड़ियाकौ सकल मनोरथ सिद्ध भयो. तब वह गोड़िया बोहोत ही भलो वैष्णव भयो. पाछें वह अन्तःकरनसों श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लाग्यो. सो वानें ऐसी प्रीतिसों सेवा करी, जो थोरे से दिनमें श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे.

भाव प्रकाश :
सो या वार्तामें यह जतायो, जो वैष्णव धर्म दिखायकै भिक्षा आदि देह निर्वाहकौ कछू कार्य न करनो. करे तो बाधक होंइ.

सो वह गोड़िया श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय भयो. सो वा गोड़िया उपर श्रीठाकुरजीकी ऐसी कृपा भई, जो वासों श्रीठाकुरजी प्रत्यक्ष बाते करते. सो उनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।८२।।

८३-एक स्त्री क्षत्राणि बिलाईवाली

अब श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी एक स्त्री, क्षत्रानी, पूरवमें रहती, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :

ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम ‘अङ्गना’ है. ये श्रीयशोदाजीकी सखी हैं. श्रीठाकुरजीपै इनकौ वात्सल्य भाव बोहोत हैं. तातें श्रीयशोदाजी इन पर सदा प्रसन्न रहति हैं. ये ‘रसप्रकाशिका’ तें प्रगटी हैं. तातें इनके भावरूप हैं.

ये कासी तें उरे कोस पांच पर एक गांव है तहां एक क्षत्रीके जन्मी. सो बरस आठकी भई तब इनकौ ब्याह जातिके एक लरिकासों भयो. पाछें कछूक दिनमें महामारी आई. तामें माता - पिता सास - ससुर और लरिका ये पाचों मरे. तब यह क्षत्रानी घरमें अकेली रही. सो रोवे ही रोवे. कछू खावे पीवे नाहीं. सो वाके घरके पास एक वैष्णव रहे. वासों या क्षत्रानीकौ दुःख देख्यो न गयो. तब वाने या क्षत्रानीसों कह्यो, जो बाई ! रोइवे तें कहा होइ ? प्रभुनकी ऐसी ही इच्छा ही. तातें अब तू श्रीठाकुरजीकी सेवा करि. तासों तोकों आनन्द होइगो. तब वा क्षत्रानीने कही, जो मैं तो कछू सेवा करिवो जानति नाहीं. तब वा क्षत्रानीसों वा वैष्णवनें कह्यो, जो तू अड़ेल जांइ श्रीगुसांईजीकी सेवक होंउ. श्रीगुसांईजी तोकों सेवाकौ प्रकार समझायकै कहेंगे. श्रीठाकुरजी पधराय देंगे. सो तू उनकी सेवा करियो. तातें तेरो सब दुःख निवृत्त होइगो. बोहोत आनन्द होइगो. श्रीठाकुरजी परम दयाल हैं. वे सब भली करेंगे. पाछें वह क्षत्रानी अड़ेल आई. पाछें श्रीगुसांईजीसों बिनती करि सेवकिनी भई. ता पाछें याने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो राज ! कछू सेवा पधराइ दीजिए. तो हों सेवा करों. मैं घरमें अकेली हों. तातें मेरे दिन जात नाहीं. तब श्रीगुसांईजी याकों सेवा पधराय दिये. एक लालजीकौ स्वरूप पधराय दियो. और सेवा प्रकार सब समझायो. पाछें श्रीगुसांईजी आज्ञा किये जो तू इनकी सेवा बालभावसों सावधान व्है करियो. श्रीठाकुरजी तोकों सब सुख देइंगे. पाछें वह क्षत्रानी श्रीठाकुरजीकों पधराय अड़ेल तें अपने देस गामकों आई. सो वह क्षत्रानी बड़ी भगवदीय भई.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

परि वा बाईके कोई सगो - सोंदरौ बेटी - बेटा कोई न हतो. आप अकेली हती. सो अपने घरमें श्रीठाकुरजीकी सेवा बोहोत भली भांति सों करती. जैसें कोई लौकिकमें बालकसों करें तैसें ही वह बाई श्रीठाकुरजी सों बातें करें. सो वह बाई आप कछू विकल सी रहती. परि श्रीठाकुरजीकी सेवा बोहोत ही प्रीतिसों स्नेहसों करती. जैसें वह बाई श्रीठाकुरजीकों अपने बालककी नांई बुलावे तैसें ही श्रीठाकुरजी वा बाईसों बोलें. तैसें ही वह लरिकाकी नांई करें. और जो वह बाई कबहू अपने घर तें बाहिर जांइ तब वह अपने घरतें ऐसें कहिकै जांइ, जो महाराज लालजी ! मैं तो बाहिर कछू कामकों जाति हों. तातें तुम यह सामग्री अपने घरमें है सो अरोगियो. और या कुञ्जा झारीमें तें

पानी पीजियो. और यह सामग्री ढांकि जाति हों. सो तुमकों भूख लागें तब खाइयो. और जो कछू मोकों अवार लागें तो तुम यामें तें पानि पीजियो. सो वह बाई अपने श्रीठाकुरजीकों या भांतिसों सब बात कहती. सो जब वह बाई बाहिर जांइ तब वे श्रीठाकुरजी वैसें ही करें. जैसें - जैसें वह बाई कहि जांई तैसें - तैसें ही श्रीठाकुरजी करें. जो श्रीठाकुरजीकों भूख लागे तो आपही अपने श्रीहस्तसों काढिकै अरोगें. और प्यास लागें तो आप ही अपने श्रीहस्तसों पानी पीवें. तब वह बाई आवें सो कुञ्जा झारीकों देखत ही आवें. जो मेरे लालजीने पानी पियो तो सही, प्यासे तो नाहीं रहे ? और भूखे हू रहे नाहीं ? तब वह बाईकौ मन प्रसन्न सन्तोष होंइ. और जब वह बाई सोवें तब अपनी ही खाट उपर अपने ही पास अपने श्रीलालजीकों लै सोवें. जैसें लौकिकमें अपने लरिकाकों लै कै सोवत हैं तैसें ही वह बाई अपने श्रीठाकुरजीकों अपने साथ लै सोवें. तब एक दिन रात्रि प्रहर डेढ़ गई हती तब ता दिना बिलाई दोइ वाके पलिंगके नीचे रह गई हती. सो दोउ बिलाई आपुसमें लरन लागी. तब श्रीठाकुरजी डरपन लागे. तब वह बाई वा बिलाईकों गारी देन लागी. पाछें श्रीठाकुरजी डरपन लागे. तब वह बाई अपने श्रीलालजीसों कहे, जो तुम डरपो मति. और वा बिलाईसों कहे, जो मेरे लालजी डरपत हैं. और वह बिलाईकों बाई गारी देई, परि वह बिलाई तो लरत तें रहे नाहीं. त्यौं - त्यौं वह बाई श्रीठाकुरजीकों लपटावत जांइ. और श्रीठाकुरजी उन बिलैयानसों डरपे सो वा बाईसों आप हू लपटात जांइ. और श्रीठाकुरजी कहत जांहि, जो अरी बाई ! मैं तो इन निगोड़ी बिलैयानतें डरपत हों. तब वह बाई अपने श्रीठाकुरजीकों अपने हृदयसों लगाइकै उन बिलैयानकों गारी देन लागी, जो छिनरीं रांड ! आज तुम मेरे घरमें कहां तें रहि गई हो ? और तुम देखो तो सही, सवारे मैं तुमकों लकरीनसों मारों. आजु तुम मेरे श्रीलालजीकों डरपावत हो ? तातें काल्हि मैं तुमकों समझोंगी. ऐसें वह बाई बिलैयनकों गारी देति जांई और अपने श्रीलालजीकों समुझायकै लपटावत जांइ परि अपनी खाट तें उठि तो सके नाहीं. अपने मनमें विचार्यो करें, जो मेरे लालजीकों अकेले कैसें छोरिकै जाऊं ? मेरे लालजी डरपेंगे. और ए विलैया तो लरत तें रहें नाहीं. तब श्रीठाकुरजी फेरि - फेरि बोले, जो अरी बाई ! जो मैं तो इन निगोड़ीन बिलैयान तें डरपत हों. यों कहिकै या बाई सों लपटात जांइ. तब वह बोली, जो अहो श्रीलालजी महाराज ! तुमने तो पूतना मारी है. और बड़े - बड़े दैत्य हू मारे हैं. तब तो तुम डरपे नाहीं. और अब इन निगोड़ी बिलैयान तें क्यों डरपत हो ? जब वा बाईने ऐसें कही तब बाईकों छोरिकै श्रीठाकुरजी कहन लागे, जो अरी बाई ! आज तक तो तेरो हमारो यह सम्बन्ध हतो. परि अब तो यह सम्बन्ध रह्यो नाहीं. तब ता दिनसों श्रीठाकुरजी वा बाईसों कछू कहे न बोलें.

भाव प्रकाश :
सो काहेतें, जो जहां तांई बालक जानें तहां तांई तो लालजी व्है रहे. और जब बड़े जानें महात्म्य करिकै तब तो प्रभुजी भए. तातें जहां महात्म्य आयो तब तहां स्नेह तो गयो. जब तांई स्नेह तब तांई तो लरिका रहे. सो जा भांतिसों लाड लडावे ता भांतिसों लाड करे. ज्यों - ज्यों अपनो भक्त कहे, त्यों - त्यों श्रीठाकुरजी करे. सो प्रभु तो भावके आधीन हैं. भक्त जा भाव करि प्रभुनकों भजत है ताही भावसों प्रभु हू भक्तकों भजत हैं. सो जब महात्म्य भाव आयो तब तो ईश्वर भए. तब न बोले न काहूसों सम्भाषण करें. तातें वासों न बोले.

ता पाछें वह बाई श्रीठाकुरजीसों बोहोत बिनती करी. तब कितनेक दिन पाछें वा बाईसों श्रीठाकुरजी बोलन लागे.

भाव प्रकाश :
यामें यह जतायो जो प्रभु दैन्यसों प्रसन्न होत हैं. और दैन्य तें सब अपराधनकी हू निवृत्ति होत हैं. सो दैन्य ऐसो पदार्थ हैं. तातें वैष्णवनकों दीनता राखि प्रभुनकी सेवा करनी.

सो वह बाई श्रीठाकुरजीकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती, जिनसों श्रीठाकुरजी सानुभाव रहेते. वार्ता करते. सो वाकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।८३।।

८४-एक विरक्त जो अयोध्या गयो

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक वैष्णव विरक्त, ब्रजमें रहतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम ‘रमनी’ है. ये ‘रसप्रकाशिका’ तें प्रगटी हैं. तातें इनके भावरूप हैं.

ये मथुरामें एक वैष्णव ब्राह्मनके इहां जन्म्यो. सो बालपनेसों वैराग्य दसामें रहे. माता - पितानें इनकों श्रीगुसांईजीसों नाम निवेदन करवायो. ता पाछें ये ब्रजमें श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों आयो. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीकी अपार सुन्दरता देखि इनकौ मन लागि गयो. सो उहांई रह्यो, विरक्त दशामें. सो समै - समै कै श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करिवो करे. और समै श्रीआचार्यजी श्रीगुसांईजीके ग्रन्थनकों अहर्निश देख्यो करे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वा विरक्त वैष्णवके मनमें यह अभिलाषा भई, जो हों श्रीरघुनाथजीकों देखों. सो ब्रज सम्पूरन देखिकै श्रीनाथजीकों देखिकै दरसन करिकै श्रीगुसांईजीके पास आयो. पाछें दण्डवत् करिकै बिनती करी, जो महाराज ! आज्ञा होंई तो अयोध्या तांई होइ आऊं. तब श्रीगुसांईजीनें कह्यो, जो अवश्य. तब दण्डवत् करिकै अयोध्याकों चल्यो. तब श्रीगुसांईजीसों वैष्णवन पूछी, जो महाराज ! यह ऐसो भगवदीय सो ब्रज छोरिकै श्रीनाथजीके दरसन छोरिकै गयो ? तब श्रीगुसांईजीनें कही, जो श्रीनाथजी तो भक्त मनोरथ पूरन करता है. सो याके मनमें एक दिन ऐसी आई, जो श्रीरघुनाथजी कैसें होइंगे ? जो हों देखों. सो याकौ मनोरथ ऐसो भयो. तातें श्रीनाथजी याके मनकों प्रेरना करिकै पठायो है. सो उहां जाईगो. सो उहां जांइकै याकों अश्रद्धा होइगी. सो बेगि ही फिरिकै आवेगो.

ता पाछें वह वैष्णव चल्यो. सो अयोध्या जांईकै पहोंच्यो. सो उहां जांइकै द्वारपालनसों कह्यो, जो हों ब्रज तें आयो हों सो श्रीरघुनाथजीसों मेरी खबरि करो. तब उन द्वारपालननें श्रीरघुनाथजीसों हाथ जोरिकै बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! एक कोऊ ब्रज तें आयो है. सो कहत हैं, जो मेरी खबरि करों, हों श्रीरघुनाथजीके दरसनकों आयो हों. तब श्रीरघुनाथजीनें कही, जो बोलि लावो. तब वह द्वारपाल बाहिर आयकै वाकों बोलि ले गए.

भाव प्रकाश :
यहां यह सन्देह होंई, जो या कालमें तो श्रीरघुनाथजी (काहू सों) बोलत नाहीं हैं. सो द्वारपालनसों (योंही) कैसें बोले ? तहां कहत हैं, जो जब भूतलपै पूरन पुरुषोत्तमकौ आविर्भाव होत हैं तब देवी - देवता आदि सर्वमें उनके आधिदैविक स्वरूपकौ प्रवेश होत हैं. सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु और श्रीगुसांईजी आप पूरन पुरुषोत्तम हैं. तातें ता समै (प्रागट्य अवस्थामें) सब देवी देवतानमें उनके आधिदैविक रूपकौ प्रवेश हुतो. सो अपने - अपनें अनन्य भक्तनसों सहज बोलत हे. आज तो कठिनतासों जाननो.

सो जब ही श्रीरघुनाथजीके दरसन कियो तब ही ये श्रीरघुनाथजीकी ओर फिरिकै ठाढ़ो भयो. और कह्यो, जो धिक हैं मोकों, जो मैं ब्रज तें निकस्यो. और इहां आयो. जो श्रीनाथजी देखिकै मेरो मन और ठौर चल्यो ? तातें मोकों धिक है. ऐसी जब वानें कही तब वह वैष्णवके सद्य सर्वाङ्गमें कोढ़ भयो. और वह तो श्रीरघुनाथजीकों पीठ दे ठाढ़ो है. तब श्रीरघुनाथजी वाके सन्मुख आइकै कही, जो तू अवज्ञा क्यों करी ? तासों तोकों यह प्रकार भयो. तब वा वैष्णवनें कही, जो मोकों तो कछू नाहीं भयो. मैनें तो ऐसो काम कियो हैं. जो मेरे रोम - रोम विषे जन्तु परे चहिए. जो मैनें श्रीनाथजी निरखें और अब यह दृष्टि अन्य विनियोगमें आई ? सो या प्रकार एकाङ्गी भक्तिके बचन सुनिकै श्रीरघुनाथजी बोहोत प्रसन्न भए. सो फेरि देह दिव्य भई. वह वैष्णव ऐसो टेककौ हतो, जो श्रीरघुनाथजी प्रसन्न करि दिये. ता पाछें फिरिकै उहां तें चल्यो. सो श्रीगोकुल आयो. सो आइकै श्री श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् कियो. तब श्रीगुसांईजीनें पूछ्यो, जो अरे अमूके ! तू अयोध्या होंइ आयो. तब वा वैष्णवनें हाथ जोरिकै कह्यो, जो महाराज ! होंइ आयो. ता पाछें उहांके सब समाचार श्रीगुसांईजीके आगें कहे. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी मुसिक्यानें. ता पाछें वह वैष्णव श्रीनाथजीद्वार जांइ श्रीनाथजीके दरसन किये. ता पाछें ब्रज छोरि कहूं गयो नाहीं.

भाव प्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णवकों अनन्यता राखनी. काहूं इन्द्रिकौ अन्य विनियोग नहीं होंइ ऐसो मन दृढ राखनो. काहेतें, उत्तम वस्तू पाइ पाछें नीचेकों नहीं देखनो.

सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो, तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वाता ।।८४।।

इति प्रथम खण्ड समाप्त

(क्रमशः खण्ड - २)

८५-एक गुजरके बेटाकी बहू

अब श्रीगुसांईजीके सेवक एक गुजरके बेटाकी बहू, आन्योरमें रहती, जाकी भैंसि श्रीगोवर्द्धननाथजी आप मिलाइ दिये, तिनकी वार्ताकौ भाव कहते हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'परमेसुरी' है. सो पहिले ये द्वारिका लीलामें 'बिमला'की सखी ही. बिमला तें प्रगटी हैं. सो बिमला श्रीरुक्मिनीजीकी अन्तरङ्ग सखी हैं. तिनके ये भावरूप हैं.

सो एक समै द्वारिकाजीमें श्रीठाकुरजी श्रीरुक्मिनीसों ब्रजलीलाकी बातें कहत हे. ता समै 'परमेसुरी' कछू कार्यार्थ तहां आई. सो इन दूरि तें सब बात श्रीठाकुरजीके मुखकी सुनी. तब याके मनमें यह आई, जो हों ब्रजलीलाकौ अनुभव करें ऐसो भाग्य मेरो कब होइगो ? सो इनकों बोहोत आरति भई. तब सब खानपान हू छूट्यो. चित्तमें रात्रि - दिन खेद रहे. कछू सुहाई नाहीं. काहू कार्यमें मन लागे नाहीं. सो श्रीठाकुरजी तो आप अन्तर्यामी हैं. तातें इनके मनकी जानी. तब श्रीठाकुरजी परमेसुरीकों बुलाइ, आज्ञा किये, जो तू ऐसो खेद क्यों करति हैं ? श्रीयमुनाजीकौ भजन करि. काहेतें, जो श्रीयमुनाजी ब्रजलीलाकी अधिष्ठात्री हैं. ब्रजलीलाकौ सौभाग्य तो इनहीकी कृपा तें प्राप्त होत है. तातें तू उनकौ भजन करि. तेरो मनोरथ सिद्ध होइगो. या प्रकार

श्रीठाकुरजी याकों बर दे कै श्रीरुक्मिनीजीके पास पधारे. ता पाछें परमेसुरी विरह - ताप करिकै श्रीयमुनाजीकौ भजन करन लागी. सो कछूक दिनमें श्रीयमुनाजी प्रसन्न व्है याकों दरसन दिये. और कहें, जो तू वर मांगि ! मैं तो पर प्रसन्न हों. तब परमेसुरीने दोउ हाथ जोरिकै बिनती करी, जो अहो श्रीमहारानीजू ! जैसें आपने कुमारिकानकौ मनोरथ पूरन कियो, ता भांति मेरो हू मनोरथ है, सो कृपा करि पूरन कीजिये. हों आपकी सरनि हूं. तब श्रीयमुनाजी कृपा करि वासों पूछे, जो तेरो कहा मनोरथ है ? सो तू कहि. तब परमेसुरीने कह्यो, जो अहो श्रीमहारानीजू ! आप ब्रजकी अधिष्ठात्री हो, ऐसो श्रीठाकुरजी आप मोसों कहे हैं. तातें आप मैं दीन पर ऐसी कृपा कीजिए, जो मेरो ब्रजलीलामें अङ्गीकार होंई. ओर मोकों कछू चाहना नाहीं है. तब श्रीयमुनाजी प्रसन्न व्है आज्ञा किये, जो तथास्तु ! ऐसें ही होइगो. या प्रकार श्रीयमुनाजी वाकों बर दे कै अन्तर्धान भए. पाछें कछूक दिनमें परमेसुरीकौ ब्रजमें जनम भयो.

सो 'सखीतरा'में एक गुजरके जन्मी. सो बरस बारहकी भई. तब याकौ व्याह एक ब्रजबासीके लरिकासों भयो. सो वह गुजर हतो. श्रीगुसांईजीके पास कुटुम्ब सहित बिनती करिकै नाम पायो हतो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वह ब्रजवासी आन्योरमें रहतो. सो एक समै वह अपने बेटाकों विवाहकै अपने घर बहू ले कै आयो. सो वह बहू बड़ी हुती. सो वाके सास - ससुरने वाकों श्रीगुसांईजीसों नाम दिवायो. तब वह श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी भई. ता दिन तें वह बहू नित्य श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों जांइ. सो वाकों श्रीगोवर्द्धननाथजीमें आसक्ति भई. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये बिनु अन्न - जल न ले. ऐसी याकी टेक. सो वह बहू बड़ी भगवदीय भई.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
और जब तें वह बहू घरमें आई ताके थोरेइ दिन पाछें वा ब्रजवासीकी भैंसि खोइ गई. तब घरके मनुष्य तो सगरे भैंसिकों खोजन गए. सो एक वा बहूकी सास वृद्ध हती. सो घरकी रखवारी द्वारें बैठि करति हती. और वह बहू भीतरकौ काम - काज करति हती. तब वा

बहूकी सासकों परोसिनने कही, जो तुम्हारी बहूकौ पांव आछौ नाहीं. जो याकों देखो ! घरमें आवत थोरेई दिन भए और भैंसि खोई गई. तब यह बात वा बहूने अपने कानन सुनी. तब वह बहू भीतर जांइ बोहोत सन्ताप करिकै रोवन लागी. ता पाछें वा बहूने श्रीगोवर्द्धननाथजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! अब तो इहां कोई तुम बिनु मेरे है नाहीं. जो मेरी पुकार सुनें. तातें हे गाढ़े दिनके मीत गोपाल ! अब मेरे माता - पिता तो दूरि भए. और इन सगरेन तो मेरे माथे कलङ्क धर्यो है. तातें आजु जो ए अपने घर भैंसि लेकै आवेंगे तो मैं एक दिनकौ माखन अरोगाउंगी. ऐसें कहिकै वा ब्रजवासिनीने श्रीगोवर्द्धननाथजीकों शुद्ध भावसों बोहोत ही प्रार्थना करिकै दण्डवत् करि कही, जो हे देवदमन ! या सङ्कटमें तें तू छुटावेगो तो हों छूटूंगी. नांतरु अपने घरमें प्रानत्याग करोंगी. सो याकी बिनतीसों श्रीगोवर्द्धननाथजीने उन ब्रजवासिनकों भैंसि मिलाइ दीनी. सो वे ब्रजवासी सब अपने घर भैंसि लेकै अति आनन्दसों आए. ता पाछें भैंसिकों तो बांधि दीनी. और वह ब्रजवासी सगरे आपसमें बतरान लागे, जो भाई ! यह बहूकौ पांव बोहोत आछौ है. जो गई भैंसि पाई. या प्रकार सगरे ब्रजवासी बहूकी उपमा करन लागे. परि वह बहू तो अपने मनमें कहे, जो यह भैंसि तो श्रीगोवर्द्धननाथजीके प्रताप सों पाई है. सो वह बहू ऐसी भगवदीय हती. वाकौ ऐसो सरल सुभाव हतो.

भावप्रकाश :

या वार्तामें यह जतायो, जो वैष्णवकों कैसो हू कलङ्क आइ लगे तोऊ श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ आश्रय न छोरनो. काहेतें, जो श्रीगोवर्द्धननाथजी अपने जनकी लाज आपु राखत हैं. तातें वैष्णवकों एक श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ आश्रय राखनो. और जो कदाचित् जीवकों धीरज न रहे, और वह प्रार्थना करें तोऊ एक श्रीगोवर्द्धननाथजीसों करे. और सर्वथा न करे. और कछू मानता हू करे तोऊ देवदमनकी करे. और की न करे. काहेतें ? जो गोकुलके कुलदेवता श्रीगोवर्द्धननाथजी आप हैं. सो गोकुल कहियत हैं, भक्तकुल, ताके नाथ आप ही हैं. तासों उनके बिनु औरकौ आश्रय सर्वथा न करनो. काहेतें ? ये देमदमन हैं. सौ इन सब देवनकौ दमन कियो है. उन तें यम - काल हू डरपत हैं. सो सूरदासजी गाए हैं, सो पद -

राग : बिलावल

गोकुलकौ कुलदेवता प्यारो श्रीगिरिधरलाल ।

कमलनयन घनसांवरौ वपु बाहु विसाल ।
बेगि करो मेरे कहे तुम पकवान रसाल ।
बलि मघवा बल लेत हैं कर करि घृत गाल ।
इनके दिये वाढ़ी हैं गैया बच्छ बाल ।
सङ्ग मिलि भोजन करत हैं जैसें पसुपाल ।
गिरि गोवर्द्धन सेइये जीवन श्रीगोपाल ।
'सूर' सदा डरपत रहे जातें यम काल ।।

तातें देवदमन तें और कोऊ बड़ो देव नाहीं. सो वैष्णवकों एक इन ही कौ आश्रय करनो, यह सिद्धान्त भयो.

ता पाछें वह बहू दूसरे दिन तें थोरो - थोरो माखन भेलो करति जाती, सो न्यारौ एक बासनमें धरति जाती. पाछें पांच - सात दिनमें भैंसिकौ माखन भेलो भयो. तब वा भैंसिकौ एक दिनकौ सब माखन न्यारो काढ़ि राख्यो. और वह बटोर्यो माखन सब एकठो करिकै घी तायो. पाछें वा दिन मनमें निश्चय करी, जो आजु यह सद्य माखन श्रीगोवर्द्धननाथजीकों अरोगाउंगी. सो बेगि - बेगि रसोई करिकै सास - ननदकों तो छाक देनकों पठाई. ता पाछें वह अपने घर तें माखन ले कै निकसन लागी. परि अपने मनमें तो डरपन लागी. जो मति कोऊ मोकों माखन ले कै जांत देखि लै. और जो कहूं काहूने देख्यो तो वह कहा कहेगो ? जो तू वह माखन ले कै कहां जात है ? तो हों वासों कहा उत्तर करोंगी ? सो या प्रकार आङ्गनमें लिये वह बहू माखनकौ सोच करन लागी. ता पाछें वाने वह माखन घरमें पाछौ जाय धर्यो. सो ताही समै श्रीगोवर्द्धननाथजी एक हाथमें लाल छरी ले कै वा ब्रजवासिनीके आगें आइकै ठाढ़े रहे. सो श्रीगोवर्द्धनाथजी सात बरसके लरिकाकौ स्वरूप करिकै आइ ठाढ़े रहे. तब वा ब्रजवासिनीसों श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो मेरो माखन अमूकी ठौर आजकौ तू अब ही आङ्गन तांई ल्याइकै पाछें धर्यो है, सो लोंदा मेरो ल्याऊ. तब वा ब्रजवासिनीने विचार्यो, जो यह प्राकृत बालक होंइ तो यह भेदकी बात कहा जानें ? तासों ये सर्वथा श्रीगोवर्द्धननाथजी ही मेरी दया विचारिकै आए हैं. सो श्रीगोवर्द्धननाथजी

कृपा करि पधारे हैं. तब वह बहू वह माखनकौ लोंदा ल्याइकै श्रीगोवर्द्धननाथजीके श्रीहस्तमें दीनो. सो श्रीगोवर्द्धनाथजी याहीके हाथसों वह माखन अरोगे. ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी अपने मन्दिर पधारे तब वा ब्रजवासिनीने श्रीगोवर्द्धननाथजीसों बिनती करी, जो लाल ! मोसों तुम्हारे पास आयो जांत नाहीं. तासों हों जा समै दधिमन्थन करति हों हि ता समै जो आप इहां पधारो तो हों तुमकों एक माखनकौ लोंदा सद्य करिकै नित्य अरोगायो करों. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी या ब्रजवासिनीसों यह आज्ञा करी, जो हो तेरे घर नित्य आयो करूंगो. और कदाचित् काहू दिन आय सकत नाहीं तो तू मेरे तांई मेरो माखन काढ़ि न्यारौ धरिकै राखियो. सो ता दिन तें वह ब्रजवासिनी जब दधिमथान (कों) बैठती तब ही श्रीगोवर्द्धननाथजी वा पास आइ बिराजते. सो वह ब्रजवासिनी प्रथम एक लोंदी श्रीगोवर्द्धननाथजीके श्रीहस्तमें देती. सो वाही ठौर श्रीगोवर्द्धननाथजी वह माखन अरोगिकै बनकों पधारते. तासों जाकौ ऐसो सरल सुभाव होंइ ताकी वस्तू - सामग्री श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु या प्रकार अङ्गीकार करें. ता पाछें वा ब्रजवासिनी तें श्रीगोवर्द्धननाथजी तें बोहोत एकताचारी भई. तातें ये शुद्धभावके लच्छन हैं.

भाव प्रकाश :
यामें यह जतायो, जो अनन्य भाव श्रीगोवर्द्धननाथजीकों बोहोत प्रिय है. जाकों अनन्य भाव है ताके श्रीगोवर्द्धननाथजी आधीन व्है रहत हैं.

सो वह आन्योरकी गुजरी श्रीगुसांईजीकी तथा श्रीगोवर्द्धननाथजीकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।८५।।

८६-एक वैष्णव क्षत्री, चन्दनवाला

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक वैष्णव क्षत्री, चन्दनवारौ, श्रीगोकुलजीमें रहतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'भ्रमिता' है. सो पहिले ये द्वारिका लीलामें 'बिमला'की सखी ही. बिमला तें प्रगटी हैं, ताते इनके भावरूप हैं.

सो एक समै श्रीरुक्मिनीजीने श्रीठाकुरजीसों कह्यो, जो तुमने जा भांति ब्रजमें बेनुनाद करि ब्रज - गोपिनकों बुलाई, तिन सङ्ग रास कियो, ताही प्रकार हम हू सों रास करो. ऐसो हमारो सबनकौ मनोरथ है. तब श्रीठाकुरजी मुसिक्याइकै आज्ञा किये, जो तुम सब राजकुमारी हो. तातें ब्रज - गोपिन की सी लोक - लज्जा तुमसों छूटेगी नाहीं. और रात्रिमें बनमें कैसे आवेगी ? तब श्रीरुक्मिनीजी कहें, जो हम आवेंगी. तुम बनमें बेनुनाद करो. ता पाछें श्रीरुक्मिनीजीने सब पटरानीन तें कह्यो, जो तुम सब सोरह हू सिंगार करिकै तैयार रहो. जब बेनुनाद होंइ तब आपनु सब बनमें जांइगी. तहां प्रभुनसों मिलिकै रास करेंगी. तब सत्यभामा आदि सब पटरानी प्रसन्न व्है अपने - अपने मन्दिरमें जांइ, निज सखी - सहचरिन सहित सिंगार करन लागी. ता पाछें श्रीठाकुरजी 'गोपीतलैया' पै जांइ बेनुनाद कियो. सो सुनिकै श्रीरुक्मिनीजी आदि सब पटरानी निज सखी - सहचरिनकों सङ्ग लेकै सोरह हू सिंगार किये अपने - अपने मन्दिर तें निकसी. सों सिंघपोरिपै आई. तहां देखे तो वसुदेवजी आदि सब यादव बैठे हैं. तब इन सब आपुसमें विचार कियो, जो रात्रिके समै हम सब या प्रकार सिंगार किये घर तें बाहिर जाति हैं सो ये गुरुजन हमकों देखिकै कहा कहेंगे ? और कदाचित् हमसों पूछेंगे, जो तुम सब मिलि सोरह हू सिंगार किये या रात्रिके समै कहां जात हो ? तो हम उनकों कहा उत्तर करेंगे ? तातें या समै घर बाहिर जानो सर्वथा उचित नाहीं. सो या प्रकार गुरुजनके डर तें ये सब जनीं अपने - अपने मन्दिरमें फिरि आई. सो बात श्रीठाकुरजीने जानी. तब श्रीठाकुरजी विचारी किये, जो मैनें तो पुष्टि स्वरूपके आवेससों बेनुनाद कियो है. और रास रमिवेकौ सङ्कल्प कियो है. और ये तो आई नाहीं ? सो मेरो सङ्कल्प मिथ्या कैसें होई ? तातें अब ब्रजमें तें कुमारिकानकों बुलाई, तिन सङ्ग मिलि रास करनो चाहिये. या प्रकार विचारिकै श्रीठाकुरजीने कुमारिकानकों बुलाई. ता समै श्रीरुक्मिनीजीकी सखी 'बिमला' अरु श्रीसत्यभामाजीकी सखी 'तन्मध्या' (हू) अपने परिकर सहित गोप्यरीतिसों तहां आई. सो कुमारिकानके सङ्ग मिलीं. पाछें रासकौ अनुभव कियो. सो वा परिकरमें 'भ्रमिता' हू ही. सो इन पुष्टिलीलाकौ अनुभव कियो. पाछें ये द्वारिका गई नाहीं. विरह करि वाही ठौर अपनी देह छोरी. सो भ्रमिताके सङ्ग बिमलाकी एक सखी 'सहोदरी' ही. सो वाकी हू याही प्रकार देह छूटी. ता पाछें 'तन्मध्या' की तीन सखी ही. तिनके नाम ''कृष्णानुचरी, 'रतिशूरी', 'सत्या'. सो उनहू ने विरह करि अपनी - अपनी देह छोरी. सो ये पांचों सखी ब्रजलीलामें प्राप्त भई. ता पाछें लीलाकौ परिकर सगरो भूतलपै प्रगट्यो. तब ये हू आई. सो उनकी वार्ता आगें कहेंगे.

और ये आगरेमें एक द्रव्यपात्र क्षत्रीके जन्म्यो. सो वह क्षत्री श्रीगुसांईजीकौ सेवक हुतो. सो श्रीगुसांईजी आगरे पधारे तब याने अपने बेटाकों श्रीगुसांईजी पास नाम - निवेदन करवायो. ता पाछें वह क्षत्री अपनो कुटुम्ब ले श्रीगोकुल आइ रह्यो. तहां कछूक दिनमें इनकी देह छूटी. पाछें बेटा श्रीगोकुल ही में रह्यो. सो वैष्णवनकौ सङ्ग करे. कथा - वार्ता नित्य सुने. सो वाकी प्रीति श्रीगुसांईजीमें बढ़ी. सो वह श्रीगुसांईजीकी सेवामें नित्य तत्पर रहतो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो एक दिन श्रीगुसांईजी आपु उष्णकालमें मन्दिरसों पहोंचि भोजन करिकै बैठकमें बिराजे हते. तब मध्याह्न समै प्रभु अपने श्रीअङ्गमें चन्दन लगावते. सो वैष्णव अपने - अपने घर तें एक - एक दिवस अति सुगन्धकौ अरगजा ल्यावते. सो प्रभु अङ्गीकार करते. सो एक दिवय या वैष्णवकौ ओसरा आयो. तब वह अपने हाथसों श्रीगुसांईजीके श्रीअङ्गको अरगजा समर्पन लाग्यो. ता समै वा वैष्णवके मनमें आई, जो सगरे वैष्णव श्रीनाथजीकौ और श्रीगुसांईजीकौ एक स्वरूप कहत हैं. और ये तो मनुष्य देह धरि दरसन देत हैं ! सो यह मेरे मनकौ सन्देह कौन भांतिसों निवृत्त होइगो ? यह वाके मनकी बात श्रीगुसांईजी जानें. तब वह वैष्णव चन्दन लगाइकै दण्डवत् करिकै घरकों जान लाग्यो. तब श्रीगुसांईजी पोढतें समै वासों यह आज्ञा करे, जो वैष्णव ! तुम थोरीसी बार पंखा करिकै पाछें घरकों जइयो. तब वह वैष्णव श्रीगुसांईजीको पंखा करन लाग्यो. और श्रीगुसांईजी अति झीनो उपरेना ओढ़िके पोढ़ें. पाछें वा वैष्णवकों प्रभुन उपरेना भीतर साक्षात् श्रीनाथजीके दरसन पंखा करत समै दिये. तब तो वह वैष्णव अपने मनमें विचार करन लाग्यो, जो यह मोकों सपनो सो कहा होत है ? सो वह आंखि मींडि - मींडिकै फिरि - फिरिकै देखन लाग्यो, जो मोको यह भ्रम तो नाहीं भयो ? सो जहां लगि वाके मनमें सन्देह रह्यो, तहां लगि वाकों श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीकौ दरसन दिये. तब जान्यो, जो सब वैष्णव कहत हते सो सांची बात है. तब वा वैष्णवने वाही समै दण्डवत् करी. तब ही वाके मनमें विश्वास आयो. तब ही श्रीगुसांईजी उठि बैठें. पाछें श्रीगुसांईजी यह वैष्णवकी ओर देखिकै याकों पूछे, जो वैष्णव ! तेरे मनकौ सन्देह निवृत्त भयो ? तब तो यह वैष्णव दोरिकै दण्डवत् करि प्रभुन आगें बिनती कियो, जो राज ! आपकी कृपा तें आपकौ स्वरूप अब जान्यो. तातें अब मेरे मनकौ सन्देह निवृत्त भयो.

भाव प्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णवकों श्रीगुसांईजी और श्रीगोवर्द्धननाथजीमें भिन्न बुद्धि सर्वथा न करनी. सो गोपालदास वल्लभाख्यानमें गाये हैं, सो कारिका

''रूप बेऊ एक ते भिन्न थई विस्तरे विविध लीला करे भजन सार ।''

सो श्रीगुसांईजी और श्रीगोवर्द्धननाथजी एकरूप हैं. परि स्वामी सेवक भाव प्रगट करनार्थ आप दोइ रूप धरि लीला करत हैं. तातें वैष्णवकों श्रीगुसांईजीकौ स्वरूप अलौकिक करि जानना.

सो यह वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।८६।।

८७-गोपालदास भीतरिया, सांचोरा ब्राह्मण

अब श्रीगुसांईजीके सेवक गोपालदास भीतरिया, सांचोरा, ब्राह्मण, गुजरातके बासी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'सहोदरी' है. ये पहिले द्वारिका लीलामें 'बिमला' है, ताकी सखी ही. सो बिमला तें प्रगटि हैं, तातें उनके भावरूप है

ये भ्रमिताके सङ्ग 'गोपीतलैया' पै आई ही. सो इन हू कों पुष्टि - लीलाकौ अनुभव भयो है. तातें ये ब्रजलीलाकों प्राप्त भई. सो बात ऊपर कहि

आए हैं.

सो गोपालदास भगवद् ईच्छा तें गुजरातमें एक सांचोरा ब्राह्मणके प्रगटे. सो ये बरस बीसके भए तब इनके माता - पिता मरे. ता पाछें केतेक दिनमें श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी श्रीरनछोरजीके दरसनकों पधारे. सो गोपालदासके गाममें डेरा किये. तब गामके वैष्णव सब मिलिकै श्रीगुसांईजीके दरसनकों आए. सो उनके साथ गोपालदास हू आए. सो गोपालदासने श्रीगुसांईजीके दरसन किये. तब श्रीगुसांईजी गोपालदासकी ओर देखिकै आज्ञा किये, जो गोपालदास ! श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवामें कब आवेगो ? तब तो गोपालदास चक्रत से व्है रहे. सो अपने मनमें विचारे, जो ये कोई महापुरुष हैं. नांतरु मेरो नाम कैसें जानें ? तातें इनकी सरनि जांइ अपनो जनमः कृतारथ करों, तो आछौ है. पाछें गोपालदास दोऊ हाथ जोरिकै बिनती किये, जो महाराज ! हों आपकी सरनि हूं. तातें कृपा करिकै अपनो सेवक कीजिए. तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न व्है गोपालदासकों नाम - निवेदन कराए. ता पाछें गोपालदासने बिनती कीनी, जो महाराज ! कृपा करिकै मोकों अपने चरनारविन्दकी टहल दीजिए तो आछौ. तब श्रीगुसांईजी गोपालदाससों कहे, जो गोपालदास ! तुम श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवा करो. और हमारो हू टहल करो. तब गोपालदास बिनती किये, जो महाराज ! मेरी हू यही इच्छा है, तातें आप मोकों अपनो जानि चरनारविन्दके निकट राखिए.

पाछें गोपालदास श्रीगुसांईजीके सङ्ग द्वारिकाजी गये. सो मारगमें श्रीगुसांईजीके वस्त्र नित्य धोवे. और श्रीगुसांईजीकी आज्ञा तें रसोई की परचारगी हू करे. ऐसें करत कछुक दिनमें श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी तें श्रीनाथजीद्वार पधारे. सो गोपालदास हू श्रीगुसांईजीके सङ्ग श्रीनाथजीद्वार आए. पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो गोपालदासकौ सुभाव सरल बोहोत. तातें श्रीगुसांईजी आप इनकों श्रीगोवर्द्धननाथजीकी रसोई की सेवा दीनी. सो ये बोहोत प्रीतिसों करन लागे. सो कछूक दिनमें इनकों सानुभावता जनाए. सो गोपालदाससों श्रीनाथजी प्रत्यच्छ वार्ता करें. ये समाचार श्रीगुसांईजी आछी भांति सब जाने, जो गोपालदास उपर श्रीनाथजीकी ऐसी कृपा भई है. ता पाछें गोपालदास सों श्रीगुसांईजी कब हू श्रीनाथजीकी वार्ता

पूछते. सो सर्व गोपालदास श्रीगुसांईजी आगें आछी भांति कहते.

सो एक समै श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार हते. तब एक दिन श्रीगुसांईजी आप भोजन करिकै अपनी बैठकमें बीरा अरोगत हते. सो आधौ बीरा तो अरोगे हते, और आधौ बीरा प्रभुनके हस्तमें हतो. ता समै गोपालदास श्रीगुसांईजीकी बैठकमें धोवती सुकाइकै आईकै दण्डवत् करिकै श्रीगुसांईजीसों बिनती किये, जो राज ! मैं अपछरा कुण्ड तें धोवती धोइकै आवत हतो, सो श्रीनाथजी पूंछरी की ओर बिराजे हुते. सो मोकों देखिकै श्रीनाथजी कहे, जो हम भूखे हैं. तासों सीतल भोगकी सामग्री तहां मंगाई है. तब श्रीगुसांईजी वाही समै स्नान करि पर्वत उपर पधारि सामग्री सर्व सिद्ध करि परातमें धरि उपर वस्त्र लपेटिकै अपने कांधे पर धरि लेकै उरहाने पांइन पधारे. सो धर्मदास ग्वाल उत तें आवत हुतो. सो धर्मदास श्रीगुसांईजीकों मार्गमें मिल्यो. तब श्रीगुसांईजीसों धर्मदासने पूछी, जो महाराज ! तुम या समै उरहाने पगन कहां चले हो ? तब श्रीगुसांईजीने धर्मदास सों कही, जो हम इहां श्रीनाथजी बैठे सुने हैं. सो तुम हमकों बदाइ देहु. तब श्रीगुसांईजीकों धर्मदासने मरोली (बरोली ?) कौ ढाक दूरि तें दिखाई दियो. जो वा ढाकके नीचे श्रीनाथजी बिराजे हैं. तब श्रीगुसांईजी वा ढाकके पास पधारे. ता ठौर श्रीनाथजी श्रीदाऊजी सहित सखा - मण्डलमें बिराजे केलि करत हैं. सो श्रीगुसांईजी जांइ दरसन किये. पाछें श्रीगुसांईजी सामग्रीकौ थाल सब श्रीनाथजी आगें जांइ भोग समर्प्यो. तब श्रीनाथजी और श्रीदाऊजी और सगरे सखान सहित अति आनन्दसों आरोगे. पाछें श्रीनाथजी श्रीगुसांईजीकों आज्ञा दिये, जो तुम बोहोत श्रमित भए हो, तातें अब घर पधारो. और आज पाछें काहूकौ कह्यो मति मानो. और या भांति आओ मति. मोकों जो कछू चहियेगो सो हौंही तुमसों आप तें मांगि लेहुंगो. यों कहिकै श्रीनाथजी श्रीगुसांईजी उपर अति प्रसन्न भए. पाछें श्रीगुसांईजी तो अपने घर पधारे. और श्रीनाथजी आप बनमें खेलिवेकों पधारे. या प्रकार श्रीनाथजी श्रीवृन्दावनमें खेलते और श्रीगुसांईजी या भांति श्रीनाथजीकी सेवामें तत्पर रहते.

भाव प्रकाश :

या वार्तामें यह सन्देह होंइ, जो पहिले तो श्रीनाथजी आप गोपालदास पास सामग्रीकी कहवाये. और अब श्रीगुसांईजीसों ऐसें क्यों कहे, जो ''आज पाछें काहूकौ कह्यो मति मानो, और या भांति आओ मति''. तहां कहत हैं जे श्रीनाथजी आप गोपालदास सों सामग्रीकी कहवाये. तामें श्रीगुसांईजीकों ल्याइवेकी

नहीं कही. श्रीगुसांईजी आप गोपालदास द्वारा सामग्री भेजते तोऊ श्रीनाथजी आप अरोगते. परि श्रीगुसांईजीकौ श्रीनाथजीमें घनो ममत्व हैं. तातें आप लेकै पधारे. सो या भांति दास भाव प्रगट किये. सो या प्रकार तो पहिले हू आप श्यामढाकमें सामग्री अरोगाई हैं. सो उपर गोपीनाथदासकी वार्तामें कहि आए हैं. तातें बारबार श्रीगुसांईजी पधारें तो उनकों श्रम होंई. सो श्रीनाथजीसों सह्यो न जांई. क्यों ? जो यह स्नेहकी रीति है, जो अपने स्नेहीकों तनक हू श्रम होंई तो महाकष्ट होंई. तातें श्रीनाथजी आप श्रीगुसांईजीकों या भांति बरजे. यह भाव जानno.

सो वे गोपालदास श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए वार्ता ।।८७।।

८८-एक क्षत्री वैष्णव, जिनको आत्मनिवेदन करवायो

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक क्षत्री, पूरबकौ, जाकों आत्मनिवेदन करवायो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'कृष्णप्रिया' है. इनमें कृष्णकी उनिहार है. तातें सब कोऊ इनकों 'कृष्णप्रिया' कहत हैं. सो इनकौ स्वभाव सरल बोहोत है. ये 'गुनचूडा' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

ये पूरबमें श्रीजगन्नाथरायजी तें उरे कोस बीस पर एक गाम है. तहां एक द्रव्यपात्र क्षत्रीके जन्म्यो. सो बालपने तें इनकी कथा - वार्तामें रुचि बोहोत हुती. सो जहां कहुं कथा - वार्ता होंई तहां ये जांई. और साधु सन्त जो कोऊ गाममें आवे तिनकी प्रीतिपूर्वक टहल करें. पाछें यह बरस अठारहकौ भयो तब इनके माता - पिता मरे. तब यह क्षत्री और हू मन लगाय कै सन्त - महन्त महापुरुषनकी टहल करन लाग्यो. जो काऊ साधु - सन्त गाममें आवे नयो, ताकौ यह क्षत्री आछी भांति समाधान करे. जाकों खाइवेकौ न होंई ताकों खाइवेकों देई. कपड़ा न होंई ताकों कपड़ा देई. या प्रकार समाधान करे. रात्रिकों सन्त - महन्तनके पांउ दाबे. या भांति बोहोत भक्ति - भाव संयुक्त व्है सेवा करे. सो या क्षत्रीकौ जस बोहोत फैल्यो. सो सब कोऊ जस सुनिकै

इनके यहां आवते.

सो एक समै एक वैरागी या क्षत्रीके द्वार पर आधी रात्रिकों आयो. सो सीतकालके दिन हते. सीत बोहोत हुती. सो वाके पास ओढ़िवे - बिछायवेकौ कछू हतो नाहीं. तातें वह सीतमें कांपन लाग्यो. तब वाने वा क्षत्रीकौ घर खटखटायो. सो वह क्षत्री वा दिन घर हतो नाहीं. कछू कार्यार्थी बाहिर गयो हुतो. सौ वह वैरागी निरास व्है उहांई द्वार पर पर्यो रह्यो. सो मारे सीतके वाके प्रान निकसि गए. पाछें सवेरो भयो तब वह क्षत्री अपने घर आयो. सो देखें तो द्वार पर वैरागी पर्यो है. सो याके प्रान निकसि गए हैं. तब या क्षत्रीने अपने मनमें विचार्यो जो देखो ! यह बिचारो मेरो नाम सुनिकै मेरे द्वार पर आयो होइगो. सो हों तो हतो नाहीं. सो सीतमें याके प्रान गए. सो यह मोकों भारी अपराध लग्यो. तातें अब कहा करनो. या भांति वह क्षत्री चिन्ता कर्यो करे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो एक समै श्रीगुसांईजी आप पूर्व देस श्रीजगन्नाथरायजीके दरसन करिवेकों पधारे हते. तहां वा क्षत्रीकों श्रीगुसांईजीके दरसन भए. तब वा क्षत्रीके मनमें विचार भयो, जो मैं इनकी सरनि जाउंगो. तब वा क्षत्री वैष्णवने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! कृपा करिकै मोकों नाम सुनाइए. और मेरो अपराध क्षमा करिए. तब श्रीगुसांईजीने श्रीमुखतें आज्ञा कीनी, जो तू स्नान करि आउ. तब वह क्षत्री वैष्णव स्नान करि आयो. तब श्रीगुसांईजी आप वा क्षत्रीके उपर कृपा करिकै नाम सुनायो. तब वा क्षत्री वैष्णवने यथासक्ति भेंट करी. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप उहांई रसोई करिकै श्रीठाकुरजीकों भोग धर्यो. पाछें भोग सराय आप भोजन किये. और सब ब्रजबासी टहलुवानकों महाप्रसाद लिवायो. और वा क्षत्री वैष्णवकों पातरि धरी. तब वा क्षत्री वैष्णवने महाप्रसाद लियो. और रात्रिको उहांई सोई रह्यो. पाछें श्रीगुसांईजी आप पोढ़े. ता पाछें प्रातःकाल आप उहां ते विजय किये. सो पुरुषोत्तम क्षेत्र जगन्नाथरायजीके दरसनकों आप पधारे. सो केतेक दिन उहां रहिकै दरसन किये. ता पाछें श्रीजगन्नाथरायजी सों बिदा होंइकै चले. सौ कितनेक दिनमें श्रीगोकुल पधारे. सो श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन किये.

ता पाछें एक समै वह क्षत्री वैष्णवके साथमें श्रीगोकुल आयो. तब श्रीगुसांईजीके दरसन करे, साष्टाङ्ग दण्डवत् कर्यो. पाछें सब वैष्णवननें

श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन करे. पाछें सब वैष्णव श्रीगुसांईजीके दरसनकों आए. सो दरसन करि दण्डवत् करि बैठें. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप भोजनकों पधारे. सो भोजन करि मुख शुद्धार्थ आचमन करि ता पाछें प्रसादी बीरा अरोगिकै पाछें श्रीगुसांईजी आपनें सब वैष्णवनको महाप्रसादकी पातरि पठाई. सो सब वैष्णवनकों महाप्रसाद लिवाए. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप पोढ़े. सो छिनक विश्राम करिकै जागे. सो उत्थापन तें पहिले जागे. सो कथा कहन लागे. तब और हू वैष्णव बैठे हते. तब वह क्षत्री वैष्णव हू कथामें बैठ्यो हतो. ताही समै श्रीगुसांईजी आपने आत्मनिवेदनकौ प्रसङ्ग चलायो. तामें कह्यो, जो शुद्ध मनपूर्वक जो जीव आत्मनिवेदन करत है. और गुरु जो शुद्ध मनपूर्वक निवेदन करावत है. तिनकों श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीकी कृपा तें दृढ़ आश्रय तत्काल होंइ. और अलौकिक (वस्तू) हू दृढ़ होंई. और पुष्टिमार्गकी लीलाकौ दान होंइ. और मारगकौ सब अनुभव होंई. और अलौकिक दृष्टि होंइ. और मारगकौ सब अनुभव होंई. और अलौकिक दृष्टि होंई. तब या क्षत्री वैष्णवने मनमें विचार कियो, जो श्रीगुसांईजी आप कृपा करें तो मैं आत्मनिवेदन करों. पाछें श्रीगुसांईजी उत्थापन किये. पाछें सेन पर्यन्तकी सेवा पहोंचिकै माला बीरा ले कै श्रीनवनीतप्रियजीके मन्दिरकों दण्डवत् करिकै श्रीगुसांईजी बाहिर पधारे. पाछें श्रीगुसांईजी आप भोजन करिकै इकेले ही गादि तकियानके उपर बिराजे हते. तब वा क्षत्री वैष्णवने श्रीगुसांईजीकों बिनती कीनी, जो महाराज ! एक मेरी बिनती है. सो आप तो श्रीप्रभुजी हो सो सर्व करन समर्थ हो. और मैं तो जीव हों. सो याही तें मेरो मनोरथ पूरन कर्ता हो. तब श्रीगुसांईजी आप कहे, जो तू कहा कहत है ? और कहा मनोरथ है ? सो मोसों कहि. तब वा वैष्णवनें श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मोकों पुष्टिमार्गकौ लीला सम्बन्धी दान कीजिये. सो आप कृपा करिकै मोकों आत्मनिवेदन करवाइये. और मेरी आरति पूरन करिए. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीगिरिधरजीसों बुलाई कह्यो, और श्रीमुख तें आज्ञा दिये जे काल्हि या क्षत्री वैष्णवकों आत्मनिवेदन करावो. जो श्रीनवनीतप्रियजीके मन्दिरमें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी पलिंगडीके सानिध्य पुष्टिमार्गकी लीला सम्बन्धी दान कराओ.

भाव प्रकाश :

यामें सन्देह बोहोत है, जो श्रीगुसांईजी आपु वा क्षत्रीकों आत्मनिवेदन क्यों नाहीं कराए ? श्रीगिरिधरजीसों क्यों कहे ? और श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी पलंगड़ीके सानिध्य निवेदनकी क्यों कहे ? यह तो रीति नाहीं. काहेतें ? जो श्रीआचार्यजीकों तुलसी कैसें समर्पी जाय ? तहां कहत हैं, जो श्रीगुसांईजी

अपने अनुरूप पुत्रनकों प्रगट किये हैं. तातें श्रीरघुनाथजी 'नामरत्नाख्यस्तोत्र' में श्रीगुसांईजी आपकौ नाम 'स्वानुरूपसुतप्रसुः' ऐसें कहे हैं. तासों आत्मनिवेदन बड़े पुत्र श्रीगिरिधरजी द्वारा आपु ही कराये यह भाव जाननो और श्रीगिरिधरजी आप धर्मी रूप हैं. सो उनमें विप्रयोग झलकत हैं. तातें विप्रयोगकौ दान दै या क्षत्री वैष्णवकों लीलानकौ अनुभव तत्काल करावनो है. यातें श्रीगिरिदरजीकों आज्ञा किये. यहू अभिप्राय है.

और श्रीआचार्यजीके पलंगड़ी सानिध्य आत्मनिवेदनकी आज्ञा किये, सो यातें जो श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप साक्षात् स्वामिनीरूप हैं. सो पादुकाजीके स्वरूप करि आप श्रीठाकुरजीके पास नित्य बिराजत हैं. सो श्रीस्वामिनीजीकी कृपा बिनु लीला सम्बन्धी दान न होंइ. सो बात आगें कृष्ण भटटकी वार्तामें कहि आए हैं. तातें श्रीगुसांईजी आप पलंगड़ीके सानिध्य आत्मनिवेदन करायवेकी कहे. यामें स्वामिनी भाव जतायो. जैसें इलम्मागारूजीकों श्रीनवनीतप्रियजीने ब्रह्मसम्बन्ध दियो. तब दूसरे स्वरूपके चरनारविन्दमें तुलसी समर्पायें. यह भाव जाननो. सो यह असाधारन प्रमेय कार्य है.

पाछें दूसरे दिन वा वैष्णवकों श्रीगिरिधरजीने बोहोत प्रीतिसों आत्मनिवेदन करवायो. तब वह क्षत्री वैष्णव श्रीगुसांईजीके पासे आयो. सो साष्टाङ्ग दण्डवत् कर्यो. पाछें श्रीगुसांईजी आपके सन्मुख वह वैष्णव बैठ्यो. तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख तें बचन कह्यो, जो पुष्टिमार्गकौ लीला सम्बन्धी तो दान नाहीं भयो है. ता पाछें श्रीगिरिधरजीकों बुलायकै पूछ्यो, और खीझे, जो तुम याकों कहा दान करवायो है ? सो याकों पुष्टिमार्गकी लीला सम्बन्धी दान तो भयो नाहीं है. सो याही ते याकों एक व्रत करवाओ. पाछें शुद्ध मनसों दान करवाइयो. तब एक व्रत या क्षत्री वैष्णवसों करवायो. ता पाछें शुद्ध मन होंइ श्रीआचार्यजीके सन्मुख निवेदन मार्गकी रीतिसों करवायो. पाछें श्रीगुसांईजी पास आयकै वैष्णवने साष्टाङ्ग दण्डवत् करी. तब फेरि श्रीगुसांईजी आप वैष्णवके साम्हे देखिकै श्रीमुखसों कहे, जो आत्मनिवेदन तो शुद्ध भयो नाहीं है. तब श्रीगुसांईजी फेरि श्रीगिरिधरजीकों बुलायकै कह्यो, जो तुम एक व्रत या क्षत्री वैष्णवकों और हू करवाओ. और देह शुद्धिके लिए एक उपवास तुम हू करियो.

भाव प्रकाश :
सो यातें, जो तुम हू कों विप्रयोगकौ अनुभव होंई.

ता पाछें मोकों पूछिकै दान करवाइयो. तब एक व्रत और हू वा क्षत्री वैष्णवने कियो. और एक उपवास श्रीगिरिधरजीने कियो. ता पाछें दूसरे दिना श्रीगिरिधरजी और वह क्षत्री वैष्णव श्रीगुसांईजीके पास आइ दण्डवत् किये. तब श्रीगुसांईजी आप वा क्षत्री वैष्णवसों कहें, जो अज हू तेरो अन्तःकरन शुद्ध भयो नाहीं है. तब एक उपवास और करवायो. तब श्रीगिरिधरजीकों आज्ञा किये, जो अब इनकों आत्मनिवेदन करवाओ. तब श्रीगिरिधरजीने श्रीआचार्यजीकी पलंगडीके सन्निधान वा क्षत्री वैष्णवकों आत्मनिवेदन करायो. ताही समै श्रीगिरिधरजीकों और वा क्षत्री वैष्णवकों पुष्टिमार्गकी लीला सम्बन्धी व्रजभक्तनके सङ्ग श्रीठाकुरजीकौ दरसन भयो. सो ता दिन वह क्षत्री वैष्णव देहानुसन्धान भूलि गयो. सो बैठक ही में पर्यो रह्यो. जो महाप्रसाद लेवेकी सुधि रही नाहीं. ऐसो रसाविष्ट भयो. ता पाछें उनके कानमें श्रीगुसांईजी अष्टाक्षरमन्त्र कहे. सो इतने ही में सावधानता भई. ता पाछें महाप्रसाद लियो. पाछें वा क्षत्री वैष्णवकों अलौकिक ज्ञान भयो. सो सदैव भगवद्रसमें छक्यो रहतो.

सो वह क्षत्री वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय भयो. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।८८।

८९-एक खण्डन ब्राह्मण

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक खण्डन सनोढ़िया ब्राह्मन, सिंहनन्दकौ बासी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'कृसोदरी' है. ये 'गुनचूडा' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

सो ये सिंहनन्द सनाढ्य ब्राह्मनके जन्म्यो सो यह बरस पांचकौ भयो. तब याकी माता मरी. पाछें पिताने वाकों एक पण्डितके उहां पोढ़िवेकों बैठायो.

सो वह पढ्यो बोहोत. ता पाछें यह बरस तीसकौ भयो. तब याकौ पिता मर्यो. तब यह घरमें इकलो रहे. याकौ ब्याह भयो नाहीं. सो जो कोऊ पांच मनुष्य मिलि गाममें कछू वार्ता कीर्तन करें, तहां ये जांई. और सबनसों वाद - विवाद करे. सो मारे विद्याके मदसों यह काहूकों बदे नाहीं. जो कोऊ कछु कहे ताकौ यह ब्राह्मन खण्डन करे. सो यह लोग याकों खण्डन ब्राह्मन कहन लागे. सो सिंहनन्दमें वैष्णव बोहोत हुते.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वह खण्डन ब्राह्मन वैष्णवकी बोहोत ही निन्दा करतो. और वह वैष्णवनके पास ही रहतो. परि वैष्णव गोप्यवार्ता कीर्तन करते. सो एकान्तमें बैठिकै करते. सो एक समै श्रीगुसांईजीकौ जनमदिवस आयो. तब उहांके सब वैष्णव जुरिकै कीर्तन करत हतै. सो यह खण्डन ब्राह्मन कीर्तन सुनिकै आयो. तब वैष्णव तो श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीके तथा श्रीगुसांईजीके कीर्तन करत हते. तब वा खण्डन ब्राह्मननें कह्यो, जो तुम हों गाऊं तैसें कीर्तन करो. तब वैष्णवननें कह्यो, जो हमकों तो तुम्हारे जैसें कीर्तन आवत नाहीं. तब वह खण्डन ब्राह्मन बोल्यो, जो मैं गाऊं. तुम मेरे सङ्ग गावो. और मोकों तो सब आवत है. तब वह खण्डन ब्राह्मन और देवतानके गावन लाग्यो. और वैष्णव तो श्रीठाकुरजीके मिलिकै गावत हते. तब ऐसें कीर्तन सुनिकै एक वैष्णवकों क्रोध आयो. तब वा वैष्णवने खण्डन ब्राह्मन सों कह्यो, जो तुमकों किनने बुलायो है ? और तुम बिना बुलाए पराए घर क्यों आये हो ? और तू कहा समझे, कहा जाने ? तातें तू यहां ते उठि जा. नांतरु दोऊ हाथ पकरिकै तोकों उठाय देउंगो. तब तू बुरो मानेगो. तब वह खण्डन ब्राह्मन बोल्यो, जो कहा तुम्हारो मार्ग संसार तें न्यारो है ? सो ऐसें संसारमें नाहीं है ? तब वा वैष्णवने खण्डन ब्राह्मन सों कह्यो, जो हम गनेस, देवी, सिवका हू देवताकों नाहीं मानत. सब देवता तो श्रीठाकुरजीकी विभूति हैं. तब वा खण्डन ब्राह्मनने कह्यो, जो सब एक ही है. जो चलों पण्डित ब्राह्मनसों पूछे. जो मेरी बात सत्य है. तब उन वैष्णवने खण्डन ब्राह्मनसों कह्यो, जो हमारे पण्डित ब्राह्मनसों और देवतानसों कहा काम है ? जो हम तो नन्दनन्दन बिनु और काहूकों जानत नाहीं. सो याही तें तू काहेकों माथो उठावत है ? तातें यहां तें जात रहि. सो ऐसें कहिकै वा खण्डन ब्राह्मनकों हाथ पकरिकै उठाय दियो. तब खण्डन ब्राह्मन बाहिर जांइकै दस - पांच ब्राह्मननसों मिलिकै उन वैष्णवनकी निन्दा करन लाग्यो. ता पाछें सब वैष्णव बैठें हते तहां जांइकै उपर तें भाठानकी मार करन लाग्यो. ता पाछें सब वैष्णव उठिकै अपने घर गए. और कीर्तन तो रहि गए. ता पाछें सब वैष्णव सोय रहे. सो जब अर्द्धरात्रि भई तब कोऊ चारि जनें आयकै वा खण्डन ब्राह्मनकों खाट

तें ओंधो करिकै बोहोत मार्यो. और सगरे सरीरकी खाल और हाड़ न्यारे किये. ऐसें बोहोत मार्यो. तब वह खण्डन ब्राह्मन तो बोहोत ही बिलबिलायो. और बोहोत रोवन लाग्यो, और कह्यो, जो तुम मोकों क्यों मारत हो ? तब उनन कही, तेनें श्रीगुसांईजीके सेवकनकी निन्दा क्यों करी ? और कीर्तनमें विघन क्यों कियो ? सो याहीं तें हम तोकों मारत हैं. और वैष्णव तो परम कृपापात्र भगवदीय हैं. और श्रीगुसांईजी तो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम हैं. तातें अब जो तू वैष्णवनतें बोलेगो तो हम तोकों नित्य याहीं भांति मारेंगे. ऐसें कहिकै वे तो गए.

भाव प्रकाश :
या वार्तामें यह जतायो, जो भगवदीय वैष्णवनकौ अपराध श्रीठाकुरजी सहि नाहीं सके. और जहां कहूं भगवद् वार्ता कीर्तन होंई तहां श्रीठाकुरजी आप रहत हैं. यह श्लोक श्रीभागवतमें पाया नहिं जाता. सो श्लोक

नाहं वसामि वैकुण्ठे योगिनां हृदये न च ।
मद्भक्ता यत्र गायन्ति तत्र तिष्ठामि नारद ।

तातें जो कोऊ भगवद् वार्ता कीर्तनमें विघ्न करे और वैष्णवकों दुःख देइ ताकों प्रभु आप या भांति सिक्षा देत हैं.

ता पाछें वा खण्डन ब्राह्मनकौ सरीर बोहोत ही पीड़ा करन लाग्यो. सो याही तें निद्रा तो आवे नाहीं. सो इतकौ उत लोटत फिरे. जो कब सवारो होंई ? और कब मैं जांयकै उन वैष्णवनसों बिनती करों. और मेरो दुःख निवृत्त होंई. सो ऐसें करत सवारो भयो. तब वह हरुवे - हरुवे उठिकै वैष्णवनके पास गयो. तब उन वैष्णवनके पांवन पर्यो. और कह्यो, जो मैं जैसो तुमसों बोल्यो तैसो ही फल पायो. जो तुम तो बड़े ही कृपापात्र भगवदीय हो. और हौं तो महा अधम पापी हों. ऐसें कहिकै अपनो सरीर दिखायो. और रात्रिके सब समाचार कहे. और मार खाई सो सब कहे. और कहे, जो मेरे सरीरमें पीड़ा बोहोत होत है. तब वा खण्डन ब्राह्मनकों देखिकै वैष्णवनकों बोहोत

ही दया आई. तब घरमें तें चरनोदक ल्यायकै वाके सरीरमें लगायो. और कह्यो, तू मुखमें डारि. श्रीआचार्यजी श्रीगुसांईजीका नाम लीनो. तब वा खण्डन ब्राह्मनसों कह्यो, जो अब तुम अपने घर जाऊ. तब वा खण्डन ब्राह्मनने कह्यो, जो मोकों कहूं ठौर नाहीं. सो अब तुम कृपा करिकै मोकों वैष्णव करो. तब उन वैष्णवनने खण्डन ब्राह्मनसों कह्यो, जो श्रीगुसांईजी कृपा करें तब ही ये बात होंई. सो यातें तुम्हारे मनमें जो ऐसी आई है तो तुम श्रीगोकुल जाउ. तुम्हारो मनोरथ पूरन होइगो. ता पाछें वह खण्डन ब्राह्मन वैष्णवसों बिदा मांगिकै चल्यो. सो केतेक दिनमें श्रीगोकुल आय पहोंच्यो. तब वा खण्डन ब्राह्मनने श्रीगुसांईजीके दरसन किये. पाछें श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, और कह्यो, जो महाराजाधिराज ! मोकों नाम सुनाइए. जो आप तो भक्तवत्सल हो. सो जीवनके अपराध साम्हें कहा देखत हो ? तब वा खण्डन ब्राह्मनके बचन सुनिकै वाके उपर कृपा करिकै नाम सुनायो. तब श्रीगुसांईजी आप खण्डन ब्राह्मनकों आज्ञा किये, जो तुम एक उपवास करो. पाछें तुमकों निवेदन करावेंगे. ता पाछें एक उपवास करवायकै वा खण्डन ब्राह्मनकों दूसरे दिन आत्मनिवेदन करवायो. पाछें वा खण्डन ब्राह्मनने यथासक्ति भेंट करी. ता पाछें वह खण्डन ब्राह्मन थोरे से दिन श्रीगोकुलमें रह्यो सो मोर्गकी सब रीति सीखी. और हू सब श्रीगुसांईजी आप कृपा करिकै वा खण्डन ब्राह्मनसों कहे. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप वा खण्डन ब्राह्मनकों ग्रन्थ पढ़ाए. सो सब मार्गकी रीति हृदयारूढ़ भई. सो ऐसें करत कितनेक दिन तांई वह श्रीगोकुलमें रहिकै श्रीनवनीतप्रियजी आदि सातों स्वरूपनके दरसन किये. पाछें एक दिन श्रीगुसांईजी आप प्रातः काल उठिकै देहकृत्य करि दन्तधावन करि स्नान करि श्रीनवनीतप्रियजीके मङ्गलाके दरसन करिकै श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकौ विचार कियो. सो वह पण्डित ब्राह्मन हू अपने सङ्ग लियो. और सब वैष्णवनकों अपने सङ्ग लेकै, श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों पधारे. सो श्रीगिरिराज जांइ पहोंचे. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीके राजभोगकौ समै हतो. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीको राजभोग समर्प्यो. पाछें भोग सराय श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन सब वैष्णवनकों करवाए. तब वह खण्डन ब्राह्मन हू दरसन करिकै बोहोत प्रसन्न भयो. और अपने मनमें कह्यो, जो धन्य मेरो भाग्य है. जो मोकों ऐसें दरसन भए. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीगोवर्द्धननाथजीकी राजभोग - आर्ति करि सब सेवा तें पहोंचिकै अनोसर करवायकै माला बीड़ा लेकै श्रीगिरिराज तें नीचे पधारे. सो अपनी बैठकमें गादी तकियानके उपर बिराजे. तब खण्डन ब्राह्मन हू दरसन करिकै नीचे आयो. सो श्रीगुसांईजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् कियो ता पाछें श्रीगुसांईजी आप सब वैष्णवनकौ समाधान करिकै बिदा किये. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप वा खण्डन ब्राह्मनकों महाप्रसादकी आज्ञा करी, जो आज महाप्रसाद यहांई लीजियो. पाछें श्रीगुसांईजी आप भोजनकों पधारे. सो भोजन करिकै वा खण्डन ब्राह्मनकों महाप्रसादकी पातरि धरी. सो

महाप्रसाद लियो. पाछें श्रीगुसांईजी आप पोढ़े. सौ छिनक विश्राम करिकै जागे. पाछें उत्थापनकौ समय भयो. तब स्नान करिकै श्रीगिरिराज उपर पधारे. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीकों उत्थापन किये. पाछें सेन पर्यन्तकी सब सेवा सों पहोंचिकै अनोसर करवायकै श्रीगुसांईजी श्रीगिरिराज तें नीचे पधारे. तब वह खण्डन ब्राह्मन हू दरसन करिकै सोय रह्यो. सो ऐसें केतेक दिन तांई श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुल पधारे. सो साथ सब वैष्णव आए. तब वह खण्डन ब्राह्मन हू साथ आयो. सो श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन किये. और महाप्रसाद लिये. पाछें वा खण्डन ब्राह्मननें श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! आज्ञा होंइ तो मैं ब्रजयात्रा करि आउं. तब श्रीगुसांईजी आप खण्डन ब्राह्मनसों कहे, जो ब्रजयात्रा तो अवश्य करी चाहिए. तब वह खण्डन ब्राह्मन बिदा होंइकै चल्यो. सो कितनेक दिनमें सम्पूरन ब्रजयात्रा करिकै श्रीगोकुल आयो. सो श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन कियो. पाछें केतेक दिन श्रीगोकुलमें और रह्यो. ता पाछें श्रीगुसांईजीसों बिदा होइकै वह खण्डन ब्राह्मन सिंहनन्द अपने घर आयो. ता पाछें उन वैष्णवनसो मिलि भेट्यो. पाछें सब समाचार श्रीगुसांईजीके कहे. पाछें मार खायवेकी बात श्रीगुसांईजीसों नाहीं कही हती सो हू बात उन वैष्णवनसों कही. तब उन वैष्णवनमें एक मुखिया हतो. सो उहां पाग उतारि दोऊ हाथ जोरिकै पाछें वा खण्डन ब्राह्मनके पांवन पर्यो. और कह्यो, जो धन्य है. सांची बात कहि दीनी. तुरत ही अपराधकौ दण्ड हू भयो. सो यह दैवी जीवनकौ लक्षन है. सो उनके निकट ही श्रीमहाप्रभुजी बिराजत है. और आसुरी जीवनकौ तो लक्षन यह है, जो ज्यों - ज्यों अधर्म करें त्यों - त्यों भलो होंई. सो याही तें यह तो ऐसी बात है. ता पाछें खण्डन ब्राह्मन भलो वैष्णव भयो. सो सब वैष्णवनकों मिलिकै चलतो. और जो वैष्णव अपने घर आवे ताकों बोहोत ही दीनता सों अपने घर राखतो. सो सब वैष्णवनकी यह खण्डन ब्राह्मन बोहोत ही मर्यादा राखे. पाछें वह खण्डन ब्राह्मन अपनी बुद्धि तें कीर्तन करतो. सो कीर्तन मार्गकी रीतिसों श्रीभागवतके अनुसार करतो. और कोई वैष्णव बड़ाई करे तब कहें, जो यह प्रताप तुम्हारोई है. तुम्हारी कृपा तें वह कार्य सिद्ध भयो है. और वैष्णवनकौ सब काम करतो. वैष्णवन सों दीनता राखतो.

सो वह खण्डन सनोढिया ब्राह्मन श्रीगुसांईजीकौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।८९।।

९०-एक कुनबी पटेल

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक कुनबी पटेल, गुजरातमें एक छोटे खेरामें रहतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'सत्यव्रता' है. ये 'गुनचूडा' तें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै श्रीगुसांईजी आप गुजरात पधारे हते. तब वा कुनबी पटेलकों श्रीगुसांईजीके दरसन भए. तब वा कुनबीने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! मोकों सरनि लीजिए. तब आप श्रीमुख तें आज्ञा किये, जो तू स्नान करि आऊ. तब वह कुनबी पटेल स्नान करि आयो. पाछें श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मैं स्नान करि आयो हूं. तातें मो पर कृपा करिकै नाम दीजिए. तब श्रीगुसांईजी कृपा करिकै वाकों नाम सुनाए. दूसरे दिन उपवास करवायकै वा कुनबीकों निवेदन करवाए. तब कुनबी वैष्णवने यथासक्ति भेंट कीनी. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप रसोई करिकै श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो. समय भये भोग सराय आचमन मुखवस्त्र कराय आप भोजन किये. ता पाछें आचमन करि बीरा अरोगिकै गादी - तकियानके उपर बिराजे. और सब ब्रजवासी टहलुवाननें महाप्रसाद लियो. और वा पटेलने हू लियो. सो महाप्रसाद लेत मात्र ही वा पटेलकों मार्गकौ ज्ञान भयो. सो मार्ग हृदयारूढ़ भयो. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीसुबोधिनीजीकी कथा कहें. सो वा कुनबी वैष्णवने सुनी. सो ऐसें केतेक दिन तांई आप वा खेरामें बिराजे. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप द्वारिकाकों पधारे. सो श्रीरनछोरजीके दरसन किये. पाछें कछूक दिन उहां बिराजे. ता पाछें श्रीरनछोरजीसों बिदा होंइकै चले. सो श्रीगोकुल आय पहोंचे. श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन किये.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

और वा कुनबी पटेलके गामके पास एक बड़ो गाम हतो. तामें वैष्णवकौ बोहोत ही समाज हतो. और वैष्णव मण्डली, वार्ता कीर्तन नित्य होते. सो वा गाममें एक तादृशी वैष्णव मुखिया हतो. सो वाके पास यह कुनबी जातो. सो यह कुनबी वैष्णव श्रीठाकुरजीकी सेन आर्तिकै अपने घर तें चलतो. सो रात्रि घरी छह गए पाछें उहां जाय पहोंचतो. सो सब वैष्णवनसों श्रीकृष्ण स्मरन करिकै बैठतो. ता पाछें कथा वार्ता सुनतो. पाछें रात्रि सवा पहर बाकी रहती तब सब वैष्णवन तें जै श्रीकृष्ण करिकै चलतो. सो अपने घर आयके श्रीठाकुरजीकी सेवा करतो. सो ऐसें करत बोहोत दिन बीते. तब एक एकादसी आई. तब वह कुनबी पटेल अपने श्रीठाकुरजीकी सेवासों पहोंचीकै रात्रिकों चल्यो. सो अन्धियारे में मार्ग भूल गयो. और मेह बरसत हतो. तब आगें चलिकै एक तलाव आयो. सो वा तलावके उपर रूख बोहोत हे. सो एक रूख पैं तें एक प्रेत उतरिकै याके मार्गमें आड़ो आय ठाढ़ो भयो. तब या कुनबी वैष्णवने कह्यो, जो तू कौन है ? जो या मार्गमें ठाढ़ो है ? तब वह बोल्यो, जो हौं प्रेत हों. बोहोत दिनानकौ भूखो हूं. तातें मैं तोको खाऊंगो. तब वा कुनबी वैष्णवने कही, जो आज एकादशीके जागरनमें जात हों और सवारे याही मार्ग आउंगो. तब तू मोकों सुखेन खाइयो. तब वा प्रेतने या पटेल सों कह्यो, जे तेरो विश्वास नाहीं. जो तू फेरि या मारग काहेकों आवेगो ? तू मेरे कालके मुखमें काहेकों आवेगो ? तब वा कुनबीने कही, जो यह मेरो बचन है. जो सवारे आयकै तोकों पुकारूंगो. तब तू मोकों सुखेन खाइयो. तब वा ब्रह्म राक्षसने कह्यो, जा भलें विश्वास है. परि तू सवारे बेगो आईयो. तब वा प्रेतने बचन लै कै जान दीनो. तब वह पटेल वैष्णव वा गाममें वार्ता कीर्तन मण्डलीमें गयो. तब सावधानीसों कथा सुनी. और मन हुलाससों कीर्तन किये. और वा पटेल कुनबी वैष्णवने अपने मनमें विचार कियो, जो सवारें तो वह राक्षस खायगो. जो मैं उहां तें निश्चय करिकै आयो हूं. सो यातें भगवद् नाम जितनो लियो जांईसों आछौ है. तब वह कुनबी वैष्णव बोहोत आनन्द पाइकै भगवद् वार्ता करन लाग्यो. सो ऐसें करत रात्रि तो ब्यतीत भई. ता पाछें सवारे वैष्णवनसों जै श्री कृष्ण करिकै चल्यो. सो वाही तलाव पै आयो. सो वा राक्षसके पास आयो. तब वा कुनबी पटेलने वा प्रेतसों कह्यो, जो अरे भाई, ब्रह्म राक्षस ! तू आउ. सो वह कुनबी वैष्णव पांच बेर पुकार्यो. और कह्यो, जो तू बेगि आयकै मोकों खाउ. तब वह प्रेत तो कछू बोल्यो नाहीं. और वाने अपने मनमें विचार कियो, जो देखो ! यह मरिवेकों आयो है. जो यह मेरे कालके मुखमें तें निकसिकै फेरि आयो है. परि देखो ! बचनकौ सांचो है. परि ये तो आपही हरिजन है, भगवद्भक्त है. सो ये बचन सत्य करिवेकों आयो है. और इनकों मृत्युकौ डर नाहीं. तब कह्यो, जो ऐसें भगवद्भक्तकों तो मैं नाहीं खाउंगो. सो वैष्णवकौ दरसन करिकै फिरि गयो. तब वह कुनबी वैष्णव फेरि

बोल्यो, अरे प्रेत ! तू बेगो आउ. जो मोकों भगवत्सेवाकों अवेर होत है. तब वह राक्षस आयो. और बड़ो रूप कियो. तब या कुनबीने कह्यो, जो अब तू मोकों सुखेन खा. तब वा राक्षसने कह्यो, जो अब तो मैं तुमकों नहीं खाउंगो. जो तुम तो हरिजन वैष्णव हो. सो तुम्हारो बचन तो सांचो है. अपने धर्मके लिये तुमने मृत्युकौ भय नाहीं कियो. तातें हों तुम पास एक वस्तू मांगत हों. सो मोकों दीजिए. ऐसें कहि वह प्रेत वा कुनबी वैष्णवके पांवन पर्यो.

भावप्रकाश :
यामें यह जतायो, जो जाकों श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकों दृढ़ आश्रय है, तासों काल हू डरपत हैं. तहां प्रेतादिककी कहा चले ? तातें हरिजन सदा निर्भय रहत हैं. काहेतें, जो ये सर्व ते अधिक हैं. तीन लोक इनकी वन्दना करत हैं. सो सूरदासजी गाए हैं, सो पद -

राग : बिलावल

हरि के जनकी अति ठकुराई ।
महाराज ऋषिराज, महामुनि, देखत रहे लजाई ।
दृढ़ विश्वास कियो सिंघासन ता पर बैठे भूप ।
हरि गुन बिमल छत्र सिर राजत, सोभा परम अनूप ।
निस्पृह देसकौ राज करे, ताकौ लोक परम उत्साह ।
काम क्रोध मद लोभ मोह तहां, भये चोर तें साह ।
बने विवेक विचित्र पोरिया औसर कोऊ न पावे ।
अर्थ काम तहां रहें दूरि - दूरि मोक्ष धर्म सिर नावे ।
अष्टसिद्धि नवनिधि द्वारें ठाढ़ी, कर जोरें उन लीनी ।
छड़ीदार वैराग्य विनोदी, झटकी बाहर कीनी ।

हरिपद पङ्कज प्रेम परम रुचि ताही सों रंग राते ।
मन्त्री ज्ञान औसर नहीं पावत करत बात सकुचाते ।
माया काल व्यापे नहीं कबहूं जो या रीतै जाने ।
'सूरदास' यह नर तन पायो, गुरु प्रसाद पहचाने ।

सो भगवदीय वैष्णवको स्वरूप या भांतिकौ जाननो.

तब वा कुनबी वैष्णवने कह्यो, जो तू कहा मांगत है ? तब वा प्रेतने पटेलसों कह्यो, जो तुम आज कीर्तन किये हो ताकौ फल मोकों दीजिये. तब मेरो उद्धार होइगो. और मैं प्रेत योनि तें छूटूंगो. तब पटेल वैष्णवने कह्यो, जो कीर्तनकौ फल तो मैं नाहीं देउंगो. तोकों खानो होंइ तो सुखेन खाऊ. तब वा प्रेतने कह्यो, जो आधौ तो फल दीजिए. तब वा पटेलने कह्यो, जो आधौ हू नाहीं देउंगो. तब एक घरीकौ फल मांग्यो, सो हू नाहीं कीनी. तब आधी घरीकौ फल मांग्यो तो हू नाहीं कीनी.

भाव प्रकाश :
यहां सन्देह होंई, जो पुष्टिमार्गमें तो सब काय कामनारहित व्है करिवेकौ कह्यो है. तातें फलकी इच्छा तो इहां है नाहीं. तब या वैष्णव फल देनकी नाहीं क्यों कियो ? तहां कहत हैं, जो कीर्तनकौ फल तो महा अलौकिक है. ता करि साक्षात् श्रीगोवर्द्धनधरकी प्राप्ति होत हैं. सो लीला सहित प्रभु हृदयमें आय रहत हैं. ऐसो फल या राक्षससों कैसे दियो जाय ? काहेतें ? यह दैवी तो है नाहीं. तातें नहीं कियो.

तब वा राक्षसने कह्यो, जो वैष्णव ! मोकों पांच तालकौ पून्य तो दोऊ. ताही समै आकासबानी भई, जो वैष्णव तुम तो हरिजन हो. तातें दया करि याकों पांच तालकौ पून्य दीजिए. तातें याकी गति होंइ. याको तुम्हारे वैष्णवके दरसन तें यह ज्ञान भयो है. तब कुनबी वैष्णवने तलावमें तें जल ले कै वा राक्षसके हाथमें दियो. और कह्यो, जो मैनें तोकों पांच तालकौ पून्य दियो. सो इतनो कहत ही वा

राक्षसकी देह छूटी. प्रेत योनि तें मुक्त भयो. ता पाछें स्वर्ग तें विमान आयो. तब वह राक्षस सुन्दर दिव्य देह धरिकै वा कुनबी वैष्णवकी परिक्रमा करि पांवन परिकै वा विमानमें बैठिकै स्वर्गकों गयो. सो भगवदीयकौ ऐसो ही प्रताप है. पाछें वह पटेल अपने घर आयो.

भाव प्रकाश :
सो या वार्तामें यह जतायो जो वह कुनबी वैष्णव सत्सङ्गके लिये इतनी दूरि आवतो. सो सत्सङ्ग ऐसो पदार्थ है. तातें भगवदीय वैष्णवकौ सङ्ग अवस्य करनो जातें धर्मकी हानि कबहू न होंई.

सो वह कुनबी वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ता कहां तहां कहिये. वार्ता ।।९०।।

९१-एक साहूकार मथुराका

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक साहूकार, मथुराजीमें रहतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'मनोरूपा' है. सो मनोरूपा श्रीयमुनाजीके यूथकी हैं. ये 'छबिसिंधि' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

ये मथुराजीमें एक द्रव्यपात्र साहूकारके घर जन्म्यो. सो उह साहूकार सराफीकी दुकान हू करतो. सो वाकौ बेटा बरस बारहकौ भयो. तब वाकौ ब्याह कियो. पाछें केतेक दिनमें वह साहूकार मर्यो. तब वह दुकानपै जान लाग्यो. परि यह दैवी जीव हतो. तातें याके मनमें यह चिन्ता रहे, जो श्रीठाकुरजीकी प्राप्ति कैसें होंई ? सो जो कोऊ वाकी दुकानपैं आवतो तासों यह पूछतो.

सो एक दिन एक मथुरिया चौबे या साहूकारकी दूकान पै आयो. सो वह पण्डित हुतो. तिनसों यह साहूकार पूछ्यो, जो तुम बड़े पण्डित हो. तातें हमकों श्रीठाकुरजी कौन प्रकार मिले सो उपाय कृपा करि कहिये ? हमकों श्रीठाकुरजीके मिलिवेकी बोहोत उत्कण्ठा रहत है. तब वह मथुरिया चोबेने कह्यो, जो सुनि ! श्रीठाकुरजी तो घर छोरि एकान्त बनमें जांई भजन करे तब मिलत हैं. ता उपरांत जो तोकों कछू पूछनो होंई तो तू श्रीगोकुल जा. तहां श्रीविटठलनाथजी गुसांईजी रहत हैं. तिनसों पूछि. वे बड़े पण्डित हैं. बोहोत लोग उनके सेवक हैं. यह कहि मथुरिया चोबे तो अपने घर गयो. पाछें दूसरे दिन वह साहूकार श्रीगोकुल आयो. सो ता समै श्रीगुसांईजी आप ठकुरानी घाट पर सन्ध्यावन्दन करत हुते. सो तहां यह साहूकारकों श्रीगुसांईजीके दरसन भए. सो महा अलौकिक तेजपुञ्ज ऐसें दरसन भए. सो वह एक घरी लों उहां ठाढ़ौ रह्यो. पाछें श्रीगुसांईजी या साहूकारकी और देखे. तब वा साहूकारसों आप कृपा करि कहे, जो तू कहा पूछिवे आयो है ? सो मोसों कहि. तब तो यह साहूकार विस्मित होंइ रह्यो. कह्यो जो देखो ! बिनु कहे इनने मेरे हृदयकी जानी. तातें निश्चय यह ईश्वर है. ऐसें अपने मनमें निर्द्धार कियो. पाछें यह साहूकार दोऊ हाथ जेरि बिनती कियो, जो महाराज ! आप ईश्वर हो, मेरे मनकी जानें. तातें अब मोकों कृपा करिकै सरनि लीजिये. हों आपके सरनि आयो हूं. तब श्रीगुसांईजी कहें, जो तू पहिले वा बातकों पूछि. पाछें तोकों सरनि लेइंगे. तब या साहूकारने बिनती करी, जो महाराज ! मेरे मनमें बोहोत दिनन तें यह अभिलाषा ही, जो श्रीठाकुरजी कौन भांति मिले ? सो महाराज ! मैनें बोहोत से पण्डितनकों पूछी. परि मैं जिनसों पूछ्यो. वह यह कहें, जो संसार छोरिकै विरक्त होऊ तो श्रीठाकुरजी मिले. सो महाराज ! यह कार्य तो बोहोत कठिन है. या कालमें स्त्री, द्रव्य, घर कैसें छोरे जांई ? देहके अध्यास तो छूटे नाहीं है. तासों मैं आपसों पूछिवे आयो हो. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो तू सांच कहत है. जहां तांई देहाध्यास न छूटे तहां तांई गृह - त्याग सर्वथा बाधक है. ता उपरांत जो कोऊ बिनु विचारे गृह छोरे तो दुसङ्ग करि निश्चय भ्रष्ट होंई. और ठाकुर तो काहू साधन किये तें मिलत नाहीं. वे तो अपनी कृपा ही तें जीवको मिलत हैं. तातें जीवकों भगवत्सेवा ही कर्तव्य है. जातें उनकी कृपा होंई. यह सुनिकै साहूकार बोहोत प्रसन्न भयो. पाछें बिनती कियो, जो महाराज ! अब मोकों बेगि सरनि ले भगवत्सेवा पधराय दीजिए. तो हों सेवा करों. तब श्रीगुसांईजी वाको आज्ञा किये, जो तू श्रीयमुनाजीमें न्हाई ले, हम तोकों यहां ई सरनि लेइंगे. तब वह साहूकार श्रीयमुनाजीमें स्नान करि श्रीगुसांईजीके पास आयो. तब श्रीगुसांईजी वाकों नाम - निवेदन कराई सरनि लिये. पाछें वासों आज्ञा किये, जो तू हमारे सङ्ग मन्दिरमें चलि. श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन करि. पाछें तोकों भगवत्सेवा पधराइ देइंगे. तब वह साहूकार श्रीगुसांईजीके सङ्ग श्रीनवनीतप्रियजी वाकों अलौकिक दरसन दिये. तब वह दरसन करत ही थकित व्है गयो. ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजीकों अनोसर करि अपनी बैठकमें पधारे. तब यह साहूकार हू बैठकमें आयो. पाछें श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि बैठ्यो. तब श्रीगुसांईजी वा साहूकारकों आज्ञा किये, जो अब तेरी कहा ईच्छा है ? तब वह साहूकार बिनती कियो, जो महाराज

! मोकों भगवत्सेवा पधराइ दीजिए. और सेवाकौ प्रकार हू कृपा करि समझाइए. तब श्रीगुसांईजी कृपा करिकै वा साहूकारकों एक लालजीकौ स्वरूप पधराय दिये. ता पाछें वा साहूकारसों श्रीगुसांईजी आप कहे, जो तू इनकी सेवा मन लगायकै करियो, भावप्रीतिपूर्वक. और इनकों तू साक्षात् करिकै जानियो. जैसें तू अपने सरीरकौ सीत, उष्ण, भूख, दुःख आदिसों जतन करत हैं ताही भांति इनकौ करियो. जो कछु खान - कान करे सो इनकों समर्पिकै करियो. और श्रीठाकुरजी आप उत्तम वस्तूके भोक्ता हैं. तातें जगतमें जो कछू उत्तम पदार्थ देखे तिनकों तू श्रीठाकुरजीकी सेवामें विनियोग कराइयो. ता पाछें वाकों अपने कारजमें लीजियो. तातें अन्य सम्बन्धकी निवृत्ति होंइगी. तब सरन दृढ़ होइगो. सरन दृढ़ भए बिनु श्रीठाकुरजीकी कृपा होत नाहीं. तातें घरमें रहिकै मारगकी रीति प्रमान सेवा करियो. और मथुराजीमें अमूके स्त्री - पुरुष वैष्णव निष्किञ्चन रहत हैं ताकौ सङ्ग करियो. सो वे तोकों सेवाकौ प्रकार समझावेंगे. सो ता प्रकार तू सेवा करियो. तातें तेरे ऊपर बेगि कृपा होइगी.

ऐसें कहि श्रीगुसांईजी आप भोजनकों पधारे. तब आप या साहूकारको आज्ञा किये, जो आज तू यहांइ महाप्रसाद लीजियो. पाछें श्रीगुसांईजी आप भोजन करि बीरी लै बाहिर पधारे. तब या साहूकारकों आप जूठनकी पातरि धरे. सो यह साहूकार महाप्रसाद लियो. पाछें वह साहूकार श्रीगुसांईजीसों आज्ञा मांगि मथुराजी आयो. ता पाछें वाने अपनी स्त्रीकों एक वैष्णवके सङ्ग श्रीगोकुल पठाई. और स्त्रीसों कह्यो, जो तू बेगि श्रीगुसांईजीकी सेवक होऊ. तब दोउ मिलिकै सेवा करें. सो स्त्री हू श्रीगोकुल जांई श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी होई आई. तब दोउ मिलिकै सेवा करन लागे. पाछें वह निष्किञ्चन स्त्री - पुरुषकौ सङ्ग करन लाग्यो. सो याकौ भगवद्भाव बढ्यो. तब यह साहूकार ऋतु अनुसार मनोरथ करन लाग्यो. ता पाछें सब वैष्णवनकों बुलाइ मण्डली करे. या प्रकार प्रीतिपूर्वक सेवा करतो. सो श्रीठाकुरजी थोरेई दिनमें वाकों सानुभावता जनावन लागे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो एक दिन साहूकार वैष्णवने आमके दिननमें समस्त गामके वैष्णवनकी मण्डली कीनी. सो आमके रसकी मण्डली करी. सो मथुराजीमें श्रीगुसांईजीके सेवक निष्किञ्चन स्त्री पुरुष दोई वैष्णव हते. सो उन वैष्णवनके यह नेम हुतो, जो अपने श्रीठाकुरजी अरोगे सोई लेनो. और वैष्णव मण्डलीमें न्योतौ आवे तब जो सामग्री मण्डलीमें होंइ सो अपने श्रीठाकुरजीकों अरोगावते. तब मण्डलीमें जाते.

भाव प्रकाश :
काहेतें, जो यह पतिव्रताकौ धर्म है, जो स्वामी अरोगे सोई लेनो. और समाज राखिवेंकों वैष्णव मण्डलीमें जांइ. परि उहां जो सामग्री होंई सो अपने घर श्रीठाकुरजीकों प्रथम अरोगावे. पाछें उहां महाप्रसाद लेइ. यह मारगकी रीति है. सो यह पुष्टिमार्गमें पतिव्रता धर्म मुख्य है. और श्रीगुसांईजी 'श्रीसर्वोत्तम स्तोत्र' में श्रीआचार्यजीकौ नाम कहे हैं, जो 'पतिव्रता पतिः' सो पतिव्रता, जो अनन्य भक्त, तिनके आप पति हैं. यह कहि यह जतायो, जे पुष्टिमार्गमें पतिव्रता धर्मकी नांई जो कोऊ वैष्णव ठाकुरकी सेवा करत है ताकों स्वामिनीवत् सौभाग्यकी प्राप्ति होत है.

और ये लीलामें 'रति', 'गति' दोउ जसोदाजीकी सखी हैं. सो नन्दालयमें श्रीठाकुरजीकी सेवामें सदा तत्पर रहति हैं. नई - नई सामग्री सिद्ध करति हैं. सो श्रीजसोदाजी दोउनकों थारकौ महाप्रसाद नित्य देति हैं, सोई लेति हैं. और कछू लेति नाहीं. ऐसी दोउ अनन्य हैं.

सो वा दिन मण्डलीमें रस हतो. सो सब आम तो वा सेठके घर लै गए हते. और यह वैष्णव आम्बा लैनकौ बजारमें गयो. सो बाजारमें कहूं आम्बा न मिले. तब यह वैष्णवकों अत्यन्त ताप भयो. तब ताही समै एक माली बजारमें आम्बानकौ टोकरा लै कै आयो.

भाव प्रकाश :
यह कहि यह जताए, जो ताप भावसों सर्व मनोरथ तत्काल सिद्ध होत हैं.

तब इन वैष्णवने पूछी, जो हमकों दोइ पैसाके आम्बा देइगो ? तब उन मालीने कही, जो सगरो टोकरा लेउ तो देउं ! तब इन वैष्णवने कही, जो सबनकौ कहा लेउगे ? तब मालीने कही, जो एक रुपैया लेउंगो. तब वैष्णवने कही, जो रुपैया कहां तें ल्याऊं ? ऐसें कहिकै पाछें कही, जो दोइ चारि दिना तांई मांगियो मति, पाछें देइंगे. ऐसें कहिकै वह वैष्णव श्रीयमुनाजीके किनारें आयो. तहां एक - एक आम धोय धोयकै श्रीठाकुरजीकों मानसीमें भोग धरत गयो. सो श्रीठाकुरजीने वाही ठौर सब आम अरोगे. इतनेमें वा सेठके घर भोग आयो. सो सब आम्बानकौ रस ही निकासे. समङ्गल आम कोई न हतो. तब बजारमें सेठने मनुष्य पठाये, जो आम ले आउ. सो वह वैष्णव बैठ्यो

हतो तहां आए. तब माली तै पूछ्यो, जो आम बेचेगो ? तब उन मालीने कही, जो आम तो इन वैष्णवने लिये हैं. तब इन वैष्णवने उन मनुष्यनसों कही, जो चहिए तो ले जाऊ. एक रुपैयामें ठहराए हैं. तब उन मनुष्यनने कही, जो चलो रुपैया हम दिवावें. ऐसें कहिकै वे मनुष्य तो आम ले गए. और वह वैष्णव अपने घर आयो. तब सेठके घर वे आम खासा करिकै श्रीठाकुरजीकों भोग धरिवे लगें. तब श्रीठाकुरजीनें सेठसों कही, जो ये आम तो फलाने वैष्णवने अपने श्रीठाकुरजीकों धराए हैं. तातें प्रसादी आम तो मैं न अरोगूंगो. तब सेठने उन वैष्णवको बुलायकै पूछी, जो ये आमे तुमने श्रीठाकुरजीकों भोग धरे हैं ? तब उन वैष्णवने कही, जो धरे तो खरे, कहा करें ? पास रुपैया नाहीं. तातें ऐसें किये. पाछें वैष्णव मण्डली प्रसाद लेवे बैठी. तब वह एक - एक आम सबनकों धरे. पाछें सब महाप्रसाद लेवे लगे. तब वा सेठके घरकी रस - पूरी लेवे लगे. ता पाछें उह समङ्गल आम लिये. सो वह अत्यन्त अलौकिक स्वाद लगे. काहेतें, जे वह वैष्णवने ताप - भाव करिकै श्रीयमुनाजीके तटपै श्रीठाकुरजीकों आम समर्पे. सो उहांई श्रीठाकुरजीने अति प्रसन्न होंई अरोगे.

भाव प्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णव प्रीतिपूर्वक जा ठौर जैसें प्रकार सो श्रीठाकुरजीकों भोग धरत है, ता ठौर तैसें प्रकारसों श्रीठाकुरजी आप श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजीकी कानिसों साक्षात् श्रीमुखमें अङ्गीकार करत हैं. तातें वैष्णवकों उत्तम वस्तू जा भांति बनि आवे ता भांति श्रीठाकुरजीकों समर्पनी. यह सिद्धान्त भयो.

सो वह सेठ और वह वैष्णव ऐसें परम कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।९१।।

९२-एक बनिया, गुजरातका

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक बनिया गुजरातमें रहतो तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'आनन्ददायिनी' है. ये 'छबिसिंघि' तें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं. और आनन्ददायिनीकी एक सखी है. वाकौ नाम 'सुलोचना' है. इनके नेत्र बड़े सुन्दर हैं. तातें श्रीठाकुरजी इनकी और टकटकी लगाईकै देखत हैं. सो आनन्ददायिनी तो यहां बनिया भयो. और इनकी बेटीसो 'सुलोचना'कौ प्रागट्य जाननो.

सो वह बनिया गुजरातनें एक गाममें एक जैनीके जन्म्यो. सो वाकौ पिता द्रव्यपात्र हुतो. सो वह या बेटाकों बोहोत लाड़ करें. सो बेटा बरस सोरहकौ भयो. पाछें वा बनियाके बेटाकों एक वैष्णवकौ सङ्ग भयो. तब वाने वा वैष्णवकौ आचार देख्यो. तब वाकी रुचि वैष्णव धर्म पै भई. सो वाके मनमें आई, जो हों वैष्णव होऊं तो आछौ. पाछें या बनियाके बेटाने वा वैष्णवसों कह्यो, जो तुम मोकों वैष्णव करो तो आछौ. तुम्हारो आचार - विचार मोकों बोहोत रुचत हैं. हमारे यहां तो कोऊ नित्य न्हात हू नाहीं. सब मलीन रहत हैं. कहत हैं, जो जादा पानी खर्च कियो न जांई. जीवजन्तु मरे तो पाप होईगो. सो मोकों तो वह धर्म रुचत नाहीं. तातें हों तो वैष्णव होऊंगो. तातें तुम मोकों सेवक करो. तब वा वैष्णवने कही, जो भाई ! हम तो काहूकों सेवक करत नाहीं. परि तेरे वैष्णव होनो होंई तो दोइ चारि दिनमें यहां श्रीगुसांईजी पधारेंगे. उनकी सरनि जइयो. वे साक्षात् ईश्वर हैं. सो उनके सरनि गये तें तेरो कल्यान होइगो. तब वह बनियाके बेटाने कह्यो, जो भलो, श्रीगुसांईजी पधारे तब तुम मोकों कहियो. हों उनकौ सेवक होऊंगो. मेरे मनमें वैष्णव होइवेकी बोहोत उत्कण्ठा है. तब वा वैष्णवने कह्यो, जो भले, मैं तोसों कहोंगो. पाछें वह तो अपने घर गयो. परि वाके मनमें बोहोत आरति रहे, जो कब श्रीगुसांईजी यहां पधारे और हों उनको सेवक होउं. ऐसें करत कछूक दिनमें श्रीगुसांईजी वा गाममें पधारे. तब वा वैष्णवके बेटासों कह्यो, जो श्रीगुसांईजी इहां पधारे हैं, तेरी इच्छा होई तो वैष्णव होऊ. तब तो बनियाकौ बेटा प्रसन्न व्है श्रीगुसांईजीके दरसनकों आयो. और बिनती कियो, जो महाराज ! मोकों कृपा करि अपनो सेवक कीजिए. हों आपके सरनि हूं. तातें विलम्ब मति कीजिए. तब श्रीगुसांईजी वाकी बोहोत आरति देखि वाकों नाम सुनाये सेवक किये. पाछें दूसरे दिन व्रत कराए. ता पाछें निवेदन कराए. तब वा बनियाके बेटाने कह्यो, जो महाराज ! श्रीठाकुरजी पधराय दीजिए तो हों सेवा करों. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो अब ही नाहीं. काहेतें, जो तेरे मा - बाप जैनी हैं. तातें तोसों अब ही सेवा न बनि आवेगी. कछूक दिनमें तेरे मा - बाप मरेंगे. तब तू अड़ेल पधारे. ता पाछें कछूक दिनमें वा बनियाकौ ब्याह भयो. पाछें केतेक दिन पाछें वा बनियाके मा - बाप मरे. तब वह स्त्रीकों सङ्ग लेकै अड़ेल आयो. सो स्त्रीकों श्रीगुसांईजी पास नाम - निवेदन करवायो पाछें वह श्रीगुसांईजीसों बिनती कियो, जो महाराज ! अब मेरे कोई प्रतिबन्ध नाहीं है. तातें कृपा

करि भगवद् - सेवा पधराय दीजिए. तब श्रीगुसांईजी वाकों एक लालजीकौ स्वरूप पधराय दिये. पाछें सेवाकी सब रीति बताई. ता पाछें वह बनिया श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मांगि श्रीठाकुरजी पधराय स्त्रीकों सङ्ग ले अपने देस आयो. सो भाव - प्रीतिपूर्वक सेवा करन लाग्यो. नित्य वैष्णवनकौ सङ्ग करे. पाछें कछूक दिनमें एक बेटी भई.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वह बनिया परम भगवदीय हतो. सो वाके एक बेटी कुंवारी हती. सो कन्याके निमित्त वह वर ढूंढनकों गयो. परन्तु कोऊ वैष्णव मिल्यो नाहीं. तब एक जैन धर्मी ज्ञातिकौ मिल्यो. तब वासों अपनी बेटीकौ विवाह करि दीनो. सो वह वैष्णवकी बेटी अपने घरकों गइ. तब वह लरिकिनी वाके घरमें जैन धर्म अनाचार भ्रष्ट देखिकै मनमें बोहोत दुःख करन लागी. घरमें तो सब भ्रष्टाचार. और खाए बिना तो रह्यो न जांय. तातें उन लरिकिनीने अपनी सास तें कह्यो, जो तुम्हें मोकों परोसनो होइ सो एक बेर ही परोस देहु. मैं तो कछू फेरि मांगोंगी नाहीं. तब वाकी सास एक ही बेर वाकी पातरिमें परोसे. तितनो ही वह लरिकिनी चरनामृत मिलायकै खांहि. परन्तू दूसरी बेर न कछू खांय न कछू लेय. या भांतिसों निर्वाह करें. सो ऐसें करत बोहोत दिन भए. सो वह लरिकिनी मनमें बोहोत ही दुःख करे. और कहे, जो या आपदा तें श्रीठाकुरजी कब छुटावेंगे. या भांतिसों बोहोत ही खेद करे. सो श्रीठाकुरजी तो परम दयाल हैं, भक्तवत्सल हैं. सो वह लरिकिनीकौ दुःख देखिकै श्रीनाथजीनें श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो वह बनिया वैष्णवकी बेटी उह गाममें है. सो वाकौ दुःख मोतें सह्यो जात नाहीं. तब श्रीगुसांईजी उह लरिकिनीकौ दुःख जानिकै थोरे से दिनमें वह गाममें पधारे. सो वा गामके बाहिर तलाव हतो. सो वा तलावके उपर श्रीगुसांईजीने डेरा किये. तब ता दिना वह बनिया वैष्णवकी बेटी वा तलाव पर पानी भरनकों गई हती. तब उहां वा लरिकिनीने श्रीगुसांईजीके ब्रजबासी देखे. तब उह लरिकिनी वा ब्रजबासीके ढिंग ठाढ़ी - ठाढ़ी विचार किये. जो ये ब्रजबासी तो मेरे बापके घर नित्य आवत हते. तब वह लरिकिनी वा ब्रजबासीके ढिंग आयकै पूछ्यो, जो तूम कौन हो ? और कहां तें आए हो ? तब उन ब्रजबासीनने कही, जो श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल तें पधारे हैं. सो हम सब ब्रजबासी उनके साथ हैं. सो श्रीगुसांईजी आज इहां उतरे हैं. सो आज तो इहां रहेंगे. और सवारे श्रीद्वारिकाजीकों पधारेंगे. तब वा लरिकिनीने वा ब्रजबासीसों कही, जो मैं तो फलाने वैष्णवकी बेटी हों. और मेरे इहां तो मेरो पिता श्रीगुसांईजीकौ सेवक है. सो मोकों श्रीगुसांईजीके दरसन करावोगे ? मैं तो वैष्णवकी बेटी हों. और इहां

सुसरारिमें तो जैन धर्मी हैं. तातें मोकों तो इहां परम दुःख है. सो श्रीगुसांईजीके दरसन करे तें मेरो दुःख निवृत्त होइगो. तब वह लरिकिनीने उन ब्रजबासिनसों कहिकै वह जलकौ घड़ा तो वा तलाव पर धरि दीनो और आप वा ब्रजबासीके साथ जांयकै श्रीगुसांईजीके दूरि तें दरसन किये. दण्डवत् कीनी. तब श्रीगुसांईजी वा ब्रजबासीसों पूछे, जो यह कौन है ? तब श्रीगुसांईजीसों वा ब्रजबासीने बिनती कीनी, जो महाराज ! यह तो अमुके वैष्णवकी बेटी है. तब वह लरिकिनी श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिकै पाछें वह तलाव पर आईकै जलकौ घड़ा भरिकै घर आई. सो घरमें आइकै सोच करन लागी, जो अब मैं कहा करों ? तब वाने अपनी साससों कही, जो मेरे पिताके गुरु श्रीगुसांईजी इहां पधारे हैं. सो तुम मोकों एक नारियल देऊ. तब वाकी सासने कह्यो, जो अरी बहू ! तू कहे तो तेरे साथ आऊं, श्रीगुसांईजीके दरसनकों. तब बहूने कह्यो, जो भलो, तुम हू चलो. तुम्हारी इच्छा हैं तो तुम हू चलो. सो घर तें वे दोऊ जनीं एक - एक नारियल लै कै सास - बहू चली. सो उहां श्रीगुसांईजीके पास गई. तब ब्रजबासिनने श्रीगुसांईजीसों कही, जो महाराज ! अमूके वैष्णवकी बेटी आई है. तब श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो कहो भीतर आवें. तब ये दोऊ डेराके भीतर जांईकै श्रीगुसांईजीको दण्डवत् किये. पाछें हाथ जोरिकै उहांई ठाढ़ी होंई रही. तब बहूने अपनी बिनती श्रीगुसांईजीसों करी, जो मोकों नाम दीजिए. मैं आपकी सरनि आउंगी. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो नाम देइंगे. तब वाके सास - बहूके मनमें नाम पाइवेकौ बड़ो उत्साह भयो. जो ये तो साक्षात् ईश्वर हैं. मो पर कृपा करिकै नाम देइंगे. तब सासने बहूके हाथ बिनती करवाई, जो मोहूकों नाम दे तो भलो है. तब वा बहूने श्रीगुसांईजीसों फेरि बिनती करी, जो महाराज ! मेरी सास - बहू नाम पायवेकी बिनती करति हैं. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो भले. पाछें दोऊ जनीं श्रीगुसांईजीके आगें आय बैठीं. तब उन पर कृपा करिकै दोउनकों नाम दीनो. तब वे दोउ नाम पाइकै वैष्णव भई. पाछें श्रीगुसांईजीकों नारियल भेंट धरि दण्डवत् करिकै प्रसन्न मनसों घरकों गई. आरै उनके साथ वा गामकी लुगाई पांच - सात जनीं और बहू गई हती, श्रीगुसांईजीके दरसनकों. सो वेऊ सब ताही समै श्रीगुसांईजी पास नाम पायो. सो वे नाम पाइकै अपने - अपने पतिके आगें आइकै सब समाचार कहे, जो अब तो हम वैषव भई है. श्रीगुसांईजी पास नाम पायो है. तातें अब हमारो और तुम्हारो सब व्यवहार छूट्यो.

पाछें वा लरिकिनीके सुसरने अपनी स्त्रीसों कह्यो, जो श्रीगुसांईजी मोहूकों नाम देइंगे. सो तू मोकों उहां ले चलि. सो वह अपने बेटान सहित अपनी स्त्री तथा बहूकों साथ लैके श्रीगुसांईजीके पास जांईकै नाम पाइवेकी बिनती कियो. तब श्रीगुसांईजी कृपा करिकै उन

सबनकों नाम दिये. पाछें बहूने निवेदनकी बिनती कीनी. तब श्रीगुसांईजी वाकों निवेदन कराए. ता पाछें और सबनने निवेदनकी बिनती कीनी. तब उनकों एक व्रत कराई निवेदन कराये. तब बहूने फेर बिनती करिकै कह्यो, जो महाराज ! अब कछु सेवा पदराइ दीजिए. तब श्रीगुसांईजी वाकों श्रीनवनीतप्रियजीके वस्त्रकी सेवा पधराये. तब वह बहू सेवा पधराइ, अपने घर आई. सो बहूके पाछें सब कुटुम्बने नाम - निवेदन पायो. ता पाछें गामके और हू लोग वैष्णव भए, या भाति. पाछें दूसरे दिन श्रीगुसांईजीकों सबन बिनती करिकै उहां राखे. सो अपने - अपने घर श्रीगुसांईजीकों पधरायकै बिनती करिकै भेट धरी. या प्रकार श्रीगुसांईने वा वैष्णवकी बेटीकी कानि तें उन सबनकों अङ्गीकार कीने. तब वह लरिकानीकौ दुःख गयो. या प्रकार श्रीठाकुरजी वाकौ दुःख सहि न सके. तातें थोरेसे दिनमें वाकौ दुःख दूरि कीनो. पाछें श्रीगुसांईजी दूसरे दिन द्वारिकाकों पधारे. पाछें लरिकिनीने अपनी साससों कह्यो, जो अब हों रसोई करूंगी. तब सासने कह्यो, जो भलेई, तू रसोई करि. पाछें वा लरिकिनीनें घरमें तें सब अपरस काढ़िकै रसोई पोति पात्र सब खासा करि, रसोई सिद्ध करि, पाछें श्रीठाकुरजीकों भोग धर्यो. पाछें समै भये भोग सरायो. और घरके जो नाम पाए हते तिनसों कह्यो, जो जा प्रकार मैं करत हों ताही प्रकार तुम करो. पाछें श्रीठाकुरजीकों अनोसर करिकै सबनकों महाप्रसाद लिवायो. या प्रकार आपु ही सब करिकै सबनकों आचारकी बिधि सिखाई. सो वे थोरेसे दिनमें परम भगवदीय भये. तब वह लरिकिनीकौ सुसर तथा और हू लोग लुगाई कहन लागे, जो हम पर श्रीगुसांईजी और श्रीठाकुरजीकी कृपा भई है सो सब या बहूके प्रताप तें भई है. याहीकी कृपा तें हमारो अङ्गीकार भयो है. ता दिन तें वह बहूको सब कोऊ भगवदीय करिकै जानन लगे. और घरमें सबतें अधिक करिकै मानते.

भाव प्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो ताप करि प्रभु बेगि प्रसन्न होत हैं. तातें वैष्णवकों मनमें ताप राखनो.

सो वह बहू श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय ही. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।९२।।

९३-तीन तूम्बावालो वैष्णव ब्राह्मण

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक तीन तूम्बावारौ वैष्णव, ब्राह्मन, सिद्धपुरकौ तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्त्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम ‘जयश्री’ है, सो जयश्रीमें स्वामीनीजीकौ अलौकिक सौन्दर्य है. तातें श्रीठाकुरजी इनके अधीन व्है रहत हैं. ये ‘छबिसिंघि’ तें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं.

ये सिद्धपुरमें एक ब्राह्मनके प्रगटे. सो जन्मत ही भगवन्नामकौ उच्चार किये. ‘श्रीकृष्ण’ ऐसें कह्यो. रुदन कियो नाहीं. तब इनके माता - पिता आश्चय करन लागे. ता पाछें दिन तीन तांई माताकौ दूध पियो नाहीं. तब माताकों बोहोत चिन्ता भई, जो यह बालक जियेगो नाहीं. तब माताने गांइकौ दूध दियो, सो इन कछूक पियो. तब इनकों गांइकौ दूध देन लागे. पाछें बरस पांचकौ यह बालक भयो. ता दिन तें यह बालक श्रीकृष्ण नामकौ जप करन लाग्यो. काहूसों बोले नाहीं. काहूके पास बैठे नाहीं. विरक्तसो रहे. माता - पिता जाने, जो यह कोई लौकिक बालक नाहीं. तातें कछू नाहीं. यह बालक खान - पान करे नाहीं. गांईकौ दूध पी कै रहे. ऐसें करत यह बरस पन्द्रहकौ भयो. तब श्रीगुसांईजी सिद्धपुर पधारे. सो सरस्वती स्नानकों पधारे. तब यह बालक सरस्वतीमें स्नान करत हतो. सो इनकों श्रीगुसांईजीके दरसन भए. सो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तमके दरसन भए. तब यह विरक्त श्रीगुसांईजीसों दोउ हाथ जोरि बिनती कियो, जो महाराज ! मैंने आपकों पहिचाने हैं. सो अब कृपा करि मोकों सरनि लीजिये. बोहोत दिन भए बिछर्यो हूं. आपके दरसन आज पाए. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो तू दैवी जीव है. तातें हम तोकों अङ्गीकार करिवेकों यहां आए हैं. सो तू जलही में ठाढ़ो रहे. हम तोकों जलही में नाम - निवेदन कराई सरनि लेइंगे. पाछें श्रीगुसांईजी आप सरस्वतीमें स्नान करि वाको जल ही में नाम कराये. सो निवेदन होत ही याकों सब लीला स्फुर्द भई. स्वरूप हृदयारूढ़ भयो. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो तोकों निरोध सिद्ध भयो. अब तोकों माया बाधा करेगी नाहीं. तातें तू रसोई करि भोग धरि महाप्रसाद ले. और चाहे जहां रहि. तोकों देसकाल हू बाधा करेगो नाहीं. पाछें श्रीगुसांईजी आप तो द्वारकाजी रनछोरजीके दरसनकों पधारे. और यह विरक्त दसामें विचरन लाग्यो. चुकटी ल्याय रसोई करि भोग धरि प्रसाद लेई. तब इनके मा - बाप कह्यो, जो बेटा ! अब तो तू अन्न खात है, तातें अपने घरमें जेंयो करि. अलग रसोई काहेकों करत है ? तब इन कह्यो, जो हौं विरक्त हों. मेरे तुम्हारे कछू सम्बन्ध नाहीं. तातें मेरेमें ममता मति करो. नांतरु दुःख पावोगे. इतनो

कही यह विरक्त तो गरतें निकसि गयो. सो अष्टाक्षर मन्त्रकौ निरन्तर जप करे. एक ठौर कहूं रहे नाहीं. सदा भगवल्लीलाके आवेसमें छक्यो रहे. काहू सों कछू बोले नाहीं. या प्रकार रहे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै वह विरक्त श्रीनाथजीके दरसनकों गुजरात तें आवत हतो. ताते पास तीन तूम्बा, कान्धे पर तो खासाकौ, पीछे कटि पर मर्यादी सेवकीकौ, आगें कटि पर बाहिरकौ, या भांति सों रहै आवें. सो जहां गाम जांइ तहां चुकटी मांगिकै रसोई करि श्रीठाकुरजीकों भोग धरि पाछें महाप्रसाद ले कै मजलि चले. सो ऐसें करत एक दिन मेह बोहोत बरस्यो. सो रसोई न बनि आई. पाछें दो दिन ओर हू मेह न खुल्यो. सो यह चल्यो. सो चल्यो न जांई. तब यह विचार कियो, जो अब मैं कहा करों ? पानी तो रहत नाहीं. और ऐसें में चुकटी कैसें मांगो ? कैसें रसोई करो ? तातें आजु तो कहूं श्रीगुसांईजीकौ सेवक मर्यादी होंइ तो ताके घर भली भांतिसों महाप्रसाद लेऊ पाछें सोऊं. तब मेरो सरीर आछौ होंइ. तीन रात्रिकों भींज्यो हूं तातें नींद न आई. ऐसें कहत चल्यो.

भाव प्रकाश :
यहां यह सन्देह होंई, जो यह वैष्णव तो तादृशी है. तातें तादृशी वैष्णवकों भूख - प्यास देहाध्यास तो बाधा करि सकत नाहीं. देसकाल हू बाधा करत नाहीं. सो या विरक्त वैष्णवकों ऐसो कष्ट क्यों भयो ? और इनके मनमें खानपानकी अपेक्षा क्यों भई ? तहां कहत हैं, जो यह विरक्त चाहतो तो छिन एकमें मेह खुलि जातो. और देहाध्यास भूख प्यास हू बाधा न करती. परि आगें राजाकी उपर कृपा करनी हैं. तातें प्रभुनने या भांति कौतुक कियो. तो तादृशी वैष्णवकों कछू वस्तुकी अपेक्षा होंई नाहीं. और जो होई तो इनमें भगवद् कृति जाननी. दूसरेकी उपर कृपा करनार्थ. यह सिद्धान्त जताए.

सो एक बड़ो गाम हतो. तहां एक राजा हो. सो राजानें अनेक ब्याह किये. परन्तु पुत्र काहू एकके न भयो. सो राजा वृद्ध होइवेमें आयो. तहां एक ब्राह्मन सिवकौ उपासक आयो. ता ब्राह्मनकों सिव दरसन देते. सो वह ब्राह्मन राजाके पास आयो. कह्यो, जो मोकों पांच हजार रुपैया देउ तो मैं जतन करों. सो तुम्हारे अवस्य पुत्र होइगो. तब राजाने वा ब्राह्मनसों कह्यो, जो मेरे भाग्यमें पुत्र नाहीं है तातें तू काहेकों

जतन करत है ? तब यह ब्राह्मनने कह्यो, जो मो पैं महादेव सानुभव है. तातें मैं महादेवजीसों कहिकै तुमकों पुत्र दिवाउंगो. तब वा राजाने वा ब्राह्मनकों पांच हजार रुपैया दिये. सो ब्राह्मनने रुपैया ले कै वरूनी कराई. महादेवके नामकौ जज्ञ कियो. बोहोत जतन किये. सो रुपैया सब व्यर्थ गए. कछू भयो नाहीं. तब तो वह ब्राह्मन महादेवजीपै मरन लाग्यो. तब महादेवजी प्रगट होंइ वा ब्राह्मनसों कहे, जो तू हकनाक क्यों करत हैं ? वाके भाग्यमें पुत्र नाहीं. तब इन कह्यो, जो एक लरिका राजाकों अवस्य दियो चाहिए. और महादेवसों कह्यो, जो मैं तुम्हारी बोहोत दिनसों सेवा करी हैं. तातें तुम या राजाकों एक लरिका तो देहु. तो मेरो बचन सत्य होंई. नाहीं तो हों तुम्हारे उपर मरोंगो. तब महादेवने वा ब्राह्मनसों कही, जो तू बैठ्यो रहे, मैं श्रीठाकुरजीसों पूछि आउं. यह कहिकै महादेव श्रीठाकुरजीसों जांइ बिनती करे, जो महाराज ! मैं एक ब्राह्मनकौ बर दियो है. सो वह कहत है जो राजाकों एक पुत्र होंई. जो ऐसो न देउगे तो वह ब्राह्मन मेरे उपर मरत है. यह सुनिकै श्रीठाकुरजी हंसिकै कहे, जो महादेवजी ! वह राजाके भाग्यमें पुत्र सपने हू में नाहीं. तातें मैं कहां तें देउ ? तातें तुम जांइ वा ब्राह्मनसों कहि देहु, जो राजाके भाग्यमें तो पुत्र नाहीं है. तोकों मरनो होंइ तो मरि. तब महादेवजी आइकै वह ब्राह्मनसों कहे, जो मैं तेरे लिये श्रीठाकुरजी पै गयो हतो सो मैं श्रीठाकुरजीसों कह्यो हतो. सो श्रीठाकुरजीने अपने श्रीमुख ते कह्यो, जो राजाके भाग्यमें पुत्र नाहीं है. तातें तोकों मरनों होंइ तो मरि. हमारो दोष नाहीं. ऐसें कहिकै महादेव तो चले गए. तब इहां ब्राह्मन राजा पास आयो. सो राजासों कह्यो, जो मैं तुम्हारी बात श्रीठाकुरजी तांई पहुंचाई. परन्तु श्रीठाकुरजी अपने श्रीमुख तें कहे, जो राजाके भाग्यमें पुत्र नाहीं है. तातें मैं कहा करों ? तब राजाने कह्यो, जो मैं तो प्रथम ही तुमसों कह्यो हतो, जो मेरे भाग्यमें पुत्र नाहीं है. पाछें वा राजाने बीस रुपैया दे कै वा ब्राह्मनकों विदाय कियो. और कह्यो, तुम आयो - जायो करियो. कछू चिन्ता मति करो. मेरे भाग्य ही में नाहीं तो तुम कहा करो ? तब यह ब्राह्मन उठिकै अपने घर आयो.

ताही गाममें एक और ब्राह्मन वैष्णवकौ घर हतो. सो वाकों यह नेम हुतो, जो श्रीठाकुरजीके राजभोगसों पहुंचिकै पातरि ढांकिकै गामके बाहिर एक तलाव हुतो तहां आइकै जप करतो. और देखतो, जो कोई वैष्णव मिले ताकों लिवाय ल्यावतो. महाप्रसाद प्रथम वाकों लिवायकै पाछें आपु लेतो. जा दिन वैष्णव न मिलतो ता दिन एक पातरि ले गांईकों धरिकै महाप्रसाद आप लेतो. सो एक दिन वह तलवापर बैठ्यो जप करत हुतो. इतने वह श्रीगुसांईजीकौ सेवक विरक्त तीन दिनकौ भूख्यो सो वह तलाव परि आयो. सो यह वैष्णवकों

देखि, तब तिलकमाला देखिकै जान्यो, जो यह वैष्णव है. और उन हू जान्यो, जो विरक्त है, वैष्णव है. जो और कोई होंई तो ताकों एक तूम्बासों काम चले. और यह तो श्रीगुसांईजीकौ सेवक दीसत हैं. काहेतें ? तीन तूम्बा खासा, मर्यादी, बाहिरके हैं. पाछें श्रीकृष्ण - स्मरन कियो. परस्पर मिले, बड़ो आनन्द भयो. तब वह वैष्णव कह्यो, चलो ! घर महाप्रसाद लेउ. पाछें इनकों घर ले जांइकै आछे महाप्रसाद लिवाए. कछू ता दिन उत्सव हतो. सो श्रीठाकुरजी आछी - आछी सामग्री आरोगे हते. तातें महाप्रसाद भली भांति सों वा विरक्त वैष्णवने लीनो. पाछें वा विरक्तने वा वैष्णव सों कही, जो मैं तीन रात्रि जाग्यो हूं. सो मोकों सोइवेकों ठौर बतावो. तब याने एकान्त आछे बिछोना बिछाय दिये. ता पर वह वैष्णव विरक्त बोहोत सुख पायकै सोयो. पाछें सेन आरतिके समै वा वैष्णवकों जगायो. सो आयकै दरसन करिकै बैठ्यो. पाछें ब्यारू कराइकै भगवद्वार्ता करि फेरि सेन कियो. पाछे प्रातःकाल उठ्यो. तब वह विरक्त कह्यो, जो अब मैं चलोंगो. तब वह वैष्णवने कह्यो, जो तुमकों भूखे कैसें जान दीजिये ? तातें राजभोग आर्ति करिकै दरसन करिकै महाप्रसाद लैके पाछें जइयो. पाछें राजभोगकी आर्ति भई. ता पाछें आछी भांतिसों महाप्रसाद लियो. पाछें वा विरक्तने वा वैष्णवसों कह्यो, जो मैं तुम्हारे घर बोहोत सुख पायो. तातें अब मैं बोहोत प्रसन्न हों. तातें तुम कछू मांगो. तब इन ब्राह्मन वैष्णव कह्यो, जो श्रीगुसांईजीकी कृपा तें मेरे सब कछू है. स्त्री, पुत्र सब सेवामें सानुकुल हैं. तातें मोकों तो कछू नहीं चहिए. तब यह विरक्त कह्यो, जो मैं तो अवस्य दे कै जाउंगो. तातें स्त्रीसों पूछो. तब वह वैष्णवने अपनी स्त्री - पुत्र सों पूछ्यो और कह्यो, जो अब कैसी करिये ? वैष्णव हठ पर्यो है. सो ये श्रीगुसांईजीकौ सेवक है. तातें ये कह्यो है और सर्वथा देहिगो. परि अपने कछू चहिये नाहीं. और मांगनो कछू वैष्णवकौ धर्म नाहीं. तब स्त्रीने कह्यो, जा तुम अपन लिये कछू मांगो मति. या गामकौ राजा वृद्ध भयो है. और या राजाके कोई पुत्र नाही है. और आपुन या राजाके राज्यमें सुख पायो है. तातें या राजाके मरें फिर कहा जानिये कैसो राजा बैठे. तातें या राजाके एक पुत्र मांगो. तब वह ब्राह्मन आइकै कह्यो, जो हमकों तो कछू नाहीं चाहिए. परन्तु या गामकै राजाके एक बेटा होंइ तो आछो है. तब वह वैष्णव प्रसन्न होंइकै कह्यो, जो एक कहा चारि बेटा होंइगे. ऐसें कहिकै वह विरक्त वैष्णव तो बिदा होंइकै गयो. पाछें वह ब्राह्मन महाप्रसाद लै कै राजाकों जांईकै आशीर्वाद कियो. पाछें राजासों कह्यो, जो राजा ! बधाई है. तिहारे चारि बेटा होंइगे. तब राजा हंस्यो. और कह्यो, जो मैं हू कछूक दिनमें मरूंगो. मेरे दांत हू टूट चूके, तू कहेके चारि बेटा होइंगे ! तब याने कह्यो, जो राजा ! विश्वास राखिये. मेरे घर वैष्णव कहि गयो है. तातें तेरे सर्वथा पुत्र चारि होइंगे. तब इन कह्यो, जो आछो. होइंगे तो हम नाहीं कब कहत हैं ? तब ब्राह्मन आशीर्वाद दे कै आयो. पाछें

चारि रानीनके गर्भ रह्यो. तब राजाने कह्यो, जो वह ब्राह्मनके बचन सत्य होत दीसत है. पाछें समय भए राजाके चारि पुत्र भए. सो राजाकों बड़ो आनन्द भयो. नौबतखाना बाजन लाग्यो. तब वह सिवके उपासक ब्राह्मनने पूछ्यो, जो आजु राजाके घर कहा है ? जो नौबत बाजत है ? तब सबन कह्यो, जो राजाके चारि पुत्र भए हैं. तातें राजाकों बड़ो आनन्द भयो है. सो नौबतखाना बाजत हैं. तब यह ब्राह्मन अपने मनमें विचारि कियो, जो मोकों तो महादेवजी पुत्रकी नाहीं कही, जो श्रीठाकुरजी हू पुत्रकी नाहीं करी हैं. सो मोकों राजाके झुठो करायो. तातें मैं अब महादेवके उपर मरोंगो. पाछें एक तरवार लेकै महादेवजीके मन्दिरमें गयो. सो कह्यो, जो मैं तुम्हारे उपर मरोंगो. मोकों तुम राजद्वारमें झूठो करायो. ऐसें कहिकै तरवार गरे में लगायकै मरन लाग्यो. तेसें ही महादेवजी आयकै हाथ पकरि लियो. कह्यो, ब्राह्मन ! अब फेरि तू क्यों मरत है ? तब इन कही, जो या राजाके भाग्यमें पुत्र नाहीं है. सो अब चारि पुत्र याके कहां तें भए ? तब महादेवजी सुनिकै चक्रत होंइ रहे. कहे, जो मैं फेरि श्रीठाकुरजी पास पूछि आउं. तब महादेवजी फेरि आईकै श्रीठाकुरजीसों कहे, जो महाराज ! वह राजाकों आप कहे हते, जो वाके भाग्यमें पुत्र नाहीं है. सो अब उहां तो राजाकै चारि पुत्र भए ? ताकौ कारन कहा है ? तब श्रीठाकुरजी कहे, जो वा राजाके भाग्यमें तो पुत्र नाहीं. परन्तु तुम पूछो, जो कौन प्रकार पुत्र भए ? कोऊ वैष्णवकौ आशीर्वाद तो नाहीं भयो ? तब महादेवजीने वा ब्राह्मनसों आइकै कही, जो तू राजासों पूछि आउ, जो चारि पुत्र एक सङ्ग ही कैसें भए ? तब यह ब्राह्मन राजासों आइकै पूछ्यो, जो तुम्हारे पुत्र कौन प्रकारसों भए ? मोसों तो महादेवने कह्यो हतो, जो राजाके भाग्यमें पुत्र नाहीं है. और श्रीठाकुरजी हू पुत्रकी नाहीं कीनी हती. सो अब ये पुत्र तुम्हारे कैसें भए ? सो कहो. तब राजा कहे, जो हम तो जानत नाहीं. जो फलानो वैष्णव कहि गयो हतो. ताके बचन सत्य भए. तब उन कह्यो, जो वाकों बुलावो. तब राजाने वह ब्राह्मन वैष्णवकों बुलायकै पूछ्यो जो वैष्णव ! तुम पुत्र कहि गए हते सो मेरे चारि पुत्र भए. सो याकौ कारन कहो ? तुम कैसें जानें ? तब वह वैष्णवने कही, जो राजा ! हमारे घर एक श्रीगुसांईजीकौ सेवक विरक्त हमारो गुरु - भाई हुतो. सौ तीन दिनकौ भूखो हतो. सो मैं उनकी सेवा करी. तब उन प्रसन्न होंइकै कह्यो, जो तुम कछू मांगो ? तब मैं यह मांग्यो, जो राजाके एक पुत्र होंई. तब वाने कह्यो, जो एक कहा चारि होंइगे. सो श्रीगुसांईजीके सेवक झूठ बोले नाहीं. यह सुनिकै राजा चक्रित होंइ रह्यो. पाछें वह ब्राह्मन जांइकै महादेवसों कह्यो, जो श्रीगुसांईजीके सेवकके आशीर्वाद तें पुत्र भए हैं. तब महादेवजी जांईकै श्रीठाकुरजीसों कहे, जो श्रीगुसांईजीके सेवकके आशीर्वाद तें पुत्र भए हैं. तब श्रीठाकुरजी कहे, जो वैष्णवने मेरे उपर कृपा करी है. जो वैष्णव यह कहतो, जो राजाके घर श्रीठाकुरजी प्रगट होंइगे तो

मोकों प्रगट होनो परतो. यह तो पुत्र भए ताकौ कहा आश्चर्य है ? तब महादेवजी आइकै वा ब्राह्मनसों कहे, जो श्रीगुसांईजीकौ सेवक श्रीठाकुरजीकों कहतो तो श्रीठाकुरजीकों प्रगट होनो परतो. यह तो पुत्र ही भए, ताकौ आश्चर्य कहा ? तब वा ब्राह्मनने आइकै राजा तें कह्यो, जो उन वैष्णवकी आज्ञा तें श्रीठाकुरजीकों अवतार लेनो परतो. यह तो तुम्हारे पुत्र ही भए. ताकौ आश्चर्य कहा ?

भाव प्रकाश :
या वार्तामें यह सन्देह है, जो महादेव हू वैष्णव हैं. तातें वे हू देते तो राजाकों पुत्र होतो. सो उन क्यों नाहीं दिये ? तहां कहत हैं, जो महादेव मर्यादा भक्त हैं. तातें विधि अनुसार सब कार्य करत हैं. सो राजाके भाग्यमें पुत्र नहीं है ऐसो उन जान्यो तब वे चुप रहे. पाछें विष्णुके पास गए. सो विष्णु हू गुनावतार हैं. सो उन हू नाहीं कीनी. और वह विरक्त तो पुष्टिमार्गीय भक्त है. कर्तुं, अकर्तुं, अन्यथा कर्तुं, ऐसें जो श्रीपुरुषोत्तम हैं. सो या विरक्त वैष्णवकै हृदयमें बिराजत हैं. तातें इनमें अलौकिक सामर्थ्य है, से ये चाहे सो करि सकत हैं.

तब वा राजाने उह वैष्णवसों बुलाई कह्यो, जो मोकों श्रीगुसांईजीकौ सेवक करावो. तब वा वैष्णवने श्रीगुसांईजीकों बिनती पत्र लिख्यो. जो राज ! एक बेर यहां बेगि पधारोगे. तब श्रीगुसांईजी वा पत्रकों बांचिकै केतेक दिनमें राजाके गाम पधारे. तब उह राजा, महादेवकौ उपासक ब्राह्मन आदि सब गाम श्रीगुसांईजीकौ सेवक भयो.

भाव प्रकाश :
यामें यह जतायो जो, वैष्णवके कहेकौ विश्वास राखनो. वैष्णव उपरांत और कोई पदार्थ नाहीं. वैष्णवकी कृपा तें सब बात सिद्ध होत हैं.

सो यह तीन तूम्बावारौ वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ? वार्ता ।।९३।।

९४-परमानन्द सोनी

अब श्रीगुसांईजीके सेवक परमानन्द सोनी, अड़ेलमें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं.

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. इनकौ अलौकिक स्वरूप चौरासी वैष्णवनकी वार्तानमें आगे कहि आए हैं. लीलामें इनकौ नाम 'चन्द्रिका' है. सो चन्द्रमाकी उजियारी वत् इनकी कान्ति है. श्रीचन्द्रावलीजी अनेक चन्द्रमारूप हैं, तिनकी यह अन्तरङ्गिनी सखी हैं. ये 'नागवेलिका' तें प्रगटी हैं, तातें इनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै उन परमानन्द सोनीने श्रीगुसांईजीके पास नाम पायो हतो. सो वे परमानन्द सोनी बड़े ही कृपापात्र भगवदीय भए. सो मार्गके ग्रन्थ श्रीसुबोधिनीजीमें बोहोत ही रुचि हती. सो श्रीगुसांईजी आप नित्य कथा कहते, और पूछते तब उत्तर दै कै पूछते. और सुनते, कहते. सो सब परमानन्द सोनी अपने हृदयमें राखते.

और श्रीगुसांईजीके घरकौ गहनो होतो सो सब परमानन्द सोनी गढ़ते. और कहते, जो यह देव अंस है, गुरु अंस है. तातें मति कहूं अपने अङ्ग लागे. आरै कहूं गिरे नाहीं. ऐसी सावधानीसों काम करते. और श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख तें कहते, जो याकी गढ़ाई, मजूरी तुम लेऊ. काहेतें, जो तेरे हू तो संसार लग्यो है. तब परमानन्द सोनी श्रीगुसांईजीसों कहे जो महाराजाधिराज ! मोकों संसारमें लेवेकों बोहोत ही ठौर है. आपकी कृपा बल तें मेरे सब कछू सिद्ध है. और काहू बातकी न्यूनता नाहीं है. जो आपकी कृपा ही बड़ो पदार्थ है. सो ऐसें कहे, कछू लै नाहीं. तब श्रीगुसांईजी ऐसी बात सुनिकै श्रीमुख तें कहे, जो तुम्हारी इच्छा होय सो करो. तब परमानन्द सोनी ने श्रीगुसांईजी सो बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! आपकी कृपा तें मेरे सब आनन्द है. और मेरे कछू काहू बातकौ मनोरथ नाहीं है. जो आपकी कृपा ही बड़ो पदारथ है. और आप देनकी कहत हो तो हों यह मांगत हूं, जो आप मेरे उपर सदा प्रसन्न रहो. सो परमानन्द सोनीके उपर आप सदा प्रसन्न रहतें. और कृपा करिकै मार्गके सिद्धान्त - ग्रन्थ, श्रीसुबोधिनीजीकौ गूढार्थ, सब समझायकै कहते. सो परमानन्द सोनीके उपर

श्रीगुसांईजी आप कृपा करिकै इनके हृदयमें भगवल्लीला स्थापे. सो परमानन्द सोनी भगवद्रसमें सदा मगन रहते.

और कब हू वैष्णवनकों कथामें समुझ नाहीं परे तो वे सब श्रीगुसांईजीसों पूछ्ते. तब श्रीगुसांईजी कहते, जो तुमकों परमानन्द सोनी कहेंगे. तब परमानन्द सोनीके पास वैष्णव आयकै पूछ्ते. सो ताही कौ परमानन्द सोनी वा वैष्णवकों उत्तर देते. सो वे परमानन्द सोनी श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते.

भाव प्रकाश :
या वार्तामें यह जतायो, जो वैष्णवकों श्रीठाकुरजीके द्रव्यसों और गुरुके द्रव्यसों सदा डरपत रहनो. और गुरुकौ कार्य निष्काम व्है भक्ति भाव संयुक्त करनो, तब गुरु प्रसन्न होंई. तातें मारगकौ सिद्धान्त सगरो हृदयारूढ़ होंई.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
और एक समै कासीके और प्रयागके पण्डित श्रीगुसांईजीसों वाद करिवेकों आए. तब श्रीगुसांईजी आप तो सेवामें हते. तब परमानन्द सोनीने उनकौ समाधान करिकै बैठारे. पाछें परमानन्द सोनीने कह्यो, जो तुम कहा पूछत हो ? तुमकों मैं उत्तर देहुं. जो श्रीगुसांईजी तो आप सेवामें हैं. तब उन पण्डितन परमानन्द सोनीसों कह्यो, जो तुमकों तो कहिवेकौ काम नाहीं है. जो तुम वेद शास्त्रनकी बातमें कहा जानोगे ? तब परमानन्द सोनीने कह्यो, जो भले ! तुम बैठो. श्रीगुसांईजी आप सेवासों पहोंचिकै आवेंगे तब तुमकों उत्तर देइंगे. ता पाछें उन पण्डित ब्राह्मननसों परमानन्द सोनीने एक श्लोक ‘श्रीभागवत’ ‘रास पञ्चाध्याई’ कौ पूछ्यो. और कह्यो, जो याको कहा अर्थ है ? तब उन पण्डित ब्राह्मनने कछूकौ कछू उत्तर दीनो. तब परमानन्द सोनीने वाकौ अर्थ कर्यो. जो ऐसे हैं. तब वे पण्डित ब्राह्मन आपुसमें मुख देखन लागे. उन आपुसमें कह्यो, जो भाई ! अब कछू पूछनो होई तो इन ही कों पूछिकै चलो. जिनके सेवक सूद्र ऐसें हैं उनकै गुरुकी तो कहा कहनो ? जो तुम उनसों बाद करिकै जीति नाहीं सकोगे. ऐसें आपुसमें बतरायकै जो कछू पूछनो हतो सो परमानन्द सोनीसों पूछ्यो. ताकौ उत्तर वेद पुरान शास्त्रकी रीतिसों परमानन्द सोनी दे कै उनकों निरुत्तर किये. तब वे पण्डित हाथ जोरिकै कहे, जो

तुम धन्य हो. जो जाके सोनी सेवक सूद्रकों सरस्वती ऐसी स्फुर्त है तिनके गुरुकी तो कहा कहनो ? तब उन पण्डित ब्राह्मन अपने मनकौ समाधान करिकै उठि चले.

ता पाछें घरी चारिमें श्रीगुसांईजी आप बाहिर पधारे. सो गादी - तकियानके उपर बिराजे. तब एक वैष्णवने सब समाचार कहे, जो महाराजाधिराज ! कासी प्रयागके पण्डित वाद करनकों आए हते. सो उनको परमानन्द सोनीने निरुत्तर कीने हैं. तब वे समाधान करिकै पाछें फिरि गए. तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुखतें वा वैष्णवसों कह्यो, जो या परमानन्द सोनीकों श्रीआचार्यजी महाप्रभुनमें और श्रीगोवर्द्धननाथजीमें दृढ़ विश्वास है. तातें यह बातमें कहा आश्चर्य ॐ'? सौ वैष्णवकों एक दृढ विश्वास चाहिए. और जाकों दृढ़ आश्रय होंई ताकों जो चाहे सोई होई. और जो अपने मनमें विचार करे सोई कार्य करे. जो वैष्णवकों दृढ़ आश्रय नाहीं होई ताकों पश्चात्ताप कलेस होंइ. सो ऐसें श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख तें वा वैष्णवसों कहे, सो याही तें वह ऐसी बात है. तातें वैष्णवकों ऐसो ही चाहिए.

सो वे परमानन्द सोनी श्रीगुसांईजीके ऐसें परम कृपापात्र भगवदीय है, तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।९४।।

९५-रामदास विरक्त ब्राह्मण, खम्भाइचके

अब श्रीगुसांईजीके सेवक रामदास विरक्त ब्राह्मन, खम्भाइचके, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'कामेसुरी' है. ये 'नागवेलिका' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

ये खम्भाइचमें एक ब्राह्मनके उहां प्रगटे. सो बालपने सों वैराग्य दसामें रहे. सो बरस पन्द्रहके भए. तब खम्भाइच तें एक सङ्ग गुजरातके वैष्णवनकौ

श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों चल्यो. ता सङ्गमें रामदास हू चले. सो विरक्त दसामें रहे. चुकटी मांगि निर्वाह करे. रात्रिकौं वैष्णवनकी मण्डलीमें बैठे. सो भगवद्वार्ता सुने. ऐसें करत कछुक दिनमें वा सङ्गके साथ रामदास गोपालपुर आये. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ दरसन पाए.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो एक समै श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार बिराजत हुते. सो रामदास श्रीगुसांईजीके दरसन किये. तब इन श्रीगुसांईजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करि बिनती कीनी, जो महाराज ! कृपा करिकै नाम दीजिए. तब श्रीगुसांईजी आप आज्ञा किये, जो स्नान करि आउ. तोकों नाम सुनावेंगे. तब रामदास तत्काल स्नान करिकै आये. पाछें श्रीगुसांईजीकों बिनती किये, जो महाराज ! मैं स्नान करि आयो हूं. तब श्रीगुसांईजी कृपा करि रामदसाकों नाम सुनायो. पाछें श्रीगुसांईजी रामदासकों आज्ञा किये, जो रामदास ! अब कहा मनोरथ है ? तब रामदास श्रीगुसांईजीसों बिनती किये, जो महाराज ! मेरे परम भागि हैं, जो आपने मेरे उपर कृपा करि मोकों सरनि लियो. अब अनत कहूं जानो नाहीं है. आप जो आज्ञा करेंगे सो करोंगो. तब श्रीगुसांईजी रामदासकों आज्ञा किये, जो तू 'दण्डवती सिला' आगे बैठि छह महिना तांई अष्टाक्षर मन्त्रकौ जप कर्यो करि. पाछें तोकों और बात कहेंगे. तब तो रामदास प्रसन्न व्है दण्डवती सिला आगें आय बैठें. सो नित्य नेमसों अष्टाक्षरकी माला फेरें. ऐसें करत छह महिना बीते. तब रामदास श्रीगुसांईजीके पास आइ बिनती किये, जो महाराज ! आपकी आज्ञा प्रमान छह महिना लों अष्टाक्षरकौ जप कियो. अब कहा कर्तव्य है ? सो कृपा करिकै कहिए. तब श्रीगुसांईजी आप रामदासकों आज्ञा किये, जो रामदास ! काल्हि तोकों ब्रह्मसम्बन्ध करावेंगे, आज श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करो. पाछें श्रीगुसांईजी आप स्नान करिकै श्रीगिरिराज पर्वत उपर श्रीगोवर्द्धननाथजीके मन्दिरमें पधारे. सो उत्थापन भोग धरें. पाछें दरसन खुले. तब सब वैष्णवन श्रीनाथजीके दरसन किये. सो ता समै रामदास हू श्रीनाथजीके दरसन किये. सो महा अलौकिक दरसन भए. सो सरीरकी सुधि रही नाहीं. सो दरसनके आवेशमें मूर्छा खायकै गिरि परे. तब घरी दोइमें सुधि आई, तब उठे. तब ये समाचार सब भीतरियाने आइकै श्रीगुसांईजी आगें कहे. तब श्रीगुसांईजी सेनभोग धरिकै बाहिर पधारे. तब रामदाससों पूछे, जो रामदास ! कहा समाचार है ! तब रामदास श्रीगुसांईजीसों बिनती किये, जो महाराज ! आपकी कृपासों श्रीगोवर्द्धननाथजी अलौकिक दरसन दिये हैं. सो तामें मन उरझि रह्यो है. तब श्रीगुसांईजी रामदाससों कहे, जो रामदास ! तुम्हारे अहो भाग्य है, जो श्रीनाथजीने या प्रकार दरसन दिये. ता पाछें समय भए सेनभोग

सराय बीरी अरोगाइ, सेन आरति करि अनोसर करि श्रीगुसांईजी पर्वततें नीचे उतरे. तब रामदास हू श्रीगुसांईजीके पाछें आये. ता पाछें श्रीगुसांईजी अपनी बैठकमें बिराजे. तब रामदास श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि उठि चले, सो दण्डवती सिला आगें आय बैठे. सो सगरी रात्रि श्रीगोवर्द्धननाथजीके स्वरूपानन्दकौ अनुभव किये. पाछें सवेरे बेगि न्हाइकै श्रीगुसांईजीके पास आय ठाढ़े रहे. तब रामदास श्रीगुसांईजीकों बिनती किये, जो महाराज ! कृपा करि ब्रह्मसम्बन्ध कराइए. तब श्रीगुसांईजी रामदाससों कहे, जो तोकों श्रीगोवर्द्धननाथजीके सन्मुख ब्रह्मसम्बन्ध करावेंगे. सिंगार समै. तातें श्रीगोवर्द्धननाथजीके मन्दिरमें जाय बेठि. तब रामदास पर्वत उपर जाय श्रीगोवर्द्धननाथजीके मन्दिरमें बैठे. पाछें श्रीगुसांईजी हू स्नान करि पर्वत उपर पधारे. सो श्रीनाथजीकों जगाय मङ्गल - भोग धरे. ता पाछें समै भए भोग सराय मङ्गला - आरति किये. पाछें सिंगार किये. ता पाछें रामदासकों बुलाय ब्रह्मसम्बन्ध कराये. तब रामदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! अब कहा आज्ञा है ?

तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो रामदास ! छह महिना और हू तू दण्डवती सिला आगें बैठि पञ्चाक्षरकौ जप करि. तब रामदासने वाही प्रकार छह महिनालों पञ्चाक्षरकौ जप कियो. पाछें रामदास श्रीगुसांईजी पास आय दण्डवत् किये. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो अब तेरो मन शुद्ध भयो है. तातें और ठौर भटकेगो नाहीं. तब रामदास बिनती किये, जो महाराज ! अब कछू सेवा दीजिये. तब श्रीगुसांईजी रामदासकों सागघरकी सेवा सोंपे. सो जा दिन रामदास सागघरकी सेवामें न्हाए ताही दिन श्रीगोवर्द्धननाथजी रामदासके पास पधारि रामदासकों आज्ञा किये, जो रामदास ! हम 'गुलालकुण्ड'पैं पधारत हैं. सो तू सीतल भोगकी सामग्री लेकै बेगि अइयो. तब रामदास बेगि - बेगि फलफूल सिद्ध किये. ता पाछें सीतल सामग्री सिद्ध किये. सो एक टोकरामें आछी भांति धरी. पाछें गुलालकुण्ड आए. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु रामदाससों कहे, जो रामदास ! सामग्री ल्यायो ? तब रामदास बिनती किये, जो महाराज ! ल्यायो हूं. पाछें रामदास गांठि खोलि सब सामग्री आगें धरे. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी सखामण्डली समेत अरोगे. सो दरसन रामदासकों भयो. सो रामदास अपने भाग्यकों सराहन लागे.

और इहां श्रीगुसांईजी स्नान करि पर्वत पर पधारे. सो सागघरमें आए. सो रामदासकों देखे नाहीं. तब श्रीगुसांईजी आप फलफूलकी सेवा

किये. पाछें सागघरकी सामग्री लेकै आप मन्दिरमें पधारे.

और रामदासके मनमें बड़ो भय भयो, जो दोखो ! आज ही तो सागघरकी टहल मिली और आज ही मन्दिरमें नागा भई. सो श्रीगुसांईजी आप निश्चय खीजेंगे. पाछें रामदास बेगि - बेगि सब पात्र समेटि अपरसमें न्हाइ मन्दिरमें आए. सो भोगके दरसन खुले हते. सो दरसन किये. ता पाछें श्रीगुसांईजी सन्ध्या - आरति करि श्रीनाथजीकौ सिंगार बड़ो करत हते. तब श्रीनाथजी श्रीगुसांईजीसों कहें, जो रामदास मेरे सङ्ग गुलालकुण्ड आयो हतो. सो वासों तुम कछू मति कहियो. पाछें श्रीगुसांईजी सेन - भोग धरि बाहिर पधारे. तब रामदासकों बुलाय एकान्तमें कह्यो, जो रामदास ! तुम्हारे बड़े भाग्य हैं. जो तुमकों आज ही टहल मिली और आज ही श्रीनाथजी कृपा किये. तब रामदास बिनती किये, जो महाराज ! सब आपकी कृपा तें भयो हैं. नांतरु हों कहा लाइक हतो ? तब श्रीगुसांईजी आप रामदाससों आज्ञा किये, जो आज पाछें तुम श्रीनाथजीकी आज्ञामें रहियो. श्रीनाथजी तुमकों जहां ले जांइ तहां जैयो. हम सागघरमें दूसरो मनुष्य राखेंगे. और तुमकों अवकास मिले तब तुम सागघरकी सेवा करियो. तब रामदास प्रसन्न व्हे कहे, जो महाराज ! आपकी आज्ञामें रहनो यह जीवकौ धर्म है. पाछें रामदास बोहोत प्रसन्नतासों सेवा करन लागे. ता पाछें श्रीआचार्यजीके ग्रन्थनकौ एकान्तमें पाठ करते. अष्टाक्षर पञ्चाक्षर अहर्निस जपते.

भाव प्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो अष्टाक्षर मन्त्रकौ जप किये तें हृदय शुद्ध होत है. और पञ्चाक्षरके जप किये तें विरहकौ दान होत हैं. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी अपनी लीलानकौ अनुभव करावत हैं. तातें वैष्णवकों अष्टाक्षर - पञ्चाक्षरकौ जप अवश्य करनो.

और श्रीगुसांईजी आप रामदाससों दण्डवती सिला आगें बैठिके जप करनकों कहे, ताकौ आशय यह, जो दण्डवती सिला हरिदासवर्यके चरन हैं. तातें भक्तनके सानिध्य उनकौ आश्रय करि जप किये तें तत्काल भगवद्रसकी प्राप्ति निश्चय होइ यामें सन्देह नाहीं, यह भाव जतायो.

और रामदास परम प्रीतिसों श्रीगोवर्द्धनाथजीकी सेवा करते. और राजभोग पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीकी प्रसादी रसोईमें जाय महाप्रसाद लेते. और इनकों श्रीगुसांईजीकौ जूंठनि महाप्रसाद हू मिलतो. सो वह महाप्रसाद लेइ निर्वाह करते. पाछें सांझकों सेन पाछें श्रीगुसांईजीकी कथा सुनते. ता पाछें अपनी कोठरीमें जांइ भगवद्वार्ता - कीर्तन करते. सो दोइ चारि वैष्णव होते सो सुनते. पाछें सबकों महाप्रसाद देते. ता पाछें आप चना चवेना खांइकै सोय रहते. सो घरी चारि सवेरे उठिकै देहकृत्य करिकै दन्तधावन करि स्नान करि श्रीनाथजीकी सेवामें जाते. सो सेवासों पहोंचि गोविन्दस्वामीकी 'कदमखण्डी'में जाते. सो गोविन्दस्वामीके पास बैठते. सो गोविन्दस्वामी कीर्तन करते ता समय श्रीगोवर्द्धननाथजी नृत्य करते. सो रामदास दरसन करते. या प्रकार श्रीगोवर्द्धननाथजी रामदास पर कृपा करते.

सो केतेक दिन पाछें श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल पधारिवेकी तैयारी करी. तब रामदासने बिनती करी, जो महाराज ! कृपा करिकै फेरि कब पधारोगे ? तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो हम बेगि आवेंगे. और तुम सेवा श्रीनाथजीकी भली भांतिसों करियो.

सो रामदास श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हैं, तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ? वार्ता ।।९५।।

९६-रेंडा उदम्बर ब्राह्मण

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक रेंडा उदम्बर ब्राह्मन, गुजरातमें कपडवनज गाम है तहां रहतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'सङ्गिनी' है. 'नागवेलिका' तें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वह अवधूत दसामें रहतो. ब्याह जन्महीं तें नाहीं कियो. सो एक समै श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे हते तब वाकों नाम सुनायो हतो. तब रेंडाने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मेरे तो कछू संग्रह है नाहीं. मैं तो अवधूत दसामें रहत हूं. सो अब मोकों कहा आज्ञा है ? सो आप कृपा करिकै कहिये. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो तू अपने हाथसों रसोई करि भोग धरि महाप्रसाद लीजियो. और रसोई करिवेकौ अपने मनमें सुख मानियो. दुःख मति मानियो. याही तें तेरो भलो होइगो. तब रेंडाने बिनती करी, जो महाराज ! भोग धरिवेकों सेवा पधराय दीजिये. तब श्रीगुसांईजी रेंडाको ब्रह्मसम्बन्ध करवायकै पाछें एक श्रीनवनीतप्रियजीकी कुलही लाल पधराय दिये. और आज्ञा किये, जो रेंडा ! तू इनकों अपने प्रान तें प्रिय जानियो. नेम करिकै नित्य रसोई करिकै भोग धरि महाप्रसाद लीजियो. ऐसें रेंडासों आज्ञा किये. पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुल पधारे.

ता पाछें केतेक दिन पाछें रेंडाने मनमें विचार कियो, जो श्रीगोकुल चलूं तो कछूक दिन श्रीगुसांईजीके पास रहिकै खवासीकी सेवा करों. यह विचार करिकै रेंडा चले, सो कछूक दिनमें श्रीगोकुल आए. सो श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन करिकै बैठकमें आइ रेंडाने दण्डवत् कियो. तब श्रीगुसांईजी पूछे, जो रेंडा ! तू बोहोत दिनानमें आयो है सो कछूक दिन यहां रहेगो ? तब रेंडाने बिनती कीनी, जो महाराज ! कछूक दिन आपकी खवासी करिवेकौ मनोरथ है. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो सुखेन रहो. खवासी करो. तब तें रेंडा सगरी श्रीगुसांईजीकी टहल करे और महाप्रसाद श्रीगुसांईजीकी जूंठन लेई. या प्रकार तीन दिन बीते. तब एक दिन रात्रिकों श्रीगुसांईजी पूछे, जो रेंडा ! महाप्रसाद कहां लेत हो ? तब रेंडाने बिनती करी, जो महाराज ! तीन दिन तो आपकी जूंठनि लीनी है. पाछें सेवक लोग मोसों कहे, जो तुम रसोई करि महाप्रसाद लीजियो. सो मैं पूछत हों, जो राज ! आज्ञा होंइ तो लेउं. मैं तो आपकौ आज्ञाकारी हों. तब श्रीगुसांईजी रेंडासों पूछे, जो तिहारे पास कछू खरची है ? तब रेंडाने बिनती करी, जो महाराज ! पक्के टका मेरे पास बारह हैं. तब आप कहे, जो रेंडा ! तू न्यारी रसोई करिकै श्रीठाकुरजीकों भोग धरिकै महाप्रसाद लीजियो. तब यह सुनिकै रेंडाने बिनती करी, जो महाराज ! काल्हि तें मैं न्यारी रसोई करि भोग धरि महाप्रसाद लेउंगो. तब श्रीगुसांईजी कहे जो तेरी ज्ञातिकी एक डोकरी है, सो भली वैष्णव है. तासों मिलिकै रहो, सेवा करो.

भाव प्रकाश :
यह कहि यह जतायो, जो वैष्णवके सङ्ग बिनु यह मारग फलित होंइ नाहीं. तातें रेंडाकों श्रीगुसांईजी आप वा वैष्णव डोकरीके सङ्ग मिलिकै सेवा करनकी आज्ञा किये. और लीलामें यह डोकरी श्रीचन्द्रावलीजीकी अन्तरङ्गिनी सखी हैं. 'स्यामा' इनकौ नाम है. सो 'सङ्गिनी'कों निसदिन याकौ सङ्ग है. लीलाकौ भेद ये बतावति हैं. तातें यहां हूं श्रीगुसांईजी रेंडाकों इन सङ्ग मिलिकै रहिवेकी आज्ञा किये. सो पूर्व सम्बन्ध दृढ़ जानिकै.

तब रेंडा दण्डवत् कियो. और कह्यो, जो महाराज ! ऐसें ही करूंगो. पाछें श्रीगुसांईजी आप पोढ़ें. तब रेंडा हू सोय रह्यो. पाछें प्रातःकाल डोकरी पास आयो. तब डोकरीने बोहोत समाधान कर्यो. कह्यो, जो रेंडा ! तिहारो घर है, आज्ञा करो सो मैं करो. और तुम तो काहूके घर जात आवत नाहीं. और आज तिहारो आवनो कैसें भयो ? तब रेंडाने कही, जो मेरे पास टका बारह तो पक्के हैं. और चुकटी करि अन्न लाऊंगो. तू मेरे श्रीठाकुरजीकों एक ओर पधरावे तो मैं कछूक दिन श्रीगोकुलमें रहूं. तब डोकरीने कही, जो तुम श्रीठाकुरजीकों सुखेन पधरावो. और तुम श्रीगुसांईजीकी सेवा करो. महाप्रसादके समै तुमकों बुलाय लेउंगी. तब रेंडा श्रीठाकुरजी पधराय पक्के बारह टका डोकरीकों दिये. या भांति कछूक दिन बीते. पाछें गाममें ते चुकटी मांगि निर्वाह करे. तब एक दिन रात्रिकों श्रीगुसांईजी पूछे, जो रेंडा ! अब निर्वाह कैसे होत है ? तब रेंडाने कही, जो राज ! श्रीठाकुरजी तो डोकरीके भेले बिराजत हैं. और हों गाममें ते चुकटी मांगि ल्यावत हूं. तातें भली भांति निर्वाह होत है. तब श्रीगुसांईजी आप पूछे जो चुकटी कौन - कौन के घर तें ल्यावत हो ? तब रेंडाने कही, जो तुम्हारी ज्ञातिके भटट हैं तथा सेवक लोग हैं और ब्रजबासीनके घरन तें ल्यावत हों. तब श्रीगुसांईजीने कह्यो जो आज पाछें भटट और सेवक तथा जहां हमारी सत्ताकौ द्रव्य होंइ तहां तें चुकटी मति लीजियो. गाममें ब्रजबासी हैं, और हैं, तहां तें लीजियो. तब यह सुनिकै रेंडाने बिनती करी, जो महाराज ! आज पाछें ऐसें ही करूंगो. ता पाछें रेंडा भटट और सेवक भीतरियानके घर तें चुकटी न लेतो. सो रेंडाके उपर श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न रहते.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
बोहोरि एक दिन अर्द्धरात्रिके समै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्नता मैं बैठे हते. सो ता समै रेंडासों पूछ्यो, जो तेरो मन श्रीगोकुल तें लगत है

? तब रेंडाने बिनती करी, जो महाराज ! मरे तो सर्वस्व धन आप हो. और नित्य लीला यहां होत है. सो आपकी कृपा तें मन बोहोत लग्यो है. परन्तु कछू अनुभव नाहीं भयो. सो आप कृपा करोगे तब होइगो. तब आप आज्ञा किये, जो काल्हि तू मङ्गलार्तिके दरसन करि अकेलो 'रमनरेती' जैयो. तहां कछू होइगो. तब यह सुनिकै रेंडा बोहोत प्रसन्न भयो. सो रात्रिकों ऐसी आर्ति मनमें भई, जो नींद न परी. पाछें प्रातःकाल उठि, देहकृत्य करि श्रीयमुनाजीमें स्नान करि, आइ, श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि पाछें श्रीअङ्गकी कछू खवासीकी सेवा कीनी. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो तू मङ्गला पाछें 'गोपकूप'में स्नान करि रमनरेती जैयो. तहां कछू होयगो. पाछें समय भयो तब श्रीनवनीतप्रियजीके मङ्गलाके दरसन करि रमनरेतीकों चल्यो. सो गोपकूपमें न्हाय पञ्चाक्षर मन्त्रकौ जप करन लाग्यो. सो पांच माला पूरन भई और मुरलीकौ शब्द श्रवनमें पर्यो. आर्ति करि व्याकुल भयो. ताही समै श्रीठाकुरजी, श्रीबलदेवजी पधारे. सो दरसन करत ही मूर्छा खांय गिर्यो. सो देहानुसन्धान भूल्यो. तब श्रीठाकुरजी अपने गरें तें फूलकी माला याके कण्ठमें डारि आप तो पधारे. सो दुपहेर ढरि गयो. तब वह डोकरी अपने श्रीठाकुरजीसों पहोंचि महाप्रसाद ढांकिकै श्रीगुसांईजी पास आयकै रेंडाकों सगरे ढूंढ्यो. परि कहूं पायो नाहीं. तब डोकरीने श्रीगुसांईजीसों पूछी, जो महाराज ! मैं आज रेंडाकों सगरे ढूंढ्यो. परि कहूं पायो नाहीं. सो अब तांई महाप्रसाद लियो नाहीं है. तब श्रीगुसांईजी आप कहे, जो रेंडा तो रमनरेतीमें है. तहां ते लिवाय ल्याउ. तब वह डोकरी तत्काल दण्डवत् करिकै रमनरेती गई. सो जांयकै देखें तो रेंडाकों कछू सरीरकी सुधि नाहीं. और सुन्दर कुन्दके पुष्पकी माला याके गरेमें देखी. तब डोकरीने विचार्यो, जो आज रेंडापैं भगवद्कृपा भई है. सो यह माला श्रीठाकुरजी प्रसादी दिये हैं. तब डोकरीने आधी यह माला तोरिकै अपने आंचरमें बांधी. पाछें रेंडाकों जगायो. सो तीन घरी पाछें रेंडा जाग्यो. तब डोकरीने कह्यो, जो अब कहा समाचार है ? तब रेंडाने कही, जो अब तोसों कहा छिपाउं ? श्रीगुसांईजीकी कृपा तें श्रीठाकुरजीने दरसन दिये. परि हों आछी भांति दरसन करि न सक्यो. तब डोकरीने कही, जो रेंडा ! तेरो धन्य भाग्य है. जो श्रीठाकुरजीके दरसन भए. अब चलो श्रीगुसांईजीकी सेवाकौ समय भयो है. तब रेंडा और डोकरी घरमें आय महाप्रसाद लिये. तब रेंडाकों सगरी सुधि आछी भांतिसों भई. तब डोकरीने कही, जो यह माला फूलकी आधी मेरे पास है सो तुम कहो तो मैं राखों. और चाहो तो लेओ. कृपा तो तुम्हारे उपर भई हैं. तुम्हारे पाछें मोकों मिली है. तब रेंडाने कही, जो तुम हू राखो. पाछें उत्थापनकौ समय भयो. तब रेंडाने आय श्रीगुसांईजीको दण्डवत् कर्यो. तब श्रीगुसांईजी पूछे, जो रेंडा कहा समाचार है ? तब रेंडाने सब प्रकार श्रीगुसांईजीके आगें कह्यो, जो मोकों दरसन होत मूर्छा आई. सो मैं गिर्यो. पाछें जाग्यो. तब मैं अपने गरेमें फूलकी माला देखी.

तब श्रीगुसांईजी यह आज्ञा किये, जो भगवद् सेवा करिकै अजहू भगवद् धर्म दृढ़ नहीं भयो. तातें दरसन मात्र ही भयो. और यह माला अपने कण्ठकी दै कै पधारे हैं. तब रेंडाने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! भगवद् धर्म दृढ़ होंई सो प्रकार कृपा करि कहिए. ताही प्रकार मैं करों. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो कहूंगो, तू चिन्ता मति करे. ऐसें आज्ञा करि आप मन्दिर पधारि, श्रीनवनीतप्रियजीकों उत्थापन तें सेन पर्यन्त की सेवासों पहोंचि, अनोसर करवाय पाछें बैठकमें पधारि श्रीसुबोधिनीजीकी कथा कहें. पाछें सब वैष्णव दण्डवत् करि बिदा भए. तब रेंडा अकेलो रह्यो. तब रेंडाने कही, जो अब मोकों कहा आज्ञा है ? सो मैं करों. तब श्रीगुसांईजी कहें, जो तू अपनो ब्याह करि. तब रेंडाने बिनती करी, जो महाराज ! मैं बालपने तें अवधूत दसामें रहत हों और अब मैं पचास बरसकौ भयो. मोकों अपनी लरिकिनी कौन देइगो ? और अब मैं आपके चरन छोरिकै कहां जाउं ? तब श्रीगुसांईजी कहें, जो मेरी आज्ञा है. तू अपने देसमें जांइकै ब्याह करि. तोकों कछू बाधक न होइगी.

भावप्रकाश :
यहां यह सन्देह होंई, जो श्रीगुसांईजी आप रेंडाकों या अवस्थामें ब्याह करिवेकी आज्ञा कैसें किये ? और रेंडाकों तो भगवल्लीलाकौ अनुभव हैं. तातें अब इनकों संसारमें रहनो उचित नाहीं. तहां कहत हैं, जो रेंडाने संसारकौ अनुभव कियो नाहीं है. तातें वैराग्य दृढ़ भयो नाहीं है. सो वैराग्य दृढ़ भए बिनु भगवद् रसकी अवधारना होत नाहीं. सो रेंडा प्रभुनकी लीलाके दरसन करिकै मूर्च्छित होइ गयो. स्वरूपकी हू अवधारना कर सक्यो नाहीं. याही तें श्रीगुसांईजी रेंडाकौ ब्याह करिवेकी आज्ञा किये. और दूसरो अभिप्राय यह है, जों रेंडाकी स्त्री दैवी हैं. सो इन द्वारा स्त्रीकों अङ्गीकार करनो है. तातें रेंडाकौ देसमें जाइके ब्याह करवेकी श्रीगुसांईजी आप आज्ञा किये.

और तोकों आपही तें तेरी ज्ञातिकौ ब्राह्मन कन्या देइगो. तब रेंडाने कही, जो आप आज्ञा देउगे ताही प्रकार मैं करूंगो. जो प्रातःकालकों मङ्गलाके दरसन करिकै देसकों जाउंगो. बीरा दे कै यह आज्ञा किये, जे जब तू अपनी स्त्रीके पास जांय तब यह बीरा खोलिकै आधो तू लीजो, आधो स्त्रीकों दीजो. तब रेंडा बीरा लें दण्डवत् कियो. तब नेत्रनमें पानी भरि आयो. जा अब मोकों श्रीगोकुलकौ दरसन कब होइगो ? तब आप कहे, जो तू चिन्ता मति करे. तू फेरि आवेगो. यह सुनिकै रेंडाकों कछू धीरज भयो. पाछें श्रीगुसांईजी पोढें. तब

रेंडाकों मारे दुःखके रात्रिकों नींद न आई. सगरी रेनि विचार करत बीती. जो अब श्रीगुसांईजीकी आज्ञा तें देसकों तो अवस्य चलनो. पाछें होइगो सो सही. पाछें प्रातःकाल देहकृत्य करि न्हाय मङ्गलाके दरसन किये. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो राजभोग - आर्तिके दरसन करिकै जैयो. पाछें राजभोग आर्ति भई सो दरसन करे. ता पाछें श्रीगुसांईजी अनोसर कराय बैठकमें पधारि भोजन करि जूंठिनकी पातरि रेंडाकों धरी. सो महाप्रसाद रेंडाने लियो. पाछें श्रीगुसांईजी पास आय बिनती करी, जो राज ! ब्याह करि स्त्रीकों नाम सुनायवेकों यहां ल्याउं ? तब आप कहे, जो ब्याह करि पहिले तू ही नाम सुनाइयो. पाछें में नाम सुनाउंगो. तब रेंडा दण्डवत् करि अपने घर वा डोकरी पास आय सब समाचार कहे. जे मैं देस जात हूं. तब वह डोकरी चुप व्है रही. पाछें भगवद् इच्छा जानि रेंडा अपने श्रीठाकुरजीकों सम्पुटमें पधराय वह माला रमनरेती तें पाई हती, तामें तें आधी डोकरीने राखी हती, सा लैकै डोकरीसों बिदा होइकै अपने देसकों चल्यो. सो जब कोस चारि गाम बाकी रह्यो तहां एक 'संजाइ' गाम बीचमें आयो. सो रात्रि होंइ गई. तब रेंडाने विचार कियो, जो गामके बाहिर तलाव बोहोत सुन्दर है. होंइ तो रात्रिकों यहांई सोय रहों. काल्हि अपने गाम जाउंगो. सो उष्णकालके दिन हते. सो वा तलाव पै रेंडा उतर्यो. सो रेंडाकी ज्ञातिकौ एक ब्राह्मन वा गाममें रहत हतो. सो वाके एक बेटी हती. सो एक दिन वा लरिकिनीकों खेलनमें स्यांने काटी. सो वाके माता - पिता बोहोत दुःख करन लागे. गारुड़ीसों झराए. तब वा ब्राह्मनने कही, जो अब लरिकिनी आछी होइ तो काहू निष्किञ्चन गरीब ब्राह्मनकों विवाह करि देउंगो ! तब वा लरिकिनीकी माताने कही, जो मेरे हू मनमें ऐसी है. पाछें वह आछी भई. सो वह ब्राह्मन प्रातःकाल नित्य गाम तें निकरिकै वा तलाव उपर आवे. सो जो कोई नयो मनुष्य तलाव उपर देखे तासों पूछे. जे तुम कौन ज्ञाति हो ? कहां रहत हो ? सो प्रातःकाल रेंडा देहकृत्य करि दन्तधावन करि स्नान करत हतो. तब वा ब्राह्मनने गाममें तें आय रेंडासों पूछ्यो जो तुम कौन ज्ञाति हो ? कहा तुम्हारो नाम है ? कौन गाममें रहत हो ? तब रेंडाने कही, जो यहां सों चारि कौस पै कपडवनज गाम है. तहां मैं रहत हूं. उदम्बर ब्राह्मन फलानेकौ बेटा हूं और रेंडा मेरो नाम है. और श्रीगोकुल ते मैं आयो हूं. अब मैं अपने घरकों जात हों. तब यह सुनिकै ब्राह्मनने प्रसन्न होंइकै कह्यो, जो यह तो मेरी ज्ञातिकौ ब्राह्मन है. तब वा रेंडासों पूछ्यो, जो तुम्हारो ब्याह कहां भयो है ? तब इनने नाहीं कीनी. तब तो ब्राह्मनने बोहोत बिनती कीनी और कह्यो, जो मेरे एक लरिकिनी है, सो मैं तुमकों देत हूं. और ब्याह करि तुम हू इहां रहो. और तुम्हारो मन होइ उहां जैयो. तब रेंडाने कह्यो, जो आछो. श्रीगुसांईजीकी आज्ञा भई ही सोई भई. तब वा ब्राह्मनने रेंडाकों अपने घर लै जांइकै पूछी, जो खानपानकी कैसे हैं ? तब रेंडाने कही, जो तुम्हारे हाथकी न

खाउंगो. एक घर न्यारो देउ. तब वा ब्राह्मन उपरकौ घर खौलिकै आप नीचे रह्यो. तब रेंडा वा ब्राह्मनसों सीधो ले रसोई करि भोग धरि महाप्रसाद लियो. रेंडा कछुक दिन ऊहां रह्यो. सो वह ब्राह्मन रेंडाकौ आचार विचार देखिकै बोहोत प्रसन्न भयो. पाछें वा ब्राह्मनने पण्डित ब्राह्मनकों बुलायकै लग्न सोधिकै अपनी बेटीकौ रेंडासों ब्याह करि दियो. पाछें रेंडा उह ब्राह्मनके संग वाके घर बरस तीनि रह्यो. पाछें वा ब्राह्मन सों रेंडाने कह्यो, जो अब मैं घर जाउंगो. बोहोत दिन भए हैं. तब वा ब्राह्मनने राखिवेकों बोहोत जतन कियो. परि रेंडाने नाहीं करी. तब ब्राह्मनने एक सौ रुपैया और एक गाडा अन्न और कपड़ा अपनी बेटीकों और रेंडाकों दे कै भली भांतिसों बिदा किये. तब रेंडा उनसों बिदा होंइ गाडा ले अपने गाममें आयो. सो रेंडाके माता - पिता तो मरि गए हते. और ज्ञातिकौ ब्राह्मन रेंडाकी जगहमें आयो रह्यो हतो. तब रेंडा गाममें आयकै पूछ्यो, जो मेरो घर कहां है ? तब उन ब्राह्मनने कही, जो यह घर तुम्हारो है. तामें आय रहो. हम कहूं दूसरो घर ठीक करिकै जाय रहेंगे. तब रेंडाने कही, सो कैसे होय ? तुम हमारी ज्ञातिके ब्राह्मन. तुमकों निकासिकै हमें रहनो उचित नाहीं है. सो हम दूसरो घर बनाय लेइंगे. तुम सुखेन रहो. तब उन ब्राह्मनने कही, जो घर बड़ो है. हम तुमकों आधो घर खाली करि देत हैं तामें तुम रहो. हम तुम दोउ जने मिलिकै निर्वाह करेंगे. पाछें रेंडाको उन ब्राह्मननें आधो घर खाली करि दियो. तामें खासा करि रेंडा रह्यो. पाछें श्रीगुसांईजीकी आज्ञा हती तातें स्त्रीकों नाम सुनायकै पानी, साग - पात मंगाय लेते. पाछें आप रसोई करि भोग धरि दोइ पातरि करि थोरो सो गांइकों दे कै पाछें स्त्री - पुरुष दोउ जनें महाप्रसाद लेते. स्त्रीकों ब्रह्मसम्बन्ध नाहीं हतो. तातें वाकें हाथसो महाप्रसाद न लेते. ऐसें करत कछूक दिन बीते. तब श्रीगुसांईजी बीरा दिये हते सों रेंडाकों सुधि आई. तब रेंडाने अपनी स्त्रीसों कह्यो, जो यह घर में वैभव है, द्रव्य है सो सब तेरे बापकौ दियो है. सो मैं यामें ते तोकों कहा देहूं ? परन्तु एक बीरा श्रीगुसांईजी मोकों दिये हैं तामें तें आधो मैं तोकों देत हूं. या बीरा तें तेरो कल्यान होइगो. तब स्त्रीने कह्यो, जो अब तांई तुम क्यों छिपाय राख्यो ? अब मोकों बेगि देहु. तब रेंडा वह बीरा खोले. तब वामें तें एक मोहोर निकसी. तब वाने अपनी स्त्रीसों छिपाई राखी. अपने मनमें विचार्यो, जो स्त्रीकों द्रव्यमें बोहोत लोभ होत है. और यह मोहोर श्रीगुसांईजीकी है. सो उहां पहोंचावनी है. पाछें बीरा खोलिकै स्त्रीकों आधो दियो. आधो आप लियो. ता दिन तें स्त्रीकों भक्तिभाव उपज्यो. और स्त्रीकों गर्भ रह्यो. सो बेटा भयो. पाछें वह लरिका बड़ो भयो. तब रेंडाने वाकौ जनेउ कर्यो.

ताके दूसरे दिन श्रीगोकुलनाथजी श्रीगोकुल तें पधारे, गुजरात सो कपडवनजमें पधारे. तब रेंडाने प्रथमसों सब समाचार श्रीगोकुलनाथजी आगें कहें. तब श्रीगोकुलनाथजी रेंडाके घर पधारे. उह फूलमालाके दरसन करे. नेत्रसों लगाए. पाछें रेंडाने श्रीगोकुलनाथजीसों विनती करी, जो राज ! स्त्रीकों और पुत्रकों ब्रह्मसम्बन्ध करावो. तब श्रीगोकुलनाथजी स्त्री और पुत्रकों ब्रह्मसम्बन्ध कराये. और वह रेंडाकी ज्ञातिकौ ब्राह्मन घरमें रहत हुतो. सो रेंडाके संग तें उनहू के मनमें आई, जो हम श्रीगोकुलनाथजीके सेवक होंइ. तब उन रेंडासों कह्यो, जो तुम हमारी ओर तें श्रीगोकुलनाथजीसों बिनती करो. जो हम हू कों अङ्गीकार करे. तब रेंडाने उन ब्राह्मनसों कही, जो तुम हमारे संग चलो. तब ब्राह्मन दस - पांच मिलिकै रेंडाके संग चले. सो रेंडाने श्रीगोकुलनाथजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! इन ब्राह्मननकों कृपा करिकै नाम दीजे. तब श्रीगोकुलनाथजी उनकों न्हवायकै नाम सुनाये. पाछें श्रीगोकुलनाथजी उनकों न्हवायकै नाम सुनाये. पाछें श्रीगोकुलनाथजी श्रीद्वारिका पधारे. तब रेंडाने अपनी स्त्रीसों कह्यो, जो अब मैं श्रीगोकुल जात हों. तब रेंडाने अपनी स्त्रीसों कह्यो, जो मैं अकेली कैसे रहूंगी ? मैं तिहारे संग चलोंगी. तब रेंडाने स्त्रीसों कह्यो, जो तू अब मेरे पाछें मति परे. एक पुत्र है, सो तेरो वंस चल्यो जायेगो. तू सेवा भली भांतिसों करियो. अब मोसों सेवा नहीं होंई आवत. तातें श्रीगुसांईजीके घर जाइ रहुंगो. तब स्त्रीने कही, जाउ. तब रेंडाने श्रीठाकुरजीकों अपनी स्त्रीके माथे पधरायकै माला बंटीमें करिकै दियो. कह्यो, जो सेवामें राखियो. और सेवा भली भांतिसों करियो. और एक पुत्रकौ वंस चल्यो जायगो. यह कहिकै रेंडा वह श्रीगुसांईजीकी मोहोर ले कै तहां तें चले. सो रात्रि दिन कल न परे. ऐसी आर्ति श्रीगुसांईजीके दरसनकों भई. सो कछूक दिनमें रेंडा श्रीगोकुल आय श्रीगुसांईजीके दरसन किये. सो श्रीगुसांईजी गादी - तकिया पर बिराजे हते. तब रेंडा आयकै श्रीफल आगें धरि दण्डवत् किये. तब श्रीगुसांईजी रेंडाके उपर बोहोत प्रसन्न भए. पूछ्यो, जो रेंडा ते ब्याह भयो ? तब रेंडाने बिनती करी, जो महाराज ! ब्याह भयो. और एक लरिका हू भयो. और यह एक मोहोर आपने बीरामें धरिकै दीनी हती, सो राखो. पाछें कह्यो, जो महाराज ! हम तो जीव हैं. कहूं लोभ करिकै आपकी मोहोर खरच करते तो हमारो सगरो धर्म नष्ट होंई जातो. तातें आपकों मोहोर धरनी उचित नाहीं हती. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो हमकों विश्वास हैं. जो वैष्णव हमारे द्रव्य तें डरपत रहेगो. और मोहोर तो याके लिये धरि दीनी हती, जो मोहोरके मिषसों श्रीगोकुलकी सुधी बारबार आवेगी. तब आर्ति होइगी. तब आर्ति भए तें भगवद्धर्म बढेगो. तब रेंडाने बिनती कीनी, जो महाराज ! हम तो अज्ञानी जीव हैं. आप करत हो सो भलोही करत हो. अब तो आपके सरनि आयो हूं. अब आप हमकों कहूं मति पठावो. अपने चरनके निकट राखो. तब श्रीगुसांईजी कहे, अब तोकों कहूं न पठावेंगे. अब

तुम वृद्ध भये, जो सेवा बने सो करो. प्रसादी रसोईमें महाप्रसाद लेउ ! तब रेंडाने कही, जो महाराज ! प्रथम न्यारी रसोईकी आज्ञा करी हती. अब महाप्रसाद लेवेकी आज्ञा करत हो, ताकौ कारन कहा ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो तब तिहारे सरीरमें सामर्थ्य हतो. तासों न्यारी रसोईकी आज्ञा दिये हते. अब महाप्रसादकी आज्ञा करत हैं.

भाव प्रकाश :
यह कहि श्रीगुसांईजी आप यह जताये, जो सामर्थ्य होंई और हमारो लेइ तो बाधक है. अब तुम असक्त भए तातें अब तुमकों बाधक नाहीं. सुखेन महाप्रसाद लेउ.

तब रेंडा श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मानिकै भंडारमें बीनाचोंनी करि आवे. श्रीगुसांईजीकी सेवा करे. सागघर फूलघरमें घरी - घरी होंई आवें. या भांतिसों निर्वाह करें.

वार्ता प्रसङ्ग ३ :
और एक दिन चाचा हरिवंशजी रात्रिकों श्रीगुसांईजीसों यह पालनाकौ प्रसङ्ग पूछें.

राग : रामकली
प्रेंख पर्यङ्क शयनं ।
चिरविरहतापहरमतिरुचिरमिक्षणं प्रगट प्रेमायनं । ध्रुव.
तनुतरद्विजपङ्क्तिततमतिललितानि हसितानि तव वीक्ष्य गायकीनाम् ।
यदवधि परमेतदाशया समभवज्जीवितं तावकीनाम् ।।१।।
तोकता वपुषि तव राजते दृशि तु मदमानिनीमानहरणम् ।

अग्निमे वयसि किमु भाविकामेऽपि निजगोपिकाभावकरणम् ।।२।।
व्रजयुवतिहृद्यकनकाचलानारोढुमुत्सुकं तव चरणयुगलम् ।
तत्तु मुहुरुन्नमनकाभ्यासमिव नाथ सपदि कुरुते मृदुलमृदुलम् ।।३।।
अधिगोरोचनातिलककमलकोद्ग्रथितविविधमणिमुक्ताफलविरचितम् ।
भूषणं राजते मुग्धतामृतभरस्यंदि वदनेंदुरसितम् ।।४।।
भ्रूतटे मातृरचितांजनबिन्दुरतिशयितशोभया दृग्दोषमपनयन् ।
स्मरधनुषि मधु पिवन्नलिराज इव राजते प्रणयिसुखमुपनयन् ।।५।।
बचनरचनोदारहाससहजस्मितामृतचयैरार्तिभरमपनयन् ।
पालन सदास्मानस्मदीय श्रीविटठले निजदास्यमुपनयन् ।।६।।

यह पालनेकौ भाव श्रीगुसांईजी चाचा हरिवंशजीसों खोलिकै कह्यो. ता समय रेंडा और चाचा हरिवंशजी और श्रीगुसांईजी हते. और कोई नाहीं. सो यह पालनेकौ भाव रेंडा सुनिकै देहदसा भूलि गए. सो तीन दिन तांई रेंडाकों मूर्छा आइ रही. पाछें श्रीगुसांईजी पधारे तब रेंडाकों चरनामृत दियो. तब रेंडाकों चैतन्यता भई. तब श्रीगुसांईजीने रेंडासों पूछी, जो कहा समाचार है ? तब रेंडाने कही, जो महाराज ! अब ऐसें में देह छूटे तो भलो है. फेरि ऐसो समै नाहीं पाउंगो. अब श्रीगुसांईजी कहे, ऐसोई होइगो. तब रेंडाने श्रीगुसांईजीको दण्डवत् करिकै देह छोरि दीनी. तब श्रीगुसांईजी श्रीमुखतें सराहना करें.

सो रेंडा श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ? वार्ता ।।९६।।

९७-स्त्री - पुरुष क्षत्री, जो साड़ी बेचिकै सामग्री लाये

अब श्रीगुसांईजीके सेवक स्त्री - पुरुष, क्षत्री, गुजरातिकै साड़ी बेचिकै सामग्री ल्याये, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें पुरुष तो 'रामबाला' है. और स्त्रीकौ नाम 'स्यामबाला' है. ये दोउ श्रीचन्द्रावलीजीकी अन्तरङ्ग सखी हैं. 'सुभगा' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

ये गुजरातमें एक गाम हैं, तहां दोइ क्षत्रीनके घर पास हुते. तहां जन्म दोउ लिये. सो उन क्षत्रीन आपुसमें कही, जो अपने बेटा - बेटीकौ विवाह करें तो आछौ. पाछें देउ बरस आठ - दसके भए तब दोउनकौ विवाह कियो. ता पाछें केतेक दिनमें दोउनके माता - पितानकी देह छूटी. पाछें केतेक दिनमें श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी पधारे. सो मारगमें ये स्त्री - पुरुषके गाममें डेरा किये. सो तलाव पर डेरा भए. तब गामके सब वैष्णव श्रीगुसांईजीके दरसनकों जाने लागे. तब इन दोउ स्त्री - पुरुषने वैष्णवन तें पूछ्यो, जो आज कहा है ? जो तुम सब इकटठे व्है तलावकी ओर जात हो. तब उन वैष्णवन कहे, जो आज श्रीगुसांईजी पधारे हैं. सो उनको डेरा तलाव पर भए हैं. तातें हम सब उन के दरसन कों जात हैं. तुम्हारे चलनो होंइ तो चलो. ये श्रीगुसांईजी साक्षात् ईश्वर हैं. तब तो दोउ स्त्री - पुरुष कहन लागे, जो हम हूं चलेंगे. ईश्वरके दरसन करेंगे. तातें तुम हमकों अपने सङ्ग ले चलो. पाछें दोउ स्त्री - पुरुष उन वैष्णवनके सङ्ग श्रीगुसांईजीके दरसनको आए. सो दरसन करत ही थकित व्है रहे. सो श्रीगुसांईजी आप इन दोउनकों अलौकिक दरसन दिये. तब तो ये दोउ स्त्री - पुरुष बिनती किये, जो महाराज ! हम आपके सरनि आए हैं. तातें कृपा करि हमकों सरनि लीजिये. आज हमारे बडे भाग्य हैं, जो आपके दरसन पाए. तब श्रीगुसांईजी दोउनकों आज्ञा किये, जो तुम दैवी जीव हो. तातें स्नान करि हमारे पास आउ. हम तुमकों सरनि लेइंगे. तब दोउ स्त्री पुरुष तलावमें स्नान करि अपरस ही में आए. तब श्रीगुसांईजी दोउनकों नाम - निवेदन करवाए. ता पाछें आप कृपा करि दोउनकों आज्ञा किये, जो अब तुम सेवा करो. तुमकों हम भगवत्सेवा पधराय देत हैं. तिनकी तुम भावप्रीति सहित सेवा करियो. सो श्रीगुसांईजी आप कृपा करि दोउनकों श्रीमदनमोहनजीकौ स्वरूप स्वामिनीजी सहित पधराय दिये. पछें आज्ञा किये, जो इनकी नीकी भांतिसों सेवा करियो और आए गए वैष्णवनकी टहल प्रीतिसों करियो. और उनकौ सङ्ग करियो. पाछें श्रीगुसांईजी दोउनकों सेवाकी रीति सिखाए. ता पाछें आप द्वारिकाजी पधारे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वे स्त्री - पुरुष श्रीठाकुरजीकी सेवा नीकी भांतिसों करते. सो वह पुरुष हतो सो तो लकड़ी ल्यायकै नित्य बेचतो. सो वाके पैसा आवते तिनकी सामग्री ल्यावतो. और वामें तें अधेला पैसा नित्य बचाय राखतो. और वाकी रसोईकी सामग्री सिद्ध करती. और वह पुरुष न्हायकै श्रीठाकुरजीकों सेवा - सिंगार करतो. और वह स्त्री राजभोग धरती. पाछें भोग सराय आर्ति करि अनोसर करि जो कोई वैष्णव आवतो ताकों प्रथम महाप्रसादकी पातरि धरिकै पाछें वे दोउ स्त्री - पुरुष महाप्रसाद लेते. पाछें नित्य वह पुरुष लकड़ीनमें तें अधेला पैसा बचाय राखतो. ताकौ रुपैया एक भेलो कियो. सो वा रुपैयाकी एक साड़ी अपनी स्त्रीके पहरिवेके लिये ल्यायो हतो. तब दूसरे दिन इनके घर आठ वैष्णव जुरिकै आए. तब उन वैष्णवनकों श्रीकृष्ण - स्मरन करि बोहोत - बोहोत आदर सन्मान करि बैठारे. तब अपनी स्त्रीसों कह्यो, जो अब कहा प्रकार करिये ? जो वैष्णव आये हैं उनकों महाप्रसाद लिवाइए. और घरमें तो कछू नाहीं है. जो वैष्णवनकौ समाधान करिए. तब स्त्रीने कह्यो, जो यह साड़ी बेचिकै सामग्री ल्याउ. तब वह पुरुष साड़ी बेचिकै सामग्री ल्याए. तब वह स्त्री रसोई करि श्रीठाकुरजीकों भोग धरिकै आप कोठीमें बैठी. और वा पुरुषसों कह्यो, जो हों तो कोठीमें बैठुंगी और तुम भोग सरायकै उन वैष्णवनकों महाप्रसाद लिवाइयो. ता पाछें वा पुरुषनें न्हायकै भोग सरायकै उन वैष्णवनकों श्रीठाकुरजीके दरसन करवाए. पाछें श्रीठाकुरजीकों पोढ़ाय उन वैष्णवनसों कही, जो उठो महाप्रसाद लेउ. तब उन वैष्णवननें कही, जो तुम्हारी स्त्री आयकै हमकों परोसेगी तब हम महाप्रसाद लेइंगे. तब वा पुरुषने कही, जो स्त्रीजन सञ्कोच करति है. तासों नाहीं आवत है. तब उन वैष्णवनने कही जो वैष्णव होइगी तो स्त्रीजन आयकै हमकों महाप्रसादकी पातरि धरेगी. तब हम महाप्रसाद लेइंगे. काहेतें, वैष्णव तो आपुसमें बहनि - भाई हैं.

तब वह पुरुष अपनी स्त्रीके पास गयो. और कह्यो, जो वैष्णव, तो बिना महाप्रसाद नाहीं लेत. तू आवेगी तब लेइंगे. तब स्त्रीने कही, जो भगवान् और भगवदीय तो एक ही स्वरूप हैं. इनमें कछू भेद नाहीं है. जो मैं नग्न हों. सो भगवान् तो देखत है तो भगवदीयनकी कहा लाज है ? मैं आउंगी. तब वह स्त्री कोठीमें सो निकसन लागी. तब इतने ही में श्रीस्वामिनीजी आप साड़ी लेकै पधारे. तब श्रीठाकुरजी आप कहे, जो तुम कहां जाति हो ? तब श्रीस्वामिनीजी कहे, जो अपनी सेवा करत हैं तिनकी लाज जाति है. तातें आपुन लाज न राखेंगे

तो कौन राखेगो ? तब जुगल स्वरूपनें वा कोठीमें ही दरसन दीनो. तब श्रीस्वामिनीजीने तो साड़ी पहराई. और श्रीठाकुरजीनें अपनो पिताम्बर उढ़ायो. और वाही कोठीमें जुगल स्वरूपके दरसन भए. पाछें वह स्त्री कोठीमें तें आइकै सब वैष्णवनकौं श्रीकृष्ण स्मरन करिकै महाप्रसादकी पातरि परोसन लागी. और सबकों बैठारे. तब उन वैष्णवनने महाप्रसाद लियो. पाछें रात्रिकों उहांई रहे. तब सब कार्य तें पहोंचिकै ये स्त्री - पुरुष हू तहां आय बैठे. से सबन मिलिकै भगवद्वार्ता कीर्तन किये. पाछें सब वैष्णव जब सोये तब उन स्त्री - पुरुष मिलिकै सबनके पांव दाबन बैठे. पाछें प्रातःकाल भयो तब वैष्णव उन स्त्री - पुरुष सों बिदा होंइकै श्रीकृष्णस्मरन करिकै चले. सो श्रीगोकुल आये.

भावप्रकाश :

यामें यह जताये, जो वैष्णवनमें अलौकिक बुद्धि राखे तो प्रभु बेगि प्रसन्न होंइ. और वैष्णवकौ धर्म ऐसो कठिन है, सो हू जनाये. जो साड़ी बेचिकै सामग्री ल्याए. परि श्रीठाकुरजी अपने सेवकनकी लाज क्यों खोवें ? तातें ताही कोठीमें आप दरसन दीने. तातें वैष्णवनकों अपने प्रभुन तें सांचौ रहनो. तब श्रीप्रभुजी आप ही कृपा करें. तातें उनने या भांति अपनो धर्म राख्यो.

सो वे स्त्री - पुरुष श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।९७।।

९८-अजब कुंवरिबाई, सिंहाडकी

अब श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी अजब कुंवरि बाई, मेवाड़में सिंहाड गाम है तहां रहती, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :

ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'रूप - आधिनी' है. ये श्रीठाकुरजीके रूपमें आसक्त हैं. तातें श्रीठाकुरजीकौ वियोग सहि सकति नाहीं. ये 'सुभगा'

तें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वह अजबकुंवरि बाई बाल विधवा हती. सो मीरांबाईके पास रहती. सो मीरांबाई अजबकुंवरि बाईके गाम सिंहाडमें रहती. और मीरांबाईके दूसरी सिंहाड हुती. परि अजबकुंवरि बाई और मीरांबाई एक गाम घरमें रहती.

सो एक समै श्रीगुसांईजी सिंहाड पधारे. तब बागमें उतरे. तब मीरांबाई दरसनकों गई. तब अजबकुंवरि हू साथ गई. तब श्रीगुसांईजीकों अजबकुंवरिने साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम देखे. तब मनमें आई, जो हों इनकी सेवकिनी दोउ तो भली है. पाछें भेंट धरिकै दरसन करिकै तुरत ही मीरांबाई तो फिरी. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो यह भेंट तो हम नाहीं राखें. हमारे कामकी नाहीं. तब और वैष्णवने मीरांबाईसों कही, जो ये तो अपने सेवक बिना काहूकी भेंट राखे नाहीं है. ता पाछें भेंट फेरि दीनी. तब अजबकुंवरि बाईने कही, मीरांबाई सों, जो - तुम कहो तो हों इनकी सेवकिनी होंउं. तब मीरांबाईने नाहीं करी. ता पाछें दोउ घरकों गई. तब अजबकुंवरि बाईकों महा विरह - ताप भयो और ज्वर आयो. तब मीरांबाईने पूछ्यो, जो तोकों कहा भयो ? अब ही तो आछी हती. तब अजबकुंवरि बाईने कह्यो, जो हों तो श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी होंउंगी. मैं तो उनकों दरसन करत साक्षात् श्रीकृष्ण देखे. तातें ताप भयो. तब मीरांबाईने कही, जो तेरी इच्छा. पाछें अजबकुंवरि बाई सावधान होइकै श्रीगुसांईजीसों बिनती कराई. जो महाराजधिराज ! अजबकुंवरि बाई कहत हैं, जो मोकों नाम दीजिए. तब श्रीगुसांईजीने कृपा करिकै अजबकुंवरिकों नाम सुनायो. पाछें श्रीगुसांईजीकों बिनती करिकै अपने घर पधराए. पाछें श्रीगुसांइजीकों भली भांति रसोई करवाई. ता पाछें श्रीठाकुरजीकों भोग धरिकै पाछें श्रीगुसांईजीने भोजन किये. ता पाछें वैष्णव सेवक जो साथके हते तिनकों महाप्रसाद दियो. पाछें थारिकौ महाप्रसाद दियो. पाछें थारिकौ महाप्रसाद अजबकुंवरि बाईकों दीनो. सो लेत मात्र सर्व ज्ञान स्फुर्त भयो. ता पाछें श्रीगुसांईजी उत्थापनके समै गादी तकियान पर बिराजकै कथा कही. ता समै आत्मनिवेदनकौ प्रसङ्ग कह्यो. सो अजबकुंवरि बाई सुन्यो. तब अजबकुंवरि बाईने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मोकों कृपा करिकै आत्मनिवेदन करवायो चाहिए. ता पाछें श्रीगुसांईजीने विधि पूर्वक आत्मनिवेदन करवायो. पाछें सर्वमार्गकी रीति सिखाई. ता पाछें श्रीगुसांईजीकों घनो आग्रह

करिकै दिन चारि राखे. भली भांतिसों सेवा करी. भली भांतिसों सामग्री रसोई करावती. ता पाछें श्रीगुसांईजी विजय करिवेकों बिदाय भए सो चले. तब तुरत ही अजबकुंवरि बाईकों विरह उपज्यो. सो अत्यन्त आर्ति भई. प्राणान्त होंन लाग्यो. तब दासीने दोरिकै श्रीगुसांईजीसों पुकारिकै बिनती कीनी, जो महाराज ! अजबकुंवरि बाईके प्रान जात हैं. यह सुनिकै श्रीगुसांईजी पाछें पाउं धारे. तब अजबकुंवरि बाईने श्रीगुसांईजीके चरन स्पर्श करे, तब सावधान भई. तब श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! राजके दरसन बिनु मोतें रह्यो नहीं जात है. मेरे प्रान रहेंगे नाहीं. तब श्रीगुसांईजी अपनी पादुका पधराय दिये. और श्रीमुखसों कहे, जो तोकों जब विरह - ताप होंइ तब इनका दरसन करियो. सो तोकों मेरे दरसन होइंगे. ता पाछें कहे, जो तू जैसी मेरी सेवा करी याही रीतिसों सदा तू इनकी सेवाकीजो. ऐसें सब बात कहिकै सिखाइकै ता पाछें आप विजय कियो. तब अजबकुंवरि बाईने बोहोत भेंट करी. ता पाछें श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे. ता पाछें अजबकुंवरि बाई पादुकाजीकी सेवा करन लागी. सो प्रेम संयुक्त सब काज करे. सेवा भली भांतिसों मार्गकी रीतिसों करे. सो श्रीपादुकाजी सब सानुभावता जनावे, बातें करें. सो जब श्रीगुसांईजीकौ दरसन न होंइ तब अजबकुंवरि बाईकों विरह - ताप होंई. तब श्रीपादुकाजीकौ टेरा खोलिकै देखे, तो श्रीगुसांईजी बैठे हैं. सो पोछी देखत हैं. सो श्रीगुसांईजी सब वार्ता करते. पाछें श्रीगुसांईजीकी कृपा तें अजबकुंवरि बाईकों साक्षात् श्रीगोवर्द्धननाथजी हू दरसन देन लागे. सो श्रीगोवर्द्धननाथजी आप वासों बातें करें, चोपड़ खेलें. हास्यादिक करें. सो ऐसें नित्य दरसन देहि. जा दिन दरसन न होइ ता दिन जल - पान न करे, परि रहे. ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी जब पांव धारे तब दरसन करे. ता पाछें जो कछू नौतन - नौतन सामग्री सिद्ध करिकै राखती सो श्रीनाथजीकों भोग समर्पे.

भावप्रकाश :
यामें यह जतायो, जो गुरुमें अलौकिक बुद्धि दृढ़ होइ तो ठाकुरकौ सानिध्य आपही तें होई. ठाकुर इनके अधीन होंइ रहे.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
सो एक समै श्रीगोवर्द्धननाथजी काहू वैष्णवके घर अटके. सो इहां आइ न सके. सो दूसरे दिन राजभोग - आर्ति पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी पधारे. तब देखे तो अजबकुंवरि बाई घनी व्याकुल हैं. ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी हंसे, खेलें. भोग धर्यो सो आरोगे. ता पाछें जान लागे.

तब अजबकुंवरि बाईने कह्यो, जो हों तो जान न देउंगी. तब श्रीगोवर्द्धननाथजीने कह्यो, जो अब तो गए बिनु काम चले नाहीं. जबलों श्रीगुसांईजी बिराजे हैं. तबलों तो जानो और आवनो ही बनेगो. तदुपरांति समय पाय बोहोत वर्ष लगि तेरे ही पास हों सिंहाडमें यह तेरी कोठरीमें ही बेठोंगो, इहां ही रहूंगो. यह स्थल छोरिकै कहूं न जाउंगो. तब प्रसिद्ध सबनकों दरसन इहांई देउंगो. तब अजबकुंवरि बाईने कह्यो, जो तुम्हारो कैसो भरोंसो ? तुम्हारे भक्त अनेक हैं ? तातें तुम्हारो कछू भरोंसो परत नाहीं. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहें, जो मैं तोसों सत्य कहत हों. सो सत्य यह मेरो बचन है. यामें सन्देह नाहीं. ऐसें कहिकै ता पाछें कह्यो, जो तू अब चिन्ता करे मति. आज पाछें तोकों नित्य दरसन देउंगो. ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी आप पधारे. सो दोई समय इहां जब श्रीगुसांईजी अनोसर करते तब उहां पधारते.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह हैं, जो ठाकुर अपने जनकौ ताप सहि सकत नाहीं. तासों जो कोउ भक्त विरह ताप करि उनकों भजत हैं, तिनके वे आधीन व्है रहत हैं. सदा सर्वदा निकट रहत है. सो यह पुष्टिमार्ग विरह आतुरताकौ है. तातें या मार्गमें श्रीगोवर्द्धननाथजी सदा सानिध्य रहत हैं. सों अजबकुंवरिकौ ताप जानि श्रीगोवर्द्धननाथजी ब्रज छोरिकै मेवाड़ पधारे. सो जबलों अजबकुंवरि बाईकी (आधिदैविक प्रकारसों) स्थिति हैं. तहां तांई श्रीगोवर्द्धननाथजी मेवाड़में बिराजेंगे.

सो वह अजबकुंवरि श्रीगुसांईजीकी ऐसी परम कृपापात्र भगवदीय हती. तातें इनकी वार्ता कहां ताई कहिए. वार्ता ।।९८।।

९९-एक ब्राह्मण पण्डित, जाने जनेऊ तोरि बुहारी बांधीप्रस्त्र'

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक ब्राह्मन पण्डित, गुजरातकौ, जाने जनेऊ तोरि बुहारी बांधी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :

ये तामस भक्त हैं, लीलामें सनका नाम 'आतुरी' है. इनको श्रीठाकुरजीकी सेवामें बोहोत आरति रहति हैं. रात्रि - दिन सेवा बिनु चेन परत नाहीं. और कछु जानत नाहीं. ये 'सुभगा' तें प्रगटी हैं तातें इनके भावरूप हैं.

ये गुजरातमें एक ग्राममें ब्राह्मनके जन्म्यो. सो बालपनेमें इनको एक कर्ममार्गीय पण्डितकौ सङ्ग भयो. सो कर्ममार्गके ग्रन्थ बोहोत पढ्यो. सो कर्मकाण्ड करन लाग्यो. पाछें बरस पच्चीसकौ भयो तब इनको पिता मर्यो. सो घरमें इकलो रहे. ब्याह भयो नाहीं. सो एक समै श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी पधारत हैं. सो मार्गमें यह ब्राह्मनकौ गाम आयो. तहां डेरा किये. सो यह ब्राह्मनकों श्रीगुसांईजीके दरसन भए. तब यह ब्राह्मन जान्यो, जो - ये कोई पण्डित हैं. तातें इनसों शास्त्र - चर्चा करिए तो आछौ. पाछें यह ब्राह्मन श्रीगुसांईजी पास चर्चा करन आयो. तब या ब्राह्मनने श्रीगुसांईजी पास आई नमस्कार करि यह पूछ्यो, जो महाराज ! कर्ममार्ग बड़ो के ज्ञानमार्ग बड़ो ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो जाकों जे रुचे ताके भाये वह मार्ग बड़ो. जो मारग पर विश्वास आवें सोई बड़ो. परि वैसें तो बड़ो भक्तिमार्ग हैं. जामें जीव कृतारथ होंई. और ज्ञानमार्ग कर्ममार्ग तो या कालमें बड़ी कठिनतासों होत हैं. तातें कष्ट साध्य हैं. तब या पण्डित ब्राह्मन कह्यो, जो महाराज ! भक्तिमार्गमें कहा कर्म नाहीं है ? तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो भक्तिमार्गमें कर्म और ज्ञान दोउ हैं. परि वे दोउ भगवद् सम्बन्धी हैं. भक्तिमार्गमें जो कर्म किये जाते हैं वे सब निष्काम भावसों भक्ति संयुक्त होत हैं. सो वे भक्तिके अङ्ग रूप हैं. प्रेमलक्षणा भक्तिकों बढावनहारे हैं. और कर्ममार्गमें स्वर्गादिककी कामना करि कर्म किये जात हैं. तातें उनमें निष्काम भाव रहत नाहीं. और बड़े कष्टसों होत हैं. सो या कालमें काहू तें आछी भांति बनत नाहीं. सोऊ चित्त प्रसन्न रहत नाहीं. तातें कलेसकों देनहारे हैं. तब यह पण्डित ब्राह्मन कह्यो, जो महाराज ! भक्तिके कर्म कौन प्रकार किये जात हैं ? तब श्रीगुसांईजी आप आज्ञा किये, जो ब्राह्मन सुनि ! भक्तिमार्गमें एक कृष्ण ही कौ सरन - आश्रय मुख्य है. सो 'गीताजी'में भगवान् श्रीमुखसों सरनकी महिमा कहि हैं. तातें भक्तिमार्गमें या सरनि करि जीव प्रवृत होत है. तब वह जीव देहसम्बन्धी लौकिक वैदिक सब कर्म - धर्म एक भगवान् ही कों समर्पन करि निष्काम भावसो उनकी सेवा करते हैं. या प्रकार निष्काम भावसों कृष्णार्पन किये कर्म ब्रह्म रूप होंई, भक्तिकों उत्पन्न करत हैं. ताकरि जीव कृतारथ होत है. ऐसो यह भक्तिमार्ग हैं. यह सुनिकै पण्डित ब्राह्मनने श्रीगुसांईजी सों बिनती कीनी, जो महाराज ! आज तांई तो हों कर्ममार्गमें पचि मर्यो ! परि कछु प्राप्ति भई नाहीं. तातें अब कृपा करि मोकों भक्तिमार्गमें अङ्गीकार कीजिए. तब श्रीगुसांईजी वा ब्राह्मनसों कहे, जो तू स्नान करि आउ. हम तोकों नाम देंगे. पाछे तू काल्हि ब्रत करियो. तब तोकों निवेदन करावेंगे. सो वह ब्राह्मन स्नान करि आयो. तब श्रीगुसांईजी आप वाकों नाम सुनायो. पाछें वह ब्राह्मन अपने घर गयो. दूसरे दिन एक ब्रत कियो. ता पाछें स्नान करि अपरसही में श्रीगुसांईजीके पास आयो. तब श्रीगुसांईजी

आप कृपा करि वाकों निवेदन कराये. तब यह ब्राह्मन बिनती कियो, जो महाराज ! अब श्रीठाकुरजी पधराई दीजिए. और सेवकौ प्रकार कृपा करि कहिए. तब श्रीगुसांईजी वा ब्राह्मनके माथे एक लालजीकौ स्वरूप पधराय दिये. पाछें सेवाकी सब रीति सिखाई. ता पाछें वह आज्ञा मांगि श्रीठाकुरजीकों पधराय अपने घर आयो. सो घर सब खासा करि सेवा करन लाग्यो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वह ब्राह्मन चुकटी मांगिके निर्वाह करतो. पाछें स्नान करिकै रसोई करिकै श्रीठाकुरजीकों जगाय मङ्गला तें सेन पर्यन्तकी सेवा करतो. सो ऐसें नित्य श्रीठाकुरजीकी सेवा करतो. सो एक दिन चुकटी मांगिवेकों गयो. सो अवेर भई. सो घर आयकै ताप उपज्यो. सो बेगि - बेगि न्हायकै मन्दिरमें बुहारी करत हतो. सो बुहारीकी जेवरी टूटि गई. सो जनेऊ तौरिकै बुहारी उतावलीसों बांधी. सो जनेऊकी कछु सुधि रही नाहीं. पाछें श्रीठाकुरजीकों जगावन गयो. तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न भए. तब याने बिनती कीनी, जो महाराज ! आप प्रसन्न भए ताकौ कारण कहा ? तब श्रीठाकुरी आपने आज्ञा करी, जो आज तैनें जनेऊ तोरिकै बुहारी बांधी. सो ऐसी आतुरतामें मोकों जगायवेकों आयो. तासों मैं प्रसन्न भयो हों. तब तें ऐसें ही नित्य श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागें. जो चाहिए सो मांगि लेते. सो यह ब्राह्मन ऐसेंई सदा सर्वदा. आतुरता पूर्वक सेवा करतो.

भावप्रकाश :

या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो पुष्टिमार्गकी सेवा विरह - आतुरताकी हैं. विरह - आतुरता बिना अनुभव न होंई. काहेतें ? विरह आतुरता करि लोक वेदके धर्म विस्मृत होत हैं. देहानुसन्धान हू छूटत हैं. तब प्रभुकौ आवेस हृदयमें होत है. तातें सर्व रसकौ अनुभव होत हैं.

सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।९९।।

१००-एक कुणबी पटेल चोखावालो

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक कुनबी पटेल, निष्किञ्चन, गुजरातमें रहतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनको नाम 'सत्या' है. ये पहिले द्वारिका लीलामें 'तन्मध्या' की सखी ही. उन तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप हैं. ये जा प्रकार ब्रजलीलामें अङ्गीकार भई सो बात उपर कहि आए हैं.

ये गुजरातमें कुनबी पटेलके घर जन्म्यो. सो एक समै श्रीगुसांईजी आप द्वारिकाजी पधारे. सो वा गाममें डेरा किये. तब ये कुनबी पटेल बीस बरसकौ हुतो. सो वैष्णवनके सङ्गते सरनि आयो. और यह निष्किञ्चन हुतो. यामे माता - पिता कोऊ नाहीं. घरमें इकलोई रहे. सो एक समै श्रीगुसांईजीके सात सेवक द्रव्यपात्रकौ सङ्ग वा गामतें श्रीगोकुलकों चल्यो. श्रीगुसांईजीके दर्सनार्थ. तब या कुनबी वैष्णवके मनमें आई, जो श्रीगुसांईजीके दरसन किये बोहोत दिन भए. तातें गोकुल जाई श्रीगुसांईजीके दरसन करों तो आछौ. ऐसो विचारिकै यह कुनबी वैष्णव हू वा सङ्गमें श्रीगोकुलकों चल्यो. सो वाके पास थोरेसे चोखा हते. और तो कछु हतो नाहीं. सो वह चोखा सङ्ग लिये. मनमें कहें, जो ये श्रीगुसांईजीकों भेट करोंगो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो श्रीगुसांईजीके सेवक आठसो श्रीगोकुल आए. तामें सात वैष्णव तो द्रव्यपात्र हुते. तिन तो श्रीगुसांईजीकों भेंट धरी. और वह एक निष्किञ्चन वैष्णव हतो. ता पास भेंटकों थोरेसे चोखा हते. सो उन चोखानकों वह वैष्णव छिपाए राखे हते. सो श्रीगुसांईजीने आपु वा वैष्णव तें मांगि लीने. पाछें उन चोखानमें तें थोरेसे श्रीनवनीतप्रियजीकी रसोईमें दीने. और थोरेसे चोखा श्रीगोवर्द्धननाथजीके इहां तरहटीमें पठाय दिये.

भावप्रकाश :

यामें यह जतायो, जो दीनता तें लाई भेंट प्रभु मांगिकै प्रेमसों अङ्गीकार करत हैं.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

और एक समै श्रीगुसांईजी पोथी खोलि कथा कहत हते और वैष्णव बैठे हते. तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें कहे, जो सुनिवेवारो वैष्णव आवे तो बांचों. तब सब वैष्णव आपुसमें देखें, जो कौन रह्यो है ? तब वह वैष्णव चोखावारो आयो. तब आपु कथा कहे. तब तहां एक वैष्णव ढीटसो हतो. सो वाने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! और तो कोऊ वैष्णव आयो नाहीं. एक यह दुर्बल मजूर सो वैष्णव आयो है. तब आप कथा कही. सो कहा कारन ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो जाके मनमें अहङ्कार है द्रव्यादिककौ सो हमारे हृदयकौ हार्द न समुझेगो. यह निरहङ्कार है तातें हमारो वैष्णव है. या प्रकार श्रीगुसांईजी कहे. तब सब वैष्णव लज्जा पाइकै चुप होंइ रहे. या प्रकार वा वैष्णव पर श्रीगुसांईजी कृपा करते.

भावप्रकाश :

यामें यह जतायो, जो अहङ्कार भगवद्धर्ममें बाधक है.

वार्ता प्रसङ्ग ३ :

और एक समै वेई आठ जनें श्रीनाथजीद्वार आए. तहां सात सम्पन्न वैष्णव सबनसों मिलाप उनकौ बोहोत हुतो. सो तो एक आछी ठौर उतरे, जांयकै. और वह गरीब वाकों कौन पूछे ? सो वह वैष्णव भूखो प्यासो उहां घाटपै परि रह्यो. सो वेसोई तो वह दुर्बल, तैसोई सीत, सो धूजन लाग्यो. सो वाकौ ताप श्रीनाथजीसों सह्यो न गयो. सो श्रीनाथजी अर्द्धरात्रिके समय महाप्रसाद और जल और आपके ओढिवेकी सुफेदी लेकै आए. सो श्रीगोवर्द्धननाथजी आप उहां वैष्णवके पास पधारे. सो वाकों महाप्रसाद लिवाइ, जल पिवाइ वह सुफेदी वाकों उढायकै आप तो अपने मन्दिरमें पधारे. सो उह वैष्णव तो कछू जाने नाहीं. ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी यह सब समाचार श्रीगुसांईजीसों कहे, जो ऐसी भई है. जो वह दुर्बल वैष्णव, सो मेरो स्नेह वाके हृदयमें बोहोत है. सो वापैं आयो न गयो. सो ये सातों वैष्णव वाकों उहां घाटे ही पै अकेलो छोरि आए हैं. सो वह भूखो उहांई परि रह्यो है. सो तब रात्रिकों मैं या भांतिसों वाकौ महाप्रसाद जल और ओढिवेकौ अपनी सुफेदी दे आयो हूं. सो इनकों तुम समुझाय दीजो. जो वाकों ऐसें न छोर्यो करें. और अब तुम वाकों बुलाय

लेऊ. ऐसें सुनिकै श्रीगुसांईजी आप पधारे. सो सातों वैष्णवसों खीझन लागे. जो साथमें रहिकै गरीबकी खबरि नाहीं राखत ? तब वे सातों जने वाकों अपने साथ जांइके लै आए. ता दिन तें ए सातों वैष्णव ताकी खबरि राखन लागे. वाकों अकेलो न छोरे. सो वा वैष्णवके उपर श्रीगोवर्द्धननाथजी ऐसी कृपा करते.

भावप्रकाश :
यामें यह जताए, जो वैष्णवकों जीव मात्रपैं दया रखनी.

सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसा कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें उनकी वार्ताकौ पार नाहीं सो कहां तांई कहिए ? वार्ता ।।१००।।

१०१-देवाभाई कुणबी, गुजरातके

अब श्रीगुसांईजीके सेवक देवाभाई कुनबी, गुजरातके, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं.

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'रतिशूरी' है. ये पहिले द्वारिका लीलामें 'तन्मध्या'की सखी ही. तन्मध्या तें प्रगटी हैं. सो तन्मध्या सत्यभामाकी सखी हैं. तिनके ये भावरूप हैं. सो इनकी जा प्रकार ब्रजलीलामें प्राप्ति भई, सो उपर कहि आए हैं.

ये गुजरातमें एक कुनबीके जन्मे. सो इनकौ पिता खेती करतो. पाछें ये हू बरस बारहके भये. तब तें खेती करन लागे. ता पाछें इनकौ ब्याह भयो. चारि बेटा हू भए.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो एक समै श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे. सो मारगमें देवाभाईके गाममें डेरा किये. सो देवाभाई वैष्णवके सङ्ग श्रीगुसांईजीके दरसनकों आए. तब श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! कृपा करिकै सरनि लीजिए. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो तुम स्नान करि आओ. तब देवाभाई और देवाभाईकी स्त्री दोऊ न्हाय आये. तब श्रीगुसांईजीने कृपा करिकै वे दोऊनकों नाम - निवेदन करवायो. और देवाभाईके घरके और दस बीस हते तिनकों कृपा करिकै नाम सुनायो. तब देवाभाईने बिनती कीनी, जो महाराज ! कृपा करिकै श्रीठाकुरजी पधराय दीजिए. और सेवाकी रीति भांति कृपा करि समझाइए. तब श्रीगुसांईजी कृपा करिकै सेवा पधराइ दिये. और सेवाकी रीति भांति सब सिखाई. पाछें श्रीगुसांईजी ब्रह्मसम्बन्धकौ तात्पर्य देवाभाईकों समजाइ कहे. तब देवाभाई तैसें ही सेवा करन लागे.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

और उनके बेटा हते सो खेती करते. और देवाभाई तो भगवद् सेवा करते. सो देवाभाई नित्य दोइ वैष्णवकों महाप्रसाद लिवायकै पाछें आप महाप्रसाद लेते. और जितनो द्रव्य कमावते वह सब श्रीगुसांईजीकों पधराय भेंट करि देते. और गृहस्थाईमें खरच प्रमानसों करते. और सदा सुलभ स्वभावसों ही रहते. और ब्रह्मसम्बन्ध करें पाछें जो द्रव्य कमावते वह सब श्रीगुसांईजीकौ जानते. और ठौर बोहोत खरचते नाहीं. या द्रव्यसों बोहोत डरपते. सो ऐसें श्रीठाकुरजीकी सेवा करते. सो श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावते. ब्रजलीलाकौ अनुभव करावते. सो वे देवाभाई उपर श्रीगुसांईजी सदैव प्रसन्न रहते.

भावप्रकाश :

या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णव निवेदनकौ सदा सर्वदा स्मरन राखे. अपने द्रव्यादिककौ और ठौर खर्च करे नाहीं. काहेतें ? जो ये प्रभुनकौ द्रव्य है. तातें अन्य विनियोग होन न दे. या प्रकार अनन्य व्है सेवा करे तो ठाकुर निश्चय अनुभव जतावे.

सो वे देवाभाई श्रीगुसांईजीके ऐसें परम कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१०१।।

१०२-एक वैष्णव बनियाकी बेटी, रामानन्दीसे ब्याही

अब श्रीगुसांईजीके सेवक एक वैष्णव बनिया, गुजरातमें रहतो, ताकी बेटी, जाकों रामानन्दीसों ब्याह भयो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये बनियाकी बेटी तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'कृष्णानुचरी' है. सो ये पहिले द्वारिका लीलामें 'तन्मध्या'की सखी ही. उन तें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं. ये जा प्रकार ब्रज - लीलामें प्राप्त भई, सो आगें कहि आए हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
एक बनिया वैष्णव हतो. सो गुजरातमें रहत हतो. श्रीगुसांईजीकौ परक कृपापात्र भगवदीय हतो. सो वाके घर बेटी जन्मी. सो एक समै श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी पधारे है. सो मारगमें या वैष्णवके गाममें डेरा किये. तब यह वैष्णव अपनी बेटीकौ नाम सुनायवे ल्यायो. ता समै यह बेटी बरस डेढकी हती. सो श्रीगुसांईजी आप वाकों प्रसन्नता पूर्वक नाम सुनायो. पाछें आज्ञा कीनी, जो या बेटीकों सर्वात्मभाव सिद्ध होइगो. पाछें यह बेटी बड़ी भई तब श्रीभागवत सुनन लागी. पाछें वा वैष्णवने एक जातिके लरिकासों याकौ ब्याह कियो. सो वह रामानन्दी हतो. सो वह श्रीरघुनाथजीके स्वरूपमें आसक्त हुतो. और या बहूकौ मन श्रीकृष्णकी लीलामें आसक्त भयो हुतो. रात्रि दिन श्रीकृष्णकी लीलाकौ चिन्तन कर्यो करे.

सो केतेक दिन पाछें वह रामानन्दी वैष्णव अपनी बहूकों बुलावन आयो. तब वाके माता - पितानें अपनी बेटी बिदा करि दीनी. तब वे स्त्री पुरुष दोऊ चले. सो मञ्जिलपै जांइ उतरे. तब वा लरिकिनीनें रात्रिकों विचार्यो, जो याकौ भगवद्भाव कैसो है सो मैं याकों पूछि

देखों. तब वा लरिकिनीने अपने पतिसों पूछ्यो, जो तुम्हारे श्रीरघुनाथजी कहा करत हैं ? तब वाके पुरुषने कही, जो हमारे श्रीरघुनाथजी तो राजधानी करत हैं. सो उनके पास श्रीजानकीजी बिराजत हैं. सो दोऊ जनें राज करत हैं, लीला करत हैं. तब पुरुष अपनी स्त्रीसों पूछ्यो, जो तुम्हारे श्रीकृष्णचन्द्रजी कहा करत हैं ? तब स्त्रीने अपने पुरुषसों कही, जो हमारो श्रीकृष्णचन्द्रजी तो वेनुनाद करिकै सब ब्रजसुन्दरीनकों बुलाईकै रास रमन उनसों करत हैं. उनके सङ्ग मिलिकै. सो उहां विमानपै चढ़ि - चढ़ि कै सब देवता देखनकों आए हैं. सो ताकी उहां मण्डप रचना भई है. और गन्धर्व गान करत हैं. और ब्रजभक्तन अनेक भांतिसों गान करत हैं. सो या भांतिसों हमारे श्रीठाकुरजी सदैव लीला करत हैं. सो नित्य प्रति अहर्निश यही बात करत उन दोउ जनें स्त्री - पुरुषकों प्रातःकाल होइ जांइ. तब ये बात करत - करत हास्य करत में एक दिन पुरुषने कह्यो, जो तुम्हारे श्रीठाकुरजी तो महाव्यभिचारी हैं. सौ सदैव स्त्रीनकों साथ ले रमन करत हैं. तब स्त्रीने अपने पुरुषसों कह्यो, जो तुम्हारे श्रीरघुनाथजी तो घरमें निर्बल हैं. सो एक श्रीजानकीजीकों राखि सके नाहीं. या प्रकार दोनों झगरन लागे. सो दोऊनकों आर्ति भई. तब श्रीठाकुरजी ताही समै परम दयाल भक्तकी आर्ति सहि सके नाहीं. तातें आप मध्यमें प्रगट होंई झगरो चुकायो. पाछें कही, जो मैं प्रसन्न भयो हूं, तातें तुम कछू मांगो. तब इन दोऊ जनेंन कही, जो महाराजाधिराज ! हम तो यही मांगत हैं, जो तुम हम उपर प्रसन्न भए हो तो हमारो निर्वाह सदैव याही बात करत होंई. जातें आपके दरसन नित्य होई. तब श्रीठाकुरजी तो इनकौ यह वचन सुनिकै खरेई प्रसन्न भए. तब इन दोऊ जनेंनकौ जन्म यही बात करत गयो. परि इनकों कछू संसारकी स्फूर्ति न भई. संसारकों जान्यो नाहीं, जो यह कहा है ?

भावप्रकाश :

या वार्तामें यह सन्देह है, जो स्त्री पुरुष दोऊ ठाकुरकी निन्दा किये. दोऊ स्वरूपनमें भेद - बुद्धि किये. तोऊ ठाकुरजी आप प्रगट व्है दरसन दिये, ताकौ कारन कहा ? तहां कहत हैं, जो भक्तिमार्गमें कोऊ कैसे हू प्रकारसों अनन्य व्है रहत हैं तिन पर ठाकुर या भांति कृपा करत हैं. काहेतें, जो अनन्यता करि भक्तकों तन्मयता होत हैं. सो अनन्यता ऐसो पदार्थ है. और भक्तिमार्गमें लीला - भेदसों स्वरूप - भेद हैं. तातें भक्त हैं सो जा लीलाकौ अधिकारी होइ ता लीलाके स्वरूपमें मगन व्है, तब अनन्य होंई, तातें ज्ञानमार्ग तें भक्तिमार्ग विलक्षन हैं.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

और उनके घर श्रीठाकुरजीकौ सिंगार जब स्त्री करे तब तो मोर मुकुट काछनी, धोती, उपरेना, वागा, पाग, फेंटा, कुलही, टिपारो, मल्लकाछ, पिछोरा या प्रकार भांति - भांतिके सिंगार करे. तब तांई इनकों साक्षात् श्रीठाकुरजी श्रीकन्हैयालालजीके प्रतिबिम्बके दरसन होंई. और जब उनकौ पुरुष श्रीठाकुरजीकी सेवा - सिंगार करे तब इनकों श्रीरघुनाथजीकौ साक्षात् दरसन होंई. सो याही भांतिसों उन दोऊ जनेंनकौ सदैव अनुभव होंई. परि वे जो कार्य करे सो स्नेह संयुक्त करे. याही प्रकार उनकै जन्म सम्पूरन बीते. उन जान्यो नाहीं, जो या संसारमें और कछू है. तातें उन दोऊ जनेंनकों श्रीठाकुरजी ऐसो अनुग्रह किये. तातें वे दोऊ ऐसें भगवदीय कृपापात्र हते. दोऊनकों सर्वात्म भाव सिद्ध भयो हतो.

भावप्रकाश :

या वार्तामें यह सन्देह है, जे स्त्री तो पुष्टिमार्गीय हती सो उन मर्यादा स्वरूपकौ सिंगार क्यों कियो ? तहां कहत हैं, जो स्त्रीमें स्नेह प्रकार करि सर्वात्मभाव सिद्ध भयो है. तातें उनके भावतें वा स्वरूपमें पुष्टिकौ आविर्भाव होत है. रसात्मक प्रकार तें ठाकुर अनुभव जनावत हैं. सो ऐसो सर्वात्म भाव सिद्ध होंइ तब पुष्टि मर्यादा बुद्धि रहत नाहीं. एक रसरूप भाव प्रगट होत है. सर्वत्र भावात्माकौ ही अनुभव होत हैं. सो यह भक्तिमार्ग ऐसो विलक्षन हैं. सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु 'चतुःश्लोकी'में कहत हैं. सो श्लोक

यदि श्रीगोकुलाधीशो धृतः सर्वात्मना हृदि ।
ततः किमपरं ब्रूहि लौकिकैर्वैदिकैरपि ।

तातें जाने अपने हृदयमें सर्वात्म भाव करि श्रीगोकुलाधीशकों धारन किये. ताकों लौकिक वैदिक तें कहा ? सो यह भाव सर्वोत्तम जानननो.

सो वह वैष्णवकी लरिकिनी श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए. वार्ता

१०३-दो भाई सांचोरा ब्राह्मण, जिननें वैष्णवकौ समाधान कियो

अब श्रीगुसांईजीके सेवक दोऊ भाई सांचोरा ब्राह्मन, गुजरातमें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें बड़े भाईकौ नाम 'वैष्णवी' है. छोटे भाईकौ नाम 'वल्लभा' है. सो दोऊ श्रीयशोदाजीकी अन्तरङ्ग सखी हैं. नन्दालयकी टहलमें सदैव तत्पर रहत हैं. ये 'कुञ्जरी' तें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे हे. तब उन दोऊ भाई सांचोरा ब्राह्मननें नाम - निवदन पायो हतो. सो सांचोरा ब्राह्मन परम भगवदीय भए. सो उनकों श्रीप्रभुजी सानुभाव हते. और वैष्णवमें बोहोत स्नेह ममत्व हतो.

सो एक समै गुजरातके वैष्णव एकत्र होंइकै श्रीगुसांईजीके दरसनकों श्रीगोकुलकों चले. सो मारगमें दोऊ भाई सांचोरा रहत हुते, ता गाममें आए. सो वैष्णव जानिकै रात्रिको उहां बसे. तब उन दोऊ भाईनकौ वैष्णव पर परम स्नेह हते, सो मिले, भेटें. श्रीकृष्ण - स्मरन किये. पाछें गरमें देखे तो घरमें कछू हतो नाहीं. तब अपने मनमें विचार करन लागे, जो अब कहा प्रकार कीजिये ? और वैष्णव तो अपने घर कृपा करिकै पधारे हैं, सो तो अपनो बड़ो भाग्य है. परि अपने घरमें कछू सामग्री नाहीं है. वैष्णव अपनी गांठिकौ महाप्रसाद लेइंगे तो अपनी मालाकौ धर्म नाहीं है. और सगाई - सम्बन्धताकौ कछू रहेगो नाहीं. तब बड़ो भाई अपने मनमें विचारि करि छोटे भाईसों कह्यो, जो अपने पाछें अपने बनियाकी हाट है. सो बनिया तो काहू गाम (कों) गयो है. सो जांइकै तारौ तोरिकै जो सामग्री चाहिए

सो ले आइये. पाछें वह आवेगो तब हम दाम दे देइंगे. तब छोटे भाईने बड़े भाईसों कह्यो, जो भली बात है. पाछें जंइकै तारौ तोर्यो. सो किंवाड़ खोलिकै जितनो सीधो सामग्री चाहिए तितनो लीनो. पाछें गांठि बांधिकै छोटे भाईने बड़ो भाईकों दीनी और कह्यो, जो तुम चलो, हों किवाड़ मारिकै आवत हूं. तब बड़ो भाई अपने घर आयो.

भावप्रकाश :

यहां यह सन्देह होंई, जो वैष्णवके समाधानके तांई ऐसौ लोक विरुद्ध कार्य क्यों किये ? तहां कहत हैं, जो भगवदीय वैष्णवकौ स्वरूप महा अलौकिक हैं. साक्षात् भगवान्कौ ही स्वरूप हैं. तातें घर आए भगवदीयनकौ भूखे कैसे रहन दे ? यह वैष्णवकौ धर्म नाहीं. तातें उन दोऊनने भगवद्धर्म आगें लोक वेदकों तुच्छ करि जाने. यह भाव जाननो.

इतनेमें कोतवालकौ मनुष्य आयो. तब छोटे भाईकों कोतवालके मनुष्यने पकर्यो. तब चोंतरापै ले गए. तब कोतवालसों सब समाचार कहें. ता समै गामकौ राजा तहां बैठ्यो हतो. तब उह ब्राह्मनकौ परोसी चोंतरा उपर लिखत हतो. सो वह महा कुटिल हतो. सो वाके और इन दोऊ भाईनकों परस्पर द्वेषभाव हतो. सो वानें याकों देखिकै कह्यो, जो साहिबजू ! ये बड़े चोर हैं. जो सब गाममें चोरी होत है सो सब येही करत हैं. जो इनकी तलासमें होत हैं. और इनने मनुष्य बहोत मारे हैं. सो ऐसी - ऐसी बोहोत ही बातें कही. तब राजाने हुकम दियो, जो याकों खरच करि डारो. तब मनुष्यनने वाकों ठौर मार्यो. ता पाछें वाकौ सीस गामके द्वारपैं बांध्यो. और धड़ एक वृक्षसों बांध्यो. ऐसें छोटे भाईकौ कियो. काहेतें, जो कोऊ आज पाछें ऐसो काम करे नाहीं. तब ये बात बड़े भाईने जानी. परि कछू बोल्यो नाहीं. मनमें कहे, जो अपने मनमें कलेस करूंगो तो वैष्णव भूखे रहि जांइगे. और अब तो भयो सो तो भयो. 'निजेच्छा'. ऐसें मनमें विचारिकै आपतो न्यारो बैठि रहिकै पाछें स्त्रीन पास सब सामग्री सिद्ध करायकै श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो. पाछें भोग सरायकै सब वैष्णवको महाप्रसाद लिवायो. पाछें सब वैष्णव कीर्तन किये. और श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीके सेवकनकी वार्ता तथा श्रीगुसांईजीके सेवकनकी वार्ता और ग्रन्थनकी टीका सब वैष्णव मिलिकै आपुसमें चर्चा करन लागे. तब बड़े भाई सों वैष्णवन पूछ्यो, जो तुम्हारे छोटे भाई काल्हि तो आए हे ता पाछें फेरि देखे नाहीं. सो कहां है ? तब बड़े भाईने उन वैष्णवनसों कह्यो, जो कछू काम गयो होइगो ?

पाछें दूसरे दिन बड़ी सवारे ही उठिकै सब वैष्णव मिलिकै बिदा होंइकै चले. तब बड़ो भाई थोरीसी दूरिकों पहोंचावनकों गयो. तब छोटे भाईकौ धड़ बंध्यो ताकी नेक दूरि तें बिदा किये. तब वह धड़ हू हाथ जोरत है, और कण्ठसों लगावत है.

भावप्रकाश :
यहां यह सन्देह होई, जो धड़ हाथ कैसें जोरे ? तहां कहत हैं, जो जैसें रनमें सूरवीर लरतमें मरत हैं. तब वा समै सूरवीरताकौ आवेस रहत हैं. तासों वाकौ धड़ मरे हू तीन दिन लों, सात दिन लों, लरत हैं. तैसेंई भगवद् आवेससों या धड़ने वैष्णवनकों श्रीकृष्ण - स्मरन कियो, ऐसें जाननो.

तब दरवाजेकी ओर देखे तो सीस बंध्यो है. तब वैष्णवने कह्यो, जो यह सिर धड़ कौनकौ है ? पाछें उन वैष्णवनने पहचान्यो. तब उन वैष्णवनने बड़े भाई सांचोरा ब्राह्मनसों पूछ्यो, जो यह कहा कारन है ? तब बड़े भाईकौ हृदय भरि आयो. और बोहोत ही रोवन लाग्यो. ता पाछें सब वैष्णवनको दोऊ हाथ जोरिकै विधि पूर्वक सब समाचार कहे. पाछें सब वैष्णव उहां ते धड़ छोरि ल्याए. और सीस दरवाजे तें छोरि ल्याये. सो सीस धड़के उपर धर्यो. ता पाछें श्रीआचार्यजी महाप्रभु, श्रीगुसांईजीकौ स्मरन करिकै नाम लें, चरनोदक - महाप्रसाद कण्ठमें मेल्यो, और मुखमें मेल्यो. ता पाछें महाप्रसादी उपरेना हतो सो कण्ठमें बांध्यौ. तब वह सीस धड़ मिलि गयो.

भावप्रकाश :
यहां यह सन्देह होई ऐसें कैसें होंई ? कट्यो भयो सिर कैसें जुरे ? तहां कहत हैं, जो भगवदीय वैष्णवनके हृदयमें प्रभु आप साक्षात् बिराजत हैं. तातें उनमें अलौकिक सामर्थ्य हैं. ये चाहे जो करि सकत हैं. जैसें वेद व्यासजीने महाभारतके समै मरे भए योद्धानकों जिवाए हे. सो अपनी अलौकिक सामर्थ्यसों. नांतरु ये कैसे सम्भवे ? ताही प्रकार यहां हू जाननो.

पाछें वैष्णव उठिकै ठाढ़े भए. तब सब वैष्णवनके उह पांवन पर्यो. सो यह बात - समाचार सब गामके राजाने सुने. सो दरवानने दोरि जांइकै राजासों कह्यो. तब राजा दोरिकै देखन आयो. तब वह राजा देखे तो सब सांची बात है. सब ज्यों को त्यों सरीर सिद्ध भयो है.

रञ्चक हू कसर नाहीं परी. ऐसो मिलि गयो हतो. तब वह राजा वैष्णवनके पांवन पर्यो. और वा राजाने दोऊ हाथ जोरिकै उन वैष्णवनसों कह्यो, जो तुम बड़े भगवदीय महापुरुष हो. तातें मेरो अपराध क्षमा करो. ऐसी बोहोत बिनती राजाने कीनी. और कह्यो, जो याकौ अपराध मैं भुगतूंगो. अपनो कियो पावेंगे. ता पाछें राजा वा परोसीकों मारन लाग्यो. तब वैष्णवनने वा परोसीकों मारन न दीनो.

भावप्रकाश :
सो यातें, जो यह वैष्णवकौ धर्म नाहीं है. वैष्णवकों जीव मात्र पर दया राखनी. काहूकों बूरो होन न दे. यह जतायो.

ता पाछें वा परोसीकों गाम तें बाहिर काढ़ि दीनो, और वा परोसीकौ घर लूटि लीनो. पाछें राजाने वैष्णवनकों राखिवेकों बोहोत ही आग्रह कीनो. परि वे रहे नाहीं. तब सब वैष्णवनकों राजाने बिदा किये. सो वे सब श्रीगोकुलकों गए. ता पाछें उन वैष्णवन सब समाचार विस्तारपूर्वक श्रीगुसांईजीसों कहे. तब श्रीगुसांईजी सब वैष्णवनके बचन सुनिकै बोहोत प्रसन्न भए. सो उन दोऊ भाईनके उपर श्रीगुसांईजी सदा प्रसन्न रहते.

भावप्रकाश :
या वार्तामें यह जतायो, जे घर आए वैष्णवनकी सेवा प्रीति पूर्वक करनी. सब कष्टनकों सहन करनो. भगवद्धर्म आगें लौकिक वैदिक तुच्छ करि जानने.

सो वे दोऊ भाई श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१०३।।

१०४-एक राजा, जो भाई सांचोरा ब्राह्मणके सङ्ग तें वैष्णव भयो

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक राजा गुजरातकौ, जो दोई भाई सांचोरा ब्राह्मनके सङ्ग तें वैष्णव भयो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'गौरोचनी' है. सो गौरोचनी 'वल्लभा'की अन्तरङ्ग सखी हैं. ये 'कुञ्जरी' तें प्रगटी हैं, तातें इनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वे वैष्णव तो श्रीगोकुल गए. पाछें वा गामकौ राजा इन दोऊ भाई सांचोरा ब्राह्मननके पास आयो. और बोहोत ही घिघियाइकै बिनती कियो, जो तुम मेरो अपराध क्षमा करो. हों बिनु जाने तुम्हारो अपराध कियो. अब तुम कृपा करि मोकों अपनो सेवक करो. जो तुम महापुरुष हो. सो मोकों सरनि लेहु. या प्रकार राजाकी दीनता देखि बड़े भाईने कह्यो, जो राजा ! हम तो काहूंकों सेवक करत नाहीं. हमारे धनी श्रीगुसांईजी श्रीविटठलनाथजी श्रीगोकुलमें बिराजत हैं. उनकी तुम सरनि जाऊ. वे तुमकों सेवक करेंगे. वे ईश्वर हैं. सर्व करन समर्थ हैं. ये जो कछू भयो है, सो सब उनकी कृपा जानियो. तातें तुमकों सेवक होनों होंई तो श्रीगोकुल जांई उनकी सरनि होऊ. तब राजा बिनती कियो, जो तुम दोऊ भाई साथ चलो तो हों श्रीगोकुल चलों. काहेतें ? जो श्रीगुसांईजी तो तुम्हारी कृपातें मोकों सरनि लेई तो लेई. नांतरु मेरे जैसें दुष्ट कर्म करनहारकों श्रीगुसांईजी कहा जाने ? या प्रकार राजाकौ शुद्ध भाव जानि दोऊ भाई राजाके साथ श्रीगोकुलकों चले. सो राजा अपनी रानी कुटुम्ब सहित दोऊ भाई सांचोरा ब्राह्मनकों सङ्ग लै श्रीगोकुल आयो. तहां श्रीगुसांईजीके दरसन किये. तब दोऊ भाई सांचोरा ब्राह्मन श्रीगुसांईजीसों बिनती किये, जो महाराज ! ये राजा आपकी सरनि आयवेकी अभिलाषा करत हैं. तातें कृपा करि आप इनकों सरनि लीजिए. तब श्रीगुसांईजी दोऊ भाईनकी ओर प्रसन्नता पूर्वक देखि आज्ञा किये, जो इनकों सरनि लेनो उचित तो नाहीं, काहेतें, जो इन वैष्णवकौ अपराध कियो है. परि तुम बिनती करत हो तातें इनकों सरनि लेइंगे. पाछें श्रीगुसांईजी कृपा करि राजाकों सब कुटुम्ब सहित नाम दै सरनि लियो. दूसरे दिन ब्रत कराय समर्पन करायो. सो राजा श्रीगुसांईजीकौ सेवक भयो. तब श्रीगुसांईजी राजाकों आज्ञा किये, जो आज पाछें वैष्णवकौ अपराध मति करियो और इन दोऊ भाई सांचोरा ब्राह्मनकों पूछिकै सब काम करियो. पाछें राजाने श्रीगुसांईजीकों बोहोत भेट कीनी. ता पाछें राजाने श्रीनवनीतप्रियजी आदि सातों स्वरूपनके दरसन किये. पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीनाथजीद्वार पधारे. तब वह राजा हू श्रीगुसांईजीके सङ्ग श्रीनाथजीद्वार श्रीनाथजीके दरसनकों गयो. तहां श्रीगुसांईजी आप

स्नान करिकै श्रीगिरिराज पर्वत उपर मन्दिरमें पधारे. तब राजाने हू पर्वत उपर चढ़िकै श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. सो वा राजाने श्रीगोवर्द्धननाथजीकों बोहोत भेट कीनी. ता पाछें कितनेक दिन तांई वा राजाने श्रीनाथजीके तथा श्रीगुसांईजीके दरसन किये. पाछें श्रीगुसांईजीसों आज्ञा मांगि दोऊ भाई सांचोरा ब्राह्मननकों सङ्ग ले अपने देसकों आयो. पाछें वा राजाने दोऊ भाई सांचोरा ब्राह्मननकों बोहोत भांति समाधान कियो. और कह्यो, जो तुम्हारी कृपातें हों वैष्णव भयो हूं. तातें हौं तुम्हारो रिनिया हूं. तब वा दिन तें राजा उन दोऊ भाईनकी बोहोत कानि राखतो. मिलिकै चलतो. सो उन दोऊ भाईनके घर राजा एक बार दोय बार नित्य आवतो. उनहीसों पूछिकै आचरन करतो. सो वे कहते तैसेंई राजा करतो. सो ऐसें करत उन दोऊ भाई वैष्णवनके सङ्ग तें राजा भलो वैष्णव भयो.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो तादृशी वैष्णवकी सङ्गति करनी. सो वा राजाकी बुद्धि सत्सङ्ग करिकै फिरी. तासों सत्सङ्ग ऐसो पदार्थ या संसारमें हैं.

सो वह राजा श्रीगुसांईजीकौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. र्ता ।।१०४।।

१०५-स्त्री - पुरुष क्षत्री, जो हीरानकी धरती पहचानते

अब श्रीगुसांईजीके सेवक स्त्री - पुरुष क्षत्री, प्रयागके, हीरानकी धरती पहचानते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं.

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें पुरुष ‘छाया’ है, और स्त्रीकौ नाम ‘माया’. सो ‘छाया’ ‘माया’ दोऊ श्रीयशोदाजीकी सखी हैं. नन्दालयमें श्रीठाकुरजीके सङ्ग रहति हैं. जैसें मनुष्यकी छाया रहति हैं, ता भांति. ये दोऊ ‘कुञ्जरी’ तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

सो ये दोऊ प्रयागमें क्षत्रीनके जन्मे. पाछें बरस आठ - दसके भए. तब माता - पिता ने दोऊनकौ ब्याह कियो. सो एक समै श्रीगुसांईजी आप प्रयाग बिराजत हुते. तब मकरसङक्रान्तिकौ पर्व आयो. सो चारों सम्प्रदायके आचार्य, सन्त - महन्त आदि त्रिवेनी स्नानकों प्रयाग आए. ता समै श्रीगुसांईजी हू त्रिवेनी न्हानकों पधारे. तब चारों सम्प्रदायके आचार्यनने श्रीगुसांईजीकों नमस्कार किये. ता पाछें सबनने मिलिकै बिनती कीनी, जो महाराज ! प्रथम स्नान आप कीजिए. काहेतें ? जो श्रीआचार्यजी महाप्रभुनने कृष्णदेव राजाकी सभामें वैष्णव धर्मकी रक्षा कीनी है. मायावादकौ खण्डन कियो है. नांतरु आज वैष्णव सम्प्रदाय कोऊ जानतो नाहीं. सो आगें हू ऐसो पर्व आयो तब श्रीआचार्यजी आप प्रथम स्नान किये हैं. सब सम्प्रदाय वारेनने आपकौ तिलक कियो है. तातें आप प्रथम स्नान कीजिए. तब श्रीगुसांईजी आप चारों वैष्णव सम्प्रदायवारेनके आग्रहतें प्रथम स्नान किये. ता समै विष्णुस्वामि सम्प्रदायवारेनने श्रीगुसांईजीकों आचार्य - तिलक कियो. ता समै सङ्खकी ध्वनी चारों दिसानमें होन लागी. झालर घंटा बाजन लागे. सो ऐसो उत्कर्ष देखि बोहोतसे दैवी जीव सरनि आए. तिनमें ये स्त्री - पुरुष हू श्रीगुसांईजीके सरनि आए तब श्रीगुसांईजी दोऊनकों आज्ञा किये, जो तुम भगवत्सेवा करो. पाछें श्रीगुसांईजी आप इन स्त्री - पुरुषकों कृपा करिकै एक लालजीकौ स्वरूप पधराय दिये. ता पाछें आज्ञा किये, जो तुम इनकी नीकी भांतिसों सेवा करियो. और श्रीआचार्यजीकी सेवकिनी एक क्षत्रानी प्रयागमें रहति हैं. ताकौ सङ्ग करियो. सो वह तुमकों सेवाकी सब रीति सीखावेंगे. तब पुरुषने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! हमकों तो आपके स्वरूपमें आसक्ति भई है. तातें हम तो आपकी सेवा करेंगे. तब श्रीगुसांईजी वासों कहे, जो ये मेरो ही स्वरूप है. तातें तुम इनकी प्रीति पूर्वक सेवा करियो. और मैं तुम्हारे निकट ही हूं. सो जब तू चाहेगो तब तोकों मेरे दरसन होइंगे. या प्रकार कहि श्रीगुसांईजी तो आप अड़ेल पधारे. और वे दोऊ स्त्री - पुरुष क्षत्रानीके सङ्ग तें सेवाकी रीति सब सीखें. पाछें भगवत्सेवा भाव पूर्वक करन लागे. सो इनकों श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे. और श्रीगुसांईजी हू दरसन देन लागे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वे खेती करते. सो एक समै वर्षा थोरी भई. सो इनके खेतमें अन्न कछू नाहीं भयो. पाछें हाकिम इनसों खेतकौ पैसा मांगन लाग्यो. तब इन कह्यो, जो तेरे खेतमें तो अन्न कछू नाहीं भयो है. हम पैसा कहां तें देइ ? तब वा हाकिमने जो घरमें वस्तूभाव हती सो सब लूटि लीनी. पाछें घरमें कछू हू वस्तू नाहीं रही. सो यह स्त्री प्रतिव्रता हती. तब यह चरखा चलाय रुई ल्यायकै कांतें. सो सूत होंइ ताकों बैचिकै जो आवें तामें निर्वाह करें. पहिले श्रीठाकुरजीकों भोग धरि पाछें अपने पतिके आगें धरि देंहि. सो पुरुष महाप्रसाद लै चुकै तब

पति पातरिमें जो कछू रहें सो लेई. और वह पति पूछे, जो तैनें अपने लिये कहा राख्यो है ? तब वह कहे, जो मैं अपने लिये महाप्रसाद राख्यो है. तुम्हारे पीछे लेउंगी. तब वह पति चुप होंइ रहे. ऐसें करत दिन दोइ बीते. सो वा स्त्रीकी देह कृष होइ गई. तब पतिने विचार्यो, जो यह कछू खांत हैं नाहीं. तब तीसरे दिन वा स्त्रीने पतिके आगें पातरि धरी. तब इन पूछी, जो तेरे लिये कहा है ? तब स्त्रीने कह्यो, जो मैं अपने लिये उहां धरि राख्यो है. तुम लेउंगे ता पाछें मैं लेउंगी. तब पुरुषने जान्यो, जो यह नाही खांत हैं. तातें वा पुरुषने आधो महाप्रसाद लियो. पाछें पुरुषने स्त्रीसों कही, जो अब मैं परदेस जांइकै कछू कमाय ल्याऊं. तब स्त्रीने कह्यो, जो तुम काहेकों जांत हो ? तुम मेरी चिन्ता मति करो. काम तो चल्योई जात है. तब पुरुषने कही, जो तू धन्य है. जो आजके समै में ऐसो धर्म राख्यो है. और तू श्रीठाकुरजीकी सेवा भली भांतिसों करियो. और तू आछी भांति रहियो. मैं बेगि ही कछूक दिनमें आऊंगो. ऐसें कहिकै वह पुरुष चल्यो. सो जहां हीरानकी खांनि हती तहां गयो. तहां एक व्यौपारीने कह्यो, जो तुम कहां ते आए हो ? कौन हो ? कौन काम करत हो ? तब इन कह्यो, जो मैं हीरानकी धरती जानत हूं. तब उन कह्यो, जौ तुम बैठो. पाछें व्यौपारीने कह्यो, जो तुम धरती जानत हो तो मैं मोल लेऊ. सो तुम कहो. (और) जो कछू माल निकसेगो तो तुमहूकों देहिंगे. तब इन कह्यो, जो मेरे पास तो कछू द्रव्य नाहीं है. जो कदाचिद् हीरा न निकसे तो हाकिमकों कहा देउंगो ? तब उन व्यौपारी कह्यो, जो माल न निकसेगो तो हाकिमकों मैं देउंगो. तब वह वैष्णव वा व्यौपारीके साथ घर रह्यो. पाछें वा व्यौपारीने धरती हाकिमसों लै खुदाई. तामें माल बोहोत निकस्यो. सो वैष्णव बरस दिन तांई वा व्यौपारीकै घर रह्यो. सीधो सामान व्यौपारी पास तें लैके रसोई करि भोग धरिकै महाप्रसाद लेतो. पाछें वा वैष्णवने मनमें विचार्यो, जो बरस दिन भयो. अब अपने घर चलिये. श्रीगुसांईजीके दरसन करिये. माल हू बोहोत निकस्यो है. तब वा वैष्णवने व्यौपारीसों कह्यो, जो अब हम घर जांइगे, तातें हमारो जो कछू होई सो देहु. तब व्यौपारीने वैष्णवसों कह्यो, जो यह माल तो हमारे भाग्यतें निकस्यो है. जो तू कछू बदतो तो मैं देतो. तुमने चाकरी करी है सो हमने तुमकों सीधो पेटिया खायवेकों दीनो है. अब तुम कहा मांगत हो ? तुम्हारे मनमें आवें तब चले जाऊ. मनमें आवे रहो. तब यह सुनिकै वैष्णव चुप करि रह्यो. मनमें कह्यो, जो देखो ! बरस दिन चाकरी करी और मोकों कछू न दीनो. और माल बोहोत निकस्यो. परन्तु भगवद् इच्छा ऐसी ही है. मैं घर तें श्रीठाकुरजीकी सेवा छोरिकै आयो. तातें मोकों कछू न मिल्यो. श्रीठाकुरजी करत हैं सो आछी ही करत हैं. तासों अब घर चलनो उचित है. जो पेटमें पाइवेकों तो उहांई मिलत है. ऐसो वह वैष्णव मनमें विचाकर करि वा व्यौपारीसों कछू कह्यो नाहीं. पाछें दूसरे दिन सांझ भई तब सोय

रह्यो. पाछें दूसरे व्यौपारीने ये समाचार सुने. तब वह व्यौपारी दूसरे दिन वा वैष्णवके पास आयो. पाछें वा व्यौपारीने वैष्णवसों कह्यो, जो तुम उदास होइ क्यों जात हो ? कछूक दिन मेरे इहां रहो तो आछौ है. जो माल निकसेगो तामें तें आधो बांटि दउंगो. तब वैष्णवने कही, जो एक बेर तो दगा पाइ है. अब केसें मानों ? तब व्यौपारीने कह्यो, जो चारि भले आदमीनसों कहवाय देउं. तब वा वैष्णवके मनमें आई, जो दोइ चारि महिना और देखि लेउं. खाली हाथ कहा घर जाउं ? तब चारि मनुष्यनतें कहिकै वैष्णव वा व्यौपारी पास रह्यो. तब व्यौपारीने धरती हाकिम पास तें मोल लीनी. सो वैष्णवने जा ठौर बताई ता ठौर खुदवायो. सो पहिले तें अधिक माल निकस्यो. तब महिना चारि भए. तब वैष्णवने व्यौपारीसों कह्यो, जो अब तो हमकों घर छोरे बोहोत दिन भए हैं तातें अब तो घर जाइंगे. सो तुम आधो माल कह्यो है सो देऊ. तब व्यौपारीने वैष्णवतें कह्यो, जो यह माल तुम्हारे भाग्य तें निकस्यो है. जो चाहो सो सब लेऊ. परि तुम कछूक दिन मेरे पास रहो. तब वैष्णवने कही, जो अब तो हम घर जाइंगे. हमारे बांटेकौ द्रव्य है सौ देऊ. अधिकी हमकों नाहीं चहियत है. तब वा व्यौपारीने आधो माल बांटि दियो. और प्रसन्नतासों वैष्णवकों बिदा कियो.

और वह पहिलेकौ व्यापारी हतो, तानें दगा कियो हतो. सो ताके घरमें आगि लागी. सो सगरो माल घरकी वस्तू सहित सब भस्म होंइ गई. तब वा व्यौपारीने जान्यो, जो मैने वा वैष्णवकों कछू न दियो तासों मेरे घरमें आगि लागी. सगरो माल गयो. तब मनमें विचारी, जो वैष्णव फिरिकै आवे तो बिनती करि आउं. और इहां वैष्णवने विचारिकै कछूक माल बेचिकै चारि मनुष्य मार्गमें साथके लिये चाकर राखे. सो अपने घर चलिवेकी तैयारी करी. ताही समै वह पहिलो व्यौपारी वा वैष्णवके पास आय पांवन पर्यो. और कह्यो, जो वैष्णव ! मैं तुमसों दगा कर्यो. तो मेरो सगरो माल योंही गयो. और पहिले घरमें वस्तू हती सोऊ आगितें जरि गई. अब मेरे पास खांयवेको कछू न रह्यो. मोकों दसबीस रुपैया बजारके देने हैं. सो अब तुम कछूक दिन मेरे पास रहो तो धरती लेउं. पाछें माल निकसेगो तामें तें कछु तुमकों देऊंगो. ऐसें करो तो तुम मोकों जिवाय लेऊ. तब वैष्णव व्यौपारीसों कह्यो, जो हमकों तो घर छोरे बोहोत दिन भए हैं. तातें हमकों जरूर घर जानो है. और रुपैया १००) सौ तुम ले जाऊं. यामें तें जाकों देनो होंइ ताकों दीजियो. और तुम कछूक दिन खईयो. तब वह व्यौपारी वा वैष्णवके पास तें रुपैया सौ लैके अपने घर आयो.

भावप्रकाश :
सो वैष्णवकौ ऐसो धर्म है, जो कोऊ बुरो करें ताहूकौ भलो करनो.

पाछें वह वैष्णव चारि मनुष्य लैकै अपने घरकों चल्यो. सो मारगमें ग्यारह ठग मिले. सो सङ्ग चले. तब वैष्णवने उनसों कह्यो, जो तुम कौन हो ? तब उन ठगन कह्यो, जो हम या गाममें राजाके चाकर हते. सो हमारी चाकरी छूटि गई हैं. सो अब हमकों दूसरे गाममें जहां चाकरी मिलेगी तहां करेंगे. तब वैष्णवने कहीं, जो रुपैया दोइ - दोइ कौ महिना ग्यारहहू कों देइंगे. और एक महिना सङ्ग राखेंगे. आगें हमारे समवाई है नाहीं. तुम्हारी ईच्छा होंइ ता हमारे सङ्ग चलो. तब ठगनने कही, जो हम थोरेसे दिन लों तुम्हारे सङ्ग चलेंगे. आछी जगह हमारी चाकरी लगेगी तहां रहेंगे. तब वैष्णवने कही, जो जहां तांई तुम्हारी इच्छा होई तहां तांई चलो. तब वे ग्यारह ठग साथ चले. सो ठगनकौ दांव कछू न लगे.

सो एक दिन गामसों कोस एक परे तलाव हतो सो वा तलाव पर आए. तब तलाव बोहोत सुन्दर देखिकै उन ठगन कही, जो रसोईकी ठौर बोहोत सुन्दर है. यहां रसोई करिकै पाछें गाममें जांई रहेंगे. तब वैष्णवने चार्यो मनुष्यनसों कही, जो सीधो सामान लकड़ी, बासन ले आओ तो रसोई करें. तब उन मनुष्यन कही, जो दोऊ जनें तुम्हारे पास हू चहिए. दोइ जनें सब सामग्री ले आवेंगे. तब वैष्णवने कही, जो हमारे सङ्ग तो ग्यारह मनुष्य हैं. तुम सब जनें आछी भांतिसों सीधो सामग्री ले आवो. तब वे चार्‌यो जनें तो सीधो सामग्री लेन गए. तब वे ठग आपुसमें बातें करन लागे. जो आज दाव पर्यो है. अब तो चूको मति. तब यह बात वैष्णवने सुनी. तब पूछी, जो तुम कहा कहत हो ? तब उन कह्यो, जो हम ठग हैं. तुमकों मारेंगे. बोहोत दिन तें तुम्हारे पाछें लगे हैं. तब वैष्णवने कही, जो मैं न्हाय लेउ तब तुम मोकों मारियो. तब वैष्णव कपड़ा उतारिकै जलमें ठाढ़ो भयो. तब तहां महा दुःख करिकै श्रीगुसांईजीकौ स्मरन करिकै बोहोत आर्तिसों बिनती करी, जो महाराज ! मेरो कौन अपराध है सो घर न पहोंचन पायो. श्रीठाकुरजीके चरनपरस हू न करन पायो. और आपके हू दरसन न भए. द्रव्य मिलें तें प्रान जात है. द्रव्य भगवद् विनियोग हू न भयो. और ठगन हाथ मृत्यु होत है. यह मेरो अपराध कहा है ? या प्रकार बोहोत आरति करिकै बिनती करी. तब श्रीगुसांईजी आप तो परम दयाल हैं. सो तहांई प्रगट होंइकै दरसन दिये.

और आज्ञा किये, जो वैष्णव ! तू दुःख मति पावे. पहिले जन्ममें तैनें इन ग्यारह जनकों मार्यो है. सो ये न्यारे - न्यारे दाव लेते तो तोकों ग्यारह जन्म लेने परते. सो अब ये तोकों इकठोरे व्है कै मारत है. सो एक ही जन्ममें तू इनसों छूटेगो. तातें तू डरपे मति. तब यह सुनिकै वैष्णव तलावमें तें निकसि उन ठगनके पास आयो. तब उन वैष्णवनें कही, जो अब तुम बेगि आओ, मोकों मारो. नांतरु वे चारों मनुष्य आइ जांइगे. तब वे ग्यारह ठग मनमें डरपे. जो यह जलमें काहूसों बात कियो. श्रीगुसांईजीके दरसन तो उन ठगनकों भए नाहीं. परन्तु बचन सुने. तब ठगन कही, जो तू सांच कहि. जलमें किनसों बात कियो ? तब वैष्णवने कही, जो तुमकों कहा प्रयोजन है ? तुम बेगि मारिकै यह मालकी गांठि है सो लेऊ. जे कोई आइ जाइगो तो तुमकों माल न मिलेगो. तातें तुम ढील मति करो. तब ठगननें कही, जो अब हम तुमकों नाहीं मारेंगे. तुम सांच कहो. जलमें किनसों बात कियो. या प्रकार वे ठग बोहोत हठ परे. तब वैष्णवने कहीं, जो हमारे गुरु श्रीविटठलनाथजी हैं. तिनसों हमने बिनती करी, जो ये ठग मोकों मारत हैं ! तब गुरु मो पैं कृपा करि आज्ञा दिये, जो ये अपनो बैर इकठोरे व्है कै लेत है. सो अब ये न मारेंगे तो तोकों ग्यारह जन्म लेने परेंगे. तब यह सुनिकै उन ठगन कही, जो अब हम तुमकों सर्वथा नाहीं मारेंगे. और तुम्हारे सङ्ग चलेंगे. तुम्हारे गुरुकी सरनि जाइंगे. तब वैष्णव जान्यो, जो अब ये हमकों न मारेंगे. तब वैष्णवने फेरि तलावमें जांइकै बिनती करी, जो महाराज ! अब तो ये मोकों मारत नाहीं. अब मैं कहा करों ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो तू ठगनसों प्रसन्नतासों कहवाय लीजो, जो अपनो बैर तुम भरि पाए. तब वे कहे, जो हम भरि पाए. तब यह कहायकै तू सुखेन अपने घर जा. तब वा वैष्णवने तलावके बाहिर आय उन ठगनसों कही, जो तुम नाहीं मारत तो प्रसन्न होइकै कहो, जो हम अगिले जन्मकौ बैर भरि पाए. तब वे ग्यारह हू मिलिकै कहें, जो हम अगिले जन्मकौ बैर भरि पाए. तब वह वैष्णव उनके पास आयो. इतनेमें चारि मनुष्य सीधी सामान लै आए. तब वैष्णवने न्हायकै रसोई करी. पाछें श्रीठाकुरजीसों भोग धर्यो. पाछें समय भए भोग सरायो. अनोसर कियो. पाछें उन ठगनसों कही, जो तुम महाप्रसाद लेऊ. तब ठगनने कही, जो हम गाममें जांई रसोई करि महाप्रसाद लेइंगे. तब वैष्णवने कही, जो महाप्रसाद बोहोत है. कछू अनसखड़ी काल्हिकी धरी है. सोऊ धरि लेइंगे. तब सबनकों पातरि धरि वैष्णवने महाप्रसाद लियो. पाछें सांझकों गाममें जांइकै एक आछौ ठौर देखिकै सोय रहे. ये ठगनके समाचार वैष्णवने उन मनुष्यनसों नाहीं कहे. तब वे ठग आपुसमें कहे, जो यह वैष्णव कोई महापुरुष हैं. जो हमने इतनो कष्ट दियो परि इनने अपने मनुष्यसों नाहीं कह्यो.

पाछें जब वैष्णवकौ गाम कोस दोइ रह्यो तब उन ठगननें कही, जो हम तुम्हारी सरनि आए हैं. तुम हमकों श्रीगुसांईजीकी सरनि लै जांई वैष्णव करावो. हम बोहोत दिन तांई दुष्ट कर्म किये हैं. अब हमारो उद्धार होइ सोई करो. तब वैष्णव चुप होइ रह्यो. पाछें वैष्णव अपने घर आयो. तब वाकी स्त्री बोहोत प्रसन्न भई. पाछें वैष्णवनें फल फलारी मेवा सामग्री सिद्ध करि न्यायकै श्रीठाकुरजीके उत्थापन कराए. पाछें बाजार तें सीधो सामान आयो. तब स्त्रीने रसोई कीनी. पाछें सेनभोग आयो. समै भए भोग सराय अनोसर कियो. पाछें वे ग्यारह ठग और चारि मनुष्य सङ्ग ल्याये हते तिन सबनकों महाप्रसाद लिवायो. ता पाछें उन वैष्णवने महाप्रसाद लियो. पाछें वा वैष्णवने उन मनुष्य और ठगनकों न्यारो घर बताय दियो. पाछें प्रातःकाल उन मनुष्य चार्योनकों बुलायकै चाकरी चुकाय दीनी. कछू और हू दे उनकों प्रसन्न करि अपने घरकों बिदा किये. पाछें ठगनसों कह्यो, जो कछू खरची ले जाओ तो आछौ है. तब ठगनने कही, हमने तो तुम्हारी सरनि लीनी है. हमकों कछू नाहीं चहिए. श्रीगुसांईजीके सेवक कराय देऊ. तब या वैष्णवने कही, जो महिना एकमें श्रीगोकुल चलूंगो. तब तांई तुम यहां न्यारे घरमें रहो. खरची चहिए सो लीजियो. तब उन ठगनने कही, जो खरची तो हमारी पास हैं. जब तुम श्रीगोकुल चलोगे तब हम हू श्रीगोकुल चलेंगे. तब वैष्णवने कही, जो भलो. तब वैष्णवने एक हार हीराकौ सुनहरी साजकौ नयो बनवायो. सो हार सिद्ध भयो. तब स्त्री सहित श्रीठाकुरजी पधरायकै बीस मनुष्य मारगके लिये सङ्ग ल्याए. और इन ग्यारह जनेंनकों सङ्ग ले श्रीगोकुल चले. तब वैष्णवने श्रीगुसांईजीके दरसन किये. भेट धरी. और श्रीगुसांईजीसों सब समाचार कहे. जो महाराज ! ग्यारह ठग आपुकी सरनि आए हैं. तब ठगनने श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि बिनती करी. जो महाराज ! अब तो हमने दुष्ट कर्म छोर्यो. अब न करेंगे. जो कोईकी चाकरी न मिलेगी तो खेती करिकै निर्वाह करेंगे. परि हम काहूकों अब दुःख न देइंगे. तब श्रीगुसांईजीने उनकों नाम सुनायो. पाछें वे सब उहां तें उठि गए. तब वैष्णवने श्रीगुसांईजीकों हीराकौ हार पहराए. तब श्रीगुसांईजी वैष्णवसों कहे, जो यह हार तो श्रीनाथजी लायक है. तब वैष्णवने कही, जो हमारे तो सर्वस्व धनी आपु हो. सो यह सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए. जो वैष्णवकों ऐसोई चाहिए. पाछें महिना एक लों वैष्णव श्रीगोकुलमें रह्यो. सो सब बालक बहू - बेटी सबनकों वस्त्र आभरन पहराए. पाछें श्रीगुसांईजीसों घर जाइवेकी बिनती करी. तब श्रीगुसांईजी अपनो प्रसादी उपरेना उढ़ायो. बोहोत प्रीतिसों बिदा किये. तब उह स्त्री सहित श्रीठाकुरजीकों पधराय श्रीगोकुलतें चल्यो. सो कछूक दिनमें उह वैष्णव अपने घर आयो. पाछें श्रीठाकुरजीकी सेवा स्त्री - पुरुष भली भांतिसों करते. पाछें वैष्णवने उह ठगनसों कह्यो, जो अब तुम अपने घर जाऊ. तब ठगनने कही, जो अबही हम घर न जाइंगे. पाछें घरमें जांइकै उनकी

सङ्गति करि हमारी बुद्धि भ्रष्ट होंई जायगी. तातें याही गाममें कछूक दिन जीविकाकौ जतन करिकै रहेंगे. तुम्हारे सङ्ग तें हमारो उद्धार होइगो. पाछें वे ठग वा गाममें एक सेठके घर चाकर रहे. सो वा वैष्णवके सङ्ग तें वे ठग भले वैष्णव भए.

सो वे स्त्री - पुरुष श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१०५।।

१०६-एक ब्रजवासी, जाकों श्रीगुसांईजीने परे कह्यो

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक ब्रजबासी, सनाढ्य ब्राह्मन, आन्योरमें रहतो, जाकों श्रीगुसांईजीने परे कह्यो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'रेली' है. सो रेली गोप श्रीठाकुरजीकौ अन्तरङ्ग सखा है. ये 'सुसीला' तें प्रगट्यो है, तातें उनके भावरूप हैं.

ये आन्यौरमें एक सनाढ्य ब्राह्मनके जन्म्यो. सो वाकौ पिता श्रीगोवर्द्धननाथजीकी गांइनकौ ग्वाल हतो. वह श्रीगुसांईजीकौ सेवक हुतो. सो वाने अपने बेटाकों हू श्रीगुसांईजीकौ सेवक कियो. सो यह लरिका निपट मुग्ध हतो. सो श्रीगुसांईजी इनकों मुग्ध जानि अपने खेलमें राखे. सो श्रीगुसांईजीसों या लरिकासों बोहोत एकताचारी भई. ऐसें करत ये बरस बीसकौ भयो. तब याकै माता - पिता मरे. ता पाछें यह लरिका श्रीगुसांईजीके पास रहन लाग्यो. याकौ ब्याह तो भयो नाहीं. घरमें कोऊ हतो नाहीं. सो श्रीगुसांईजी वाकों गरीब जानि एक पेटिया करि दीये. सो वह नित्य एक पेटिया लेतो. तामें अपनों निर्वाह करतो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक दिन एक वैष्णव श्रीगुसांईजीके दरसनकों आयो. सो वाने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो राज ! कृपा करि श्रीठाकुरजी पधराय

दीजिए तो हों सेवा करों. तब श्रीगुसांईजी वा वैष्णवकों कृपा करि श्रीमदनमोहनजीकौ स्वरूप पधराय दिये. सो वह वैष्णव श्रीठाकुरजीकों ले अपने डेरापै आयो. तब वा वैष्णवके मनमें यह आई, जो श्रीगुसांईजी मोकों श्रीठाकुरजीकों तो पधराय दिये. परि इनकौ नाम तो कछू कह्यो नाहीं. तातें नाम बिना हों श्रीठाकुरजीकों कैसें जानोंगो सो वह फेरि श्रीगुसांईजीके पास आइ बिनती कियो, जो महाराज ! मेरे ठाकुरकौ नाम कहा है ? तब श्रीगुसांईजी हास्य विनोदपूर्वक कहें, जो श्रीमदनमोहनजी. सो ता समै यह ब्रजबासी हू उहां ठाढ़ौ हुतो. सो याने इह बात सुनी. तब यह जान्यो, जो श्रीगुसांईजी सबनके ठाकुरके नाम कहत हैं. सो हों हू अपने ठाकुरकौ नाम पूछों. पाछें उनकी सेवा करों. तब ब्रजबासी बिनती कियो, जो महाराज ! मेरे ठाकुरकौ नाम कहा है ? सो ता समै श्रीगुसांईजी वा वैष्णवसों बातें कर रहे हते, सो सुन्यो नाहीं. तब वह ब्रजवासी गादीपै चढन लाग्यो.

सो श्रीगुसांईजीने वाकौ हाथ पकरिकै कह्यो, जो परे. तब ब्रजबासीने मनमें विचार्यो, जो सब वैष्णवनकों सेवा पधराय देत हैं. सो तैसें ही मोकों परे ठाकुर दियो. सो उहां तें ब्रजबासी भण्डारी पास आयो. सो भण्डारीसों कह्यो, जो आज मोकों दोय पेटिया दीजियो. तब भण्डारीने कह्यो, जो आज दोय पेटियानकौ कहा करेगो ? तब ब्रजबासीने भण्डारीसों कह्यो, जो आज मोकों श्रीगुसांईजीने परे दियो है. सो एक पेटिया तो मेरो और एक पेटिया उनकौ. तब भण्डारीने मनमें विचारी, जो श्रीगुसांईजी इनके उपर प्रसन्न रहत हैं तासों दिवायो होयगो. सो याने दोइ पेटिया दीने. पाछें वह ब्रजवासी सीधा दोई लैके 'बिलछू कुण्ड' पर गयो. तहां वाने रसोई करी. पाछें दोई पातरि बराबरिकी करि धरी. पाछें पुकारन लाग्यो, जो परे भैया ! परे हो ! बेगि आऊ. सो ऐसें कहि - कहि कै कितनीक बैर पुकार्यो. ता पाछें फेरि पुकार्यो. जो अरे भैया ! तू आवे तो आऊ. नाहीं तो ये दोऊ पातरि तलावमें डारत हों. सो ऐसें कहिकै पातरि उठाई. सो तलावमें डारन लाग्यो. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी मनमें विचारे, जो ये तो भोरो है. जो श्रीगुसांईजीकौ वाक्य तो समझ्यो नाहीं. सो अब यह भूखन मरेगो. तो श्रीगुसांईजीकों खेलतमें चैन न होंइगो. तब यह चित्तमें विचारिकै श्रीगोवर्द्धननाथजी बेगि ही पधारे. सो तब वा ब्रजवासीसों कह्यो, जो अरे भैया ! मैं आयो. तब वह ब्रजवासी बोल्यो, जो अरे भैया ! तू तो अवेर बोहोत लगावत है. जो दारि - रोटि सीरी होइ गइ है. जो ऐसो करेगो तो और दिन मैं तेरो सीधो न लाउंगो. जे तू और काहूसों कराय लीजियो. तब श्रीगोवर्द्धननाथजीने कह्यो, जो अरे भैया ! आज तो पहिलो दिन है. सो तासों अवेर लागी है. जो काल्हिसों मैं बेगि ही आउंगो. ऐसें कहिकै

श्रीगोवर्द्धननाथजी और वह ब्रजवासी अपनी - अपनी पातरिपै बैठें. तब श्रीगोवर्द्धननाथजीने वा ब्रजवासीसों कह्यो, जो अरे भैया ! थोरीसी दारि मोकों और दे. तब वा ब्रजवासीने कही, जो अरे भैया ! जितनी तेरे आगे हैं ऊतनी मेरे आगे हैं. जो मैंने कछू अधिक तो लीनी नाहीं. तेरो मन चाहे वा पातरिपै बैठि. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहें, जो तू थोरीसी लीटी मेरी पातरिमें सों ले. तब ब्रजवासीने कही, मैं तो कछू लेहू न देहू. ऐसें वचन सुनि श्रीगोवर्द्धननाथजी हंसत - हंसत वा पातरिकी सामग्री अङ्गीकार कीनी.

भावप्रकाश :
या वार्तामें यह सन्देह होई, जो या ब्रजवासीकों श्रीगुसांईजीने ठाकुर तो पधराये नाहीं. परे कह्यो. सो तो दूरि जाइवेकों कह्यो. तोऊ श्रीनाथजी आप, परे कहे तें कैसें पधारें ? तहां कहत हैं, जो श्रीगुसांईजीकी बानी स्वरूपात्मक हैं. सो जो कोऊ जा भावसों वाकों अनुसरत है, ताकों तेसें फलित होत है. सो या ब्रजवासीने वा बानीकों भगवत्स्वरूप करिकै जानी. और वा पै दृढ़ विश्वास हू कियो. तातें श्रीनाथजीकों वा नाम तें आमनो पर्यो. तातें विश्वास ऐसो पदार्थ है.

ऐसें करत केतेक दिन बीते. सो श्रीगोवर्द्धननाथजी वा ब्रजबासीके साथ बिलछू पै खेलत रहे. सो श्रीगुसांईजीकी पास तो जायवो बने नाहीं. तब एक दिन अधिकारीने मनमें विचार्यो, जो यह ब्रजबासी सीधा दोइ ले जात है. परि ये कछू काम तो करत नाहीं. तातें अब याकौ पेटिया बंध करो. तब फेरि मनमें विचारी, जो श्रीगुसांईजी सुनेंगे तो खीझेंगे. तातें कछू मिष करिकै याकौ पेटिया बंध करोंगो. तब अधिकारीने भण्डारीसों कह्यो, जो अमुकौ ब्रजबासी सीधौ लेन आवें तब मो पास पठाईयो. फेरि ब्रजबासी सीधा लेनकों आयो. तब भण्डारीने अधिकारी पास पठायो. तब वाने जांइकै अधिकारीसों कह्यो, जो क्यों रे भैया अधिकारी ! तू कहा कहत है ? तब अधिकारीने कह्यो, जो क्यों रे भैया ! तू नित्य सीधा खांत है, सो अब तोकों श्रीगुसांईजीने आज्ञा करी है, जो तू सूरत जांइकै भेट वैष्णवनसों ले आउ. तब वा ब्रजबासीने कही, जो मैं तो तेरी सूरत देखी नाहीं. जे तेरी सूरत कहां है ? और भेटी भेटा तू कहा कहत है ? जौ मैं तो कछू समजत नाहीं. सो ता समै तहां कोइ एक और हू ब्रजबासी ठाढ़ो हतो. सो वाने कह्यो, जो अरे भैया ! सूरत तो सहर है. सो नाम है. और दोइ महिनाकी गेल है. सो तहां तू वैष्णवनसों जांइकै मिलेगो तब वैष्णव तोकों भेंट उधाय देंइगे. तब तू ले आइयो. तब वह

ब्रजवासी मनमें डरप्यो. जो इतने दिना तें सीधा लेत हों और आजमैं इनकौ कह्यो न करूंगो तो आज पाछें सीधा देइगो नाहीं. तब मैं कहा खाउंगो. पाछें यह ब्रजबासी भण्डारी पास सीधा लेन गयो. सो सीधा लेकै बिलछू तलाव पर रसोई करन गयो. तब इतनेमें श्रीगोवर्द्धननाथजी तहां पधारे. तब वा ब्रजबासीसों श्रीगोवर्द्धननाथजी बोले. बोहोत हांसी करी. परि वह ब्रजबासी कछू बोल्यो नाहीं. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो अरे भैया ! आज तू बोलत क्यों नाहीं. तब वह ब्रजबासीने श्रीगोवर्द्धननाथजीसों कह्यो, जो भैया ! तेरे अधिकारी कहत है, जो सूरतकी भेट लै आउ. सो मैं तो जानत हू नाहीं. जो सूरत कितमें है ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजीने कही, जो अरे भैया ! तू या बातकी चिन्ता मति करे. जो हों तोकों सूरत दिखाउंगो. जो मैं हूं तेरे साथ चलूंगो. तब वह ब्रजबासी बोल्यो, जो अरे भैया ! मैं तोकों नाहीं ले जाउंगो. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो तू मोकों क्यों नाहीं ले जायगो ? तब वा ब्रजबासीने कही, जो अरे भैया ! तेरे पांव छोटेसे हैं. सो गेलमें तू हारि जाइगो. फेरि तू कहेगो, जो मोकों उठाय ले. तब मैं ताकों कैसे उठाउंगो ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आज्ञा किये, जो भैया ! में तोकों उठायवेकी नाहीं कहूंगो. जो हो तो अपने पांवनसों चल्यो चलूंगो. तब वा ब्रजबासीने कह्यो, जो आछौ. पाछें जब वह रसोई सों पहोंचि चुक्यो तब याकों श्रीगोवर्द्धननाथजी आज्ञा किये, जो अरे भैया ! तू अधिकारीके पास जा. सो पत्र और महाप्रसादकी थेली ले आईयो. जो आज आपुन सूरतकों चलेंगे. तब वह ब्रजबासी अधिकारीके पास गयो. तहां जांयकै कह्यो, जो लारे भैया ! पत्र लिख देऊ. तब अधिकारीने पत्र और महाप्रसादकी थेली वा ब्रजबासीकों दीनी. सो लेकै ब्रजबासी बिलछू पै आयो. तब श्रीगोवर्द्धननाथजीसों कह्यो, जो भैया ! मैं पत्र ले आयो हूं. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी वा ब्रजबासीकों सङ्ग लेकै पधारे. सो गेलमें आयकै श्रीगोवर्द्धननाथजी ठाढ़े रहे. पाछें कह्यो, जो हों तो हारि गयो हूं. तब वा ब्रजबासीने कह्यो, जो मैं तो तोसों पहिले ही कह्यो हतो, जो तू चले मति. हारि जायगो. अब तू कहत हैं जे हों हार्यो हूं. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो अरे भैया ! हों तो योंही कहत हों. तू चलि. यों कहिकै श्रीगोवर्द्धननाथजी उठि चले. सो पूंछरीकी ओर 'अपछरा कुण्ड' है तहां पधारे. तब तहां दिन मूंद्यो. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कह्यो, जो भैया ! आज तो यहांइ दिन मूद्यों. सो यहांई रात्रि परि गई है. सो इहांई सोवेंगे. सो काल्हि सूरत पहोंचेगे. तब वा ब्रजबासीने कह्यो, जो भलो. तब वह ब्रजबासी उहांई सोय रह्यो. और श्रीनाथजी तो आप मन्दिरमें पधारे. पाछें जब सवारो भयो, तब श्रीनाथजीने जांयकै वा ब्रजबासीकों जगायो. जो अरे भैया उठि ! तब वह ब्रजबासी जाग्यो. सो अपनी कमरि बंधिकै तैयार भयो. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो चलो. पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीने कही, जो सूरत तो आई. तब वा ब्रजबासीने श्रीनाथजीसों कह्यो, जो भैया

! मैं तो सुन्यो है, जो सूरत द्वै महिनाकौ पैंडो है. सो आज तो आपुन एकही दिनमें आय पहोंचे हैं. तब श्रीगोवर्द्धननाथजीने वा ब्रजबासीसों कह्यो, जो भैया ! आपुन तो सगरी राति चले हैं. मेरे पांव हारि गए हैं. सो तोकों खबरी नाहीं है. तब वा ब्रजबासीने कह्यो, जो भैया ! मेरे हू पांव तो हारि गए हैं. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी हंसिकै कह्यो, जो अरे भैया ! तू गाममें जा. सो गाममें अधिकारी टहलुवा हैं. सो तिनकों पत्र तथा महाप्रसादकी थेली दीजियो. और विनसों यों कहियो, जो हम तो यहां रहेंगे नाहीं. जे आजकी आज हमकों भेट देऊ. तब वे तोसों कहेंगे, जो तुम यहांई सोय रहो. महाप्रसाद लेऊ. परन्तु तू काहूकौ कह्यो मानियो मति. सीधो मेरो तथा तेरो लेकै यहां मेरे पास आईयो. सो आपुन दोऊ जने यहां जेमेंगे. तब यह ब्रजबासी श्रीगोवर्द्धननाथजीके बचन सुनिकै गाममें आयकै अधिकारी टहलुवानसों मिल्यो. सो उनकों पत्र तथा महाप्रसाद दिये. और कह्यो, जो भैया ! मेरी भेट ल्याउ. तब वैष्णवन टहलुवान कह्यो, जो अरे भैया ! यहां तो भेटिया आवत हैं सो महिना दोइ चारि रहत हैं. सो तुमको डेरा देई. तुम हू रहो. और महाप्रसाद नित्य लियो करो. तब वह ब्रजबासी बोल्यो, जो भैया ! मैं तो तिहारे प्रसादमें समुझत नाहीं हों. जो मोकों तो सीधा ल्याउ. सो अपने हाथसो रसोई करोंगो. और सीधा न देऊ तो भेट ल्याऊ. जो हमतो आज रसोई न करेंगे. काल्हि भण्डारीसों सीधा लेकै उहांई जांयकै रसोई करेंगे. तब उन वैष्णवन कह्यो, जो भण्डारसों लेउगे, सो कहा एक दिनकौ पैंडो है ? तब वह ब्रजबासीने कह्यो, जो काल्हि हम उहां रसोई करी हती. सो आज तो यहां रसोई करेंगे. सो सुनिकै सब वैष्णव चुप करि रहे. और मनमें विचार कियो, जो यह ब्रजबासी तो भोरो है. जो प्रभुनकी लीला कछू जानी न परे. पाछें पत्र खोलिकै देख्यो, जो पत्रमें काल्हिकी मिती है. फेर कह्यो, पत्र लिखवेमें भूल गए होइंगे. तब महाप्रसाद खोलिकै देखे तो वामें ताजा श्रीनाथजीकौ बीड़ा हतो. सो खोलिकै देखे तो पान ताजा है. तब वा ब्रजबासीके कहेकौ विश्वास आयो. तब वासों पूछ्यो, जो भैया ! तू कहे तो तोकों सीधा देई. तू कहे तो प्रसाद देई. तब वा ब्रजबासीने कह्यो, जो हमकों तो सीधा देऊ. और जहां तांई हम रसोई करे तहां तांई तुम भेट और पत्र तैयार करि राखियो. जो हम रात्रिकों यहां न रहेंगे. पाछें उनकों वैष्णव सीधो देन लागे. तब उन कह्यो, जो हमकों सीधा द्वै देऊ. तब उन वैष्णवन कह्यो, जो तुम तो एक हो दूसरो सीधा कौनकौ लेउगे ? तब ब्रजबासीने कह्यो, जो मेरे साथ श्रीगुसांईजीने एक परे दियो है. तब वैष्णवनने दो सीधा दिये. तामें घृत और खांड बोहोत दीनी. तब ब्रजबासी सीधा लैकै जहां श्रीनाथजी बिराजत हते तहां आयो. और श्रीनाथजीसों कह्यो, जो अरे भैया ! सीधा ले आयो हूं. तब श्रीनाथजी वासों कहे, जो अरे भैया ! मेरो सीधा ले आयो है ? तब वाने कह्यो, जो हां हां ले आयो हूं. वैष्णवनने घृत और खांड बोहोत दीनो है.

सो आपुन याकौ कहा करेंगे ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आप आज्ञा किये, जो अरे भैया ! लडुवा करि डारो. तब वा ब्रजबासीने लडुवा कीने. तब श्रीनाथजी आप आरोगे. पाछें वा ब्रजबासीसों कह्यो, जो तू गाममें जांइकै पत्र ले आउ. तो आपुन श्रीगुसांईजीके पास चले. तब वह ब्रजबासी गाममें आयकै टहलुवानसों कह्यो, जो पत्र ल्याउ. तब वा टहलुवाननें गामके वैष्णव हते तिन सबनकों बुलाये. सो सब जनें आए. तिनकों महाप्रसाद दियो. और पत्र पहुंचाए. और उनसों कह्यो, जो भैया हो ! जो भेटियाकी तो मुग्ध दसा दीसत है. और देखो महाप्रसाद और बीड़ाके पान ताजे हैं. और पत्रमें हू काल्हिकी मिती है. और ब्रजबासी हू कहत है, जो मैं उहां सो काल्हिकौ चल्यो हूं. तातें प्रभुनकी लीला तो जानी नाहीं जाय. जो कहा है ? तातें आज याकों बेगि बिदा करो ते यह जांय. तब सब वैष्णवन मिलिकै आपुसमें भेटकी हुंडी करिकै हाथमें दीनी. और रुपैया १०/- सेवकीके देन लागे. तब वाने कह्यो, जो मैं इनकों कहा करुंगो ? तब उन वैष्णवनने कह्यो, जो यह तेरी सेवकी है. सो तेरे गेलके खरचके काम आवेगी. तब वा ब्रजबासीने कह्यो, जो मेरे गेलमें खरचकौ कहा काम है ? काल्हि तो मैं जांयकै भण्डारीसों सीधा लेउंगो. तब वैष्णवनने रुपैया १०/- सेवकीकै दिये हते सो तिनकी हुंडी करिकै भेटकी हुंडीमें बीडि दिये. और श्रीगुसांईजीसों बिनती पत्र लिख्यो, तामें सब समाचार लिखे. जो ब्रजबासीकों सेवकीके रुपैया दस देत हते, सो यह तो भोरो है. सो याने लीने नाहीं. सो पत्रमें हुंडी करि दीनी, सो बीडि है. सो आप अपनी इच्छामें आवे तैसें करोगे. तब वा ब्रजबासी पत्र तथा हुंडी लेकै श्रीनाथजीके पास आयो. तब श्रीगोवर्द्धननाथजीने वा ब्रजबासीसों कह्यो, जो अरे भैया ! आज आपुन बोहोत जेंएं हैं तातें चल्यो न जायगो. तातें अब यहांई सोय रहो. सवारे श्रीगुसांईजीके पास चलेंगे. तब ब्रजबासी उहांई सोय रह्यो. और श्रीनाथजी तो आप मन्दिरमें पधारे. सो जब सवारो भयो तब श्रीनाथजी 'अप्सराकुण्ड' पर पधारे. और वा ब्रजबासीकों जगायो. तब वह ब्रजबासी जाग्यो. तब श्रीनाथजीने कह्यो, जो अरे भैया ! तू बेगि अधिकारीकों पत्र दै कै भण्डारीपैं तें सीधा लेकै बेगही बिलछूपै रसोई करि. तब वह ब्रजबासी मन्दिरमें गयो. तब कोऊ मनुष्यने जायकै अधिकारीसों कह्यो, जो अमूको ब्रजबासी सूरत गयो नाहीं हैं. तब अधिकारीने वा ब्रजबासीकों बुलायकै कह्यो, जो अरे ! सूरत गयो नाहीं ? तब वह ब्रजबासी सूरतसों पत्र ल्यायो हतो सो वाके हाथमें दीनो. तब अधिकारी पत्रकों देखिकै चक्रत व्है रह्यो. तब मनमें विचार्यो, जो यह एक दिनमें सूरत कैसे गयो होयगो ? मति कहूं झूठो कागद लिखि ल्यायो होंइ. यह जानिकै पत्र खोलिकै देखे तो हुंडी हू भीतर है. तब अधिकारीने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ' अमूकौ ब्रजबासी. सूरत पठायो हतो, सो पत्र तथा हुंडी तीसरे दिन ले आयो है. तब श्रीगुसांईजी पत्र बांचिकै देखे तो तामें वैष्णवनने समाचार

लिखे हते सो सब जाने. तब वा ब्रजबासीकों श्रीगुसांईजीने बुलाईकै सब बात पूछी. तब वा ब्रजबासीने कही, जो अरे भैया विटठलनाथी ! तू मेरो कह्यो न मानेगो. तुम्हारे परे सों पूछो. वह मेरे साथ गयो हतो. तब श्रीगुसांईजी वा ब्रजबासीसों पूछे, जो अरे भैया ! परे कौन है ? तब वा ब्रजबासीने कह्यो, जो ता दिन तुम्हारे सङ्ग खेलत हंसत हतो. ता दिन तुम मेरे साथ परेकों दियो है. सो वे परे सदा बिलछूपै मेरे साथ खेलत है और मेरे हाथकी सदा रोटी खात हैं. तब श्रीगुसांईजी मन्दिरमें पधारे. सो श्रीनाथजीके कपोलन पर अपनो श्रीहस्त फेरिकै कह्यो, जो बाबा ! अमूके ब्रजबासीके साथ आप सूरत गए हते ? तब श्रीनाथजीने कह्यो जो मैं कहा करों ? वाकों तो तुम्हारो वचन पर विश्वास आय गयो है. ता दिनसो मैं वाके पास रहत हूं. तब श्रीगुसांईजीने श्रीनाथजीसों बिनती कीनी, जो आज्ञा होइ तो वा ब्रजबासीकों पातरि करि देई. तब श्रीनाथजीने कह्यो, जो उनसों पूछो. जैसें उनकी प्रसन्नता होई तैसें करो. तब श्रीगुसांईजीने वा ब्रजबासीसों पूछी, जो अरे भैया ! तोकों पातरि करि देइ ? तब वा ब्रजबासीने कह्यो, जो मैं तो तुम्हारी पातरि - बातरि समझत नाहीं हों. जो मोकों तो तुम सीधा दोइ देउगे तो तुम्हारे परेसों रसोई करि देउंगो. और एक सीधा देउगे तो मैं मेरी रसोई करूंगो. तब श्रीगुसांईजीने श्रीनाथजीके खासा भण्डारीसों बुलायकै आज्ञा करी, जो इनकों सीधा दोइ खासामें ते दियो करो. सो ता दिनतें वह सीधा खासा भण्डारमें तें ले जातो. और बिलछूपैं जांयकै रसोई करतो. सो तहां श्रीनाथजी अरोगिवेकों पधारते. सो श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी वा पैं ऐसी कृपा नित्य करते. हांसी खेल करते प्रसन्न रहते.

सो वह ब्रजबासी श्रीगुसांईजीकौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१०६।।

१०७-जन - भगवानदास दो भाई, गौरवा क्षत्री

अब श्रीगुसांईजीके सेवक जन - भगवानदास दोऊ भाई, गौरवा क्षत्री, ब्रजबासी हते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :

ये राजस भक्त हैं. लीलामें 'जलतरङ्गिनी' 'एकतारी' इनके नाम हैं. ये दोऊ श्रीचन्द्रावलीजीकी अन्तरङ्ग सखी हैं. 'सुशीला' तें प्रगटी हैं तातें उनके भावरूप हैं. सो जन तो जलतरङ्गिनीकौ प्रागट्य है और एकतारीकौ प्रागट्य 'भगवानदास' भए.

वार्ता प्रसंङ्ग १ :

सो वे जन और भगवानदास वे दोऊ भाई ब्रजबासी गौरवाके जन्मे. सो ये गोकुलमें रहते. सो बालपनमें श्रीगुसांईजीकी सरनि आए हैं. सो बड़े भाई तो जन और छोटेभाई भगवानदास. सो बड़े कृपापात्र भगवदीय हते. सो वे दोई भाई गृहस्थ हते. सो उन दोऊ भाईनकौ विवाह उनके माता - पिताने कर्यो हतो. सो उन दोऊनके स्त्री हती. परि वे अपने मनमें संसार - व्यवहार में उदासीन रहते. और अपने मनमें वैराग्य राखते. संसारके विषयकों तुच्छ पदार्थ जानते. सो उन दोऊ भाईनकौ मन एक ही हतो. और परस्पर बोहोत ही स्नेह हतो. सो श्रीगुसांईजीके पास श्रीसुबोधिनीकी कथा नित्य सुनते. ता पाछें घर आयेकै दोऊ भाई अहर्निश विचार करते. और अपनी - अपनी छाप कीर्तन करते. श्रीनाथजीके पास हू बैठि कीर्तन करते, सुनते. सो ऐसें उन दोऊ भाईनके सदैव चली जांय. परि लौकिकमें काहूसों सम्भाषन हू नाहीं करते. और काहूसों बोलते नाहीं. उदर अर्थ भिक्षा मांगते. आसपासके गामनमें तें. सो कोऊ जानतो नाहीं. जा गाममें भिक्षा करन आज जांय ता गाममें फेरिकै नाहीं जांय. ऐसें निर्वाह करते. सो घरकों आवे. सो घरमें स्त्री - जन खरचकों दुःख पावे. गामके पटेल - चोधरी सबन मिलिकै इनकों खेत बोवाय दियो. सो धान आयो. वा धानकों गामके लोग इनके घर ठलाय गए. तब व स्त्रीजन तो बाहिर गई हती. तब इनने वह सब अन्न गायनकों खवाय दियो. कछू मंगतानकों बांट दियो. घरमें कछू नाहीं राख्यो ता पाछें पटेल - चोधरी सबन मिलिकै इनसों कह्यो, जो तुम्हारे और खेत बोयो है, आछो पक्यो है, परि तुम रखवारी करो. तब वे दोऊ भाई खेतपै गए. सो पक्षी - खग आवे तिनकों बरजे नाहीं. तोहू ऐसें करत खेतमें सों अन्न बोहोत आयो. सो वे दोऊ भाई तो खेतपै बैठे भगवद्वार्ता करते. सो लोग सब कहे, जो अब तुम्हारे खेतकों तुम क्यों नाहीं काटत हो ? अन्न खरिहानमें तुम डारत क्यों नाहीं ? परि वे कछू सुने नाहीं. और कछू उत्तर नाहीं देय. पाछें और लोगनसों कहिकै स्त्रीननें अन्न सिद्ध करवाई लीनों. परि इननें घरमें राख्यो नाहीं. तब लोग सब कहते, जो और लोग तो अपनी स्त्रीनसों खीझत हैं. परि ये तो कछू बोलत नाहीं. और ये दोऊ भाई तो काहूकी कोड़ी राखत नाहीं. जो सबहीन तें उदास रहत हैं.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

और एक समै ये दोऊ भाई श्रीगुसांईजीके दरसन करिवेकों प्रातःकालके समय आए. ता समै सब सेवक जन श्रीगुसांईजीके द्वार दरसनकों ठाढ़े हे. तब इन दोऊ भाईनने यह पद गायो. सो पद

राग : बिभास

प्रात समय श्रीमुख देखनकों सेवक जन सब ठाढ़े द्वार ।
जै जै जै श्रीवल्लभनन्दन दरसन दीजे परम उदार ।।
सुन्दर स्याम सुभगता सींवा मेघ गम्भीर गिरा मृदुधार ।
नैनन निरखे होत परम सुख श्रवन सुनाए बचन सुढार ।
श्रवण मङ्गल जग भवन मङ्गल रस पुरुषोत्तम लीला अवतार ।।
'जन - भगवान' जाय बलिहारी अगनित गुन महिमा नहीं पार ।।

यह पद जन - भगवानदासने गायो. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी स्नान करिकै श्रीनवनीतप्रियजीके मन्दिरमें पधारे. तब जन - भगवानदास दोऊ भाई साथ आए. सो मङ्गलाके दरसन किये. ताही समै जन - भगवानदासने यह पद गायो सो पद -

राग : बिभास

मङ्गल आरति कीजे भोर ।
मङ्गल जनम करम गुन मङ्गल - मङ्गल जसोदा माखन चोर ।
मङ्गल मुकुट बेनु बनमाला मङ्गल रूप बरन वन - मोर ।

‘जन - भगवान’ जगतमय मङ्गल मङ्गल राधा जुगल किसोर ।

यह पद जन - भगवानदासने गायो. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए. तब श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजीकी आरति करिकै श्रीनाथजीद्वार पधारे. तब जन - भगवानदास दोऊ भाई साथ गए. सो श्रीगुसांईजी ‘रूद्र कुण्ड’ में स्नान करिकै श्रीगोवर्द्धन पर्वत पर पधारे. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीकों राजभोग समर्प्यो. पाछें भोग सरायो. ताही समै जन - भगवानदासने यह पद गायो. सो पद -

राग : सारङ्ग
आगे आउरी छकिहारी ।
जब तू बोली तब हों टेर्यो सुनी न टेर हमारी ।
मैया छाक सवारी पठई तू कित रही अवारी ।
अहो गुपाल गेल हों भूली मधुरे बोलन पर वारी ।
श्रीगोवर्द्धन धरन धीर सों प्रोत बढी अति भापी ।
‘जन - भगवान’ जाय बलिहारी तनकी दसा बिसारी ।

यह पद जन - भगवानदासने गायो. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी बोहोत प्रसन्न भए. पाछें श्रीनाथजीकी राजभोग आर्ति करिकै श्रीगुसांईजी नीचे पधारे. सो अपनी बैठकमें गादी - तकियानके उपर बिराजे.

सो जन - भगवानदास श्रीगुसांईजीके दरसन करि बोहोत आनन्द पाए. जो श्रीठाकुरजी ब्रजमें प्रगटे कहे हैं. सो यही हैं, जो धन्य हमारो भाग्य है. जो हमकों ऐसें दरसन भए सों आपुसमें दोऊ भाई बातें करते. सो भगवद्रसमें छके रहते. काहू बातकी स्मृति राखतो नाहीं. श्रीगोवर्द्धननाथजी इनके पद सुनते. सो बोहोत ही प्रसन्न रहते.

ता पाछें श्रीगुसांईजी आप भोजनकों पधारे. सो भोजन करि आचमन करि बीरा अरोगिकै ता पाछें जन - भगवानदासकों महाप्रसादकी पातरि धरे. और श्रीमुख तें कहे, जो तुम श्रीनाथजीकौ महाप्रसाद यहां लेऊ. तब जन - भगवानदास दोऊ भाईननें महाप्रसाद लियो. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप छिनक विश्राम करिकै जागे. सो स्नान करिकै श्रीगिरिराज पर्वतके उपर पधारे. सो उत्थापन तें सेन पर्यन्त सब सेवा तें पहोंचिकै श्रीनाथजीके मन्दिर तें नीचे पधारे. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप कथा कहन लागे. सो इन दोऊ भाईनने श्रीमुखतें कथा सुनी. सो ऐसें कितेक दिन तांई श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप गोकुल पधारे. तब जन - भगवानदास दोऊ भाई साथ आए. सो श्रीनवनीतप्रियजी आदि सातों स्वरूपनके दरसन किये. तब ऐसें करत जन्माष्टमीकौ उत्सव आयो. ताही समै जन - भगवानदासने यह पद गायो. सो पद -

राग : सारङ्ग
ग्वाल बधाई मांगन आए ।
गोपी - ग्वाल गोरस सकल लिये सबहिनके सिर नाएं ।।
अब ये गर्व गिनत न काहू करि पाए मन भाए ।
जहां नन्द बैठे नन्दी - मुख तहां गहनकों धाए ।
बरन - बरन पट पाए उछाहसों आनन्द मङ्गल गाए ।
'जन - भगवान' जसोदा नन्दन बलि बलि मङ्गल गाए ।

सो यह बधाई जन - भगवानदासने गाई. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए. ता पाछें श्रीगुसांईजीकौ जन्मदिन आयो. तब ताही समै एक बधाई गइ. सो पद -

राज : धनाश्री

श्रीवल्लभ गृह होत बधाई अनुदिन मङ्गल चार ।
घर - घर आनन्द महा महोच्छ्व होत वेद झङ्कार ।
तेद आसीस सकल पुरबासी बरखत कुसुम अपार ।
मागध सूत बन्दित बन्दीजन जै - जै शब्द उच्चार ।
देति असीस सकल ब्रज सुन्दरि गावत गीत उच्चार ।।
श्रीविटठल तुम चिरजियो भक्तन प्रान आधार ।।
नृत्यत आवत हरिजस गावत पुलकित प्रेम आधार ।।
'जन - भगवान' जाय बलिहारी जै - जै दीन दयाल ।।

यह बधाईकौ पद जन - भगवानदासने गायो. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए. ता पाछें सन्ध्या समै एक पद और गायो. सो पद -

राग : कान्हरो

जय श्रीवल्लभजू के नन्दन श्रीवल्लभचरन रज पावन ।
जुग पद कमल बिराजमान अति महिमा
सदा बोहोत सुख पाइन ।
सेवा करों उभै कर दोऊ त्रिविध ताप नसावन ।
'जन - भगवान' जाय बलिहारी कृपा सबै जन पावन।

यह पद जन - भगवानदासने गायो. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए. और श्रीमुख तें कहे, जो इन दोऊ भाईनकौ कैसो सरल स्वभाव है ? सो काहूंसो अन्यतर भाव नाहीं.

सो वे जन - भगवानदास श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१०७।।

१०८-कल्याण भटट, खंभालियाके

अब श्रीगुसांईजीके सेवक कल्यान भटट, खांभालियाके बासी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्त्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'मधुरिमा' है. ये 'सुसीला' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं. और 'सुसीला'की एक सखी है. वाकौ नाम 'देवका' हैं. सो यहां बेटी भई.

ये खंभालियामें एक गिरिनारा ब्राह्मनके प्रगटे. सो पढ़े बोहोत. पाछें इनकौ ब्याह भयो. सो एक बेटी भई. वाकौ नाम देवका राख्यो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी पधारे हते. सो श्रीरनछोरजीके दरसन किये. सो तहां बोहोत दिन लों रहे. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप उहां तें बिदाई होंइकै चले. सो खंभालियाकों पधारे. सो तहां डेरा किये. पाछें श्रीगुसांईजी आप गादी तकियानके उपर बिराजे. तब सब वैष्णव श्रीगुसांईजीके दरसनकों आए. तिनके सङ्ग कल्यान भटट हू तहां आए. तब उन हाथ जोरिकै बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! मोकों नाम सुनाइये. तब श्रीगुसांईजी आप कल्यान भटटसों श्रीमुखसों आज्ञा किये, जो तुम स्नान करि आऊ. हम तुमकों नाम - निवेदन

दोऊ सङ्ग करवावेंगे. तब वे स्नान करि आए. पाछें हाथ जोरिकै श्रीगुसांईजीके आगे ठाढ़े होंइ रहे. तब श्रीगुसांईजी आप कृपा करिकै कल्यान भटटकों नाम सुनायो. ता पाछें निवेदन करवाए. तब कल्यान भटटने यथासक्ति भेट करी. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप रसोई करिकै श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो. समयानुसार भोग सरायकै श्रीगुसांईजी आप भोजन किये. तब सब सेवक टहलुवा रसोई करन लागे. सो रसोई करि श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो. ता पाछें सबनने महाप्रसाद लियो. और श्रीगुसांईजी आप भोजन करि मुख शुद्धार्थ आचमन करि पाछें कल्यान भटटकों महाप्रसादकी पातरि धरवाई. सो उननें महाप्रसाद लियो. पाछें श्रीगुसांईजी आप गादी तकियानके ऊपर बिराजे. तब कल्यान भटट हू तहां आए. सो साष्टाङ्ग दण्डवत् करि बैठे. तब श्रीगुसांईजी कल्यान भटटसों पूछे, जो तुम कहा पढ़े हो ? तब कल्यान भटटने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! कछू व्याकरण देख्यो है. तब श्रीगुसांईजी आपने कह्यो, जो बोहोत ही आछौ है. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप कल्यान भटटकों मारगके ग्रन्थ पढ़ाए. सो सब ग्रन्थ पढ़े. तब उन कल्यान भटटकों बोहोत ही विद्या स्फूर्त भई. सो सब बातकौ ज्ञान भयो. पाछें कल्यान भटट श्रीगुसांईजीसों जो गोप्य वार्ता होंइ सो पूछते. तब श्रीगुसांईजी आप कल्यान भटटसों कृपा करि सब समजायकै कहते. और अनेक भांतिसों कथा भगवद्वार्ता सुनावते. सो श्रीगुसांईजी आप उहां बोहोत दिनलों बिराजे. सो कल्यान भटटने अपेन घरकेनकों नाम - निवेदन करवाये. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप उहां तें विजय किये. सो श्रीगोकुलकों पधारे. तब कल्यान भटट हू श्रीगुसांईजीके साथ चले. सो अपनो सब कुटुम्ब लैकै श्रीगोकुलमें आय रहे. सो श्रीनवनीतप्रियजी आदि सातों स्वरूपनके दरसन किये. सो कल्यान भटट कछूक दिन श्रीगोकुलमें रहे. पाछें श्रीगोपालपुर आये. तहां श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. ता पाछें आन्योरमें रहे. सो वे कल्यान भटट श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

और एक समै श्रीगोवर्द्धननाथजी आपके नेगमें कसेंडी दोइ दूध ओछो हतो. तब दूधघरीयाने अपुने मनमें विचार कियो, जो आज तो दूध थोरो है. तो काल्हि कसेंडी दोइ दूध अधिक करूंगो. ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी आप ता रात्रिकों सुवर्णकौ कटोरा लैकै बरस दसके लरिकाकौ रूप धारन करि आन्योरमें आए. सो कल्यान भटटके घर आयकै कल्यान भटटकी बेटी देवकासों श्रीगोवर्द्धननाथजी आप पूछे, जे देवका ! तेरे यहां दूध है ? तब देवकानें वा लरिकासों कह्यो, जो हां हां, बोहोत दूध है. जितनो चहिए तितनो है. तब वा लरिकानें

देवकासों कह्यो, जो तू दूधकौ मोल कहे. तो मैं लेऊं. तब देवकाने तो मोल की नाहीं करी. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आपने साढ़े तीन पैसा सेर दूध मांग्यो. तब देवकाने तो नाहीं करी. पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी आपने चारि पैसाकौ सेर दूध मांग्यो. सो ऐसें करत साढ़े चार पैसा सेर ठहरायो. फिरिकै श्रीगोवर्द्धननाथजी आपने कटोरा गहने धर्यो. तब देवकाने कटोरामें दूध राख्यो. ता पाछें अन्तःकरन मांही खेद उपज्यो. तब देवकाने अपने घरमें तें मिठाई ल्यायकै कटोरामें दूध धरिकै दियो. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आप सब दूध अरोगे. कटोरा उहांई धरि आए. और श्रीगोवर्द्धननाथजी आप श्रीमुखसों देवकासों कहे, जो प्रातःकाल पैसा दै कै कटोरा ले जाउंगो. ता पाछें वा बाई देवकाने वा कटोराकों धोयकै गवाखेमें धरि दियो. ता पाछें दूसरे दिन सवारे प्रातःकाल श्रीगुसांईजी स्नान करिकै श्रीगिरिराज पर्वत उपर मन्दिरमें पधारे. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ सेवा सिंगार किये. ता पाछें भोग धरिकै कटोरा श्रीगुसांईजी देखे तो मन्दिरमें नाहीं है. तब श्रीगुसांईजी आप भीतरीयानसों पूछन लागे, जो कटोरा कहां गयो ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आपने श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो दूधके नेगमें काल्हि कसेंडी दोइ दूध ओछो हतो. सो ताही तें आन्योरमें देवकाके घर दूध पीकै कटोरा धरि आयो हूं. तब श्रीगुसांईजी कल्यान भटटसों जो वार्ता भई हती सो सब कही. जो देवकाके घर श्रीगोवर्द्धननाथजी आप कटोरा धरि आए हैं. सो तहां तें तुम ले आउ. तब कल्यान भटट श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मांगिकै घर आयकै देवकासों पूछे, जो देवका ! कोई कचू गहने धरि गयो है ? तब देवकानें कल्यान भटटसों कही, जो धरि तो गयो है. तब कल्यान भटटनें कही, जो वे तो श्रीगोवर्द्धननाथजी आप हते. सो कटोरा गहने धरि गए हैं. ता पाछें देवकाने कल्यान भटटसों कह्यो, जो तुम कटोरा दे आऊ. तब कल्यान भटट देवकातें कटोरा लै कै आए. सो श्रीगुसांईजी आपके आगें राख्यो. तब श्रीगुसांईजी आपने कल्यान भटटसों कही, जो वाके भाग्यकी कही कहिये ? जो जाकौ ऐसो सरल भाव. सो ताके घर श्रीठाकुरजी दूधके लिये कटोरा धरि आए. पाछें राजभोग आर्ति करि अनोसर करि श्रीगुसांईजी आप नीचे पधारे. सो अपनी बैठकमें गादी तकियानके उपर बिराजे. तब सब वैष्णव श्रीगुसांईजीके दरसनकों आए. सो दरसन करिकै अपने - अपने घरकों गए. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप दूधघरियाकों बुलायकै वासों बोहोत खीझे. जो ऐसो काम कबहू नाहीं करिये. जो श्रीगोवर्द्धननाथजी आपके नेगमें सो घटाइये नाहीं. तब दूधघरीयाने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! आपकी आज्ञा होइगी सोई हम करेंगे. सो ऐसी कृपा देवकाके उपर आप करते. सो वे कल्यान भटट श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते.

वार्ता प्रसङ्ग ३ :
और एक समै कल्यान भटटने श्रीगुसांईजी आपसों बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! श्रीगोवर्द्धननाथजी आपके निकटवर्ती जे वैष्णव रहत हैं, सो एक डबुवा जलकौ भरिकै समर्पत हैं, और एक डबुवा जलकौ ल्यायकै जो आपकों स्नान करावते हैं. और कोई वैष्णव आपकों जल बीड़ा ल्यायकै अरोगावत हैं. और एक सोंधो लगावत हैं. और एक वैष्णव पंखा करत है. और एक तेल लगावत हैं. सो आपके सेवक अनेक प्रकारसों श्रीठाकुरजी (और) आपकी सेवा करत हैं. सो वैष्णव मोकों कहत हैं, जो यह घर हमारो. अब हमारो अङ्गीकार करेंगे. ता पाछें उनसों मैनें कह्यो, जो अब तांई तुम्हारो कछू करनो बाकी रह्यो है. सो साक्षात् ईश्वरकों तेल लगावत हो. और अरोगावत हो. और कहा बाकी रह्यो है ? जो यथासक्ति सामग्री करिकै श्रीठाकुरजी आपकों समर्पत हो सो अङ्गीकार करत हैं. तातें महाराजाधिराज ! मैं उन वैष्णवनसों ऐसें कह्यो. तब श्रीगुसांईजी आप कल्यान भटटसों कहे, जो अब तो इतनो बाकी रह्यो है, जो तुम जानत नाहीं हो. तब कल्यान भटटने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! आप कृपा करि जनावोगे तब मैं जानोंगो. ऐसें बचन कल्यान भटटके सुनिकै श्रीगुसांईजी आप बोहोत प्रसन्न भए.

सो वे कल्यान भटट श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते.

वार्ता प्रसङ्ग ४ :
और एक समै श्रीगुसांईजी जलघरामें स्नान करत हते. इतनेमें राघौदासने माला मांगी. तब श्रीगुसांईजी आयकै हांडी धरिकै पाछें अपने कण्ठसो माला उतारिवे लागे. तैसें माला परस्पर उरझि गई. तब कल्यान भटटने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! माला बिनती करत है जो आप मोकों श्रीकण्ठतें काहेकों उतारत हो ? तब श्रीगुसांईजी आप बोहोत ही मुसिकाए.

वार्ता प्रसङ्ग ५ :
और एक समै कल्यान भटटने श्रीगुसांईजी आपसों बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! श्रीप्रभुजीके उत्तम भगवदीय कृपापात्र होंइ सों

तिनके लक्षन कैसे हैं ? आप कृपा करि कहिये. तब श्रीगुसांईजी आप कल्यान भटटसों कहे, जो उत्तम भगवदीय वैष्णवके लक्षन तो यह हैं, जो सदा सबके उपर कृपा राखे. कोई भगवदीय वैष्णवके उपर क्रोध नाहीं करे. जो भगवदीय वैष्णवके उपर द्रोह नाहीं करनो. जो कदाचित् कोई भगवदीय वैष्णवकौ अपराध पर्यो होइ तिनसों क्रोध नाहीं करे. और तिनकौ अपराध सहनो. भगवदीय वैष्णव जो क्रोधमें दुर्वचन बोले तो अपनो अपराध माने. परन्तु तिनके बचन सुनिकै मनमें बिगारे नाहीं. जो करे सो क्षमा ही करे. तिनकों दोउ हाथ जोरिकै मधुरे बचनसों बोले, क्षमा राखे. जो भगवदीय वैष्णवसों सांचो बोले. और श्रीप्रभुजीसों चित विषे निर्मल बुद्धि राखे. और सदा सर्वदा उपकार ही करे. और श्रीप्रभुजीके उपर तें तथा भगवदीय वैष्णवके उपर तें मन डिगावे नाहीं. जो इन्द्रियजीत रहे. और अपने मनकौ मतो श्रीप्रभुजीके अर्थ नाहीं आवे. और आप महाप्रसाद मात्रकों अङ्गीकार करे. और अपने अर्थ उद्यम नाहीं करनो. और महाप्रसादकों न्यून ले. और बोहोत महाप्रसाद लेइ तो निन्द्रा आवे, तो भगवद् भजन न होंई आवें. तातें उनमानकौ महाप्रसाद लेनो. और रोगादिक होंइ तब श्रीठाकुरजी आपकी सेवामें अन्तराय होंई. तातें अपने मनको जीतिकै रहे. मन बस होंई तब श्रीप्रभुजीके भजन मन स्थिर होंइ रहे. मन बस होंइ तो सदा सर्वदा कार्यमें रहे. सब इन्द्रियकों जीते. विषयमें लगावे नाहीं. और कहे, जो हमतो श्रीप्रभुजी आपके दास हैं. सरन हैं. सो ऐसें मनकों समुझावतो रहे. और जहां बहिर्मुख लोग चर्चा करें तहां मौन होइकै रहे. और श्रीप्रभुजीकी सेवामें सदा सावधान रहे. और असावधान नाहीं होनो. और प्रभुजीकी, भगवदीय वैष्णवकों रहस्य - वार्ता प्रगट नाहीं करनी. और धीरज कबहू नाहीं छोरे. भूख तें प्यास तें निन्द्रातें सीततें उष्णतें क्रोध लोभतें. इतने दोष रूप हैं. सो इनके बस नाहीं होइ. तिनकों जीतिकै रहनो. और अभिमान नाहीं करे. सो सब भगवदीय वैष्णवनकौ आदर करत रहे. जो श्रीप्रभुजीके स्वरूप पर और श्रीप्रभुजीकी लीला है ता रूपमें अपने भगवदीय वैष्णवकौ आदर करत रहे. भगवदीय वैष्णवकौ धर्म, अपने स्वरूपकौ, ऐसें विचार करत रहे. सो ऐसें लक्षन होइ तिनकों उत्तम भगवदीय जाननो. तब यह श्रीगुसांईजीके श्रीमुखके बचन सुनिकै कल्यान भटट बोहोत प्रसन्न भए. तब कहे, जो वैष्णवनकौ स्वरूप तो ऐसो ही है.

सो वे कल्यान भटट श्रीगुसांईजीके ऐसें परम कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१०८।।

१०९-दो भाई पटेल, राजनगरके

अब श्रीगुसांईजीके सेवक दोई भाई पटेल, राजनगरमें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये दोउ सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनके नाम 'कांची' 'कामना' है. ये दोउ श्रीचन्द्रावलीजीकी सखी मैना हैं, उनतें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं. सो बडो भाई कांचीकौ प्रागट्य और छोटो भाई कामनाकौ प्रागट्य जाननो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै श्रीगुसांईजी राजनगर पधारे हे. सो भाईला कोठारीके घर बिराजत हते. सो राजनगरमें दोई भाई पटेल गृहस्थ हते. दोउनकी स्त्रीका बेटा - बेटी हू हते. सो उन कुनबीन तें भाईला कोठारीकौ मिलाप हतो. सो भाईला कोठारीके घर वे नित्य आवते. सो इन दोउ भाईनकों श्रीगुसांईजीके दरसन भए. सो महा अलौकिक दरसन भए. तब उननें भाईला कोठारीसों बिनती करी, जो हमकों तुम श्रीगुसांईजीके पास नाम दिवावो. तब भाईला कोठारी श्रीगुसांईजी तें बिनती किये, जो महाराज ! ये दोउ भाई नाम पायवेकी बिनती करत हैं. तब श्रीगुसांईजी कृपा करिकै उन दोउ भाईनकों नाम सुनाये. पाछें वे दोउ भाई भाईला कोठारीके घर नित्य भगवदवार्ता सुनिवेकों आवते. सो वे दोउ भाई जो सुनते सो सब कण्ठाग्र करि लेते. ऐसें करत केतेक दिन भए.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
पाछें एक दिना उन दोउ भाई पटेलनने भाईला कोठारीतें कही, जो नाम तो तिहारे सत्सङ्गतें पायो, परि अब तो ब्रह्मसम्बन्ध होंइ तों आछो. तब भाईला कोठारीने कही, जो तुम श्रीगोकुल श्रीगुसांईजीके पास जांइकै ब्रह्मसम्बन्ध करि आवो. पाछें इन दोउ भाईनकों ब्रह्मसम्बन्धकी

बड़ी आतुरता भई. पाछें अपने बेटानकों घरकौ कामकाज सोंपिकै वे दोउ भाई पटेल ब्रजमें आए. सो ता समै श्रीगुसांईजी श्रीठकुरानी घाटपैं सन्ध्यावन्दन करत हते. ता समै वे दोउ भाई आरतिके भरे श्रीगुसांईजीकों जांइकै दण्डवत् किये. तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें कहे, जो इन वैष्णवनकों तो राजनगरमें देखे हते. तब दोउ पटेलने हाथ जोरिकै बिनती कीनी, जो राज ! आपने कृपा करि भाईला कोठारीके घर दरसन दिये और नाम सुनाए. अब तो कृपा करिकै ब्रह्मसम्बन्ध करवाइये. तब ताही समै श्रीगुसांईजी कृपा करि श्रीमुख तें आज्ञा किये, जो न्हाउ. तब दोउ भाई न्हायकै कोरे वस्त्र पहरिकै हाथ जोरिकै ठाढ़े भए. तब श्रीगुसांईजी कृपा करिकै समर्पन करवाए. पाछें आप मन्दिरमें पधारे. सो राजभोग सरायकै दरसन करवाए. पाछें राजभोग आर्ति किये. सो ये दोउ भाई दरसन करिकै परम आनन्द पाए. श्रीनवनीतप्रियजीकै दरसन अति आनन्दसों किये. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजीकों अनोसर करवायकै आप अपनी बैठकमें पधारे. तब ये दोउ भाई पटेल दण्डवत् करिकै श्रीगुसांईजीकों भेंट धरी. तब आप आज्ञा करी, जो दोउ जनें महाप्रसाद यहांई लीजो. पाछें आप भोजनकों पधारे. सो भोजन करि महाप्रसादकी पातरी दोउ भाईनकों धरी. आप बैठकमें बिराजे. पाछें वे दोउ भाई महाप्रसाद ले कै श्रीगोकुलमें कोटरी ले कै रहे. सो नित्य भगवद्वार्ता मण्डलीमें जाते.

पाछें एक दिन श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार पधारे. तब वे दोउ भाई पटेल श्रीगुसांईजीके सङ्ग गए. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करिकै मनोरथ किये. पाछें दोउ भाई विचार किये, जो ब्रजयात्रा करिए तो आछो. ता पाछें श्रीगुसांईजीकी आज्ञा ले वे दोउ भाई ब्रजयात्राकों गए. सो ब्रजयात्रा करिकै पाछें श्रीगोकुल आइकै श्रीगुसांईजीके दरसन किये. तब श्रीगुसांईजीने पूछी, जो ब्रजयात्रा करि आए ? तब इन कही, जो राजकी कृपा तें करि आए. पाछें सातों स्वरूपनकौ तथा श्रीगुसांईजीकौ मनोरथ कियो. पाछें केतेक दिन श्रीगोकुलमें रहे. तब एक दिन श्रीगुसांईजीने पूछी, जो अब तुम्हारो कहा मनोरथ है ? तब उन दोउ पटेलनने हाथ जोरिकै श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो राजकी आज्ञा हों तो तरहटीमें रहे. और श्रीगोवर्द्धननाथजीकी जो बने सो सेवा करें. तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न होंइकै आज्ञा दिये, जो आछौ है. पाछें वे दोउ भाई तरहटीमें आय रहे. सो नित्यप्रति उठि स्नान करिकै श्रीगोवर्द्धननाथजीके मन्दिरमें जाते. सो राजोभोग तांई जो सेवा होंई सो करते. राजभोगके दरसन करिकै पाछें अपनी कोटरीमें आइकै रसोई करते. पाछें ध्वजा सन्मुख भोग धरिकै महाप्रसाद लेते. पाछें घरी दोई सोय रहते. ता पाछें सन्ध्या सेनके दरसन करिकै पाछें अपने घर आय किवाड़ लगाईकै वे दोउ जनें भगवदवार्ता करते. सो सगरी रात्रि

भगवद् वार्ता करते. सोवते नाहीं. दुपहरिकों प्रसाद ले कै सोय रहते. रात्रिकों न सोवते ऐसें नित्य करते. सो श्रीगोवर्द्धननाथजी इनकी वार्ता सुनिवेकों पधारते.

भावप्रकाश :
काहेतें, जो श्रीगोवर्द्धननाथजी तों जहां दोई वैष्णव भगवद् वार्ता करत होंई, तहां पधारत हैं. सो बात चाचा हरिवंशजी और कृष्ण भटटके प्रसङ्गमें आगें कहि आए हैं. तातें श्रीगोवर्द्धननाथजी भगवद्वार्ताके बिसनी हैं. सो जहां कहूं एकान्तमें वैष्णव भगवद् वार्ता करे तहां अवस्य श्रीगोवर्द्धननाथजी पधारत हैं.

सो एक दिन ये दोउ भाई पटेल अपनी कोटरीमें भगवद् वार्ता करत रसावेस भए. ताही समै श्रीगोवर्द्धननाथजी दोउनके बीचमें प्रगट होंईकै दरसन दिये. ता दिन तें सदैव दरसन देते. पाछें इन वैष्णवनके बेटा बुलावन आए. परि ये दोउ गये नाहीं. सदैव श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवा, ब्रजबास, भगवद् वार्ता करते.

भावप्रकाश :
या वार्तामें यह जतायो, जो वैष्णवकों भगवद्वार्ता किये बिनु सर्वथा न रहनो. काहेतें ? जो भगवद्वार्ता किये तें श्रीठाकुरजी आप सुखी होत हैं. सो भगवद् वार्ता ऐसो पदारथ है.

सो ये दोउ भाई पटेल वैष्णव श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं. सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१०९।।

१९०-एक ब्राह्मनी, उपरावारी

अब श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी एक ब्राह्मनी, ऊपरावारी, अड़ेलमें रहती, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'अनन्या' है. ये 'मैना' तें प्रगटी है तातें उनके भावरूप हैं.

ये अड़ेलमें एक ब्राह्मनके प्रगटी. सो बरस पांचकी भई तब याकौ विवाह जातिके लरिकासों भयो. पाछें केतेक दिनमें सीतलाकौ उपद्रव भयो. तामें वाकौ धनी मर्यो. तब यह ब्राह्मनी बरस पचीसकी ही. सो पिताके घर आइ रही. ता पाछें केतेक दिनमें वाके माता पिता हू मरे. तब वह घरमें अकेली रहे. सो वाकौं दिन कटे नाहीं. तब परोसिनीने कह्यो, जो तू वैष्णवनकी मण्डलीमें जायो करि. तहां भगवद्वार्ता बोहोत आछी होत है. तब यह वैष्णवनकी मण्डलीमें जान लागी पाछें वैष्णवनकी सङ्ग तें वह श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी भई.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वा ब्राह्मनीकों श्रीगुसांईजीने अड़ेलमें नाम सुनायो. ता पाछें श्रीगुसांईजीने वा ब्राह्मनीकों कृपा करिकै ब्रह्मसम्बन्ध करवायो. पाछें ब्राह्मननीने बिनती कीनी, जो महाराज ! घरमें मेरे दिन कटत नाहीं. तातें कृपा करिकै कछू टहल दीजिये. तब श्रीगुसांईजी वाकों कृपा करिकै श्रीनवनीतप्रियजीकी रसोईमें परचारगी करनकी कहे. तब वह ब्राह्मनी श्रीनवनीतप्रियजीके खासा बासन मांजती. रसोईमें परचारगी करती. सो एक दिन दारिकै वासनमें भीतर कारो दाग रहि गयो. सो खबरि न परी. तब दूसरे दिन रसोई भई. सो श्रीगुसांईजी, राजभोग धरन लागे. तब श्रीनवनीतप्रियजीने श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो काल्हि दारिके बासनमें दाग रहि गयो हतो. तातें रसोई सब छूइ गई. परचारगनी बासन आछे मांजे नाहीं है. तब श्रीगुसांईजीने सगरी सामग्री लेकै गांइनकों डारि दीनी. पाछें तत्काल और सामग्री सिद्ध करिकै मङ्गला तें राजभोग तांई पहोंचे. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजीकों अनोसर करायकै अपनी बैठकमें पधारे. तब परचारगनीकों बुलायकै ब्रजबासीकों आज्ञा किये, जो या ब्राह्मनीकों पार उतारि आवो. तब वा ब्राह्मनीने कही, जो राज ! मेरो अपराध कहा है ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो काल्हि दारिके बासनमें कारो दाग रहि गयो हतो. सो बासन आछी भांति क्यों नाहीं मांजे ? तब उन कह्यो, जो अनजाने कारो

दाग रहि गयो होइगो. ता बातको मैं कहा करों ? तब ऐसें बचन सुनिकै श्रीगुसांईजी वा परचारगनीके उपर बोहोत रिस कीनी. तब वा ब्रजबासीकों आज्ञा किये, जो या ब्राह्मनीकों अड़ेलके घाट पर अब ही नावमें बैठारिकै पार उतारि आवो.

भावप्रकाश :
यामें यह जताए, जो वैष्णवनकों गुरुनके सन्मुख दीनतासों बोलनो, अपराध भय मानिकै.

तब वह ब्रजबासी वा बाह्मनीकों अड़ेलके घाट पर नावमें बैठारिकै पार उतारि आयो. तऊ वा ब्राह्मनीकों श्रीगुसांईजीकी उपर नेक हू दोष बुद्धि न आई. मनमें कह्यो, जो प्रभु हैं, फेरि कृपा करिकै बुलावेंगे.

भावप्रकाश :
काहेतें, जो प्रभु अपने जीवकों सर्वथा छोरत नाहीं.

फेरि मनमें विचारी, जो अब मैं निर्वाह कैसें करों ? तब वा ब्राह्मनीने घाटके उपर एक छानि छवाय लीनी. और घाट उपर बेल गांई आवें सो गोबर बोहोत होई. ताके ऊपरा थापें. और घाटे पै आए गए काहू भले मनुष्यसों चून मांगि लेई. तामें निर्वाह करे. और वा झोंपरीमें परी रहे. अहर्निस श्रीगुसांईजीके चरन कमलकौ स्मरन करे. सो कछूक दिनमें ऊपरानकौ बड़ो ढेर भयो.

सो एक दिन एक ब्रजबासीसों श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो ऊपरा नाहीं है. सो नाव ले जांइकै प्रयाग जांइकै ऊपरा ले आउ जो दाम लगे सो दे आवो. तब ब्रजबासी एक बड़ी नाव ले जांइकै पार गयो. तब वा ब्रजबासीकों देखिकै वा ब्राह्मनीने जान्यो, जो यह श्रीगुसांईजीकौ सेवक है. तब वा ब्रजबासीसों श्रीकृष्ण - स्मरन कर्यो. तब पूछ्यो, जो नाव लिवायकै कहां जात हो ? तब या ब्रजबासीने कह्यो, ऊपरा चहियत हैं, सो श्रीगुसांईजीने मोकों प्रयाग पठायो है. सो प्रयाग जांइकै ऊपरा लाउंगो. तब वा ब्राह्मनीने कही, जो मैं ऊपरा थापे हैं सो सब श्रीगुसांईजीके हैं. सो तुम ले जाउ. मैं श्रीगुसांईजीकी सेवकनी हूं. तब यह सुनिकै वह ब्रजबासी बोहोत प्रसन्न भयो. तब

वह ब्राह्मनी और वह ब्रजबासी दोउ मिलिकै नाव ऊपरानसों भरे. सो नाव ऊपरानसों भरि गई. और ऊपरा बोहोत बचे. तब वा ब्राह्मनीने वा ब्रजबासीसों कह्यो, जो नाव पार ले जाउ ? ऊपरा धरायकै फेरि एक बेर ल्यावो. तब सगरे ऊपरा जांइगे. तब वा ब्रजबासीने कही, जो भली बात है. पाछें वह नाव पार ले जांइ पांच सात मनुष्य सङ्ग लगायके वह ब्रजबासी ऊपरा ढोवन लाग्यो. तब वा ब्रजबासीसों श्रीगुसांईजी आप पूछे जो अबकी बेर ऊपरा बोहोत आछे हैं. और तू बोहोत बेगि नाव ल्यायो. सो ऊपरा कहां मिले ? तब ब्रजबासीने वा ब्राह्मनीकी दण्डवत् करी. और कह्यो, जो महाराज ! वह परचारगनी आप पार उतारी ही. सो वह पार झोंपरी छायकै बैठी है. घाट उपर बोहोत मनुष्य आवत जात हैं तिनसों चून मांगि निर्वाह करत हैं. और घाटपै गाय भैंसि बेल बोहोत आवत हैं. सो गोबर बोहोत होत है. ताके ऊपरा थापत हैं. सो मोसों कह्यो, जो ये ऊपरा सब श्रीगुसांईजीके हैं. मैं श्रीगुसांईजीकी दासी हूं. सो ले जाउ. सो नाव भरिकै ऊपरा ल्यायो हूं. और एक नाव भरिकै ऊपरा और होंइगे. सो वा ब्राह्मनीने कह्यो, जो यह नाव ले जावो दूसरी नाव और ल्याइओ. तब यह सुनिकै श्रीगुसांईजी वा ब्राह्मनीके ऊपर बोहोत प्रसन्न भए.

भावप्रकाश :
काहेतें जो याकों दोष बुद्धि नाहीं है. एकरस भाव है. तातें प्रसन्न भए.

तब श्रीगुसांईजी वा ब्राह्मनीकों बुलाइवेकौ विचार कियो. तब वा ब्रजबासीसों कहे, जो अब फेरि नाव ले जांइकै नावमें ऊपरा भरिकै वा ब्राह्मनीकों नावमें बैठारिकै यहां लिवाइ ल्याइयो. पाछें वह ब्रजबासी घरमें ऊपरा धरिकै पाछें नाव लेकै पार आयो. तब वा ब्रजबासीने वा ब्राह्मनीसों कह्यो, जो श्रीगुसांईजी तेरे उपर प्रसन्न होंइकै तोकों बुलाई है. तब यह सुनिकै वह ब्राह्मनी बोहोत प्रसन्न भई. पाछें सगरे उपरा नावमें भरिकै पाछें वह ब्राह्मनी अपने श्रीठाकुरजीकों नावमें चढायकै पाछें बैठी. सो वह नाव पार आई. सो उत्थापनके समै श्रीगुसांईजी न्हायवेकों पधारे हते. ता समै वह ब्राह्मनी अत्यन्त आतुर होंइकै जलघरामें आइ दण्डवत् करी. नेत्रनमें तें आंसू जात हैं. मुख तें कछू बोलत आवत नाहीं. तब ऐसी दसा देखिकै श्रीगुसांईजीकों वाकी बोहोत दया आई. ता पाछें श्रीगुसांईजी अपने श्रीहस्त कमलसों वा ब्राह्मनीकौ हाथ पकरिकै ठाढ़ी किये. और कह्यो, जो तेरो अपराध तो थोरो हतो और दण्ड तोकों बोहोत भयो. परि तू धन्य है. सो तेनें

ऐसो धीरज धर्यो. तब वा ब्राह्मनीने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! मोसों अपराध तो बोहोत ही पर्यो हतो, जो सगरी सामग्री छूई गई. प्रभुनकों ढील भई. या अपराध तें मोकों तीन्यो लोकमें कहूं ठौर न हती. सो आप तो परम दयाल हो तो थोरे ही में मेरो अपराध निवृत्त कियो. तब ये वचन वा ब्राह्मनीके सुनिकै आप बोहोत प्रसन्न भए.

भावप्रकाश :

या वार्तामें यह जताए, जो जीवकों अपने रञ्चक दोषकों हू बोहोत बड़ो करि जाननो. तो दीनता होंई. और शिक्षाकौ अनुग्रह करि जाननो. यहू कहे.

पाछें श्रीगुसांईजी आपनो चरनामृत दियो. तब वा ब्राह्मनीकों आज्ञा करी, जो बेगि न्हाय अपनी सेवामें जाय लगो. सेवा सावधानीसों दोउ बार करनो. यह श्रीमुखके बचन सुनिकै वह ब्राह्मनी बोहोत ही प्रसन्न भई. ता दिन तें वह ब्राह्मनी भय संयुक्त अत्यन्त प्रीतिसों सेवा करती. सो कछूक दिनमें श्रीनवनीतप्रियजी सानुभावता जतावन लागे.

सो एक दिन सेनभोगके दूधमें बूरा थोरो पर्यो हतो. तब वा ब्राह्मनीसों श्रीनवनीतप्रियजी कहें, जो आज सेन भोगके दूधमें बूरा थोरो हतो. सो यह आज्ञा श्रीनवनीतप्रियजीकी सुनिकै ताही समै अर्द्धरात्रिकों श्रीगुसांईजीके पास जांइकै बिनती करी, जो महाराज ! आज सेन - भोगके दूधमें बूरा थोरो हतो. श्रीनवनीतप्रियजीकी आज्ञा भई है. सो भण्डारीकौ दोष है. तब श्रीगुसांईजी ताही समै भण्डारीकों आज्ञा करी, जो आज सेनभोगके दूधमें बूरा थोरो क्यों कर्यो ? तब भण्डारीने बिनती करी, जो महाराज ! ऊजरो बूरा थोरो ही रह्यो. सो पैसा चारि भरि घटती हतो. सो अब प्रातःकाल मंगाय लेउंगो. तब श्रीगुसांईजी भण्डारीसों खीझिकै कहे, जो आज पाछें पैसा भरि हू घटती मति करियो. तब भण्डारीने बिनती करिकै कह्यो जो महाराज ! आज पाछें नेगमें घटती कब हू न करूंगो. सो या प्रकार वा ब्राह्मनीके उपर श्रीनवनीतप्रियजी बोहोत प्रसन्न रहते.

भावप्रकाश :

या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो सेवा - भय - प्रीति संयुक्त करनी. और गुरुनपै दोष बुद्धि सर्वथा न करनी.

सो वह ब्राह्मनी श्रीगुसांईजीकी ऐसी परम कृपापात्र भगवदीय ही. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं. सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।११०।।

११-मां बेटा ब्राह्मन, जिननें श्रीगुसांईजीकी सेवा कीनी

अब श्रीगुसांईजीके सेवक मां - बेटा, ब्राह्मन, गुजरातके, जिनने श्रीगुसांईजीकी सेवा करी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनके नाम 'प्यारी' और 'दुलारी' हैं. सो प्यारी तो इहां मा भई और दुलारी बेटा भयो. ये दोउ मैना ते प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं.

सो ये दोउ मां - बेटा ब्राह्मन हे. सो गुजरातमें एक गाममें रहत हुते. सो एक समै श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी पधारत हुते. सो मारगमें इन मां - बेटाके गाममें डेरा किये. तब गामके वैष्णव सब दरसनकों आये. उनमें या मां - बेटा हू श्रीगुसांईजीके दरसनकों आए. सो दरसन करि थकित व्है रहे. साक्षात् कोटि कन्दर्प लावन्य पुरुषोत्तमके दरसन भए. तब इन श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! कृपा करि हमकों सरनि लीजिये. तब श्रीगुसांईजी आप दोउनकों नाम सुनाये. पाछें वैष्णवन कही, जो तुम निवेदनकी बिनती और हू करो. तब दोउन श्रीगुसांईजीसों निवेदनकी बिनती किये. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो अब ही नाहीं श्रीगोकुल अइयो, तहां तुमकों निवेदन करावेंगे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वे दोउ मां - बेटा द्रव्यपात्र हते. सो वे दोउ मां - बेटा विचार करिकै ब्रजकों चले. सो श्रीगोकुल आए. सो श्रीनवनीतप्रियजीके

राजभागेके दरसन किये. पाछें बैठकमें आयकै श्रीगुसांईजीके दरसन किये. तब श्रीगुसांईजीकों भेट करी. तब श्रीगुसांईजीने पूछी, जो तुम कब आए ? तब इन वैष्णवनने कही, जो राजकी कृपा तें श्रीनवनीतप्रियजीके राजभोगके दरसन आय किये. तब श्रीगुसांईजीने आज्ञा करी, जो महाप्रसाद इहांई लीजो. पाछें इन वैष्णवकों आप श्रीहस्तसों जूंठिनि धरी. पाछें आप बैठकमें बिराजे, बीरा अरोगे. पाछें वे वैष्णव महाप्रसाद ले आए. तब श्रीगुसांईजी आप प्रसादी बीरा उनकों दे कै आप पोढ़े. पाछें वे वैष्णव तो अपने डेरा आये. पाछें सेन समै दरसनकों आए. सो दरसन किये. ता पाछें श्रीगुसांईजी अपनी बैठकमें कथा कहन लागे. तब इन वैष्णवनने हू सुनी. पाछें जब कथा कहि चुके तब उन ब्राह्मन वैष्णव बिनती करि, जो राज ! कृपा करिकै ब्रह्मसम्बन्ध कराइये. तब श्रीगुसांईजीने आज्ञा करी, जो काल्हि ब्रत करियो. परसों तुमकों ब्रह्मसम्बन्ध करावेंगे. तब उन ब्राह्मन (मां - बेटा) वैष्णवन ब्रत कियो. ता पाछें दूसरे दिन सवेरे श्रीयमुनाजीमें स्नान करिकै अपरसमें श्रीगुसांईजीके आगें हाथ जोरिकै ठाढ़े भए. तब श्रीगुसांईजीने श्रीनवनीतप्रियजीके सन्निधान उन दोउन मां - बेटानकों ब्रह्मसम्बन्ध करवायो. पाछें थोरेसे दिन रहिकै श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! आज्ञा होंइ तो श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करिकै ब्रजयात्रा करि आवें. तब श्रीगुसांईजीने आज्ञा दीनी, जो आछे, करि आउ ! तब वे मां - बेटा दोउ श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिकै चले. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. पाछें सम्पूरन ब्रजयात्रा करिकै श्रीगोकुल आए. श्रीगुसांईजीके दरसन किये. तब श्रीगुसांईजीने पूछी, जो ब्रजयात्रा करि आए ? तब उन बिनती करी, जो राजकी कृपा तें श्रीमुख निरखिकै ब्रजयात्रा करि आए. पाछें उन ब्राह्मन वैष्णवनने और हू बिनती करी, जो कृपानाथ ! अब कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजीने कही, जो श्रीठाकुरजीकी सेवा करो. तब इन ब्राह्मन वैष्णवने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो कृपानाथ ! हमारो ऐसो मनोरथ है, जो आपकी सेवा करें. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो हमारी सेवा कौन भांति करोगे ? तब इन ब्राह्मन वैष्णवने कही, जो राज ! जा भांति श्रीठाकुरजीकी सेवा करे ता भांति हम करेंगे. सिंघासन, खण्डपाट सब श्रीठाकुरजीके से राखेंगे. और पटटा बिछायकै झारी भरि धरें, भोग समर्पे, आप अरोगो. हम तो बाहिर बैठेंगे. समय होय तब भोग सराय आचमन मुखवस्त्र कराउं. या भांति कृपा करो. सो हम सेवा करें. तब श्रीगुसांईजी आप तो परम दयाल है. सो आपकौ नाम ''भक्तेच्छा पूरकाय नमः'' है. सो आपने कही, जो काहूके आगें यह (सेवा - प्रकार) प्रगट न होंय तो हम तेरे घर पधारेंगे. प्रगट होंइकै अरोगेंगे. और जो कहूं कोई जानेगो तो हम एक छिन हू न बिराजेंगे.

भावप्रकाश :
काहेतें, जो यह एकान्तिक सेवाकौ प्रकार है. सो केवल भावरूप हैं. तातें प्रगट कियो नाहीं जांई.

तब उन वैष्णवन कही, जो आज्ञा. पाछें सेवा तो कछू पधराई नाहीं. श्रीगुसांईजीकौ स्वरूप हृदयमें राखे.

ता पाछें वे दोउ मां - बेटा श्रीगुसांईजीसों बिदा होंइकै अपने घर राजनगर आए. तब मां ने बेटासों पूछ्यो, जो तेरी सगाई ब्याह करे. बहू आवे तो तोकों सेवामें सहायक होइगी. तब बेटाकौ मन तो सेवामें हतो. सो बेटाने कही, जो द्रव्य अलौकिक सेवामें लगे तो आछो. जो मेरे तो विवाह करनो नाहीं. पाछें वा डोकरीने अनेक भांतिसों बेटाकौ मन देख्यो. परन्तु बैटाकौ मन तो सेवामें है. तातें ब्याह कियो नाहीं. पाछें इन वैष्णवननें दूसरो नयो घर करवायो. ताके भीतर एकान्तमें मन्दिर करवायो. सो सब ब्योंत निज मन्दिर, तिवारी, सिज्या मन्दिर, भोजन घर, चोक, डोल - तिवारी जलघणा, खासा, सेवकी, सब ब्योंत ज्योंकौ त्यों करवायो. और अपने रहिवेकौ न्यारो करवायो. ऐसो करवायो जो कोऊ न जानें, जो मन्दिर है. पाछें सिंघान चन्दौवा पिछ्वाई सिज्या सब साज बड़ो करवायो. और भीतर कुआं. सब ब्योंत भीतर. बाहिर प्रगट लेस नहीं.

और मन्दिरकौ जल तथा पोतना सब सेवा अपरसमें करते. पाछें सब सामग्री सिद्ध करिकै भोजन घरमें पटटा बिछायकै भोग सब विधि पूर्वक साजिकै झारी भरिकै हाथ जोरिकै जैसें दरसन किये हते तैसे स्वरूपकौ ध्यान करि बिनती करी, जो कृपानाथ ! श्रीठाकुरजी तो श्रीमहाप्रभुजीकी कानि तें अरोगत हैं और आप श्रीमहाप्रभुजीकी कानि तें तथा आपकी कानि आप राखिकै अरोगोगे. ता पाछें भोग समर्पिकै बाहिर आए. कीर्तन करन लागे. सो श्रीगुसांईजी आप कृपा करिकै अरोगिवेकों पधारे. सो भली भांतिसों अरोगे. पाछें समय भयो भोग सरायो. आचमन मुखवस्त्र बीड़ा सब विधिपूर्वक किये. आर्ति, घण्टा, झालर, कछू नाहीं. पाछें अनोसर करिकै वह महाप्रसाद और पात्रनमें ठलायकै पात्र मांजिकै ठिकाने धरिकै मन्दिरकी सब सेवा पहोंचिकै गांइकी पातरि दीनी. पाछें महाप्रसाद लेवे बैठे. सो महाप्रसाद अत्यन्त अलौकिक स्वाद भयो. जो साक्षात् श्रीगुसांईजी अरोगे, सो क्यों न होंई ? सो या भांति नित्य सेवा करें. और समय पर कोई

अचानक वैष्णव आवे तो उनकों महाप्रसाद लिवायकै बिदा करि देते. कोइकों रहिवे न देई. या भांति करते. ऐसें करत द्रव्य तो थोरो सो रह्यो. तब बेटाने अपनी मा तें कह्यो, जो द्रव्य तो थोरो सो रह्यो. द्रव्य बिना सेवा न बने. तातें तुम कहो तो एक बरस दिना परदेस करिकै द्रव्य ले आउं. तब मां ने कही, जो सेवा छूटि जाइगी. तब बेटाने कही, जो तुम सेवा जैसें होत हैं तैसें नित्य करियो. एक बरसमें चाहे तैसें करिकै आइ जाउंगो. तब मांने कही, जो आछो. पाछें बेटा तो परदेस गयो. और मां वैसें ही सेवा करें. सो एक दिना साग सम्हारत मनमें ऐसी आई, जो बेटा आवें तो सेवामें सहायक होंई. पाछें सामग्री सिद्ध करिकै भोग समर्पे. तब श्रीगुसांईजीने सागकौ कटोरा सरकाय दीनो. सो वा बाईने कीर्तन करि, समय भयो तब भोग सरायो. तब वाने देख्यो तो सागकौ कटोरा दूरि धर्यो है. तब वा बाईने आचमन मुखवस्त्र करावत बिनती करी, जो राज ! साग क्यों नाहीं अरोगे ? तब श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो साग सम्हारतमें तेरो चित्त कहां हतो ? तब इन कही, जो बेटामें हतो. तब आपने कही, जो लौकिकमें मन क्यों चलायो ? तातें साग नहीं अरोगे. ऐसें बानी होंई. जैसें आकास - बानी. ऐसें - ऐसें कोई दस बेर जताए.

और सामग्रीमें कछू चूक परे, खारो खाटो होंइ, तब दूसरे दिन बिनती करती. तब आप आज्ञा करते, जो तुमने महाप्रसाद लीनो के नाहीं लीनो ? तब वह कहती, जो राज ! लीनो. तब आप आज्ञा करते, जो खबरि न परी. ऐसें साक्षात् बानी होई. पाछें केतेक दिनमें बेटा आयो. सो द्रव्य ले आयो. पाछें वे या प्रकार मिलिकै सेवा भलीभांतिसों दोउ मां - बेटा ब्राह्मन वैष्णव सेवा करन लागे. श्रीगुसांईजी आप सानुभावता जनावन लागे.

भावप्रकाश :
यह कहि यह जताये, जो सेवा ''यथा देहे तथा देवे'' या प्रकार मन लगायकै सावधानीसों करनी.

'तातें वे दोउ मां - बेटा श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय है. जिनने श्रीगुसांईजीकी बानीकों स्वरूपात्मक करि जानी. और भावात्मक सेवा कीनी. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१११।।

११२-एक चोर, दिल्लीको

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक चोर, दिल्लीमें रहतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनको नाम 'तुरङ्गा' गोप है. सो 'मनसुखा' तें प्रगट्यो हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो श्रीगुसांईजी एक समै श्रीगोकुलजी तें दिल्ही पधारे. तहां वैष्णवनकी भेट बोहोत आई. और एक वैष्णव अपनी बहूके गहना वस्त्र ल्यायकै श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो महाराजाधिराज ! मैं आपके सङ्ग श्रीगोकुलजी चलिकै तहां वास करूंगो. आप यह गांठि धरो और लिवाय ले चलो. तब श्रीगुसांईजी यह वैष्णवसों कहे, जो धरि जाउ. तब वह वैष्णव धरि गयो. पाछें रात्रिकों एक चोर आयो. सो सगरी भेंटकौ द्रव्य, कपरा, बासन, सब बांधि दूसरेके हाथ पठायो. ता पाछें धरोहरकी गांठि उठाई. तब वह गांठिकों पकरिकै श्रीगुसांईजी कहे, जो यह पराई धरोहर है. तातें वह धरोहर वारो हम पर दोष बुद्धि करेगो. तातें हमारे गहना यह न्यारे धरे हैं सो ले जा. तब वह चोर छोरिकै गयो. पाछें दूसरे दिन वह सगरी वस्तु ले गयो सो सब वह चोर अपने घर तें ले और कछू अपनी ओर तें भेंट ले आयकै श्रीगुसांईजी पास बिनती करि कह्यो, जो यह सब आपकौ माल है सो आप रखवाइए.

पाछें बिनती कीनी, जो महाराज ! मैं चोर हूं. आपकी सरनि आयो हूं. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो चोरकों तो हम सेवक न करेंगे. तब चोरने बिनती कीनी, जो महाराज ! आप जैसें आज्ञा करो तैसेंई करूंगो. परि मोकों कृपा करिकै सरनि लीजिए. आप तो ईश्वर हो. आपकी दयालताकौ पार नाहीं है. तब श्रीगुसांईजीने वासों आज्ञा करी, जो तू चोरी तो छोरि सकत नाहीं. परि तू दया राखियो, और सांच

बोलियो. तो तेरो कारज होइगो. तब चोरने कही, जो महाराज ! आप सांची कही. जो मेरो सुभाव चोरी करनकौ है. तातें चोरी किये बिनु रह्यो जात नाहीं. परि आज पाछें बड़ी ठौर चोरी करूंगो. काहू गरीबकों न सताउंगो. और सांच बोलुंगो. तब श्रीगुसांईजी आप वा चोरकों कृपा करिकै दूसरे दिन नाम दे सेवक कियो. पाछें वह चोर श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिकै गयो. तब एक सहरमें गयो. सो जब और ठिकाने चोरी करनकों गयो तब दया आई. सो पाछो आयो. फेरि एक राजाके यहां अर्द्धरात्रिके समै गयो. तब जामा, मोतीके कड़ा पहरिकै ड्योढ़ीपै गयो. तब ड्योढीवानने पूछ्यो, जो तुम कौन हो ? कहां जाउगे ? तब वाने कह्यो, जो मैं चोर हूं कहा तोकों सूझत नाहीं ? राजाके पास जाय रह्यो हूं. सो ड्योढीवानने अपने मनमें जाने, जोये चोर नाहीं. यह कोई खुसमसकरा है. काहेतें, जो चोर ऐसें कहे नाहीं जो हम चोर हैं. तातें इनकों रोको मति. याही भांति वह सात ड्योढी लांघिकै वह चोर जहां राजा रानी सोए हते तहां गयो. सो भीतर जांइ जवाहरकानेके घरकौ ताला तोरिकै वहां तें रानीकौ बंटा, गहनाकों लै कै ड्योढीपै आयो. तब ड्योढीवानने टोके, जो तुम कैसें गए ? और कैसें आए ? कौन हो ? तब वाने कही, जो मैं चोर हूं. राजाके पास गयो हतो. सो चोरी करिकै ले चल्यो. तोकों सूझत नाहीं ? सो ड्योढीवानने जान्यो, जो ये हमारी हांसी करत है. कहूं चोर ऐसें कहत होंगे ? या प्रकार सब ड्योढीवानकों उनने ऐसें कह्यो. सो सबननें जान्यो, जो कछू राजाके कामकों आयो होयगो. सो सबनने जान दियो. पाछें वह चोर अपने ठिकाने जांइकै बंटा धरिकै सोयो. पाछें सबेरो भयो तब राजाके यहां चोरीको हल्ला भयो. सो चोरको ढूंढनकों मनुष्य गए. सो दीवान हू साथ गयो. पाछें दिन घरी चारि चढ्यो तब उठिकै वह चोर दांतिन करत हतो. तब उहां ही दीवान चोरकी तलास करत हतो. सो वाहीकों देख्यो. तब पूछी, जो तु या समै दांतिन क्यों करत है ? तब वाने कह्यो, जो मैं राजाके घर चोरी करिवे गयो हतो. सो बंटा ल्यायो. सो घरमें धरिकै सोयो. सो अब उठ्यो हूं. तब दीवानने जांयकै राजासों कही, जो एक चोर तलास भयो है. तब राजाने कही जो मेरे पास ल्याओ. तब दीवान वा चोरकों राजाके पास ल्याए. तब राजाने पूछी, जो तुमने चेरी कैसें करी ? तब वा चोरने कह्यो, जो मैं ड्योढीपैं पूछत - पूछत तुम्हारे पास आयो. सो गहना, बंटाकों लै कै ड्योढ़ीपै कहत - कहत मेरे ठिकाने गयो. तब राजाने कही, जो गहनाकौ बंटा ल्याउ. तब बंटा ल्याइकै राजाकों दिखायो. तब राजा न कही, जो ऐसो आदमी सांचो बोले सो कहां मिले ? पाछें दीवानसों कही, जो यह कुलकुलां दीवान है. याके पास काम कर्ता हू है. तब सों वह चोर दीवानगीरी करन लाग्यो. पाछें केतेक दिनमें श्रीगुसांईजी उहां पधारे. सो यह दीवान सन्मुख गयो. तब मनुष्यने कही, जो कोई राजा आवत है. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो दीवान आवत है. पाछें वाने जायकै

श्रीगुसांईजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करी और कही, जो मैं आपकौ चोर हूं. और यह दीवानगीरी आपकी दई भई है. पाछें श्रीगुसांईजी उहां तें द्वारिका पधारे.

भावप्रकाश :
या वार्तामें यह जतायो, जो जीव कैसो हू दोषसों भर्यो क्यों न होंई, परि जो सरनि आवत है ताकों प्रभु आप निश्चय अङ्गीकार करत हैं. तातें पुष्टिमार्गमें सरनि मुख्य है.

सो वह चोर वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भयो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।११२।।

११३-तानसेन गवैया

अब श्रीगुसांईजीके सेवक तानसेन ब्राह्मन, पात्साहके गवैया, ग्वालियरके, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं.

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनको नाम 'दीपा' है. सो 'दीपा' श्रीठाकुरजीकौ अन्तरङ्ग सखा है. ये 'मनसुखा' गोपतें प्रगट्यो है, तातें उनके भावरूप हैं.

ये तानसेन ग्वालियरमें एक ब्राह्मनके जन्मे. सो बरस पांचके भए. तब इनकों एक म्लेच्छकौ सङ्ग भयो. सो म्लेच्छ सङ्गीत - कलामें बोहोत निपुन हतो. सो वाने तानसेनकों सङ्गीत सिखायो. सो तानसेन बोहोत सुन्दर गावन लागे. ता पाछें तानसेन सरस्वतीकी आराधना किये. तब सरस्वती वाकों दरसन दे कह्यो, जो कछू मांगि. तब तानसेनने कह्यो, जो मोकों राग सिद्ध होंई. तब सरस्वती कहे, जो 'तथास्तु'. या प्रकार सरस्वती तानसेनकों वर दे अन्तर्धान भई. पाछें तानसेन गावें तब हिरन उनके निकट दोरि आवे. ऐसो सुन्दर गावन लागे. सो एक समय ये दिल्ली गए. सो पात्साहके पास गए. सो पात्साहकों गानो

सुनाए. सो पात्साह उनकौ गानो सुनि बोहोत प्रसन्न भयो. सो बोहोत द्रव्य दियो. पाछें पात्साह तानसेनकों कहे, जो तू हमारे पास रहे. पाछें इनकौ महिना करि दियो. सो ता दिनतें तानसेन पृथ्वीपतिके पास रहे. सो दरबारमें जान लागे. पात्साहकों गानो सुनावे. या भांति रहे.

पाछें जो कोऊ गायवेमें समुझे ताके पास तानसेन जातें. सो राजा - महाराजा, सन्त - महन्त सब कोऊ इनकौ आदर करते. पात्साहकौ गवैया जानि बोहोत द्रव्य देते. ऐसें करत तानसेन जगतमें प्रसिद्ध भए.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो एक समै उष्णकालके दिन हते. सो श्रीगुसांईजी गोविन्दघाटपै बिराजे हते. तब गोविन्दस्वामी आदि और हू भगवदीय पास बैठे हते. ता समै तानसेन श्रीगुसांईजी पास गायवेकों आए. तब तानसेनकों देखिकै श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो तानसेन ! कछू कीर्तन गाउ. तब तानसेनने एक पद गायो सो पद

राग : लाछसाख

तेरे मनमें किलो एक गुनरे जो तो पैं आवे तो प्रकास कररे ।
सप्त सुर तीन ग्राम इकइस मूर्छना जोइ सुर आवे तोपे सोइ सुर भररे ।
हिरन बुलाये, पगन पराये, मेहा बरसाये तोकों सरस्वती बररे ।
कहे मियां 'तानसेन' सुनेरे गुनीजन, सब गुनियनके पांयन पररे ।

सो यह पद सुनिकै श्रीगुसांईजी तानसेनकों पात्साहकौ गवैया जानि रुपैया ५००/- पांचसौ दिये. ता पर एक कोड़ी और दिये. तब तानसेन पूछ्यो, जो महाराज ! यह कोड़ी काहेकों दीनी ? तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो तानसेनजी ! तुम पात्साहके गवैया हो. तातें तुमकों रुपैया पांचसौ हम दिये हैं. और यह कोड़ी तो तुम्हारी बानी सुनिकै दीनी है. तब तानसेनने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो

महाराज ! हमकों आप कछू अधकी सुनाइए तब हम जाने, जो आपने हमारी कीमत करी सो उचित है. नांतरु हम कैसें जाने ? तब श्रीगुसांईजी आप मुसिक्याइकै गोविन्दस्वामीकी ओर देखें. पाछें गोविन्दस्वामीसों आज्ञा कीनी, जो गोविन्ददास ! कछू कीर्तन गाउ. तब गोविन्दस्वामीने 'सारङ्ग' रागमें एक गायो. सो पद -

राग : सारङ्ग
श्रीवल्लभनन्दन रूप अनूप स्वरूप कह्यो नहीं जाई ।
प्रगट परमानन्द गोकुल बसत हैं सब जगतके सुखदाई ।
भक्ति मुक्ति देत सबनकों निज जन पै
कृपा प्रेम बरखत अधिकाई ।।
सुखमय सुखरूप सुखद एक रसना कहांलों बरनौं
'गोविन्द' बलि बलि जाई ।

ता पाछें दूसरो गायो -

राग : सारङ्ग
सुनिरी सखी दुपहरी की बिरियां बैठि झरोखन पोवति हार ।
ओंचका आय गये नन्दनन्दन मोतन कांकरी चितये डार ।
हों सकुच मुख मोरि ठाढ़ी भई गुरुजन लाज विचार ।
'गोविन्द' प्रभु पिय रसिक सिरोमनि सेन बताई भुजा पसार ।

सो ये पद सुनत ही तानसेन चकित होंइ रहे. पाछें दोउ हाथ जोरि श्रीगुसांईजीसों बिनती किये, जो महाराज ! इनके आगें मेरो गानो ऐसो है. जैसे मखमलके आगें टाट होत हैं.

ता पाछें तानसेन गोविन्दस्वामीके निकट जांइ बिनती किये, जो तुम मोकों कृपा करि कछू गान सिखाओ. तब गोविन्दस्वामी कह्यो, जो हम श्रीगुसांईजीके सेवक बिना काहूसों सम्भाषन हू करत नाहीं. तब तानसेन श्रीगुसांईजीसों बिनती किये, जो महाराज ! कृपा करि मोकों सेवक कीजिए. तब श्रीगुसांईजी तानसेनकों नाम सुनाए. पाछें तानसेनने श्रीगुसांईजी तानसेनकों नाम सुनाए. पाछें तानसेनने श्रीगुसांईजीकों एक सहस्त्र मुद्रा भेंट करी. और बिनती कीनी, जो महाराज ! आप गोविन्दस्वामीसों आज्ञा करें, जो मोकों ये गान विद्या सिखावे. तब श्रीगुसांईजी गोविन्दस्वामीसों आज्ञा किये, जो गोविनन्ददास ! इनोंको कीर्तन सिखइयो. तब तानसेन कछूक दिन गोविन्दस्वामीके पास रहे. मार्गकी प्रणाली अनुसार कीर्तन सीखे. ता पाछें श्रीगुसांईजीकी आज्ञा पाइ श्रीनाथजीके सन्मुख कीर्तन करन लागे.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

सो तानसेन श्रीनाथजीके सन्निधान कीर्तन करते. सो श्रीनाथजी तानसेनकी कीर्तन सुनि बोहोत प्रसन्न होते. सो तानसेन अमल - पानी करत हुते. सो उनके मुखमें सों दुर्गन्ध आवती. सो एक समै तानसेन श्रीनाथजीके सन्निधान कीर्तन करत हते. तब एक वैष्णवने उनकों टोके. और कह्यो, जो तुम अमल - पानी मति करो. तुम्हारे मुखसों दुर्गन्ध आवत हैं. सो श्रीनाथजीकों कैसें सुहात होइगो ? तब तानसेनने दूसरे दिन अमल - पानी छोरि दियो. पाछें तानसेन राजभोग समै कीर्तन करन लागें. तब कीर्तन आछें होंइ नाहीं. तब श्रीगुसांईजी तहां श्रीगोवर्द्धननाथजीकों दर्पन दिखावत हते. तब श्रीनाथजी श्रीगुसांईजीसों आज्ञा किये, जो आज कीर्तन फीके लगत हैं. सो तानसेन आछी भांति गावत नाहीं है. तातें उनसों कहो, जो आछी भांति कीर्तन गावे. तब श्रीगुसांईजी तानसेनकों कहे, जो आज ऐसें फीके क्यों गावत हो ? तब तानसेनने कही, जो महाराज ! अमल - पानी कियो नाहीं. एक वैष्णव मोसों कहे, जो श्रीनाथजीकों दुर्गन्ध आवत है, तातें तुम अमल - पानी मति करो. तातें महाराज ऐसें होत है. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो तुम पहिले जैसें करत हुते तैसें करो. तामें श्रीगोवर्द्धननाथजी प्रसन्न हैं. तब तें फेरि तानसेन अमल - पानी लेन लागे. तब सुन्दर गावन लागे. सो श्रीगोवर्द्धननाथजी मुसकाये.

सो श्रीगोवर्द्धननाथजीके मुसकानके दरसन तानसेनकों भए.

भावप्रकाश :
सो या वार्तामें वह जताए, जो पुष्टिमार्गमें जा भांति श्रीगोवर्द्धननाथजी प्रसन्न रहे सोई कर्तव्य है. पुष्टिमार्गीयकौ सोई धर्म है.

'सो तानसेन श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।११३।।

११४-एक दलाल बनिया

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक दलाल बनिया, राजनगरकौ, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्त्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'स्नेहलता' है. ये मनसुखा गोपकी भतीजी है. तातें उनके भावरूप हैं.

सो यह राजनगरमें एक द्रव्यपात्र बनियाके जन्म्यो. सो वह बनिया दलाली करत हतो. पाछें यह लरिका बरस बीसको भयो तब याकौ ब्याह भयो. फेर केतेक दिन पाछें याके माता - पिता मरे. तब यह दलाली करन लाग्यो. सो याके गांठिमें निन्यानवे हजार रुपैया हते. परि यह बनिया लोभी हतो. सो कहतो, जो लाख रुपैया होंइ तो आछो. तातें द्रव्यकौ सङग्रह करे. खानपानमें हू सञ्कोच करे. सो बारह आना नित्य कमावे. सो आठ आना सो जमा करे. और बाकी चार आनामें निर्वाह करे. ऐसें करत केतेक दिन पाछें श्रीगुसांईजी राजनगर असारुवामें भाईला कोठारीके इहां पधारे. सो ता समै यह बनिया भाईला कोठारीके पास कछू कामकों आयो हतो. सो इन श्रीगुसांईजीकौ दरसन पायो. तब भाईला कोठारीकों बनियाने पूछ्यो, जो यह कौन है ? कहां रहत है ? और इनकौ नाम कहा है ? तब भाईला कोठारीने कह्यो, जो ये श्रीगुसांईजी साक्षात् ईश्वर हैं. श्रीगोकुलाधिपति हैं. इनको नाम श्रीविट्ठलनाथजी है.

और हम सब इनके सेवक हैं. तब यह बनिया कह्यो, जो हम हूकों इनके सेवक करावो तो आछौ. हम हू इनके सेवक होइंगे. तब भाईला कोठारीने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! यह बनिया सेवक होनकी कहत हैं. तब श्रीगुसांईजी आप या बनियाकी ओर मुसिक्याइकै दैखे. तब या बनियाने बिनती कीनी, जो महाराज ! कृपा करि अपनो सेवक कीजिए तो आछौ. तब श्रीगुसांईजी वाकों नाम सुनाए. पाछें वह बनिया अपने घर गयो. सो दूसरे दिन अपनी स्त्रीकों ल्याय नाम दिवायो. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप द्वारिकाजीकों पधारे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो बोहोरि एक समै श्रीगुसांईजी आप गुजरात द्वारिकाजी श्रीरनछोरजीके दर्शनार्थ पधारे. सो मारगमें राजनगर असारुवामें भाईला कोठारीके यहां डेरा किये. सो मारग जात या बनियाकों दरसन भए. सो श्रीगुसांईजीके सङ्ग ही यह बनिया भाईला कोठारीके घर आयो. तब दुपहर तांई तो श्रीगुसांईजीकी टहलमें रह्यो. इतनेमें प्यास लगी. सो घर आयो. फेरि विचार भयो, जो मैं खाली हाथन दण्डवत् कैसें करूं ? तब स्त्रीने कही, जो आज तो कछू कमाए हो नाहीं. कछू ल्याए नाहीं. तब कहीं, जो कछू दे. तब इतमें उतमें देखे तो एक खोटो नारियल पर्यो है. तब कही, जो यह लै जाउ. तब वह खोटो नारियल लै कै चल्यो ! सो जांयके श्रीगुसांईजीके आगें भेंट धरि दण्डवत् करी. तब सब वैष्णवने कही, जो महाराज ‘ हमकों तो ठगे है. परि आपसों हू ठगविद्या लगाई है. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो वैष्णव ! ये कहा कहत है ? तब वा दलालने कही, जो वे सांच कहत हैं. जो राज ! मेरी गांठिमें निन्यानवे हजार रुपैया हैं. सो लाख होंइ तो मैं लखेश्वरी होउं. सो चारि आनामें तो निर्वाह करत हूं और आठ आना जमा करुं हूं. तब श्रीगुसांईजी आप वा पर प्रसन्न भए. वासों कहे, जो यह सांच बोल्यो. अपनो भाव प्रकट कहि दियो. पाछें आप आज्ञा किये, अब तू श्रीठाकुरजी पधरायकै सेवा करि तो तेरो कारज सिद्ध होइगो. तेरो कल्यान होइगो. तब वाने कही, जो राज ! यामें तें कोडी खरच होंइ नाहीं. ऐसी सेवा कृपा करि बताईए. तब श्रीगुसांईजी आप कहे, जो तू मानसी सेवा करि. तामें तेरो कछू खरच न होयगो. तब वाने श्रीगुसांईजीसों कही, जो राज ! मोकों मानसीसेवाकौ प्रकार समझाइए. ता भांति हों सेवा करों. तब श्रीगुसांईजी वाकों नित्यकी तथा उत्सवकी रीति सब बताय दीनी. सो ताही रीतिसों वह सेवा करन लाग्यो. सो एकाग्र चित्तसों श्रीठाकुरजीकों हृदयमें पधरायके भक्तिभावसों सेवा करे. सो ऐसें करत कोई उत्सव आयो. सो वह खीरि करन लाग्यो. तब खीरि सिद्ध भई. तब वामें बूरा पधराये. सो बूरा बोहोत पर्यो. सो पाछें काढ़िवें लग्यो. तब ताही

समै श्रीठाकुरजीने आयकै हाथ पकरिकै कह्यो, जो यामें तेरी गांठिकौ कहा खरच होत है ? जे तू पाछो काढ़त है. तब तो यह दलाल मनमें विचार्यो, जो अब तो यह सब द्रव्य श्रीठाकुरजीके विनियोगमें लगावनो. पाछें वाने जायकै श्रीगुसांईजीसो बिनती करिकै श्रीठाकुरजी पधराये. तब वह सब द्रव्य श्रीठाकुरजीके विनियोगमें आयो.

यामें यह सिद्धान्त जतायो, जो पुष्टिमार्गमें ठाकुर जीवकौ जैसो स्वभाव होत हैं ता भांति वाकों अङ्गीकार करत हैं. सो ऐसें प्रभु कारुनिक भक्तवत्सल हैं. तातें जा प्रकार बनि आवें ता प्रकार वैष्णवकों भगवद्सेवा करनी. सेवा तें विमुख रहनो नाहीं.

सो वह दलाल श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।११४।।

११५-बेनीदास, दामोदरदास दो भाई बनिया, सूरतके

अब श्रीगुसांईजीके सेवक बेनीदास, दामोदरदास दोउ भाई बनिया, सूरतमें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं.

भावप्रकाश :

ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें 'वीरा' 'धीरा' इनके नाम हैं. सो वीरा, धीरा, विसाखाजीकी सखी सोरसेनी हैं तिनकी दोउ सखी हैं. उन तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं. सो बेनीदास 'वीरा'कौ प्रागट्य और 'धीरा' दामोदरदास भए.

ये दोउ सूरतमें एक द्रव्यपात्र बनियाके जन्मे, सो वह बनिया कपड़ाकी दुकान करतो. सो ये दोउ भाई बरस दस - बारहके भए तब माता - पितानें दोउनकौ ब्याह कियो. ता पाछें केतेक दिनमें इनके माता - पिता मरे. तब दोउ दुकान करन लागे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो एक समै श्रीगुसांईजी राजनगरमें भाईला कोठारीके घर बिराजत हते. और बेनीदास दामोदरदास दोउ भाई सूरतमें बजाजकी दुकान करते. सो कपड़ा खरीदनकों राजनगर आए. सो भाईला कोठारीसों इनकौ ब्यौहार हतो. सो ये भाईला कोठारीकों मिलिवेकों असारुवा आए. तब दोउ भाईनकों श्रीगुसांईजीके दरसन भये. सो महा अलौकिक दरसन भए. तब दोई भाई भाईला कोठारीसों कहे, जो तुम हमकों इनके सेवक करावो तो आछौ. तब भाईला कोठारी प्रसन्न व्है श्रीगुसांईजीसों बिनती किये, जो राज ! कृपा करिकै इनकों सरनि लीजिए. ये सेवक होंनकी बिनती करत हैं. तब श्रीगुसांईजीने उन दोउ भाईनकों नाम सुनायो. ता पाछें दोउ जनें केतेक दिन राजनगरमें रहिकै पाछें सूरत गए. सो नित्य रात्रिकों भगवद्वार्ता मण्डलीमें जाते.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

सो एक दिना उन दोउ भाईनने हाटपै विचार कियो, जो ब्रजमें जांईकै श्रीगुसांईजीके दरसन करे तो आछौ. ता पाछें घर आए. सो उन दोउनके स्त्री हती. और बेनीदास बड़े हते. सो उनके दोई पुत्र हते. और दामोदरदासके एक पुत्र हतो. और तीन्यों बेटानके बहू घरमें हती. सो इन दोउ भाईनने दुकान तथा घर बेटानके सोंपि दीनो. और कही, जो हम तो ब्रजयात्राकों जात हैं. सो प्रभुनकी इच्छा तें पांच सात बरसमें आवेंगे. तुम हमारी बाट मति देखियो. तुम अपने घर सावधान रहियो. सो ऐसें सब निवृत्त होइकै वे दोउ भाई ब्रजकों चले. सो सूधे श्रीगोकुल आए. सो उत्थापनके पहिलें प्रभु पोढिकै उठे हते. ता समै आए. सो श्रीगुसांईजीके दरसन किये. तब श्रीगुसांईजीने पूछी, जो बेनीदास, दामोदरदास ! तुम कब आए ? तब इन बिनती करी, जो राज ! अब ही आए. तब श्रीगुसांईजीने पूछी, जो बेनीदास ! महाप्रसाद तो नहीं लिये होंइगे. तब बेनीदासने कही, जो राजके दरसन किये बिना कैसें लेई ? तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो रात्रिकों महाप्रसाद यहांई लीजियो. पाछे बेनीदास, दामोदरदास एक घर लिये. तामें चीज वस्तु सब धरिकै उत्थापनके दरसन किये. पाछें सातों मन्दिरनमें दरसन किये.

ता पाछें श्रीनवनीतप्रियजीके सेनके दरसन किये. पाछें श्रीगुसांईजी अपनी बैठकमें पधारे. तब आज्ञा किये, जो बेनीदास ! तुम दोउ महाप्रसाद लेऊ. तब इन बिनती कीनी, जो राज ! प्रथम तो आप अरोगो. पाछें हम लेइंगे. तब श्रीगुसांईजी आप अरोगे. पाछें इन दोउ

भाईनकों जूंठनिकी पातरि धरी. सो बेनीदास दामोदरदासने महाप्रसाद लीनो.

भावप्रकाश :
या वार्तामें यह जतायो, जो गुरुनके अरोगे पहिले सेवकको महाप्रसाद लेनो सर्वथा उचित नाहीं.

ता पाछें श्रीगुसांईजी आप कथा कहन लागे. तब इन दोउ भाईनने आपके श्रीमुखतें कथा सुनी. पाछें बेनीदास दामोदरदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो राज ! अब तो कृपा करिकै ब्रह्मसम्बन्ध करावो तो भलो है. तब श्रीगुसांईजीने एक ब्रत करायकै दोउनकों श्रीनवनीतप्रियजीके सन्मुख ब्रह्मसम्बन्ध करवायो. पाछें श्रीनवनीतप्रियजीके राजभोगकी आरति किये. पाछें अनोसर करि श्रीगुसांईजी अपनी बैठकमें आइ बिराजे. तब इन भेंट करी. पाछें दोउन बिनती किये, जो राज ! अब कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो श्रीठाकुरजीकी सेवा करो. तब इन दोउन भाईन बिनती करी, जो महाराज ! एक बार श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करिकै ब्रजयात्रा करिए, ऐसो मनोरथ है. पाछें राज जो आज्ञा करें सो करें. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो आछौ है. ब्रजयात्रा करि आउ. पाछें सेवा करियो. तब दोउ भाई तीनि दिना श्रीगोकुलमें रहिकै पाछें श्रीनाथजीद्वार गए. सो दोइ चारि दिना श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करिकै पाछें ब्रजयात्रा किये. सो सम्पूरन ब्रजयात्रा करिकै श्रीगोकुल आए. तब श्रीगुसांईजीके दरसन किये. पाछें दण्डवत् करी. तब श्रीगुसांईजीने पूछी, जो ब्रजयात्रा करि आए ? तब इन बिनती करी, जो राजकी कृपा तें करि आए. पाछें श्रीगुसांईजीने कही, जो अब सेवा करो. तब बेनीदासने बिनती करी, जो महाराज ! सेवा तो तब करें जब श्रीठाकुरजी बोलें. मांगि - मांगिकै लेई तो सेवा करें. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो भावसौ सेवा करो. श्रीठाकुरजी तुम्हारो सब मनोरथ पूरन करेंगे. पाछें श्रीगुसांईजीने सेवा पधराय दीनी. ता पाछें वैष्णवनसों मिलिकै सेवा पधरायकै सेवाकी रीति भांति सब सीखे. पाछें एक भाई सामग्री करे, एक भाई सिंगार करे. सो नित्य मङ्गलाके सातों स्वरूपनके दरसन करे. तब दोई वैष्णवनकों न्योतो दे आवते. ता पाछें दोउ सेवामें न्हाते. सो राजभोग धरिकै समय होंइ तब भोग सराय महाप्रसाद वैष्णवनकों लिवावते. ता पाछें आप लेते. या प्रकार नित्य नेम तें भाव सहित सेवा करे. सो श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे.

वार्ता प्रसङ्ग ३ :
सो एक दिना श्रीठाकुरजीने कही, जो मैं तुमपै प्रसन्न भयो हूं. सो कछू मांगो. तब इन कही, जो श्रीगुसांईजीकी कृपा तें और तो सब है. परन्तु एक, श्रीगुसांईजीकी सेवा करिवेकौ मनोरथ है.

भावप्रकाश :
यामें ठाकुरतें गुरुकी सेवा दुर्लभ दिखाए.

तब श्रीठाकुरजीने कही, जो करो. पाछें एक दिना श्रीगुसांईजीने पूछी, जो कहो बेनीदास ! श्रीठाकुरजी कछू सानुभावता जनावत हैं ? तब इन कही, जो राजकी कृपा तें बोलत हैं. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो कछू कही है ? तब इन कही, जो श्रीठाकुरजीने कही, जो कछू मांगो. तब मैंने कही, जो श्रीगुसांईजीकी सेवा करें. तब श्रीठाकुरजीने कही, जो करो. पाछें श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो तुम फूलघर, पानघर, भण्डारकी सेवा करो. तब इन कही, जो महाराज ! सेवा तो आपकी करें और फूलघर, पानघर, भण्डारकी सेवा तो न करेंगे. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो हमारी खवासी करो. तब ये दोउ भाई प्रसन्न होंइकै एक तो घर सोवते और एक यहां मन्दिरमें सोवें. सवेरे बेगि उठिकै वे हू आवते.

यामें यह जताए, जो रात्रिकों घरमें श्रीठाकुरजीकों अकेले न छोरने काहेतें ? बालक हैं, तातें डरपे.

सो दोउ मिलिकै कीर्तन करते. जब श्रीगुसांईजी जागें तब एक जनो तो श्रीगुसांईजीकों दन्तधावन करावें. और एक सैया उठावें. बुहारी करें. पाछें दोउ जनें श्रीगुसांईजीकों तेल लगाय न्हवावते. पाछें श्रीगुसांईजी आप तिलक मुद्रा करिकै मन्दिरमें पधारते. ता पाछें दोउ भाई जांइकै अपने घर न्हातें. सो एक सामग्री करे, एक सिंगार करे. पाछें राजभोग धरिकै भोग सरायकै एक तो उहां रहे. सो वैष्णवनकों महाप्रसाद लिवावे. एक श्रीगुसांईजीके पास आवते. सो श्रीगुसांईजी भोजन करिकै पोढते. तब घर आयकै महाप्रसाद लेते. या प्रकार

श्रीठाकुरजीकों सब सामग्री नित्य करते. जो महाप्रसाद लेवे जानो होंइ तो हू सामग्री तो उतनी ही समर्पते नित्य घटती न करते. या प्रकार भावसों भगवद्सेवा, गुरुसेवा, करते. रात्रिकों श्रीमुखतें कथा सुनते. वैष्णव मण्डलीमें वार्ता सुनते.

सो एक दिन श्रीगुसांईजी इनकी सेवा देखिकै प्रसन्न भए. तब आपने कही, जो तुम्हारे कहा मनोरथ है ? तुम कछू मांगो तब इन श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो कृपानाथ ! हमारो तो अब वैष्णवनकी सेवा करिवेकौ मनोरथ है ?

याकौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णवनकी सेवा अत्यन्त दुर्लभ है. ठाकुरकौ, गुरुकौ दास होंई सेवा करे. परन्तु वैष्णवनकौ दास वैष्णवनकी सेवा होनी बोहोत कठिन है. सो तो जब प्रभुनकी, गुरुनकी कृपा होई तब ही सिद्ध होई. तातें इन दोउ भाई श्रीगुसांईजी पास यह मांगे.

तब श्रीगुसांईजीने कही, जो सुखेन करो. पाछें श्रीठाकुरजीकी सेवा करते, और नित्य दोइ वैष्णवनकों महाप्रसाद लिवावते. सो अब पांच वैष्णवनकों महाप्रसाद लिवायवे लगे. सो नित्य एक नयो वैष्णव न्योते. और नित्य नौतन सामग्री करते. सो थोरी - थोरी रितु अनुसार सामग्री करते. अब या प्रकार श्रीठाकुरजीकी सेवा, गुरुकी सेवा, वैष्णवनकी सेवा करते. सो बरस चारि पांच करी, तब वैष्णवन प्रसन्न भए. सो कहन लागे, जो भाई ! इन दोउ भाईनकों धन्य है. सो तीन्यो सेवा नित्य नेम पूर्वक करत हैं. तब ये दोउ भाई बोहोत प्रसन्न भए. ता पाछें एक दिना श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो राजकी आज्ञा होइ तो सब कुटुम्बकों यहां बुलाय लें. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो भले. तब बेनीदास दामोदरदासने अपनो सब कुटुम्ब सूरततें बुलाय लियो. सबन श्रीगुसांईजीके दरसन किये. पाछें श्रीगुसांईजीसों बिनती करिकै सबनकों ब्रत करवायो. पाछें ब्रह्मसम्बन्ध करवायो. ता पाछें श्रीगुसांईजीसों आज्ञा मांगिकै श्रीठाकुरजी पधरायकै सबन मिलिकै ब्रजयात्रा करी. श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. मनोरथ किये. पाछें श्रीगोकुलमें आयकै सातों स्वरूपनके सातों बालकनके श्रीगुसांईजीके मनोरथ किये. पाछें थोरेसे दिन रहिकै श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो राज आज्ञा होंइ तो सूरत जांय. तब श्रीगुसांईजीने प्रसन्नतापूर्वक इनकों बिदा किये. ता पाछें श्रीगुसांईजीसों बिदा होंइकै वे अपने घर सूरतकों गए. पाछें भलि भांतिसों सेवा करन लागे. दोउ भाई सिंगार करते. दोउनकी स्त्री सामग्री करती. दोउनके बेटानकी बहू उपरकी परचारगी करती. तीन्यो बेटा व्यौहार - सेवा करते.

सो राजभोग पर्यन्तकी सेवा करिकै वैष्णव चारि पांचनकों महाप्रसाद लिवावते. पाछें भगवद्वार्ता मण्डलीमें जाते. या प्रकार भली भांतिसों सेवा करते. और सुन्दर वस्त्र और भेंट श्रीगुसांईजीकों प्रतिवर्ष पठावते. सो या प्रकार सदा भगवद्सेवा, गुरुसेवा, वैष्णवसेवा, करते. श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावते.

या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो सेवा समान और कोई फल नाहीं. तातें वैष्णवकों सेवा ही में मन लगावनों. और सेवा भय प्रीति पूर्वक करनी. तो प्रभु तत्काल प्रसन्न होंई.

सो वे बेनीदास दामोदरदास श्रीगुसांईजीके ऐसें परम कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिये ? वार्ता ।।११५।।

११६-जनार्दनदास क्षत्री, आगरेके

अब श्रीगुसांईजीके सेवक जनार्दनदास क्षत्री, आगरेके, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भाव प्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'चपला' है. ये विसाखाजीकी सखी सौरसेनी हैं, उन तें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं.

सो जनार्दनदास आगरेमें एक चोपड़ा क्षत्रीके जन्मे. सो वह क्षत्री बोहोत भलो मनुष्य हुतो. वाके पास द्रव्य हू बोहोत हुतो. सो वा क्षत्रीके घरके पास वैष्णवके घर हते. सो जनार्दनदास बरस पांचके भए तब तें वैष्णवनके घर जाइवे लगे. सो वैष्णव उनकों दैवी जीव जानि महाप्रसाद देतें. कहतें, जो तू दैवी जीव है. तेरे पर बेगि कृपा होइगी. ऐसें करत जनार्दनदास बरस अठारहकै भए. तब इनकौ विवाह भयो. सो स्त्री दैवी आई. ता पाछें केतेक दिनकों

जनार्दनदासके माता - पिता मरे. तब जनार्दनदास वैष्णवनकी मण्डलीमें जाइवे लगे. भगवद् वार्ता - चर्चा सुनते.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो एक समै चार - पांच वैष्णव आगरे तें श्रीगोकुलकों श्रीगुसांईजीके दरसनकों चले. सो उनके सङ्ग जनार्दनदास चोपड़ा क्षत्री आगरे तें श्रीगोकुलकों श्रीगुसांईजी आपुके दरसनकों आए. तब जनार्दनदासकों श्रीगुसांईजी आपके दरसन भए. सो साक्षात् कोटि कन्दर्पलावन्य श्रीपूरन पुरुषोत्तमके दरसन भए. तब जनार्दनदासने श्रीगुसांईजी आपसों बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! मोकों सरनि लीजिए. तब श्रीगुसांईजी आपु आज्ञा किये, हां हां तोकों नाम सुनाइ सरनि लेइंगे. जाउ, श्रीयमुनाजीमे स्नान करि आउ. तब जनार्दनदासने साष्टाङ्ग दण्डवत् किये. ता पाछें श्रीयमुनाजी स्नान करिवेको गए. पाछें स्नान करिकै श्रीगुसांईजी पास आइ आपुसों बिनती किये, जो महाराजाधिराज ! मोकों नाम सुनाइए. तब श्रीगुसांईजी आपु जनार्दनदासकों नाम सुनाए. और श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन करवाये. ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु श्रीनवनीतप्रियजीकों अनोसर करिकै अपनी बैठकमें पधारे. गादी तकियानके उपर बिराजें. तब सब वैष्णवनके सङ्ग जनार्दनदासने साष्टाङ्ग दण्डवत् किये. और कहे, जो मोकों तो श्रीमहाराजकी चरनारविन्दकी सेवामें रखिये. तब श्रीगुसांईजी आपु अपनी खवासीमें राखे. सो जनार्दनदास श्रीगुसांईजीकी सेवा करिकै बोहोत प्रसन्न भए. तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख तें कहते, जो जानार्दनदासने चोपड़ा बड़े कृपापात्र भगवदीय हैं. पाछें जनार्दनदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज मोकों सेवा पधराइए. तब श्रीगुसांईजी आपु जनार्दनदासके उपर दया करिकै प्रसन्न होंइकै तिनके माथें पर श्रीबालमुकुन्दजीकी सेवा पधराई. आपु पञ्चामृतसों स्नान करवाए. और सब प्रनालिका सिखाए. पाछें वह आगरे आइकै अपने घरमें जनार्दनदास सेवा करन लागे. ता पाछें श्रीगुसांईजी आगरे पधारे तब स्त्रीकों नाम - निवेदन करवाए. सो अहर्निस चित्त सेवाके विषे रहे. उत्तम तें उत्तम सामग्री होंइ सोई अरोगावें. भांति - भांतिके वस्त्र आभूषन श्रीठाकुरजी आपुकों अङ्गीकार करावते. ऐसें करत बोहोत दिन भए. तब श्रीठाकुरजी आपु वा जनार्दनदास बिनु एक क्षन रहते नाहीं. जो चहिए सोई मांगि लेते. बातें करते. सो जनार्दनदास चोपडा कछू कामकाजकों कहूं जाते तब श्रीबालमुकुन्दजी कहते, जो मैं तेरे सङ्ग आउंगो. तू कहां जात है ? तब जनार्दनदास श्रीबालमुकुन्दजीसों कहते, जो महाराजाधिराज ! मैं अब ही आवत हों. परि श्रीठाकुरजी आप मानते नाहीं. सो जनार्दनदास बिना बालमुकुन्दजीसों रह्यो जाय नाहीं. और कहते, जो जनार्दनदास ! मै तेरे सङ्ग आउंगो. ऐसो

श्रीबालमुकुन्दजी आपसों स्नेह हतो. सो जनार्दनदास श्रीबालमुकुन्दजी आपसों कहते, जो महराजाधिराज ! मैं अबही बड़ी बेगि आवत हों. ता पाछें जनार्दनदास चोपड़ा कोई कामकाज होंइ सो करि आवते तब श्रीबालमुकुन्दजी आपु कहते, जो जनार्दनदास ! आयो ? जो ऐसें श्रीबालमुकुन्दजी आप जनार्दनदासकी देह चली तहां पर्यन्त ऐसे ही किये. सो ऐसें करत बोहोत दिन भए. ता पाछें जनार्दनदासकी स्त्री मूई. ता पाछें श्रीगुसांईजी आपके घर आयकै रहे.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
और जनार्दनदासके और माधवदास कपूरसों मित्राई हती. सो माधवदासने जनार्दनदाससों कह्यो, जो जनार्दनदास ! तुमकों श्रीगुसांईजीकी आज्ञा है, सो जनार्दनदास ! तुम और विवाह करो. तब जनार्दनदासने यह कही, जो माधवदास ! सुनि भाई. तू भी सेवक और मैं भी सेवक श्रीगुसांईजी आप के हैं. सो श्रीगुसांईजी तोकों हू जानत हैं. और हमकों हू जानत हैं. सो जो तोकों आज्ञा दिए हैं तो मोकों हू आज्ञा श्रीगुसांईजी आपु क्यों नाहीं दीनी. तातें मैं कैसे विवाह करों ? जो उनकी इच्छा नाहीं है. और उनकी इच्छा होंइ तो तोकों कह्यो तो मोकों ही कहते. कहते कहा बेर लागत है ? यह बात सुनिकै माधवदास चुप करि रहे. सो ऐसें ही रहे, परि विवाह नाहीं कियो. पाछें जहां पर्यन्त जनार्दनदासकी देह चली तहां पर्यन्त सेवा करी.

सो वह जनार्दनदास श्रीगुसांईजी आपके ऐसें टेकके कृपापात्र भगवदीय हते. जो जिनके उपर श्रीगुसांईजी आप सदा प्रसन्न रहते. वे जनार्दनदास आपुकी सदा आज्ञामें रहे.

भाव प्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णवकों लौकिकमें आसक्ति सर्वथा न राखनी. एक प्रभुनमें स्नेह राखनो. उनकी सेवा करनी.

सो वे जनार्दन श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. तातें उनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।११६।।

११७-ताराचन्दभाई गुजरातके

अब श्रीगुसांईजीके सेवक ताराचन्दभाई, गुजरातमें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'बचन - चातुरी' है. सो इनके बचनमें चतुराई बोहोत हैं. ये 'सोरसेनी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

ये गुजरातमें एक बनियाके जनमे. सो ता समै गाममें महामारी आई. सो यह लरिका दिन दसकौ भयो तब इनके माता - पिता दोउ मरे. ता पाछें इनके एक काका हतो. सो वाने या लरिकाकों अपनी पास राख्यो. पाल्यो पोष्यो बड़ो कियो. सो वह काका वैष्णव हतो. वाके घरमें नित्य भगवद् मण्डली होंई. तामें यह लरिका नित्य भगवद् वार्ता सुने. तब याके मनमें आई, जो मै हू श्रीगोकुल जांई श्रीगुसांईजीकौ सेवक होंउ तो आछौ. सो ऐसें करत कछूक दिनमें गाममें ते एक सङ्ग वैष्णवकौ श्रीगोकुलकों चल्यो. सो वा सङ्गमें ताराचन्द हू चले.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो ताराचन्दभाई श्रीगुसांईजीके दरसनकों श्रीगोकुल आए. सो श्रीगुसांईजी आपके दरसन करिकै बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! मोकों नाम दीजिए. तब श्रीगुसांईजी आप आज्ञा किये, जो जाउ, श्रीयमुनाजीमें स्नान करिकै आउ. तब ताराचन्दभाई श्रीयमुनाजीमें स्नान करिवेकों गए. सो स्नान करिके आए. तब श्रीगुसांईजी आपसों बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! मोकों अब सरनि लीजिए. तब श्रीगुसांईजी आपु वा ताराचन्दभाईकों नाम सुनाए. ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु श्रीनवनीतप्रियजीकौ राजभोगको समय हतो. सो श्रीनवनीतप्रियजीको राजभोग सरायो. पाछें श्रीगुसांईजी आप कृपा करि ताराचन्दभाईकों श्रीनवनीतप्रियजीके सन्मुख ब्रह्मसम्बन्ध करवायो. पाछें राजभोगके दरसनके किवाड़ खुले. सो ताराचन्दभाई श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन करिकै बोहोत ही प्रसन्न भए. ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु श्रीनवनीतप्रियजीकों

राजभोग आर्ति करि अनोसर कराय आपु अपनी बैठकमै पधारे. तब सब वैष्णव मिलिकै आए. सो श्रीगुसांईजी आपसों दण्डवत् करिकै बैठे. पाछें श्रीगुसांईजी आप सब वैष्णवनकौ समाधान कियो. ता पाछें ताराचन्दभाई हू आए. सो श्रीगुसांईजी आपकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै बैठें. तब श्रीगुसांईजी आप सब वैष्णवनकों बिदा करिकै आप भीतर भोजन करिवेकों पधारे. सो भोजन करिकै बीरा अरोगिकै अपनी बैठकमें गादी तकियान पर बिराजे. तब श्रीगुसांईजी ताराचन्दभाईकों आज्ञा किये, जो उठो ! महाप्रसाद लेहू. तब ताराचन्दभाईने महाप्रसाद लियो. पाछे ताराचन्दभाईने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! कछूक दिन राजकी टहल करिवेकौ मनोरथ है. तब श्रीगुसांईजी ताराचन्दभाईकों अपनी खवासीमें राखे.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

सो एक दिन ताराचन्दभाईकौ मन कछूक बातपैं चल्यो. तब ताराचन्दभाईकों श्रीगुसांईजी आपने सिक्षा कीनी, जो या बातमें मन चालाइए नाहीं. ता पाछें श्रीगुसांईजी आपुसों ताराचन्दभाईने बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! कौनने राजके आगें आयकै मिथ्या कह्यौ है ! सो हमसों कहो. जो मैं सुनों. ता पाछें श्रीगुसांईजी आपने कह्यो, जो कहा रे ! कहा में जानत नाहीं ? जो मैं काहूकौ कह्यो सुनों ? मैं तिहारी रक्षाके लिए कहत हों. तब ताराचन्दभाई श्रीगुसांईजी आपके श्रीमुखके बचन सुनिकै सिक्षा हू मानत भए. पाछें ताराचन्दभाईने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मेरो मन स्थिर होंई सो उपाय कृपा करि आप जनाइए. तब श्रीगुसांईजी ताराचन्दभाईसों आज्ञा किये, जो तुम 'सर्वोत्तमस्तोत्र'कौ पाठ नित्य करियो. तातें तुम्हारे सब कार्य सिद्ध होइगो. सो यह सुनिकै ताराचन्दभाई बोहोत प्रसन्न भए. पाछें वा दिनतें नित्य 'सर्वोत्तमस्तोत्र'कौ पाठ करन लागे. तातें वैष्णवकों बड़ेनकौ बचन मान्यो चाहिए.

भावप्रकाश :

या वार्तामें यह जतायो, जो वैष्णवकों गुरुनके आगें झूठ बोलनो नाहीं. काहू बातकौ दुराव करनो नाहीं. नांतरु अपराध होंई. बड़ेनकी सिक्षाकों गुन करिकै माननो. और सर्वोत्तमस्तोत्रकौ स्वरूप जताए, जो मन कैसो हू चञ्चल होंई परि श्रद्धापूर्वक शुद्ध बुद्धिसों सर्वोत्तमस्तोत्रको पाठ करें तो वाकौ मन स्थिर होंई. और उत्तम फलकी प्राप्ति होंई.

सो वह ताराचन्दभाई श्रीगुसांईजी आपके सेवक ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे. जिनके उपर श्रीगुसांईजी आपु सदा ही प्रसन्न रहते. तातें उनकी वार्ताकौ पार नाहीं. सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।११७।।

११८-एक म्लेच्छ महावनको

अब श्रीगुसांईजीको सेवक एक म्लेच्छ हतो, महावनमें रहतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'गोहनी' है. ये श्रीठाकुरजीके पाछें - पाछें फिरती हैं. ऐसी स्वरूपासक्त हैं. ये भामाकी सखी माधुरी हैं, उन तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

सो एक दिन 'गोहनी' ठाकुरके पाछें - पाछें बनमें गई, तहां ठाकुरने इन देखी. सो ठाकुर गोहनीसों कहे, जो गोहनी ! तू श्रीदामाकों बेगि बुलाय ल्याउ. तब गोहनीने श्रीठाकुरजीसों कह्यो जो महाराज ! मोंते आपकौ वियोग सह्यो जात नाहीं. तातें आप और काहूकों पठावो तो आछौ. हों तो टेंटी बिननके मिष सास - ननदतें दुरायकै आपके दरसनकों बनमें आवति हों. तातें या भेदकों कोऊ जानें तो मेरो बनमें आवनो बंध होंई. तो आपके दरसन बिना मेरे प्रान रहे नाहीं. तातें महाराज मैं पराधीन हों. तब श्रीठाकुरजीने सुबल सखाकों बुलाईकै कह्यो, जो तू 'श्रीदामा'कों बेगि बुलाय ल्याउ. आज एक नयो खेल खेलेंगे. सो सुबल सखाने जांइकै श्रीदामा सो कह्यो, जो तू बेगि चलि. आज एक नयों खेल होइगो. सो श्रीदामा बेगि - बेगि आय श्रीठाकुरजीकों दण्डवत् कियो. पाछें खेल भयो. सो ठाकुर तो श्रमित भए. तब गोहनी बनमें ते मधुर फल ल्याई सिद्ध किये. पाछें पतौवानके दोनो करि तामें ले आई. और कह्यो, जो महाराज ! अरोगिए. सो बिनती करत मुख तें छींटा उड्यो. सो सामग्रीमें पर्यो. सो वा बातकों गोहनीने जानी नाहीं. सो छींटा उरत श्रीदामाने देख्यो. तब श्रीदामाने गोहनी तें कह्यो, जो दारी ! तु अपनो झूठो ठाकुरकों अरोगावति हैं ? जा म्लेच्छ योनिकों प्राप्त होउ. तब गोहनी डरपिकै ठाकुरकों

बिनती करन लागी, जो महाराज ! हों तो जानी नाहीं. सो मेरो अपराध क्षमा करो. तब ठाकुरने कह्यो, जो अनजान तें अपराध भयो. परि ये श्रीदामाकी बानी मिथ्या कैसें होंई ? तातें म्लेच्छ योनितो प्राप्त होइगी. पाछें तेरो उद्धार होइगो.

सो वह महावन तें उरे कोस बीस पर एक गाम है, तहां एक म्लेच्छके जन्म्यो. सो ये बरस अठारहकौ भयो तब याके माता - पिता मरे. ता पाछें वह म्लेच्छके एक काका हतो. सो महावनमें रहतो. सो ताके घर आइ रह्यो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै श्रीगुसांईजी आप 'रमनरेती' पधारे है. तहां आप एक वैष्णवके लरिकाकों अष्टाक्षर सुनावत हते. सो नाम सुनाइ सेवक किये. तहां यह म्लेच्छ सूकी लकरी तोरनकों आयो हतो. सो वाकों श्रीगुसांईजीकौ दरसन भयो. सो महा अलौकिक दरसन भयो. तब वह म्लेच्छ अपने मनमें विचारियो, जो मै हूं इनकौ सेवक होउं तो आछौ. सो वह म्लेच्छ नित्य सांझकों श्रीगोकुल आवतो. सो श्रीगुसांईजीके दरसन करतो. पाछें रात्रिकों श्रीठकुरानी घाट उपर नित्य कारो कम्मर लेकै सोवतो. सो एक दिन श्रीगुसांईजीकौ जलघरा छुवाइ गयो हतो. तब श्रीगुसांईजी श्रीयमुनाजी न्हानकों अन्धेरेमें पधारे हते.

भावप्रकाश :
काहेतें, जो शास्त्रमें सीतल जलसों घरमें न्हानो दोष कह्यो है.

सो श्रीगुसांईजी न्हाइवे तों पधारे. तब अन्धेरेमें वा म्लेच्छके माथेमें श्रीगुसांईजीकौ चरन लाग्यो. तब श्रीगुसांईजी तीन बेर अष्टाक्षर मन्त्र कहे. पाछें श्रीगुसांईजी आप न्हाय श्रीयमुनाजीमें, ता पाछें घर पधारे. पाछें वह म्लेच्छ वैष्णवन पास आइ बैठे, और वैष्णवसों कहे, जो मैं हूं सेवक हों. पाछें सब वैष्णव यह बात श्रीगुसांईजीसों पूछें. तब श्रीगुसांईजी उन वैष्णवनसों प्रसन्न होंइकै सब बात कहे. पाछें कह्यो, जो नेक दूरि बैठन दीजो. सो वह म्लेच्छ नित्य द्वार पर आंइकै दरसन करि जांइ. और श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार तथा परदेस जहां पधारे तहां

वह म्लेच्छ हू श्रीगुसांईजीके सङ्गही जांइ. परन्तु श्रीगुसांईजीके दरसन किये बिना वह म्लेच्छ जलपान न करे. ऐसी कृपा वा उपर भई. पाछें श्रीगुसांईजी आप अन्तर्धान लीला दिखाए. तब वह म्लेच्छ हू श्रीगुसांईजीकौ विरह करिकै आप हू देह छोरि दियो.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो प्रभुनके (श्रीगुसांईजीके) बचन पर दृढ़ विश्वास राखें ताकौ कार्य तत्काल सिद्ध होंई.

सो वह म्लेच्छ श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए वार्ता ।।११८।।

११९-एक क्षत्रानी, आगरेकी

अब श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी एक क्षत्रानी हती, सो आगरेमें रहती, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें ये ‘व्रजाङ्गना’ हैं. सो राति दिन गृहके कार्यमें आसक्त रहति है. सो जब प्रभु बन तें ब्रजकों आवत हैं. तब इनकों प्रभुनके दरसन होत हैं. तब यह विह्वल व्है जाति हैं. ता पाछें फेरि गृह - कारजमें आसक्त रहति हैं. ये ‘माधुरी’ तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

ये आगरेमें एक क्षत्रीके घर जन्मी. सो ये बरस आठकी भई. तब याकौ ब्याह भयो. सो धनी रोगी मिल्यो. सो जनम सगरो इनकी सेवा करिवेमें बीत्यो. पाछें ये बरस पैंतीसकी भई तब याकौ धनी मर्यो. तब सब जातिके लोग लुगाई भेलें भए. तब यह क्षत्रानी बोहोत रूदन करन लागी सो जातिके सब वैष्णव हते. तिन कही, जो बाई ! जो कछू होनहार हतो सो भयो. अब रोइवे तें कहा होइगो ? तातें तू वैष्णव होंइ भगवद्सेवा करि. तो तोकों क्लेस न होंईगो. तब यह क्षत्रानी कहे, जो वैष्णव कैसे होऊं ? सो तुम मोकों बतावो. तब उन कह्यो, जो यहां कछूक दिनमें श्रीगुसांईजी पधारेंगे. तब हम तोसों

कहेंगे. तब तू उनके सरनि जैयो. और सेवक व्है स्वरूप सेवा पधराइयो. तब वाने कही, जो तुम मोकों श्रीगुसांईजी पधारे तब कहियो, मैं उनकी सेवक होउंगी. ता पाछें केतेक दिनमें श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार तें आगरा पधारे. तब जातिकी लुगाइन कह्यो, जो बाई ! श्रीगुसांईजी पधारे हैं. तातें तेरी इच्छा होंई तो उनकी सरनि होऊ. तब वह क्षत्रानी श्रीगुसांईजीके पास आइ बिनती कीनी, जो महाराज ! मोकों सेवक करिए. तब श्रीगुसांईजी वाकों कृपा करि नाम सुनाए. पाछें दूसरे दिन समर्पन कराए.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वा क्षत्रीने श्रीगुसांईजी पास नाम - समर्पन करिकै बिनती श्रीगुसांईजीसों करी, जो महाराज ! मेरो सेवाकौ मनोरथ है. सो स्वरूप सेवा कृपा करिकै आप मोकों पधराइ दीजे. तब श्रीगुसांईजी वा क्षत्रानीके माथे एक श्रीलालजीकौ स्वरूप पधराय सब सेवाकौ प्रकार नित्यकौ तथा उत्सवकौ बताइ दिये. सो वह क्षत्रानी श्रीलालजीकी सेवा करती. परन्तु वह क्षत्रानीकौ मन लौकिकमें बोहोत ही रहतो. सबेरो होंइ तब कहे, जो चारि पोंनी कांति लेऊ. फलानी तें मिलि आऊं. ऐसें नित्य वह क्षत्रानी श्रीलालजीकी सेवाकों अवेर करे.

सो बहोरि श्रीगुसांईजी आगरे पधारे. तब श्रीठाकुरजी श्रीगुसांईजीसों कहे, जो यह क्षत्रानीकौ मन लौकिकमें बोहोत है. पाछें वह क्षत्रानी रात्रिकों श्रीठाकुरजीकों पोढ़ायकै श्रीगुसांईजीके दरसनकों आई. तब श्रीगुसांईजी वह क्षत्रानीसों कहे, जो तोसों श्रीठाकुरजी सेवा न बनि आवत होंइ तो हमकों श्रीठाकुरजी पधराइ दे. तू अवेर बोहोत काहेकों करत हैं, लौकिक कार्यमें ? तब वह क्षत्रानी श्रीगुसांईजीसों बिनती करिकै कही, जो महाराजाधिराज ! अब तें मैं बेगि ही कियो करोंगी. पाछें फेरि वह क्षत्रानी अवेर करन लागी. तब श्रीगुसांईजीने आगरेके वैष्णवनसों कही, जो फलानी बाईके घर श्रीठाकुरजी हैं. सो तिनकी तुम सेवा करियो. तब उन वैष्णवन श्रीगुसांईजीसों कही, जो महाराज ! वह बाई हमकों अपने श्रीठाकुरजीकी सेवा कैसें करन देइगी ? तब उन सब वैष्णवनसों श्रीगुसांईजी कहे, जो प्रभु कछू दिनमैं वह बाई पास सेवा न करावेंगे. उद्वेग तें प्रतिबन्ध होइगो.

भावप्रकाश :

याकौ अभिप्राय यह है, जो सेवामें तीन वस्तू बाधक है. उद्वेग, प्रतिबन्ध अरू भोग. सो उद्वेग तें प्रतिबन्ध होत हैं. और प्रतिबन्धतें लौकिक भोग प्राप्त होत हैं. तातें दैवी जीवनकों यह तीनों बुद्धिपूर्वक त्याग करनेसो बात श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप 'सेवाफल'के 'विवरण' में विस्तारसों कहे हैं.

ता पाछें कछूक दिन बीते. पाछें एक दिन सवेरो भयो. घरी दोइ दिन चढ्यो. तब वह क्षत्रानी चरखा कान्तत हुती. सो उपर तें वाके उपर भीति गिरी. तासों दोउ हाथ वाके टूटि गए. यह सुनिकै वा क्षत्रानीके घर वैष्णव आए. तब वा क्षत्रानीने वैष्णवसों कही, जो तुम श्रीठाकुरजीकों पधराइ ले जाउ. तब वे वैष्णव श्रीठाकुरजीकों वा क्षत्रानीके घर तें अपने घर पधराइ ले गए.

भावप्रकाश :
याकौ अभिप्राय यह है, जो जदपि या क्षत्रानीकौ जीव दैवी हतो, परि वाकी देह आसुरी हुती. और मनहु आसुरी हुतो. तातें प्रभु इन पास सेवा नाहीं कराए.

सो वैष्णव श्रीगुसांईजीके बचन स्मरन करिकै प्रीतिसों श्रीठाकुरजीकी सेवा करते. पाछें वह क्षत्रानी बोहोत खेद करन लागी. सो वह क्षत्रानी श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र हती. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।११९।।

१२०-दो भील, द्वारिकाजीके मारगमें रहते

अब श्रीगुसांईजीके सेवक भील दोइ, द्वारिकाजीके मारगमें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं, लीलामें ये 'पुलिन्दिनी' के यूथके हैं. 'माधुरी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो एक समै श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल तें द्वारिकाजी श्रीरनछोरके दरसनकों पधारे. तहां ये भील दोइ आछे कपरा पहरि मुसाफिर बनि मारगमें श्रीगुसांईजीके डेरानके पास उतरे. सो भील चोरी करनके लिये उतरे. पाछें सब कोउ अधिकारी भण्डारी सेवक टहलुवानमें बरजे. तब श्रीगुसांईजी आप कहे, जो रहन देहु. पाछें रात्रिकों उन भीलनकों श्रीगुसांईजी जूंठनि दीनी. तब जूंठनि लेत ही उन दोउ भीलनकी बुद्धि फिरी. सो सगरी रात्रि श्रीगुसांईजीके डेरानकी चौकी दिये. पाछें भोर ही उन भीलननें श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! अब आप हम उपर कृपा करिकै हमकों अपने सेवक करो. तब श्रीगुसांईजीके सन्मुख ठाढ़े भए. तब श्रीगुसांईजी आप उन उपर कृपा करिकै उन दोउ भीलनकों नाम सुनाय सेवक किये. पाछें श्रीगुसांईजी कहे, जो तुम स्नान करि आवो तो तुमकों सेवक करें. तब दोउ भील जांइ स्नान करि आइ, हाथ जोरि, श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी होंई श्रीरनछोरजीके दरसन करिकै श्रीगोकुल पधारे. तब वे दोउ भील श्रीगुसांईजीके साथ चौकी पहरा देत आए. तहां श्रीगोकुलमें वे दोउ भील सातों स्वरूपनके और श्रीवल्लभकुलके दरसन करि श्रीयमुनाजी स्नान करिकै अत्यन्त प्रसन्न भए. पाछें वे कछूक दिन श्रीगोकुलमें रहिकै श्रीगुसांईजीसों बिनती किये, जो महाराजाधिराज ! हमारे मनमें ब्रजयात्रा और श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकी इच्छा है. सो आप आज्ञा देहु तो हम जांई. तब श्रीगुसांईजी आप उनसों दोउ भीलनसों यह आज्ञा किये, जो बोहोत आछो, करि आवो. पाछें वे दोउ भील श्रीगुसांईजीकी आज्ञा पायकै चले. सो बनयात्रा परिक्रमा करत वे दोउ भील श्रीगिरिराज आए. तहां परवत उपर जांई श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. तब तो वे दोउ अपने मनमें अत्यन्त प्रसन्न होंइकै कहे, जो धन्य हमारे भाग्य हैं, जो श्रीगुसांईजी आपकी कृपा तें हमकों ऐसें सुखके दरसन भए. नाहीं तो हमतो महादुष्ट दुर्बुद्धि हते. हमकों या सुखकौ दरसन कहां हुतो ? पाछें वे दोउ भील बनयागा करि श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करि श्रीगोकुल आय श्रीगुसांईजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करि बिनती किये, जो महाराजाधिराज ! आज्ञा होंइ तो अब हम अपने देस घरकों जांइ. तब श्रीगुसांईजी उनसों यह आज्ञा किये, जो कछू दिन श्रीगोकुलकौ सुख और हू लेहू. तब वे और हू कछू दिन श्रीगोकुलमें रहे. सो सातों स्वरूपनकी झांकी और श्रीवल्लभकुलकी झांकी करे. श्रीगुसांईजीके श्रीमुखकी कथा श्रवन करे. पाछें एक कहे, जो महाराज ! आपकी कृपा तें बड़े ही सुख देखे. बोहोत ही सुखकी प्राप्ति भई. नाहीं तो हम सारिखे महापतित दुष्टनकों यह सुखकी प्रारब्ध कहां हुती ? सो अब आप आज्ञा देहु तो हम अपने देसकों जांइ. तब श्रीगुसांईजी उन भीलनसो कहे, जो बोहोत आछो. पाछें वे दोउ भील श्रीगुसांईजीकों बोहोत भेंट किये.

तब श्रीगुसांईजी आप उनकों प्रसाद दे उपरेना दोइ प्रसादी उढ़ायकै बिदा किये. उन उपर श्रीगुसांईजी बड़ी ही कृपा किये. सो वे दोउ भील श्रीगोकुल तें श्रीगुसांईजी पास तें बिदा होंइकै अपने देस घरकों चले.

सो मारगमें एक ब्राह्मन वैष्णवके घर उत्सव हतो. तहां ये दोउ भील तलाव पर उतरे हते. सो वह ब्राह्मन वैष्णव इनके तिलक कण्ठी देखि दोउनकों तलाव पर तें महाप्रसाद लेनकों बुलावन आयो. तब इन दोउन वा ब्राह्मन वैष्णवसों कह्यो, जो हमको काहूके हाथकौ लेत नाहीं. तब वा ब्राह्मन वैष्णवने इनकी जाति पूछी. सो इननें वा ब्राह्मन वैष्णवकों अपनी जाति बताई. तब वह ब्राह्मन वैष्णव पिछोरी फेरिकै नाच्यो. तब रसोई छोरिकै सब वैष्णव ब्राह्मन आय उन दोउ भीलनकों ले गए. पाछें उन भीलनकों कह्यो सबननें, जो हम हू श्रीगुसांईजीके सेवक हैं. तब वे दोउ भील महाप्रसाद वा ब्राह्मन वैष्णवके घर लिये. ता पाछें अपने देस घरकों गए. पाछें वे भील सगरे घरके मनुष्यनकों श्रीगुसांईजीके सेवक कराए. सो भील बड़े भगवदीय भए. अष्टप्रहर भगवन्नाम लेते. अपनो दुष्ट कर्म सब छोरि दिये. पाछें खेती करि निर्वाह करन लागे.

सो वे भील श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय भए. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ? वार्ता ।।१२०।।

१२१-एक ब्रजबासीको छोहरा

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक ब्रजबासीकौ छोहरा, सो बरस द्वादसकौ हुतो, वह सकरवामें रहतो, ताकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम ‘मनोरूपा’ है. ये नन्दरायजीके घरकी रखवाली करत हैं. ये ‘नागरी’ तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

ये सकरवामें एक गुजरके जन्म्यो. सो बरस बारहकौ भयो तब तें ये खेतपैं जान लाग्यो. सो खेत बोवे, हल जोते. या प्रकार सब काम करे. सो एक विरक्त वैष्णव वाके घर चुकटी लेन आयो. सो याने वा विरक्त वैष्णवकों दो धोबा नाज दियो. सो वा विरक्तनें वामें तें एक धोबा नाज, एक महात्माकों दियो. सो वह देख्यो. तब या लरिकाने वा विरक्त वैष्णवसों पूछ्यो जो तुमने अपनो नाज दूसरेकों क्यों दियो ? वाकों हम और देते. तब वा विरक्त वैष्णवने कह्यो, जो खेतमें नाज होत हैं तामें जीव - हत्या हू बोहोत हैं. तातें वा नाजमें तें दूसरेकों देनो चाहिए. यातें वह दोष निवृत्त होंई. तब या लरिकाने विचार कर्यो, जो आज पाछें जीव हत्या होंई ऐसो कार्य नहीं करनो. पाछें वह लरिकाने वा विरक्त वैष्णव सों पूछ्यो, जो हमारो उद्धार होंई ऐसा मारग बतावो. हम तो आज तें जीव हत्या होंई सो कार्य कबहू न करेंगे. तब वा विरक्त वैष्णवने कह्यो, जो तू गोपालपुर जांइ श्रीगुसांईजीकौ सेवक होउ. पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीकी टहल करि. तब तेरो उद्धार होइगो. तब वह छोहरा सकरवा तें गोपालपुर आयो. पाछें श्रीगुसांईजीकौ सेवक भयो, नाम पायो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो श्रीगुसांईजीकौ सेवक होंइकै वा छोहराने कह्यो, जो महाराज ! अब कछू टहल मोकों बतावो. तब श्रीगुसांईजी वाकों श्रीनाथजीकौ चनाकौ खेत रखावारीकों बताए. और अधिकारी भण्डारीकों बुलायके कह्यो, जो याकों खेत पर श्रीनाथजीकौ महाप्रसाद पठायो करो. सो फागुनमें खेत पक्यो. तब एक सङ्ग वैष्णवनकौ आयो. तामें अधिकारी भण्डारी तो वा वैष्णवनके सङ्गके समाधानमें लागे. सो वा छोहराकों पातरि पठवाइयो भूलि गए. सो वह छोहराकों बोहोत भूख लागी. तब वह खेत पर बैठ्यो गारि देई. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी बरस दसके लरिका होंइ वा ब्रजबासीके छोहरा पास जांइकै कहें, जो तू चना क्यों नाहीं खांइ ? भूखो है तो. गारी काहेकों देत है ? तब वा ब्रजबासीके लरिकाने श्रीगोवर्द्धननाथजीसों कह्यो, जो हों चना कैसे खाउं ? ये चना तो देवदमनके हैं. पाछें प्रहर एक रात्रि गए फेरि श्रीगोवर्द्धननाथजी तरून रूप व्है ब्रजबासीके छोहरा पास चनाके खेत पर आइकै वासों कहे, जो तू चना मोकों दे खाउं. तब वह ब्रजबासीकौ छोहरा इनकों गारी दे कै कह्यो, जो चना तू छुयो तो तू जानें. मैं तोकों मारूंगो. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवा सेनआर्ति पोंढायवे तांईकी पहोंचि, पर्वत तें नीचे उतरि, अपनी बैठकमें पधारि, गादी तकिया उपर बिराजि, वार्ता - चर्चा करत करावत अर्द्धरात्रिकों आप पोढ़े. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीगुसांईजी पास पधारिकै श्रीगुसांईजीसों कहे, जो आजु वह ब्रजबासीकौ छोहरा भूखो चनाके खेतपैं बैठ्यो गारी देत है. तब श्रीगुसांईजी वाही समै भण्डारी रसोइयाकों बुलाय उनसों खीजे. और वाही समै महाप्रसाद वाकों

खेतपै पठायो. ता पाछें नित्य आपु वा ब्रजबासीके छोहराकी खबर राखते. श्रीगिरिधरजी आदि बालकनसों कहते, जो उह ब्रजबासीके छोहराकी भूखकी ठीक राखियो. और श्रीगुसांईजी आपु वाकों पातरि पठवायकै पाछें आप भोजन करते. ऐसी कृपा वा दिन पाछें श्रीगुसांईजी वा ब्रजबासीके छोहरा उपर करते.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो कोऊ सांचे भावसो प्रभुनकी सेवा करत हैं, तिनके खाइवे पीवेकी चिन्ता प्रभु आप करत हैं. तातें वैष्णवकों सांचो व्है भावसों प्रभुनकी सेवा करनी.

सो वह ब्रजबासीके छोहरा उपर श्रीगुसांईजीकी तथा श्रीगोवर्द्धननाथजीकी ऐसी कृपा हती. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१२१।।

१२२-एक सन्यासी, कासीकौ

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक सन्यासी, कासीकौ बासी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'महामाया' है. ये 'नागरी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै श्रीगुसांईजी आप 'मनिकर्निका' घाट पधारि स्नान करिकै सन्ध्यावन्दन करत हुते. सो आपके साथ मनुष्य, वैभव बोहोत हुतो.

डेरा, कनात, पालकी, घोरा, आदि. सो तहां एक सन्यासी आंइकै कह्यो, जो यह ठौर तो मेरे बैठिवेकी है. ये कौन है, जो इहां बैठि सन्ध्यावन्दन करत हैं ? तब मनुष्य कह्यो, जो यह श्रीगुसांईजी हैं. तब वा सन्यासीने कह्यो, जो ये कैसें गुसांई हैं ? इनके तो सङग्रह बोहोत है. सब दान करि देउ. सो यह बात श्रीगुसांईजी आप सुने. तब श्रीगुसांईजी वा सन्यासीके देखत ही जो कछू हतो वैभवसो सब ब्राह्मनकों बुलाईकै दे दियो. कछू गङ्गाजीमें डार दियो. पाछें वा सन्यासीसों श्रीगुसांईजी आप कहे, जो तू सन्यासी है, तातें ये कोपीन तूम्बा अपने दे घालि. तब वह सन्यासीने श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो मैं अपने फस्त्र तूम्बा दे घालूं तो मोकों फेरि कहां तें मिलें ? तब श्रीगुसांईजी आप कहे, जो हमने तो इतनो सामान ब्राह्मननकों दान कियो और तू सन्यासी होंई कोपिन हू नाहीं दे सकत ? सो कोपिनमें इतनी ममता है ! तोकों ईश्वरकौ भरोंसा हू नाहीं ? तातें तू सन्यासी कैसो ? तब वह सन्यासी लज्जत व्है रह्यो. इतने ही गोड़ देस तें नारायनदासकौ पठायो सगरो वैभव पालकी, घोरा, डेरा आदि ले कै मनुष्य सब मनिकर्निका घाट पर आए. तब उन मनुष्यन नारायनदासकी और तें बिनती कीनी, जो महाराज ! बेगि गौड़ देस पधारिए. तब श्रीगुसांईजीकौ वैभव फेरि पहिले जेसो व्है रह्यो. सो देखिकै वह सन्यासी श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो महाराज ! तुम ईश्वर हो ! तुम्हारे चरननसों लछिमी लागी है. पाछें श्रीगुसांईजीसों वह सन्यासी बोहोत ही बिनती करिकै कह्यो, जो महाराज ! तुम सांचे गुसांईजी हो. तातें अब आप मो उपर कृपा करिकै मोकों अपनो सेवक करिकै कृतार्थ करो. तब श्रीगुसांईजी वह सन्यासी उपर परम अनुग्रह करिकै आज्ञा किये, जो तुम स्नान करो, जटानकों मुंडायकै आओ. तब हम तुमकों सेवक करें. तब वह सन्यासी जटा मुंडाइ, स्नान करिकै श्रीगुसांईजी पास आइ हाथ जोरिकै ठाढ़ो भयो. तब श्रीगुसांईजी कृपा करि वाकों नाम सुनाइकै वैष्णव करि वा सन्यासीकों कृतार्थ किये. तब वह सन्यासी नाम पाय बोहोत प्रसन्न भयो. पाछें श्रीगुसांईजी आप भोजन किये. तब वह सन्यासी वैष्णव भयो हुतो ताकों बुलवाइकै श्रीगुसांईजी अपने श्रीहस्तसों वाकों महाप्रसादकी पातरि कृपा करिकै धरी. सो महाप्रसाद वह लेन लाग्यो. पाछें श्रीगुसांईजी बीरी अरोगिकै विश्राम किये. पाछें विश्राम करि उठिकै वा सन्यासी वैष्णवसों कहे, जो अब तुम ब्रजयात्रा जायकै करो. सो वह वैष्णव कासी तें श्रीब्रजयात्राकों चल्यो. सो कछूक दिनमें श्रीमथुराजी आय पहोंच्यो. पाछें वह वैष्णव बनयात्रा परिक्रमाकों विश्राम घाट स्नान करिकै निकर्यो. सो ब्रजकी सोभा देखि अपने मनमें बोहोत ही प्रसन्न भयो. पाछें परिक्रमा यात्रा करत श्रीगिरिराजमें आय परवत उपर श्रीगोवर्द्धननाथजीके राजभोगकी आरतिके दरसन करि वह वैष्णव अत्यन्त प्रसन्न भयो. पाछें श्रीगिरिराज तें परिक्रमा यात्रा करत श्रीगोकुल आय श्रीगोकुलकी सोभा देखि दरसन करिकै बोहोत ही प्रसन्न अपने

मनमें भयो. ता पाछें वह वैष्णव श्रीगोकुल तें फेरि कासीकों चल्यो. सो कछूक दिनमें कासीमें आइकै श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् कियो. तब श्रीगुसांईजीने वा वैष्णवसों पूछ्यो, जो वैष्णव ! तुम ब्रज होंइ आए ? तब इन श्रीगुसांईजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करि बिनती करी, जो महाराज ! आपके प्रतापसों मैं ब्रज होंइ आयो हों. सो ब्रजकी बात कहां कहूं ? महा अलौकिक ही है. श्रीठाकुरजीकौ निजधाम है. पाछें वह वैष्णव ब्रजकी मानसी करतो. सो श्रीठाकुरजी वाकों अनुभव जतावन लागे.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णवकों प्रभुन पर विश्वास राखनो. काहू वस्तू पर ममता राखनी नाहीं. सब वस्तू पदार्थ प्रभुनकी ईच्छासों आय मिलत हैं. तातें प्रभुन पर भरोंसो राखनो.

सो वह श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय भयो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१२२।।

१२३-राजा आसकरन, नरवरगढके

अब श्रीगुसांईजीके सेवक आसकरन, नरार (गढ)के राजा, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'बिकला' है. सो बिकला श्रीदामा सखाकी सङ्गिनी हैं. यें 'नागरी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो आसकरनकों प्रथम राग पर बोहोत आसक्ति हुती. सो देस - देसके कलामत गवैया आसकरनके पास आवते. सो आसकरन सबकौ

समाधान करते. जहां लों रहतें तहां तांई सीधो सामान पहोंचावते. पाछें जब चलते तब बिदा हूं आछी करते. सो दोइसैं - चारसैं गवैया सदा आसकरनके पास गाइवेकों रहते.

सो एक दिन तानसेनने आसकरनकी बड़ाई सुनी. सो मनमें विचार्यो, जो एकबार आसकरनके पास जांइ देखों, आसकरन कछू समुझते हैं ? यह विचारकै तानसेन आसकरनके उहां गए. सो मध्याह्न समय राजा अपनी कचहरीमें बैठो है. दसबीस भले - भले गवैया गावत हैं, सारङ्गके पद. ज्येष्ठके दिन हैं. सो आसकरन तानसेनकों देखिकै बोहोत प्रसन्न भयो. अपने निकट बैठायो. कह्यो, तानसेन ! तुम भले समय आये. कछु सारङ्गके पद गावो. तब तानसेनने गोविन्दस्वामीकौ पद गायौ

राग : सारङ्ग

कुंवर बैठे प्यारीके सङ्ग अङ्ग - अङ्ग भरें रङ्ग -
बलि बलि बलि बलि त्रिभङ्गी जुवतिन सुखदाई ।
ललित गति बिलास हास दम्पति मन अति हुलास -
बिगलित कच सुमन बास स्फुटित कुसुम निकर तेसीये सरदरेनि जुन्हाई ।।
नव - निकुञ्ज मधुप गुञ्ज कोकिल - कल कूजत पूंज -
सीतल सुगन्ध मन्द पवन अति सुहाई ।
'गोविन्द' प्रभु सरस जोरी नव किसोर नव किसोरी निरखि मदन - फौज मौरी
छेल छबीले नवल कुंवर ब्रजकुल मनिराई ।

यह पद सुनत ही आसकरनकों मूर्छा आई. सो चार घरी पाछें चैतन्यता भई. तब आसकरनने तानसेनसों कही, जो आज तांई मैनें ऐसो पद नाहीं सुन्यो. हजार - हजार कलामत सर्वदा मेरे पास रहे, परन्तु ऐसो विष्णुपद नाहीं गायो. पाछें आसकरनने तानसेनसों कही, जो यह

विष्णुपद सुनिकै त्रयलोककौ राज मोकों तुच्छ दीसत है. मैं अपने राजकी कहा कहूं ? तातें तानसेन तुम्हारो मन होंइ तो यह मेरो राज, भूमि, रानी, द्रव्य सब लेहु. तुम्हारो मनोरथ होंइ सो लेहु. यह सुनिकै तानसेनने कही, मैं कछू तुम्हारो राजभूमि नाहीं चाहत. मैं तुमकों देखन आयो हो. जो राजा कछू गाइवेमें समुझत है के नाहीं. बड़ाई बोहोत सुनी. सो तुम्हारी बड़ाई सांची. अब मोकों कछू चहिए नाहीं. अब मैं जात हों. यह सुनिकै आसकरनने तानसेनकों बिनती करिकै बैठाये. कहे, जो यह पद तुम अपनो करिकै गाएके कोई और कौ है ? तब तानसेनने आसकरनसों कही, हे राजा ! ऐसो पद मोसों कोटि जन्ममें हू न आवे. यह तो श्रीगोकुलमें श्रीविटठलनाथ गुसांईजी हैं, सो साक्षात् श्रीकृष्ण प्रगट भए हैं. तिनके अन्तरङ्ग सेवक गोविन्दस्वामी हैं, उनने गायो है. मैं उनसों सिखे हों. उनसों साक्षात् कृष्ण वार्ता करत हैं, सङ्ग खेलत हैं. वे बड़े भगवदीय हैं. उनकी कृपा तें मोकों इतनो आयो है. यह सुनिकै आसकरनने कही, जो ऐसो कछू उपाय बतावो, जो मैं गोविन्दस्वामीके दरसन करों. तब तानसेनने कही, जो वे गोविन्दस्वामी श्रीगुसांईजीके सेवक भए बिना अपने पास काहूकों बैठन नाहीं देत. मैं हू जब श्रीगुसांईजीकौ सेवक भयो, श्रीगुसांईजी आज्ञा दिये, तब मोकों बताए हैं. तब आसकरनने कही, मैं श्रीगुसांईजीकौ सेवक निश्चै होउंगो. तब तानसेनने कही, आछौ. तब आसकरनने कही, तुम मेरे सङ्ग चलो. श्रीगुसांईजीसों बिनती करिकै मोकों सेवक करावो. तब तानसेन आसकरन पास रहे. पाछें आसकरनने सगरे गवैयानकों बिदा किये. कह्यो, अब तुम्हारे पदनसों मोकों काम नाहीं है. सो सगरे उठि गए. पाछें वृन्दावनी महन्त हते, तिनहूकों बिदा किये. जाउ तुम्हारे हू पदसों मेरो काम न होंइ. सो सगरे उठि गए. पाछें आसकरन राजाने श्रीगोकुल आईवेकी तैयारी करी. सो 'नरवर'सों कूच कियो. तब अपनो मनुष्य दोरायो, जो खबरि ल्याउ. श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल होंइ तो श्रीगोकुल चलों. श्रीगोवर्द्धन होंइ तो श्रीगोवर्द्धन चलों. सो श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल हते. सो मनुष्यने आसकरनकों खबरि करी, जो श्रीगुसांईजी श्रीगोकुलमें बिराजत हैं. तब आसकरन तानसेनकों लेकै श्रीगोकुल आए. सो राजभोग - आरति श्रीनवनीतप्रियजीकी श्रीगुसांईजीने करी. सो आसकरन दरसन करिकै मनमें बोहोत प्रसन्न भए. सो वा समय गोविन्दस्वामी यह पद गावत हते.

राग : सारङ्ग

श्रीवल्लभनन्दन रूप अनूप स्वरूप कह्यो नहीं जाई ।

यह कीर्तन सुनिकै आसकरन बोहोत प्रसन्न भए. तब तानसेनने कानमें कह्यो, जो गोविन्दस्वामी येही हैं. परन्तु अब ही बोलियो मति. पाछें अनोसर भयो. तब आसकरन और तानसेन श्रीगुसांईजीकी बैठकमें आय बैठे. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजीकों अनोसर करायकै पाछें बैठकमें पधारे. गादी तकिया पर बिराजे तब आसकरन और तानसेनने दण्डवत् करी. पाछें तानसेनने बिनती श्रीगुसांईजीसों करी, जो महाराजाधिराज ! आसकरन आये हैं. नाम पाइवेकी बिनती करत हैं. पाछें आसकरनने साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै बिनती करी, जो महाराज ! जब तें जन्म्यो हूं तब तें सदा पापाचरन किये हों. कबहू भूलो करम नाहीं कियो. राज पाछें नर्क शास्त्रमें कहे हैं. सो सुनिकै बोहोत भय पाय आपकी सरन आए हों. मोकों दीन जानिकै अपनी सरनि राखो. मैं राजमदमें कबहू कछू साधन नाहीं किये हैं. सो अब मेरी रक्षा करो. यह सुनिकै श्रीगुसांईजीकों करूना आई. तब श्रीगुसांईजी श्रीमुखसों आज्ञा किये, जो आसकरन ! कछू चिन्ता मति करो. प्रभु बड़े हैं सब आछी करेंगे. धीरज राखि. जांईकै श्रीयमुनाजीमें न्हाय आवो. तब आसकरन प्रसन्न होंइकै श्रीयमुनाजीमें न्हाइवे गए. न्हायकै अपरसमें आए. तब श्रीगुसांईजीनें नाम सुनायो. तब आसकरनकी निर्मल बुद्धि होंइ गई. तब आसकरनने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! ब्रह्मसम्बन्ध कराइए. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो तुम आजु ब्रत करो. राजकाज बोहोत किये हो. सो काल्हि तुमकों ब्रह्मसम्बन्ध करावेंगे. तब आसकरन दण्डवत् करिकै ब्रत कियो. पाछें दूसरे दिन राजभोग सरे पाछें श्रीगुसांईजी आसकरनकों श्रीनवनीतप्रियजीके आगें समर्पन कराये. तुलसी श्रीनवनीतप्रियजीके चरनारविन्द पर समर्पी. ता समय आसकरनकों लीला सहित दरसन भए. सो आसकरनने यह पद राग सारङ्गमें गायो

राग : सारङ्ग

जै श्रीविटठलनाथ कृपाल ।
कलिके महापतित अघरासी अपने करिकै किये निहाल ।।
पुरुषोत्तम निज कर ले दीने ऐसें दानी महा दयाल ।
'आसकरन'कों अपनो करिकै पुष्टि प्रमेय बचन प्रतिपाल ।।

यह कीर्तन सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए. पाछें राजभोग - आर्ति श्रीनवनीतप्रियजीकी श्रीगुसांईजी करिकै पाछें अनोसर करायकै श्रीगुसांईजी अपनी बैठकमें पधारे. तब तानसेनने श्रीगुसांईजीसों बिनति करी, जो महाराजाधिराज ! आसकरन गोविन्दस्वामीके कीर्तन सुनिकै एक कीर्तनके प्रभाव तें सरन आए हैं. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो गोविन्दस्वामी ऐसें ही भगवदीय हैं. इनके कीर्तन एक हू जो कोई धारन करे ताकौ निश्चय कल्यान होंइ. यह सुनिकै आसकरनने बिनती करी, महाराज ! गोविन्दस्वामी मोकों राजा जानिकै मोसों बोलत नाहीं. सो आपु कृपा करिकै इनकों आज्ञा देउ तो कछू गावनों मैं हू सीखुं. तब श्रीगुसांईजी गोविन्दस्वामीकों बुलाई कहे, जो गोविन्ददास ! आसकरनकों हू कछु सिखाओ. याकों राजमद नाहीं. आसकरन वैष्णव हैं. और तुम्हारे कीर्तनके प्रभावसों सरनि आए हैं. और तुम्हारे कीर्तनमें रुचि बोहोत है. तातें तुम इनकों जो ये पूछे सो बताईयो. तब गोविन्दस्वामीने कही, जो महाराजाधिराज ! आप जब जीवकों सरनि लियो चाहत हो तब अनेक उपाय करि लेत हो. सो मेरो नाम क्यों लेत हो ?

भावप्रकाश :
यह कहि जतायो, जो मैं तो आपकौ दास हूं. तातें यह प्रभाव सब आपहीकौ है.

और मेरे कीर्तनमें यह आसकरन कहा समुझेगो ? परि भली, अब आप आज्ञा किये हो सो कछुक बताउंगो. तब श्रीगुसांईजी कहे, तुम्हारे कछुक हू बताईवेमें याकौ काम होंइ जाइगो. पाछें आसकरन और गोविन्दस्वामी और तानसेन ये तीनों जनें 'रमनरेती' जाते. तहां गोविन्दस्वामीने आसकरनकों लीलाकौ क्रम और प्रात:कालतें सेन पर्यन्त और बरस दिनके उत्सवकौ प्रकार बतायो. सो एक महिना लों गोविन्दस्वामीने बतायो. पाछें गोविन्दस्वामीने आसकरनसों कह्यो, जो अब तुम भगवद्सेवा करो. तब आसकरनने गोविन्दस्वामीकों नमस्कार करि कहे, जो यह सब जो कछु मोकों प्राप्त भयो सो तुम्हारी कृपा तें. तातें अब तुम जो कछू आज्ञा करो सो मोकों कर्तव्य है. ऐसें बोहोत प्रसंसा करि आसकरन और तानसेन श्रीगुसांईजीके पास चले. तब तानसेनने आसकरनसों कही, जो गोविन्दस्वामीने सगरे कीर्तनकौ प्रकार बताए सो मोकों खबरि न परी. तब आसकरनने कही, जो गोविन्दस्वामी बड़े भगवदीय हैं. सो ये जाकों विचारिकै जितनो दान

करें तिनकों तितनो होंइ. यामें हमारी तुम्हारी चले नाहीं. पाछें आसकरन और तानसेन श्रीगुसांईजीकी बैठकमें आय दण्डवत् श्रीगुसांईजीको किये. तब आसकरनने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! गोविन्दस्वामीने भगवद् सेवा करनकी आज्ञा करी हैं. सो अब आप आज्ञा करो सो मैं करों. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो गोविन्दस्वामीने कही सोई तुमकों कर्तव्य है. अब तुम घर जांइकै भगवद् सेवा करो. तब आसकरनने बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! आप स्वरूप पदराय देउ तो मैं सेवा करों. तब श्रीगुसांईजी एक ठाढ़ो स्वरूप हतो सो खेलके ठाकुरनमें बिराजतो सो श्रीगुसांईजीने आसकरनके माथे पधराए. और 'श्रीमोहनजी' नाम श्रीगुसांईजी धरि दिए. तब आसकरनने बिनती करी, जो महाराज ! दोइ भीतरीया जो सेवामें आछी रीति भांति जानत होई सो मेरे सङ्ग करि देहु. तो मैं अपने देसमें जांइ घरमें सेवा करों. तब श्रीगुसांईजी दोइ भीतरिया सङ्ग आसकरनके करि दिये. तब आसकरन श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिकै बिनती कीनी. जो महाराजाधिराज ! मैं कछु जानत नाहीं. मो पर कृपा सदा राखोगे. यह दीन बचन सुनिकै श्रीगुसांईजीकौ हृदय भरि आयो. तब श्रीगुसांईजी आसकरनसों कहे, तुम सुखेन घर जांइकै सेवा करो. तुमकों राजकाज लौकिक बाधा न होइगी. तब आसकरन दण्डवत् करिकै अत्यन्त भाव - प्रीति सहित बिदा होंई तानसेनकों सङ्ग ले कै अपने घर आए. तब आसकरनने तानसेनकी बोहोत बड़ाई करी. जो तुम्हारी कृपा तें मैं पुरुषोत्तम पाए. अब तुम आज्ञा करो सोई मैं करों. गाम धरती लेहु, मेरे पास रहो. तब तानसेनने कही, जो तुम्हारे उपर कृपा भई. और मेरे उपर इतनी नाहीं भई. सो मेरो अधिकार नाहीं, मेरो भाग्य नाहीं. तो मैं कहा करो ? अब तो मैं घर जाउंगो. तब आसकरनने एक आछौ घोड़ा सुनहरी साजकौ अपने चढ़िवेकौ और हजार दोइ रुपैया तानसेनकों बोहोत बिनती करिकै दिये. सो तानसेन ले कै अपने घर आए. पाछें आसकरन आछो सुन्दर मन्दिर सिद्ध कराय, राज सेवा परम प्रीतिसों करन लागे. सो तनुजा वित्तजा दोउ प्रकारसों भलि भांतिसों सेवा करन लागे. राजकाज दीवानके हवाले करि दियो. सो वे आसकरन ऐसें भगवदीय भए.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

सो आसकरन भगवद्सेवा बोहोत प्रीतिसों करते. सो श्रीठाकुरजी कछू दिनमें सानुभावता जनावन लागे. तब आसकरन सेवा समय तो स्वरूपानन्दकौ अनुभव करते. तब आनन्द पावते. पाछें अनोसरमें विप्रयोग क्लेसकौ अनुभव करते. और मानसी सेवा ही नित्य करते. ऐसें करत - करत कछू दिन बीते. तब दक्षिनकौ राजा आसकरनके उपर चढ़ि आयो, राजाके लिये. सो आसकरनने सुनी तब कही, भली

भई, मै आपुही तें राज छोरत हतो. सो यह राजा आयो है ताकों राज दे कै मैं श्रीगोकुल जाय बैठोंगो. यह मनमें विचारिकै दीवानसों आसकरनने कही, जो तुम कछू लरिवेकी तैयारी मति करियो. या राजाकों राज देनो. अपने भाज चलेंगे. तब दीवानने कही, यह बात आछी नाहीं है. पाछें तुम बड़े हो, राजा हो, कहोगे सो करूंगो. पाछें रात्रिकों आसकरनकी नींद आई. तब श्रीठाकुरजीने कही, जो आसकरन ! तू भाजिवेकी विचारी है सो मोकों आछी नाहीं लागी. मैं कैसें भाजूंगो ? तातें तू लरिवे जा.

भावप्रकाश :
यामें यह जतायो, जो भक्तकी लाज जांई सो मोकों सुहाय नाहीं. तातें सूरदासजी गाए हैं

भक्तनके जीते हों जीतों भक्तन हारे हारों ।

तब आसकरनने कही, जो महाराज ! तुम्हारी सेवा बिना कैसें रहूंगो ? यह सुनिकै श्रीठाकुरजीनें कही, जो तू मानसी सेवा करेगो सो मैं मानि लेहोंगो. और भीतरिया मेरी सेवा करेंगे. तू लरिवेकों जइयो. यह सुनिकै आसकरन उठे. सो अर्द्धरात्रि समय दीवानकों बुलायकै कह्यो, जो लरिवेकी तैयारी करो. काल्हि दुपहर पाछें मैं हूं चलूंगो. यह सुनिकै दीवान बोहोत प्रसन्न भयो. सो सगरी फौजकी तैयारी प्रातःकाल करी. पाछें प्रातःकाल उठिकै देहकृत्य करि न्हायकै सेवा करनकों गए. सो राजभोग आरति तांई सगरी सेवा करि पाछें आसकरन बिदा होंइ श्रीठाकुरजीसों, भीतरिया दोउनकों समुझाय कह्यो, जो सेवामें सावधान रहियो. मोकों लरिवे जानो है. सो यह प्रतिबन्ध मोकों सेवामें आयो है. सो मेरे अभाग्य हैं. परन्तु गए बिना न चले. तातें हम जात हैं. तुम्हारे परम भाग्य हैं, जो प्रभुनकी सेवामें रहोगे. तब भीतरियानने कही, जो तुम जाउ, हमसों जितनी बनेगी तितनी सेवा मन लगायकै करेंगे. तुम काहू बातकी चिन्ता मति करियो. तब आसकरन मन्दिरकों दण्डवत् करि बाहिर अपनी कचहरीमें आए. तब दीवानने बिनती करी, जो सगरी फौज तैयार है. तुम्हारी ढील है. और दक्षिनके राजाकी फौज अपने अमलमें आय चुकी है. यह सुनिकै आसकरनने अपने घोड़ेपै असवार होंइकै उह राजाके सन्मुख चले. सो कोस दोइकौ बीच रह्यो. तब उह राजाने कही, काल्हि लराई लेऊंगो. सो आसकरनने हू डेरा उहां किये. पाछें रात्रि रहे. ता पाछें

प्रातःकाल आसकरनने दीवानसों कही, जो मैं दुपहर पाछें लरूंगो, जो बीचमें उह राजा लरे तो तुम लरियो. तब दीवानने कही, जो आछो. पाछें राजा तो न्हायकै मानसी सेवा करन बैठ्यो. ताही समै में उह राजाकी फौज चढ़ी. सो लराइ होंन लागी. तब दीवानने आसकरनसों कह्यो, जो अब लराइ होत हैं. तुम्हारे चढ़े बिना सगरी तुम्हारी फौज भाजेगी. पाछें दुपहरके तुम चढ़िकै कहा करोगे ? यह सुनिकै आसकरन उठिकै वागो पहिर्यो. पाग बांधी, पाछें घोड़ा पर चढ्यो. परन्तु मन मानसी सेवामें लाग्यो है. मङ्गला तें ले सगरो सिंगार, ग्वाल तांई भावना करि राजभोग धरन लागे. सो सगरो राजभोग धरि चुके. पाछें कढ़ीको डबरा हाथमें ले धरन लागे. ताही समय एक खाडमें घोड़ा कूद गयो. सो आसकरनके हाथसों कढीको डबरा छूट्यो. सो सगरो वागा, घोड़ा उपर कढ़ी - कढ़ी होइ गई. तब दीवानने कही, यह कहा ? तब आसकरनने कही, कछू नाहीं. मेरे पास कढ़ी हती. घर तें ल्यायो हतो, सो गिरी.

भावप्रकाश :
यामें यह जतायो, जो भगवद्धर्म गोप्य राखनो. काहूके आगें प्रगट न करनो.

पाछें सम्भारकै मनकों, फेर आसकरनने दूसरो डबरा सिद्ध करि राजभोग धर्यो. समय भये भोग सराय आरति करि अनोसर करि पाछें नेत्र खोलिकै दीवानकी ओर देखिकै सगरी फोज लै कै उह राजाके उपर चढ्यो. सो उह राजाकों महाकाल स्वरूप सेना आसकरनकी दीसी. सो डरप्यो. कह्यो यहां मैं न जीतोंगो. पाछें बादर होइ आये. सो उह दक्षिनके राजाकी फौजमें बड़े - बड़े पत्थरकी सिला जैसें ओरें बरसे. और आसकरनकी फौजमें नेन्ही बुन्द आई. सो उह राजाकी फौज कछू मारी गई, कछू ओरान तें मरी. सो उह राजा भाजिकै अपने देसकों गयो. अपने मनमें कह्यो, जो आसकरनके उपर आज पाछें कबहू उह गाम पर न जानो. पाछें आसकरन रात्रिकों घर आए. सो एक दिन श्रीठाकुरजीकी सेवा अपनी देहसों आसकरनने नाहीं करी. ताकौ महादुःख भयो. पाछें फेरि सेवा भली भांतिसों करन लागे.

वार्ता प्रसङ्ग ३ :
'और एक दिन आसकरनके घरमें चोर पेठे. सो चोरनने विचारी, जो आसकरनके ठाकुर है तहां सोने रुपेके बासन आभूषन बोहोत हैं

तहां पेंठिये. सो एक दिन एक चोर दरसनमें आयो. सो रसोई घरमें पेंठि रह्यो. सो सीतकालकौ दिन हतो. सो राजा घरी चारि रात्रि पाछिली रही तब न्हाईकै मन्दिरमें गए. सो उहां जायकै मङ्गला करी. तब चोरने विचारी, जो इह राजाकों मारिए तो गहनो वासन हाथ आवे. तब चोरने तीर मारी. सो आसकरनकी पीठमें लगिके पेटकी राह पार निकरि गई. परन्तु आसकरनकों कछू देहकी सुधि नाहीं. ऐसो मन सेवामें तत्पर भयो. सो व्यसन अवस्था सिद्ध भई. तातें देह - धर्म बाधा नाहीं किये. देहनुसन्धान छूट्यो. ताही समय दोउ भीतरिया आए. सो चोरने विचारी, जो राजाकों तीर लागी. परन्तु गिर्यो नाहीं. और अब मैं पकरौं जाउंगो, तो मेरे प्रान जायेंगे. सो रात्रिके निकरि गयो. पाछें भीतरियाने आसकरनके पीठमें और पेटमें लोहू देख्यो. तब राजासों तीन बेर पूछी. परन्तु राजा सेवाके आवेसमें कछू सुन्यो नाहीं. तब भीतरियाने दोउ ओर राखि भरिकै बड़े कपड़ासों फेंट कसि दीनी. और जहां - जहां लोहूके टपका परे हते तहां खुरचकै खासा किये. पाछें राजभोग आर्ति राजा करि अनोसर करायकै बाहिर आयो. तब राजाकों देहकी सुधि आई. तब राजाने भीतरियासों कही, जो यह मेरो फेंट क्यों बांधे ? तब भीतरियाने कही, तुम खोलिकै देखो. तुमकों चोट लागी है. सो तीरकौ सो घाव भयो है. सो जानी नाहीं जाय. तब राजा पटुका उतारकै देखें तो तीरकौ घाव जान्यो. तब राजाने कही, यह चोर कोई आयो तिनने मार्यो. सो अब यह गाम छोरिकै श्रीगोकुल जांइ तो आछो. परन्तु श्रीठाकुरजीकी आज्ञा होंई तो जायो जांय. तो श्रीगोकुल जांय सगरे द्रव्यकौ त्याग करि एक झांपीमें प्रभुकों पधरायकै विरक्त होइकै रहूं. मानसी सेवा करूं. जामें कोई चोर न आवे, काहूसों बोलनो न परें. यह राजकाजमें बोहोत प्रतिबन्ध है. यह विचारि करिकै रात्रिकों राजा सोयो. तब श्रीठाकुरजी रात्रिकों जताए, जो राजा ! अब तू मोकों पधरायकै श्रीगोकुल ले चलि. अब तेरी तनुजा वित्तजा सेवा सब होइ चुकी है. व्यसन पर्यन्त सिद्ध भयो है. सो अब तू एकान्तमें रहिकै मानसी सेवा करियो. यह सुनिकै आसकरन बोहोत प्रसन्न होइकै प्रभुकों दण्डवत् करी. पाछें प्रातःकाल उठिकै भगवद्सेवा करी. राजभोग आर्ति करी. पाछें सम्पुटमें श्रीठाकुरजीकों पधराय गुञ्जा चन्द्रिकाकौ सिंगार वेनु - वेत्र, झारी, इतनो लिये, और सब दीवानसों कहे, जो सगरो द्रव्य है मन्दिरकौ सो श्रीगुसांईजीके इहां पठाईयो. पाछें दोउ भीतरियानकों बुलायकै आसकरनने कही, अब तुम श्रीगोकुल जाऊ, तुमने बोहोत सेवा करी. पाछें एक - एक हजार रुपैया दोऊ जनेनकों आसकरनने दे कै बिदा किये. पाछें आसकरनके एक भतीजा बरस बीसकौ हतो ताकों आसकरनने राज दीनो. दीवान भलो मनुष्य हतो. सो दीवानकों राजकौ कामकाज सोंपिकै अकेले आसकरन एक तुम्बा, एक ठाकुरजीकी झांपी, धोवती, उपरेना एक, पहरिकै घरतें निकरे. पाछें मनमें आसकरनने विचार कियो, जो श्रीगुसांईजी या भांति देखिकै कहूं

मेरे उपर खीझे तो मैं कहा करूंगो ? यह सोच मनमें भयो. तब श्रीठाकुरजी श्रीगुसांईजीसों कहें, जो आसकरन सगरो त्याग करिकै श्रीगोकुल आवत हैं. ताके उपर कछू खीझियो मति. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो तुम्हारी आज्ञा है सोई हमकों कर्तव्य है. पाछें दिन दोई चारिमें आसकरन आयकै दण्डवत् किये. तब श्रीगुसांईजी देखिकै आसकरनसों कहे, आसकरन भली कीनी. मेरे मनमें यही हुती, जो आसकरन आवे तो आछौ है. सो अब तुम ऐसी भांति आए, जो अब देसमें जानो नहीं परेगो. और श्रीठाकुरजीकों पधरावो. तब आसकरन मनमें प्रसन्न होंइकै कह्यो, जैसी आपकी आज्ञा होइ. ता प्रकार हमें करनो. पाछें खेलके ठाकुर हते तहां आसकरनके ठाकुरकों श्रीगुसांईजीने पधराए. पाछें आसकरनके ठाकुरके मन्दिरकौ द्रव्य हतो. सो दीवानने हुंडी करिकै लाख रुपैयाकी हुंडी, तामें पचास हजार मन्दिरकौ, पचास हजार राजाके खजानाकौ हतो सो पठायो. तब श्रीगुसांईजी मन्दिरकौ द्रव्य हतो सो तो पचास हजार श्रीनाथजीके इहां सोनेके थार, कटोरा, डबरा करि पठाए.

भावप्रकाश :
यामें यह जताए, जो प्रभुनकौ द्रव्य अपने कार्यमें नहीं लावनो. लावें तो बहिर्मुखता प्राप्त होंई.

और पचास हजार आसकरनकी सत्ताकौ हतो, सो आपु अङ्गीकार किये. पाछें आसकरन एक दरसन श्रीनवनीतप्रियजीकौ और अपने ठाकुरकौ करि जाते. पाछें रमनरेतीके पास टीला पर रात्रि - दिन बैठि रहते. विप्रयोगकौ अनुभव करते. मानसी सेवा करते. सो आसकरन ऐसें भगवदीय हे. सो जो कोई कीर्तन गावते तामें अपने प्रभुकी छाप धरते. ‘‘आसकरन प्रभु मोहन नागर’’. मोहनजी घरके सेव्य हैं. या प्रकार आसकरन श्रीगोकुलमें रहते. ‘जसोदा घाट’ एक बार नित्य न्हाय जाते.

वार्ता प्रसङ्ग ४ :
और एक बार होरीकै दिन हते. सो आसकरन ‘गोपकुआं’ तें ‘जसोदा घाट’ न्हाइवेकों आवत हते. इतनेमें रमनरेतीमें मुरली श्रीठाकुरजीने बजाई. सो मुरलीकौ शब्द आसकरनने सुन्यो. सो सुनतही न्हाइवो तो भूलि गये. पाछें फेरि ‘रमनरेती’ गए. तहां जांयकै देखे तो अलौकिक

गोकुल नन्दालयकी लीलाकौ दरसन भयो. सो ब्रजभक्त श्रीठाकुरजीके सङ्ग होरी खेलनकों आई हैं. सो बलदेवजी सखा गोप सहित एक ओर हैं. और एक ओर ब्रजभक्त मिलिकै होरी खेलन लागे. तहां तें एक गेल 'रावल'की श्रीस्वामिनीजीके घरकी है. ता दिसा श्रीस्वामिनीजी ठाढ़ी हैं. एक गेल बलदेवजीकी है. सो अपने सङ्गके शस्त्रधारी बड़े गोप लिये ठाढ़े हैं. एक गेल महावनकी है. ता दिसा नन्दरायजी जसोदाजी ठाढ़े हैं. एक गेल घोख जहां गांईकौ खरिक है तहांकी है. ता दिसा श्रीठाकुरजी अपनी बराबरके सखा लिये ठाढ़े हैं. परस्पर होरी खेलत हैं. सो या प्रकार आसकरनकों लीला सहित दरसन भयो. सो आसकरनकों ऐसो आनन्द भयो, जो देहदसा रही नाहीं. अन्मत्त भए दरसन करन लागे. सो हृदयसों आनन्द उमग्यो. तब यह धमार आसकरनने गाई

राग : धनाश्री

या गोकुलके चौहटे रङ्गराची ग्वालि ।
मोहन खेलें फाग, नैन सलोनरी रङ्गराची ग्वालि. ।।
नरनारीन आनन्द भयो । रङ्ग. । सांवलके अनुराग । नैन. ।।१।।
दुन्दुभी बाजे गहगहे । रङ्ग. । नगर कोलाहल होंई । नैन.
उमड्यो मानस घोखकौ । रङ्ग. । भवन रह्यो नहीं कोई । नैन. ।।२।।
डफ बांसुरी सुहावनी । रङ्ग. । ताल मृदङ्ग उपङ्ग । नैन.
झांझ झालरी किन्नरी । रङ्ग. । आवज कर मुख चङ्ग । नैन. ।।३।।
उतहि समाज गोपालकौ । रङ्ग. । बलजुत नन्दकुमार । नैन.
रत गोपी नवजोबना । रङ्ग. । अम्बुज लोचन चारु ।। नैन. ।।४।।
गारी देति सुहावनी । रङ्ग. । प्रमुदित गोप कदम्ब । नैन.
जुवती जूथ एकत्र भए । रङ्ग. । गावति मदन विडम्ब ।। नैन. ।।५।।
रतन खचित पिचकाईयां । रङ्ग. । कर लिये गोकुलनाथ । नैन.

तकि छिरके ता वृन्दकों । रङ्ग. । जे राधाके साथ । नैन. ।।६।।
केसु कुसुम निचोयकै । रङ्ग. । भरत परस्पर आनि । नैन.
मृगमद चोव कुमकुमा । रङ्ग. । चारु चतुर सम सानि । नैन. ।।७।।
सुरङ्ग गुलाल उडावही । रङ्ग. । बूका बन्दन धूरि । नैन.
चढि विमान सुर देखही । रङ्ग. । देहदसा गई भूलि ।। नैन. ।।८।।
खेल मच्यो अति गहगह्यो । रङ्ग. । चितवत ब्रजबधू धाय । नैन.
राधा रसिक सिरोमनि । रङ्ग. । 'आसकरन' बलि जाय । नैन. ।।९।।

या प्रकार आसकरनने गाई. पाछें खेल होइ चुक्यो. श्रीठाकुरजी ब्रजभक्तन सहित श्रीनन्दरायजीके घर पधारे. तब आसकरन उहां देखे तो रमनरेती है. और कछू नाहीं. तब आसकरन ब्याकुल होईकै महावन दोरे गए. जो मैं फेरि लीला देखूं. सो उहां गामके लोग सब आ मिले. तब सब लौकिक रीति देखिकै विचार्यो, जो यह लीला मेरे मनोरथसों कैसें देखोंगो ? जब प्रभु अनुग्रह करेंगे तब दरसन होइगो. पाछें आसकरन 'जसोदा घाट' तीसरे प्रहर न्हायवेकों आए. न्हायकै श्रीगुसांईजीके दरसन करिवेकों आसकरन आए. सो उत्थापनकौ समय भयो हतो. श्रीगुसांईजी गादी तकिया पै बिराजे हते. न्हाइवेकी तैयारी हती. ताही समय आसकरन आयकै दण्डवत् किये. तब श्रीगुसांईजी आसकरनकों देखिकै पूछे, जो आसकरन ! आज तुम प्रातःकाल दरसनकों नाहीं आये, सो या समय आये, सो क्यों ? तब आसकरनने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! मैं प्रातःकाल गोपकुआंकी ओर गयो हतो. पाछें तहां तें जसोदा घाट न्हाइवेकों चल्यो. सो मारगमें श्रीठाकुरजीकी मुरलीकौ शब्द सुन्यो. सो मैं रमन रेतीमें गयो, तहां अलौकिक लीला देखी. आपकी कृपा तें होरीके खेलकौ मैं दर्शन पायो. तहां यह धमार गायो. सो जब खेल होइ चुक्यो तब मैं कछु देख्यो नाहीं. पाछें महावन गयो. सगरे ढूंढ्यो. सो फेरि दरसन न भये. यह सुनिकै श्रीगुसांईजी कहे, जो प्रभु तुम्हारे उपर प्रसन्न होइ कृपा करिकै दरसन दिए हैं. सो इहां नित्य विहार करत हैं. अपने चाहे तें मिले नाहीं. जब आपके मनमें होइ तबही दरसन देहि. सो तुमकों फेरि हू दरसन होइंगे. तुम्हारो हृदय शुद्ध है. यह सुनिकै आसकरनने दण्डवत् करि बिनती करी, जो महाराज ! यह सब आपके चरनकमलकौ प्रताप है.

वार्ता प्रसङ्ग ५ :

और एक समय आसकरन श्रीगुसांईजीके दरसन करन सन्ध्या - आर्ति समै आए. सो ता दिन श्रीगुसांईजी आसकरनकों आज्ञा कीनी, जो आसकरन ! सेन समै पोढायवेके कीर्तन तुम करियो. चले मति जैयो. सो सन्ध्यार्तिकौ दरसन आसकरन करिकै जगमोहनमें बैठे रहे. सो पाछें सेनभोग आयो. तब आसकरनकों ब्रजभक्तकी सहचरिनकौ दरसन भयो. सो सहचरी सब श्रीठाकुरजीसों प्रार्थना करति हैं, जो हमारी स्वामिनी सगरी सामग्री सिद्ध निकुञ्जमें करि राखे हैं, सो तुम पधारिकै मनोरथ पूरन करो. यह सगरो अनुभव आसकरनकों भयो. तब सेन समय केदार रागमें आसकरनने यह कीर्तन गायो

राग : केदारो

तुम पौढो हों सेज बनाउं ।
चांपों चरन रहों पाटीतर मधुरे सुर केदारो गाऊं ।
सहचरी चतुर सबे जुरि आई दम्पति सुख नैनन दरसाऊं ।
'आसकरन' प्रभु मोहन नागर यह सुख स्याम सदा हों पाऊं ।

यह कीर्तन आसकरनने गायो. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत ही प्रसन्न भए. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजीकों पौढ़ाय अनोसर करायकै अपनी बैठकमें पधारे. तब आसकरनने दण्डवत् कीनी. तब श्रीगुसांईजी आसकरन तें कह्यो, जो भलो कीर्तन गायो. तब आसकरनने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! आपु कृपा करिकै मोकों सेन समयकौ अनुभव करायो. तब मैं कीर्तन गायो. तब श्रीगुसांईजी श्रीमुखसों आज्ञा किये, जो पौढिवेके समय दोय कीर्तन तुम नित्य करियो. ता दिन तें आसकरन सेन समयके कीर्तन करते. एम मानकौ, एक पौढिवेकौ. सो या भांति आसकरनके उपर श्रीगुसांईजी अनुग्रह करते. श्रीठाकुरजी अनुभव करावते.

वार्ता प्रसङ्ग ६ :

और एक समय आसकरन श्रीगुसांईजीके सङ्ग श्रीजीद्वार गए. तहां चतुर्भुजदास मानकौ कीर्तन भोग समय गावत हते.

राग : नट

राधे तू मान मदनगढ कियो ।
वाकौ कोट ओट घूंघटकौ नाहिंन जात लियो ।
पठई बसीठ हते इतनी तें कोऊ न उत्तर दियो ।
'चतुर्भुजदास' लाल गिरिधरकौ अधर - सुधारस पियो ।

यह सुनत ही आसकरनकों मूर्छा आई. सो चारि घरि पाछें चैतन्यता भई. पाछें सेन आर्ति समय आसकरनकी मूर्छा बीती. सो सेन आर्तिके दरसन आसकरनने श्रीनाथजीके किये. मनमें बोहोत ही आनन्द पायो. पाछें अनोसर करायकै श्रीगुसांईजी अपनी बैठकमें पधारे. तब सगरे भगवदीय बैठकमें आए. आसकरन हू तहां बैठे. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीसुबोधिनीजी कहे. सो कथा सुनिकै सगरे वैष्णव, आसकरन बोहोत ही प्रसन्न भए. पाछें आसकरनने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! चतुर्भुजदास भोजके समय मानकौ कीर्तन गावत हते. सो इनकों उह लीलाकौ अनुभव होत है ? तब यह सुनिकै श्रीगुसांईजी कहे, आसकरन ! तुम जानत नाहीं. चतुर्भुजदासकों तो कुम्भनदासजी सारिखे भगवदीय श्रीआचार्यजीके अन्तरङ्ग सेवक, तिनके सङ्ग तें चतुर्भुजदासकों रहस्य लीलाकौ अनुभव होंइ सो उचित ही है. यह सुनिकै आसकरनने कही, जो कुम्भनदाससों मिलनो. पाछें दूसरे दिन प्रातःकाल कुम्भनदास मङ्गलाके दरसनकों आए. तब आसकरनने जै श्री कृष्ण किये. सो श्रीकृष्ण - स्मरन सुनत ही कुम्भनदासके रोम - रोममें आनन्द भयो. नेत्रन तें अश्रुनकी धारा चली. सो आसकरन देखिकै चकित होइ रहे. कहे, भगवन्नाम सुनत जिनकों इतनो प्रेम प्रगट भयो. तिनकों अनुभवमें कहा कहनो ? पाछें आसकरन चतुर्भुजदास मिलिकै कुम्भनदासकौ सङ्ग दिन पांच करे. सो कुम्भनदासके सङ्ग तें आसकरनकौ भगवद्‌भाव बोहोत बढ्यो. सो आसकरन हू बोहोत पद रहस्य लीलाके किये. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुलमें पधारे तब आसकरन श्रीगोकुल आए.

सो आसकरन श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे. तातें इनकी वार्ता कहां ताई कहिए. वार्ता ।।१२३।।

१२४-एक मोची, द्वारिकाके मारगमें एक गाममें रहतो

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक मोची द्वारिकाके मारगमें एक गाममें रहतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त है. लीलामें इनको नाम 'ब्रह्मानन्दिनी' है. ये 'शशीकला' तें प्रगटी हैं. तातें इनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
एक समै श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल तें श्रीरनछोरजीके दरसनकों श्रीद्वारिकाजी पधारे. तब मारगमें यह मोची रहत हतो. ता गामके बाहिर श्रीगुसांईजी आपके डेरा भए हते. सो श्रीगुसांईजी रसोई करि श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पि समयानुसार भोग सराइ आप भोजन करि आचमन करि बीरी अरोगिकै गादी तकिया उपर बिराजे हते. सब सेवक टहलुवा महाप्रसाद ले चुके हते. ता समै यह मोची उहां आए निकस्यो. तहां याकों श्रीगुसांईजीकौ दरसन भयो. सो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तमकौ दरसन भयो. तब यह अति आनन्द पाइ श्रीगुसांईजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करि दोऊ हाथ जोरि बिनती करिके कह्यो, जो महाराज ! आपु कृपा करिकै मोकों अपनो सेवक करिये. तब श्रीगुसांईजी आप कृपा करि वा मोचीकों नाम सुनाइकै सेवक किये. श्रीगुसांईजी वा मोचीकों आज्ञा किये, जो तू कहूं तें भगवत्स्वरूप ले आउ. ताकी तू सेवा करि ! तब वह मोची श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो महाराज ! मेरे एक श्रीसालिग्रामजीकौ स्वरूप है. तब वह सालिग्रामजीके स्वरूपकों मंगाय, ताकों श्रीगुसांईजी पञ्चामृतसों स्नान कराइ, पाट बैठारिकै उनकी सेवा करिवेकी आज्ञा किये. पाछें आप श्रीरनछोरजीके दरसनकों श्रीद्वारिकाजी पधारे. सो वा मोचीकी आसक्ति तों श्रीगुसांईजीमें भई है. सो वह मोची सालीग्रामजीमें

श्रीगुसांईजीकी भावना करि भगवत्सेवा करिवे लग्यो. सो तिलक छापा करे. सुन्दर उज्वल वस्त्र पहिरे, धोती उपरेना और कछू पहिरे नाहीं. ब्राह्मनकी नांई रहन लाग्यो. तब वाकों गामके ब्राह्मन सब मिलिकै दुःख देन लागे. कहे, जो तू सूद्र होंईकै ब्राह्मनकी चालि क्यों चलत है ? तब यानें कह्यो, जो मैं हूं ब्राह्मन हौं. तब ब्राह्मनन कही, जो कछूं छाछकौ दूध होत है य तब यानें कही, जो प्रभुनकी कृपा होंई तो छाछकौ हू दूध होंई. प्रभु सर्व करन समर्थ हैं. तब ब्राह्मनन कही, जो हम देखें तो माने. तब वाने छाछ मंगाई. पाछें प्रभुनसों बिनती कीनी, जो महाराज ! श्रीगुसांईजीके सम्बन्ध करि, जो हों ब्राह्मन भयो हों तो या छाछकौ दूध करि दीजो. ता पाछें घरी एक पाछें देखें तो छाछकौ दूध भयो है. तब तो सब ब्राह्मन आश्चर्य करन लागे. पाछें वा दूधकी खीरि करि सब ब्राह्मनकों खवाय बिदा किये. तब सब वा मोचीकों दण्डवत् करि अपने - अपने घर गए. ता दिन पाछें वा मोचीकों कोऊ दुःख न देतो. सब कोऊ उनकौ बोहोत आदर करते.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णवकौ स्वरूप महा अलौकिक है. काहे तें, जो वैष्णवनके हृदयमें परब्रह्म श्रीकृष्ण साक्षात् सदासर्वदा बिराजत हैं. तातें उनमें अलौकिक ब्राह्मनत्व सिद्ध है.

सो यह मोची श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें उनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१२४।।

१२५-एक सेठ, खरबूजावारौ, आगरेकौ

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक सेठ, आगरेमें रहतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'उल्लासिनी' है. ये 'शशीकला' ते प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

ये आगरेमें एक द्रव्यपात्र बनियाके जन्मे. सो वा बनियाकौ व्योहारमें रूपचन्दनन्दासों बोहोत मिलाप रहतो. सो रूपचन्दनन्दाकी आचार क्रिया देखि वह बनिया रूपचन्दनन्दासों बार - बार कहे, जो मोकों तुम्हारो मार्ग आछौ लगत है. तातें मोकों वैष्णव करो. परि रूपचन्दनन्दा या बातकौ कछू उत्तर दे नाहीं. काहेतें, जो रूपचन्दनन्दा जाने, जो दैवी होइगो तो आपु ही तें सरनि होइगो. पाछें कछूक दिनमें श्रीगुसांईजी रूपचन्दनन्दाके घर पधारे. तब वह बनिया श्रीगुसांईजीके दरसन पायो. तब वा बनियाने रूपचन्दनन्दासों कह्यो, जो अब मोकों श्रीगुसांईजीकौ सेवक कराइए. तब रूपचन्दनन्दाने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! यह बनिया सेवक होनकी कहत है. तब श्रीगुसांईजी वाकों कृपा करि नाम निवेदन कराए. पाछें वह बनिया घर आइ अपनी स्त्री - बेटा दोउनकों रूपचन्दनन्दाके घर ल्यायो. पाछें उनकों श्रीगुसांईजीके सेवक कराए. नाम - निवेदन करावाए. तब वे दोउ वैष्णव भए. पाछें ये तीनों रूपचन्दनन्दाके घर नित्य जांइ भगवद्वार्ता सुने. ता पाछें कछूक दिनमें वह बनिया और वाकी स्त्री दोउ मरे. तब वाकौ बेटा घरमें अकेलो रह्यो. सो वाकौ ब्याह तो भयो नाहीं हतो. सो वानें अपने मनें विचार कियो, जो अब संसारमें परनो उचित नाहीं. प्रभुन ये सुन्दर देह दीनी है. सो तो उनकी सेवाके तांई दीनी है. तातें भगवत्सेवा करनी. सो बहोरि श्रीगुसांईजी आगरा पधारे तब या सेठने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! कृपा करि मोकों भगवत्सेवा पधराई दीजिए. तो हों सेवा करों. मेरो यह मनोरथ है.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो उह सेठके माथें श्रीमदनमोहनजीकी सेवा श्रीगुसांईजीने पधराई. सो उह सेठके द्रव्य बोहोत हुतो. सो उह सेठ राजसेवा करतो. सो उह सेठकौ चाकर हतो. सो साग फलफलाहरी आछी नाहीं ल्यावतो. सो सस्ती लेतो. जामें पैसा थोरे लगें, वस्तु बोहोत आवे. सो उह सामग्री आछी नाहीं आवती. सो उह सेठ नित्य अपने मनुष्यसों कहतो, जो तू आछी सामग्री उत्तम तें उत्तम क्यों नाहीं ल्यावे ? पैसा अधिकी लागे तो मेरे लगेंगे. तू उत्तम तें उत्तम ल्याइओ. या प्रकार सेठ नित्य कहे. परन्तु उह मनुष्यके मनमें आवे नहीं. सो सेठने मनमें विचारी, जो या मनुष्यकौ सेवामें काम नाहीं. सेवामें कोई वैष्णव होई तो सामग्री उत्तम आवे. सो उह गाममें एक वैष्णव चुकटी मांगतो. सो मध्याह्नके समै सेठके घर चुकटी लेन आयो. तब सेठने वैष्णवसों बिनती करी, जो वैष्णव एक दुःख मेरे है. सो मैं तुमसों कहत हों. तुम्हारो मन प्रसन्न होइ ते मानियो. तब उह वैष्णवने कही तुम कहो. मोसों बनेगो सो मैं करूंगो. तब सेठने कही, मेरो चाकर है, सो

सागफल मेवा आछौ बाजार तें नाहीं ल्यावत. मैं बोहोत कहि पचिहार्यो. सो तुम अपने श्रीठाकुरजीकों मेरे श्रीठाकुरजीके पास पधरावो. और तुम सागघरकी सेवा करो. तो आछो है. तब उह वैष्णवने कही, आछौ. तुम प्रसन्न होउगे तो ऐसो करूंगो. पाछें उह विरक्तने अपने श्रीठाकुरजीकों सेठके घर पधराए. पाछें सागघरकी सेवा करन लागे. सो आगरेमें आछें तें आछौ साग फलादि मेवा जो आवतो सो महेंगे तें महेंगो ले आवतो. सो सेठ बोहोत उह विरक्तके उपर प्रसन्न रहतो. पाछें सेठने अपनो द्रव्यकौ कोठा उह विरक्तकों सोंपि दियो. और कह्यो, जो सामग्री ल्याउ सो दाम तुम ही दीजो. दुपहर पाछें हमकों लिखाय दीजो. सो उह विरक्त अपने मन - मानतो साग (और) आछी आछी सामग्री मेवा, फल ल्याई दाम आपु चुकाय देतो. पाछें राजभोग - आर्ति पाछें, महाप्रसाद लिये पाछें, सब सेठकों लिखाय देतो. सो सेठ प्रसन्न होइकै लिख लेतो. ऐसें ही करत बोहोत दिन बीते. पाछें एक दिन कार्तिककौ महिना हतो. ता दिन एक खरबूजा बोहोत सुन्दर एक मेवाफरोस ल्यायो. सो उह वैष्णव देखिकै बोहोत प्रसन्न भयो. कह्यो, आजु काल्हिकी रितुमें खरबूजा कहां मिले ? सो यह फल प्रभु अङ्गीकार करें तो आछौ है. पाछें उह विरक्तने उह खरबूजाकौ मौल पूछ्यो. सो उह मेवाफरोसने एक रुपैया कह्यो. तब वैष्णवने कही आछौ, एक रुपैया देउंगो. यह फल मोकों दें. ता ठौर एक मुगल ठाढ़ो हतो. सो उन कह्यो, मैं दोइ रुपैया देउंगो. खरबूजा मैं लेउंगो. तब वैष्णवने कही मैं पांच रुपैया देउंगो. तब मुगलने दस रुपैया कहे. तब वैष्णवने एक सौ रुपैया कहे. तब मुगल पांच सौ रुपैया तांई आयो. तब वैष्णवने रीस करिकै हजार रुपैया कही. तब मुगल हारिकै चल्यो गयो. तब वैष्णव उह मेवाफरसकों सेठके घर ल्यायकै हजार रुपैयाकी थेली मेवाफरोसकों निकरि दियो. सो मेवाफरोस रुपैया लै चल्यो गयो. पाछें उह वैष्णव खरबूजा लै कै सागघरमें धर्यो. और हू सगरो साग फलादि मेवा धर्यो. पाछें राजभोग आर्तिकौ समै भयो. सो दोउ जनें सेवासों पहोंचि श्रीठाकुरजीकों अनोसर कराए. पाछें सेठ और विरक्त महाप्रसाद लेइ बैठे. तब विरक्तने कही, साग फलादि लिखि लेउ. तब सेठ कह्यो, भले. पाछें उह विरक्त लिखान लाग्यो. सो सेठ लिखन लागे. सो सगरे साग लिखायकै मेवा लिखायो. मेवा लिखायकै पाछें फलादि लिखायो. तामें हजार रुपैयाकौ खरबूजा एक विरक्तने लिखायो. सो जैसें सगरी सामग्री सेठने लिखी ताही भांति उह हजार रुपैयाकौ खरबूजा हू सेठने लिख लीनो. यह नाहीं पूछ्यो, जो हजार रुपैया एक खरबूजाकौ कौन भांति दीनो. सेठके मनमें यह निश्चय विश्वास है, जो वैष्णव करें सो सांची करेंगे. आछी करेंगे. ऐसो सरल सुभाव सेठकौ हतो. पाछें सगरे साग लिख चूके तब दोउ जनें एक घरी सोए. सो सिज्या मन्दिरतें श्रीठाकुरजी उठिकै सागघरमें पधारे. सो उह खरबूजा हतो ताकों ले कै अपने निजमन्दिरमें पधारे. खरबूजासों खेलन लागे. पाछें उत्थापनसों

दोइ घरी पहिले दोउ जनें भगवद्वार्ता करिकै उठे. यह नेम दोउ जनकौ हतो. सेवाके समय सेवा करे. पाछें महाप्रसाद ले कै दुपहरके दोइ घरी एक घरी सोवें. पाछें उठिकै भगवद्वार्ता, श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजीके ग्रन्थ देखे.

सो जब उत्थापनमें दोइ घरीकी ढील रही तब दोउ जनें उठिकै न्हाये. सो सेठ तो न्हायकै मन्दिरमें आयो. और उह विरक्त न्हायकै उत्थापनकी सामग्री सिद्ध करनके लिये सागघरमें आयो. सो सागघरमें खरबूजाकों नाहीं देख्यो. तब उह विरक्तके मनमें महादुःख भयो. मनमें कह्यो, जो देखो ! मैं सैठकों हजार रुपैयाकौ खरबूजा लिखायो. सो सेठने कछू पूछ्यो नाहीं. सो उह खरबूजा सेठ जब न देखेगो तब यह जानेगो, जो खरबूजाकौ नाम लै कै विरक्तने हजार रुपैया लियो. और देखो, मैं हजार रुपैया खरचके खरबूजा ल्यायो. सो प्रभु अङ्गीकार न कियो. तातें यह मैं जानत हों, जो मैं महादुष्ट हों. दोष तें भर्यो हों. सो मेरी ल्याई वस्तू प्रभुन कौन प्रकार अङ्गीकार करत होंइगे ? ऐसी भांति उह विरक्त मनमें बोहोत खेद पायो. पाछें और मेवा फलादिक नित्य करत हते सो ताहीं भांति संवारीकै उह विरक्त आयो, मन्दिरमें. पाछें सेठने उत्थापन समै किवाड़ मन्दिरके खोले. तो श्रीठाकुरजी सिंघासन उपर हाथमें खरबूजा लिये बिराजे हैं. सो देखिकै सेठ बोहोत ही मनमें प्रसन्न भयो. तब सेठने वैष्णवसों कह्यो, जो वैष्णवजी ! तुम आजु खरबूजा ऐसें स्नेहसों ल्याये, जो श्रीठाकुरजी अपने श्रीहस्त कमलमें लिए बिराजे हैं. तुम दरसन करो. सो उह विरक्त दरसन करिकै मनमें बोहोत प्रसन्न भयो. सगरो दुःख हृदयमें भयो हतो सो गयो. आनन्द पायो. तब श्रीठाकुरजी उह सेठसों कहे, जो तू धन्य है. जो वैष्णवसों पूछे नाहीं, जो हजार रुपैयाकौ एक खरबूजा कौन प्रकार ल्यायो ? सो तेरे मनमें ऐसा वैष्णव पर विश्वास है. सो मैं दोउनके उपर प्रसन्न हों. तुम चाहो सो मांगि लेहु. तब सेठने कही, जो हमकों तो यही चाहिए, जो वैष्णव पर सदा याहू तें अधिक भाव रहे. कबहू वैष्णव पर अभाव न होई. यह सुनिकै श्रीठाकुरजी सेठके उपर बोहोत प्रसन्न भए. पाछें उह विरक्तसों श्रीठाकुरजीने कही, जो मैं तिहारे उपर हू बोहोत प्रसन्न हूं. जो तू मेरे लिये हजार रुपैया एक खरबूजाकौ दिये. सो मांगि. तब उह वैष्णवने कही, महाराज ! मैं यह मांगत हों, जो इह सेठकौ सङ्ग मोकों न छूटे. यह वैष्णवके सङ्ग तें मेरी बुद्धि निर्मल भई है. सो सदाई हम इन याही प्रकारसों निर्वाह होंई. यह सुनिकै श्रीठाकुरजी कहे, ऐसें ही होइगो. पाछें सेठने श्रीठाकुरजीसों बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! खरबूजा देहु तो संवारि ल्याउं. तब श्रीठाकुरजीने कही, जो यह खरबूजा मोकों बोहोत प्यारो है. तातें आज मेरे पास रहन देहु. मैं वासो खेलत हों. काल्हि उत्थापन समै संवारियो. यह सुनिकै सेठने

श्रीठाकुरजीसों बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! काल्हि तांई खरबूजा बिगरि जायगो. यह सुनिकै श्रीठाकुरजीने कही, जो अब मेरो श्रीहस्त लाग्यो. अब यह नाहीं बिगरेगो. तू चिन्ता मति करे. तब सेठने दण्डवत् करि पाछें हाथ धोइ उह नित्यकी सामग्री उत्थापनकी हती सो भोग धरे. पाछें नित्यकी नांई सेन पर्यन्त पहूंचे. पाछें श्रीठाकुरजीकों सेन कराय अनोसर करि पाछें सेठ बाहिर आयो. तब सेठने वा वैष्णवसों कही, जो तुम्हारो धन्यभाग्य है. सो तुम्हारी ल्याई वस्तूने श्रीठाकुरजी या प्रकार अङ्गीकार करत हैं. तब वा विरक्त वैष्णवने सेठसों कही, जो तुम धन्य हो. सो वैष्णवके उपर ऐसो दृढ़ विश्वास राखत हो. तब सेठने कही, जो मेरो कहा है ? यह सब द्रव्य तुम्हारो ही है. पाछें दोउ वैष्णव महाप्रसाद ले भगवद्वार्ता करन बैठे. सो अर्द्धरात्रि गई ता पाछें सोए. सो घरी दोइ रात्रि पाछिली रही. तब दोउ जनें उठिकै देहकृत्य करि न्हायकै सगरी सेवा राजभोग लों पहोंचे. पाछें उत्थापनके समै सेठ और उह विरक्त न्हाये. सो सेठ मन्दिरमें न्हायकै गये. विरक्तने नित्यके उत्थापनकी तैयारी करी. सो वह खरबूजा समारिकै श्रीठाकुरजीकों भोग धर्यो. सो ताही समय सेठने भोग समय बड़ो उत्सव कियो. श्रीनाथजी श्रीगुसांईजीकी भेंट काढ़ी. सो श्रीगोकुलकों पठाई. और श्रीठाकुरजीकों बोहोत सामग्री अरोगाई. पाछें सब गामके वैष्णव बुलायकै महाप्रसाद लिवायो. तब रञ्च - रञ्च खरबूजामें तें सबकों धर्यो. सो बोहोत अद्‌भुत स्वाद आयो. परम आनन्द भयो.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णव पर विश्वास राखनो. वैष्णवकौ सङ्ग करनो. तातें प्रभु तत्काल प्रसन्न व्है.

सो उह सेठ तथा विरक्त वैष्णव दोउ श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे. सो इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१२५।।

१२६-एक वैष्णव, गुजरातकौ

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक वैष्णव हुतो, सो गुजरातमें रहतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'दोहिनी' है. ये 'शशीकला' तें प्रगटी हैं. तातें इनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै श्रीगुसांईजी गुजरातकों पधारे हुते. तब याकों श्रीगुसांईजीके दरसन भए. सो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तमके दरसन भए. तब वाने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मोसों नाम सुनाइये. तब श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो तुम स्नान करिकै आवो. तब वह स्नान करिकै आयो. तब श्रीगुसांईजीने कृपा करिकै नाम सुनायो. ता पाछें निवेदन करायो. तब वा वैष्णवने बिनती कीनी, जो महाराज ! अब कहा कर्तव्य है ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो हम तोकों भगवत्सेवा पधराय देत हैं. ताकी तू सेवा करियो. और प्रभुन पर भरोंसा राखियो. प्रभु सर्व करन समर्थ हैं. तातें उनकी कृतिमें अविश्वास सर्वथा मति करियो. तब वा वैष्णवने श्रीगुसांईजीसो बिनती कीनी, जो महाराज ! मेरे मनमें एक सन्देह है. सो आपसों निवृत्त होइगो. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो पूछि, कहा सन्देह है ? तब वा वैष्णवने कह्यो, जो महाराज ! प्रभु अपने निकट रहिवे वारेकी तो सुधि लेत हैं. परि ये जो दूर - दूर देसान्तरमें रहत हैं तिनकी सुधि कौन लेत होइगो ?

तब श्रीगुसांईजी वा वैष्णवसों कहे, जो सुनि ! श्रीठाकुरजीकौ नाम ईश्वर है. विश्वंभर है. जो मनकी बात नाहिं जानि तो ईश्वर नाम काहेकों कहनो परे ? तातें श्रीठाकुरजी बड़े दयाल हैं सबकी रक्षा करत हैं. ये बचन श्रीगुसांईजीके सुनिकै वह बोहोत प्रसन्न भयो. ता पाछें श्रीगुसांईजीने वा वैष्णवकों एक लालजीकौ स्वरूप सेवा करिवेंकों पधराय दियो. पाछें सेवाकी सब रीति भांति समुझाइ कह्यो, जो इनकी सेवा तू नीकी भांति करियो. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप तो श्रीगोकुल पधारे. और वह वैष्णव तो श्रीगुसांईजीकी आज्ञा प्रमान श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लाग्यो. सो तन्मय होइकै श्रीठाकुरजीकी सेवा करतो. ऐसें करत बोहोत दिन भए तब श्रीठाकुरजी सानुभावता जतावन लागे. जो चहिए सो मांगि लेते.

भावप्रकाश :
या वार्तामें यह जतायो, जो वैष्णवकों प्रभुन पर दृढ़ भरोंसो राखनो. प्रभु सर्व करन समर्थ है. तातें लौकिक वैदिककी चिन्ता सर्वथा न करनी. और भगवत्सेवा तन्मय होंईके करनी.

सो यह वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१२६।।

१२७-दामोदर झा, बडनगरकौ

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक दामोदर झा बडनगरा ब्राह्मन, बडनगरमें रहतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम ‘इन्द्रप्रभा’ है. ये ‘नीला’ तें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं.

सो ये गुजरातमें बडनगर गाम है, तहां एक नागर ब्राह्मनके प्रगटे. सो वह ब्राह्मन सैवी हतो. सो दामोदरदास झा बरस आठके भए. तब तें ये विद्या पढन लागे. सो विद्या बोहोत पढे. बड़े पण्डित भए. पाछें बरस बाइसके भए तब इनके माता - पिता मरे. सो वह अकेले ही रहे. सो वा गाममें सैवी बोहोत हुते. और वैष्णव थोरे हुते.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो दामोदर झा वैष्णवनकों टीलूआ कहतो. और कहतो जो यह मार्ग वेदमूलक नाहीं है. सो जब बडनगरके वैष्णव श्रीगोकुल आए,

श्रीगुसांईजीके दरसनकों तब सब वैष्णवनने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! बडनगरमें एक दामोदर झा नागर बडनगरा है. सो आपकों बड़ो पण्डित माने हैं. सो वैष्णवनकों टीलूआ कहत हैं. और यह कहत हैं जो यह मार्ग वेदमूलक नाहीं है. तातें महाराजाधिराज ! याकों कछू कह्यो चाहिए. ता पाछें वैष्णव तो श्रीगुसांईजी आपके दरसन करिकै बडनगर अपने घरकों आए. ता पाछें केतेक दिनमें श्रीगुसांईजी आप द्वारिकाजीकों पधारे, श्रीरनछोरजीके दरसनकों. सो रनछोरराइजीके दरसन करिकै जब श्रीद्वारिकाजी तें पाछें फिरे तब श्रीगुसांईजी आप बडनगर पधारे. सो बडनगरमें एक वैष्णवके घर उतरे. सो श्रीगुसांईजी आप भोजन करिकै गादी तकियान पर बिराजे. तब वैष्णव सब श्रीगुसांईजी आगें बैठे हते. तब श्रीगुसांईजी आपने कह्यो, जो इहां कौन कहत हैं, जो ये मार्ग वेदमूलक नाहीं हैं ? जो यह मार्ग श्रीआचार्यजी महाप्रभुनने प्रगट कियो है, सो सर्वोपरि है.

भावप्रकाश :
याकौ अभिप्राय यह, जो और मार्गमें तो तीन प्रमान कहे हैं. वेद, गीता ब्रह्मसूत्र. परि या मार्गमें तो श्रीआचार्यजीने चारि प्रमान माने हैं. वेद, गीता, ब्रह्मसूत्र, श्रीभागवत. तातें यह मार्ग सर्वोपरि है.

जो जाकों कछू सन्देह होंइ सो आओ, मोकों पूछो. तब दामोदर झा आदि दे कै सब पण्डित आए. सो चर्चा भई. सो वाद - विवादमें सब पण्डित निरुत्तर भए. तब सब पण्डित श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिकै अपने घर गए. पाछें दामोदर झा तो दूसरे दिन आइकै श्रीगुसांईजी आपसों बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! मेरो अङ्गीकार करिये. तब श्रीगुसांईजी आप तो परम दयाल कृपा करिकै दामोदर झा कों नाम सुनाय. तब और सब हुते सो कहन लागे, जो तुम यह कहा कियो ? जो हम सबनकों तो तुम्हारो भरोंसो हतो. सो तुमने तो नाम पायो ! तब दामोदर झा ने उनसों कह्यो, जो ''भाई ! आटला दहाडा तो कोई जाण्यूं नहीं, जो केवल छिलका कूट्या. जे कंइ छे ते आज मारग छे.'' यह सुनिकै और पण्डित तो गए. पाछें दामोदर झा श्रीगुसांईजी आपके पास ही रहते. जो बड़े ही पण्डित हते.

सो वे श्रीगुसांईजी आपकी कृपा तें बड़ेई कृपापात्र भगवदीय भए. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१२७।।

१२८-मधुसूदनदास क्षत्री, पश्चिमके

अब श्रीगुसांईजीके सेवक मधुसूदनदास, क्षत्री हुते, सो पश्चिममें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'वीरबाला' है. ये 'नीला' तें प्रगटी हैं. तातें इनके भावरूप है.

ये पश्चिममें एक क्षत्रीके जन्मे. सो वह क्षत्री राजमें चाकर हतो. सो घोड़ा खरीदवेकौ काम करे. सो जब मधुसूदनदास बरस तेंईसके भये. तबतें वह क्षत्री इनको अपने सङ्ग राखे. सो घोड़ाकी पहचानि करावें. सो कछूक दिनमें ये घोड़ाकों पहचानिवे लागे. पाछें वह क्षत्री मर्यो. तब मधुसूदनदास राजमें चाकर रहे. एक समै यह घोड़ा खरीदवेकों आगरामें आए. ता समै श्रीगुसांईजी आगरामें बिराजत हुते. सो इन श्रीगुसांईजीके दरसन पाए. तब श्रीगुसांईजी आप पूछे, जो तुम कौन हो ? कहा करत हो ? तब मधुसूदनदास कहे, जो महाराज ! मैं क्षत्री हूं. अमूके राजमें चाकर हों. घोड़ाकी पहचानि करत हूं. राजके लिये आछें - आछें घोड़ा खरीदत हों. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो एक सुन्दर घोड़ा हमकों चाहिए है, सो तुम हमकों खरीद देउ. तब मधुसूदनदास कहे, जो महाराज ! आपके लायक एक सुन्दर घोडा राजमें है. सो आप उहां पधारो. और वह घोड़ा पसन्द करो तो वह घोड़ा हों आपकों भेंट करों. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो अब ही तो हमारो उहां आवनो बने नाहीं. तब मधुसूदनदासने बिनती कीनी, जो महाराज ! आप आज्ञा करो तो घोड़ा मैं यहां लाउं. आपकों भेट करो. और महाराज ! मोकों अपनो सेवक कीजिए. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो अबही तो समय नाहीं. पाछें काहू समै फेरि उहां पधारेंगे तब तुमकों सेवक करेंगे. तब घोड़ा हू देखेंगे. तब मधुसूदनदास कहे, जो महाराज ! आप कदाचित् न पधारे तो मैं कहा करों ? मेरो जन्म व्यर्थ जांई. तब श्रीगुसांईजी आप कहे, जो हमारे बचन है. हम तोकों निश्चै सरनि लेंगे. पाछें मधुसूदनदास श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि घोड़ा खरीदिवेकों गए.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

पाछें एक समै श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल तें लाहोर पधारवेकौ विचार किये. तब एक वैष्णवने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! एक बेर तो पश्चिम देसकों पधारिये. तब श्रीगुसांईजीने वा वैष्णवसों कह्यो, जो हमारी तो पश्चिम देसकी इच्छा नहीं है. परि एक बार पश्चिम देसमें पधारेंगे ऐसो जान परे हैं. तो मधुसूदनदासके अङ्गीकारार्थ पधारनो परेगो तो सही. तब वा वैष्णवने श्रीगुसांईजीकों बिनती कीनी, जो महाराज ! मधुसूदनदासने तो घोड़ा बोहोत सुन्दर सिद्ध करिकै राख्यो है. तब वा वैष्णवसों श्रीगुसांईजीने कही, जे तातें अवस्य पधारनो परेगो.

ता पाछें श्रीगुसांईजी पश्चिम देसमें पधारे. तब मधुसूदनदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मोकों नाम सुनाइए. मेरो अङ्गीकार करिए. तब श्रीगुसांईजीने श्रीमुख तें आज्ञा दीनी, जो तुम स्नान करिकै आवो. तब मधुसूदनदास स्नान करिकै आए. तब श्रीगुसांईजीने कृपा करिकै नाम सुनायो. ता पाछें निवेदन करायो. तब मधुसूदनदासने एक सुन्दर घोड़ा भेंट कियो. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप गादी तकियानके उपर बिराजे. तब मधुसूदनदास पंखा करन लागे. ता समै मधुसूदनदासने श्रीगुसांईजी सो बिनती कीनी, जो महाराज ! अब हमकों कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजीने कृपा करिकै मधुसूदनदासके माथें सेवा पधराई. और सेवाकी रीति सिखाई. ता पाछें श्रीगुसांईजी कितनेक दिन लों उहां बिराजे. सो वा मधुसूदनदासकों सिंगार सिखाये. और रात्रिकों नित्य प्रसङ्ग भगवद्वार्ता सुनावते. सो एक दिन श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी सेवाकौ माहात्म्य कह्यो. जो जीव कैसेउ अघकी खान होंई परि श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी सरन आवे तो तत्काल सब दोष दूरि होंई जाई. और श्रीआचार्यजी, पुष्टिमार्गकौ फल है ताकौ दान करे. ऐसें श्रीआचार्यजी महाप्रभु परम दयाल हैं. तातें उनके चरनकमलकौ विश्वास राखनो. तातें पुष्टिमार्गके फलकी प्राप्ति होंई. सो श्रीगुसांईजीने मधुसूदनदासकों कह्यो. सो सुनिकै मधुसूदनदास बोहोत प्रसन्न भए. ता पाछें श्रीगुसांईजीने उहांसो विजय कियो. सों श्रीगोकुल पधारे. तब मधुसूदनदास श्रीगुसांईजीके साथ आए. सो श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन किये. ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजीके राजभोग - आरति करिकै ता पाछें अनोसर करिकै अपनी बैठकमें पधारे. तब श्रीगुसांईजीने मधुसूदनदाससों पूछी, जो मधुसूदनदास ! दरसन किये ? तब मधुसूदनदासने आयके श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! आपकी कृपा तें दरसन किये. ता पाछें दण्डवत् करिकै बैठे. पाछें श्रीगुसांईजी भोजनकों पधारे. सो भोजन करिकै फेरि अपनी बैठकमें पधारे. तब श्रीगुसांईजी आप भीतरियाकों श्रीमुख तें आज्ञा दीनी, जो मधुसूदनदासकों महाप्रसादकी पातरि

पठवाइयो. तब भीतरियाने मधुसूदनदासकों पातरि पठाई. सो मधुसूदनदासने महाप्रसाद लियो. ता पाछें श्रीगुसांईजी विश्राम करिकै जागे. इतनेमें उत्थापनकौ समय भयो. सो स्नान करिकै श्रीनवनीतप्रियजीके मन्दिरमें पधारे. सो शङ्खनाद करवाये. पाछें नवनीतप्रियजीके दरसन सब वैष्णवकों कराए. ता पाछें श्रीगुसांईजी सेन पर्यन्त सेवासों पोहोंचिकै अनोसर करिकै अपनी बैठकमें पधारे. सो श्रीसुबोधिनीजीकी कथा कहे, सो मधुसूदनदास सुने. सो बोहोत प्रसन्न भए. पाछें श्रीगुसांईजी आप पोढ़वेकों पधारे. ता पाछें प्रातःकाल श्रीगुसांईजी आप श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करिवेकों पधारे. सो मधुसूदनदास हू साथ हुतो. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ राजभोगकौ समै हुतौ. तब श्रीगुसांईजी तत्काल स्नान करिकै मन्दिरमें पधारे. सों राजभोग समर्प्यो. ता पाछें राजभोग आरति करी. तब मधुसूदनदासने श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. सो साक्षात् कोटि कन्दर्प लावन्यके दरसन भए. पाछें श्रीगुसांईजी अपनी बैठकमें पधारे तब मधुसूदनदास हू श्रीगुसांईजी पास आए. ता पाछें श्रीगुसांईजीने पूछी, जो मधुसूदनदास ! तुमने दरसन किये. तब मधुसूदनदासने कह्यो, जो महाराज ! आपकी कृपा तें. ता पाछें श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ महाप्रसाद पठावत हूं सो तुम लीजियो. पाछें श्रीगुसांईजीने भोजन करिकै मधुसूदनदासकों जूंठनिकी पातरि पठाई. तब मधुसूदनदासने महाप्रसाद लियो. ता पाछें श्रीगुसांईजी पोढें. तब मधुसूदनदास पंखा करन लागे. ऐसें करत बोहोत दिन भए. तब मधुसूदनदासने बिनती कीनी, जो महाराज ! आपकी आज्ञा होंई तो हम आपुने देस जांई. तब श्रीगुसांईजीने मधुसूदनदासकों बिदा किये. सो केतेक दिनमें अपने घर आए. सो श्रीठाकुरजीकी सेवा प्रीतिपूर्वक करन लागे. तब थोरेसे दिनमें श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे.

सो वह मधुसूदनदास श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं. सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१२८।।

१२९-एक राजा, पूरवकौ

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक राजा, पूरवकौ तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनको नाम 'मनमोदिनी' है. ये 'नीला' तें प्रगटि हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

ये पूरवमें एक राजाके जन्म्यो. पाछें बरस अठारहकौ भयो तब याकौ पिता मर्यो. तब ये राजा भयो. पाछें एक समै वह जगन्नाथराइजीकी यात्राकों चल्यो. सो ता समैं श्रीगुसांईजी आप जगन्नाथपुरीमें बिराजत हुते. तहां पण्डितनसो शास्त्रार्थ करत हते. सो गामकौ राजा तथा और हू लोग या सभामें आए हुते. सो वह राजा हू वा समै वहां आयो. ताही समै श्रीगुसांईजी आप मायावादीनकों निरुत्तर किये. तब यह राजा श्रीगुसांईजीकौ तेज प्रताप देखि आपकी सरनि आयो. तब श्रीगुसांईजी आप वा राजाकों नाम सुनाए. पाछें निवेदन कराए. तब राजाने बिनती कीनी, जो महाराज ! मोकों यह मारग स्फुरे ऐसी कृपा करिये. तब श्रीगुसांईजी आप चाचाजीकों बुलाई आज्ञा किये, जो चाचाजी ! तुम कछूक दिन या राजाके पास रहि इनकों मारगकौ ज्ञान कराउ. पाछें श्रीगुसांईजी तो आप अड़ेल पधारे. और चाचाजी वा राजाके सङ्ग वाके गाममें गए. सो चाचाजी दिना पांच उहां रहे. सो राजाकों चाचाजी श्रीगुसांईजीकौ स्वरूप समझाये. तब राजाकों सगरो मारग स्फुरयो. पाछें भगवल्लीलाकी मानसीकौ प्रकार बताए. सो राजा श्रीगुसांईजीके स्वरूपमें भगवल्लीलाके भावमें छक्यो रहतो. पाछें चाचाजी अड़ेल आई श्रीगुसांईजीसों सब समाचार कहे. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वह राजाकों श्रीगुसांईजी विषे बोहोत आसक्ति हुती दृढ़ता बोहोत ही हुती. अन्य कर्म, अन्य मार्ग, अन्य सम्बन्धिनसों स्नेह कछू नाहीं. अन्यसों सम्भाषन हू कछू नाहीं. काहूसों बोले नाहीं. द्रव्य तथा देह अन्य - विनियोग करें नाहीं. सो कोऊ भाट तथा चारन भिक्षुक आवे. सो राजाके पिता माता कौ जसु बोले, और राजाकौ जसु बोले. परि तोकों कछू देवे नाहीं. और कछू रीझेहू नाहीं. याके सन्मुख देखे हु नाहीं. तब भाट चारन फिरि - फिरिकै दिक दोंई जाई. परि वह राजाके इहांसो उत्तर पावे नाहीं. तब वह राजाके खवास प्रधान लोगसों पूछे, जो तुम्हारे राजा कौन भांतिसों कैसें करिकै रीझत हैं ? तब वह प्रधान खवास उन चारन भाटकों बतावे, जे तुमकों श्रीआचार्यजीकौ तथा श्रीगुसांईजीकौ कछू जस कीर्तन आवत होंय सो कहो. तो तुम उपर राजा प्रसन्न होंई. नांतरु हम बतावे तैसें कहो. ता पाछें वह खवास प्रधान बतावे, सीखावें, ता प्रमान वह भाट - चारन श्रीआचार्यजीकौ तथा श्रीगुसांईजीकौ तथा उनके सेवकनकौ जस बोले. तब

राजा उन चारन भाट पर रीझे. उनकों द्रव्य देई. समाधान बोहोत ही करे. जो कछू मांगे सोई देहि. तब राजा उनसों कहे, जो तुम श्रीआचार्यजीकों तथा श्रीगुसांईजीकों आशीर्वाद देहु. हों तो उनकी ओर तें चाकर हों, दास हों. उनने मोकों राज बैठार्यो है, सो उनकी ओर तें राज करत हों. तातें तुम उनकौ जस बोलो. ऐसें उनसों राजा कहे.

और कदाचित् कोऊ हरिजन तादृशी वैष्णव आवे तो उनसों बैठि बात करे, भगवद्चर्चा वार्ता करे श्रीगुसांईजीकी. तब उन वैष्णवनकौ मन घनो प्रसन्न रहे. और कदाचित् कोऊ वैष्णव नाहीं होइ तो इकलो ई बैठ्यो एकान्त स्थलमें पोथी देखे. भगवल्लीलामें छक्यो रहे. परि अन्यसों सम्भाषन न करे. वैष्णव विषे ममत्व घनो राखे. वैष्णवके कहेकौ विश्वास राखे और वैष्णवकी सेवा अपने हाथसों करे. परम स्नेहसों करे. तातें वा राजा उपर श्रीगुसांईजी बोहोत ही प्रसन्न रहते.

भावप्रकाश :
या वार्तामें यह जतायो, जो वैष्णवकों स्वमार्गीय बिना अन्य काहूसों सम्भाषन करनो नाहीं. काहेतें, जो बानी द्वारा मिलाप होत है. तातें अन्यसों वार्तालाप करे तो अन्य सम्बन्ध होंई. यह भाव जाननो.

सो वह राजा श्रीगुसांईजीकौ ऐसो टेककौ कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें उनकी वार्ताकौ पार नाहीं. सो कहां तांई कहिए ? वार्ता ।।१२९।।

१३०-मुरारी आचार्य, खम्भाइचके

अब श्रीगुसांईजीके सेवक मुरारी आचार्य, खम्भाइचके तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
सो मुरारिदास सात्विक भक्त हैं. लीलामें श्रीयमुनाजीकी सखी है. 'हंसिनी' इनकौ नाम है. सो 'चन्द्रकला' के दूती कार्यमें परम सहायक हैं. सो 'चन्द्रकला'की इन पर प्रीति है. ये 'नन्दा' ते प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं.

सो ये खम्भाइचमें एक शैवके जन्मे. सो पढे बोहोत. और शास्त्र हू के बड़े ज्ञाता हे. सो बालपन तें कर्मकाण्डमें इनकी रुचि अधिक रहे. ये कर्मकाण्डमें बड़े प्रवीन हते. पाछें इनकों ब्याह भयो. सो स्त्री सुपात्र मिलि, पतिव्रता. इनके दो बेटा भये.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समय श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे हते. तब चाचा हरिवंशजी प्रभुनके साथ हते. सो श्रीगुसांईजीकों पधरावनकों खम्भाईचके वैष्णव राजनगर साम्हे आए. तब वैष्णवनकौ बोहोत हठ आग्रह जानिकै श्रीगुसांईजी खम्भाइच पधारे. तहां श्रीगुसांईजी सहजपाल दोसीके घर उतरे. सो वा ठौर ब्राह्मन मुरारी आचार्य छहों शास्त्रकौ ज्ञानी वक्ता हतो. वाकी कर्ममार्ग विषे नेष्टा बोहोत हती. सो वह ब्राह्मन श्रीगुसांईजीके दरसनकों तहां सहजपाल दोसीके घर आयो. पाछें वह ब्राह्मन कछू शास्त्रकी वार्ता श्रीगुसांईजीसों करि उठि गयो. तब चाचाजीने श्रीगुसांईजीसों कही जो ऐसो ब्राह्मन होय तो भलो. यह बात चाचाजीने प्रभुनके आगें तीन बार कही. परि श्रीगुसांईजी या बातकौ प्रतिउत्तर न दिये.

भावप्रकाश :
सो यातें, जो वह दैवी है. सो आपही तैं सरन आवेगो.

ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीद्वारिकाजी होंइकै श्रीमथुराजीमें पधारे. तहां ते अड़ेल आए. पाछें केतेक दिनकों वह ब्राह्मन खम्भाइचतें कासी जाइवेकों भयो. सो मथुरा व्है अड़ेल आयो, सङ्गमें. सो वाकों चाचाजीने देख्यो. सो उत्थापन समय श्रीगुसांईजी गादी तकिया पर बिराजत

हते. इतने ही गुजरात खम्भाइचकौ साथ अड़ेल श्रीगुसांईजीके दरसनकों आयो. तब चाचाजीने बिनती करी, जो महाराज ! खम्भाइचकौ ब्राह्मन आयो है. सो चाचाजीके बचन सुनिकै श्रीगुसांईजी चुप करि रहे. पाछें श्रीगुसांईजीके दरसन करिकै ब्राह्मन तो डेरामें बैठ्यो. इतने फेरि चाचाजीने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो राज ! मोकों आप या बातकौ प्रतिउत्तर दियो नाहीं, सो कहा ? तब हू श्रीगुसांईजी चाचाजीके बचन सुनिकै चुप करि रहे.

पाछें श्रीगुसांईजी एक श्लोक करि, पत्र लिखिकै एक ब्रजबासी हाथ वा ब्राह्मन पास पठायो. सो ब्रजबासी वा सङ्गमें जाइकै मुरारी आचार्यकों वह पत्र दियो. ता पत्रकों बांचिकै वा ब्राह्मनकों श्रीगुसांईजीके स्वरूपकौ ज्ञान भयो. तब वह मुरारी आचार्य अपनी स्त्रीसों कह्यो, जो गाड़ीमें तें उतरो. और एक बड़ो बेटा साथ हतो, ताकों सङ्ग ले कै मुरारी आचार्य फेरि वा ब्रजबासीके साथ वाही समय श्रीगुसांईजीके दरसनकों कागद माथें बांधिकै आयो. सो मुरारी आचार्य आवत ही श्रीगुसांईजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करी. पाछें वह पत्र श्रीगुसांईजीके श्रीहस्तमें दै कै मुरारी आचार्यने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो राज ! अब मोकों आप सेवक करो. अब विलम्ब मति करो. तब श्रीगुसांईजी मुरारी आचार्यसों कहे, जो विधि तो ऐसी है, जो प्रथम उपवास करिकै ताके दूसरे दिन समर्पन करिए. तब मुरारी आचार्यने श्रीगुसांईजीके बचन सुनिकै यह बिनती करी, जो राज ! प्रथम नाम तो सुनाओ. तब श्रीगुसांईजी वाकी आर्ति आतुरता देखिकै तीनों जनेंनको नाम सुनाए. पाछें फेरि मुरारी आचार्यने बिनती करी, जो राज देहकौ तौ न्यामक है काल. परि कालकौ तो न्यामक नाहीं. तातें या देहकौ कहा भरोंसो है. तासों आप विलम्ब न करिए. तब श्रीगुसांईजी उन मुरारी आचार्यकी बोहोत ही आर्ति जानिकै आपु कृपा करिकै उन तीनोंनकों नाम निवेदन करवायो. पाछें उनकौ नाम श्रीगुसांईजीने मुरारीदास धर्यो. और सेवाके तांई श्रीनवनीतप्रियजीके प्रसादी वस्त्र पधराय दिये. पाछें घर आइ मुरारी आचार्य सङ्गके मुखियासों कहे, जो हम तो श्रीवल्लभी सम्प्रदाय सिर धरि आए.

पाछें सङ्गके मुखियाकौ मुख यह मुरारीदासकी बात सुनिकै स्याम होंइ गयो. और वाने अपने परिकरसों कह्यो, जो अब वह मेरे पास न आवन पावे. पाछें वाके परिकरके एक मनुष्यने मुरारीदासकों कही, जो तुमने यह आछी बात न करी. जो इनकों अप्रसन्न करे. और अब इन कही है, जो मुरारीदास अब मेरे पास तिलक मुद्रा माला छोरिकै आवे तो आवन पावे. नांतरु यह मेरे पास न आवन पावे. यह इनसों

कहिकै वह मनुष्य तो चल्यो गयो. पाछें मुरारीदास वा दिन प्रसाद ले बोहोत मुद्रा धरिकै वा मनुष्यके पास गए. जिनकों वा मुखियाने बरजे हुते, जो मुरारीदास मेरे पास न आवन पावे तिन पास गए. सो सगरे मुरारीदासकौ तेज देखिकै विस्मित होंइ गए. तातें वे मुरारीदासकों कछू बरजि न सके. सो ये जांइकै वा मुखियासों आपुसमें दोउ सम्भाषन कर्यो. जो अब मुरारीदाससों न जीतेंगे. पाछें मुखियाके मनमे आई, जो यह मार्ग तो उत्तम है तासों इनकौ सेवक हूजिये. सो बहुरि श्रीयमुनाजीमें स्नान करि वह श्रीगुसांईजीकौ सेवक भयो. ता पाछें मुरारीदास और वह मिलि श्रीनवनीतप्रियजीके और सब बालकनके दरसन करि अति प्रसन्न भए. पाछें कछूक दिन मुरारीदास और वह मुखिया श्रीगुसांईजी पास रहिकै 'नवरत्न' आदि सब ग्रन्थ पढ़े. तब वाकी बुद्धि अति उज्ज्वल भई. तब वाने एक दिन श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो राज ! आपकी कृपासों अलौकिक वस्तू तो सर्व प्राप्त भई. अब हमारे तीर्थयात्रासों कहा काम है ? आपके चरनारविन्द विषे सब तीर्थ होय चुकें. तब श्रीगुसांईजी उनसों कहे, जो तुम तीर्थ पर्यटन करिवे जाहू. नांतरु सगरे लोग निन्दा करेंगे. तातैं सर्वथा जायो चाहिए. तीर्थ - पर्यटनके आग्रह पूर्वक तो जानो नाहीं. परि लोक रीति राखिवेकों एकवार सर्वथा जानो.

भावप्रकाश :
सो यातें, जो श्रीआचार्यजी 'पुष्टिप्रवाह मर्यादा' ग्रन्थमें लिखे हैं. सो श्लोक

लौकिकत्वं वैदिकत्वं कापट्यात्तेषु नान्यथा ।
वैष्णवत्वं हि सहजं ततोन्यत्र विपर्ययः ।।

यासों पुष्टिजीवकों लोक वेद रीति राखिवेकों तीर्थादि सब करने. परि उनके फलकी इच्छा राखनी नाहीं.

पाछें श्रीगुसांईजीकी आज्ञा तें वे तीर्थयात्रा होंइ आए. पाछें फेरि श्रीगुसांईजी पास मथुरा आइ प्रभुनके दरसन करि कछूक दिन प्रभुन पास रहिकै श्रीभागवत, श्रीसुबोधिनीजी और सर्व ग्रन्थ सुनि सर्व मार्गकौ रहस्य प्रणालिका पूछिकै प्रभुनसों बिदा होइकै खम्भाइच आए. उन पर श्रीगुसांईजीने ऐसी कृपा

करी. जो उन पूछ्यो सो सर्व उनकों समझायो.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

सो खम्भाइचमें और एक सैव ब्राह्मनकी दीनी ब्रह्मपुरी हती. सो तामें एक घर उनहूकौ हतो, सो तहां जांइ रहे. तहां एक लाड़ बनिया हतो. सो एक और मुखियाकौ चाकर हतो. सो वह बनिया नित्य मुरारीदासके घर आवतो. ताके साथ वह मुखिया कहवाय पठावतो. जो एक बार मुरारीदास माला उतारि मेरे पास आवे तो मुरारीदास कहे सो मैं करूं. यह वा मुखियाके समाचार वा बनियाने आइकै मुरारीदाससों कहे. तब मुरारीदास एक दिन सुनिकै श्रीठाकुरजीसों पहोंचिकै अपने मार्गकौ सर्व चिन्ह प्रकासिकै वाके घर गए. सो मुरारीदासकों देखिकै वह जरि गयो. परि वह कर्मिष्ठ हतो. तासों पूजाकौ साज मंगायो. सो वह पूजा करविकों तत्पर भयो. तब मुरारीदासकों तामस चढ्यो. सो मुरारीदासकों मुखिया छूवे लग्यो तब मुरारीदासने वासों कही, जो तू मेरे सरीरकों हाथ लगावेगो तो मोकों सचैल स्नान करनो पडेगो. तब वा ब्राह्मन अति क्रोधवन्त भयो. सो श्राप देवे लग्यो. सो वानें कह्यो, जो मुरारीदास ! तेरे जलकौ देवेवारो मति रहियो. तेरो सत्यानास जैयो. और ये तेरो घर ही उजार हूजो. तब मुरारीदास कह्यो, जो श्रीगुसांईजी साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम हैं, और मेरो धर्म सांचो है, तो तेरो श्राप मोकों कहा करेगो ? और यह तेरो डेरा है. सो दूजो कोई घरके द्वार ठाड़ो होइगो ताहीकों घर जात ही देउंगो. और मैं तेरी ब्रह्मपुरी छोरि जाउंगो. यह कहिकै मुरारीदास अपने घर आए. सो घर आय द्वारे ही ठाढ़े रहि अपनी स्त्रीकों बुलाइकै मुरारीदास कहे, जो तू श्रीठाकुरजीकों सम्पुटमें पधरायकै सम्पुट लै कै सगरे कुटुम्ब सहित घरमें तें बाहिर निकसि आउ. सो घरमें तें सगरे निकसे. तब मुरारीदासने घर भर्यो जैसो को तैसो द्वारें एक शुक्ल ठाढ़ो हतो ताकों दियो. पाछें स्त्री लरिका साथ लै कै मुरारीदास गामतें निकसन लागे. सो एक वैष्णव वा गाममें रहत हतो. तिन अपनो घर मुरारीदासकों भेट कियो. सो वे मुरारीदास ऐसे टेकके कृपापात्र भगवदीय हते. सो सर्व वस्तूकौ त्याग करत मनमें मोह न आयो. पाछें यह बात श्रीगुसांईजीने सुनी. तब मुरारीदास उपर बोहोत प्रसन्न होइकै आपु कहे जो वैष्णवकों योंही चाहिये.

भावप्रकाश :

यामें यह जतायो, जो वैष्णवकों टेक ही बड़ो पदार्थ है. तातें भगवद्धर्म दृढ़ होंई.

वार्ता प्रसङ्ग ३ :

और एक समय मुरारीदासने श्रीगुसांईजीकों बिनती पत्र लिख पठायो. जो महाराज ! कोई एक ग्रन्थ आपु कृपा करिकै ऐसो लिख पठाओ, जासों वादीनकौ मुख भञ्जन करिए. सो पत्र मुरारीदासकौ श्रीगुसांईजी पास आयो. तब श्रीगुसांईजी मुरारीदास पासके पत्र उत्तरके साथ 'भक्तिहंस' ग्रन्थ लिखि पठायो.

तब मुरारीदासने माथे चढाई पत्र ग्रन्थकों बांच्यो. पाछें फेरि मुरारीदासने श्रीगुसांईजीकों बिनती लिखी, जो महाराज ! यह ग्रन्थ बोहोत ही उत्तम है, सुन्दर है. परि अगम है. सो पत्रकौ उत्तर मुरारीदासकौ श्रीगुसांईजी पास आयो. तब प्रभुन बांचिकै वाकौ प्रति उत्तर 'भक्तिहेतु निर्णय' ग्रन्थ लिखि पठायो. सो पत्र मुरारीदास पास आयो. तब माथें चढाईकै मुरारीदासने वा पत्रके साथ वा ग्रन्थकों बांच्यो. सो मुरारीदास अपने मनमें बोहोत प्रसन्न भये. तब प्रसन्न होंइकै पत्र एक और मुरारीदासने श्रीगुसांईजीकों लिखि पठायो. जो महाराज ! शास्त्रके बचन अति दुर्घट है. याकौ पार नाहीं. तब श्रीगुसांईजीके पास मुरारीदासकौ पत्र आय पहोंच्यो. सो आपु बांच्यो. तब प्रभुन अपने मनमें जान्यो, जो याकों यह विद्या स्फूर्त तो भई.

वार्ता प्रसङ्ग ४ :

बहोरि मुरारीदासकौ बड़ो बेटा हो. सो अपने पिता पास विद्या पढ़िकै 'बिझापुर' गयो. तहां जायकै यह सर्व मायावादीनकों जीत्यो. भक्तिमार्ग दृढ कर्यो. तब दक्षिनके ब्राह्मन आपुसमें कह्यो, जो हमारे आगें यह गुजराती जीत्यो ! यह बड़ो आश्चर्य लागत है. पाछें उन ब्राह्मनन मुरारीदासके बेटासों पूछ्यो, जो तुम्हारो कौन सम्प्रदाय है ? तब मुरारीदासके बेटाने उन ब्राह्मननसों कही, जो हमारो वल्लभी सम्प्रदाय है. हम श्रीगुसांईजीके सेवक हैं. तब वा महाराष्ट्रीने कही, जो यह सांची बात है. श्रीगुसांईजीने प्रथम हू मायावादकौ खण्डन कियो है. पाछें वह मुरारीदासकौ बेटा कछूक दिन बिझापुरमें रहिकैं अपने देस आयो. अपनी मातासों मिल्यो. तब मुरारीदास कहीं गाम

गए हुते. सो जब मुरारीदास गामसों आए तब मुरारीदासकौ बेटा मुरारीदाससों मिलिकै दक्षिनके ये सर्व समाचार कह्यो. तब बेटाके बचन सुनिकै मुरारीदास बोहोत प्रसन्न भये.

सो ये मुरारीदास और इनकौ बेटा, ये दोउ श्रीगुसांईजीकी कृपा तें ऐसें पण्डित भए. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो इनकी वार्ता कहां तांई कहिए वार्ता ।।१३०।।

१३१-एक बनिया वैष्णव, जानें, भोगमें चेली धरी

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक बनिया वैष्णव, राजनगरकौ, जाने भोगमें चेली धरी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'अनसूया' है. 'ये नन्दा' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

ये राजनगरमें एक द्रव्यपात्र बनियाके जन्म्यो. सो उह बनिया श्रीगुसांईजीकौ सेवक हुतो. सो वाने अपने बेटाकों श्रीगुसांईजीकौ सेवक करायो. सो यह बरस बीसकौ भयो तब याकौ पिता मर्यो. पाछें यह भईला कोठारीके उहां नित्य भगवद्वार्ता सुनिवे जांई. तब याके मनमें आई, जो हों श्रीठाकुरजी पधराई सेवा करों तो आछौ.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै गुजरातकौ सङ्ग ब्रजमें आयो. सो श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजीके दरसन करिकै कछू दिन रहिकै श्रीनाथजीद्वार गयो. सो वा सङ्गमें वह वैष्णव हू आयो. सो वह नित्य श्रीनाथजीके मन्दिरमें सेवा करिवेको जातो. सो सब सेवा नजरिमें राखे. सो एक दिना राजभोग

आयवेकौ समय हतो. ता समै मुखिया भीतरियाने जलघरियान तें कही, जो चेली खासा करिकै लावो. तब जलघरियाननें चेलीनकौ दोना भर्यो हतो सो भीतरियानकों दीनो. सो इन वैष्णव देख्यो. सो अपने मनमें विचारी, जो यहू श्रीठाकुरजीके राजभोगमें आवत हैं. सो कितने दिन पाछें वह सङ्ग श्रीगुसांईजीसों श्रीनाथजीसों बिदा होंइकै गुजरात चलन लाग्यो तब वह वैष्णव श्रीगुसांईजीसों बिनती कियो, जो महाराज ! मोकों सेवा पधराइ दीजिए. तब श्रीगुसांईजी वाकों एक लालजीकौ स्वरूप पधराइ दिए. सो वह वैष्णव अपने ठाकुरकों ले वा सङ्गमें चल्यो. सो कछूक दिनमें अपने घर आयो. तब वैष्णवने चेली गढ़वाई. सो श्रीठाकुरजीकों राजभोग धरे तामें एक दोना भरिकै चेली धरे. सो एक वैष्णवने देखी. सो वाहूने अपने इहां राजभोगमें दोइ दोना भरिकै धरी. सो तीसरेने देखी. सो वाने तीनि दोना भरिकै धरे.

सो एक दिना एक भगवदीयने देखी. सो उनतें पूछी. तब उनने कही, जो फलानो वैष्णव ब्रज तें आयो है ताके घर देखिकै मैं तो धरी. तब वह भगवदीयने जांइकै उन वैष्णवतें पूछी, जो तुमने ये चेली धरी, सो क्यों ? तब उन वैष्णवने कही, जो मैं तो श्रीगोवर्द्धननाथजीके मन्दिरमें सेवा करिवेकों जातो. सो एक दिना राजभोगके समै रामदास भीतरियाने जलघरिया पास मंगाई. सो जानी, जो ये भोगमें आवत होइगी. तातें मैं तो धरी हैं. तब उन भगवदीयनें कही, जो बावरे ! उहां तो बड़े घर हैं. तातें भोग आवें तब चौकी उंची नीची होंइ तातें सरखो राखिवेकों करावे हैं. सो तुम्हारे ऐसें बिना पूछे, सेवा सम्बन्धी कार्य सर्वथा न करनो.

भावप्रकाश :
या वार्तामों यह जतायो, जो वैष्णवकों सेवा, भगवदीयकौ सत्सङ्ग करिकै, उनतें पूछिकै, करनी.

पाछें वह वैष्णवनकौ सङ्ग करन लाग्यो. सो कछूक दिनमें श्रीठाकुरजी सानुभावता जतावन लागे.

वह वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें उनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१३१।।

१३२-एक क्षत्रीय, जाकौ द्रव्य श्रीयमुनाजीमें पधरायो

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक क्षत्रीय, पूरबकौ, जाकौ द्रव्य श्रीयमुनाजीमें पधरायो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं.

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनको नाम 'गायत्री' है. ये 'नन्दा' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

ये पूरबमें एक क्षत्रीके जन्म्यो. सो बरस तीसकौ भयो. तब इनके माता - पिता मरे. पाछें ये द्रव्य कमाइवेकों दक्षिन गयो. सो वा गाममें श्रीगुसांईजी आप पधारे हुते. सो वाकों श्रीगुसांईजीके दरसन साक्षात् कोटि कन्दर्प लावन्य पुरुषोत्तमके भए. तब वा क्षत्रीने विचार्यो, जो इनके सेवक हूजिए तो आछो है. पाछें वा क्षत्रीने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! कृपा करिकै सेवक कीजिए. तब श्रीगुसांईजी वाकों कृपा करि नाम दिए. पाछें श्रीगुसांईजी आप उहां तें विजय किये. सो श्रीनाथजीद्वार पधारे. ता पाछें थोरे दिनमें वह क्षत्री हू बोहोत द्रव्य कमाय अपने देसकों चल्यो. सो वाने विचार कियो, जो यह द्रव्य श्रीगुसांईजीकों भेट करूंगो. ता पाछें वह क्षत्री श्रीनाथजीद्वार आयो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक दिन श्रीगुसांईजी आप श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ सिंगार करत हते. सो ता समै वह क्षत्री वैष्णव परदेस तें बोहोत ही द्रव्य सामग्री कमायकै ल्यायो. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों आयो. सो ता समै एक सेवकने श्रीगुसांईजी आपकों पुकारकै कह्यो, जो महाराजाधिराज ! आपकौ सेवक क्षत्री वैष्णव आयो है. सो द्रव्य सामग्री भेंट बोहोत ही ल्यायो है. सो श्रीगुसांईजीकों सेवा - सिंगार करत में सुनायो. तब श्रीगुसांईजी आप राजभोग पाछें नीचे उतरे. तब वा वैष्णवने श्रीगुसांईजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् कियो. और बोहोत द्रव्य सामग्री भेंट कियो. तब श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो यह द्रव्य सामग्री है सो श्रीयमुनाजीमें डारि देहु. तब वा वैष्णवने कह्यो, जो महाराजाधिराज ! ऐसो काहेतें ? तब श्रीगुसांईजी आप कह्यो, जो जाकौ नाम सुनत ही सेवामें दुचिताई भई. ताके भण्डारमें आए तें कहा

न होईगो ? सो यह द्रव्य आसुरी है. तातें द्रव्य सामग्री सब श्रीयमुनाजीमें पधराय देउ. सो वा वैष्णवने वामेंकी सामग्री - द्रव्य सब श्रीमथुराजी जांई श्रीयमुनाजीमें पधराय दीनो. सो वामेंकी कछू श्रीठाकुरजीके काम आई नाहीं.

सो वह क्षत्रीकों श्रीगुसांईजीके बचनकौ ऐसो दृढ़ विश्वास हतो.

भावप्रकाश :
यामें यह जतायो, जो आसुरी द्रव्य लिये तें भगवत्सेवामें प्रतिबन्ध होंई. बहिर्मुखता प्राप्त होंई. तातें आसुरी द्रव्य सर्वथा ग्रहन करनो नाहीं. और यहू जताए, जो गुरुके बचनमैं वैष्णवकों सर्वथा विश्वास करनो.

सो वह क्षत्री श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१३२।।

१३३-दो भाई पटेल, गुजरातके

अब श्रीगुसांईजीके सेवक दोई भाई पटेल, गुजरातमें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनके नाम 'भक्तिनि' और 'आवेसिनी' हैं. ये 'ब्रजमङ्गला' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं. सो बड़ो भाई भक्तिनिकौ प्रागट्य है, और छोटो भाई आवेसिनीकौ प्रागट्य जाननो.

ये दोउ गुजरातमें एक गाममें एक पटेल कुनबीके जन्मे. सो बरस तीस - पैतींसके भए तब इनके मा - बाप मरे. पाछें ये तीरथकों चले. सो

द्वारिकाजी आए. सो ता समै श्रीगुसांईजी आप द्वारिकाजी बिराजत हते. सो तहां श्रीगुसांईजी नित्य श्रीसुबोधिनीजीकी कथा कहते. सो इन दोउ भाई सुने, जो अमूक ठौर कथा होत है. सो दोउ कथा सुनिवेको आए. सो कथा सुनत ही इन दोउनके मनमें यह आई, जो इनके सेवक हूजिए. पाछें इन दोउ श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! हमको सेवक कीजिए. तब श्रीगुसांईजी दोउनकी आरति देखि दोउनकों नाम - निवेदन कराय सेवक किये. पाछें दोउनने बिनती कीनी, जो महाराज ! अब कहा कर्तव्य है ? तब श्रीगुसांईजी दोउनसों कहे, जो तुम भगवत्सेवा करो. और वैष्णवनकौ सङ्ग करो. तब दोउ भाई कहे, जो महाराज ! कृपा करि भगवत्सेवा पधराइ दीजिए. तब श्रीगुसांईजी दोउनकों एक लालजीकौ स्वरूप पधराय दिये. पाछें सेवाकी सब रीति बताए. तब दोउ भाई आज्ञा मांगि श्रीठाकुरजीकों पधराय अपने घर आये. तहां गामके वैष्णवनकी मण्डली होई. तामें ये नित्य भगवद्वार्ता सुनिवेकों जाते.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो दोई भाई खेती करते. तहां वह गामके राजाने एक बड़ो तलाव खुदायो. ताके भीतर तें एक देवीकौ स्वरूप निकस्यो. सो एक सिला हाथ चारिकी तामें देवीकौ स्वरूप. सो वह देवीनें राजाकों स्वप्नमें कह्यो, जो एक बड़ो देवालय करिकै और मेरी पूजा चलावो. तब राजाने कही, आछो. पाछें प्रातःकाल उठिके राजाने विचार कियो, जो यह देवालय बनायवेकौ काम है. सो यामें द्रव्य बोहोत लगेगो. सो कछू गामसों लीजिए. कछू मैं लगायकै मन्दिर संवराउं. तब राजाने कामदारकों बुलायकै कह्यो, जो गामसों कछू द्रव्य लेहु. सो देवीकौ मन्दिर बनावेंगे. तब कामदारने सगरे गाममें यथासक्ति दण्ड कियो सबसों. सो कोईपै एक रुपैया कोई पर अरध रुपैया बड़े - बड़े सेठ पर पचास - पचास रुपैया. जैसी आसामी तैसो दण्ड कियो. सो देवीके मन्दिरकौ नाम सुनिकै बोहोत प्रसन्न होइकै दियो. सो दोई भाई पटेल श्रीगुसांईजीके सेवक हे. उन पर दोई रुपैया दण्ड कियो. सो राजाके मनुष्य रुपैया मांगन आये, जो दैवीकौ मन्दिर बनेगो. तातें दोइ रुपैया तुम देउ. सबनने दिये हैं. यह सुनिकै दोउ भाई आपुसमें बतराए. तब एक भाईने कह्यो, जो राजाके बसिये हैं तातें राजा कहे सो करनो. दोई रुपैया देउ. तब दूसरे भाईने कह्यो, जो अपने घरमें सगरो द्रव्य श्रीगुसांईजीकौ है. सो कैसे दियो जांय ? देवीकै मन्दिरके लिये ?

भावप्रकाश :

यामें यह जतायो, जो वैष्णवकों अपनो द्रव्य अन्य कार्यमें सर्वथा खरचनो नाहीं. काहे तें, जो वह द्रव्य तो प्रभुकौ है. तातें प्रभुनके उपयोगमें ही ल्यावनो.

तब दोउ भाई पटेलने राजाके मनुष्यसों कह्यो, जो काल्हि तुम दोइ रुपैया ले जैयो. आज हमारे पास नाहीं है. तब राजाके मनुष्यने कही, जो काल्हि मैं नाहीं फिरोंगो. आज मैं जात हों. तुम जरूर रुपैया दोई करि राखियो. ऐसें कहिकै राजाकौ मनुष्य गयो. पाछें दोउ भाई पटेलने कह्यो, अब कहा करिये ? दोई रूपैया श्रीठाकुरजीके वृथा जात हैं. तब छोटे भाई ने बड़े भाईसों कह्यो, एक उपाय है. एक अन्धियारौ कूप है. तामें कीच बोहोत हैं. ता कुआंपै आपुन दोउ चलिकै वह तलाव पर देवी है ताकों अर्द्धरात्रिमें उठायकै वा कुआंमें धरि आओ. तब राजा दण्ड काहेकौ लेइगो ? तब बड़े भाईने सुनिकै कह्यो, जो यह तू भलो विचार कियो. पाछें जब अर्धरात्रि भई तब दोउ भाई पटेल उह तलावपैं जायकै अन्ध्यारे कुआंमें देवीकों धरि आए. तब देवी वाही समै बिकराल रूप धरिकै वा गामके राजा पास वाही समै रात्रिकों गई. सो जांइकै राजाकों जगायो. राजा - रानी दोउ बिकराल स्वरूप देखिकै डरपे. मनमें कहें, जो अब हम न बचेंगे. यह हमारो प्रान लेइगी. तब राजा मनमें धीरज धरिकै कह्यो, जो तुम कौन हो ? और कहां निमित्त इहां आए हो ? तब देवी कह्यो, तू मोकों बोहोत दुःख दियो है. तातें मैं अब तोकों खाउंगी. तब राजाने जानी, जो यह देवी है. तब राजाने कह्यो, जो माता ! मैं तुमकों कहा दुःख दियो है ? सो तुम कहो. तुमने तलावपै मन्दिर बनवाइवेकी कही है सो गाममें तें कछू द्रव्य आयो है और कछू आवेगो. और कछू मैं अपने घर तें लगाउंगो. तुम्हारो मन्दिर सिद्ध करायकै पूजा तुम्हारी चलाउंगो. और तुमकों कहा दुःख है ? तब देवीने राजासों कही, मन्दिर तो जब बनावेगो तब दीसेगी. परि मैं तो अन्धियारे कूपमें परी हों. यह सुनिकै राजा मनमें बड़ो आश्चर्य भयो. तब राजाने पूछी, जो ऐसो जगतमें कौन है, जो तुम्हारो अपराध करि सके. सो तुम अन्धियारे कुआंमें कैसे गिरी हो ? सो बात तो कहो. कोई मेरे गाममें अपराध कियो होय तो ताकों मैं दण्ड करों. तब देवी राजासों कहे, जो तेरे गामके दोई भाई पटेल हैं सो तैनें उनके उपर दण्ड क्यों कियो ? वे तो वैष्णव है. श्रीगुसांईजीके सेवक हैं. सो उनके उपर दण्ड तू कियो तातें उन पटेलनने हमकों कुआंमें डारी है. सो यह तेरो दोष भयो. तातैं मैं तोकों खाउंगी. तब राजाने कही, जो मैंने तो बिना जाने उन उपर दण्ड कर्यो है. मैं उनकौ स्वरूप जान्यो नाहीं. अब मैं काल्हि उनके उपरकौ दण्ड माफ करूंगो. तुम मोकों काहेकों खात हो ? यह अपराध तो मोसों बिना जानेकौ पर्यो है. सो छिमा करो. तब वह देवीने कही, जो काल्हि उह पटेलके उपरकौ दण्ड माफ करियो. और उन दोउ भाई पटेलसों डरपत रह्यो. उनकों कछू

दुःख देइगो तो तेरो भलो न होइगो. या प्रकार राजाकों सिक्षा करिकै देवी गई. तब राजाने वाही समै अपने कामदारकों बुलायकै पूछ्यो, जो फलाने पटेल दोउ भाई हैं तिनके उपर कितनो दण्ड पर्यो है ? तब कामदारने कही, जो दोई रुपैयानकौ दण्ड उनके उपर पर्यो है. सो अब ही तो उन दिये नाहीं. प्रातःकाल मनुष्य पठायकै मंगाय लेंगे. तब राजाने कामदारसों कह्यो, जो उन पटेलनके उपरकौ दण्ड माफ करो. अब मनुष्य उनके मति पठाईयो. तब कामदार कही, अब उनके घर उपरकौ दण्ड छोरे. अब मनुष्य न पठावेंगे. पाछें राजासों कामदार बिदा मांगिकै अपने घर गयो. पाछें प्रातःकाल राजा उठिकै उह अन्धियारे कूपके पास गयो. तहां उन मनुष्यकों लगायकै देवीकों उह कूप में तें काढ़िकै आपने घर लै गयो. एक ब्राह्मनसों पूजा करावन लाग्यो. और राजा आप चलिकै उन पटेलके घर आयकै पटेलसो कह्यो, जो देवीकौ उठायके कुआंमें डारि आये सो देवी मोकों मारन आई. तासों आज तें अब तुम्हारे उपर दण्ड कबहू न करेंगे. और तुम कबहू देवीकों दुःख मति दीजो. तब पटेलने कह्यो, जो राजा ! देवीसों हमसों कछू बैर तो नाहीं है. हम तो काहूकों दुःख नाहीं देत है. यह तो हम इतनो याके लिये कियो है, जो हमारे कछू द्रव्य नाहीं हतो. तब राजाने रुपैया ४००/- उन पटेलनके आगें धर्यो. कह्यो, जो यह तुम लेउ. तुम बड़े वैष्णव हो. तुमकों देवी दण्ड नाहीं दे सकत तो मैं कैसें दण्ड देहुंगो. यह दण्ड अनजाने भयो तातें मेरो अपराध क्षमा करो. तब पटेलने कह्यो, जो हम काहूकौ द्रव्य लेत नाहीं. खेती करत हैं. तामें आछी भांति घरकौ खर्च चलत है. सो तुम यह द्रव्य ले कै काहू ब्राह्मनकों पून्य करि दीजो. देवीके मन्दिरमें लगाइयो. तब राजा पटेलकी बोहोत बड़ाई करिकै अपने घर आयो. पाछें राजानें तलावपै देवी मन्दिर समरायो. तहां देवीकों बैठारी. सो सगरो गाम उह देवीकों मानें. और पटेल वे दोउ भाई कबहू उह देवीके मन्दिरमें न गए. कबहू दरसन न किये. ता पाछें श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे. सो सगरे समाचार एक वैष्णवने श्रीगुसांईजीके आगें कहे. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी उन पटेलन उपर बोहोत प्रसन्न भए.

भावप्रकाश :
या वार्तामें वैष्णवको स्वरूप जताए, जो वैष्णव सर्वोपरि है. देवी देवता सब उनसों डरपत हैं. उनकी आज्ञामें रहत हैं. तातें वैष्णवकों अन्याश्रय सर्वथा न करनो. और अपने द्रव्यकों भगवद् अतिरिक्त काममें न लगावनो. काहेतें, जो उह प्रभुनकौ द्रव्य है. सो प्रभुन ते कार्यमें खर्च होंई. अन्य दैवी - देवतानके अर्थ खर्च करे तो बहिर्मुख होंई.

ऐसें दोउ भाई पटेल अनन्य टेकके भगवदीय हते. जिनकी बड़ाई श्रीमुख तें श्रीगुसांईजी करते. तासों उनकी वार्ता कहां तांई कहिए ? वार्ता ।।१३३।।

१३४-एक विरक्त, गोकुलकौ

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक, एक विरक्त, सो श्रीगोकुलमें रहतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनको नाम 'विरहात्मिका' है. ये 'ब्रजमङ्गला' तें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो विरक्त श्रीगुसांईजीकौ सेवक हतो. सो चुकटी मांगिकै निर्वाह करतो. सो मानसी सेवा बोहोत स्नेहसों करतो. श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजीके ग्रन्थ बोहोत पाठ करत हतो. पुष्टिमार्गमें रूचि आछी हती.

और श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी एक क्षत्रानी हती. ताके नाम द्रव्य बोहोत हुतो. तासों उह विरक्तकौ स्नेह हतो. सो वह क्षत्रानीसों मिलिकै भगवद्वार्ता भगवदस्मरन करे. ता पाछें महाप्रसाद लेहि. और वह विरक्त और ठौर चुकटी मागें, परन्तु वह क्षत्रानीके घर न मांगतो. कछू लौकिककौ सम्बन्ध नाहीं. इतनी वह विरक्तके मनमें आस ही, जो कबहू मोकों कछू द्रव्यकौ काम परेगो तो अटकी न रहेगी, यह देइगी. सो यह अन्याश्रय तें श्रीठाकुरजी वा विरक्तकों सानुभावता न जनावत हे.

तब श्रीगुसांईजी विचारे, जो वैष्णवकों रञ्चक हू अन्याश्रय होंई तो भगवद्प्राप्ति न होंई. तातें याकों अन्याश्रय तें छुडावनो. सो वह विरक्त जब श्रीगुसांईजीके दरसनकों आयो, तब श्रीगुसांईजी उह वैष्णवसों कहे, जो तू वह क्षत्रानीकौ स्नेह छोरीदे. तब वा विरक्तने कह्यो, जो महाराज ! वह क्षत्रानीकौ स्नेह तो मेरे प्रानके सङ्ग है. सो मोसों छूटे नाहीं. सो मैं आपके आगें झूठ काहेकों बोलूं ? और मेरे लौकिक सम्बन्ध कछू नाहीं. सो आप अन्तरयामी हो. सो सब जानत हो. यह सुनिकै श्रीगुसांईजी चुप होइ रहे. पाछें श्रीगुसांईजी दिन दस - पन्द्रह वह विरक्तसो कहे, जो वैष्णव ! हमकों रुपैया हजार पांच चहिए. सो हमारे दस - बीस दिनमें हुंडी आवेगी. तब तुमकों देहिंगे. तुम्हारे काहूसों पहिचान होंई तो ल्याय देउ. तब वह विरक्तने कह्यो, जो महाराज ! रुपैया चहिए सो तैयार है. मैं लाउंगो. पाछें वह वैष्णव वह क्षत्रानी पास गयो. और कह्यो, जो आज मेरो एक काम पर्यो है. सो तासों तू नाहीं मति कीजो. तब वह क्षत्रानीने कह्यो, जो मैं तुम्हारी हों, सब घर तुम्हारो है, तुम कहो सो मैं करों. तब वैष्णव कही, हजार पांच रुपैया श्रीगुसांईजी मोसों मांगे हैं, सो दिन दसबीसमें आपके यहां हुंडी आवेगी तब मैं ल्याय देउंगो. सो मोकों देउ. तब वा क्षत्रानीने कही, जो रुपैया चाहो सो तुम ले जाउ. परन्तु तुम ही मोकों ल्याय दीजो. मैं श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी हूं. तासों मैं उनसों रुपैया नाहीं मांगूंगी. तब उन विरक्त वैष्णवने कही, जो तू चिन्ता मति करे. श्रीगुसांईजी कह्यो है सो हुंडी मैं तोकों ल्याय देउंगो. यह सुनिकै वह क्षत्रानी पांच हजार रुपैयाकी थेली निकासि वा विकक्तकों दीनी. सो वह विरक्त वे थेली ले कै श्रीगुसांईजी पास महा आनन्दसों आयो. मनमें वैष्णवने विचार्यो, जो आज क्षत्रानी बोहोत काम आई. जो वह रुपैया न देती तो मैं श्रीगुसांईजीकों कहा देतो ? तातें यह क्षत्रानी बड़ी हितकारनी है. पाछें पांचो हजार रुपैया लेकै श्रीगुसांईजीके आगें धरिकै दण्डवत् कियो. तब श्रीगुसांईजी(ने) उह वैष्णवकी बोहोत बड़ाई करी. कह्यो, जो वैष्णव ! तू भले समै रुपैया ल्यायो. हमारे जरूरी काम हतो. तब वैष्णवने कह्यो, जो महाराज ! वह क्षत्रानीके पास तें ले आयो हूं. यह सुनिकै श्रीगुसांईजी कहे, जो प्रीति स्नेह ऐसो ही चहिए. जो मांगिये सो मिले. पाछें वैष्णवकों एक बीरा दे कै श्रीगुसांईजी बिदा किये. ता पाछें एक काठकै सिंदूकमें पांचों थेली धरि तारौ लगायकै धरतीमें गड़ाय दिये. और वैष्णव बीरा ले कै उह क्षत्रानीके पास आयो. आधो बीरा वह क्षत्रानीकों दियो. वह वैष्णव मनमें बोहोत प्रसन्न भयो.

पाछें श्रीगुसांईजी कछू बोले नाहीं. कब हू रुपैया देवेकी बात नाहीं कहे. सो महिना दोइ बीति गए. तब वह क्षत्रानी विरक्तसों कह्यो, जो

महिना दोई बीति गए तुम रुपैया ल्याये नाहीं. तब इन कह्यो, जो जा दिन ते मैं रुपैया श्रीगुसांईजीकों दिये हैं ता दिन तें आप मोसों बोलत नाहीं. और काहू दिन उन रुपैयानकी चर्चा हू नाहीं किये. सो अब मैं कैसी करों ? तब वह क्षत्रानीने कही, तुम श्रीगुसांईजीसों पूछो तो सही. तब उह वैष्णव जांइकै श्रीगुसांईजीके पास बैठ्यो. परन्तु सङ्कोच करिकै पूछि न सक्यो. ऐसें ही दोइ दिन बीति गए. तब वह क्षत्रानीने वैष्णवसों कह्यो, जो ऐसें सङ्कोच किये कैसें बनेगी ? तुम जरूर आज श्रीगुसांईजीसों पूछो. तब वह वैष्णव आइकै सङ्कोच सहित श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! वह क्षत्रानीके पांच हजार रुपैया जो हैं, सो मैं उधार ल्यायकै दियो हूं. सो वह क्षत्रानी मोसों मांगति हैं. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो वैष्णव ! हमारे पांच हजार रुपैया अब ही कहां तें आए ? दोई चार बरसकौ परदेस करेंगे. तब खरच बचेगो तब हम देइंगे. और तुम्हारी तो वह क्षत्रानीसों बड़ी प्रीति हैं. तुमसों वह क्यों मांगति है ? यह श्रीगुसांईजीके बचन सुनिकै वह वैष्णव सूकि गयो. मनमें कह्यो, जो मैं बोहोत बुरी करी. जो उह क्षत्रानीकौ द्रव्य लियो. अब मैं क्षत्रानीकों कहा जुवाब देउंगो ? पाछें वह वैष्णव उठिकै सोच करत उह क्षत्रानीके पास आयो. तब वा क्षत्रानी वा वैष्णवसो कही, जो तुम श्रीगुसांईजीसों रुपैयानकी पूछी हती ? तब वह वैष्णवने कही, जो मैं पूछी हती. सो श्रीगुसांईजी कहें, जो दोइ चारि बरस परदेस करेंगे तब कहूं परदेसतें दोई - चारि हजार आवेंगे. सो खरच तें रुपैया बचेंगे तब रुपैया मिलेंगे. अब ही तो रुपैया नाहीं है. तब वह क्षत्रानीने कही, जो मैं तुमसों पहिले ही कही हती, सो तुम मेरे रुपैया ल्याय देउ. अब ही तुम श्रीगुसांईजीके पास जाऊ. कहूं तें उधार काढ़िकै श्रीगुसांईजी देहिंगे. कब परदेस पधारेंगे सो कह्यो न जांई. और तुम मेरे रुपैया ल्यावोगे तो मेरी तुम्हारी प्रीति रहेगी. तब वैष्णवने उह क्षत्रानीसों कह्यो, जो कदाचित् अब ही रुपैया न मिले तो कहां करूं ? यह सुनिकै उह क्षत्रानीने अपने दो मनुष्य बुलायकै उह वैष्णवके पीछे करि दिये और कह्यो, जो अब ही तो ये मनुष्य तुम्हारे पीछे किये हैं. और रुपैया न ल्यावोगे तो मथुरामें जांइकै बन्दीखाने तुमकों देउंगी. तातें अब ही जांईकै रुपैयाकों ले आउ. तब वैष्णव श्रीगुसांईजीके पास चल्यो. और वे दोइ मनुष्य सङ्ग चले. सो श्रीगुसांईजी भोजन करि गादी तकिया पर बिराजे हते. ता समै यह वैष्णव जांई श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् कियो. तब हंसिकै श्रीगुसांईजी उह वैष्णवकों पूछे, जो वैष्णव ! तुम क्यों आये ? और ये दोई मनुष्य तुम्हारे सङ्ग कैसे आये ? तब वैष्णव कह्यो, जो महाराज ! उह क्षत्रानीनें मेरे पीछे करि दिये हैं. और मोसों कह्यो है, जो तुम रुपैया न ल्यावेगो तो मैं तुम्है बन्दीखाने मथुराकों जांइकै दिवाउंगी, तातें रुपैया आज ल्याउं. सो महाराज मोकों बड़ो सङ्कट पर्यो है. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो हम तो तुमसों पहिले ही कही हती, जो या क्षत्रानीसों स्नेह छोरि देहु. सो तुम नाहीं मानी.

तब वैष्णवन कही, जो महाराज ! आपकी आज्ञा नाहीं मानी तो इतनो दुःख पावत हों. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो वैष्णव ! हम तुमकों उधार रुपैया कहूं ते ल्यायकै देहि पांचों हजार, तो तुम फेरि वा क्षत्रानीसों स्नेह तो न राखोगे ? तब वैष्णवने कही, महाराज ! मैं कबहू वाके घरको द्वार उपर नाहीं जाउंगो. जो अब मेरो पीछो छूटे तो. तब श्रीगुसांईजी वह रुपैयानकी सिंदूक मंगाइकै कहे, जो वैष्णव ! यह तेरे लाये रुपैया पांच हजार ज्योंके त्यों धरे हैं. हमकों तेरे और क्षत्रानीके रुपैया कहा करने हैं ? यह तेरो अज्ञान और अन्याश्रय दूरि करिवेके तांई उपाय कियो हो. तातें रुपैया ले जाउ. तब वह वैष्णव पांच हजार रुपैया ले कै वह क्षत्रानीके पास आयो. तब वैष्णवने कही, जो ये अपने रुपैया ले. आजु पाछें तेरो मुख नाहीं देखुंगो. तब वह क्षत्रानी बोहोत ही कही, परि वैष्णव वाकी बात सुनी नाहीं. तहां ते तत्काल वह वैष्णव उठिकै अपने घर आयो. पाछें वह वैष्णव आय श्रीगुसांईजीके पास दण्डवत् किये. कह्यो, महाराज ! मोकों बड़ो अन्याश्रय हतो. सो मैं अज्ञान करिकै कबहू न छोरतो. सो आपु कृपा करिकै छुरायो. तब श्रीगुसांईजी वह वैष्णवसों कहे, जो तोकों भगवद्प्राप्तिमें यह प्रतिबन्ध हतो सो दूरि भयो. अब तू भगवद्सेवा सुखेन करियो. तब वह वैष्णव विरक्त मानसी सेवा आछी भांतिसों करन लाग्यो.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णवकों अन्याश्रय तें बोहोत डरपनो. सो अन्याश्रयकौ स्वरूप कहा है ? जो काहू बातकी अपेक्षा मनमें आवें सोइ अन्याश्रय है. तातें भगवान् सिवाय अन्यकी कामना ना करे. और स्नेहकौ स्वरूप जताए. सो सांचे स्नेही तो एक नन्दनन्दन ही हैं. और सब मतलब ते हैं. सो भाव या पदमें जानना -

राग : सोरठ
सांचे स्नेही श्रीनन्दकुमार ।
और नहीं कोई दुःखकौ बेली सब मतलबके यार ।।
मनुष्य जातिकौ नहीं भरोसों छिनु बिहार छिनु पार ।।

चित बचनकौ नहीं ठिकानों छिनु - छिनु पृथक विचार ।
मातपिता भगिनी सुत दारा रति न निभत एकतारा ।
सदा एकरस तुमही निभावो 'रसिक' प्रीतम प्रतिपार ।।

तातें श्रीगुसांईजी आप पूरन पुरुषोत्तम हैं. सोई सांचे स्नेही हैं. सो या वैष्णवकों या प्रकार अन्याश्रय तें छुडाये. तातें एक दृढ़ प्रीति उनही सों करनी.

सो वह विरक्तके उपर श्रीगुसांईजी आप ही ऐसी कृपा किये. तातें वह वैष्णव बड़ो भगवदीय है. सो इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ? वार्ता ।।१३४।।

१३५-एक क्षत्री, आगरेको

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक क्षत्री वैष्णव आगरेमें रहत हुतो, ताकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'नागर - रञ्जनी' है. सो नागर जो श्रीठाकुरजी तिनके मनकों ये रञ्जन करत हैं. ये 'ब्रजमङ्गला' तें प्रगटी हैं. तातें इनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वाके आगरेमें बजाजकी दुकान हती. सो वाके यहां वस्त्रनकौ व्यौपार हतो. सो वाकें वस्त्र बोहोत ही उत्तम ते उत्तम आवते. सो श्रीगुसांईजी एक समै आगरा पधारे. सो मारगमें याकों श्रीगुसांईजीके दरसन भए. सो दरसन होत ही याके मनमें आई, जो हों इनकौ

सेवक होउं तो आछौ. पाछें श्रीगुसांईजी आप तो रूपचन्दनन्दाके घर पधारे. तब यह क्षत्री हू रूपचन्दनन्दाके घर आयो. पाछें श्रीगुसांईजीसों बिनती कियो, जो महाराज ! मोकों अपनो सेवक कीजिए. तब श्रीगुसांईजी इनकों दैवी जीव जानि नाम सुनाए. ता पाछें दूसरे दिन निवेदन कराए. पाछें श्रीगुसांईजी आप वा क्षत्री सो कहे, जो वैष्णव ! तुम रूपचन्दनन्दाकौ सङ्ग करियो. तातें तुम्हारो कल्यान होइगो. तब यह क्षत्री नित्य रूपचन्दनन्दाके घर जातो भगवद्वार्ता सुनतो. पाछें श्रीगुसांईजी तो कछूक दिनमें श्रीगोकुल पधारे. सो यह सरनि आयो. तब वाके मनमें यह मनोरथ भयो, जो हों श्रीगुसांईजीके सब बालक बहू बेटीनकों उत्तम तें उत्तम वस्त्र पहिराउं. सो वाकी हाटमें तो वस्त्र उत्तम तें उत्तम बोहोत आवे. सो सारी जरीनकी तथा गुजराती कीनखाब तथा जरीनके थान, सो सब जूदे काढिकै धरे. सो सब बरस दोई तीनमें दोई गांठि भरिकै जो वस्त्र भेले किये सो एकमें पुरुषके पहिरवेकै वस्त्र और दूसरीमें स्त्रीनके पहिरवेकै वस्त्र, सो गांठि दोइ न्यारी - न्यारी करिकै वह क्षत्री वैष्णव बजाज दोउ गांठि वस्त्रकी लेके आगरेसों चल्यो. सो श्रीगोकुल आयो. सो श्रीगुसांईजी गादी तकिया पर बिराजे हते. सो वह क्षत्री वैष्णव आइकै श्रीगुसांईजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् कियो. तब श्रीगुसांईजी आपु वासों पूछे, जो तू कब आयो ? तब वह वैष्णव क्षत्रीने कह्यो, जो महाराजाधिराज ! आगरे तें अबही आवत हूं. सो महारजाधिराज ! मोकों बहोत ही दिन तें महाराजके दरसनकौ मनोरथ हतो, जो मैं अबके सब बालक बहू - बेटी सबनकों उत्तम ते उत्तम वस्त्र पहिराउं. सो महाराजाधिराज ! बोहोत दिनमें वस्त्र इकठौरे कीने हैं. सो महाराजाधिराज ! आप अङ्गीकार कीजे. तब श्रीगुसांईजीनें कह्यो, जो वह गांठि कहां है, ल्याउ. जो सब वस्त्र वस्तु देखें. तब वह क्षत्री वैष्णव दोउ गांठि मंगाइकै श्रीगुसांईजीके आगें धरी. श्रीगुसांईजीने दोउ गांठि खोलिकै देखी. सो वे वस्त्र सब देखिकै उत्तम तें उत्तम, श्रीगुसांईजी आपु बोहोत ही प्रसन्न भए. और श्रीमुख तें कहे, जो वस्त्र तो श्रीस्वामिनीजी लायक हैं. सो एक गांठि वस्त्रकी स्वामिनीजीके वस्त्रकी हती, तामें जरीके थान और धरिकै वह गांठि श्रीयमुनाजीके मध्यधारामें पधराय दीनी. पाछें दूसरी गांठि हू पधराय दीनी. तब वह क्षत्री वैष्णव तो बोहोत ही सोच करन लाग्यो. और अपने मनमें कही, जो ऐसें मैनें अपनो मनोरथ कियो हो. सो केतेक दिननमें तो सब एकठोरो करिके ल्यायो. सो श्रीगुसांईजी महाराज आप योंही श्रीयमुनाजीमें पधराय दीने. सो मेरो तो मनोरथ मनकौ मन ही में रह्यो. सो भगवद्इच्छा. सो याही भांतिसों सोच करत रात्रि भई. सो न कछू खायो न कछू पियो. भूखो उहां ही परि रह्यो. सो श्रीगुसांईजी आप तो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम ईश्वर, सो सब वाके मनमें की बात जानी. जो वह क्षत्री वैष्णवके मनमें बोहोत ही खेद भयो है. सो श्रीगुसांईजी आप तो परम दयाल हैं. जो भक्तवत्सल करुनासिन्धु दयासागर हैं. सो खेद सहि न सके. तब

श्रीगुसांईजी आप विचारे, जो जामें या क्षत्री वैष्णवकों खेद निवृत्त होइ सो करिए. सो जब अर्द्धरात्रि भई, तब श्रीगुसांईजी आप मेवाकौ डबरा भरिकै अपने श्रीहस्तमें ले कै उठे. तब पूछे, जो वह क्षत्री वैष्णव आगरे तें आयो हो सो कहां है ? तब एक वैष्णवनें कही, जो महाराजाधिराज ! वह तो बड़े सोचमें है. सो कहूं परि रह्यो है. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो वाकों जगाय ल्याओ. तब एक वैष्णव जायकै वाकों जगाइ ल्याओ. तब वा क्षत्री वैष्णवसों श्रीगुसांईजीनें कह्यो, जो यह काकड़ा ले कै श्रीठकुरानी घाटके उहां चलि. सो वह क्षत्री वैष्णव काकड़ा ले कै आगें चल्यो. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप चले तब और वैष्णव साथ आवन लागे. तब श्रीगुसांईजी आप सबनकों बरजे, जो कोऊ साथ मति आओ. तब सब वैष्णव द्वार तें फिरि आए. सो श्रीगुसांईजी आपकी बैठकमें बैठे रहे. कहें, जो श्रीगुसांर्सजी आप जब आवेंगे तब दरसन करिकै जाइंगे. तब श्रीगुसांईजी आप अकेले और वह क्षत्री वैष्णव, तीसरो कोऊ नाहीं. सो वा क्षत्री वैष्णवकों सङ्ग ले कै श्रीगुसांईजी आप ठकुरानी घाट पधारे. सो जब घाट उपर आए तब वा क्षत्री वैष्णवसों कह्यो, जो देखि ! तेरे वस्त्र श्रीस्वामिनीजी अङ्गीकार किये हैं. सो वह क्षत्री वैष्णव देखे, तो वेही वस्त्र, वेही साड़ी लंहगा, चोली सब श्रीस्वामिनीजी अङ्गीकार किये हैं. सब पहिरि हैं. और श्रीठाकुरजी वही जरीकौ बागा पहिरे हैं. ता पाछें श्रीगुसांईजी वा क्षत्री वैष्णवसो कह्यो, जो तू इहां ठाढ़ौ रहियो. हम आवत हैं. सो वा क्षत्री वैष्णवकों घाट पर ठाढ़ौ राखिकै श्रीगुसांईजी आप लीलामें पधारे. सो उह लीलामें मेवाकौ डबरा ले कै गए. सो उहां जाइकै मेवाकौ डबरा भोग धर्यो. और श्रीगुसांईजी आप उहां उनमें ठाढ़े हैं. ता पाछें श्रीस्वामिनीजी श्रीठाकुरजी आप मेवा अरोगे. ता पाछें नृत्य किये. सो नृत्य उहां घाट उपर तें वह क्षत्री वैष्णव सब देखत हैं. सो देखिकै अपने मनमें बोहोत ही प्रसन्न भयो. जो मेरे बड़े भाग है. जो मेरे वस्त्र ठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी सहित अङ्गीकार किये हैं. सो श्रीगुसांईजीकी कृपा तें मोकों रासलीलाकौ दरसन भयो. और श्रीगुसांईजीकों श्रीठाकुरजीने मेवाकौ महाप्रसाद दियो. सो ले कै श्रीगुसांईजी श्रीठकुरानी घाट उपर आए. तब वा क्षत्री वैष्णवने साष्टाङ्ग दण्डवत् कियो. पाछें कह्यो जो महाराजाधिराज ! तुम बिना मो उपर इतनी कृपा कौन करें ! ता पाछें श्रीगुसांईजी आप अपनी बैठकमें पधारे. तब सब वैष्णव साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै सोइ रहे. अपने - अपने घर गए. तब वह क्षत्री वैष्णव हू साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै सोई रह्यो. ता पाछें श्रीगुसांईजी हू आप पौढें. पाछें रात्रि घरी एक रही तब उठिकै देहकृत्य करिकै स्नान कियो. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप भीतर पधारे. और वह क्षत्री वैष्णव श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन मङ्गला आरतिके करिकै श्रीगुसांईजीकों आइकै दण्डवत् कियो. और कह्यो, जो महाराजाधिराज ! आज्ञा होंइ तो घर जाउं. तब श्रीगुसांईजी आप कहे, जो राजभोगके दरसन करिकै जैयो. ता पाछें

राजभोग आरति करिकै श्रीगुसांईजी अपनी बैठकमें बिराजे. तब वह क्षत्री वैष्णव आयो. तब श्रीगुसांईजी आप वासों कहे, जो तुम महाप्रसाद ले कै जैयो. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप सब बालकन सहित भोजनकों पधारे. सो भोजन करिकै अपनी जूंठनिकी पातरि वा क्षत्री वैष्णवकों श्रीगुसांईजी आप अपने श्रीहस्तसों धरे. तब वह क्षत्री वैष्णव महाप्रसाद ले कै पाछें श्रीगुसांईजीकी बैठकमें आयो, दण्डवत् कियो. तब श्रीगुसांईजी आप वाकों बीरा दे कै बिदा कियो. सो वह क्षत्री आगरेमें अपने घर आयो.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह हैं, जो श्रीयमुनाजीके विषे सकल लीला विद्यमान हैं. सो श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजीकी कृपा होंई तब या प्रकार दरसन होंई. तातें उनकौ एक दृढ़ आश्रय करनो. और वैष्णवकों श्रीयमुनाजीकौ स्वरूप अलौकिक करि जाननो, यहू जताए.

सो वह क्षत्री वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१३५।।

१३६-मेहा धीमर, गोपालपुरकौ

अब श्रीगुसांईजीके सेवक मेहा धीमर रावलके पास गोपालपुर गाम है, तहां रहतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'मञ्जिरा' है. ये 'सुमन्दिरा' तें प्रगटी हैं. तातें इनके भावरूप हैं.

ये रावलके पास 'गोपालपुर' गाम है, तहां धीमरके जन्म्यो. सो बरस बीसकौ भयो तब याकौ ब्याह भयो. पाछें इनके मा - बाप मरे. सों ये मलाहकौ धंधा करन लाग्यो. सो ये श्रीयमुनाजीमें मछली मारि अपनो निर्वाह करतो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो एक समै श्रीगुसांईजी गुजरातकौ परदेस करिकै पाछें श्रीगुसांईजी गोवर्द्धन पधारे. तहां श्रीनाथजीकी सेवा सिंगार करिकै दिन तीन तहां रहे. पाछें चोथे दिन राजभोग आरति करि श्रीनाथजीकों अनोसर करायकै श्रीगोकुल पधारिवेकौ विचार कर्यो. तहां तं घोड़ापैं असवार होइकै दसपांच वैष्णव सङ्ग ले कै पधारे. सो 'मई'के घाट पार उतरिकै सन्ध्या समै श्रीगुसांईजी सगरे वैष्णवन सहित रावल पधारे. सो वा दिन श्रीगोकुल पधारिवेकौ मुहूर्त आछो नाहीं हतो. तासों श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो आज मुहूर्त आछौ नाहीं है. तासों रावलके पास 'गोपालपुर' गाम है, तहां डेरा करो. प्रात:काल श्रीगोकुल चलेंगे. तब सगरे वैष्णव सेवक टहलुव भारकस ले कै गोपालपुर डेरा किये. वहां डेरामें श्रीगुसांईजी पधारे. पाछें आप वागा उतारिकै श्रीयमुनाजीके किनारे सन्ध्यावन्दन करन पधारे. तब वैष्णव दसपांच सङ्ग गये. सो घाटपै पहोंचे. तब श्रीगुसांईजी देखें तो एक मलाह जाल लिये मछली पकरत है. तब वैष्णव वह मलाहके पास जांइकै कह्यो, जो तू इहां तें मछली मति पकरे. श्रीगुसांईजी यहां पधारे हैं. तातें तू उठि जा. तब मेहा धीमरने कही, जो आज प्रात:काल तें कछू खायो नाहीं है. सो मैं जाल कैसे निकासों ? तब वैष्णवने एक रुपैया मेहा धीमरकों दियो. और कह्यो, जो बेगि तू जाल निकारि. तब धीमरने तत्काल जाल निकार लियो. तब वैष्णवने मेहासों कह्यो, जो तू डेरातें नेक दूरि बैठ्यो रहियो. तब तोकों खाइवेकों देइंगे. अब तू यहांतें उठि जा. तब वह मेहा धीमर अपनो जाल लेकै बेगि ही उठिकै घर गयो. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीयमुनाजीके तीर बैठिकै सन्ध्यावन्दन किये. पाछें अपने डेरामें वैष्णव सहित पधारे. सो पाक करि भोग धरे. पाछें आप अरोगे. तब सगरे वैष्णव हते तिनकों जूंठनिकी पातरि श्रीगुसांईजी धरन लागे. तब वैष्णव श्रीगुसांईजीसो बिनती करी, जो महाराज ! एक पातरि और धरनी है. या गाममें एक हीन जातिकौ रहत है. ताकों देन कहे हैं. सो वह भूखो रहेगो. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो मैं जानत हों. ताके लिये तो आज इहां डेरा किये हैं. यह सुनिकै सब वैष्णव चुप करि रहे. तब एक ब्रजबासीसों श्रीगुसांईजी कहे, जो या गाममें मेहा धीमर रहत है. ताकों बुलायकै बाहिर ठाढ़ो करो. तब ब्रजबासी डेरासों बाहिर जांइकै गामके पास मेहाकों पुकार्यो. सो मेहा पहिले ही तें महाप्रसादके लिये दूर बैठ्यो हतो. वैष्णव प्रथम कहे हते. तासों डेरा बाहिर नेक दूरि बैठ्यो हतो. सो मेहा ब्रजबासीके पास आयकै पूछ्यो, जो तुम मोकों काहेके लिये बुलावत हो ? तब ब्रजबासीने कही, जो तोकों श्रीगुसांईजी बुलावत हैं. तब मेहा ब्रजबासीके सङ्ग चल्यो. सो ब्रजबासी मेहाकों बाहिर ठाढ़ौ करिकै ब्रजबासीने

श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! मेहा बाहिर ठाढ़ौ है. तब श्रीगुसांईजी पातरि भरि करिकै अपनी जूंठनि अपने श्रीहस्तमें लेकै डेराके बाहिर पधारे. सो मेहाकों दिये. और मेहासों कहे, जो तू अपनी स्त्रीके सङ्ग लीजो. दोउ मिलिकै. तब मेहा आधी पातरि अपनी स्त्रीकों दियो. और आधी आप लियो. सो दोउ महाप्रसाद लियो. सो महाप्रसाद लेत ही दोउनकी बुद्धि निर्मल होंइ गई. तब स्त्री मेहासों पूछ्यो, जो आज यह महाप्रसाद कहां तें ल्याये हो ? तब मेहाने कही, जो श्रीगुसांईजी श्रीविटठलनाथजी आगें मथुरामें रहते सो अब श्रीगोकुलमें रहत हैं. सो आज इहां पधारे हैं. सों वैष्णव आज मोकों एक रुपैया दियो है. और श्रीगुसांईजी मोकों अपने श्रीहस्तकमलसों यह प्रसाद दियो है. ये साक्षात् ईश्वर कहियत हैं. तब स्त्रीने कही, जो चलो इनकी सरनि जैये. तब मेहाने अपनी स्त्रीसों कह्यो, जो हम तो ज्ञाति करिकै हीन हैं. हमकों सरनि कैसें लेइगें ? तब स्त्रीने कह्यो, जो तुम चलो तो सही. जैसें प्रसाद दिये हैं कृपा करि तैसें ही सरनि लेइंगे. तब मेहा और मेहाकी स्त्री दोउ जनें श्रीगुसांईजीके डेरा पास रात्रिकों बैठि रहे. तब ब्रजबासी उनसों पूछी, तुम कौन हो ? और या समै रात्रिकों डेराके निकट क्यों बैठे हो ? तब मेहाने कही, जो हमकों श्रीगुसांईजी महाप्रसाद दिये हैं. तातें हम बैठें हैं. तब वा ब्रजबासीने कही, जो अब तो तुम उठि जाउ. इहां मति रहो. कछु काम होंइ सो कहो. तब मेहाने कही, जो हम अब कहां जांई, सो कहो अब हम श्रीगुसांईजीकी सरनि आए हैं. अब हमकों कहूं ठौर नाहीं है. यह हमारी बिनती है, सो श्रीगुसांईजीसों कहो, पाछें हमकों उठाइयो. तब ब्रजबासी श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो महाराज ! मेहा धीमर स्त्री सहित बैठ्यो है. सो कहत है, जो हम श्रीगुसांईजीकी सरनि आये हैं. हम बोहोत कह्यो, परि वह जात नाहीं. मेहाने यह कही, जो हमकों और ठौर नाहीं है. यह भांति दोउ जनें डेराके बाहिर बैठे हैं. तब श्रीगुसांईजी ब्रजबासीसों कहे, जो तू जांइकै मेहासों कहि आऊ, जो आज तुम सोय रहो. काल्हि प्रातःकाल तुम्हारो अङ्गीकार करेंगे. तुम चिन्ता मति करो. तब ब्रजबासी डेरासो बाहिर आयकै मेहासों कह्यो, जो आज तुम सोय रहो. काल्हि प्रातःकाल तुम दोऊ जनैकों अङ्गीकार श्रीगुसांईजी करेंगे. या भांतिसों आप आज्ञा करी है. तब मेहाने कही, जो अब हम कहां जाय. याही ठौर बैठे हैं. श्रीगुसांईजीके डेराकी चोकी देत हैं. नींद आवेगी तो इहां सोय रहेंगे. तुम हमारी चिन्ता मति करो. तब ब्रजबासी अपने कामकाजकों गयो. श्रीगुसांईजी आपु पौढे. और मेहा और वाकी स्त्री सगरी रात्रि जागत रहे.

पाछें प्रातःकाल श्रीगुसांईजी श्रीयमुनाजीकों पधारे. तब मेहा स्त्री सहित देहकृत्य करिकै बिनती करी, जो महाराज! मेरो अङ्गीकार करो. तब

श्रीगुसांईजी मेहासों कहे, जो जीवकी तू हत्या करत है. तेरो अङ्गीकार कैसें करे ? तब मेहाने कही, जो महाराज ! आज पाछें जीव कबहू न मारूंगो. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो अपनो निर्वाह कौन प्रकार करेगो ? तब मेहाने बिनती करी, जो महाराज ! मैं खेती करिकै अपनो निर्वाह करूंगो. तब श्रीगुसांईजी मेहासों पूछे, जो स्त्री तेरे अनुकूल है ? तब मेहाने कही, जो मोसों अधिक धर्म स्त्रीमें है. याहीकी प्रेरनासों मैं आपकी सरनि आयो हूं. यह सुनिकै श्रीगुसांईजी प्रसन्न भए. तब आज्ञा करी, जो तुम दोउ जनें न्हाइ आओ. तब श्रीगुसांईजी दोउनकों नाम सुनाये. तब मेहाने रुपैया एक वैष्णवसों पायो हतो सो श्रीगुसांईजीकी भेंट कर्यो. और कह्यो, जो महाराज ! यह रुपैया आपहीके वैष्णवने मोकों दियो है. तासों यह आपकौ है. और चारि - चारि पैसा और दोउ जनेंन और भेंट करे. पाछें मेहाने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! मोकों भगवत्सेवा पधराय देउ. तब श्रीगुसांईजी पूछे, जो तेरो मन वस्त्र - सेवापै है कै स्वरूप सेवापै ? तब मेहाने बिनती करी, जो महाराज ! मेरो मन स्वरूप - सेवा पै हैं. जो बालककी नांई सेवा करों. यह सुनिकै श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो यहां तू एक हाथ धरती खोदि इहां स्वरूप निकरेगो. तब मेहाने श्रीयमुनाजीके किनारे खोद्यो. सो एक छोटोसो स्वरूप गौर वरन परम सुन्दर निकर्यो. सो श्रीगुसांईजी उह स्वरूपकों अपने डेरापै ले आए. एक सम्पुटमें पधरायकै भोग धरिकै पाछें मेहाकों दिये. सब सेवाकौ प्रकार कहे. और कहे, जो सेवामें सावधान रहियो. तब मेहा स्त्री सहित श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् किये. पाछें एक कीर्तन गायो -

राग : भैरव
श्रीविटठल प्रभु महा उदार ।
महा पतित सरनागति लीनो निर्भै करि दिनो निर्द्धार ।
वेद पुरान सार जो कहियत सो पुरुषोत्तम हाथ दियो ।
'मेहा' प्रभु गिरिधर फिरि प्रगटे पुष्टि भक्ति सुदृढ़ कियो ।

यह कीर्तन सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए. जाने, याकों स्वरूपकौ ज्ञान भयो. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारे. और मेहा

गोपालपुरमें भली भांतिसों सेवा करे. कबहू सन्देह परे उत्सवमें मार्गकी रीतिमें तो श्रीगोकुल जांइ श्रीगुसांईजीसों पूछि आवें.

भावप्रकाश :
यामें यह जतायो, जे सेवा गुरुकी आज्ञा प्रमान करे. मन कल्पित प्रकारसों न करें. नांतरु प्रभु प्रसन्न न होंई. सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु 'नवरत्न' ग्रन्थमें लिखे हैं. सो श्लोक

सेवा कृतिर्गुरौराज्ञा बाधनं वा हरिच्छया ।

तातें गुरुकी आज्ञा प्रमान सेवा करें, यह सिद्धान्त भयो.

और मेहा अकेले श्रीठाकुरजीकों कबहू छोरे नाहीं. एक दिन मेहा श्रीगोकुल आवें. श्रीगुसांईजीके दरसन करि जांइ. एक दिन मेहाकी स्त्री दरसन करि जांई. और मेहाने घरमें मृतिकाकौ मन्दिर बनायकै तामें किवाड़ काष्टके रङ्गीन करे. सो तामें श्रीठाकुरजीकों सिंघासन पर पधराये. तहांई सिज्या रहे. सो रात्रिकों किवाड़ लगाय दोउ अपने - अपने ओसरे रखवारी करे. और मेहाने श्रीयमुनाजीके किनारें खेती करी. सो मेहा खेत पर जांई. तब मेहाकी स्त्री अकेली रखवारी करे. या भांति दोउ मिलिकै अत्यन्त स्नेहसों सेवा करें. सो या भांति कछूक दिन बीते. सो एक दिन श्रीगुसांईजी विचार कियो, जो अन्नकूटके दिन दस रहे हैं. तब सब वैष्णव सेवकसों कहे, जो अन्नकूटके दरसनकों श्रीजीद्वार चलनो है. सो कौन - कौन चलेगो ? तब वैष्णव बिनती करी, जो महाराज ! आपु जाकों आज्ञा देउगे सो चलेगो. तब श्रीगुसांईजी दस पांच वैष्णव और ब्रजबासी इनकों श्रीगोकुल राखे. और सबनकों आज्ञा दिये. ता समै मेहा श्रीगुसांईजीके दरसनकों आये हते. तब श्रीगुसांईजी मेहासों पूछे, जो तू अपने घर रहेगो के श्रीजीद्वार चलेगो ? तब मेहाने कही, जो महाराज ! मेरे मनमें यह है, जो श्रीठाकुरजीकों पधराइकै आपके सङ्ग चलों. और आप आज्ञा करें तैसैं करों ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो सुखेन चलो. पाछें मेहा अपने घर गयो. तब जांइकै विचार कियो, जो खेती करी है ताकों कहा करों ? सो वा गाममें एक गोरवा रहत हतो, भलो मनुष्य हतो. ताकों

खेती घर सोंपि अपनी स्त्री, श्रीठाकुरजी सहित श्रीगोकुल आए. पाछें दिन द्वै एक में श्रीगोकुल तें श्रीगुसांईजी श्रीजीद्वार पधारे. तब मेहा श्रीठाकुरजीकों ले कै स्त्री सहित गोपालपुरमें आए. तब श्रीगुसांईजी गांइकी खरिकमें एक कौठा मेहाकों बतायो. तामें मेहा लींपकै खासा करिकै रह्यो. सो अन्नकूटकी ठौर कर्यो. मृतिकाकौ मन्दिर बनायो. यथासक्ति थोरी - थोरी सामग्री कर्यो. श्रीगुसांईजी, श्रीनवनीतप्रियजी सहित सातों स्वरूप ले श्रीगोकुलतें पधारें. गोवर्द्धन पूजा श्रीनवनीतप्रियजीने करी. पाछें सातों स्वरूप सहित श्रीनाथजी अन्नकूट अरोगे. सो मेहा श्रीनाथजीके अन्नकूटके दरसन करि विवस भयो. सो मेहाकों साक्षात् अनुभव भयो. सो भाव सहित मेहा अपने घर आयो. तब मेहाकी स्त्री दरसनकों गई. सो वाहूकों साक्षात् अन्नकूट लीलाकौ दरसन भयो. पाछें आप खरिकमें आयकै अपने श्रीठाकुरजीकों अन्नकूट भाव सहित पूजे. सो साक्षात् दरसन श्रीठाकुरजीके मेहा और मेहाकी स्त्रीको भए. ता समै मेहाने ये कीर्तन सारङ्गमें गाये.

राग : सारङ्ग

हमारो देव गोवर्द्धन पर्वत, गोधन जहां सुखारो ।
सुरपतिकौ बलि भाग न दीजे, कीजे मतो हमारो ।
पावक पवन चन्द जल सूरज, वर्तत आज्ञा लीने ।
ता सुरपतिकौ कियो सब होत हैं, कहां इन्द्रके दीने ।
जाके आसपास सब ब्रजकुल, सुखी रहें पसु पालें ।
जोरो सकट अछूतें लेले, भलो मतीको टारें ।
बडड़े बैठि बिचार मतो करि, पर्वतकों बलि दीजें ।
नन्दरायकौ कुंवर लाड़िलो, कान्ह कहे सो कीजें ।।
माखन दूध दह्यो घृत पक लेले, चले सकल ब्रजबासी ।
मिटयो भाग सुरपति जिय जान्यो, मेघ दियो मुकराई ।
'मेहा' प्रभु गिरि कर धरि राख्यो, नन्दकुंवर सुखदाई ।।

राग : सारङ्ग

सुनिए तात हमारो मत, गोवर्द्धन पूजा कीजे ।
जो तुम जज्ञ रच्यो सुरपतिकौ, सो सब इहां ले दीजे ।
कन्दमूल फल यह फलकी निधि, जो मांगो सो पावो ।
यह गिरि बास हमारो निसदिन, निर्भै गांइ चरावो ।
दूध दहीके माट भरावो, बिंजन अमृत अपार ।
मधु मेवा पकवान मिठाई, भरि भरि राखे थार ।
बडड़े बैठि बिचारि मतो करि, कान्ह कहे सो कीजे ।
विविध भांतिके अन्नकूट करि, पर्वतकों बलि दीजे ।
यह नग नाना रूप धरत हैं, ब्रजजनकौ रखवारौ ।
देवनमें यह बड़ो देवता, मोहूकों अति प्यारौ ।
नन्दनन्दन यही रूप धरि, आपुन भोजन कीयौ ।
'मेहा' प्रभु गिरिधरन लाड़िले, मांगि मांगिकै लियो ।

इत्यादि अन्नकूटके कीर्तन मेहा गावत हैं. सो सांझ होंई. सो देहानुसन्धान भूलि गयो. मेहाकी स्त्री हूकों कछू देहकी सुधि रही नाहीं. सो एक वैष्णव खरिकमें मेहाकी दसा देखिकै श्रीगुसांईजीसों जांइ कही. तब श्रीगुसांईजी आपु खरिकमें पधारे. तब श्रीगुसांईजी मेहाके कानमें कहे, जो कहा समाचार है ? तब मेहाने श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् कियो. तब मेहासों श्रीगुसांईजीने कही, जो बेगि भोग सरावो श्रीठाकुरजी बैठि रहे हैं. यह कहिकै श्रीगुसांईजी पधारे. सो स्नान करिकै पर्वत उपर पधारे. संखनाद करिकै श्रीनाथजीकों उत्थापन करे. पाछें सेनतांई पहोंचि अनोसर करायकै पर्वत तें नीचे पधारे. सो महाप्रसाद सबनकों दिये. पाछें बालकन सहित आपु भोजन कियो. पाछें

श्रीनवनीतप्रियजीकों पधरायकै सातों स्वरूपन सहित श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारे. पाछें मेहा श्रीगुसांईजीसों बिदा होंईकै गोपालपुरमें अपने घर आए. सो मेहाके उपर श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपा हती.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
और कछूक दिनमें मेहाकी स्त्रीकों गर्भ रह्यो. सो पूरे दिन आये. तब मथुरामें मेहाकी ज्ञातिकौ झगरो भयो. सो सबनने कही, जो मेहा भलो मनुष्य है उह आयकै कहे सो करिये. तब झगरो चुके. सो दोई मनुष्य मथुरातें मेहाकों बुलावन आए तब मेहाने अपनी स्त्रीसों कह्यो, जो मोकों जरूर अब मथुरा जानो पर रह्यो है. सो तेरे लरिका होयगो तब श्रीठाकुरजी बैठि रहेंगे. अब मैं कैसें करो ? तब स्त्रीने कही, अब ही तो पीर पेटमें नाहीं होत. तुम उत्थापन तें सेन पर्यन्त पहोंचिकै जाउ. अटकियो मति. तब मेहा राजभोग पहोंचि अनोसर कियो. पाछें महाप्रसाद लियो. पाछें दोइ घरि पहिले उत्थापन कराय, सेन पर्यन्त पहोंचिकै स्त्रीसों कह्यो, जो सावधान रहियो. तब मथुरा गयो. सो जात ही ज्ञातिकौ काम करनो हतो सो किये. रात्रिकों सब कियो पाछें सबनसों कह्यो, जो मेरे घर लरिका होनहार है. तासों अबही जाउंगो. तब सबननें कही, अर्द्ध रात्रि गई है. सीतकालकौ दिन है. या समै नाव नाहीं. घाटवारो नाहीं. और हम कैसें जान दे ? हमारे और दोय - तीन दिन तो रहो. तब मेहाने कही, मैं प्रातःकाल जरूर उठि जाउंगो. तुम्हारो काम कछू होंई सो या समै करि लेउ. पाछें रात्रि मथुरामें रह्यो. और इहां स्त्रीकों प्रहर एक रात्रि गई ता समै पुत्र भयो. तब मेहाकी स्त्रीकों महा खेद भयो. यह पुत्र महादुष्ट है. जो मेरे पेटमें आयकै बैर लियो. अब प्रातःकाल श्रीठाकुरजीकी सेवा कौन करेगो ? या भांति स्त्री विलाप करन लागी. तब श्रीठाकुरजीसों यह दुःख सह्यो न गयो. तब श्रीठाकुरजी वा स्त्रीसों कहे, जो तू रोवे मति. मोकों नींद नाही आवति. काल्हि प्रातःकाल तू ही सेवा करियो. तब स्त्रीने कह्यो, जो महाराज ! मैं तो अघोर नरकमें परी हों. तुम्हारी सेवा कैसें करोंगी ? तब श्रीठाकुरजी कहे, गोबर, गोमूत्र, खड़ी लगाय आछी भांति न्हाय काछ बांधिकै चरनामृत ले कै मेरी सेवा करियो. मेरी आज्ञा है, तू चिन्ता मति करे. अब तू सोय रहे. तोकों कछू बाधक न होइगो. तब मेहाकी स्त्री रोवत तें रही. पाछें प्रातःकाल भयो. तब वह स्त्री गोमूत्र, गोबर, खड़ी लगायकै सात बेर न्हाई. पाछें चरनामृत ले कै श्रीठाकुरजीकों जगाये. पाछें मङ्गलभोग अरोगाय आरति करि पाछें सिंगार कियो. पाछें राजभोग तें पहोंचिकै अनोसर करायकै खाटपै आयकै परि रही. और उहां मेहा प्रातःकाल चलन लाग्यो तब ज्ञातकेन कह्यो; जो आज और रहो. कछू काम और

है. जो रहो तो आछौ है. तब इन नाहीं करि. ता पाछें ज्ञातकेन कह्यो, जो एक दिन न रहो तो आज ही एक प्रहर तो और रहो. तब मेहा एक प्रहर रहिकै ज्ञातकौ झगरो चुकायकै ता पाछें तहां तें चल्यो. सो मथुराके घाट उतरिकै पार आयो. तब मध्याह्नकौ समौ भयो. ताही समै गोपालपुर तें एक मनुष्य आयो. सो वह मनुष्य मेहाकों देखिकै कह्यो, जो तोकों बधाई है. तेरे घर रात्रिकों पुत्र भयो है. यह सुनिकै मेहाकों बोहोत बुरी लागी. तब मेहाने कही, जो यह दुष्ट पुत्र कहां तें भयो ? मेरे श्रीठाकुरजी बैठि रहे होंगे. ऐसें कहिकै मेहा तहां ते दोर्यो. सो घरी एकमें गोपालपुर आयो. तब तत्काल आयकै स्त्रीसों कहे, जो श्रीठाकुरजी बैठे होंगे मैं बेगि न्हाउं. तब स्त्रीने कह्यो, जो श्रीठाकुरजीकौ सेवा सिंगार भयो है. मैं राजभोग तांई पहोंची हूं. तब मेहाकों महाक्रोध स्त्रीपैं आयो. जो ऐसें नरकमें परी है तू, तामें कैसें श्रीठाकुरजीकों छियो ? तब स्त्रीने कह्यो, जो मोकों श्रीठाकुरजीकी आज्ञा भई है. तब में सेवा करी. तब मेहाने कही, जो श्रीठाकुरजी कबहू न कहे. मोकों गिलानी आवत है. तो तोकों श्रीठाकुरजी कैसें कहेंगे ? तू रांड बड़ी झूठी है. ऐसें कहिकै मेहा एक बड़ी लाठी ले कै मारन लाग्यो. तब श्रीठाकुरजी जाने, जो मेहा निश्चय मारेगो. तब मेहासों श्रीठाकुरजीने कह्यो जो वाकों काहेकों मारत है ? यह तो मेरी आज्ञातें सेवा करी है. और तू मोकों छोरिकै चल्यो गयो. तो सेवा को करे ? दोष तो तेरो है. तब मेहाने बिनती करी, जो महाराज ! मेरो अपराध क्षमा करो, मैं भूल्यो. और महाराज ! ऐसे में यासों सेवा कौन भांति कराई ? तब श्रीठाकुरजी कहे, जो याकों रात्रिकों विरह ताप बोहोत भयो हतो. सो मोसों सह्यो न गयो. तब मैं आज्ञा दीनी. अब तोकों गिलानी आवे तो अपरस काढ़िकै दूसरे दिन सिंगार करि राजभोग धरि. स्त्रीकों काहेकों मारत है ? यह तो मेरी आज्ञा तें कियो है. यह सुनिकै मेहा श्रीठाकुरजीकों दण्डवत् कियो. बोहोत बिनती कियो. जो महाराज ! मैं चूक्यो. अब मेरो अपराध आप कृपा करिकै क्षमा करो. पाछें मेहा न्हायकै सगरी अपरस काढ्यो.

भावप्रकाश :

यामें यह जनाए, जो वैष्णवकौ सेवामें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी मर्यादाकौ पालन अवस्य करनो. तातें श्रीठाकुरजी प्रसन्न होत हैं. और जो कदाचित् प्रभुनकी बिसेस आज्ञा होंई तो ता प्रकार करनो. तामें बाधक नाहीं.

श्रीठाकुरजीकों श्रीयमुनाजलसों स्नान करायकै फेरिकै मङ्गलभोग तें राजभोग तांई पहोंच्यो. या भांतिसों मेहाकी उपर, मेहाकी स्त्री उपर,

श्रीठाकुरजी कृपा करते.

वार्ता प्रसङ्ग ३ :
पाछें कछूक दिनमें मेहाकी स्त्रीकी देह छूटी. सो श्रीगुसांईजीके चरनकमलकौ स्मरन करिकै वह स्त्री देह छोरि लीलामें प्राप्त भई. तब मेहाकों महादुःख भयो. जो अब भगवद्सेवा अकेले कौन प्रकारसों होइगी ? ता पाछें मेहाकौ लरिका बरस दसकौ भयो. तासों मेहा बारबार कहे, जो तू श्रीगुसांईजीकौ सेवक होउ, भगवद् सेवा करि. तब वह पुत्र मेहासों कहे, जो मैं सेवक न होउंगो. वा पुत्रके बचन सुनिकै मेहा मनमें जान्यो, जो यह दैवी जीव नाहीं है. तातें श्रीगुसांईजीकी सरनि नाहीं आवेगो. पाछें मेहा अकेलो भगवद्सेवा करें. सो एक दिन चारि वैष्णव मथुरा तें चले. श्रीगोकुलकों, श्रीगुसांईजीके दरसनकों. तब दिन थोरो रह्यो. तब वैष्णवन विचार कर्यो, जो मथुराके घाट आज उतरि रहे. प्रातःकाल गोकुल पहोंचेंगे. सो पार मथुराके घाट चारों जनें उतरे. तब एक वैष्णवने कह्यो, जो चलो गोपालपुरमें मेहा श्रीगुसांईजीकौ भलो वैष्णव है. ताके घरमें रात्रिकों रहेंगे. भगवद्वार्ता कछू सुनेंगे. यह सुनिकै सबनके मनमें यह बात आई. सो चारों जनें चले. सो घरी दोइ रात्रि गई ता समै मेहाके घर आय पहोंचे. ता समै मेहाके इहां सेनभोग धर्यो हतो. तब मेहाने वैष्णवनकों बोहोत सन्मान करि अत्यन्त प्रीतिसों उतारो दियो. पाछें सेनभोग सरायकै पाछें चारों वैष्णवनकों दरसन कराय भली भांतिसों प्रसन्न किये. सो चारों वैष्णवनके मनमें यह आई, जो हमकों यह स्वरूप पधरावें तो हम सेवा करें. पाछें मेहाने अनोसर करिकै वैष्णवके पास आय पूछ्यो, जो महाप्रसाद लेऊ. दूधकी सामग्री हैं. और अनसखड़ी हू हैं. सो तुम्हारो मन होइ सो लेऊ. तब वैष्णवने कही, जो हम महाप्रसाद लेकै चले हैं. और तुम्हारे इहां दूधकी सामग्री हैं, सो लहिगें. तब मेहा दूधके पेड़ा, खोवा, मलाई, दूध, यह महाप्रसाद ल्याय दियो. घरमें गांइ भैंसि बोहोत हुती. तातें दूध बोहोत होतो. सो चारों वैष्णवने महाप्रसाद लियो. पाछें मेहा महाप्रसाद लेकै वैष्णवनके पास आयो. सो भगवद्वार्ता करन लागे. सो चारों वैष्णवमें तीन वैष्णव ब्राह्मन हते. और एक वैष्णव क्षत्री हतो. सो वह क्षत्री भलो वैष्णव हतो. तब भगवद्वार्तामें मेहाने जान्यौ, जो क्षत्री भलो वैष्णव है. तब मेहाने वा क्षत्रीसों कह्यो, मेरी देह दिन चारि पाछें छूटेगी. सो तुम श्रीठाकुरजीकों पधरावो तो बोहोत आछो है. तब क्षत्रीने कह्यो, जो तुम्हारे लरिका है, सो वह सेवा भली करेगो. तब मेहाने कही, जो वह आसुरी जीव है. मोतें न्यारो रहत है. और श्रीगुसांईजीकी सरनि नहीं आयो हैं. तब वैष्णवने कही आछौ. पाछें उह तीन ब्राह्मन वैष्णव हते

सो मेहासों कहे, जो हमारे माथे श्रीठाकुरजी पधरावो तो हम सेवा करें. तब मेहाने कही, सो तो सांच. परन्तु अब तो या क्षत्री वैष्णवके माथें पधराए. और मेहाके हृदयमें महा दुःख भयो. नेत्रनमें तें अश्रु चले. पाछें दूसरे दिन वह क्षत्री वैष्णव रसोई करि चुक्यो. तब श्रीठाकुरजीकों अत्यन्त प्रीतिसों अपने माथे पधरायो. भोग धर्यो. वे तीन ब्राह्मन न्यारी रसोई करिकै भोग धरिकै महाप्रसाद लिये. मेहा सगरो प्रसाद गायनकों खवाय दियो. आप विरहके दुःख करिकै रञ्चक हू न लीनो. पाछें वह क्षत्री वैष्णव अनोसर करि महाप्रसाद लियो. पाछें चारों वैष्णव मेहासों बिदा भए. सो श्रीगोकुल आये. श्रीगुसांईजीकौ दरसन कियो, श्रीनवनीतप्रियजीकौ दरसन कियो. और इहां मेहाकों महा विरह भयो. सो तत्काल घरमें सगरी वस्तू भाव हती सो सब बेचिकै उह गोपालपुरकौ जमींदार गौरवा हुतो, ताकों द्रव्य दियो. कह्यो जो मेरी अब देह छूटेगी और मेरो पुत्र दुष्ट है. सो तुम यह श्रीगुसांईजीकी भेंट करि आवो. तब वह गौरवा तत्काल श्रीगोकुल जांइ श्रीगुसांईजीकों भेंट करिकै पत्र लिखाय मेहाके पास आय पत्र सांझकों दीनो. तब मेहा यह पत्र माथें चढायकै मेहा विरहके दुःख करिकै व्याकुल भयो. जो अब भगवद् सेवा बिना वृथा जीवनो है. या भांति सगरी रात्रि रोवत बीती. इहां प्रातःकाल समै सगरे वैष्णव दरसनकों आये. तब चाचा हरिवंशजी हू आये. तब श्रीगुसांईजी काहूसों बोले नाहीं. तब सगरे वैष्णव आपुसमें विचार करन लागे, जो आज कहा कारन है, जो श्रीगुसांईजी काहूसों बोले नाहीं ? तब सगरे वैष्णव चाचा हरिवंशजीसों कहे, जो तुम श्रीगुसांईजीकों पूछो. तब चाचा हरिवंशजी श्रीगुसांईजीसों बिनती किये, जो महाराज ! आज काहूसों बोलत नाहीं ताकौ कारन कहा है ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो मेहा भलो वैष्णव है. सो विरह करिकै दुःखी है. सो वाकौ दुःख मोसों सह्यो नाहीं जात. जो आजु दुपहरिकों वाकी देह छूटेगी. तब चाचाजी कहे, जो आज्ञा होंइ तो मैं उहां होइ आउं. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो चरनामृत लेते जाउ. तब श्रीगुसांईजीके न्हाइवेकौ समै हतो. सो चरनामृत दिये. सो चाचाजी एक लोटीमें लेकै चले. और दस - बीस वैष्णवसो चाचाजीके सङ्ग चले. सो घरी चार दिन चढ़े गोपालपुरमें गए. तहां देखे तो मेहा बिरह करिकै पर्यो है. कछू सरीरकी सुधि नाहीं है. तब चाचाजी मेहाकौ हाथ पकरिकै उठाये, तब सुधि भई. तब चाचाजी कहे, जो श्रीगुसांईजी तोकों चरनामृत पठाये हैं. और तू काहू बातकी चिन्ता मति करियो. मध्याह्न समै तेरी देह छूटेगी. बोहोत दुःख तू मति करे. श्रीगुसांईजीकों बोहोत दुःख होत हैं. तेरो दुःख नाहीं सहि सकत. तब मेहा उठिकै चरनामृत लियो. श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् कियो. और कह्यो, चाचाजी ! अब मोकों धीरज भयो है. जो या समै मोकों तुम सारिखे वैष्णव दरसन देने आये. और श्रीगुसांईजी मोकों सुधि किये. मैं तो मेहा पतित हों. प्रभु बड़े दयाल हैं. या भांति वार्ता करत मध्याह्नकौ समै भयो. तब

मेहाने सारङ्गमें नयो कीर्तन कियो.

राग : सारङ्ग
श्रीविटठलकी सरनि न आयो जनम आपुनो खोयो हो ।
जो सेवा - रस स्वाद न चाख्यो जनम - जनम सो रोयो हो ।
यह कलिकाल कराल ब्याल सम महा अघनकौ मूल हो ।
'मेहा' प्रभु गिरिधर बिनु सुमिरे सहे त्रिविध दुःख सूल हो ।

यह कीर्तन मेहा करि देह छोरि लीलामें प्राप्त भयो. पाछें चाचाजी आदि सब मिलिकै मेहाकौ संस्कार कियो. पाछें मेहाके लरिकाने सुनी, जो मेहाकी देह छूटि गई. तब वह मेहाके घरमें आयो. जो घरमें आयकै देखे तो श्रीठाकुरजी घरमें नाहीं है. और हू कछू वस्तू घरमें नाहीं है. तब उन वैष्णवसों पूछ्यो, जो घरमें की बस्तू कहां गई ? तब चाचाजी कहे, जो हम तो आज आए हैं. तू अपने गाममें पूछि देखि. वह मेहाको लरिका वा गामके लोगनके पास आयो. और कह्यो, जो मेहा तो मर्यो, घरमें कछू वस्तू नहीं है. सो इन वैष्णवन लीनी होइगी. तब वह गौरवाने कह्यो, जो मेहा तो वैष्णव हतो. सो अपनो काल आयो पहिले ही जान्यो. सो सबके दाम करिकै काल्हि मोकों दस - बीस रुपैया दियो. तातें तू अब खाली घर है वामें रहे, चाहे मति रहे. तब वह रोईकै बैठि रह्यो. पाछें चाचाजी आदि सब वैष्णव श्रीगोकुल आए. तब सब समाचार श्रीगुसांईजीसों कहे. तब श्रीगुसांईजी मेहाके उपर प्रसन्न होइकै श्रीमुखसों सराहना किये.

भावप्रकाश :
यामें यह जताए, जो वैष्णवकों भगवत्सेवा बिना जीवनो व्यर्थ है. तातें भगवत्सेवामें कालकौ व्यतीत करनो.

सो मेहा और मेहाकी स्त्री बड़े भगवदीय कृपापात्र हते तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं. सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१३६।।

१३७-हृषिकेश क्षत्री, आगरेके

अब श्रीगुसांईजीके सेवक हृषिकेश क्षत्री, आगरामें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'मनआतुरी' है. ये 'सुमन्दिरा' तें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं.

ये आगरामें एक क्षत्रीके जन्मे. सो बरस बीसके भए तब इनकौ विवाह कियो. पाछें कछूक दिनमें माता - पिता मरे. तब हृषिकेश घोड़ानकी दलाली करन लागे. सो ब्यौहार काजमें हृषिकेशकौ रूपचन्दनन्दासों मिलाप भयो. सो ये रूपचन्दनन्दाके घर नित्य जाते. सो एक समै घरी दिन चढ़े श्रीगुसांईजी आगरा पधारे. तब रूपचन्दनन्दाके घर बिराजे. सो ता समै हृषिकेश रूपचन्दनन्दाके घर कछू ब्यौहार काजकों आए हुते. सो इनकों श्रीगुसांईजीके दरसन भए. सो हृषिकेश दोउ हाथ जोरिकै ठाढ़े रहे. श्रीगुसांईजी हृषिकेशकी ओर देखें. पाछें हृषिकेशकों आज्ञा किये जो हृषिकेश ! अब कहा विलम्ब है ? तब ही हृषिकेशकों श्रीगुसांईजी आप साक्षात् श्रीमदनमोहनजीके स्वरूपसों दरसन दिये. सो हृषिकेश मूर्च्छित होंइ गए. वह स्वरूप हृदयमें धारन करि न सके. सो घड़ीभर मूर्च्छा रही. पाछें जागे. तब हृषिकेश श्रीगुसांईजीसों बिनती किये, जो महाराज ! बेगि अङ्गीकार कीजिए. अब विलम्ब सह्यो जात नाहीं. तब श्रीगुसांईजी हृषिकेशकों नाम सुनाए. और कहे, जो अब कहा समाचार है ? तब हृषिकेशने कही, जो महाराज ! जा स्वरूपसों आप दरसन दिए. उनकी सेवा करों ऐसी ईच्छा है. तब श्रीगुसांईजी हृषिकेशकों कहे, जो न्हाइ ले. हम तोकों सेवा पधराई देइंगे. तब रूपचन्दनन्दा पास ठाढ़े हते. उन कह्यो, जो चलों हों न्हवाइ देत हों. पाछें हृषिकेश रूपचन्दनन्दाके उहांई न्हाए. पाछें रूपचन्दनन्दाने नए वस्त्र पहरिवेकों दिये. सो हृषिकेश पहरिकै श्रीगुसांईजी आगें ठाढ़े भए. तब श्रीगुसांईजी वाकों नाम - निवेदन करवाए. पाछें श्रीमदनमोहनजीकौ स्वरूप पासमें हुतो. सो श्रीगुसांईजी आपु हृषिकेशकों पधराइ दिए. और आज्ञा किये, जो ये मेरोई स्वरूप है. तातें इनकी नीकी भांतिसों सेवा करियो. और रूपचन्दनन्दाकौ सङ्ग करियो. पाछें हृषिकेश यथासक्ति भेंट किये. ता पाछें घर जांई स्त्रीपुत्रादि सबकों ले आये. सो उनकों हू श्रीगुसांईजीसों बिनती करि नाम निवेदन कराए. पाछें हृषिकेश प्रीतिपूर्वक श्रीठाकुरजीकी सेवा करन

लागे. और वे नित्य रूपचन्दनन्दाके इहां भगवद्वार्ता सुनिवे जाते.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो हृषिकेश आगरेमें घोड़ानकी दलाली करते. ऐसे करत बोहोत दिन बीते. सो सोदागर बोहोत घोड़ा आगरेमें ल्यावते. सो जितने वे घोड़ा आगरेमें बिकते सो सब हृषिकेशकी मारफत बिकते. सो एक दिन हृषिकेशके मनमें यह आई, जो मोकों बोहोत दिन घोड़ानकी दलाली करत भए हैं. परन्तु कोई घोड़ा श्रीगुसांईजीकों भेंट नाहीं कियो. तातें बिना ऐबकौ घोड़ा, एकहू दोष न होंइ ऐसो घोड़ा एक श्रीगुसांईजीकों भेंट अवस्य करनो. सो हृषिकेशके घरमें खरच बोहोत. स्त्री पुत्र कुटुम्ब बोहोत. सो पैसा घरमें रहे नाहीं. जो दलालीकौ द्रव्य आवे सो सब उठि जांई. सो हृषिकेशके मनमें बोहोत आरति भई. जो एक बोहोत सुन्दर घोड़ा श्रीगुसांईजीकी भेंट तो अवस्य करनो. सो ऐसो विचार मनमें करत बोहोत दिन भए. तब एक सोदागर दो हजार घोड़ा ले कै आगरेमें बेचनकों आयो. तब वह सोदागर हृषिकेशकों बुलायकै कह्यो, जो ये दोइ हजार घोड़ा हैं. सो सबकों देखिकै इनकी बिकरी कराय देउ. तब हृषिकेशने सब घोड़ानकों देखे, आछी भांतिसों. तामें एक घोड़ा अबलख रङ्गकौ बोहोत सुन्दर देखे. तामें एक हू ऐब नाहीं. तब हृषिकेशने अपने मनमें विचार्यो, जो यह घोड़ा श्रीगुसांईजीके लायक है, परन्तु मैं अब कौन प्रकार यह घोड़ा श्रीगुसांईजीकी भेंट करों ? मेरे घरमें तो कछू द्रव्य नाहीं है. पाछें हृषिकेशने उह सोदागरसों कहे, जो सगरे घोड़ा तुमकों इहां बेचिकै दाम करिकै देउंगो.

ता समै अकबर देसाधिपति आगरेमें हतो. सो फोज हती. सो हृषिकेश सगरे जमातदारनसों पूछिकै हजार घोड़ा तो वह सोदागरके बेचाय दिये. और वह अबलख घोड़ा काहूकों दिखाए नाहीं. तब वह सोदागर हृषिकेशके उपर बोहोत प्रसन्न भयो. तब हृषिकेशसों वह सोदागरने कही, जो मेरे हजार घोड़ा और बेचि देउ. तो तुम्हारी दलाली और एक घोड़ा मैं अपनी ओर तें देउंगो. तब हृषिकेशने कही, जो मैं तुम्हारे सब घोड़ा बिकाय देउंगो. परन्तु अब मैं घोड़ा ले जांइकै दोइ - दोइ चार - चार मथुरामें, जहां - तहां तें तुम्हारे दाम कराय देउंगो. तुम कहोगे तो तुमकों अपनो घर लरिका बताइ देउंगो. यह सुनिकै सोदागरने कह्यो, जो हमें तो तेरो विश्वास है. तातें जहां मन आवे तहां घोड़ा ले जाउ. यह सुनिकै हृषिकेश मनमें बोहोत प्रसन्न भए. तब वह अबलख रङ्गकौ घोड़ा वह सोदागरके ह्यांतें ले कै अपने घर ल्याय

पाछें विचार कियो, जौ घोड़ा तो हाथमें आयो. अब वाके उपर सुन्दर जीन चाहिए. तब एक आगरेमें सेठ हतो ताके घर गए. तब वह सेठसों हृषिकेशने कह्यो, जो तुम्हारे घर नई मखमलके साजकी जीन बनी है सो हमकों देउ, तो हमकों (ऐसी) दूसरी बनवानी है. फलाने सोदागर हजार दोइ घोड़ा ल्याये हैं. तामें तें हजार घोड़ा तौ बिक चुके हैं. सो कछूक घोड़ा एक उमरावके लिये हैं. ताकों जीन हू बनवाय देनो है, सो तुम देउ तो आछौ है. तब उन सेठने कह्यो, जो ले जाउ, घर तुम्हारो है. दस - पांच दिन राखियो. हमारे अब ही असवारीकों दिन दस - पन्द्रहकी ढील है. तब हृषिकेश जीन ले कै आयो. सो घरमें आइ वा घोड़ा पर जीन करि पाछें अपनी स्त्री लरिकानसों कहे, जो मैं श्रीगोकुल जात हों. तुम नीकी भांतिसों ठाकुरजीसों पहोंचियो. और कोई जो पूछन आवे तो ऐसें कहियो, जो घोड़ा बेचन गये हैं. परि श्रीगोकुलकौ नाम मति लीजियो. तब स्त्री - पुत्रने कह्यो, जो तुम सुखेन जाउ. हम ऐसें ही कहेंगे. तब हृषिकेश घोड़ाकी लगाम पकरि चाबुक अपने हाथमें ले या भांति अबलख घोड़ाकों ले आपु पांइनसों श्रीगोकुल चले. मनमें यह विचारे, जो यह घोड़ा श्रीगुसांईजीकौ है. सो यापैं हों कैसें चढो ? या प्रकार चले. सो श्रीगोकुलके साम्हे 'मोहनपुर' में आय पहोंचे. सो घरी दोइ रात्रि रही. तातें 'मोहनपुर'में रहे. पाछें प्रातःकाल भयो तब इहां श्रीगुसांईजी न्हायकै श्रीनवनीतप्रियजीकों जगाए. पाछें मङ्गला करि सिंगार करि पाछें गोपीवल्लभसों पहोंचिकै मनमें यह विचार किये, जो अबलख रङ्गकौ घोड़ा ता पर मखमलकी जीन होंई ऐसो घोड़ा होंइ तो ता पर चढि श्रीनाथजीद्वार जइवे. सो इहां हृषिकेश प्रात ही मलाहकों कछूक पैसा दे बेगि ही पार उतरिकै श्रीगुसांईजीके द्वारें आइकै घोड़ा ले कै ठाढ़े होंई रहे. तब विष्णुदास पोरियाने कही, जो तुम कौन हो ? कहां ते आए हो ? और घोड़ा लिये द्वारके पास ठाढ़े क्यों हो ? तब हृषिकेशने विष्णुदास पोरियासों कह्यो, जो यह घोड़ा श्रीगुसांईजीकी भेंट है. और मैं श्रीगुसांईजीकौ सेवक हों. हृषिकेश मेरो नाम है. आगरेमें रहत हों. यह सुनिकै विष्णुदास श्रीगुसांईजीके पास आयकै बिनती कीनी, जो महाराज ! आगरेमें हृषिकेश रहत हैं. सो आपकौ सेवक है. सो घोड़ा बोहोत सुन्दर भेंट ल्यायो है. सो द्वार उपर ठाढ़ो है. यह सुनिकै आप श्रीगुसांईजी द्वार उपर पधारे. तब हृषिकेशने श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि बिनती कीनी, जो महाराज ! यह घोड़ा आपुकी भेंट है. या प्रकार हृषिकेशकी बिनती सुनिकै घोड़ाकों देखिकै बोहोत प्रसन्न भए, श्रीगुसांईजी. तब आपु श्रीमुखसों आज्ञा किये, जो आजु मेरे मनमें यह आई हती, जो अबलख रङ्गकौ घोड़ा और मखमलकै साजकी जीन ता पर चढिकै श्रीनाथजीद्वार चलिये. सो तू मेरे मनकी जानी. तब हृषिकेशने बिनती कीनी, जो महाराज ! हम तो अज्ञानी जीव हैं. कछू जानत नाहीं. और आपु तो दयाल हो. सो हमारे उपर कृपा करत हो. यह दैन्यताके बचन सुनिकै

श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भये. कहे, आज मेरे मनमें हती सो भयो. पाछें श्रीगिरिधरजीसों आज्ञा किये, जो गोपीवल्लभ तांई मैं पहोंच्यो हूं. अब राजभोगमें तुम पहोंचियो. मैं तो अब श्रीनाथजीद्वार जात हों यह सुनिकै तत्काल श्रीगिरिधरजी तो न्हायकै मन्दिरमें पधारे. तब श्रीगुसांईजी इह घोड़ा उपर असवार होंइकै हृषिकेशकों आज्ञा किये, जो तू मेरे सङ्ग पास - पास चलि. तब हृषिकेश चाबुक अपने हाथमें ले श्रीगुसांईजीके वाम चरनारविन्दके पास परस करत चले. तब श्रीयमुनाजी उतरिकै पास जब चले तब मार्गमें श्रीगुसांईजीने वा हृषिकेशसों पूछ्यो, जो हृषिकेश ! तू तो धन करिकै रहित है. और ऐसो सुन्दर घोड़ा और ऐसे भारी साजकी जीन कहां तें ल्यायो ? तब हृषिकेश डरपिकै मनमें कह्यो, जो श्रीगुसांईजी तों अन्तरजामी हैं. इहां मेरी झूठ चलेगी नाहीं. और गुरुके आगें झूठ कैसें बोलों ? यह विचारिकै हृषिकेशने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! एक सोदागर हजार दोय घोड़ा ल्यायो है. सो कछूक तो बिकाय दिये हैं. कछूक और बेंचि देउंगो. तामें दलालीकौ द्रव्य बोहोत आवेगो. सो जीनवालेकों देउंगो. और वा सोदागरने मोकों एक घोड़ा देन कह्यो है. सो मैं अपनी महनतकौ ले आयो हूं. यह सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत ही प्रसन्न भये. ता समै दुपहरीकी ताप बोहोत भई. सो सूर्यकों देखिकै श्रीगुसांईजीसों हृषिकेशने बिनती करी, जो महाराज ! श्रीनाथजी और श्रीनवनीतप्रियजी एक ठोर बिराजे तो आपकों श्रम न होंइ. ऐसें घाममें पधारत हो. सो हमकों देखिकै महादुःख होत है. यह सुनिकै श्रीगुसांईजी हृषिकेशसों कहे, जो सदा श्रीजी और श्रीनवनीतप्रियजी पास बिराजे तो इतनी आरति हमकों न होंइ. काहेतें, जब श्रीनवनीतप्रियजीके निकट हम रहत हैं तब तो श्रीनाथजीकौ स्मरन होत है. तब विरह होत है. पाछें जब श्रीजीद्वार जात हैं. तब श्रीनवनीतप्रियजीकौ स्मरन होत हैं, जो बालक हैं, बेगि जायो चहिए. या प्रकार आरति सिद्ध होत है. तातें श्रीजी श्रीगोवर्द्धन पर्वत पर सदा बिराजे. श्रीनवनीतप्रियजी श्रीगोकुलमें सदा बिराजे. ताहीमें आछौ है.

भावप्रकाश :
यह कहि यह जताए, जो सेवामें संयोग - विप्रयोग दोउ भाव राखने, तातें रूचि बढें.

यह सुनिकै हृषिकेशने श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिकै बिनती करी, जो महाराज ! हम तुच्छ बुद्धि हैं. तातें महाराज ! हम आपके भावकों कहा जानें ? और आप करत हो सो तो हमारे हितके लिये अब आछी करत हो. या प्रकार सगरी राह श्रीगुसांईजीसों भगवद्वार्ता करत

श्रीजीद्वार आए. तब श्रीगुसांईजी तत्काल स्नान करिकै उत्थापनकी झारी भरिकै श्रीनाथजीके मन्दिरमें पधारे. श्रीनाथजीके दरसन करे. ता पाछें हृषिकेशकों दरसन कराए. सो हृषिकेश दरसन करिकै बोहोत प्रसन्न भए. ता समै हृषिकेशने एक - एक कीर्तन नट रागमें गायो. सो पद -

परम कृपाल श्रीवल्लभनन्द ।
भक्त मनोरथ पूरन कारन भुव पर आये आनन्द कन्द ।
गिरिधरलाल प्रगट दिखराए पुष्टिभक्ति रसदान किये ।।
'हृषिकेश' सिर सदा बिराजो यह जोरी सुख नैन दिये ।

यह कीर्तन सुनिकै श्रीगुसांईजी हृषिकेश उपर बोहोत ही प्रसन्न भए. पाछें सेन तांई पहोंचिकै अनोसर करायकै सेनकौ दूध श्रीगुसांईजी आपने श्रीहस्तमें ले आये. सो एक मलरामें थोरो सो प्रसादी दूध हृषिकेशकों दियो. सो हृषिकेशने श्रीगुसांईजीकी बैठकमें जांइकै लियो. सो लेत ही देहानुसन्धान भूलि गये. सो बैठक ही में बैठि रहे. वाही ठौर परि रहे. और हृदय भीतर स्वरूपानन्दकौ अनुभव होन लाग्यो. तब वैष्णव सब डरपन लागे, जो हृषिकेशकों कहा भयो ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो कछू चिन्ता मति करो. काल्हि आछौ होइ जाइगो. तब सब वैष्णव बिदा होइकै अपने डेरा गए. पाछें जब घरी दोई रात्रि पाछिली बाकी रही. तब हृषिकेशकी मुर्छा बीती, सावधान भए. ता समै श्रीगुसांईजी उठे. जब हृषिकेशसों पूछे, जो कहो, समाचार कहा है ? तब हृषिकेशने बिनती करी, जो महाराज ! आपकी कृपा है तहां सदा जागतमें सोवतमें सब ठौर कल्यान है. जागतमें आपकौ दरसन है सोवतमें स्वप्नमें आपकौ दरसन. और मैं कहा कहों ? मेरो सामर्थ्य कहिवेकौ नाहीं. यह सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए. श्रीमुखसों कहे, जो वैष्णवकों ऐसोइ चाहिए. या प्रकार तीन रात्रि श्रीजीद्वार श्रीगुसांईजी और हृषिकेश रहे. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल वह अबलख घोड़ापै चढिकै पधारे. तब हृषिकेश सङ्ग ही श्रीगोकुल आए. तहां श्रीनवनीतप्रियजीके उत्थापनके दरसन हृषिकेशने किये. पाछें श्रीगोकुल ही में रात्रिकों रहे. पाछें प्रातःकाल हृषिकेश श्रीगुसांईजीसों बिनती करिकै कह्यो, जो महाराज ! मोकों घर जांइवेकी आज्ञा होंइ. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो राजभोग आर्ति पाछें

तोकों बिदाय करेंगे. तब दण्डवत् करिकै हृषिकेश स्नान करिवेकों गये. पाछें राजभोग तांई दरसन किये. पाछें श्रीगुसांईजी अनोसर करायकै बैठकमें पधारे. पाछें आपु श्रीगुसांईजी सब बालकन सहित भोजन किये. ता पाछें हृषिकेशकों श्रीगुसांईजीने जूंठनिकी पातरि धरी. पाछें आप गादी पर बिराजे बीरा अरोगत भए. तब हृषिकेश महाप्रसाद ले कै पाछें आयकै श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् कीनी. पाछें बिदा मांगी. तब श्रीगुसांईजीने खवाससों प्रसादी उपरेना मंगाए. तब हृषिकेशने श्रीगुसांईजीसों बिनती करिकै प्रसादी उपरेनाकी नाहीं कराई. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो तू प्रसादी उपरेनाकी नाहीं काहेंकों करावत है ? तब हृषिकेश बिनती किये, जो महाराज ! मोसों कछू राजकी सेवा नाहीं बनि आई. और आपके घरकौ खरच अधिक करायो है. एक मनुष्य घोड़ाकी चाकरीकों चाहिए. दाना घास भण्डार तें खरच होइगो. सो कहा करों महाराज ! मेरो कछू बस नाहीं है. आप तो अन्तरजामी हो. सब जानत हो. ऐसें हृषिकेशके दैन्यताके बचन सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत ही प्रसन्न भए. पाछें खवाससों उपरेनाकी नाहीं किये. पाछें हृषिकेशकों पास बुलायकै अपने श्रीहस्तमें उगारु ले कै हृषिकेशकों दिये. सो ले कै हृषिकेश बोहोत प्रसन्न भए. पाछें हृषिकेश श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिकै अत्यन्त प्रीतिसों बिदा भए. तब हृषिकेशकी प्रीति देखि श्रीगुसांईजीकौ हृदो भरि आयो. जो ऐसो वैष्णव पास रहे तो अष्टप्रहर भगवद्भावमें मन रहे. या प्रकार हृषिकेश बिदा होंइकै चलै. सो दूसरे दिन आगरे आय पहोंचे. तब हृषिकेश सोदागरनके पास गये. कहे, जो तुम्हारे घोड़ा ल्यावो बेचि ल्याउं. तब सोदागरने कह्यो, जो तुम्हारे मनमें आवे सो ले जाउ. तब हृषिकेश राजा टोडरमलकी फौजमें ले जांइकै सगरे घोड़ा बेचि ल्याये. सो सबके रुपैया हजार चारिकी हुंडी करायकै सौदागरकों दिये. तब सौदागर बोहोत प्रसन्न भए. तब सोदागरने हृषिकेश तें कह्यो, जो तुम अपनी दलाली लेहु. और एक घोड़ा मेरी पासतें लेऊ. तब हृषिकेशने कह्यो, जो घोड़ा तो मैं ले चुक्यो हूं. अब मेरी दलाली होंइ सो देहु. तब सोदागरने कह्यो, जो मैं तो जानत नाहीं, जो तुम कहा लियो. और तुम लियो तो कहा भयो ? तुमने मेरो काम बोहोत कियो है. तातें एक घोड़ा और दोयसैं रुपया दलालीके लै जाऊ. तब हृषिकेश, दोयसैं रुपैया और एक घोड़ा ले कै चले. सो तहां तें चले सो जीनवाले सेठके घर गए. तब सेठने कही, जो जीन ल्याए. तब हृषिकेशने कही, जो जीन तो गई. जीनके दाम लगे होंइ सो भरि लेहु. तब सेठने कही, जो मेरी सुन्दर जीन तुम क्यों बेचि डारी ? तब हृषिकेशने कही, जो जीन तो बेचि नाहीं. तब सेठने कही, जो तुम सांच कहो, जीन तुम कहां करी ? तब हृषिकेशने कही, जो एक सोदागर हजार दोइ घोड़ा ल्यायो हतो. तामें एक अबलख रङ्गकौ घोड़ा बोहोत सुन्दर हतो. सो मैं तुम्हारी जीन सहित श्रीगोकुल ले जांइ श्रीगुसांईजीकी भेंट करी और वह सोदागरके घोड़ा बेचि दिये हैं. तामें

रुपैया दोइसैं और घोड़ा दोइ मेरी दलालीमें मिले हैं. तामें एक घोड़ा तो श्रीगुसांईजीकी भेंट कियो है. और एक घोड़ा और दोइसैं रुपैया तुम्हारे पास ल्यायो हूं. सो तुम लेऊ. और मैं कमायकै भरि देउंगो. यह सुनिकै सेठने विचार कियो, जो जीन तो परमार्थ कियो है. अपने घर नाहीं राख्यो. अब यासों मैं कहां लेऊं ? या प्रकार विचार करिकै सेठने एक घोड़ा हतो सो हृषिकेशसों ले लीनो. और दोइसैं रुपैया हृषिकेशकों फेरि दीने. और सेठने हृषिकेशसों कह्यो, जो तिहारे घर कछू खाइवेकों नाहीं है तासों ए रुपैया दोइसैं ले जावो. और जीन मेरी भेंट करी तामें यह घोड़ा लियो. परन्तु आज पाछें ऐसो काम मति करियो. मैं तो तुमकों छोरि देत हूं. परि और कोई छोरेगो नाहीं. तब हृषिकेश दोइसैं रुपैया ले कै अपने घर आए. और मनमें बोहोत प्रसन्न भए.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो जीवकों जा भांति बनि आवे ता भांति गुरुकी सेवा करनी.

पाछें हृषिकेशने अपने मनमें विचार कियो, जो यह सर्व कार्य श्रीगुसांईजीकी कृपा तें भयो है. मेरे घरमें तो एक पैसा हू नाहीं हतो. और यह मनोरथ सिद्ध भयो. और दोइसैं रुपैया और हाथ आए. सो ये रुपैया तो श्रीगुसांईजीके हैं. सो मैं अपने घरमें कैसें खर्च करों ? यह विचारकै वे दोइसैं रुपैया गांठि बांधिकै घर तें चले सो मथुरा आए. पाछें दूसरे दिन श्रीगोकुल आइ राजभोग आरतिके दरसन श्रीनवनीतप्रियजीके किये. सो हृषिकेश दरसन करिकै बोहोत प्रसन्न भए. ता समै हृषिकेशने सारङ्गमें यह कीर्तन कियो. सो पद -

राग : सारङ्ग
हरि कर माखन लीने नीके ।
ब्रजबनिता सब बिवस भई हैं सोभा निरखि हरखि अति जीके ।
किलकि हंसति प्रतिबिम्ब निरखिकै नैनन अञ्जन अतिसय भावै ।
'हृषिकेश' मन अटकि रूप पर उपमाकों पटतर नहीं आवे ।।

यह कीर्तन कियो. ऐसो अनुभव ता समै हृषिकेशकों श्रीनवनीतप्रियजीने जनायो. पाछें अनोसर करायकै श्रीगुसांईजी अपनी बैठकमें पधारे. तब हृषिकेशने दण्डवत् करिकै वे दोइसौं रुपैया श्रीगुसांईजीकी भेंट किये. तब श्रीगुसांईजी श्रीमुखसों कहे, जो हृषिकेश ! यह तू कहा करत है ? तेरे घरमें खरचकौ सञ्कोच है. इतनी भेंट क्यों कियो ? तब हृषिकेशने कह्यो, जो महाराज ! यह तो आपके रुपैया हैं. भेंट तो मैं कछू अपनी सत्ता तें कमायो होउ तो होंइ. तब श्रीगुसांईजीने हृषिकेशसों पूछी, जो ये रुपैया कैसें आये हैं ? तू बतावें तब भण्डारमें जांय. तब हृषिकेशने सब प्रकार भयो सो कह्यो, जो महाराज ! रुपैया मेरी दलालीके हैं. ये आप कृपा करी अङ्गीकार किये चाहिए. तब श्रीगुसांईजी खवाससों कहे, जो ये रुपैया भण्डारमें दे आउ. तब खवास रुपैया ले भण्डारमें दे आयो. भण्डारीकों सोंपि आयो. सो वसन्त पञ्चमीके दिन दोइ बाकी रहे हते. तब श्रीगुसांईजी चापां सङ्कर भण्डारीसों कहे वसन्तकी सामग्रीमें और डोल उत्सवकी सामग्रीमें हृषिकेशके दोइसैं रुपैया आए हैं सो खरच करियो. तब चापां सङ्करने उह दोइसैं रुपैयाकी सामग्री ल्याइ राखी.

और हृषिकेशके मनमें यह आई, जो अब बसन्त पञ्चमी आई है तासों डोल तांई श्रीगुसांईजीके पास रहों. तब एक दिन हृषिकेशने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! डोल उत्सव तांई मेरो मन आपके पास रहिवेकौ है. सो सेवा बिनु दिना बीते नाहीं. तासों आप कछू सेवा बतावो तो रहूं. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो चाहो तो फूलघरमें रहो. चाहो भण्डारमें कछु सेवा करो. तब हृषिकेश बिनती करी, जो महाराज ! मैं आपके सङ्ग श्रीजीद्वार जायो चाहुं. तातें अपने पासकी कछू सेवा बतावो. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो खवासी करो. तब हृषिकेश श्रीगुसांईजीकी खवासीमें रहें. सो बोहोत प्रीतिसों सेवा करते. सो श्रीगुसांईजी हृषिकेशके उपर बोहोत प्रसन्न रहते.

सो श्रीगुसांईजी बसन्तपञ्चमीके दिन इहां श्रीनवनीतप्रियजीकों खिलायकै पाछें श्रीजीद्वार पधारे. सो उत्थापनकी झारी भरे. तब हृषिकेश सङ्ग गये. सो श्रीनाथजीद्वार श्रीगुसांईजी होरीदांडा रोपनी तहां किये. पाछें पून्योके दिन उत्थापन समै श्रीगोकुल पधारे. सो आठ दिन तांई होरीके, फेर श्रीनवनीतप्रियजीकों खिलाए. तब हृषिकेश श्रीगोकुल रहे. पाछें आठें दिन फागुन वदि ८ कों श्रीगुसांईजी श्रीजीद्वार पधारे. तब उत्थापनकी झारी भरे. सो डोल तांई श्रीगुसांईजी श्रीजीद्वार रहे. सो एक दिन हृषिकेशने यह धमार गाई, कल्यान रागमें. सो धमारि

राग : कल्यान

ब्रजराज लडेंतो गाइये, बल मोहन जाकौ नाम हो ।
खेलत फाग सुहावनो, रङ्ग भींज रह्यो सब गाम हो ।।१।।
ताल पखावज बाजहिं हो, डफ सहनाई भरि हो ।
श्रवन सुनत सब ब्रजबधु हो, झूंडन आई घेरी हो ।।२।।
इतहिं गोप सब राज ही हो, उत सब गोकुल नारि हो ।
अति मीठी मन भामती हो, देति परस्पर गारि हो ।।३।।
चोवा चन्दन छिरक रही हो, डारत अबीर गुलाल हो ।
मुदित परस्पर खेल ही हो, हो हो हो बोलत ग्वाल हो ।।४।।
घेरि सखी मोहन गहि आने, प्यारी पकरे हाथ हो ।
गोपी भेख बनाइ कै, रुचि बेनी गूंथी माथ हो ।।५।।
बहुरि मतो करि सुन्दरी हो, हलधर पकरे जाय हो ।
नव कुङ्कम मुख मांडिकै हो, आए हैं आंखि अञ्जाय हो ।।६।।
पीताम्बर मूख मूंदिकै हो, निरखि हंसि नन्दलाल हो ।
दाऊजी आजु भले बने, कूके दे सब ग्वाल हो ।।७।।
सिमिट सकल ब्रजसुन्दरी हो, ब्रजपति पकरे आन हो ।
भरत सकल ब्रजसुन्दरी हो, नेक न राखत कान हो ।।८।।
तब नन्दरानी बीच कियो सो, मेवा दियो है मंगाय हो ।
पट भूखन पहिरायकै हो, 'हृषिकेश' बलि जाय हो ।।९।।

यह धमार हृषिकेशने गाई. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत ही प्रसन्न भए. सो श्रीगुसांईजीकी कृपा तें हृषिकेशकों यह अनुभव भयो. पाछें डोल उत्सव तांई श्रीजीद्वार रहे. पाछें श्रीगुसांईजी गोकुल पधारे. तब हृषिकेश हू श्रीगोकुल आए. पाछें श्रीगुसांईजीसों आज्ञा मांगी, जो मैं अपने घर जाउं. तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न होंइकै एक गुलाबकौ फूल श्रीनाथजीकौ प्रसादी हृषिकेशकों दियो. तब हृषिकेश फूल ले दण्डवत् करि श्रीगोकुल तें चले. सो दूसरे दिन आगरें में अपने घर आये. सो गुलाबकौ फूल हृषिकेशने अपने जपके साजमें राख्यो. नित्य दरसन करिकै उह फूलकों दण्डवत् करे. ऐसें करत बोहोत दिन बीते.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

और एक दिन हृषिकेश राजभोग तें पहोंचिकै महाप्रसाद ले कै उठे. ताही समै दोइ वैष्णव श्रीगुसांईजीके सेवक आगरेमें आए. सो हृषिकेशसों भगवद्वार्ता स्मरन किए. तब हृषिकेश बोहोत प्रसन्नतासों कहे, जो महाप्रसाद लेऊ. तब वैष्णवनने नाहीं करी. तब हृषिकेशने कही, जो सीधो लेऊ, कोरे बासन लेऊ, रसोई करो. और कृपा करि हमारे यहां लेऊ तो सोऊ सिद्ध है. तब वैष्णव नाहीं करिकै उठि गए. तब हृषिकेशके मनमें महादुःख भयो. जो मैं बड़ो अभागो हूं. जो वैष्णव मेरो नाहीं अङ्गीकार करत हैं. या प्रकार सगरी रात्रि खेद करत रहे. और वे वैष्णव आगरेमें श्रीयमुनाजीके किनारे एक चोंतरा पर सोइ रहे. उष्णकालकौ दिन हतो. सो खरचीकौ खड़िया कुत्ता ले गयो. सो प्रातःकाल उठिकै उह वैष्णव देखे तो खरचीकौ खड़िया नाहीं है. तब वे वैष्णव चिन्ता करन लागे, जो अब कहा करें. पाछें मनमें बिचारे, जो हम काल्हि हृषिकेशके घर गए. सो, वह वैष्णव (कों) बोहोत दुःख भयो होइगो. ता करि हमारी खरची गई. हम दुःखी भए. तातें आजु हृषिकेशके घर अवस्य चलनो. उह कहे तैसें करनो. हृषिकेश श्रीगुसांईजीके सेवक हैं, कृपापात्र हैं. यह विचार करिकै दोउ वैष्णव देहकृत्य करि पाछें श्रीयमुनाजीमें स्नान करिकै पाछें जप पाठ करिकै हृषिकेशके घर आए. तब हृषिकेश देखिकै बोहोत प्रसन्न भए. सन्मान करिकै बैठाए. पाछें उन वैष्णवसों पूछे, जो तुम काल्हि मेरे घर तें भूखे गए सो मेरो कहा अपराध है '? अब आजु कछू कृपा करिकै अङ्गीकार करिए. तो मेरो मन प्रसन्न होंइ. तब वैष्णवने हृषिकेशसों कहे, जो हम काल्हि तुम्हारो कह्यो नहीं मान्यो तासों हमारो खरचकौ खडिया रात्रिकों जात रह्यो. तातें अब आज तें जैसें तुम कहोगे तैसें हम करेंगे. तब हृषिकेशने पूछी, श्रीठाकुरजी पाछें यहां

प्रसाद लेहुगे कै न्यारी रसोई करोगे ? तब वैष्णवने कही, जो हमारे मनमें तो न्यारी रसोई करिवेकी है. परन्तु अब आज तुम प्रसन्न होइकै कहोगे तैसेंई हम करेंगे. तब हृषिकेश सीधो सामान सब ल्याये. कोरे बासनमें जल भरि ल्याए. तब वैष्णव न्हायकै रसोई किये. पाछें श्रीठाकुरजीकों भोग धरिकै पाछें महाप्रसाद लियो. पाछें रात्रिकों वे वैष्णव हृषिकेशके घरमें रहे. भगवद्वार्ता कीर्तन भयो. पाछें प्रातःकाल वे वैष्णव चलन लागे. तब हृषिकेशने कही, जो आज तौ और हू रसोई करिकै जाउ. तब वैष्णव सीधो ले रसोई करी. पाछें श्रीठाकुरजीकों भोग धरिकै पाछें महाप्रसाद लियो. तब हृषिकेश अपने घरमें तें कछू बासन गहने धरिकै रुपैया दस १०/- वैष्णवकों दिये. और बिनती किये, जो तुम बड़ी कृपा किये. फेरि बेगि आवोगे. तुम्हारी खरची गई सों हमकों बोहोत दुःख भयो. तब वैष्णवन कही, जो धन्य तुम हो जो ऐसि भांति अपनो धर्म तुम राखत हो. या प्रकार बिदा होंईकै वैष्णव हृषिकेशकी बड़ाई करत गए.

भावप्रकाश :
या वार्तामें यह जनाए, जो घर आए वैष्णवकों जा भांति बनि आवें ता भांति समाधान करनों. उनकों प्रसन्न करने.

सो वे हृषिकेश श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. सो उनकी वार्ताकौ पार नाहीं है, सो कहां तांई कहिए वार्ता ।।१३७।।

१३८-एक पटेल, जाने दरांति बेचिकै टका भेंट धर्यो

अब श्रीगुसांईजीके सेवक एक पटेल, जानें दरांति बेचिकै टका भेंट धर्यो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'ब्रह्म - विद्या' है. ये 'सुमन्दिरा' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

ये गुजरातमें एक पटेलके जन्म्यो. सो बरस बीसकौ भयो तब वाके माता - पिता मरे पाछें वह पटेल घास - लकरी ल्याई अपनो निर्वाह करन लाग्यो. ऐसें करत कछूक दिनमें श्रीगुसांईजी द्वरिकाजी पधारे. श्रीरनछोड़जीके दर्शनार्थ. सो मारगमें वाकौ गाम आयो. सो तहां डेरा किए. तब वा पटेलकों श्रीगुसांईजीके दरसन भए. तब वह पटेल मनमें कह्यो, जो हों इनकौ सेवक होंउ तो आछौ. पाछें वह पटेल श्रीगुसांईजीसों बिनती कियो, जो महाराज ! मोकों कृपा करि अपनो सेवक कीजिए. तब श्रीगुसांईजी कृपा करि वाकों नाम निवेदन कराय सेवक किये. पाछें श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी पधारे. सो श्रीरनछोड़जीके दरसन करि, ता पाछें आप श्रीगोकुल पधारे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

पाछें एक गुजरातकौ सङ्ग श्रीगोकुल चल्यो. तब वाने विचार्यो, जो मैं हूं श्रीगोकुल जाउं. सो वा पटेल अपनो घास लकरी बेचिकै निर्वाह करतो. सो वा दिन मार्गमें घास खोदत हतो. सो उन पटेलने पूछी, जो यह सङ्ग कहां जात है ? तब उन वैष्णवन कही, जो हम श्रीगोकुल जात हैं. तब उन पटेलने मनमें विचारी, जो चलो, श्रीगुसांईजीके दरसन आपुन करे तो भलो है. सो वह तो अपनो दरांत और बधना लेकै उन सङ्गमें चल्यो. और दूसरो तो कछू हतो नाहीं. एक दरांती हती सो लेकै चल्यो. सो नित्य मार्गमें तें घास लकरी लेकै वा सङ्गके लोगनकों देतो. और अपनो महाप्रसाद लेतो. और कोई वैष्णव ऐसें ही महाप्रसाद देतो तो न लेतो. काहेतें ? जो मैं तो या देहतें कछूक टहल सेवा करों तो महाप्रसाद लेउंगो. ऐसें कहतो. सो घास लकरी ल्याई देतो. अपनो निर्वाह करतो. सो ऐसें करत श्रीगोकुल आय पहोंचे. श्रीगुसांईजीके दरसन किये. पाछें सब वैष्णव भेंट करन लागे. तब इन पटेलने मनमें विचारी, जो अपने भेंट कहा करेंगे ? तब एक दरांती हती. सो बाजारमें बेची. सो दोई पैसा आए. सो ले कै श्रीगुसांईजीकों भेट किये. तब श्रीगुसांईजी आप तो अन्तरजामी हैं. सो जानि गए. सो आपने कही, जो पटेल ! आगें आउ, बैठो. तब और वैष्णवनने कही, जो महाराज ! औरन तें नहीं बोले और याकों आपने बुलायो ताकौ कारन कहा ? तब श्रीगुसांईजीने कही, जो याने सर्वस्व भेंट कियो है. तब भण्डारीकों बुलायकै कही, जो इन दोई पैसानकौ लोंन लेकै, पीसिकै भण्डारमें लोनमें लोन मिलाय देउ. तब वैष्णवनने कही, जो महाराज ! याने सर्वस्व कहा भेंट कियो है ? तब श्रीगुसांईजीने कही, जो याकौ सर्वस्व दरांती हती. जातें याकौ निर्वाह होतो. सो याने बेचिकै वह टका आयो सो भेंट करि दियो है. सो इतनो नाहीं विचार्यो, जो मैं दरांती बेचूंगो तो सवेरे मेरो निर्वाह कैसें होइगो ? तातें जो राज बलि न देखें होंइ तो

मानिकचन्दकों देखो. और जो मानिकचन्दकों हू न देखें होंइ सो इनकों देखो. और तो सर्व जन अपने घर तें ब्रजके निमित्त द्रव्य बांधिकै आए. ताही में यात्रा करोगे. ताहीमें भेंट बिदा और खरच भारो हू करोगे. पाछें घर पहोंचोगे. तहां तांई खर्च करोगे. परि याकौ को सर्वस्व यही है. पाछें श्रीगुसांईजीने उन पटेलकों जूंठनि पातरि धरी. पाछें वाकों उहांई राख्यो. सो सगरो दिन सेवा करे और महाप्रसाद मिले सोई ले. और कोई वैष्णव ऐसेंई महाप्रसाद लेवेकों बुलावतो, तो कहतो, जो मोकों कछू टहल बताओगे तो प्रसाद लेउंगो. सो और कछू न बने तो उनके घर उपरा बीनि डारतो तब प्रसाद लेतो.

सो केतेक दिन पाछें उह सङ्ग श्रीगुसांईजीसों बिदा होंइ गुजरातकों चल्यो. तब वह पटेल हू श्रीगुसांईजीसों बिदा होंइ कै वा सङ्गमें चल्यो. सो वैष्णव तो श्रीगुसांईजीकौ कृपापात्र जानिकै आदरसों महाप्रसादकी कहते. परन्तु ये तो उपरा लकरी ले आवतो. सो जो राखें तिनके महाप्रसाद लेतो. ऐसें करत घर - देस जांइ पहोंच्यो. सो वह पटेल सदैव अपनी महिनत मजूरी करिकै महाप्रसाद लेतो. सो उनपै श्रीगुसांईजी सदा प्रसन्न रहते. श्रीमुख तें उनकी सराहना करते.

भावप्रकाश :
या वार्तामें निवेदनकौ स्वरूप जताए, जो कोऊ वैराग्यवान् होंइ, प्रभुनकों अपनो सर्वस्व निवेदन करत हैं, ता पर प्रभु बेगि प्रसन्न होंत हैं. और यह हू जताए, जो वैष्णवकों महिनत करिकै द्रव्य कमावनो. काहेतें ? जो महिनतकौ द्रव्य प्रभु तत्काल अङ्गीकार करत हैं. और काहूके यहां प्रसाद ले तो वाके घरकी कछू टहल करिकै ले. नांतरु दासपनो रहे नाहीं, यहू कहे.

सो वह पटेल श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं. सो कहां तांई कहिए ? वार्ता ।।१३८।।

१३९-स्त्री - पुरुष राजनगरके

अब श्रीगुसांईजीके सेवक स्त्री - पुरुष राजनगरके, जिनि अपने माथे गौहत्या लीनी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें पुरुषकौ नाम तो 'दीनवत्सला' है और स्त्रीकौ नाम 'प्रेमवत्सला' है. ये दोउ 'कन्दर्पा' की सखी हैं. उनतें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

ये दोउ राजनगरमें रहते. सो एक समै श्रीगुसांईजी राजनगर पधारे. सो तिरपोलिया आगें श्रीगुसांईजीकौ रथ आयो. तब वह पुरुष उहां ठाढ़ौ हतो, कछू कार्यार्थ. सो वाकों श्रीगुसांईजीके दरसन भए. सो महा अलौकिक तेजःपुंजसे दीसे. सो तत्काल वह मूर्छित व्है रथ आगें गिर्यो. तब श्रीगुसांईजी आप परम दयालसों रथकों ठाढौ किये. पाछें नीचे उतरि आप वाके माथें श्रीहस्त फेरे. ता पाछें अञ्जुलिमें जल लेई वेदमन्त्र पढ़ि जल छिरके. तब वह पुरुष सावधान भयो. तब श्रीगुसांईजी मन्द - मन्द मुसिकाईकै पूछे, जो कहो ! कहा समाचार है ? तब वह बिनती कियो, जो महाराज ! मैं तो राजके चरनारविन्दके निकट परम सुखमें हतो. आप यह कहा किये ? तब श्रीगुसांईजी मुसिकाईकै कहें, जो अब ही तुम भगवद्सेवा करो. तब वह पुरुष कह्यो, जो महाराज ! मैं तो राजके चरनारविन्दके निकट परम सुखमें हतो. आप यह कहा किये ? तब श्रीगुसांईजी मुसिकाईकै कहें, जो अब ही तुम भगवद्सेवा करो. तब वह पुरुष कह्यो, जा महाराज ! अब तो कृपा करि घर पधारि हमकों सरनि लीजिए. तब श्रीगुसांईजी कृपा करि वाके घर पधारे. सो उहां दोई दिन बिराजे. सो स्त्री - पुरुष दोउनकों नाम - निवेदन कराए. पाछें भगवद् सेवा पधराइ सेवाकी सब रीति सिखाए. ता पाछें तीसरे दिन स्त्री - पुरुषसों बिदा व्है आपु असारुवा भाईला कोठारीके उहां पधारे. सो जहां लों श्रीगुसांईजी असारुवा बिराजें तहांलों वे दोउ स्त्री - पुरुष श्रीगुसांईजीके दरसनकों उहां नित्य आवे. सेवा - टहल जो कछू बनि आवे सो करे. पाछें घर आई श्रीठाकुरजीकी सेवा करते.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वे दोउ स्त्री - पुरुष भली भांतिसों श्रीठाकुरजीकी सेवा करते. सो प्रात ही उठिकै स्नान करिकै स्त्री जन सामग्री सिद्ध करें. और पुरुष श्रीठाकुरजीकौ सेवा सिंगार करे. पाछें राजभोग समर्पिकै कीर्तन करे. सम होंइ तब भोग सराय आर्ति करिकै अनोसर करिकै एक पातरि गांइकों देते. और एक वैष्णवकों नित्य महाप्रसाद लिवावते. ता पाछें आप लेते. इतनो तो वाके नेम हतो. ता पाछें जो कोई

अचानक वैष्णव आवे तब पातरि उनकों धरते. आप सेनमें श्रीठाकुरजी अरोगे सो लेते. ऐसें सेवा करते. सो एक समय काल पर्यो. सो अन्न धान महंगो. और घास चारो मिले नाहीं. सो गांइकों एक पातरि मिले तासों कहा होंई ? पेट तो घासतें भरे. सो तो मिले नाहीं. एक पातरि प्रसादकी मिले. सो तो पेट न भरे. सो गांइ दूबली भई. सो बोहोत दुबली भई. तब एक दिन वैष्णव अनाज थोरोसो मोल लायो. सो घरमें ढेरी करी. अपनी स्त्रीसों कही, जो झटकि फटकिकै भरि दे. सो स्त्री तो कछू बस्तू लेवे भीतर गई. और वह गांइ बाहिर तें आई. सो अनाज खांइवे लगी. सो वह गांइ बोहोत भूखी हती. सो वा गांईकौ मोहोंडो उठावे परि उठे नाहीं. खांए जांइ. और मारी जांइ नाहीं. सो धक्का मारे. सो धक्कानतें गांइ सरके नाहींह. सो कोइ ऐसो धक्का लग्यो, और गांइ दूबली हती सो धक्कान तें गांइ गिरि परी. सो गांइकौ अन्त होंइ गयो. तब वह वैष्णव अपने मनमें बोहोत धिक्कार करन लाग्यो. पाछें दोउ स्त्रीपुरुष मिलिकै वा गांइकौ बाहिर निकासे. ता पाछें विचार करन लागे, जो अपनेकों तो गऊहत्या लगी. सो हाथ तें गऊहत्या भई. तातें यह हत्या गङ्गा स्नान तें हू न छूटेगी. ऐ तो बड़ो अपराध भयो. तातें याकौ निर्णय नाहीं. सो अब तो अन्न - जल त्यागिकै देह छोरनी. जहां तांई देह चले तहां तांई सेवा करेंगे. ऐसो विचार करिकै बोहोत पश्चाताप करन लागे.

सो ऐसें करत दोइ दिना भए. तीसरे दिना प्रातही श्रीगोकुलनाथजी श्रीरनछोरजीके दरसन करिकै पाछें राजनगर पधारे. सा भाईला कोठारीके घर बिराजे. सो समस्य राजनगरके वैष्णव दरसनकों आए. सो श्रीगोकुलनाथजीके दरसन करि दण्डवत् करि बैठे. परन्तु वे दोउ स्त्री - पुरुष नहीं आए. वे ऐसें कहते, जो हमने गऊहत्या कीनी है. सो मैं गऊहत्यारो हूं. सो मोहोंडो कैसे दिखाउं ? ऐसें रोवे, बिलबिलावे. तब और वैष्णवने ये समाचार श्रीगोकुलनाथजीसों कहे. और बिनती करी, जो महाराज ! श्रीकाकाजी महाराजके कृपापात्र हैं. भले वैष्णव हैं. सो अब तो उन मनमें ऐसो सङ्कल्प कीनो है, जो अन्नजल त्यागिकै देहकौ त्याग करनो. ऐसें विचारिकै आज वा वैष्णवकों तीन दिना भए हैं. जल हू नाहीं लियो है. तब श्रीगोकुलनाथजी आज्ञा किये, जो उनकों बुलावो. तब वैष्णवने जांइकै उन दोउ स्त्री पुरुषसों कही, जो तुमकों श्रीगोकुलनाथजी बुलावत हैं. तब वे वैष्णव आए. दूरि ठाढे भए. तब श्रीगोकुलनाथजी आज्ञा किये, जो आगें आउ. पाछें श्रीगोकुलनाथजी पूछें, जो कैसें भई ? तब इन वैष्णवन कही, जो कृपानाथ ! दोष तो मेरो है. सो ए दोष कैसें मिटे ? तब आपने आज्ञा करी, जो यामें तो तुमकों कछू दोष नाहीं. तैनें मारी नाहीं, दूबली हती सो धक्का तें गिरि परी. सो वाकौ अन्तकाल भयो. यामें तुम्हारे

कछू दोष नाहीं. तब वा वैष्णवने कही, जो महाराज ! मेरे हाथतें मरी है. तब श्रीगोकुलनाथजीने आज्ञा करी, जो एक निष्किञ्चन अकासवृत्तिवारौ वैष्णव होंइ तिनकों बुलाईकै श्रीठाकुरजी पाछें महाप्रसाद लिवाय दीजो. तब इन वैष्णवने कही, जो महाराज ! मो हत्यारेके घर कौन वैष्णव आवेगो ? तब आपने आज्ञा करी, जो हमारो नाम लेनो. पाछें वह वैष्णव अपने घर जांईकै सुन्दर भांतिकी सामग्री करिकै श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पिकै पाछें एक निष्किञ्चन वैष्णव देखिकै उन तें हाथ जोरिकै कही, जो श्रीगोकुलनाथजीकी आज्ञा तें मेरे घर चलो. तब उन वैष्णवने कही, जो भले, आपकी आज्ञा चहिए. जो चाहे सो करे तातें चलो. सो उन वैष्णवकों घर ल्याये. पाछें जो - जो सामग्री श्रीठाकुरजी अरोगे सो - सो सामग्री वा वैष्णव के आगें धरी. तब वा वैष्णव निष्किञ्चननें थोरो - थोरो महाप्रसाद सब सामग्रीनमें तें ले कै एक कौर ले के उठ्यो. तब इन वैष्णवने कही, जो महाराज कृपा करिकै आछी भांतिसों लेऊ. तब उन निष्किञ्चनने कही, जो तोकों एक हत्या है, सो तो गई. याहीके लिए महाराजने आज्ञा करी हती. और लिवावनो होंई तो और दिना लिवाइयो. आज तो इतनोइ लेइंगे. ऐसें कहि उठि गयो. पाछें वह वैष्णव श्रीगोकुलनाथजीकी पास आयो. दण्डवत् करी. तब आपने पूछी, जो महाप्रसाद वैष्णवकों लिवायो ? तब वैष्णवने कही, जो महाराज ! आपकी आज्ञातें वह वैष्णवने आयकै एक कौर लीनो. मैंने बोहोत निहोरा करे परि उन वैष्णवने और न लीनो. तब श्रीगोकुलनाथजी आज्ञा कीने, जो अब तेरो दोष मिटि गयो. तब इन वैष्णवनें बिनती करी, जो कृपापाथ ! और वैष्णव कैसें मानेंगे ? तब आपने आज्ञा करी, जो न माने तो न्हाय आउ. पाछें वह वैष्णव न्हाय आयो. तब आज्ञा किये, जो जो, जलधरामें तें चांदीकी लोटी ले कै जलपान भरि ल्याउ. तब वह वैष्णव लोटी ले कै भरि ल्यायो. तब आप जल अरोगे. और बोहोत वैष्णव बैठे हते. आपने उनतें कही, जो अब तो मानोगे ? तब समस्त वैष्णवने कही, जो कृपानाथ ! आपकी आज्ञा ही तें दोष तो मिटि गयो. ता उपरांत वैष्णवने महाप्रसाद लियो. और आप साक्षात् इनके हाथकौ जल अरोगे. तब फेरि कहा सन्देह रह्यो ? अब हम सब वैष्णव इनतें ब्यौहार करेंगे. तब श्रीगोकुलनाथजी कृपा करिकै इन वैष्णवतें आज्ञा किये, जो अब घर जांइकै महाप्रसाद लेहु. तब यह वैष्णव गद्गद् कण्ठ व्है साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै घर जांइकै दोउ स्त्री - पुरुषने महाप्रसाद लियो. पाछें भलीभांतिसों सेवा करन लागे. पाछें गांई घरमें न राखी. जहां गांइ होंइ तहां पातरि दे आवते. पाछें श्रीगुसांईजीकी कृपा तें श्रीठाकुरजी सानुभावता जतावन लागे. जे चहिए सो मांगि लेते. तातें वे दोउ भले वैष्णव भए.

भावप्रकाश :
या वार्तामें यह जताए, जे वैष्णवकों सेवामें सावधान रहनो. काहेतें, जो सेवा करत अनेक अपराध होत हैं, तातें वासो बचनो. और दीनताकौ हू स्वरूप बताए. जो दैन्यता तें प्रभु प्रसन्न होत हैं. तातें सब दोषकी निवृत्ति होत हैं.

सो वे स्त्री - पुरुष श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१३९।।

१४०-हरिदास, जानें बेटकों मार्यो

अब श्रीगुसांईजीके सेवक हरिदास, जिनने मोहनदासकों राखिवेकों अपने बेटाकों मार्यो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
सो हरिदास तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'श्रवनप्रिया' है. सो श्रवनप्रियाकी श्रीठाकुरजीके गुनानुवाद सुनिवेमें अत्यन्त प्रीति है. और श्रवनप्रियाकी दो अन्तरङ्ग सखी है. 'प्रीतिरूपा' और 'भावरूपा'. सो 'प्रीतिरूपा' तो इहां हरिदासकी स्त्री भई. और 'भावरूपा' हरिदासकौ बेटा भयो. सो श्रवनप्रिया 'कन्दर्पा' की सखी हैं. उनतें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं.

'ये गुजरातमें एक गाम है तहां एक बनियाके जन्मे. सो बरस पन्द्रहके भए. तब माता - पिताने इनकौ ब्याह कियो. स्त्री सुपात्र मिली. पाछें केतेक दिनमें उनके एक बेटा भयो. ता पाछें हरिदासके मातापिता मरे.

सो हरिदासकौ एक मित्र हतो. उनकौ नाम मोहनदास हुतो. सो हरिदासके गामतें कोस बीस पर रहतो. सो हरिदास वा मोहनदाससों मिलिकै व्यौहार करन लागे. सो एक समै श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी पधारे. सो मारगमें मोहनदासकौ गाम आयो. तहां आप डेरा किये. सो मोहनदास श्रीगुसांईजीकौ दरसन पायो.

सो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम देखें. तब मोहनदास अपने मनमें कहे, जो देखो ! जिनकों कन्हैया कहत हैं सो आज मेरे सन्मुख ठाढ़े व्है दरसन देत हैं. ताते अब तो इनके सरनि जांइ कृतार्थ होंइ तो आछौ. पाछें मोहनदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! कृपा करि मोकों सरनि लीजिए. आज मेरे बड़े भाग्य उदय भए, जो मोकों साक्षात् कन्हैयाके दरसन भए. तातें महाराज ! अब बेगि कृपा कीजिए. तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न व्है वाकौं नाम निवेदन कराए. पाछें मोहनदास अपने घर आय स्त्रीसों कहे, जो बेगि चलि, साक्षात् कन्हैयाके दरसन होत है. सो स्त्री हू दैवी हती. तातें मोहनदासके सङ्ग आई. सो श्रीगुसांईजीके दरसन किये. पाछें मोहनदास श्रीगुसांईजीसों बिनती किये, जो महाराज ! इनको नाम - निवेदन करवाइए. तब श्रीगुसांईजी कृपा करि स्त्रीकों हू नाम - निवेदन कराइ सरनि लिये. तब फेरि मोहनदास बिनती किये, जो महाराज ! अब हमकों कहां कर्तव्य है, सो कृपा कहिए. तब श्रीगुसांईजी दोउनकों आज्ञा किये, जो तुम दोउ भगवत्सेवा करो. तब मोहनदास कहे, जो महाराज ! श्रीठाकुरजी पधराइ दीजिए. तब श्रीगुसांईजी उनके माथे लालजीकौ स्वरूप पधराई दिए. पाछें सेवाकी सब रीति कृपा करि बताए. मानसीकौ हू प्रकार सब कह्यो. पाछें आप तो श्रीद्वारिकाजी पधारे ता पाछें मोहनदास ब्रजभक्तनकी भावनापूर्वक भगवद्सेवा करन लागे. सो सब लीला हृदयमें स्फूर्त भई. श्रीठाकुरजी सानुभावना जनावन लागे.

पाछें एक दिन मोहनदास हरिदाससों मिले. तब हरिदासकों मोहनदासने कह्यो, जो तुम श्रीगुसांईजीके सेवक होउ तो आछौ. मैं हू श्रीगुसांईजीकौ सेवक भयो हूं. श्रीगुसांईजी साक्षात् कन्हैया है. तब हरिदास कहे, जो मोकों तुम सेवक करावो. मैं श्रीगुसांईजीकौ सेवक होउंगो. तब मोहनदासने कही, जो श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी पधारे हैं सो कछूक दिनमें पाछें इहां पधारेंगे. तब मैं तुमसों कहूंगो. ता पाछें केतेक दिनमें श्रीगुसांईजी द्वारिकाजीसों फिरे. सो मोहनदासके गाममें डेरा किये. तब मोहनदासने हरिदासकों खबरि पठाई. जो श्रीगुसांईजी इहां पधारे हैं. तातें तुम इहां बेगि अइयो. और मोहनदासने श्रीगुसांईजीकों अपने घर पधराए. सो दिन चारि लों राखे. पाछें हरिदास आए. तब मोहनदास श्रीगुसांईजीसों बिनती किये, जो महाराज ! ये हरिदास दैवी जीव हैं. सो आपके सरनि आयो है. तब श्रीगुसांईजी कृपा करिकै हरिदासकों नाम निवेदन कराए. पाछें हरिदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! कृपा करिकै मेरे गाम - घर पधारिए. स्त्री - पुत्र सबकों सरनि लीजिए. तब श्रीगुसांईजी मोहनदासकों सङ्ग ले हरिदासके गाम पधारे. सो हरिदासके घर बिराजे. पाछें हरिदासकी स्त्री और हरिदासके पुत्रकों नाम निवेदन कराइ सरनि लिये. पाछें श्रीगुसांईजीसों हरिदास बिनती किये, जो महाराज ! अब भगवद्सेवा पधराइ दीजिए, तो कछू आपकी कानितें टहल करें. तब श्रीगुसांईजी हरिदासकों एक लालजीकौ स्वरूप पधराय दिए. पाछें आज्ञा किये, जो मोहनदाससों सेवाकी सब रीति पूछि लीजो. और मोहनदासकौ सङ्ग करियो. तातें तोकों भगवद्भाव स्फुरायमान होइगो. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप उहां तें श्रीगोकुल पधारे.

और हरिदासके घर मोहनदास दस - पांच दिन रहे. सेवाकी सब रीति बताए. ता पाछें मोहनदास हरिदाससों बिदा व्है अपने घर आए. पाछें महिनामें दस पांच दिन हरिदास मोहनदासके पास जांई. भगवद्वार्ता सुने. सो मोहनदासके सङ्गसो हरिदास मारगकौ सब सिद्धान्त जानन लागे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो एक समै हरिदासके घर मोहनदास आए. सो हरिदास देखिकै बोहोत प्रसन्न भए. तब दोउ मिलिकै भगवद्सेवा करते और भगवद्वार्ता करते. भगवद्रसमें छके रहते. ऐसें करते केतेक दिन बीते. तब मोहनदासने कही, जो अब बोहोत दिन भए सो अब हम चलेंगे. तब हरिदासने चलत - चलत मोहनदाससों और हू पांच सात दिन अपने घर आग्रह करिकै राखे. तब फेरि मोहनदासने कही, जो अब तो अवस्य सवेरे जाइंगे. तब हरिदासने अपनी स्त्रीसों कही, जो अब तो ये सवेरे जाइंगे. तो राखिवेकों कहा उपाय करनो ? तब स्त्रीने कही, जो तुम कहो सो करे. तब हरिदासके बरस सातकौ एक लरिका हतो. सो हरिदासने अपनी स्त्रीसों कही, जो अपने बेटाकों मारि. तब इन वैष्णवकों सोच होइगो तब ये रहेंगे. तब स्त्रीने ऐसें ही कर्यो. पाछें मोहनदास सवारे जांइवे लगे तब हरिदास और हरिदासकी स्त्रीने कही, जो बेटा तो मरि गयो. अब तुम कहां जाउगे ? तब मोहनदास देखे तो बेटा मर्यो है. तब मोहनदासने अपने मनमें विचार्यो, जो काल्हि रात्रिकों तो यह लरिका आछौ खांत खेलत हुतो. सो सवेरे ही ये कैसें मर्यो ? पाछें मोहनदासने जान्यो, जो मोकों रोकिवेके तांई इन अपने बेटाकों विष दे मार्यो है. सो मोहनदासको रोमाञ्च व्है आए. पाछें इन श्रीगुसांईजीकौ स्मरन करि चरनोदक मुखमें मेलि अष्टाक्षर कहिकै वा लरिकाकों जिवायो. ता पाछें लरिका कह्यो, जो मैं जात हों मोसों जै श्रीकृष्ण तो करि. तब लरिका उठिकै गलेसों लिपटिकै कह्यो, जो मेरे घरसों मति जाओ. पाछें स्त्री - पुरुष दोउ रोवन लागे. तब मोहनदास कह्यो, जो लरिका मर्यो तब तो तुम दुःख कियो नाहीं. और अब क्यों रोवन लागे ? तब हरिदास और हरिदासकी स्त्रीने कह्यो, जो आज हमारे घर तें तुम्हारे सारिखे भगवदीय जात हैं. अब हमकों भगवद्रसकौ पान कौन करावेगो ? तातें हमकों अत्यन्त कष्ट होत है, सो रुदन आवत है. एते दिन तो हमकों भगवद्रसकौ पान कराय जिवाये. अब हम कैसें जियेंगे ? यह सुनि मोहनदासने हरिदास और हरिदासकी स्त्रीसों कह्यो, जो हम सदा सर्वदा तुम्हारे पास रहेंगे. जो हम ठाकुरजीकों पधराय स्त्रीकों सङ्ग ले तुम्हारे पास आय रहेंगे. तातें तुम कछू चिन्ता मति करो. पाछें मोहनदासने जैसें कह्यो तैसेंई कियो. सो श्रीठाकुरजीकों पधराय अपनी स्त्रीको साथ ले अपने गामतें हरिदासके घर आय रहे. पाछें जीये जहांलों और ठौर गए

नाहीं. सो मोहनदास हरिदासके सङ्ग भगवत्सेवा भगवद्वार्ता अहर्निश करते. सो इनकौ सदा सर्वदा ऐसोई सङ्ग रह्यो.

भावप्रकाश :
या वार्तामें यहा जताए, जो भगवदीयनकौ सङ्ग दुर्लभ है. सो भगवदीयके सङ्गके लिए हरिदासने बेटाकों मार्यो. सो लोकमें बेटा तें ज्यादा ममत्व और काहूमें होत नाहीं. तातें सत्सङ्गकौ स्वरूप तो हरिदास नेई जान्यो.

और मोहनदास लीलामें 'प्रानवल्लभा' हैं. सो श्रीचन्द्रावलीजीकी अन्तरङ्ग सखी हैं. सो 'श्रवनप्रिया'की हितकारिनी हैं. तातें श्रवनप्रियाकौ इन पर बोहोत भर भाव है. तातें यहां हू हरिदासकी इन पर प्रीति बोहोत भई.

सो वे हरिदास मोहनदास श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र सेवक हते. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१४०।।

१४१-देवजीभाई बनिया, पोरबन्दरके

अब श्रीगुसांईजीके सेवक देवजीभाई बनिया, पोरबन्दरके, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'गुनप्रिया' है. सो गुनप्रिया अहर्निश ठाकुरके गुन गावति है. इनकी गुनमें बड़ी प्रीति है. ये 'कन्दर्पा' तें प्रकटी है, तातें उनके भावरूप हैं.

ये पोरबन्दरमें एक द्रव्यमान् बनियाके जन्मे. सो बरस पांचके भए ता दिनतें इनकौ मन भगवद्वार्ता कथा सुनिमें लग्यो. सो जहां कहूं वार्ता कथा होंई

तहां ये जांई, ऐसो व्यसन भयो. ऐसें करत ये बरस बीस बाईसके भए. तब इनके माता - पिता मरे. पाछें ये द्वारिकाजी, श्रीरनछोरजीके दरसनकों चले. सो कछुक दिनमें ये द्वारिकाजी आए. सो श्रीरनछोरजीके दरसन किये. ता पाछें लोगनसों पूछ्यो, जो यहां कहूं कथा वार्ता होत है ? सो ता समै श्रीगुसांईजी आप द्वारिकाजीमें बिराजत हुते. सो नित्य श्रीसुबोधिनीजीकी कथा आप कहत हुते. सो देवजीसों काहू वैष्णवने कह्यो, जो श्रीगुसांईजी आप नित्य कथा कहत हैं. तब देवजी वा वैष्णवसों कहे, जो जहां श्रीगुसांईजी कथा कहत होंई तहां मोकों ले चलों. मोकों कथा सुने बिना चैन परत नाहीं. तब वह वैष्णव, श्रीगुसांईजी कथा कहत हुते तहां देवजीकों ले आयो. सो देवजी कथा सुने. सो सुनत ही वाके मनमें आई, जो ये कोई महापुरुष हैं. तातें इनकी सरनि जइए तो आछो. पाछें कथा होंई चुकी तब देवजी श्रीगुसांईजीसो बिनती किये, जो महाराज ! कृपा करि मोकों सरनि लीजिए. तब श्रीगुसांईजी देवजीकों नाम सुनाए. पाछें दूसरे दिन निवेदन कराए. तब देवजी कहे, जो महाराज ! अब कहां कर्तव्य है ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो देवजी तुम सेवा करो. तब देवजी कहे, जो महाराज ! मोतें सेवा निबहेगी नाहीं. और कछू आज्ञा करो सो हों करों. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये जो पुष्टिमार्गमें सेवा कथा दोई मुख्य हैं. सो तुमसों जीवन भरि जो निबहे सो करो. नागा न परनी चाहिए. तब देवजी कहे, जो महाराज ! मोकों वार्ता कथा सुनिवेकौ व्यसन है. तातें आप आज्ञा करो तो हों वार्ता कथा सुनों. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो देवजी ! तुम नित्य वैष्णवनकी मण्डलीमें जांईके नित्य नियमपूर्वक भगवद्वार्ता सुनो. तामें कसर न परे. तो तुमकों यह मारग स्फुरेगो. पाछें देवजी उहां कछुक दिन रहि श्रीगुसांईजीके श्रीमुखकी कथा सुने. ता पाछें श्रीगुसांईजीसों बिदा व्है पोरबन्दर अपने घर आए.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वे देवजीभाई नित्य भगवद् मण्डलीमें वार्ता सुनिवेकों जाते. सो नित्य नेमसों वर्षामें ठंडमें सदैव जाते. सो एक दिना ज्वर आयो. तोऊ भगवद्वार्ता मण्डलीमें गए. पाछें ऐसो ज्वर आयो सो पांच सात लङ्घन भए. तोऊ गए. पाछें बोहोत असक्त भए. सो वा दिन जानो न बन्यो. तब सब वैष्णवनने सुधि करी, जो आज देवजी भाई आय न सके. तब वैष्णव मण्डलीमें एक मुखिया हतो. सो उनने कही, जो आज सब वैष्णव मिलिकै देवजी भाईके घर चलो. पाछें भगवद्वार्ता होंई चुकी. तब सब वैष्णव मिलिकै देवजी भाईके घर आए. सो उनमें तें एक वैष्णवने आगें जांईकै खबरि करी. जो आज सब मण्डली तुम्हारे घर आवे हैं. सो देवजी भाईकों ता समै ज्वर चढ्यो हतो. सो इतनेमें वा वैष्णवने कही. सो सुनिकै हरखसों उठिकै वैष्णवनेके साम्हे आए. सो दण्डवत् जैश्रीकृष्ण करिकै आदरसों अपने घर

पधराए. अपनी पास आसन दे कै सन्मानसों बैठाए. पाछें हाथ जोरिकै बिनती कीनी, जो आज मेरे अहोभाग्य है. जो मेरे घर वैष्णव कृपा करिकै पधारे. तब उन वैष्णवनने कही, जो देवजीभाई ! तुम आज आय न सके तातें तुमकों देखिवेकों आए हैं. तब देवजी भाई बोले, जो आज कौनसौ प्रसङ्ग बांच्यो ? कौनसी वार्ता भई ? सो कृपा करिकै सुनावो. तब उन वैष्णवनने सब सुनायो. तब देवजीभाईने हाथ जोरिकै बिनती करि सब वैष्णवनसों कह्यो जो तुम कृपा करिकै देउ तो एक वस्तूकी मोकों अपेक्षा है. तब उन वैष्णवनने कही, जो या समय श्रीगुसांईजीकी कृपासों जो मांगो सो सब सिद्ध है. तब देवजीभाईने यह मांग्यो, जो मेरो नित्य नेम भगवद् मण्डलीमें वार्ता सुनिवेकौ न छूटे. और देहकौ दण्ड है सो भुक्तेंगे. सो कृपा करिकै यही मोकों देउ. जो भगवद्मण्डली न छूटे. तब सब वैष्णव प्रसन्न होंईकै यह आशीर्वाद दियो. जो श्रीगुसांईजीकी कृपा तें तुमकों भगवद्मण्डली सदैव स्फुरेगी. पाछें सब वैष्णव उठिकै श्रीकृष्णस्मरन करिकै अपने घरकों गये. पाछें श्रीगुसांईजीकी कृपा तें उनके आशीर्वाद तें वाही दिन तें उनकों ज्वर उतरि गयो. भोग निवर्त भयो. पाछें नित्य भगवद्वार्ता सुनिवेकों नेमसों जान लागे.

भावप्रकाश :
या वार्तामें यह जताए, जो वैष्णव मण्डलीकौ स्वरूप महा अलौकिक है. साक्षात् प्रभुनकौ ही स्वरूप है. तातें मण्डलीमें अलौकिक बुद्धिसों नित्य नियम पूर्वक जानो. भगवद् वाता सुननों. और वाकौं फल रूप करिकै जानना, तो सब कारज सिद्ध होंई.

सो वे देवजीभाई श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं. सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१४१।।

१४२-एक डोकरी, जाने दांतिन भोगमें धरी

अब श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी एक डोकरी, जानें दांतिन भोगमें धरि, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं.

भावप्रकाश :

ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'भावप्रवीणा' है. ये भगवद् भावमें अत्यन्त निपुन हैं. तातें श्रीचन्द्रावलीजीकी इन पर बोहोत प्रीति है. ये 'मधुएनी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

ये राजनगरमें एक बनियाके प्रगटी. सो बरस नौ की भई. तब याकौ ब्याह भयो. सो याकौ धनी निष्कञ्चन हतो. लकडी बेचिकै निर्वाह करतो. ता पाछें ये बरस साठकी भई तब वाकौ धनी मर्यो. तब ये चरखा कांतिकै निर्वाह करन लागी. सो याके घरके पास एक वैष्णव रहत हुतो. सो वाके यहां भगवद्वार्ता नित्य होंई. सो या डोकरीने विचार्यो, जो या वैष्णवके इहां बोहोत लोग कथा सुनिवे आवत हैं. तातें मैं हू नित्य कथा सुनिवेकों जाऊ तो आछो. पाछें दूसरे दिन वा वैष्णवसों डोकरी पूछ्यो, जो तुम्हारे यहां बोहोत लोग भगवद्वार्ता कथा सुनिवेकों आवत है. सो मोकों हू सुनिवेकी इच्छा है. तातें जो तुम कहो तो हो हूं तुम्हारे घर आयो करों. तब वा वैष्णवने कही, जो बाई ! हमारे घर कथा वार्ता होत है. सो तो हमारे मारगकी होत हैं. तातें हमारे मारगकौ जो कोऊ होंई सो सुनत है. तू यामें कहा समझेगी ? तब वा डोकरीने कह्यो, जो तुम्हारो कौनसो मारग है ? तब वैष्णव कह्यो जो हमारो वल्लभी मारग है. तब वा डोकरीने वा वैष्णवसों बिनती करी, जो तुम कृपा करि, मोकों वल्लभी करो. अब घरमें अकेली बैठि रहति हूं. तातें मेरो समय जात नाहीं. सो हों वल्लभी होऊं तो तुम्हारी कथा वार्ता नित्य सुनों. तातें तुम इतनी कृपा मोपें करो तो भलो है. तब वा वैष्णवने कह्यो, जो बाई ! हमारे गुरु श्रीविट्ठलनाथजी है. सो श्रीगोकुलमें बिराजत हैं. उनकी सरनि जाइवे ते वल्लभी होंई. सो तू उनकी सरनि जांई तब वल्लभी वैष्णव तोसों भगवद्वार्ता कथा कहें. तब वा डोकरीने कह्यो, जो मैं श्रीगोकुल कैसें जाऊं ? मेरे पास तो द्रव्य हू नाहीं है. और सरीर हू थक्यो है. तातें तुमही मोकों वैष्णव करो तो आछो. तब वा वैष्णवने कह्यो, जो श्रीगुसांईजी थोरे दिनमें यहां पधारेंगे. तब तू उनकी सरनि जइयो. तब वा डोकरीने कही, जो जब लों मेरे दिवस कैसें कटेंगे ? तातें तुम मोकों वैष्णव करो. तो मैं नित्य कथा सुनो. तब वा वैष्णवने कही, जो बाई तेरी आरति है तो तू नित्य कथा सुनिवे आइयो. परि हमतो तोकों वैष्णव करि सकत नाहीं. तब वा बाईने कही जो भलो ! कथा सुनिवे आउंगी. पाछें जब श्रीगुसांईजी पधारे तब तुम मोसों कहियो. मैं वैष्णव होऊंगी. पाछें वह डोकरी नित्य कथा सुनिवे वा वैष्णवके घर जांई. सो याकौ भाव बोहोत बढ्यो, पाछें श्रीगुसांईजीके दरसनकी हू आरति बोहोत भई. कहे, जो कब श्रीगुसांईजी पधारे और हों सेवक होऊं, श्रीठाकुरजीकी सेवा करों ? ता पाछें केतेक दिनमें श्रीगुसांईजी राजनगर पधारे. तब वा वैष्णवने या डोकरीसों कही,

जो बाई श्रीगुसांईजी पधारे हैं. तेरे सेवक होनो होंइ तो चलि. हों बिनती करों. तब वह डोकरी तत्काल वा वैष्णवके सङ्ग चली. सो श्रीगुसांईजीके दरसन किये. पाछें वा वैष्णवने बिनती करी, जो महाराज ! या डोकरीकी सेवक होंनकी बोहोत आरति हैं. तातें आप इनकों कृपा करि सेवक कीजिए. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो या डोकरीके लिए ही तो हम यहां आए हैं. पाछें डोकरीकों न्हवाइ नाम निवेदन करवाए. तब वा डोकरीने कही, जो कृपानाथ ! भगवत्सेवा पधराय दीजिए. तब श्रीगुसांईजी वाकों कृपा करि एक लालजीकौ स्वरूप पधराय दिये. तब वह डोकरी भक्ति भाव संयुक्त श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लागी.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वह डोकरी राजनगरमें रहती. सो निष्कञ्चन हती. सो नित्य जो बने सो सामग्री करिकै भोग समर्पती. सो एक दिना 'मिलमा' की सामग्री करी हती. सो सिद्ध भई हती. इतने काहू वैष्णवने कही, जो श्रीगुसांईजी पधारे हैं. सो श्रीगुसांईजी श्रीरनछोरजीके दरसन करिकै राजनगर पधारे हते. सो वा डोकरीने श्रीगुसांईजी पधारे सुनिकै बेगि - बेगि ताजी सामग्री समर्पिकै चमचा घरमें न हतो सो एक दांतिन छिलिकै खासा करिके चमचाके बदले धरी. और श्रीठाकुरजी तें बिनती करी, जो महाराज ! यातें सामग्री हलायकै सीरी होंइ तब अरोगियो. मैं श्रीगुसांईजीके दरसन करि आउं. सो वा डोकरीकों दरसनकी बोहोत आतुरता हती. सो भोग धरिकै दरसनकों गई. सो श्रीगुसांईजीके दरसन किये. पाछें आयकै भोग सरायो. आचमन मुख वस्त्र करायो. इतनेमें एक वैष्णव आयो, श्रीठाकुरजीके दरसन किये. सो देखे तो भोगमें एक दांतिन धरी है. तब वैष्णवने अपने मनमें विचारी, जा ए पुरातन वैष्णव हैं. सो इनने दांतिन धरी है सो रीति होइगी. तातें एतो निष्कञ्चन हैं तातें एक धरी हैं. अपने दोइ धरेंगे. सो वा वैष्णवने अपने घर राजभोगमें सामग्रीके सङ्ग दोई दांतिन धरे. सो उनके यहां और हू वैष्णव आवते. सो उननें हू यही जानी, जो दांतिन धरनकी रीति होगी. तातें उनने चारि धरी. उनके चारि देखिकै चोथे वैष्णवने आठ धरी. पाछें उनके आठ देखिकै पांचमे वैष्णवने एक जूड़ी धरी. सो उनके यहां एक भगवदीय वैष्णव आए. सो उनने देखी. सो इनतें पूछी, जो तुमे यह दांतिन धरी ताकौ कारन कहा ? तब उनने कही, जो फलाने वैष्णवके यहां देखिकै मैंने धरी. तब उन वैष्णवतें पूछी जो तुमने आठ दांतिन क्यों राखे ? तब उन कही, जो फलाने वैष्णवके चारि दांतिन देखिकै मैनें आठ धरे. तब उन वैष्णव ने जांईकै पूछी, जो तुमने चारि दांतिन क्यों धरी ? तब उन कही, जो फलानेके दोइ देखी तासों मैंने चारि धरे. तब उन वैष्णव तें

जांईकै पूछी, जे तुमने दोइ दांतिन क्यों धरी ? तब उन कही, जो फलानी डोकरी पुरातन है, सो उनने एक धरी तातें मैंने दोइ धरी. पाछें वह वैष्णव वा डोकरीके घर आए. तब डोकरीने श्रीकृष्ण स्मरन करिकै बैठाए. और पूछी, जो आज मेरे घर कैसें आवनो भयो ? तब उन वैष्णवने कही, जो तुमने सामग्रीमें दांतिन क्यों धरी ? तब वा डोकरीने कही, जो हों तो श्रीगुसांईजीके दरसनकों जात हुती, और सामग्री ताती हुती. सो घरमें चमचा न हुतो. तातें चमचाके बदलेमें मैनें दांतिन धरी. जो श्रीठाकुरजीके हाथ न दाझे. याके लिये दांतिन धरी. तब वह वैष्णव सुनिकैं प्रसन्न भए. ता पाछें श्रीगुसांईजी जब राजनगरमें पधारे तब वैष्णवन श्रीगुसांईजी आपसों यह सब समाचार विस्तारसों कहे. तब श्रीगुसांईजी यह सुनिकै आज्ञा किये, जो वैष्णवनकों जो कछू सेवा सम्बन्धी कार्य करनो होंइ सो भगवदीयनकौ सत्सङ्ग करिकै करनो. भगवदीयन तें पूछिकै करनो. जो देखा देखी करे तो उलटा अपराध माथे पड़े. तातें विचारकै करनो.

भावप्रकाश :

या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो सेवा भगवदीयनकौ सङ्ग करि, भाव समझिकै, प्रीति संयुक्त करनी. देखा देखी नहीं करनी.

सो वह डोकरी श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए ? वार्ता ।।१४२।।

१४३-एक स्त्री - पुरुष, मथुराजीके

अब श्रीगुसांईजीके सेवक एक स्त्री - पुरुष, मथुराजीके, जाने मण्डलीमें चना बांटे, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं.

भावप्रकाश :

ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'गेहनी' 'देहनी' हैं. ये दोउ 'मधुएनी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं. सो पुरुषकौ नाम तो 'गेहिनी' है. और स्त्रीकौ नाम 'देहिनी'. ये दोउ मथुरामें रहते. सो श्रीगुसांईजी मथुराजीमें वास किये तब ये सेवक भए हैं. सो उनके माथें श्रीगुसांईजी आपु लालजीकौ स्वरूप

सेवाकों पधराय दिये हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वे स्त्री - पुरुष श्रीठाकुरजीकी सेवा बोहोत स्नेहसों करते. सो श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावते. और उनके घर वैष्णव मण्डली नित्य होती. और भगवद्वार्ता कीर्तन नित्य होते. सो मथुराके वैष्णव नित्य आवत हते. सो नित्य चनाचवेनाकौ महाप्रसाद बांटते. तामें एक सेठ वैष्णव सुनिवेकों आवतो. सो उहां चवेनाकौ महाप्रसाद बट्यो. सो सेठने ले कै वह महाप्रसाद डारि दीनो. सो वा मण्डलीमें महादेवजी भगवद्गुनानुवाद सुनिवेकों आवते. सो तिन चना प्रसादी बीनि - बीनिके लिये. तब वैष्णवने पूछी जो ये कौन है ? तब देखें तो महादेवजी है. तब वैष्णवने कही, जो यह तुम कहा करो हो ? तब महादेवजीने कही, जो सेठने चना डारि दीने हैं सो मैं बीनत हों. सो नित्य ऐसें ही करे हैं. तब या क्षत्री वैष्णवने सेठतें पूछी, जो तुम नित्य महाप्रसादकौ अनादर करत हो ? तब सेठने नाहीं करी. तब वैष्णवने कही, जो महादेवजी कहत हैं तुम झूठ क्यों बोलत हो ? तुमकों द्रव्यकौ अहङ्कार है. सो तुम्हारो अहङ्कार मिटेगो तब तुमकों वैष्णव मण्डलीमें बुलावेंगे. पाछें वा वैष्णवने सबनसों कह्यो, जो याकों कोई जैश्रीकृष्ण मति करियो. और वैष्णव मण्डलीमें मति आवन दीजो. ता पाछें कोई वैष्णव श्रीकृष्ण स्मरन न करें. तब वह सेठ मथुरा तें श्रीगोकुलकों आयो. सो मनमें कह्यो जो मैं श्रीगुसांईजीसों बिनती करूंगो. सो मोकों वैष्णव मण्डली मिले. पाछें श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करी. तब श्रीगुसांईजी पीठि फेरिकै बैठें. तब सेठने बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! वैष्णव मण्डलीने मेरो त्याग कियो है. और आप (हू) पीठि फेरिकै बिराजे हो. सो आप कृपा करिकै आज्ञा करिये, जो मेरो कहा अपराध है ? तब आपने आज्ञा करी, जो उहां वैष्णव मण्डलीने त्याग कियो, तो मैंने ही त्याग कियो. तब वाने बिनती करी, जो महाराज ! मेरो ठिकानो अब कहां ? तब आज्ञा करी, जो जब वैष्णव, मण्डलीमें लेंगे तब हम दरसन देइंगे. तब वह सेठ मथुरा आयो. पाछें कितनेक दिनमें इनके द्रव्यकौ नास भयो. तब वाकों दीनता आई. पाछें उन वैष्णव मण्डलीमें जांइ बिनती करी, जो अब मेरे द्रव्यकौ नास भयो. अब मेरो अहङ्कार मिटयो. सो अब मोकों वैष्णव मण्डलीमें लेऊ. तब वैष्णवने कही, जो अब महाप्रसादकौ अनादर करोगे ? तब वा सेठने दोउ हाथ जोरिकै बिनती करी, जो अब मैं कबहू महाप्रसादकौ अनादर न करोंगो. अनादर कर्यो ताको फल मैं भोग्यो. अब कृपा करिकै मोकों जैश्रीकृष्ण करो. जब आज्ञा करो तब मैं मण्डलीमें आउं. तब वैष्णवनकों दया

आई. तब वैष्णवनने जैश्रीकृष्ण कहिकै मण्डलीमें बुलायो. और कही, जो अब महाप्रसादकौ अनादर मति करियो. तब वाने बिनती करी, जो अब अनादर कबहु न करूंगो. सो ऐसें ही महाप्रसादसों वैष्णवनकों डरपत रहनो. पाछें वह नित्य वैष्णव मण्डलीमें आवे. भगवद्वार्ता सुने. तब वैष्णव सब प्रसन्न रहते. पाछें श्रीगोकुल आयकै श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करी. तब श्रीगुसांईजी आप प्रसन्न भए. और आज्ञा किये, जो वैष्णव प्रसन्न भए तब हम हूं प्रसन्न भए. सो यह सेठ मथुरामें रहिकै भगवद्सेवा करतो. और वैष्णव मण्डलीमें नित्य जातो.

भावप्रकाश :
या वार्तामें यह जतायो, जो वैष्णव मण्डलीकों भगवद् स्वरूप करि जाननी. उहां जांई दीनतासों भगवद्वार्ता सुननी. तो बेगि प्रभु कृपा करें. और द्रव्यादिकको अभिमान बाधक कहे. सो प्रभु जा पर कृपा करें ताके द्रव्यादिका नास करि अभिमान निवृत करत हैं. तातें वैष्णव द्रव्य पाय अभिमान न करें.

सो वह सेठ और वह क्षत्री वैष्णव श्रीगुसांईजीके ऐसें परम कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए ? वार्ता ।।१४३।।

१४४-एक स्त्री - पुरुष, मथुराजीके

अब श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी एक और डोकरी, जाने आठ बेर काल फेर्यो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'अभयपूर्णा' है. ये 'मधुएनी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वह डोकरी राजनगरमें रहती. सो जब श्रीगुसांईजी राजनगर पधारे तब बोहोत से दैवी जीव वैष्णव भए हे. तामें येहू सेवक भई है. सो वा डोकरीके माथे श्रीबालकृष्णजी बिराजत हते. सो वह बालपने तें विधवा भई हती. सो बालपने तें सेवा करत - करत वृद्ध भई.

तब एक दिना काल आयो. सो अन्नकूटपैं आयो. सो वा डोकरीको श्रीगुसांईजीकी कृपा तें वह काल मूर्तिमान दीसे. तब कालने कही, जो अब यहां तें चलो. तब वा डोकरीने कही, जो मेरे श्रीठाकुरजीके अन्नकूटकौ उत्सव आयो. तातें मैं नाहीं आऊं. तब काल तो फिरि गयो. सो अन्नकूट पाछें फेरि काल आयो. तब डोकरीने कही, जो अब तो प्रबोधिनी आई ताते मैं तो नाहीं आऊं. तब काल पाछौ गयो. सो केतेक दिन पाछें यह फेर आयो. तब डोकरीने कही, जो अब तो श्रीगुसांईजीकौ उत्सव आयो, तातें मैं अबही नाहीं आऊ. ता पाछें काल फिरि गयो. पाछें वसन्तपञ्चमीपैं काल आयो. तब डोकरीने कही, जो अब तो वसन्तपञ्चमीकौ उत्सव आयो. तातें हों तो नाहीं आवति हूं. तब काल फेरि गयो. सो काल फेरि डोलपैं आयो. तब डोकरीने कही, जो अब तो डोल उत्सव आयो है. तातें अब ही तो मैं नाहीं आउं. तब काल पाछौ गयो. पाछें काल फेरि श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीके उत्सवपैं आयो. तब डोकरीने कही, जो अब तो श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीके उत्सव पाछें आउंगी. तब काल फिरि गयो सो कितनेक दिन पाछें फेरि आयो. तब डोकरीने कही, जो जन्माष्टमीकौ उत्सव करिकै आउंगी. तब काल फिरि गयो. सो केतेक दिन पाछें फेरि आयो. तब डोकरीने कही, जो यह उत्सव राधाष्टमीकौ करिकै आउंगी. तब काल फिरि गयो. तब काल तो दिक होइकै धर्मराज तें कही, जो महाराज ! वा डोकरीने तो बरस दिनमें आठ फेरा करवाए. जब मैं जाउं तब कहे, जो अब ते फलानो उत्सव है. तातें नाहीं आऊंगी. सो मैं तो कायो होंइ गयो. तब धर्मराजने कही, जो वह तो भगवदीय हैं. तातें उनपै मेरो दण्ड लगे नाहीं. मेरो बल चले नाहीं. तब काल तो सुनिकै अपने ठिकाने बैठ्यो.

भावप्रकाश :

या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो कोऊ भगवत्सेवा भाव प्रीति संयुक्त करत हैं तिनकों काल बाधा करि सकत नाहीं. ऐसो सेवाकौ प्रभाव है.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

बहोरी एक समै श्रीगुसांईजी राजनगर पधारे. सो भाईला कोठारीके घर बिराजे. सो वैष्णव सब दरसनकों आए. सो वह डोकरी हू आई. तब श्रीगुसांईजीने श्रीमुख तें कही, जो आवो 'अष्टपदी'. तब वैष्णवन श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! अष्टपदीसो कहा ? तब श्रीगुसांईजीने कही जो भीष्मपिताने एक बेर कालकों पाछौ फेर्यो. और या डोकरीने आठ बेर कालकों पाछौ फेर्यो. पाछें श्रीगुसांईजीने वा डोकरी तें कही, जो भलो ! आठ बेर कालकों फेरा खवाए, सो कछू तो दया विचारि. भलो, कालकों मान देनो. तब डोकरीने कही, जो महाराज ! मैं तो आपके बस हों, कालके बस नाहीं. और मेरे लालजीकी सेवा कौन करेगो ? तब श्रीगुसांईजीने कही, जो हमारे घर लालजी पधराऊ. तब डोकरीने कही, जो भले महाराज ! आपकी निधि आप पधरावो. तब वा डोकरीने वैभव सहित श्रीठाकुरजी, श्रीगुसांईजीके घर पधराए. और जो घरमें हतो, सो सब श्रीगुसांईजीकों समर्प्यो. तब श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो कछू तो राखि ले. तब वा डोकरीने कही, जो अब मेरे कहा करनो है ? पाछें थोरेसे दिन रहिकै वा डोकरीने लौकिक देह छोरिकै अलौकिक देहतें कालके माथे पग दै कै व्यापि वैकुण्ठके विषे प्रवेश करत भई.

भावप्रकाश :

यामें वह जतायो जो भगवदीय वैष्णव कालके आधीन नाहीं है. तातें गोपालदासजी गाए हैं

चित्रगुप्त कागद फारि डारे सरन जो जन आइया ।

तातें मन, बचन, कर्म करि जो जीव श्रीमहाप्रभुजीकौ सरन दृढ़ गहत हैं तासों काल हु डरपत है. यह सिद्धान्त कह्यो.

सो वह डोकरी श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१४४।।

१४५-एक विरक्त गुजरातकौ

अब श्रीगुसांईजीके सेवक एक विरक्त हतो, वह गुजरातमें रहतों, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं.

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'पेंचु' गोप है. सो लीलामें अनेक पशु पक्षी हैं. तिन सबनके एक - एकके न्यारे - न्यारे अनेक भाव हैं. सो सब स्वरूपात्मक हें. तामें यह पेंचू 'तमचर'के भावरूप है. सो प्रातःकाल होंई तब वह नन्दालयमें आवत है. पाछें मधुर कोमल स्वरसों प्रभुनकों जगावत हैं. तातें श्रीठाकुरजी इन पर सदा सर्वदा प्रसन्न रहत हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै श्रीगुसांईजीके दरसन करिवेकों एक साथ गुजरातकौ गोकुल आयो हतो. सो वा साथमें एक विरक्त हू हूतो. सो इन श्रीगुसांईजीके दरसन पाए. सो दरसन करिकै बोहोत प्रसन्न भयो. ता पाछें वा विरक्तने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मोकों नाम सुनाइए. तब श्रीगुसांईजीने वाकों नाम सुनायो. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप वाकों कृपा करि निवेदन कराए. तब वा विरक्तने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! अब मोकों कहा कर्तव्य है ? तब श्रीगुसांईजी वा विरक्तकों आज्ञा किये, जो तुम नाममन्त्रकौ हृदयमें जप करो. तासों तुमकों भगवद्भाव सिद्ध होगयो. सो ता दिनतें वह विरक्त नित्य नाममन्त्रकौ अपने हृदयमें जप करन लाग्यो. सो केतेक दिनमें वाकों श्रीगुसांईजीकी कृपातें भगवद्भाव उत्पन्न भयो. तब वह श्रीनवनीतप्रियजीके नित्य दरसन करे. पाछें श्रीगुसांईजीके दरसन करे. या प्रकार रहतो.

पाछें वह विरक्त वैष्णव श्रीगुसांईजीसों आज्ञा मांगि श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों गयो. सो दरसन करिकै उहां ते ब्रज परिक्रमाकों गयो. सो परिक्रमा करि श्रीगोकुल आयो. पाछें वह अहर्निश फिरिवोई करे. कहूं स्वतन्त्र रहे नाहीं. सो उत्तम स्थल, उत्तम वार्तामें अहर्निश रहे.

भगवदीय वैष्णव होंइ ताकौ सङ्ग करे. पाछें वह विरक्त पृथ्वी पर्यटन करन लाग्यो.

ऐसें करत एक दिन वह एक ग्राममें आयो. सो तहां काहू वैष्णवके बेटाकों सर्पने डस्यो. सो वह मर्यो. तब वाकी महतारी रोवन लागी. सो बोहोत विलाप करिकै रोवत हुती. सो ता मार्गमें वह विरक्त वैष्णव और औरहू वैष्णव भगवदीय चले जात हुते. तब वा विरक्त वैष्णवने पूछी, जो ये क्यों रोवत है ? तब दूसरे लोग ठाढ़े हते तिन सर्व वृत्तान्त कह्यो. तब वा विरक्त वैष्णवकों दया आई. तब वा विरक्त वैष्णवने भगवन्नामकौ उच्चार कियो. सो वह जीयो. तब सब लोग वाके पाछें परे. और कहन लागे, जो यह विद्या आपके पास है सो हमकों सिखावो. तब वा विरक्त वैष्णवने कह्यो, जो हों सिखाऊं तो सही, परन्तु तुमकों हमारो विश्वास नहीं आवेगो. तब उन वा विरक्त वैष्णवसों कह्यो, जो विश्वास कैसें नहीं होइगो. प्रत्यच्छ देखिकै विश्वास न आवे सो कैसें मानें ? पाछें विरक्त वैष्णवने कह्यो, जो हम तुमकों यह मन्त्र सिखावत हैं. सो तुम हू अहर्निश कहियो. जो ''श्रीकृष्ण शरणं मम'' अहर्निश कहत रहियो. तब उन, विरक्त वैष्णवसों ह्यो, जो ए तो मन्त्र हम जानत ही हैं. परि दूसरो मन्त्र क्यों नहीं कहत हो ? तब वा विरक्त वैष्णवने कह्यो, जो यह मन्त्र सर्वोपरि है. ता पाछें वह विरक्त वैष्णव उहां तें आगेंकों चल्यो. सो ऐसें अहर्निश फिर्यो करतो. सो जहां तांई विरक्त वैष्णवकी देह चली, तहां तांई फिरिवो कियो. सो ता पाछें वह विरक्त वैष्णवकी देह छूटी. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीके चरनारविन्दमें प्राप्त भयो.

भावप्रकाश :

या वार्ताकौ अभिप्राय यह है जो वैष्णवकों विश्वासपूर्वक अष्टाक्षर मन्त्रकौ जप करनो. तातें सर्व कार्यकी सिद्धि होत हैं. अविश्वास बाधक हैं. सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु 'विवेकधैर्याश्रय' ग्रन्थमें लिखे हैं. सो श्लोक

अविश्वासो न कर्तव्यः सर्वथा बाधकस्तु सः ।

तातें वैष्णवकों अविश्वास सर्वथा न करनो. काहेतें, जो यह आसुर धर्म है. तातें भक्तिमें बाधक कह्यो है.

सो वह विरक्त वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ? वार्ता ।।१४५।।

१४६-एक नाऊ गुजरातकौ

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक नाऊ हुतो, सो वह गुजरातमें रहतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'अनन्या' है. ये तमचरके भावरूप हैं. सो या निकुञ्जकी सेवा करति हैं. भोर होत ही सब वृक्षनकों सम्हारति हैं. सो एक समै आधी रातिकों ये जगी. जाने, जो भोर भयो. सो वृक्षनकों सम्हरान लागी. ताकौ आहट भयो. सो श्रीठाकुरजी सुने. तब जाने जो सवेरो भयो, सो उठे. तब ललितादिक सखीने कही, जो अबही रात्रि बोहोत है. तब श्रीस्वामिनीजी क्रोध करिकै अनन्याकों साप दिए. कहे जो समै बिना मनकों खेद करायो. तातें जाऊ भूमि पर गिरो.

सो यह गुजरातमें एक नाऊके जन्म्यो. पाछें बरस पचीसकौ भयो. तब याके मा - बाप मरे. सो याकौ ब्याह तो भयो नाहीं हतो. सो ये अपनो धंधो करि निर्वाह करत हुतो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै श्रीगुसांईजी गुजरातकों पधारे हुते, सो श्रीरनछोरजीके दरसनकों, सो वा मारगमें एक नाऊने एक दिन श्रीगुसांईजीकी सींक लीनी. सो बोहोत भली भांतिसों लीनी. तब श्रीगुसांईजी वापै बोहोत प्रसन्न भए. सो ता समै वा नाऊकों श्रीगुसांईजीके ऐसें दरसन भए मानों साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम हैं. तब वा नाऊने श्रीगुसांईजीकों बिनती कीनी, जो महाराज ! मोकों नाम सुनाइए. तब श्रीगुसांईजीने कृपा

करिकै नाम सुनायो. तब वह नाऊ बड़ो भगवदीय भयो. सो ता पाछें औरकौ वा नाऊने बूतो नहीं कियो. तब वैष्णवन उन तें पूछे, जो तुम औरकी सींक क्यों नाहीं बनाओ. तब वा नाऊने कह्यो, जो श्रीगुसांईजीके नख ऊतारिकै औरके कैसें ऊतारुं ? और अपने राच हूते सो सब कुआंमें डार दिए. और कछू व्यौहार करिकै अपनो निर्वाह करन लाग्यो. ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीरनछोड़जीके दरसनकों पधारे. सो दरसन करिकै श्रीगुसांईजी फेरि वा नाऊके गाम आये. तब वा नाऊने जो कछू हुतो सो श्रीगुसांईजीकों भेंट करि दियो. ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारे. और वह नाऊ तो अपने गाममें रह्यो. सो जहां पर्यन्त अपनी देह चली तहां तांई और कछू वार्ता करी नाहीं. अष्टाक्षरकौ नित्य स्मरन करे. श्रीगुसांईजीकै स्वरूपकौ ध्यान नित्य करिवो करे. ऐसें करत कछूक दिनमें याकी देह छूटी. सो लीलामें प्राप्त भयो.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णवकों अनन्यता ही बड़ो पदार्थ हैं. काहेतें, जो अनन्यतासों मनकौ निरोध सिद्ध होत है.

सो वह नाऊ श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय भयो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१४६।।

१४७-एक पठानकौ बेटा

अब श्रीगुसांईजीके सेवक एक पठानकौ बेटा, दिल्हीमें रहतो, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं, लीलामें ये 'रासो' गोप है. सो ए नन्दरायजीकै सङ्ग हथियार बांधिकै चलतो. ये तमचरके भावरूप हैं.

सो यह दिल्हीमें एक पठानके जन्म्यो. सो बरस बीसकौ भयो. तब याकों एक वैष्णवकौ सङ्ग भयो. तब वा वैष्णवने उनसों कह्यो, जो तू दैवी जीव हैं. ऐसें मोकों जानि परत हैं. तातें तू वैष्णव होंइकै अपनो जनम कृतारथ करि. तब या पठानने कही, जो मैं कैसें मानों, जो तुम सांच कहत हों. तब वा वैष्णवने वाकों बालपनेकी सब बात कही. तब वा पठानने जानी, जो ये कोई महापुरुष है. तातें इनकौ कह्यो करनो. याहीमें मेरो भलो है. पाछें या पठानने पूछी जो वैष्णव कैसें होउं ? तब वा वैष्णवने कह्यो, जो 'निगमबोध' घाट पर श्रीगुसांईजी बिराजत हैं. उनकी पास जाइ नाम सुनि. तब तू वैष्णव होइगो. तब वा पठानके बेटाने दृढ़ निश्चै कियो, जो श्रीगुसांईजीके पास जांइ उनकौ सेवक होनो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो एक समै श्रीगुसांईजीके पास वह पठानकौ बेटा नाम पाइवेकों आयो हुतो. सो वाकों श्रीगुसांईजीने नाम दियो. सो वह पठानकौ बेटा वैष्णव भयो. ता पाछें वा पठानकौ पिता 'सेरसाह' पात्साह पास पुकार्यो. कह्यो जो मेरो बेटा हिन्दुके धर्ममें गयो है. तब पात्साहने पठानके बेटाकों बुलायो. तब पठानकौ बेटा आयो. तब पात्साहने पठानके बेटासों कह्यो, जो तू यह धर्म छोरि दे. तब उन पठानके बेटाने पात्साहसों कह्यो, जो हों यह मार्ग क्यों छोरों ? या मार्गमें मैं प्रीति करी है. सो जासों प्रीत करिये तासों छोरिए नाहीं. तब सेरसाह पात्साहने माला - तिलक देखिकै कह्यो, जो ये वेष कहा है ? तब उन पठानके बेटाने कह्यो, जो ये वेष उनकों बोहोत प्यारो लागत है. तब पात्साहने कह्यो, जो तू नहीं छोरेगो ? तब वा पठानके बेटाने कह्यो, जो हों सर्वथा नहीं छोरूंगा. तब पात्साहने कह्यो, जो हे रे कोऊ ? मेरी तरवारि ल्याओ. याकों मारों. तब सबनने जान्यो, जो अब यह पठानके बेटाकों मारेगो. तब उन पठानके बेटाने अपनी तरवारि निकारि पात्साहके हाथमें दीनी. तब पठानके बेटासों पात्साहने कह्यो, जो या मार्गसों तें प्रीति करी है और मैं तोसों रिस करी है. अब देखे तेरी चौकी, रक्षा कौन करे है ? तब पठानके बेटाने पात्साहसों कह्यो, जो तुम्हारे करनी होइसो करिये. परि हमारे तो येही बात हैं. तब सेरसाह पात्साहने वा पठानके बेटाकौ सांच देखि बोहोत प्रसन्न भयो. तब पात्साहने वा पठानके बेटाकौ सिरोपाव दे कै अपने घर पठवायो.

ता पाछें यह सब समाचार काहू वैष्णवने श्रीगुसांईजीसों कहे. तब श्रीगुसांईजी श्रीमुखतें कहे, जो वैष्णवकौ ऐसो ई धर्म है. जो काहूसों

कहिए नाहीं. गोप्य ही राखिए. वा पठानके बेटानें अपनी देहकौ त्याग करनो आदर्यो परि अपनो धर्म न छोर्यो. सो वैष्णवकौ धर्म ऐसोई है. तातें वैष्णवनकों दृढ़ आश्रय चहिए. और एक आश्रय श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ होंइ तो वे अपनी रक्षा - पालन क्यों न करें ? तातें जीवकों विश्वास चहिए. सो 'निजेच्छात करिष्यति'. श्रीप्रभुजीकी इच्छा होइगी सो कार्य होइगो. काहू बातकी चिन्ता नहीं करनी. ऐसें श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें आज्ञा दीनी. तब सब वैष्णव सुनिके बोहोत प्रसन्न भए.

भावप्रकाश :
यामें यह जताए, जो वैष्णव निर्भय व्है अपनो धर्म पालन करें ताकों प्रभु निश्चै सहाइ होंइ.

सो वह पठानकौ बेटा श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय भयो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१४७।।

१४८-स्त्री - पुरुष, आगरेके

अब श्रीगुसांईजीके सेवक स्त्री - पुरुष, कनोजिया ब्राह्मन, आगरेमें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें पुरुष 'मृदुभाषिनी' हैं, और स्त्री 'कोमलाङ्गी'. ये दोउ श्रुतिरूपाके जूथके हैं. सो एक सेठकी वार्तामें आगें कहि आए हैं. दोउ 'कमला'तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वे देवीके अनन्य सेवक हते. सो देवी तिनसों सानुभाव रहती. सो एक दिन चाचा हरिवंशजी आगरेमें आये. सो रात्रि प्रहर एक गई. ता समैं आगरेमें आइ पहोंचे. तब चाचा हरिवंशजीने मनमें विचार्यो, जो अब या समै कोई वैष्णवके घर जाइंगे तो वह वैष्णव रसोई करायवेकौ आग्रह करेगो. भूखे न रहन देहिगो. तातें वैष्णवके घर काल्हि जाइंगे. अब तो रात्रि बोहोत गई है सो रसोई न होइ सकेगी. तातें जो वैष्णवके घर जाइंगे. तो वह दुःख पावेगो. तातें बनें तो यह आछो चोंतरा है. आज इहांई सोय रहेंगे. सो वा चोंतराके पास कुआं हतो. सो चाचाजीके सङ्ग वैष्णव चारि और हते. तिनसों चाचाजी कहे, जो जल भरि लावो तो न्हाइकै कछू महाप्रसाद लेहिं. तब वे दोइ वैष्णव तो खारी जल भरन गए. दोइ जनें श्रीयमुना जल लेन गए. सो जल ले आए. तब चाचा हरिवंशजी न्हाए. चारों वैष्णव हते सोऊ न्हाए. तब चाचाजी महाप्रसाद थोरोसो हतो सो चार्यो जनेंनकों बांटि लियो. सो मथुराके चले आगरे पहोंचे हते. सो चाचाजी सहित चारों वैष्णव हारि गए हते. सो सोइ रहे. इतनेमें चारों वैष्णवकौ नींद आइ गई. और चाचा जागत हते. सो वह चोंतरा देवी उपासिक ब्राह्मन कनोजियाकौ हतो. सो जब अर्द्धरात्रि गई तब वह ब्राह्मन कनोजियाने देवीकी प्रार्थना करी. सो देवी आयकै देखे तो चाचा हरिवंशजी चारों वैष्णव समेत चोंतरा उपर सोये हैं. और ज्येष्ठकौ दिन है. सो गरमी बोहोत हती. और पांचों वैष्णव हारे हते. यह देवी जानिकै विचार्यो, जो आज मेरी सेवाकौ दाव पर्यो है. श्रीगुसांईजीके अन्तरङ्ग सेवक हैं. इनकी सेवा करी चाहिये. तब देवीने अपने चारि स्वरूप और प्रगट किये. सो चारोंके हाथ पंखा दे तिनसों कह्यो, जो तुम चारों वैष्णवकी सेवा करो. मैं चाचा हरिवंशजीकी सेवा करत हों. तब देवीके चारों स्वरूप वैष्णवकी सेवा करन लागे. देवी चाचा हरिवंशजीकी सेवा करन लागी. तब चाचा हरिवंशजी यह सब अभिप्राय जानें. तब आपने मुख उपर उपरेना डारिकै सोय रहे. और वे चारों वैष्णव नींदमें उनकों कछू खबरि नाहीं है. सीतल ब्यार लागी सो और हू नींद आई गई. या प्रकार देवी तो इहां चाचा हरिवंशजीकी सेवा करन लागी. और उहां वह ब्राह्मन न्हायकै घीकौ दीयो बारिकै देवीकी स्तुति अनेक प्रकारकी कियो. सो देवी नाहीं आई. सो ब्राह्मनकों महा क्षोभ भयो. भय भयो. जो आज देवी मेरे उपर अप्रसन्न हैं. सो मोसों कछू चूक परी. सो अब मैं कहा करों ? या प्रकार सगरी रात्रि स्त्री - पुरुष देवीकी स्तुति बैठे - बैठे किये. मनमें अनेक प्रकारसों विचार करत हैं. पाछें वे घरी रात्रि पाछली रही तब चाचा हरिवंशजी उठे. सो देखें तो देवी पंखा करत हैं. (तब चाचा हरिवंशजीके पांयन परि गई और बिनती करी जो तू कौन है ? सगरी रात्रि सेवा करी. तब देवी चाचा हरिवंशजीसों बोले,) (वाक्यरचनामें कूछ कमी है.) जो मैं देवी हों. सो मेरे मनमें मनोरथ बोहोत दिनसों हतो. जो श्रीगुसांईजीकी सेवा करों. सो श्रीगुसांईजीकी

सेवामें तो मेरो अधिकार नाहीं है. तातें श्रीगुसांईजीकी सेवा कहां तें मिले ? जैसें श्रीकृष्णकी सेवामें देवतानकौ अधिकार नाहीं है. स्तुति करी, फूलनकी वर्षा करि अपने लोकमें चले जात हैं, तैसें ही हमकों अधिकार श्रीगुसांईजीकी सेवामें नाहीं है.

भावप्रकाश :
यह कहि यह जतायो, जो श्रीगुसांईजीकौ स्वरूप महा अलौकिक हैं. साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम कोटि कन्दर्पलावन्य हैं. ऐसो स्वरूप हैं. तातें देवता हू भूमि पर आई, आपकी टहल करिवेकी इच्छा करत हैं. परि उनकों मिलत नाहीं. तातें गोपालदासजी वल्लभाख्यानमें गाये हैं. सो कारिका -

विबुध वांच्छे वास वसुमति ऊपरे श्रीवल्लभकुंवर नी टहल करवा
सो श्रीगुसांईजी आपकौ ऐसो स्वरूप है ।

और आधिदैविक देवता जो हैं तिनकौ अधिकार है. सो जब पृथ्वी उपर प्रभु प्रगटे हैं तब उह देवता आधिदैविक सेवाके लिये प्रगटे होत हैं. तिनके आगें हमारौ अधिकार नाहीं. तातें मेरे मनमें बोहोत दिनतें ही, जो श्रीगुसांईजीके अन्तरङ्ग सेवकनकी सेवा मिले. सो कोई दिन तो मेरो जन्म सुफल होंइ. सो आजु मो पर भगवान् कृपा करी, जो तुम्हारी सेवा मिली. यह सुनिकै चाचा हरिवंशजी कहे, जो तुम सक्ति हो. तुमकों हमारी सेवा करनी उचित नाहीं है. तुमकों सगरो जगत पूजत है. यह सुनिकै देवीने बिनती करी, जो भगवद्माया करि मोहित जो जीव हैं. सो हमारी सेवा करत हैं. सो मेरी पूजा करत हैं. तिनकों मैं लौकिकासक्ति कराय, तीन गुन मायाके हैं तिनमें डारि देति हों. ता करि जीव सदा दुःख पावत हैं.

भावप्रकाश :
काहेतें, जो मेरी पूजा करत हैं तिनकों मैं जानति हों, जो भगवान् इनकौ अङ्गीकार नाहीं कियो है. तातें मैं इनकों संसारमें डारत हों.

तातें आज मेरे बड़े भाग्य हैं, जो तुम सारिखे बड़े भगवदीयकौ दरसन भयो. और कछूक सेवा मिली. तब चाचाजी कहे, अब तुम जाऊ.

तब देवी पांचो स्वरूपकौ एक स्वरूप करिकै उह स्त्री - पुरुष ब्राह्मन पास आई. और चाचा हरिवंशजीने यहां चारों वैष्णवनकों जगाये. कहे, इहां तें बेगि चलो. तब चारों वैष्णव सहित आगरेमें संतदासके घर आए. तब संतदासजी चाचा हरिवंशजीकों बोहोत सन्मान करि भाव भक्तिसों अपने घरमें राखे. तहां चाचाजी और चारों वैष्णव देहकृत्य करि दांतिन करि न्हायकै चाचाजी रसोई किये. और उह देवी प्रातःकाल उठिकै वह स्त्री - पुरुष ब्राह्मनके पास गई. सो देखें तो घीकौ दीया धरि देवीके अर्थ होम करत हैं. देवीकी स्तुति करत हैं. सो देवीकों देखिकै दोउ स्त्री - पुरुष उठिकै ठाढ़े भए. साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै देवीके पांइन परि बोहोत बिनती करि पूछे, जो माताजी ! आज तुम या समय आई ! सो तुम्हारी पूजामें मेरी कहा चूक परि है ? जो अपराध पर्यो होइ सो बतावो. और अपराध छिमा करिकै मोकों अर्द्धरात्रिके समै दरसन दियो करो. सो मैं तुम्हारो दरसन करिकै सोया करोंगो. सो सगरी रात्रि - दिन तुमहीमें मन रहे. यह ब्राह्मन - ब्राह्मनीके बचन सुनिकै देवी प्रसन्न भई. कह्यो, तुम्हारो स्नेह हमारे उपर बोहोत है. सो तुमसों अपराध कब हू न होइगो. मैं तुम्हारे चोंतरा उपर चारि प्रहर रात्रि रही. तब स्त्री - पुरुषने बिनती करी, जो माताजी ! तुम हमारे द्वारपै सगरी रात्रि रही ताकौ कारन कहा ? हमारे घरमें क्यों नाहीं आई ? तब देवीने कही, जो श्रीविटठलनाथजी श्रीगुसांईजीके अन्तरङ्ग सेवक पांच मथुरा तें आज आये. सो इह चोंतरा उपर विश्राम रात्रिकों किये हे. सो मैं सगरी रात्रि उन पांचों वैष्णवनकों पंखा करत ही. सो वे सगरी रात्रि पाछें अब आज्ञा दीनी तब मैं तेरे पास आइ हों. तातें मैं तेरे पास आइ न सकी. यह देवीके बचन सुनिकै स्त्री - पुरुष चक्रत होइ रहे. कहे, माताजी ! हम तो यह जानत हते, जो या जगतमें तुम्हारे समान और कोई नाहीं है. और तुम तो कहत हो, जो श्रीविटठलनाथजी श्रीगुसांईजीके सेवककी टहल मैं करि आइ हों. ताकौ कारन कहा ? तुम मोकों भ्रम उपजावत होके सांच कहत हो ? सो मोकों समुझ नाहीं परत. सो मैं तो तुम्हारो दास हूं. तुम बिना मैं औरकों नाहीं जानत. और तुम्हारे कहेकौ मोकों आगेसों विश्वास है. तातें माताजी तुम सांच बात सगरी कहि देहु. यह सुनिकै देवी प्रसन्न होंइकै कह्यो, जो हे ब्राह्मन ! मैं सत्य कहति हों. मैं तीन कारजमें झूठ बोलति नाहीं. झूठ तो या संसारमें मायाके जीव पडे हैं सो बोलत हैं. और में या जगत मैं या जगत मैं कोई जीवकी आश्रित नाहीं हों, जो झूठ बोलों. तातें तुम मेरे अनन्य सेवक हो और निष्कपट होंईकै मेरी सेवा करत हो. तातें में तुमसों कहति हों. तुम सावधान होंईकै यह बचनमें विश्वास राखिकै सुनियो. तब तो दोउ जनेंन बिनती करी, जो माताजी ! कृपा करिकै कहिये, हम सावधान हैं. तब दैवी बोली, यह कलियुग समान कोई युग उत्तम नाहीं भयो. जो या युगमें श्रीआचार्यजी और श्रीगुसांईजी प्रगट भये हैं. सो श्रीवल्लभाचार्यजी प्रगट होंइ पुष्टिमार्ग

प्रगट किये हैं. और श्रीविटठलनाथजी प्रगट हों पुष्टिमार्गकौ विस्तार किये हैं. सो दोउ स्वरूप साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम हैं. सो विटठलनाथजी प्रगट श्रीगोकुलमें बिराजे हैं. तिनके सेवकनके दास तिनकी दास पदवीकों मैं वांछित हों. सो मोकों मिलत नाहीं. यह बात तुम हृदैमें सत्य मानियो. यह देवीके बचन सुनिकै ब्राह्मन - ब्राह्मनी मनमें कछू विचारि, फेरि पूछ्यो, जो देवीजी ! तुम आज्ञा प्रसन्न होंइकै करो, तो हम श्रीविटठलनाथजीकी सरनि जांइ. उनके सेवक होंइ. यह सुनिकै देवीने कह्यो, जो तुम्हारे बड़े भाग्य हैं. जो तुम मनमें यह विचारे. तुम पृथ्वी पर हो तातें तुम्हारो अधिकार है. हम देवता हैं हमारो अधिकार नाहीं हैं. तातें हमकों सरनि नाहीं लेत. तातें तुम सुखेन श्रीविटठलनाथजीकी सरनि जाऊ. तब उन ब्राह्मन - ब्राह्मनीनने देवीसों कह्यो, जो हम कौन प्रकार श्रीविटठलनाथजीकी सरन जांइ सो उपाय बतावो. तब देवीने कह्यो, जो चाचा हरिवंशजी श्रीगुसांईजीके अनन्य सेवक हैं. सो वे आगरेमे संतदासजीके घर उतरे हैं. तिनके सरन जाऊ. उन द्वारा तुमकों श्रीगुसांईजीके चरन प्राप्त होइंगे. तब उन ब्राह्मन - ब्राह्मनीने देवीकों दण्डवत् किये. और दोउ जने उठे. तब देवी अन्तरधान होइ गई. तब स्त्री - पुरुष द्वार पर तारो लगायकै पूछत - पूछत संतदासजीके घर आये. ता समै चाचा हरिवंशजी संतदास, सगरे वैष्णव महाप्रसाद ले कै बैठे हते. सो दोउ ब्राह्मन - ब्राह्मनीने आयकै सगरे वैष्णवनकों दण्डवत् किये. तब संतदासजी और चाचा हरिवंशजी पूछे, जो तुम कौन हो ? और काहेकों आए हो ? तब ब्राह्मनने बिनती करी, जो हमकों देवीने पठाये हैं. हम आगरेमें फलानी ठौर रहत हैं. कनोजिया ब्राह्मन हैं. सो तुम परम वैष्णव हो. हम तुम्हारी सरनि आए हैं. सो कृपा करिकै हमारो अङ्गीकार करो. यह सुनिकै चाचा हरिवंशजीने और संतदासने कह्यो, जो तुम तो ब्राह्मन हो और हम क्षत्री हैं. सो तुम हमकों दण्डवत् करी सो बोहोत अनुचित बात करी. और हम तो श्रीविटठलनाथजीके सेवक हैं. तातें तुमकों सरनि जानो होइ तो श्रीगोकुलमे श्रीविटठलनाथजी बिराजत हैं. तिनकी सरनि जाऊ. ता करिकै तुम्हारो सकल कार्य सिद्ध होइगो. यह सुनिकै ब्राह्मन - ब्राह्मनीने बिनती करी, जो तुमकों दण्डवत् किये तें हमारे कोटान कोटि प्रतिबन्ध - पाप दूरि होत हैं. सो हमसों देवीने कह्यो है. और हम तो तुम्हारे सरनि आए हैं. सो तुम हमकों कृपा करिकै श्रीगुसांईजीके सेवक करावो. हम तो महादुष्ट हैं. जन्म - जन्म तें दुष्ट कार्य करत आये हैं. सो तुम द्वारा हमारो उद्धार होइगो. यह सुनिकै संतदासजी चाचा हरिवंशजीसों कहे, जो अब कहा कर्तव्य है ? जीव तो दोउ दैवी हैं. और सरिन आइवेकी आतुरता है. यह सुनत ही चाचा हरिवंशजीकों करुना आई. सो वाही समै उठिकै ठाढ़े भये. और कह्यो, जो ब्राह्मन - ब्राह्मनी हमारे सङ्ग चलेंगे. तब संतदासजीने चाचा हरिवंशजीसों कहे, जो ये जेष्ठके दिन हैं दुपहरीकौ समै है. तातें आज तो आये हो, काल्हि जैयो. ये तो

सरनि आय चूके हैं. दोई दिन पिछें लेकै जैयो. यह बचन संतदासजीके चाचाजी सुनिकै कह्यो, जो श्रीगुसांईजीकौ प्रागटय दैवी जीवनके उद्धारार्थ ही हैं. सो जीवनके लिये तहां तें जगतमे पधारे हैं. इतनो श्रम कियो है. सो हम ढील करें सो उचित नाहीं हैं. ताते जीवकों ले कै अवस्य अब ही जानो उचित है. या बातमे हमकों श्रम नाहीं है.

भावप्रकाश :
यामें यह जतायो, जो भगवदीय परमार्थी होत हैं. जा भांति जीवकों भगवत्प्राप्ति बेगि होंई सोंई कार्य करत हैं. तामें उनकों श्रम होत नाहीं. ऐसें उदार होत हैं. और उनकों स्वारथ लेस होत नाहीं. सो कृष्णदासजी गाए हैं. सो पद -

राग - मालव
श्रीविटठलनाथ बसत जीय जाकें ताकी रीति प्रीति छबि न्यारी ।
प्रफुलित बदन कांति करुनामय नैननमे झलके गिरिधारी ।।
उग्र स्वभाव परम परमारथ स्वारथ लेस नहीं संसारी ।
आनन्द रूप करत एक छिनमे हरिजुकी कथा कहत विस्तारी ।।
मन वच कर्म ताहीकौ संग कीजे पयत ब्रज युवतिन सुखकारी ।
'कृष्णदास' प्रभु रसिक - मुकुटमनि गुन - निधान श्रीगोवर्द्धनधारी ।।

यह सुनिकै संतदास कहे, धन्य चाचाजी. तुम ऐसें अन्तरङ्ग वैष्णव हो. हम तुम्हारे सत्सङ्गके लिये दोइ दिन रहिवेकी बात कही. तातें अब तो बेगि तुम इन जीवनकों कृतार्थ करो. तब वह चाचाजीकी दयालता देखीकै ब्राह्मन और ब्राह्मनीके नेत्रनमे तें आंसूनकी धार चली. जो ऐसें दयाल श्रीगुसांईजीके सेवक हैं ? जो परमारथके लिये ऐसी दुपहरिमे उठि चले. तब चाचाजीने ब्राह्मन - ब्राह्मनीसों कह्यों, जो तुम घर तें कछु कामकाज होई सो करिकै बेगि आओ. तहां ताईमे ठाढो हुं ? तब ब्राह्मन बिनती कियो, जो महाराज ! अब हमकों घर तें

कहा प्रयोजन है ? तुम कहोगे सो करेंगे. तातें चलो श्रीगोकुल चलिये. यह सुनिकै चाचाजी मनमे बोहोत प्रसन्न भए. जानें, घर आदिमे इनकों वैराग्य अधिक है. तातें इनकों दान हू अधिक होइगो. पाछें चाचा हरिवंशजी कहे, जो ब्राह्मन ! हम जानत हैं. जो तुमकों अब घर तें कछू प्रयोजन नाहीं हैं. तातें श्रीगुसांईजीकी कछू भेंट करनकों ले चलो. तब ब्राह्मन - ब्राह्मनी घर आये. सो ब्राह्मनी तो अपनो गहनो और रोक जो कछु रुपैया हते सो लीने. और ब्राह्मनके पास कछु द्रव्य नाहीं हतो. जो पावे सो ब्राह्मनीकों देहि काहेतें, स्त्री पतिव्रता सत्य पवित्र हैं तातें. सो ब्राह्मनके घर श्रीभागवत और दुर्गापाठकी पोथी और सालिग्राम और एक देवीकी मूरति ही. सो यह ले कै घरके द्वार उपर तारौ लगाय तत्काल चाचाजीके पास दोरे आये. तब चाचाजी और चारों वैष्णव अपने सङ्ग ले कै संतदासजीसों अत्यन्त स्नेहसों बिदा होइकै श्रीगोकुल ब्राह्मन - ब्रह्मनीकों सङ्ग ले कै चले. सो मार्गमें भगवद्वार्ता पुष्टिमार्गकौ सिद्धान्त चाचाजी चार वैष्णवनसों कहत चले. सो चारों वैष्णव और दोउ ब्राह्मन - ब्राह्मनी कौ मन महारसमें जांय पर्यो. सो काहूको देहाध्यास बाधक न भयो. कोई कों तृषा लगी कछू न लगी. और रात्रि परी ताहूकी सुधि नाहीं. सो अर्द्धरात्रि तें कछू दोई चारि घरि उपर गई ता समै चाचाजी वैष्णव, ब्राह्मन सहित श्रीगोकुल साम्है 'मोहनपूर' गाम है ताहां आय पहोंचे. तब वैष्णवकों सुधि राहकी आई. सो चाचाजीसों कहे, जो सो चाचाजी ! अपने श्रीगोकुलके साम्है गाम है तहां आय पहोंचे हैं. तब चाचाजी कहे, जो रात्रिकों इहां रहिये. प्रातः श्रीगोकुल चलेंगे. तब दोउ ब्राह्मन - ब्राह्मनी ने श्रीगोकुलकों साष्टाङ्ग दण्डवत् किये. ताही समै दोउ ब्राह्मन मलाह बैठे हते, सो चाचाजीकौ बोल सुनिकै आपुसमें विचार किये, जो श्रीगुसांईजीके सेवक चाचाजी आए हैं. या समै जो पाप चले तो नाव बंधी हैं. पार उतारि दीजे. तब मलाहनके मनमें आई, जो आछौ. तब वह मलाह चाचाजीके पास आइ बिनती कियो, जो महाराज ! नाव तैयार हैं. तब चाचाजी कहे वैष्णवनसों और ब्राह्मनसों, जो उठो चलो. या प्रकार अपने जीवकों श्रीगुसांईजी खेंचत हैं ? तब चारों वैष्णव, ब्राह्मन - ब्राह्मनी दोउनकों लेकै चाचाजी नाव पर आये. तब मलहान नाव पार लगाय दीनी. तब चाचाजी कछू उतराई रुपैया एक प्रसन्न होंइ देन लागे. तब मलाहन चाचाजीसों कही, जो महाराज ! आपकी कृपातें हमारे सब कछू है. कोई बातकी न्यूनता नाहीं हैं. सगरो जगत है, तहां लेवेकों थोरो ठिकानो है ? तब चाचाजी हंसिकै चूप व्है रहे. तब ब्राह्मनी रूपैया देन लागी. तब मलाहन कही, जो हम श्रीगुसांईजीके सेवकसों कछू लेत नाहीं. हमसों कछू सेवा टहल नाहीं बनि आवत तो भलो कछू इनसों लियो तो न चहिए.

भावप्रकाश :

यह कहि यह जतायो, जो श्रीगोकुलके मलाहनमें हू श्रीगुसांईजीकी कृपासों एसो भगवद्धर्म दृढ़ हैं. तातें श्रीगोकुल सगरों अलौकिक जाननो.

यह सुनिकै चाचाजी उन मलाहनके उपर बोहोत प्रसन्न भये. तब श्रीनवनीतप्रियाजीकौ जो महाप्रसाद पास हतो सो दियो. तब मलाहन कह्यो, जो हां ! हमें यह चाहिये. पाछें चारौ वैष्णव ब्राह्मन - ब्राह्मनी सहित श्रीगुंसाईजीके द्वार उपर जांइके द्वारकों नमस्कार किये. तब विष्णुदास पोरियाने कही भीतर तें, जो या समै को यहां आयो है ? तब चाचाजी विष्णुदाससों भगवद्स्मरन किये. तब विष्णुदास तत्काल उठिकै किवार खोलिकै चाचाजी और सबनकों भगवद्स्मरन किये. तब विष्णुदासने चाचाजीसों कह्यो, जो श्रीगुसांईजीकी बैठकमें जांइकै वैष्णव सहित विश्राम करो. तब चाचाजी सब वैष्णवनकों लेकै श्रीगुसांईजीकी बैठककों नमस्कार किये. पाछें वैष्णव ब्राह्मन सहित सबनने विश्राम किये. तब चाचाजी सबकौ समाधान करिकै आपहू विश्राम करे. सो ब्राह्मन - ब्राह्मनीके हृदयमें ऐसो आनन्द भयो. सो नींद नाहीं आई. पाछें जब घरी दोई रात्रि पाछिली रही बाकी तब चाचाजी उठे. ब्राह्मन - ब्राह्मनीकों उठाये. चारों वैष्णवनकों उठायो. सो देहकृत्य करिकै न्हायकै सब बैंठे. इतनेमें श्रीगुसांईजी उठिकै बैठकमें पधारे. तब चाचाजी दोउ ब्राह्मन - ब्राह्मनीकों दण्डवत् कराये. चारों वैष्णव सङ्गके हते सो दण्डवत् किये. तब श्रीगुसांईजी चाचाजीसों पूछे, जो तुम तो आगरे गये हते सो अब आये ? और इन ब्राह्मन - ब्राह्मनीकों कहां ते लेत आए ? तब चाचाजीने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! ये ब्राह्मन - ब्राह्मनी आगरेमें रहत हैं. सो इतनी आरति आपके सरन आयवेकी बोहोत है. तातें इनकों लेकै रात्रिकों हम आगरे तें आए हैं. तब ब्राह्मन - ब्राह्मनीनने दण्डवत् करि बिनती करी, जो महाराज ! हम महादुष्ट हैं. सदा लौकिकासक्ति करिकै पशुकी नांइ होइ रहे हैं. सो हम उपर कृपा करिकै सरनि लैकें हमारो उद्धार करिये. यह दैन्यताके बचन सुनिकै श्रीगुसांईजी प्रसन्न भये. तब उन ब्राह्मनसों श्रीगुसांईजी पूछे, जो तुमकों एसो ज्ञान कहां तें भयो ? तब ब्राह्मनने कही, जो महाराज ! हम देवीकी पूजा अनन्य भावसों करते. सो अर्द्धरात्रि समै देवी हमकों साक्षात् दरसन देती. ता पाछें हम खानपान करते. सो चाचाजी वैष्णव सहित हमारे द्वार पर चोंतरा उपर रात्रिकों रहे. सो वह देवी सगरी रात्रि चाचाजीकों पंखा किये. पाछें प्रातःकाल हमारे पास आई. तब हम पूछ्यो. तब देवीने आपकौ प्रताप आपकौ स्वरूप कह्यो है. तातें हमकों ज्ञान भयो है. नांतरु हम माया करिकै मोहित कलियुगके जीव हैं. सो हमकों ज्ञान कहां तें होइ ? यह सुनिकै श्रीगुसांइजी आज्ञा किये, जो माहात्म्य

ज्ञान सहित सरनि आवत हैं. ताकौ दान विसेस होत हैं. ऐसें कहिकै श्रीगुसांईजी छीवे पधारे. पाछें दांतिन करिकै न्हाये. पाछें तिलक करि उन ब्राह्मन - ब्राह्मनीने दण्डवत् करि ब्रह्मसम्बन्धकी बिनती किये. तब श्रीगुसांईजी कहे, एक उपवासकी रीति है. तब ब्राह्मन - ब्राह्मनीने कह्यो, जो महाराज ! दोइ उपवास भये हैं. एक दिन तो देवी नाहीं आई तातें उपवास भयो. और दूसरे दिन घरतें यहां आपके चरनारविन्दके सन्मुख चले सो उपवास भयो है. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो पहिले दिनकौ उपवास भयो सो तो देवीके लिये भयो. सो तो ब्रह्मसम्बन्धमें काम न आवे. वा उपवास ते तो महाप्रसाद लेकै ब्रह्मसम्बन्ध ले सो आछो. और काल्हि जो उपवास भयो सो ठीक है. तातें राजभोग सरे पाछें ब्रह्मसम्बन्ध दोउनकों करावेंगे. तब दोउ जनें प्रसन्न होंइकै श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् किये. पाछें श्रीगुसांईजी मन्दिरमें पधारे. श्रीनवनीतप्रियजीकों जगायकै पाछें मङ्गलभोग धरें. ता पाछें समै भये भोग सराइकै मङ्गला आर्ति किये. सो सब वैष्णवन दरसन किये. वा ब्राह्मन - ब्राह्मनीनें हू दरसन किये. पाछें श्रीगुसांईजी सिंगार करिकै पालने झूलाए. पाछे राजभोग धरे. समै भये तब भोग सरायकै पाछें ब्राह्मन - ब्राह्मनीनकों मन्दिरमें बुलाये. श्रीगुसांईजी दोउनके हस्तमें तुलसीदल देकै ब्रह्मसम्बन्ध कराये. पाछें तुलसीदल ले प्रभुनके चरनारविन्द आगें समर्पन किये. ताही समै ब्राह्मन - ब्राह्मनीनकों महारसकौ दान भयो. तब दोउ स्त्री - पुरुष श्रीगुसांईजीकी बैठकमें आये बैठे. पाछें श्रीगुसांईजी अपनी बैठकमें पधारे. गादी तकिया उपर बिराजे तब स्त्री अपनो गहनो और जो कछू रोकडि हती सो सब श्रीगुसांईजीकी भेंट कियो. और पुरुषने सालिग्राम देवीकी मूरति, भागवतकी पोथी और दुर्गापाठकी पोथी भेंट करी. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो तुम ब्राह्मन हो, अपनी पूजा और पोथी क्यों भेंट करत हों ? तब स्त्री - पुरुषने कही, जो महाराज ! हम इनकों सर्वस्व जानत हते सो हम अब समर्पन किये. स्त्रीकौ सर्वस्व द्रव्य हतो सो भेंट कियो. अब हमकों आपके चरन कमलकौ आश्रय है. और काहू बातमें मन नाहीं. तातें अब आपु जो बतावोगे सो करेंगे. जा प्रकार हमकों पुष्टिमार्गके फलकी प्राप्ति होंई. अन्याश्रय न होंइ. सो उपाय आप कहोगे. सो हम करेंगे. हम अज्ञानी हैं कछू समझत नाहीं. तातें हमारो भलो होइगो सो आप करोगे. यह सुनिकै उह ब्राह्मनके उपर श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भये. तब पञ्चामृत मंगायकै सालिग्रामकों प्रथम न्हवाये. सो श्रीमदनमोहनजीकौ स्वरूप भयो. पाछें देवीकों पञ्चामृतसों न्हवाये. सो श्रीस्वामिनीजीकौ स्वरूप भयो, हस्तमें कमल लिये. तब श्रीगुसांईजी उह ब्राह्मन और ब्राह्मनीसों कहे, जो यह स्वरूप पुष्टिमार्गीयकौ सर्वस्व हैं. इनकी सेवा पुष्टिमार्गकी रीतिसों तुम करियो. पाछें श्रीगुसांईजी 'सर्वोत्तम' ग्रन्थ अपनो कियो सो दियो. और आज्ञा किये, जो याके पाठ तें वेदपुरान श्रीभागवत्, गीता, शास्त्र सबकौ पाठ भयो जानियो. यह दोउ पदार्थ पुष्टिमार्गके फलरूप

जानि करियो. ता करिकै तुमकों सदा पुष्टिमार्गकौ अनुभव होइगो. तब अत्यन्त प्रेमसों श्रीमदनमोहनजी श्रीस्वामिनीजी सहित पधराए. पाछें श्रीगुसांईजी भोजन करनकों पधारे. पाछें भोजन करि जूंठनिकी पातरि इन दोउ स्त्री - पुरुषकों धरी. सो दोउ जनेंन महाप्रसाद लिये. पाछें श्रीगुसांईजी अपनी बैठकमें गादी तकिया उपर बिराजे. तब दोउ स्त्री - पुरुष महाप्रसाद ले कै पाछें श्रीगुसांईजीके पास आयकै दण्डवत् करी. तब श्रीगुसांईजी दोउनके उपर प्रसन्न होंइकै अपने श्रीमुख तें चर्वित ताम्बुलकौ उगार दिये. सो दोउ जनेनकों पुष्टिमार्गकौ सिद्धान्त हृदयारूढ भयो. पाछें दिन चारि दोउ स्त्री - पुरुष श्रीगोकुलमें रहे. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार पधारे. तब स्त्री - पुरुष श्रीगुसांईजीके सङ्ग श्रीजीद्वार गए. तहां श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करे. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन श्रीगुसांईजीकी कृपा तें इन दोउ स्त्री पुरुषकों लीला सहित भए. पाछें पांच रात्रि श्रीनाथजीद्वार रहे. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारे. तब स्त्री - पुरुष श्रीगुसांईजीके सङ्ग श्रीगोकुल आए. तब स्त्री - पुरुष दोउ जनें अपने मनमें विचारें, जो अब आगरेमें चलिए. नित्य श्रीगुसांईजीके घरकौ महाप्रसाद लेनो उचित नाहीं है. तब दूसरे दिन प्रातःकाल ब्राह्मन - ब्राह्मनीने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! वैष्णवके सङ्ग बिना हमारी बुद्धि दृढ़ कैसें रहेगी ? और अब आगरे जाइवेकौ विचार है. सो आपकी कहा आज्ञा है ? यह सुनिकै श्रीगुसांईजी प्रसन्न व्है कहे, जो आगरेमें संतदासजी श्रीआचार्यजीके सेवक हैं तिनकौ सङ्ग नित्य करियो. और चाचा हरिवंशजी तुम्हारे सङ्ग जाइंगे. तिनसों सब प्रकार पूछि लीजियो. राजभोगके दरसन करिकै जइयो. तब स्त्री - पुरुष दोउ जनें श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिकै पाछें न्हाए. मङ्गला आर्ति करिकै पाछें दरसन करे. ता समै श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो आजु तुम पालनेके दरसन करियो. सो दोउ जनें श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मानिकै जगमोहनमें बैठि रहे. पाछें जब पालनेके दरसनकौ समय भयो तब श्रीगुसांईजी उनकों बुलाये. तब स्त्री - पुरुष दोउ जनें भीतर जांइ पालनाके दरसन किये. सो नन्दालयकी लीलाकौ सब दरसन भयो. ता करिकै परमानन्दकौ अनुभव भयो. पाछें राजभोग आयो. समय भयो भोग सर्यो. राजभोगकी आर्तिके दरसन दोउन किये. पाछें स्त्री - पुरुष बैठकमें आय बैठे. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजीकों अनोसर करायकै पाछें अपनी बैठकमें पधारे. तब दोउ जनें बिदा होंइकै आज्ञा मांगिकै दण्डवत् किये. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो महाप्रसाद ले कै जैयो. पाछें श्रीगुसांईजी भोजन करनकों पधारे. तब भोजन करिकै दोउ जनेंकों दो पातरि जूंठनिकी अपने श्रीहस्तसों धरी. पाछें श्रीगुसांईजी अपनी बैठकमें पधारे. गादी तकिया पर बिराजीकै बीरा अरोगत भए. तब स्त्री - पुरुषकों आज्ञा किये, जो महाप्रसादकी पातरि धरी हैं सो दोउ जनें जांईकै महाप्रसाद लेऊ. तब दोउ जनें जांइकै महाप्रसाद लियो. पाछें श्रीगुसांईजीके पास आये. तब श्रीगुसांईजी दोउ जनें कों कृपा

करिकै चर्वित ताम्बुलको उगार दियो. तब दोउ जनें अत्यन्त प्रीति सहित श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् किये. तब श्रीगुसांईजी दोउ जनेंनसों कहे, आछे स्नेहपूर्वक भगवद्सेवा करियो, नेम सहित. तैसें ही नेमपूर्वक संतदासके कहिवेमें रहियो. और 'सर्वोत्तम' के पाठ नेम करि जो बने सो अवश्य करियो. या प्रकार दोउ जनेंकों शिक्षा परम कृपा करिकै श्रीगुसांईजी दिये. तब दोउ जनें श्रीगुसांईजीके चरनकमल पर प्रेम विह्वल व्है गिरि परे. पाछें कहे, जो महाराज ! हम तो अज्ञानी जीव हैं. कछू नाहीं जानत. अब आपके चरनकमलकौ आश्रय कियो है. ताही करिकै हमकों सर्व पदारथ प्राप्त भयो है. और आपकी कृपा तें और हू होयगो. या प्रकार दोउ जनेंकी दैन्यता सुनिकै श्रीगुसांईजी चाचा हरिवंशजीकों बुलाए. तब चाचाजीसों कहे, तुम इन वैष्णवके साथ आगरे जाउ. प्रथम गये जा कार्यकों. सो कार्य हू नाहीं भयो इनके सङ्ग उठि आए हो. सो आगरे जांइकै महिना एक संतदासजी वैष्णवके घर और रहियो. ये अब ही प्रथम वैष्णव भए हैं. इनकों सीख देह मार्गकौ सिद्धान्त बतायकै पाछें वागा वस्त्रकी सामग्री जन्माष्टमीके लायकको लेते आइयो. तब चाचा हरिवंशजी श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करी. पाछें चाचाजीके सङ्गके चार वैष्णव श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् किये. पाछें चाचाजी चलिवेकी तैयारी करी. पाछें स्त्री - पुरुष दोउ जनें श्रीगुसांईजीके चरनकमलकौ बारबार नमस्कार करिकै बिदा भये. तब श्रीगुसांईजीकौ हृदय भरि आयो. जो ऐसो स्नेह वैष्णवकौ हमारे में हैं. परि कहा करिये बिदा किये बिना नाहीं चलत. तातें बिदा करियत हैं. पाछें हरिवंशजी चारों वैष्णवन सहित और दोउ स्त्री - पुरुष सब आगरेकों चले. सो मार्गमें भगवद्वार्तामें लीलाके तरङ्गमें रसाविष्ट होइ गए. या भांति भगवद्वार्ता करत पांच दिनमें आगरे पहोंचे. तब हरिवंशजी उन दोउ स्त्री - पुरुषसों कहे, जो अब हम संतदासजीके घर उतारो करेंगे. तुम अब अपने घर जाऊ. तब दोउ स्त्री - पुरुषने हरिवंसजीसों बिनती करी, जो महाराज ! हमारे उपर कृपा करो. तुम्हारी कृपातें हमकों श्रीगुसांईजीके चरणारविन्द प्राप्त भये है. और हम अबही कछू पुष्टिमार्गकी रीति जानत नाहीं. तातें हमारे घर कृपा करिकै चलो. खासा - मर्यादा सेवकी सब सेवाकौ प्रकार रीतिभांति सब कृपा करिकै बतावोगे, तैसें हम करें. तातें दोइ चार दिन हमारे घरमें कृपा करिकै रहो. पाछें संतदासजीके घर जइयो. या भांतिसों दोउ जनेंनकी दीनता देखिकै चाचाजी बोहोत प्रसन्न भए. पाछें हरिवंशजी उन ब्राह्मनके घर गए. सो जात हीं सगरो घर पुताये. मृतिकाके पात्र सब काढ़ि डारे. सो सब नये ले कै सब जल भरायकै खासा किये. कांसी पीतरके पात्र पलटायकै नये लिये. कोरे मृतिकाके पात्रमें कोरो अन्न धरे. पाछें सखड़ी, अनसखड़ी चूल्ही चौको मन्दिरकौ ठिकानो किये. तहां श्रीठाकुरजीकों पधराए. ता दिन हरिवंशजी रसोई किये. सामग्री सिद्ध भए पाछें भोग श्रीमदनमोहनजीकों आये. पाछें समै भए भोग सराय राजभोग आर्ति करिकै पाछें

अनोसर कराय, पाछें हरिवंशजीके सङ्ग चार वैष्णव हते और ये दोउ स्त्री - पुरुष सहित हरिवंशजी महाप्रसाद लिये. पाछें सिंघासन खण्ड पाट खिलोना पिछ्वाई वागा वस्त्र सब सिद्ध कराये. पाछें उत्थापन तें ले कै सेन तांई पहुंचे. या प्रकार पांच दिन लों हरिवंशजीने सेवाकौ प्रकार स्त्री - पुरुषकों बताये. पाछें हरिवंशजी संतदासजीके घर आए. तब संतदासजी बोहोत प्रसन्न भए. पाछें रात्रिकों संतदासजीके घर भगवद्वार्ता नित्य होती सो दोउ स्त्री - पुरुष सेन मदनमोहनजीकों करायकै अनोसर करिकै संतदासजीके घर नित्यनेम करिकै आवते. सो उन पुरुषकों श्रीमदनमोहनजी सानुभावता जनावन लागे. चहिए सो मांगि लेते. या प्रकार उन स्त्री - पुरुषकों हरिवंशजीकी कृपा तें और श्रीगुसांईजीकी कृपा तें अनुभव होंन लाग्यो.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
पाछें एक दिन ब्राह्मनीके मनमें यह सन्देह आयो, जो सालिग्राम तें श्रीमदनमोहनजी कैसें भए ? और देवीसों श्रीस्वामिनीजी कैसें भए ? तब वह स्त्रीने अपने पुरुषसों पूछ्यो. तब ब्राह्मनने अपनी स्त्रीसों कह्यो, जो चाचा हरिवंशजी परम भगवदीय है. तिनसों पूछेंगे. तब सन्देह दूरि होइगो. पाछें रात्रिकों संतदासजीके घर स्त्री - पुरुष दोउ जनें आये. सो भगवद्वार्ता चाचाजी और संतदासजी करि चुके तब उह ब्राह्मनने चाचाजी हरिवंशजीसों कही, जो महाराज ! हमारे घर प्रथम सालिग्राम और देवीकी मूरति हती. सो श्रीगुसांईजी जब पञ्चामृत स्नान कराये तब सालिग्राम तें श्रीमदनमोहनजी भए. और दैवीतें श्रीस्वामिनीजी होंइ गए. सो कारन कहा ? तब चाचा हरिवंशजी उन ब्राह्मनसों समुझायकै कह्यो, जो सालिग्राम अक्षरब्रह्मकौ स्वरूप है. अक्षरके भीतर लोकवेद प्रसिद्ध पुरुषोत्तम हैं. लोकवेद प्रसिद्ध पुरुषोत्तमके भीतर लोक वेदातीत पुष्टि पूरन पुरुषोत्तम हैं. सो ऐसें पुरुषोत्तमके सम्बन्धी श्रीगुसांईजी हैं. तातें इनके श्रीहस्त परस तें रसात्मक पुरुषोत्तमकौ प्रादुर्भाव भयो. तातें श्रीमदनमोहनजी भये. और देवीसो सक्ति हैं. सो सब लक्ष्मीकौ अंश हैं. सोउ श्रीगुसांईजीके श्रीहस्त कमलके परसतें देवीतें श्रीस्वामिनीजीकौ प्रादुर्भाव भयो. तातें ऐसी निधि श्रीगुसांईजीकी कृपातें मिली हैं. तातें सावधान व्है स्नेह संयुक्त सेवा करियो. यह सुनिकै स्त्री - पुरुष दोउ जनें चाचाजीकों नमस्कार किये और मनमें बोहोत प्रसन्न भए. पाछें अत्यन्त स्नेह संयुक्त भगवद्सेवा दोउ जनें करते. भाव करि विप्रयोग दसामें अष्ट प्रकहर रहते. या प्रकार चाचा हरिवंशजी महिना एक आगरेमें रहिकै पाछें संतदासजीसों अत्यन्त प्रीति संयुक्त बिदा होंईकै पाछें उन दोउ स्त्री - पुरुष तें बिदा होंन आए. तब दोउने चाचाजीकी बोहोत स्तुति

करी. जो महाराज ! तुम कृपा करिकै हम सारिखे महाघोर संसारमें परे हते तिन पर दया करी. सो कही जात नाहीं. या भांति बिनती बोहोत करि यथासक्ति दोउ स्त्री - पुरुषने अपनी - अपनी न्यारी - न्यारी भेंट दीनी. और चाचाजीसों कहे, जो तुम हमकों अपने दास जानिकै बेगि ही फेरि दरसन दीजो. और श्रीगुसांईजीको सब लालजीनकों, बहू - बेटीनकों हमारी दण्डवत् कहियो. समस्त वैष्णवनसों भगवद् स्मरन कहियो. सो या प्रकार दोउ स्त्री - पुरुषके वचन सुनिकै चाचाजी मनमें बोहोत प्रसन्न भए. पाछें दोउ जनें चाचाजीकों पहोंचावन चले. तब चाचाजी दोउ जनेंनकौ बोहोत समाधान करि घरकों पठायो. पाछें चाचाजी श्रीगोकुल आए. श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् किये. पाछें उन ब्राह्मन - ब्राह्मनीनकी दण्डवत् करि भेंट आगें धरी. तब श्रीगुसांईजी हरिवंशजीकों पूछे, जो वे दोउ वैष्णव आछें हैं ? तब चाचाजी दोउनके सब समाचार कहे. और बोहोत प्रशंसा करी. जो इन दोउ जनेंकौ स्नेह बोहाते हैं. तब श्रीगुसांईजी कहे, शुद्ध पात्रमें रस बेगि ठहरात हैं. उन माहात्म्य सहित जानिकै सरनि आए तातें बेगि उनकी सिद्धि भई. या प्रकार श्रीगुसांईजी कहे.

सो वे दोउ स्त्री - पुरुष श्रीगुसांईजीके परम कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१४८।।

१४९-एक साहुकारके बेटाकी बहू, सूरतकी

अब श्रीगुसांईजीके सेवक एक साहुकार, ताकौ बेटा और ताकी बहू सूरतमें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :

सो बहू तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'नवोढा' है. इनकौ स्वरूप बोहोत सुन्दर हैं. वे परम चतुर हैं. ये श्रीचन्द्रावलीजीकी अन्तरङ्ग सखी हैं. ये 'कमला' तें प्रगटी हैं. तातें इनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वह साहुकार सूरतमें रहत हतो. सो ताके बेटाकी स्त्रीकौ रूप बोहोत हतो. सुन्दर हती, नवजोबन हती. सो एक समै स्त्री ऋतु समै न्हाईकै अपने घरके पाछें वाड़ामें केस सुकावति हती. सो ता समै एक म्लेच्छ राजाकौ चाकर सो घोड़ा उपर बैठिकै तापीकौ जल प्यायवेकों जातो. सो घोड़ा उपर तें वाकी दृष्टि वा स्त्री पर परी. तब वाने घोड़ाकों ऐंड़ मारी. सो घोड़ा वाड़ा उल्लङ्घिकै वा स्त्रीके समीप जांईकै ठाढ़ो भयो. पाछें वाने घोड़ा तें उतरिकै वाकौ हाथ पकर्यो. तब वह स्त्री चक्रत होंइ रही. परि वह स्त्री चतुर बोहोत ही हती. तातें मनमें विचारी, जो अब इहां तो कोऊ नाहीं, और यह बात रीत विरुद्ध भई. परि अब तो पुकारोंगी तो सब कोई आइकै जुरेंगे. तो लोकमें यह बात प्रसिद्ध होइगी. लोक तो दुराचारी हैं. और मेरे मनकी तो प्रभु जानत हैं. ऐसें विचारिकै वा तुरकसों वह बोली, जो तुम मेरो हाथ छोड़ो, तुम कहोगे सो मैं करोंगी. तब वह तुरक प्रसन्न भयो और हाथ छोरि दीनो. इतने ही भरि जोर तमाचो मारिकै थपेड़की वाके मुख पर दे कै और घरमें भाजि गई. और घरके किवाड़ मारि लीने. तब वा तुरकको घनो दुःख लाग्यो. कह्यो, जो देखो, स्त्री जननें मोकों थपेड़ मारी. तो धिक मेरो जीयवो. ता पाछें विचारी, जो अब तो इहां कछू अर्थ नाहीं. ता पाछें वह तुरक घोड़ाकों ऐंड़ दे कै बाहिर निकर्यो. ता पाछें घोड़ाकों जल प्यायकै अपने घर गयो. ता पाछें विचार्यो, जो अब तो मेरो नाम सही तब जो वा स्त्रीकों दासी करों. ऐसें विचारि करिकै राजद्वारकी चाकरी छोरी. राजमें कह्यो, जो हों अब मेरे देस जाउंगो. ता पाछें अपनी चाकरीकौ द्रव्य हो सो लै कै अपने घर आयो. ता पाछें वा स्त्रीके घरके आसपास नित्य फिरे. सो एक डोकरी वाके घर नित्य जाति हती. सो वह डोकरी वाकों न्हवावें, चोटी करे. ऐसी टहल सब करे. सो वा डोकरीकों नित्य आवति जाति देखिकै वह तुरक वा डोकरीके घर गयो. और वासों मैया कहिकै बोल्यो. ता पाछें वो डोकरी पास जल मांग्यो, जो मैया ! मोकों थोरो जल पिवाय देउगी ? तब वाने जल पिवाय दिया. सो वानें एक रुपैया काढ़िकै वा डोकरीके हाथमें दीनो. तब डोकरी घनी प्रसन्न भई. ता पाछें वहां बैठ्यो. तब डोकरीने आदर कर्यो. आसन दै कै बैठार्यो. ता पाछें वाने कह्यो, जो मोकों भूख लागी है. तब वा डोकरीने रसोई करिकै परोस्यो. तब दोइ रुपैया और दीने. पाछें वा डोकरीके घर नित्य आइकै बैठे. बातें करे, वाकों पूछे पाछें. खान - पान करे. ता पाछें एक रुपैया वाकों नित्य देवे. ता पाछें वा डोकरीसों पूछ्यो, नित्य तुम कहां जात हो ? तब उन डोकरीने कह्यो, जो अमूके साहके घर जात हों. तिनके बेटाकी बहूकों

नित्य न्हवावत हों, चोटी करत हों. तब वह मोकों कछू अन्न देत है तासों मेरो निर्वाह होत है. तब तुरकने वा साहुकारकौ नाम पूछ्यो, ता पाछें कह्यो जो वह गोरीसी इतनेक बरसकी, ऐसो मुख है, ऐसो रूप है, ताकौ नाम कहा है ? तब वा डोकरीने बतायो और कह्यो जो वा साहके बेटाकी बहू है. ता पाछें वाने नाम कह्यो. सो सब वा तुरकने लिखि लियो. ता पाछें वा डोकरीसों नित्य वा स्त्रीके सम्बन्धीके दोइ - चार नाम पूछे. तब डोकरीने कह्यो, जो हों तो जानति नाहीं. तब वह तुरक कहे, जो आज पूछी आइयो. सो डोकरी नित्य पूछे, जो अमूकी ! तेरे पिताकौ नाम कहा है, तेरे दादाकौ नाम कहा है ? सो वह स्त्री बतावें. सो वह डोकरी वा तुरकसों कहे सो वह तुरक लिखतो जांई. ऐसें दोइ चारि नाम नित्य लिखें. ऐसें करत सात पुरखा सुसरारिके और सात पुरखा पिताकी ओरके नाम लिखे. ता पाछें आसपासके गाममें तें ढूंढिकै एक वेस्याकी छोरी वेसेही समान वयकी वैसी ही रूपकी देखिकै वाकों कछूक द्रव्य देनो करिकै वाकों लायो. ता पाछें वाकों वे नाम सब पढ़ाय सिखायकै सावधान करिकै ता पाछें वा साहकी बहूकी साड़ी चोली, वाकी रीति प्रमान सिंगार खोटो खरो करिकै ता पाछें वाके सरीरकी चिबुकपै कारो तिल हो, सो वा डोकरीसों पूछि राख्यो हतो. सो वेसोई स्याईकौ तिल कर्यो. हरतकौ ठाढ़ो कर्यो. ता पाछें सब वाकों सीखाईकै कह्यो, जो तुम ऐसें राजद्वारमें बोलियो. ऐसो कहियो. ता पाछें साहुकारके घरके पाछें वा वेस्याकों ठाढ़ी करिकै कह्यो, जो तोकों राजद्वारके मनुष्य बुलावनकों आवेंगे. तब तू वाके साथ चली आइयो. ता पाछें तोकों पूछे तब तोकों सिखायो है तेसो ताकों उत्तर दीजियो. यह कहि वह तुरक राजद्वारमें गयो. तब पुकार्यो. कह्यो, जो साहिबजू ! एक साह अमूकेकी बहूकौ मेरे सङ्ग मिलाप है. सो मेरे सङ्ग बिटली है. सो अब हों मेरे देस चलिवेकों कहत हों, तब वह कहत है, जो हों तेरे सङ्ग चलूंगी. सो घनी लागू भई है. परि न जानें काल्हि कहा बात है ? स्त्री जातिकौ विश्वास नाहीं. तातें सिपाई भेजकै वाकों बुलाइए. और बुलाइकै पूछिये. मोकों लिख्यो दरबारकौ करवाय देहु. और तुम अपने लागेकौ द्रव्य मो पास तें लेहु. तब हाकिमने कह्यो, जो वे कहां है ? तब वा तुरकने कह्यो, जो वाके घर है. सो वाकों मनुष्य बुलायवेकों पठवाइ देऊ. तब वह स्त्री आवेगी. तब वाकों पूछिकै लिखो करि दीजिए. तब हाकिमने वाकों बुलायवेकों मनुष्य पठायो. तब वा तुरकने मनुष्यसों कह्यो, जो तुम अमूके साहूकारके घरके पाछें वह वाकी बहू ठाढ़ी है सो बुलाय ल्याउ. तब वह मनुष्य बुलावनकों गयो. तब वह उहां ठाढ़ी ही. सो वासों मनुष्यने कह्यो, जो तोकों राजद्वार बुलाई है. तब राजद्वारमें आईकै वह ठाढ़ी भई. तब हाकिमने पूछ्यो. जो तू याके सङ्ग जायवेमें राजी है ? तब वा स्त्रीने कह्यो, जो हों याके सङ्ग जाइवेमें राजी हूं. मेरे आजु बरस दोयकौ सङ्ग है. सो हों बिटल गई हों. सो हों याके सङ्ग जाउंगी. तब

हाकिमने नवींसदानसों कह्यो, जो तुम याकौ नाम सब कुटुम्बकौ नाम, और याके सरीरके चिन्ह सब लिखि लेहु. सो वा तुरकने उन नवींसदानसों कह्यो, जो तुम मोकों लिखो याकौ करि देहु. ता पाछें उन सब वाकौ नाम, कुटुम्बकौ, सात पुरुखा पिताकौ और सात पुरखा सुसरारके नाम, और सबनके नाम लिखे. और वाके मुखके बचन सुनिकै सब चिन्ह लिखे. पाछें सब राजद्वारके लोग और भले मानसके लोग सबनकी गवाई करवाई. और राजकी मोहोर छाप करवाई. ता पाछें लिख्यो करिकै वा तुरकको हाथमें दीनो. विनकों बिदाय कीनो. तब यह अपने डेरा आयकै वेस्याकी छोरीकों वाके गाम पहोंचाय आयो. सो वाकों द्रव्य बद्यो हतो सो वाकों दीनो. ता पाछें दिन चारि - पांच बीते तब राजद्वार जांइकै फिरिकै पुकार्यो, जो साहिब ! वह स्त्री अब फिरि वा साहुकारके घरमें गई. मोसों कछू बात करत में बदल गई. सो अब कहत है, जो तेरे सङ्ग सर्वथा न आउंगी. मोसों मिलि खायो, मोसों जल पियो और बिटलके पाछें वाके घरमें गई. मेरो द्रव्य खायो और राजद्वारमें इतनो द्रव्य भर्यो. तातें तुम हमारो न्याव करो. नांतरु हों मरोंगो. तुम्हारे माथे जीव देउंगो. तब हाकिमने मनुष्य पठवाईकै वा साहुकारकों बुलायो. तब वासों हाकिमने एकान्तमें ले जांइकै सब बात समाचार कहे. और वह लिख्यो बतायो. और कह्यो, जो तुमकों इतनी घरकी सुधि नाहीं ? ऐसी कहा है ? भले, भई सो भई. परि तुम भली जानो तो वा स्त्रीकों घरमें राखो मति. वह स्त्री बिटल गई है. वाने यहां आइकै सब कह्यो है. तातें तुम वाकों या तुरकके साथ करि देऊ. याही में तुम्हारो भलो है. तब वा साहुकारने कह्यो, जो हों घरमें जांईकै पूछों. पाछें कहूंगो. मोकों या बातकी ठीक नाहीं. तब हाकिमने कह्यो, जो अब कहा ठीक करोगे ? वह तो राजद्वारमें आईकै इह लिख्यो करवाईकै गई है. और अब स्त्रीकी जातिकै इतबार नाहीं. तातें हम अब कैसें छोरेंगे ? सर्वथा याकों दिवावेंगे. पाछें तुम राजी होऊ सो करो. ऐसो कहिकै हाकिमने अपने चार मनुष्यनसों कह्यो, जो वा साहूकारके साथ तुम चार जनें जांइकै वाके बेटाकी बहू जो तुम्हारे कहे सूधी आवे तो भली और नाहीं तो तुम याके घर भीतर धसिकै वाकी चोटी पकरिकै इहां ल्याउ. पाछें उन मनुष्यनके साथ साहूकारने जांईकै घरमें यह बात सबनसों कही. तब वह स्त्री तो कहे, जो हों तो घरके बाहिर हू नाहीं गई. सो तुम घरकी स्त्रीनसों घरके लोगनसों पूछो. और हों तो कछू या बातमें जानति नाहीं. और घरके हू सब स्त्री लोगनने कह्यो, जो ऐतो कहूं घरके बाहिर जात नाहीं. हमारे पास आठों पहर बैठि रहति है. ऐसें कही. परि वे राजके मनुष्य माने नाहीं. और कह्यो, जो हम याकों तुम्हारे पीछवारे तें बुलायकै लै गए हे. और याने सब लिख्यो करवायो है. तातें हम तो याकों लिए बिनु नाहीं जांहि. हमारे धनीकी आज्ञा है. ऐसें कहिकै वाके घरमें धसिकै वा स्त्रीकी चोटी पकरिकै घीसी. तब वह स्त्री रोवे. घनो विलाप करें. कोऊ सुने नाहीं. वाकों तो राजद्वार

ले जान लगे. तब वाने अपने ससुरसों कह्यो, जो भले ! तुम मेरे साथ राजद्वारमें आवो. और मेरे पिताकों बुलाउ. तुम सब ढींग ठाढ़े रहो. ता पाछें जुवाब तो सुनोगे. पाछें तुम कहोगे सो हों करोंगी. ता पाछें वाकों राजद्वारमें ले जांइकै ठाढ़ी करी. तब तो घूंघट लाज कछू कर्यो नाहीं. और बूझ्यो सो सब कह्यो. पाछें वा तुरकने कही, जो अब यह स्त्री - चरित्र कहा फेलायो है ? अब चले नाहीं. यह कछू ख्याल नाहीं. इतनेकी गवाही हैं. ऐसें लिख्यो तैं करवायो है. ता पाछें वह लिख्यो और पुरुषानकौ नाम और देहके चिन्ह सब बांचि सुनायो. तब वा स्त्रीने कह्यो, जो हों तो कछू जानति नाहीं, जो यह कैसे भयो है. और यह कहांकौ ? ऐसें कहिकै रोवे और मूंड पीटे. तब राजद्वारके सब कोऊ कहे, जो यह स्त्री झूठी है. तातें याकी कोऊ कछू मानो मति. स्त्री जनकौ विश्वास नाहीं. तब हाकिमने कही, जो याको या तुरककों देहु. और दोउनकों बाहिर काढ़ि देहु. तब वा स्त्रीने कह्यो, जो न जाने यह कहा कोप भयो है ? और कैसें लिख्यो भयो है ? परि प्रभुनकौ कछू कोप है. परि भले, हों अब तो झूठी भई हों. तातें मेरो कह्यो कौन माने ? परि पृथ्वीपति पास हम दोउनकों दिल्ली आगरे पठवाउ. उहां पृथ्वीपति पात्साह पास चलो. काहे तें, जो हों तो कछू जानत नाहीं और कछू देख्यो हू नाहीं. और न जाने यह लिख्यो कैसें भयो ? परि हों मेरी देहत्याग करूंगी. मेरो भोग पूर्व जन्मकौ आयो है. परि हों याकों मेरे सरीरकों हाथ लगावन नाहीं देउंगी. हों तो देह त्याग करूंगी. तुम्हारे यावद् जीवन लों यह कलङ्क टरेगो नाहीं. तातें तुम मेरी साथ चलो. कदाचित् पृथ्वीपतिमें प्रभुकौ अंश है और उहां जो या बातकी समझि परे तो तुम्हारो और मेरो कलङ्क मिटे. पाछें साहुकारने हाकिमसों कही, जो पृथ्वीपति पास न्याव होयगो. तातें हमकों पृथ्वीपति पास भेजो. तब हाकिम और राजद्वारके लोग मिलिकै वे तुरककौ पत्र लिखि दीनो. ता पाछें वे सब उहां तें चले. सो केतेक दिनमें पृथ्वीपति पास आये. तब पृथ्वीपतिने घनो न्याय कियो, चतुराई करी. और राजकाजके लोगनसों मिलिकै विचार्यो. परि कछू समुझ परे नाहीं. तब वा स्त्रीसों पूछ्यो, जो यह कहा है ? तब वाने कही, हों तो कछू जानत नाहीं, जो यह कहा कोप है ? पाछें वा तुरकने तो सबनकों लिख्यो दिखायो. तब वह लिख्यो सांचो भयो और वह स्त्री झूठी भई. ता पाछें वाके सङ्ग पृथ्वीपतिने वह स्त्री करि दीनी. तब वह ले कै चल्यो. सो जमनाजीके पार उतर्यो. तब आगें वह तुरक चल्यो जात है पाछें वह स्त्री चली जात है. सो पाछें देखत जाति है और रोवत जाति है. और भाटेसों मूंड फोरे है. सो रुधिर निकस्यो है. सो सारी रुधिरसों भरी है. और मनमें प्रभुजीकौ चिन्तन करे है. ऐसें कल्पत चली जात है.

सो ता समै ‘निगमबोध’ श्रीजमनाजीकौ घाट है. सो किलाके नीचे ही है. सो श्रीगुसांईजी ता समै उहां पधारे है. सो निगमबोध घाट उपर स्नान करत है. ता समै पृथ्वीपति और बीरबल और राजा टोडरमल झरोखामें बैठे देखत हैं. ता समै श्रीगुसांईजीकी दृष्टि वा स्त्री पर गई सो वाने पाछें फिरिकै देख्यो, तब ही श्रीगुसांईजीने पहिचानी. जो यह दैवी जीव है. ता पाछें ओर लोग उहां ठाढ़े हते. तिनसों श्रीगुसांईजीने पूछ्यो, जो यह स्त्री कौन है ? क्यों रोवत है ? और याके साथमें म्लेच्छ है सो कौन है ? तब मनुष्यनने सब समाचार कहे.

सो इतने ही पृथ्वीपतिने राजा (टोडरमल) सों कह्यो, जो देखो. हम याकों स्त्री दीनी. परि कछू सन्देह रह्यो है. काहेतें, वह अपने सरीरकों घनो कल्पान्त करत है. माथो भाटासों फोरत है और रोवत है. तातें कछू कारन है. सो ऐसो कह्यो, सो श्रीगुसांईजीने सुन्यो. तब श्रीगुसांईजीने पृथ्वीपतिके सन्मुख देख्यो. तब श्रीगुसांईजीने पृथ्वीपतिसों कह्यो, जो तुम ऐसो न्याव कहा कियो ? वह तुरक तो झूठौ है. और स्त्री सांची है. वह तो प्रान त्याग करेगी. परि वाकों परस नाहीं करेगी. ऐसी पतिव्रता है. सो तुम्हारे सिर देहत्याग करेगी. तातें तुम इन दोउनकों मनुष्य पठवाइकै पाछें बुलाय मंगावो. याकौ न्याय हम आयकै करेंगे. तब पृथ्वीपति तो प्रसन्न भयो. और अपने चाकर चारि चोपदार पठवाए. और कह्यो, जो वे दोउ स्त्री और तुरक कों पाछें फेरि ल्याओ. तब वह चोपदार तुरत ही दोरे. सो दोउनकों पाछें फेरि ल्याए. सो दोउनकों न्यारे - न्यारे राखे. और उपर चोकी राखी. ता पाछें पृथ्वीपतिने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो आप पांव धारिये. ता पाछें श्रीगुसांईजी सन्ध्यावन्दन करिकै पोहोंचिकै ता पाछें पांव धारे. जहां पृथ्वीपति हतो तहां पधारे. सो पृथ्वीपति उठिकै श्रीगुसांईजीके सन्मुख हाथ जोरिकै ठाढ़ो रह्यो. तब श्रीगुसांईजी श्रीमुखतें आज्ञा किये, जो तुम बैठो. तब पृथ्वीपति बैठ्यो. पाछें श्रीगुसांईजी पृथ्वीपतिसों कह्यो, जो याकौ न्याव या प्रकार करो. जो कोऊ एक मनुष्यसों कहो, जो तुरकसों तुम छिपि जांइकै किवाड़ मारिकै आज हमारी आज्ञातें भीतर जागत बैठियो. परि वह तुरक जानें नाहीं, जो इहां कोऊ जागत है. और रात्रिमें यह दोउनकी बातें होंहि सो सब सुनिकै याद राखियो. सब बात राजद्वारमें सवारे आइ कहियो. ए काम हमारो जानिकै करनो, ऐसो वासों कहो. सो आजकौ दिन लौकिक प्रतीतिके लिये हम कहें सो करियो. तब पृथ्वीपतिने एक साहूकार भलो मनुष्य हो ताकों बुलाइकै सब बात समझाय कह्यो. सो वह वैष्णव हतो.

ता पाछें श्रीगुसांईजीनें वा स्त्रीकों एकान्त बुलायके वासों कह्यो, जो तुम्हारे दोइ पींजरा न्यारे या वैष्णवके द्वारे बाधेंगे. सो जब सब कोउ सोवे तब तुम वा तुरकसों हंसिकै बोलियो. इतने वह घनो मनमें प्रसन्न होइगो. ता पाछें तुम कहियो, जो सुनोजू ! अब तो पृथ्वीपतिने तुमकों दीनी. सो तो हों होई चुकी. परि तुम यह लिख्यो कैसें कीनो. सो बात मोसों कही चहिए. जो हों तुम्हारे पुरुषार्थ जानों तो तुम्हारे सङ्ग प्रसन्नतासों चलोंगी. ऐसी बात करिकै वा पास सब कहवाइयो. और वह सब मेरी इच्छा तें कहेगो. वाकौ पाप पूरो होंइ गयो है, सो फूटेगो. सो यह सुनिकै राजद्वारमें कहियो. सो इतने ही प्रतीत होइगी. सो तू तो चतुर है.

पाछें श्रीगुसांईजी वा स्त्रीकों लै कै राजद्वार गए. ता पाछें वे पींजरा दोइ मंगाये. वामें दोउकों बैठारे. ता पाछें तारौ दोउ पींजराकों मारिकै पाछें एकान्तमें वा साहुकार वैष्णवकों बुलायकै पाछें पृथ्वीपतिकों देखाइ कह्यो, जो जागत रहियो. और जो बात होंइ सो सब हमसों सवारे कहियो. ता पाछें दोउ पींजरा साहूकारके द्वारे लै जांइकै धरे. ता पाछें सन्ध्या रात्रि भई और सब लोग तो सोये. तब वा स्त्रीने वा तुरककों पुकार्यो, कह्यो जो तुम काहेकों सोय रहे हो ? जागो तो कछू बात करें. तब वा तुरकने जान्यो, जो आज मेरो बड़ो भाग्य है, जो मोसों यह स्त्री बोली. ता पाछें वा स्त्रीने कह्यो, जो अब तो पृथ्वीपतिने हों तुमकों दीनी. परि एक बात हों तुमतें पूछत हों, जो तुम लिख्यो कौन भांतिसों करवायो है, सो बात मोसों कहिये. जो हों जानों, जो ऐसो तुम्हारो पराक्रम है, ऐसें तुम चतुर हो. और तो कोऊ नाहीं, जो सुने. तब भगवद् इच्छासों वाकौ मन भ्रमित भयो. तातें पाप गोप्य रह्यो नाहीं. ता पाछें वा तुरकने कह्यो, जो यह बात तोसों हों कहोंगो पाछें. तब वा स्त्रीने कह्यो, जो अबही काहे नाहीं कहो ? यहां तो तुम हम दोउ हैं. और तीसरो तो कोऊ नाहीं. तातें जो हों तुम्हारो सामर्थ्य जानों तो सुखेन तुम्हारे साथ चलूं. ता पाछें वा तुरकने कह्यो, जो वे दिनाकी तुमकों सुधि है ? जो मोकों तू थपेड मारिकै घरमें भाजि गई. तेरे घरके पाछें उहां तुम बार सुखावति हती तब मेरी दृष्टि परी. सो हों घोड़ाकों ऐंड दै कै भीतर आइकै उतर्यो. उतरिकै हाथ पकर्यो तब वा स्त्रीकों सुधि आई. तब कह्यो जो हां ! अब तो सुधि आई. परि हों थपेड याही तें मारी, जो याकों याद रहे. और तुम करोगे भले. तब और कहे, जो ता पाछें कौन उपाय कीने ? तब वा तुरकने कह्यो, जो मेरे वाही समै मनमें दुःख लग्यो. जो देखो स्त्री जन मोकों थपेड मारे तो मेरो जीवनो वृथा है. तातें मैं ऐसो उपाय कियो. तब वा स्त्रीने कह्यो, जो तोसों इतने नाम किन कहे ? और कैसें लिखे ? और वह ऐसो लिख्यो और यह सब कैसें भयो ? सो बात कहिये. तब वा तुरकने कह्यो, जो वह अमूकी

डोकरी तुम्हारे घर आवति हती सो वासों मिलिकै नाम सब तोसों पूछि आवती. सो मोसों कहे सो हों लिखत जाते. वाकों हों मैया कहि बोल्यो. और वाकों द्रव्य हू दीनो. पाछें जो प्रकार वा तुरकने कीने सो सब बात विस्तारकै कही, जो ऐसें एक वेश्याकी छोरी ल्यायो, ऐसें वाकों सिखायो. सो सब बात कही.

ता पाछें सब विगत कहि रह्यो तब वह साहुकार वैष्णव रखवारो खांस्यो. तब वा स्त्रीने कह्यो, जो तुम सुनते होंहि तो सुधि राखियो. तब वा साहुकारने कह्यो, जो मैं सब सुन्यो है और सब सुधि है. तातें तुम अब काहू बातकी चिन्ता मति करियो. तेरे सन्मुख प्रभुजीने देख्यो. ऐसें कह्यो. सो सुनत ही वा तुरककौ तो प्रान उड़ि गयो. और मनमें कह्यो, जो यह ऐसो कहा भयो ? ता पाछें थोरीसी देरमें प्रातःकाल भयो. ता पाछें श्रीगुसांईजी बेगि ही दन्तधावन करिकै पधारे. तब राजद्वार आये. तब पृथ्वीपतिने बोहोत ही सन्मान कियो. ता पाछें वे दोउ पींजरा खोलिकै मंगवाये. पाछें जा वैष्णवके द्वार पींजरा बांधे हते वाकों बुलायो. ता पाछें श्रीगुसांईजीने मनुष्य पठवाये. वा स्त्रीके पिता - सुसरकों बुलाये. ता पाछें प्रधान राजा टोडरमल तथा बीरबल तथा और हू सब कामदारनकों बुलायकै सभा सब सिद्ध करिकै ता पाछें पृथ्वीपतिसों श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो अब तुम या साहुकारसों पूछो, जो रात्रि कहा बात भई ? तब पृथ्वीपतिने कह्यो, जो सेठजी ! इन दोउनके पींजरनमें परस्पर कहा बातें भई ? तुमने कहा सुन्यो, सो सब कहिए. तब वा साहुकारने कह्यो, जो मैं तो सब बात समाचार सुने हैं. यह स्त्री सांची है. और वह तुरक तो महापतित हैं परि या तुरकसों पूछो, जो वह कहा बात करी ? और यह भूले तब हों कहोंगो. ता पाछें वाकों पूछ्यो. तब वा तुरकके मुखसों उत्तर नाहीं निकसे. वे तो पींजरामें बिन मारे ही मरि रह्यो. मरे भएके से सुखाई गयो. ता पाछें वा वैष्णव साहुकारनें सब बात कही, विस्तारिकै. तब वह वाड़ामें आईकै याकौ हाथ पकर्यो, पाछें स्त्रीने छुडायो सो कही. वाकों थपेड मारी सो कही. ता पाछें वा डोकरीके समाचार सब कहे. वाकों नाम और याके सरीरके चिन्ह लिखवाये, सो बात कही. ता पाछें वह वेश्याकी छोरी लायो और वाकों सब सिखायो, सो सब कह्यो. ता पाछें राजद्वार जांइकै वा वेश्याकी छोरीकों बुलायकै लेखो सब करवायो. और राजद्वारमें जांइकै द्रव्य दीनो, सो सब बतायो. ता पाछें वे आईकै वा वेश्याकों अपने गाममें पोहोंचाइकै आयो, सो कह्यो. और वाकों द्रव्य दीनो. ता पाछें दिन चारि पांचमें फिरिकै राजद्वारमें आयकै पुकार्यो, सो कह्यो. और सब बात विस्तारिकै कह्यो. और कह्यो, जो यानें जो बात कही सो तो मैं तुमसों कह्यो. और अब या बातकौ तुम विवेक करि लेहु. ता पाछें पातसाह वा तुरक पर

कोप्यो, कह्यो, जो याकों खरच करो. तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें पात्साहसों कह्यो, जो हम या बातमें आए तातें अब काहुकों जीवते तो मति मारो. और एक बात हों कहों सो सुनो. और ऐसें करो, जो तुम एक मनुष्य पठवायकै उहांके हाकिमकों बुलावो. वा डोकरीकों बुलावो, जो या बातकी प्रतीति सबनकों पूरी होई. और न्याव तो पूरो ही करो. जिन - जिन द्रव्य लै कै ऐसो न्याय खोटो कर्यो है उनकों ठीक पारिकै दण्ड देहु. तब लों हम रहेंगे. ता पाछें वा तुरककों बन्दीखानेमें दियो. ता पाछें पृथ्वीपतिने श्रीगुसांईजीसों बोहोत ही स्तुति करिकै कह्यो, जो मेरो धर्म राख्यो. नांतरु यह दोष और या स्त्रीकी हत्या मेरे माथें पड़ती. तातें आप बड़े ही ईश्वर हो. जो ईश्वर बिनु ऐसो न्याय कौन करें ? ता पाछें उनकों एक मनुष्य पठवायो. और कह्यो जो उनकों तुरत ही ल्याऊ. ता पाछें श्रीगुसांईजी डेरा पांव धारे. ता पाछें वा स्त्रीसों कह्यो, जो तू तेरे पिता, सुसरके पास जा. तब स्त्रीने कह्यो, जो महाराजाधिराज ! हों अब कहां जाउं ? मेरे तो राज बिना और कोऊ नाहीं. कदाचित् मेरे कोऊ और जो होतो तो मोकों छोरिकै कैसें जातो ? तातें अब तो राजकै चरनकमल बिनु और आश्रय नाहीं. तब श्रीगुसांईजीने वा स्त्रीसों कह्यो, जो तू हमारी बेटी है. तातें अब तू काहू बातकी चिन्ता मति करे. परि हम कहें सो करि. तू अपने घर जाहि. और अब तेरे सन्मुख प्रभुने देख्यो है. अब तोकों सब स्फुरत हैं. तातें तू अपने घर जांईकै श्रीठाकुरजीकी सेवा करि. ता पाछें वाके पिता, सुसरकों बुलायकै श्रीगुसांईजीने उनसों कह्यो, जो यह कोऊ अलौकिक जीव है. याकों धीरज धन है. या समान धीरज कोऊ नाहीं. तातें तुम याकों समुझायकै घर लै कै जाउ. और यह कहे सो तुम करियो. ता पाछें वा स्त्रीने कह्यो, जो महाराज ! हम तो कोऊ वैष्णव नाहीं. और अब तो हों इनके सङ्ग नाहीं जाउं. ता पाछें वह सब श्रीगुसांईजीसों बिनती करिकै सरनि आए. तब श्रीगुसांईजीने कृपा करिकै वाकौं आत्मनिवेदन करवायो. और वाके घरकों, सबकों सरनि लिए. तब ये वैष्णव भए. ता पाछें ये सब श्रीगुसांईजी पास उहांही रहे. पाछें वा हाकिम वा डोकरी सब आए. तब पृथ्वीपतिने श्रीगुसांईजीकों बुलाये. तब श्रीगुसांईजी पधारे. पाछें सब सभा जुरी. तब राजाने श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो अब इनकों कहा पूछनो, कहा करनो ? सो आपकी आज्ञा प्रमान करिए ? तब श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो वा डोकरीसों सब बात पूछो. तब वा डोकरीसों पूछ्यो, जो सब सांची कहि. तब वा डोकरीने जो बात भई सो सब कही. और कह्यो, जो हों तो भोरी, सो मैं तो दगा ना जान्यो. सो ये तुरक मोसों कहे ता प्रमान नाम या स्त्रीसों पूछि - पूछिकै यासों कहती. और याके देहके लक्षन चिन्ह हू मैं बताये. ऐसे कीनो. अब आपकी इच्छामें आवे सो मोकों करिये. ता पाछें वा वेश्याकों पूछ्यो, तब वाहूने जो प्रकार कर्यो सो सब कह्यो. जैसें इन सिखायो और इन नाम सिखाए. तैसे ही मैं कह्यो. और कीनी, जो हमारो तो

यह उद्यम है. जो द्रव्य देहि ताकौं कहों. जो कछू कहि सों करनो. ऐसी सुन्दर देह द्रव्यकी लालच तें उनके अर्पन करते हैं. ता पाछें हाकिमसों पूछ्यो, और कह्यो, जो तैंनेइ द्रव्यकी लालचसों न्याव कियो है ? तब हाकिमने कह्यो, जो साहब ! मोकों याके कपटकी कछू समुझि परी नाहीं. तब श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो तैं पाछें तें याके सुसरकों काहेकों बुलायो ? तैं पहिले ही याके सुसर सम्बन्धीनकों बुलाय पूछ्यो क्यों नाहीं ? जो यह कहा कहत हैं ? सो सत्तातें उन्मत होइकै ऐसोई न्याय करत है ? तब हाकिमने कह्यो, जो हों चूक्यो तो सही. तब श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो तुम तो चूके परि इनकौ तो सर्वस्व गयो ? और या स्त्रीके प्रान जाते. ऐसो करम कियो. पाछें पात्साहने हुकम कियो, जो यह सबनकों खरच करो. तब श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो ऐसें मति करो. हों कहों सो करो. पाछें श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो वा डोकरीकों तो कछू द्रव्यकौ दण्ड करो. और या वेश्याकौ घर सब लूटि लेहु. और या हाकिमकों हटाईकै और हाकिम करो और सब द्रव्य लूटि लेहु. जासों और कोऊ ऐसो न्याय करे नाहीं. और वा तुरककी नाक काटिकै सब द्रव्य छिन लेहु. और याको छोरि देहु. ता पाछें जैसें श्रीगुसांईजीने कह्यो वैसे ही पात्साहने कियो. पाछें पात्साह श्रीगुसांईजीकों भेट द्रव्य बोहोत देन लाग्यो. परि कछू लीनो नाहीं. ता पाछें पात्साहनें घनी प्रनपति करिकै कह्यो, जो हों आपकौ चाकर हौं. जो कार्य मो लायक जैसो होइ तैसो आप कृपा करिकै कहोगे ! और आप मो पर कृपा राखोगे. मेरी राज - काजकी लाज आप राखी हैं, सो हों आपकौ दास हों. ता पाछें श्रीगुसांईजी उहां तें विजय किये. सो श्रीनाथजीद्वार पांव धारे. और वह स्त्री और वाकौ पिता - सुसर सब साथ ही हैं. सो इन सबनने श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. ता पाछें ब्रजकी परिक्रमा करी. पाछें केऊ दिन श्रीगोकुलमें रहिकै श्रीगुसांईजी पास श्रीमुखकी कथा सुनी. ता पाछें मारगकी रीति श्रीगुसांईजीसों पूछी, सो श्रीगुसांईजीने कृपा करिकै कही. ता पाछें वा स्त्रीने श्रीगुसांईजीसों बिनती करिकै, लालजीकी सेवा पधरायकै, श्रीगुसांईजीसों बिदा होइकै अपने देसकों सब चले. तब श्रीगुसांईजी वा स्त्रीकौ घनो समाधान कियो. और वाके सुसर, धनीसों कह्यो, जो तुम सुनो. तुम्हारो धर्म और लौकिक लाज या स्त्रीने राखी है. और याकौ ताप श्रीठाकुरजी सहि ना सके. और याकी आर्तिसों तुम हू वैष्णव भये. तुम या बाई कहे सो, और जा बातमें यह बाई राजी रहे सो करियो. याही मैं तुम्हारो भलो है. यह अलौकिक जीव है, आधिदैविक है. या समान धीर कोऊ नाहीं. जो अत्यन्त दुःख पड़े धीरज राख्यो. अपनो धर्म खोयो नाहीं. ताहीकों दैवी कहिये. ता पाछें सब लोग बिदा होंइकै अपने घर आये. ता पाछें जैसें श्रीगुसांईजीकी आज्ञा ही तैसें ही सेवा करन लागे. आज्ञा प्रमान सब कारज करे. ऐसें करत थोरेसे दिनमें श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे. और वा स्त्रीके सकल मनोरथ पूरन करे. और घरके लोग हू सब याकी

आज्ञामें चलन लागे. ऐसें जो अपनो धर्म राखे वाके आधीन सब होंई.

भावप्रकाश : या वार्तामें यह जताए, जो वैष्णव कैसोहू सङ्कट आमें तामें धीरज न छोरे. जानें जो, प्रभु सब भली करत है. तातें या प्रकार विश्वास राखि उन ही कौ आश्रय करे. तातें सब कारज सिद्ध होंई.

सो वह स्त्री श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ? वार्ता ।।१४९।।

१५०-उद्धव त्रवाडी, गुजरातके

अब श्रीगुसांईजीके सेवक उद्धव त्रवाडी नागर ब्राह्मन, गुजरातमें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'रेणुका' है. ये 'कमला' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै श्रीगुसांईजी गुजरातकों पधारे हुते. तब उद्धव त्रवाडीकौ नाम दियो हतो. पाछें ये श्रीगुसांईजीके पास रहे. सो बड़े कृपापात्र भगवदीय भये. जिनके उपर श्रीगुसांईजी सदा प्रसन्न रहते.

सो कितनेक दिन पाछें उद्धव त्रवाडीने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! जिनके उपर आपकी कृपा होंइ तिनकों अन्य सम्बन्ध कैसें होंई ? तब श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो जिनके हृदयमें स्वरूप दृढ़ भयो है तिनकों अन्य सम्बन्ध उपजे नाहीं. यह सुनिकै उद्धव त्रवाडी

बोहोत प्रसन्न भए. पाछें उद्धव त्रवाडीने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! आपकी कृपा जीवकों बताओ तब जानि परे. और आपकौ स्वरूप हृदयारूढ होइ तब अन्याश्रय करे नाहीं. तब जानिए, जो जीवकों श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकौ स्वरूप हृदयारूढ भयो. मार्ग सगरो स्फुर्यो. तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख तें आज्ञा किये, जो त्रवाडी ! है तो ऐसेंई.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

बहोरि एक समै श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी पधारे. तब उद्धव त्रवाडी सङ्ग हुते. सो श्रीरनछोरजीके दरसन करिकै बोहोत प्रसन्न भए. सो केतेक दिन श्रीगुसांईजी श्रीरनछोरजीके दरसन किये. ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारे. तब उद्धव त्रवाडी हू श्रीगोकुल आये. सो श्रीगुसांईजी तो स्नान करिकै श्रीनवनीतप्रियजीके मन्दिरमें पधारे. सो राजभोग पर्यन्तकी सेवासों पहोंचिकै अपनी बैठकमें पधारे. तब उद्धव त्रवाडी श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन करिकै श्रीगुसांईजीके पास आये. तब श्रीगुसांईजीने उद्धव त्रवाडीसों पूछी, जो त्रवाडी ! तुमने श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन किये ? तब उद्धव त्रवाडीने कही, जो महाराज ! आपकी कृपा तें दरसन किये है. परि श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करवाओ तो बोहोत आछौ है. पाछें श्रीगुसांईजी भोजनकों पधारे. और त्रवाडीकों महाप्रसादकी पातरि धरवाई. ता पाछें तत्काल श्रीगुसांईजी उद्धव त्रवाडीकों सङ्ग ले श्रीगोवर्द्धननाथजी आए. सो स्नान करिकै श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजीके मन्दिरमें पधारे. सो सेन भोगके दरसन किये. तब उद्धव त्रवाडीने हू दरसन किये. सो दरसन करिकै दण्डवत् कीनी. तब त्रवाडी देहकौ अनुसन्धान भूलि गए. तब श्रीगुसांईजीने श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ चरनामृत दै कै सावधान किये. ता पाछें श्रीगुसांईजी अपनी बैठकमें पधारे. तब उद्धव त्रवाडी हू बैठकमें आये. सो आयकै दण्डवत् कीनी. तब श्रीगुसांईजी श्रीसुबोधिनी की, टिप्पनी की, कथा कहे. सो सुनिकै उद्धव त्रवाडी बोहोत प्रसन्न भए. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप पोढे. तब त्रवाडी हू सोय रहे. पाछें प्रातःकाल त्रवाडीजीने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! आपकी आज्ञा होंई तो ब्रजपरिक्रमा करिए. तब श्रीगुसांईजीने आज्ञा दीनी, जो परिक्रमा अवस्य करनी. पाछें उद्धव त्रवाडीके सङ्ग एक वैष्णव पठायो. सो वा वैष्णवसों कह्यो, जो इन उद्धव त्रवाडीकों ब्रजयात्रा करवाय ल्याओ. तब वह वैष्णव और त्रवाडी प्रथम तो बिदा होंईके चले. सो श्रीगिरिराजजीकी परिक्रमा कीनी. पाछें केतेक दिनमें चोरासी कोसकी परिक्रमा करिकै फेरि श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. ता पाछें उद्धव त्रवाडीने श्रीगुसांईजी दरसन करिकै बिनती कीनी, जो महाराज ! आपकी कृपा तें सर्व मनोरथ सिद्ध भये हैं. तब श्रीगुसांईजीने

श्रीमुखतें कह्यो, जो श्रीगोवर्द्धननाथजी तो भक्तके मनोरथ पूरन करत हैं. यह सुनिकै त्रवाडी बोहोत प्रसन्न भए. पाछें उद्धव त्रवाडी श्रीगुसांईजीसों बिदा व्हे अपने देस आयो.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजीके स्वरूपमें दृढ निष्ठा होंई तब सगरो पुष्टिमार्ग स्फुरायमान होई. और अन्य सम्बन्ध हू न होंई.

सो वे उद्धव त्रवाडी श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ? वार्ता ।।१५०।।

१५१-सीताबाई, बडनगरकी

अब श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी, सीताबाई और उनकी माता अचलबाई नागर ब्राह्मनी, बड़नगरमें रहती, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सीताबाई तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'गोवर्द्धनी' है. और गोवर्द्धनीकी एक सहचरी है. वाकौ नाम 'शिला' है. सो यहां माता भई. ये 'इश्वरी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

ये बड़ेनगरमें एक द्रव्यपात्र नागर ब्राह्मनके घर जन्मी. सो बरस आठकी भई. तब इनकौ ब्याह एक जातिके लरिकासों भयो. ता पाछें महिना एक पाछें लरिका सीतलाके रोगमें मर्यो. सो सीताबाईने लौकिक कछू जान्यो नाहीं. सो वह बोहोत ही मुग्ध हूती.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो एक समै श्रीगुसांईजी द्वारकाजीकों श्रीरनछोरजीके दरसनकों पधारे हुते. तब मार्गमें बड़नगर आयो. सो श्रीगुसांईजीने तहां डेरा किये. तब वह सीताबाई नागर ब्राह्मनीकों श्रीगुसांईजीके दरसन भए. सो दरसन करिकै बोहोत प्रसन्न भई. सो ता समै और हू वैष्णव श्रीगुसांईजीके दरसनकों उहां ठाढ़े हुते. सो कोऊ नाम पावत हुतो. कोऊ बिनती करत हुतो. सो सीताबाई देखे. तब सीताबाईने हू श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मोकों सेवक कीजिए.

और सीताबाईकी महतारी हती. वाकौ नाम अचलबाई हुतो. सो वह बोहोत वृद्ध हती. सो हू सीताबाईके सङ्ग हती. सो श्रीगुसांईजी सीताबाईकों आज्ञा किये, जो तुम दोउ स्नान करिकै आवो. तब सीताबाई और वाकी महतारी अचलबाई दोउ स्नान करिकै आई. तब श्रीगुसांईजीने उनके उपर कृपा करिकै नाम सुनायो. ता पाछें वाकी महतारी नाम पाइवेकों बैठी. तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें महावाक्य अष्टाक्षर मन्त्रकौ उच्चार कियो. सो वह मन्त्र तीनि बेर कह्यो. ता पाछें उन श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो महाराज ! ऐसी रीतिके बचन तो मोकों आवत नाहीं है. तब श्रीगुसांईजी मुसिक्यायकै उनसों कहे, जो मेरो नाम तो जानत है ? तब वा बाईने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! ए तो मैं जानत हूं. ता पाछें श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो मेरो नामकौ जप करियो. ऐसें वा बाईसों कहे. पाछें सब वैष्णवनकों जतायो, जो तुम सब हमारे नामकौ सुमिरन मति करियो. काहेतें, जो तुमकों तो अष्टाक्षरकौ दान कियो है. तातें तुम अष्टाक्षर जपियो.

भावप्रकाश :
यह कहि श्रीगुसांईजी आपु अपने नामकी गोप्यता जताए. सो श्रीगुसांईजीकौ नाम परम फलरूप है. तातें जाकों वे कृपा करि दान करे वाहीकों वा नामकौ अधिकार प्राप्त होंई.

ता पाछें वा बाईने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! हमकों निवेदन कराइए. पाछें सेवा पधराइ दीजिए. तब श्रीगुसांईजीने कृपा करिकै उन बाईनकों निवेदन कराइ भगवत्सेवा पधराइ दीनी. सो सीताबाई श्रीठाकुरजीकौ मन्दिर बनवायकै श्रीठाकुरजीकों पाट बैठाये. सो भली भांति सेवा करन लागी. सो श्रीगुसांईजी वा बाईकों सखड़ी, अनसखड़ीके प्रकारकौ ज्ञान बताए. और उहां केतेक दिन बिराजे. ता

पाछें श्रीगुसांईजी वा बाईसों बिदा होंइकै श्रीद्वारिकाजीकों आए. सो श्रीरनछोरजीके दरसन किये. ता पाछें उहां केतेक दिन रहिकै श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारे.

ता पाछें वा बाईकों श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे. और बातें करते. जो चहिए सो मांगि लेते. सो ऐसें करत बोहोत दिन बीते. तब इनकी माता मरी. ता पाछें वा बाईकी देह हू असक्त भई. सा इनने हू देह छोरी. सो समाचार केतेक दिनमें वैष्णवन श्रीगुसांईजीके आगें आयकै कहे. तब श्रीगुसांईजी सीताबाईकी बोहोत सराहना किये. और कह्यो, जो वा बाईकौ स्वभाव तो बोहोत आछो हतो. जो कछू बातमें समुझति नाहीं.

सो वह सीताबाई और उनकी माता श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं. सो कहां तांई कहिए ? वार्ता ।।१५१।।

१५२-एक श्रोता - वक्ता, असारवाके

अब श्रीगुसांईजीके सेवक एक श्रोता, एक वक्ता, दोउ राजनगर असारवामें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें श्रीचन्द्रावलीजीकी दोउ सखी है. 'वचनमाधुरी' और 'श्रवनमाधुरी' इनके नाम हैं. सो श्रोता तो श्रवनमाधुरी है और वक्ता वचनमाधुरी. ये 'ईश्वरी'तें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप है.

ये दोउ राजनगर असारवामें बनियानके जन्मे. सो दोउनके घर भाईला कोठारीके घरके पास हते. सो दोउनकी बालपने ते प्रीति बोहोत हुती. सो दोउ

सङ्ग रहते. कथा - वार्ता सुनते. पाछें दोउनकौ ब्याह भयो. ता पाछें कछूक दिनमें दोउनके माता - पिता मरे. तब ये भाईला कोठारीके घर जांइवे लगे. सो भाईला कोठारी दोउनकों दैवी जानि उन पर बोहोत प्रीति करते. नित्य भगवद्वार्ता कहते. सो दोउनकी प्रीति श्रीगुसांईजीके स्वरूपमें भई.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

बहोरि श्रीगुसांईजी राजनगर असारवा पधारे तब भाईला कोठारीके घर बिराजे. तब भाईला कोठारीके सङ्गतें वे दोउ जनें श्रीगुसांईजीके सेवक भए. नाम - निवेदन पाए. पाछें स्त्रीनकों हू सेवक कराए. सो भाईला कोठारीके घर दोउ जनें नित्य भगवद्वार्ता सुनिवेकों जाते. सो उहां तें भगवद्वार्ता सुनिकै जब घर आवते तब ये दोउ जनें मिलिकै उहां सुनि होंई सो वार्ता करते. सो वक्ता कहतो, श्रोता सुनतो. पाछें केतेक दिनमें ये दोउ जनें अपनी स्त्रीनकों सङ्ग ले कै श्रीगोकुलकों आए. श्रीगुसांईजीके दरसन किये. तब श्रीगुसांईजीने इनतें पूछी, जो वैष्णव. तुम कब आए ? तब इन कही, जो महाराजकी कृपा तें श्रीनवनीतप्रियजीके राजभोगके दरसन आय करे. तब श्रीगुसांईजीने उन वैष्णवनपै कृपा करिके कही, जो महाप्रसाद यहांई लीजो. पाछें श्रीगुसांईजी भोजनकों पधारे. सो सब भोजन करि चुके तब आचमन करिकै बीड़ा अरोगे. गादी उपर बिराजे. ता पाछें उन वैष्णवननें महाप्रसाद जूंठन लीनो. पाछें पांच सात दिन श्रीगोकुलमें रहिकै पाछें श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, महाराजकी आज्ञा होंई तो ब्रजयात्रा करें. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो आछो, करि आवो. तब वे दोउ ब्रजयात्रा करिकै श्रीनाथजीद्वार आए. श्रीनाथजीके दरसन करिकै पाछें फेरि श्रीगोकुल आए. सो श्रीनवनीतप्रियजीके सेनके दरसन किये. पाछें श्रीगुसांईजी कथा कहन लागे. सो इन वैष्णव श्रीमुखके बचन सुने. पाछें कथा होंइ चुकी, तब दोउ वैष्णवन तें श्रीगुसांईजीने पूछी, जो वैष्णव तुम कब आए ? तब उन कही, जो महाराजाधिराज ! श्रीनवनीतप्रियजीके सेनके दरसन किये. पाछें वे दोउ वैष्णव उठिकै अपने ड़ेराकों गए. पाछें पांच - सात दिन श्रीगोकुलमें रहिकै पाछें वे दोउ वैष्णव श्रोता और वक्ता इन विचार कियो. जो ब्रजमें कोई एकान्त स्थल होंइ तहां चले. तब वे दोउ जनें श्रीगोकुल तें चले. और उन दोउनकी स्त्री श्रीगोकुलमें रही. पाछें वे दोउ श्रोता और वक्ता सुन्दर एकान्त स्थल देखिकै उहां बैठे. सो भगवद्वार्ता करन लागें. सो श्रोता सुने और वक्ता कहे. सो दोउ जनें भगवद्रसमें लीन भए. सो उनकों देहानुसन्धान कछू न रह्यो. सो कछू लौकिक सम्बन्धी कछू देहकौ बाधा न करें. सो ऐसें करत चालीस दिन बिते. पाछें एक दिन ग्वारिया गांइ चरावन आवते सो उनने कही, जो ये दोउ महापुरुष हैं. देखो, इनकों चालीस दिन भए. कछू अन्न जल लीनो नाहीं. तातें

इनकों कछू दूध देइ तो आछो. पाछें इन ग्वारियानने अपने लोटामें गऊ दुहिकै दूधसों लोटा भरिकै उनकें आगें धर्यो. तब उन वैष्णवन कही, जो भगवद् इच्छा तें आय प्राप्त भयो है. तब उन वैष्णवनने भोग धरिकै वह प्रसादी दूध लियो. पाछें भगवद्वार्ता करन लागे. सो ऐसें ग्वारिया नित्य दूध दे जांय. सो उतनो दूध लेनो. और बैठे भगवद्वार्ता करनी. सो ऐसें करत छ्ह महिना ब्यतीत भए. ता पाछें एक दिन उन दोउ वैष्णवनकी भगवद्वार्ता करत देह छूटि गई. दोउ भगवल्लीलामें प्राप्त भए. पाछें उनकी देहकों जीव - जन्तु भक्षण करि गए. और उनके अस्थी उहां परे रहे. पाछें उन दोउनकी स्त्री श्रीगोकुलमें हती. सो दोउ जनीं उनकों ढूंढत - ढूंढत वाही ठौर जांई निकली. सो देखो तो उहां उन ग्वारियान गांइ चरावत हते. तब इन वैष्णव बाईननें वा ग्वारियान तें पूछी, जो - यहां कोइ दोइ वैष्णव देखे ? तब उन कही, जो हां हां ! दोई वैष्णव इहां बैठे हते. सो हमने छ्ह महिना तांइ देखे. पाछें उन जोऊ जनेंनकी देह छूटि गई. ऐसें ग्वारियानने कही. तब उन वैष्णवनकी स्त्रीनें पूछी, जो वे कहां बैठे हते ? तब उन ग्वारियानने वह स्थल बतायो. सो उहां देखे तो अस्थी परी हैं. तब उन स्त्रीननें कही, जो अब कैसें खबरि परे ? तब वा श्रोताकी स्त्रीने कही, जो मैं तो अपने पतिकी अस्थी पहचानि लेउंगी. तब उन वक्ताकी स्त्रीने कही, जो कैसें पहचानेगी ? तब श्रोताकी स्त्रीने कही, जो मेरे पति तो श्रोता है. सो भगवद्वार्ता सुनिकै उनकी अस्थीमें छेद परे हैं. पाछें श्रोताकी स्त्रीने छेद वारे अस्थी सब बीनि लीने. और वक्ताकी स्त्रीने विना छेदके लीने. पाछें उन दोउनकौ अग्नि - संस्कार कीनो. पाछें वे दोउ स्त्री श्रीगोकुलमें आय रही. और वे दोउ वैष्णव नित्य लीलामें जांइ प्राप्त भए.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णवकों भगवद्वार्ता या प्रकार कहनी सुननी. काहेतें, जो भगवद्वार्ता स्वरूपात्मक है. तातें उनकों प्रीति पूर्वक हृदयमें धारन किये तें देहके अध्यास सब छूटि जात हैं. सो भगवद्वार्ता ऐसो पदार्थ है.

सो वे श्रोता और वक्ता दोउ श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए ? वार्ता ।।१५२।।

१५३-एक कायस्थ आगरेकौ

अब श्रीगुसांईजीके सेवक एक कायस्थ आगरेकौ, सूरतके सूबा पास दीवानगीरी करतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :

ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'दर्शनातुरी' हैं. ये बड़े उपनन्दकी बेटी हैं. सो यह श्रीठाकुरजीके स्वरूपमें आसक्त हैं. तातें यह 'दर्शनातुरी' श्रीयशोदाजीके घर बार - बार श्रीठाकुरजीके दरसनकों आवति हैं. सो श्रीयशोदाजी वाकों बरजति हैं. कहति हैं, जो तू मेरे मन्दिरमें मति आवें. तू बावरी भई है. तातें मेरे लालाकों दीठ लगेगी. या प्रकार श्रीयशोदाजी 'दर्शनातुरी'कों श्रीठाकुरजीके दरसन करावति नाहीं. ये 'ईश्वरी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वह कायस्थ सूरतके सूबाके पास दीवानगीरी करतो. सो एक समै वह कायस्थ राजनगर कछू कार्यार्थ आयो. सो ता समै श्रीगुसांईजी राजनगरमें बिराजत हुते. तब इन कायस्थकों श्रीगुसांईजीके दरसन भये. तब इन श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! मोकों सरनि लीजिये. तब श्रीगुसांईजीने वाकों नाम सुनायो. पाछें वह कायस्थ तो सूरत गयो. और श्रीगुसांईजी ब्रजमें पधारे. ता पाछें देशाधिपतिने सूरतके सूबाकों बुलायो. सो सूबा देशाधिपतिके पास आयो. तब वह कायस्थ दीवान सङ्ग हतो. सो देशाधिपतिसों मिलिकै पाछें चले. सो श्रीगोवर्द्धनमें डेरा भए. तब सूबाने कही, जो तीसरे पहरकों यहां तें कूच करेंगे. तब यह कायस्थने विचारी, जो श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करें तो आछौ. तीसरे पहर कूच होइगो. तब वह कायस्थ गोपालपुर आयो. श्रीगुसांईजीके दरसन किये. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीकी राजभोग आर्ति तो होंइ चुकी हती. पाछें श्रीगुसांईजीकों भेंट धरि बिनती करी, जो राजके पास मैंने राजगनरमें नाम पायो हतो. ता दिन आपके दरसन भए के आज भए. तब श्रीगुसांईजीने पूछी, जो श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये ? तब कायस्थने कही, जो महाराज ! मोकों तो जनम भरिमें एक हू बेर दरसन नहीं भये हैं. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो अब तो राजभोग होंइ चुके हैं. अब तो सांझके

उत्थापनके दरसन करियो. तब कायस्थने कही, जो महाराज ! पराई चाकरी है. सो तो तीसरे पहर कूच करेंगे. जो आज रहूंगो तो दरसन करूंगो. और श्रीगुसांईजीके आगें कछू कहि न सक्यो. पाछें वह कायस्थ जांइकै चांपाभाई भण्डारीसों मिल्यो. सो भण्डारी तें पूछी, जो दरसन कौन समै होंइगे ? तब भण्डारीने कही, जो पाछिलो दिन घरी छह रहेगो तब होइंगे. तब कायस्थने कही, जो हमारे सूबाकौ पहर दिन तें कूच होइगो. सो आज पहर दिन तें पहिले दरसन होंइ तो पचीस हजार रुपैया श्रीनाथजीके आगें भेंट करों. और दस हजार रुपैया तुमकों देउंगो. तब चांपाभाईने आयकै श्रीगुसांईजीकों चरनारविन्दि दाबिकै जगाए. तब श्रीगुसांईजीने भण्डारी तें कही, जो या समै कैसें आयो ? तब भण्डारीने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! दीवान आयो है, सो ऐसें कहे हैं, जो नित्य तें घरी दोइ पहिले उत्थापन होंइ तो पचीस हजार रुपैया भेंट करों. तब श्रीगुसांईजीने कही जो हमारे पास आयो हतो. पहर दिन तें कूच होइगो. तब भण्डारीने कही, जो पहर दिन तें पहिले उत्थापन होंइ तो आछौ. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो आछौ. तब भण्डारीने आयकै कायस्थ तें कही, जो श्रीगुसांईजीने आज्ञा करी है. सो आज बेगि उत्थापन करेंगे. पाछें श्रीगुसांईजी तो नित्य तें दोइ घरी अवेरे जागे. और यहां तो सूबाके तो कूचके नगारे बजे. सो सूबानें मनुष्यन तें कही, जो दीवानकों बुलाय ल्यावो. सो हलकारा गए. सो गोपालपुर आयकों बुलायकै ले गए. पाछें इनकों तो कूच होंइ गयो. तब दीवानकों तो श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकौ बोहोत ताप भयो. सो मारगमें देह छोरी. और इहां श्रीगुसांईजी स्नान करिकै उपर मन्दिरमें पधारे. पाछें संखनाद करवाए. उत्थापन भोगके दरसन भए. तब श्रीगुसांईजीने भण्डारी तें कही, जो बुलाओ, वह कहां है कायस्थ ? तब भण्डारीने कही, जो महाराज ! उनकौ तो कूच होइ गयो. और आपने तो नित्य तें दोइ घरी अवेरी करी. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो रुपैयानके लिये बेगि उत्थापन करें ? पाछें आप बोले नाहीं. ता पाछें सन्ध्या सेनके दरसन भए.

भावप्रकाश :

या वार्तामें यह जतायो, जो द्रव्य अर्थ भगवद्‌सेवा करे तो बाधक होंई. सेवाकौ विक्रय होंई. तातें द्रव्यके लालचसों प्रभुनकों बेगि जगावने नाहीं. और या दीवानकों श्रीगुसांईजी आप श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन यातें नहीं कराए, जो याने द्रव्यकौ आश्रय कियो. द्रव्यके बलपै दरसन कियो चाह्यो. सो प्रभु तो द्रव्यके आधीन नाहीं. तातें दरसन न कराए.

पाछें दूसरे दिन श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजीके राजभोग धरिकै गोविन्दकुण्ड सन्ध्यावन्दन करिवेकों पधारे. तब आप भण्डारीकें आज्ञा किये, जो दोइ मजूर और फावडा ले कै तुम गोविन्दकुण्डपै आइयो. ऐसें कहिकै आप गोविन्दकुण्ड पधारे. पाछें चांपाभाई भण्डारी दोइ मजूर और फावडा लिवायकै गए. तब श्रीगुसांईजी सन्ध्या करि चुके. पाछें आप खेतमें जांइकै उन मजूरनकें कही, जो यह ठौर खोदो. तब मजूरननें उहां खोद्यो. सो निरे सोनेकी इंट निकसी. तब श्रीगुसांईजी भण्डारी तें आज्ञा किये, जो तेरे चहिए जितनी ले - ले. तब भण्डारी कहन लाग्यो, जो महाराज ! लक्ष्मी आपके चरनारविन्दमें हैं. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो लेनो होंइ तो अब ले, नहीं तो पछतावेगो. ता समय भण्डारी तो सङ्कोच तें बोल्यो नाहीं. पाछें श्रीगुसांईजीने मजूरन तें वापें माटी डरवायकै आप तो मन्दिरमें पधारे. ता पाछें दूसरे दिन भण्डारी सवारे अन्धियारे ही में आयकै वा ठौर खोदिकै देखे तो उहां कछू नाहीं. तब भण्डारी अपने मनमें पछितान लाग्यो. मनमें कही, जो काल्हि लेतो द्रव्य मुकतो हतो. ऐसे कहिकै पछितान लाग्यो.

भावप्रकाश :
यामें यह जताए जो गुरु आगें सांचो रहे तो कार्य होंई.

सो वह कायस्थ श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र हतो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ? वार्ता ।।१५३।।

१५४-एक ब्रजबासी, एक मोची - बनिया, एक ब्राह्मन

अब श्रीगुसांईजीके सेवक एक ब्रजबासी, एक मोची - बनिया, एक ब्राह्मन तिनकी वार्ता कौ भाव कहत हैं -

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें ब्रजबासी तो 'रोहित' गोप हैं. और मोची - बनिया 'कालिका' हैं. और कालिकाकी एक सहचरी हैं तिनकौ नाम 'संसया' है.

सो ‘संसया’ यहां ब्राह्मनकौ प्रागट्य जाननो. ये ‘सुगन्धिनी’ तें प्रगटी हैं, तातें इनकै भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो एक समै श्रीगुसांईजी श्रीद्वारिकाजीकों पधारे. सो ब्रजबासी आपके सङ्ग हते. सो एक गाममें डेरा भये. सो वा गाममें एक बनिया जोड़ा बेचतो. सो वासों मोची कहते. सो वा मोची - बनियाकों देवीकौ वरदान हतो. सो वह जासों कहे, जो मरि जा, सो मरि जातो. देवी वा मोचीसों बोलती. सो वा मोची बनियाकी दुकानपै एक ब्रजबासी जोड़ा पहरिवे गयो. सो वा मोचीने ब्रजबासीसों मोल ठहरायकै जोड़ा पहराय दियो. इतनेमें पांच - सात ग्राहक आय गए. सो उनकों जोडी दिखायवे लाग्यो. और ब्रजबासीने कही, जो तेरे दाम ले. परि वह तो लेऊ - लेऊ करे और लेई नाहीं. औरनकों जोड़ी पहिरावें. सो दोइ चारि बार वा ब्रजबासीने कही, जो दाम ले. परि वह तो सुने नाहीं. तब वा ब्रजबासीकों रिस चढ़ी. सो जोडा सहित वा मोचीकों लात मारी. तब वाने कही, जो मरि, मरि, परि कछू न भयो. पाछें ब्रजबासी तो दाम दे कै डेरा गयो. और वह मोची उठिकै घरमें जांईकै देखे तो देवी कांपे हैं. तब इन मोचीने देवीसों कही, जो तू कांपे क्यों है ? तेरो बचन तो नहीं चल्यो. तब देवी बोली, जो ये तो वैष्णव ब्रजबासी श्रीगुसांईजीके सेवक हैं. औरनकों सराप लगे. तैनें इनसों ऐसो कह्यो तातें मैं कांपत हूं. तब मोचीने कही, जो तुम हू तें और बडे हैं ? तब देवी बोली, जो मोतें बड़े वैष्णव हैं. वैष्णव तें बड़े श्रीगुसांईजी. तब उन मोचीने कही, जो मैं उनही की सरनि जाउंगो. पाछें वह मोची जहां श्रीगुसांईजीके डेरा हते तहां आयो. सो इन ब्रजबासीके पांइन परिकै कही, जो मोकों वैष्णव करो. तब वा ब्रजबासीने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! मोची सरनि आवत है. सो याकों सरनि लेऊगे ? तब श्रीगुसांईजीने कही जो मोची है ? जोड़ा बेचे हैं ? तब उन मोचीने कही, जो महाराज ! बनिया हूं उद्यम मोचीकौ है. सो अब यह उद्यम न करूंगो. कपड़ानकी दुकान करूंगो. तब श्रीगुसांईजीने कृपा करिकै वाकों नाम सुनायो. पाछें वा मोचीने घर आयकै जोड़ा सब बेचि डारे. रातोरात सब घर लीप्यो पोत्यो. सवारे स्त्रीकों श्रीगुसांईजीके पास नाम सुनवायो. ता दिन व्रत किये. पाछें देवीकों तो खाडमें पटकी. दूसरे दिना श्रीगुसांईजीने स्त्री - पुरुषनकों ब्रह्मसम्बन्ध करवायो. पाछें इन बिनती करी, जो महाराज ! अब कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजीने कही, जो श्रीठाकुरजीकी सेवा करो. पाछें आप तो एक ब्रजबासी तें आज्ञा किये, जो याके घर जांइकै खासा सेवकी, सेवाकी विधि कराय आउ. पाछें ब्रजबासीने जांइकै सब घर खासा करवायकै पाछें वासन बदलाए. जलघराकी

विधि सब बताई. पाछें श्रीगुसांईजीने सेवा पधराय दीनी. और पांच सात दिन आप (वाही गाममें) डेरा राखे. सब सेवाकी विधि सिखाई. पाछें आप तो श्रीरनछोरजीके दरसन करिकै ब्रजमें पधारे. और ये दोउ स्त्री - पुरुष भली भांतिसों सेवा करन लागें. सो एक दुकान कपड़ानकी करी. पाछें नित्य सवारे उठिकै स्त्री - जन सामग्री करे. आप मङ्गला करिकै सिंगार धरायकै पाछें दुकानपें जातो. पाछें स्त्री सिंगार भोग, राजभोग धरे. सो यह राजभोग आर्ति समै जांइकै राजभोग आर्ति करे. अनोसर करिकै गांइकों दे कै महाप्रसाद ले कै दुकानपैं जातो. सो वाकी कपड़ानकी दुकान हती.

सो एक दिना एक ब्राह्मन वैष्णव वा गाममें आयो. सो उनकी दुकानके आगें होंइकै निकस्यो. तब मोची देखिकै, उठिकै मिल्यो. श्रीकृष्ण - स्मरन करिकै दुकानपै ल्यायो. भाव सहित बोहोत आदर कियो. पाछें अपने घर वा ब्राह्मन वैष्णवकों ले गयो. सो आप तो न्हाइकै राजभोग आर्ति करी इन ब्राह्मन वैष्णवने श्रीठाकुरजीके दरसन किये. पाछें अनोसर करिकै इन ब्राह्मन वैष्णवकों अपने घरमें सब दिखाए. जो ये खासा, ये सेवकी, ये हमारी सेवकी न्यारी है. और यह श्रीठाकुरजीकी खासा. यह सखड़ी, अनसखड़ी, दूधघर सब दिखायो. प्रसादी और भोग न्यारे - न्यारे धरतो. सो बोहोत उज्ज्वलतासों करतो. तब यह ब्राह्मन वैष्णव उज्ज्वलता देखिकै बोहोत प्रसन्न भयो. पाछें इनकों न्हवायो और पूछी, जो तुम्हारी इच्छा होइ तो दूधघरकी सामग्री लेउ. तब इन ब्राह्मन - वैष्णवकों कछू लौकिक जाति - व्यवहारकी सूधि न रही. न जाति पूछी. उज्ज्वलता देखिकै कही, जो सखड़ी लेउंगो. न उनने इनतें पूछी. पाछें सखड़ी अनसखड़ी भली भांतिसों महाप्रसाद लिवायो. पाछें बीरी ले कै ये तो गाममें गयो. मोची अपनी दुकानपै गयो. पाछें गाममें एक और वैष्णवने ब्राह्मन वैष्णवकों देखिकै श्रीकृष्ण - स्मरन कर्यो. और पूछी, जो तुम कब आए हो ? तब ब्राह्मनने कही, जो मैं तो सबेरे ही कौ आयो हूं. तब इन पूछी, जो उतारो कहां कियो ? तब कही, जो अब तांई तो फलाने वैष्णवके घर है. तब कही, जो चलो ! महाप्रसाद लेउ. तब इन ब्राह्मनने कही, जो उनके घर महाप्रसाद लियो. तब इन वैष्णवने कही, जो तुम तो ब्राह्मन हो और वे तो मोची है, जोड़ाकौ ब्योपार करतो. अब सेवक भयो है. तब तें कपड़ानकी दुकान कीनी है. तब यह सुनिकै इन ब्राह्मनके मनमें ग्लानी आई. सो सन्देह होत मात्र कपालमें सुफेद कोढ़ निकस्यो. तब उन कही, जो सन्देह कियो तातें यह कोढ़ भयो. पाछें विचार कियो, जो अब तो श्रीगुसांईजीके पास जानो. वे कृपा करेंगे तब आछो होइगो. पाछें वह ब्राह्मन वैष्णव श्रीगुसांईजीके पास आयो. सो श्रीगुसांईजीकौ दरसन कियो. पाछें विधिपूर्वक सब

समाचार श्रीगुसांईजीके आगें कहे. तब श्रीगुसांईजीने कही जो तेनें सन्देह कियो तातें यह कोढ़ भयो. अब ब्रज परिक्रमा करो. सब कुण्डमें न्हाइकै सब कुण्डकी रज याके उपर लगावो सो इन ब्राह्मन वैष्णवने ब्रजयात्रा करी. सब कुण्डकी रज लगाई सो आधो कोढ़ मिट्यो. आधो रह्यो. तब फेरि श्रीगुसांईजीके पास आई बिनती कीनी, जो महाराज ! आधो कोढ़ तो गयो है और आधो अब हू है. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो द्वारिकाजीके मार्गमें हरिदासकी बेटी है. उनके पास जाऊ. वे आछो करि देइंगे. तब वह वैष्णव हरिदासकी बेटीके पास आयो. तब उन आदरसों भली भांतिसों उतारो दीनो. पाछें पूछी, जो कहां तें आये हो ? तब इन कही, जो श्रीगुसांईजीने तुम्हारे पास पठायो हूं. तब वह बोहोत प्रसन्नतासों कही, श्रीगुसांईजीने बड़ी कृपा करी. पाछें राजभोग आर्ति करिकै दरसन करवायो. पाछें वैष्णव तें कही, जो उठो न्हाओ. महाप्रसाद लेउ.तब वह ब्राह्मन स्नान करीकै अपरस ही में आय बैठ्यो. तब हरिदासकी बेटीने वा ब्राह्मनसों पूछ्यो, जो सखड़ी लेउगे के अनसखड़ी लेउगे ? तब इन कही, जो सखड़ी लेउंगो. तब इन सखड़ी महाप्रसाद धर्यो. सो वा ब्राह्मनने प्रसन्नतासों लियो. पाछें महाप्रसाद ले कै वह ब्राह्मन बैठ्यो. तब हरिदासकी बेटीने पूछी, जो तुम्हारो आवनो कैसें भयो ? तब उन ब्राह्मन वैष्णवने सब समाचार कहे. तब उन हरिदासकी बेटीने अपने धनी मानिकचन्दजीसों जांइकै कही, जो श्रीगुसांईजीने पठाए हैं. तातें इनकों आछो कर्यो चाहिए. तब मानिकचन्दने कही, जो आछे होंइ सो करो. तब वह हरिदासकी बेटीने कही, जो रुपैया दोइ हजार चाहिए. तब वैष्णव भलो होंइ. तब मानिकचन्दने कही, जो भलो, जो खर्च होंइ सो करेंगे. तब हरिदासकी बेटीने कही, जो सब गामनमें ‘कंकोत्री’ लिखिकै सब वैष्णवकों बुलाओ. तब मानिकचन्दने वैसे ही कियो. सो सब वैष्णव बुलाए. ध्वजा ठाढ़ी करी. मण्डप रोपे. सब वैष्णव आए. सबनकों महाप्रसाद लिवायो तब हरिदासकी बेटीने इन ब्राह्मन वैष्णव तें कही, जो सब वैष्णव महाप्रसाद ले उठे तब एक डबरामें थोरी - थोरी सबनकी जूंठनि भेली करि लीजो. ऐसें तीन दिन तांई लेनो. सबनकी पातरि उठावनी, सब शुद्ध करनो. पाछें उन ब्राह्मन वैष्णवने विश्वासपूर्वक वैसें ही एक डबरामें सबनकी जूंठनि भेली करिकै आप ले गयो. सब जगह शुद्ध करी. सो दूसरे जिन कोढ़ आधो रह्यो. फेरि दूसरे दिन लीनी. तब कोढ़ चोथाई रह्यो. पाछें फेरि तीसरे दिन लीनी. तब देह कञ्चनसी भई. पाछें वह ब्राह्मन वैष्णव हरिदासकी बेटीसों बिदा व्है श्रीगुसांईजीके पास आयो. सो सब समाचार श्रीगुसांईजीके आगें कहे. और कह्यो, जो महाराज ! उहां बड़ो आनन्द भयो. हजारन रुपैया श्रीगोवर्द्धननाथजीकी भेंट भए. पाछें श्रीगुसांईजीकी भेंट हू बोहोत भई हीं सो सब श्रीगुसांईजीके पास पहोंचाए.

तातें वैष्णवकों जो करनो सो विचारिकै करनो. और जो बिना विचारे करे तो सन्देह न करनो.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो भगवदीय वैष्णवनमें जाति - बुद्धि सर्वथा न करनी. किये तें अपराध होंई. तातें भगवदीय वैष्णवको स्वरूप अलौकिक जाननो.

सो वे ब्रजबासी, ब्राह्मन, मोची, ए तीन्यो श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१५४।।

१५५-एक बनिया, एक ब्राह्मन, जानें देवीके किवाड़ उतारि लिये

अब श्रीगुसांईजीके सेवक एक बनिया, एक ब्राह्मन, देवीके किवाड़ उतारि लिये, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये बनिया राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'रसावेसिनी' है. और रसावेसिनीकी तीन सखी और हैं. तिनके नाम 'सरसासनी', 'प्रकासिनी', 'विलासिनी'. सो सरसासनी या बनियाकी स्त्री भई. और प्रकासिनी, विलासिनी दोउ ब्राह्मन - ब्राह्मनीकौ प्रागट्य जाननो. ये रसावेसिनी, 'सुगन्धिनी' तें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी श्रीरनछोरजीके दरसनकों पधारे. सो मारगमें या बनियाकौ गाम आयो. सो तहां आप ड़ेरा किये. सो

या बनियाकों श्रीगुसांईजीके दरसन भए. सो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तमके दरसन भए. तब यह बनिया अपनी स्त्री सहित सरनि आयो. नाम - निवेदन पायो. पाछें श्रीगुसांईजीसों बिनती करि श्रीठाकुरजी पधराय सेवा करन लाग्यो. पाछें वा गाममें और हू वैष्णव हते, सो उहां भगवन्मण्डली नित्य होंई. सो तहां ये दोउ स्त्री - पुरुष भगवद्वार्ता सुनिवेकों जाइवे लगे. सो ऐसें करत या बनियाकों वैष्णव पर भाव बोहोत भयो. सो यह बनिया और उनकी स्त्री उनके घर जो कोऊ वैष्णव आवतो तिनकों वे आग्रह करि महाप्रसाद लिवावते. ता पाछें जो बचे तो आप लेतें, नांतरु सेनमें श्रीठाकुरजी अरोगे सो लेते. और जो कहूं अचानक वैष्णव आवते तो रसोई करिकै पुस्तककों भोग धरिकै वैष्णवनकों महाप्रसाद लिवावते. और जो रात्रिकों सेन भए पाछें मध्यरात्रिकों वैष्णव आवते तो वाही समै रसोई करिकै पुस्तककों भोग धरिकै वैष्णवकों महाप्रसाद लिवावते.

सो एक दिन वर्षा भई. सो उपरा लकरी सब भीजि गए. और रात्रि घरी चारि गई. तब अचानक वैष्णव आए. तब उन बनिया - वैष्णवने स्त्रीसों कही, जो न्हायकै सामग्री रसोई सिद्ध करो. तब उन स्त्रीने कह्यो, जो उपरा लकरी तो सब भींजि गए हैं. सो कैसें रसोई करें ? सो तुम जांइकै कहूं तें सूकी लकरी ले आवो तो रसोई सिद्ध करूंगी. तब वैष्णवने कही, जो या समै रात्रिकों लकरी कौन पै तें ले आउं ? परन्तु तुम सामग्री काढ़िकै स्नान करो. तैयारी करो. मैं जाऊं हूं. पाछें वैष्णव कुल्हारी बगलमें ले कै गाम तें बाहिर निकस्यो. सो एक देवीकौ मन्दिर हतो तामें दोइ किवाड लगे हते. सो यह वैष्णव जांईकै सांकरि खोलिकै एक किवार उतारि, फारिकै पिछोरीमें बांधिकै ले आयो. सो अपुनी स्त्रीकों दीनी. तब वा स्त्रीने कही, जो या समै सूकी लकरी ऐसी कहां तें ल्याए ? तब वा वैष्णवनें कही, जो मैं तो देवीकौ किवार उतारिकै ले आयो, फारि - तोरिकै लकरी करि ल्यायो. परि काहूंसों कहियो मति. ता पाछें रसोई करी. तब रसोई सिद्ध भई. तब भोग धरिकै वैष्णवनकों महाप्रसाद लिवायो. पाछें भगवद्वार्ता - कीर्तन किये. पाछें बिछोना करिकै वैष्णवनकों सुवायकै आप सोय रहे. सो उन बनिया - वैष्णवकी श्रीठाकुरजीपै तथा वैष्णवपै ऐसी वात्सल्यता हती. पाछें सवेरो भयो. तब दोउ स्त्री - पुरुष सेवामें न्हाए. मङ्गला सिंगार करिकै राजभोग समर्पे. समय भए भोग सरायकै आर्ति करिकै वैष्णवनकों महाप्रसाद लिवायो. पाछें आप महाप्रसाद लियो. पाछें वह वैष्णव चलन लागे. तब वह बनिया - वैष्णव उनकों बिदा करिकै नेक दूरि लों पहोंचावन गयो.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
और इनके पारोसमें स्त्री - पुरुष ब्राह्मन रहते. सो वे देवीके पुजारी हते. सो वा ब्राह्मनकी स्त्रीने इन बनिया - वैष्णवकी स्त्री तें पूछी, जो तुम्हारे घर उपरा लकरीसो सब भींज गए हते और तुमने रात्रि रसोई तो बेगि करी. सो लकरी कहां तें ल्याए ? तब वा वैष्णवकी स्त्रीने कही, जो मेरो धनी जांईकै देवीके एक किवार तोरिकै ले आयो. तब उन कही, जो देवी तो जागती ज्योति है. सो तुम तें कछू न बोली ? तब इन कही, जो हमतें तो न बोली.

सो वह ब्राह्मनकों नित्य दोउ बेर ताती रसोई भांवती. ठंडी न लेतो. सो यह वैष्णव न्हायकै सेवामें गए तब सांझ परी. तब वा ब्राह्मननें आयकै अपनी स्त्री तें कही, जो तुम सूकी लकरी ले आवोगे तो हों रसोई करोंगी. तब उन ब्राह्मनने कही, जो अब रात्रि परी, या समय लकरी कहां तें लेह आउं ? तब इन स्त्रीने कही, जो काल्हि यह वैष्णव जांइकै देवीकौ ऐक किवार तोरिकै ले आयो है और एक है सो तुम ले आवो. तो रसोई होंई. तब उन ब्राह्मन कही, जो देवी रूठेगी. तब उन स्त्रीने कही, जो देवी तो गरीब है. वह तो कछू बोलेगी नाहीं. अपने पै तो त्रुठमान् है. तातें तुम जांइकै बेगि ले आवो. पाछें वह ब्राह्मन कुल्हारी ले कै गयो. सो जांइकै देवीके किवारमें एक घाव कुल्हारीकौ कियो. तहां कुल्हारी वाही किवारमें चिपक गई. और वा ब्राह्मनके हाथ वा कुल्हारीतें चिपकि रहे. सो बोहोत बल करे उपाइ करे. परि छूटे नाहीं. तब वह अपने मनमें धिक्कार करन लाग्यो. और कही, जो मैंने स्त्रीकी कही करी तातें देवी मोपै रूठी. ऐसें करत पहर रात्रि गई. तब वा स्त्रीने कही, जो ब्राह्मन कबकौ गयो सो आयो नाहीं. तातें मैं जांइकै खबरि तो काढों ? सो वह ब्राह्मनी आयकै देखे तो ब्राह्मन पर्यो है. तब वा स्त्रीने कही, जो लकरी फारत तुमकों नींद आइ गई कहा ? तब वा ब्राह्मनने कही, जो रांड ! मेरो करम फूट्यो है, जो तेरी कही मानी. तातें देवी मोपै रूठी. मेरे तो हाथ चिपके हैं. तब वा ब्राह्मनीने कही, जो मैं छुडाऊं. ऐसें कहिकै वह छुराइवे लगी. सो वाहूके हाथ चिपकि गए. तब दोउ बोहोतेरो बल करे, परि छूटे नाहीं. तब देवी तें दोउ बिनती करन लागे. तब देवी बोली, जो ले जा ! मेरो किवार लेवे आयो है ? सो अबको तेरे हाथ न छूटेंगे. तब इन ब्राह्मन कही, जो न छूटेंगे तो भूखे मरि जाइंगे. तो तोकों हत्या लगेगी. तब देवीने कही, जो तू मेरे किवार नए करि देउ. और वा वैष्णवके घर दोई भारा लकरी नित्य ल्यायो करि. तब वा ब्राह्मनने कही, जो ऐसें ही करेंगे. परि मैयाजी ! हमारे हाथ काहू तरह छूटे. तब देवीने कही, जो हाथ तो तबही

छूटेंगे जब हों तुम्हारी आछी भांति फजीती करोंगी. काहेंतें ? जो फेरि कोऊ ऐसें न करे. ऐसें करत सवेरो भयो. तब सब गामके मनुष्य आये. राजा आयो. सब लोग हंसन लागे और कहन लागे, जो देवीके किवार लेवे आयो. एक तो ले गयो तोहू देवी न बोली. आज और दूसरो लेवे आयो. अब ले जा ! और वा स्त्री तें कही, जो अब पतिके हाथ छुराइ ले ! देखो, देवीकौ ऐसो प्रताप है. ऐसें सगरे दिन वा ब्राह्मनकी भली भांतिसों फजीती भई. सो वे तो मूंड दे कै नीचो माथो करिकै सुनिवो करे. जो जाके मन आवे सोई कहे. ऐसें करत रात्रि भई सब मनुष्य गए. पाछें वा ब्राह्मनने देवी तें बिनती करी, तब देवीने कही, जो पहिले तो तू मेरे मन्दिरके किवार कराय दे. और नित्य दोई भारा लकरी वा वैष्णवके घर पहोंचायो करि. नाहीं तो खडग ले कै दोउनके माथें काटोंगी. तब ब्राह्मन तो डरव्यो. तब हाथ छूटि गए. सो घर गए. तब उन ब्राह्मनने देवीके किवार कराय दिये. और दोइ भारा लकरी नित्य उन बनिया वैष्णवके घर पहोंचावे. ऐसें करत केतेक दिन भए. तब उन वैष्णवने कह्यो, जो अब तो सगरो घर लकरीनतें भर्यो है, राखिवेकों ठौर नाहीं. तातें अब तुम मति ल्यावो. तब उह ब्राह्मननें हाथ जोरिकै कही, जो हम लकरी न लावे तो देवी मारि डारेगी. तब उन वैष्णवने कही, जो तुमने देखा देखी करी. तातें इतनो दुःख पाए. और देखो श्रीगुसांईजीकौ ऐसो प्रताप है. तब उन ब्राह्मनने कही, जो कृपा करिकै मोहूकों श्रीगुसांईजीकौ सेवक करि वैष्णव करो. तब उन वैष्णव कही, जो तुम दोउ मिलिकै श्रीगोकुल जांईकै श्रीगुसांईजी पास नाम - समर्पन पाय आवो. और श्रीठाकुरजीकी सेवा पधराय ल्यावो. तब उन ब्राह्मनने कही, जो देवी ! हमारो पिंड नहीं छोरे हैं. तब इन वैष्णव कही, जो हम देवी तें कहि आवेंगे. पाछें वह वैष्णव जांयकै देवीसों कही, जो हमारे तो लकरी बोहोत है. अब वा ब्राह्मनकौ नाम मति लीजो. तब वा देवीने कही, जो अब तो तुम मेरो किवार न लेउगे ? तब वैष्णवने कही, जो अब न लेइंगे. और वह वैष्णव होइगो. तब देवीने कही, जो अब नहीं बोलूंगी. पाछें वा वैष्णवने आइकै वा ब्राह्मन तें कही, जो देवीने कही, जो अब नहीं बोलूंगी. तातें अब तुम श्रीगोकुल जांइकै श्रीगुसांईजीके पास नाम - समर्पन करवायकै ब्रजयात्रा करिकै श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करिकै पाछें श्रीगुसांईजीसों बिनती करिकै पाछें सेवा पधरायकै आज्ञा मांगिकै यहां आइयो. तब दोउ स्त्री - पुरुष ब्राह्मन श्रीगोकुल आए. श्रीगुसांईजीके दरसन किए. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो तुम तो देवीके पुजारी हो. तातें सवेर व्रत करियो. परसों श्रीयमुनाजीमें न्हायकै अपरसमें चले आइयो. पाछें दोउ जनेंन व्रत कियो. पाछें श्रीयमुनाजीमें न्हायकै अपरसमें दोउ जनें आय ठाढ़े भए. तब श्रीगुसांईजीने कृपा करिकै उन दोउनकों समर्पन करवायो. पाछें वे दोउ आज्ञा मांगिके ब्रजयात्रा, श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. फेरि श्रीगुसांईजीके दरसन किये. पाछें श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो

महाराज ! अब कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजीने कही, श्रीठाकुरजीकी सेवा करो. पाछें श्रीगुसांईजी उनकों वस्त्र - सेवा पधराय दीनी. पाछें उन ब्राह्मन वैष्णवने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मैं कछू सेवाकी रीति भांति जानत नाहीं. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो तोकों वह वैष्णव सब सिखाय देइगो. पाछें श्रीगुसांईजीसों बिदा होंइके वे दोउ अपने घर आए. सो वा बनिया वैष्णव तें श्रीकृष्ण - स्मरन करिकै अति प्रसन्न भए. ता पाछें वा बनिया वैष्णवने वाकों सेवाकी रीति सब सिखाय दीनी. ता पाछें वह स्त्री - पुरुष ब्राह्मन वैष्णव श्रीठाकुरजीकी तथा वैष्णवन सेवा आछी भांति करन लाग्यो. जो कोई वैष्णव आवें तिनकों आदर सन्मान करिकै महाप्रसाद लिवावें. रात्रिकों भगवद्वार्ता करते. सो वा बनिया वैष्णवके सङ्ग तें वे दोउ ब्राह्मन स्त्री - पुरुष भले वैष्णव भए.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो घर आए वैष्णवकौ समाधान जा भांति बनि आवे ता भांति अवश्य करनो. और वैष्णवकौ स्वरूप जताए, जो वैष्णव सर्वोपरि है. तातें निशङ्क रहत हैं. देवी - देवता सब उनतें डरपत हैं.

सो वे बनिया वैष्णव तथा ब्राह्मन वैष्णव श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं. सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१५५।।

१५६-एक बीनकार, श्रीनाथजीद्वारको

अब श्रीगुसांईजीके सेवक एक बीनकार, श्रीनाथजीद्वारमें रहतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :

ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनका नाम 'वीणा' है. ये सुन्दर गावति हैं. इनकौ स्वर बीन जैसो है. तातें श्रीठाकुरजीकों ये अत्यन्त प्रिय हैं. ये 'सुगन्धिनी' तें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं.

ये गोपालपुरमें एक सनाढ्य ब्राह्मनके जन्म्यो. सो बालपनमें ये श्रीगुसांईजीकौ सेवक भयो, नाम पायो. पाछें ये बरस दसकौ भयो तब इनके माता - पिता मरे. तब ये अपने नानाके यहां मथुरा जांइ रह्यो. सो वह बीनकार हुतो. सो बीन बोहोत आछी बजावतो. सो वानें इनकों बीन सीखायो. सो कछूक दिनमें यह बीन बोहोत सुन्दर बजावन लाग्यो. पाछें यह बरस बीसकौ भयो. तब याकौ ब्याह भयो. तब वह बहूकों ले अपने घर गोपालपुरमें आय रह्यो. पाछें लरिका - लरिकी भए. तब इनको खान - पानकौ सङ्कोच भयो. तब काहूने श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो महाराज ! अमूको बीन बोहोत आछी बजावत है. और वह आपकौ सेवक हू है. परि वह गृहस्थी है. वाकों खान - पानकौ सङ्कोच बोहोत है. तब श्रीगुसांईजी वाकों बुलाय कहे, जो तू श्रीनाथजीके आगें बीन बजायो करि, और तेरो नेग लियो करि. तब या बीनकारने बिनती करी, जो महाराज ! मोहूकों यही इच्छा ही.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वह बीनकार श्रीनाथजीके सन्निधान बीन बजावतो. सो सबेर संखनाद तें पहिले चारि घरी तें बजावतो. और सेन पाछें घरी चारि तांई बजावतो. सो ऐसी सुन्दर बीन बजावतो सो उनपै श्रीनाथजी रीझ प्रसन्न भए. और श्रीगुसांईजी हू प्रसन्न रहते. सो वह बीनकार अपने घरमें गृहस्थ हतो. सो उनके घर ब्याह - काजके दिन आए. सो उनकौ कछू रोजगारको हतो नाहीं. कछू महिना न हतो. श्रीनाथजीके यहां तें नेग महाप्रसाद मिलतो. सो पहिले प्रसाद कोऊ न्योछावरिसों न देते. जो कछू नेग दे तामें बचे सो वैष्णवनकों लिवावते. सो उन बीनकारने मनमें विचारी, जो अब कछू गुजरातिके परदेस जांईकै द्रव्य ले आवे. तो ब्याह - काज होंइ. ऐसें अपने मनमें परदेस जाइवेकौ विचार कियो. तब श्रीनाथजीने विचार कियो, जो ये तो गुजरात जायेगो. तो बीन कौन बजावेगो ? और गृहस्थीकों तो द्रव्य बिना चले नाहीं. सो सेन पाछें जब सब अपने - अपने घर गए तब श्रीनाथजीने एक सोनेकी कटोरी हती सो ले कै बीनमें धरिकै आप तो पोढें. पाछें जब प्रातःकाल भयो. तब बीनकार आइकै बीन बजाइवे लग्यो. सो ये देखे तो, भीतर एक सोनेकी कटोरी परी है. तब बीनकारने विचारी, जो ये तो श्रीनाथजीकी कटोरी है. ता पाछें जब श्रीगुसांईजी उपर पधारे. सो संखनाद करवायकै आप भीतर पधारे. सो देखे तो

सैयाके पास सोनेकी कटोरी नाहीं. तब श्रीगुसांईजीने मनमें कही, जो जहां होइगी तहां तें आई जाइगी. पाछें आप मङ्गल भोग धरिकै तिवारीमें बिराजे. तब बीनकारने वह कटोरी ले कै श्रीगुसांईजीके आगें धरी. तब श्रीगुसांईजीने पूछी, जो ये तेरे पास कैसें आई ? तब इन कही, जो महाराज ! बीनामें धरी हती. तब श्रीगुसांईजी आप तो अन्तरयामी हैं. सो जानि गए, जो श्रीनाथजी इनपै रीझिकै दीनी है. तब श्रीगुसांईजीने बीनकारतें कही, जो कटोरी श्रीनाथजीने तोकों दीनी है सो तू राखि ले. तब बीनकारने कही, जो महाराज ! मै श्रीनाथजीकी कटोरी कैसे राखों ? ये तो श्रीनाथजीके पास रहेगी. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो हमारी आज्ञा है तू राखि. तब बीनकारने कही, जो महाराज ! आपकी आज्ञा है तो ये मैनें लीनी, और मैं तो आपकौ सेवक हों. तातें मैनें भेट करी. ऐसें कहिकै आगे धरिकै दण्डवत् करी. तब श्रीगुसांईजीने खासा करवायकै भीतर धरी. पाछें श्रीगुसांईजीने बीनकारके मनकी जानी. सो आपने बीनकार तें पूछी, जो तैनें कहूं जाइवेकौ मन कियो है ? तब बीनकारने कही, जो महाराज ! गृहस्थ हैं सो ब्याह काजके लिए द्रव्य चहिए. तातें परदेस जाइवेकौ मन हतो. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो तू परदेस जाइवेकौ मन हतो. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो तू परदेस मति जाहि. तो पै श्रीनाथजी प्रसन्न हैं. तोकों द्रव्य चहिए तो श्रीनाथजीके भण्डारमें तें दिवावे. तब बीनकारने कही, जो महाराज ! मै श्रीनाथजीकौ देव - द्रव्य कैसें लेउ ? तब श्रीगुसांईजीने कही, जो हमारे यहां तें देह ? तब इन कही, जो आपका गुरु द्रव्य कैसें लेउ ? तब आप कहे, जो तोकों वैष्णव द्वार करवाय देइंगे. परि परदेस मति जा. पाछें एक गुजरातकौ सङ्ग आयो. तामें एक वैष्णव द्रव्यपात्र हतो. सो उनतें श्रीगुसांईजीने आज्ञा करी, जो यह बीनकार है, सो श्रीनाथजीकौ द्रव्य लेत नाहीं. श्रीनाथजीने सोनेकी कटोरी दीनी सो याने लीनी नाहीं. हमारो हू लेत नाहीं. और श्रीनाथजी यापैं रीझे हैं. और यह तो गृहस्थ है. ब्याहमें द्रव्य चहिए तातें ये तो परदेस जात है. और श्रीनाथजीकों सुहात नाहीं. सो तुम इनकों ब्याहमें द्रव्य लगे सो देउ. पाछें वा सेठने बीनकारकों द्रव्य दियो. सो उन ब्याह - काजमें लगायो. पाछें जब ब्याह - काज आवे तब श्रीगुसांईजी आप वैष्णवनमें सों कराय देते. उन बीनकारकों परदेस नहीं जाइवे दियो. सो उन बीनकारपै श्रीगोवर्द्धननाथजी तथा श्रीगुसांईजी आप सदा प्रसन्न रहते.

भावप्रकाश :

या वार्तामें यह जताए जो श्रीनाथजीके निकट जो वस्तू रहत हैं सो सर्व स्वरूपात्मक हैं. तातें वैष्णवकों उनमें लौकिक बुद्धि करनी नाहीं. और वैष्णवकों देव

- द्रव्य, गुरु - द्रव्य सर्वथा न लेनो, यहू कहे.

सो वह बीनकार श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१५६।।

१५७-प्रेमजी लुहाणा, हालारकौ

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक प्रेमजी लुहाणा, हालारकौ वासी तिनकी वार्ताकौ भाव कहत है

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनका भाव 'प्रेम - प्रकाशिका' हैं. ये 'सुन्दरी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै हालारकौ सङ्ग श्रीगोकुलकों आयो. तामें वह प्रेमजी हू आयो. सो श्रीगुसांईजीके दरसन किये. पाछें प्रेमजीने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! कृपा करिकै सरनि लीजें. तब श्रीगुसांईजीने कृपा करिकै नाम सुनायो. पाछें दूसरे दिन व्रत करवायकै ब्रह्मसम्बन्ध करवायो. ता पाछें सङ्ग तो श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों चल्यो. तब प्रेमजी हू श्रीगुसांईजीसों आज्ञा मांगिकै गयो. ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. फेरि सङ्ग श्रीगोकुल आयो. तब दस - पांच दिना रहिकै सङ्ग तो ब्रजयात्रा करिवेकों चल्यो. तब प्रेमजी हू श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मांगिकै ता सङ्गके साथ ब्रजयात्राकों गयो. सो केतेक दिनमें सम्पूरन ब्रजयात्रा करिकै श्रीगोकुल आयो. पाछें श्रीगुसांईजीके दरसन किये. तब श्रीगुसांईजीने पूछी, जो प्रेमजी ! ब्रजयात्रा करि आयो ? तब प्रेमजीने कही, जो महाराज ! आपकी कृपा तें ब्रजयात्रा करी. पाछें प्रेमजीने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! अब कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजी प्रेमजीसों आज्ञा किये, जो भगवत्सेवा करो. तब प्रेमजीने बिनती करी, जो महाराज ! सेवा सूक्ष्म होंइ तो करों. तब श्रीगुसांईजी वस्त्र - सेवा पधराय दीनी. और

आज्ञा किये, जो यही सूक्ष्म है और यही असाधारन है. जो सिंगार करो तो सिंगार करो. न बने तो वस्त्र धरावो. भोग धरो. ता पाछें प्रेमजी केतेक दिना श्रीगोकुलमें रहिकै सातों स्वरूपनके दरसन किये. पाछें सङ्ग बिदा भयो तब प्रेमजी हू श्रीगुसांईजीसों बिदा होंईकै अपने घर हालारमें आयो. सो भली भांतिसों सेवा करन लाग्यो. मङ्गला, सिंगार, राजभोग करिकै अनोसर करि पाछें जो कोई वैष्णव आवे ताकों महाप्रसादकी पातरि धरतो. ता पाछें आप मेहनत - मजूरी करिवे जातो. सो उत्थापनके समै आय जातो. इतनेमें खरच लायक मिलि जातो. फेरि न्हायकै उत्थापन - भोग, सेन करिकै पाछें भगवद्वार्तामें जातो. या प्रकार भली भांति सेवा करतो.

सो एक दिना प्रेमजीके मनमें ऐसी आई, जो और वैष्णवके इहां तो श्रीठाकुरजी बोलत हैं. और मैनें तो श्रीगुसांईजीसों कही, जो सूक्ष्म साधारन सेवा पधरावो. परन्तु श्रीगुसांईजीने कही, जो यही सूक्ष्म साधारन है और यही असाधारन है. सो ये तो कछू बोलत नाहीं. पाछें उत्थापनके समै न्हायकै उत्थापन किये. ता समय देंखे तो समस्त ग्वालमण्डलीके दरसन भए. वस्त्रके तार - तार स्वरूप देखें. सगरे गादीपै स्वरूपके दरसन भए. तब मनमें विचारी, जो मेरे मनमें जो मनोरथ हतो सो श्रीगुसांईजी पूरन किये. देखो, यही असाधारन हैं. और यही साधारन है. परि इतने स्वरूपनकौ सेवा - सिंगार मोतें कैसे बनेगो ? पाछें भोग धरे. ता पाछें भोग सरायवे गयो. सो देखें तो प्रथम हतो तैसेंई वस्त्र - सेवा हैं. तब प्रेमजी मनमें कहे, जो श्रीगुसांईजी तो परम दयाल हैं. जैसें भक्तनके मनकौ मनोरथ होंई सो पूजन करे हैं. पाछें प्रेम - भाव सहित प्रेमजी भली भांतिसों सेवा करतो. भगवद् मण्डलीमें जातो. सो श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे.

भावप्रकाश :
यामें यह जताए, जो वैष्णवकों श्रीगुसांईजीके बचनमें विश्वास राखनो. और सेवा भाव - प्रीति संयुक्त करनी. तो प्रभु अनुग्रह करि सानुभावता जनावें.

सो वे प्रेमजी श्रीगुसांईजीकौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ता पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१५७।।

१५८-वृन्दावनदास, छबीलदास, आगरेके

अब श्रीगुसांईजीके सेवक वृन्दावनदास, छबीलदास, आगरेके तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं.

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें वृन्दावनदास 'आराधिका' है, और छबीलदास 'प्रबोधिका' है. ये दोउ 'सुन्दरी' ते प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो उन वृन्दावनदास छबीलदासकौ आपुसमें बड़ो सनेह हतो. सो ये दोउ सेवक न हते, परि संतदासके घर नित्य मण्डलीमें रात्रिकों भगवद्वार्ता सुनिवेकों जाते. सो एक दिन वार्तामें ऐसो प्रसङ्ग आयो, जो जिनकों नाम (दीक्षा) न होंइ तिनके हाथकौ जल नहीं लेनो. सो सुनिकै वृन्दावनदास और छबीलदासने विचारी, जो अपने हाथकौ जल कोई वैष्णव न लेइगो. तातें अब तो श्रीगुसांईजीके पास नाम पावनो. तब ही जल लेनो. ऐसें वृन्दावनदासने कही. तब छबीलदासने कही, जो ऐसें कैसें बने ? मोकों तो जल लिये बिना न चलेगो और श्रीगोकुल तो यहां मंजलि एक है. सो जल बिना क्यों चले ? तब वृन्दावनदासने कही, जो तुम लीजो. परि मैं तो नाम पाउंगो तब ही जल लेउंगो. ता पाछें सवेरो भयो तब दोउ जन श्रीगोकुलकों चले. सो सेन पाछें श्रीगोकुल आये. सो श्रीगुसांईजी अपनी बेठकमें बिराजे हते. सो ये दोउ जनें आयकै श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् किये. तब श्रीगुसांईजीने पूछी, जो वृन्दावनदास ! कब आये ? तब कही, जो राजके दरसन अब ही आयकै किये हैं. पाछें दोउन बिनती करी, जो राज ! आपकी सरनि आए हैं. सो कृपा करिकै सरनि लेउ. नाम सुनावो. तब आपने कही, जो सवारे नाम सुनावेंगे. तब छबीलदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! वृन्दावनदासने तो जल हू नाहीं लीनो है. उह तो कहत है, जो जब नाम पाउंगो तब जल लेउंगो. इनकौ गलो सूक्यो है. बोल्यो हू नाहीं जात है. और मैनें तो जल लीनो है. तब इनकी ताप - आतुरता देखिकै श्रीगुसांईजीने कही, जो आगें आऊ. ता पाछें दोउनकों नाम सुनायो. पाछें खवास तें आज्ञा करी, जो उनको प्रसादी जल लेवाउ. तब खवासनें प्रसादी जल लिवायो. सो गुलाब जल पधरायकै श्रीनवनीतप्रियजीकों अरोगावते, सो प्रसादी जल लेत ही इनकों बड़ो सुख भयो. सीतलता भई. पाछें श्रीयमुना जल लिवायो. तब दोउनकों तृप्ति भई. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा

किये, जो महाप्रसाद लेउ. तब वृन्दावनदासनें कही, जो महाराज ! जल तें मन तृप्त होंइ गयो है. अब तो आप अरोगो पाछें धीरे - धीरे लेइंगे. पाछें आप पोथी खोली, कथा कही. सो दोउ जनें सुनिकै अत्यन्त प्रसन्न भए. पाछें आप भोजन करिवेकों पधारे. सो भोजन करि आप पधारे पाछें दोउनकों जूंठिनकी पातरि धरी. सो इनने महाप्रसाद लियो. पाछें जगह बताई तहां. दोउ सोय रहे. सो सवेरे उठिकै श्रीगुसांईजीके दरसन किये. तब वृन्दावनदास छबीलदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! कृपा करिकै निवेदन कराइए. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो व्रत करो. तब दोउन बिनती कीनी, जो महाराज ! जो आज्ञा. परि कृपानाथ ! बीचमें एक दिन जायगो. तातें आज ही कृपा करो तो आछो. तब इनकौ विरह - ताप देखिके आप तो कृपाल है सो आज्ञा दिये, जो तुम मङ्गलाके दरसन करिकै यहां बैठे रहियो. और खवास तें आज्ञा करी, जो सिंगारके दरसन समय दोउन कोन न्हवायकै अपरसमें, पाछें खबरि करियो. पाछें मङ्गलाके दरसन भए. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप तो श्रीनवनीतप्रियजीके सिंगार करन लागे. पाछें खवासने इनकों अपरसमें न्हवायके बैठाए. तब सिंगार करिकै दोउनकों श्रीगुसांईजी आप कृपा करि निवेदन करवायो. पाछें राजभोग धरि आप बाहिर पधारे. समय भये भोग सराय राजभोग आर्ति किये. ता पाछें अनोसर करिकै श्रीगुसांईजी आप बैठकमें पधारे. तब वहां वृन्दावनदास छबीलदासने भेट करी. पाछें आप भोजनकों पधारे. सो भोजन करिकै वृन्दावनदास छबीलदासकों जूंठिनकी पातरि धरी. सो दोउ जनेंनने महाप्रसाद लियो. ता पाछें श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! अब कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजीने आज्ञा करी, जो सेवा करो. तब वृन्दावनदास छबीलदासने बिनती कीनी, जो महाराज ! कृपा करिकै श्रीठाकुरजी पधराय देउ. तब श्रीगुसांईजीने कृपा करिकै सेवा पधराय दीनी. और आज्ञा कीनी, जो हृषिकेशकौ सत्सङ्ग करियो. तब इन कही, जो राज ! हृषिकेश हमारे काका लगत हैं. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो तब तो तुम्हारो घर एक है सो तुमकों सेवाकी विधि सब बताय देइंगे. पाछें वृन्दावनदास छबीलदास दोउ श्रीगुसांईजीसों बिदा होंइके आगरा आए. सो हृषिकेश तें सब समाचार कहे, जो श्रीगुसांईजी आज्ञा किये हैं तातें सेवाकी रीति भांति सब सिखावो. तब हृषिकेशने सब विधि पूर्वक खासा सेवकी सब सेवाकौ प्रकार बताय दिए. पाछें दोउ जनें भली भांतिसों सेवा करन लागे. सो ओसरेसों सेवा करते. एक दिन सिंगार वृन्दावनदास करे, एक दिन छबीलदास करे. तब वृन्दावनदास सामग्री करे. दूसरे दिन सिंगार वे करे तब सामग्री वे करें. ऐसें एक तें ऐक चढती सामग्री - सिंगार होडा - होडीसों हुलास तें करते. पहर दिन चढ़े राजभोग आर्ति करिकै गांईकौ महाप्रसाद दे कै वैष्णवनकों भाव सहित महाप्रसाद लिवावते. वैष्णवनपैं बड़ी प्रीति राखते. पाछें महाप्रसाद ले उद्यम व्योपार करिवे जाते, सो उत्थापनके समै

तांई जो प्राप्त होंई सो ले कै घर आवते. पाछें न्हायकै सेन पर्यन्त सेवासों पहोंचि पाछें भगवद्वार्ता मण्डलीमें जाते. सो उहां वार्ता सुनिकै बडे प्रसन्न होते. गदगद कण्ठ रोमाञ्च होइ आवते. पाछें दोउ जनें घर आईकै घोखते. ऐसें बड़ो प्रेम उत्पन्न दोउनकों भयो. सो वृन्दावनदासकी अनेक वार्ता है.

पाछें एक समय श्रीगुसांईजी आगरे पधारे. सो रूपचन्दनन्दाके घर उतरे. तब सब वैष्णवनने श्रीगुसांईजीसों कही, जो महाराज ! वृन्दावनदास छबीलदास आपके सेवक भए हैं. सो ये दोउ जनें श्रीठाकुरजीकी सेवा - सामग्रीमें बड़े चतुर हैं. और भगवद्वार्तामें बड़ो प्रेम विश्वास है. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए. सो उनपै श्रीगुसांईजी सदा प्रसन्न रहते.

भावप्रकाश :
या वार्तामें यह जताए, जो वैष्णवकों टेक चहिए. और भगवत्सेवाकौ स्वरूप बताए, जो नित्य नौतन सामग्री सिंगार उत्साहपूर्वक करने.

सो वे वृन्दावनदास छबीलदास श्रीगुसांईजीके ऐसें परम कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१५८।।

१५९-स्त्री - पुरुष, ब्राह्मन गुजरातके

अब श्रीगुसांईजीके सेवक स्त्री - पुरुष, ब्राह्मन, गुजरातके सो स्त्री रूखके नीचे द्रव्य लेइवे गई, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये दोउ सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनको नाम 'कलसिका' 'कर्णिका' हैं. सो स्त्री 'कलसिका'कौ प्रागट्य है और पुरुष 'कर्णिका'कौ प्रागट्य जाननो. ये दोउ 'सुन्दरी' तें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं.

ये दोउ गुजरातमें ब्राह्मनके जन्मे. सो दोउनकौ ब्याह भयो. पाछें दोउनके माता - पिता मरे. तब दोउ बरस पचीस - तीसके हे. सो दोउन आपुसमें विचार किये, जो होंई तो कासी विश्वेश्वरके दरसन करि आवे. पाछें दोउ कासी विश्वेश्वरके दरसनकों गुजरात तें चले. सो केतेक दिनमें कासी आए. सो ता समै श्रीगुसांईजी आप कासी बिराजत हुते. सो उहां विश्वेश्वरजीके मन्दिर आगें मायावादिन तें शास्त्र - चर्चा कर रहे हते. तहां इन स्त्री - पुरुषकों श्रीगुसांईजी आपके दरसन भए. सो महा अलौकिक दरसन भए. तब दोउनके मनमें आई, जो इनके सेवक हूजिए तो आछो. पाछें श्रीगुसांईजी मायावादिनकों निरुत्तर करि सेठ पुरुषोत्तमदासजीके उहां पधारे. तब ये दोउ स्त्री - पुरुष हू श्रीगुसांईजीके सङ्ग आए. पाछें पुरुष बिनती कियो, जो महाराज ! कृपा करि हमकों सेवक कीजिए. हम आपके सरनि आए हैं. तब श्रीगुसांईजी हंसिके आज्ञा किये, जो ब्राह्मन ! तुम तो विश्वेश्वरजीके दरसनकों आये हो ? सो दरसन क्यों नाहीं किये ? तब पुरुष बिनती कियो, जो महाराज ! आपके दरसन भए पाछें अब कौनके दरसन करें ? तातें कृपा करि बेगि सरनि लीजिए. तब श्रीगुसांईजी इनकी आतुरता देखि दोउनकों नाम दे कै सेवक किये. पाछें दूसरे दिन निवेदन कराए. तब पुरुषने बिनती कीनी, जो महाराज ! अब कहा कर्तव्य है ? तब श्रीगुसांईजी आप दोउनकों आज्ञा किये, जो तुम माहात्म्य प्रीति संयुक्त भगवत्सेवा करो. तब उन बिनती कीनी जो महाराज ! सेवाकौ स्वरूप कृपा करि समझाइए तो आछौ. तब श्रीगुसांईजी वाकों 'सेवाफल' ग्रन्थ पढाए. ता पाछें वाकौं सेवाकौ स्वरूप समझाए. तब पुरुष बिनती कियो, जो महाराज ! कृपा करि भगवत्स्वरूप पधराय दीजिए, तो सेवा करें. तब श्रीगुसांईजी वाकों एक लालजीकौ स्वरूप पधराय दिये. और आज्ञा किये, जो निष्कञ्चन भावसों परम प्रीति संयुक्त इनकी सेवा करियो. पाछें वे दोउ स्त्री - पुरुष भगवत्स्वरूप पधराइ, श्रीगुसांईजीसों बिदा व्है अपने देसकों चले. सो कछूक दिनमें अपने घर आए.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वे दोउ निष्कञ्चनतासों सेवा करते. सो श्रीठाकुरजीकी सेवा बोहोत प्रीति - भावसों करते. सो पुरुषकौ श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागें. सो ऐसें करत केतेक दिन भए. सो एक दिन श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक सेठ, तिनके घर दरसन करिवेकों स्त्री गई हती. सो उहां वैभव बोहोत देख्यो. सो देखिकै घर आयकै स्त्री न्हाई नाहीं. और सोइ रही. तब बाहिरसों वाकौ पुरुष आयो. तब वाने अपनी स्त्रीसों कह्यो, जो तू सेवामें न्हाई क्यों नाहीं ? तब स्त्री वातें कह्यो, जो आज तुमही न्हाउ. तब पुरुष न्हायकै सेवासों पहोंचिकै स्त्रीके

पास आयकै पूछ्यो, जो तोकों भयो कहा ? तब स्त्रीने कही, जो मैं तो सेवा तब करूं जब वैभवसों करों. तब पुरुषने कही, जो आछो ! वैभवसों करियो. पाछें दोउ स्त्री - पुरुष सवेरे उठे. सो उठिकै पुरुषने स्त्रीसों कह्यो, जो तू एक काम करि. तब स्त्रीने कही, जो कहा ? तब पुरुषने कही, जो यहां तें कोस एक उपर एक रूख है. सो तहां जांयकै ता रूखके नीचे खोदियो. सो द्रव्य निकसेगो. सो टोकरी भरि, ल्यायकै वैभवसों सेवा करियो. तब स्त्री वा रूख नीचे गई. तब द्रव्य निकस्यो. सो टोकरी भरी. तब रूखमें सों बानी भई. जो हमकों तू कछू दे जा. तब द्रव्य ले जा. तब स्त्रीनें कही, जो तुमकों कहा चहिए ? तब वाने कही, जो एक झारीकौ फल दे जा , तब यह द्रव्यकी टोकरी ले जा. तब याने कही, जो ये तो न देउंगी. तब वाने कही, जो अधिक होंइ सो तू राखियो. घटती होंइ सो मैं राखूंगो. अब तू अपने मनसों विचारि, जो तू कितनी झारी भरे है ? तब वह स्त्री अपने घर आई. सो सब समाचार अपने पुरुषसों कहे. तब पुरुषने कह्यो, जो निष्कञ्चनतासों झारी भरे, सेवा करे, ताके फलकौ कहा कहनो. एक - एक पेंडकौ फलसौ अश्वमेघ यज्ञ तें ही ज्यादा है. अब तू विचारी, जो झारीकौ फल कितनो है और ये द्रव्य कितनो है ? पाछें वह स्त्रीने कबहू द्रव्यकी कामना कीनी नाहीं. और अपने मनमें कहे, जो मैं झारी ही भरिवो करूंगी. सो वह स्त्री निष्कञ्चनतासों झारी भरे, और सेवा करे. तब श्रीठाकुरजी इनकों हू अनुभव जतावन लागे. सो वे स्त्री - पुरुष निष्कञ्चनतासों सदैव सेवा करते.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जे कोऊ निष्कञ्चन दीन व्है निष्काम भावसों भगवत्सेवा करत है, तापें श्रीठाकुरजी आप प्रसन्न होत हैं. और झारीकौ माहात्म्य जताए, जो वाके बराबरि कोऊ फल नाहीं.

सो वे स्त्री - पुरुष श्रीगुसांईजीके ऐसें भगवदीय कृपापात्र सेवक हते. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१५९।।

१६०-एक भगवदीय, एक तादृशी, गुजरातके

अब श्रीगुसांईजीके सेवक एक भगवदीय, एक तादृशी, गुजरातके, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये दोउ राजस भक्त हैं. लीलामें 'कमलाक्षी' और 'हिरणाक्षी' इनके नाम हैं. सो भगवदीय तो 'कमलाक्षी'कौ प्रागट्य जाननो और 'हिरणाक्षी' तादृशी हैं. ये 'मधुरा' तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे तब ये दोउ भगवदीय, तादृशी सेवक भए हैं. सो श्रीगुसांईजीकी कृपा तें दोउनमें भगवद्धर्म दृढ़ हतो. सो वे भगवदीय वैष्णव 'राजनगर' मे रहते. और वे तादृशी वैष्णव 'धोलका' में रहते. परि उन दोउनकौ मिलाप न भयो हतो. परन्तु भगवदीयके मनमें हती, जो उन तादृशी वैष्णवसों मिलनो. सो एक समै इन भगवदीय वैष्णवकी बेटीकौ विवाह आयो. तब इन भगवदीय वैष्णवने 'कंकोत्री' वैष्णवनकों लिखि पठाई. सो उन तादृशी वैष्णवकों हू लिखी. जो अपने बेटीकौ विवाह है. सो तुम कृपा करिकै पधारोगे.

सो ए दोउ स्त्री - पुरुष सेवसों पोहोंचिकै राजभोग - आर्ति करिकै एक दोय वैष्णवनकों नित्य महाप्रसाद लिवावते. पाछें आप महाप्रसाद लेते. फेरि उत्थापन तें सेन पर्यन्त सेवा करिकै पाछें श्रीठाकुरजीकों सेन करावते. पाछें और गामकै वैष्णव आवते. सो भगवद्वार्ता कीर्तन नित्य करते. उनके घर मण्डली होती.

पाछें ब्याहके दिन आय पहोंचे. तब सवारे बेगि उठिकै सेवा सिंगार राजभोगसों पहोंचिकै पाछें लौकिक कार्य कियो. पाछें सब वैष्णवकों बुलाए. सो उन तादृशी वैष्णवके मनमें ऐसी हती, जो इन भगवदीय वैष्णवकी परीक्षा लेनी. तातें जब कन्यादानकौ समय होइ तब चलेंगे. ऐसें विचारिकै उहां तें निकसे. सो या वैष्णव भगवदीयके गामके बाहिर आय बैठे. और पांच - सात वैष्णव सङ्ग आए हते. तामें तें एक

वैष्णवकों पठायो. और कही, जो जा समै कन्यादानकौ समै होंइ ता समै उनकों खबरि करियो. सो वह वैष्णव उहां जाय बैठ्यो. पाछें जब कन्यादानकौ समै भयो तब उन कही, जो वह तादृशी वैष्णव आये हैं. तब यह सुनिकै वह भगवदीय वैष्णव उठे. सो पांच - सात वैष्णव सङ्ग ले कै उन तादृशीके साम्हे जांइकै श्रीकृष्ण - स्मरन करिकै अति हरखसों मिलिकै अपने घर पधराय ल्याये. पाछें उनकों स्नान करवायकै सबनकों महाप्रसाद लिवायो. बिछौना करिकै सबनकों सुवाए. पाछें आप विवाह कार्यमें गए. तब ब्राह्मनने कही, जो लगन घरी तो निकसि गई. तब भगवदीय वैष्णवने कही, जो और लगन घरी देखो. तब ब्राह्मनने और घरी देखी. सो घरी दोइ पाछें मुहूर्त हतो. सो वा समै लगन कन्यादान करिकै पाछें जब पाछिली रात्रि घरी छह रही तब वे दोउ स्त्री - पुरुष सेवामें न्हाए. सो स्त्रीने तो सामग्री सिद्ध करी. उन भगवदीय वैष्णवने श्रीठाकुरजीकों सिंगार करिकै राजभोग समर्प्यो. समय भए भोग सराय राजभोग - आर्ति करिकै इन तादृशी वैष्णवकों श्रीठाकुरजीके दरसन कराये. पाछें श्रीठाकुरजीकों अनोसर करिकै पाछें इन वैष्णवनकों न्हवायकै महाप्रसाद सब वैष्णवनकों लिवायो. पाछें लौकिक कार्य करन लागे. तब उन तादृशीने मनमें विचारी, जो मैं इन भगवदीयकी परीक्षा लीनी. सो लौकिक कार्यमें तो यह भगवदीय कुसल है. परन्तु अब अलौकिकमें परीक्षा लेनी. पाछें जब उत्थापनकौ समय भयो तब दोउ स्त्री - पुरष न्हायकै सेन पर्यन्त सेवा तें पहोंचिकै फेरि इन वैष्णवनकों ब्यारु करवायकै बिछौना करन लागे. तब इन तादृशीने कही, जो हम तो श्रीठाकुरजीकी देहरीमें सिरहानो धरिकै सोवेंगे. तब उन भगवदीयने उहांई बिछोना करि दियो. पाछें उन वैष्णवनकों सुवायकै पाछें आप लौकिक कार्य करन लागे. ता पाछें सवेरे बेगि न्हायकै वह स्त्री जन तो रसोईमें गई. और यह वैष्णव आप न्हायकै अपरस पहरिकै आयकै देखे तो यह तादृशी वैष्णव सोवे हैं. तब इन मनमें विचार कियो, जो अब मैं इन तादृशीकों नींदमें तें कैसें जगाउं ? और ये जागे तब श्रीठाकुरजीके किवाड़ खुले. देहरी उपर माथो है. सो मन्दिरमें कैसें जांय ? ऐसें विचार करिकै पाछें तिलक - मुद्रा करन लागे. पाछें जप करन लागे. और इन तादृशीके मनमें इनकी परीक्षा लेनी, तातें जागें तो हैं परि बोले नाहीं. ऐसें करत रसोई होंइ चुकी और जप हू करि चुके. पाछें ठाढ़े रहे. परन्तु उन वैष्णवकों जगावे नाहीं. ऐसें विचारे, जो यह वैष्णव नींदमें सोवत है. सो मैं इनकों कैसें जगाउं ? ऐसें विचारकै ठाढ़े होंय रहे. सो ठाढ़े - ठाढ़े पहर एक भयो. तब इन तादृशीने मनमें विचारी, जो यह तो सम्पूरन भगवदीय है. तातें अब तो श्रीठाकुरजीके नित्यकौ राजभोगकौ समय भयो है. तातें अब उठें. पाछें यह तादृशी वैष्णव अचानक उठे. सो उन भगवदीय वैष्णवतें कही, जो तुम ठाढ़े होंइ रहे ? तब इन वैष्णवने कही, जो मैं तो अब ही न्हायकै आयो हूं. ऐसें कहिकै पाछें धोती - उपरेना पहरिकै मन्दिरके किवाड़ खोले.

पाछें श्रीठाकोरजीकों जगायकै मङ्गल - भोग धरिकै बेगि - बेगि सिंगार करिकै राजभोग समर्पे. समय भए भोग सराय आर्ति करि अनोसर करिकै पाछें इन वैष्णवनकों स्नान करवायकै महाप्रसाद लिवायो. पाछें इन तादृशीने मनमें विचारी, जो मैं तो इनकी परीक्षा लीनी. सो यह पूरा भगवदीय है. तातें अब ब्याह तो होंइ चूक्यो है. तातें अब अपने घरकों चले. सो इन भगवदीय तें कही, जो हमने तुम्हारी परीक्षा लीनी सो तुम भगवदीय हो तामें सन्देह नाहीं. अब हम अपने घर जांइगे तातें आज्ञा देउ. तब इन भगवदीयने तादृशी वैष्णवसों कह्यो, जो कृपा करि मेरे घर दोइ - चार दिना और हू रहो. तब उन तादृशीने कही, जो अब तो चलेंगे. पाछें दोउ स्त्री - पुरुष उनकों बिदा किए. सो कोस दोइ लों वे दोउ स्त्री - पुरुष तथा और हू वैष्णव उनको पहोंचावन गए. पाछें बिदा करिकै सब अपने - अपने घरकों आए. पाछें इन भगवदीयने अपने मनमें विचारी, जो इन तादृशीनें तो परीक्षा लीनी. परि अब तादृशीकी परीक्षा आपुन लेइंगे. ता पाछें केतेक दिन भए. तब उन तादृशी वैष्णवकी स्त्रीकी देह छूटी. तब तादृशी वैष्णवने मनमें विचारी, जो श्रीठाकुरजीकी सेवा तो दोइ बिना आछें नहीं होंइ. तातें अब और विवाह करे तो आछो. सेवामें सहाय होंइ. सो वाही गाममें एक कन्या हती. सो प्रोहितकों बुलायकै लगन लिखाए. और सब वैष्णवनकों पत्रिका लिखी. सो इन भगवदीय वैष्णवकों हू लिखी. तब इन भगवदीय वैष्णवने मनमें विचारी, जो अब इन तादृशी वैष्णवकी परीक्षा लेनी. सो जा समै वरघोड़ामें चढ़िकै लगन करिवेकों जांइ ताही समै पहोंचनो. ऐसें विचारिकै पांच - सात वैष्णव और सङ्ग ले कै भगवदीय वैष्णव चले. सो वरघोड़ापैं पढ़े ताही समै खबरि पहोंची, जो भगवदीय वैष्णव आये हैं. तब वह तादृशी घोड़ा छोरिकै साम्हे गए. सो श्रीकृष्ण - स्मरन करि आदरसों अपने घरमें पधराए. पाछें स्नान भोजन, करवायकै बिछौना करिकै इनकों सुवायकै ता पाछें ब्याह करिवे गए. तब ब्राह्मनने कही, जो लगन घरी तो बीति गई. तब इन कही, जो और दूसरो लगन काढ़ो. पाछें लगन, घरी दोइ पाछें मुहूर्त हतो. सो ब्याह करिकै अपने घर आए. ता समै घरी चारि रात्रि हती. तब यह तादृशी वैष्णव न्हायकै श्रीठाकुरजीकी रसोईकी सेवा करन लागे. सो रसोई बालभोगकी सामग्री सिद्ध करिकै पाछें श्रीठाकुरजीकों जगायकै मङ्गला भोग धरिकै सिंगार करि राजभोग समर्प्यो. पाछें यह भगवदीय वैष्णव देहकृत्य करिकै दन्तधावन किये. पाछें इन सबनकों न्हावाये. पाछें समय भए भोग सरायकै आर्ति करिकै इन भगवदीय वैष्णवकों श्रीठाकुरजीके दरसन करवाए. पाछें अनोसर करिकै इन वैष्णवकों महाप्रसाद लिवायो. तब इन भगवदीय वैष्णवने मनमें विचारी, जो ये तो पूरे तादृशी हैं. लौकिकमें तो इनकी परीक्षा लीनी. परन्तु अब अलौकिकमें देखें, ये कैसें है ? पाछें उत्थापनकौ समय भयो. तब यह तादृशी वैष्णव स्नान करिकै उत्थापन भोग, सन्ध्या भोग, सेन भोग धरिकै सेन - आर्ति

करिकै श्रीठाकुरजीकों पोढ़ायकै पाछें भगवद्वार्ता करते. सो भगवदीय वैष्णव भगवद्वार्ता करन लागे. सो करत - करत सवेरो होइ गयो. घरी दोइ चारि दिन चढ्यो. ऐसें नित्य करें. तब इन भगवदीयने मनमें विचारी, जो ये तो सम्पूरन तादृशी हैं. तातें अब श्रीठाकुरजीकों अवेर होंइ, जो नित्य या समय राजभोग आर्ति होंइ. सो अब उठो स्नान करो. तब तादृशी उठिकै स्नान करिकै श्रीठाकुरजीकों जगायकै मङ्गल भोग धरिकै रसोईकी सामग्री बालभोगकी सब सिद्ध करी. पाछें सिंगार करिकै राजभोग समर्पिकै आर्ति करिकै श्रीठाकुरजीकों अनोसर करिकै पाछें उन वैष्णवनकों स्नान करवायकै महाप्रसाद लिवायो. पाछें वह भगवदीयने चलिवेकी तैयारी करी. तब उन तादृशीने कही, जो मेरे घर दोइ चारि दिना कृपा करिकै रहो. तब उन कही, जो अब तो चले तो आछौ है. पाछें उनसों बिदा भए. अति प्रसन्नतासों अपने घर आए. सो उन वैष्णवनकों श्रीगुसांईजी पै, श्रीठाकुरजी पै, वैष्णवन पै, ऐसो भाव हतो.

भावप्रकाश :
या वार्तामें बड़ो सन्देह है, जो तादृशी, भगवदीय वैष्णवनकी परीक्षा सर्वथा नाहीं करनी, जो करें तो अपराध होई. ऐसो श्रीआचार्यजी आप कुम्भनदास प्रभृति वैष्णवनकों आज्ञा किये हैं. और इन तादृशी - भगवदीय दोउन आपुसमें परीक्षा किये ? ताकौ कारन कहा ? तहां कहत हैं, जो इन दोउ परीक्षाके मिष तादृशी भगवदीयके धर्म प्रगट किये हैं. जो तादृशी, भगवदीयनके धर्म ऐसें होत हैं. तातें आगेंके जीवनको अहङ्कार न होंई. और जो कोऊ साधारन वैष्णव होंइ (कै) तादृशी भगवदीयकी परीक्षा करे तो वाकों बाधक होंई. परि ये तो दोउ असाधारन वैष्णव हैं, तातें आगेंके जीवनकों शिक्षार्थ या प्रकार चरित्र किये. यह भाव जाननो.

सो वे दोउ तादृशी और भगवदीय श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए ? वार्ता ।।१६०।।

१६१-एक वैष्णव, जो श्रीगिरिराज उपर चढ्यो

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक, एक वैष्णव, जाकों श्रीगिरिराज उपर चढ़ते देखि श्रीगुसांईजीने अपनो मस्तक हलायो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'मुक्ता' है. ये 'मधुरा' तें प्रगटी हैं तातें उनके भावरूप हैं.

ये गुजरातमें एक बनियाके जन्म्यो. सो यह बरस दसकौ भयो तब इनके माता - पिता मरे. पाछें गाममें वैरागी आए. सो याकों वैरागीनकों सङ्ग भयो. सो कछूक दिनमें वे वैरागी वा गाम तें कासीकों चले. सो येहू इनके सङ्ग चल्यो. सो कासी आयो. सो वह वैरागीनके सङ्ग कासीमें रह्यो. ता पाछें वह बरस सत्ताईसकौ भयो. तब याके मनमें आई, जो हों कबहू मथुरा वृन्दावन देख्यो नाहीं. तातें व्रज - यात्रा करों तो भलो है. सो ये कासी तें चल्यो सो मथुरा आयो. तहां विश्रान्त स्नान कियो. पाछें श्रीगोकुलकों चल्यो. सो श्रीठकुरानी घाटपै आयो. सो ता समै श्रीगुसांईजी आप ठकुरानी घाट पै सन्ध्यावन्दन करत हे. सो इन दरसन पायो. सो दरसन करत ही याके मनमें आई, जो इनके सेवक होंइए तो आछौ है. पाछें ये बिनती कियो, जो महाराज ! कृपा करि मोकों सरनि लीजिए. तब श्रीगुसांईजी वासों कहे, जो श्रीयमुनाजीमें न्हाय लेऊ. तब यह श्रीयमुनाजीमें स्नान कियो. पाछें श्रीगुसांईजी वाकों कृपा करिकै नाम - निवेदन कराए. ता पाछें यह वैष्णव कछूक दिन श्रीगोकुलमें रहिकै श्रीगुसांईजीके दरसन किये. ता पाछें यह श्रीगुसांईजीसों बिदा व्है श्रीगोवर्द्धन आयो. सो तहां श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. पाछें गोवर्द्धन पर्वतकी शोभा देखे. सो वाकौ मन उहां लगि गयो. सो उहांई रह्यो. और कहूं गयो नाहीं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै श्रीगुसांईजी आप श्रीजीद्वार पधारे है. तहां सब वैष्णव साथ हुते. सो तहां देखे तो श्रीगुसांईजी आप या वैष्णवकों पर्वतके उपर चढ़त देख्यो. सो उतार पर दोउ गेल पर गोबर देख्यो. तब उह वैष्णव राह छोड़िकै गोवर्द्धनकों पग लगाय उपर चढ्यो. तब श्रीगुसांईजी देखिकै सिर हलायो. तब और वैष्णव पास बैठे हुते तिन पूछी, जो महाराजाधिराज ! यह सिर हलायो सो कारन कहा है ? सो कह्यो, चहिए. तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुखसों कहे, जो श्रीगोवर्द्धन मनिमय जटित साक्षात् भगवद्स्वरूप हैं. ता पर मूढ - मूरख हैं सो या भांतिसों श्रीगिरिराजके उपर चढ़त हैं. और श्रीगोवर्द्धन पर्वतके उपर दोड़त हैं. सो तहां 'ब्रह्मवैवर्तपुरान' कौ एक इतिहास है. सो

श्रीगुसांईजी आप कहे

जो एक बार श्रीकृष्णचन्द्रजी और नारदजी आप बैठें हते. तब श्रीकृष्णचन्द्रजीने नारदसों कह्यो, हम पानी - प्यासे हैं. तब श्रीनारदजी पानीकों चले. सो आगें जांइकै देखें तो एक बड़ो सरोवर है. ताके पास दोई लरिका बैठे हैं, सो तपस्या करत हैं. और पास बड़ो पर्वत हाड़नकौ ढेर पर्यो है. जो वह देखिकै नारदजी फिर आए. तब श्रीठाकुरजी पूछे, जो जल ल्याए नाहीं ? तब इन सब वृत्तान्त कह्यो. सो सुनिकै आप मुसिकाए. तब श्रीनारदजीने पूछ्यो, जो महाराजाधिराज ! याकै कारन कौन भांतिसों है ? सो आप कहिये. तब श्रीठाकुरजी आप श्रीमुखसों कह्यो, जो ये दोउ योगेश्वर हैं, सो श्रीगोवर्द्धन पर्वतके दरसनके लिये तपस्या करत हैं. सो ऐते जन्म भए हैं. सो इनके अस्थिनकौ पर्वत भयो है. सो जब कृपा होइगी तब दरसन होइंगे. अज हू ढ़ील है. सो श्रीगोवर्द्धन लीलात्मक भगवत्स्वरूप आनन्दमय हैं. सो ऐसें हैं. सो गोवर्द्धन पर्वत आपुनकों श्रीआचार्यजी महाप्रभुन आपकी कानी करिकै दरसन देत हैं. परि जीवकों ज्ञान नाहीं हैं. तातें हमने माथो हलायो. जो श्रीगोवर्द्धन हरिदासवर्य हैं. सो ऐसें कहिकै या वैष्णवके मिष सब वैष्णवनकों शिक्षा दीनी.

भावप्रकाश :
या वार्तामें यह जताए, जो श्रीगोवर्द्धन पर्वत महा अलौकिक हैं. काहेतें, जो उनमें सकल लीला विद्यमान हैं. तातें ये आनन्दमय भगवत्स्वरूप ही हैं. सो वैष्णवकों उनके उपर पांव धरनो नाहीं. भगवत्सेवा, भगवत् दर्शनार्थ उपर चढनो परे तो हू दण्डवत् करि पाछें गेल - गेल जानों. और ठौर पांव नहीं धरनो. नांतरु लीलानकौ अतिक्रम होंई. तो जीव लीलातें बाहिर परे.

सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजीका ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१६१।।

१६२-एक ब्राह्मन विरक्त वैष्णव, गुजरातकौ

अब श्रीगुसांईजीके सेवक एक विरक्त ब्राह्मन वैष्णव, गुजरातकौ, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत है

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'भाव - निपूणा' हैं. ये श्रीचन्द्रावलीजीकी अन्तरङ्ग सखी हैं. 'मधुरा' तें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं.

ये गुजरातमें एक ब्राह्मनके जन्म्यो. सो बालपनेसों विरक्त दसामें रहे. सो बरस बीसकौ भयो तब इनके माता - पिता मरे. सो याकौ ब्याह भयो नाहीं. तब ये तीरथको चल्यो. सो पहिले मथुराजीमें आयो. तहां इनकों एक वैष्णवसों मिलाप भयो. सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ सेवक हुतो, विरक्त हुतो. सो या ब्राह्मनने वासों पूछ्यो, भाई ! कोई ऐसो महापुरुष है, जो या जन्म - मरनकी व्याधि तें छुडावे ? तब वा वैष्णवने कह्यो, जो हां हां ! श्रीविटठलनाथजी गुसांई ऐसें ही हैं. उनके सरनि जांइवे तें सगरो अज्ञान दूरि व्है महासुखकी प्राप्ति होत हैं. मैं हू इनकौ सेवक हूं. जो तुम्हारी इच्छा होंई तो श्रीगोकुल जांई उनके सेवक होउ. तब वह ब्राह्मन वा वैष्णवसों कहे, जो तुम सङ्ग चलो तो आछो. तब वह वैष्णव वा ब्राह्मनके सङ्ग श्रीगोकुल आयो. पाछें श्रीगुसांईजीके पास जांई बिनती कीनी, जो महाराज ! या ब्राह्मनकौ सेवक कीजिए. तब श्रीगुसांईजी कृपा करि वाकों नाम - निवेदन कराय सेवक किये. पाछें श्रीगुसांईजी वाकी ओर कृपा - दृष्टि भरि चिते.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वा विरक्त ब्राह्मन वैष्णवकों भगवद्लीलाकौ ज्ञान भयो. सो गोप्य वार्ता जानवे लाग्यो. तब वा विरक्त ब्राह्मन वैष्णवने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! अब मोकों ऐसो उपदेस देउ सो दुःखरूपी संसार तें छूटों, और भगवल्लीलामें प्राप्ति होंई. तब श्रीगुसांईजीने श्रीमुखतें आज्ञा दीनी, जो ये बात तो बोहोत कठिन है. जो श्रीठाकुरजी कृपा करें तब यह दसाकी प्राप्ति होंइ. तब वा विरक्त वैष्णवने सब वैष्णवके उद्धार निमित्त पूछी, जो महाराज ! आपकी कृपातें कितनीक बात है ? राजके अधरामृतकै बचन सुनिकै जीव कृतारथ होंइ जांइ है. सो ऐसें बचन वा विरक्त ब्राह्मन वैष्णवके सुनिकै श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो पहिले तो वैष्णव ऐसें हते, जो अवकास होंइ तब श्रीयमुनाजीके तीरके विषे बैठिके कीर्तन करते. और अबकै वैष्णव तो ऐसें है, जो कीर्तन वार्ता सुनत नाहीं और लौकिक वार्ता बोहोत

सुनत हैं. सो ताके उपर कह्यो, सो श्लोक

नूनं दैवेन विहताः ये चाच्युत कथासुधाम् ।
हित्वा श्रृण्वन्त्य सद्गाथाः पुरीषमिव विड्भुजः ।।

और कह्यो, जो 'सर्वधर्मान्परित्यज्य' सो कैसें होंई ? सो ऐसें कहे, जो हों अकिञ्चन हों. और मनमें विचार करे, जो हों तो श्रीठाकुरजीके चरनारविन्दकौं आश्रय करत हों. तो सर्व दोष सहजहीमें छूटे. और लौकिक धर्म हैं सो सब वृथा हैं. ऐसो जाने तब सेवककौ धर्म सहजमें प्राप्त होंई. और भगवदीय वैष्णव, जो सेवाके धर्म आचरे तो बाधक नाहीं उपजे. सो काहेतें, जो श्रीठाकुरजी जानें, जो मेरी सेवा करत हैं. सो ताही तें श्रीठाकुरजी आप सेवाही कौ फल देत हैं. और व्रजभक्तनकी जैसी प्रीति होंइ, तब अङ्गीकार होंइ. लौकिक प्रपञ्चकौ लेस ही मनमें न राखे. सर्वस्व करिकै श्रीगोवर्द्धननाथजीकों जाने, और सर्व बातकौ त्याग करे. और वेनुनाद सुने. सो ये भगवदीय वैष्णवकी लीला - प्राप्तिके लक्षन. ताही तें कुसुमित फल है, सो फलित होंइ. और रोमाञ्चित होंइ. और अपने मनमें हरखे. मधुर धारा (बचन) बरखे. तातें भगवदीय वैष्णवकौ धर्म ऐसोई है, जो भगवद् प्राप्ति तथा भगवदीय वैष्णवनके अर्थ सर्व समर्पत हैं. यह तो सर्व बात एकबार होत है. सो श्रीठाकुरजी तथा ब्रजभक्तनकौ बोहोत भयो. तातें या प्रकारसों भगवदीय वैष्णवकों सदा रहनो.

और वैष्णवकों तीन वस्तूकी रक्षा करनी. सो प्रथम तो विवेक, ता पाछें धैर्य, ता पाछें आश्रय. सो इन तीनोंनकौ जतन करनो. सो प्रथम तो विवेककौ तात्पर्य कहत हैं, जो श्रीमहाप्रभुजी आज्ञा करत हैं, जो प्रभु ! सब आछो ही करत हैं. ऐसो विश्वास राखनो. कैसी ही स्थिति प्राप्त होंइ परि श्रीठाकुरजीसों प्रार्थना करनी नाहीं. प्रभुजीकी इच्छा होइगी सोई करेंगे. तातें सर्वथा करिकै भगवदीय वैष्णवकों प्रार्थना नहीं करनी. मनमें एक निर्द्धार करनो, जो श्रीप्रभुजी सब जानत हैं. प्रार्थना काहेकों करिए ? प्रार्थनाकौ तो प्रथम ही सिद्ध करिकै राखे हैं. और मनुष्य अपने मनकी हू नाहीं जानत, जो कहा है ? और अपने अद्रष्ट हू जानत नाहीं, जो अद्रष्टमें कहा लिख्यो है ? तो श्रीप्रभुजीके धर्म कैसें जानिए ? तातें सर्वथा करिकै काहू बातकी प्रार्थना नहीं करनी. श्रीगोवर्द्धननाथजीने विचार्यो होइगो सोई होइगो. सो

सब भलो करेंगे. ता पाछें वा विरक्त वैष्णवसों कह्यो, जो जीवकों अभिमान सर्वथा नहीं करनो. और ऐसो नहीं विचारनो जो हों तो ऐसी रीतिसों सेवा करत हों और प्रभुजीको हमारी इच्छा तें कार्य करे नाहीं है. आपकी इच्छा प्रमान कार्य करत हैं. सो ऐसो मेरे सरीरकी सेवाकौ कष्ट है. मैं कहा करों ? मैं तो अब बैठ्यो रहोंगो. ऐसो जीव जो विचार करिकै पर्यो रहे, तब वा जीवकौ कार्य सिद्ध कहांतें होई ? सो ऐसो नहीं करनो. सो वैष्णवकों गुरुकी आज्ञा प्रमान चलनो. गुरुकी आमा लोप नहीं करनी. आज्ञाकौ उल्लङ्घन करे तो बडो अपराध है. तातें सेवककों तो सदा स्वामीके आधीन रहनो. जब सेवक निवेदन कर्यो है, पुत्र, दारा, गृह धनादिक सब समर्पन कर्यो है, तब अब या जीवकौ कहा है ? सो अभिमान करत है ? तातें प्रभुजी जो करेंगे सो आछी ही करेंगे. ऐसो निश्चय राखनो.

और दूसरो, हौं सेवक हों तातें सेवा ही करनी मेरो धर्म है. तामें तीनों प्रकारके दुःखकों सहन करे. ऐसो विवेक, धैर्य जिनकों आयो होइ ताकों प्रार्थना सर्वथा नाहीं करनी. और कोई कहे, जो श्रीमुख देखिवेकी प्रार्थना नहीं करनी ? तहां कहत हैं, जो ये तो भगवदीयनकौ मुख्य धर्म है. जो श्रीमुख निरखनो. जो बैठ्यो नहीं रहनो. प्रयत्न करनो. श्रीठाकुरजी कौन भांतिसों अङ्गीकार करत हैं, जो एक तो अपने घर बैठे अङ्गीकार करते हैं. और एक निकट आवे तब अङ्गीकार होई. तातें श्रीप्रभुजीकी इच्छा जानिवेकों कोई समर्थ नाहीं है. तातें या जीवकों सर्वदा सेवामें रहनो, यह आश्रय है. और काहू बातकी चिन्ता नहीं करनी. बैठी नहीं रहनो.

पाछें 'अन्तःकरण प्रबोध' वर्णन कियो, जो निवेदन भक्तिकै प्रकार जाकों द्दढ़ होंई ताकों कैसो हू दोष न उपजे. सो प्रथम श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप श्रीमुख तें अधरामृत रूप वचन कहे हैं. जो मैं आज्ञा दोइकौ भंग कियो है. तिनकौ पश्चात्ताप नाहीं करनो. जानिये, जो मैं हू सेवक हूं. मैं तो सर्वस्व श्रीप्रभुजीकों समर्प्यो है. तातें कहा चिन्ता है ? सो ताके उपर और हू कह्यो है, जो देहकौ वात्सल्य जानिकै रहिवेकौ प्रयत्न करें, और सेवामें सावधान न रहे, तो श्रीप्रभुजी आपु अप्रसन्न होई. ताके उपर द्दष्टान्त कहें, जैसें वधू प्रौढ भई होंइ तब माता - पिता स्नेह करिकै घर राखे, और वाके बरकौ आदर समाधान बोहोत करे, परि बहूकों घर न पठावे तो बरकौ मन सन्तोष पावे नाहीं. और पुत्रीकों वाके घर पठवावे तब वाकौ बर बोहोत सन्तोषकों पावत है. ताही प्रकार अपनी देहकों समझिकै सेवामें सावधान रहे तो प्रसन्न होंई.

ऐसे श्रीगुसांईजीने वा विरक्त वैष्णवसों कह्यो. सो वह विरक्त वैष्णव वचनामृत सुनिकै बोहोत प्रसन्न भयो. पाछें श्रीगुसांईजी अपनी बैठकमें पधारे. तब विरक्त वैष्णव हू श्रीनवनीतप्रियजी आदि सातों स्वरूपके दरसन करिकै श्रीगुसांईजीके पास आयकै दण्डवत् करी. तब श्रीगुसांईजीने पूछी, जो वैष्णव ! श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन किये ? तब वा विरक्त वैष्णव श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! आपकी कृपा तें सातों स्वरूप दरसन किये. सो ताकी बडाई कहां तांई जीव करि सके ? परि महाराज ! इनके स्वरूप - भाव जानिए तो आछी. तब श्रीगुसांईजीने वा वैष्णवसों कह्यो

श्रीयशोदाजीके इहां प्रभुनने बाललीला करी है. सो स्वरूप श्रीनवनीतप्रियजीकौ है.

और श्रीयशोदाजीके इहां बड़े भये तब गौचारन लीला किये हैं सो स्वरूप श्रीमथुरानाथजीकौ है. सो जा समै श्रीमथुरानाथजी श्रीगोपीजनन ते घर माखनकी चोरीकों जात हैं. तब सखानकों ले कै श्रीस्वामिनीजीके घर जात हैं. तहां दूध, दहीं माखनकी चोरी करत हैं. तहां एकान्तमें आयकै श्रीस्वामिनीजीने कह्यो, जो आज मैं पकरिकै श्रीनन्दरायजी श्रीयशोदाजीकी आगें ले जाउंगी. तब श्रीमथुरानाथजीकी दोई भुजा श्रीस्वामिनीजीने पकरी. तब श्रीमथुरानाथजी आप दोई भुजा और प्रगट करिकै श्रीस्वामिनीजीसों बिनती कीनी, जो मैं तो तुम्हारे बस हों. तुमकों पास ही राखत हों. सो मेरे नीचे श्रीहस्तमें संख है. सो तुम्हारी ग्रीवाके आकार है. तातें मं धारन किये हों. दूसरे श्रीहस्तमें पद्म है. सो तो कमलवत् है. और तुम्हारो मुख है सो हू कमल है. तातें मैं तिनके आकारमें धारन किये हों. और उपर वाम हस्तमें गदा है. सो तुम्हारे कुचकै आकार रूप है तातें राखे हों. और एक श्रीहस्तमें चक्र है. सो तुम्हारे आभूषन जो कटि किंकनी हैं तथा श्रीहस्तमें कङ्गन हैं, सो ताकी आरति करिकै मैं अपने श्रीहस्तमें राखे हों. तातें मोकों छोरि देहु. तब रञ्चक अधरामृतकौ पान करिकै छोरि दिए. सो ऐसी लीला श्रीमथुरानाथजीमें हैं.

और जब कात्यायनी व्रत कियो, तब आप 'चीरहरन' लीला करी है. सो स्वरूप श्रीविटठलेशजीकौ है. सो श्रीस्वामिनीजीके भावमें मगन हैं. सो ताहीतें गौर स्वरूप प्रगट हैं. और वस्त्रनमें जो श्याम स्वरूप होंइ तो सब गोपिका श्रीठाकुरजीकों जानि जांई. तातें श्रीठाकुरजी गौर

होंइकै, श्रीगोपिकाके सद्दस होंइकै, वस्त्रचीर चोरीकै कदम्बपै जांइ बैठे. ता पाछें उहां गोपिकानके मनमें लज्जा रूप अन्तराय रह्यो है. सो श्रीविटठलेशरायजी दूरिकै सबनके वस्त्र दिये. सो लीला श्रीविटठलेशरायजीमें है.

अब 'रासपञ्चाध्याई' में सब ब्रजभक्तनकों पुलिनमें बैठाए सो स्वरूप श्रीद्वारकानाथजीकौ है. और उहां गोपी सब पुलिनमें बैठी हैं. तहां मध्यमें श्रीस्वामिनीजी बिराजति हैं. तहां श्रीठाकुरजी आपु अचानक पधारे. सो तहां सखीयनको समस्यातें बरजी हैं. और पाछें श्रीहस्त कमल करिकै श्रीस्वामिनीजीके नेत्र मूंदे हैं. और दोइ हस्तसों वेनुनाद किये हैं. सो याही प्रकार सो रसमय लीला हैं सो श्रीद्वारिकानाथजीमें है.

अब श्रीगोकुलनाथजी श्रीगोवर्द्धनधारन किये हैं. और सब ब्रजभक्तनकी रक्षा किये. वाम श्रीहस्त करि श्रीगोवर्द्धनकों उठायो है. ता पाछें जेंमने श्रीहस्तमें धारन कियो है. और दोउ श्रीहस्तसों वेनुनाद करत है. सो सब ब्रजकों सुधाकौ पान करावत हैं. कबहूक बेनुकी फूंक पर श्रीगोवर्द्धनकों राखत हैं. और वाम भागके नीचेके श्रीहस्तमें संख है. सो आधिदैविक जलरूप है. सो इह लीला गोवर्द्धनधर श्रीगोकुलनाथजीमें प्रगट हैं.

अब श्रीगोकुलचन्द्रमाजीकौ स्वरूप साक्षात् मनमथ - मनमथ है. सो जब 'पञ्चाध्याई'में आप अन्तर्धान भए. ता पाछें श्रीगोपिकानने रुदन कियो. तहां प्रगट भये. सो ललितत्रिभङ्गीकौ स्वरूप हैं. ता पाछें रास भयो है. तब आप दोउ हस्त करि मुरली बजाई है. और सब ब्रजभक्तनकों रसदान करत हैं. सो तहां छह धर्म एक धर्मी. सो ताके उपर अङ्गुली धरी हैं. सो तो यह ब्रजभक्तनकौ समाधान करत हैं, जो तुम्हारी भक्तिके मैं बस हूं. मैं तुम्हारो रनिया सदा हूं. सो ऐसें श्रीगोकुलचन्द्रमाजीके रासादि लीला हैं. सो ताकों प्रादुर्भाव बोहोत है.

अब श्रीमदनमोहनजीकौ भाव कहत है, जो निकुञ्जादिकके भीतर है, सो नाना प्रकारकी लीला करत हैं. तहां कोटि - कोटि कामदेव लज्जा पावत हैं. तहां भांति - भांतिकी लीला करत हैं. अरु 'पञ्चाध्याई'में मुरली बजाईकै सब ब्रजभक्तनकों बुलाये. ता समै उद्दीपन

भावरूप आप भए. सो स्वरूप श्रीमदनमोहनजीकौ हैं. या प्रकार सातों स्वरूपनकी भावना है. तातें उनके दरसन करे ता समै या प्रकार भावना करनी, ऐसें श्रीगुसांईजी आप आज्ञा किये.

और श्रीगोवर्द्धननाथजी निकुञ्ज - नायक हैं. सो निकुञ्जके द्वार पर ठाढ़े होंई स्वकीय जनकों उंची भुजा करि बुलावत हैं. या प्रकार श्रीगोवर्द्धननाथजीके स्वरूपकी भावना करनी.

सो सुनिकै विरक्त वैष्णव बोहोत प्रसन्न भयो. ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों पधारे. तब विरक्त वैष्णव हू सङ्ग हुतो. सो श्रीगुसांईजी गोपालपुर पधारे. पाछें स्नान करिकै श्रीगोवर्द्धननाथजीके मन्दिरमें पधारे. तब भोगकौ समय हुतो. सो पधारिकै भोग समर्प्यो. पाछें भोग सरायो. राजभोग - आरती करि. तब या विरक्त वैष्णवने श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. और अपने मनमें विचार कियो, जो श्रीगुसांईजीने श्रीमुख तें बचन कहे तेसेंई दरसन श्रीगोवर्द्धननाथजीके भए. ता पाछें श्रीगुसांईजी अनोसर करिकै अपनी बैठकमें पधारे. तब वह विरक्त वैष्णव हू श्रीगुसांईजीके पास आयो. ता पाछें श्रीगुसांईजी भोजन करिवेकों पधारे. तब वा विरक्त वैष्णवकी पातरि धराई. सो भोजन करिवेकों बैठ्यो. ता पाछें श्रीगुसांईजी पोढ़े. पाछें वह विरक्त वैष्णव महाप्रसाद ले कै उठ्यो. तब श्रीगुसांईजीकों पंखा करन लाग्यो. पाछें दूसरे दिन श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मांगि ब्रजयात्राकों गयो. सो कहूं स्वस्थ होइकै बैठे नाहीं. सो श्रीगोवर्द्धननाथजी इनकों सानुभावता जनावते. पाछें वा विरक्त वैष्णवकी देह छूटी. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीके चरनारविन्दमें प्राप्त भयो.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो भगवत्सेवा, भगवद्दर्शन भावपूर्वक करने. सो पुष्टिमार्गमें स्वरूप भावना, लीला भावना, भाव भावना मुख्य हैं. सो वा प्रकार निरन्तर भावना करनी. तातें मन अलौकिक होंई. तब निरोध सिद्ध होंई.

सो वह विरक्त वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१६२।।

१६३-एक क्षत्री, पूरबकौ

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक क्षत्री, पूरबकौ बासी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनका नाम 'कीरति' है. ये 'मोहनी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

ये पूरबमें 'पीपरी' तें उरे कोस दोइ पर एक गाम है, तहां एक द्रव्यमान् क्षत्रीके जन्म्यो. सो यह बालपनेसों वैराग्य दसामें रहे. मनमें कहे, जो लौकिक सुख तो क्षणिक हैं. जब या देहसों भगवानके साक्षात् दरसन होंई तब ही जीवन सार्थक जाननो. परि माता - पिताके डर तें यह अपने मनकी बात काहूसों कहें नाहीं. ऐसें करत यह बरस तीसकौ भयो. तब याके माता - पिता मरे. सो याने ब्याह कियो नाहीं. सो यह क्षत्री सुन्दरदास गङ्गापुत्रकौ जजमान हतो. सो सुन्दरदास श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके सेवक हे. सो उनकी वार्ता आगें कहि आए है.

सो एक समय सुन्दरदास वा क्षत्रीके घर कछू कार्यार्थ आए. तब या क्षत्रीने सुन्दरदासकौ बोहोत आदर सन्मान कियो. पाछें कह्यो, जो प्रोहितजी ! कछू ऐसो उपाय बतावो, जातें याही देहसों भगवानके साक्षात् दरसन होंई. तब सुन्दरदास कहे, जो तू श्रीगुसांईजीकौ सेवक होउ तो तेरो मनोरथ सिद्ध होंई. आजकाल्हि तो ठाकुर श्रीगुसांईजीके आधीन हैं. तब वह क्षत्रीने पूछ्यो जो प्रोहितजी ! श्रीगुसांईजी कौन हैं ? कहां रहत हैं ? तब सुन्दरदास कहे, जो श्रीगुसांईजी श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके पुत्र है. श्रीगोकुलमें रहत हैं. उनके आधीन श्रीगोवर्द्धननाथजी आप रहत हैं. सो श्रीगोवर्द्धननाथजी गोवर्द्धन पर्वतमें सों प्रगट भये हैं. साक्षात् कृष्णकौ स्वरूप हैं. सो जो कोउ उनके सरनि जात है तापैं ये कृपा करत हैं. तब या क्षत्रीने कह्यो, जो प्रोहितजी ! अब तो मोकों बेगि श्रीगुसांईजीकौ सेवक कराइए. मैं उनके सरनि जाउंगो. तब सुन्दरदास कहे, जो आजकाल्हिमें श्रीगुसांईजी श्रीजगन्नाथरायजीके दरसनकों पधारेगें. तब तू पुरुषोत्तमपुरीमें जांइ उनकौ सेवक हूजियो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो बोहोरि श्रीगुसांईजी पुरुषोत्तमपुरी श्रीजगन्नाथरायजीके दरसनकों पधारे. सो वा क्षत्रीने सुनी, जो श्रीगुसांईजी श्रीजगन्नाथरायजीके दरसनकों पधारे हैं. तब वह क्षत्री घरमें जो हतो सो सब ले कै श्रीगुसांईजीके दरसनकों चल्यो. सो पुरुषोत्तमपुरी आयो. पाछें श्रीगुसांईजीके पास जांइ बिनती कीनी, जो महाराज ! कृपा करिकै मोकों सरनि लीजिए. तब श्रीगुसांईजीने वाकी बहोत आरति जानि कृपा करिके वाकों सरनि लियो. वाको नाम सुनायो. ता पाछें एक व्रत करवायकै समर्पन करवायो. पाछें वा क्षत्री वैष्णवने बिनती करी, जो महाराज ! मोकों कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजीने कही, जो श्रीठाकुरजीकी सेवा करो. तब वा क्षत्री वैष्णवने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मो तें इकले तें भगवत्सेवा कैसें बने ? तातें महाराज ! हों तो आपकी सेवा करोंगो. और आपके सङ्ग ब्रजकों चलूंगो. श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो आछो. ता पाछें वा क्षत्री वैष्णवने जो कछू पास हतो सो सब श्रीगुसांईजीकी भेंट कीनो. पाछें श्रीगुसांईजीके सङ्ग रह्यो. और जो सेवा देखे सो करन लाग्यो. सो सेवा भली भांतिसों करतो. पाछें महाप्रसाद लेतो. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारे. सो यह क्षत्री वैष्णव हू सङ्ग आयो. सो केतेक दिन श्रीगोकुल रहिकै ता पाछें श्रीगुसांईजी घोड़ा पर बिराजि श्रीनाथजीद्वार पधारे. सो उह क्षत्री वैष्णव हू श्रीनाथजीद्वार गयो. सो श्रीगुसांईजी तो उत्थापनके समै पहोंचे. सो श्रीनाथजीके उत्थापन किये. और उह क्षत्री वैष्णव तो पांवन चलतो. सो पाछें रहि गयो. सो सेनके दरसन होंइ चुके पाछें आयो. सो देखे तो सेन होंइ चुके है. तब उह क्षत्री वैष्णव अपने मनमें बोहोत ही पश्चाताप करन लाग्यो, जो आज मैं प्रथम ही आयो. सो मोकों दरसन नहीं भए. और वह क्षत्री वैष्णवके मनमें ऐसी हती, जो दरसन करिकै महाप्रसाद लेनो. सो दरसन तो भए नाहीं. तब उह क्षत्री वैष्णव श्रीनाथजीके मन्दिर बाहिर ड्यौढ़ीपै बैठ्यो. सो दरसन न भये तातें वाके मनमें अत्यन्त ताप भयो. सो ताप श्रीनाथजीसों सह्यो न गयो. तब आपु श्रीठाकुरजी मध्यरात्रिके समय झारी बंटा ले कै मन्दिरके बाहिर वा क्षत्री वैष्णवके पास पधारे. सो वा तें श्रीगोवर्द्धननाथजी आपुने कही, जो वैष्णव दरसन करि लै. तब वा क्षत्री वैष्णवने श्रीगोवर्द्धननाथजी आपुके दरसन किये. पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी आप झारी बंटा वा वैष्णवकों सोंपे. और आज्ञा किये, जे यामें तें महाप्रसाद लीजियो. सो ऐसें कहिकै आप मन्दिरमें पधारे. और वा वैष्णवने महाप्रसाद लीनो. और झारीमें तें जल पियो. सो एक तो पंथ कियो, दूसरो भूखो, सो प्रसाद लेत ही वा क्षत्री

वैष्णवकों आलस आयो. सो उह जारी बंटा उहांही धरिकै एक ओर जांइकै पर्वतपै सोय रह्यो. तब प्रातःकाल संखनाद भए तब उठ्यो.

और श्रीगोवर्द्धननाथजी बाहिर पधारे पाछें भीतर पधारे. सो मन्दिरके किवार खुले परे हैं. सो जब श्रीगुसांईजी न्हायकै उपर पधारे तब देखे तो मन्दिरके किवाड़ खुले परे हैं. तब श्रीगुसांईजीने सेवकनसों कही, जो वस्तू भाव सम्हारो. पाछें श्रीगुसांईजी भीतर पधारिकै देखे तो झारी बंटा नहीं हैं. तब श्रीगुसांईजी तो मङ्गल भोग धरिकै बाहिर पधारे. तब उह वैष्णव श्रीगुसांईजीके दरसनकों आयो. तब श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिकै झारी बंटा श्रीगुसांईजीके आगें धरे. तब श्रीगुसांईजीने वा वैष्णवसों पूछी, जो ए तेरे पास कैसें आए ? तब वा वैष्णवने हाथ जोरिकै बिनती कीनी, जो महाराज ! श्रीगोवर्द्धननाथजी रातिकों धरि गए हैं. पाछें सब विधिपूर्वक समाचार कहे. तब श्रीगुसांईजी भीतरिया सेवकनकों आज्ञा किये, जो यह वैष्णव जा समय महाप्रसाद मांगे सो ता समय देनो. और आपने या वैष्णवसों आज्ञा कीनी, जो - जो समय तोकों भूख लागे ताही समय अनसखड़ी महाप्रसाद मांगि लीजो. और तोसों बने सो सेवा करियो. पाछें केतेक दिन रहिकै श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुल पधारे. और उह क्षत्री वैष्णव श्रीनाथजीद्वारमें रह्यो. सो भली भांतिसों स्नेहपूर्वक प्रेम चित्त लगायकै सेवा करतो. श्रीगोवर्द्धननाथजी इनके उपर सदा प्रसन्न रहते. सो वा वैष्णवने भली भांतिसों सेवा करी. पाछें वाकी देह छूटी. तब श्रीगुसांईजीके अनुग्रह तें उनकै नित्य लीलामें प्रवेश भयो. अलौकिक देह पायो. लौकिक देह पर्यो रह्यो. अलौकिक देह तें नित्य लीलामें प्रवेश कियो. सो भीतरियानने श्रीनाथजीके मन्दिरमें वाकों देख्यो. सो श्रीगुसांईजी जब श्रीनाथजीद्वार पधारे तब आप यह बात भीतरियानके मुख तें सुनि. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए. और श्रीमुख तें कहे, जो प्रभु थोरी सेवा करे तोऊ बोहोत मानत हैं. और देखो, या वैष्णवके भाग्य ! थोरेसे दिननमें श्रीगोवर्द्धननाथजीने अत्यन्त कृपा कीनी.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो प्रभु ताप आतुरता देखि बेगि प्रसन्न होत हैं. तातें वैष्णवकों ताप राखनो. और प्रीतिपूर्वक कोऊ रञ्च हू सेवा करत है ताकों प्रभु बोहोत मानत हैं यहू जताए.

सो यह क्षत्री वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हो. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए ? वार्ता ।।१६३।।

१६४-एक अन्यमारगी, जानें स्मसानमें बैठिकै खायो

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक अन्यमारगी, जाने स्मसानमें बैठिके खायो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'कान्ता' है. ये 'मोहनी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समय वैष्णव दोइ चारि श्रीगोकुलमें इकठौरे होंईकै निरधार करत हुते. जो भाई ! आजके समयमें तो श्रीगुसांईजीकौ प्रताप ऐसो ही है. जो कोई पापी दुष्ट कर्म करिवे वारो होंइ, पाखण्डी होंइ, परि जो सरनि आवे तिन सबनके पाप दूरि करत हैं. सो उन वैष्णवनमें एक अन्यमारगी बैठ्यो हतो. सो वाने कही, जो वैष्णवन ! तुम कहत हो सो सांची बात होंइ तो मैं हूं ऐसें दुष्ट कर्म कीने हैं. सो अब मोकों श्रीगुसांईजीकी सरनि लिवाव और मेरे पाप दूरि करवावो. तब में जानो, जो ठीक बात है. तब वैष्णवन कही, जो आज तू हमारे सङ्ग चलि. पाछें उह वैष्णव अन्यमारगीयकों सङ्ग ले कै श्रीनाथजीद्वार श्रीगुसांईजीके पास आए. पाछें सबनने दण्डवत् करी. और उनन सब समाचार श्रीगुसांईजी आगें कहे, जो महाराज ! यह अन्यमारगी है. सो आपुसों बिनती करत है, जो मोकों कृपा करिकै सरनि लीजे. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो स्नान करि आउ. तोकों हम नाम दे सरनि लेइंगे. फेरि तेरे मनमें आवे सो करियो. हम तोकों कबहू छोरेंगे नाहीं.

भावप्रकाश :

यह कहि यह जताए, जो पुष्टिमार्गमें जीव सरनि आवत हैं, ताकों प्रभु आप सर्वथा छोरत नाहीं. काहेतें, यह प्रमेयमार्ग है. तातें जीवकी कृति देखत नाहीं. सो श्रीगुसांईजी आप साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम हैं. तासों या प्रकार कहे.

तब उह स्नान करिकै आयो. और बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! मोकों नाम दीजिए. तब आपु वाकों नाम दियो. पाछें श्रीगुसांईजी आप स्नान करिकै श्रीनाथजीके मन्दिरमें पधारे.

ता पाछें राजभोगके दरसन खुले. तब सब वैष्णवने श्रीनाथजीके दरसन किये. पाछें याहूने दरसन किये. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीकी सेवा तें पहोंचकै श्रीगिरिराज तें नीचे अपनी बैठकमें पधारे. सो गादी तकियानके उपर बिराजे. तब सब वैष्णव श्रीगुसांईजीके दरसन करिकै अपने घरकों गए. तब वा वैष्णवने दरसन करि दण्डवत् करि भेंट कीनी. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किए, जो तू आज महाप्रसाद यहां ही लीजियो. पाछें श्रीगुसांईजी भोजनकों पधारे. सो श्रीगुसांईजी भोजन करिकै बीड़ा अरोगिकै श्रीगुसांईजी आपुने श्रीहस्तसों जूंठनिकी पातरि धरी. पाछें वा वैष्णवने महाप्रसाद लियो. ता पाछें आज्ञा मांगि अपने घर श्रीगोकुलकों गयो. सो उन घर आइ विचार कियो, जो अब परीक्षा करिए. पाछें वह स्मसानमें जांइ रह्यो. सो उहां मुरदाकी आंचमें दारि बाटी करि खांतो. और मनमें अहर्निश यही कहे, जो देखों, श्रीगुसांईजी मेरो कैसें उद्धार करत हैं ?

वार्ता प्रसङ्ग २ :

सो एक राजा और कोई देसमें रहत हुतो. सो वाके गलित कोढ़ हुतो. सो वा राजाने अनेक औषधि कीनी, परि वाकौ कौढ़ न गयो. तब काहूने कही, जो तुम तीर्थयात्रा करो तो तुम्हारो कोढ़ जांइ. और लाखन रुपैया खर्चे परि वाकौ कोढ़ न गयो. तब उह राजा तीर्थयात्रा करिवे निकस्यो. सो तीर्थयात्रा करत - करत केतेक दिनमें श्रीगोकुल आयो. परि यात्रा करिकै हू वाकौ रोग न गयो. सो तब वा राजाने श्रीगुसांईजीके दरसन किये. सो दरसन करिकै बिनती कीनी, जो महाराज ! मैनें लाखन रुपैया खरचे और सब तीर्थनमें स्नान किये. परि मेरो रोग न गयो. और आप ईश्वर हो. सो यह विचारिकै मैं आपके पास आयो हूं. सो आपु मेरो रोग न खोवोगे तो मेरो रोग और कौन

खोवेगो ? तातें आपकों छोरिकै और कौनके पास जाउं ? सो ऐसी वा राजाकी दीनता देखिकै श्रीगुसांईजी आप तो परम दयालसो आज्ञा किये, जो यह तेरो रोग तो यहां स्मसानमें हमारो सेवक रहत है, सो उनके पास जांईके उनकी जूंठनि ले कै खाईयो तब तेरो रोग जाइगो. परि उह वैष्णव जूंठनि देइगो नाहीं. तातें तू जोरावरीसों लीजियो. मनमें ग्लानि मति ल्याइयो. तब उह राजा आपकी आज्ञा प्रमान स्मसानमें जांईकै वा वैष्णवसों जूंठनि मांगी. सो वाने न दीनी. तब वा राजाने जोरावरी ले कै खाई. सो जूंठनि भीतर गई. तब तत्काल वाकौ कोढ़ निवृत्त भयो. सुन्दर दिव्य नौतन सरीर भयो. ता पाछें उह राजा बहोत ही प्रसन्न भयो. पाछें वा वैष्णवपें राजा बहोत ही प्रसन्न भयो. पाछें वा वैष्णवने राजासों कही, जो तुमने मेरी जूंठनि क्यों खांई ? तब राजाने वा वैष्णवसों कही, जो मोकों श्रीगुसांईजीकी आज्ञा हती, जो तू स्मसानमें जांइकै वा वैष्णवकी जूंठनि खाइगो, तब तेरो रोग जाइगो. सो मैं आपुकी आज्ञा मानिकै आयो हूं. सो तुम्हारी जूंठनि खांई. तब मेरो रोग गयो. तब वा वैष्णवने कही, जो अज हू श्रीगुसांईजी मेरी सुधी करत हैं ? पाछें वा वैष्णवने अपने मनमें यह निश्चय कियो, जो श्रीगुसांईजी तो साक्षात् ईश्वर हैं. और मैनें दुष्टता बोहोत ही कीनी. परि प्रभु बड़े दयाल हैं. जो मेरो दोष न विचारे, जो उलटो गुन करिकै माने. तातें मोकों छोरे नाहीं. सो मेरो कृत्य आपु न देखे. तातें अब मैं आपुके पास जांइ प्रभुनकी आज्ञा प्रमान सेवा करूंगो. सो उहां सों स्नान करि अपने घर आय वस्त्र पहरिकै श्रीगुसांईजीके पास आयो. पाछें बिनती करी, जो महाराज ! आप तो पूरन पुरुषोत्तम हो और मैं तो दुष्ट स्वभाव करिकै दुष्ट जीव हों. और दुष्ट कर्म बोहोत ही किये हैं. परि आपु तो परम दयाल हो. तातें अब मेरे उपर कृपा अनुग्रह करिये. तब श्रीगुसांईजी आपु कृपा करिकै आज्ञा किए, जो काल्हि एक व्रत करि ब्रह्मसम्बन्ध करियो. तब श्रीगुसांईजीकी आज्ञा प्रमान वह व्रत करिकै दूसरे दिन स्नान करि अपरस वस्त्र पहरिकै श्रीगुसांईजीके पास आयो. और बिनती करी, जो महाराज ! कृपा करिकै मोकों ब्रह्मसम्बन्ध करवाइए. तब श्रीगुसांईजी आपु वा वैष्णवकों ब्रह्मसम्बन्ध करवायो. और वाकौ नाम 'वैष्णवदास' धर्यो. ता पाछें आपु वा वैष्णवके माथे सेवा पधराये. और सेवाकी रीति भांति सिखाये. तातें उह वैष्णव श्रीठाकुरजीकों पधरायकै पाछें नयो मन्दिर सिद्ध करवायकै अपरस वस्त्र काढ़ि शुद्ध करि बासन पलटाय श्रीगुसांईजी आपकी आज्ञा प्रमान सेवा करन लाग्यो. पाछें श्रीगुसांईजीकों घर पधराय श्रीठाकुरजीकी आरति करवाई. पाछें श्रीगुसांईजी आपुकों यथासक्ति भेंट करी. ता पाछें वा दिना श्रद्धा प्रमान वैष्णवनकों बुलायकै महाप्रसाद लिवायो. पाछें उह वैष्णव श्रीमहाप्रभुजीकी प्रनालिकासों सेवा करन लाग्यो. सो कितनेक दिनमें श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे. जो चहिए सो मांगि लेते. सो उह भलो भगवदीय भयो. तब ऐसें करत कितनेक दिनमें

याकी देह असक्त भई. तब याने अपने श्रीठाकुरजी तथा घरमें जो कछू द्रव्य हतो सो सब श्रीगुसांईजीके घर पहोंचाए. पाछें वाकी देह छूटी. सो भगवल्लीलामें प्रवेश भयो. ता पाछें वैष्णवनने याकौ अग्निसंस्कार कियो.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ यह अभिप्राय है, जो वैष्णवकों श्रीगुसांईजीके वचन उपर विश्वास राखनो. सो या राजाने श्रीगुसांईजीकी आज्ञाकौ विचार करि वैष्णवकी जूंठनि खाई, सो राजाकौ कोढ़ निवृत भयो. तातें विश्वास बड़ो पदार्थ है. विश्वास होंइ तो सर्व वस्तूकी सिद्धि होंई. और वा वैष्णवने परीक्षामें हू, श्रीगुसांईजीकौ अहर्निश स्मरन कियो, तो श्रीगुसांईजी वाकी बुद्धि फेरे.

सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो। कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१६४।।

१६५-एक राजा, जानें स्मसानमें जूंठनि खाई

अब श्रीगुसांईजीके सेवक एक राजा, पूरवकौ, जाने स्मसानमें जूंठनि खाई, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामैं इनकौ नाम 'सुव्रता' है. ये अन्तर्गृहगतामें है. ये 'मोहिनी' तें प्रगटी हैं, तातें इनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो उह राजा पूरवकौ हतो. सो वाकों गलित कोढ़ हतो. सो राजाने घने - घने वैद्यनकों बुलाइकै औषधि करवाई. और बोहोत इलाज करवायो. और जोतिसीनकों बुलाइ पून्यदान बोहोत किये. और लाखन रुपैया खर्चे. परि वाकौ रोग न गयो. तब एक ब्राह्मनने कही, जो

राजा ! तीर्थयात्रा करिवेकों निकसो. तब वह तीर्थयात्राकों निकस्यो. सो तीर्थयात्रा करत केतेक दिनमें श्रीगोकुल आयो. सो तीर्थयात्रा किये, परि रोग न गयो. ता पाछें श्रीगोकुलमें आइकै श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करी. पाछें उह राजा श्रीगुसांईजीके आगें हाथ बांधिकै ठाढ़ो रह्यो. तब श्रीगुसांईजी तो परम दयाल अन्तरजामी. सो वा राजाके उपर दया आई. तब खवाससों आज्ञा करी, जो तू यासों पूछि, जो तू काहेकों हाथ बांधे ठाढ़ो है ? तब वा खवासने राजासों कही, जो तुम काहेकों हाथ बांधे ठाढ़े हो ? तब राजाने दण्डवत् करी, पाछें बिनती कीनी, जो महाराज ! मैं पूर्वमें अमूक गाम है तहां रहत हों. और महाराज ! मेरे सरीरमें बोहोत रोग उत्पन्न भयो है. और बोहोत वैद्यनकों बुलाए और औषधादि करवाई. तथा ग्रहनकौ दान - पून्य हू बोहोत कियो. लाखन रुपैया खर्चे और बोहोत उपाय किये. जो जाने कह्यो सो सब कियो. परि मेरो रोग न गयो. तब एक ब्राह्मनने कही, जो तुम तीर्थयात्रा करो तो तुम्हारो रोग जांइ. सो महाराज ! मैं तीर्थयात्रा करत - करत तुम्हारे पास आयो हूं. और महाराज ! मैं दोई - चारि बार जहर खायो. काहेतें, जो मैं जान्यो, जो ऐसें तीर्थनमें मेरी मृत्यु होंइ तो आछौ. परि मेरो काल आयो नाहीं. तातें महाराज ! मैं बोहोत कायर होंइ रह्यो हूं. और यहां आयो हूं. तातें अब आपुकी इच्छामें आवे सो करिये. और अब आपकों छोरिकै कहां जाउं ? ऐसें राजाने कह्यो. सो सब खवासने श्रीगुसांईजीके आगें कह्यो. और बिनती करी, जो महाराज ! ऐसें राजा बिनती करत हैं. तब श्रीगुसांईजी आपु वा राजाकौ दुःख सहि न सके. तब खवाससों कह्यो, जो तू राजासों कहियो. जो तुम हाथ छोरि देउ, हाथ बांधो काहेकों ठाढ़े हों ? तुम स्मसानमें जाऊ. उहां हमारो एक सेवक रहत है. सो ताकी जूंठनि तुम खावो. तब तुम्हारो रोग जांइ. परि उह जूंठनि देइगो नाहीं. सो तुम जोरावरीसों लीजियो. मनमें ग्लानी मति लाइयो. तब राजा तें खवासने कह्यो. पाछें उह राजा अपने मनमें निश्चय करिकै श्रीगुसांईजी आपुकों दण्डवत् करि स्मसानमें गयो. तब वा राजाने वा वैष्णवसों जूंठनि मांगी. तब वाने जूंठनि दीनी नाहीं. तब राजाने जोरावरीसों ले कै खाई. सो भीतर उदरमें पहोंचत ही तत्काल वा राजाकौ कोढ़ निवृत भयो. और सुन्दर आछौ सरीर भयो. तब राजाने मनमें जान्यो, जो श्रीगुसांईजी आप साक्षात् ईश्वर हैं. तब ऐसें मनमें निर्द्धार करिकै श्रीगुसांईजी आपके पास आयो. सो श्रीगुसांईजी अपनी बैठकमें गादी - तकियान पर बिराजे हते. और श्रीसुबोधिनीजीकी कथा कहत हते. और सब वैष्णव सुनत हते. तब वा राजाने आयकै हाथ जोरिकै श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मैं श्रीभागवतमें सुन्यो हतो, जो श्रीठाकुरजीने अवतार लीनो. सो मैनें आज देख्यो है. और आप साक्षात् श्रीठाकुरजीकौ अवतार हो. सो प्रभु ! मेरे उपर कृपा कीजिए. नाम निवेदन कराईए. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो हमारो धर्म बोहोत कठिन हैं. और तुम अभक्षाभक्ष करत हो. सो

तातें नाम कैसें दियो जांई ? तब राजाने बिनती करी, जो महाराज ! अब तें अभक्षाभक्ष न करूंगो. अब आपु आज्ञा करोगे सोइ मैं करोंगो. अब आपके पास रहूंगो. देसकों न जाउंगा. पाछें श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो स्नान करि आऊ. तब वा राजा स्नान करि, आइकै बिनती कीनी, जो महाराज ! मेरे उपर कृपा करिये. तब श्रीगुसांईजी आपुने वा राजाकों बैठारिकै नाम सुनायो. पाछें श्रीगुसांईजी आपु आज्ञा किये, जो तुम काल्हि व्रत करियो. परसों ब्रह्मसम्बन्ध करवावेंगे. ता पाछें व्रत करिकै स्नान करिकै अपरस वस्त्र पहरिकै वह राजा श्रीगुसांईजी आगें आय ठाढ़ौ भयो. कह्यो जो महाराज ! मेरे उपर कृपा करिकै ब्रह्मसम्बन्ध करवाईये. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजीकौ राजभोग सरायो. तब राजाकों श्रीनवनीतप्रियजीके सन्निधान ब्रह्मसम्बन्ध करवायो. पाछें राजाने दरसन किये. ता पाछें श्रीगुसांईजी राजभोग - आर्ति करि अनोसर करि अपनी बैठकमें पधारे. सो गादी तकियानकै उपर बिराजे. तब या राजाने आयकै दण्डवत् कीनी, पाछें भेंट धरी. तब श्रीगुसांईजी वा राजाकों आज्ञा किये, जो आज महाप्रसाद यहां ही लीजो. ता पाछें आपु भोजन करिकै मुख शुद्धार्थ आचमन करिकै बीड़ा अरोगिकै वा राजाकों अपने श्रीहस्तसों जूंठनिकी पातरि धरी. तब राजाने महाप्रसाद लीनो. पाछें राजाने बिनती करी, जो महाराज ! अब आज्ञा होंइ तो मैं यहां रहों. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो तुम राजा लोग हो. तातें अपने घर जाऊ. अब तुम्हारो कष्ट निवर्त भयो. तब राजाने बिनती करी, जो महाराज ! मेरी बुद्धि न फिरे. आपुके उपर रहे. ऐसी कृपा करिये. तब श्रीगुसांईजी आपने वस्त्र मंगायके अपने चरन रोरीसों छाप दिये. और वा राजाकों आज्ञा किये, जो तुम नित्य इनकों भोग धरिकै महाप्रसाद लीजियो. तुम्हारी बुद्धि ठिकाने रहेगी. और वैष्णवके उपर ममत्व राखियो. जो वैष्णव आवें सो तिनकी भली भांतिसों सेवा करियो. ता पाछें वा राजाकों ले कै श्रीगुसांईजी आप श्रीजीद्वार पधारे. तब राजाने श्रीनाथजीके दरसन किये. ता पाछें राजा आज्ञा मांगिकै ब्रजयात्राकों गयो. सो कितनेक दिनमें सम्पूरन ब्रजयात्रा करिकै आयो. तब श्रीगुसांईजी आपुकों दण्डवत् करी. तब कितनेक दिन तांई श्रीनाथजीके दरसन किए. ता पाछें श्रीगुसांईजी आपसों बिदा होंइकै अपने देसकों चल्यो. सो कितनेक दिनमें जांइ पहोंच्यो. तब आपुकी आज्ञा प्रमान त्योंही सेवा करन लाग्यो. और वैष्णवनकी सेवा करतो, महाप्रसाद लिवावतो. वैष्णवके उपर बोहोत ममत्व राखतो और श्रीगुसांईजी तथा श्रीनवनीतप्रियजीकी प्रतिवर्ष भेंट पठावतो. श्रीनाथजी उपर बोहोत ममत्व राखतो. सो जीवन पर्यन्त या भांति कियो. सो उह राजा भलो भगवदीय भयो.

भावप्रकाश :

तातें भगवदीयकौ सङ्ग ऐसो पदार्थ है. जो वैष्णवकी जूंठनि तें वा राजाकौ कोढ़ निवृत्त भयो. और वैष्णव हू भयो. तातें भगवदीयकौ सङ्ग करनो.

सो उह राजा श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय भयो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१६५।।

१६६-रूपा पोरिया

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक रूपा पोरिया, सो श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सिंघ पोरिपै रहतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं.

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'रासो' गोप है. ये श्रीनन्दरायजीके घरकी रखवाली करत हैं. ये 'रसात्मिका' तें प्रगट्यो है, तातें उनके भावरूप हैं.

ये गोपालपुरमें एक सनाढ्य ब्राह्मनके जन्म्यो. सो बरस बीसकौ भयो. तब इनके माता - पिता मरे. पाछें घरमें कोऊ रह्यो नाहीं. तब यह श्रीगुसांईजी पास आइ बिनती कियो, जो महाराज ! मोकों सेवक कीजिए. और कृपा करिकै कछू टहल दीजिए. तब श्रीगुसांईजी रूपाकों नाम दे सेवक कियो. पाछें श्रीनाथजीकी सिंघपोरिकी सेवा सोंपी. और कह्यो जो रूपा ! तू श्रीनाथजीकी सिंघपोरिकी रखवारी करियो. और श्रीनाथजीकी प्रसादी रसोईमें तें महाप्रसाद लीजो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो उह रूपा पोरिया श्रीनाथजीके मन्दिरकी द्वारपालकी सेवा करे. सो एक समय दुपहरिकों श्रीनाथजीने रूपा पोरियाकों लात मारिकै जगायो. और श्रीमुख तें कहे, जो मोकों भूख लगी है. तब रूपा पोरिया तुरत ही उठिकै श्रीगुसांईजीकी सिज्याके पास आयो. सो श्रीगुसांईजीके चरनारविन्द दाबिकै जगाये. सो आप जागे. सो देखे तो श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ सिंघपोरिया ठाढ़ो है. तब श्रीगुसांईजी रूपा

पोरियासों पूछे, जो तू या बिरियां क्यों आयो है ? तब रूपाने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! मैं तो याके लिये आयो हूं, जो श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु भूखे हैं. तब श्रीगुसांईजी तुरत ही उठिकै श्रीगोवर्द्धननाथजी मन्दिरमें जांईकै श्रीगोवर्द्धननाथजीकों फेरि राजभोग समर्प्यो. ता पाछें भोग सरायकै सब सेवातें पहोंचिकै श्रीगुसांईजी आप अपनी बैठकमें पधारे. सो पोढे. तब रूपा पोरिया अपनी द्वारपालकी सेवा किये. सो रूपा पोरियासों श्रीगोवर्द्धननाथजी ऐसें सानुभाव हते. सो जो कछू चहिए सो रूपा पोरियासों कहते. और रूपा पोरियासों उष्णकालमें पंखा करावते. ऐसी कृपा श्रीनाथजी रूपा पोरियाके उपर करते. सो ऐसी रूपा पोरियाकी कितनिक वार्ता हैं. सो ऐसें करत पाछें केतेक दिनमें वा रूपा पोरियाकी देह छूटी. तब वैष्णव मिलिकै अग्नि - संस्कार कियो. ता पाछें उह बात श्रीगुसांईजी सुनिकै श्रीमुखतें कहै, जो भगवद् इच्छा होंइसो होंइ. जो श्रीगोवर्द्धननाथजीकी इच्छा प्रबल है. सो वे रूपा पोरिया श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

पाछें एक समै श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों पधारे हते. सो श्रीनाथजीद्वार पधारे. सो गोविन्दकुण्ड पै स्नान करिकै श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजीके मन्दिरमें पधारत हते. सो ताही समै एक स्वान श्रीगुसांईजीकों देखिकै सन्मुख आयो. सो आयकै चरन - परसकी इच्छा करत हुतो. तब सब वैष्णव लाठी ले कै मारन लागे. सो ऐसो मार्यो सो वा स्वानके रुधिर निकस्यो. परन्तु उह स्वान जांइ नाहीं. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो याकौ मारो मति. तुम दूरि रहो. ता पाछें श्रीगुसांईजी ज्ञानदृष्टिसों मनमें विचार कियो, तब पहचान्यो. पाछें श्रीगुसांईजी आप वा स्वानकों चरनस्पर्श करवाए. और वाके मस्तकके उपर चरन धरे. सो श्रीगुसांईजी आप वा स्वानके उपर बोहोत प्रसन्न भए. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप सब वैष्णवनसों कहे, जो यासों दूरि रहो. इतने ही में वा स्वानकी देह छूटी. तब वा स्वानके मुखमें तें तेजकौ पुंज निकस्यो. सो श्रीठाकुरजी आपके चरनारविन्दमें लीन भयो. ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें वैष्णवनकों आज्ञा किये, जो तुम याकौ संस्कार करि आओ. तुमकों कछू बाधक नाहीं. यह मेरी आज्ञा है. ता पाछें वैष्णवनने याकों अग्निसंस्कार कियो. ता पाछें फेरिकै श्रीगुसांईजी आप स्नान करिकै श्रीगोवर्द्धननाथजीके मन्दिरमें पधारे. सो सब सेवासों पहोंचिकै श्रीगुसांईजी अपनी बैठकमें पधारे. सो गादी - तकियानके उपर बिराजे. तब वैष्णवने बिनती करी, जो महाराज ! पूर्व जन्ममें यह स्वान कौन हतो ? और कोन अपराध तें यह

स्वानकी जोनि प्राप्त भई ? सो कृपा करिकै हमसों कहिए ? तब श्रीगुसांईजी वैष्णवन प्रति श्रीमुखसों कहे, जो यह पूर्वजन्ममें श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ सिंघपोरिया हतो, रूपा पोरिया. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीकी राजभोग आरतीकी बाती करत हतो. सो उह बाती भेली भई हती. तब भण्डारमें जांइकै घृत लेइकै तातो करिकै तामें बाती हाथमें भीजोयकै ता पाछें रूपा पोरियाने मृत्तिकासों हाथ धोय डारे. परन्तु अनजाने नखमें घृत रहि गयो हतो. पाछें उह महाप्रसाद लेवेकों बैठ्यो. तब रसोइयाने ताती कढ़ी परोसी. सो उह नखनकौ घृत ताती कढ़ीमें आयो. सो श्रीनाथजीकौ अनप्रसादी द्रव्य पेटमें गयो. तातें या अपराध तें यह स्वान भयो. सो श्रीठाकुरजीकौ द्रव्य एसोई है.

भावप्रकाश :
या वार्तामें यह जताए, जो ठाकुरकी अनप्रसादी वस्तू सामग्री द्रव्यादिकसों वैष्णवकों सर्वथा सावधान रहनो. काहेतें, जो अनजाने हू वह काहू भांतिसों उदरमें जांइ तो यह गति होंइ. सो बात रूपा पोरियाके मिष करि सब वैष्णवनकों श्रीगुसांईजी आप जताए, नांतरु रूपा पोरिया जैसेंनकी ऐसी गति सर्वथा न होंइ. परि स्वकीय शिक्षार्थ यह प्रभुनकौ कौतुक है.

पाछें केतेक दिनमें रूपा पोरियाकी मृत्यु आई. तब उह मनुष्य - देह छोरिकै स्वानके उदरमें आयो. पाछें जन्म भयो. परि वाने भगवत्सेवा बोहोत करी हती. सो याकों पूर्वजन्मकौ ज्ञान रह्यो हतो. तातें अपनी ज्ञातिकौ देह सम्बन्धी माता - पिता आदि सबकौ अभाव करिकै उनकौ सङ्ग छोड़िकै पर्वतके नीचे उतरिकै, श्रीनाथजीकी ध्वजाके सन्मुख यह स्वान बैठ्यो हतो. तातें मेरे चरनस्पर्शके निमित्त इतनो यत्न कियो. और इतनो मार खायो. तब वे वैष्णव इतनो अपराधकौ बचन सुनिकै शिक्षा मानत भए. और कहन लागे जो भाई ! आपुन ऐसें वैष्णवकों ऐसो मार्यो ? अनजाने भई सो बुरी भई. परि आपुन तो विचार कियो हतो, जो यह श्रीगुसांईजीकों छुवेगो. ता पाछें श्रीगुसांईजी आपुन यह बात उन वैष्णवनके मनकी जानी. तब श्रीगुसांईजीने उन वैष्णवनसों कह्यो, जो तुम अपुने मनमें चिन्ता कलेस मति करो. यह तो जो कछू भयो है सो तो इच्छा तें भयो है. सो यह इतनो मार खायो है, सो तो अपराधकौ दण्ड भयो है. और कह्यो, जो याकों पूर्व जन्ममें कोऊ वैष्णव श्रीनाथजीके दरसनकी पूछतो, सो यह वाकों तामस करिकै उत्तर देतो. या अपराध तें यह इतनो मार खायो है. परि अब याकों कछू बाधक रह्यो नाहीं है. सो अब यह श्रीगोवर्द्धननाथजीके चरनारविन्दमें लीन भयो. याही तें वैष्णवकों विचारिकै बोलनो.

जैसे उज्जवल वस्त्र होंइ सो तुरत ही दाग लागत हैं और मलीनकों दाग नाहीं है. ऐसें आपने वैष्णव प्रति कह्यो.

सो ऊह रूपा पोरिया श्रीगुसांईजीकौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए ? वार्ता ।।१६६।।

१६७-एक चूहडा, श्रीगोवर्द्धनकौ

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक चूहडा हतो, सो श्रीगोवर्द्धनमें रहतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'बनरानी' है. ये 'कुसुम' बनमें रहति हैं. सो ये पुलिन्दिनीके यूथमें हें. ये 'रसात्मिका'तें प्रगटी हैं, तातें उनकै भावरूप हैं.

सो एक समै श्रीठाकुरजी आप गांइ चराबनकों सखान सहित बनमें पधारे है. सो एक गांई टोलामें सों बिछुटी. सो कुसुम बनमें गई. सो श्रीठाकुरजीने जानी. तब सखानकों कहे, जो तुम यहां गांइनकों देखत रहियो. मैं अब ही वा गांइकों ले कै आवत हूं. यह कहि आप तो कुसुम बनमें पधारे. तहां बनरानीकों श्रीठाकुरजीके दरसन भए. ता समें बनरानीने बिनती कीनी जो महाराज ! मैं आपके लिये बोहोत दिनन तें या बनकौ सेवक करति हूं. सो आज आप एकान्तमें मोको मिले हो. तातें आप ये बनके सुन्दर फल - फलादि अरोगिए. और मेरो मनोरथ पूरन कीजिए. तब श्रीठाकुरजी कहे, जो मोकों अवेर होइगी तो यहां सब सखा आवेंगे, ढूंढनकों. तातें तू मोकों रोके मति. और 'श्यामलाजी' हूं याही बनमें हैं. तातें वे जाने तो हू ठीक नाहीं. या प्रकार श्रीठाकुरजी बनरानीकों समझाय कहे. परि 'बनरानी' हठ परी. कह्यो जो महाराज ! ये बनके सुन्दर फल अरोगिए और मेरो मनोरथ पूरन कीजिए. ऐसो समय फेरि कहां मिलेगो ? सो श्रीठाकुरजी तो आप भक्तवत्सल हैं. सो नाना भांतिके मेवा बनरानी ल्याई सो बोहोत प्रसन्नतापूर्वक हास्य - विनोदसों अरोगे. पाछें

आप बनरानीकी कुञ्जमें पधारे. सो बोहोत भांतिनसों बनरानीकों सुख दिये. सो बात एक सखीने देखी. सो उह श्यामलाजीसों जांइ कही. तब श्यामलाजी उहां पधारी. सो देखे तो बनरानी श्रीठाकुरजीके साथ एकान्तमें बैठी हास्य - विनोद करति हैं. सो श्यामलाजी नेक दूरि ओटमें ठाढ़े रहे. सो ताही समै श्रीठाकुरजीकी दृष्टि उन पर परी. तब श्रीठाकुरजी बनरानीसों कहे, जो हों तो जात हूं. श्रीश्यामलाजी यहां पधारी हैं. तातें तू सावधान व्है. पाछें श्रीठाकुरजी आप पाछिले द्वार व्हैं बनकों पधारे. और बनरानी वस्त्र - सिंगार संवारि उठी. तब श्यमलाजी उहां पधारी. पाछें बनरानीसों कहे, जो श्रीठाकुरजी तेरे उहां कबके पधारे हे ? तब बनरानी कहे, जो यहां तो श्रीठाकुरजी पधारे हे नाहीं. तु कहा कहत हो ! तब बनरानीसों श्यामलाजी कहे, जो झूठ काहेकों बोलत है. मैने अपनी आंखिन तें देखे हैं. तब बनरानी कहे, जो वे तो गांई ढूंढ़िवेकों बनमें आये हते सो गांई ढूंढ़िके ताही समै पधारे. तब श्यामलाजी कहे, जो तू मो आगें असत्य बोलति हैं. तातें भूतल पर गिरि. हीनयोनिकों प्राप्त होंऊ.

सो ये गोवर्द्धनमें एक चूहडाके जन्म्यो. सो ये बरस दसकौ भयो. तब एक समै ये गोवर्द्धनकी गेलमें जात हुतो. सो उहां एक सर्पने वाकों काट्यो. सो वह गेलही में गिर्यो. सो ताही समै श्रीगुसांईजी आप घोड़ापै बिराजे श्रीगोकुल तें पधार रहे हे. सो श्रीगुसांईजी गेल बीचमें या लरिकाकों देखि खवाससों पूछे, जो यह कौन है ? गेलमें कैसे पर्यो है ? तब खवासने पास जाइ देख्यो. पाछें कह्यो, जो महाराज ! काहूकौ लरिका है. तो कोई प्रानी काटयो दीसत है, तातें ये मर्यो पर्यो है. तब श्रीगुसांईजी आप घोड़ा तें नीचे उतरि वाके पास पधारे. पाछें वाके उपर वेदमन्त्र पढ़ि जल छिरके. तब वह लरिका जागृत भयो. तब श्रीगुसांईजी पूछे, जो तू कौन है ? तब इन कह्यो जो महाराज ? मैं चूहडा हूं. सो मोकों स्यांपने काट्यो हो. सो आप कृपा करि जिवायो. अब मैं आपके सरनि आयो हूं. तब श्रीगुसांईजी वाकों दैवीजीव जानि अष्टाक्षर मन्त्र सुनाइ सेवक किये. पाछें वासों कह्यो जो तू यह मन्त्रकौ नित्य जप करियो. ता पाछें श्रीगुसांईजी तो आप गोपालपुर पधारे. पाछें वह लरिका अपने घर आयो. परि काहूसों कह्यो नाहीं. पाछें श्रीगुसांईजीकौ नित्य ध्यान करे और अष्टाक्षर मन्त्रकौ जप करे. या प्रकार रहे. और कछू कार्य करे नाहीं. ऐसें करत कछूक दिनमें माता - पिता मरे. तब यह खेती करन लाग्यो. सो श्रीगुसांईजीकी कृपातें श्रीनाथजी वाकों दरसन देन लागे. वा सों बातें करन लागे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो उह चूहडा श्रीगोवर्द्धनमें रहतो. सो वह श्रीगुसांईजीकौ सेवक हुतो. सो वा चूहडाकी ऐसी लगन हती. सो उह चूहडा

श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन बिना रहि सकत नाहीं हतो. सो वा चूहडाकों श्रीगोवर्द्धननाथजी बाहिर पधारिकै दरसन देते. सो एक दिन श्रीगोवर्द्धननाथजी वाके पास ठाढ़े श्रीगुसांईजीने देखे. सो वा चूहडासों श्रीगोवर्द्धननाथजी वार्ता करत देखे. ता पाछें चूहडासों श्रीगुसांईजीने पूछी, जो श्रीगोवर्द्धननाथजी तोसों कहा बात करत हते ? तब चूहडाने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराजकी कृपा तें नित्य मोकों श्रीगोवर्द्धननाथजी दरसन देत हैं. और जो कछू बनमें खेलिवेकी, गायकी, ग्वालनकी वार्ता भई होंई सो वार्ता करत हैं. पाछें वा चूहडाने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! आपकी कृपा तें मोकों दरसन दिये बिना श्रीगोवर्द्धननाथजी आप रहि सकत नाहीं. और काहू दिन भगवद् इच्छा तें दरसन न होंई तो ता दिन मैं अन्न जल हू नाहीं लेत हों. ऐसें भूखो रहत हों. ऐसें मेरे नित्य नेम है. ता पाछें दूसरो दिन श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु बाहिर पधारिकै मोकों दरसन देत हैं. तब हो अन्न - जल लेत हों.

तब श्रीगुसांईजी आपु श्रीमुख तें कहे, जो राजभोगके समय माला बोले तब मन्दिरके किवाड़ - दरवाजे पर बैठियो. तब सबन तें पहले दरसन करवाय देंगे. ता पाछें श्रीगुसांईजी झापटियाकों बुलायकै आज्ञा दिये, जो या चूहडाकों सबन तें पहिले दरसन करवाय दियो करो. तब वाने कही, जो महाराज ! जो आज्ञा. ता पाछें ऐसी कृपा वा चूहडाके उपर करते. सो नित्य श्रीठाकुरजीकी कृपा तें मालाके समय नित्य दरसनकों श्रीगिरिराज उपर जातो. सो मन्दिरके द्वार सन्मुख नेक दूरि, न्हायकै शुद्ध वस्त्र पहरि बैठतो. पाछें सबन तें पहिले झापटिया याकों बुलायकै दरसन करवाय देतो. सो उह श्रीनाथजीके दरसन नित्य नेमसों करतो. सो ऐसें कितनेक दिन भए. सो तब कबहूक एक समै भगवद् इच्छासों कामकाजमें अटक रह्यो. ता पाछें वह आयकै देख्यो तो तारा मङ्गल भयो है. और कोऊ वैष्णव तहां नाहीं है. सो उह मन्दिरके पिछ्वारे आयकै पर्यो रह्यो. सो बोहोत ही आतुर भयो और ज्वर होंइ आयो. सो महा कष्ट भयो. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु सिंघासन तें उठिकै चले. सो पिछली ओर एक मोखा करिकै वा चूहडाकौ नाम ले पुकारे. सो उह शब्द सुनत मात्र ही उठि ठाढ़ो भयो. वा दिन मोखामें तें श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ दरसन भयो. ता पाछें श्रीनाथजीने वा चूहडाकों दोई लडुवा दिए. और श्रीगोवर्द्धननाथजीने वासों श्रीमुखसों कहे, जो ये हमारे प्रसादी लडुवा तू खांय ले. तब वा चूहडाने एक लडुवा तो खायो. ता पाछें एक लडुवा चादरमें बांधिकै अपने घर आयो. ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ उत्थापनकौ समै भयो. तब संखनाद भये. ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीके मुखिया भीतरिया स्नान करिकै श्रीगिरिराज उपर मन्दिरमें गए. सो उहां देखे तो पिछली और मोखा है. तब सब महा

सोच करन लागे. ता पाछें भीतरियाने सब वस्तु श्रीगोवर्द्धननाथजीकी देखी. सो सब वस्तु श्रीगोवर्द्धननाथजीकी ज्यों के त्यों है. तब ए समाचार भीतरियाने श्रीगुसांईजीसों कहे. जो महाराजाधिराज ! आज श्रीगोवर्द्धननाथजीके मन्दिरके पिछ्वारे काहूने मोखा कीनो है. यह सुनिकै श्रीगुसांईजी आप महा खेद करन लागे. सो यह बात चूहडाने सुनी. सो श्रीगुसांईजीकी बैठकके द्वारे आइकै चूहडाने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! इन सबनकों दूरि करो तो एक बात कहनी है. तब श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो कहो ! कहा कहत है ? तब वा चूहडाने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! आज अनमने से क्यों हो ? तब श्रीगुसांईजी कह्यो, जो आज श्रीगोवर्द्धननाथजीके मन्दिरके पिछ्वारे काहूने मोखा किनो है. तातें हमतो उदास है. तब श्रीगुसांईजीसों वा चूहडाने बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! ऐसी बातनकों आप भले उदास बैठे हो ? तुम अपने लरिकाकौ सुभाव जानत नाहीं ? जो आज काहू कार्यार्थ मैं 'गोवर्द्धन' गयो हतो. ता पाछें द्वारपै आयके देख्यो तो तारा - मङ्गल है. पाछें मन्दिरके पिछ्वारे पर्यो रह्यो. सो मोकों विरह - ताप बोहोंत भयो. सो ताही समै श्रीगोवर्द्धननाथजी हाथमें लकुटिया ले कै मोखा कियो. पाछें मेरो नाम ले कै पुकारे. सो मैं अरबरायकै उठि बैठ्यो. और अपने मनमें विचार कियो, जो श्रीगोवर्द्धननाथजी पुकारत हैं. तब फेरि कह्यो, तू दरसन करि. तब मैनें दरसन किये. और श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीमुख तें कहे, जो लडुवा तू खाय ले. सो एक लडुवा तो मैनें खायो है. और एक मेरी चादरमें बंध्यो है. ता पाछें वा चूहडाने कह्यो, जो महाराज ! आप ऐसी बातमें भले उदास बैठे हो. तब श्रीगुसांईजी आप ऐसें बचन सुनिकै बोहोत प्रसन्न भए. तब श्रीगुसांईजी पोरिया, झापटियाकों बुलायकै कहे, जो यह चूहड़ा कबहू दरसन बिनु रहि न जांइ. और चूहडा आठों बेर जब आवे तू दरसन करवाय दियो करो. सो सबन तें पहिले वा चूडडाकों दरसन करवाय देते. ता पाछें दूसरे दिन कारीगर बुलायकै वा मोखाकों मूंदन लागे. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आज्ञा किये, जो यह मोखा तुम मति मूंदो. ऐसे ही रहन देउ. ता पाछें वेसे ही रहन दियो. सो अब हू श्रीगिरिराज पर मोखा है.

भावप्रकाश :

या वार्तामें यह जतायो, जो जाकों प्रेमभक्ति स्फूर्त भई होंई ताके विषे ज्ञाति - मर्यादा तथा और हू मर्यादा रहत नाहीं. सो जीवकों श्रीगुसांईजीकौ दृढ़ आश्रय होंई तब ऐसो प्रेम स्फुर्त होंई. तातें वैष्णवकों श्रीगुसांईजीकौ दृढ़ आश्रय कर्तव्य है.

सो वह चूहडा श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो. सो वाकों श्रीगुसांईजीकी कृपादृष्टि तें प्रेम स्फुर्त भयो हतो. तातें श्रीगुसांईजी वासों मर्यादा राखे नाहीं. सो इनकी वार्ता कहां तांई कहिये. वार्ता ।।१६७।।

१६८-स्त्री - पुरुष राजनगरके

अब श्रीगुसांईजीके सेवक स्त्री - पुरुष राजनगरमें रहते, जाके पैसाकी गिनतीमें पांच रत्न निकसे, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं.

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें 'पीतवर्णी' 'कुंकुम्वर्णी' दोउनके नाम हैं. सो पीतवर्णी तो यहां पुरुष भयो और कुकुम्वर्णी स्त्री भई. ये दोउ 'रसात्मिका' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समय श्रीगुसांईजी राजनगर पधारे हते. तब भाईला कोठारीके घर उतरे हते. तब इन स्त्री - पुरुषने श्रीगुसांईजीके दरसन किये. तब इनने बिनती करी, जो महाराजाधिराज हमकों कृपा करिकै नाम दीजिए. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो तुम स्नान करि आवो. तब वे स्नान करि आए. ता पाछें हाथ जोरिकै बिनती करी, जो महाराज ! कृपा करिकै सरनि लीजिए. तब श्रीगुसांईजी आपुने कृपा करिकै नाम दोउनकों सुनायो. पाछें एक व्रत करवाय ब्रह्मसम्बन्ध करवायो. तब इन स्त्री - पुरुषने बिनती करी, जो महाराज ! अब कहा कर्तव्य है ? तब श्रीगुसांईजीने आज्ञा करी, जो तुम दोउ भगवत्सेवा करो. तब इन कही, जो महाराज ! कृपा करिकै हमारे माथे सेवा पधराइ दीजिए. तब श्रीगुसांईजीने श्रीठाकुरजीकी सेवा पधराई. पाछें सब सेवाकी रीति भांति सिखाई. पाछें आज्ञा कीनी, जो नित्य एक वैष्णवकों प्रसाद लिवायकै प्रसाद लीजो. ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु तो श्रीरनछोरजीके दरसनकों पधारे. तब वे स्त्री - पुरुष श्रीठाकुरजीकी सेवा भली भांतिसों करन लागे. और नित्य एक वैष्णवकों महाप्रसाद लिवायकै आप महाप्रसाद लेते. सो कितनेक दिनमें श्रींठाकुरजी सानुभावता

जतावन लागे. जो चहिए सो मांगि लेते. और बोहोत कृपा करते.

सो ऐसें करत कितनेक दिन बीते. पाछें उह वैष्णव तो परदेस गयो. सो वाने अपनी स्त्रीसों कही, जो जा भांति नित्य एक वैष्णवकों महाप्रसाद लिवावत हैं ता भांति लिवायकै पाछें महाप्रसाद लीजियो. और गिनती राखियो. तब कह्यो जो ऐसें ही करूंगी. तब उह वैष्णव तो परदेस गयो. तब वह स्त्रीसों कही तैसेंही नित्य वह एक वैष्णवकों महाप्रसाद लिवावे. और ऐसें नित्य ही ता भांति एक पैसा धरत जांई. तब ऐसें करत बरस दिनमें वैष्णव आयो. तब अपनी स्त्रीसों कही, जो तैनें कितने वैष्णवकों महाप्रसाद लिवायो ? सो मोकों उह गिनती करवाय. तब स्त्रीने कही, जो पैसा गिनो. तब वाके पतिने पैसा गिने. सो तिनसें साठ निकसे. और पांच रत्न निकसे. तब पुरुषने पूछ्यो, जो यह कहा ? यह रत्न कैसे हैं ? तब स्त्रीने पतिसों कह्यो, जो मैनें तो पैसा डारे हैं ? पाछें सब ले कै वह स्त्री - पुरुष श्रीगोकुल श्रीगुसांईजीके पास आए. तब श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! यह कहा कारन है ? जो स्त्री तो नित्य एक पैसा धरती और एक वैष्णवकों महाप्रसाद लिवावती. और इनमें तो पांच रत्न निकसे हैं. ताकौ कारन कहा है ? तब श्रीगुसांईजी आप कहे, जो ऐ पांच भगवदीय तादृशी आए है. पाछें श्रीगुसांईजी आप कहे, जो वैष्णवकों यही चहिए.

भावप्रकाश :
सो या वार्तामें यह सिद्धान्त भयो, जो नित्य एक वैष्णवकों महाप्रसाद लिवायकै पाछें आप महाप्रसाद लेई. सो वैष्णवकौ यही धर्म है, जो वैष्णवकों महाप्रसाद लिवाये पाछें आप लेई तो मारगकौ सिद्धान्त हृदयारूढ होंई. प्रभुनके उपर रूचि होंइ. तब प्रभुनकी भली भांतिसों सेवा होंई.

सो वे स्त्री - पुरुष श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हे. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं. सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१६८।।

द्वितीय खण्ड समाप्त

क्रमशः खण्ड - ३

१६९-कान्हबाई

अब श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी कान्हबाई, गोविन्दस्वामीकी बहनि, महावनमें रहती, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. कुमारिकाके यूथमें हैं. लीलामें इनकौ नाम 'कन्हियां' है. इनमें वात्स्ल्य भाव बोहोत हैं. ये 'ब्रजबिलासिनी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

ये कान्हबाई गोविन्दस्वामीकी बहनि, आन्तरी गाममें एक सनाढ्य ब्राह्मनके यहां प्रगटी. सो वर्ष नौ की भई. तब जातिके लरिकासों इनकौ ब्याह भयो. ता पाछें बरस पेंतालीसकी भई. तब इनकौ धनी मर्यो. सो कोउ सन्तति नाहीं. तातें ये ब्रजमें आई. सो महावनमें रही.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समय श्रीगुसांईजी आप महावनमें पधारे हते. तब कान्हबाईकों श्रीगुसांईजीके दरसन भए. तब कान्हबाईने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मोकों नाम सुनाइये, तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किए, जो स्नान करि आवो. तब स्नान करि आई. तब श्रीगसांईजीने कृपा करिकै नाम सुनायो. पाछे दूसरे दिन श्रीगोकुलमें श्रीनवनीतप्रियजीके सन्निधान ब्रह्मसम्बन्ध करवायो. ता पाछें कान्हबाई श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मोकों सेवा पधराय दीजिए. मेरो मनोरथ सेवा करिवेको है. तब श्रीगुसांईजी आप कृपा करिकै कान्हबाईके माथे सेवा पधराय दीनी. सो कान्हबाईके सेव्य स्वरूप श्रीनवनीतप्रियजी हते. सो तिनकी सेवा कान्हबाई नीकी भांतिसों करती. सो कान्हबाईसों श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावते. और श्रीठाकुरजी कान्हाबाईसों बातें करते जो वस्तु चाहिये सो मांगि लेते.

सो कान्हबाईके घर नित्य श्रीगुसांईजी सखड़ी महाप्रसाद पठावते, सो वाही प्रसादकों श्रीठाकुरजी अरोगे. पाछें उह पातरि ढांकि धरती. सो या भांति कान्हबाई पांच - सात बेर उही पातरि धरती. सो श्रीठाकुरजी भोजन करि चुकते, तब कान्हबाई आचमन कराय आप कहती, जो लालजी ! अब तुम सुखेन खेलो, जब तुमकों भूख लगें, तब तुम मेरे पास मांगियो. सो या भांति कान्हबाईसों श्रीठाकुरजी हिले रहते. तब कितनेक दिनमें यह बात काहू वैष्णवने श्रीगुसांईजीके आगें कही, जो महाराज ! कान्हबाईके यहां जो पातरि जात है, सो अपने श्रीनवनीतप्रियजीकों वह पातरि कितनीक बार समर्पत हैं ! तब एक दिन श्रीगुसांईजीने कान्हबाईसों पूछी, जो कान्हबाई ! तू महाप्रसादकी पातरि अपने श्रीठाकुरजीकों बारबार समर्पत है ? तब कान्हबाईनें कही, जो महाराज ! लरिका एक पातरिकों दस बार जेंवत है. और दस बार जें मततें भाजि जात है. तब यह कान्हबाईके बचन सुनिकै आप चुप करि रहें. और श्रीगुसांईजी आप वैष्णवनसों कहे, जो इनकी बात उनहीकों भावति है.

भावप्रकाश :
यह कहि श्रीगुसांईजी आपु यह जताये, जो इनकों बाल भाव है, तातें ठाकुर बालक व्है (इनकों) लरिकाकी नांई अनुभव जतावत हैं. सो याकौ कियो उनकों रुचत है. परि याकी देखादेखी और कोऊ मति करियो. या पर श्रीठाकुरजी वाही भांति प्रसन्न है. तुम पर मर्यादा ही सों प्रसन्न होइंगे.

सो वह कान्हबाई श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
और एक दिन कान्हबाईकों महावनमें कछु काम हतो. सो अपने सेव्य स्वरूपकों श्रीगुसांईजीकी बेटीजी श्रीदेवका बेटीजीके यहां पधरायकै आप तो महावनकों गई हती. तब देवका बेटीजीने अपने श्रीठाकुरजी सैया उपर पोढ़ाये. तब कान्हबाईके श्रीठाकुरजीकों पोढ़ावनो भूलि गई. तब श्रीठाकुरजी सिंघासन उपर बैठे रहे. सो जब रात्रि आधी गई, तब श्रीठाकुरजीने कान्हबाईकों जताए, जो तू तो यहां आई है, परि

मोकों जाड़ो बोहोत लागत है. और मोकों पोढ़ायो नाहीं. मोकों सिंघासन उपर बैठारि राख्यो है. सो मैं सिंघासनकी उपर अकेलो डरपत हों. तब यह सुनिकै कान्हबाई तत्काल ही उठिकै श्रीगोकुल आई. सो देवका बेटीजीके द्वार आई पुकारी, जो बेटीजी ! किंवाड़ खोलो. तब देवकाजीने कही, जो कान्हबाई ! तू इतनी अवार आईसो कहा है ? तब कान्हबाईने देवका बेटीसों कही, जो महाराज ! मेरे लालजीकों ल्याओ. तब देवका बेटीजीने कान्हबाईसों कह्यो, जो श्रीठाकुरजी तो पोढ़ें हैं. सो मैं कैसें देऊ ? तब कान्हबाईने कही, जो महाराज ! मेरे श्रीठाकुरजी तो सिंघासन उपर बैठे हैं. सो तुमने पोढ़ाए नाहीं है. तब देवका बेटीजी मन्दिरमें जाय देखें, तो श्रीठाकुरजी सिंघासन उपर बैठे हैं. तब देवका बेटीजीनें श्रीठाकुरजी कान्हबाईकों दीने. तब कान्हबाई अपने श्रीठाकुरजीकों पधरायकैं अपने घर आई. तब कान्हबाई अपने श्रीठाकुरजीकों गोदमें ले कै कहन लागी, जो मेरे लालजीकों जाड़ो बोहोत लाग्यो होइगो. सो बोहोत मनुहार करिकै श्रीठाकुरजीकों हृदयसों चांपिकै सोई रही. पाछें दूसरे दिन कान्हबाई देवका बेटीजीके घर आय बोहोत लरी. सो वह कान्हबाई श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती.

भावप्रकाश :
या वार्तामें यह जतायो, जो श्रीठाकुरजीकों काहूके भरोसे राखने नाहीं. सेवा अपने हाथ अपने हाथसों करनी. कदाचित् कोई बाहिरकौ काम आइ परे तो (श्रीठाकुरजीकों) बेगि पहोंचिकै जईए.

वार्ता प्रसङ्ग ३ :
और एक दिन श्रीगोकुलचन्द्रमाजीने कान्हबाईसों कह्यो, जो मोकों तेरी खाट पर नीको लागत है. तातें मैं तेरी खाट पर सोउंगो तब कान्हबाईने कह्यो, जो महाराज ! मेरी खाट पैं कम्मर बिछ्यो है, सो तिहारे श्रीअङ्गमें चुभेगो. तब श्रीगोकुलचन्द्रमाजीने कान्हाबाईसों कह्यो, जो अरी कान्हबाई ! मोकों मेरी सैयामें कछू खूंचत है. तब कान्हबाईने सवारे जांइके श्रीगुसांईजीसों कही, जो महाराज ! श्रीठाकुरजी श्रीगोकुलचन्द्रमाजीकी सैयामें कछु है. सो श्रीठाकुरजीके श्रीअङ्गमें खूंचत है. तब श्रीगोकुलचन्द्रमाजीकी सुपेदी खोली. तब वाके भीतर बनोरा निकस्यो. सो वा दिनतें सावधान होइकै श्रीठाकुरजीकी सैया सम्हारन लागे. तब कान्हबाई अपने हाथसों रुई सम्हारिकै सुपेदी

करती. तातें कान्हबाईको ऐसो सम्बन्ध हतो. सो वह कान्हबाई श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती.

भावप्रकाश :
यामें यह जतायो, जो सेवा बोहोत सावधानीसों करनी.

वार्ता प्रसङ्ग ४ :
और एक समै कान्हबाई श्रीगुसांईजीके इहां श्रीनवनीतप्रियजीके दरसनकों गई. सो ता समय श्रीनवनीतप्रियजी पालने झूलत हते. सो ताही समय श्रीनवनीतप्रियजीके दरसनकों कान्हबाई गई. तब देखे तो पालनेके पास कोई नाहीं है. श्रीनवनीतप्रियजी अकेले पालने झूलत हैं. तब श्रीगिरिधरजी आप तो कछु सामग्री लेनकों भीतर गए हते. तब कान्हबाई श्रीनवनीतप्रियजीके पालनेकी डोरी पकरिकै झुलावन लागी सो ताही समय भीतरिया आयो. सो कान्हाबाईकों देखी. तब श्रीगिरिधरजीसों जांइ कही, जो जो कान्हबाईने श्रीनवनीतप्रियजीकों पालने झुलाए. सो सुनिकै श्रीगिरिधरजी आए. तब कान्हबाईने श्रीगिरिधरजीसों कह्यो, जो काहूकों पालनेके पास राखि जाइये. लरिका तो बालक है, तातें अकेले डरपे.

भावप्रकाश :
यह कहि यह जतायो, जो श्रीठाकुरजीकों इकेले सर्वथा छोडने नाहीं.

सो वह कान्हबाई श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती.

वार्ता प्रसङ्ग ५ :
बोहोरि एक समै श्रीगोकुलनाथजी श्रीगिरिधरजीसों कहे, जो दादा ! आज्ञा देउ तो मैं यज्ञ करूं. तब श्रीगिरिधरजीने यज्ञकी नाहीं करी. तब

श्रीगोकुलनाथजी उहां तें फिरि आए. तब साम्हें कान्हबाईकों देखिकै श्रीगोकुलनाथजी ठाढ़े रहे. तब कान्हबाईने पूछी, जो वल्लभजी ! तुम कहां गए हते ? तब श्रीगोकुलनाथजीने कह्यो, जो मैं दादाके पास यज्ञकी पूछिवे गयो हतो, जो तुम कहो तो यज्ञ करूं ? तब दादाने यज्ञकी नाहीं करी है. तब कान्हबाईने श्रीगोकुलनाथजीसों कह्यो, जो यज्ञके करे तें कहा होत है ? ता पाछें फेरि कान्हबाईने कह्यो, जो वल्लभजी ! तुम यज्ञ मति करो.

भावप्रकाश :
सो काहेतें ? जो यज्ञ तें जीव - हिंसा होत हैं. सो ब्रजके जीव मरेंगे. तातें नाहीं किये.

तब श्रीगोकुलनाथजीने यज्ञकी बात रहन दीनी.

सो वह कान्हबाई श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती.

वार्ता प्रसङ्ग ६ :
और एक समय कान्हबाईके घर नित्य श्रीगुसांईजी पातरि पठावते. सो श्रीकृष्णरायजी महाप्रसादकी पातरि लै कै नित्य जाते. सो एक दिन तनक पांवके नीचे (जूठो ?) पतौवा आयो. सो श्रीकृष्णरायजी देख्यो तो सही, परि मनमें कछू ग्लानी न ल्याए. और श्रीकृष्णरायजी अपने मनमें विचार कियो, जो कान्हबाईके तो कछू आचार - विचार है नाहीं. सो ऐसें मनमें विचारिकै कान्हबाईके घर पातरि धरि आए. सो वह पातरि कान्हबाईने श्रीठाकुरजीके आगें धरी. तब श्रीठाकुरजी कान्हबाईसों कहे, जो अरी कान्हबाई ! पातरि तो छूई गई. तातें हों तो नाहीं अरोग्यो हूं. तब कान्हबाईने तत्काल रसोई करिकै श्रीठाकुरजीकों अरोगाए. पाछें कान्हबाई श्रीकृष्णरायजीसों खीझी, जो तुम्हारे पांवके नीचे पतौवा आयो हतो, सो तुम छूई पातरि मेरे घरमें काहेकों धरी ? आज मेरो लालजी भूखो रह्यो है. तातें आज तें तुम मेरी पातरि मति ल्यायो करो. ऐसे बहोत खीझी. तब श्रीकृष्णरायजी विस्मित होइ रहे. और कहे, जो यासों तो श्रीठाकुरजी साक्षात् बातें करत

हैं. और हम तो आचार - विचार देखन लागे.

भावप्रकाश :
यामें यह जताये, जो भगवदीयनके आचार - विचार देखने नाहीं. उनके तो भाव ही सों काम है.

पाछें श्रीकृष्णरायजीने श्रीगोकुलनाथजीसों कह्यो, जो कान्हबाईकों महाप्रसादकी पातरि पठावत हो, सो दोई तीन बेर करिकै श्रीठाकुरजीके आगें धरति है. तब श्रीगोकुलनाथजीने कान्हबाईसों पूछी, जो कान्हबाई ! तू पातरि श्रीठाकुरजी आगें दोई चारि बेर धरति है ? तब कान्हबाईने कही, जो महाराज ! पातरि श्रीठाकुरजीके आगें धरति हों. सो श्रीगुसांईजीने पूछी हती. और फेरि पातरिके उपर बैठे तो कहा भयो ? तब श्रीगोकुलनाथजी यह बचन सुनिकै चुप होइ रहे. काहेतें, जो श्रीठाकुरजी कान्हबाईकों साक्षात् अनुभव जनावते.

सो वह कान्हबाई श्रीगुसांइजीकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती, तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१६९।।

१७०-भीष्मदास - क्षत्रि पूर्वके

अब श्रीगुसांईजीके सेवक भीष्मदास क्षत्री, पूरबके बासी तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनको नाम 'दृढव्रता' है. ये 'ब्रजविलासिनी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

ये पूरबमें एक द्रव्यपात्र क्षत्रीके जन्मे. सो बरस बीसके भए तब मां - बापने इनको ब्याह कियो. सो स्त्री सुपात्र मिली, दैवी. पाछें कछुक दिनमें मां

- बाप मरे. तब भीष्मदास सगरो द्रव्य ले अपनी स्त्री, कुटुम्बसहित यात्राकों चले. सो पूरबके वैष्णवनको एक सङ्ग श्रीगोकुल श्रीगुसांईजीके दरसनकों जात हतो. सो वा सङ्गके साथ ये हू चले.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वह पूरबको साथ श्रीगुसांईजीके तथा श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों आयो. सो ता साथमें भीष्मदास क्षत्री हू श्रीगोकुल आए. सो ता समै श्रीगुसांईजी आप तो श्रीनवनीतप्रियजीके मन्दिरमें हते. और सन्ध्यार्तिकौ समय हतो. तब सब वैष्णवनने श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन किये. ता पाछें वे सब वैष्णव अपने डेरा गए. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजीकों अनोसर करायकै अपनी बैठकमें पधारे. तब सब वैष्णव श्रीगुसांईजीके दरसनकों आए. सो सब वैष्णवने दरसन करिकै अपनी - अपनी यथाशक्ति भेट करी. तब तहां बैठे. तब श्रीगुसांईजी आप सब वैष्णवनकों यह आज्ञा किए, जो जा जाऊ, महाप्रसाद लेऊ. तब श्रीनवनीतप्रियजीके मन्दिरमें सब वैष्णवनने महाप्रसाद लियो. सो अति अद्भुत सेनभोगको महाप्रसाद लेकै सब वैष्णव आनन्दमें अति प्रसन्न भए. ता पाछें सब श्रीगुसांईजी आप प्रसादी बीड़ा श्रीहस्तसों सबनकों दिये. तब सब वैष्णव दण्डवत् करिकै अपने डेरा गए. तब अपने मनमें विचारिकै भीष्मदासने कह्यो, जो कब प्रातःकाल होई और कब मैं सरनि जाऊं ? तब इतनेमें प्रातःकाल भयो. तब श्रीगुसांईजी आप स्नान करिकै मन्दिरमें पधारे. तब भीष्मदास हू सब कुटुम्ब सहित तहां गए. तब श्रीगुसांईजी स्नान करि सन्ध्यावन्दन करिकै बिराजे हते. ता समै हाथ जोरिकै भीष्मदासने बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! हमकों सरनि लीजिए. तब श्रीगुसांईजी आपने कृपा करिकै भीष्मदास और भीष्मदासके कुटुम्बकों नाम सुनायो. और निवेदनकी आज्ञा किये, जो तुम काल्हि व्रत करो. ता पाछें निवेदन करावेंगे. तब दूसरे दिन सब कुटुम्ब सहित भीष्मदास उपवास किये. ता पाछें श्रीनवनीतप्रियजीके सानिध्य ब्रह्मसम्बन्ध करवायो. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो तुम इहांई रहियो. पाछें श्रीगुसांईजी मन्दिरमें पधारे. सो श्रीनवनीतप्रियजीकी राजभोग आर्ति किये. सो सब वैष्णवनकों दरसन करवाए. तब उन वैष्णवनने और भीष्मदासने दरसन किये. सो दरसन करिकै बोहोत प्रसन्न भए. तब सब वैष्णव अपने डेरा आए. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप अनोसर करायकै अपनी बैठकमें पधारे. तब भीष्मदास और सब वैष्णव श्रीगुसांईजीके दरसनकों आए. तब साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै बैठे. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप भोजनकों पधारे. तब सब वैष्णव अपने डेराकों गए. फेरि भीष्मदास तो ऊहांई रहे. अपने कुटुम्बसहित. पाछें श्रीगुसांईजी

आपु भोजन करिकै उठे, तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुखसों खवासकों कहे, जो भीष्मदासकों बुलावो. तब भीष्मदास आए. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो तुम आज सब कुटुम्ब सहित महाप्रसाद इहांई लेऊ. तब भीष्मदास और उनके कुटुम्बकों महाप्रसादकी पातरि धरी, सो सबनने महाप्रसाद लियो. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप पोढ़ें. तब भीष्मदास अपने डेरा आए. पाछें श्रीगुसांईजी आप छिनक विश्राम करिकै उठे. सो उत्थापनकौ समय भयो. तब श्रीगुसांईजी स्नान करिकै मन्दिरमें पधारे. सो उत्थापन किये. ता पाछें सेन पर्यन्त सब सेवातें पहोंचिकै श्रीगुसांईजी आप अपनी बैठकमें पधारे. तब श्रीगुसांईजीके दरसनकों सब वैष्णव आए. सो दण्डवत् करिकै बैठे. ता समै श्रीगुसांईजी आप श्रीमुखसों आज्ञा किये, जो काल्हि हम गोपालपुर चलेंगे. पाछें प्रातःकाल भयो. तब मङ्गला आर्ति करिकै श्रीगुसांईजी नाव मंगाए. तब नावमें बैठिकै पार उतरिकै श्रीगुसांईजी मथुराजी आए. सो तहां विश्रान्तघाट स्नान करिकै श्रीगुसांईजी बैठकमें भोग धरें. सन्ध्यावन्दन करिकै पाछें श्रीगुसांईजी असवार होईकै श्रीगोवर्द्धन पधारे. सो गोपालपुर आए. सो ता समै श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सन्ध्यार्तिकौ समै हतो. सो आप तो स्नान करिकै मन्दिरमें पधारे. तब साथके सब वैष्णवनने सन्ध्यार्तिके दरसन किये. तब सब वैष्णव दरसन करिकै बोहोत प्रसन्न भए. तब सेन आर्ति करिकै श्रीगुसांईजी अपनी बैठकमें पधारे. तब सब वैष्णव श्रीगुसांईजीके दरसनकों आए. तब साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै बैठे. तब श्रीगुसांईजी उन वैष्णवनकों पूछो, जो वैष्णव ! तुमने श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किए ? तब वैष्णव बोले, जो महाराजाधिराज ! आपकी कृपा तें किये. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो रात्रिकों श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ सेन भोगको महाप्रसाद लीजो. पाछें सेन आर्ति पाछें सबनकों महाप्रसाद लिवायो. सो महाप्रसाद अति अद्‌भुत हतो. सो सब वैष्णव महाप्रसाद लेके आनन्द पाए. और कहन लागे, जो धन्य हमारे भाग्य हैं, जो श्रीगोवर्द्धननाथजी आप ऐसो प्रसाद दिए. पाछें महाप्रसाद ले कै श्रीगुसांईजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै सब वैष्णव अपने - अपने डेरा आए. और श्रीगुसांईजी आप पोढ़े. ता पाछें प्रातःकाल भयो. तब श्रीगुसांईजी आप जागे. सो देहकृत्य करि दन्तधावन करि स्नान करि श्रीगिरिराज उपर श्रीगोवर्द्धननाथजीके मन्दिरमें पधारे. सो मङ्गला आर्ति किये. तब सब वैष्णवनने श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किए. पाछें सब वैष्णव श्रीगिरिराजजीकी परिक्रमाकों गए. तब परिक्रमा करि आयकै राजभोग आर्तिके दरसन किये. पाछें श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! अब हमारो सबनको मनोरथ है, जो ब्रजयात्रा करें. सो आप आज्ञा करो सो हम करे. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किए, जो ब्रजयात्रा तो अवश्य करि चाहिये. तब श्रीगुसांईजीकी आज्ञा प्रमान ब्रजयात्रा किए. पाछें श्रीगोकुल आए. सो श्रीनवनीतप्रियजीके राजभोगके दरसन किये. ता पाछें सब वैष्णव अपने डेरा गए. तब श्रीगुसांईजी अपनी बैठकमें पधारे. तब

सब वैष्णव श्रीगुसांईजीके दरसनकों आए. सो साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै बैठे. तब ता समय उन वैष्णवन तें श्रीगुसांईजी पूछे, जो तुम ब्रजयात्रा करि आए ? तब सब वैष्णवनने हाथ जोरिकै बिनती कीनी, जो महाराजकी कृपासों ब्रजयात्रा भली भांतिसों करि आए. सो ऐसें कहिकै दण्डवत् करिकै अपुने डेरा आए. पाछें श्रीगुसांईजी भोजन करिकै पौढें. तब वह सङ्ग कितनेक दिन श्रीगोकुल रह्यो. पाछें एक दिन सब वैष्णवनने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! आज्ञा होई तो अपने देसकों जांइ. तब श्रीगुसांईजी सब वैष्णवनकों बिदा किये. सो सब बिदा होंइकै तहां तें चले. और भीष्मदास तो श्रीगोकुल ही में रहे. सो श्रीगुसांईजीके दरसन करिवेकों आये. तब श्रीगुसांईजी पूछे जो भीष्मदास ! तुम अपने देसकों न गए ? तब भीष्मदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती करि, जो महाराज ! अब तो आपके चरनकमल छोरिकै कहूं न जाउंगो. पाछें भीष्मदास कुटुम्ब सहित श्रीगोकुलमें ही रहे. तब उनके माथे श्रीगुसांईजी बालमुकुन्दजीकी सेवा पधराए. सो वे बोहोत प्रीतिसों सेवा करते. तब एक समय श्रीठाकुरजी भीष्मदासकों स्वप्नमें यह आज्ञा किए, जो मन्दिर आछौ बनवायकै तामें मोकों पधराव. तब भीष्मदास प्रातःकाल उठिकै श्रीठाकुरजीकौ मन्दिर सिद्ध करवावन लागे. सो कितनेक दिनमें मन्दिर सिद्ध भयो. तब ठाकुरजीकों नये मन्दिरमें पधराये. सो बड़े आनन्दसों ता दिन उत्सव कियो. तब वैष्णवकों महाप्रसाद लिवायो. तब ये समाचार श्रीगुसांईजी सुनिकै बोहोत प्रसन्न भए. तब भीष्मदास श्रीगुसांईजीके दरसनको आए. तब श्रीगुसांईजीने भीष्मदाससों पूछी, जो आज तेरे कहा उत्सव है ? तब भीष्मदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! श्रीठाकुरजी आप कहें, जो मोकों दूसरो मन्दिर बनवाय देऊ. तब आज्ञा प्रमान मन्दिर सिद्ध करवायो. तब तहां श्रीठाकुरजीकों पधराए हैं. सो वैष्णवनकों महाप्रसाद लिवायो है. यह सुनिकै श्रीगुसांईजी भीष्मदासके उपर बोहोत प्रसन्न भए. और आप कहन लागे, जो तुम श्रीठाकुरजी प्रसन्न होंई ऐसेई सेवा करियो. सो वे दोउ स्त्री - पुरुष परम आनन्दसों भगवत्सेवा करते. सों उनसो श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावते. और जो चाहिए सो मांग लेत. बातें करते. बोहोत कृपा करतें. सो वे भीष्मदास बोहोत स्नेह संयुक्त सेवा करते. सो श्रीगोकुल छोरिकै कहूं न गए. और सांझके समै नित्य 'रमनस्थल' जाते. सो उहां रमनरेतीमें रासकौ दरसन होतो. परि वे काहूसों कहते नाहीं.

भावप्रकाश :

यामें यह जतायो, जो वैष्णवकों गोप्य रीतिसों रहनो. काहूके आगे अपने अनुभवकी बात करनी नाहीं.

सो वे भीष्मदास श्रीगुसांईजीके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं. सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१७०।।

१७१-नारायणदास पांडे

अब श्रीगुसांईजीके सेवक नारायणदास पांडे, सनोढिया ब्राह्मण, आन्योरके, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनको नाम 'नारायणी' है. ये 'ब्रजबिलासिनी' तें प्रगटी है. तातें उनके भावरूप है. ये आन्योरमें एक सनाढ्य ब्राह्मनके जन्मे. सो वह ब्राह्मन सदू पांडेके कुटुम्बकौ हतो. सो नारायण पांडे बरस बीस बाईसके भए. तब इनके माता - पिता मरे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुल तें आन्योर पधारे हते. तब नारायणदास पांडेने श्रीगुसांईजीके दरसन किये. सो साक्षात् श्रीपूरनपुरुषोत्तमके दरसन भए. तब नारायणदासने अपने मनमें विचार कियो, जो ये तो साक्षात् श्रीगोवर्द्धनधर श्रीनन्दकुमार दीसत हैं. सो ताही तें इनकी सरनि जैये तो आछो है. तब नारायणदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महारजाधिराज ! आप कृपा करिकै नाम सुनाइये. तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें आज्ञा किये, जो तुम स्नान करि आवो. तुमकों नाम सुनावेंगे. तब नारायणदास गोविन्दकुण्डमें स्नान करिकै श्रीगुसांईजी आपके आगे आय ठाड़े भए. तब नारायणदासकों श्रीगुसांईजी आपने कृपा करिकै नाम सुनायो. ता पाछें दूसरे दिन ब्रत करवायकै निवेदन कराए. ता पाछें नारायणदास पांडेकों कृपा करि श्रीगोवर्द्धननाथजीके अलौकिक दरसन करवाए. सो दरसन करिकै बोहोत प्रसन्न भए. ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु स्नान करिकै मन्दिरमें पधारे. सो सेवा सिंगार करिकै श्रीठाकुरजीकों राजभोग समर्प्यो. ता पाछें भोग सराय आर्ति करिकै अनोसर करवायकै पाछें श्रीगुसांईजी आप गिरिराज तें नीचे पधारे. सो अपनी बैठकमें गादी - तकियानके

उपर बिराजे. तब नारायणदास पांडेसों श्रीगुसांईजी कहे जो उठो महाप्रसाद लेऊ. पाछें श्रीगुसांईजीने नारायनदासकों महाप्रसाद लिवायो. और श्रीगुसांईजी आप भोजन करिकै बीड़ा अरोगिके पोढ़ें. सो श्रीगुसांईजी आप छिनक विश्राम करिकै उठे. पाछें उत्थापनकौ समय भयो तब श्रीगुसांईजी स्नान करिकै श्रीगोवर्द्धननाथजीके मन्दिरमें पधारे. तब संखनाद करवाये. ता पाछें सेन पर्यन्त सब सेवासों पहोंचिकै श्रीगुसांईजी श्रीगिरिराज तें नीचे पधारे. सो अपनी बैठकमें गादी - तकियानके उपर बिराजे. सो कितनेक दिन तांई उहां रहे. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुल पधारे. तब नारायनदास पांडे सों श्रीगुसांईजी आप कहे, जो तू पीछे आइयो. जो हम सवारे श्रीनवनीतप्रियजीकी सेवासों पहोंचेंगे. तब श्रीगुसांईजी आप श्रीगोवर्द्धननाथजीसों बिदा होंइकै श्रीगोकुलकों पधारे. तब नारायनदास पाछें - पाछें आइ पहोंचे. सो श्रीगोकुल आए. तब श्रीगुसांईजी स्नान करिकै श्रीनवनीतप्रियजीके मन्दिरमें पधारे. सो सेवा - सिंगार करिकै राजभोग धरि, आर्ति करिकै श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन नारायनदास पांडेकों करवाए. तब नारायनदास दरसन करिकै बोहोत प्रसन्न भए. ता पाछें अनोसर करवायकै श्रीगुसांईजीके दरसनको आए. सो साष्टाङ्ग दण्डवत् किये. तब श्रीगुसांईजी श्रीमुखसों आज्ञा किए, जो नारायनदास महाप्रसाद इहांई लीजियो. तब श्रीगुसांईजी आप सब बालकन सहित भोजन किये. पाछें आचमन करि बीड़ा अरोगिकै ता पाछें नारायनदासकों महाप्रसादकी पातरि धरी. सो नारायनदासने महाप्रसाद लियो. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप अपनी बैठकमें पधारें, पाछें आप पोढ़ें. तब छिनक विश्राम करिकै श्रीगुसांईजी आप जागे. सो देखें, तो नारायनदास ठाढ़े पंखा करत है. तब श्रीगुसांईजी आप नारायनदासके उपर बोहोत प्रसन्न भए, जो नारायनदास ! बेठो. हारि गए होउगे. सो याही भांतिसों नारायनदासने बोहोत दिन लों सेवा कीनी. सो श्रीगोकुल छोरिकै कहूं न गए. सो नारायनदास पांडेने देह छोड़ी तहां तांई कहूं न गए. जो श्रीगुसांईजी आपकी सेवामें तत्पर रहे. तब श्रीनवनीतप्रियजी नारायनदास पांडेकों अनुभव जतावन लागे.

भावप्रकाश :
या वार्तामें गुरुके आश्रयको स्वरूप दिखाये. जो वैष्णवकों या प्रकार गुरुको आश्रय दृढ होंइ तो श्रीठाकुरजी आप ही तें अनुभव जतावे.

सो वे नारायनदास पांडे श्रीगुसांईजीके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१७१।।

१७२-एक ब्राह्मण भावनगर दक्षिणकौ

अब श्रीगुसांईजीके सेवक एक ब्राह्मन, दक्षिण भावनगरकौ बासी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त है. लीलामें इनको नाम 'कृष्णानुचरी' है. ये श्रीगोकुलके 'बानर' तें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं.

ये दक्षिनमें भावनगर गाम है, तहां एक ब्राह्मनके जन्मे. सो बरस आठके भए. तब पिताने इनकों एक पण्डितके उहां पढ़िवेकों बैठाए. सो ये वेदके मन्त्र पढे. उच्चार शुद्ध करे. परि इनको अर्थको बोध भयो नाहीं. पाछें माता - पिता मरे तब ये माता - पिताकी अस्थी ले कै सोरोंजी आए. तहां गङ्गाजीमें अस्थीकों डारे. पाछें उहांई रहे. काहे तें, जो घरमें कोऊ हतो नाहीं. सो वेद - पाठ करि श्रीगङ्गाजीके किनारे अपनो निर्वाह करन लागे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै श्रीगुसांईजी सोरोंजी पधारे हते. तब तहां एक ब्राह्मन श्रीभागवतकौ पाठ करन लाग्यो. तब श्रीगुसांईजी आपकों वाकौ पाठ सुनिकै दया आई. जो यह ब्राह्मन पाठ भलो करत है, परन्तु याकों ज्ञान नहीं है. तातें इनको निजधर्म बताईये तो भलो है. सो यह श्रीगुसांईजी आप अपने मनमें विचारत ही वा ब्राह्मनको ज्ञान भयो. सो श्रीगुसांईजीके दरसन वा ब्राह्मनको साक्षात् कोटिकन्दर्पलावन्यके भये. सो दरसन करत ही अपने मनमें कह्यो, जो मैं इनकी सरनि जाऊं तो बोहोत भली बात है. सो ताही समै आयके श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिकै वह ब्राह्मन दोऊ हाथ जोरिकै बिनती करन लाग्यो, जो महाराजाधिराज ! कृपा करिकै मोकों अपनो दास करिए. तब श्रीगुसांईजी आपुने कृपा करिकै वाकों नाम सुनायो. पाछें निवेदन करवाए. तब वा ब्राह्मनकी बुद्धि निर्मल भई. सो नित्य श्रीगुसांईजी आपके श्रीमुख तें श्रीभागवतकौ पाठ तथा कथा सुनन लाग्यो. पाछें गोपालपुर आई, भलो वैष्णव कृपापात्र भयो.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
ता पाछें एक दिन श्रीठाकुरजी आपुने श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो यह ब्राह्मन पाठ आछौ करत है. सो या ब्राह्मनकों कहो, जो हमारे निजमन्दिर आगें यह वेद - पाठ कर्यो करे. तब श्रीगुसांईजीने श्रीठाकुरजीसों कह्यो, जो भले. पाछें ब्राह्मनकों श्रीगुसांईजी आपुने कह्यो, जो तू निजमन्दिरके आगे नित्य पाठ करिवो करि. तब वा ब्राह्मनने श्रीगुसांईजी आप तें कह्यो, जो महाराज ! ऐसेही करूंगो. सो नित्य सिंगारके समै वह ब्राह्मन बैठिकै राजभोग तांई पाठ करतो. सो श्रीठाकुरजी वा वैष्णव उपर प्रसन्न रहते. और श्रीगोवर्द्धननाथजी हू प्रसन्न रहते कदाचित् पाठमें भूल होंई तो आप जतावते. ऐसी कृपा श्रीगोवर्द्धननाथजी आप करते. सो वह दैवी जीव ब्राह्मन श्रीगुसांईजीकौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ताको पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए.

भावप्रकाश :
सो या वार्तामें यह जताए, जो जिनकों श्रीगुसांईजी आप विचारे तिनकों ब्रजमण्डलकी प्राप्ति होंइ. अरू चारों पदारथ हू सिद्ध होंई. सो गोपालदासजी गाए हैं

''जेने श्रीविटठलनाथ विचारे रे, तेने प्रगट पदारथ चारे रे ।
उपरांत भजन फल आपे रे, ब्रजमण्डल स्थिर करी स्थापे रे ।।''

सो या वैष्णवकों श्रीगुसांईजीकी कृपा तें निज धर्मको ज्ञान भयो, अरू ब्रजबास हू भयो. ता उपरांत श्रीगोवर्द्धननाथजी आप साक्षात् अनुभव करावन लागे. सोई भजनको फल जानिए. तातें वैष्णवकों एक श्रीआचार्यजी महाप्रभु तथा श्रीगुसांईजीको द्दढ आश्रय राखनो. उनके बचनमें विश्वास राखनो. तो सर्व फलकी सिद्धि होंइ. वार्ता ।।१७२।।

१७३-माधुरीदास माली

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक माधुरीदास माली, गोपालपुरको, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत है

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त है. लीलामें इनकौ नाम 'कलिका' है. ये श्रीयमुनाजीके यूथकी है. ये श्रीगोकुलके 'बानर' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

ये गोपालपुरमें एक मालीके जन्म्यो. सो वह माली श्रीगुसांईजीकौ सेवक हतो. सो वाने माधुरीदास हू कों श्रीगुसांईजीकौ सेवक करायो. सो माधुरीदास बड़ो भयो. तब वह पिताकें सङ्ग बगीचीमें जाइवे लाग्यो. फल फूल संवारे. इकटठे करि तोकों बेचि आवे. ऐसे तरत कछूक दिनमें वाको पिता मर्यो. तब माधुरीदास सुतन्त्र भए. सो ये नित्य श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों जातो. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन नित्य निरखिकै करतो. सो जैसी माला - हार श्रीगोवर्द्धननाथजी आप धारन करें, तैसी माला - हार फूलके घर आइ बनावे. पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीके इहां दे आवे. या प्रकार इनकौ मन श्रीगोवर्द्धननाथजीके स्वरूपमें लग्यो हतो. सो बगीचामें फल - फूल होंई सो सब श्रीगोवर्द्धननाथजीके इहां दे आवे. आप सूकी लकड़ी बेचि निर्वाह करे. ऐसो प्रेम वाकौ श्रीगोवर्द्धननाथजीमें भयो. सो श्रीगोवर्द्धननाथजी माधुरीदासपै बोहोत प्रसन्न भए. सो बगीचीमें पधारते. वाको दरसन देते. सो एक दिन श्रीगोवर्द्धननाथजी बगीचीमें पधारे. ता समै माधुरीदास श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ हार करत हतो. सो वाने श्रीगोवर्द्धननाथजीकों पधारे जाने नाहीं. ऐसो सेवामें तन्मय भयो. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी वाकी बांहि पकरि कहे, जो माधुरीदास ! ये हार या प्रकार करि. सो माधुरीदासकों चेत भयो. तब वाने, श्रीगोवर्द्धननाथजीने कह्यो ता प्रकार हार कर्यो. सो श्रीगोवर्द्धननाथजी आप वा हारकों देखिकै बोहोत प्रसन्न भए. पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी वासों कहे, जो तू ये हार श्रीगुसांईजीकों दीजो. यों कहि आप तो मन्दिरमें पधारे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो माधुरीदास माली गोपालपुरमें रहतो. सो एक समै वह माधुरीदास श्रीनाथजीके लिये फूलनकौ हार ले कै आयो हतो. सो वह हार श्रीगुसांईजी आपके आगें धर्यो. तब श्रीगुसांईजी आपने कृष्णदास अधिकारीकों दियो. और कह्यो, जो भीतरियाकों देऊ. जो श्रीनाथजीकों

पहरावें. तब भीतरियाने पहरायो. सो पूरो न आयो. तब फेरिकै श्रीगुसांईजी आपुसों आईके कह्यो, जो महाराज ! यह हार तो ओछो भयो. तातें आवत नाहीं. तब आप कहे, जो फेरि पहरावो. तब फेरि पहरायो. तब बोहोत बड़ो भयो. तबहू न आयो. तब भीतरियाने कह्यो, जो महाराज ! अब तो बड़ो भयो है. तब श्रीगुसांईजी आपु पधारे. तब हार पहरायो. तब पूरो भयो. तब श्रीगुसांईजी आप पूछे, जो बावा ! यह कहा कारन है ? तब श्रीनाथजी श्रीगुसांईजीसों कहे, जो एक तो हों तुम्हारे बिनु रहि सकत नाहीं हों. दूसरो, या भांतिको रत्नकौ हार करावो. तीसरो, मुखियाके मुखमें तें बास आवत है. सो ता दिनतें सुगन्धी लगाय बीड़ा खायकै पाछें सेवा तें पहोंचन लागे. पाछें हार हू ऐसो करवायो सो श्रीनाथजी बोहोत प्रसन्न भए. सो वा हारको नाम अजहू 'माधुरीदास' सगरे कहत हैं.

भावप्रकाश :
सो या वार्ताकौ भाव यह है, जो वैष्णवकों सेवा बहोत सावधानीसों करनी. मुख तें बास आवे नाहीं. मलीन वस्त्र पहेरने नाहीं. सुगन्धी अतर लगाय प्रभुनकी सन्मुख जानो. प्रभुनकों साक्षात् जानि उनकी सेवामें तत्पर रहनो. और वस्त्र आदि नाप तें करने. छोटे बड़े न करने. या प्रकार साक्षात् जानि सेवा करे तो प्रभु अनुभव जतावे.

सो उन माधुरीदासके उपर बड़ी ही कृपा हती. सो वे हार नित्य करन लागे. सो वे माधुरीदास श्रीगुसांईजीके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय भए. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१७३।।

१७४-धर्मदास ब्राह्मण

अब श्रीगुसांईजीके सेवक धर्मदास ब्राह्मण, अडींगको, जाकों श्रीगुसांईजीने आंखि दीनी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :

ये तामस भक्त है. लीलामें इनकौ नाम 'नयनप्रभा' है. ये श्रीगोकुलके 'बानर' तें प्रगटी हैं, तातें इनके भावरूप है.

ये अडींगमें एक ब्राह्मनके जन्म्यो. सो कछूक दिनमें सरीरमें सीतलाको उपद्रव भयो. तातें आंधरो भयो. सो माता - पिता बोहोत दुःख पावे, चिन्ता करे. ऐसे करत यह बरस पन्द्रह - सत्रहको भयो. तब इनके माता - पिता मरे. तब ये मथुरा - गोवर्द्धनके मारगमें बैठि भीख मांगन लाग्यो. सो को कछू आवे तामें निर्वाह करतो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो एक समै श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुल तें श्रीनाथजी द्वार पधारे हते. सो मार्गमें एक आंधरो ब्राह्मन बैठ्यो हतो. तब श्रीगुसांईजीके मनमें दया आई, जे बापड़ो आंखिनि बिना दुःखी है. सो ताही समै श्रीगुसांईजीकी इच्छा तें वा ब्राह्मनकी आंखि नीकी भई. और आछो देखन लाग्यो. तब देखे. सो कहन लाग्यो, जो मोकों कहा भयो ? ता पाछें प्रसन्न भयो. तब श्रीगुसांईजी आप देखें तो वह ब्राह्मन आछो भयो है. तब श्रीगुसांईजी आप बोहोत प्रसन्न भए. पाछें श्रीगुसांईजी मनमें विचारी, जो याकों आंखिनिको सुख दिखाइए. तब वा ब्राह्मनकों श्रीगुसांईजी आप बुलाए. तब वह ब्राह्मन आयो. सो श्रीगुसांईजीको साष्टाङ्ग दण्डवत् करिके पांवन पर्यो. और बिनती करी, जो महाराज ! आप मो पर बड़ी कृपा करी, जो मोकों आपने आंखि दीनी. तब श्रीगुसांईजी आपनो वा ब्राह्मनसों कही, जो तू हमारे साथ रहेगो ? तब वा ब्राह्मनने कही, जो महाराज ! मोकों और कहा चाहिए ? तब श्रीगुसांईजी आप वाकों सङ्ग ले कै पधारे. सो श्रीनाथजीद्वार आए. सो उत्थापनके समय पहोंचे. सो तत्काल स्नान करिकै श्रीगोवर्द्धननाथजीके मन्दिरमें पधारे. तब संखनाद करवाए. तब श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीके कपोलनपै श्रीहस्त स्पर्श किये. और परस्पर कुसल पूछे. तब कहे, जो भली करी, आंखि दीनी. अब सेवक करो. तब श्रीगुसांईजी आप बाहिर पधारिकै वा ब्राह्मनकों नाम दीनो. तब वाकों सुधि भई. जो भलो भयो. तब ता दिन जेष्ठ सुदी दसमी हती. तब वा ब्राह्मनकों श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो काल्हि तू निर्जल ब्रत करियो.

भावप्रकाश :

काहे तें, जो आंधरो हतो. तातें खानपानकौ कछू विचार रहतो नहीं. तातें निर्जला ब्रत करवाये.

तब वा ब्राह्मनने निर्जल ब्रत कियो. तब द्वादसीके दिन वाकों ब्रह्मसम्बन्ध करवायो. समर्पन कियो. तब श्रीगुसांईजी आपने वा ब्राह्मनसों कही, जो तू वैष्णवनसों चर्चा वार्ता सुनियो. तब वह ब्राह्मन वैष्णवनके मुख तें वार्ता - कीर्तन सुनन लाग्यो. पाछें वा ब्राह्मनने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! मोकों कोई ग्रन्थ सिखावो. तब श्रीगुसांईजी आप वा ब्राह्मनकों 'श्रीवल्लभाष्टक' सिखाए. तब वाकी बुद्धि निर्मल भई. और सब समझन लाग्यो. और श्रीगुसांईजी आप वासों चरन - सेवा करवावन लागे. सो वाहीकों वाकों अधिकार दीनो.

भावप्रकाश :
यह कहि यह जताए, जो 'वल्लभाष्टक' कै पाठ किये ते श्रीआचार्यजीकौ स्वरूप हृदयमें आवे. तब बुद्धि निर्मल होंई, एक निष्ठा हू होंई. और सगरो मारग स्फुरे. श्रीगुसांईजीके स्वरूप हू को बोध होई. तब प्रभु अपनो जानि या प्रकार दास - भावको दान करे.

और वाकों श्रीनवनीतप्रियजीकौ महाप्रसाद देते. ता पाछें वाने देह छोड़ी. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो सेवा भली भांति करत हतो. तब श्रीगुसांईजी आपके पास श्रीबालकृष्णजी बैठे हते. तब श्रीगुसांईजीसों पूछे, जो ऐसी सराहना क्यों करत हो ? जो वापैं कृपा तो आपहीने कीनी. जो वाकों आंखि दीनी. फेरि सङ्ग हू राख्यो, और सेवा हू करवाए ? तातें यह सब उपकार आपकौ है. सो सराहना करिवेकौ कारन कहा ? तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें कहें, जो हमकों याकों देनो हतो. जो श्रीवसुदेवजीके घर हम प्रगट भए हते. तब याने पक्षपात कीनो हतो. कोन पक्ष ? जो यह कंसकौ खवास हतो. सो याने कही हती, जो बेटा नहीं भयो, बेटी ही भई है. तब याकों कंसने मार्यो हतो. याके लिये हमनें बड़ो मोह कियो. अब मुरारीदास (?) याकौ नाम होयगो, और हमारो खासा वैष्णव होइगो.

सो वे धर्मदास श्रीगुसांईजीके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१७४।।

१७५-एक क्षत्री वैष्णव, लक्ष रुपैयाके फूलवारी

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक क्षत्री वैष्णव, दक्षिणको, लक्ष रुपैयाकौ गुलाबकौ फूल ल्यायो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनको नाम 'स्नेह प्रकाशिका' है. ये स्नेहको प्रकाश करति हैं. ये 'केतकी' तें प्रगटी हैं, तातें इनके भावरूप हैं.

ये दक्षिनमें पंढरपुरमें एक मजलि उरेमें एक गांव है, तहां एक क्षत्रीके जन्म्यो. सो क्षत्री बहोत द्रव्यमान हतो. सो बेटा बरस तीसको भयो, तब वह मर्यो. सो याने ब्याह तो कियो नाहीं सुतन्त्र रहे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समय श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुल तें दक्षिनकों पधारे हते. सा रसोई करिकै श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो. समय भए भोग सराय आप भोजन किये. और सब ब्रजबासी टहलुवानकों महाप्रसाद लिवायो. तब वा क्षत्रीकों श्रीगुसांईजीके दरसन भए. तब वा क्षत्रीने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मोको सरनि लीजिए. मैं तो महा अपराधी जीव हों. तब श्रीगुसांईजी वासों कहे, जो तू स्नान करिकै आउ. तब हम तोकों नाम सुनाइ, सरनि लेइंगे. तब वह क्षत्री स्नान करिकै आयो ठाढ़ौ भयो. सो बिनती करी, जो महाराज ! मोकों नाम सुनाइए. तब श्रीगुसांईजीने कृपा करिकै वाकों नाम सुनायो. पाछें दूसरे दिन ब्रत कराय निवेदन कराए. तब वा क्षत्री वैष्णवने श्रीगुसांईजीकों बोहोत भेट करी. पाछें वा वैष्णवने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! मोकों सेवा पधराय दीजिए. तब श्रीगुसांईजी आप वा क्षत्री वैष्णवके माथे स्वरूप सेवा पधराय दिए. और सब सेवाकी रीति - भांति सिखाई. और सखड़ी अनसखड़ीको सब प्रकार कह्यो. सो वा क्षत्री वैष्णवने सब सीख्यो. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप वा क्षत्री वैष्णवकों आज्ञा किये, जो उत्तम तें उत्तम वस्तु

श्रीप्रभुनकों समय पर अङ्गीकार कराइयो. तामें न्यूनता आवे नाही. ऐसें आप आज्ञा किए. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप उहां तें विजय किए. सो आगेंकों पधारें. सो दैवी जीवनकौ उद्धार करिवेकों. तब फेरि कितनेक दिनमें आप श्रीगोकुल पधारे. तब श्रीगुसांईजी आप श्रीनवनीतप्रियजीकौ सेवा सिंगार करन लागे. और यह क्षत्री वैष्णव श्रीठाकुरजीकी सेवा भली - भांतिसों करन लाग्यो. जगावतो, मङ्गला भोग धरतो. और उत्तम तें उत्तम आभरन पहरावतो. और समयानुसार सामग्री सिद्ध करिकै श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पतो. समय भए भोग सराय आर्ति करि अनोसर करि वैष्णवनकों महाप्रसाद लिवावतो. या प्रकार नित्य करतो. पाछें और सामग्री सिद्ध करिकै राखे, सो सेनमें श्रीठाकुरजीकों भोग समर्पे. पाछें भोग सराय श्रीठाकुरजीकों पोढ़ावे. अनोसर करिकै बाहिर आवे.

और पुष्प फलादि वस्तू लेइ सौ अपने हाथसों ले आवतो. और काहू तें न मंगावतो. कछू द्रव्यकौ सञ्कोच न करतो.

सो एक समै गुलाबको फूल एक प्रथम ही आयो हतो. तब याने देख्यो. सो मालीसों वा क्षत्री वैष्णवने कह्यो, जो याकौ मोल कहा है ? सो इतनेमें एक मनुष्य और कोई ये उत्तम फूल देखिकै लेवेकों आयो. तब उनने वा वैषवसों कह्यो, जो ये पुष्प तो मैं लेउंगो. सो आपुसमें चढत रुपैया १०) तथा रुपैया २०) तथा रुपैया १००) तथा रुपैया १०००) तथा रुपैया लक्ष लों बढ़े. तब तो वह मनुष्य पाछो फिर्यो. सो ऐसें, वैष्णव तो रुपैया लक्ष दे कै गुलाबकौ फूल ले कै आयो. सौ श्रीठाकुरजीको समर्पे. तब वह वैष्णव तो बोहोत प्रसन्न भयो. जो मेरो बड़ो भाग्य है, जो श्रीठाकुरजी फूलकों अङ्गीकार किये हैं.

और उहां श्रीगुसांईजी आप ताही समै श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ सिंगार करत हते. सो देखे तो श्रीगोवर्द्धननाथजीके मस्तक उपर गुलाबकौ फूल धर्यो है. सो फूलके भारसौं श्रीगोवर्द्धननाथजी आप झुकि रहे हैं. सो ऐसी छबि देखिकै, दरसन करिकै श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजीसों पूछे, जो बावा ! ऐसें क्यों झुकि रहे हो ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो फलानो अमूक गाममें तुम्हारो सेवक रहत है, सो वाने एक लक्ष रुपैया दे कै गुलाबकौ फूल ले कै समर्प्यो है. सो ताके भाव (भार) करिकै हम झुकि रहे हैं. सो वाकी वैष्णवताकी कहां तांई सराहना करिए ? सो ऐसें बचन श्रीगोवर्द्धननाथजीकै सुनिकै श्रीगुसांईजी आप बोहोत प्रसन्न भए. ता पाछें

श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजीकों अनोसर करायकै पर्वत तें नीचे पधारे. सो एक ब्रजबासीकों बुलायकै एक पत्र वा वैष्णवके नामकौ लिखकै वा ब्रजबासीकों समाचार दे कै बिदा किये. सो वह ब्रजबासी पत्र ले कै चल्यो. सो कितनेक दिनमें वा गाममें जाय पहोंच्यो. सो वा वैष्णवकों श्रीगुसांईजीकौ पत्र दिये. सो वा वैष्णवने माथे चढायकै लियो. और बोहोत ही प्रसन्न भयो. श्रीगुसांईजी आपके हस्ताक्षर देखिकै साष्टाङ्ग दण्डवत् कियो. और गामके वैष्णव बुलाइकै कीर्तन करवाए. ता पाछें सब वैष्णवनकों महाप्रसाद लिवायो. और वा ब्रजवासीकौ बोहोत समाधान किये. पाछें वा वैष्णवने श्रीगुसांईजीकों पत्र लिख्यो, जो महाराज ! यह सब आपही की कृपा तें भयो है. सो पत्र लिखकै वा ब्रजवासीके हाथमें दियो. तब वह ब्रजवासी पत्र ले कै चल्यो. सो कितनेक दिनमें श्रीगुसांईजीके पास आयो. और वह पत्र श्रीगुसांईजीके आगे धर्यो. सो पत्र श्रीगुसांईजी बांचिकै बोहोत प्रसन्न भए. जो धन्य है, वा वैष्णवकौ भाग्य. जो वाकौ समर्प्यो फूल श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु अङ्गीकार किये. सो वाके भाग्यको कहां तांई कहिए ? सो या प्रकार श्रीमुख तें आप वा वैष्णवकी बोहोत सराहना किए.

भावप्रकाश :
या वार्तामें यह जताए, जो वैष्णव अपने श्रीठाकुरजीकी सेवा श्रीगोवर्द्धननाथजीके समयानुसार करें, और श्रीगोवर्द्धननाथजीके भावसों प्रीतिपूर्वक वस्तु समर्पे, तो श्रीगोवर्द्धननाथजी या प्रकार वा वस्तूकों साक्षात् अङ्गीकार करत हैं, अनुभव जतावत हैं. जैसे वा ब्राह्मनने श्रीनाथजीके राजभोगके समय अपने घर बंगालेमें श्रीनाथजीको ध्यान करि गुड़ - बडा भोग धरे. तब श्रीनाथजी तत्काल अपनो राजभोग छोड़िके उहां पधारे. ता भांति समय अनुसार भाव प्रीति पूर्वक जो कोऊ वैष्णव अपने घर श्रीगोवर्द्धननाथजीके भावसों सेवा करत हैं, तिनकी समर्पी वस्तू या प्रकार आप तत्काल अङ्गीकार करत हैं, यह सिद्धान्त जनायो.

और भगवत्सेवामें द्रव्यकों तुच्छ करि जाननो यहू कहे.

सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ? वार्ता ।।१७५।।

१७६-मुकुन्ददास सेखड़

अब श्रीगुसांईजीके सेवक मुकुन्ददास सेखड़ (क्षत्री), तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त है. लीलामें इनकौ नाम 'आराधिका' है. ये श्रीचन्द्रावलीजीकी सखी है. 'केतकी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

सो ये पूरवमें एक क्षत्रीके जन्मे. सो बरस बारहके भए. तब इनके माता - पिता मरे. पाछें केतेक दिनमें ये यात्राकों चले. सो प्रथम श्रीगोकुल आए.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समय मुकुन्ददास सेखड़ श्रीगुसांईजीके दरसनकों श्रीगोकुल आए हते. सो ठकुरानी घाटके उपर श्रीगुसांईजीके दरसन किये. सो साक्षात् श्रीपुरनपुरुषोत्तम कोटिक कन्दर्पलावण्य ऐसें दरसन भए. तब मुकुन्ददास सेखड़ने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! मोकों सरनि लीजिए. मैं बोहोत दिन तें भटकत डोलत हूं. तब आप आज्ञा किए जो श्रीयमुनाजीमें स्नान करि आओ. तब मुकुन्ददास सेखड़ तत्काल श्रीयमुनाजीमें स्नान करि आए. और दोउ हाथ जोरिकै बिनती करी, जो महाराज ! मो पर कृपा करिकै नाम देउ. तब श्रीगुसांईजीने कृपा करिकै मुकुन्ददास सेखड़कों नाम सुनाए. पाछें आप मन्दिरमें पधारे. तब श्रीनवनीतप्रियजीके सन्निधान ब्रह्मसम्बन्ध करवाए. तब मुकुन्ददास सेखड़ने यथासक्ति भेट करी. ता पाछें श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन किए. सो दरसन करिकै बोहोत प्रसन्न भए. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीनवनीतप्रियजीकी सेवा तें पहोंचिकै अपनी बैठकमें पधारे. पाछें आपु भोजनकों पधारे. सो भोजन करिकै मुख - शुद्धार्थ आचमन करिकै पाछें मुकुन्ददास सेखड़कों जूठनिकी पातरि धरी. तब मुकुन्ददासने महाप्रसाद लियो. पाछें श्रीगुसांईजी पास आइ दण्डवत् करि बैठे. तब श्रीगुसांईजी आप मुकुन्ददास सेखड़कों अपनी खवासीमें राखे. सो जहां आप पधारते तहां साथ रहते. सो श्रीगुसांईजी आप मुकुन्ददास सेखड़के उपर सदैव प्रसन्न रहते. और कृपा करिकै मार्गकी गोप्य वार्ता होंई सो मुकुन्ददाससों कहते. सो

मुकुन्ददास श्रीगुसांईजीकों छोरिकै कहूं नाहीं गए.

भावप्रकाश :
सो या वार्तामें यह जताए, जो सेवककों प्रभुन तें छिन एक न्यारो न रहनो.

सो वे मुकुन्ददास सेखड़ श्रीगुसांईजीके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां ताई कहिए. वार्ता ।।१७६।।

१७७-राजा मानसिंघ दक्षिणकौ

अब श्रीगुसांईजीके सेवक राजा मानसिंघ दक्षिनके, जिनके एकसौ आठ रानी हती, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त है. लीलामें इनको नाम 'सूर्या' है. सूर्य जैसो इनको प्रकाश है. और 'सूर्या' की एक अन्तरङ्गिनी सखी है. वाकौ नाम है 'तारिका'. सो इहां तेलीकी बेटी भई. ये दोउ 'केतकी' तें प्रगटी है. तातें इनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो उन राजा मानसिंघको एकसौ आठ रानी हती. तिन एक - एक के महल न्यारे - न्यारे हते. सो एक - एक महलमें ओसरासों राजा जातो. तब एकसौ आठ दिनमें एक महलमें ओसरा आवतो. परि बेटा - बेटी काहूके न भयो. और बेटा - बेटीके लिये तो राजा एकसौ आठ रानी ब्याह्यो. परि भागमें नाहीं. सो काहूके कछू भयो नाहीं. तब राजाने उपाय बोहोत किये. परि तऊ न भयो. सो वा रजाको

दक्षिनकौ राज द्रव्य बोहोत. परि सन्तान न होंइ. सो तासों राजा बोहोत दुःखी भयो. तब दुःख करिकै राजाने यह मनोरथ कियो, जो श्रीजगन्नाथरायजीके दरसन करें. जो श्रीजगन्नाथरायजी कृपा करें तो करे. तब दीवानसों कहीं जो लसकरकी तैयारी करो. जो श्रीजगन्नाथरायजी जायेंगे. तब दीवानने राजाको हुकुम मानिकै डेरा तम्बूकी तैयारी करी. तब तैयारी करिकै राजासों कह्यो, जो लसकरकी तैयारी है. तब राजा एकसौ आठ डोला करि उनमें रानीनकों बैठायकै लसकर ले कै श्रीजगन्नाथरायजीके दरसनकों चले. सो उहां आय पहोंचे. तब एक मैदानमें राजाने डेरा किये. फेरि सब रानीनकों ले कै श्रीजगन्नाथरायजीके दरसनको आए. तब सब रानीनकों श्रीजगन्नाथरायजीके दरसन करायकै डेराकों पठाय दिए. पाछें राजा ठाढ़े - ठाढ़े श्रीजगन्नाथरायजीके दरसन करत हुतो. तब श्रीगुसांईजी अड़ेलसों श्रीजगन्नाथरायजीके दरसनको पधारे हते. तब उहां अपनी बैठकमें बिराजे हते. तब राजा दरसन करत हुतो. ताही समय आप हू दरसनकों पधारे. सो आप हू श्रीजगन्नाथरायजीके दरसन करत हुते. पाछें राजाने पण्ड्यासों पूछी, जो ये कौन है ? तब पण्ड्याने कही, जो ये श्रीगोकुलके श्रीगुसांईजी हैं. तब राजाने वाही समै दण्डवत् करी. तब आप वाही समै कृपादृष्टिसों राजाकों देखे. सो देखत ही राजा तो मोहित भयो. सो आप दरसन करिकै पधारे तब राजा पीछे - पीछे आपकी बैठकमें चल्यो आयो. तब राजाने दोई मोहोर दोई श्रीफल ले कै भेट धरे. तब आपने खवाससों आज्ञा करी, जो राजासों कहो, जो हमारो सेवक होइ, वाकी भेंट हम अङ्गीकार करत हैं. बिना सेवककी नाहीं लेत. तब खवासनें राजासों कही, जो आप तो सेवकको अङ्गीकार करत हैं. बिना सेवक नाहीं लेत. तब राजाने बिनती करी, जो महाराज आप कृपा करिकै मोकों सेवक करिए. तब आपने कृपा करिकै वाही समय राजाकों नाम सुनायो. फेरि राजाने बिनती करी, जो महाराज ! अब तो भेट अङ्गीकार करोगे ? अब मैं आपकौ सेवक भयो. तब आपने कृपा करिकै कण्ठी दीनी, जो राजा ! यह पहरि लेऊ. तब पहरि लीनी. तब आपने कृपा करिकै प्रसाद मंगायो. तब राजाने माथें चढायकै लियो. फेरि अपने डेरामें पठायो. पाछें राजाने दण्डवत् करि बिनती करी, जो महाराज ! अब तो मैं जांयकै महाप्रसाद लेऊंगो. और सांझकों आपके पास आऊंगो. तब आपने आज्ञा कीनी, जो बोहोत आछो. तब राजा डेरा आयो. तब डेरा आयकै महाप्रसाद लियो. पाछें फेरि सांझकों असवारी भई, सो आयकै श्रीजगन्नाथरायजीके दरसन किये. तब दरसन करिकै राजा श्रीगुसांईजीकी बैठकमें आयो. तब आपके आगें आयकै दण्डवत् कीनी. तब आपने बैठेवेकी आज्ञा दीनी. तब राजा बैठे. तब आपने कथाकौ आरम्भ कियो. सो कथा बांची. सो राजाने श्रवन कियो. सो कथामें नाम निवेदनकौ प्रसङ्ग कह्यो. सो राजाने सुन्यो. सुनिकै बिनती कीनी, जो महाराज ! नाम तो सुनाए परि निवेदन करावो. तब आपने

आज्ञा करी, जो आछौ. राजा ! काल्हि ब्रत करो. परसों ब्रह्मसम्बन्ध करावेंगे. तब राजाकों दूसरे दिन ब्रत करवायकै तीसरे दिन ब्रह्मसम्बन्ध करवायो. पाछें राजाने बिनती करी, जो महाराज ! अब कहा आज्ञा है ? तब आपने आज्ञा करी, जो राजा ! अब तुम्हारो कहा मनोरथ है ? तब राजाने बिनती करी, जो महाराज ! मेरे सन्तान कोउ नाहीं है इनके काजें एकसौ आठ रानी ब्याह्यो परि तोउ मेरे सन्तान न भई. सो या बातसों मैं बोहोत दुःखी भयो. पाछें मेरो मनोरथ भयो, जो मैं श्रीजगन्नाथरायजीके दरसन करों. सो आपकी कृपासों श्रीजगन्नाथरायजीके दरसन भए और आपने कृपा करिकै दरसन दिये. सो मरो अहोभाग्य. तातें अब आप जो आज्ञा करो सो मैं करूं. तब आपने आज्ञा करी, जो राजा ! अब श्रीठाकुरजी पधरायकै सेवा करो. तब राजाने बिनती करी, जो महाराज ! बोहोत आछो. आप सेवा पधराय देउ. तब आप कृपा करिकै वाके माथे सेवाके लिये श्रीठाकुरजी पधराय दिये. सो श्रीमदनमोहनजीकौ स्वरूप पधराय दिये. तब राजाने बिनती करी, जो महाराज ! भीतरिया दोइ तथा जलघरिया दोइ राखि दीजिए. तब आपने कृपा करिकै जलघरिया दोइ राखि दीजिए. तब आपने कृपा करिकै जलघरिया भीतरिया राखि दिये. सो दोई भीतरिया. सो एक तो सखड़ी करे. एक अनसखड़ी करे. जलघरिया दोइ, एक खासाको जल भरे, एक, सेवकीकौ जल भरे. और राजाकों श्रीठाकुरजीकौ सिंगार आपने करिकै बताय दियो. जो या भांति सेवा करियो. और तो वाकी रीति - भांति भीतरियानने राजाकों सिखाय दीनी. सो राजा श्रीठाकुरजीकौ सेवा - सिंगार सब करे. पाछें राजाने एकसौ आठ रानी सबनसों पूछी, जो तुम कोऊ श्रीगुसांईजीकी सेवक होइंगी? तब सबनने नाहीं करी. जो हम तो सेवक न होइंगी. जो हम और पुरुष पास जाइकै कान न धरेंगी. तब राजा श्रीगुसांईजीके दरसनकों आयो. आयकै दण्डवत् करी. पाछें बिनती कीनी, जो महाराज ! मेरे एकसौ आठ रानी हैं. सा मैंने सबनसों पूछी. परि कोई आपकी सेवक न भई. तब आपने आज्ञा करी, जो राजा ! जो जीव आसुरी होंई ते सरनि नहीं आवे. तातें तुम दैवी जीव हो सो सहज ही में सरनि आए और सेवा करन लागे. ता पाछें राजा श्रीगुसांईजीसों बिदा भए. और आज्ञा मांगी, जो महाराज ! अब आज्ञा होंई तो अपने देस दच्छिनमें जांय. तब आपने आज्ञा दीनी, जो अब तुम अपने देसमें जांईकै श्रीठाकुरजीकी सेवा करो. और राजा ! अब तू एक रानी और ब्याहेगो. सो तेरे सेवामें अनुकूल होइगी.

भावप्रकाश :

काहेतें ? ए लीलाकी जीव है. तेरे उनके पूर्वको सम्बन्ध दृढ है.

तब राजा प्रसन्न होई यथाशक्ति भेंट करि आज्ञा मांगि दण्डवत् करिकै चले. सो कितनेक दिनमें अपने देस आय पहोंचे. तब आयकै महलमें श्रीठाकुरजीकों पधरायकै सेवा करन लागे. एकसौ आठ रानी हती सो तिनके पास राजा कबहू न जांई.

भावप्रकाश :
काहेतें ? जो ये सब भगवद्विमुख हैं. तातें उनके पास जाइवें तें, उनके छिनक सङ्ग तें, बहिमुर्खता होंई. तातें मनसों त्याग किये. सो श्रीआचार्यजी महाप्रभु आज्ञा किये हैं, ''तत्त्यागे दूषणं नास्ति यतः कृष्णबहिर्मुखाः''. यातें कृष्णसों जो बहिर्मुख है उनको त्याग पुष्टिमार्गमें दूषण नाहीं. सो राजाने सब रानीनको या प्रकार त्याग कियो.

तब रानी सब बोहोत उदासमें रहे. जो राजाने हमारो त्याग कर्यो. सो रानी सब सूकि गई. और गहना कपड़ा द्रव्य बोहोत. परि चिन्ताके मारे रानी सब सूकि गई.

सो एक तेलीकी बेटी इनके महलके नीचे गोबर लेत हती. तहां रानी महलमें गोरवमें बेठी देखत हती. सो कैसी रूप - सुन्दर देखी ! सो देखिकै रानीने बुलाई, जो तू हमारे महलमें आऊ. तब वाने कह्यो, जो मोकों महलमें कौन आइवे देइगो ? तब रानीने कही, जो दासीकों पठावे हैं. सो तोकों बुलाय ले जायगी. तू ठाढ़ी रहि. तब रानीने दासीकों पठाई, जो वह गोबर वारी ठाढ़ी है. तोकों तू ले आउ. तब रानी पास वाकों दासी बुलायकै ले आई. तब रानीने पूछी, जो तू कौनकी बेटी है ? तब वाने कह्यो, जो मैं तेलीकी बेटी हूं. तब रानी बोली, जो तेलीकी बेटी ऐसी रूपवन्ती ? ऐसी पुष्ट ? तासों तोकों ऐसों कहा सुख है ? तब तेलीकी बेटी बोली, जो मोकों सुख है. तब तो मैं ऐसी पुष्ट हूं. फेरि तेलीकी बेटीने कह्यो, जो मेरे बापके मैं ही हूं. और कोई सन्तान नहीं है. तातें मोकों खाइवे, पीवे, पहिरवेकों, ओढिवेकों, जे मांगों सो मोकों देत है. तासों मैं बोहोत सुखी हूं. परि तुम राजाकी रानी होईकै ऐसी सूकि रही हो ? सो तुमकों ऐसो कहा दुःख है ? तब रानी बोलीं, जो तू बैठि, तोसों हमारो दुःख सब कहें. तब रानीनने कही, हम एकसौ आठनकों राजा

ब्याहे. परि बेटा - बेटी काहूके न भयो, तासों राजा बोहोत दुःखी भए. सो श्रीजगन्नाथरायजीके दरसन राजाने हमकों कराए. फेरि राजा श्रीगुसांईजीकौ सेवक भयो. तब हम सबनसों कह्यो, जो तुम कोई श्रीगुसांईजीकी सेवक होउगी ? तब हमने नाहीं करी. तासों राजाने हमारो त्याग कियो है. यासों हम सब सूकी हैं. नांतर पहरिवे ओढ़िवेकी तो कचू कमी नाही है. परि कोई रानीके महलमें राजा आवे नाहीं है. तब तेलीकी बेटी बोली, जो तुम एक सौ आठ रानी हो, सो तुमसों एक राजा बस न भयो ? जो मैं ब्याहों तो मानसिंग राजाकों ही ब्याहों, सो राजाकों बस करों. सो इतनो कहिकै वह अपन घर चली आई. सो आयकै अपने माबापसों कही, जो ऐसें - ऐसें रानीनने बुलाई और ऐसें - ऐसें मेरे जुवाब - सवाल भए. और ऐसें मैं रानीनकों कहि आई हों, तासों मैं ब्याहोंगी तो मानसिंघ राजाकों ही ब्याहोंगी. तब याकौ बाप बोल्यो, जो कहां मानसिंघ राजा, कहां तुम तेलीकी बेटी ! यह बात कैसें बनेंगी ? तब तेलीकी बेटीने कह्यो, जो बाबा ! यह बात ऐसी ही है, तासों तू मोसों गहना कपड़ा ल्याय दे. सो गहना कपड़ा पहरोंगी. और मानसिंघ राजाकों बस करोंगी. और मैं ब्याहोंगी. तब तुमको कछू द्रव्यकी कमी नाहीं. तब तेलीने कही, जो बेटी तोकों जो चहिए सो गहना कपड़ा पहरिवो करि. तब या बेटीने कह्यो, सो गहना कपड़ा सब ल्याय दियो. सो तेलीकी बेटी सब गहना कपड़ा पहरिकै एक टोकरा ले कै बनमें ऊपरा बीनवेकों गई. तहां राजा श्रीठाकुरजीकों पोढ़ाय बागमें जात हते. तहां गेलमें ऊपरा बीनत हती. सो राजाकों देखिकै दोउ हाथसों मुझरा कियो. पाछें राजाने सन्मुख ठाढ़ी रही. मन्द मुसकानि हसंति जांय. हाव - भाव कटाक्ष करति जांय. सो राजा घोड़ा ठाढ़ो करिकै देखत ही रह्यो. पाछें राजाने पूछी, जो तुम कौन हो ? तब कही, जो मैं तेलीकी बेटी हूं. तब राजाने इनकों बुलाई, जो तू बागमें तो आउ. तब वह बागमें आई. और असवारी हूं बागमें आई. तब राजाने इनकों एकान्तमें बुलाई. बुलाइकै कही, जो तेरो कहा मनोरथ है ? तब तेलीकी बेटी बोली, जो मेरो यह मनोरथ है, जो मैं ब्याहों तो तुमकों ब्याहों, नांतर योंही रहों. तब राजा बोल्यो, जो आछौ ठीक है. मैं तोहीकों ब्याहूंगो. तब राजा याकों सुखपालमें बैठायकै अपने महलमें ले गयो. तब जोतसीनकों बुलायके ब्याहके मुहूर्त पूछ्यो. और ब्याहकी तैयारी करी. बड़ी धूमधामसों ब्याह कर्यो. ब्याह करिकै निज महल जो राजाकौ हतो तामें राखी. तब राजा वाके महलमें नित्य जाय, रात्रिकों उहांई सोवें. तब वह राजाके पांव दाबे. पंखा करे. सेवा - टहल बोहोत करे. तब राजा याके उपर बोहोत प्रसन्न रहे.

भावप्रकाश :

यामें सेवाको प्रभाव जताए, जो याने सेवा करिकै राजाकों प्रसन्न कियो. सो सेवा ऐसो पदार्थ है.

तब राजासों याने पूछी, जो तुम श्रीगुसांईजीके सेवक हो और श्रीठाकुरजीकी सेवा करो हो. सो मोकों हूं सेवक करावो, तो मैं सेवामें सहायक होऊं. तब राजा प्रसन्न भयो. जो बोहोत आछो. तब राजाने कासिदकी जोड़ी तैयार करि पत्र लिखिकै कासिदकों अड़ेल पठायो. सो पत्रमें यह लिख्यो, जो आपकी कृपाते मैं रानी एक और ब्याहों हूं. सो आप याकों सेवक करो तो सेवामें सहायता होंई. परि आप कृपा करिकै श्रीजगन्नाथरायजी पधारो तो मैं दीवानकों सङ्ग दे के रानीको पठाऊं. यह बिनतीकौ पत्र राजाने लिख्यो. सो आप पत्र बांचिकै वाकौ प्रति उत्तर लिख्यो. जो हम रथयात्राकौ उत्सव श्रीजगन्नाथरायजीकौ आय करेंगे. तुम रानीकों दीवानकों श्रीजगन्नाथरायजी पठाओगे. हम रानीकों सेवक करेंगे. तब कासिद श्रीगुसांईजीकौ पत्र ले कै राजाके पास आयो. तब राजाने पत्र बांच्यो. सो पत्र बांचिकै प्रसन्न भयो. तब दीवानकों बुलाईकै कह्यो, जो श्रीजगन्नाथरायजीकी तैयारी करो. तुम रानीकों ले कै सङ्ग जाऊ. तब दीवानने सब तैयारी करी. तब रानीकों ले कै दीवान श्रीजगन्नाथरायजी आयो. तब श्रीगुसांईजी आप कृपा करिकै श्रीजगन्नाथरायजी पधारे. तब श्रीजगन्नाथरायजीके दरसन रानीकों करवाए और दीवानने किये. तब रानीकों तो डेरामें पठाई. और दीवानने श्रीगुसांईजीके आगें आयके दण्डवत् करी. और बिनती करी, जो महाराज ! मैं रानीकों ले कै आयो हूं. तातें कृपा करो. तब आपने दीवानसों आज्ञा करी, जो रानीकों काल्हि तुम ब्रत करावो. परसों नाम - ब्रह्मसम्बन्ध करावेंगे. तब दीवानने बिनती करी, जो महाराज ! मेरे उपर कृपा करो. तब आपने आज्ञा करी, जो ठीक है. तुम हू ब्रत करो. तुमकों नाम ब्रह्मसम्बन्ध करावेंगे. तब दीवानने बिनती करी, जो महाराज ! श्रीजगन्नाथरायजीकौ प्रसाद कोई ल्यावे तो वाकों लेवेकी आज्ञा है ? तब आपने आज्ञा करी, जो कनिका महाप्रसाद लियो करो. पेट भरिके मति लेऊ. तब दीवान डेरामें गयो. जायकै सबनसों कह्यो, जो काल्हि ब्रत करियो. आपने आज्ञा करी है, सो सेवक करेंगे. तब रानी तथा दीवानने ब्रत कियो. ता पाछें दूसरे दिन दोउनकों आपने कृपा करिकै नाम ब्रह्मसम्बन्ध करवायो. पाछें रानीने श्रीगुसांईजीके आगे नाम ब्रह्मसम्बन्धकी भेट धरी. दीवानने हू भेट धरी. पाछें आज्ञा मांगी. जो महाराज. रानीकों सेवामें न्हवावे ? तब आपने आज्ञा दीनी, जो अब सुखेन सेवामें न्हवावो. तब दीवानने बिनती करी, जो महाराज ! एक पत्र राजाकों लिखि दीजिए. जो रानीकों, मोकों, सेवामें न्हवावें. तब श्रीगुसांईजी आप एक पत्र लिखिकै दीवानकों दियो. जो जोऊ, तुम दोउनकों राजा सेवामें न्हवावेगो. तब कितनोक द्रव्य रानीने भेट

कियो. कितनोक दीवानने भेट कियो. पाछें बिदा भए. तब श्रीगुसांईजीने उपरेना उढ़ाए. पाछें श्रीगुसांईजीसों आज्ञा मांगिकै चले. सो अपने देस दक्षिनमें आए. आइकै रानी अपने महलमें गई. दीवान, राजाके पास गयो. तब राजाने सब समाचार पूछे. तब दीवानने श्रीगुसांईजी तथा श्रीजगन्नाथरायजीके सब समाचार कहे. तब दीवानने श्रीगुसांईजीके श्रीहस्तकौ पत्र राजाकों दियो. तब राजा बांचिकै बोहोत प्रसन्न भयो. प्रसन्न होंइकै राजाने दीवानसों कही, जो तेनें यह बोहोत आछो कियो. जो श्रीगुसांईजीकी आज्ञा ले आए. हमकों सेवामें सहायता भई. अब तुम सुखेन सेवामें न्हाओ. तब वैष्णव मण्डली सब करिकै, प्रसाद सब बांटिकै, कण्ठी चरनामृत बांटिकै वैष्णवनकी आज्ञा ले कै, रानी तथा दीवानकों सेवामें न्हवाए. तब राजा तो सेवा सिंगार सब करे. और दीवान राजाके आगें मन्दिरमें परचारगी करें. और रानीने रात्रिकों राजासों पूछ्यो, जो हमकों कौनसी सेवा सोंपो हो ? तब राजाने कही, जो दूधघरकी सेवा तुम करो. सो तुम्हारे हाथको श्रीठाकुरजी सब अरोगेंगे. दोई भीतरिया है सो सखड़ी, अनसखड़ी करेंगे. और राजा जब सेवक भयो तब बीस पचीस इनकी जातिकै श्रीगुसांईजीके सेवक राजाने करवाए हते. सो सब सेवामें सहायता भई. कोई पानघर करें, कोई फूलघर करें, कोई भण्डार करें. कोई बाहिरसों सामग्री ल्यावे. सो ऐसें सब सेवामें तत्पर रहे. राजाके यहां. तब श्रीठाकुरजीके अरोगे पाछें सब महाप्रसाद लेई. वैष्णव आवे, सो कोई सखड़ी लेई, कोई अनसखड़ी लेई. कोई दूधघरकी सामग्री लेई. तिन सबनकौ समाधान राजा करे. ता पाछें दीवान और राजा महाप्रसाद लेई. पाछें दीवान और राजा राजकौ काम करते. पाछें राजा उठिकै उत्थापनके समै न्हाय. तब दीवान हू न्हाय. तब दोउ मिलिकै उत्थापन तें सेन पर्यन्त सेवामें पहोंचिकै श्रीठाकुरजीकों पोढ़ाईकै बाहिर आवे. पाछें महाप्रसाद ले कै राजा और दीवान दोउ राजकाज करे. फेरि रात्रिकों राजा रानीके पास जांय. सो राजा कहे, जो दूधघरकी सामग्री तुम बोहोत सुन्दर करत हों. आछी सेवा करो हो. सो या वैष्णव रानीके पास राजा नित्य जांई, सोवे, बैठे. सो या रानीने राजाकों प्रसन्न किये. सो सेवा करिकै प्रसन्न किए.

सो एकसौ आठ रानी हती, सो या वैष्णव रानी तें बोहोत ईर्षा करती. जो हम राजाकी बेटी, हम राजाकी रानी, सो हमतें राजा बस न भयो. और या तेलीकी बेटीने बस करि लियो. सो तेलीकी बेटी मिले तो दोई बात तो करें. सो कोई एक दिन तेलीकी बेटीकौ महल हो सो खूट्यो हो. सो दोई चारि रानी महलमें गई. तब तेलीकी बेटीसों कही, जो तोकों स्याबास है, जो तैनें राजाकों बस करि लियो. तब तेलीकी बेटी बोली, जो मैं तुमसों कह्यो हो सोई भयो. तब उन रानीनने प्रसन्न होइके कह्यो, जो तू बड़ी बहनि हैं हम छोटी हैं.

तासों कछू राजासों हमारी हू अरज करि, जो राजाने हमारो त्याग कियो है. तातें अब राजा कहे सो हम करें. तब वाने कही, जो हम कहेंगे. तब उन रानीनने यासों कही, जो हम एकसौ आठ हैं तिनमें तू बड़ी हैं. तातें कोई बेर हमारे पास आयो करि. तब याने कही, जो जब मेरो अवकास होइगो तब मैं तुम्हारे पास आउंगी. तब उनने कही, जो हम एकसौ आठ सब तुम्हारे पास आवें. जब तुम्हारो अवकास होंई तब आवें. तब याने कही, जो जब मेरो अवकाश होइगो तब में बुलाइ लेउंगी, पाछें. तब रानीने कही, जो अब तुम जाओ, मैं सेवामें न्हाउंगी. तब वे गई. तब ये सेवामें न्हाई. पाछें दूधघरकी सामग्री सब सिद्ध करी. केसरी सामग्री सब सोनाके डबरामें साजे. और सुफेद सामग्री रूपाके डबरामें साजें. सो पात्रको, सामग्रीको, एक ही रंग देखिवेमें आवें. या प्रकार तेलीकी बेटीने सेवा करिकै राजाकों बस करि लियो. जब रात्रिकों राजा रानीके पास जाइ तब बोहोत बड़ाई करें. रानी तें कहे, जो मैं एकसौ आठनके बस न भयो. परि तेरे बस भयो. सो तू सेवा बोहोत आछी करत है. या भांति बोहोत बड़ाई करे. और राजा नौतन सामग्री नौतन वस्त्र और द्रव्यकी हुंडी वर्षके वर्ष श्रीगुसांईजीकों पठावते. श्रीठाकुरजीकी सेवा हू भली भांतिसों करते. सो श्रीठाकुरजी सानुभावता जतावन लागे. और चहिए सो मांगि लेते. सो वे राजा मानसिंघ श्रीगुसांईजीके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए ?

भावप्रकाश :

या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो स्त्री, पुत्र, माता - पिता जो कोऊ अवैष्णव होंई ताकौ सङ्ग सर्वथा न करें. तिन पर प्रीति हू न राखें. और वैष्णवकों सेवा ही बड़ो पदार्थ हैं. तातें जो कोऊ भगवत्सेवामें सहाय होंइ ता पर प्रीति राखे. और सेवा बिनु छिन एक रहे नाहीं. यह सिद्धान्त जताए. वार्ता ।।१७७।।

१७८-कबूतर - कबूतरनी

अब श्रीगुसांईजीके सेवक कबूतर - कबूतरनी हते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :

ये दोउ सात्विक भक्त हैं. लीलामें हू ये कबूतर - कबूतरनी हैं. ये श्रीचन्द्रावलीजीकों बहोत प्रिय हैं. काहेंते ? जो ये श्रीठाकुरजी तथा श्रीस्वामिनीजी दोउनकों गुप्त प्रीतिके समाचार पहुंचावत हैं. भावके पोषक हैं. तातें श्रीचन्द्रावलीजी इन दोउनकों बोहोत लाड लडावत हैं. सो दोउनके नाम धरे हैं. सो कबूतरकौ नाम 'प्रीतिनिवाहक' है, और कबूतरनीको नाम 'प्रीतमगमनी' है. वे दोउ 'सुनन्दा' तें प्रगटे हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो एक समै श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल तें गुजरातिकों पधारत हुते. सो मही नदी बीचमें आई. सो भरपूरि आई. सो राति दिना उतराइ न देय. तब मही नदीके काण्ठे ही डेरा किये. तब दूसरे दिन सवेरे रसोई भई और भोग आयो. तब श्रीगुसांईजी आपु भोग धरिकै बिराजे. सन्ध्या जप - पाठ करत हुते. तब भीतरियाने आयकै कही, जो महाराज ! भोग सरावो. समय भयो है. तब आपने आज्ञा करी, जो तुम ही सरावो. तब भीतरियाने कही, जो महाराज ! यह कहा ? हम कैसें सरावेंगे ? तब आपने आज्ञा करी, जो आज हमारे भोजन नाहीं करनो है. तब भीतरिया पूछे ऐसो क्यों ? तब आपने आज्ञा करी, जो आज कोई जीव सरनि नाहीं आयो है.

भावप्रकाश :

यह कहि यह जताये, जो हमारो प्रागट्य दैवी जीवनके उद्धारार्थ है. तातें एक हूं दैवी जीव सरनि आवे तो हम भोजन करे. नांतर - वह दिन वृथा जांय. तातें भोजनकी नाहीं किये.

तब अधिकारी भण्डारी सब बैठे हते. तिनने बिनती करी, महाराज ! यहां कौन है ? कोई गाम हू नाहीं. तासों महाराज ! यहां कौन है, सो सरनि आवे ? तब आपने आज्ञा करी, जो इहां कोई पशु पंछी हू नाहीं है कहा ? तब खवासने कही, जो महाराज ! सो तो हाजिर है. तब श्रीगुसांईजीने कही वाकों ल्यावो. तब खवासने भण्डारी पास उठिकै चुगो मंगायो. सो कबूतर - कबूतरनीकों डार्यो. सो चुगो चुगते - चुगते आपके आगे आय गए. सो उहां चुगाकों लगि गये. तब आपने कृपा करिकै दोउ कबूतर - कबूतरनीकों नाम सुनायो. तब दोउनकों अपने स्वरूपकौ ज्ञान भयो. सब बातें जानिवे लगे. ता पाछें आप तो उहां तें उठिकै भीतर पधारे. भोग सरायो. पाछें भोजन

किये. तब भोजन करिकै आप बाहिर पधारे. और कही, जो देखो. नदी उतरी है के नाहीं ? तब मनुष्य देखिवेकों गए. पाछें कही, जो महाराज ! उतरे है. सो अब सांझ ताई उतरि जाइगी. तब आपने कही, जो तैयारी राखो. सांझ तांई पार उतरि रहेंगे. तब सब तैयारी करी. तब सांझकों नदी उतरी. तब पार उतरे. तब कोस दोई कोस पर एक गाम हतो. तहां डेरा किए. रात्रिकों बिराजें. पाछें सवारे उहां तें कूच भयो. सो राजनगर पधारे. सो भाईला कोठारीके घर बिराजे. ता पाछें आप तो श्रीद्वाराकाजी होंईकै श्रीगोकुल पधारे. तब वे कबूतर - कबूतरनी उड़िकै कोई गाममें वैष्णव मण्डली होत हती, तहां गए.

भावप्रकाश :
काहेतें ? जो उनने जान्यो, जो हम लीलाके जीव हैं. तातें भगवल्लीला - किर्तन, श्रवन किये बिना इतने दिन वृथा गए. परि अब तो भगवद् गुणानुवाद सुनिकै कछु सुख लेई. तातें वैष्णवनकी मण्डलीमें गए.

तहां जाय वैष्णव मण्डलीमें भगवद्वार्ता होत हती. तहां उपर बैठिकै सुनी. भगवद् वार्ता - किर्तन किये सो सब सुने. पाछें वैष्णवनने प्रसाद बांट्यो. तब कबूतर - कबूतरनीकों देखिकै वैष्णवनने कही, जो ये उड़े नहीं है. भगवद् वार्ता - कीर्तन सुने हैं. तब वैष्णवनने इनके आगें प्रसाद धर्यो. सो चुगि गए. पाछें इनके उपर हाथ फिरायो. सो उड़े नाहीं. पाछें सब वैष्णव जय श्रीकृष्ण करिकै चले. तब कबूतर - कबूतरनी ने माथो नंवायो. उड़िकै बाग - बगीचामें गए. तहां रूख हतो. सो तामें घोंसला करि रहे. सो उहां कबूतर - कबूतरनी सों कहे, जो आज आपुनने यह वार्ता सुनी और कीर्तन सुने. सो ऐसें आपुसमें वार्ता करे, कहे और सुने. फेरि रात्रीकों तहां रहिकै सवेरे उड़िकै जाये. सो चुगो करि आवे. फेरि आयकै मालामें बैठे. फेरि रात्रीकों वैष्णव मण्डलीमें आवे. तब उपर बैठिके भगवद्वार्ता कीर्तन सुनते. तब वैष्णव उनके उपर हाथ फेरते. पुचकारते. परि उड़ते नाहीं. ता पाछें वैष्णव सब अपने - अपने घर जाते. तब कबूतर - कबूतरनी अपने मालामें जाते.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

अब या गामकौ एक राजा हतो सो वह कोढ़ी हतो. सो वाने बोहोत औषधि करी. बोहोत उपाय कियो. वैद्यनसों पूछ्यो. परि कोढ़ न गयो. तब एक वैद्य कोई दक्षिनकौ आय निकस्यो. सो वासों राजाने बुलायकै पूछी, जो हमारो कोढ़ नाहीं मिटे है. सो कहा उपाय करें ? तब वा वैद्यने कही, जो राजा ! यह सहजकौ उपाय है. यामें कहा ? तब राजाने कही, जो उपाय करो तो कोढ़ मिटे. तब वैद्यने कही, जो एक कबूतर - कबूतरनीकौ जोड़ा पकरिकै पिंजरामें धरो. तब वाकों मारिकै औषधि करेंगे. तब राजाने कही, जो आछौ, पकरि मगावेंगे. तब वैद्यने कही, जो काल्हि मैं आउंगो, तब औषधि बनावाउंगो. तब राजाने, जो आछौ, काल्हि तुम आइयो. तब राजाने मनुष्यनसों कही, जो कबूतर - कबूतरनीकौ जोड़ा जहां मिले तहां तें पकरि ल्यावो. तब राजाके मनुष्य गए. परि कोई पकरिवेमें आयो नाहीं. तब एक वैष्णव मण्डलीमें आवतो. और राजाके पास जातो आवतो. सो वाने कही, जो राजा ! कबूतर - कबूतरनीकौ जोड़ा मंगायके कहा करोगे ? तब राजाने कही, जो हम तो देखिवेकों मंगावे हैं. तब वैष्णवने कही, जो हमारे वैष्णव मण्डलीमें आवे हैं. सो काल्हि मैं लाऊंगो. तब तुम देखि लीजो. तब रात्रिको वह वैष्णव मण्डलीमें गयो. और वे कबूतर - कबूतरनी हू गए. सो भगवद्वार्ता - कीर्तन सुनिकै जब उठे तब वा वैष्णवने कबूतर - कबूतरनी पकरि लिये. तब सब वैष्णवनने कही, जो तू क्यों पकरत है ? छोरि देउ. तब कही, जो राजाने देखिवेकों मंगाए हैं. सो दिखायकै छोरि देउंगो. तब वह कबूतर - कबूतरनीकों राजाके पास ले गयो. तब राजाने देखें. तब कह्यो, जो पिंजरामें राखो. पाछें सन्ध्याकों वार्ताकौ समय भयो तब कबूतरनी कबूतरसों कह्यो, जो आपुनकों पिंजरामें क्यों धरे हैं ? तब कबूतरने कह्यो, जो अपुनो राजा कोढ़ी है. सो वैद्यने कही है, जो कबूतर - कबूतरनीकों मारिकै औषधि करेंगे. तब कोढ़ जाइगो. सो अपनो सरीर आज दूसरेके काम आवेगो.

भावप्रकाश :
यह कहि यह जताए, जो वैष्णव धर्म ऐसो है. तामें यह जाने, जो काहूके हित ये सरीर आवें तो जन्म सुफल होंई. नांतर जन्म लेनो वृथा है. परोपकार जैसो और कोऊ धर्म नाहीं. सो यह ज्ञान श्रीगुसांईजीकी कृपा तें या कबूतर - कबूतरनीकों भयो है. और श्रीगुसांईजीकी कृपा तें इनकों भविष्यको ज्ञान हू हैं. तातें धीरज राखि या प्रकार कहे.

पाछें कबूतर बोल्यो, जो अपनी बीट राजा लगावे तो कोढ़ मिटे. सो राजा बात सुनी. पंछीनकी बोली समुझत हतो. सो वाने तब पिंजरामें ते बीटि ले कै लगाई सरीरकों. जहां - जहां कोढ़ हतो तहां - तहां लगाई. तब वह कोढ़ मिटि गयो. तब राजाने वाही समै पिंजरा खोलि दिया. सो उड़िके वे दोऊ वैष्णव मण्डलीमें जाइ बैठे. फेरि भगवद्वार्ता सुनी. तब कबूतर - कबूतरनीकों देखिके वैष्णव प्रसन्न भए. पाछें आपुसमें वैष्णव कहन लागे, जो उपद्रव तो सुन्यो हो. इनके मारिवेकौ उपाय हो. परि ये श्रीगुसांईजीकी सरनि हैं, तासों काहूकी सामर्थ्य है ? और इनकी बीटि लगाए तें कोढ़ मिटि गयो. ऐसो श्रीगुसांईजीकौ प्रताप है. सो कबूतर - कबूतरनी परम सुखसों रहते, श्रीगुसांईजीको अहर्निश ध्यान करते.

भावप्रकाश :
तातें वल्लभाख्यानमें गोपालदासजी गाये हैं

''जे जीव जाति होइ कोई ए, तेने ततक्षण सर्व सुख होई रे ।''

सो जीवजन्तु जो कोई श्रीगुसांईजीकी सरनि आवे सो या प्रकार अलौकिक सुखकों प्राप्त होत हैं.

सो वे कबूतर - कबूतरनी श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं. सो कहां तांई कहिए ? वार्ता ।।१७८।।

१७९-एक सेठ, राजनगरकौ, जो कीड़ा भयो

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक सेठ राजनगरकौ बासी, जो कीड़ा भयो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त है. लीलामें ये 'जलचर' है, श्रीयमुनाजीकौ. सो एक समे ठाकुर श्रीस्वामिनीजी प्रभृति ब्रजभक्तनके सङ्ग जल - विहार करत हे, तहां यह आयो. सो इनकों देखि श्रीस्वामिनीजी बोहोत डरपे. ता अपराध तें यह भूतल पर आयो. ये 'सुनन्दा' तें प्रगट्यो है, तातें उनके भावरूप है.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै श्रीगुसांईजी आप द्वारिकाजी पधारे हते. सो द्वारिकाजीसों राजनगर पधारे. तब भाईला कोठारीके घर अपनी बैठकमें बिराजे. तब तहां सब वैष्णव दरसनकों आए. तिनमें एक सेठ हू आयो. तब श्रीगुसांईजी आप वा सेठकों देखिकै कहे, जो सेठजी आए ? तब सेठने बिनती करी, जो महाराज ! इन वैष्णवनकी कृपातें आपके दरसन आज पाए. तातें अब मोकों सेवक कीजिए. तब श्रीगुसांईजी वाकों नाम सुनाए. तब वह वैष्णव भयो. तब भेट धरि दण्डवत् करिकै बैठ्यो. तब आपने आज्ञा करी, जो सेठजी ! अब तुम श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करो. और श्रीगोकुल चलो. ब्रजयात्रा करो. जमुनाजल पान करो. तब सेठने कही, जो महाराज ! आप कृपा करोगे तो करेंगे. तब श्रीगुसांईजी आपने कही, जो हां सेठजी ! हम तो तुम्हारे उपर कृपा करेंगे. और हमारे साथ ही चलो. हम तुमकों दरसन करावेंगे. तब सेठजी बोले, जो महाराज ! हम गृहस्थ हैं. सो अब ही तो हमसौं कहां चल्यो जाय ? परि कोई समै आपकी कृपासों आवेंगे. तब श्रीगुसांईजी आप तो श्रीगोकुल पधारे. सो आयकै श्रीनवनीतप्रियजीकौ सेवा सिंगार किये. पाछें अपनी बैठकमें गादी - तकियानके उपर बिराजे. तब सब वैष्णव दरसनकों आए. तब एक विणक्त वैष्णवसों आपने आज्ञा करी, जो राजनगरमें एक सेठ है. तासों मैनें कही, जो तुम श्रीगोकुल चलो. तब वाने कही, जो अबही तो मोसो न चल्यो जाइगो. पीछे कोई समय आउंगो. तासों वा सेठकों श्रीगोकुल ल्यावो. तब वा विरक्तने कही, जो महाराज ! बोहोत आछौ. आपकी कृपा तें ल्याउंगो. तब कोईक दिनमें यह विरक्त वैष्णव आपसो आज्ञा मांगिकै राजनगर आयो. सो भाईला कोठारीके घर उतर्यो. तब भाईला कोठारीसों पूछ्यो, जो वह कौनसो सेठ है ? जासों आपने आज्ञा करी ही श्रीगोकुल जायवेकी. तब भाईला कोठारीने एक वैष्णवकों वा विरक्तके सङ्ग पठायो. सो वाने वा सेठकौ घर बताय दियो. तब वा विरक्तने घरमें जाइकै वा सेठकों श्रीकृष्ण - स्मरन कियो. पाछें सेठसों कह्यो, जो सेठजी ! तुमकों श्रीगुसांईजीने

बुलाए हैं. तातें श्रीगोकुल चलो. तुमकों मैं लेवेकों आयो हूं. तब सेठने कही, जो हां वैष्णव ! श्रीगोकुल तो चलेंगे. तब विरक्तने कही, जो अब चलो. तब सेठने कही, हमारे बेटा आवें तो चले. तब विरक्त वैष्णव यह सुनिकै द्वारिकाजी दरसनकों गयो. तब फिरिकै यात्रा करिकै बरस डेढ़ बरसमें आयो. तब वा सेठकों बेटा भयो. तब वैष्णवने सेठसों यह कही, जो अब तुम्हारे बेटा भयो. तातें अब तो चलो. तब कही जो हां ! श्रीगोकुल चलेंगे. परि बेटा बड़ो होंइ तो याकों कारबार दे कै चलें. तब विरक्त वैष्णव पाछो श्रीगोकुल आयो. सो श्रीगुसांईजीके आगें दण्डवत् करी और बिनती करी, जो महाराज ! में वा सेठसों कही, जो तुमकों श्रीगोकुल श्रीगुसांईजीने बुलाए हैं. तब सेठने कही, जो एक बेटा होय तब चलें. तब मैं द्वारिकाजी गयो. सो बरस डेढ़ बरसमें यात्रा करिकै आयो. तब मैंने कही, जो चलो. तब कही, जो बेटा बड़ो होई तो कारबार सोंपिकै चले. तब मैं श्रीगोकुल आयो. तब आपने आज्ञा करी, जो आयो तो सही, परि फेरि जाइगो ? तब विरक्तने कही, जो हां महाराज ! में जाउंगो. तब यह विरक्त वैष्णव फेरि कोईक दिनमें श्रीगोकुल तें चल्यो. सो राजनगर आयो. तब सेठसों मिल्यो. पाछें सेठसों कह्यो, जो सेठजी ! अब तो श्रीगोकुल चलो. तब कही, जो हां ! श्रीगोकुल चलेंगे. अब तो बेटा बड़ो भयो कारबार सोंप्यो है. परि एक नातीको सुख होय तो श्रीगोकुल चले. तब विरक्त वैष्णव फेरि श्रीद्वारिकाजी गयो. सो बरस दिन उहां रह्यो पाछें आयो. तब सेठके नाती भयो. तब विरक्त वैष्णवने कही, जो सेठजी ! अब तो चलो. अब तुम्हारे नाती भयो. तब वा सेठने कही, जो हां वैष्णवजी ! श्रीगोकुल चलेंगे परि नाती बड़ो होइ तो खिलायवेको सुख देखिकै चले. तब तो वैष्णव उहांई रह्यो. भाईला कोठारीके घर. तब कोईक दिनमें सेठजीकी तो देह छूटी. तब वैष्णवने विचारी, जो देह तो वाकि छूटि गई. परि अब ये कौनकौ अवतार भयो. तब यह सेठ सर्पकौ अवतार भयो. ऐसें या विरक्त वैष्णवने जान्यो. तब वा वैष्णवने वाके पास जाईकै छांटिकै सर्पकों बुलायो. और कह्यो जो सेठजी अब तो तुम मरिकै सर्प भए. तातें अब तो श्रीगोकुल चलो. तब सेठने कही, जो अब ही तो द्रव्यकी रक्षा करत हैं. पाछें श्रीगोकुल चलेंगे. तब कोईक दिनमें सर्पकी देह छूटि गई. तब कुत्ताकौ अवतार भयो. तब या वैष्णवने कुत्ताकों बुलायो और कह्यो, जो सेठजी अब तो श्रीगोकुल चलो. अब तुम कुत्ताकौ अवतार भए. तब सेठने कही, जो हां, श्रीगोकुल तो चलेंगे परि चोरकौ डर बोहत है. तातें हवेलीकी चौकी करत हूं. तब कोईक दिनमें कुत्ताकी देह हू छूटि गई. तब पनारेकौ कीड़ा भयो. तब फेरी वह विरक्त वैष्णव आयो. सो वाने कही, जो कुत्ताकी तो देह छूटि गई अब कौनकौ अवतार भयो ? तब देखें तो पनारेकौ कीड़ा भयो. तब वाने आयके पनारेके कीड़ाकों बुलायो. तब कही, जो सेठजी ! अब तो तुम पनारेके कीड़ा भए. तातें अब तो

श्रीगोकुल चलो. तब कही, जो अब ही तो श्रीगोकुल नहीं चलेंगे. जो अब तो सबनकी जूंठिनि लेत हों. तातें प्रसन्न हों. तब वैष्णव एक डाबी ल्याइकै जल भरिकै पनारेमें सों वह कीड़ामें धर्यो. पाछें न्हायकै डाबी ले कै श्रीगोकुलकों चल्यो. तब कितनेक दिनमें श्रीगोकुल आयो. तब श्रीगुसांईजीके पास गयो. जांयकै वह डाबी दिखाई, जो महाराज ! मैं सेठजीकों श्रीगोकुल ल्यायो हूं. तब आपने सब समाचार पूछे. जो कैसें - कैसें भयो ? तब वा वैष्णवने आपके आगें बिनती कीनी, जो महाराज ! इनके नाती भयो. तब नातीके खिलायवेकौ सुख ले कै, तब याकी देह छूटी. सो सर्प भयो. सो द्रव्यकी रक्षा करी. तब मैं कह्यो, जो सेठजी ! श्रीगोकुल चलो. तब कही, जो श्रीगोकुल तो चलेंगे परि अब तो मैं या द्रव्यकी रक्षा करत हूं. फेरि सर्पकी योनी छूटि गई. तब कुत्ताकौ अवतार भयो. तब फेरी मैनें कही, जो सेठजी ! अब तो श्रीगोकुल चलो. तब कही, जो श्रीगोकुल तो चलेंगे परि चोरकौ डर बोहोत है. तातें घरकी रखवारी करत हों. पाछें ये कीड़ा भयो. सो अब मैं इनकों आपकी पास ल्यायो हूं. तब श्रीगुसांईजीने आज्ञा करी, जो अब याकों श्रीयमुनाजीमें डारि देउ. तब वह विरक्त जाय श्रीयमुनाजीमें डारि न्हायकै चल्यौ आयो. तब वा सेठकी गति भई.

भावप्रकाश :

या वार्तामें बड़ो सन्देह है, जो श्रीगुसांईजी या सेठकों कहे, जो (तुम) श्रीगोकुल चलो. तऊ यह सेठ न गयो. पाछें वा विरक्तने कह्यो, जो सेठजी ! गोकुल चलो. तऊ वाकी बुद्धि फिरी नाहीं. गृहमें आसक्त रह्यो. सो या विरक्तमें हू अलौकिक सामर्थ्य ही. यह चाहतो तो सेठकी बुद्धि नेकमें फिरि जाती. तब इतनो श्रम क्यों कियो ? तहां कहत हैं, जो या सेठके मिष करि जीवकौ स्वरूप जताए. जो जीव ऐसो है. वाकों आप तें लौकिक आसक्ति सर्वथा छूटत नाहीं. परि श्रीगुसांईजीको सङ्कल्प - बानी मिथ्या कैसे होंई ? तातें आपने वैष्णवद्वारा या प्रकार वाकों श्रीगोकुल बुलवायो. सो श्रीगुसांईजी आपु अपने जीवकों कब हू छोरत नाहीं. कैसो हू संसारमें आसक्त होंई, तोऊ आप वाकी सुधि करि या प्रकार उद्धार करत हैं. और या जीवकों श्रीयमुनाजीमें डारिवेकी आज्ञा करी सो यातें, जो ये लीलामें हू श्रीयमुनाजीको जीव है. तातें श्रीयमुनाजी द्वारा लीलामें वाको सम्बन्ध दृढ होइगो.

सो वह सेठ श्रीगुसांईजीकौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१७९।।

१८०-एक पुरुष - दोई स्त्री, क्षत्री वैष्णव, पूर्वके

अब श्रीगुसांईजीके सेवक एक पुरुष दोई स्त्री, क्षत्री वैष्णव, पूर्वके, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें पुरुषकौ नाम 'रङ्गदेवी' है, और दोउ स्त्रीनकौ नाम 'गूढ़ा', 'निगूढ़ा' हैं. ये तीनों 'सुनन्दा' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

सो ये तीन्यों पूर्वमें द्रव्यमान, क्षत्रीनके प्रगटे. सो वा पुरुषको इन दोउन तें ब्याह भयो. पाछें माता - पिता मरे. तब ये तीन्यों यात्राकों चले. सो श्रीगोकुल आए. तहां श्रीगुसांईजीके सेवक भए. पाछें श्रीगुसांईजीसों बिनती करि श्रीठाकुरजी पधराय अपने घर आए. सो तीनों प्रीतिपूर्वक भगवत्सेवा करते. वैष्णवकों आग्रहपूर्वक नित्यनेमसों प्रसाद लिवावते. या प्रकार रहते.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वे श्रीठाकुरजीकी सेवा बोहोत प्रीति स्नेहसों करते. सो जो कोई वैष्णव जहां आवे तहां तें ढूंढ़िकै ल्यावते. पाछें बोहोत मनुहार करिकै महाप्रसाद लिवावते. सो एक दिना वैष्णवकों बुलाइवेकों गए. तब एक वैष्णव बावड़ीपै सोयो हतो. सो इन गुदड़ी उठायकै देखी. तब कण्ठी देखी. तब जान्यो, जो वैष्णव है. तब वा वैष्णव तें कही, जो वैष्णव ! उठो. तब वह वैष्णव तो बोले नाहीं. तब हाथ पकरिकै जोरावरीसों उठायो. तब वह वैष्णव तो गारी देत जांय. तोउ जोरावरी घर ल्याये. पाछें लोटा भरि दीनो. और कह्यो, जो खरचू जाओ. तब वह गयो. पाछें आयो सो उनके हाथ धुवाए. दांतिन करवायो. पाछें न्हवाए. फेरि तिलक छापाकौ साज आगें धर्यो. और कह्यो, जो वैष्णवजी ! तिलक करो, जप करो. पाछें या वैष्णवने जायकै दोऊ स्त्रीनसों कही, जो ये वैष्णव लीलाके हैं, मैं ल्याया हूं. तातें ये कहे सो हाथ जोरि रहियो, टहल करियो.

भावप्रकाश :
यामें यह जतायो, जो कदाचित् या वैष्णवकी उपरकी क्रिया तें स्त्रीनकों अभाव आवे तो उनको बिगार होई, वैष्णवको अपराध होंई. तातें समुझाईकै कह्यो. और यह वैष्णव लीलामें श्रीयमुनाजीकी सखी हैं. 'प्रियतमा' इनकौ नाम है. सो ये स्त्री - पुरुष तीनों प्रियतमाकी सखी हैं. सो बात यह पुरुष जानत है. तातें इनके स्वरूपको ज्ञान करायो, जो इनके द्वारा अपनो कार्य सिद्ध होयगो. तातें तुम दोउ इनकी टहलमें तत्पर रहियो.

पाछें वे न्हाए. सो न्हायकै भोग सराए. भोग सरायकै वैष्णवकों बुलाईकै दरसन करवाए. पाछें आर्ति करि अनोसर करि बाहिर आए. तब वैष्णवसों कही, जो वैष्णवजी ! महाप्रसाद लेऊ. तब वह वैष्णव बोल्यो, जो हम तो सर्वथा नाहीं लेइंगे. तब वाने कही, जो तुमकों कहा चहिए ? सो मांगि लेउ. तब वा वैष्णवने कही, जो मोकों तेरी स्त्री चहिए. तब कही, जो स्त्री हाजिर है. तब स्त्री हाथ जोरिकै आइ ठाढ़ी भई. तब कही, जो मोकों तेरी दूसरी स्त्री चहिए. तब दूसरी स्त्री हाथ जोरिकै आय ठाढ़ी भई. तब वा वैष्णवने कही, जो तुम अपने पुरुषकों छोरिकै हमारे विरक्तके सङ्ग आयकै कहा करोगी ? तब वे दोउ स्त्री बोली, जो तुम सेवा टहल बतावोगे सो करेंगी. तुम वैष्णव हो. परि हमारे घर महाप्रसाद लेऊ. तब वा वैष्णवने कही, जो तुम्हारो द्रव्य हमकों देउ. और घर देउ. तब वह वैष्णव बोल्यो, जो यह द्रव्य, घर स्त्री, सब तुमकों दियो. परि प्रसाद लेऊ. तब वह वैष्णव बोल्यो, जो आछौ. तुम घरमेसों निकसि जाऊ. तब प्रसाद लेई. तब यानें कही, अब ही झांपीमें श्रीठाकुरजीकों पधरायकै जात हैं. तुम प्रसाद लेऊ. तब वह वैष्णव बोल्यो, जो तुम श्रीठाकुरजीको पधरायके जाओगे तब मैं प्रसाद लेउंगो. तब यह वैष्णव न्हायकै मन्दिरमें गयो, श्रीठाकुरजीकों पधरायवेकों. तब श्रीठाकुरजी बोले, जो महाप्रसाद लेइ तो लेई, नांतर भले भूखौ रहे. तू मोकों पधरायकै कहां जात है ? तब इनने कही, जो महाराज ! महाप्रसाद तो वैष्णवकों अवस्य करिकै लिवावनो. वैष्णव घरतें भूखौ कैसें जाई ? ये वैष्णव कहेगो सो मैं करूंगो. परि महाप्रसाद तो लिवाउंगो.

भावप्रकाश :
यह कहि यह जतायो, जो वैष्णव घर ते भूखौ जाय सो सेवककौ धर्म नाहीं. और भगवद्धर्मकी आगे स्त्री, द्रव्यादि तुच्छ पदार्थ हैं सोऊ कहे.

तब श्रीठाकुरजी बोहोत प्रसन्न होंईकै बोले, जो ऐसी तेरी दृढ़ता वैष्णव उपर है, तातें मैं तो पर प्रसन्न भयो, तू मांगि. सो मैं देउंगो. तब कही, जो महाराज ! मैं यह मांगत हूं, जो वैष्णव मेरे घर तें भूखौ न जाय. और आप जैसे प्रसन्न भए वैसे वैष्णव मेरे उपर सदा प्रसन्न रहे.

भावप्रकाश :
यामें भगवदीय वैष्णवकौ उत्कर्ष कहे, जो भगवदीय वैष्णव सब तें परे हैं. काहे तें ? जो उनके हृदयमें ठाकुर आप रहत हैं. तातें वे सर्वोपरि हैं. सो वे प्रसन्न होई तब ठाकुर हू आपतें प्रसन्न होई, यह जताए.

पाछें वा वैष्णवने महाप्रसाद प्रसन्न होइकै लियो. और बोहोत प्रसन्न होइकै आशीर्वाद दियो, जो याही भांति भगवद्सेवा, गुरुसेवा, वैष्णवसेवा सदा सर्वदा तुम करत रहियो. और मैं तो इतनी परीक्षा देखी. परि धन्य है तुम्हारी दृढ़ता. पाछें वा वैष्णवने कही, जो अब हम जाइंगे. तब या वैष्णवने कही, जो आज तो हम सर्वथा न जाइवे देइंगे. पांच - सात दिन राखूंगो. ता पाछें बिदा करूंगो. तब वैष्णव रह्यो. पाछें दोई घड़ी आराम कर्यो. ता पाछें उठिकै उत्थापन कियो. स्त्रीने ताती सामग्री करी. सेनभोग धर्यो. पाछें भोग सरायकै वैष्णवकों दरसन करायकै श्रीठाकुरजीकों पोढ़ायकै वैष्णवकों महाप्रसाद लिवायो. तब दोउ स्त्री तथा पुरुषने महाप्रसाद लियो. फेरि भगद्वार्ता करिवेकों बैठे. तब यह वैष्णव भगवद्वार्ता करे और वे स्त्री - पुरुष सुने. सो सुनिकै बोहोत प्रसन्न भए. पाछें वैष्णवसों कह्यो, जो वैष्णवजी ! तुम तो सदा ही हमारे पास रहो. सत्सङ्ग लायक हो. हमकों ऐसो सत्सङ्ग कहां ? हमारे उपर तुमने बड़ी कृपा करी है. तब वैष्णव पांच - सात दिन रहे. पाछें कही, जो अब तो हमकों बिदा करो ? अब हम सर्वथा न रहेंगे. तब कही, जो कछूक दिन हमारे पास रहो तो आछो. तब इन कह्यो, जो आछो. हमारो हू मन यही है, जो कोई दिन तुम्हारे पास रहे. परि अब हम ब्रजमें जाइ, श्रीमुख निरखि, श्रीजमुनाजल पान करि, ब्रजयात्रा करि, श्रीगुसांईजीके दरसन करि, फेरि तुम्हारे पास आवेंगे. सो कछूक दिन रहेंगे. क्यों, जो तुम्हारो स्नेह वैष्णव पर बोहोत है. और अब तो हमकों बिदा करो. हम जायेंगे. तब पुरुषने हाथ जोरिकै बिनती करी, तुमकों खरच तथा वस्त्र चहिए सो आज्ञा करिए. तब वैष्णव बोले, जो हमारे तो कछू मांगिवेकी रीति नाहीं.

भावप्रकाश :
यह कहि यह जताये, जो हमारे आकास - वृत्ति है. सो कहा ? प्रभु जा समै जो बिनु मांगै देई, ताही में निर्वाह करत हैं. काहूकौ आश्रय नाहीं. वस्तु हू की अपेक्षा नाहीं.

तब बिना मांगे कछू खरची वस्त्र प्रसाद सब दीनो. पाछें बिदा करे. पाछें दोउ स्त्री तथा पुरुष घरमें आइकै श्रीठाकुरजीकी सेवा किए. सो वे बोहोत प्रीतिसों सेवा करते. तब तें श्रीठाकुरजी सानुभावता जतावन लागे. कृपा करिकै जो चहिए सो मांगि लेते. ऐसी कृपा इनके उपर सदैव करते.

भावप्रकाश :
सो या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो श्रीठाकुरजीमें पूरन प्रीति भई कब जानिए, जब भगवदीय वैष्णव पर तन - मन - धन न्योछावरि करिए. उन ही कों सर्वोपरि जानि उनसों निष्काम प्रीति करे. भगवदीय वैष्णवके कैसे हू आचरन देखे, परि अभाव न आवें. तब भाव स्थायी भयो जानिए. स्थायी भाव बिना पुष्टिमार्गको सुख मिले नाहीं. तातें इन स्त्री - पुरुषको श्रीगुसांईजीकी कृपा तें या प्रकारकौ भाव हतो. तातें ठाकुर हू उनपैं प्रसन्न भये.

सो वे स्त्री - पुरुष श्रीगुसांईजीके ऐसे टेकके कृपापात्र भगवदीय हते, तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१८०।।

१८१-एक बनिया वैष्णव

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक बनिया वैष्णव, सो गुजरातके सङ्गमें आयो, जाको श्रीगुसांईजी प्रेम, आसक्ति, व्यसनको भेद कहे, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक - भक्त है. लीलामें इनको नाम ‘रज्जना’ है. ये ‘वनदेवी’ तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप है.

सो ये गुजरातमें एक द्रव्य पात्र बनियाके जन्म्यो. सो बरस बीसकौ भयो. तब इनके माता - पिता मरे. पाछें ये श्रीरनछोडरायजीके दरसनकों आयो. तब ता समै श्रीगुसांईजी आपु श्रीरनछोडरायजीके दरसनकों पधारे हते. तहां इनकों श्रीगुसांईजीके दरसन भए. तब इह जाने, जो ये कोई महापुरुष हैं. तातें इनकी सरनि जइए तो आछो. पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीरनछोडरायजीसों बिदा होंई अपनी बैठकमें आए. सो ये हू श्रीगुसांईजीके पाछें - पाछें उहां आयो. पाछें समय पाय बिनती कियो, जो महाराज ! कृपा करि मोकों सरनि लीजिए. तब श्रीगुसांईजी उनको कृपा करि दैवी जीव जानि सरनि लिये. पाछें श्रीगुसांईजी आप उहां ते श्रीगोकुलकों पधारे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
ता पाछें वह वैष्णव एक गुजरातके सङ्गमें श्रीगोकुल श्रीगुसांईजीके दरसनकों आयो. तब आयकै श्रीगुसांईजीके दरसन किये. पाछें श्रीगुसांईजीके आगे दण्डवत् करिकै भेट धरी. पाछें बैठ्यो. पाछें श्रीगोकुलमें पांच - सात दिन दरसन करे. तब श्रीगुसांईजीके आगे बिनती करी, जो महाराज ! सातों स्वरूपनकौ मनोरथ कछू कराइए. तब वस्त्र - सामग्री कछू रोक आपके आगे राखे. जो महाराज ! यामें बने सो करो. तब आपने या वैष्णवकौ सब मनोरथ सिद्ध कर्यो. वागा - वस्त्र धराए. सामग्री अरोगाई. पाछें आप श्रीनाथजीद्वार पधारे. तब यह वैष्णव साथ गयो. पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. और श्रीगुसांईजी आप सेवा - सिङ्गार किये. पाछें रात्रिकों श्रीगुसांईजीके पास आयकै या वैष्णवने वागा - वस्त्र - सामग्री - रोक - सब आपके आगें राखे. जो महाराज ! यामें बने सो श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ मनोरथ करिये. तब आपने वागा - वस्त्र धराए. सामग्री अरोगाई. सब मनोरथ सिद्ध कर्यो. फेरि पांच - सात दिन श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किए. तब श्रीगोकुल आए. पाछें श्रीगुसांईजी तथा सब बालकनकों केसरि स्नान करवाए. भेट धरी. आर्ति करी. ता पाछें भीतर सब बहू - बेटीनकों साड़ी - चोली भेट पठाय दीनी. तब आपके आगें बिनती कीनी, जो महाराज ! अब आज्ञा होंई तो मैं ब्रजयात्रा

करि आऊं ? तब आपने आज्ञा दीनी, जो सुखेन करि आवो. सो सम्पूर्ण ब्रजयात्रा करिकै श्रीगोकुल आयो. तब श्रीगुसांईजीके आगे दण्डवत् करी. और बिनती करी, जो महाराज ! आपकी कृपा तें ब्रजयात्रा तो करि आयो. अब एक मेरो मनोरथ है. सो कृपा करिकै सिद्ध करिए. तब आपने आज्ञा करी, जो अब तेरो कहा मनोरथ है ? तब वा वैष्णवने बिनती करी, जो महाराज ! मेरो यह मनोरथ है, जो कोई सुपात्र ब्राह्मन आप ऐसो बतावो सो वा ब्राह्मनकों भोजन कराऊं. इच्छा - भोजन कराउंगो. तब आपने आज्ञा करी, जो ठीक है, तेरो मनोरथ है तो हम आज्ञा करें. तू करे तो हम कहें. तब वैष्णवने कही, जो महाराज ! आप आज्ञा करेंगे सोई करूंगो. तब आपने आज्ञा करी, जो एक नामधारी वैष्णव होंइ तिनकों तुम आछी भांतिसों प्रसाद लिवाउ, तो तेरे सौ ब्राह्मनको ब्रह्म - भोज भयो जानिए. तब वा वैष्णवने बिनती करी, जो महाराज ! सौ नामधारीकों लिवाऊं ? तब आप आज्ञा किए, जो एक समर्पनीकों लिवावे तो सौ नामधारी भए जानिए. तब वा वैष्णवने कही, जो महाराज ! सौ समर्पनीकों लिवाऊं. तब आप आज्ञा किए, जो श्रीआचार्यजीके मर्यादासों जो सेवा करत होंई वैसे एक मर्यादी, सेवा करिवेवारेकों लिवावे, तो सौ समर्पनी भए जानिए. तब या वैष्णवने कही, जो मैं सौ मर्यादासों सेवा करिवेवारेकों लिवाऊं. तब आप आज्ञा किए, जो एक प्रेमी भगवन्नाम प्रेमसों लेत होंई, प्रेमसों सेवा करत होंइ, और आकासवृत्ती होय, निष्कञ्चन होंइ, ऐसे एकको लिवावें तो सौ भगवत्सेवया वारे भए जानिए. तब याने कही, जो महाराज ! ऐसे सौनकों लिवाऊं. तब आपने आज्ञा करी, जो ऐसें सौ तो मिलने दुर्लभ हैं. तब वा वैष्णवने कही, जो महाराज ! लक्षावधि सृष्टि है. सो मैं तो ढूढि लेउंगो. तब आप आज्ञा किए, जो एक आसक्ति अवस्थावारेकों लिवावे तो सौ प्रेमी भए जानिए. तब याने बिनती करी, जो महाराज ! सौ आसक्ति अवस्थावारेनकों लिवाऊं. तब आपने कही, जो ऐसें सौ मिलने तो दुर्लभ हैं. तब वा वैष्णवने बिनती करी, जो महाराज ! श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी, और आपु, साठि लाख जीवनकों अङ्गीकार किये हैं. सो सब पृथ्वीमें फिरिकै मैं तो उनको ढूंढि लेउंगो. तब आपने कही, जो एक छेली अवस्था कहत हूं, तातें तू फेरि मति बोलियो. जो एक व्यसन अवस्थावारेकों लिवावे तो सौ आसक्ति अवस्था वारे भए जानिए. तब वाने बिनती करी, जो महाराज ! बोहोत आछौ. आपने आज्ञा करी सोई करूंगो. तातें अब आप बताइये. तब आपने आज्ञा करी, जो आसक्ति अवस्था तो कुम्भनदासकों भई. और व्यसन अवस्था गज्जनधावनकों भई. सो ऐसें तो मिलने बोहोत दुर्लभ हैं. सो तोकों बताय दियो. सो यह छेली अवस्था है. सो मैं तोसों कही.

भावप्रकाश :
या वार्तामें उतरोउत्तर दुर्लभता बताई. जो चारों वर्णमें ब्राह्मन श्रेष्ठ कहे हैं. परि उनतें श्रेष्ठ नामधारी वैष्णव है. जिनने प्रभुनकौ शरन ग्रहन कियो है. तातें ब्राह्मन तें नामधारी वैष्णव हूं श्रेष्ठ है. उनतें श्रेष्ठ समर्पनी कहे, जिनने प्रभुनकों सर्व वस्तू समर्पन कीनी है. उनतें हू श्रेष्ठ सेवा करिवेवारे कहे. जो श्रीआचार्यजीकी मर्यादाके अनुसार खासा - सेवकीपूर्वक प्रभुनकी सेवा करत हैं. सो वा सेवा करिवेवारेनमें हू जो प्रीति पूर्वक सेवा करे, स्मरन करे, ऐसो जो प्रेमी भक्त है सो श्रेष्ठ हैं. काहे तें ? जो प्रेम सर्वोपरि हैं. प्रेम ही सों प्रभु बस होत है. सो प्रेमी भक्त रस - धर्मी होत हैं. तातें उनकों श्रेष्ठ कहे. उनतें श्रेष्ठ आसक्तिवारेनकों कहे. जिनकों प्रभुनके स्वरूपमें दृढ निष्ठा है. प्रभु बिना सब वस्तू तुच्छ लागत है. गृहादिकनमें अरूची रहत हैं. वा हू तें परे व्यसन अवस्था हैं. सो व्यसन अवस्था वारेनकों प्रभुनके स्वरूप बिना एक छिन हू कल परत नाहीं. ऐसी दसा होंइ तब जीव कृतार्थ होंई. सो श्रीआचार्यजी 'भक्तिवर्द्धिनी' में कहत हैं ''यदास्याद्व्यसनं कृष्णे कृतार्थः स्यात्तदैवहि''. सो व्यसन अवस्था गज्जनधावन जैसे कोई एकको सिद्ध भई है. तातें उनकों दुर्लभ कहे. और एक की सङ्ख्या कहि यह जताया, जो ज्यादा वैष्णवनकों महाप्रसाद लिवायवेमें चित्त चञ्चल रहत हैं. आचार हू सिद्ध नाहीं होत. तातें जैसे चित्त स्नेह - परायन रहे, मारगको आचार हू भलीभांति बनि आवे, ता प्रकार वैष्णवकों महाप्रसाद लिवावें.

सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१८१।।

१८२-एक ब्रजवासी रावलकौ

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक रावलकौ ब्रजवासी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'मनोहर' गोप है. ये 'वनवेदी' तें प्रगट्यो है, तातें उनके भावरूप है.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो एक दिन वह श्रीगोकुल आयो. तब आयकै श्रीगुसांईजीके दरसन किए. पाछें बिनती करी, जो महाराज ! मोकों कृपा करिकै नाम सुनाइए. तब आपने कृपा करिकै नाम सुनायो. पाछें आपने पूछी, जो तू रावलमें ही रहत है कहा ? तब वा ब्रजवासीने कही, जो महाराज ! मैं तो रावल ही में रहत हूं. तब आपने कही, जो जू कहा काम करत है ? तब याने कही, जो महाराज ! मैं तो सब गामकी गाय चरायवेकों जात हूं. तब आपने कही, जो आछौ, कोई - कोई दिन आयवो करि. तब वा ब्रजवासीने कही, जो महाराज ! अब मैं आपको सेवक भयो. सो नित्य तो मोसों न बने परि कोई - कोई दिन आयवो करूंगो. तब आपने आज्ञा दीनी, जो अब तू जा. तब वह रावल गयो. सो रावल जायकै नित्य गाय चरायवेकों जाय. सो एक समै फागुनके दिन हते. सो गाय दूरि 'चिन्ताहरन' तांई चरावत हतो. और बनमें फिरत हतो. तहां गुलाल बरस्यो हतो. सो गुलाल - अबील - चोवा सबके याकों दरसन भए. सो देखत देखत आगें चल्यो. तब एक रत्नजटित पिचकाई पाई. सो दण्डवत् करि हाथमें लीनी. पाछें देखिकै कह्यो, जो यह तो श्रीगुसांईजीके हस्तमें देउंगो. सो वह गुलाल - अबीर हू रंच लियो. पाछें दण्डवत् करि कै रावल आयो. सो रावल आय, गाय सब अपने - अपने घर पहोंचाय, पाछें श्रीगोकुल आयो. तब श्रीगुसांईजी आपको दण्डवत् करी. तब दण्डवत् करिकै बिनती करी, जो महाराज ! मैं 'चिन्ताहरन' गाय चरावत हुतो. तहां में दूरि निकसि गयो. तहां गुलाल बोहोत बरस्यो. और अबीर - चोवा चन्दन सब देख्यो. तब महाराज ! मैं दण्डवत् करि वस्त्र रङ्ग ल्यायो. और कछू गुलाल ल्यायो. सो श्रीगुसांईजीकों दिखायो ! वह वस्त्र दिखायो. और वह पिचकाई आपके श्रीहस्तमें दीनी. तब आप दरसन करिकै बोहोत प्रसन्न भए. और वा ब्रजवासीसों कही, जो चलि, हमकों दिखाउ. तब उन कह्यो, जो महाराज ! पधारिये. तब आप घोड़ा उपर असवार होइकै पधारे. सो ब्रजबासी आगें और आपको घोड़ा पाछें. सो जहां वह गुलाल बरस्यो हतो तहां ब्रजबासी ठाढ़ो होई रह्यो. तहां आप पधारे. सो आप पधारिकै सब देखें. सो जहां गुलाल - अबीर बरस्यो हतो सोऊ देख्यो. तब दरसन करिकै आप वामें लोटि गए. पाछें कछू अबीर - गुलाल ल्याए. कछू वस्त्र रङ्ग ल्याए. पाछें आप श्रीगोकुल पधारे. तब रात्रिको अपनी बैठकमें आयकै कथा बांची. तब वा व्रजवासीने सुनी. पाछें कथा होंइ चुकी तब श्रीगुसांईजीके आगें आयकै दण्डवत् कियो. तब आपने आज्ञा करी, जो अब तू रावल मति जाय. अब तो रात्रि बोहोत गई है. सवेरे बेगो उठिकै जइयो. अब तू महाप्रसाद ले. तब आपने खवाससों आज्ञा करी, जो इनकों अनसखड़ी महाप्रसाद ठोर लडुवा आछी रीतिसों जो मांगे सो लिवाइयो. तब खवास इनकों ले गयो. और भण्डारीसों कही, जो

याकों महाप्रसाद जो यह लेइ सो याकों लिवाय दीजियो. तब भण्डारीने महाप्रसाद लिवायो. पाछें ब्रजवासी आपके पास आयो. पाछें आपने प्रसादी उपरेना केसरिसों चोवासो लपट्यो दियो, उढ़ायो. तब ब्रजवासी बोहोत प्रसन्न भयो. तब आपने आज्ञा करी, जो तू रात्रिकों या बैठकमें सोय रही. पाछें आपने आज्ञा करी जो तू बैठकमें नित्य आयो करि. और ऐंसे बनकी खबरि ल्यायो करि. तब कही, जो आछो महाराज ! ऐसे करूंगो. तब ब्रजवासी बैठकमें सोय रह्यो. पाछें प्रातःकाल उठिकै रावलकों गयो. पाछें गाय लैकै बनमें गयो. सो बनमें तें सांझकों घर आवे. पाछें रात्रिकों नित्य श्रीगुसांईजीके पास आवे. पाछें श्रीगुसांईजी याके उपर सदैव कृपा करते. तब याकों अपने स्वरूपकौ ज्ञान भयो. तब वा ब्रजवासीने बिनती करी, महाराज ! मोकों ब्रह्मसम्बन्ध करावो.

भावप्रकाश :
काहेतें, जो लीलाकौ सम्बन्ध द्दढ़ होई.

तब आपने आज्ञा करी, जो आछौ. काल्हि तोकों ब्रह्मसम्बन्ध करावेंगे. तब दूसरे दिन आपने कृपा करिकै वा ब्रजवासीकों ब्रह्मसम्बन्ध करवायो. पाछें आज्ञा करी, जो जूठनि यहांई लीजो. और बांट दिवायो, जो जा, तू बनमें ले जैयो. पाछें बनमें सों आयो तब रात्रिकों जूठनि लीनी. पाछें जब नित्य नेमसों आवे तब श्रीगुसांईजीके दरसन करे. तब आप इनको नित्य बांट दिवावे. सो ले कै नित्य रावल जाय.

सो वह ब्रजवासी श्रीगुंसाईजीकौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं. सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१८२।।

१८३-राजा भीम

अब श्रीगुसांईजीके सेवक राजा भीम स्त्री - पुरुष, गुजरातके जिनकों पुर्व जन्मको ज्ञान हतो. तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं.

भावप्रकाश :

ये दोउ राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम ‘नृदेवी’ और ‘स्नेहदेवी’ हैं. सो ‘नृदेवी’ तो राजा भीम भए, और ‘स्नेहदेवी’ उनकी स्त्रीको प्रागट्य जानना. ‘बनदेवी’ तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो उन राजा भीमकों माताके गर्भ तें उत्पन्न होत मात्र ही पूर्व जन्मकौ ज्ञान भयो हतो. और स्त्रीकों हू पूर्व जन्मकी सुधि रही हती. सो वे दोउ स्त्री भरतार पूर्व जन्मकी सुधि करिकै अपने मनमें ताप क्लेश कर्यो करते. जो अब हम कौन उपाय करि श्रीठाकुरजी आपकी सेवा करें. तब रात्रिकों उन दोउ स्त्री - पुरुषकों श्रीठाकुरजी आपने जताई, जो तुमकों पूर्व जन्मको समाचार कहेंगे, तिनकी सरनि जइयो. और वे कहें तेसेंई तुम आचरन करियो. तब उन दोउ स्त्री - पुरुषने अपुने मनमें विचार कियो, जो यहां ऐसो कौन है, जो हमकों पूरव जन्मकी बात कहेगौ ? सो याहीतें आपुन तीर्थयात्राकों जइए. सो उहां कोउ कहे, तो जाने. सो याहीतें आपुन तीर्थयात्राकों चलिये. तब ऐसो विचारि, वे दोउ स्त्री - पुरुष विचार करिकै उन राजा भीमसेनने अपने पितासों कही, जो हमकों तो तीर्थयात्राकौ मनोरथ है. सो याहीतें तुम आज्ञा देउ तो हम जांय. तब याके पिताने कही, जो भले जाऊ. तब वे दोउ स्त्री - भरतार तीर्थयात्रा करिवेकों निकसे. सो जहां - जहां कोई बड़ो स्थल होई, जहां कोई बड़ो पण्डित होंइ, सो जहां जाय ताहीसों संवाद चलावे. और चर्चा करते. परि कोऊ पूर्वजन्मकी बात कहे नांही. सो ऐसें सब तीर्थयात्रा फिरिकै राजा भीम श्रीगोकुल आए. तब राजा भीमने श्रीठाकुरानी घाट उपर डेरा किये. तब श्रीगुसांईजी मध्याहनकी सन्ध्यावन्दन करिवेकों पाऊं धारे. तब राजा भीमकी दृष्टि परी. तब राजा भीमकों श्रीगुसांईजीके दरसन भए. तब महाअलौकिक स्वरूपकौ तेज देखिकै राजा भीमने श्रीगुसांईजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् किये. तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुखतें कहे, जो तुम जा बातकौ खोज करिवेकों तीर्थयात्राकों निकसे हो, सो खोज कहूं नहीं पायो ? तब राजा भीमने श्रीगुंसाईजीसों कही, जो महाराज ! नहीं पायो. तब श्रीगुसांईजीने आपने श्रीमुखतें कही, जो तुम बैठकमें आईयो. तुमकों सब बात कहेंगे. तब राजा भीमने अपने मनमें निश्चै जान्यो, जो यहां श्रीगुसांईजी आपने पूछ्यो है, सो यह बात निश्चै होइगी. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप तो मन्दिरमें पधारे. तब राजभोग आर्ति

किये. ता पाछें अनोसर भयो तब श्रीगुसांईजी आप भोजन करिकै पोढ़ें. ता पाछें उत्थापनकौ समय भयो. तब श्रीगुसांईजी उत्थापनके समै पहिले गादी तकियानके उपर बिराजे हते. सो यह राजा भीम बैठकमें बैठि रह्यो हतो, सो इननें श्रीगुसांईजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् कीनी. और बिनती कीनी, जो महाराज ! अब आपकों हमारे उपर कृपा करनी होंई सो कृपा करि कहिये. तब श्रीगुसांईजीने सब कोई वैष्णवकों दूरि किये. तब श्रीगुसांईजी आपने उन राजा भीमकों तथा रानीकों पूर्व जन्मकी सब बात कही.

जो पूर्वजन्ममें एक गाममें तुम कुनबी हते. और यह तुम्हारी स्त्री, सो एक बनियाकी स्त्री हती. सो तुम्हारे और या स्त्रीसों व्यभिचार बुद्धि हती. सो यह नित्य खेतपै आवती. तब ऐसें करत कितनेक दिन बीते. सो एक दिन खेत खोदतमें उत्तम भूमी देखी. तब एक बड़ी सिला निकसी. ताके नीचे एक सुन्दर भोंयरा हतो. सो ताहीमें मन्दिर हतो. सो ता मन्दिरमें एक सुन्दर श्रीठाकुरजीकौ मन्दिर हतो. सो देखिकै तुम आपने मनमें बोहोत आश्चर्यवन्त होइ रहे. तब इतने ही में यह स्त्री आई. तब तुमने याकों सब दिखायो. जो यह कहा है ? तब याने कही, जो यह श्रीठाकुरजी श्रीकन्हैयालालकौ स्वरूप हैं. सो अपने बड़े भाग्य हैं. सो फलित भए हैं. जो यह स्वरूप प्राप्त भयो है. ता पाछें उहां तें माटी सब काढिकै जल ल्यायकै वा मन्दिरकों धोयो. पाछें न्हायके श्रीठाकुरजीकों स्नान करवायकै ता पाछें उहां तें वनफल सुन्दर ल्यायकै सम्हारिकै भोग धरे. और कहूं तें पुष्प ल्यायकै माला करिकै श्रीठाकुरजीकों पहराए. सो ऐसी भांतिसों तुम नित्य सेवा करन लागे. और कछु नौतन बस्तु सामग्री ले आवे सो समर्पते. सो श्रीठाकुरजीकौ सिंगार करते भोग धरते. पाछें मन्दिरमें बुहारे झारे. और कहुं तें पुष्प बीनि ल्यावते. सो ऐसी भांतिसौं तुम दोउ गोप्य रीतिसौं भली भांति तें सेवा करत हते. सो कोउ जाने नाहीं. सो ऐसी - ऐसी कितनीक वार्ता हैं. सो ऐसें करत श्रीठाकुरजी आपके विषे परम आनन्दमें आसक्ति भई. और विषय धर्म सब छूटयो. श्रीठाकुरजी आपकी सेवामें मन लाग्यो. तब ऐसें करत एक दिन तुम भगवद्सेवाकौ कार्य करत हते और भगवद्नाम मुखतें कहत हते. सो ऐसे में भगवदीच्छासों अकस्मात् उपरतें भोंयरा धसि पर्यो. तब ता समय तुम दोउ जनेनने देह छोरी. तब तुमकौ धर्मरायके दूत लेवेकों आए. तब उन दूतनके पाछें विष्णुदूतन आये. तब विष्णुदूतनसों यमदूतनने कही, जो इन तो परस्त्रीसों व्यभिचारगमन कियो है. और बोहोत ही वेद विरुद्ध आचरन किये हैं. तब विष्णुदूतनने यमदूतनतें कही, जो इनकों तो श्रीठाकुरजीने परम गति दीनी है. सो इन दोउ जनेंनको तो याहू ते परम गति होइगी. जो इनने तो श्रीठाकुरजीकौ मन्दिर मार्जन कियो है. तातें इनकों तो परम पदवी होइगी. यामें सन्देह नाहीं. इतनो

कहिकै तुम दोउ जनेंनकों विष्णुदूत ले गए. सो उहां ले जाइ कै श्रीठाकुरजीके आगे ठाढ़े किये. तब श्रीठाकुरजीने कही, जो तुमकों चहिये सो तुम मांगों, मैं तुम उपर बोहोत प्रसन्न भयो हूं. तब तुम दोउ जनेंनने हाथ जोरिकै श्रीठाकुरजीसों बिनती करी, जो महाराज ! हम पर इतनी दया क्यों करत हो ? जो हमने तो बड़ो नीच कर्म कियो है. सो कारन कहा है ? तब श्रीठाकुरजीने कही जो तुमनें नीच कर्म तो कियो है, परि भगवत् मन्दिरकौ मार्जन कियो है. तातें तुम्हारी करी सेवा हमने मानि लीनी है. तो तुम उपर हम बोहोत प्रसन्न हैं. तातें तुम दोउ जने कछू मांगो. तब तुम दोउ जनेंनने कही, जो महाराज ! तुम हम उपर प्रसन्न होंईके देत हो तो हम यह मांगत हैं, जो हमकों मनुष्य जन्म होउ. सो यह मृत्युलोकमें जाइकै दोउ जने स्त्री - पुरुष होइकै श्रीठाकुरजीकी सेवा करें. भगवद् भजन करें. तातें हम तो दोउ जनें यह मांगत हैं. जो हमकों मनुष्य जन्म देउ.

भावप्रकाश :
काहेतें, जो मनुष्य जन्म बिना आपकी सेवा दुर्लभ है. तातें देवता हू या भूतल उपर जन्म लेइवेकी इच्छा करत है. सो गोपालदासजी गाए हैं -

विबुध वांछे वास वसुमति उपरे, श्रीवल्लभकुंवरनी टहल करवा ।।

सो ऐसो उत्तम यह मनुष्य देह है. तातें उन दोउ मनुष्य जन्म मांगे. और भगवद् भजन - सेवाकी श्रेष्ठता हू कहे, जो भगवानके दरसन भए पाछें हू ये सेवा ही मांगे. सो सेवा ऐसो पदार्थ है, जातें भगवान् हू बस होत हैं. तातें वैष्णवकों सेवा बिनु छिनु एक रहनो नाहीं, यह सिद्धान्त जताए.

तब श्रीठाकुरजीने कही, जो तुम्हारो मनोरथ है सो सब पूरन होइगो. तब पृथ्वी पर आयकै तुमने जन्म लियो.

सो एसें विस्तारपूर्वक राजा भीम आगें कही. तब सुनिकै राजा भीमकों ज्ञान भयो. तब राजा भीमने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी. जो महाराज ! हमारे उपर कृपा करिये. और हमकों अब अपनी सरनि लीजिए. तब श्रीगुसांईजीने उन राजा भीमकों तथा रानीकों कृपा करिकै

नाम सुनायो. ता पाछें दूसरे दिन ब्रत करवायकै श्रीनवनीतप्रियजीकी सन्निधान ब्रह्मसम्बन्ध करवायो. ता पाछें राजा भीमने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! हमारे माथे कृपा करिकै श्रीठाकुरजीकी सेवा पधराय दीजे. तब श्रीगुसांइजी उन राजा भीमके माथे कृपा करिकै श्रीठाकुरजीकी सेवा पधराय दिये. ता पाछें राजा भीमकों श्रीगुसांईजी आपने कृपा करिकै सेवाकी रीति भांति सीखाई. पाछें राजा भीमने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! अब आज्ञा होंइ तो हम अपने देसकों जाय. तब श्रीगुसांईजी आप उन राजा भीमकों बिदा किए. तब राजा भीमने श्रीगुसांईजीकी बोहोत भेट करी.

ता पाछें कितनेक दिनमें अपने देस आय पहोंचे. तब इन अपने महलमें एकान्तमें श्रीठाकुरजीकौ मन्दिर सम्हारायो. तहां श्रीठाकुरजीकों पधराए. ता पाछें वे दोउ स्त्री - परुष मिलिकै श्रीठाकुरजीकी सेवा भली - भांति सों करन लागे. और श्रीगोकुलकी मानसी नित्य करते. सो इनने श्रीगुसांईजीके तथा श्रीगोकुल के अनेक पद किये हैं. सो कछूक दिनमें श्रींठाकुरजी सानुभावता जतावन लागे. जो चहिये सो मांगि लेते.

सो वे राजा भीम श्रीगुसांईजीके ऐसे परम कृपा पात्र भगवदीय हे. तातैं इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१८३।।

१८४-एक विरक्त ब्राह्मन गोवर्द्धनकौ

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक विरक्त ब्राह्मन गोवर्द्धनकौ, सो वह श्रीगिरिराजकी परिक्रमा करत दोई वैष्णवकों अपने घर लिवाय ल्यायो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं.

भावप्रकाश :
ये सात्त्विक भक्त है. लीलामें इनकौ नाम 'माया' है. ये 'रंगा' ते प्रगटी है, तातें उनके भावरूप हैं.

ये गोवर्द्धनमें एक सनाढय ब्राह्मनके प्रगट्यो. सो बालपने सों ही वैराग्य दसामें रहे. मा - बाप जानें, जो ये पूरव जन्मकौ वैरागी है. तातें इनपर स्नेह करे नाहीं. पाछें ये बरस सत्रहकौ भयो. तब इनके मा - बाप मरे. तब ये गोपालपुरमें आई श्रीगुसांईजीकौ सेवक भयो. पाछें उहांई रह्यो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो यह विरक्त नित्य एक परिक्रमा श्रीगिरिराजकी करतो. पाछें चुकटी मांगिकै निर्वाह करतो. और एक वैष्णव गृहस्थ हतो. सो श्रीगोकुल आयो. सो वाके मनमें रुजगार करिवेकी हती. सो यह रुजगार श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीके घरको तो करतो नाहीं. तब वह गिरिराज गयो. जो यहां रुजगार करों. सो उहांऊ श्रीनाथजीकौ तथा श्रीवल्लभकुलके घरकौ रुजगार हतो. और तो कछु रुजगार हतो नाहीं. तब सब छारिकै भगवद् भजन करिवेकौ बैठयो.

भावप्रकाश :

यामें यह जताए, जो देवअंस, गुरुअंस निषिद्ध है. सो वैष्णवकों सर्वथा लेनो.

सो रात्रि - दिन एक आसन बैठ्यो रहतो. सो वह विरक्त वैष्णव परिक्रमाकों आवे. सो नित्य देखे. सो देखत - देखत दिन पांच भए. तब वा विरक्त वैष्णवके मनमें आई, जो यह महाप्रसाद कहां लेत होइगो ? सो ऐसें जानिकै वासों कहीं, जो चलो, उहांई भगवद् भजन करियो. और उहांई महाप्रसाद लीजियो. सो ऐसे कहिकै अपनी कोठरीमें ले गयो. सो चुकटी लावे सो रसोई करे, भोग धरे, महाप्रसादकी पातरि वा वैष्णवकों धरें, आप लेय. तब ऐसें करत कितनेक दिना भए. तब एक तीसरो वैष्णव उहां आइकै भगवद् भजन करिवेकों बैठ्यो. तब वा विरक्त वैष्णवने कही, जो तुम्हारी यहां रहिवेकी इच्छा है कहा ? तब वाने कही, है तो सही. तब वाहूकों पातरि धरे. अब वे वैष्णव तो बैठे भगवद् भजन करें. महाप्रसाद लेई. और वह विरक्त वैष्णव चुकटी मांगे, रसोई करे. सो वाकों बड़ो परिश्रम होइ. सो वाकौ श्रम देखिकै श्रीठाकुरजीने कही, जो तू रसोई करि, मैं परचारगी करूंगो. तब यह बात उन दोउ वैष्णवनने सुनी. तब कही, जो यह

दूसरो कौन है ? तब देखें तो श्रीठाकुरजी हैं. तब उन दोउनने बिनती कीनी, जो महाराज. हमको आज्ञा करो तो हम तीन्यों मिलिकै करे. तब श्रीठाकुरजीने कही, जो तू रसोई करि, यह दूसरो परचारगी करेगो, और यह विरक्त चुकटी ल्यावेगो. ऐसें तीन्यों मिलिकै करो. तब ऐसें ही करन लागे.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो कोऊ वैष्णव भूखौ होंई, वाके खाइवे, पीवेकौ कछु साधन न होई तो वाकों घर ल्याई प्रीतिपूर्वक प्रसाद लिवावनो. यह वैष्णव मात्रको धर्म कहै. और प्रसाद लेइवेवारेकों वा वैष्णवके घरकी कछू टहल करिकै प्रसाद लेनो, यहू कहे. काहे तें ? जो प्रभु बड़े कोमल स्वभावके हैं. तातें सेवा करत श्रम होई तो आप व्याकुल होत हैं. सो कछु टहल करिकै प्रसाद लेइ तो वा वैष्णवकों श्रम न होंई. और प्रभुनकी भक्तवत्सलता हू जताए ? सो कैसे ? जो कोउ वैष्णवकी निष्काम भावतें टहल करत है, ताके प्रभु आधीन व्है रहत हैं. सो आप हू परचारगी करनकी कहे. यातें वैष्णवकी सेवा सर्वोपरि है.

सो वे तीन्यों श्रीगुसांईजीके ऐसें परम कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१८४।।

१८५-एक राजा पूर्वकौ गृहस्थ और विरक्तके धर्म पूछतो

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक राजा पूर्वकौ, सो वह गृहस्थी तथा विरक्तधर्म पूछतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त है. लीलामें इनको नाम ‘संशयशीला’ है. ‘रंगा’ तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप है.

सो ये पूरवमें एक राजाके जन्म्यो. पाछें, बरस बाईसको भयो तब वाको पिता मर्यो. तब यह राजा भयो. सो केतेक दिन पाछें ये श्रीजगन्नाथरायजीके दरसनकों पुरुषोत्तमपुरी आयो. सो उन दिनन श्रीगुसांईजी आप पुरुषोत्तमपुरीमें बिराजत हते. सो या राजाकों दरसन भए. सोमहा अलौकिक दरसन भए. तब राजा दण्डोत् कियो. पाछें बिनती करी, जो महाराज ! कृपा करिकै सेवक कीजिए. तब श्रीगुसांईजी आप इनकों सरनि लिये. पाछें राजाके कुटुम्बके और हू सेवक भए. ता पाछे राजाने बिनती करीं, जो महाराज ! अब कहा कर्तव्य है ? तब आप आज्ञा किये जो राजा ! भगवत्सेवा करो. पाछें आप कृपा करिकै राजाके माथे श्रीठाकुरजी पधराय दिए. और आज्ञा किये, जो इनकी सेवा प्रीति सों करियो. और आए गए वैष्णवकों सङ्ग करियो. पाछें वह राजा श्रीठाकुरजीकों पधराय अपने देस आयो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वह राजा श्रीठाकुरजीकी सेवा भली भांतिसो करतो सो जो कोई वैष्णव आवतो ताकों बोहोत प्रीति स्नेह सों महाप्रसाद लिवावतो. पाछें आछें बिछौना बिछायकै बेठावतो, आछौ समाधान करतो. महिना, पन्द्रह दिन राखतो. पाछें जब बिदा व्है वैष्णव जाते तब राजा पूछतो, जो कहो वैष्णवजी ! विरक्तकौ धर्म आछौके गृहस्थीकौ धर्म आछौ ? सो राजाकों तो या बातकौ सन्देश ही रह्यो. परि एक निरनय न भयो. पूछे तो बोहोत वैष्णवनसों और उत्तर हू बोहोत दिये. परि एक निरनय न भयो. तब कोई समै अद्‌भुतदासजी ब्रजमें डोल्यो फिर्यो करते, सो राजाके यहां आय निकसे. तब राजाने अद्‌भुतदासजीकौ बोहोत समाधान कियो. और महाप्रसाद लिवायो. तब अद्‌भुतदासजी तो जायवे लगे, तब राजाने वह बिनती करी, जो महाराज ! मेरे इहां कछुक दिन बिराजो. तब २अद्‌भुतदासजीने कही, जो हम तो एक रात्रि हू काहूके घर रहत नाहीं. तब राजाने यह बिनती करी, जो महाराज ! कृपा करिकै एक बात मैं आपसों पूछत हों सो ताकौ प्रति - उत्तर मोकों आप दे कै आप पधारो. तब अद्‌भुतदासने कह्यो, जो कहो राजा ! तुम कहा पूछत हो ? तब राजाने यह कही, जो महाराज ! मैं बोहोत वैष्णवसौं पूछ्यो, जो विरक्तकौ धर्म आछौ के गृहस्थीको धर्म आछौ सो कहो ? सो बोहोतनतें पूछ्यो और उत्तर हू दिये. परि एक निरनय न भयो. मेरो सन्देह न गयो. सो आप कृपा करिकै मेरो सन्देह मिटावो. तब अद्‌भुतदासजीने कही, जो राजा ! कहि दिखाउंके करि दिखाउं ? तब राजाने बिनती करि, जो महाराज ! करि दिखावो. तब अद्‌भूतदासजीने राजासों कही, जो हम कहे तेसें करो तो करि दिखावे. तब राजाने बिनती करी, जो महाराज ! आप कहोगे सो मैं करूंगो. तब अद्‌भुतदासने कही, जो एक तेरी घुड़सारमें आछो घोड़ा

होंइ सो ल्याइकै असवार होउ. पाछें अकेले ही घोड़ा दोरावो. सो दोरावत - दोरावत कोई गाम आवे ता गाममें चले जैयो. तब राजाने ऐसे ही कियो. तब सांझकों एक रूख आयो. ताके नीचे घोड़ा ठाढ़ो रह्यो. तब राजा तहां रूख नीचे घोड़ा बांधिकै बैठ्यो. सो वा रूखमें एक भीलो हतो. सो वा भीलामें होला - होली उनके बेटा - बेटी हे. सो बनमें गये. सो बनमें सों चारि फल ल्याए. सो उन चार्योनिने एक - एक फल बांटि लियो. पाछें, राजा रूख नीचे बैठ्यो हतो. तब होलेने कही, जो आज अपने मेहमान आए हैं. सो मैं तो याकों फल देत हूं. सो वा होलेने तो फल दियो. तब होलीने कही, जो मैं हूं वाकों फल देत हूं. सो वा होलीने हूं फल दियो. पाछें होलीके बेटा - बेटा नें हू फल दिये. सो उन चार्यो जनेंनने चारि फल दिए. तब राजा ले कै बोहोत प्रसन्न भयो. तब रात्रिकों उहांई रहे. फेरि उहांसों सवारे ही असवार होईकै घोड़ा दोरायो. सो दोरावत - दोरावत एक गाम आयो. सो ता गाममें यह राजा चल्यो गयो. सो ता गाममें सब राजा भेले भये हते. सो ता गाममें यह राजा जाय बैठ्यो. सो वा गामको राजा हतो. सो ताके एक बेटी हती. सो वा बेटीकौ विवाह हतो. तब तेलकी कढ़ाई ताती करी हती. तामें मूंदरी डारी ही. और कह्यो, जो या मूंदरीकों कोऊ काढ़े ताकों मैं बेटी देऊं. यह सङ्कल्प राजाने कियो हतो. सो राजा तो बोहोत भेले भए. परि काहूकी सामर्थ्य नाहीं, जो तेलकी कढ़ाईमें सों मूंदरी काढ़े. तब अद्भुतदासजी आय निकसे. सो आयकै तेलकी कढ़ाईमें बैठि गये. सो तुंमी भरि - भरिकै न्हाए. न्हायकै मूंदरी हाथमें ले कै बाहिर आए. तब वे सब राजा हाथ जोरिकै दण्डवत् किये, जो महाराज ! तुम धन्य हो. पाछें वह राजा, जिनकी बेटीको विवाह हतो सो हाथ जोरिकै बिनती कीनी, जो मेरी बेटी तुमकों दीनी. तब अद्भुतदासने कही, जो हमकों दीनी ? तब राजाने कही, जो हां दीनी. तब अद्भुतदासने वह राजा दिखाय दियो. जो याकों ब्याहि दीजो. तब अद्भुतदासजी तो वाही समै बनमें चले गए. और वह राजा ब्याहिकै अपने घर आयो. तब आयकै फेरि श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लाग्यो. और वैष्णव आवें ताकों महाप्रसाद लिवायकै पूछे, जो कहो वैष्णवजी ! गृहस्थीकौ धर्म आछौ के विरक्तकौ धर्म आछो ? सो कोऊ कछू कहे, कोऊ कछू कहे. सो सन्देह निवृत न होंई. तब एक समै अद्भुतदासजी फेरि आय निकसे. तब राजाने अद्भुतदासकों महाप्रसाद लिवायो. आछौ समाधान करिकै फेरि बिनती करी, जो महाराज ! गृहस्थीकौ धर्म आछौ के विरक्तकौ धर्म आछौ ? तब अद्भुतदासने कही, जो राजा ! एक वैष्णव आयो हतो सो तू भूलि गयो ? तब राजाने कही, जो मैं तो भूलि गयो. तब अद्भुतदासने बतायो, जो तू घोड़ा दोरायकै गयो हतो सो तहां रूखके नीचे बैठ्यो हतो. सो वा वृक्षमें चारि पक्षी रहत हते, सो तिनके पास चारि फल हते. सो वे चार्यो फल तुमकों दिए. और वे चार्यों भूखे रहे. सो राजा ! यह

गृहस्थीकौ धर्म है. फेरि तू घोड़ा दोरायकै वा गाममें गयो हतो, सो तहां सब राजा बैठे हते. सो तहां तेलकी कढ़ाई ताती करी हती. सो काहूकी सामर्थ्य मूंदरी काढ़िवेकी न हती. तब तहां एक विरक्त आय तेलकी कढ़ाईमें बैठि गए. तो तुंमी भरि - भरिकै न्हाए. पाछें मूंदरी हाथमें ले कै बाहिर आये. तब वा राजाने आयकै बिनती करी, जो मेरी बेटी तुमकों दीनी. तब वा विरक्त वैष्णवनें तुमकों बेटी ब्याहि दीनी. सो राजा ! यह विरक्तकौ धर्म है. सो राजा अब तू समझ्यो ? यह गृहस्थी तथा विरक्तके धर्म है. तोकों बताय दिये. तब राजाने यह सुनिकै कही, जो महाराज ! यह तो विरक्तकौ तथा गृहस्थीकौ धर्म दोउ बोहोत कठिन है. तब अद्‌भुतदासने कही, जो राजा. तेरे तो द्रव्यादिक बोहोत है. और बोहोत आवत हैं. तामें तू वैष्णवनकौ समाधान करत रहे. तातैं बेर - बेर क्यों पूछत है ? अब तू वैष्णवनसों मति पूछियो. तब राजाने कही, जो अब न पुछूंगो ! तब अद्‌भुतदासजी तो ब्रजकों चले गए. और वह राजा फेरि काहू वैष्णवसों न पूछतो. और वह राजा श्रीठाकुरजीकी सेवा भली भांतिसों करन लाग्यो.

भावप्रकाश :
या वार्तामें यह जतायो, जो परोपकार बड़ो पदार्थ है. वाके समान और धर्म नाहीं. और जो कछू करनो सो संसय रहित होंय करनो, यहू कहे.

सो वह राजा श्रीगुसांईजीकौ ऐसो परम कृपापात्र हतो. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१८५।।

१८६-एक वैष्णव कायस्थ, सूरतकौ

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक वैष्णव कायस्थ, सूरतकौ, जो रसोई करिकै हांड़ी सङ्ग राखतौ, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत है

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त है. लीलामें इनकौ नाम ‘ब्रजप्रिया’ है. ये ‘रंगा’ तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप हैं.

ये सूरतमें एक कायस्थके जन्म्यो. सो वह बालपनेसों वैराग्य दसामें रहे. सो ये बरस चौदहको भयो. तब श्रीगुसांईजी आप सूरत पधारे. सो या कायस्थकों दरसन भए. तब याने विचार्यो, जो इनकी सरनि जइए तो आछो. पाछें याने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! कृपा करिकै मोकों सरनि लीजिए. तब श्रीगुसांईजी वाकों दैवी जानि सेवक किये. नाम सुनाय निवेदन कराए. पाछें यह कायस्थ श्रीगुसांईजीके सङ्ग श्रीगोकुल आयो पाछें गोपालपुर गयो. तहां श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. पाछें ब्रजयात्रा कियो. सो याकों बोहोत सुख भयो. तातें वह प्रतिवर्ष ब्रजयात्राकों श्रीगोकुल आवे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वह कायस्थ वैष्णव सूरतसों बरसके बरस प्रति हिंडोला जन्माष्टमी आयकै सदा श्रीगोकुलमें करतो. पाछें ब्रजयात्रा करतो. सो एक समै वह कामवन गयो. तब उहां सों एक हांडी ल्यायकै दारि करी, पाछें बाटी करिकै भोग धरी. सो दारि ठलाकयै कटोरामें भोग धरी. पाछें हांडीकों धोयकै रज लगाई कामरिमें बांधिकै रूखमें धरिकै पाछें भोग सराय महाप्रसाद लियो. पाछें कपड़ा पहरिकै चल्यो. सो ऐसें सदैव ब्रजयात्रा करिकै पाछें अपने घर सूरत आवतो, परि वह हांडी सङ्ग ही ल्यावतो. और ब्रजमें आवे तब हू सङ्ग ही ल्यावे. ताहीमें दारी करे.

सो एक समै वह वैष्णव श्रीगोकुल आयो. तब श्रीगुसांईजी आगें दण्डवत् करी. तब श्रीगुसांईजी आपने पूछी, जो वैष्णव ! तू बरसके बरस आवत है ? तब वा वैष्णवने कही, जो महाराज ! आपकी कृपा तें बरसके बरस ही आवत हों. तब आयकै हिंडोला जन्माष्टमी करिकै पाछें अन्नकूट करि फेरि जात हूं. सो जायकै पांच रुपैया कमायकै पाछें फेरि आवत हूं. तब दूसरे वैष्णवने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी ! जो महाराज ! यह वैष्णव तो बोहोत आछौ है, परि एक कार्य बोहोत ही अनुचित करत है. तब श्रीगुसांईजीने पूछी, जो ऐसो अनुचित कार्य कहा करत है ? तब कही, जो महाराज ! यहांसों एक हांडी लिये जात है. और उहां सों ले आवत है. ताहीमें दारि करे. तब श्रीगुसांईजी आपने वा वैष्णवसों पूछी, जो क्यों रे ! तू ऐसे ही करत है ? तब वा वैष्णवने बिनती करी, जो कृपानाथ ! ऐसे ही करत हों. तब आपने आज्ञा करी, जो यह मार्गकी रीति नाहीं. तब वा वैष्णवने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! मेरे ब्रजरजकी

हांडी है. सो सोनाकी है. और कृपानाथ ! मेरे बरस दिनमें आयवो और जायवो, तामें पांच रुपैया मेरे सहजमें लगि जाय. सो पांच रुपैयाकी सामग्री ले कै श्रीगोवर्द्धननाथजीकों अङ्गीकार कराई. और कृपानाथ ! मेरे तो ब्रजरजकी ही सही. ता पाछें आप जैसें आज्ञा करो, तैसे करों. तब श्रीगुसांईजी आपने आज्ञा करी सब वैष्णवनसों, जो यह करे सो तुम मति करियो, याकी देखादेखी, याके भावसों यह करे सो सही. तुम इनकों कछू कहियो मति. सो श्रीगुसांईजी याकी बात सुनिकै बोहोत प्रसन्न भए. और प्रसन्न होयकै आपने आज्ञा करी, जो देखो वर्षके वर्ष प्रति ब्रजमें आयवो, याको बड़ो भाग्य है. और याकौ भाव देखो ! ब्रजरजकौ भाव याहीने जान्यो. और पांच रुपैया ल्याय हांडीके बचायकै श्रीगोवर्द्धननाथजीकों सामग्री अङ्गीकार करावत है. सो यह वैष्णव धन्य है. या प्रकार आपने या वैष्णवकी बोहोत सराहना करी. तब वे सब वैष्णव प्रसन्न भए. जो यह वैष्णव दैवी है.

भावप्रकाश :
या वार्ताको अभिप्राय यह है, जो ब्रज अलौकिक है. सो जिनकों ब्रजकौ भाव स्फुर्द होई ताकों कछु बाधक नाहीं. और जो कोऊ देखा - देखी करें तों वाकों अपराध लगें, बहिर्मुख होई. और यहू जताए, जो वैष्णव भगवदीयकी क्रिया नाहीं देखनी.

सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१८६।।

१८७-बनिया वैष्णव, जाने भैरवकों नारियल चढाए

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक बनिया वैष्णव, जिनने भैरवकों नारियल चढ़ायो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त है. लीलामें इनको नाम 'सिन्दुरी' है. ये 'श्रीदामा' तें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप है.

ये गुजरातमें एक बनियाके जन्म्यो. सो बरस अठारहको भयो. तब याके माता - पिता मरे. पाछें यह इकलोई रह्यो. सो ये द्वारिका चल्यो, श्रीरनछोरजीके दरसनकों. सो ता समै श्रीगुसांईजी आप श्रीद्वारिकाजी बिराजत हुते. सो इन दरसन पाये. तब मनमें कहे, जो इनके सेवक हूजिए. पाछें ये श्रीगुसांईजीसौं बिनती कियो, जो महाराज ! कृपा करि सेवक कीजिए. तब श्रीगुसांईजी पूछे, जो तेरे सङ्ग और कोऊ नाहीं है ? तब याने कह्यो, जो महाराज ! मेरे सङ्ग कोऊ नाहीं है. मा - बाप अब ही मरे हैं. इकलोई हूं. तातें कृपा करि अपनी सेवा - टहल कछू दीजिए तो आछो. तब श्रीगुसांईजी वाकों नाम - निवेदन कराय सेवक किये. पाछें अपनी पास राखे. सो ये श्रीगुसांईजीकी टहल करें. सो कछूक दिनमें श्रीगुसांईजी आप द्वारिकाजी तें श्रीगोकुल पधारे. तब ये हू श्रीगुसांईजीके सङ्ग श्रीगोकुल आयो. तब इन श्रीगोकुलके दरसन किये. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप इनको साथ ले श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों पधारे. सो गोपालपुर आये. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो तू श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करि और श्रीगोवर्द्धननाथजीकी टहल करि. ता दिन तें वह श्रीगोवर्द्धननाथजीकी टहल करतो सामग्री लावतों और जो कछू टहल होती सो सब करतो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो एक दिन वह बनिया वैष्णव श्रीगिरिराजसों आगरे सामग्री लवेकों गयो. सो उनके सङ्ग दोइ वैष्णव और हते. सो दोइ गाड़ा सामग्रीके भरिकै गेलमें आवत हते. सो गाड़ा अटकि गए. तब या बनिया वैष्णवने काहूसों पूछी, जो गाड़ा क्यों अटके ? तब वाने कही, जो यहां एक भैरव है. सो भैरवकों एक नारियल चढ़ावे तब गाड़ा चले. तब या वैष्णवने कही, जो एक नहीं दोय. तब नारियल चढ़ाए. तब दोउ गाड़ा चले. तब श्रीगिरिराज आए. सो सामग्री भण्डारमें धरी. पाछें श्रीगुसांईजीके आगें दण्डवत् करी. तब आपने पूछी, जो सामग्री ल्याए ? तब वाने कही, जो हां महाराज ! दोइ गाड़ा भरि ल्यायो. सो उतारिके आपके पास आयो हूं. तब सङ्गके वैष्णव तहां ठाड़े हते, तिननें श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! सामग्री तो ल्यायो. परन्तु या वैष्णवने एक अन्याव कियो है. तब श्रीगुसांईजी पूछे, जो अन्याव कहा कियो ? तब उन वैष्णवने कही, जो भैरवकों दोइ नारियल चढ़ाए हैं. तब श्रीगुसांईजी वा वैष्णव तें पूछे, जो ये वैष्णव कहा कहत हैं ? तब वा वैष्णवने कही, भैरवकों दोइ नारियल चढाए हैं तब सामग्री ल्यायो हूं. तब श्रीगुसांईजी वासों पूछे, जो तेनें क्यों अन्याश्रय कियो ? तब वा वैष्णवने कही, जो महाराज ! गेलमें सामग्रीके गाड़ा अटके. तब मैं काहू सौं पूछी, जो गाड़ा क्यों अटके ? तब वाने

कही, जो यहां एक भैरव है ताकों नारियल चढ़ावें तो गाड़ा चले. नहीं तो अटकि जाय. तब राज ! मैनें दोइ नारियल चढ़ाए. तब दोउ गाड़ा चले. सो महाराज ! मजूरकों मजूरी देतो तो दोई रुपैया लगते. सो तो दोई नारियल दिए तें काम भयो ! सो तो मजूरकों मजूरी दिए. यामें अन्याश्रय कहा भयो ? तब श्रीगुसांईजी मुसिक्यायकै कह्यो, जो मजूरकों मजूरी दिए तामें अन्याश्रय कहा ?

भावप्रकाश :
यह कहि यह जताए, जो भगवद् सम्बन्धी सङ्कल्प होई तो अन्याश्रय नहीं होई. तातें या वैष्णवने भैरवकी मजूरी समझकै नारियल दिए. कछू चमत्कार जानिकै नाहीं. तातें अन्याश्रय नाहीं भयो. जो चमत्कार जानि नारियल चढावतो तो अन्याश्रय होतो. तातें हृदयकी भावनासों ही आश्रय और अन्याश्रय होत हैं. तामें क्रिया प्राधान्य नाहीं.

सो यह वैष्णव श्रीगिरिराजमें सदैव रहतो. श्रीगोवर्द्धननाथजीके भण्डारमें जो सामग्री चहियत सो लावतो. सो सामग्री बोहोत सुन्दर ल्यावतो. तातें श्रीगुसांईजी वा वैष्णवके उपर बोहोत प्रसन्न रहते. सो वह वैष्णव श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन सेवा सदैव करतो.

सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो, तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१८७।।

१८८-हंस - हंसनी

अब श्रीगुसांईजीके सेवक हंस - हंसनी, मानसरोवरपै रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये दोउ सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनको नाम 'हंसा' और 'शिवा' हैं. ये दोउ 'श्रीदामा' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक दिन श्रीगुसांईजी आप मानसरोवरपै सन्ध्यावन्दन करत हते. सो तहां एक हंस - हंसनीकौ जोड़ा श्रीगुसांईजीके आगें आइकै जल पीवत हतो. तब आपने कृपा करिकै वाकों नाम सुनायो सो वे मानसरोवरके रूखन पर रहतें. तब एक पारधी आयो. तब हंस - हंसनीकों बान मारे. सो सब दिन पच्यो. परि इनके बान न लागे. तब सन्ध्याकों घर गयो. तब फेरि सवेरे मनमें कही, जो याके बान क्यों न लागे ?

सो वे हंस - हंसनी ब्रजयात्रामें वैष्णव आवते, सो मानसरोवरपै जब वैष्णव आवते पाछें मानसरोवरमें न्हाते, तब वैष्णवनके पांवनकी रजमें लोटते. तब पारधीने जान्यो, जो ये वैष्णवनकी रजमें लोटत हैं. सो मैं वैष्णवनकौ स्वांग करिकै जाऊं. सो मेरे पांवनकी रजमें लोटेंगे. तब मैं पकरि लेउंगो. तब याने वैष्णवनकौ स्वांग ले कै वैष्णवनके सङ्गमें यहू चल्यो आयो. तब हंस बोल्यो, जो यह कौन है ? ताकों जानों हो ? तब हंसनी बोली, जो यह पारधी है. जाने अपनकों बान मारे हते. सो वह वैष्णवनकौ स्वांग ले कै वैष्णवनके सङ्ग आवत है. सो याके पांवनकी रजमें कैसें लोटे ? तब हंस बोल्यो, जो आगें आपुन श्रीगुसांईजीके सेवक ब्राह्मन - ब्राह्मनी हते. और श्रीठाकुरजीकी सेवा करत हते. जो महाप्रसाद अपुन वैष्णवनकों लिवावत हते. सो ब्राह्मन वैष्णवनकों आदर करि लिवावत हते. औरनकों साधारन पक्ष करिकै लिवावत हते. सो ता अपराधसों अपुन हंस - हंसनी भए हैं. और वैष्णवको बानो ले कै पारधी आयो है. सो याके पांवनकी रजमें लोटेंगे. और यह पकरिकै मारेगो तो सुखेन मारो. एक बार मरनो है. पाछें फेरि वे आए. तब वैष्णवनकी पांवनकी रजमें लोटे. पाछें पारधीकी पांवनकी रजमें लौटे. तब पारधी पकरिवे लग्यो. तब हंस - हंसनी दोउनकी पांख पारधीकों लागी. सो परस मात्र तें पारधीकी बुद्धि निर्मल होई गई. तब पारधीने कही, जो अब मैं वैष्णव होऊं तो भलो है. सो उन हंस - हंसनीके सङ्ग तें पारधी भलो वैष्णव भयो.

सो वे हंस - हंसनी मानसरोवरके वृक्षन उपर बैठे रहते. सो जो कोई वैष्णव आवतो ताकी पांवनकी रजमें लोटते. ऐसे सदैव करते. पाछें हंस - हंसनीकी देह छूटी. तब भगवद्चरनारविन्दिको प्राप्त भए.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णवके सङ्ग तें बुद्धि निर्मल होत है. तातें वैष्णवको सङ्ग अहर्निश करनो. और वैष्णव - भावमें जातिकौ विचार नाहीं है. काहेतें, जो वैष्णवकौ स्वरूप ही महा अलौकिक है. क्षूद्र हू जो वैष्णव होई तो ताकों आदर करनो. वाकों अपने तें बड़ो जाने. यह सिद्धान्त जताए.

सो वे हंस - हंसनी श्रीगुसांईजीके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१८८।।

१८९-सेवक एक पारधी

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक पारधी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त है, लीलामें इनको नाम 'विष्वकसेनी' है. ये 'श्रीदामा' तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप है. ये लोहबनमें एक पारधीके जन्म्यो. सो जन्मत ही तें दुष्ट कर्म करे. ऐसे करत वह बरस बीसको भयो. तब एक दिन मानसरोवर शिकारकों गयो. सो उपर कहि आए हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वा पारधीकों परस मात्र ते बुद्धि निर्मल भई. ज्ञान भयो. तब पारधीने कह्यो, जो मैं अब वैष्णव होऊं तो भलो. तब वैष्णवनसों पूछी, जो वैष्णव कैसे हूजिए ? तब वैष्णवनने कही, जो श्रीगोकुल जाइकै श्रीगुसांईजीके पास नाम पावो. तब वैष्णव होंय. तब वह पारधी श्रीगोकुल गयो तब श्रीगुसांईजी श्रीठकुरानी घाटपें सन्ध्यावन्दन करिवेकों पधारे हते. तब पारधी ठकुरानी घाट उपर आयो. तब वैष्णवनसों पूछी, जो श्रीगोकुलके गुसांईजी येही हैं ? तब वैष्णवन कह्यो, जो हां ! येही हैं. तब पारधीने आयकै दण्डवत् कीनी. और बिनती करी,

जो महाराज ! मैं आपकी सरनि आयो हूं. तातें मो पर कृपा करि नाम सुनाइए. तब आपने आज्ञा करी, जो तू तो पारधी है. हंस - हंसनीकों बान मारतो आयो है. तातें हम तोकों नाम कैसे सुनावे ? तब पारधीने बिनती कीनी, जो कृपानाथ ! हो तो मैं ऐसो ही. आप आज्ञा किए तैसोही. परि अब मैं जीवहत्या कबहू न करूंगो. तातें कृपा करि मोकों नाम देहु. तब आपने कही, जो तू जीवहत्या कबहू मति करियो. और चाकरी खेती करिकै निर्वाह करियो. तब पारधीने कही, जो राज ! आपने आज्ञा करी है तैसे ही करूंगो ! तातें अब मोकों सरनि लीजिए. तब आपने आज्ञा करी, जो तू श्रीयमुनाजीमें न्हाइ आउ. तब वह श्रीयमुनाजीमें स्नान करि आयो. तब आपने कृपा करिकै बुलायकै नाम सुनायो. पाछें फेरि आज्ञा करी, जो मैं तोसों फेरि कहत हूं, जो तू जीवहत्या कबहू मति करियो. जाऊ, चाकरि करिकै निर्वाह करियो. सो उन हंस - हंसनीके सङ्ग तें यह पारधी भलो वैष्णव भयो. भलो कृपापात्र भगवदीय भयो. अष्टाक्षर निरन्तर लियो करे.

भावप्रकाश :
या वार्तामें यह जताए, जो कैसोउ पतित जीव होई, परि श्रीगुसांईजीकी सरनि आवे ताकौ श्रीगुसांईजी आप निश्चय उद्धार करत हैं. तातें 'नामरत्नाख्य'में श्रीरघुनाथजी आपुकौ नाम 'महापतितपावनः' ऐसें लिखे हैं. और वैष्णवकों जीवहत्यासों डरपत रहनो, यहू कहे.

सो वह ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ?
वार्ता ।।१८९।।

१९०-पीताम्बरदास

अब श्रीगुसांईजीके सेवक पीताम्बरदास ब्राह्मन, गुजरातके, जिनने श्रीगुसांईजीके सङ्ग ब्रजयात्रा करी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं.

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'ब्रह्मवल्ली' है. ये 'मोहिनी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

ये गुजरातमें एक ब्राह्मनके जन्मे. सो बरस बीसके भए तब इनकों वैष्णवनकों सङ्ग भयो. सो वैष्णवनकी मण्डलीमें जाई, नित्य भगवद्वार्ता सुने. तब इनके मनमें आई, जो हों कब श्रीगुसांईजीके दरसन करों ? वैष्णव होउं ? पाछें कछूक दिनमें माता - पिता मरे. तब एक साथ वैष्णवकौ श्रीगोकुल जात हतो. तिनके सङ्ग ये हू श्रीगोकुलकों चले.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै पीताम्बरदास वैष्णवनके सङ्गमें श्रीगोकुल आए. सो श्रीगुसांईजीके दरसन करिकै साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै बिनती किये, जो महाराजाधिराज ! मोकों नाम सुनाइये. मैं बोहोत दिनन तें भटकत डोलत हों. सो अब मेरो अपराध क्षमा करिये. तब श्रीगुसांईजीने कृपा करिकै पीताम्बरदासकों नाम सुनायो. और निवेदन करवाए. सो श्रीनवनीतप्रियजीके सन्निधान बैठायकै समर्पन करवाए. तब पीताम्बरदासने यथासक्ति भेट कीनी. ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजीकों सेवा तें पहोचिकै अपनी बैठकमें पधारे. सो गादी तकियानके उपर बिराजे. तब सब वैष्णव दरसन करिवेकों आए. तब पीताम्बरदास हू आयकै साष्टाङ्ग दण्डवत् किये. पाछें आप भोजनकों पधारे. सो भोजन करिकै पीताम्बरदासको महाप्रसाद जूठनिकी पातरि धरी. तब पीताम्बरदासने महाप्रसाद लियो. सो पीताम्बरदासकों महाप्रसाद लेत ही ज्ञान भयो. जो श्रीगुसांईजी तो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम हैं. तब पीताम्बरदासने अपने मनमें विचार कियो, जो श्रीगुसांईजीकों छोरिकै कहूं जानो नाहीं. जो इनहीके चरणकमलकौ आश्रय राखनो. सो पीताम्बरदास कहूं गए नाहीं. ता पाछें श्रीगुसांईजी पीताम्बरदासकों अपनी खवासीमें राखे. सो पीताम्बरदास बोहोत प्रसन्नतासों सेवा करते.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
पाछें एक समय पीताम्बदासको मनोरथ यह भयो, जो ब्रजयात्रा करिये. सो श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी. तब श्रीगुसांईजी आप कहें, जो

हम हूं ब्रजयात्रा करिवेकों चलेंगे. तब तुम हू चलियो. तब श्रीगुसांईजी पीताम्बरदासकी आतुरता देखिकै आपने मनमें विचार किये. सो सब सिद्ध कियो. सो चैत्र मासके दिन हते. सं. १६२८ फागुन वदि ७ कों श्रीगोकुलकौ बास किये हते. तब ता उपरांत भाद्रपद वदि १२ के दिन सेन आर्ति करिकै पाछें श्रीगोकुलनाथजीकों सङ्ग ले कै समै देखिकै सङ्कोच तें चले. सो कोऊ जाने नाहीं. सो ऐसे श्रीगुसांईजी आप पधारे. तब रात्रिको श्रीमथुराजीमें रहे. पाछें पास ही 'उजागर' चौबेकों बुलाए हते. सो धर्म स्थापनकों वासों बचन लिए. सम्मतिपूर्वक परम प्रीतिसों विधिपूर्वक 'विश्रामघाट' न्हायकै पधारे. तब चौबेने कही, जो मैं आपके साथ आऊं ? तब श्रीगुसांईजी उनसों कहे, जो तुम काहेको श्रम करो, तुम्हारो वचन लियो चाहिए. और तुमकों निस्वार्थ काहेकों करावे ? तब उन कह्यो, जो महाराज ! पहिले तो 'भूतेश्वर'के दरसनकों पधारिये. तब आपने कह्यो, जो भूतेश्वर यहां तों भलो मानेंगे. सो तहां नाहीं पधारे. सो उहांइ तें उनकों बिदा किये. और आप पधारे. सो भूमि सुन्दर और मयूर पंछीगनको शब्द होत है, ऐसें परमस्थल विषे पधारे. और इतने सेवक श्रीगुसांईजी आपके साथ हते जो

१. चाचा हरिवंशजी २. पीताम्बदास ३. कान्ह ४. मलहा भण्डारी ५. खवो तिवारी ६. गोपीनाथदास ग्वाल ७. केसोदास बिसल नगरा ८. रूपा रजपूत ९. मुरारीदास ग्वाल १०. लीलाधरदास वैष्णवनकी रसोई करत हते. ११. और नारायनदास पांडे आन्योरिया १२. कृष्णदास मोली १३. जशरथ, ये तीन्योजने श्रीगोकुलके कीर्तनीया हते. १४. नारायनदास, १५. रामदासकों श्रीमथुराजी तें सङ्ग लिये. और १६. गीयाजाट टोक बोहोत करत हतो, सो मार्गमें हसावत जातो १७. केसवभट, १८. झांझां मारु नीको, ताको पुत्र १९. भगवानदास गोरवा और २०. भवानी, ये तिलङ्ग ब्राह्मन. और २१ '- २२. गोविन्दी, मथुरनी, गान आछो करत हती. और एक छकड़ा एक कोठी, एक अश्व २३. जीवनदास नबारा, २४. यह रूपा, एक सैया समाज सहित.

सो प्रथम तो 'मधुवन' पधारे. सो कुण्डके उपर स्नान किये. जो भगवत्स्वरूप 'श्रीकल्याणरायजी'के दरसन किये. सो उहां सों स्थल देखत ही पधारे. सो 'तालवन' पधारे. तहां कुण्डमें स्नान किये. ता पाछें 'श्रीबिहारीलालजी'के दरसन किये. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप 'कमोदवन' पधारे. सो कुण्डमें स्नान किये. ता पाछें 'श्रीगोपीनाथजी' तथा 'श्रीकल्याणरायजी'के दरसन. किये सो उहां तें स्थल देखत ही पधारे, सो

पाछें फेरि ‘मधुवन’ पधारे. तब रसोई करिकै श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो. ता पाछें भोग सराय भोजन किये. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप पोढ़े. ता पाछें प्रातःकाल उठिकै देहकृत्य करिके ‘सतोये’ कों ‘सांतनुराजाके धाम’ कों पधारे. सो सांतनुराजाकी कामना सिद्ध करिकै ता पाछें ‘सूर्य’ दरसन करिकै श्रीगुसांईजी ‘बहुलावन’ पधारे. सो तहां ‘बहुला गाय’कों स्वरूप है. सो तहां गौदान करिकै पूजन करिकै ‘श्रीमदनमोहनजी’के दरसन करिकै ‘रिन’ ‘अरिष्ट निवारन’ श्रीगुसांईजी आप किये. ता पाछें तहां ते ‘राधाकुण्ड’ ‘श्रीकृष्णकुण्ड’ स्नान करिकै ता पाछें ‘श्रीराधाजी’ ‘श्रीकृष्णजी’ के दरसन किए. ता पाछें ‘श्यामढ़ाक’ के पास ही पकवान अरोगे. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप ‘गोवर्द्धन’ पाउं धारे. सो वा दिन श्रम बोहोत भयो हतो. जो सूर्य बोहोत तप्यो हतो. सो श्रीगुसांईजीके श्रीअङ्गकों सन्ताप बोहोत ही भयो. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों पधारे. सो श्रीगुसांईजी अपने घर तें विचार कियो हतो, सो श्रीगोकुलनाथजीने ‘धर्मादताप’ चूरन करि लियो हतो. जो धनिया, जीरा आमला सोंठि, जेठी, मिश्री सबकौ समान चूरन करि लियो हतो. सो श्रीगुसांईजी आपकों लिवायो. और आप लिये. तब तत्काल ही स्वास्थ्य भई. तब श्रीगुसांईजी आपकों निद्रा आई. सो भूमि सेज आप पोढ़े. ता पाछें श्रीगोकुलनाथजीकों निद्रा आई हती. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप उठिकै रसोई करी हती. सो श्रीठाकुरजीकों भोग धरि आप भोजन किए. सो रात्रिकों श्रीगुसांईजी आप उहांई पोढ़े. ता पाछें प्रातःकाल उठिके स्नान करिकै श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. ता पाछें मन्दिरमें तें आय श्रीगुसांईजी आप ‘श्रीगिरिराजकी परिक्रमा’ आरम्भ किये. सो श्रीगोवर्द्धनकों दक्षिणावर्त राखिकै, ‘मानसीगङ्गा तीर्थ’ ‘ब्रह्मकुण्ड’ सन्ध्यावन्दन करिकै आप श्रीरसिकरायजी श्रीदानीरायजीके स्वरूपके दरसन करिकै ता पाछें श्रीगुसांर्सजी आप ‘सङ्कर्षन कुण्ड’ को स्नान करिकै धोती पहरिकै तिलक - मुद्रा धारन करिकै परिक्रमा करकै आप निजमन्दिरमें पधारे. पाछें वैष्णव सहित आप भोजन किये. पाछें श्रीगुसांईजी आप गांठौली जाय बसे. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप रात्रिकों उठिकै ‘परमंदरा’ होंइकै पर्वत ‘सुगन्धी सिला’ दाहिनी ले ‘स्वेत पर्वत’कों ‘बद्रीनारायन’ बांई और छोडिकै पाछें ‘इन्द्रौली’ पधारे. ता पाछें श्रीगुसांईजी ‘इन्द्रकूप’को जल - स्नान करिकै श्रीगुसांईजी आप ‘विमलकुण्ड’कौ स्पर्श करिकै ‘सूर्यकुण्ड’ कौ स्नान करिकै ‘श्वेतकुण्ड’ श्वेतबन्धरामेश्वर होई नन्दगोपके कुण्डकों देखिकै ‘चौरासी कुण्ड’ देखिकै आप भाद्रपद सुद १ कों ‘सुनहेरा’की कदमखण्डीकों देखिकै ‘सुनहेरा’ गाम पधारे. सो ‘चित्र - विचित्र’ सिला देखिकै पाछें श्रीगुसांईजी आप अपुने डेरा पधारे. प्रातः ‘देहकुण्ड’में स्नान करि ‘रतनकुण्ड’ में होइकै जलस्पर्श करिकै तहां ‘चिकसोली’ ‘नोवारी चोवारी’ कौ स्पर्श करिकै ‘दोबन’ होयकै आप ‘सङ्केतबन’ पधारे. तहां ‘सङ्केतबट’के नीचे ‘रासमण्डलकौ चौंतरा’ है तहां ‘बैठक’ है.

‘सङ्केत’ ‘विलासवट’ है. तहां ‘कृष्णकुण्ड’ में स्नान करिकै सबबन होइकै पाछें श्रीगुसांईजी ‘मधुकुण्ड’ ‘यशोदाकुण्ड’ स्नान करिकै ‘श्रीनन्दरायजी’ ‘श्रीयशोदाजी’ ‘ललिताकुण्ड’ ‘बजवारी कुण्ड’ होय कै ‘श्रीगोपेश्वर’ होइ पाछें ‘अक्रूरघाट’ ‘उत्तरेश्वरघाट’ होयकै ‘अक्रूरस्थल’ है तहां पधारे. पाछें श्रीगुसांईजी ‘इश्वराकी पोखर’में ‘रागीकी क्यारी’ सो तहां उद्धवजीने ब्रजभक्तनकों ज्ञान उपदेस कियो है, सो तहां ‘मदनकुण्ड’ है, ‘जलबिहारी’ श्रीठाकुरजीकी कदमखण्डी है, तहां पधारे. पाछें श्रीगुसांईजी ‘पानसरोवर’ पधारे. सो तहां श्रीगुसांईजीने रसोई करिकै श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो. पाछें भोग सराय आप भोजन किये. ता पाछें श्रीगुसांईजी भाद्रपद सुद ३ कों ‘खिदरवन’ मूल ‘नानाकुण्ड स्नान करिकै ता पाछें श्रीगुसांईजी आप परिक्रमा, नागवलीकौ दान करिकै पाछें श्रीगुसांईजी ‘करहेला’ और ‘अंजनोंखर’ पधारे. सो तहां श्रीठाकुरजीकों श्रीयशोदाजी अञ्जन देत हैं. सो नौतन कल्प विषे रासको स्थल है. सो सब दाहिनी दिसा छोरिकै तहां श्रीयशोदाजीकौ पीहर है. सो तहां श्रीगुसांईजी डेरा किए. प्रातः तहां बलभद्र कुण्डको स्पर्श किये. ता पाछें ‘चरणपहाड़ी’ देखिकै श्रीगुसांईजी आप ‘दधिगाम’ ‘श्रीव्रजभूषनजी’कै दरसन करिकै ‘संखचुड’ स्थान देखिकै ‘सेषसाई’ बांई और देकै आप ‘सेई गाम’ पधारे. सो वन १७ भए. तहां ‘अलीखान गोरवा’को स्थल है. आगे श्रीगुसांईजी तहां खीर करवाई हती. तब मेह बोहोत बरस्यो हतो. सो वह खीर बहि गई हती. पाछें श्रीगुसांईजी आप सुदी ५ कों आप प्रातःकाल उठिकै ‘रासोली’ ‘बच्छवन’ छोड़िकै ‘सेईगाम’तें ‘रामघाट’ पधारे. तहां श्रीबलदेवजीने उलटी जमुना प्रवाह बहाए हैं. तहां ‘अक्षयबट’ है. तहां प्रलम्बासुरकों मारे हैं. सो ता स्थल होईकै फैरि ‘बलभद्रघाट’ श्रीयमुनाजीके तीर उतरे हते. वन १८ भये. पाछें श्रीगुसांईजी ‘बलभद्रकुण्ड’ मदसूदनकुण्डकौ स्पर्स कियो. सो ‘भाण्डीरबन’कों श्रीगुसांईजी पधारे. आगे ‘भाण्डीरकूप’ है, सो भाण्डीरवनकी परिक्रमा करिकै पाछें श्रीगुसांईजीने रसोई करिकै भोग समर्प्यो. भोग सराय भोजन किये. पाछें बेलवनकों पधारे. वन २० भए. पाछें सूर्य उदय ‘मानसरोवर’ होइकै श्रीगुसांईजी स्नान किए. तहां तें श्रीगुसांईजी ‘रासस्थल’ पधारे. सो यह स्थल सारस्वत कल्प विषे कहे हैं. सो ताही तें सर्वथा देखनो. सो ‘बछरोर’के विषे बच्छासुरकौ वध किये हैं. सो सब बांई और छोरिके श्रीगुसांईजी ‘लोहबन’ पधारे. सो कुण्डकौ स्पर्स किये. बन २१ भए. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप ‘महावन’ पधारे. सो ‘ब्रह्माण्डघाट’ होंईकै यमुलार्जुन होईकै ‘श्रीमथुरानाथजी’के दरसन किये. तहां तें ‘नन्दकूप’ श्रीगुसांईजी पधारे. सो ‘उखल’के सुन्मुख ‘श्रीरोहिनीजीकौ मन्दिर’ देखिकै ‘सप्तसमुद्र’ होईकै ‘उत्तरेश्वर घाट’ होईकै ‘रमनरेती’के दरसन करिकै ‘श्रीगोकुल’कों पधारे. सो श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो. पाछें भोग सराय भोजन करिकै रात्रिकों श्रीमथुराजीमें जाइकै रहे. वन २२ भये. ता पाछें

श्रीगुसांईजी आयकै 'वृन्दावन' पधारे. सो 'धर्मकुण्ड' 'वेणुकूप' श्रीगोविन्दजीके दरसन करिकै ता पाछें केसीघाट होइकै बंसीघाट पधारे. ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीमथुराजी पधारे. सो भाद्रपद सुदि ७ कों बन २४ भये. ता पाछें सब वैष्णव और पीताम्बरदासकों संग लेकै श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुल पधारे. श्रीनवनीतप्रियजी आदि सातों स्वरूपनके दरसन करवाए. सो एसी कृपा श्रीगुसांईजीकै चरनकमल छोरिकै कहूं न गये. रात्रि - दिवस सेवामें अहर्निश तत्पर रहते.

भावप्रकाश :
सो या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णवकों एक बेर ब्रजकी यात्रा अवस्य करनी. तातें ब्रजकौ स्वरूप हृदयारूढ़ होंई. सो ब्रज भगवदीय हैं. तातें उनके दरसन, मानसी, किए तें भगवद्भाव उत्पन्न होंई.

सो वे पीताम्बरदास श्रीगुसांईजीके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ता कहां ताई कहिए. वार्ता ।।१९०।।

१९१-बेनीदास क्षत्री, कड़ाके

अब श्रीगुसांईजीके सेवक बेनीदास क्षत्री कड़ामें रहते, जिनको मार्गमें भूत मिले तिनकौ वार्ताकौ भाव कहत हैं.

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकों नाम 'साध्या' है. ये 'मोहिनी' तें प्रगटी है. तातें उनके भावरूप हैं. सो ये पूरबमें एक क्षत्रीके जन्मे. सो बरस चालीसके भये. तब उनके माता - पिता मरे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

पाछें एक समै पूरवकौ साथ श्रीगुसांईजीके दरसन निमित्त श्रीगोकुल आयो. सो ता साथमें बेनीदास हू अपने घरतें द्रव्य ले कै चले. सो कितनेक दिनमें श्रीगोकुल आय पहोंचे. तब बेनीदासने श्रीगुसांईजीके दरसन किये. सो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम कोटि कन्दर्प लावन्यके दरसन भये. तब बेनीदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! मोकों नाम सुनाईए. तब श्रीगुसांईजी बेनीदाससों आज्ञा किये, जो तू स्नान करि आऊ. तब बेनीदास श्रीयमुनाजीमें स्नान करि आए. और दोउ हाथ जोरिकै बिनती करी, जो महाराज ! मोकों सरनि लीजिए. तब श्रीगुसांईजी बेनीदासकों नाम सुनाये. ता पाछें दूसरे दिन उपवास करायकै श्रीनवनीतप्रियजीके सन्निधान समर्पण कराए. तब बेनीदासके पास जो द्रव्य हतो सो सब श्रीगुसांईजीकी भेंट कियो. ता पाछें श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन करवाए. सो दरसन करिकै बेनीदास बोहोत प्रसन्न भये. पाछें कछुक दिन वैष्णवनके सङ्गमें बेनीदास श्रीगोकुल रहे. तहां श्रीगुसांईजीके श्रीमुखतें सुबोधिनीजीकी कथा सुनते और पंखाकी सेवा करते. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीनाथजीद्वार पधारे. तब ये हू श्रीनाथजीद्वार आये. सो वैष्णवनके सङ्गमें इन श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. सो श्रीगुसांईजीकी कृपासों श्रीगोवर्द्धननाथजी इनकों अलौकिक दरसन दिए. सो देहानुसन्धान भूलि गए. ता पाछें श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मांगि ब्रजयात्राकों चले. सो कितनेक दिनमें सम्पूर्ण ब्रजयात्रा करि आए. तब आयकै श्रीनाथजीके दरसन किये. तब श्रीगुसांईजी बेनीदास सो पूछे, जो तुम ब्रजयात्रा करि आए ? तब बेनीदासने श्रीगुसांईजीसो बिनती करी, जो महाराज ! ब्रजयात्रा तो आपकी कृपा सों बोहोत आछी करी, तब श्रीगुसांईजी सब वैष्णवनकों महाप्रसाद लिवाए. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुल पधारे. और सब वैष्णव श्रीनाथजीसों बिदा भये. सब वैष्णव यथाशक्ति अपने - अपने प्रमान भेट धरे. पाछें सब सङ्ग श्रीगोकुलकों चल्यो. सो आयकै श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन किये. तब एक दिन बेनीदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! मोकों सेवा पधराय दीजे. तब श्रीगुसांईजी आप सेवा पधराय दिए. और सब सेवाकी रीति - भांति सिखाई. तब बेनीदासकों श्रीठाकुरजीके स्वरूपकौ ज्ञान भयो. जो साक्षात् पुरुषोत्तम हैं. सो ऐसी नेष्टा स्वरूप उपर भई. ता पाछें श्रीगुसांईजीसों सब वैष्णव बिदा होंईकै चले. सो मार्गमें एक दिन मेह बोहोत आयो. तब बेनीदासके पास श्रीठाकुरजीकी सेवा हती. सो मेहमें बाहिर कैंसे रहे ? और मेह तो बोहोत आयो. सो बाहिर रह्यो जाय नाहीं. सो तहां एक ब्राह्मन रहतो. सो ब्राह्मनसों बेनीदासने कह्यो, जो जगह होईतो हमको बताय देउ. तब वे ब्राह्मनने बेनीदाससों कह्यो, जो ऐसी जगह बड़ी तो नाहीं है. जो जामें सब सङ्ग साथ रहे. और एक एसी हवेली है. परि उहां भूत रहत हैं. तब बेनीदासने वा ब्राह्मनसों कही, जो याकी तो कछू चिन्ता नाहीं. तब वा ब्राह्मनने वह हवेली बताई. तब बेनीदासने वह

जगह झारि बुहारिकै स्वच्छ कीनी. तब बेनीदासपें श्रीठाकुरजीकी सेवा हती. सो श्रीठाकुरजीकों पधरायकै रसोई करी. पाछें श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो. पाछें भोग सरायकै सब वैष्णवनने और बेनीदासने महाप्रसाद लियो. और रात्रिकों उहांई सोय रहे. तब सवारे भये सब वैष्णव चलन लागे. तब वह भूत आये. तब बेनीदासने श्रीआचार्यजी श्रीमहाप्रभुजी तथा श्रीगुसांईजीकी सपथ दीनी. तब वे जात रहे. सो वे भूत रोयकै गये.

भावप्रकाश :

यामें बड़ो सन्देह है, जो बेनीदासने भूतकों श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजीकी सपथ क्यों दिवाई ? यामें तो श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजीकों श्रम होंई. सो यह मार्गकी रीति नाहीं. तहां कहत हैं, जो बेनीदास अब ही नए वैष्णव भए हैं. तातें श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजीके नामको प्रताप देखनकों या प्रकार कहे. और दूसरो अभिप्राय यह है, जो बेनीदासके पास श्रीठाकुरजी बिराजत हैं सो श्रीठाकुरजीकों कछू श्रम होई, यातें श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजीकी सपथ दिवाई. सो श्रीआचार्यजी श्रीगुसांईजीकी सपथ सों भूत डरपिके भाजे, कछू उपद्रव कियो नाहीं. ऐसो आपके नामको प्रताप है. जैसे जीवनदासने मेहकों श्रीआचार्यजीकी आन दिवाई तब मेह रहि गयो, ता प्रकार यहां हू जाननो. यामें श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजीके नामकौ अलौकिक सामर्थ्य कहै.

ता पाछें सब वैष्णव अपने घरकों गए. सो ऐसो प्रताप श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकौ है. तब बेनीदास श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लागे. सो कछूक दिनमें श्रीठाकुरजी बेनीदासकों सानुभावता जतावन लागे. जो चहिए सो मांगि लेते. पाछें बेनीदासकों भगवद् इच्छातें श्रीठाकुरजीके चरनारविन्दकी प्राप्ति भई.

सो वे बेनीदास श्रीगुसांईजीके ऐसें परम कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१९१।।

१९२-एक वैष्णव गुजरातकौ, जाकौं माहात्म्य दिखायो

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक वैष्णव, गुजरातकौ जिनकौ श्रीगुसांईजीने अपनो माहात्म्य दिखायो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'कमलाकान्ता' है. ये 'मोहिनी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप है.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै श्रीगुसांईजी आप द्वारिका श्रीरनछोड़जीके दरसनकों पधारे हते. सो मारगमें एक गाम आयो. सो ता गाममें श्रीगुसांईजीने डेरा किये. सो ता गाममें वैष्णव बोहोत रहत हते, तामें येहू रहत हुतो. सो याकों श्रीगुसांईजीके दरसन भए. तब याने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मोकों नाम सुनाइए. और मोकों अपनी सरनि लीजिए. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किए, जो तू स्नान करि आऊ. तब वह वैष्णव स्नान करि आयो. तब श्रीगुसांईजीने कृपा करिकै वाकों नाम - निवेदन करवायो. तब वा वैष्णवने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! अब मोकों कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजीने कही, जो श्रीठाकुरजीकी सेवा करो. तब वा वैष्णवने बिनती करी, जो महाराज ! मैं तो आपकी सेवा करूंगो. और आपके साथ ब्रजकों चलूंगो. तब आपने कही, जो आछो. ता पाछें आप तो श्रीद्वारिकाजी पधारे. और यह वैष्णव श्रीगुसांईजीकी सेवामें तत्पर रहतो. श्रीगुसांईजीकी भली भांति सों सेवा करतो. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप उहां कितनेक दिन रहिकै श्रीरनछोरजीके दरसन किये. पाछें श्रीगुसांईजी उहांतें श्रीगोकुलकों विजय किये. सो मार्गमें एक दिन एक जगह श्रीगुसांईजी आप डेरा किये. सो तहां श्रीगुसांईजीने रसोई करिकै श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो. और सब व्रजवासी टहलुवा रसोई करन लागे. तब इतने ही में अकस्मात् मेह चढि आयो. सो अन्धियारो होय गयो. तब या वैष्णवने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! अब कहा प्रकार कीजिए ? तब श्रीगुसांईजी बोले, जो अरे मेह ! तू सम्हारिकै आइयो. हम आन्योरके हैं.

भावप्रकाश :
यह कहि श्रीगुसांईजी आपु अपने स्वरूप जताए. सो कहा ? जो आप साक्षात् नन्दराजकुमार हैं. सो पहिले सात दिना तांई आपने श्रीगोवर्द्धनकों धारन करि

मेघ - वृष्टिकौ निवारन कियो है. सोई यह स्वरूप हैं. सो गोपालदासजी गाए हैं.

श्रीपुरुषोत्तम स्वतन्त्र क्रीडा, लीलाद्विजतनुधारी ।
सात दिवस गिरिवर कर धार्यो, वासव वृष्टि निवारी ।।

सो या प्रकार वेही श्रीपुरुषोत्तम आप द्विजरूप धारन करि प्रगट भए हैं. सो जताए.

तब ताही समय सब घटा उतरि गई. सो तहां श्रीगुसांईजीने या भांति अपने स्वरूपकौ माहात्म्य दिखायो. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप भोग सराय भोजन किए. ता पाछें सब व्रजवासी टहलुवानकों महाप्रसाद लिवायो. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुल पधारे. तब यह वैष्णव हू साथ आयो. सो श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन किये. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीनाथजीद्वार पधारे. तब वह वैष्णव हू साथ आयो. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किए. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप वा वैष्णवकों श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवामें राखे. सो वह वैष्णव सेवा भली भांतिसों करन लाग्यो. सो जहां तांई वाकी देह चली तहां ताई सेवा करी.

सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ता कहां ताई कहिए. वार्ता ।।१९२।।

१९३-एक वैष्णव, गुजराती ब्राह्मन. जाके घर ठग वैष्णवकौ स्वांग धरि आयो

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक वैष्णव, गुजराती ब्राह्मन, जाके घर ठग वैष्णवकौ स्वांग धरिकै आयो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :

ये तामस भक्त है. लीलामें इनकौ नाम ‘मनोत्सवा’ है. ये श्रीनन्दरायजीके भाट ‘उमाशङ्कर’की बेटी है. उनते प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

ये गुजरातमें एक द्रव्यमान ब्राह्मनके जन्म्यो. सो वा ब्राह्मनके और सन्तति न हती. तातें वह या लरिका पर बोहोत प्यार करें. ऐसें करत यह बरस दस - बारहकौ भयो. तब मा - बापने याकौ ब्याह कियो. तब गाममें रोगकौ उपद्रव भयो. तामें या ब्राह्मनके मा - बाप मरे तब, घरमें वह ब्राह्मन स्त्री - पुरुष रहे.

सो एक समै श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी पधारत हते. सो मारगमें या ब्राह्मनकौ गाम आयो. सो तहां आप डेरा किये, तलावपें. सो ता समै यह ब्राह्मन तलाव पर न्हाइवेकों आयो हतो. सो इन श्रीगुसांईजीके दरसन पाये. तब मनमें कहे, जो यह कोई महापुरुष हैं, तातें इनकी सरनि जइए तो आछो. तब ये न्हाईके श्रीगुसांईजीके पास आयो. पाछें बिनती कियो, जो महाराज ! कृपा करिकै हमकों सरनि लीजिए. तब श्रीगुसांईजी वाकों नाम - निवेदन कराए. ता पाछें घर आइ वह अपनी स्त्री तथा पुत्रकों हू ल्यायो. पाछें उनहूकों नाम - निवेदन करवायो. तब या ब्राह्मनने बिनती कीनी, जो महाराज ! अब हम कहा करें, जातें यह धर्म सिद्ध होंई ? तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो तुम भगवत्सेवा करो. और वैष्णवनकौ सङ्ग करो. और मुख सों अष्टाक्षरकौ अहर्निश उच्चार करो. तातें तुमकों भगवद्धर्म सिद्ध होइगो. तब वा ब्राह्मनने कही, जो महाराज ! श्रीठाकुरजी पधराय दीजिए. तब आपने एक लालजी पधराय दिये. और सेवाकी रीति बताई. तब यह ब्राह्मन तथा उनकी स्त्री श्रीठाकुरजीकी बड़ी प्रीतिसों सेवा करन लागे. आए गए वैष्णवनकौ बहोत समाधान करे. उनकों सत्सङ्गके ताई घरमें प्रीतिसों राखे. और अष्टाक्षर हू नित्य लेई. क्षण एक भूले नाहीं. सो कछूक कालमें इनको भगवद्धर्म सिद्ध भयो. सो वानी हू सिद्ध भई, जो कहे सोई होइ. और निर्दोष दृष्टि भई. काहूके औगुन न दीसे. सब भगवल्लीला रूप दीसे. सो प्रभु तत्काल अनुभव जतावन लागे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो एक ठग वा वैष्णवके घर आइ उतर्यो. सो वैष्णवकौ स्वांग धरिकै आयो. सो वा वैष्णवने वाकी बोहोत ही आगता - सागता कीनी. अपने घर राखे. सो वह ठग नित्य घरमें देखे. परि दाव पावे नहीं. सो एक दिना ‘ग्वालिया एकादसी’ आई. तब वा वैष्णवके एक बरस डेढ़कौ लरिका हतो. ताकों गहना बोहोत ही पहरायो तब वा ठगने अपने मननें कही, जो आज दाव है. तब स्त्रीसों कही, जो मैं

लरिकाकों खिलाय ल्याऊ. तब उनने कही, जो सुखेन खिलावो. तब वह ठग वा लरिकाको वाड़ामें ले गयो. सो जांईके फांसी दई. गहनो सब उतारि लियो. खाड़ो खोदिकै वाकों गाड़िकै उहां सों चल्यो. सो रस्तामें भागजोगि तें वह वैष्णव मिल्यो. सो वाने कही, जो तुम प्रसाद लिए बिनु क्यों जात हो ? राजभोगकौ समय है. तातें ऐसें हमारे कहा अभाग्य है, जो हमारे घरसों तुम भूखे जाऊ ? तब ठगने कही, जो मैं तो जाउंगो. इनने कही, जो नहीं वैष्णव ! महाप्रसाद लिये बिना तो नहीं जाइवे दउंगो. ऐसें कहिकै वह वैष्णव वाकों घर ले आयो. पाछें स्त्रीसों पूछी, जो कहा समय है ? तब स्त्रीने कही, जो राजभोग आए हैं. और स्त्रीने वा ठगसों पूछी, जो लरिका कहां है ? तब वाने कही, जो इहांई सोयो होयगो. सो इतमें उतमें देखे सो दीसे नाहीं. पाछें वा वैष्णवने वाड़ामें जायके देख्यो, तो धूरि खुदीसी देखी. सो धूरि सरकावे तो भीतर लरिका गड्यो है. तब कही, जो उठि. इन वैष्णवकों जैश्रीकृष्ण करि. इतनेमें लरिका उठ्यो. सो वाकों जैश्रीकृष्ण कियो. तब वह ठग कांप्यो. तब वाने कही, जो वैष्णव ! तुम्हारो ऐसो सांचो धर्म है ? सो ऐसें कहिकै गहना आगें धर्यो. और कह्यो, जो मोहूंकों वैष्णव करो. तब वा वैष्णवने कही, जो वैष्णव तो श्रीगुसांईजी करेंगे. तब वा ठगने कही, जो मोकों श्रीगुसांईजी आप कहा जानें ? तुम पत्र लिखि देऊ. तब वा वैष्णवने पत्र लिख दियो. सो पत्र ले कै श्रीगुसांईजी पास श्रीगोकुल आयो, पाछें बिनती करी, जो महाराज ! मोकों कृपा करिकै सरनि लीजिए. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो तू ठग है. तब वाने कही, जो अब मैं ठगपनो न करूंगो. तब आपने कही, जो तू निर्वाह कैसे करेगो ? तब वाने कही, जो राज ! चाकरी करिकै खाऊंगो. तब आपने कृपा करिकै नाम सुनायो. या प्रकार वा वैष्णवके सङ्ग तें यह ठग हू वैष्णव भयो.

भावप्रकाश :

या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णव वेषधारी हू होई, तऊ घर आए पैं वाकौ सत्कार करनो. भूखे जान नहीं देनो. और भगवदीय वैष्णवके छिनक सङ्ग तें कैसो हू अधम जीव होंई सोहू कृतार्थ होत है, यहू जताए.

सो वह गुजराती वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१९३।।

१९४-गोपालदास, बड़नगरके

अब श्रीगुसांईजीके सेवक गोपालदास, बड़नगरके बासी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत है

भावप्रकाश :
ये राजसी भक्त है. लीलामें इनकौ नाम 'बलदेवी' है. ये 'उमाशङ्कर' तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप है.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समय श्रीगुसांईजी आप बड़नगर पधारे हते. तब गोपालदासने बिनती करी, जो महाराज ! मोकों सरनि लीजिए. तब आपने गोपालदासकों नाम ब्रह्मसम्बन्ध करवायो. पाछें गोपालदासनें श्रीगुसांईजीसों श्रीठाकुरजी पधरायवेकी बिनती करी. तब आपने कृपा करिकै श्रीठाकुरजी पधराय दिये. और आज्ञा किए, सो श्रीठाकुरजीकी सेवा नीकी भांतिसों करियो. पाछें आप उहां सों श्रीद्वारिकाजी पधारे. फेरि उहां सों श्रीगोकुल पधारे.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
पाछें एक समय गुजरात तें सङ्ग श्रीगोकुलकों आवत हतो. सो ता सङ्गमें गोपालदास हू आये. सो आयकै श्रीनवनीतप्रियजीके राजभोगके दरसन किये. पाछें श्रीगुसांईजीके दरसन किये. तब श्रीगुसांईजी आप आज्ञा किये, जो वैष्णव ! महाप्रसाद इहांई लीजियो. तब वैष्णवन कही, जो आज्ञा. तब गोपालदासने कही, जो महाराज ! आज्ञा होंइ तो मैं पहोंचि आऊं. तब आपने कही, जो आछौ. सो यों कहिकै आप तो भोजनकों पधारे. सो भोजन करिकै सब वैष्णवनकों महाप्रसाद लिवायो. फेरि आप पोढ़िकै उठे. तब गोपालदास पहोंचिकै आयो. तब आपने कही, जो महाप्रसाद लवेकों ना आयो ? तब कही, जो महाराज ! जूठनि महाप्रसादकी तो इच्छा है. तब आपने जूठनिकी पातरि

धरी. तब गोपालदास जूठनि लेवेकों बैठे. सो पातरिमें सों जूठनि निघटे नाहीं. तब आपने पधारिकै कही, जो कैसे हैं ? तब गोपालदासने कही, जो महाराज ! जूठनि तो पातरि में न छोड़ूंगो. तब आपकी कृपा दृष्टिसों बराबरि व्है रही. तब आपने कही, जो तेरो मनोरथ सिद्ध भयो ? तब कही, जो आप बिना कौन करे ? ता पाछें गोपालदासने श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मांगि श्रीनाथजीके दरसन करिकै ब्रजयात्रा करी. पाछें श्रीगोकुल आए. पाछें श्रीगुसांईजीसों बिदा व्है गोपालदास और सब वैष्णव अपने घरकों गए.

भावप्रकाश :
या वार्तामें महाप्रसादकौ स्वरूप दिखायो. जो महाप्रसाद कबहू निघटे नाहीं. तातें महाप्रसादमें लौकिक बुद्धि करनी नाहीं.

सो वे गोपालदास श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१९४।।

१९५-मां - बेटी, राजनगरकी

अब श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी मा - बेटी, राजनगरकी सो वे राजनगरमें रहती, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये दोउ सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनके नाम 'सुषुमा' और 'रतिक्रीडा' हैं. सो 'सुषुमा' मा कौ प्रागट्य और 'रतिक्रीडा' बेटीकौ जाननो. ये दोउ 'उमाशङ्कर' तें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै श्रीगुसांईजी आप राजनगरमें भाईला कोठारीके घर बिराजत हते. सो सब गामकी लुगाई दरसन करिवेकों आवती. तामें मा -

बेटी हू दरसन करिवेकों आवती. सो वाकी मा तें आपने कही, जो या बेटीके भाग्य है. तब वा डोकरीने कही, जो महाराज ! आप कही, तातें ये सभाग्य होइगी. तब आपने वाकों नाम सुनायो. दूसरे दिन दोउनकों ब्रह्मसम्बन्ध करवायो. पाछें आपने कही, जो सेवा करो. तब उनन कही, जो महाराज ! सेवा काहेसों बने ? हमारे पास तो कछू है नाहीं. तब आपने कही, जो दारि रोटी तो घरमें करो हो ? तब माने कही, जो हां महाराज ! दारि रोटी तो घरमें करे हैं. तब श्रीगुसांईजी आपु आज्ञा किये, जो दारि रोटी भोग धरो परन्तु श्रीठाकुरजी पधरावो. तब कही, जो राज ! मङ्गलामें, बंटामें, उत्थापनमें कहा धरे ? तब आपने कही, जो बाजरी तो घरमें है. तब वाने कही, जो महाराज ! बाजरी तो घरमें है. तब आप कहे जो एक मुठी दोई मुठी भींजोय दियो करि. सो मङ्गलामें, उत्थापनमें बंटामें धर्यो करि. तब उन कही, जो राज ! वस्त्र कहां तें ल्याऊं ? तब आप कहे, जो साड़ी तो पहरति हो ? वामें सों एक हाथ पहले फारि लियो करो. ताके वस्त्र करो. तब वाने कही, राज ! बोहोत आछो. कृपा करिकै श्रीठाकुरजी पधराय दीजे. तब आपने आज्ञा करी ता प्रमान सेवा करन लागी.

सो श्रीगुसांईजी छठ्ठी बेर राजनगर पधारे. तब एक वैष्णवके घर पधरावनीकों पांऊ धारे. तब आपने पधारतमें मार्गमें घंटानाद सुने. तब आपने पूछी, जो यहां कोई वैष्णव रहे है कहा ? तब कही जो राज ! एक मा - बेट रहत हैं. तब आपने कही, जो वाके घर पधारेंगे. सो आप कृपा करिकै वाके घर पधारे. पाछें पूछी, जो कहा समय है ? तब कही, जो राज ! उत्थापन भोग धर्यो है. तब आप पधारिकै देखें तो वामें सों बाजरीके दाना श्रीठाकुरजी आप अरोगि रहे हैं. सो दोनों हाथनसों दानाकों उठावत हैं. सो देखिके श्रीगुसांईजी आपकौ हृदय भरि आयो. सो फेरि बाहिर पधारिकै बिराजे. तब आप वा डोकरीकों आज्ञा किए, जो भोग सरे तब महाप्रसाद ले कै इहां आइयो. पाछें वा डोकरीने भोग सरायो. तब उत्थापनकी कटोरी ल्यायकै आपके श्रीहस्तमें दिए. तब आपने वैष्णवनसों पूछी जो तुम्हारों इनसौं ब्यौहार है ? तब उनन कही, जो राज ! नाहीं है. तब आपने कही, जो हमारे तो है. यों कहिकै आप बाजरीके दाना श्रीमुखमें मेले तब वैष्णवन कही जो राज ! हमकों कृपा करिकै दीजिए. तब आप कृपा करिकै सबनकों दिये. सो अति अलौकिक स्वाद भयो. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो अब तो सभाग्य भई ? तब वा डोकरीने कही, जो आपने करी तब भई. पाछें आप उहां सौं पधरावनी में पधारे. फेरि भाईला कोठारीके घर पधारे. सो ऐसें निष्कञ्चन वैष्णवनके उपर आप सदैव कृपा करते.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णवकों सेवा किये बिनु सर्वथा न रहनो. निष्कञ्चन होंई तोऊ या मा - बेटीकी नांई सेवा करे, तातें दीनता दासत्व सिद्ध होंई. तब प्रभु या प्रकार साक्षात् अनुभव जताए. और वैष्णव सभागी होंई. यह जताए.

सो वे दोऊ मा - बेटी श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१९५।।

१९६-दो ठग चोर, जाने वीरांके गरेमें फांसी डारी

अब श्रीगुसांईजीके सेवक दो ठग चोर, जाने वीरांके गरेमें फांसी डारी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये दोऊ तामस भक्त हैं. लीलामें ये दोउ बहिरङ्ग गोप हैं. एककौ नाम 'वामन' और दूसरेकौ नाम 'हरि' हैं. सो एक दिन इनने शाण्डिल्य मुनिकों ठगे. ता अपराध तें ये भूतल पर आए. ये 'शाण्डिल्य मुनि' तें प्रगटे हैं. तातें उनके भावरूप हैं.

सो ये दोउ गुजरातमें हीन जातिमें जन्मे. सो बालपनेसों चोरी, ठगाई करन लागे, पाछें ये दोउ बड़े भये तब इकठोरे भये.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समय गुजरातके दो ठग चोर वैष्णवके वेष धारन करिकै नारायनदासके घर गए. तब नारायनदासने वह चोर वैष्णव जाने न हते. उनने वैष्णव जानीकै बोहोत आदर सन्मान कियो. सो वह रात्रि दिन भगवद्वार्ता करे. और नारायनदासके यहां महाप्रसाद ले. सो ऐसे

करत बोहोत दिन बीते. परि कबहू इन ठग वैष्णवकौ दाव परे नाहीं. जो घरमें तें कछु ले जाई. पाछें एक दिन नारायनदासकी स्त्री वीरांसों कही, जो आज एकान्तमें भगवद्वार्ता गोप्य करिये. तब वाने कही, जो भले. सो ता समै नारायनदास तो राजदरबारमें गए हते. सो वे दोउ ठग और वीरां एकान्तमें भगवद्वार्ता करन लागे. सो वीरांकौ मन भगवद्वार्तामें लाग्यो. सो रसमें बिवस भई. तब एक जनेंने बीरांके गरेमें फांसी डारी. सो ता समय वीरां जितनो गहना पहेरे हती, सो सब ठगने उतारि लियो. उतारिकै अपनो दाव देखिकै निकसि चले. सो पेंड़ेमें नारायनदास राजद्वार तें आवत हते. सो साम्हे मिले. तब नारायनदासने उन ठग वैष्णवनकों पूछी, जो तुम महाप्रसाद लियो ? तब उनके मुखतें नाहीं निकसी. तब उन ठग वैष्णवनसों नारायनदासने कही, जो महाप्रसाद लिये बिना क्यों जात हो ? सो यह तुमकों उचित नाहीं. तुम हम पास तें बिदा भए बिनु कैसे जाउगे ? तब नारायनदास उन ठग वैष्णवनकों पाछें ले आए. तब तुरत ही उन ठग वैष्णवनकौ महोडो सूकि गयो. और अपने मनमें अति डरपन लागे. जो मति हमकों मारे. सो ऐसें सोच करत नारायनदासके सङ्ग आए. तब नारायनदासने अपनी स्त्रीकों देखी नाहीं. सो लोंडीसों पूछी, वे कहां हैं ? तब लोंडीने डरपिकै कही, जो घरमें मरी परी हैं. इनने गरेमें फांसी डारी है. तब नारायनदास घर भीतर गए. सो देखे तो गरेमें फांसी लागी है. और मरी परी है. तब नारायनदासने गरेकी फांसी काढ़ी. और उपर चरनोदक छिरकिकै भगवन्नाम ले कै कह्यो, जो उठो, वैष्णव भूखे हैं. सो सगरे मिलिकै महाप्रसाद लेई. सो इतनो सुनत मात्र ही वीरां उठि ठाढ़ी भई. तब वह ठग नारायनदासके पांवन पर्यो. तब उन ठग वैष्णवनकों नारायनदासने कही, जो हाय हाय ! तुम ऐसो अनुचित क्यों करत हो ? जो तुम वैष्णव होइके हमकों अपराधमें क्यों डारत हो ? सो हमकों तो अब बड़ो अपराध पर्यो है. और तुम तो बड़े भगवदीय हो. सो तुम तें ऐसी बात कबहूं होंई नाहीं आवे. जो यह तो कोई इनकौ भोग होइगो. सो तुमने थोड़े ही में छुराई दियो है. सो याकौ सब दोष निवृत्त भयो.

भावप्रकाश :
या वार्तामें सर्वात्मभाव जताए, सो कहा ? जो कर्ता कारयिता तो हरि हैं. तातें, जो कछू होत है सो भगवदीच्छा तें प्रारब्ध बस होत हैं. तातें मनुष्य तो निमित्त मात्र है. और वैष्णवनमें गाढ़ी प्रीति दिखाई. जो वैष्णव ऐसो काम सर्वथा न करे. या प्रकार अलौकिक बुद्धि होई तो मार्ग फले.

ता पाछें नारायनदासने उन दोउनकों महाप्रसाद लेवेकों बैठारे. तब उनन भली भांति महाप्रसाद लियो. ता पाछें उन ठगनने नारायनदाससों कही, जो अब तुम हमकों वैष्णव करो. सो ताही समै बोहोत ही हठ कियो. और फांसी तो तोरिकै बाहिर डारि दीनी. तब नारायनदासने उन ठगनसों कह्यो, जो तुम श्रीगोकुल श्रीगुसांईजीके पास जांयकै नाम पाय आवो. पाछें नारायनदासने श्रीगुसांईजीकों एक बिनती पत्र लिखि दियो. और वाटकी खरची दे कै बिदा किये. तब वे चोर उहां ते चलें. तब श्रीगोकुल आइकै श्रीगुसांईजीकों वह पत्र देकै बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! हम तें यह अपराध नारायनदासकी स्त्री वीरांकौ भयो है. सो हमारो अपराध क्षमा करिकै हमकों सरनि लीजिए. सो ऐसे कहिकै बोहोत ही आग्रह कीनो. तब श्रीगुसांईजीने कृपा करिकै नाम सुनायो. तब वे चोर - ठग भले भगवदीय भए. तातें सङ्ग करनो सो भगवदीयकौ करनो. सो नारायनदासके सङ्ग तें वे चोर ठग भले भगवदीय भए. ता पाछें उन चोरनने श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन करे. सो दरसन करिकै बोहोत ही प्रसन्न भए. ता पाछें उन वैष्णवनकों महाप्रसाद लिवायो. ता पाछें वे चोर ठग वैष्णव श्रीगुसांईजीसों बिदा व्है कै श्रीनाथजीके दरसनकों आए. ता पाछें दिन दोई चारि उहां रहिकै फेरि श्रीगोकुल आए. सो आयकै श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! आज्ञा होंइ तो हम अपने देसकों जांई. तब उनकों एक पत्र श्रीगुसांईजीने नारायनदासके नामकौ लिखि दीनो. सो वे वैष्णव पत्र ले कै नारायनदासके पास आए. सो नारायनदासकों वह पत्र दीनो. सो नारायनदासने अपने माथे चढ़ायकै वह पत्र लियो. और उन वैष्णवनको महाप्रसाद लिवायो.

भावप्रकाश :
या वार्तामें भगवदीयके सङ्गकौ उत्कर्ष कह्यो, जो भगवदीय वैष्णवके सङ्ग तें सर्वथा कारज होंई. तातें भगवदीय वैष्णवकौ सङ्ग करनो

सो वे ठग वैष्णव श्रीगुसांईजीके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय भए. सो इनकी वार्ता कहां तांई कहिए.
वार्ता ।।१९६।।

१९७-एक सेठ, एक विरक्त, जाकी मेंड़के उपर तें कुत्ता निकसि गयो

अब श्रीगुसांईजीके सेवक एक सेठ, एक विरक्त, जिनकी मेंडके उपर होंईकै कुत्ता निकसि गयो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सेठ राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम ! 'मनःकामना' है. और विरक्त मनःकामनाकी सहचरी 'घोषनारी' है. ये दोउ 'शाण्डिल्य मुनि' तें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं.

सो सेठ गुजरातमें एक द्रव्यपात्र बनियाके घर प्रगट्यो. और विरक्त एक निष्कञ्चन ब्राह्मनके जन्म्यो. सो विरक्त बरस दसको भयो तब इनके मा - बाप मरे. पाछें ये चुकटी मांगिके अपनो निर्वाह करे. ऐसे करत ये बरस तीसकौ भयो. तब श्रीगुसांईजी द्वारिकाकों पधारे, सो वा गाममें डेरा किये. सो तहां मायावादी बहोत हते. सो श्रीगुसांईजीसों शास्त्रार्थ करिवेकों आये. तब श्रीगुसांईजी आप शास्त्रार्थ करि उन सबनकों निरुत्तर किये. सो आपको तेज प्रताप देखि सगरो गाम वैष्णव भयो. सो सेठ और विरक्त दोउ श्रीगुसांईजीके पास बिनती करि नाम - निवेदन पाए. पाछें इन दोउन पूछ्यो, जो महाराज ! अब कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजी आप दोउनकों श्रीठाकुरजी पधराय दिए. पाछें आज्ञा किए, जो तुम इनकी नीकी भांतिसों सेवा करियो. तब दोउन बिनती किये, जो महाराज ! हमतो सेवामें कछू समुझत नाहीं. तब आप उहां तीन दिन और बिराजे. दोउनकों सेवाकी रीति सिखाए. पाछें आप द्वारिका पधारे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समय श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी तें श्रीगोकुलकों आवत हते. सो गुजरात तें सेठ तथा विरक्त वैष्णव दोउ जनें आवत हते. सो श्रीगुसांईजी आपके सङ्ग हते. सो विरक्त वैष्णव सङ्गमें ते चुकटी मांगि ल्यावतो. पाछें स्नान करिकै रसोई करतो. तब रसोई करिकै श्रीठाकुरजीकों भोग धरतो. पाछें भोग सराय श्रीठाकुरजीकों पोढ़ायकै महाप्रसाद लेतो. और कोई वैष्णव महाप्रसाद लेवेकों बुलावतो सो काहूके जातो नाहीं. सो एक दिन रात्रिकौ महाप्रसाद धर्यो हतो, लीनो न हतो. पाछें कुत्ता आयो. सो मेंड़के भीतर होंइकै निकसि गयो. तब या वैष्णवने काहूकों रखवारी राखिकै श्रीगुसांईजीकों बिनती कीनी, जो महाराज ! महाप्रसाद धर्यो हतो सो मेंड़में होंइकै कुत्ता निकसि

गयो. ताकी कहा आज्ञा है ? तब आपने आज्ञा करी, जो महाप्रसाद लेऊ. प्रसाद न छुवे. तब या वैष्णवने जायकै महाप्रसाद लियो. तब फेरि कछूक दिनमें वा सेठके रसोई भई. सो इनने भोग धरि, भोग सराय, महाप्रसाद धरि राख्यो हतो. काहूने लीन्हो न हतो. तब कुत्ता आयो. सो मेंडके उपर होंइकै निकसि गयो. तब सेठने जांइकै श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! भोग सराय महाप्रसाद धरि राख्यो हतो. काहूने लीनो न हतो. तब कुत्ता आया. सो मेंडके उपर होंइकै निकसि गयो. सो जैसें आपु आज्ञा करो तैसें करे. आज्ञा होंई तो महाप्रसाद लेई. तब आपने आज्ञा करी, जो मति लेहू, महाप्रसाद छूयो. तब सेठने आइकै सब महाप्रसाद गायनकों दीनो. और वा सेठके फेरि दूसरी रसोई भई. पाछें पुस्तककों भोग धरिकै, भोग सरायकै, महाप्रसाद लियो. फेरि दूसरे दिन श्रीगुसांईजीके आगें सेठने बिनती कीनी, जो महाराज ! विरक्त वैष्णवके चौका भीतर होंइकै कुत्ता निकसि गयो और रसोई छुई नाहीं और हमारे मेंड़ पर होंइकै कुत्ता निकसि गयो तोऊ छूय गई. सो याकौ कारन कृपा करिकै कहिए ? तब श्रीगुसांईजीने आज्ञा करी, जो या विरक्त वैष्णवकों फेरि रसोई न बनती, भूखो रहतो. और कहूं महाप्रसाद लेवेकों जातो नाहीं. और तुम्हारे रसोई तुरत बनि गई. भोग धर्यो. भोग सरायकै महाप्रसाद लियो. तातें तुमतो सेठ हो सो छूय जाय. और विरक्तके न छूवे.

भावप्रकाश :
यह कहि यह जताए, जो अपरस सामर्थ्य अनुसार है. जैसी सामर्थ्य होंई तैसी अपरस राखे. परि कपट करे नाहीं. सामर्थ्य होंई औंर कहे, जो हम सों तो ऐसी अपरस बनत नाहीं. ऐसो न करिए. नांतरु अपराध होंई. काहेतें जो अपरस तो श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप प्रगट किये हैं. तातें वैष्णव यथासक्ति आग्रहपूर्वक अपरस राखे, जो श्रीआचार्यजी प्रसन्न व्है. पुष्टिमार्गके धर्म सिद्ध होई. एक दृढ़ आश्रय होंई. अन्य सम्बन्ध सब छूटे. श्रीआचार्यजी कृपा करें. और महाप्रसाद न छूवे यहू कहे.

पाछें सेठ श्रीगुसांईजीके सङ्ग आयकै श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. तब दरसन करिकै नानाप्रकारके मनोरथ किए. पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुल पधारे. तब आपके सङ्ग श्रीगोकुल आए. तब श्रीनवनीतप्रियजी आदि सातों स्वरूपनके दरसन किए. पाछें सातो स्वरूपनकों मनोरथ कियो. और कृपा करिकै जूठनि महाप्रसाद सब वैष्णवनकों लिवायो. पाछें वैष्णवनने आज्ञा मांगी जो महाराज ! आपकी आज्ञा

होइ तो ब्रजयात्रा करि आवे. तब आप आज्ञा दीनी, जो सुखेन करि आवो. सो आपकी आज्ञा ले कै ब्रजयात्रा करिकै पाछें श्रीगोकुल आये. तब आयकै श्रीगुसांईजीकौ दण्डवत् करी, पाछें बिनती करी जो महाराज ! आपकी कृपा तें ब्रजयात्रा करि आए. तब श्रीगुसांईजी आप आज्ञा किये, जो ब्रजयात्रा तो तुम करि चुके. अब कछुक दिना श्रीगोकुल रहो. तब वैष्णवनने बिनती करी, जो महाराज ! कृपा करिकै बिदा करोगे. तब जांईगे. पाछें कछुक दिन श्रीगोकुल रहिकै श्रीगुसांईजी सों बिनती करी, जो महाराज ! आज्ञा होइ तो अब हम अपने देशकों जाई. तब आप उनकों बिदा किये. पाछें वे सब गुजरातकों आये. पाछें वह सेठ और विरक्त अपने श्रीठाकुरजीकी सेवा भली भांतिसों करन लागे.

सो वह सेठ और विरक्त श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१९७।।

१९८-गोवर्द्धनदास, मन्नालाल, दोउ भाई

अब श्रीगुसांईजीके सेवक गोवर्द्धनदास, मन्नालाल, दोउ भाई, गुजरातकै बासी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत है.

भावप्रकाश :
ये दोउ सात्विक भक्त है. लीलामें यो दोउ श्रीचन्द्रावलीजीकी सखी हैं. सो गोवर्द्धनदासकौ नाम 'देवकी' है और मन्नालालकौ नाम 'यशोदा'. ये शाण्डिल्य मुनि ते प्रगटे हैं. ताते इनके भावरूप है.

ये दोउ गुजरातमें एक ब्राह्मनके जन्मे. सो बरस बीस - बाईसके भए तब इनके माता - पिता मरे. तब ये दोउ यात्राकों चले.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वे दोउ भाई श्रीगोकुल आए. सो ता समय श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजीकों राजभोग धरिकै श्रीयमुनाजी स्नान सन्ध्या - वन्दन करिवेकों पधारे हते. सो वैष्णवके सङ्गमें गोवर्द्धनदास, मन्नालाल दोउ भाई आए. सो श्रीगुसांईजीके दरसन किये. सो दरसनकै इनके मनमें आई, जो इनकी सरनि जैये तो आछो है. तब श्रीगुसांईजी तो राजभोगकौ समय जानिकै मन्दिरमें पधारे और साथ वैष्णव डेरा करिकै दरसनकों आए. सो श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन किये, ता पाछें श्रीगुसांईजी अनोसर करिकै अपनी बैठककें पधारे. तब सब वैष्णव श्रीगुसांईजीके दरसनकों आए. तब गोवर्द्धनदास, मन्नालाल हू आए. तब इनने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! हमकों कृपा करिकै सरनि लीजिये. तब श्रीगुसांईजीने उन दोउ भाईनकों नाम सुनायो. तब उन दोउ भाइनने बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! हमकों कृपा करिकै निवेदन कराइए. तब श्रीगुसांईजी श्रीमुखसों कहे, जो काल्हि तुम उपवास करो. पाछें तुमकों निवेदन करावेंगे. तब उन दोउ भाईनने उपवास कियो. पाछें आयकै श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! काल्हि उपवास कर्यो है और अब कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो श्रीयमुनाजीमें स्नान करि आवो. तो अपरसके वस्त्र पहरिकै आइयो. तब वे दोउ भाई स्नान करि अपरस ही में आए. तब श्रीगुसांईजीने श्रीनवनीतप्रियजीके सन्निधान निवेदन करवायो. तब ये भाई बड़े कृपापात्र भगवदीय भए.

पाछें जब कछु उनके मनमें सन्देह पड़तो तब वे श्रीगुसांईजीसों पूछते. सो ताकों प्रतिउत्तर श्रीगुसांईजी आप कहे सो सुनते. और अपने मारगकी सब प्रनालिका सीखे. पाछें वे श्रीगुसांईजीकी आज्ञा ले ब्रजयात्राकों गए. सो कछुक दिनमें ब्रजयात्रा पूरी करिकै दरसन किये. पाछें वे दोउ भाई श्रीगोकुलकों आए. सो श्रीनवनीतप्रियजीके राजभोगके दरसन किये. पाछें केतेक दिनमें वह साथ अपने देसकों चल्यो और गोवर्द्धनदास, मन्नालाल दोउ भाई इहांई रहे. पाछें श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! हमारे माथे श्रीठाकुरजी पधराय दीजिए. तब श्रीगुसांईजी उनके माथें श्रीठाकुरजी पधराय दिए. सो वे दोउ भाई भली भांति सों सेवा करन लागे. ता पाछें केतेक दिन तांई श्रीगोकुलमें रहिकै पाछें श्रीगुसांईजीसों दोउ भाई हाथ जोरि बिनती किये, जो महाराजाधिराज ! आज्ञा होंइ तो हम अपने देसको जाई. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो बोहोत आछौ. तब वे दोउ भाई कछुक दिनमें अपने घर आय पहोंचे. सो श्रीठाकुरजीकी सेवा भलीभांति सों करन लागे. और कोई वैष्णव आवे तो तिनको बोहोत भलीभांति सों समाधान करते. राखते. उनसों मिलिकै वैष्णवकी वार्ता पूछते. कहते. या भांति रहते. सो उन दोउ भाईनकों श्रीठाकुरजी तत्काल सानुभावता जतावन लागे.

भावप्रकाश :
सो या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णवनकी वार्ता कहे सुने तें श्रीठाकुरजी आप प्रसन्न होत हैं. सानुभावता जतावत है. तातें वैष्णवनकी वार्ता नित्य कहनी, सुननी.

सो वे दोउ भाई गोवर्द्धदास, मन्नालाल श्रीगुसांईजीके ऐंसे परम कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सों कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१९८।।

१९९-एक ब्राह्मन वैष्णव, सगुनवारौ

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक ब्राह्मन वैष्णव, गुजरातकौ, सगुन देखिकै चलतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त है. लीलामें इनकौ नाम 'सगुना' है. इनमें नृत्यादि गुन बोहोत हैं. ये 'नृत्यकला' तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप है.

ये गुजरातमें एक ब्राह्मनके जन्म्यो. सो इनको बालपनेमें एक सगुन जानिवेवारेकौ सङ्ग भयो. सो उह सगुन आछौ जानत हो. सो ये ब्राह्मन हू सगुन विद्यामें कुसल भयो. पाछें ये बरस बीसकौ भयो तातें इनकी माता मरी. पाछें कछुक दिनमें पिताहू मर्यो. तब ये यात्राकों अपन गांव ते निकस्यो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समय श्रीगुसांईजीके दरसनकों एक गुजरातको साथ आयो. सो ता साथमें वह ब्राह्मन हू आयो. सो वह सगुनमें बोहोत समझत

हतो. और बोहोत ही पढ्यो हुतो. सो श्रीगोकुल आयो. तब श्रीगुसांईजीके दरसन करिकै वाने बिनती करी, जो महाराज ! मोकों सरनि लीजिए. और मोकों कृतार्थ करिये. तब आप वा ब्राह्मनसों आज्ञा किये. जो स्नान करि आवो. तब वह स्नान करि आयो. तब वाने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! मोकों नाम दीजिए. तब श्रीगुसांईजीने कृपा करीकै वाकों नाम सुनायो. तब वाने यथासक्ति भेट करी. ता पाछें श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन किये, तब श्रीगुसांईजीने कृपा करिकै वाकों महाप्रसादकी पातरि धरी. तब वा वैष्णवने महाप्रसाद लियो. ता पाछें समय भए उत्थापनके दरसन किए. ता पाछें सेन आर्तिके दरसन करिकै वह वैष्णव बिदा होंइकै श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनको चल्यो. सो गामके बाहिर आयो. तब वा वैष्णवकों सगुन आछौ नाहीं भयो हतो. तब वह पाछौ श्रीगोकुल आयो. तब श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो कैसे आयो ? तब वा वैष्णवने कह्यो, जो महाराज ! सगुन आछौ नाहीं भयो. तब श्रीगुसांईजी वा वैष्णव सों कहें, जो श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनमे सगुन कहा है ?

भावप्रकाश :
यह कही वह जताए. जो प्रभु तो भक्तवत्सल हैं. भक्त आर्ति करि दरसनकौ जब ही मनोरथ करे तब ही आप दरसन देत है. और जो आर्ति बिना केवल सगुन देखिकै जात है ताकों मार्गमें अन्तराय हू परत है. तातें वैष्णवकों आर्ति करिकै श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों जानो.

तब वा वैष्णवने कही, जो महाराज ! आपकी आज्ञा प्रमान सत्य है. तब वह वैष्णव श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों गयो. ता पाछें वह वैष्णव फेरि श्रीगोकुल आयो. पाछें श्रीगुसांईजीसों बिदा होंइवे आयो. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो काल्हि जैयो. तब वाने कही, जो महाराज ! बोहोत ही जरूरी काज है. तातें कृपा करिकै बिदा करिये. तब श्रीगुसांईजी आप वा वैष्णवकों किये. सो वह चल्यो. सो गाम बहार एक गधा पायो. सो वह पाछौ आयो. तब दूसरे दिन फेरि वह श्रीगुसांईजीके दरसनकों आयो. तब श्रीगुसांईजी पूछे जो तू गयो नाहीं ? तब वाने कही, जो महाराज ! कारज तो उतावलिकौ हो, परि गधा सामने आयो. तातें सगुन आछे नाहीं भये. सो मैं काल्हि नाहीं गयो. तब वा वैष्णवसों श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो हमने कह्यो, जो काल्हि जइयो. तब तो तेंने मान्यो नाहीं, और गधाके सगुनकों मानकै तू गयो नाहीं. सो कहा, हमारे बचन पर तोकों इतनोहू विश्वास नाहीं रह्यो ? और सगुन पर तोकों इतनो विश्वास है ? तब वाने कही, जो

महाराज ! जीव बुद्धिसों ऐसो भयो तो सही. परि आज पाछें मैं कबहू सगुन न देखूंगो. तब श्रीगुसांईजीकृपा करिकै कह्यो, जो भगवन्नाम अष्टाक्षर ले कै चलनो. पाछें वह वैष्णव बिदा होंइके अपने देसकों भगवन्नाम अष्टाक्षर लेकै चल्यो. सो वह अपने घर आयो. सो वह वैष्णव तब ते सगुन देखिके कबहु न चलतो. भगवन्नाम अष्टाक्षर ले श्रीगुसांईजीकौ स्मरन करि चलतो. सो श्रीगुसांईजीके बचन सत्य करिकै मानतो. और सब वृथा जानतो.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय है, जो वैष्णवकों गुरुनके बचन पर दृढ़ विश्वास राखनो. तातें सर्व कार्यकी सिद्धि होंई. और जो कोऊ सगुन देखिकै अपने कारजकों करे तो अन्याश्रय होंई. तातें एक भगवन्नामकौ आश्रय करनो, यह जताए. और पुष्टिमार्गीय वैष्णवनकों तो जा दिन प्रभुनकौ दरसन होंई, सेवा होंई, स्मरन होंई, वही दिन नीकौ है. सो सूरदासजी गाए हैं

राग : बिहाग
मिले गोपाल सोई दिन नीकौ ।
वेद पुरान जोतिष बड़े ठग जाने फांसी जियकौ ।
जो बूझे तो उत्तर देहों बिनु बुझे मत फीको ।
कमल मीन दादुर यों तरसत, सब घन परत अमीकौ ।
भद्रा भली भरनी भव हरनी चलत मेघ अरु छींकौ ।
अपने ठौर सबे ग्रह नीके हरन भयो क्यों सीयकौ ।
सुन मूढ़ मधुकर ब्रज आयो, ले अपयसकौ टीकौ ।
‘सूर’ जहां लों नेम धरम ब्रत, सो प्रेमी कौड़ीकौ ।

तातें वैष्णवकों सकाम बुद्धि करि वेद - पुरान - जोतिषकौ आश्रय सर्वथा न करनो. उनमें जो फल - श्रुति देखियत हैं सो तो अज्ञानी जीवकों धर्ममें प्रवृत्त करनार्थ हैं. जैसे कोई बालक करुई औषधि न ले तो वाकों मिश्रीकी लालच देत है. ता प्रकार शास्त्रनमें हू फलके बचन कहे हैं. परि जो वैष्णव है सो तो फलकी चाहना राखत नाहीं. उनकों तो एक श्रीठाकुरजी ही फल हैं. सो श्रीठाकुरजी मिले वही दिन वाके भाए नीकौ है. और सर्वोपरि तो श्रीठाकुरजीकी इच्छा है. श्रीठाकुरजीकी इच्छा न होंई तो सगुन देखिकै कार्य करे तऊ फले नाहीं. जैसे श्रीरामचन्द्रजीके राज्याभिषेकके समय सब ही ग्रह नीके हते, वशिष्टजी जैसे देखनहार. तब बनबास भयो. सीताजीकौ हरन भयो. तातें जानि परत है, जो भगवद् इच्छा ही सर्वोपरि है. तातें वैष्णवकों एक भगवानकौ आश्रय ही कर्तव्य है, यह सिद्धान्त कहे.

सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।१९९।।

२००-एक बाई जाको बेटा बाट मारतो

अब श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी एक बाई, जाको बेटा बाट मारतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये मा - बेटा दोउ तामस भक्त हैं. लीलामें ये दोऊ पुलिन्दिनीके यूथके हैं. मा कौ नाम लीलामें 'मरुवी' है और बेटाकौ नाम 'गरुवी' है. सो ये 'नृत्यकला' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समय श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल तें श्रीरनछोरजीके दरसनकों पधारे हते. सो मार्गके बीच गोड़वारके गाम हते. सो तहां श्रीगुसांईजीने जाइकै डेरा किये. सो आप रसोई करिकै श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो. समय भए भोग सराय आप भोजन किए. तब रात्रिकों उहांई पोढ़ें.

ता पाछें प्रातः काल उठिकै देहकृत्य करि दन्तधावन करि सन्ध्यावन्दन करिकै जप - पाठ करत हते. तब वा बाईकों श्रीगुसांईजीके दरसन भए. तब वा बाईकौ ऐसो विचार भयो, जो इनकी सरनि जैये तो आछी बात है. तो मेरो कार्य सिद्ध होय. तब वा बाईने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मोकों कृपा करिकै नाम सुनाइए. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो तू स्नान करि आऊ. तब वह बाई स्नान करि आई. तब श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! कृपा करिकै मोकों नाम सुनाइये. मोकों कृतार्थ करिये. तब श्रीगुसांईजीने कृपा करिकै वाकों नाम सुनायो. तब वा बाईने यथासक्ति भेंट धरी. और वा बाईकौ बेटा मुखिया हतो.

सो वह बाट मारतो, रस्ता लूटतो, ऐसो कर्म करतो. सो वा बेटाकों श्रीगुसांईजीके दरसन भए. सो दरसन होत मात्र वाकी बुद्धि फिरी. सो वह श्रीगुसांईजीके पास आइ कहे, जो महाराज ! कृपा करि मोहूकों नाम सुनाइ सेवक कीजिए ! तब श्रीगुसांईजी कहे, तू बाट लूटत है, तातें हम तोंको सेवक नहीं करेंगे. तब वाने दोउ हाथ जोरि बिनती कीनी, जो महाराज ! आज तें मैं या कामकों छोरत हूं. खेती करूंगो, चाकरी करूंगो. परि यह काम सर्वथा न करूंगो. तब श्रीगुसांईजी वाके उपर बोहोत प्रसन्न भए. कहे, जो आज पाछें ऐसो काम सर्वथा करियो मति. पाछें आपने कृपा करि वाकों नाम दे सेवक कियो. तब वाकी देखा - देखी सगरो गाम श्रीगुसांईजीको सेवक भयो. सबनने बाट मारनो, चोरी करनो छोर्यो. सब खेती करन लागे. और घरमें रसोई करें सो तामें श्रीनाथजी श्रीगुसांईजीकौ चरनामृत मिलाय लेते. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप तो श्रीद्वारिकाजीकों पधारे. पाछें उहां तें कछूक दिनमें विजय किये, सो श्रीगोकुल पधारे.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णवकों अधर्म करि द्रव्य जोरनो नाहीं. खेती, चाकरी, बानिज्य करि निर्वाह करे तो प्रभु प्रसन्न होंई. और काहूकों कष्ट पहोंचे सो कार्य सर्वथा न करनो.

सो वह बाई श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती जाके सङ्ग तें सगरो गाम सरनि भयो. वार्ता ।।२००।।

२०१-उत्तमदास क्षत्री, गुजरातकौ

अब श्रीगुसांईजीके सेवक उत्तमदास क्षत्री गुजरातके बासी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त है. लीलामें इनकौ नाम 'श्रीरङ्गी' है. ये 'नृत्यकला' तें प्रगटी है. तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समय श्रीगुसांईजी आप गुजराति श्रीरनछोरजीके दरसनकों पधारे हते. तब उत्तमदासकों श्रीगुसांईजीके दरसन भए. तब उत्तमदासने अपने मनमें विचार कियो, जो श्रीगुसांईजीकी सरनि जैये तो आछौ. तब उत्तमदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मोकों कृपा करिकै सरनि लीजिए. मैं बोहोत दिन तें भटकत फिरत हों. तब श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो तू स्नान करि आऊ. तब उत्तमदास स्नान करि अपरस ही में आए. तब श्रीगुसांईजीने कृपा करिकै उत्तमदासकों नाम सुनायो. पाछें दूसरे दिन ब्रह्मसम्बन्ध करवायो. तब उत्तमदासने यथासक्ति भेट करी. ता पाछें आप तो बिदा व्हैके द्वारिकाजी श्रीरनछोरजीके दरसनकों पधारे. सो कितनेक दिन लों श्रीरनछोरजीके दरसन किए. ता पाछें उहां तें बिदा होईकै श्रीगोकुल पधारे. सो श्रीनवनीतप्रियजीकौ सेवा - सिंगार किये. और उत्तमदास तो अपने देस ही में रहे. ता पाछें उहां एक जरीकौ परकालो बिकान आयो. तब उत्तमदासने मनमें विचार कियो, जो यह परकालो तो श्रीगुसांईजी लायक है. सो उत्तमदासने वाकों मोल लियो. पाछें उत्तमदास श्रीगुसांईजीके दरसनकों श्रीगोकुल चले. सो कछुक दिनमें श्रीगोकुल आय पहोंचे सो श्रीनवनीतप्रियजीके राजभोग आर्तिके दरसन किये. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजीकी सेवा तें पहोंचिकै अपनी बैठकमें पधारे. तब उत्तमदासने आयकै साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै वह परकालो श्रीगुसांईजीके आगें धर्यो. तब श्रीगुसांईजी वह परकालो देखिकै बोहोत प्रसन्न भए. और श्रीमुख तें कहे, जो यह परकालो तो श्रीनाथजी लायक है. ता पाछें दूसरे दिन श्रीगुसांईजी आप उत्तमदासकों सङ्ग ले कै श्रीनाथजी द्वार पधारे. तब श्रीगुसांईजीने वह परकालो श्रीनाथजीको अङ्गीकार करायो. ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन सब वैष्णवनकों

कराए. तब उत्तम श्लोकदास श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करि बोहोत प्रसन्न भए. और अपने जन्मको सुफल करि मानत भये. ता पाछें कितनेक दिन तांई उत्तमदासने श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुल पधारे. तब उत्तमदास श्रीगुसांईजीके सङ्ग श्रीगोकुल आए. तब श्रीनवनीतप्रियजी आदि सातों स्वरूपनके दरसन किए. ता पाछें कितनेक दिन तांई श्रीगोकुलमें रहे. पाछें उत्तमदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! आज्ञा होंई तो ब्रजयात्रा करि आऊं. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किए, जो आछो. तब उत्तमदास श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिकै ब्रजयात्राकों चले सों कितनेक दिनमें सम्पूर्ण ब्रजयात्रा करिकै श्रीगोकुल आए. तब श्रीगुसांईजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् कीनी. तब श्रीगुसांईजी पूछे, जो तुम ब्रजयात्रा करि आए ? तब उत्तमदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! आपकी कृपा तें ब्रजयात्रा भलीभांतिसों करी. ता पाछें कितनेक दिन तांई उत्तमदासने श्रीनवनीतप्रियजी आदि सातों स्वरूपनके दरसन किए. पाछें श्रीगुसांईजीसों बिदा होय अपेन घर आए. सो घरमें श्रीगुसांईजीकी कृपा तें श्रीनाथजी अनुभव करावते.

भावप्रकाश :
या वार्तामें यह जताए, जो उत्तम वस्तु प्रभुनकों अङ्गीकार कराइए. यह सेवककौ धर्म कहे.

सो वे उत्तमदास श्रीगुसांईजीके ऐसें परम कृपापात्र भगवदीय हे. तातें उनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२०१।।

२०२-साहुकारकौ बेटा, वजीरकी बेटी, और बनियाकौ पुत्र

अब श्रीगुसांईजीके सेवक एक साहूकारका बेटा, वजीरकी बेटी, और बनियाकौ पुत्र तिनकी वार्ताकौ भाव कहत है

भावप्रकाश :
ये तीनों राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम ‘रामा’ ‘स्यामा’ और ‘कामा’ हैं. सो ‘रामा’ इहां साहूकारकौ बेटा भयो. और ‘स्यामा’ वजीरकी बेटीकौ प्रागट्य

जानननो. और 'कामा' बनियाकौ पुत्र भयो. ते तीनों 'कृष्णावती' तें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
ये तीनों गुजरातके एक गाममें जन्मे. सो एक पण्ड्याके घर पढ़िवे जाते. सो तीन्योंनके परस्पर अत्यन्त स्नेह हतो. सो साहूकार श्रीगुसांईजीकौ सेवक हतो. सो एक समै श्रीगुसांईजी आप वा गाममें पधारे. सो वा साहूकारके घर उतरे.

तब एक दिन श्रीगुसांईजीकौ जन्मदिन आयो. सो श्रीगुसांईजी आप तहां केसरि स्नान करिकै, 'मार्कण्डेपूजा' करिकै बधाईकै कीर्तन गावत हते. सो ता समै यह वजीरकी बेटी साहूकारके बेटाके सङ्ग हती. सो तहां सब लोग दरसनकों आए. सो ता समै कितनेक वैष्णवनके छोरा - छोरीनने नाम पायो. सो ता समय इन तीन्यों जनेंनने हू श्रीगुसांईजीके पास नाम पायो. ता पाछें सबनकों महाप्रसाद दीनो. पाछें श्रीगुसांर्सजी आप तो उहां थोरेसे दिन रहिकै दैवी जीवनकों अङ्गीकार किए. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप उहां तें विजय किये सो श्रीगोकुल पधारे.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
सो वह साहुकारके बेटा और वजीरकी बेटीमें परस्पर बोहोत ही स्नेह हतो. सो क्षन एक देखि बिना चैन न परे. सो वह साहुकारकौ बेटा बड़ो भयो सो उद्यम करन लाग्यो. और वह बजीरकी बेटी हू बड़ी भई. सो अपने महल परदानमें रहन लगी परि उन दोउनकों परस्पर देखें बिना चैन न परे.

तब एक दिन वा वजीरकी बेटीसों साहुकारके बेटाने कह्यो, जो आजु पाछें तेरे यहां कबहू न आउंगो. सो काहेतें ? जो अब आपुन नवजोबन भए हैं. और तू स्त्री - जन है. और तू बड़ेनकी बेटी है. और मैं हू बड़ेनकौ बेटा हूं. और लोग तो दुराचारी हैं. सो अपबुद्धि करत हैं. और आपुन तो निर्दोष हैं, और भाई बहनि हैं. गुरुभाई दोऊ बहनि हैं. सो यह बात तो कोऊ जानत नाहीं, जो सब कोऊ दोष

विचारत हैं. सो ताही तें कछूक दिनमें विघ्न उठे तो महा कठिन होंई. और मैं यहां आवत हूं सो मेरे देह सम्बन्धी मोसों बोहोत खीझत हैं, जो मोसों सब कोऊ अप्रसन्न होत हैं. परि कहा करे ! तोकों, हमकों, देखे बिना चैन नाहीं परत है. सो अब कहा उपाय कीजिए ? तब वा वजीरकी बेटीने कही, जो तोकों देखे बिना चैन नाहीं परत है सो ताही तें तू सुखेन आइयो. परि आये बिना मति रहियो, जो या गेल तू सुखेन आइयो. तू अपने मनमें चिन्ता मति करियो. ऐसो कौन है, जो तोकों कछू कहेगो '? और हौं रजपूतकी बेटी हौं. सो तो दुष्ट - दृष्टि सों देखत होंइ, ताकों में ठौर मारूंगी. और आपुन तो निर्दोष हैं. और अपने माथे उपर श्रीगुसांईजी सदा सर्वदा बिराजमान हैं. सो उनकी कृपा बलतें कहा चिन्ता है ? सो ऐसें वा वजीरकी बेटीने साहूकारके बेटासों कही. तब वह साहूकारकौ बेटा बोहोत प्रसन्न भयो. और अपने मनमें निश्चै जान्यो, जो या बातमें कछू बिगाड़ नाहीं है. सो ऐसें जानिकै वा साहूकारकौ बेटा नित्य रात्रिकों आवतो. सो दोऊ मिलिकै नित्य भगवद्वार्ता कीर्तन करते. और श्रीभागवतकी कथा वार्ता करते. ता पाछें वह साहुकारकौ बेटा अपने घर जातो. सो वा साहूकारके बेटाके कुटुम्बी वाके उपर बोहोत ही अप्रसन्न रहते. ता पाछें बेटाकी ताक राखते, जो ऐसे यह काम करत है. इतनी रात्रि लों कहां रहत है ? सो ऐसें कहिकै बोहोत ही खीझते. परि वह साहूकारकौ बेटा काहूकौ बचन मानतो नाहीं. सो ऐसें करत बोहोत दिन भए. पाछें उहांके राजाके मनुष्यनने वा वजीरके घर तें वा साहुकारके बेटाकों उतरत देख्यो. सो पकरि लियो. तब महा भय दिखायो, जो भले साहुकारकौ बेटा होंईकै ऐसो काम करत है ? जो लोगनकी बहू - बेटीनके घरमें जात है ? सो ताही तें तू राजद्वारमें राजाके पास चलि, ऐसें कह्यो. तब वा साहुकारके बेटाकौ मुख उतरि गयो. तब राजाके मनुष्यनने अपने मनमें विचार कियो, जो इनके मनमें पापदृष्टि तो नाहीं है ? सो तातें पहले भय तो दिखावो. तब यासों राजाके मनुष्यनने कही, जो अब तो राजा सोयो होयगो. तोकों रात्रिमें आपद परेगी. तातें तेरो कोई जामिन होइ तो तोकों छोड़े. ता पाछें सवारे राजद्वारमें राजाकों उत्तर दीजियो. तब वह साहूकारकौ बेटा अपने घर आयो. तब अपने देह सम्बन्धीनसों कही, जो तुम मेरे जामिन होउ. तब माता - पिता सबनने नाहीं करी, जो भावे सो होउ, परि हम तेरे जामिन नाहीं होंइगे, जो हम तोसों नित्य कहत हते, तेनें हमारो कह्यो मान्यो नाहीं. ता पाछें वह राजाकौ मनुष्य हाथ पकरिकै आगें करिकै चल्यो. और कह्यो, जो तेरो कोई जामिन होत नाहीं है. तातें तू खोटो है. तब फेरि कह्यो, जो और कोई तेरो जामिन होंइ तो तोकों छोड़े. तब वा साहूकारके बेटाने कही, जो एक मेरो गुरुभाई मित्र है. सो वह मेरो जामिन होइगो. तातें उहां चलो. तब वह साहूकारकौ बेटा वा बनिया वैष्णवके घर आयो. और आयकै पुकार्यो. तब वा बनिया वैष्णवने किवाड़ खोले. तब उन पूछ्यो,

जो इतनी बिरियां तुम कहां ते आए हो ? तब वा साहुकारके बेटाने कही, जो मैं तो वा बहनिके घर तें आवत हतो. सो अब मोकों राजाके मनुष्यनने पकर्यो है. सो रात्रिकों तुम मेरे जामिन होऊ तो ये मोकों छोड़े. ता पाछें मैं सवारे राजाकों उत्तर देऊंगो. तब वा बनिया वैष्णवने कही, जो मै याको जामिन हूं. सो ऐसे कहिकै जामिन लेकै वा साहूकारके बेटाकों छोरिकै वे राजाके मनुष्य तो चले गए. ता पाछें वा बनिया वैष्णवने कही, जो अब तुम सुखेन घर जाउ. या बातकौ कछू अटकाव नाहीं है. तब वा साहुकारके बेटाने कही, जो मैं तो यहांई सोंऊगो. तब वा बनिया वैष्णवने कही, जो तिहारो घर है सुखेन सोऊ. तब रात्रिकों उहांई सोय रहे. तब वा बनिया वैष्णवने साहुकारके बेटाकौ बहुत आदर सन्मान कर्यो. तब राजाके मनुष्यनने अपने मनमें विचार्यो, जो भले ! आज तो और हू देखिये, जो इनके कैसी प्रीति है ?

ता पाछें दूसरे दिन उहांई वह साहुकारकौ बेटा वा बनिया वैष्णवके घर रह्यो. सो दोउ जनें भगवद्वार्ता करन लागे. सो भगवद्रसमें छकि गए. ता पाछें महाप्रसाद लियो. सो ऐसें करत रात्रि भई. तब वा बनिया वैष्णवने साहुकार वैष्णवसों कही, जो तुम वा वजीरकी बेटीके घर जाऊ, जो वह वाट देखत होइगी. सो वा वजीरकी बेटीकों हू चैन न परेगो. सो वह चिन्ता करेगी. तातें तुम सुखेन वाके घर जाऊ. तब वह साहुकारकौ बेटा वा वजीरकी बेटीके घर आयो. तब राजाकौ मनुष्य हू वाके पाछें - पाछें गयो. पाछें वा वजीरकी बेटीसों साहुकारके बेटाने कही, जो सुनि बहनि ! काल्हि मैं यहां तें नीचे उतर्यो, तब मोकों राजाके मनुष्यनने पकर्यो हतो. सो वाने मोकों बोहोत भय दिखायो, जो तुम ऐसें काम करत हो ? जो तुम लोगनकी बहु - बेटीन के महलनमें नित्य जात हो ? तातें तू राजाके पास चलि. ता पाछें फेरि कह्यो, जो अब तो राजा सोयो होइगो, जो भले ! सवारे उत्तर दीजियो. तातें अब तो तेरो कोई जामिन होंइ तो तोकों छोड़े. तम मैं अपने मनमें विचारकै अपने देह सम्बन्धीन सों बोहोत कह्यो. परि मेरो कोई जामिन भयो नाहीं. तब मैं वा बनिया वैष्णवके घर गयो. सो वा बनिया वैष्णवने कही, जो तुम अपने घर जाऊ, मैं याकौ जामिन हूं. तातें काल्हिको मैं वाके घर हूं. अपने घर नाहीं गयो. उनही के इहां महाप्रसाद लियो है. सो आज तो कोऊ राजद्वार तें आयो नाहीं है. अपने मन में तो भय बोहोत ही है. सो ऐसें सब विस्तारपूर्वक वा वजीरकी बेटीसों साहूकारके बेटाने कही. सो याही तें तो मेरो मन उदासीन है. तब वा वजीरकी बेटीने साहुकारके बेटासों कही, जो भाई ! आपुन तो निर्दोष हैं. और भगवद् सम्बन्धी हैं. परि लोक तो दुराजारी हैं. सो या बातमें कहा जाने ? जो अपने

माथे तो श्रीगुसांईजी सदा सर्वदा बिराजत हैं. सो इनकौ दृढ निश्चय करि राख्यो है और अपने निर्दोष राखे हैं. सो उनकों अपनो सामर्थ्य प्रगट करिवेकों. जो अति ही कल्यान करेंगे. और अब तू काहू बातकी चिन्ता मति करे. और निश्चय करिकै श्रीप्रभुजी भलाई करेंगे. जो काल्हि दासी पास राजद्वारकी घड़ी - घड़ीकी खबरि मंगाउंगी. जो राजमें कोऊ तेरो कहा करि सकेगो. जो मोहू में तो श्रीगुसांईजीकी कृपाकौ बल है. सो ताहीतें मैं तोकों आयके छुड़ाई लेउंगी. तू अपने मनमें डरपे मति. जो राजा तो तुच्छ मनुष्य है. तू देखि तो श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी श्रीगुसांईजी आप कैसी बनावत हैं ? जो हों अकेली हजारनकों भारी हूं. ऐसें कहिकै वा साहूकारके बेटाको बोहोत समाधान कियो. ता पाछें श्रीकृष्ण स्मरन करिकै उठे. ता पाछें फेरि वह साहुकारकौ बेटा वा बनिया वैष्णवके घर आयके सोय रह्यो. ता पाछें वा बनिया वैष्णवने वा साहुकारके बेटाकी बोहोत भलीभांतिसों अत्यन्त प्रीतिसों सेवा करी.

ता पाछें दूसरे दिन वा राजाने इनकी परीक्षा लेवेके लिये अपने मनुष्य पठाए. तब वा बनिया वैष्णवसों वा मनुष्यने कह्यो, जो वह साहुकारकौ बेटा कहां है ? जाकौ तू जामिन भयो है, सो वा साहुकारके बेटासों बुलायो है. तब वा बनियाने राजाके मनुष्यनसों कह्यो, जो वाकी वेई राजद्वारमें मैं उत्तर देउंगो. जो राजाकौ चार होई तो मैं वाकौ जामिन भयो हूं. सो ऐसें कहिकै उठि चल्यो. सो ता समै वह साहुकारकौ बेटा घरमें सोयो हतो. सो वह बनिया वैष्णव राजद्वारमें जायके ठाढ़ौ भयो. तब वा बनियाकों देखिकै राजाने कही, जो वह साहुकारकौ बेटा कहां है ? वाकों बुलावो. जो तू तौ वाकौ जामिन भयो है. सो तोसों काम नाहीं. सो ऐसी रीतिसों बोहोत ही कही. तब इतनेमें वह साहुकारकौ बेटा घरमें सोयो हतो सो जाग्यो. तब वा बनिया वैष्णवकी स्त्रीसों पूछी, जो भाई कहां है ? तब वा बनिया वैष्णवकी स्त्रीने कह्यो, जो तुम्हारे बदले वे राजद्वारमें गए हैं. तब वह साहुकारकौ बेटा राजद्वारमें जाय ठाढ़ो भयो. तब राजाने अपने मनुष्यनसों कही, जो या बनियाकों तो बाहरि काढ़ि देउ. और वा साहुकारके बेटाकों बुलाओ. सो वह ठाढ़ो करि राख्यो हतो. तब राजाने साहुकारसों कही, तू पर स्त्रीसों अन्याय क्यों करत है ? तोकों मेरो भय नाहीं है ? तब वा साहुकारके बेटाने कही, जो मेरी तो उह बहनि हैं. तब राजाने अपने लोगनसों कही, जो यह तो अन्याय है. जे यह बहनि कहत है. पाछें स्त्रीसों विषय भोग करत है. तातें या साहुकारके बेटाकों तो ठौर मारो, जो यहां ते ले जाउ. तब बाहिर ले जायकै वा साहुकारके बेटाकों महलके नीचे ठाढ़ो कियो. तब राजाने अपने मनुष्यन तें कही, जो तुम याकों समझाईयो. परि सर्वथा याकों मारियो मति. जे यह तो अन्याई नाहीं है. परस्त्रीसों पक्षपात

करत है. सो ताही तें या साहुकारके बेटाकौ धीरज देखनो. तातें याके कण्ठसों खडग लगाइयो. सो ऐसे वा राजानें मारनवारेनसों कही. पाछें वह सब बात राजद्वारमें भई, सो ये बातें सब वजीरकी बेटीने सुनी. सो अपनी दासी पास ये समाचार मंगवाए हते.

ता पाछें वा वजीरकी बेटीने पुरुषकौ भेख करिकै और सब वस्त्र पहरिकै हाथमें खड़ग और ढाल ले कै जो बोहोत ही अबलख घोड़ाके उपर सवार होइकै चली. सो दूरि तें घोड़ाकों ऐंड देकै चली हती. और चाबुक द्वै - चारि वा घोड़ाकै खेंचिकै मारे. सो घोड़ाकौ मुरायो पर्यो हतो सो ताहूकों घोड़ा उल्लङ्घिकै निकसि गयो. सो या साहुकारके बेटाके पास आयके ठाढ़ो भयो. और खड़ग ढाल फिरावति है. और कह्यो, जो धर्म तें एक पिता तें उत्पन्न भयो होइ सो मेरे सन्मुख अइयो. परि कोउ आइ नाहीं सके. और वे मारनवारे तो सब भाजि गए. और वे राजा और वजीर झरोखामें बैठे हते. सो राजाने अपने वजीरसों कही, जो यह सिपाईगिरीके बलकों कहा कियो है ? और यह कौन है ? तब वजीरने उनसों कही, जो मैं तो पहचान्यो नाहीं. और कह्यो, जो मोकों तो ठीक नाहीं है. ता पाछें वजीरने राजाकों एकान्त ले जाइके सब बात विस्तारसों कही. ता पाछें राजाने अपने सिपाइनसों कही, जो तुम सब यहां तें दूरि होऊ. जो तुम कछू इनसों बोलो मति. तब राजाने उन दोउनसों कही, जो हों तुम उपर बोहोत प्रसन्न भयो हों. और कह्यो जो तुम धन्य हो. और तुम्हारी प्रीति धन्य है. और तुम्हारो धीरज धन्य हैं. सो ताही तें तुम मो पास मांगो. तब उन दोउ जनेनने कही, जो हमारे तो काहू बातकी इच्छा नाहीं. तब राजाने अपने वजीरसों कही, जो अब इन दोउनकौ विवाह करि देउ. तो प्रीति भली होई. और इन दोउनके परस्पर स्नेह रहे. तब इन कही, जो राजा ! तुम तो भोले भए हो. जो ऐसी बात कहत हो, जो हम तो आपुसमें बहनि भाई हैं. सो तातें तुम धर्मसील राजा होइकै अधर्मकी बात क्यों कहत हो ? पाछें राजा उन दोउन उपर बोहोत प्रसन्न भयो. तब दोउनकों सीखि दीनी. तब वे दोउ जन अपने - अपने घरकों गए. ता पाछें ये दोउ जनें मिलिकै बैठते भगवद्वार्ता करते. और निर्भय भए रहते. सो उन दोउनके परस्पर परम आनन्द भयो. सो वे दोउ जन भगवद्वार्तामें सदा छके रहते. सो वे दोउ जनेंकौ जोबन - रूप बोहोत ही सुन्दर हतो. परि उन दोउनके कछू देहाध्यास बाधा नाहीं कियो. जो मिलिकै एकान्तमें बैठते ! भगवद्वार्ता कीर्तन करते. सो ऐसें करत श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे. जो चहिए सो मांगि लेते.

भावप्रकाश :
या वार्तामें प्रेमकौ स्वरूप जनाए, जो शुद्ध प्रेम, त्यागकों कहत है. जामें इन्द्रियनके भोगकौ लेस हू गन्ध न होंई. ऐसा त्याग सर्वोपरि है. और श्रीगुसांईजीके सेवक वैष्णवनपै निर्दोष बुद्धि रहे, तब कार्य सिद्ध होंई. और भगवद्वार्ता - कीर्तनमें लोकलज्जा - कुलकानि वैष्णवनकों सर्वथा करनी नाहीं, यहू कहे.

सो वह साहूकारकौ बेटा, वजीरकी बेटी और बनियाकौ बेटा, ये तीन्यों श्रीगुसांईजीके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हे. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२०२।।

२०३-सैवी ब्राह्मनकौ बेटा, कासीकौ

अब श्रीगुसांईजीके सेवक एक सैवी ब्राह्मनकौ बेटा, कासीमें रहतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त है. लीलामें इनकौ नाम 'सोनजूही' है. सो इनकौ स्वरूप परमानन्दस्वामीकी वार्तामें आगे कहि आए हैं. 'कृष्णावती' तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो उन सैवी ब्राह्मनके आगें सन्तान न हती. सो जब वा सैवीकी स्त्रीके उदरमें या छोराकौ वास भयो तब याकों बोहोत पश्चात्ताप भयो.

काहेतें, जो जब जीवकौ गर्भवास होवें तब जीवकों सौ जन्म तांईकौ ज्ञान होई. जो मैं ऐसे - ऐसें जन्म भुगत्यो हूं. तातें या लरिकाकों पूर्वजन्मकौ ज्ञान भयो. तब यह अपने मनमें दुखित भयो. दीन भयो. तब मनमें विचार कियो, जो श्रीआचार्यजी महाप्रभु धनी मेरे भए सो

तिनकी कानि तें श्रीनवनीतप्रियजी मोकों सानुभावता जतावते. सो मैं जीभकी लालच - स्वादके लिये, मोकों यह अपराध पर्यो, तातें मेरो अन्यमारगीयके घरमें बास भयो. तातें अब यह जन्म होइगो. तब मैं मूंगो रहूंगो. बोलूंगो नाहीं. ता पाछें जब याकौ जन्म भयो तब रोवे नाहीं. बोले नाहीं. सो याकौ दूध पिवावे, अथवा न पिवावें तो हू बोले नाहीं. तब याके मा - बाप सैवी हते. सो अपनी मति अनुसार कछू वेद शास्त्रमें समझत हते. सो मनमें विचारे, जो यह लरिका हमारो कछू मांगत नाहीं. सो पलत नाहीं. और सबनके बालक होत है सो कदाचित् गूंगो होवे तोहू रोवे. भूख लगे तब दूध मांगे. परि यह तो रोवे बोले कछू नाहीं. और सबनके बालक होत है सो कदाचित् गूंगो होवे तोहू रोवे. भूख लगे तब दूध मांगे. परि यह तो रोवे बोले कछू नाहीं. सो या प्रकार वह ब्राह्मनके चित्तमें यह सोच विचार सदा ही रह्यो आवे. तब ऐसें करत बरस दिनकौ वह लरिका भयो. तब वा ब्राह्मनने वा लरिकाकी बरस गांठिके दिन अपनी ज्ञातिके ब्राह्मन बुलाइकै कछू पूजा करन लाग्यो. तब वा लरिकाकों अपनी गोदीमें ले कै बैठ्यो हतो. तब इतनेमें वह लरिका अचानक एक शब्द बोल्यो. सो सीरे उसास ले कै. सो बचन 'श्रीआचार्यजी महाप्रभुजी' इतनो कह्यो. फेरि चुप होंई रह्यो. तब वा लरिकाके बापकों याकी ज्ञातिके ब्राह्मन कहन लागे, जो तेरो लरिका बोल्यो सो संस्कृतकौ शब्द, परन्तु जानी न परी. जे याने कौनकौ नाम लियो. सो ऐसें कहन लागे. ता पाछें फेरि दूसरो जन्म दिन आयो. तब फेरि तैसे ही ज्ञातिके ब्राह्मन बुलायकै वह ब्राह्मन कछू पूजा करन लाग्यो. तब वह लरिका फेरि बोल्यो. जो 'श्रीआचार्यजी महाप्रभु' 'श्रीगुसांईजी'. ये दोइ नाम लिये. फेरि तीसरे बरस तीन नाम लिये सो नाम 'श्रीआचार्यजी महाप्रभु' 'श्रीगुसांईजी' 'श्रीनाथजी'. यह तीन नाम लिये. फेरि चौथे बरस चारि नाम लिये, 'श्रीआचार्यजी महाप्रभु' 'श्रीगुसांईजी' 'श्रीनाथजी' 'श्रीनवनीतप्रियजी'. ये चारि नाम लिये. तब वा लरिकाके बापने यासों पूछी, जो बेटा ! हमारे और कोई सन्तान है नाहीं. तुम एक मेरे घरमें जन्म लियो. सो तू जानिकै बूझिकै गूंगो होय रह्यो है. और बरस दिनमें एक - एक शब्द अधिको बोलत है. सो तेरे मनमें जो होई सो तू हमसों कहि. हम करेंगे. तब या लरिकाने पृथ्वी पर आंक मांडे. तामें लिख्यो, जो तुम मोकों श्रीगोकुल ले चलो. तब हों बोलूंगो. तब वह ब्राह्मन अपनी स्त्री और लरिकाकों ले कै गोकुल आयो. तब वा लरिकासों कही, जो अब तेरे जहां चलनो होइ तहां चलि. तब वह लरिका श्रीयमुनाजीके तट पर 'श्रीठकुरानी घाट' हैं तहां आय बैठ्यो. तब उनके मा - बाप हू तहां बैठे रहे. तब कोई श्रीनवनीतप्रियजीकौ जलघरिया जल भरनकों आवे अथवा और कोई वैष्णव घाट पर आवे तिनसों वह लरिका पूछे, जो श्रीनवनीप्रियजीके इहां कहा समय है ? और श्रीगुसांईजी कहां बिराजे हैं ? तब सेवक जलघरिया देखि रहे. जो यह छोरा सैवीकौ है, और

याकों यहांकी खबरि कैसे परत है ? तब इतनेमें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीप्रियजीकों राजभोग धरिकै ‘श्रीगोविन्दघाट’ उपर पधारे. तब उन वैष्णवनने श्रीगुसांईजीसों वा छोराकी सब बात कही. तब श्रीगुसांईजी मुसकाईकै उन वैष्णवनसों पूछे, जो वह यहां आयो है कहा ? तब वैष्णवनने कही, जो महाराज ! वह ठकुरानी घाट उपर बैठ्यो है. तब श्रीगुसांईजीने उन वैष्णवनसों आज्ञा करी, जो वाकों यहां बुलाओ. तब उन वैष्णवने लरिकासों कही, जो अरे भैया ! तोकों श्रीगुसांईजी बुलावत है. तब वह लरिका उठिकै अति आतुर होइकै श्रीगुसांईजीके दरसनकों आयो. सो श्रीगुसांईजीके दरसन करत मात्र ही नेत्रनमें तें जलकौ प्रवाह चल्यो. सो धीरज न रह्यो. तब श्रीगुसांईजीने वासों कृपा करिकै कही, जा अब तू क्यों रोवत है ? अब तो तू आय पहोंच्यो है. चिन्ता मरि करे. आगें तू सावधान रहियो. पाछें वाकों कृपा करिकै नाम सुनायो. ता पाछें श्रीगुसांईजी खवाससों आज्ञा किये, जो याकों न्हवायकै अपरसमें मन्दिरमें ले आवो. सो ऐसें कहिकै आप तो मन्दिरमें पधारे. सो भोग सराय बीड़ा अरोगाए. तब इतनेमें खवास वाकों अपरसमें मन्दिरमें ले आयो. तब श्रीगुसांईजीने वाकों श्रीनवनीतप्रियजीके सन्निधान बैठायकै ब्रह्मसम्बन्ध करवायो. पाछें वासों कहे, जो तू बाहिर जा. तब वाने तो श्रीनवनीतप्रियजीके द्वारकी चोखटि पकरी राखी. सो छोड़े नाहीं. तब श्रीगुसांईजी कहे, बोहोत दिनानकौ बिछुर्यो है तातें याकों बाहिर निकसिवेकौ मन नाहीं करत है. तातें अब तो याकों याही ठौर रहन देऊ. तब उहाई ठाढ़ो रहन दियो. ता पाछें दरसन खुले. तब सब वैष्णवनने श्रीनवनीप्रियजीके दरसन किए. ता पाछें श्रीगुसांईजी आरति करि चुके. अनोसर करन लागे. तब वासों भीतरियाने कही, जो तू बाहिर निकसे तो अनोसर होवें. परन्तु याके हाथसों तो चोखट छूटे नाहीं. तब भीतरिया वाकों पकरिकै जोरसों चोखटि छुड़ाईकै वाकों चौकमें आए. सो जब वह चोकमें आयो तब वाकी देह छूटि गई. तब श्रीगुसांईजी जाने, जो मन्दिर छूई गयो. और या वैष्णवकौ जीव तो लीलामें पहोंच्यो. तब श्रीगुसांईजी वाकी देहमें अपनी सत्ता धरिकै वा देहकों सिंघपोरि तें बाहिर एक कूंआ है, तहां पहोंचाय अपनी सत्ता ले लीनी. तब वाकी देह उहांई परी रही. तब वाके मा - बाप तो देखिकै रोवन लागे. तब श्रीगुसांईजी वा ब्राह्मनसों कहे, जो काहेकों तेरो बेटा है ? यह तो हमारो जीव हतो. सो कोई अपराध तें तेरे घर आयो हतो. सो अब हमकों आय मिल्यो. तब वा ब्राह्मनने विचारी, जो ये लरिकाकौ तो जन्म सों ही ऐसो सुख दीसतो. सो वह ब्राह्मन वेदशास्त्रनमें समुझत हतो. परन्तु जीव दैवी न हतो. दैवी जीव होतो तो ऐसो सुख छोरिकै कहां जाय ? पाछें वह ब्राह्मन अपनी स्त्री सहित कासी गयो.

ता पाछें श्रीगोकुलमें जो वैष्णव रहत हुते, तिन सबनने मिलिकै तथा चाचा हरिवंशजीने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! यह वैष्णव आगें कौन हतो ? तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें कहे, जो यह वैष्णव पूरव जनममें श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकौ सेवक हतो. सौ यह श्रीनवनीतप्रियजीकौ खासा जलघरीया हतो. सो श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी कृपा तें श्रीनवनीप्रियजी यासों सानुभाव हते. सो ऐसें सानुभाव हते, जो इनकी गोदिमें बैठिकै श्रीनवनीतप्रियजी परमानन्द स्वामीके कीर्तन सुने. सो परमानन्द स्वामीकौ इन द्वारा उद्धार भयो. सो परमानन्द स्वामीकी वार्तामें प्रसिद्ध है. सो जीभकी लालचसों स्वाद करि गिर्यो. तब चाचा हरिवंशजीने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! यह कौन अपराध पर्यो ? तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख तें कहें, जो एक समय अडेलमें वैष्णवनकौ साथ आयो हतो. सो श्रीनवनीतप्रियजीकी राजभोग आरतिकौ समय हतो. सो श्रीआचार्यजी महाप्रभुनने सब वैष्णवनकों महाप्रसाद लिवायो हतो. तब कछू घी दूध इत्यादि श्रीअक्काजीने इनकी पातरिमें थोरो धर्यो. सो जब यह महाप्रसाद लेन बैठ्यो, तब पातरि देखिकै याके मनमें आई, जो मेरे कांधेकौ जल श्रीनवनीतप्रियजी अरोगत हैं. सो आज मेरी पातरीमें ओछी वस्तू क्यों धरी है ? सो यह बात उनने श्रीअक्काजी तें कही. सो ताही समै श्रीनवनीतप्रियजी जैसी कृपा आगें करते तैसे पाछें सानुभाव कछू न जनावे. सो जितने दिन इनकी देह रही तितने दिन सेवा तो करी. परि प्रभु सानुभावता न जताए. पाछें इनकी देह छूटी. तब या ब्राह्मनके घर कासीमें जन्म लियो. परन्तु श्रीआचार्यजी महाप्रभु बड़े हैं. सो याके अपराध साम्हे न देखें. थोरो दण्ड दिवाइ फेरि अङ्गीकार करि लियो. सो श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकौ ऐसा सुभाव है. सो कहां तांई कहिए.

भावप्रकाश :
तातें जीवकों सर्व कार्य विचारिकै करनो. और रसना इन्द्रियके बस होय सो गिरे यहू कहे. तातें वैष्णवकों सावधान रहनो.

सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२०३।।

२०४-एक निष्कञ्चन वैष्णव बनिया गुजरातकौ

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक निष्कञ्चन वैष्णव, बनिया, गुजरातकौ जिनने ब्रजयात्राकौ पून्य सेठकों दियो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त है. लीलामें इनकौ नाम 'ब्रजभूषणा' है. और ब्रजभूषणाकी एक सखी है. सो वाकौ नाम 'कामना' है. सो यहां सेठ भयो. ये दोउ 'कृष्णावती' तें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं.

सो वह गुजरातमें एक बनियाके जन्म्यो. सो वह निष्कञ्चन हतो. पाछें ये बरस बीसकौ भयो तब इनके पिताकी देह छूटी. और माता जन्मत ही मरी ही. ता पाछें केतेक दिनमें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुलनाथजीकों सङ्ग ले गुजरात पधारे हे. सो वाके गाममें डेरा किए हते. तब ये सेवक भयो है.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो ये निष्कञ्चन वैष्णव हतो. सो उनकौ मन श्रीगुसांईजीके बालकनकों वागा वस्त्र समर्पिवेकौ तथा ब्रजयात्राकौ बोहोत हतो. परि द्रव्य नाहीं. सो सबनके आगे कहत फिरे, जो कैसे करें ? ब्रजयात्राकी मनमें लागी है. द्रव्य पास नाहीं है. सो ऐसें सबनकों कहत फिरे. तब एक दिन एक सेठने कही, जो तेरे ब्रजयात्रा करनी होइ तो द्रव्य मैं देउ. परि जितनो धर्म करें सो सब मेरो. तब इन वैष्णवने और वैष्णवकों पूछी, जो फलानो सेठ कहत हैं, जो द्रव्य मैं देउ. धर्म मेरो होइगो. तब वा वैष्णवने कही, जो ठीक है. कहे, जो धर्म होइगो सो तेरो.

भावप्रकाश :
काहेतें, जो पुष्टिमार्गीय ब्रजकों तीर्थ रूप जानि ब्रजयात्रा करत नाहीं. क्यों, जो ब्रज तो प्रभुकौ निजधाम है. तातें सुतः फलरूप है. परि सेठकों तीर्थ - बुद्धि है, काहेतें, जो अजहू वैष्णव नाहीं है. तातें उनकों धर्म देवेकी कही.

तब वा निष्कञ्चन वैष्णवने सेठ तें ऐसेई आयकै कह्यो. तब सेठने कही, जो लिखि देउ. तब उन वैष्णवने लिख दीनो. जो पून्य तेरो. राजदरबारमें सही भई. सो वह सेठ सेवक न हतो. तब सेठने वैष्णव तें पूछी, जो तोकों कितनो द्रव्य चाहिए ? जितनो चहिए इतनो लेऊ. तब वा वैष्णवने भली भांतिसों जितनो द्रव्य चहियत हतो तितनो लियो. पाछें ब्रजमें आयो. सो श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजीके तथा सब बालकनके तथा सातों स्वरूपनके दरसन किये. नाना भांतिके जो मनोरथ हते सो सब किए. ता पाछें श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! आज्ञा होंइ तो मैं ब्रजयात्रा करि आऊं. ता पाछें उहां तें श्रीनाथजीद्वार आयो. सो श्रीनाथजीके दरसन किये. वागा वस्त्र मनोरथ आभूषन जो - जो मनोरथ हते सो सब किये. ता पाछें ब्रजयात्रा भली भांतिसों करी. फेरि श्रीगोकुल आयो. श्रीगुसांईजीके दरसन किये. ता पाछें कितनेक दिन तांई श्रीगोकुलमें रहे. सो जो - जो मनोरथ मनमें हते सो सब करि लिए.

और उहां सेठ इनकी बाट देखे. जो अजहु वह वैष्णव आयो नाहीं. ता पाछें यह वैष्णव श्रीगुसांईजीसों तथा सब बालकनसों बिदा होंईकै अपने देसकों चल्यो. सो ऐसें फिरत - फिरत बरस डेढ़ दोइमें अपने घर आयो. तब वा सेठसों मिल्यो. तब सेठने कही, जो हमारो पून्य देऊ. तब फेरि इन वैष्णवनने और वैष्णव तें पूछी, जो सेठ पून्य मांगत हैं. तब वा वैष्णवने कही, जो देऊ ! तब या निष्कञ्चन वैष्णवने सेठकों पून्य दियो. तब सब लोग कहन लागे, जो यामें या वैष्णवकों कहा फल मिल्यो ? यह तो वृथा हेरान भयो. सों ता समै और वैष्णव बैठे हते. सो उनने कही, जो सेठकों तो पून्य भयो. परन्तु नाना भांतिके मनोरथ, सेवाकौ और जमुना पान, साक्षात् अधरामृतकौ पान, नेत्रन तें श्रीमुख निरखवेकौ सुख, सो तो याकी देह तें भयो. सो सुख सेठकों तो न भयो ? इतनो पून्य सेठकों, जो तीर्थमें कुण्डमें स्नान करिकै ब्राह्मन भोजन कराए होंइ, दक्षिना देय, सो पून्य होंई सो ये देत है. सो सेठकों मिले. और तो सब सेवा है सो या वैष्णवकी भई.

पाछें वा सेठके मनमें आई, जो अब मैं वैष्णव होंउ तो भलो है. तब सेठने उन निष्कञ्चन वैष्णव तें कही, जो तुम मोकों सेवक करावो. तब वा वैष्णवने कही, जो चलो ब्रजमें श्रीगुसांईजी सेवक करेंगे. तब वह सेठ अपनी स्त्री कुटुम्ब ले कै द्रव्य ले कै अपने देस तें

चल्यो. सो या वैष्णवकों सङ्ग ले कै ता पाछें ब्रजमें आये. तब श्रीगुसांईजीके दरसन किये. ता पाछें वा वैष्णवने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! यह सेठ आपकी सरनि आयो है. सो कृपा करिकै सरनि लीजिये. तब श्रीगुसांईजीने कृपा करिकै वा सेठकों नाम सुनायो. ता पाछें ब्रत करवायकै ब्रह्मसम्बन्ध करवायो. ता पाछें राजभोगके दरसन किए. ता पाछें श्रीगुसांईजी अपनी बैठकमें पधारे. तब उन सेठने भेंट करी, ता पाछें श्रीगुसांईजी आप भोजनकों पधारे. सो भोजन करिकै उन सबनकों जूठनिकी पातरि धरी. तब इन महाप्रसाद लियो. ता पाछें कितनेक दिन श्रीगोकुलमें रहे. तब एक दिन सेठने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! अब मोकों कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजीने कही, जो सेवा करो. तब इनने कही, जो महाराज ! सेवा पधराय दीजे. तब श्रीगुसांईजी उन सेठके माथे सेवा पधराय दिए. ता पाछें इन सेठने बिनती करी, जो महाराज ! सेवाकी रीति भांति जानत नाहीं. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो यह वैष्णव तुम्हारे सङ्ग है सो इनकों न्हवावो. यह सब सेवा करेगो. तब सेठने उन वैष्णवकों न्हवायो. तब दोऊ मिलिकै सेवा करन लागे. ता पाछें श्रीगुसांईजीसों बिनती करिकै आज्ञा ले कै ब्रजयात्रा करी. श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. नाना भांतिकै मनोरथ किये. फेरि श्रीगोकुलमें आयके कछूक दिन रहे. ता पाछें श्रीगुसांईजीकौ तथा सब बालकनकौ मनोरथ किये. पाछें श्रीगुसांईजीसों बिदा व्है कै गुजरात आए. तब भली भांतिसों सेवा करन लागे. सो जैसें वह वैष्णव कहतो तैसेंई सेठ करतो. सो या प्रकार दोउ जने भले वैष्णव भए. सो उन वैष्णवके सङ्ग तें सेठ हू भलो वैष्णव भयो.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो सेठने वा वैष्णवकी सकाम बुद्धि करिकै हू वित्तजा सेवा करी तो याकौ भाग्य फल्यो. ये वैष्णव भयो. ब्रजके, श्रीगुसांईजीके दरसन भए. जमुना - पान भयो. ऐसो फल मिल्यो. तो, जो कोऊ निष्काम भाव तें वैष्णवनकी प्रीतिपूर्वक तनुजा - वित्तजा सेवा करें तो कहा न होई ? तातें निष्कञ्चन, विरक्त वैष्णवनकी निष्काम बुद्धि तें जैसे बने तैसे सेवा करनी, यह सिद्धान्त जतायो.

सो वह वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२०४।।

२०५-एक कुनबी पटेल

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक कुनबी पटेल, जाके परोसमें लाड़ बनिया रहतो, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त है. लीलामें इनकौ नाम 'सुगन्धा' है. और सुगन्धाकी एक सखी है. ताकौ नाम 'कामकुन्तला' है. सो यहां लाड़ बनिया भयो. सो सुगन्धा 'बन्दी' तें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप है.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समय श्रीगुसांईजी गुजरातमें पधारे हते. तब वा कुनबी पटेलने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मोकों कृपा करिकै नाम सुनाइए. मैं बोहोत दिन तें भटकत फिरत हों. सो आप तो परम दयाल होसो मो पर कृपा कीजिए. तब आपने वाकों और वाकी स्त्रीकों नाम सुनायो. पाछें एक उपवास करवायकै निवेदन करवायो. और श्रीठाकुरजीकी सेवा पधराए. और मार्गकी रीति सिखाई. पाछें आप तो आगेकों पधारे. ता पाछें वह कुनबी पटेल और उनकी स्त्री श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लागे. सो वे मार्गकी रीतिसों सेवा करते. और सुन्दर उत्तम तें उत्तम सामग्री करिकै श्रीठाकुरजीकों समर्पते. ता पाछें भोग सराय वैष्णवनकों महाप्रसाद लिवावते. सो ऐसे उनकौ नित्य नेम हतो सो भलीभांतिसों श्रीगुसांईजीकी आज्ञा प्रमान सब कार्य करतें. और अहर्निश भगवद्रसमें सदा छके रहते. सो वा कुनबी वैष्णवसों श्रीठाकुरजी सानुभावता जतावन लागे.

सो वा कुनबी वैष्णवके परोसमें एक लाड़ बनिया रहतो. सो वह अन्यमार्गीय हतो. और वह लोभी बोहोत हतो. सो वह लाड़ बनिया द्रव्यके लोभसो मलीन जन्त्र - मन्त्र बोहोत ही करत हतो. और 'अविद्या देवी' कौ पाठ करवावतो. और 'तामसी देवी' की पूजा करतो. और गुगल उरदकी धुप देई. ताकी गन्ध सब मन्दिरमें आवे. सो श्रीठाकुरजी आप उदासीन बिराजे रहते. तब एक दिन वा कुनबी वैष्णवने

श्रीठाकुरजीसों पूछ्यो, जो महाराज ! आप उदास क्यों बिराजे हो ? तब श्रीठाकुरजीने वा कुनबी वैष्णव तें कह्यो, जो यह तेरो परोसी लाड़ बनिया अन्याश्रय बोहोत ही करत है. और अविद्या देवीकौ पाठ करवावत है. और मलीन जन्त्र - तन्त्रके शब्द (और गन्ध) मेरे मन्दिरमें आवत हैं. सो यातैं हों उदास होत हों. तब ऐसें आपके श्रीमुखके बचन सुनिकै वा पटेल वैष्णवने लाड़ बनियासों कही, जो तुम मलीन जन्त्र - मन्त्र और अविद्या देवीकौ पाठ मति करो. सो यातें कछू अर्थ सरेगो नाहीं. उलटो परमार्थकों बिगारत हो. सो ऐसें बोहोत ही प्रकारसों वह लाड़ बनियाकों कहन लाग्यो. परि वह लाड़, बनिया मानतो नाहीं. तब एक दिन वा कुनबीने लाड़ बनियासो कही, जो तुम वैष्णव होउ तो भली बात है. जो तुम्हारे काम होइंगे सो सब सरेंगे. तब वा लाड़ बनियाने कुनबी वैष्णवसों कही, जो आज मोकों रात्रिमें मुकतोसो द्रव्य मिले तो सवारे ही वैष्णव होउं और जो नाहीं मिले तो कबहू न होऊंगो. जो वैष्णव तो दरिद्री होत है. तब वा कुनबी वैष्णवने लाड़ बनियासों कही, जो कदाचित् रात्रिमें द्रव्य मिले तो कहा करनो ? काहे तें, जो श्रीप्रभुजी तो सर्व करन समर्थ हैं. तब वा लाड़ बनियाने कुनबी वैष्णवसों कही, जो कदाचित् रात्रिमें द्रव्य मिले तो सवारे वैष्णव निश्चै होऊं. सो यामें कछू सन्देह नाहीं. और तुम कहोगे सो करूंगो. तब वा कुनबी पटेल वैष्णवने लाड़ बनियासों कही, जो भले, तू बचन दे. तब वा लाड़ बनियाने कही, जो मेरो बचन ही है. तब लाड़ बनियाने कुनबी वैष्णवकों बचन दियो. और कह्यो, जो रात्रिमें द्रव्य मिले तो सवारे वैष्णव सर्वता होनो. ता पाछें भगवद् इच्छा तें रात्रिकों वा घरकी भींती चोकमें गिरी. सो ताहीमें द्रव्य फेल्यो देख्यो. तब सवारे उठिकै देखे तो भींति गिरी है. सो ताही में द्रव्य चौकमें फेल्यो पर्यो है. तब लाड़ बनियाने बोहोत ही बेगि - बेगि द्रव्य उठाय लियो. सो ठिकाने घर राख्यो. पाछें वा लाड़ बनियाने अपने मनमें विचार कियो, जो देखो भाई ! मैंने द्रव्यके लिये इतनो जतन कियो. और जन्त्र - मन्त्र किए. और द्रव्य हू मैंने बोहोत खरच्यो. परि मोकों द्रव्य नाहीं मिल्यो. और इन कुनबीने काल्हि मोसों कह्यो, भगवद् इच्छा प्रबल है, और प्रभु सर्वकरन समर्थ हैं, सो याही तें रात्री ही कों सर्व कार्य भयो. और याकों मैंने बचन दीनो है और या कुनबी वैष्णवके कहेते मोकों तुरत ही द्रव्य मिल्यो है. तब वा लाड़ बनियाकों विश्वास आयो. सो यह कुनबी वैष्णव कहत हैं सो तो सब सांची बात है और इनकौ धर्म सांचो है. सो याके कहेते तुरत ही द्रव्य मिल्यो है. तातें अब या कुनबी वैष्णवसों सांचो रहनो. और यह कहे, सो करनो. तातें वैष्णव हूजिये. पाछें वह लाड़ बनिया कुनबी वैष्णवके पांवन पर्यो. और कह्यो, जो तुम बड़े महापुरुष हो. और बोहोत ही सांचे हो. जो तुम्हारी कृपा बलतें मोकों बोहोत ही द्रव्य मिल्यो है. ता पाछें वा लाड़ बनियाने सब समाचार वा कुनबी वैष्णवसों कहे. और कह्यो, जो अब तुम कहो सो करों.

तब वा लाड़ बनियासों कुनबी वैष्णवने कह्यो, जो कह्यो करेगो तो बोहोत ही सुख पावेगो. और द्रव्य हू तेरे नित्य सवायो होइगो. और कदाचित् कह्यो नाहीं मानेगो तो द्रव्य हू कौ नास होइ जायगो. सो ऐसें वा कुनबी वैष्णवने वा लाड़ बनियासों कही. ता पाछें वा लाड़ बनियाकों श्रीठाकुरजीके सन्निधान नाम सुनायो. और वैष्णव कर्यो. ता पाछें वा लाड़ बनियाकों श्रीगोकुल पठायो. ता पाछें उन दोउ स्त्री - पुरुषन तथा पुत्रादि सबनने श्रीगुसांईजीके पास नाम - निवेदन कर्यो. ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करे. और ब्रजकी परिक्रमा करी. पाछें थोरे दिन रहिकै सब मार्गकी रीति सीखी. ता पाछें नीगुसांईजीकों बोहोत भेंट करी. ता पाछें श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! आज्ञा होंइ तो मैं अपने घर जाऊं. तब श्रीगुसांईजीसों बिदा होइकै श्रीठाकुरजी पधराइ अपने देसकों गयो. सो कितनेक दिनमें अपने देस आय पहोंच्यो. तब वा कुनबी वैष्णवसों मिले, भेटे. ता पाछें श्रीगोकुलके सब समाचार कहे. पाछें अपने श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लाग्यो. सो जो कछू कार्य करें सो कुनबी वैष्णवसों पूछिकै करे. सो वा कुनबी वैष्णवपै बोहोत ही दृढ़ विश्वास हतो. ता पाछें वा कुनबी वैष्णवने लाड़ बनियासों कही, जो अब तुम्हारे घरमें बरजियो, जो स्त्री पुत्रादि रञ्च हू अन्याश्रय न करे. क्यों ? जो श्रीठाकुरजी और द्रव्य दोनों रहेंगे नाहीं, सो तुम या बात तें सर्वथा डरपत रहियो. और श्रीठाकुरजीके विषे दृढ़ विश्वास राखेगो तो द्रव्य हू बोहोत बढ़ेगो. और श्रीठाकुरजी हू सानुभावता जनावेंगे. सो याही तें सर्व कार्यमें सर्व ठौर श्रीआचार्यजीकौ आश्रय ही मुख्य है. और या मार्गमें कछू भय नाहीं है. जो अन्याश्रय भय है. सो महाभय है. सो वा समान और कछू भय नाहीं. सो दिनमें तो श्रीठाकुरजी आपकी सेवा करते. और रात्रिकों दोउ एकान्त ठौर बैठिकै भगवद् वार्ता कीर्तन करते. और श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके सेवकनकी वार्ता करते. और ग्रन्थनकी टीका देखते. और आश्रयकौ प्रसङ्ग करते. और श्रीगुसांईजीके सेवकनकी वार्ता करते. सो या प्रकार श्रीठाकुरजीसों सानुभावता बढ़ी. सो श्रीठाकुरजी मांगि - मांगिकै अरोगते. और द्रव्य हू बोहोत बढ्यो. सो द्रव्यके लिये स्तुति करिवेकों बोहोत ही भले - भले आवन लागे. सो द्रव्यके लिये बिनु बुलाए आवते. परि सेठ काहूसों कछू बोले नाहीं. और काहूसों कछू पूछे नाहीं. और वे तो सेठजीकों रिझायवेके लिये अनेक बातें करते. और देह सम्बन्ध तो माया सम्बन्ध तें ममत्व बढावे. और कह्यो, जो कछू ज्ञाति कुटुम्बमें सगेनमें तुम्हारी कीर्ति बढ़ेगी. और स्त्री पुरुष तें कहे, जो हमकों कछू गहना बनवाय देऊ. तामें तुम्हार सोभा बढ़ेगी. और गाढ़े काममें द्रव्य अर्थ काम आवेगो. और ब्राह्मन कहे, जो सेठजी ! कछू ब्राह्मन भोजन करवावो. तो बोहोत ही आछो है. जो दान करे तें द्रव्य बोहोत ही भेलो होयगो. और बोहोत ही द्रव्य लाभ होयगो. और गोदान सिज्यादान ये बताये हैं. सो तुम देऊ. सो याही तें तुम्हारों जस बढ़ेगो. और

परलोकमें पावोगे. यह लोक परलोक दोऊ सुधरेंगे. जो हम तो सांची कहत हैं. सो तुम हमारी बात मानो. और वेद शास्त्रनमें कह्यो है, जो दान बड़ो पदारथ है, और भाट चारन पुरखानकौ जस बोले. और बोहोत ही कवित्त दोहा बनायकै कहे. ओर उदर भरनके अर्थ बोहोत ही परपञ्च करे. और जोतसीन आवे सो ग्रह लगावे. सो ऐसें अपने स्वारथके लिये सब कोऊ बतावे. परि कछू न देय. और यह लाड़ बनिया तो कुनबी वैष्णवपैं विश्वास राखिकै वह लाड़ बनिया वा कुनबी वैष्णवसों कहे. तब वा कुनबी वैष्णवने वा लाड़ बनियासों कही, जो ये तो अपने - अपने सब स्वारथके लिये परपञ्च करत हैं. सो तुम इन बातनमें चित्त मति देउ. इन बातनमें एक हू सांचि मति मानियो. तू इन बातनमें मन मति डिगाइयो. इन बातनमें तेरो बिगाड़ है. सो ऐसी बात वा कुनबी वैष्णवने लाड़ बनियासों कही. सो वे तो लोभ जानिकै नित्य माथो चढावे. और जोतसी आवे सो ग्रह लगावे. और कहे, जो सेठजी ! तुमकों राहु - केतु बोहोत ही खोटे हैं. और दुःख दे हैं. सो याकौ दान करो तो बोहोत ही भली बात है. जो तुम्हारी कुसल होइ. और हमारो मन है सो प्रसन्न होय. जो हम तो तुम्हारे सुभचिन्तक हैं. सो ऐसें सेठकौ बोहोत ही भलो मनायवेकै लिये और अपने स्वारथके लिये अनेक प्रकारकी वे जोतसी बातें करे. और बिना बुलाये आवें. सो ऐसें सगरो दिन हाथ पै हाथ धरि बैठेई रहे. परि सेठजी तो सुनेई नाहीं. तब वे ब्राह्मन उनके मुखिया कामदारनसों कहे, जो तुम हमारी बिनती सेठजीसों करो, जो हम नित्य फिरि जात हैं. सो तो खाली हाथन जात हैं. हम ब्राह्मन तुम्हारे सुभचिन्तक हैं. सो ऐसें सेठजीसों बोहोत ही कहे, जो तुम हमारो बचनसत्य करिकै मानियो. जो हम तिहारे ग्रहकौ तो नित्य जप करत हैं. सो ऐसें बोहोत ही बातें करें. तब वा कामदारने सेठजीसों कही, भलो, ये ब्राह्मन जोतसी सुभचिन्तक हैं, सो इनकों कछू ग्रह निमित्त दीजिए. सो ऐसी बोहोत ही कहि जो मनुष्य राजद्वारकौ आवे तब वाकों भाग दीजे, ऐसें इनकों हू कछू द्रव्यादिक दिवावो तो बोहोत ही आछो है. सो ऐसें बोहोत ही कहिकै कामदारने उनकों कछू दिवायो. तब इतनेमें वा लाड़ बनियाके घरमें चोरी भई. तब तो लाड़ बनियाकों बोहोत ही दुःख क्लेस भयो. तब वा कुनबीने लाड़ बनियाके समाचार सुने. तब वा कुनबी वैष्णवने लाड़ बनियासों कही, जो तुमने अन्याश्रय कर्यो होइगो. सो याही तें यह तो ऐसो भयो है. पाछें वे जोतसी फेरी आए. तब सेठजीसों जोतसीनने कही, जो तुम दीनो हतो सो तो धर्म भयो. सो याही तें यह तो कछू कुसल भई है. नांतरु बोहोत ही हानि होती. जो तुमकों सनिश्चर दुःख देत है. सो याही तें तुम दान - पून्य देउगे सो तुम्हारी कुसल होइगी. नांतरु बोहोत ही हानि होइगी. तब सेठजीसों कहिकै कामदारने इनकों और हू दिवायो. और वा वानोतरने जप करवायो हतो. सो वा वानोतरने सेठजीसों कही, जो तुम नाहीं देउगे. तो इतनो हम देइंगे. जो हमारे

हजार रुपैयानमें तें हम भरि देइंगे. जो तुम या ग्रहकौ जप करवावो. जो तुमकों हम रुजगार में तें भरि देइंगे. तब सेठ तो कछू बोले नाहीं. ता पाछें स्त्रीने गोप्य अन्याश्रय कियो. पाछें वा वानोतरने जोतसीनसों कही, जो तुम या ग्रहकौ जप करो. इतनो हम तुमकों देइंगे. तुम सुखेन करो. वा पाछें सेठजीकौ मन प्रतिष्ठामें गयो. तब सेठके सेव्य श्रीठाकुरजीने वा कुनबी वैष्णवसों कह्यो, जो हम तो यहां तें जात हैं. जो यहां तो अब अन्याश्रय बोहोत होत है. सो ऐसें वा कुनबी वैष्णवसों श्रीठाकुरजीने कही. तब वा कुनबी वैष्णवने श्रीठाकुरजीसों कही, जो 'निजेच्छातःकरिष्यति'. जो मैं तो इनसों कहत हुतो परि इन मानी नाहीं. याही ते अब आप अपने पधारो. अब मेरो चारो नाहीं है. तातें आप प्रभु हो, भली जानो सो करो. तब श्रीठाकुरजी आप तो श्रीगोकुल पधारे. और द्रव्य हू जैसें आयो हतो तैसें ही गयो. जो द्रव्य तो श्रीठाकुरजीके पाछे हैं. ता पाछें बोहोत ही उपद्रव भयो. सो जो वस्तु जाके हाथ आई सोई गई. और कछू घरकौ द्रव्य हतो सो सब ऋणिया ले गए.

और एक तुरककौ बोहोत ही द्रव्य हतो. सो वा तुरकने सेठजी पास मांग्यो. तब द्रव्य तो रह्यो नाहीं. सब मांगवेवारे ले गए. सो वा तुरकने सेठकों बंदीखानेमें दियो. सो बेहोत दिन भए. तब खायवेकों कछु दिन वाके सगेने बंदीखानेमें पहोंचायो. ता पाछें पहोंचावते हू नाहीं. घरसों कछू न आवतो. तब सेठ कछु दिन चवेना चवायकै रह्यो. तब वा सेठने अपने मनमें कही, जो देखो ! मैंने सगे - सोदरें सबकों खवायो. परि मेरी या समै सगो कोऊ न भयो. तब वा सेठकों सब ज्ञान भयो. तब कितनेक दिनमें और दूसरों हाकिम बैठ्यो. तब हाकिमने कही, जो बन्दीखानेमें तें सबकों छोरि देऊ. तब उहां तें सब बन्दीखाने तें छूटे. तब सेठ हू छूट्यो. तब अपने घर आयो. तब घरकेनसों कह्यो, जो मेरो सगो कोऊ नाहीं भयो. यातें अब मेरे तुम सों कछू प्रयोजन नाहीं है. तब वह लाड़ बनिया वा कुनबी वैष्णवसों मिल्यो. और कह्यो, जो मेरो तो यह हवाल भयो. तब वा कुनबी वैष्णवने कही, जो मैं तो तुमसों पहले ही कह्यो हतो, जो तुम अन्याश्रय तें डरपत रहियो. जो तुम अन्याश्रय करोगे तो यह द्रव्य हू न रहोगो और श्रीठाकुरजी हू न रहेंगे. सो सब गयो. तब वह लाड़ बनिया कुनबी वैष्णवके पांवन पर्यो. जो मेरो कियो मैं पायो. परि अब तुम मेरो अपराध क्षमा करो. तब वा कुनबी वैष्णवने कही, जो अब तुम सेवा करो. तब वह सेठ वा कुनबी वैष्णवके उहां श्रीठाकुरजीकी टहल करन लाग्यो. सो बोहोत दिन लों टहल कीनी. तब श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे. पाछे कितनेक दिनमें वाकी देह छूटी. सो भगवतचरणारविन्दमें प्राप्त भयो.

भावप्रकाश :
तातें अन्याश्रय ऐसो बाधक है. जो अन्याश्रय कामदार द्वारा भयो तातें ऐसो भयो. सो सब सत्यानास होई गयो. और श्रीठाकुरजी हू अप्रसन्न भए. और द्रव्य हू कौ नास भयो. तातें वैष्णवकों अन्याश्रय सर्वथा नाहीं करनो. जो करे तो ऐसी दसा होंई.

सो वे कुनबी वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२०५।।

२०६-आनन्ददास सांचोरा ब्राह्मन, गुजरातकौ

अब श्रीगुसांईजीके सेवक आनन्ददास सांचोरा ब्राह्मन, गुजरातिमें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त है. लीलामें इनकौ नाम 'तारा' है. ये 'बन्दी' तें प्रगटी है. तातें उनके भावरूप हैं

ये गुजरातमें एक सांचोरा ब्राह्मनके घर जन्म्यो. सो वा ब्राह्मनके परासमें एक वैष्णव गृहस्थ रहतो हुतो. सो आनन्ददासकौ पिता वाके घर नौकरी करतो. सो कितेक दिनमें आनन्ददासकौ पिता मर्यो. तब आनन्ददास वाके घर रहे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समय गुजरातकौ सङ्ग श्रीगुसांईजीके दरसनकों श्रीगोकुल आयो हतो. सो ता साथमें आनन्ददास हू आये. सो आनन्ददास गृहस्थ वैष्णवके सङ्ग आए हुते. सो वह वैष्णवके घर श्रीठाकुरजीकी सेवा हती. और वा वैष्णवके बेटा - बेटी बोहोत हते. सो आनन्ददास हू

उनके घर रहते. सो वा वैष्णवने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो राज ! आनन्ददासकों नाम निवेदन कराइए. तब आनन्ददासकों नाम पाछे एक ब्रत कराय श्रीगुसांईजी आपु आनन्ददासको निवेदन कराए. पाछें वा वैष्णवने श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मांगि आनन्ददासकों रसोईकी टहलमें राखे. सो आनन्ददास वा वैष्णवके घर रसोई करन लागे. सो रसोई भलीभांतिसों करते. पाछें विधिपूर्वक श्रीठाकुरजी आपुकी सेवा - सिंगार (हू) करते. अनोसर (आदि) सगरी (सेवा) रीतिसें करते.

सो एक दिन आनन्ददास परोसनकों आए. सो वा वैष्णवके घर धग्गूजाट चाकर हतो. सो सगरे दिन अपरस ही में रहतो. सो वासों सब कोई धग्गू पांडे कहते. सो आनन्ददासकों सामने देखिकै धग्गूजाट चोंकिकै उठि चल्यो. जो यह मनुष्य तो कोई नयो आयो दीसत है. सो मैं तो इनके हाथकौ महाप्रसाद न लेउंगो. सो दोय दिन लों कछू चना चवेना चवायकै रह्यो. और तीसरे दिन वह धग्गूजाट आय बैठ्यो. सो सब कोऊ कहन लागे, जो ता दिन कहां उठि गए हते ? और आज कहा जानिके पाछे आए हो ? तब वा धग्गूजाटने कही, जो अरे भाई ! तीसरे दिन तो नए चरसकौ पानी हू पीवत है. सो बोहोत ही प्रसन्नता सों वार्ता करी. तब आनन्ददासने कही, जो देखों भाई ! मैं चाम - चरसकी ठौर हूं.

भावप्रकाश :
याकौ भाव यह है, जो वैष्णवके हाथकौ जल महाप्रसाद सब लीजिए. और ता उपरांत अपनो मन माने तो लीजिए. सो उत्तम रीतिसों करे तहां महाप्रसाद लीजिए. सो एक दिन श्रीठाकुरजीकी सेवा करे सो अपनी रीतिसों देखे. पाछें नित्य देखिऐ नाहीं. ताके हाथकौ नित्य जलपान लीजिए. और ठौर लेनो उचित नाहीं.

सो वे आनन्ददास श्रीगुसांईजीके ऐसें परम कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२०६।।

२०७-गोकुल भटट, गोविन्द भटट, उज्जैनके

अब श्रीगुसांईजीके सेवक गोकुल भटट, गोविन्द भटट, दोउ भाई, सांचोरा ब्राह्मन कृष्ण भटटके बेटा, उज्जैनिमें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत है

भावप्रकाश :

ये दोउ भाई सात्विक भक्त हैं. लीलामें 'अरविन्दी' 'गोविन्दी' इनके नाम हैं. सो अरविन्दीके अङ्ग ते कमल कीसी मकरन्द आवति है. सो तो इहां गोकुल भटट भए. और 'गोविन्दी' ठाकुरके स्वरूपमें रात - दिन मगन रहति हैं. सो गोविन्द भटटकौ प्रागट्य जाननो. ये दोऊ 'बन्दी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं. सो ये कृष्ण भटटके घर उज्जैनिमें जन्मे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो एक समै श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल तें उज्जैनि पधारे. तब गोकुल भटट गोविन्द भटट नाम - ङ्कॐ'निवेदन पाये हे. सो वे बड़े कृपापात्र भगवदीय भए. सो गोकुल भटट तो अहर्निश श्रीसुबोधिनीजी देखते. और गोविन्द भटट श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके ग्रन्थ तथा श्रीसुबोधिनीजीकौ पाठ करते.

सो श्रीगुसांईजी आपु जब परदेस पधारते तब यह दोउ भाई आपके साथ आवते. सो भगवद वार्ता - सेवा करते. और बड़े - बड़े ग्रन्थ वादके सिखते. सो सबनसों वाद करते. पाछें जब श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार पधारते तब ये दोउ भाई श्रीनाथजीद्वार जाते. सो प्रातःकाल तें स्नान करिकै श्रीगोवर्द्धननाथजीके मन्दिरमें जाइकै राजोभग पर्यन्त सेवामें रहते. और पाछें उत्थापन तें ले कै सेन पर्यन्त सेवामें रहते. तातें श्रीगुसांईजी उन दोउ भाइनके उपर बोहोत प्रसन्न रहते.

भावप्रकाश :

या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो सेवा बिना मार्गमें अङ्गीकार नाहीं. तातें वैष्णवकों सेवा बिनु रहनो नाहीं. पाछें सुमिरन हू करनो. सो या प्रकार सेवा - स्मरन दोउ कहे, वैष्णवकों.

सो वे दोउ भाई गोकुल भटट गोविन्द भटट श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए वार्ता ।।२०७।।

२०८-चांपाभाई क्षत्री

अब श्रीगुसांईजीके सेवक चांपाभाई क्षत्री, अधिकारी हते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त है. लीलामें इनकौ नाम 'चर्चिका' है. ये 'कमोदिनी' तें प्रगटी है. तातें उनके भावरूप है.

ये गुजरातमें एक द्रव्यपात्र क्षत्रीके जन्मे. सो चांपाभाईके जन्मत ही वाकौ पिता मर्यो. पाछें मामाने इनकों बड़ो कियो. सो ये बरस बीसके भए तब इनकी माता हू मरी. सो इनकौ ब्याह तो भयो नाहीं. सो ये वैराग्य दसामें रहते.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समय श्रीगुसांईजी आपु गुजरातकों पधारे. तब चांपाभाईके गाममें डेरा भए. तब चांपाभाईने श्रीगुसांईजीके दरसन पाये. पाछें बिनती करी, जो महाराज ! मोकों नाम सुनाइए. तब श्रीगुसांईजीने कृपा करिकै चांपाभाईकों नाम सुनायो. पाछें दूसरे दिन उपवास करिकै निवेदन करवायो. तब चांपाभाईने सब द्रव्य घर श्रीगुसांईजीकी भेट कर्यो. तब श्रीगुसांईजीने चांपाभाईकी ऐसी दसा देखिकै अपने पास राखे. सो जहां आप पधारते, तहां साथ रहते. पाछें चांपाभाईकों अधिकारपनो सोंप्यो. और कह्यो, जो ये सब सेवा तुम करो.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

बहोरि एक समय श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल तें अचानक श्रीरनछोरजीके दरसनकौं और भाईला कोठारीकौ मनोरथ पूरन करिवेकों द्वारिका पधारे. सो तहां तें आप 'सीकरी फतेपुर' पधारे. सो घर तें जब चले तब चांपाभाई संकरभाई भण्डारी हते. परि तिनको आप न कहे, जो हम फलानी ठौर पधारेंगे. सो वा समय फतेपुर बीरबल हतो. सो तिनने सुनी, जो श्रीगुसांईजी पधारे हैं. तब बीरबल साम्हे आइकै श्रीगुसांईजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै श्रीगुसांईजीकों आपने डेरानमें पधरायकै ल्यायो. ता पाछें आपके ही डेराके पास दूसरो डेरा श्रीगुसांईजीकौ ठाढ़ौ कियो. ता पाछें बीरबलने श्रीगुसांईजीके दोई - चारि मुकाम करवाये. तब चांपाभाई संकरभाई बीरबलसों पूछिकै श्रीगुसांईजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै आपुसों बिनती कीनी, जो महाराज ! काहूसों कहे बिना अचानक परदेस पधारत हो ? तब श्रीगुसांईजी चांपाभाई संकरभाईसों कहे, जो भाईला कोठारीकों देखे बिनु बोहोत दिन भए हैं. सो तातें अब तो एक बेर गुजरातिकों पधारूंगो. तब श्रीगुसांईजीके बचन सुनिकै चांपाभाई चुप करि रहे. ता पाछें चांपाभाई संकरभाईसों बीरबलने पूछ्यो, जो श्रीगुसांईजी ऐसी उतावलिसो कहां पधारत है ? सो कारन कहा है ? तब चांपाभाईने बीरबलसों कह्यो राजाजी श्रीगुसांईजीके भण्डारमें करज बोहोत भयो है, तातें गुजरातके परदेसकों पधारेंगे. तब बीरबलने कह्यो, जो करज कितनोक भयो है, तातें गुजरातिके परदेसकों पधारत है ? तातें करज भयो होइ सो मोसों कहो. मैं करजकौ द्रव्य देउंगो. और तुम श्रीगुसांईजीकों पधारत तें राखो. सो श्रीगुसांईजी आप तो अन्तर्यामी हैं. सो उन दोउ जनेंनके मनकी बात जानि गए. ता पाछें श्रीगुसांईजी बीरबलकों खबरि किये बिना आधी रातके समय आगें पधारें. सो यह खबरि बीरबलकों बड़े ही प्रातःकाल भई. जो श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे हैं. सो आपु तो चले सो कितनेक दिनमें भाईला कोठारीके घर पधारे. ता पाछें भाईलाकौ सब मनोरथ सिद्ध किये. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप थोरे दिन भाईला कोठारीके घर बिराजें. श्रीद्वारिका श्रीरनछोरजीके दरसनकों पधारे. पाछें कितनेक दिनमें श्रीगोकुल पधारे. और बीरबलकों घर पधारे ताकों पत्र लिखे. सो पत्र बांचिके बीरबल अति विस्मृत भयो. ता पाछें चांपाभाईने श्रीगोकुल पधराए. सो आपकी सेवा करन लागे.

सो वे चांपाभाई श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२०८।।

२०९-किशोरीबाई

अब श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी किशोरीबाई ब्राह्मनी, गुजरातकी, याकों श्रीयमुनाजी नित्य दरसन देते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
सो वह किशोरीबाई गुजरातमें एक ब्राह्मनके जन्मीं. सो वाकौ पिता श्रीगुसांईजीकौ सेवक हुतो. सो वाके दो बेटी हती. तामें किशोरी छोटी हुती, सो इन दोउनकौं वाने श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी कराई हती. सो किशोरीबाईके उपर वाके पिताकौ बोहोत ममत्व हुतो. सो वाकों नित्य 'श्रीयमुनाष्टक' कौ पाठ करावे. लाड़ लड़ावे. बोहोत ही प्यार करे. सो किशोरी वर्ष नवकी भई तब वाकौ ब्याह एक जातिके लरिकासों कियो. सो वह ब्याह होत ही मर्यो. सो किशोरीने लौकिक कछु जान्यो नाहीं. ता पाछें केतेक दिनमें किशोरीकौ पिता हू मर्यो. और माता तो वाकी पहिले ही सों मरि चुकी हती. सो किशोरीकी बहनि वाकी खबरि राखे. ऐसे करत जब किशोरी बरस बीसकी भई तब वाकों सीतला निकसी.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वा किशोरीबाईकी देह सीतलामें रहि गई. हाथ पांव सो लुली भई. काननसों सूने नाहीं. पांवनसों चल्यो जाय नाहीं. मुख तें कछू बोल्यो न जांय. सो वाने अपने पिताके मुखसों 'श्रीयमुनाष्टक' पढ्यो हतो. सो वाकौ आधो श्लोक याद रह्यो हतो. सो वा किशोरीबाई आठों प्रहर वा श्लोककौ पाठ करती. सो काहूकों जतावती नाहीं. सो ऐसें आठों प्रहर पाठ कियो करती. सो श्लोक

विशुद्ध मथुरातटे सकलगोपगोपीवृते ।
कृपाजलधिसंश्रिते मम मनः सुखं भावय ।।४।।

या आधे श्लोककौ पाठ करती.

और किशोरीबाईकी एक बहनि हती. सो वह किशोरीबाईकों खवायके चली जाती. परन्तु अपने मनमें बोहोत दुःख पावती. परि करे कहा ? और किशोरीबाई श्रीयमुनाष्टककौ पाठ करे और महारानीजीकौ ध्यान मनमें करती. और काहूसौं बोलती नाहीं. सो एक दिन श्रीयमुनाजी मैले वस्त्र करि, पहरि, किशोरीबाईकी बहनि हती ताके घर पधारी. और कहन लागी जो तू अपनी बहनिकों रोटी खवावति है, सो ताही तें तू बोहोत दुःख पावत है. तातें किशोरीबाईकी रसोई तो मैं करूंगी. तब किशोरीबाईकी बहनिने श्रीयमुनाजीसों कही, जा भली बात है. मेरे हू मनमें ऐसी ही आई है. जो कोऊ याकी टहल करे तो मैं छुटूं. तातें अब तुम ही टहल करो. सो ता दिनतें श्रीयमुनाजी अपने श्रीहस्तकमलसों रसोई करिकै किशोरीबाईकों खवावती.

भावप्रकाश :
यह कहि यह जताए, जो 'श्रीयमुनाष्टक' के आधे श्लोककौ हू पाठ जो कोऊ निरन्तर करत है, ताके उपर श्रीयमुनाजी या भांति कृपा करति हैं. वाकी रसोई करति हैं. वाकों अपने श्रीहस्तसों खवावति हैं. तो जो कोऊ सगरे यमुनाष्टककौ पाठ निरन्तर प्रीतिपूर्वक करे ताके भाग्यकौ कहा कहिए ? तातें वैष्णवकों 'श्रीयमुनाष्टक'कौ पाठ अहर्निश करनो, तातें श्रीयमुनाजीकौ स्वरूप हृदयारूढ होंई. परम सौभाग्यकों पावे.

तब किशोरीबाईकों श्लोक उद्‌बोध भयो. और या श्लोकको भावार्थ हृदयारूढ़ भयो. और अपने मनमें बोहोत ही प्रसन्न होन लागी.

भावप्रकाश :
यामें यह जताए, जो किशोरीबाईकों श्रीयमुनाजीकी कृपा तें लीला - ऐश्वर्य स्फुर्यो. तब चित्तमें प्रसन्नता भई. और लौकिक क्लेश बाधा न कियो.

तब कितनेक दिनमें श्रीगुसांईजी आपु वा गाममें पधारे. तब वा गामके सगरे वैष्णव जुरिकै श्रीगुसांईजीके दरसनकों आए. तब श्रीगुसांईजी

भोजन करिकै विश्राम करिकै जागे. तब ताही समय श्रीगोवर्द्धननाथजी आप आयके स्वप्नमें श्रीगुसांईजीसों कहे, जो या गाममें एक दुर्बल पिंगला वैष्णव है. सो ताकों श्रीयमुनाजी नित्य महाप्रसाद लिवावति हैं. तातें उहां पधारिकै दरसन देउगे. तब वाकौ कार्य सिद्ध होइगो.

भावप्रकाश :

यह कहि यह जताए, जो श्रीयमुनाजीने कृपा करी, अब यापै आप कृपा करो. तब वाकौ कार्य सिद्ध होई. काहे तें, जो गुरुनकी कृपा बिना जीवकौ कार्य होंई नाहीं. यामें श्रीयमुनाजी तें हू श्रीगुसांईजीकी कृपाकौ उत्कर्ष विशेष कहे.

तब श्रीगुसांईजी आपु जागे. और अपने मनमें विचार कियो, जा एतो कोऊ दैवी जीव दीसत है. तब श्रीगुसांईजीको वा किशोरीबाईके उपर दया आई. सो आपु वा किशोरीबाईके घर पधारे. तब आपकी दृष्टि वा किशोरीबाईके अङ्ग - अङ्ग उपर परी. तब ताही समय किशोरीबाईकी देह अलौकिक सेवोपयोगी निर्मल - निर्विकार भई. आंखिनसों देखन लागी. काननसों सुनन लागी. तब ताही समय श्रीगुसांईजीकों सोलह सिंगार सहित श्रीयमुनाजीकौ दरसन भयो. तब आपु देखे तो श्रीयमुनाजी किशोरीबाईके पास बैठे हैं. तब श्रीयमुनाजीकों श्रीगुसांईजीने दण्डवत् करी. तब श्रीयमुनाजीने श्रीगुसांईजीसों दण्डवत् करी. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो हम तिहारे लिये आये हैं. तातें ऐसी मति करो. तब श्रीगुसांईजी फेरि श्रीयमुनाजीसों पूछे, जो यह कारन कहा है ? तुम अपने हस्तकमलसों श्रम करत हो ? तब श्रीयमुनाजी कहे, जो यह श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकौ वाक्य है, जो कोऊ श्रीयमुनाष्टककौ पाठ करत है ताकों हम प्रीतिसों निजलीलाकै निजजलसों स्नान करावति है. तातें वाके सकल दुरितनकौ क्षय होत है. मुकुन्दमें रति बढ़ावति हैं और मुकुन्दकी रति या जीवमें बढ़ावति हैं. या प्रकारकौ स्वरूप उज्ज्वल करति हैं. यमकों नहीं दिखावत हैं. और वाकों पुष्टिमार्गमें प्रवेश करावति हैं. परन्तु तुम्हारे कुलमें नाम निवेदन करत हैं और श्रीयमुनाष्टकको पाठ करत हैं. ताकों रासलीलाकौ सुख होत है.

भावप्रकाश :

यह कहि वल्लभकुलके सरनिकौ उत्कर्ष दिखाए. सो कहा ? जो वल्लभकुलके सरनि बिना पुष्टि रासमें प्रवेश होंई नाहीं. और श्रीआचार्यजीके बचनकौ उत्कर्ष कहे, जो केवल यमुनाष्टकके पाठ मात्रसौं श्रीयमुनाजी अष्टैश्वर्यकौ दान करत हैं.

सो यह किशोरीबाई यमुनाष्टकके अर्द्ध श्लोककौ पाठ अष्ट प्रहर प्रीतिसों गुप्त रीतिसों नित्य करत हैं, तातें हम अपने श्रीहस्त कमलसों महाप्रसाद लिवावत हैं. और अब ये शुद्ध भई है, तातें आप इनको सेवा पधराय दीजिए. पाछें किशोरीबाईने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मों पिंगलापे बड़ी कृपा करी. तातें आप अब, जो आज्ञा करो सो करों. तब आपने कृपा करिकै एक बंटीमें रमन रेती पधराय दिये. जो याकी तू सेवा भली भांतिसों करियो. और वा बंटीकों गादीके उपर पधराइकै अपने श्रीहस्त कमलसों सेवा करिकै पाछें किशोरीबाईकों श्रीगुसांईजीने सब सेवाकी रीति भांति सिखाई. ता पाछें किशोरीबाई नीकी भांतिसों सेवा करन लागी. और नित्यके नेगमें टका सातकी सामग्री करती. सो श्रीठाकुरजीकों अरोगावती. सो महाप्रसाद वैष्णवनकों लिवावती.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

सो एक दिन वा किशोरीबाईने श्रीनवनीप्रियजीकों गादी तकियानके उपर खेलते देखे. तब उह किशोरीबाई अपने मनमें बोहोत प्रसन्न भई. और श्रीठाकुरजीकी सेवा बोहोत प्रीतिसों करन लागी. सो किशोरीबाई सूत बोहोत कांतती. सो एक दिन एक वैष्णवने किशोरीबाईकों कछू सामग्री दीनी हती. तब किशोरीबाईने सिद्ध करिकै श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो. ता दिन श्रीठाकुरजी अरोगवेकों पधारे नाहीं. तब किशोरीबाई अपने मनमें बोहोत खेद करन लागी. तब श्रीठाकुरजी बोले, जो तेनें मेरे लिये सामग्री क्यों लीनी ? सो हम कैसे अरोगे ?

भावप्रकाश :

यामें यह जताए, जो वैष्णवकों औरकी सत्ता - सामग्री अपने श्रीठाकुरजीकों अरोगावनी नाहीं. और कछू वैष्णवपे तें लै के श्रीठाकुरजीकों विनियोग न करावनो. सो श्रीठाकुरजी अङ्गीकार न करे.

वार्ता प्रसङ्ग ३ :

और किशोरीबाईके घरमें श्रीठाकुरजी श्रीस्वामिनीजी सहित लीला करत हे. सो उह किशोरीबाई सब रसकौ दर्शन करती. सो ऐसे करत

किशोरीबाई श्रीनाथजीद्वार श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों आई. तब श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करिकै बोहोत प्रसन्न भई. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी वा किशोरीबाईकों देखिके हंसे. तब किशोरीबाई हू हंसी. तब ता समै लोग लुगाई दरसन करत हते. सो तिनने श्रीगोवर्द्धननाथजीकों हंसत देखे. तब यह बात वैष्णवनने जाइकै श्रीगुसांईजीसों कही. जो महाराज ! किशोरीबाई और श्रीगोवर्द्धननाथजी परस्पर हंसत हते. ताकौ कारन कहा है ? तब श्रीगुसांईजी इन वैष्णवनसों कहे जो किशोरीबाई श्रीगोवर्द्धननाथजीकी और श्रीयमुनाजीकी बड़ी ही कृपापात्र हैं. सो किशोरीबाईसों श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ स्पर्श है. और फेरि रामदास भीतरीयानें श्रीगुसांईजीसों पूछ्यो. तब श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो या किशोरीबाईपे तो श्रीयमुनाजीकी कृपा है. और श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी कृपा भई है. तब हम हू या प्रकार कृपा करी हैं. तब रामदास भीतरियाने कह्यो, जो महाराज ! यह कौन जीव है ? तब श्रीगुसांईजी रामदास भीतरीयासों अपने श्रीमुखसों आज्ञा किए, जो यह पहले श्रीनन्दरायजीके घरकी टहल करत हुती. सो या किशोरीबाईने श्रीठाकुरजीकों माखन बोहोत खवायो है. सो एक दिन श्रीयमुनाजीमें झूंठे बासन धोये हते. सो ता करिकै सरीर ऐसो दुःख भयो.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो श्रीयमुनाजी साक्षात् रसात्मक हैं. सो श्रीयमुनाजल हू रसरूप हैं. तातें वा जलमें लौकिक बुद्धि करि जो कोऊ बांसन मांजे, कुल्ला करे, तो वाकों ऐसी गति होंई. तातें वैष्णवनकौ श्रीयमुनाजल तें कोई कार्य करनो नाहीं. रसोई आदि कछू न करनो. केवल श्रीठाकुरजीकी झारी भरे, यह जताए.

और ये किशोरीबाई लीलामें कुमारिकाके यूथमें है. उहांऊ इनकौ नाम 'किशोरी' है. ये 'कमोदिनी' तें प्रगटी हैं, तातें उनके सात्विक भावरूप हैं.

सो श्रीनाथजीकी तथा श्रीयमुनाजीकी तथा श्रीगुसांईजीकी किशोरीबाईपैं बड़ी कृपा हती.

वार्ता प्रसङ्ग ४ :

और एक समय श्रीगुसांईजीने श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ उत्थापन कियो. तब किशोरीबाई अपने अङ्गमें सोंधो लगायकै श्रीनाथजीके मन्दिरमें गई. सो किशोरीबाईकौ ऐसो भाव हतो.

वार्ता प्रसङ्ग ५ :
और एक दिन श्रीगुसांईजीने अपने मनमें विचार कियो जो या किशोरीबाईने श्रीनन्दरायजीके घरमें लीलाकौ सुख देख्यो है. और अबहू बाललीलाकौ सुख देखत है. परन्तु रासलीलाकौ सुख देख्यो नाहीं है. तातें श्रीगुसांईजी आप बिलछूवन पधारे. सो तहां एक पद श्रीगुसांईजीने गायो. सो ता समै किशोरीबाई श्रीगुसांईजीके पास हती, और वैशाख महिनाके दिन हते. सो पद -

राग : केदारो
प्रीतम प्यारी पिया ये पग धारो प्रीति यही चलि आई ।
प्रगट नैनन लागी तारी रस भरे गिरिधारी, प्यारी ! मनि मन्दिर मुरारी ।
ता पर पूरन रससों भरे आली तिनकी लीला निस उजियारी ।
'श्रीविटठल गिरिधर' देखियत हैरी ! ये प्रगट नृत्यकारी ।

सो या कीर्तनमें श्रीगुसांईजी आपकौ तथा किशोरीबाईकौ चित्त गढि गयो. तब ता समय किशोरीबाईकों रासलीलाकौ दरसन करवायो. तब श्रीगुसांईजी ता समय किशोरीबाईकों चर्वित ताम्बुल दियो. और अनेक जूथ दिखावत भए. और दामोदरदासकों हू जूथनमें देखत भई. तथा और हू सब वैष्णवनकों देखत भई. सो ताके मधि किशोरीबाईने अपने स्वरूपकों हू देख्यो. जो मेरो हू स्वरूप लीलामें है. जो केदार राग रस भर्यो गाइ रही है. सो रसकी वार्ता है. सो श्रीगोकुलनाथजी 'रसमञ्जरी'की टीका लिखी है. तहां दामोदरदासजीकौ अद्भुत स्वरूप है. सो तहां किशोरीबाईने देख्यो. सो परम सौभाग्यमान है. स्वरूप अपार जाकौ पार नाहीं. सो पयो जात है. और हू ताके पीछे सगरे वैष्णव ठाढ़े हैं. तब किशोरीबाईने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! ये वैष्णव हैं. तैसें मैं हू पृथ्वी पर हों. और सर्व लीला मैं देखी.

ताकौ कारन कहा है ? तब श्रीगुसांईजीने किशोरीबाईसों कह्यो, जो या मारगमें वैष्णव है तिनके तीन स्वरूप हैं. १. आधिभौतिक २. आध्यात्मिक ३. आधिदैविक. आधिभौतिक हैं सो तो संसारमें हैं. आधिदैविक है सो नित्यलीलामें हैं. आध्यात्मिक हैं सो लीला मध्यपाती है. सो ऐसें तीन प्रकारके हमारे वैष्णव हैं. सो मारगकी रीति करिकै, जो सेवा करत हैं. और भावनासों लीलाकौ अनुभव हू करत हैं सो बड़भागी है. और हम तो दैवी जीवनके उद्धारार्थ प्रगट भए हैं. तब किशोरीबाईने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! आप तो सर्व सामर्थ्यवान् हो. जो चाहो सो करो. आप तो श्रीस्वामिनीजीकौ स्वरूप हो. और सब भांति करिकै हमारे मनोरथ पूरन कर्ता हो. जो या लीलाकौ सुख दिखायो. पाछें किशोरीबाईने श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् कीनी. तब श्रीगुसांईजीने श्रीमुख तें आशीर्वाद दियो. और माथे उपर श्रीहस्तकमल धरे. और श्रीमुख तें कहे, जो सर्वदा वैष्णवनको सङ्ग करियो. तब ता समै चाचा हरिवंशजी बैठे हते. तब चाचा हरिवंशजीने श्रीगुसांईजीसों पूछ्यो, जो महाराजाधिराज ! यह कहा कारन है ? जो किशोरीबाईके माथे उपर श्रीहस्तकमल धरे. और आज्ञा किये, जो सदा सर्वदा भगवदीयकौ सङ्ग करियो. गङ्गाजलसों जल मिले तो उह गङ्गाजल समान है. और आशीर्वाद दियो ताकौ हेतु कहा ? तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें कहे, जो भगवदीयकौ स्वरूप है सो गङ्गाजल रूप है. सो ताही तें उनही सें मिले तें हमारो स्वरूप जानेगी. तातें कह्यो, जो भगवदीयनकौ सत्सङ्ग करनो. और उनकी वार्ता चर्चा सुनत रहनी. उनहीके हाथकौ महाप्रसाद लीजिए. यह सुनिकै चाचाजी बोहोत प्रसन्न भए. और श्रीगुसांईजी आप आज्ञा किये, जो किशोरीबाईको जन्म फेरि भूतलपै होइगो. सो श्रीगोकुलनाथजीकी बहूजी होइगी. सो यह वार्ता गोप्य है. सो सुनिकै हृदयमें राखोगे.

भावप्रकाश :

या वार्तामें श्रीयमुनाजी, श्रीगुसांईजीकौ स्वरूप कहें. जो श्रीयमुनाजी और श्रीगुसांईजी दोउ परम दयाल हैं. दोनोंकौ प्रागट्य दैवी जीवके उद्धारार्थ हैं. श्रीयमुनाजी जब कृपा करे तब जीवकों सेवोपयोगी नूतन देहकी प्राप्ति होंई. और श्रीगुसांईजीकी कृपा तें वा जीवकों लीलाकौ अनुभव होंई. निज अन्तरङ्ग सृष्टिमें अङ्गीकार हू होंई. तातें जीवकों दोउनकौ आश्रय कर्तव्य है. यह जताए.

सो उह किशोरीबाई श्रीगुसांईजीकी ऐसी परम कृपापात्र भगवदीय ही. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२०९।।

२१०-दोउ भाई कुनबी पटेल

अब श्रीगुसांईजीके सेवक दोई भाई कुनबी पटेल, मलयागिरि चन्दन ल्याये, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये दोउ भाई तामस भक्त हैं. लीलामें दोउ गोप हैं. सो एककौ नाम 'सुमङ्गल' और दूसरेकौ 'श्रीमङ्गल'. सो बड़ो भाई सुमङ्गलकौ प्रागट्य, और छोटो 'श्रीमङ्गल'. ये दोउ 'कमोदिनी' तें प्रगटे हैं, तातें उनके भावरूप हैं. सो ये दोउ गुजरातमें कुनबीके प्रगटे. सो बरस बीस - पचीसके भए. तब इनके माता - पिता मरे. तब ये तीर्थयात्राकों चले.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समय गुजराति तें सङ्ग आयो. तामें ये दोउ भाई पटेल हू आए. सो सङ्ग श्रीगिरिराजजी श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों गयो. सो येऊ श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों सङ्गके साथ गोपालपुर श्रीनाथजीद्वार आए. सो दोउ भाईने श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. पाछें श्रीगुसांईजीके दरसन किये. सो दोउ भाईकों श्रीगुसांईजी आपके कोटिकन्दर्प लावण्य पूर्णपुरुषोत्तम ऐसे दरसन भए. सो दोउनने विचार कियो, जो भाई ! इनकी सरनि मिले तो आछो. पाछें गिरिराज तें उतरि श्रीगुसांईजीकी बैठकमें आए. सो तहां श्रीगुसांईजी आप वैष्णवनके सङ्ग हास्य - विनोद करत हते. तब इन दोउ भाईन आइ दण्डवत् किये. पाछें समय पाय बिनती कीनी, जो महाराज ! कृपा करि हम दोउनकों सेवक कीजिए. तब श्रीगुसांईजी आप प्रसन्नतासों दोउनकों नाम सुनाए. पाछें एक ब्रत करवाय दूसरे दिन निवेदन करवाए. ता पाछें दोउनकी ओर कृपा सुदृष्टि करि चितये. सो दोउ भाई बड़े प्रसन्न भए. पाछें ये दोउ भाई श्रीगिरिराजमें रहि गए. सो श्रीगुसांईजीकी श्रीगोवर्द्धननाथजीकी टहल जो बने सो करे.

वार्ता प्रसङ्ङ्ग २ :

सो एक दिन श्रीगुसांईजीने इन दोउ, भाईनकों कृपा करि आज्ञा किये, जो तुम दोउ जांइकै मलयागिरि चन्दन लावो तो आछो है. तब सुनत ही वे दोउ भाई मलयागिरि चन्दन लेवेकों गए. सो केतेक दिनमें मलयागिरि जांई पहोंचे. पाछें दोउ भाईनने खालमें सरीर मढ़ि लिये. एक आंखि खुली रही. और सब मढ़ि लीयो. पाछें एक भाई तो लम्बी डार ले कै ठाढौ भयो. तासों दूसरो भाई चढ्यो, सो वाने छेडा ले कै मलायागिरिकी डारिसों बांध्यो. फेरि करोतीसों काटी. सो डार गिरत ही भुजङ्गने फूंक मारी. सो वह फूंक मारत उहांई रह्यो. तब दूसरो भाई डारि खेंचि काट कूटिकै मलयागिरि ले आयो. सो केतेक दिनमें आयकै श्रीगुसांईजीके दरसन किये. तब श्रीगुसांईजी प्रसन्न व्है आज्ञा किये, जो मांगि. तब वाने कही, जो महाराज ! श्रीनाथजीके श्रीअङ्गमें चन्दन समर्पो. तब आपने कही, जो आछो. तब वाने चन्दन सिद्ध करिकै श्रीनाथजीकों समर्प्यो. तब तहां देखे तो दूसरो भाई पंखा करत है. तब उह देखिकै बोहोत प्रसन्न भयो.

भावप्रकाश :

या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो गुरुकी आज्ञा पर विश्वास राखि कार्य करे तो निश्चै सिद्ध होंई. और सेवा अर्थ देह गिरे तो श्रीनाथजी वाकों कबहू छोरत नाहीं, येहू जताए.

सो वे दोउ भाई श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२१०।।

२११-गुलाबदास पूर्वकौ क्षत्री

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक गुलाबदास पूर्वकौ क्षत्री, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :

ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनको नाम ‘श्रीदेवी’ है. सो आगें एक अदना गरीबकी वार्तामें कहि आए हैं. ये ‘सुगन्धरा’ तें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं.

ये पूरबमें एक द्रव्यमान, क्षत्रीके जन्म्यो. सो बरस बीसकौ भयो, तब याके माता - पिता दोउ मरे. पाछें ये सुतन्त्र रहे. सो एक समय वा गाममें दोई चारि वैष्णव आपुसमें भगवदचर्चा करत हुते. तामें श्रीगुसांईजीके प्रमेयबल पर बात निकसी. तब उन वैष्णवने कही, जो भाई ! श्रीगुसांईजी आपु परम दयाल हैं. सो जीवकों सर्वथा छोरत नाहीं. कैसोउ अधर्मी जीव होंई परि जो आपकी सरनि जात है ताकौ श्रीगुसांईजी आप सर्वथा उद्धार करत हैं, अपने प्रमेयबलतें वाकों अङ्गीकार करत हैं. ऐसें आप परम दयाल हैं. सो बात इन गुलाबदासने सुनी. तब गुलाबदासने उन वैष्णवनसों कही, जो वैष्णव ! श्रीगुसांईजी ऐसें हैं ? तब वैष्णवनने वाकों दैवी जीव जानि कह्यो, जो हां ! हां ! श्रीगुसाईजी ऐसे ही. तब यह गुलाबदास वैष्णवनसों पूछ्यो, जो वे श्रीगुसांईजी कहां रहत हैं ? तब वैष्णवन कही, जो आपु अड़ेलमें बिराजत हैं. तब तो वह गुलाबदास अपने गाम तें अड़ेल आयो. पाछें श्रीगुसांईजीसों बिनती कियो, जो महाराज ! मोकों सरनि लीजिए तब श्रीगुसांईजी आपु अन्तर्यामी, सो उनके हृदयकी जानि गए. सो गुलाबदासकों कहे, जो गुलाबदास ! हम तेरो उद्धार सर्वथा करेंगे. पाछें आपने गुलाबदासकों नाम - निवेदन कराए. तब गुलाबदास अपने गांवकों आयो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

पाछें उन गुलाबदासने अपने मनमें विचार कियो, जो देखों, मेरो उद्धार श्रीगुसांईजी कैसे करे हैं ? सो ऐसें विचारिकै एक म्लेच्छनको गाम हतो. सो तहां यह गुलाबदास जाय रह्यो. सो तहां यह गुलाबदास हुक्का पीवन लाग्यो. और अभक्षाभक्ष खावन लाग्यो. और रात - दिन वेस्यासों लिपटिकै सोवे या प्रकारसों रहिवे. पाछें ऐसें करत बोहोत दिन भए सो नाम हू फिरि गयो. गुलाबदास नाम हतो, सो गुलाबखां सब कोऊ कहन लागे. ता पाछें केतेक दिनमें श्रीगुसांईजीने इनके पास एक वैष्णव पठायो. सो वैष्णवने जायकै श्रीकृष्ण - स्मरन कियो. पाछें कह्यो, जो मोकों श्रीगुसांईजीने तुम्हारे पास पठायो है. तब वा वैष्णवके बचन सुनिकै गुलाबदासने कही जो हां ! अज हू मोकों श्रीगुसांईजी सुधि करत हैं ? सो ऐसे तीन बेर कहिकै प्रान छोरि दिये. सो श्रीगुसांईजीके चरनारविन्दमें प्राप्त भयो. तब उह वैष्णव अपने मनमें पश्चात्ताप करन लाग्यो. पाछें वह श्रीगुसांईजीके पास आयो. सो श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजीके मन्दिरमें हते. सो भोगके दरसन खुले हते. सो वह वैष्णव ठाढ़ो दरसन करत है. तब या वैष्णवने वा वैष्णवसों श्रीकृष्ण - स्मरन कियो. पाछें सब बात

पूछी. सो उन सब कही. सो सब वार्ता एक अदना गरीबकी वार्तामें आगें कहि आए हैं.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो श्रीगुसांईजी जाकी बांह पकरत हैं ताकों श्रीगोवर्द्धननाथजीकों निश्चै सोंपत हैं. तामें सन्देह नाहीं.

सो उह गुलाबदास श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए ? वार्ता ।।२११।।

२१२-एक चूडडा, श्रीगोकुलकौ

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक चूहडा हतो, सो श्रीगोकुलमें रहतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त है. लीलामें ये 'मनोहर' गोप हैं. सो श्रीनन्दरायजीकौ अनुचर है. ये 'सुगन्धरा' तें प्रगट्यो है, तातें उनके भावरूप है. सो यहां काहू अपराधसों महावनमें चूहडाके जन्म्यो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो उह चूहडा श्रीगोकुलके निकट रहतो. सो श्रीगुसांईजीकौ सेवक हतो. श्रीगुसांईजी आप उनकों नाम सुनाए हते. ता दिन तें वह चूहडा मनसों भावपूर्वक सेवा करतो. सो उहां कूड़ा कचरा रहन देतो नाहीं. और नित्य श्रीगुसांईजीकी बैठकके आगे बैठ्यो रहतो. और जो कोई वैष्णव पातरि पतौवा डारि देतो सो तुरत ही उठाय लेतो. सो श्रीगुसांईजी नित्य श्रीजमुनाजी स्नानकों पधारते. सो मारगमें सब ठौर झार डारतो. और श्रीठाकुरजीके बागमें झारत हतो. सो श्रीगुसांईजीके कहे बिना झारतो. और अपने मनमें विचार करतो, जो या गेल

श्रीगुसांईजी पधारेंगे. जो मति कहूं चरन नीचे कूड़ों आवे. मति कहूं वैष्णवके चरनन नीचे कूड़ों आवे. सो ऐसे स्नेह संयुक्त सेवा करतो. और अहर्निश बैठ्यो रहतो. और श्रीगुसांईजी आवें जाय तब दरसन करतो. और वैष्णव याकों जूठनकी पातरि देई, सो स्नेहनसों लेतो. जानतो, जो इनकी जूंठनि तो परम निरमल है. सो ऐसो विचार अपने मनमें करत रहतो. सो जूंठनिके प्रताप तें वा चूहडाकों ऐसो ज्ञान भयो. सो ज्ञानद्दष्टि हृदयमें भई. आत्मज्ञान भयो.

भावप्रकाश :

यामें वैष्णवनकी जूंठनि महाप्रसादको स्वरूप कहे, जो वैष्णवकी जूंठनि लिये तें हृदयके नेत्र खुलत हैं. सो वैष्णवकों प्रसाद लिवाई के ले, यहू जूंठनि जानno.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो एक समय कासीके पण्डित भेले होंईकै श्रीगोकुल आए हते. सो श्रीगुसांईजीसो वाद करन आए हते. तब उन पण्डितन तें वैष्णवननें कह्यो, जो श्रीगुसांईजी आपु तो सेवामें हैं. सो भोजन करिकै बाहर पधारेंगे. तब तुमकों उत्तर देइंगे. तातें तुम डेरा करो. पाछें आइयो. तब पण्डित गाममें जाइकै उतरे. तब सबनने रसोई करी. सो श्रीठाकुरजीकों भोग धरिकै महाप्रसाद लियो. तब चूहडाकों महाप्रसाद देन लागे. तब चूहडाने कही, जो तुम अनाचारी हो सो तातें मैं तुम्हारी जूंठनि कैसे लेउंगो ? ता पाछें वे अछूती रोटी देन लागे. तब चूहडाने कही, जो ये प्रसादी नाहीं. श्रीठाकुरजी आप अरोगे नाहीं है. तब पण्डितनने कह्यो, जो ये तो श्रीठाकुरजीके भोग धरी भई है. तब पण्डितन तें वा चूहडाने कही, तुमने फूंक देकै रसोई करी है. सो फूंककी वायु महा निषिद्ध है. सो वेदशास्त्रमें वर्जित है. सो मुखकी फूंक तें सब वस्तू भई है सो श्रीठाकुरजीके काम नाहीं आवत हैं. सो अनाचारीके हाथकौ श्रीठाकुरजी सर्वथा नाहीं अरोगत हैं. सो वेदशास्त्रके श्लोक पढ़े. पाछें सबके अर्थ कहे. तब उन पण्डितने वा चूहडासों कह्यो, जो तोकों यह ज्ञान कहां तें भयो ? तब चूडडानें उन पण्डित ब्राह्मननसों कही, जो मैं श्रीगुसांईजीकी जूंठनि लेत हूं. सो याही तें मोकों इतनो ज्ञान भयो. सो तुम अपने मनमें विचार देखो, जो यह बात सांची है के नाहीं. और तुम श्रीगुसांईजीसों वाद करनकों आए हो सो भले आए. परन्तु तुम (पहले) मोसों उत्तर करो. पाछें तुम

उनसों उत्तर करियो. तब वे पण्डित वा चूडडाके वेदशास्त्रके बचन सुनिकै चुप करि रहे. और अपने मनमें विचार कियो, जो भाई ! चूहडाकों इतना ज्ञान है सो हमसों उत्तर नाहीं बने तो श्रीगुसांईजीके पास जायकै कहा करोगे ? और आपुन जायेंगे और जो निरुत्तर करेंगे तो अपनो अपमान होयगो. तातें तुम यहां तें बेगि चलो. सो ऐसो मनमें विचारिकै वे पण्डित ब्राह्मन उहां से उठि चले. जो श्रीमथुराजी आये सो यह बात काहू वैष्णवने श्रीगुसांईजी आगे कही, जो महाराज ! कासीके पण्डित आपुसों बाद करन आए हते सो आपु सेवामें हते. सो उनने गाममें डेरा किए हते. सो रसोई करि भोजन करि वा चूहडाकों जूंठनि देन लागे. सो वा चूहडाने जूंठनि लीनी नाहीं. सो चूहडाने उनसों वाद कर्यो. सो वेदशास्त्रकी रीतिसों कही, ताकों उत्तर करि न सके. तब श्रीगुसांईजीने उन वैष्णवनसों कही, जो तुम वा चूहडाकों बुलावो. तब वा चूहडाने आयकै सब बात विधिपूर्वक कही. सो आपु मुसिक्याये.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णवकों रसोई फूंककै करनी नाहीं, काहे तें, जो फूंकमें छींटा आवत हैं. तातें सब जूंठन होंई. सो श्रीठाकुरजी नाहीं अरोगे. और जापै श्रीगुसांईजीकी कृपा होंई ताकों सब पदार्थनकौ सहज ही में ज्ञान होंई. वेदशास्त्र सब कण्ठाग्र होंई, यहू जताए.

सो वह चूहडा श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं, सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२१२।।

२१३-धनी - धन्यानी

अब श्रीगुसांईजीके सेवक धनी - धन्यानी, सो पुरुष कोड़ी पैसानकी थेली भूल्यो, सो हाटपे तें रुपैयानकी थेली ले के चल्यो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :

ये दोउ राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम ‘इन्द्रा’ और ‘चक्रा’ है. सो पुरुष तो इन्द्रा भयो. आरै ‘चक्रा’ स्त्री जाननी. ये दोउ ‘सुगन्धरा’ तें प्रगटे हैं. तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वे धनी - धन्यानी जब श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे तब सेवक भए हैं. सो तब तें श्रीठाकुरजी पधराई सेवा भली भांतिसो करते. सो वाके परोसमें एक लुगाई और रहती. सो वाकों बुलावती. परन्तु उह जाय नाहीं. सो यों करत एक दिन वाकों जोरावरीसों ले गई. सो जायके देखे तो वाके घरमें बड़ो वैभव. सो वैभव देखिकै याकौ मन ललचायो. सो वानें याकों मन ललचायो देखिकै कही, जो तुम अपने श्रीठाकुरजीकी सेवा करो हो. कुलदेवताकों पूजत नाहीं, तुम्हारे वैभव कहां ते होंय ? तब याने कही, जो हमारे घरमें तो कुलदेवता नहीं है. तब वाने एक देवीको पूतरा दियो. तब आलामें बैठारे. इतनेमें वाकौ धनी आयो. कही, जो उत्थापन नाहीं किए ? तब वाने कही, जो मैं कुलदेवी ले आई हूं. सो ताकों कछू संरजाम है नाहीं. सरंजाम ले आओ तो न्हाउं. तब कही, जा आछौ. यों कहि, ये पैसा कोड़ीकी थेली ले सरंजाम लेवेकों गयो. तब आयकै पसारीकी दुकानपै बैठ्यो. तब कही, जो सरंजाम लाउ. तब वाने सरंजाम दियो. सा सरंजाम हे कै चल्यो. सो कोड़ी पैसानकी थेली तो उहां भूलि गयो. और रुपैयानकी थेली उठायकै ले चल्यो. तब इतनेमें पसारी देखे तो रुपैयानकी थैली नाहीं है. तब जानी, जो पूजाकौ सरंजाम लेवे आयो हतो सो ले गयो. तब वाके पीछे दोर्यो, सो देखे तो वाके पास रुपैयानकी थेली हती. सो ले लीनी. और पकरिकै दरबारमें ले गयो. जो कही, जो ऐसी चोरी करत है. तब याने कही, जो मैं तो कछू जानी नाहीं. तब उनने कही. जो न जानी तो थेली क्यों ले चल्यो ? तब दरबारने कही, जो याकों गधापै चढ़ायकै सगरे गाममें फिरावो. तब ऐसे ही कियो. ता पाछें अपने घर आयो. तब आयके पूजाको सामान दियो. कही, जो अन्याश्रयकौ फल यह है. फेरि कोई दिन गुलाबकौ फूल ल्याईके स्त्रीकों दियो. जो श्रीठाकुरजीकों धरायकै देवीकों देऊ. तब स्त्री कहे, श्रीठाकुरजी जोरावरि हैं. सो यह कहिकै श्रीठाकुरजीकी नाकमें रुई लगाई. तब श्रीठाकुरजी हंसे.

भावप्रकाश :

काहे तें, जो वाकों स्वरूपमें नेष्ठा आई, जाने जो ये साक्षात् हैं, जोरावर हैं. या प्रकार प्रभुनकों बड़े जाने. तातें प्रभु प्रसन्न भए. सो प्रभु ऐसे कारुनिक हैं. सो अपने जन पर या प्रकार हू प्रसन्न होत हैं.

सो हंसत मात्र याकों अन्याश्रय जात रह्यो. सो देवी जहां हती तहां पहोंचाय दीनी. फेरि सदा सर्वदा सेवा करते तैसे करन लागे.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो अवैष्णवकी पास जानो नाहीं वाकौ सङ्ग करनो नाहीं. वाके रञ्च सङ्ग किये तें बुद्धि भ्रष्ट होत है. भगवदाश्रय छूटत हैं. और अन्याश्रय महाबाधक है सोहू कहे.

सो वे स्त्री - पुरुष धनी - धन्यानी श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२१३।।

२१४-एक क्षत्रानी, धानीपुनीवारी

अब श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी एक क्षत्रानी, प्रयागकी, धानीपुनीवारी तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त है. लीलामें इनकौ नाम ‘अनन्ती’ है. ये ‘गुलाबी’ तें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं.

ये प्रयागमें एक क्षत्रीके जन्मी. सो वाकौ पिता निष्कञ्चन हतो. सो वाने जैसे - तैसे अपनी बेटीकौ एक जातिके लरिकाके सङ्ग विवाह कियो. सो वाकौ धनी रोगी हतो. सो ये वाकी टहल करे. और नित्य चरखा हु कांते. तामें जो कछू मिले सो वासों निर्वाह करे. या प्रकार बरस पचास लों टहल

करी. पाछें वाकौ धनी मर्यो. ताके केतेक दिन पाछें एक समै श्रीगुसांईजी आपु अडेल तें प्रयाग पधारे. सो ये क्षत्रानी त्रिबेनी न्हाइवे आई हती. तहां इनकों श्रीगुसांईजीके दरसन भए. तब इन विचार कियो, जो होंई तो इनकी सेवक हूजिए तो आछौ. पाछें इन श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! कृपा करि मोकों सरनि लीजिए. मेरे संसारमें अब कोऊ रह्यो नाहीं. तातें हों दीन हों. सो कृपा करि मेरो उद्धार होइ सो कीजिए. तब श्रीगुसांईजीकों या क्षत्रानी पर दया आई. सो कृपा करि वाकों स्नान कराय सरनि लिए. पाछें वो क्षत्रानीसों कहे, जो तोका लिए हम श्रीठाकुरजी पधराइ देत है ताकी तू प्रीतिसों सेवा करियों. तोपें श्रीठाकुरजी अनुग्रह करेंगे, जातें तेरो उद्धार होइगो. पाछें श्रीगुसांईजीने वाकों श्रीठाकुरजी पधराय दिये. और सेवाकी रीति - भांति समझाई. तब ये डोकरी श्रीठाकुरजीकों घर पधराय भाव - प्रीतिपूर्वक सेवा करन लागी.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो उह श्रीठाकुरजीकी सेवा करती. सो श्रीगुसांईजीकी कृपासों श्रीठाकुरजी वाकों अनुभव जतावन लागे. सो उह क्षत्रानी चरखा कांतती. श्रीठाकुरजी पोनीमें बिराजते. सो पोनीकी गादी, पोनीके तकिया. और पोनी आप देत जाते. सो उह क्षत्रानी चरखा कांतती. और धानीको भोग धरती. सो श्रीठाकुरजी अरोगते. सो ऐसें श्रीठाकुरजी वापैं सदा प्रसन्न रहते. सो जैसे बालक अनेक खेल करत हैं तैसे बोहोत खेल करि वाकों बोहोत सुख देते.

सो एक दिन वा गाममें कोई बालक लालजी पधारे हुते. सो वा डोकरीके घर पधारे. तब उनने वा डोकरीसों आज्ञा करी, जो तेरे श्रीठाकुरजी हमकों देउ. हम खेलेंगे. सो तब डोकरीने अपने श्रीठाकुरजी पधराय दिये. तब आपु सेवा करन लागे. तब श्रीठाकुरजी 'धानीपुनी' करते. सो तब आपुने कही, जो श्रीठाकुरजी धानीपुनीवारी बाईसों राजी हैं. सो श्रीठाकुरजी वाकों पाछें पधराइ दिये. सो उह बाई श्रीठाकुरजीकी सेवा भलीभांतिसों करन लागी. सो श्रीठाकुरजी याके उपर सदैव प्रसन्न रहते. जो चहिए सो मांगि लेते.

भावप्रकाश :
यामें यह जताए, जो श्रीठाकुरजी स्नेहके बस हैं. जो कोऊ प्रीतिसों सेवा करत हैं वाके आपु आधीन व्है रहत हैं.

सो वह श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती, तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२१४।।

२१५-द्वारकादास गोरवा क्षत्री

अब श्रीगुसांईजीके सेवक द्वारकादास गोरवा क्षत्री, जिखिन गामके बासी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें ये अन्तरङ्ग सखानमें हैं. उहां उनकौ नाम 'गोपा' है. सो 'गुलाबी' तें प्रगटे हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

ये ब्रजमें 'जिखिन' गाममें गोरवा क्षत्रीके जन्मे, सो बरस नौके भए तब तें गायनकी रखवारी करें. सो हथियार बांधिके बनमें जातें. सो एक दिन ए गोपालपुर आए. तहां इनकों श्रीगुसांईजीके दरसन भए. सो महाअलौकिक दरसन भए. तब इन अपने मनमें कह्यो, जो इनकी सरनि जइए तो आछौ. पाछें इन श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! कृपा करि मोकों सरनि लीजे. तब श्रीगुसांईजीने वाकों दैवी जीव जानि नाम सुनाए. पाछें दूसरे दिन व्रत कराइ श्रीनाथजीके सन्निधान निवदेन कराए. तब श्रीनाथजीने द्वारकादासकों साक्षात् मन्मथ - मन्मथ रूपसों दरसन दिए. सो ये दरसन करि मुग्ध व्है गए. पाछें ये श्रीनाथजीके दरसनकों नित्य गोपालपुर आवते.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वे द्वारकादास श्रीनाथजीके दरसनकों आवते. सो हथियार बांधे ही चले आवते. सो श्रीनाथजीके दरसन करते. सो स्वरूपके आनन्दमें मगन होई जाते. सो उनकों कछू देहकी सुधि नाहीं रहती. तब दोउ जनें हाथ पकरिकै पर्वत तें नीचे ले आवते. तब इनकों देहकी सुधि होती. तब दण्डवत् करते.

भावप्रकाश :
या वार्तामें स्वरूपासक्ति जताए, जो ऐसी स्वरूपासक्ति होंई तब जीवकौ कारज होंई.

सो वे द्वारकादास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२१५।।

२१६-बलाई स्त्री - पुरुष, गुजरातके

अब श्रीगुसांईजीके सेवक बलाई स्त्री - पुरुष, गुजरातमें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं.

भावप्रकाश :
ये दोउ तामस भक्त हैं. लीलामें 'शूरी' और 'पूरी' इनके नाम हैं. तो शूरी तो इहां पुरुषकौ प्रागट्य और पूरी स्त्रीकौ जाननो. ये 'गुलाबी' तें प्रगटी हैं तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो उह बलाई गुजरातके परगनेमें रहतो. सो एक समय श्रीगुसांईजी द्वारिकाजी तें आवत हते. सो मारगमें भूलि परे. सो मेवातीनके गामके हदमें जाय निकसे. सो ताही समय उह बलाई उन भुमियानके गाममें कछू कार्यार्थ गयो हतो. तब श्रीगुसांईजीके साथके वैष्णवने वा बलाई सों कही, जो यह गेल अमूके गामकी है के नाहीं. तब वा बलाईने वा वैष्णवसों कही, जो गामकी गेल तो बोहोत ही दूरि रहि गई. तुम तो गेल भूले हो. और तुम यहां - कहां ते आय निकसे हो ? यहां ता या टीलेके नीचे भील भेले होईकै बैठे हैं. और उनकौ गाम है, सो समीप है. सो यातें तुम मेरे सङ्ग चलो. सो बेगि - बेगि निकसि चलो, नांतर चोरनकी दृष्टि परोगे तो तुमकों लूटि लेईगे.

तातें भली भई, जो तुम उनकी दृष्टि नहीं परे. और भली भई, जो तुमकों हों मिल्यों. नांतर तुम तो चोरनके गाममें जाय परे. सो यह धर्म सहाय भयो है. सो याही तें तुम बेगि - बेगि चलो. ता पाछें उह बलाई आगे भयो. ता पाछें वैष्णव और श्रीगुसांईजी वा बलाईके पाछें - पाछें बेगि - बेगि चले. ता पाछें थोरीसी बेरमें उह मारग आयो. तब वा बलाईने कही, जो यह रस्ता है. तब बलाईसों उन वैष्णवनने कह्यो, जो तू कहां रहत है ? तब बलाईने उन वैष्णवनकों अपनो गाम बतायो. तब बलाईने कही, तुम कहां जाउगे ? तब वा वैष्णवने बलाईसों कही, जो हम तो 'भडुचरा' गाम होइके ब्रजकों जाइंगे. तब वा बलाईने उन वैष्णवनसों कही, जो मेरो गाम तो आपके मारगमें ही हैं. तब वा वैष्णवने बलाईसों कही, जो तू हमारे सङ्ग ही चलि. तोकों हम खाइवेकों देइंगे. परि तू हमारे साथ ही चलि. तब वा बलाईने कही, जो भलो. तुम तो और हू गेलि भूलते. जो या मारगमें चोर ठग बोहोत ही हैं. सो मैं या धरतीकौ मुखिया हों. सो तुमकों नीके ले जाउंगो. ता पाछें उह बलाई साथ हुतो. सो मजलि जाइ उतरे. सो एक बागमें श्रीगुसांईजी आप रसोई किए. सो भोग समर्प्यो. ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु भोजन किए. तब सब वैष्णवनकों महाप्रसादकी पातरि धरी. सो सब वैष्णवन महाप्रसाद लियो. ता पाछें जूंठनि बची सो वा बलाईकों दीनी. सो वा बलाई ने खाई. सो जूठन लेत मात्र वा बलाईकी दिव्य दृष्टि भई. सो श्रीगुसांईजी आपकौ साक्षात् नन्दकुमारकौ दरसन भयो. पाछें सब गाममें जाइके सोय रहे. और फेरिकै दूसरे दिन मजलि चले. सो मारगमें श्रीगुसांईजी आपके दरसन करत जाय. सो ऐसें करत मागरमें वा बलाईकौ गाम आयो. तब वा बलाईने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! या गाममें मेरो घर है. सो याही तें मेरी एक बिनती है, सो महाराज ! कृपा करिकै मानो तो भलो है. जो आजकौ दिन या गाममें डेरा करिकै रहो. तो सवारे ठेठ आपुके सङ्ग ब्रजकों चलूंगो. और मैं काहूके पास कछू मांगत नाहीं हों. और तुम्हारे सेवकनकी जूंठनि खाउंगो. और आपके सङ्ग ब्रजकों चल्यो चलूंगो. सो मैं इहांकौ भोमिया हूं. सो गेल सब जानत हूं. और या गेलमें चोर - ठग बोहोत ही नामी है. और मेवाती बोहोत हैं. सो याही तें आप ऐसें अकेले मति पधारो. और अब मोपें आपुके दरसन बिना रह्यो न जाइगो. यातें कछू खरची स्त्रीके लिये सामान करिकै प्रातःकाल आपुके सङ्ग चल्यो चलूंगो. सो आपु तो ईश्वर हो. सो याही तें मेरी बिनती माननी चाहिए. तब साथके वैष्णवनने कह्यो, जो महाराजाधिराज ! यह बिनती करत हैं. सो आप मानिकै यहां रहिए तो आछौ. तब तहां एक बाग बोहोत ही सुन्दर हतो. सो तहां आपु बिराजे. तब उह बलाई अपने घरमें आयो. तब समाचार अपनी स्त्रीसों कहे, और कह्यो, जो साक्षात् श्रीकन्हैयालालजी या गाममें बिराजत हैं. बागमें बिराजे हैं. सो मैं तो इनके साथ ब्रजमें जाउंगो. ता पाछें कछू गहनो हतो. सो सब बेचिकै

अपनी स्त्रीकों खरची करि दीनी. तब वे दोउ स्त्री - पुरुष वा बागमें आए. सो ताही समै वैष्णव महाप्रसाद ले चुके हते. सो जूंठनि वा बलाईकों दीनी. तब उन दोउ स्त्री - पुरुषने लीनी. सो स्त्रीकों जूंठनि लेत मात्र साक्षात् श्रीकन्हैयालालजीकौ दरसन भयो. ता पाछें रात्रिकों कथा - वार्ता कीर्तन भए सो सुनिकै वे दोउन बोहोत प्रसन्न भए. सो उहांई सोइ रहे. ता पाछें प्रातःकाल उठिकै दन्तधावन करिकै पाछें स्नान सन्ध्यावन्दन करिकै श्रीगुसांईजी घोड़ा उपर असवार होईकै चले. ता पाछें उह बलाई अपनी स्त्रीसों सब कहिकै श्रीगुसांईजी आपके साथ चल्यो. सो जब तांई वा स्त्रीकों श्रीगुसांईजीकौ दरसन भयो तोलों तो गेलमें ठाढ़ी होंईकै दरसन कर्यो करी. और जब दरसन न भयो तब उह स्त्री मूर्च्छा खाईकै गिरि परी. तब उह गेलके चलनहारेने देखी. तब वा मनुष्यनने बलाईसों कही, जो तेरी स्त्री गेलमें परी है. सो उह मरे है. तातें तू वाकी खबरि तो ले. तब वा बलाईने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! आप नेक ठाढ़े रहो. तब श्रीगुसांईजी आपु ठाढ़े रहे. तब वह बलाई दौरिकै आयो. सो तब अपनी स्त्रीकौ बोहोत ही समाधान करिकै और नेत्रनकौ जल धोयकै वा बलाईने अपनी स्त्रीसों कही, जो कहा समाचार है ? तब वाकी स्त्रीने कही, जो मैं श्रीगुसांईजीके दरसन बिना नाहीं रहूंगी. तब वा बलाईने अपनी स्त्रीसों कह्यो, जो तू बेगि चलि. वे तो गेलमें ठाढ़े हैं. उनके सङ्ग चलि. जे मैं घरकी ठीक करिकै काहूकों सोंपिकै ता पाछें मजलिपै आय मिलूंगो. सो वे दोउ स्त्री - पुरुष श्रीगुसांईजीके सङ्ग गए. सो सब वैष्णवनकी जूंठनि उबरे सो वे दोउ जने खायकै मजल चले जाय. सो कितनेक दिनमें श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुल आय पहोंचे. तब नावमें बैठिकै श्रीगुसांईजी पार उतरे. ता पाछें श्रीगुसांईजी अपनी बैठकमें पधारे. तब इन स्त्री - पुरुषनकों विरह करिकै ज्वर चढ़ि आयो. सो श्रीयमुनाजी ठकुरानी घाट उपर परि रहे. तब बोहोत ही आतुर भए. सो मुखमें तें नेत्रमें ते अग्निकी सी ज्वाला उठे. और सरीरमें तें धूंआ उठ्यो. और नेत्रनकों मूंदे. और मुखमें तें बास आवत हैं. ताही समै एक वैष्णव उहां स्नान करत हतो.

सो वाने सब देख्यो. तब उह स्नान करिकै श्रीगुसांईजीकी बैठकमें गयो. सो वा वैष्णवने श्रीगुसांईजीसों सब समाचार कहे, जो महाराजाधिराज ! उन स्त्री - पुरुषनके प्रान जात हैं. वे दोउ जने घड़ी दोईमें प्रान छोड़ेंगे. सो ऐसे सब सुनी. तब श्रीगुसांईजी आप तो परम दयाल हैं. और इनके जीव सम्बन्धकौ ज्ञान है. सो ताही समै श्रीगुसांईजी उहां परम कृपा करिकै ठकुरानी घाट उपर पधारे. तब सब कोऊकों दूरि किये. तब श्रीगुसांईजीने इन दोउनकों चरनस्पर्श करवाए. सो वे दोउ सावधान होइकै हाथ जोरिकै उठि ठाढ़े भए. तब

आपुने पूछी, जो कहा समाचार है ? तब उह बलाइ हाथ जोरिकै स्त्री सहित श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! आपके दरसन बिना हम जीवेंगे नाहीं. जो अब तो हमारी यह बिवस्था है. जो हमकों आपने कृपा करिकै अलौकिक दरसन दीने हैं. तातें आप भलो जानो सो करो. और हम तुच्छ जीव कहा कहें ? हमकों तो हमारे भले बूरेकी खबरि नाहीं परत है. परि हमारे प्रान सम्बन्धि आधार तो और नाहीं है. और आप अन्तरजामी अन्त:करनकी जानत हो. सो तो हम नाहीं जाने. और देह सम्बन्धी तो महा निषिद्ध है. सो तो प्रसिद्ध ही दीसत है. हमकों तो कछु सुधि नाहीं. सो कहा उपाय कीजे ? हम तो जीव हैं. ताहू में नीच योनि सम्बन्धी हैं. सो याही तें हमारी बुद्धि है सो ऐसी है. तातें आप भली जानोसो करो. परि अब तो आपुकौ विप्रयोग सहि सहत नाहीं. सो जैसे मीन जल बिना जीवे नाहीं सो अब ऐसी आयकै बनी है. सो याही तें आप कृपा करिकै जैसे श्रीमुख तें आज्ञा करो तैसे ही हम करें. परि आपके चरनकमलकौ आश्रय सदैव बढ़े सो उपाय कीजे. सो ऐसे बचन वा बलाईके सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए. और आज्ञा किए, जो एक बातकौ उपाइ तो मैं बताऊं. सो तुम करो. जो काहेतें ? जो अलौकिक (वारेनकों) संसारकी कठिन हैं. क्यों ? जो कोऊ कछू अलौकिक व्यवहारमें तो समुझत नाहीं है. और आप करिकै वैष्णवकी अलौकिक दृष्टि है.

और तुम दोउ स्त्री पुरुष भरतार हमारे हो. सो या बातमें कछू सन्देह नाहीं है. जो यहां हू लौकिकमें निन्दा नाहीं होय और उपाय (हू) कियो चाहिए. काहेतें ? जो तुम्हारे देह सम्बन्धी नीच हैं. याहीतें 'अन्तर्वेद कुरुक्षेत्र' तें परे एक पर्वत है. सो तहां पर्वतमें एक कन्दरा बोहोत सुन्दर है. तहां सुन्दर बन है. तहां फूल मेवा बोहोत ही सुन्दर होत हैं. सो अति मीठे हैं. और अनेक जातिके फल हैं. तहां सुन्दर जलके झरना हैं. सो कन्दराके समीप जल है. सो बोहोत ही आनन्दकौ स्थल है. सो तुम दोउ जने जाइकै वा स्थलमें रहो तुमकों उहां नित्य दरसन देउंगो. सो बोहोत ही आनन्दसुख होंइगे. और तुमकों मेरी पादुकाजी और उपरेना देत हों. सो तुम इनकी नीकी भांतिसों सेवा करियो. और सुन्दरबनमें जो बन - फल आछे पके मीठे हैं. सों ल्यायकै सम्हारिकै धोयकै श्रीठाकुरजीकौ नाम ले कै श्रीपादुकाजीकों भोग धरियो. ता पाछें तुम वा फल '- महाप्रसाद ले के अपनी देहकौ पोषन करिकै निर्वाह कीजो. और जब तुमकों मेरो विरह - ताप होइ तब तुम इन श्रीपादुकाजीके दरसन करियो. तब तुमकों मेरो दरसन होइगो. और मैं तुमकों नित्य दरसन देउंगो. ता पाछें भगवद्वार्ता करियो. भगवद्नाम लीजियो. सो याही तें तुम सर्वथा जाउ. और तुम कछू व्याघ्र, सिंह, सर्पकौ और काहू बातकौ भय मति करियो.

भावप्रकाश :
सो काहेतें ? जो श्रीआचार्यजी महाप्रभु आप अग्निरूप हैं. सो मन्त्रद्वारा तुम्हारे हृदयमें स्थापित करत हैं. सो वे तुमकों देखिकै पहेले ही भाजि जाइंगे.

और उहां तुम्हारी वैष्णवता सेवा और भगवद्‌भजन कार्य कीर्तन कोई जानेगो नाहीं. सो गोप्य सेवा भक्तकों बोहोत ही फलरूप होत है. और सब जाने तब कीर्ति प्रतिष्ठामें सब जात रहे. सो जैसे नदीके प्रवाहमें कोई वस्तु डारि देहू सो बहि जाइ तैसे जात रहें. तब श्रीगुसांईजी आपुके श्रीमुखके बचन सुनिकै वह बलाइको आज्ञा प्रमान मानत भयो. और कह्यो, जो हमकों तो आज्ञा प्रमान करनो. तब श्रीगुसांईजी आप उन स्त्री पुरुषनसों कहे, जो तुम दोउ जने श्रीयमुनाजीमें स्नान करि लेऊ. तब वे दोऊ जने श्रीयमुनाजीमें स्नान करिकै गोविन्दघाट उपर 'श्रीआचार्यजीकी बैठक' के सानिध्य ठाढ़े भए. तब श्रीगुसांईजीने दोउ स्त्री - पुरुषनकों अष्टाक्षर मन्त्र सुनायो. 'श्रीकृष्ण:शरणं मम'. यह मन्त्र आप कृपा करिकै उनकों कर्ण द्वारा देह - मनमें स्थापन किए. ता पाछें महाप्रसादी माला तुलसीके काष्टकी हती सो दोउनकों दीनी. ता पाछें श्रीगुसांईजीने अपनो चरणोदक दियो. पाछें प्रसादी उपरेना और पादुकाजी दिए. सो वे सेवाकों दिए. पाछें उन दोउनकों बिदा किए.

भावप्रकाश :
या वार्तामें अष्टाक्षरकौ स्वरूप जनाए, जो अष्टाक्षरके धारन किये तें जीव निर्भय होत है. सो वैष्णवकों अष्टाक्षरकौ आश्रय सदा कर्तव्य है.

तब वे दोउ, जने श्रीगुसांईजीके चरनकमल पर सीस धरि रहे. तब श्रीगुसांईजीने अपने श्रीहस्तसों उठाये. तब वा बलाईने श्रीगुसांईजीसों हाथ जोरिकै बिनती कीनी, जो महाराज ! हमकों आपके चरनकमल बिना और आश्रय नाहीं है. जो हमारी भली बुरीकौ निर्वाह सब आप करोगे. सो ऐसे कहिकै श्रीगुसांईजीकी कृपा तें साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै चले. सो श्रीगुसांईजीने आज्ञा करी, ताही स्थलपे जाइकै बसे. तब एक छोटोसो मृत्तिकाकौ मन्दिर बनवायो. ताके उपर केलाकौ कोमल पात बिछायो हतो. ता पाछें श्रीपादुकाजी मन्दिरमें सिंघासन उपर

पधराए. ता पाछें बनमें तें सुन्दर सुगन्धित पुष्प लायकै माला करिकै समर्पे. पाछें फल बोहोत ही सुन्दर ल्यायकै श्रीपादुकाजीकों भोग समर्प्यो. पाछें वा महाप्रसादी फल खायकै निर्वाह करें. पाछें बैठे - बैठे भगवद्वार्ता करते. और अष्टाक्षर मन्त्रकौ अहर्निश अवगाहन करते. और यह चिन्तन करते.

और जब श्रीगुसांईजीके स्वरूपकौ विरह होतो तब श्रीपादुकाजीकौ मन्दिर खोलिकै दरसन करते. तब देखे तो श्रीगुसांईजी तहां बिराजे हैं. और पोथी श्रीभागवत् श्रीसुबोधिनीजीकी देखत हैं. ता पाछें श्रीगुसांईजीके दरसन करि सन्मुख बैठते. तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख तें कथा कहते. तब वे दोउ कथा सुनते. पाछें सब मार्गकी रीतिकी वार्ता करते.

तब ऐसे करत वा स्त्रीने एक दिन अपने पतिसों कह्यो, जो नित्य तथा उत्सवकों अपन श्रीठाकुरजीकों बन - फल ही समर्पत हैं. और सामग्री अपनो मनोरथ तो कछु कर्यो जात नाहीं है.

भावप्रकाश :
यह कहि यह जताए, जो वैष्णवकों अपने प्रभुनके नित्य नए मनोरथ करने. हृदयमें ठाकुरके सुखके अनेक प्रकारके भाव विचारने. काहेतें ? जो यह पुष्टिमार्गमें सीतल भाव उचित नाहीं.

सो इह मनिया तो काम आवत नाहीं है. सो गाय श्रीठाकुरजीकों अति प्रिय है. तातें मैं अपने मनमें विचार कियो है, जो तुम्हारे मनमें आवे तो कीजियो. जो मरे गरेमें यह सुवर्णकौ मनिका मासा छह भरकौ है. सो तोकों ले कै एक गाम कोस पचीस पर है. तहां तुम जायकै या मनिकाकों बेचिकै ताकौ द्रव्य आवे सो ताकी गाय बोहोत सुन्दर होय और बोहोत सील स्वभाव होंइ ऐसी मोलकी ले कै आवो. और एक चरखा ले आवो. सो मैं नित्य बैठी कांतोंगी. और मुखसों भगवद्नाम लेउंगी. ता पाछें सूत होइ सो गाममें बेचि अइयो. ता पाछें वाकी सामग्री इकठोरी ल्यायके धरियो. ता पाछें गायकौ दूध होंइसो उत्सव पर कछू मनोरथ करिए. तब वा पुरुषने कही, जो

बोहोत आछौ. अब ऐसें ही करिये. ता पाछें उह सुवर्णकों मनिका ले कै बेचिकै गाय और चरखा दोई ल्यायकै स्त्रीकों सोंपे. ता पाछें उह स्त्री सब सेवासों पहोंचिकै चरखा कांतवे बैठती. और मुखसों भगवन्नाम उच्चार करत हती. और गांइके कानमें अष्टाक्षर मन्त्र कहे. सो सिंघ आदि व्याघ्र वा तें डरपिकै भाजते. सो उह गाय निर्भय होईकै चरिकै आवती. सो श्रीठाकुरजी आप वा गाइकों दूब चरावते. ता पाछें वे बलाई श्रीठाकुरजीकों दूध समर्पते. कछू दहीं समर्पते. कछू घृत समर्पते. ऐसे करत उह गाय कछू कठाली भई. पाछें कितनेक दिनमें वा गांईकै बछिया भई. तब दूध मुकतो होन लाग्यो. पाछें एक मासको सूत भेलो कियो. सो सूत कोऊ बड़े गाममें बेचि आवे. और बेचिकै कछू सामग्री ले आवे. सो खांड, चोखा, घी, दार, गेंहूं, मूंग, उड़द, चनाकी और कछू साग, कन्द - मूल ले आवे. वाकी पोटरी करि इतनो ले कै पाछें अपने घर आवते. पाछें श्रीपादुकाजीकों कछू मनोरथपूर्वक सामग्री करते. और थोरी - थोरी सामग्री करिकै श्रीठाकुरजी आपकों भोग समर्पते. सो ऐसे यथासक्ति कछू मनोरथ करत हुते. सो श्रीठाकुरजी आपु सानुभावता जतावन लागे. सो श्रीठाकुरजी आप मांगि - मांगि कै अरोगते. और आप बातें करते.

सो स्त्री - पुरुष बलाई श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय है. सो इनकी ऐसी - ऐसी कितनीक वार्ता हैं, सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२१६।

२१७-एक साहूकार, खम्भाइचकौ

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक साहूकार, खम्भाइचकौ, जाने परीक्षा लीनी, जो ब्रह्मसम्बन्ध किये तें दूसरो जन्म होत है, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त है. लीलामें इनकौ नाम 'मयूरनी' है. ये 'चन्द्रभान' तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप हैं. सो ये खम्भाइचमें एक साहूकारके प्रगट्यो. सो वह

साहूकार सराफिकी दुकान करतो. सो सत्य बोलतो. तातें लोगनमें वाकी प्रतिष्ठा बहोत. सो बेटा बरस तीसकौ भयो तब वह मर्यो. पाछें बेटा दुकान करन लाग्यो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै श्रीगुसांईजी गुजरात पधारिवेको विचार किये, सो श्रीनवनीतप्रियजीसों बिदा होंइकै चले. सो श्रीगुसांईजी खम्भाइच पधारे. तब श्रीगुसांईजीके दरसनकों सब वैष्णव आए. पाछें श्रीगुसांईजी एक वैष्णवके घर पांऊ धारे. सो ता समय यह साहूकार अपनी हाट उपर बैठ्यो हतो. सो श्रीगुसांईजी आपु या साहूकारकी हाट आगें होंईके पधारे. सो या साहूकारने एक वैष्णवसों पूछी, जो ये कौन है ? तब वा वैष्णवने कही, जो ये तो हमारे गुरु हैं. श्रीविटठलनाथजी इनकौ नाम है. श्रीगोकुलमें रहत हैं. तब वा साहूकारने कही, जो मेरे हू मनमें ऐसी है, जो इनके सेवक हूजिए. तब वा वैष्णवने कही, जो यह तो बोहोत ही उत्तम वार्ता है. जो इनके सेवक होत मात्र ही दूसरो जन्म होत है. और जीवदसा छूटिकै वैष्णव होत है. तब ऐसे सुनिकै वह साहूकार श्रीगुसांईजीकी सरनि आयो, और नाम - निवेदन पायो. और वा साहूकार वैष्णवने श्रीगुसांईजीकों बोहोत भेट करी. तब साहूकार वैष्णवने श्रीठाकुरजी पधरायवेकी बिनती करी. तब आपु कृपा करिकै श्रीठाकुरजीकी सेवा पधराये. श्रीठाकुरजीकों पञ्चामृत स्नान करवायकै पाछें वागा - वस्त्र आभूषन सब बदलाए. और सिंगार करिकै श्रीठाकुरजीकों पाट बैठाए. पाछें सब वैष्णवनकों बुलाइकै दरसन करवाए. ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो. पाछें भोग सराय आपु भोजन किए. पाछें सब वैष्णवनकों महाप्रसाद लिवायो. पाछें श्रीगुसांईजी आपु तहां दिन दस रहे. ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु तहां ते बिदा होईकै श्रीद्वारिकाजी पधारे. तब या वैष्णव साहूकारने अपने मनमें विचार कियो, जो भाई ! वा दिन वा वैष्णवने कह्यो हतो, जो श्रीगुसांईजीकौ सेवक होइकै नाम - निवेदन करें तो दूसरो जन्म होत है. सो यह बात सांची कैसे जानिए ? तातें या बातकी तो कछू परीक्षा करि चहिए. तब एक ब्राह्मन वा साहूकारके इहां वैष्णव भए पहले जायके कह्यो, जो मेरे पांच हजार रुपिया धरि राखो. जो मैं यात्राकों जात हों. सो ऐसे रुपैया धरिकै आपु तो कासीयात्राकों गयो. सो यह बात कोऊ जाने नाहीं. सो सबन तें गोप्य ब्राह्मनने धरे हते. और या साहूकार वैष्णव तें कह्यो, जो तुम काहू तें कहियो मति. मैं आउंगो तब ले लेउंगो. तब ऐसे कहिकै उह ब्राह्मन कासीयात्राकों गयो. सो कितनेक दिनमें आयो. तब या ब्राह्मनने आयके साहूकार वैष्णवके पास रुपैया मांगे. तब वा साहूकार वैष्णवने

परीक्षा देखिवेके लिये ब्राह्मनसों नाहीं करी, जो भटजी ! तुम प्रामानिक होंईकै रुपैया कैसे मांगत हों ? जो मैंने तो तुम्हारे रुपैया या जनमें हाथनसों छुए नाहीं है ! और देखे हू नाहीं है !! जो तुम गरे परत हो ? सो ऐसे वा साहूकार वैष्णवने वा ब्राह्मनसों कही, तब ऐसे बचन वा साहूकार वैष्णवके सुनिकै उह ब्राह्मन राजद्वारमें जाय पुकार्यो. तब राजाने अपुनो मनुष्य पठायकै उह साहूकारकों बुलवायो. तब वा साहूकार वैष्णव तें राजाने पूछी, जो सेठजी ! यह ब्राह्मन कहा कहत है ? तब साहूकार वैष्णवने कही, जो यह ब्राह्मन तो लरत है, और कहत है, जे मैं पांच हजार रुपैया धरिकै कासीयात्राकों गयो हतो. और साहूकार वैष्णवने कही, जो मैंने या ब्राह्मनके रुपैया हाथनसों या जन्ममें छुए नाहीं. और कदाचित् यह ब्राह्मन पूर्व जन्मके मांगत होइ तो मैं देउंगो. मेरे तो द्रव्यकी न्यूनता नाहीं है. तब वा ब्राह्मनने कही, जो पूरव जन्म कहा होत है ? अब ही छै महिना तो भए नाहीं. जो मैं रुपैया अनामत धरिकै गयो हतो. तब वा राजाने ब्राह्मनसों पूछी, जो कोऊ साक्षी है ? कछू खतपत्र है ? तब वा ब्राह्मनने राजासों कही, जो साक्षी हू नाहीं है और खतपत्र हू नाहीं है. जो मैंने या साहूकारकों भलो मनुष्य जानिकै कोई साक्षी नाहीं कियो. याने रुपैया लीने हैं. और अब यह नाहीं करत है. जो भले, गाढी प्रतिज्ञा करेंगे. जो लोहेकी पेंसेरी अग्निमें मेलिकै जो लाल ताती करिकै एक मुहूर्त लों हाथमें राखेंगे. जो या साहूकारके हाथ जरि जाय तो रुपैया दिवाय दीजो. और कदाचित् या साहूकारके हाथ न जरे तो मैं झूंठो. तब राजाने वा साहूकार वैष्णवसों कह्यो, के तो ऐसी प्रतिज्ञा करो, नांतर या ब्राह्मनकों रुपैया देउ. तब साहूकार वैष्णवने कही, जो मैं प्रतिज्ञा करूंगो. जो मैंने या जन्ममें तो या ब्राह्मनकौ द्रव्य लियो नाहीं. ता पाछें लोहेकी पेंसेरी ल्यायके लुहारकी भठठीमें ताती करिकै या साहूकार वैष्णवके हाथमें दीनी. तब या साहूकार वैष्णवने श्रीगुसांईजीको नाम ले कै श्रीगुसांईजीके स्वरूपकौ चिन्त्वन करि वह पेंसेरी अग्निमें तें काढ़िकै अपने हाथमें उठाय लीनी. और कह्यो, जो मैंने या जन्ममें या ब्राह्मनके रुपैया लीने होंइ तो मेरे हाथ जरिकै भस्म होंइ जइयो. और कदाचित् यह ब्राह्मन दूसरे जन्मके मांगत होंइ तो मेरे हाथमें अग्निकी पेंसेरी सीरी होंइ जइयो. सो ऐसे वा साहूकार वैष्णवने एक मुहूर्त लों हाथमें राखी. परन्तु या साहूकार वैष्णवके हाथ रञ्चक हू जरे नाहीं. तब या साहूकार वैष्णवने ब्राह्मनसों कही, जो कदाचित् अज हू तुम सांचे होऊ तो यह पेंसेरी हाथमें लेऊ. तब या साहूकार वैष्णवके पास तें उह ब्राह्मनने पेंसेरी लीनी सो हाथ जरे, तब डारि दीनी. तब वह झूठो भयो. तब यह साहूकार वैष्णव सांचो भयो. पाछें ब्राह्मन तो मूंड पीटिकै अपुने घरकों गयो. और यह साहूकार अपने घर आयो. पाछें या साहूकार वैष्णवने ब्राह्मनको बुलाइवेकों चार मनुष्य पठाए. बुलायो. पाछें या ब्राह्मनकों हाथ पकरिकै अपनी अटारी पर एकान्तमें ले गयो. तब वा ब्राह्मनकौ

साहूकार वैष्णवने बोहोत समाधान कर्यो. और आसन दे कै बैठार्यो. पाछें वा ब्राह्मनके आगें पांच थेली धरिकै कह्यो, जो यह तुम्हारो द्रव्य लेउ. तब वा ब्राह्मनने आश्चर्य होयकै कह्यो, जो मोकों कछू समझि न परी, जो यह कहा कारन है ? सो यह बात मोकों समझायकै कहिए. तब वा साहूकार वैष्णवने वा ब्राह्मनसों कही, जो सुनो भटजी ! मैं यह काम एक परीक्षा लेवेकों कियो है. तब वा ब्राह्मनने साहूकार वैष्णवसों कही, जो ऐसी परीक्षा तो न करिये. जो यह बात तो मोसों विस्तारपूर्वक कहिए. तब वा साहूकार वैष्णवने कही, जो श्रीगुसांईजीकौ सेवक होइ और उन द्वारा आत्मनिवेदन करे ताकौ दूसरो जन्म होत है. जो जीव फिरिकै वैष्णव होय, सो श्रीपूर्णपुरुषोत्तमकौ होय. और इनकौ बल सामर्थ्य तो बड़ो है. सो ऐसें एक वैष्णवने मोसों कह्यो हतो. सो याही परीक्षाके लिए मैनें इतनो काम कियो है. सो ऐसे कर्यो. तब मोकों दृढ़ विश्वास भयो. सो यह निश्चै दूसरो जन्म भयो है. जो मैं प्रतिज्ञा कीनी, जो मैंने या जनममें या ब्राह्मनके रुपैया लिए होई तो मेरे हाथ जरि जइयो. सो तो मेरे हाथ जरे नाहीं. सो याही तें यह तो ऐसी बात है. सो याही तें श्रीगुसांईजीकौ बल सामर्थ्य ऐसो है. सो ताही ते यह बात तुम काहूसों मति करियो. जो यह रुपैया ले कै तुम अपने घर जाऊ. तब यह बात सुनिकै वा ब्राह्मनके मनमें आई, जो अपन हू वैष्णव होई तो भली बात है. जो यह मारग तो ऐसो ही सर्वोपरि है. पाछें उह ब्राह्मन रुपैया ले कै अपने घरकों गयो. पाछें वा साहूकार वैष्णवकौ श्रीगुसांईजी विषे दृढ़ विश्वास भयो. जो ए श्रीगुसांईजी आपु तो साक्षात् श्रीपूरन पुरुषोत्तम हैं. सो इनमें कछू सन्देह नाहीं. पाछें उह साहूकार वैष्णव भगवद सेवा करन लाग्यो. तातें या जीवकों दृढ विश्वास चाहिए.

भावप्रकाश :

सो या वार्तामें ब्रह्मसम्बन्धकौ माहात्म्य कहे. सो कहा ? जो ब्रह्मसम्बन्ध होंइ तब जीवकौ स्वरूप फिरत है, सो कैसे ? जैसे एक चाण्डालनी है, सो वाकों राजा प्रसन्न होंई ब्यावे. तब वाके चाण्डालपनेके सब धर्म - सम्बन्ध छूटे. पाछें वह रानी कहावे. सो रानीके धर्म, रानीके सम्बन्ध रहत हैं. सोई वाकौ नयो जन्म भयो. काहेतें, जो पहलेके चाण्डालपनेके सब धर्म छूटि गए. तैसे ही यह जीव हू ब्रह्मसम्बन्ध किये पहले चाण्डालनी जैसो हतो. सो श्रीआचार्यजीके अनुग्रह तें ठाकुरने वाकौ वरन कियो है. तब वाकों ब्रह्मसम्बन्ध भयो. तब वह रानीकी दसाकों पायो. यह भाव जाननो. तातें ब्रह्मसम्बन्ध पर दृढ विश्वास राखनो. तब जीव फल - दसाकों पावे.

सो उह साहूकार श्रीगुसांईजीकौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय भयो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२१७।।

२१८-एक साहूकार, खम्भाइचकौ, पांच हजार रुपैयावारो

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक ब्राह्मन, खम्भाइचमें रहतो, उही ब्राह्मन, जो वा साहूकारके इहां पांच हजार रुपैया धरिकै ब्रजयात्राकों गयो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'वत्सला' है. सो 'वत्सला' 'मयूरनी' की सखी हैं. ये 'चन्द्रभान' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो यह ब्राह्मन वा साहूकार वैष्णवके पास पांच हजार रुपैया धरिकै कासी - ब्रजयात्राकों गयो. सो वा साहूकार वैष्णवने या ब्राह्मनकों बुलाईकै रुपैया दिये. तब वा ब्राह्मनने साहूकार वैष्णवसों सब बात पूछी. तब वा साहूकार वैष्णवने या ब्राह्मनके आगें सब बात विस्तारपूर्वक कही. तब उह ब्राह्मन यह बात सुनिके आश्चर्यवंत व्है रह्यो. ता पाछें अपने मनमें विचार कियो, जो भाई. सांचे ही दूसरो जन्म होत है. सो काहे तें, जो अग्निकी जरी पेंसेरी या साहूकार वैष्णवने हाथमें लीनी. सो एक मुहूर्त लों हाथमें राखी. तब वा साहूकार वैष्णवसों या ब्राह्मनने कही, जो मेरे हू मनमें ऐसी बात आई है, जो मैं श्रीगुसांईजीकौ सेवक होउंगो. और नाम निवेदन करूंगो. सो काहेते ? जो मेरो इतनो जन्म तो वृथा गयो. और बरस पचीसकौ तो भयो हूं. परन्तु ऐसो कबहू देख्यो नाहीं है. तब साहूकार वैष्णवने कही, जो तू सेवक होय तो आछी बात है. और तुम्हारे मनमें ऐसी आई है तो सर्वथा वैष्णव होऊ. जो अब श्रीगुसांईजी द्वारिकाकों

पधारेंगे. तब वा ब्राह्मनने सब बात पूछी, जो श्रीगुसांईजी कहां रहत हैं ? तब वा साहूकार वैष्णवने सब बात बताय दीनी. ता पाछें केतेक दिनमें श्रीगुसांईजी आप श्रीद्वारिकाजीकों पधारे. तब यह ब्राह्मन सुनिकै श्रीरनछोरजीके दरसनकों गयो. तब श्रीरनछोरजीके मन्दिरमें श्रीगुसांईजीके दरसन भए. ता पाछें श्रीगुसांईजी थोरीसी बेरमें अपने डेरा पधारे. तब यह ब्राह्मन हू साथ आयो. तब वा साहूकार वैष्णवकौ पत्र और भेंट आगे राखिकै बिनती करी, जो महाराज ! जैसें वा साहूकार वैष्णवपै कृपा करी तैसें मोपें हू करो. मैं आपकी सरनिमें आयो हूं. पाछें साहूकार वैष्णवने प्रतिज्ञा करी हती सो सब बात विस्तारपूर्वक श्रीगुसांईजीके आगे कही. तब आपु बोहोत प्रसन्न भए. और श्रीमुख तें कहे, जो जाकौ मन सुध होंई ताकों प्रभु कृपा करैं. अनुभव जतावें. और सहायता करत हैं. जो श्रीप्रभुजी तो सर्व करन समर्थ हैं. पाछें आपने वा ब्राह्मनसों कही, जो तू स्नान करि आउ. तब उह ब्राह्मन स्नान करि आयो. तब आपुने कृपा करिकै वा ब्राह्मनकों नाम सुनायो. तब उह ब्राह्मन उहां ही रह्यो. सो वह गाममें तें कोरी भिक्षा मांगि ल्यावतो. सो रसोई करि श्रीठाकुरजीकों भोग धरि महाप्रसाद लेतो. और रात्रिकों श्रीगुसांईजी कथा कहते. सो सब सुनतो. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप केतेक दिनमें गुजरातके गाममें पधारे. तब उह ब्राह्मन हू साथ आयो. तब वा ब्राह्मनने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! एक बार कृपा करि खम्भाइच पधारिये. तब श्रीगुसांईजी आप कृपा करि खम्भाइच पधारे. तब वा ब्राह्मनने श्रीगुसांईजीकों अपने घर पधराए. पाछें घरके स्त्री - पुरुष सब सेवक भए. और नाम निवेदन करवाए. पाछें वा ब्राह्मनने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! मेरे पंच पूजा है. सो मैं कैसें करों ? तब श्रीगुसांईजीने पंच पूजा मंगायकै देखी. तब वामें एक श्रीठाकुरजीकौ स्वरूप जान्यो. सो तो राख्यो. और देवता हते, सो श्रीगुसांईजी आपु आज्ञा किये, जो तलावमें धरि आऊ. सो कोई जाने नहीं. तब वा ब्राह्मनने तेसे ही कियो. पाछें वा ब्राह्मनने सब घर पोत्यो. पात्र सब नए मंगवाए. ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु स्नान करि तिलक मुद्राकै श्रीठाकुरजीकों पञ्चामृत स्नान करवायकै पाट बैठाये. पाछें रसोई करि श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो. पाछें भोग सराय अनोसर कराए. पाछें आपु भोजन करिकै पौढ़े. तब वा ब्राह्मनने सब वैष्णवनकों प्रसाद लिवायो. पाछें श्रीगुसांईजी आप उहां थोरेसे दिन रहिकै श्रीनाथजीद्वार पधारे. पाछें यह ब्राह्मन भलो वैष्णव भयो. सो श्रीठाकुरजीकी सेवा भलीभांतिसों करन लाग्यो. तब श्रीठाकुरजी सानुभावता जतावन लागे. सो वा साहूकार वैष्णवके सत्सङ्ग तें यह ब्राह्मन भलो वैष्णव भयो.

भावप्रकाश :

तातें तादृशी वैष्णवकौ सङ्ग सदा ही कर्तव्य है.

सो उह ब्राह्मन श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२१८।।

२१९-एक क्षत्री वैष्णव, जाकी कसेंडीसों चाचाजीने जल पीयो

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक क्षत्री वैष्णव, गुजरातकौ बासी, जाकी कसेंडीसों चाचाजीने जल पीयो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'श्रीधरी' है. ये 'चन्द्रभान' तें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं.

सो ये गुजरातमें एक द्रव्यमान क्षत्रीके जन्म्यो. सो बालपनेसों यह वैराग्य दसामें रहे. सो याकौ ब्याह भयो नाहीं. ये बरस पन्द्रहकौ भयो तब माता - पिता हू मरे. पाछें ये साधु सन्तके दरसनकों सगरे फिर्यो करे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समय श्रीगुसांईजी गुजरात पधारत हुते. सो तब मार्गमें वा क्षत्रीके गाममें उतरे. तब श्रीगुसांईजी रसोई करिकै श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो. ता पाछें अपरसके गादी तकियानके उपर बिराजे हते. सो वा गामके वैष्णव दरसन करिवेकों आये. सो उनके सङ्ग उह क्षत्री हू दरसन करिवे आयो. सो दरसन करिकै वा क्षत्रीने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मोकों कृपा करिकै नाम सुनाइए. पाछें श्रीगुसांईजीने कृपा करिकै वा क्षत्रीकों नाम सुनायो. ता पाछें दूसरे दिन ब्रत करायकै ब्रह्मसम्बन्ध करवायो. ता पाछें श्रीगुसांईजी वा क्षत्री वैष्णवके घर पधारे. सो उहां बिराजे. तब आपके सङ्ग चाचा हरिवंशजी हते. तब वा क्षत्रीके घरमें जो कछू हतो सो सब श्रीगुसांईजीकों

भेट कियो. काहेतें, जो घरमें कोऊ हतो नाहीं. पाछें श्रीगुसांईजी आप वा क्षत्री वैष्णवसों बिदा होंईकै श्रीद्वारका पधारे. सो कितनेक दिनमें श्रीरनछोडजीके दरसन किये. ता पाछें श्रीरनछोडजीसों बिदा होंइकै श्रीगोकुल पधारे. सो श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन किये.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
पाछें एक दिन चाचा हरिवंशजी और कृष्ण भटट उज्जैनिकों जात हुते. सो चाचा हरिवंशजी वा क्षत्री वैष्णवके घर आए. सो उह क्षत्री वैष्णव चाचा हरिवंशजीकों पहले ही जानिकै बोहोत मनुहार करिकै अपने घर पर ले गयो, सो ले जाईकै अपनी हाट उपर बैठारे. और चाचा हरिवंशजीसों पूछन लाग्यो, जो जल लेहूगे ? तब हरिवंशजीने वा क्षत्री वैष्णवके आग्रहसों जल पीयो. सो एक कसेंडी हती और तो सब भेट कियो हतो. सो वाही कसेंडीसों सब व्यवहार करतो. ताकों भरि ल्यायो. ताही कसेंडीसों हरिवंशजीने जल पीयो. पाछें हरिवंशजी उहांतें उठन लागे. तब वा क्षत्री वैष्णवने कही, जो रसोई करो. तब चाचा हरिवंशजी कहे, जो अब तो हम चलेंगे. तब वा क्षत्री वैष्णवने चाचाजीसों कह्यो, जो या मार्गसों जब पाछें फिरो तब मेरे घर पधारियो. तब वा वैष्णवसों चाचा हरिवंशजीने कह्यो, जो या मार्ग आवेंगे तो तेरे घर सर्वथा आउंगो. ऐसें कहिकै चाचाजी तो उहांसों चले. तब कृष्ण भटटने मार्गमें पूछी, जो तुमने वा वैष्णवकौ जल पीयो सो काहेतें ? वा क्षत्री वैष्णवकों कछू आचार तो दीसत नाहीं. तब चाचाजीने कृष्ण भटटसों कह्यो, जो भटटजी ! मोकों तो वाके आचार - विचार की सुधि रही नाहीं. पर वाकों श्रीगुसांईजी पास नाम सुनत देख्यो हतो. सो समै मोकों सुधि आइ गयो. तातें जल पीयो. तब कृष्ण भटट चूप व्है रहे.

पाछें चाचाजीने महाप्रसाद लियो. ता पाछें कितनेक दिन उज्जैनिमें रहे. पाछें उहां ते फिरे. तब वा क्षत्री वैष्णवके घर आए. सो चाचाजीकों आए जानि उह क्षत्री वैष्णव बोहोत प्रसन्न भयो. पाछें वा वैष्णवने गहनो और द्रव्य जो कछू घरमें हतो सो सब चाचा हरिवंशजीकों सोंपिकै बिनती कीनी, जो तुम श्रीगोकुल जात हो, सो यह द्रव्य श्रीगुसांईजीकों सोंपियो. और मेरे तो इहां थोरेही में चल्यो जात है. और धनीकी वस्तू धनीके इहां पहोंचे तो आछौ है. सो ऐसो वा क्षत्री वैष्णवकौ अन्तःकरन शुद्ध हतो. ता पाछें चाचा हरिवंशजी उहां तें चले सो श्रीगोकुल आए. सो द्रव्य सामग्री जो ल्याये हते सो सब प्रभुनकी दृष्टि - पथ करवायकै भण्डारीकों सोंपी. और

श्रीगुसांईजी आगें वा क्षत्रीकी दण्डवत् कीनी. और सब समाचार कहे.

तब श्रीगुसांईजीने चाचा हरिवंशजीसों कही, जो वैष्णवकौ अन्तःकरन शुद्ध देखनो. और आचार - विचार देखिवेकौ कहा प्रयोजन है ? और एक दृढ आश्रय देखनो. और कछू जाने नाहीं. ऐसे श्रीगुसांईजीके बचनामृत सुनिकै चाचा हरिवंशजी बोहोत प्रसन्न भए. सो उह क्षत्री वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो.

वार्ता प्रसङ्ग ३ :
पाछें उह क्षत्री वैष्णव श्रीठाकुरजीकी सेवा पधराईकै आचार - विचारसों सेवा करन लाग्यो. सो उत्तम तें उत्तम सामग्री श्रीठाकुरजीकों समर्पे. और वैष्णवनकों महाप्रसाद लिवावे. पाछें उह क्षत्री वैष्णव और वैष्णवनसों मिलिकै भगवद्वार्ता सुनतो. सो एक दिन 'श्रीगोकुलाष्टक' की टीका सुनी. सो सुनिकै उह क्षत्री वैष्णव बोहोत प्रसन्न भयो. और अपने मनमें निश्चै कियो, जो एक बार श्रीगोकुल निश्चै चलनो. ता पाछें उहा क्षत्री वैष्णव श्रीठाकुरजीकों सङ्ग ले कै श्रीगोकुलकों चल्यो. सो केतेक दिनमें श्रीगोकुल आय पहोंच्यो. सो श्रीगोकुलके दरसन करिकै थकित व्है गयो. सो देहानुसन्धान भूलि गयो. ता पाछें वा क्षत्री वैष्णवने श्रीगोकुलकौ स्वरूप सुन्यो हतो तैसे ही दरसन भए. ता पाछें श्रीगुसांईजीने वा क्षत्री वैष्णवकों श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन करवाए. सो यथासक्ति भेट कीनी. सो श्रीनवनीतप्रियजी पालने झूलत हैं ऐसे दरसन भए. तब उह अपने मनमें कह्यो, जो धन्य मेरे भाग्य हैं. सो मोकों ऐसे दरसन भए. ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजीकों अनोसर करवायकै बैठकमें पधारे. पाछें दूसरे दिन वा वैष्णवकों सङ्ग ले श्रीगुसांईजी आप श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों पधारे. सो श्रीनाथजीद्वार आइ पहोंचे. सो आप तो स्नान करि मन्दिरमें पधारे. राजभोग आर्ति किये. तब वा क्षत्री वैष्णवने दरसन किये. सो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तमके दरसन भए. सो वाकों दरसन होत मात्र मूर्छा आई. सो घड़ी दोईमें सावधान भयो. पाछें श्रीगुसांईजी आप अपनी बैठकमें पधारे. और अपुने मनमें कह्यो, जो श्रीठाकुरजी परमदयाल हैं. सो भक्तके मनोरथ पूरन कर्ता हैं. जो श्रीप्रभुजी करत हैं सो सर्व आसान है.

भावप्रकाश :
या वार्तामें यह जताए, जो जीवकों तो एक दृढ आश्रय चाहिए. और भगवदीय वैष्णवकी सङ्गति चाहिए. और या संसारमें भगवदीय वैष्णवकौ सङ्ग बड़ो ही पदार्थ है. सो या जीवकों तो उत्तम सङ्गति करनी. सो जैसी सङ्गति होय तैसो ही फलकौ पदार्थ होय.

सो ऐसे करत कितनेक दिन लों वा क्षत्री वैष्णवने श्रीगुसांईजीके श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. ता पाछें वह क्षत्री वैष्णव श्रीगुसांईजीसों आज्ञा मांगि ब्रज - परिक्रमा करिवेकों गयो. सो उह क्षत्री वैष्णव ब्रज - परिक्रमा करिकै पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारे. तब उह क्षत्री वैष्णव श्रीगुसांईजीके सङ्ग श्रीगोकुल आयो. तब श्रीगुसांईजी आप तो कृपाके सागरसों श्रीमुख तें आज्ञा किये, जो तू श्रीठाकुरजीकी सेवा निपट सावधानीसों करियो. और जो तेरी इच्छा काहू बातपैं होइ सो अब कहि. तब वा क्षत्री वैष्णवने हाथ जोरिकै बिनती करी, जो महाराज ! अब तो यह इच्छा है, जो एक बार देसमें चलिए. सो ऐसी दीनता देखिकै श्रीगुसांईजी वा क्षत्री वैष्णवकों बिदा किये. सो कितनेक दिनमें वह क्षत्री वैष्णव अपने देसमें आय पहोंच्यो. पाछें सेवा बोहोत सावधानीसों करें. तब श्रीठाकुरजी वा क्षत्री वैष्णवपे कृपा - अनुग्रह करिकै वार्ता करते. श्रीमुखसों जो चहिए सो मांगि लेते.

भावप्रकाश :
या वार्तामें यह जताए, जो गुरुकी कृपा होंई तब भगवान् आपु तें कृपा करत हैं.

सो उह क्षत्री वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो तातें इनकी र्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२१९।।

२२०-एक क्षत्री वैष्णव, चाचाजीके सङ्ग गेल भूल्यो

अब श्रीगुसांईजीके सेवक एक क्षत्री वैष्णव, गुजरातकौ, सो चाचाजीके सङ्ग तें मारग गेल भूलिकै और क्षत्री वैष्णवके गर गयो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'वसुमति' हैं. सो वसुमति 'चन्द्रकला' की प्रिय सखी हैं. सो चन्द्रकला वसुमतिकों श्रीठाकुरजीकी रहस्यवार्ता सब कहत हैं. ये 'रसभद्रा' तें प्रगटी है. तातें उनके भावरूप हैं.

सो ये गुजरातमें एक क्षत्रीके जन्म्यो. सो बरस बाईसकौ भयो. तब एक समै चाचाजी हरिवंशजी गुजराति आए. सो या क्षत्री वैष्णवके गाममें रहे. तहां या क्षत्री वैष्णवसों चाचाजीकौ मिलाप भयो. सो चाचाजीकी आचार - क्रिया देखि ये जाने, जो ये कोऊ बड़े महापुरुष हैं. पाछें चाचाजीसों बिनती कियो, जो मोकों अपनो सेवक कीजिये. तब चाचाजी वाकों दैवी जानि नाम दिए. पाछें कहे, जो हमारे तुम्हारे गुरु श्रीविटठलनाथजी श्रीगुसांईजी भए. तब या क्षत्री वैष्णवने कही, जो चाचाजी ! वै कहां रहत हैं ? तब चाचाजी कहे, जो वे गोकुलमें रहत हैं. तब क्षत्री वैष्णव चाचाजीके सङ्ग श्रीगोकुल आयो. पाछें श्रीगुसांईजीके पास आई नाम - निवेदन कियो. तब श्रीगुसांईजी कृपा करि वासों कहे, जो तू चाचाजीके सङ्गमें रहियो. ता दिनसों वह क्षत्री वैष्णव चाचाजीके सङ्गमें रह्यो. सो चाचाजीके सङ्ग तें वाकों लीलाकौ अनुभव होन लाग्यो. सो रसके भर तें रह्यो न जाय ऐसी दसा भई.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो उह क्षत्री वैष्णव चाचाजीके सङ्ग तें श्रीगुसांईजीकी सरनि आयो हतो, सो चाचाजीके सङ्ग सदैव रहतो. और कथा वार्तामें बोहोत समझत हतो. सो एक समय चाचाजी और वह क्षत्री वैष्णव गुजरातकों जात हते. सो मारगमें गेल भूलि गए. सो चाचाजी तो और गेल निकसि गए. और उह क्षत्री वैष्णव और गेलकों गयो. सो एक गाममें उह क्षत्री वैष्णव जाइ निकस्यो. सो वा गाममें और एक क्षत्री वैष्णव रहत हतो. सो वा वैष्णवके घर ये क्षत्री वैष्णव गयो. सो वा वैष्णवने वा क्षत्री वैष्णवकौ बोहोत ही समाधान कर्यो. और बोहोत ही भांतिसों रसोई करवाई. पाछें श्रीठाकुरजीकों भोग धर्यो. पाछें भोग सराय महाप्रसाद लियो. और रात्रिकों भगवद्वार्ता करी. सो ते

बोहोत ही अलौकिक वार्ता चली. ता पाछें निद्रा आवन लगी. तब सोय रहे. पाछें दूसरे दिन हू ऐसे ही किये. महाप्रसाद ले कै फेरि भगवद्वार्ता करन लागे. सो ऐसें नित्य करते. सो भगवद्वार्ताके रसमें वा क्षत्री वैष्णवकौ मन अटक्यो हतो. सो वे नित्य महाप्रसाद ले कै भगवद्वार्ता करिवकों बैठते. सो ऐसें वे रात्रि दिन भगवद्वार्ता करते. ऐसे करत उह क्षत्री वैष्णव तो देहाध्यास सब भूलि गयो. और चाचा हरिवंशजी उहां गुजराति जाइकै उहांकी भेट लै के ता पाछें उहां तें फिरि आए हते. तब वा गाममें क्षत्री वैष्णवके घर आए. तब चाचा हरिवंशजी आयके देखे तो उह साथकौ क्षत्री वैष्णव वा वैष्णवसों मिलिकै बैठ्यो है. और भगवद्वार्ता करत हैं. और श्रीगोवर्द्धननाथजी वा क्षत्री वैष्णवके पाछें श्रमित भए ठाढ़े हैं. उदासीनता सों ठाढ़े हैं. और यह वैष्णव भगवद्वार्ता लीला करत हैं. सो प्रसङ्ग कुञ्जभवनकौ चल्यो हतो. तब इतनेमें चाचाजी आय पहोंचे. तब चाचाजीने ठाढ़े रहिकै उह प्रसङ्ग सुन्यो. तब चाचा हरिवंजी अपने मनमें कहे, जो इन बातनकौ उह पात्र नाहीं है. सो या वैष्णवने तो भली नाहीं करी. जो ऐसी बात यहां चलाई है. तब चाचा हरिवंशजी वा क्षत्री वैष्णवकौ नाम ले कै पुकारे. परि वे तो भगवद्वार्ताके रसमें छक्यो हतो. सो कछू उत्तर दियो नाहीं. और कछू चाचा हरिवंशजीकों देखे हू नाहीं. तब चाचा हरिवंशजीने या क्षत्री वैष्णवकौ हाथ पकरिकै झटक्यो. तब यह क्षत्री वैष्णव चाचाजीके सन्मुख देख्यो. तब चाचा हरिवंशजीने कही, जो कछू देहकी सुधि है के नाहीं ? तब वह क्षत्री वैष्णव फिरिकै देखे तो श्रीगोवर्द्धननाथजी उदासीन ठाढ़े हैं. तब चाचाजीने ताही समय कह्यो, जो यह कहा कियो है ? जो अपनो धर्म खोयो है. सो अज हू समझ देखो. तब उह क्षत्री वैष्णव बोल्यो, जो अब मैं अपने मनमें समुझ्यो. पाछें मौन धर्यो. तब या वैष्णवने वा क्षत्री वैष्णवसों कही, जो आगें कहिए. जो यहां तांई तो हम सुने हैं. परि आगे कृपा करिकै कहिए. तब या क्षत्री वैष्णवने कह्यो, जो तुम धीरज राखो. धीरज होइकै कहूंगो. पाछें फेरि रहिकै कह्यो, जो अब कहिए. तब वा क्षत्रीसों वा वैष्णवने कही, जो यह प्रसङ्ग पूरो करिये. सो ऐसे तीन बार कही. तब उह क्षत्री वैष्णव अपने मनमें विचारि करि देखे तो अब कछू नाहीं है. तब अपने मनमें चक्रत व्है देखे. तब वा वैष्णवसों क्षत्री वैष्णवने कही, जो तुमने कहा सांची मानी ? जो मैं तो अमली मनुष्य हों. सो याही तें तुम मेरी बात सांची मति मानियो. जो मैं तो चाचा हरिवंशजीसों भूल्यो बिछूर्यो पर्यो हूं. सो ऐसें कहिकै वा बातको टारि दीनी. ता पाछें दूसरे दिन चाचा हरिवंशजी उहां तें बिदा होइकै चले. तब चाचा हरिवंशजीने वा क्षत्री वैष्णवसों कह्यो, जो तुमने कहा ऐसो काम कियो ? जो कुञ्जादिककी लीलाकौ प्रसङ्ग तुमने या वैष्णवके आगे चलायो सो यह वैष्णव तो इन बातनकौ पात्र नाहीं है. सो ताही तें श्रीगोवर्द्धननाथजी पीछे श्रमित भए उदासीनतासों ठाढ़े हे. और तोकों

कछू सुधि नाहीं. और उह तो कछू (पात्र) नाहीं है. तातें पात्र - अपात्र देखि विचारीकै भगवद्वार्ता करनी योग्य है. तातें अब भई सो तो भई. भगवदीच्छा तें होय गयो. और मैं तो तोकों जतायो तब तेनें फेरी है. नांतर श्रीगोवर्द्धननाथजी आप बोहोत ही खेद पावत हते. तब वा क्षत्री वैष्णवने कह्यो, जो मैं तो चूक्यो हतो. सो आजु पाछें बिना पात्र मैं ऐसी बात काहूके आगें नाहीं करूंगो. तब चाचा हरिवंशजीने वा क्षत्री वैष्णवसों कही, जो वा क्षत्री वैष्णवकौ मन तो लौकिक प्रपञ्चमें बोहोत है. याही तें लौकिक प्रपञ्च वारो तथा विपरित अन्याश्रय वारे वैष्णवसों ऐसी वार्ता विचारिकै करनो. बिना विचारे नाहीं करनो.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णवकों रहस्य वार्ता विचारिकै करनी. काहेतें ? जो स्वरूपात्मक हैं. तातें जो कोऊ वाकों धारन न करें तो वह कहिवेवारेकों साप देति हैं. सो कहिवेवारेके भावकौ नाश होत है. और श्रीनाथजीकों अत्यन्त श्रम होत है, यहू कहे.

सो उह क्षत्री वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वाार्ता ।।२२०।।

२२१-एक क्षत्राणी, जाकों अष्टाक्षर आवे नाहीं

अब श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी एक क्षत्रानी, आगरेकी. जाकों नाम सुनावे सो आवे नाहीं, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त है. लीलामें इनकौ नाम ‘वधुटी’ है. ये ‘रसभद्रा’ तें प्रगटी है. तातें उनके भावस्वरूप है.

सो ये आगरेमें एक क्षत्रीके जन्मी. सो निपट मुग्ध हती. सो मा - बापने याकौ ब्याह कियो. पाछें कछूक दिनमें याकौ धनी मर्यो. तब केतेक दिनमें

श्रीगुसांईजी आप आगरे पधारे. तब वैष्णवनकी बहू बेटीने कही, जो तू श्रीगुसांईजीकी सेवकनी होउ, नाम पावे तो तेरो उद्धार होई

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समय श्रीगुसांईजी आगरे पधारे हते. तब उह क्षत्रानी श्रीगुसांईजीके पास नाम पाइवेकों आई. सो उह आय बैठी. सो वा क्षत्रानीकों श्रीगुसांईजी आप सरनि लिये. तब वासों मन्त्र कहे. 'श्रीकृष्णः शरणं मम' आप श्रीमुखसों कहे. सो वा क्षत्रानीसों नाम आवे नाहीं. ता पाछें श्रीगुसांईजी आपुने श्रीमुखसों कह्यो, जो तोकों मेरो नाम तो आवत है ? तब वा क्षत्रानीने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! आपकौ नाम तो आवत है ? तब श्रीगुसांईजी आज्ञा दिए, जो तू येही नाम लियो करि. सो उह क्षत्रानी अहरनिस नाम लियो करती. और कछू जानती नाहीं. सो ऐसें करत श्रीगुसांईजी वा क्षत्रानीके उपर बोहोत प्रसन्न भए. तब वा क्षत्रानीकों श्रीगोवर्द्धननाथजीके आपु दरसन देते.

भावप्रकाश :
या वार्तामें श्रीगुसांईजी अपनो प्रमेयबल जताए.

सो उह क्षत्रानी श्रीगुसांईजीकी ऐसी परम कृपापात्र भगवदीय हती. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२२१।।

२२२-एक सेठकौ बेटा, दक्षिनकौ, जो मानसी किये

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक सेठ, दक्षिनकौ बासी, जाके बेटाने मानसी सेवा करी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :

ये सेठकौ बेटा, राजस भक्त है. लीलामें इनकौ नाम 'ध्यानमग्ना' है. सो श्रीठाकुरजीके ध्यानमें निरन्तर मगन रहति है. ये 'रसभद्रा' तें प्रगटी है. तातें उनके भावरूप है. और ध्यानमग्नाकी एक सहचरी है. वाकौ नाम 'रसमग्ना' है. सो यहां सेठ भयो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो उह सेठ अन्यमारगीय हतो. सो वाने उद्यम व्यौपारमें द्रव्य बोहोत कमायो. ता पाछें विचार कियो, जो द्रव्य तो बोहोत कमायो सो अब तो तीर्थयात्रा करे तो आछो है. तब कुटुम्ब सहित तीर्थयात्रा करिवेकों निकसे. सो सब तीर्थयात्रा करत - करत ब्रजमें आयो. सो ता समय श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजी अपनी बेठकमें बिराजे हते. तब एक दिन सेठ श्रीगुसांईजीके दरसनकों आयो. सो श्रीगुसांईजीके दरसन किये. तब श्रीगुसांईजीके दरसन करिकै बिनती करी, जो महाराज ! मोकों कृपा करिकै सरनि लीजिये. तब श्रीगुसांईजी वा सेठसों कहे, जो तू न्हाइ आउ. तब सेठ श्रीयमुनाजीमें न्हायकै श्रीगुसांईजीके आगें आय ठाढ़ो भयो. तब श्रीगुसांईजीने कृपा करिकै नाम सुनायो. ता पाछें दूसरे दिन ब्रत करायकै ब्रह्मसम्बन्ध करवायो. तब सेठने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! अब मोकों कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजीने कही, जो सेवा करो. तब श्रीगुसांईजी आपने कृपा करिकै वा सेठके माथे सेवा पधराय दीनी. तब कितनेक दिन श्रीगोकुलमें रहिकै श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों चले. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करिकै नाना प्रकारके मनोरथ किए. ता पाछें श्रीगुसांईजीसों बिदा होंईकै चले. सो अपने देसमें जाई पहोंचे. तब अपने श्रीठाकुरजीकी सेवा भलीभांतिसों करन लागे. सो वा सेठकौ मन श्रीगुसांईजीकी कृपा तें रात्रि दिन श्रीठाकुरजीकी सेवामें रहे. और प्रात:काल उठि स्नान करि प्रथम तो रसोई बालभोगकी सब सेवा तें पहोंचे. पाछें श्रीठाकुरजीकों जगाय मङ्गला भोग धरिकै मङ्गला आर्ति करि पाछें शृङ्गार करि राजभोग धरि, राजभोग आर्ति करि वैष्णवकों महाप्रसाद लिवावते. और जा दिन अचानक कोई वैष्णव आवतो ता दिन अत्यन्त प्रसन्न होते. और जो कोई वैष्णव पास वस्त्र न होई तिनकों वस्त्र दिवावते. श्रीगुसांईजीपें तथा वैष्णवन पर बोहोत ममत्व राखते. ता पाछें भगवद्वार्ता कीर्तन करते. सो या प्रकारसों नित्य नेमपूर्वक कीर्तन करते. और उनकी स्त्री - बेटा कोई सेवक न हतो. ता पाछें ऐसें बरसके बरस श्रीगुसांईजी तथा श्रीनाथजीकी भेट पठावते. लौकिक व्यवहार तो सब भूलि गये. एक सेवामें मन रहे. तब ऐसे करत द्रव्य थोडोसो रह्यो.

तब वा सेठने मनमें विचारी, जो अब कहा करिए ? द्रव्य तो निघटवेपे आयो है. और सेवाकौ तो या भांतिकौ वैभव है. सो अब वैभव घटावे तो आछो नाहीं. और उद्यम करे तो सेवा छूटि जाइगी. तातें ऐसे में श्रीठाकुरजीके चरनारविन्द मिले तो आछो है. तब थोरेसे दिनमें सरीर असक्त भयो. तब और वैष्णवनकों बुलायकै वैभव सहित श्रीठाकुरजी एक वैष्णवके घर पधराय दिये. और खरच प्रमान जीविका बताय दीनी. और कही, जो मेरो बेटा है. सो सेवक होंई समर्पन ले के सेवा करे तो श्रीठाकुरजी सोंपियो. नहीं तो मति सोंपियो. तब कितनेक दिन पाछें सेठ तो श्रीठाकुरजीके चरनारविन्दमें प्राप्त भयो और श्रीठाकुरजीकौ वैभव तो वैसो ही चल्यो जाय. ता पाछें वा सेठके सगे सम्बन्धी हते. तिनने वा सेठके बेटासों कही, जो तू सेवक मति हूजियो. तेरो बाप सेवक भयो. सो सब द्रव्य खरच करि डार्यो. अब तू सेवक मति हूजियो. तब वाने कही, जो मैं सेवक न होउंगो. और बापके पून्य तें द्रव्य तो कमाउंगो. ता पाछें उह सेठकौ बेटा उद्यम करन लाग्यो. सो उद्यम व्योपारमें द्रव्य बोहोत कमायो. तब याने मनमें विचारी, जो अब मैं तीर्थयात्रा करूं तो आछो. सो घरतें निकर्यो. सो ब्रजमें आयो. सो श्रीगुसांईजीके दरसन नित्य करे. तब वैष्णवनने कही, जो तुम सेवक क्यों न भये ? तब वाने कही, जो मैं तो सेवक न होउंगो. तब वैष्णवनने जायकै श्रीगुसांईजीके आगें कही, जो महाराज ! फलानेकौ बेटा सेवक नहीं है. जो याकौ बात तो परम भगवदीय हो. तब श्रीगुसांईजीने वासों कही, जो क्यों नाहीं होत ? तब वाने कहीं, जो महाराज ! द्रव्य सब खर्च होइ जात है. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो आगे आउ. और कही, जो तू पैसा खरच मति करियो. तब उह प्रसन्न भयो. पाछें कृपा करिकै आपने नाम सुनायो. सेवक तो भयो. माला दीनी. पाछें नित्य दरसनकों आवे.

सो एक दिन श्रीगुसांईजीने कही, तू न्हायो है ? तब वाने कही, जो महाराज ! अब न्हाउंगो. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो याकों तो ताते जलसों न्हवावो. ओर अपने यहां तें नयो मुकटा पहरायकै ल्यावो. सो ऐसे आपने खवाससों आज्ञा दीनी. पाछें तेसे ही मुकटा पहरायकै श्रीगुसांईजीके आगे बैठाए. तब श्रीगुसांईजीने बातें कही, जो अब तुम कछु भेट मति करियो. पाछें समर्पन करवायकै महाप्रसाद लिवायो. बीड़ा दीनो. और कही, जो यामें तेरो खरच न भयो ? पाछें वह अपने डेरामें गयो. सो दूसरे दिन श्रीगुसांईजीके दरसनकों आयो. तब श्रीगुसांईजीने वासों कही, जो तेरो बाप तो द्रव्य खरचकै सेवा करतो और हम तोकों ऐसी सेवा बतावे, तामें तेरो एक पैसा खरच न होय. और तेरो बाप सेवा करतो इतनी ही सेवा होय. ऐसो उपाय बतावें. तब सेठके बेटाने कही, जो ऐसो उपाय बतावो तो आछौ. तब

श्रीगुसांईजीने वा सेठके बेटासों कही, जो सवारे उठि देहकृत्य करि दन्तधावन करि स्नान करि, मुद्रा करिकै एकान्तमें बैठिकै या प्रकार श्रीठाकुरजीकों जगावनो. पाछें मङ्गलाभोग धरनो. मङ्गला आरती करनो. पाछें सिंगार करनो. सखड़ी, अनसखड़ी, खीर, उत्सव होय तो उत्सवकौ प्रकार सब कह्यो. पाछें या प्रकार राजभोग धरनो. भोग सराय आरती करिकै अनोसर करनो. पाछें उत्थापन समय न्हाईकै उत्थापन करनो. उत्थापन भोग धरनो. पाछें सेनभोग धरि सेन आर्ति करिकै पाछें श्रीठाकुरजीकों पोढावने. सो ऐसें श्रीगुसांईजीने मानसी सेवा सब पाठ कराय दीनी. पाछें श्रीगुसांईजीने कही, जो यामें तो तेरो खरच नाहीं होयगो ? तब वा सेठके बेटाने कही, जो महाराज ! ऐसो तो मैं करूंगो. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो धीरे करेगो तो पहर एक लगेगो. बेगि करेगो तो चार छह घड़ीमें होइ जायगो. ता पाछें उह सेठकौ बेटा मानसी सेवा करन लाग्यो. सो वाकौ मन ऐसो लग्यो, जो वह देह - सूधि भूलि जातो. उनकों प्रभु मानसीमें ही अनुभव करावन लागे. पाछें साक्षात् दरसन देन लागे.

भावप्रकाश :
यह कहि यह जताए, जो या प्रकार मानसी सेवामें श्रीठाकुरजी दरसन दिए तो, जो कोऊ प्रीतिपूर्वक साक्षात् सेवा करे तो कहा न होंई ?

तब श्रीगुसांईजीके दरसनकों आयो. सो श्रीगुसांईजीसों बिनती करिकै कह्यो, जो महाराज ! आपकी कृपा तें श्रीठाकुरजी साक्षात् दरसन देत हैं. तातें अब तो आप ऐसी कृपा करो, जो हों साक्षात् सेवा करों. पाछें श्रीगुसांईजी वा सेठके बेटाकों कहे, जो तू राजभोग तांई सेवा करियो. पाछें उद्यम करियो. अवकास होंइ तो उत्थापनमें न्हानो. जो अवकास नहोंइ तो घरमें स्त्रीजन करें. अपने उद्यम करिवो करनो. तातें द्रव्य निघटे नाहीं. कमाई होय थोरो बोहोत उपर चलेगो. और जितनो खरचेगो तितनी कमाई होइगी. ऐसो आसीरवाद दियो. पाछें उह सेठके बेटाने ब्रजयात्रा करि श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. और नानाप्रकारके मनोरथ किये. श्रीगुसांईजीकों थोरी घनी भेट करिकै बिदा होई अपनी स्त्रीकों सेवक करायकै अपने देसमें आयो. तब अपने श्रीठाकुरजी वा वैष्णवके घर बिराजे हते तहां तें अपने घर पधराय ल्यायो. पाछें श्रीगुसांईजीकी कृपा तें लौकिक - अलौकिक कार्य करन लाग्यो. सो भलो वैष्णव भयो.

सो वह सेठ और वाकौ बेटा श्रीगुसांईजीकौ ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हे. सो इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२२२।।

२२३-एक सेठकी बेटी, जाने श्रीमदनमोहनजी किये

अब श्रीगुसांईजीके सेवक एक सेठ, गुजरातकौ, जाकी बेटी बरस दसकी हती, जाने श्रीबालकृष्णजी तें श्रीमदनमोहनजी किये, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये बेटी सात्विक भक्त है. लीलामें इनकौ नाम 'कृष्णहिता' है. सो कृष्णकी सदा हित करिवेवारी है. ये श्रीचन्द्रावलीजीकी सखी है. ये 'नन्दा' तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप है. और 'कृष्णहिता' की एक सखी है, वाकौ नाम 'गार्गी' है, सो यहां विरक्त भयो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो उन सेठने अपनी बेटीकौ विवाह कियो. सो महिना दोयमें बेटीके बरकी देह छूटी. सो सेठकों बोहोत दुःख भयो. ता पाछें महीना एक बीत्यो. तब श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे. सो उह सेठ श्रीगुसांईजीकौ सेवक हतो. तातें या सेठके घर उतरिकै बिराजे. तब सेठने अपनी बेटीकी सब बात श्रीगुसांईजीसों कही. पाछें बेटीने आयकै दण्डवत् करी. तब श्रीगुसांईजी कृपा करिकै वाकों बेगि न्हावायकै नाम ब्रह्मसम्बन्ध करवायो. पाछें एक श्रीमदनमोहनजीकौ स्वरूप वैष्णवने श्रीगुसांईजी पास पधरायो हतो. सो यह सेठकी बेटीके माथे पधराय दिये. पाछें बेटीसों कही, जो अरी ! तू इनकी सेवा आछी भांतिसों करियो. और घरके बाहिर मति जईयो. तब बेटी भोलीसो कछू समुझत नाहीं. सो श्रीगुसांईजीसों पूछी, जो महाराज ! ठाकुर याही भांतिके होत है ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो हां ! ठाकुर याही भांतिके होत है. इन ही में तू मन लगाइयो. सो या प्रकार श्रीगुसांईजी कछूक दिन उहां बिराजे. तब बेटीकों सगरी सेवाकी रीति सिखाई. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप उहां तें बिदा होईकै श्रीरनछोरजीके दरसनकों पधारे. और बेटी सेवा करन लागी. सो सेवा करत - करत बेटी साठ

बरसकी भई, डोकरी. सो घर तें बाहर न निकसी. मा - बाप सबनकी देह छूटि गई. अकेली डोकरी रही. तब एक चाकर राख्यो. टका घरमें धरि गुमास्ता सब बिदा किए. सो अपने घरमें सेवा दोऊ बेर करे. रात्रकों पोथी बांचे. और जो कोऊ वैष्णव आवे तिनकौ भलीभांतिसों समाधान करे. तब ऐसे करत एक समय गुजरातके बोहोत वैष्णव भेले होयकै श्रीगुसांईजीके दरसनकों चले. सो ता सङ्गमें एक विरक्त वैष्णवके पास श्रीबालकृष्णजीकी सेवा. सो उनके श्रीहस्तमें लडुवा हतो. सो सङ्ग सघरो डोकरीके गाममें आयो. दिन घड़ी छह रह्यो ताही समय मेह बरसन लाग्यो. सीतकालके दिन हते. सो सगरो सङ्ग गामके बाहिर तलावके उपर उतर्यो. तब वा विरक्तने विचार्यो, जो आज मेरी रसोई कैसे होइगी ? सो कैसे बनेगी ? लोग तो अपने - अपने पाल डेरानमें करेंगे. मेरे वस्त्र हू भीजे हैं. तातें गाममें कोई वैष्णव होई तो तहां श्रीठाकुरजीकों अरोगाय ल्याउं. तब श्रीठाकुरजीकी झांपी ले कै गाममें गयो. तब तहां एक वैष्णवसों पूछी, जो यहां कोई मर्यादी वैष्णवकौ घर है ? तब वा वैष्णवने कही, जो एक डोकरीकौ घर है. सो साठ बरसकी भई परन्तु घर तें बाहिर नाहीं निकसी. अपने घरमें श्रीठाकुरजीकी सेवा करत है. और जो कोऊ वैष्णव घर आवत है सो ताकौ आछी भांतिसों समाधान करत है. पाछें वा वैष्णवने विरक्त वैष्णवकों डोकरीकौ घर बताय दियो. तब वा डोकरीके घर जाई भगवद् स्मरन कियो. तब वा डोकरीने कही, जो वैष्णव कहां तें आए ? बैठो. श्रीठाकुरजीकौ सम्पुट होई तो पधराय जाउ. मैं रसोई करि चुकी हूं. अब राजभोग धरूंगी. तब वा वैष्णवने कही, जो गुजरातके वैष्णव श्रीगोकुलजी श्रीगुसांईजीके दरसनकों जात हैं. सो ता सङ्गमें मैं हू जात हूं. सो गामके बाहिर तलावके उपर सङ्ग उतर्यो है. सो मेह बरसन लाग्यो. तातें मेरे पास श्रीठाकुरजी हैं. सो ताके लिए तुम्हारे पास आयो हूं. तब डोकरीने कही, जो सम्पुट पधराय देउ. तुमकों कछु काम होई तो बाहिर होई आवो. घरी दोई पाछें तुम दरसनकों बेगि अईयो. कपड़ा भींजे होंई तो सुकाइ देउ. ये नए पहरि लेहू. पाछें वा वैष्णवने कपड़ा सुखाइ दिए. और झांपी डोकरीके आगें धरी. तब उह सङ्गमें तलाव उपर आयो. तब उह डोकरी राजभोगकी सामग्री सिद्धि करि चुकी हती. सो उन वैष्णवनकी झांपी खोली. सो श्रीबालकृष्णजीकौ स्वरूप देख्यो. सो नीचे उपर देखिकै चक्रत व्है रही ! मनमें कही, जो इनके हाथ पांव टेढ़े होंय रहे हैं. हाथमें लडुवा है. ऐसें श्रीठाकुरजी क्यों भए ? मैं श्रीगुसांईजीसों प्रथम पूछि लीनी हती, जो श्रीठाकुरजी ऐसे ही होत हैं ? तब श्रीगुसांईजी कहे, हां ऐसे ही होत हैं. जो मेरे श्रीठाकुरजीसे बडे होंइ मुरली बजावे तब जानिए, जो यह वैष्णव हू ठीक है. श्रीगुसांईजीकौ सेवक है. याहीके पास ऐसे ठाकुर क्यों भए ? पाछें मनमें विचार चिन्ता करन लागी. जो श्रीगुसांईजीने वा वैष्णवकों वेसोई स्वरूप पधरायो है. परन्तु यह विरक्त है. सो ऐसे

सीतकालमें श्रीठाकुरजीकों ले कै निकस्यो है. सो मारगमें मारे सीतके श्रीठाकुरजीके हाथ पांव अकड़ गये हैं. पाछें श्रीठाकुरजीकों कहे, जो महाराज ! यह वैष्णव बड़ो मूरख है. तातें तुम्हारे जतन न राख्यो. उनालेमें श्रीगोकुल जातो तो तुम्हारे हाथ - पांवकी कछू औषधि हू नाहीं करनी परती. पाछें तत्काल उठिकै कोटरीमें तें तेल ले कै जायफल घिसिकै डार्यो. कस्तूर घिसिकै डारी. अङ्गीठी दुहेरी धरी. श्रीठाकुरजीकों आछे रुइकै बिछोना मोटे पर पधराए. हाथ - पांव श्रीअङ्गमें तेल लगाय मर्दन करन लागी. और अति दीन होई बचन कहन लागी. जो महाराज ! सीतकालकौ तुमकों बडो दुःख भयो. जो हाथ - पांव टेढ़े होइ गए. या वैष्णवकों तोऊ ज्ञान न भयो. अब मैं कैसे करूं ? श्रीगुसांईजी ऐसे विरक्तकों ऐसी निधि क्यों पधराई ? परन्तु श्रीगुसांईजी आप परम दयाल हैं. तातें पधराई. परि या वैष्णवकों ऐसो न चहिए. जो ऐसी सीतमें ले कै तुमकों निकस्यो. यह पुष्टिमार्गमें प्रभुनकों श्रम न होंई. ऐसे वैष्णवकों घर बैठे सेवा करनी. सो तुम्हारी सेवा तो न बनी और ऐसी दसा तुम्हारी वा वैष्णवने करी ! अब मैं कैसें करों ? या प्रकार अनेक बचन कहि दुःख करन लागी. हृदयमें अग्निसी उठी. जो हाय हाय, श्रीप्रभुजीकों ऐसो दुःख देखिकै मेरी देह न छूटी ? या भांति कहिकै तेल मसलन लागी. तब श्रीठाकुरने बिचारी, जो देखो! या बाईको कैसो सूधो भाव है ? तातें मैं जहां तांई हाथ - पांव सूधे न करूंगो. तहां तांई यह छोड़ेगी नाहीं. राजभोगकी सामग्री सीतल होइ जाइगी. तहां तांई याहूके ठाकूर भूखे बैठे रहेंगे. और यह तो प्रेम बिवस होइ गई है. या प्रकार श्रीठाकुरजीने बिचारिकै आप हू प्रेम बिवस होइकै हाथ - पांव तत्काल सूधे करि दिये. ठाढ़े होई मुरली मनोहर भए. जैसे याके ठाकुर हते तैसे ही स्यामसुन्दर मुरली मनोहर भए. तब यह डोकरी अत्यन्त प्रसन्न भई. मनमें कही, जो अब श्रीठाकुरजी टेढ़े तें सुधे भए. मैं कही, जो श्रीठाकुरजी ऐसे क्यों भए ? मेरे श्रीठाकुरसे मुरली मनोहर होइ गये. हाथ - पांव टेढ़े भए हते, सो आछे भए. तब तत्काल रुईके दुहरे वागा, टोपा, फरगुल गदल और पास ही अङ्गीठी धरी. तब तत्काल बदामकौ सीरा कस्तुरी डारिकै सिद्धि करि राजभोग धरन लागी. सो अपने श्रीठाकुरजीके आगे एक थार धर्यो. तामें दही मिठाई आदि सगरी सामग्री धरी. और या विरक्त वैष्णवके श्रीठाकुरजीसों बिनती करी, जो महाराज ! तुमको गोरस बोहोत प्रिय है सो मैं जानत हों परन्तु तुम्हारे हाथ पांव अकड़ गये हैं, तातें तुम आज आछें भए हों, तातें दोइ चारि दिन ताती सामग्री अरोगे. श्रीअङ्गमें बल होंइगो. तब मैं दहीं मठा बोहोत अरोगाउंगी. चिन्ता मति करियो. सीतकाल पर्यन्त वैष्णवकों अपने घर राखूंगी. तातें अब दहीं मठा सीतल सामग्री मति अरोगियो. सो या प्रकार अत्यन्त प्रीतिसों राजभोग धरि टेरा लगाय रसोईके पात्र मांजि रसोई पोती. ता पाछें भोग सराय आचमन तातें जलसों कराय बीड़ा अरोगाय पाछें वा विरक्त

वैष्णवकों आरतीके दरसन करवाये. सो गद्दल रजाईमें कछू जान्यो नाहीं, जो मेरे ठाकुर ठाढ़े स्वरूप भए. पाछें डोकरीने अनोसर कराइ. वा वैष्णवकों पातरि धरि. गायकी एक पातरि निकासी. वैष्णवकों भली भांतिसों महाप्रसाद लिवायो. पाछें वा डोकरीने महाप्रसाद लियो. पाछें डोकरीने उत्थापन सेन पर्यन्त सेवासों पहोंचि पाछें श्रीठाकुरजीकों सेन करवाये. वा विरक्त वैष्णवके श्रीठाकुरजीकों दोई रजाई उढ़ाई. अनोसर करि बाहर आई. तब वैष्णवकों सेनकौ महाप्रसाद लिवायो. पाछें पोथी ले भगवद्वार्ता करत आधी रात्रि भई. तब वैष्णव बोहोत प्रसन्न भयो और कह्यो, जो डोकरी तेरो बड़ो भाग्य है. जो दिनकों सेवा करत है, रात्रिको भगवद्वार्ता करत है. तोकों धन्य है. पाछें डोकरीने कही, जो मारगके श्रमित हो सो अब सोओ. पाछें डोकरीने बिछौना करि दीनो. तब वा विरक्त वैष्णवने कही, जो डोकरी प्रातःकाल बेगि उठियो. मङ्गला करि मेरे श्रीठाकुरजीकों पधराय दीजियो. सगरे वैष्णव चलेंगे. तब डोकरीने कही, जो वैष्णव ! दस - पांच दिन मेरे घर और रहो. अब ही सीत बोहोत परत है. तुम्हारे श्रीठाकुरजीकों आराम भयो है. तब यह सुनिकै वा वैष्णवने डोकरी तें कहि, जो डोकरी ! तू बावरी भई है. कैसे बोलत है ? श्रीठाकुरजी कहा मांदे होत हैं ? तुम मांदे हो सो ऐसे बोलत हो. तातें मैं तो या सङ्गमें जाउंगो. तब डोकरीने कही, जो तू श्रीगुसांईजीकौ सेवक होइकै श्रीठाकुरजीकों श्रम करवायो ? श्रीठाकुरजीके हाथ पांव अकड़ि गये हते, सो तेल लगाईकै सूधे किये हैं. तातें अब ही तो सीत बोहोत परत है. डोल पीछे जैयो. सो तहां तांई श्रीठाकुरजीकों चैन होइ जाइगो. और तुमकों डोल पीछे मैं श्रीगोकुल पहोंचाय देउंगी. तब वैष्णवने कह्यो, डोकरी ! तू बड़ी मूरख है. तेरे हाथ पांव अकड़ि गए होंगे. जो मेरे श्रीठाकुरजीकों ऐसी बात कहत है ? मैं तो सर्वथा सवेरे जाउंगो. तातें तू मेरे श्रीठाकुरजी राख्यो चाहत है. मैनें एक दिनके लिए पधराए. तैनें इतनो झगड़ो मचायो ? तब डोकरीने कही, जो तेरी इच्छा. मैं तो तेरे श्रीठाकुरजीके लिये कहत हों. तेरे मनमें नहीं आवे तो मैं कहा करों ? कहूं सीतकालमें श्रीठाकुरजी फेरि अकड़ि जाइंगे, तो मारगमें तू कौन जतनसों आछो करेगो ? यह तो घर हतो. सो तेल, जायफल, कस्तूरीके मसले आछे भये. दुहरी अङ्गीठी आगें धरी. पुष्ट सामग्री गरम अरोगाई. आछे भीतर पोढ़े. इतनो सुख मारगमें श्रीठाकुरजीकों कहां ? तब वैष्णवने कही, जो डोकरी तोकों ज्ञान नाहीं है. जो श्रीठाकुरजी सगरे जगतकौ दुःख दूर करत हैं. श्रीठाकुरजीकों दुःख कैसो ? एक दृढता चहिए. न सामग्री चहिए न आभूषन चहिए. न वस्त्र चहिए. जो समय पर भगवद् इच्छासों बनि आवे ताही में श्रीठाकुरजीकों सन्तोष है. तब डोकरीने कही, जो तेरी ऐसी बुद्धि है, ताहीसों श्रीठाकुरजी अकड़ि गए ! ता बातकों मैं कहा करूं ? मेरे घर कृपा करिकै पधारे. सो मोसों बन्यो सो मैंने कियो. अब तेरे ठाकुर हैं सो तेरे मनमें आवे सो तू करियो, अब सोय रहो.

प्रातःकाल सवारे पधराइयो. तब सोयो. परि नींद न आई. जो डोकरी मेरे सुन्दर ठाकुर देखिकै लियो चाहत है. सो कब सवारो होइ और कब मैं अपने श्रीठाकुरजीकों ले जाउं. और डोकरीकों हू मारे चिन्ताके नींद न आई. ऐसे श्रीगुसांईजीके सेव्य श्रीठाकुरजी मारगमें सीत बोहोत है, फेरि अकड़ि जाइंगे तो सूधे कोन करेगो ? यह तो विरक्त है. याके पास कछू सामग्री वस्तु नाहीं है. सो तो माने नाहीं. अब मैं कैसे करों ! श्रीगुसांईजी श्रीठाकुरजीकों अकड़े देखेंगे तो याके उपर खीजेंगे. कहा जाने कैसी होइ ? याकों तो ज्ञान नाहीं है. सो या प्रकार दोउनकों चिन्ता करत - करत घड़ी दोई रात्रि रही तब वा विरक्त वैष्णवने उठिकै डोकरीसों कही, जो बेगि उठि, न्हायकै मङ्गला करि. मैं हू तलाव पर जायके न्हाइ आउं. सवारो होत ही यह सगरो सङ्ग चलेगो तामें मैं जाउंगो. तब डोकरी उठिकै देहकृत्य करिकै न्हाई. और उह वैष्णव तलाव पर जाइकै देहकृत्य करिकै न्हाइकै अपरसमें आयो. या डोकरीने श्रीठाकुरजीकों जगाय मङ्गला भोग धर्यो. पाछे मङ्गल - भोग सरायकै वैष्णवके श्रीठाकुरजी झांपीमें पधराय दिए. रजाई नीचे और बिछाई, दोई रजाई उपर अधिक उढ़ाई. बिनती करी, जो महाराज ! मारगमें आछे रहियो. मैं कहा करों ? वैष्णवके राखिवेकौ बोहोत जतन कियो. परन्तु वैष्णव रह्यो नाहीं. तुम हू भले वैष्णवके पाले परे हो ! जो तुम्हारी ऐसी दसा भई. परन्तु अब कैसी होईगी ! सामग्री देउंगी, तो यह वैष्णव है. कर देगो नाहीं. ऐसे कहिकै नेत्रनमें जल भरि लीनो. पाछें वैष्णवकों बुलाईकै कही, जो वैष्णव मैनें दोई रजाई तामें बिछाई हैं और दोई उढ़ाई हैं. सो जतनसों श्रीठाकुरजीकों राखियो. और लोंग, जायफल, कस्तूरी, बदाम, धरि राखी हैं. सोंठ मेथीकी सामग्री करियो. सो सीतकाल पर्यन्त नित्य अरोगाइओ. देखियो, जो फेरि पीरे न होंइ जाय. हाथ पांव टेढ़े होइ जाइंगे तो श्रीगुसांईजीकों कहा जुवाब देइगो ? तातें सावधान होइ रहियो. मैं तो तुम्हारो कियो सहि लीनो, परन्तु श्रीगुसांईजी न सहेंगे. तब वैष्णवने कही, जो झांपी आगे ल्याउ. मैं चरन परस करि अपने श्रीठाकुरजीकों देख लेऊं. तब डोकरीने श्रीठाकुरजीकी झांपी आगें धरि. तब वैष्णवने झांपी खोलिकै देखि. सो देखे तो स्याम स्वरूप हैं. श्रीठाकुरजी दोई चरनारविन्दसों ठाढ़े हैं. मुरली मनोहर हैं. तब वैष्णवने कही, जो अरी डोकरी ! मेरे तो गौर स्वरूप श्रीबालकृष्णजी हते ! हाथमें लडुआ लिये. सो तू बेगि ल्याउ. मेरे श्रीठाकुरजी पलटि लिये हैं. तेरो मन झघड़ो करिवेकौ है. जो ये अपने ठाकुर लै और मेरे ठाकुर ल्याऊ. तब या डोकरीने कही, जो अरे वैष्णव ! तू बावरो भयो है. और भांतिके ठाकुर देखे न सुने. तैनें बड़ो झघड़ो मचायो. एक तो श्रीठाकुरजीकों पीरो कर्यो. सो हाथ पांव अकड़ि गये हते से मैंने तेल मसलकै स्याम स्वरूप किये. हाथ पांव सूधे किये. श्रीठाकुरजीकों श्रम करवायो. श्रीगुसांईजीकौ सेवक जानि कछू बोली नाहीं. याही प्रकार सेवा करत है ? सीतकालमें श्रीठाकुरजीकों ले कै

निकस्यो. तब वैष्णवने कही, जो मेरो सङ्ग मेरे श्रीठाकुरजीकों पहचानत है. तू सङ्गमें चलि, उनसों पूछि देखि. तब डोकरीकों ले कै वैष्णव सङ्गमें आयो. तब सगरे वैष्णवनने कही, जो याके तो गौर स्वरूप श्रीबालकृष्णजी हते. यह तो स्याम स्वरूप हैं ? तब डोकरीने मनमें कही, जो सङ्ग तो सगरो या वैष्णवकी ओर है. और अब मैं कैसें करों ? तब यह डोकरी झांपी ले कै घर आई. तब वैष्णवने कही, मेरे श्रीठाकुरजी ल्याव, नांतर मैं माथो फोरत हों. जो ऐसे जानतो, तो तेरे घर काहेकों पधरावतो ? तातें बेगि ल्याऊ, नांतर मैं तेरे उपर हत्या देउंगो. तब डोकरी डरपिकै श्रीठाकुरजीकी झांपी ले भीतर जाय श्रीठाकुरजीसों कही, जो महाराज ! बड़ो झघड़ो लगायो. अब मैं कैसी करों ? तब श्रीठाकुरजी कहे, जो यह झघड़ो तो श्रीगुसांईजी मिटावेंगे. तातें तू या सङ्गमें अपने श्रीठाकुरजीकों ले कै चलि. तब डोकरीने कही, जो महाराज ! तुम भले पधारे. ऐसें सीतकालमें मेरे श्रीठाकुरजी अकड़ि जाय तो मैं कहा करों ? तब श्रीठाकुरजी कहे, जो यह विरक्त है, मारगमें कछु वस्त्र सामग्री नाहीं बनि आवे. तातें मैं कैसें करों ? तू रजाई इकठी करि, सामग्री लै कै तत्काल चलि. नांतर वैष्णव माथो फोरत है. और दूसरो उपाय नाहीं. तब डोकरीने बाहिर आइकै वैष्णवसों कही, जो अब मैं गाड़ी भाड़े करि तैयारी करों. तेरो मेरो झघड़ो श्रीगुसांईजी मिटावेंगे. आपुन श्रीगोकुल श्रीठाकुरजीकों पधरायकै ले चलेंगे. तब वैष्णव सङ्गमें जाय गाड़ी भाड़े करि ल्याओ. तब डोकरीने वैष्णवनकों तथा चाकरनकों सङ्ग लें अपने श्रीठाकुरजी तथा वैष्णवके श्रीठाकुरजी पधराये. रजाई दस तथा फरगुल, रूईके बागा तथा लोंग, जायफल, कस्तूरी, बादाम सोंठि लडुवा सामग्री लिए. घर एक प्रामानिक वैष्णवकों सोंपिकै तारा लगायकै वा सङ्गमें वैष्णवके सङ्ग आई. वा वैष्णवकों अपने सङ्ग गाड़ीमें बैठाई सङ्ग चली. सो मारगमें नित्य लरत जांई. वैष्णव कहे, जो मेरे श्रीबालकृष्णजी तेनें पलटि लीने हैं. डोकरी कहे, जो तू याही प्रकार सेवा करत है. सो श्रीठाकुरजीके हाथ - पांव अकड़ि गये हैं. सो सीतसों श्रीठाकुरजी पीरे पड़ गये हैं. अब सांचो है तो देखि श्रीगुसांईजी कहा कहेंगे ? सो या भांति नित्य झघड़ो करत - करत श्रीगोकुल आए. सो श्रीनवनीतप्रियजीके राजभोग आर्तिके दरसन किए. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजीकों अनोसर करायकै अपनी बैठकमें गादी तकियान पर बिराजे. तब वा विरक्त वैष्णवने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! या डोकरीने मेरे श्रीठाकुरजी श्रीबालकृष्णजी आपु पधराय दिए हते सो पलटि लिये. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो डोकरी कैसे है ? यह वैष्णव कहा कहत है ? तब डोकरीने कही, जो महाराज ! ऐसे के हाथ श्रीठाकुरजी मति पधरायो करो. सीतकालमें श्रीठाकुरजीकों ले निकस्यो है. सो वस्त्र सामग्री भेली नाही है. तातें जाड़े में श्रीठाकुरजीकों पीरे कियो. और हाथ पांव अकड़ि गए हते. सो मैंने तेलमें जायफल कस्तुरी मिलायकै मिसले,

दुहरी अङ्गीठी आगें धरी तब श्रीठाकुरजी सूधे भये. ता पर यह वैष्णव झघड़ो करत है. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो श्रीठाकुरजी कहां हैं ? तब डोकरी कहे, जो मेरे पास झांपीमें. याके और मेरे हू श्रीठाकुरजी सोए हैं. सो आप या वैष्णवकों समझायकै झघड़ो मिटाय देउ. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो श्रीठाकुरजीकी झांपी हमकों देउ. तब डोकरीने झांपी श्रीगुसांईजीके आगे धरी. तब श्रीगुसांईजीने वा वैष्णव और डोकरीसों कही, जो तुम यहां ही बैठियो. तब आप झांपी ले कै कोठा भीतर पधारे. पाछें झांपी खोली. तब श्रीगुसांईजीने श्रीठाकुरजीसों पूछी, जो बावा ! यह कहा है ? तब वैष्णवके श्रीठाकुरजीने श्रीगुसांईजीसों कही, जो डोकरीकों दूसरी भांति आई. जो श्रीठाकुरजी और भांतिके न होंइगे. तब तेल मसलन लगी. जब मैं सूधो भयो, दोउ चरनकमल सूधे करे. तब वैष्णवने देखकै झघड़ो कर्यो. तातें तुम या वैष्णवकों समुझावो, जो मोपें या डोकरीको हेत प्रसन्नता अत्यन्त है. वात्सल्य स्नेह बोहोत है. जो मो बिना और कछू जानत नाहीं हैं. तब श्रीगुसांईजीने या वैष्णवसों कही, जो वैष्णव ! यह श्याम स्वरूप मुरली मनोहर तेरे हैं. याके भावतें ऐसें होइ गये हैं. यह डोकरी सांची है. तेरे मन लालजीमें होइ तो हम दूसरे श्रीबालकृष्णजी पधराय देई. इन स्वरूपनकों हम राखे तब या वैष्णवने कही, जो महाराज ! हम कितनेक दिनसों सेवा करत हैं परन्तु श्रीठाकुरजी रञ्चक हू अनुभव नाहीं जनायो. और या डोकरीने एक दिनमें श्रीठाकुरजी बस किये ? तब श्रीगुसांईजी कहें, जो यह पुष्टिमार्गमें प्रमान नाहीं. ऐसे ही जनम बितीत होइ जाई. जहां तांई स्नेह न होंई तहां तांई श्रीठाकुरजी अनुभव नाहीं जनावे. जो स्नेह होइ तो श्रीठाकुरजी एक क्षनमें प्रसन्न होई.

भावप्रकाश :

यह कहि यह जताए, जो प्रभु तो भावप्रीतिके आधीन हैं. कोऊ कितनी हू आचार क्रिया करो, रीति अनुसार सेवा - सुमिरन हू करो, परिप्रीति न होंई तो श्रीठाकुरजी अनुभव न जनावे. और पुष्टिमार्गमें काल - नियामक नाहीं है. जो इतने दिन, इतने काल पर्यन्त सेवा करे तब श्रीठाकुरजी अनुभव जतावे, ऐसो नाहीं है. या पुष्टिमार्गमें तो भगवद् अनुग्रह ही एक नियामक है. तातें भगवद्नुग्रह होंई तो एक छिनमें प्रभु अनुभव जतावे, यह कहे.

तब उह वैष्णव या डोकरीके पांवन पर्यो. और कही, जो मैंने तुम्हारो स्वरूप जान्यो नाहीं. तुम पर क्रोध कियो. अनेक बचन कहे. तातें मो पर कृपा करो. सो मो पर श्रीठाकुरजी सानुभाव होंई. मैं सगरो जनम योंई गमायो. तातें भगवदीयके सङ्गमें मौन उपज्यो. तब डोकरीने

कही, जो वैष्णव ! ऐसे मति कहो. मो पर तुमने बड़ी कृपा करि. या प्रकार तुम हम झघड़ो न करते तो मैं श्रीगुसांईजीके दरसन तथा श्रीगोकुलके दरसन तथा श्रीजमनापान कैसे करती ? तातें वैष्णवकों श्रीगुसांईजी श्रीठाकुरजी करत हैं सो आछौ ही करत हैं, जामें जीवकौ कल्यान होई.

भावप्रकाश :

यह कहि यह जताए, जो वैष्णवनकौ झघड़ो हू प्रभुनकों रुचत है. और झघड़ो होंई सो हू कृपा करनार्थ जाननो. सो वा झघड़ाके मिष तें या डोकरीकों ब्रज, श्रीयमुनाजी, श्रीगुसांईजी, श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन भए. नांतर ठाकुर उहांई या भेदकों खोलिकै डोकरीसों कहते, तो डोकरी श्रीगोकुल कैसे आवती ? तातें यह जाननो, जो वैष्णवकौ झघड़ो हू कृपा करनार्थ है.

तातें वैष्णव तुम्हारो मन होय तो श्रीठाकुरजीकों न्यारे पधरावो. जहां इच्छा होई तहां सेवा करो. और तुम्हारो मन प्रसन्न होई तो मेरे पास रहि सेवा करो. दोउ जनेनके श्रीठाकुरजी सङ्ग बिराजेंगे. मेरो मन तुम उपर प्रसन्न है. काहेतें ? जो तुमने श्रीठाकुरजीके उपर झघड़ो कर्यो. श्रीठाकुरजीमें प्रीति हती तब झघड़ो कर्यो. तातें तुम्हारो मन तो श्रीठाकुरजीमें बोहोत है. ऐसे वैष्णवको सङ्ग तो एक क्षन हू दुर्लभ है. तब वैष्णवने कही, जो मैं तुम्हारे पास रहूंगो. तुम्हारे सङ्ग तें मोपर श्रीठाकुरजी कृपा करेंगे. तुम धन्य हो. में तुमसों इतनी द्वेषबुद्धि करी और तुमकों अवगुन नाहीं आयो. भगवदीयके लक्षन सुने हते. सो देखे. पाछें श्रीगुसांईजी दोउनकौ झघड़ो मिटायकै झांपी डोकरीकों दीनी. और कही, जो तुम दोऊ इकठोरे रहियो. तब वा विरक्त वैष्णवने कही, जो महाराज ! जहां लगि मैं जीउंगो तहां तांई इनके घरमें रहूंगो. ता पाछें श्रीगुसांईजी भोजनकों पधारे. सो भोजन करि आचमन करि बीड़ा अरोगीकै दोउनकों जूंठनिकी पातरि धरी. सो दोउ जनेन महाप्रसाद ले कै आयके दण्डवत् कर्यो. तब श्रीगुसांईजी दोउनकों उगार दिये. पाछें कछूक दिन श्रीगोकुलमें रहिकै ब्रजयात्रा करी. पाछें श्रीगोकुलमें आइकै रहे. पाछें श्रीगुसांईजीसों बिदा होइकै विरक्त वैष्णव वा डोकरीके घर आयो. सो जीवन पर्यन्त श्रीठाकुरजीकी सेवा वा डोकरीके घर रहिकै करी.

भावप्रकाश :
सो भगवदीय तादृशी वैष्णवकी सङ्गति ऐसी है. सो उह विरक्त लरत हतो परि सङ्ग तें याकी बुद्धि फिरी.

सो उह डोकरी श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय हती. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२२३।।

२२४-एक सेठ, दासी तथा सेठकौ बेटा

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक सेठ, दासी तथा सेठकौ बेटा, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं.

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनको नाम 'प्रभालल्ली' 'महाविद्या' और 'आशा' है. सो 'प्रभालल्ली' यहां सेठ भयो और 'महाविद्या' दासीकौ प्रागट्य जाननो और 'आशा' सेठकौ बेटा. ये तीन्यो 'नन्दा' तें प्रगटी हैं. तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समय श्रीगुसांईजी गुजरात पधारे हते. तब वा सेठके घर उतरे. सो उह श्रीगुसांईजीकौ सेवक हतो. सो सेठ, सेठकी बहू तथा सेठकी दासी इन तीन्योंनकों श्रीगुसांईजी नाम ब्रह्मसम्बन्ध करवाये हते. सो वा सेठके माथे सेवा पधराये हते. सो वे तीन्यों जनें मिलिकै अपने ओसरा, ओसरा, सों सेवा करन लागे. तब कितनेक दिन सेवा करत - करत भए. ता पाछें भगवद् इच्छा तें सेठ और सेठानीकी देह छूटी. तब उह सेठ भगवद् चरणारविन्दमें प्राप्त भयो. सो उह सेठ अपने बेटासों कहि गयो हतो, जो बेटा ! तू या दासीसों माजी कहिकै बोलियो. जो याके उपर श्रीठाकुरजीकी बड़ी कृपा हैं. और सेवाके कार्यमें सावधान रहियो. और यासों पूछिकै कामकाज करियो.

सो ऐसें करत कितनेक दिनमें सङ्ग एक श्रीनाथजीके दरसनकों चल्यो. तब वा सेठके बेटाने दासीसों पूछ्यो, जो तुम कहो तो यह सङ्ग जात है सो मैं हू ब्रजयात्रा करि आऊं ? तब दासीने कह्यो, जो बेटा ! तेरे भाग्यमें ब्रजयात्रा नाहीं है. पाछे वह प्रसाद ले कै आयकै दुकान उपर बैठ्यो सो मुनिम आदि सब वैष्णव हते. परि उह सेठ काहूसों बोले नाहीं. तब महेताने सेठसों पूछी, जो आज तुम्हारे मनमें कहा उद्वेग है ? सो काहूतें बोलत नाहीं ? सो याते जो होय सो हमसों कहिए. तब सेठने कह्यो, जो यह सङ्ग श्रीनाथजीके दरसनकों जात है. सो मै माजी सों पूछ्यो, जो मैं जाउं ? तब माजीने नाहीं कीनी. ता बातकौ मोकों विचार है. जो मैं गयो होतो तो श्रीनाथजीकी सेवा - दरसन करतो. तब मुनीमने कही, जो तुमकों जानो होय तो सुखेन जाउ. तुम कहो सो तैयारी करि देइ. यामें माजीकों कहा पूछनो ? पाछें मुनीमने सब तैयारी करि दीनी. तब उह सेठ कितनेक मनुष्यनकों सङ्ग ले चल्यो. सो श्रीनाथजीद्वारके आधे रस्ते जाइ पहोंच्यो. तब एक राजाके मनुष्यसों लड़ाई भई, सो वह राजा जोरावर हतो. सो वाने सबकों केद किये. पाछें कितनेक दिन वा सेठकों राखिकै और सबनकों सीख दीनी. तब उह सङ्ग चल्यो. सो कितनेक दिनमें सङ्ग जाइ पहोंच्यो, श्रीनाथजीद्वार. तब सबनने श्रीनाथजीके दरसन किये. पाछें ब्रजयात्रा करि और जो मनोरथ करनो हतो सो करिकै पाछें श्रीनाथजी श्रीगुसांईजीसों विदा होइकै चले. सो कितनेक दिनमें वा सेठके पास आय पहोंचे. तब राजाने वा सेठकों रजा दीनी. तब सेठने सङ्गवारे वैष्णवनसों कही, जो तुम तो ब्रजयात्रा करि आए. और मैं रहि गयो. तातें मैं जाउं. तब सब वैष्णवनने कह्यो, जो अब तुम कहां जाउगे ? तातें अब तो कोई सङ्गमें जइयो. और ये जमुना जल ले कै कण्ठी प्रसाद लेकै पाछें फिरो. तब वह सेठ पाछें फिर्यो. सो अपने घर आए. तब माजीसों कही, जो मैं ब्रजयात्रा करि आयो, जो यह जमनाजल कण्ठी प्रसाद लेउ. तब माजीने कही, तू झूठो है. ब्रजयात्राको गयो नहीं है. यह कण्ठी प्रसाद तो सङ्गमें ते लियो है. तोकों तो वा राजाने केद कियो हतो. अब तू झूठ क्यों बोलत है ? तब उह सेठकौ बेटा दीन होंइकै माजीके पांवन पर्यो. और कह्यो, जो माताजी ! मैंने तुम्हारो कह्यो न मान्यो तातें मोकों दरसन भयो नाहीं. सो तुमने कही, जो मेरे भाग्यमें दरसन नाहीं है ? सो कैसें खबरि परी ? मोसों विस्तार करिकै कहो. तुम भगवदीय हो, तातें सांची बात कहो. अब तो तुम कहोगी सो मैं करूंगो. तब माजीने कह्यो, जो सारस्वत कल्पमें कृष्ण अवतार भयो, तब रासक्रीडा भई. तब श्रीठाकुरजीने रास कीनो. तब मेरो हथनीकौ अवतार हतो. सौ मैंने झीनी आंखिनसों सब ब्रजभक्त सहित और पशु - पंछी देखे हते. तब तिनमें तोकों नहीं देख्यो हतो. सो रासक्रीडामें जो जीव होंइगे. तिनकों ब्रजयात्रा तथा श्रीनाथजीके दरसन होइंगे.

भावप्रकाश :
यह कहि यह जताए, जो ब्रज सगरो अलौकिक है. और मूलमैं सम्बन्ध होंई तो ब्रजके दरसन होंई.

अब मैं कहूं सो सुनि. पहले तो तू झूठ मति बोलियो. झूठ बोलेगो तो श्रीगुसांईजी तो पर अप्रसन्न होईगे. और अब तू वैष्णवनकी सेवा करियो. तब वैष्णव सब तो पर प्रसन्न होइ आशीर्वाद देंगे तब तोकों ब्रजयात्रा तथा श्रीनाथजीके दरसन होंइगे. तू कोईको दोष मति देखे. और वैसे तू लाख रुपैया खर्चेगो तोहू तोकों दरसन नाहीं होंइगे. तातें तू वैष्णवकी सेवा करि.

भावप्रकाश :
यामें वैष्णवकी सेवाकौ उत्कर्ष कहे, जो वैष्णवकी सेवा तें ब्रजलीलामें प्रवेश होंई, ब्रजके सौभाग्यकों पावे. ऐसो सेवाकौ महात्म्य है.

तब वा सेठने एक नई हवेली बनवायके नित्य हवेलीमें वैष्णवनकों उतारन लाग्यो. पाछें सब वैष्णवनकी भलीभांतिसों सेवा करतो. वैष्णवनकों जो चाहिए सो देतो. भगवद् वार्ता सुनतो. और नित्य बिनती करतो, जो तुम कृपा करोगे तब व्रजयात्रा तथा श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ दरसन होइगो. जो मेरे भाग्यमें दरसन नाहीं है. तब ऐसे करत कोईक दिनमें कृपा करिकै वैष्णवनने कही, जो तू जा, तोकों श्रीनाथजी तथा श्रीगुसांईजीके दरसन होइंगे. अब तुम तैयारी करि सुखेन जाउ. तब उह सेठ कितनेक मनुष्यको सङ्ग लेकै चल्यो. सो कितनेक दिनमें श्रीनाथजीद्वार आय पहोंच्यो. सो श्रीनाथजीके दरसन खुले तब सेठने दरसन किये. पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीनाथजीकों अनोसर करायकै पर्वततें नीचे पधारे. सो अपनी बैठकमें गादी - तकियानके उपर बिराजे. तब सेठने आयकै बिनती करी, जो महाराज ! कृपा करिकै मेरी भेट राखिये. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप आज्ञा किए. जो तुम महाप्रसाद यहां ही लीजियो. पाछें दूसरे दिन वा सेठने बिनती करी, जो महाराज ! कृपा करिकै मोकों ब्रह्मसम्बन्ध करवाइए. तब आपु आज्ञा किए, जो तू काल्हि ब्रत करियो. परसों ब्रह्मसम्बन्ध करवावेंगे. सो तब उह सेठ दूसरे दिन ब्रत करि, पाछें अपरस वस्त्र पहरिकै श्रीगुसांईजीके पास आयो. सो श्रीगुसांईजी

श्रीनाथजीके सानिध्य तुलसी हाथमें दे कै ब्रह्मसम्बन्ध करवाये. पाछें श्रीनाथजीकी चरनारविन्दमें तुलसी समर्पी. पाछें श्रीनाथजीको अनोसर करायकै श्रीगुसांईजी आप गिरिराज तें नीचे पधारे. सो अपनी बैठकमें गादी - तकियानके उपर बिराजे. तब सेठने आयकै भेट करी. पाछें श्रीगुसांईजी आपु भोजनकों पधारे.

सो श्रीगुसांईजी भोजन करिकै मुख शुद्धार्थ आचमन करिकै बीड़ा अरोगिके अपने हस्तसों वा वैष्णवकों जूठनिकी पातरि धरी. तब वा सेठने महाप्रसाद लियो. पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीगोकुल पधारे. तब उह सेठ हू श्रीनाथजीकी भेट करि बिदा होंइकै श्रीगुसांईजीके सङ्ग श्रीगोकुल आयो. आप श्रीनवनीतप्रियजी आदि सातों स्वरूपनके दरसन करे. तब यथासक्ति भेट कीनी. पाछें कितनेक दिन उहां रहिकै श्रीगुसाईजीकी आज्ञा मांगि ब्रजयात्राकों गयो. सो कितनेक दिनमें सम्पूरन ब्रजयात्रा करि श्रीगोकुल आयो. सो श्रीगुसांईजीके दरसन किए. तब श्रीगुसांईजी आपु पूछे, जो ब्रजयात्रा करि आए ? तब कही, जो राजाकी कृपासों भई. पाछें कितनेक दिन उहां रहिकै श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज आपकी आज्ञा होंई तो मैं अपने देसकों जाउ. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किए. काल्हि तुमकों बिदा करेंगे. तब दूसरे दिन बिदा होई श्रीगुसांईजीकों भेट धरि बिनती करी, जो महाराज ! मेरे घर श्रीठाकुरजी बिराजत हैं. तातें अब आज्ञा होंई तो मैं सेवा करों. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किये, जो अब तुम सुखेन सेवा करियो. पाछें कण्ठी जमुनाजल प्रसाद ले घर आयो. सो वैष्णवनकी मण्डलीमें दियो. और सबनकों महाप्रसाद लिवाये. पाछें वैष्णवनकी आज्ञा मांगिकै तथा सातों स्वरूपनकी तथा श्रीगुसांईजीकी भेंट काढ़िकै उह सेठ सेवामें न्हायो. सो दोउ जनें मिलिकै सदा जीवन पर्यन्त सेवा किए. तब श्रीठाकुरजी आपु सानुभावता जनावन लागे. जो चहिए सो मांगि लेते. सा उह सेठ बड़ो कृपापात्र भगवदीय भयो. सो वा दासीके सङ्गतें श्रीनाथजी तथा श्रीगुसांईजीके दरसन भए. ब्रजयात्रा भई. तब कल्यान भयो. सर्व मनोरथ पूरन भये.

भावप्रकाश :
तातें वैष्णवकों भगवदीयनकौ सङ्ग करनो.

सो उह सेठ श्रीगुसांईजीकौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हतो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२२४।।

२२५-स्त्री - पुरुष ब्राह्मन, जाकी स्त्रीकों श्रीनाथ सदेहे ले गए

अब श्रीगुसांईजीके सेवक स्त्री - पुरुष ब्राह्मन, पूरवमें रहते, जाकी स्त्रीकों श्रीगोवर्द्धननाथजी याही देहसों ले पधारे, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत है.

भावप्रकाश :
ये स्त्री - पुरुष दोउ तामस भक्त हैं. लीलामें स्त्रीकौ नाम 'नवांकुरी' है. सो इनकौ रूप बोहोत ही सुन्दर हैं. प्रतिछिन इनकी देहमें भावके नवीन अङ्कुर उत्पन्न होत हैं. तातें श्रीठाकुरजीके मनकों हरति हैं. और नवांकुरीकी एक सखी और है. उनकौ नाम 'चंचला' है. सो यहां पुरुष भयो. ये दोउ 'नन्दा' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समय श्रीगुसांईजी आपु श्रीगोकुल तें श्रीजगन्नाथजीके दरसनकों पधारे हते. तब इनकों श्रीगुसांईजीके दरसन भए. सो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तमके दरसन भए. तब इन ब्राह्मनने श्रीगुसांईजीकों बिनती करी, जो महाराज ! मोकों नाम सुनाइए. और कृपा करिकै मोकों अपनी सरनि लीजिए. तब श्रीगुसांईजी उन स्त्री - पुरुषनकों आज्ञा किए, जो आगे आवो. तब श्रीगुसांईजी आप उन स्त्री - पुरुषनकों नाम सुनाए. ता पाछें उन ब्राह्मनने यथासक्ति भेट करी. तब दूसरे दिन उन स्त्री - पुरुषकों उपवास कराए. पाछें ब्रह्मसम्बन्ध कराये. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप भोजन किए. सो मुख शुद्धार्थ आचमन करिकै बीड़ा अरोगे. और सब ब्रजवासी सेवक टहलुवानकों महाप्रसाद लिवायो. पाछें वे स्त्री - पुरुष दोउ जनें महाप्रसाद लिए. पाछें वा ब्राह्मनने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! मोकों कृपा करिकै श्रीठाकुरजीकी सेवा पधराय दीजिए. सो मैं सेवा करूंगो. तब श्रीगुसांईजी कृपा करि वा ब्राह्मनके माथे सेवा पधराइ दिए. और सब सेवाकी रीति - भांति सिखाई. तब ऐसे करत कितनेक दिन बीते ता पाछें श्रीगुसांईजी आप उहां तें विजय किये. सो श्रीगोकुल पधारे.

सो वे ब्राह्मन स्त्री - पुरुष श्रीगुसांईजीकी कृपा तें भले भगवदीय भए.

सो वा ब्राह्मनकी स्त्रीकौ श्रीगुसांईजी विषे बड़ो दृढ विश्वास हतो. सो ताके लिए श्रीगोवर्द्धननाथजी उनकी सेवा मानते. और उनकी समर्पी वस्तू श्रीप्रभुजी अङ्गीकार करते. और भगवद् सेवाकौ कार्य जो करते सो ताप स्नेहसों करते. और अपने हाथसों सब सेवा करते, जो चारि पहर करते. और रात्रिमें दोनो स्त्री - पुरुष भगवद्वार्ता करते. सो ऐसे करत बोहोत दिन भए.

सो एक समय पूर्व देसके सब वैष्णव मिलिकै ब्रजयात्रा करिवेकों चले. सो ता समय दोउ स्त्री - पुरुष हू श्रीनाथजीके दरसन करिवेकों चले. सो कछुक दिनमें श्रीनाथजीद्वार आई पहोंचे. सो श्रीगोवर्द्धनपर्वतके उपर चढ़े. सो ता समय सन्ध्यार्तिकौ समय हतो. सो ता समय भीर बोहोत हती. तब श्रीगोवर्द्धननाथजीके मन्दिरके किवाड़ खुले. सो ताही समय दोउ स्त्री - पुरुष मणि कोठाके भीतर धसे. तब श्रीगोवर्द्धननाथजीके श्रीमुखकी झांकी भई. परि आछे दरसन नाहीं भए. तब वह स्त्री अपने मनमें बोहोत ही पश्चाताप करन लागी. और अपने मनमें कहन लागी, जो मैं इतनी दूरिसों परम दुर्लभ ऐसे दरसनके अर्थ आई. और भीतर हू गई. परि तो हू आछे दरसन न भए. सो या भीरमें कहूं खूंदि जाउ तो कैसी करुं. तातें तुम मोकों श्रीगुसांईजीकी का'नि ते दरसन देउ. सो स्त्रीकी या प्रकारकी आर्ति जानि श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु मन्दिरमें तें उठिकै भीरमें धसिकै वा ब्राह्मनकी स्त्रीकौ हाथ पकरिकै निज मन्दिरमें ले पधारे. सो पीठककी और तहां और हू ब्रजभक्त बैठे हते. सो ता ठौर श्रीगोवर्द्धननाथजी याकों बेठारे. और आप 'आदि देव'के से हैं. तैसें वाकों दरसन दिए. जो ऐसी कृपा करी. तब श्रीगुसांईजी आपुतो मन्दिरमें ठाढ़े हते सो यह बात जानी देखी. और तो कोऊ या बातमें समझे नाहीं. सो दरसनकों आए हते सो किए. ता पाछें टेरा आयो. तब सब लोग बाहिर आए. तब उह ब्राह्मन अपनी स्त्रीकों ढूंढन लाग्यो. परि कहूं पाई नाहीं. तब ऐसे करत सेन आरतीके दरसन व्है चुके. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु तो पोढ़े. ता पाछें श्रीगुसांईजी सब भीतरिया और वैष्णव पर्वत तें नीचे उतरे. और श्रीगुसांईजी आपु तो अपनी बैठकमें गादी - तकियानके उपर बिराजे. तब ब्राह्मनने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! मेरी स्त्री तो सुन्दर रूपवती हती. और नवजोबन है. सो ताही तें आपके गाममें कहूने राखी होंई. तो आपु या बातकी ठीक करोगे. और पूछो तो भली बात है. जो मेरी स्त्री ऐसी व्यभिचारिनी नाहीं है. मैंने बोहोत ढूढ़ी परि पाई नाहीं. और न जाने उह कहां है ?

तब श्रीगुसांईजीने सेवकनके देखत कह्यो, जो जहां होंइगी उहां ठिकाने सिर ही होइगी. तातें अब तुम कछू चिन्ता मति करो. और कहूं गाममें ही होइगी. पाछें उह ब्राह्मन गयो. सो तरहटीके सब गाममें खोज करिकै सब कुञ्जमें सब ठौर देखिकै आयो. परि उह पाई नाहीं. तब उह ब्राह्मन रोमत - रोमत श्रीगुसांईजीके पास आयो. तब श्रीगुसांईजी आपसों सब समाचार कहे, जो महाराजाधिराज ! मैं तो सब ठौर देखि आयो हूं. परि उह कहूं नहीं पाई. तब श्रीगुसांईजी आप एकान्तमें वा ब्राह्मनसों कहे, जो तेरी स्त्री तो ठिकाने सिर है. सो तू रोवे मति. और कछू चिन्ता मति करें. हम तोकों मिलावेंगे. सो ऐसे श्रीगुसांईजीने वा ब्राह्मनको बोहोत समाधान कर्यो. और कह्यो, जो तू सवेरेकौ भूखो है, कछू खायो नाहीं है. सो रात्रि प्रहर डेढ़ हो गई है. सो यातें तुम महाप्रसाद लो. ता पाछें तेरी स्त्रीकों मिलावेंगे. सो ऐसे बोहोत ही समाधान कर्यो. परि उह तो रोमततें रहे नाहीं. और कही, जो महाराज ! मैं तो अपनी स्त्रीकों बिनु देखे जलपान न लेउगो और हों तो महाप्रसाद नहीं लेउंगो. जो मेरी स्त्री तो परम कृपापात्र भगवदीय है. सो दिनमें भगवद् सेवा करती और रात्रिमें भगवद्वार्ता करती. सो ऐसे काल निर्वाह करती. सा याहीतें मैं कौन अपराध कियो है सो मैं इकेलो रह्यो ? सो हों अब कैसे जीउंगो ? सो मोकों ऐसो सङ्ग मिलनो दुर्लभ है. जो मैं तो स्त्रीकों नाहीं रोमत हूं. गुन वैष्णवताकों रोमत हूं. और अब मेरी कौन गति होइगी ? तब श्रीगुसांईजी वा ब्राह्मनसों कह्यो, जो तू काहेकों रोमत है. जो तेरी स्त्री तो श्रीगोवर्द्धननाथजीकी पास है. वाकों तो श्रीगोवर्द्धननाथजी आपने अङ्गीकार कियो है. जो वाकों श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन नाहीं भए हते. सो भीर बोहोत हती, तब वाकों ताप क्लेश भयो. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु वाकों हाथ पकरिके ले गए. सो पीठककी ओर और हू ब्रजभक्त बैठे हते ! सो तिनमें ले जाइकै वाकों बैठारे. सो श्रीआचार्यजीकी का'नि तें श्रीनाथजीमें प्राप्त भई है. और ब्रजभक्तसों मिली है. सो ए सब निजधाममें मन्दिरमें ठाढ़े हैं. परि बोलत नाहीं है. सो अब या बातमें कौन बोले ? और कोई तो या बातमें जाने हू नाहीं है ? तब वा ब्राह्मनने बिनती करी, जो महाराज ! यह तो आपने कही, जो उह तो निजधाममें लीलामें प्राप्त भई है. सो लीला तो या देहसों परे है, सो या देहसों तो भगवद्लीलाके दरसन नाहीं होत हैं. सो ऐसें आपके बचन योग्य है ? जो या देहसों तो भगवद्लीलामें कैसे पहोंचे ? तब श्रीगुसांईजी आपु वा ब्राह्मनसों कहे, जो श्रीगोवर्द्धननाथजी आप वाकों प्रमेय बल तें ले पधारे हैं.

भावप्रकाश :

यह कहि यह जताए, जो प्रभु कर्तुम्, अकर्तुम्, अन्यथा कर्तुम् सर्व सामर्थ्ययुक्त हैं. तातें, जो चाहे सो करे. यामें संशय करनो नाहीं.

तब श्रीगुसांईजीसों वाने बिनती करी, जो महाराज ! आपु मेरो ऐसे समाधान करत हो परि मैं तो एक बार वाकों देखोंगो तब मानूंगो. तब श्रीगुसांईजी आपु वाकों कहे, जो तू महाप्रसाद ले, पीछे तेरी स्त्रीकों मिलावेंगे. तब वा ब्राह्मनने कही, जो महाराज ! मैं तो महाप्रसाद नाहीं लेउंगो. जो मैं तो अपनी स्त्रीकों देखे बिना जल - पान हू न करूंगो. तब श्रीगुसांईजी आपु वा ब्राह्मनकौ हाथ पकरिकै परासोलीकी ओर ले पधारे. तब तहां चन्द्रसरोवरिमें चोतराके उपरि श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन भए. तब श्रीगुसांईजीने श्रीगोवर्द्धननाथजीसों बिनती करी, जो महाराज ! या ब्राह्मनकी स्त्रीकों दिखाई देउ तो ये खानपान करे. जो यह बोहोत रोमत है ? तब श्रीनाथजी आपु वा ब्राह्मनकौ हाथ पकरिकै ले पधारे. तब तहां एकान्त स्थलमें जहां सकल जूथ समूह बैठे हैं तहां वाकी स्त्री श्रीस्वामिनीजीके निकट सखीन पास ठाढ़ी हती. सो दिखाई. और कहे, जो यह तेरी स्त्री है. और वा स्त्रीसों श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, जो यह तेरो पति आयो है. सो याकों उत्तर दे. ऐसें कहिकै दिखाई. तब वा ब्राह्मनने अपनी स्त्रीसों कही, जो अब तू मेरे सङ्ग चलि. मेरो मन फिरत है. और मैनें जलपान हू नाहीं कियो है. सो अब तू यहां तें बेगि चलि. तब स्त्रीने कही, जो अब तो मैं तुम्हारे साथ न चलूंगी. मेरे तो यहां पूर्व सम्बन्धी मिले हैं. सो अब मेरे लौकिकसों प्रयोजन नाहीं है. तातें अब तुम अपने ठिकाने जाउ. तब इतनो कहिकै पाछें उहां देखे तो कछू नाहीं है. और उहां उह स्त्री हू नाहीं है. और ब्रजभक्त हू नाहीं है. तब श्रीगुसांईजी आपु वा ब्राह्मनसों कहे, जो अरे ब्राह्मन ! अब तू यहां तें चलि. अब यहां तेरो काम नाहीं है. ता पाछें उह अपने डेराकों गयो. तब श्रीगुसांईजी आपुने वा ब्राह्मनकौ बोहोत समाधान कियो. पाछें वाकों महाप्रसाद लिवायो. तब वा ब्राह्मनने श्रीगुसांईजीके आग्रह तें कछू थोरो महाप्रसाद लियो. ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु तो पोढ़े. तब वा ब्राह्मनकों बोहोत ही विरह ताप क्लेश भयो और अत्यन्त आतुरता भई. और नेत्रनमें तें आंसूनकी धारा चली. सो और वैष्णव पास सोए हते तिनकों ताप लाग्यो. सो वे वैष्णव तो दूरि जाईकै सोये. ता पाछें वाकों अत्यन्त ताप भयो. सो वाके प्रान दसों द्वार तें निकसि गए. तब उह ब्राह्मन अपने सम्बन्धमें जायकै मिल्यो.

भावप्रकाश :

सो कहा ? जो निज स्वरूपसों लीलामें प्राप्त भयो.

तब इन ब्राह्मनकों सब वैष्णनने देख्यो. सो मर्यो पर्यो है. तब वैष्णवनने सब समाचार श्रीगुसांईजीके आगें कहे. जो महाराज ! या ब्राह्मनके नेत्र और मुखमें तें अग्निकी सी ज्वाला उठी. सो उह सिरमें तें चढयो. सो हमकों ताप लाग्यो. सो हम तो उहां तें और ठौर जाइके सोए. सो तातें अब तो याके प्रान निकसि गए हैं. और देह परि है. तब श्रीगुसांईजी ये समाचार सुनिकै बोहोत ही रोमाञ्च भए. तब उन वैष्णवनसों आप श्रीमुख तें कहे, जो ए दोउ स्त्री - पुरुष लीलामें प्राप्त भए. और श्रीगोवर्द्धननाथजीके सानिध्य पहोंचे हैं. अब इनकों कछु बाधा रही नाहीं है. और अब ऐसे वैष्णव होने परम दुर्लभ हैं. ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु श्रीमुखसों कहे, जो तुमको याकौ सूतक लगेगो नाहीं. जो लौकिक रीति करो पाछें स्नान मात्र सों शुद्ध होउगे. ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु तीन दिन लों उदास रहे. ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीने समाधान कियो. सो जब इन स्त्री - पुरुषकी बात चलती तब श्रीगुसांईजीकौ हृदय भरि आवतो.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो या मारगमें ताप क्लेश विरह ही मुख्य साधन है. ताप क्लेशपूर्वक कोउ विरह करि भगवद्सेवा - दर्शन करे, तो प्रभु वाकों या भांति साक्षात् अङ्गीकार करत हैं. तातें वैष्णवकों ताप क्लेश विरहकी भावना अहर्निश करनो. यह जताए.

सो वे स्त्री - पुरुष श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ता कहां ताई कहिए. वार्ता ।।२२५।।

२२६-एक सरावगीकी बेटी

अब श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी एक सरावगीकी बेटी, आगरेमें रहती, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :

ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'निर्मला' है. सो इनकौ मन बोहोत ही 'निर्मल' है. छलकपट कछू जानति नाहीं. तातें श्रीचन्द्रावलीजी यापैं बोहोत प्रीति करत हैं. और 'निर्मला' की एक सखी है. वाकौ नाम 'आतुरी' है. सो यहां पुरुष भयो सो ये दोउ 'शीला' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

सो ये आगरेमें एक सरावगीके जन्मी. सो ये वर्ष नवकी भई. तब मा - बापने याकौ ब्याह जातिके लरिकासों कियो. सो दोउ दैवी जीव हते. सो परम स्नेहसों रहते. पाछें बरस बीसकौ पुरुष भयो तब इनके मा - बाप मरे. तब ये दोउ सुतन्त्र घरमें रहन लागे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो एक समय श्रीगुसांईजी आगरे पधारे हते. सो रूपचन्दनन्दाके घर बिराजे हते, अटारी पर. तब पृथ्वीपतिके यहांसो काहू चोरकों सूरीकौ हुकम भयो हतो. तब तहां दस - पांच लुगाई जल भरिवेकों जात हती. सो तामें एक सरावगीकी बेटी हती. सो ताने उह सूरीपै धर्यो देख्यो. तब देखिकै वाकों मूर्च्छा आई. सो श्रीगुसांईजीने वाकों देखी. तब श्रीगुसांईजीने एक ब्रजवासीकों आज्ञा दीनी, जो या लरिकिनीकों उठाइ ल्यावो. तब वा लरिकिनीकों उठाय ल्याये. तब आपुने वापैं जल छिरक्यो. तब याकों चेत भयो. तब आपु आज्ञा किए, जो याकों जितनो रंग चढावो तितनो चढें. तब वा लरिकिनीने कही, जो कृपानाथ ! आपके बिना ऐसो और कौन है, जो रंग चढावे ? तातें अब तो आप ही रंग चढावो तो भलो है. तब श्रीगुसांईजी वाकौ वचन सुनि बोहोत प्रसन्न भए. पाछें आपु कृपा करि वाकों नाम - निवेदन करवाये. तब वा लरिकिनीने कही, जो कृपानाथ ! अब मोकों कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो तू सेवा करेगी ? तब वाने कही, जो राज ! जैसे आज्ञा होइगी तैसे करूंगी. तब श्रीगुसांईजीने कृपा करिकै वाके माथें श्रीठाकुरजी पधराई दिए. और सेवाकी रीति भांति सब बताइ दिए. तब उह श्रीठाकुरजीकों पधराइकै अपने घरकों गई. सो अपने घर कोठामें जाइ बैठी. बाहर बुलावे तो आवे नाहीं. और बोले नाहीं. तब वाकौ धनी उहां आयो. तब वाने कही, जो कहा है ? तब याने कही, जो मेरे पास मति आउ. मैं तो श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी भई हों. तेरी इच्छा होइ तो तुम हू श्रीगुसांईजीके सेवक होइ आऊ. तब वाहूके मनमे आई. तब वाने हू जाईकै श्रीगुसांईजीके आगे बिनती करी. तब श्रीगुसांईजी वाहूकों नाम सुनाए. तब घर आईकै कही, जो मोकों हू कृपा करिकै श्रीगुसांईजीने नाम

सुनायो. सेवक कियो है. तातें अब तुम कहो सो मैं करूं. तब वा स्त्रीने कही, जो यह घर खासा करो. तब वाने कही वैसे ही घर खासा कियो. तब श्रीठाकुरजी उहां पधराए. सा मन्दिरकी सेवा और रसोईकी सेवा सब स्त्री करे. और उपरकी टहल वाकौ धनी करे. सो ऐसे ही सदा करे. तब वा स्त्रीने पहले श्रीगुसांईजीसों बिनती करी ही, जो आपके दरसन बिनु, मोसों रह्यो नाहीं जाइगो. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो यमुना जल भरिवेकों आवे तब मेरे दरसन करि जइयो. तब ऐसें करत कितेक दिनमें वाकौ धनी भगवच्चरणारविन्दमें प्राप्त भयो. तब उह न्हायकै बैठि चिन्तातुर होंइकै विचारे जो अब कैसी करों ? तब श्रीठाकुरजीने आज्ञा करी, जो अब उठि मेरी सेवा करि. सूतक निवृत्त होंइ तब अपरस काढ़ि डारियो. तब वाने आज्ञा प्रमान कियो. तब श्रीगुसांईजी वाकों इकली जानि दोइ ब्रजवासी समाधानके लिये भेजे. सो एक ब्रजवासी जप करतो. तब दूसरेसों कही, जो तू जप क्यों नाहीं करे ? तब वाने कही, जो मैं तो गौमुखी घर भूलि आयो हूं. तब वाने कही, जो मैं श्रीगोकुल जाऊं हूं सो लेत आउंगी. तब कही, जो आछौ. तब श्रीगुसांईजीके दरसन करि, श्रीयमुनाजल भरि गौमुखी ले कै घर आई. तब ब्रजवासीकों आश्चर्य भयो. जो देखो मेरी गौमुखी अब ही श्रीगोकुल तें ले आई. तब वाने सब समाचार कहे. तब सबनकौ सन्देह दूरि भयो. सो उह ऐसे सदैव सेवा करती.

भावप्रकाश :

या वार्तामें यह जताए, जो सेवा ऐसो पदार्थ है. सेवा तें अलौकिक सामर्थ्य प्राप्त होत है. सो श्रीआचार्यजी 'सेवाफलविवरण' ग्रन्थमें लिखे हैं. ''सेवायाः फल त्रयम्. अलौकिकसामर्थ्यं, सायुज्यं सेवौपयिक देहो वा वैकुण्ठादिषु''. तातें या सरावगीकी बेटीमें सेवा करिकै अलौकिक सामर्थ्य प्राप्त भई है. तातें वैष्णवकों भगवत्सेवा बिना रहनो नाहीं, यह कहे.

सो उह सरावगीकी बेटी श्रीगुसांईजीकी ऐसी परम कृपापात्र भगवदीय हती. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२२६।।

२२७-एक वैष्णव ब्राह्मन, जाने वैष्णवनको कपड़ा उढ़ाए

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक वैष्णव गुजरातकौ, जाने सब वैष्णवकों कपड़ा उढ़ाए, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं, लीलामें इनकौ नाम 'गोपाली' है. ये 'चन्द्रिका' तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप है. सो ये गुजरातमें एक ब्रह्मानके जन्म्यो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो उह अकेलो हतो. सो एक समय ब्रजमें आयो. तब श्रीगुसांईजीके दरसन किये. तब श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मोकों कृपा करिकै सरनि लीजिये. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो आगे आउ तब वह आगे आयो. पाछें आपने कृपा करिकै नाम सुनायो. तब दूसरे दिन ब्रत करायकै ब्रह्मसम्बन्ध करवाए. ता पाछें भोजन करिकै जूठनिकी पातरि धरी. तब इन महाप्रसाद लियो. तब श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! अब मोकों कहा आज्ञा है ? तब श्रीगुसांईजी आपु कृपा करिकै उन वैष्णवनके माथे श्रीठाकुरजीकी सेवा पधराय दीनी. और आज्ञा दिए, जो इनकी सेवा करो. और श्रीगुसांईजी आप कृपा करिकै सेवाकी रीति भांति सिखाई. तब श्रीगुसांईजीसों आज्ञा मांगि श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों यह वैष्णव चल्यो. सो दरसन करि ब्रजयात्रा करि श्रीगोकुल आयो. फेरि श्रीगुसांईजीके दरसन किए. तब श्रीगुसांईजीसों बिदा होंइकै गुजरातिकों गयो. तब एक छोटे गाममें आयो. तहां एक दुकान करी. सो बड़े ही सवारे नित्य उठि परचारगीकी सब तैयारी करे. पाछें न्हाइकै सखड़ी अनसखड़ी, सब सिद्ध करिकै ता पाछें श्रीठाकुरजीकों जगावे. ता पाछें मङ्गलार्ति करि शृङ्गार करि पाछें राजभोग समर्पे. ता पाछें समय होई तब भोग सराइ वैष्णवनकों महाप्रसाद लिवावे. और जो कोई वैष्णव आवतो तिनकों न्योतो देतो. और जो कोई अचानक आवतो ता दिन अत्यन्त प्रसन्न होतो. और सखड़ी दोई जनें लेइ इतनी करतो. और एक पातरि आपु लेतो. एक पातरि गऊकों देतो. और अनसखड़ी सब राखतो. जो कोई अवेरो सवेरो वैष्णव आवतो सो तिनकों उह अनसखड़ी महाप्रसाद लिवावतो. ता पाछें महाप्रसाद ले कै दुकान पर जातो. सो उत्थापनके समय तांई उद्यम करतो. ता पाछें आयके उत्थापन तें सेन करि फेरि जलपानी सवेरेकी तैयारी सोंज करिकै रात्रकों भगवद्वार्ता मण्डलीमें जातो. सो कीर्तन सुनिकै घर आयकै सोइ रहतो. या प्रकार सेवा करतो.

भावप्रकाश :
या वार्तामें वैष्णवकी रीति बताए, जो वैष्णवकों या भांति यथालाभ सन्तोषपूर्वक परम प्रीतिसों भगवद्सेवा करनी और वैष्णवपै ममत्व रखनो.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
सो एक दिन पांच सात वैष्णव आए. सो बड़ी प्रसन्नतासों उनकों उतारिकै आपु आयकै स्नान करिकै मन्दिर तें गयो. पाछें सेन पर्यन्त सब सेवासों पहोंचि सब वैष्णवनकों महाप्रसाद लिवायो. आछे बिछोना करिकै सबनकों सुवायकै अपने घरमें जितने कपड़ा हते सो सब बिछाय दिये. सीतकालके दिन हते सो कछू उढ़ाइ दिए. बाकीके उनके सिरहाने धरि दिए. सो या प्रकार किए. और अपने तो धोवती आधी पहरी और आधी ओढ़ी. पाछें उन वैष्णवनने यासों पूछी, जो तुम्हारी पथारी कहां है ? तब इनने कही, जो घरमें धरी है. परि घरमें तो कछू नाहीं. पाछें वैष्णवनकी सेवा करन लाग्यो. सो वैष्णवनके पांव दाबते - दाबते मध्यरात्रि भई. तब सब वैष्णवनने कही, अब तुम सोइ रहो. तब घरमें जाइकै सोय रहे. पाछें इनने विचारि कियो. जो जालीमें तें पवन आवत है. सो इन वैष्णवनकों सीत लागतो होइगो. सो घरमें एक कपड़ाको टूक हू न हतो. सो धोवती पहरे हुतो सो जालीनमें खोंसी दीनी. और आप नांगे एक कौनेमें बैठि रह्यो. सो रात्रि घड़ी दोई पिछली रही तब उठिकै आधी धोवती पहरी और आधी ओढ़ी. तब इतनेमें सब वैष्णव जागे. तब देखे तो आधी धोवती पहरे हैं और आधी ओढ़े हैं. तब वैष्णवनने यासों पूछी, जो तुम कहां सोए ? पथारी कहां है ? और दूसरो वस्त्र कछू दीसत नाहीं ? तब कही जो फलाने वैष्णवके घरतें मांगि ल्यायो हतो सो दे आयो. ऐसें झूंठे ही कही.

भावप्रकाश :
सो झूंठ यातें बोल्यो, जो वैष्णवकों क्लेश न होंई.

परि उनने मानी नाहीं. कही, जो वैष्णवकौ कैसो भाव है ? जो सगरे कपड़ा बिछौना आपुनकों दिए और ऐसें सीतमें आपु एक धोवतीमें

रहे. धन्य है. इन वैष्णवकी दसा देखो ? सो ऐसे बोहोत ही सराहना उन वैष्णवनने करी. पाछें उन वैष्णवनने चलिवेकी तैयारी करी. तब इन वैष्णवने कही, जो आजु तो और हू रहो तो आछो. तब उन वैष्णवनने कही, जो अब तो हम चलेंगे. तब वैष्णव बिदा होंईकै ब्रजमें आए. सो श्रीगुसांईजीके दरसन किये. तब वैष्णव सब श्रीगुसांईजीके आगे वा वैष्णवकी सराहना करन लागे, जो महाराज ! फलाने गाममें फलानो वैष्णव है. सो भली भांति सेवा करत है. आए - गए वैष्णवकौ भली भांति समाधान करे हैं. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए. सो उह वैष्णव भली भांति श्रीठाकुरजी वैष्णवनकी सेवा करतो. सो श्रीठाकुरजी सानुभावता जतावन लागे. तातें उह वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हो. तातें इनकी वार्ता कहां ताई कहिए.
वार्ता ।।२२७।।

२२८-एक वैष्णव, जाने गुप्त भेट करी

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक वैष्णव, गुजरातकौ, जाने गुप्त भेट करी तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त है. लीलामें इनकौ नाम 'धरा' है. ये 'चन्द्रिका' तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप है.

ये गुजरातमें एक द्रव्यमान बनियाके जन्म्यो. सो वर्ष बीसकौ भयो तब इनके माता - पितासों यह न्यारों भयो. काहेतें ? जो इनके माता - पितासों इनकौ मन मिले नाहीं. पाछें कछूक दिनमें माता - पिता मरे. तब ये घरमें आय रह्यो. ता पाछें श्रीगुसांईजी द्वारिकाकों पधारे. तब इनके गाममें डेरा किये. सो इनकों श्रीगुसांईजीके दरसन भए. तब दरसन होत मात्र इनके मनमें आई, जो इनकी सरनि जइए तो आछौ. पाछें ये श्रीगुसांईजीसों दोउ हाथ जोरि बिनती कियो, जो महाराज ! कृपा करिकै सरनि लीजिये. मैं बोहोत दिनन तें भटकत हों. तब श्रीगुसांईजी वाकों दैवी जानि नाम निवेदन कराए. तब या वैष्णवने बिनती करी, जो महाराज ! अब कहा कर्तव्य है ? तब आपु आज्ञा किये, जो तुम भगवद्‌सेवा करो. तब या वैष्णवने कही, जो महाराज ! कृपा करिकै

सेवा पधराइ दीजिये. तब श्रीगुसांईजी आप वाके माथे श्रीनवनीतप्रियजीकी वस्त्रसेवा पधराइ दिए. और सेवाकी सब रीति बताए. सो ता प्रकार वह परमप्रीतिसों सेवा करन लाग्यो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समय गुजरातके सब वैष्णव मिलिकै श्रीगुसांईजीके दरसनकों श्रीगोकुल आए. तिनमें यह वैष्णव हू आयो. ता समय राजभोगकौ समय हतो. सो सगरे सङ्गकेनने राजभोग आर्तिके दरसन किए. पाछें श्रीगुसांईजी सेवासों पहोंचिकै अपनी बैठकमें बिराजे. तब सगरे वैष्णव संभारि - संभारि गिनि - गिनिकै भेट करन लागे. और यह वैष्णव तो चरनपरस करन लाग्यो. सो चरनपरस करिकै बगलमें तें थेली निकासिकै गादीके नीचे सरकाय दीनी. तब दण्डवत् करिकै ठाढ़ो होई रह्यो. सो आपु तो अन्तर्यामीसो याकौ भाव देखिकै बोहोत प्रसन्न भए. और कहे, जो या वैष्णवकौ कैसो भाव है ? जो कोऊकों खबरि न परे, सब जाने जो याने रीते ही हाथन दण्डवत् करी. पाछें सब वैष्णव दण्डवत् करिकै गये तब आपु यासों आज्ञा किए, जो आज महाप्रसाद यहांई लीजो. ता पाछें आपु भोजन करि चुके तब वाकों महाप्रसादकी पातरि धरी. तब याने महाप्रसाद लियो. पाछें आपु तो अपनी बैठकमें गादी तकियान पर बिराजे. ता पाछें केतेक दिन उह साथ श्रीगोकुलमें रहिकै श्रीगुसांईजीके दरसन करिकै सब मनोरथ किए. ता पाछें श्रीगुसांईजीसों बिदा होइकै सब वैष्णव अपने देसकों चले. तब उह वैष्णव हू बिदा होंइकै अपने घर आयो.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णवकों भगवद्धर्मकौ आचरन गुप्त रीतिसों करनो. काहेतें ? जो भगवद्धर्म बाहिर प्रगट होइ तो हृदयमें तें निकसि जाय. तातें प्रतिष्ठा आदि बाधक कहे.

सो उह वैष्णव श्रीगुसांईजीकौ ऐसो परम कृपापात्र भगवदीय हो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२२८।।

२२९-लाड़बाई, धारबाई, मानिकपुरकी

अब श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी लाड़बाई, धारबाई, मानिकपुरमें रहती, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये दोउ राजस भक्त हैं. लीलामें ‘मिन्दुरा’ और ‘जानकी’ दोउनके नाम हैं. सो ‘मिन्दुरा’ तो लाड़बाईकौ प्रागट्य हैं. और ‘जानकी’ धारबाई भई. ये दोउ ‘शीला’ तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

ये दोउ मानिकपुरमें एक क्षत्रीके जन्मी. सो बालपनेसों इन दोउनकौ चित्त भगवत् कथा वार्तामें लगे. सो इनके मा - बाप अपने इहां ब्राह्मनकों बुलाइ श्रीभागवतकी कथा करवावते. सो ये दोउ बोहोत प्रीतिसों मन लगाइ सुनती. ऐसे करत ये विवाहजोग भई. तब इनके मा - बापने ‘सिरोही’ के ‘रामाना’ सों इन दोउनकौ विवाह कियो. पाछें ये बड़ी भई तब जगन्नाथजीके दरसनकों पुरुषोत्तमपुरीमें आई. सो ता समय श्रीगुसांईजी आप श्रीजगन्नाथजीके दरसनकों पधारे हुते. सो तहां आपके दरसन भए. तब ये दोउ आपकी सरनि भई. नाम - निवेदन पायो. पाछें सेवाके लिये भगवत्स्वरूप श्रीगोपाललालजीकौ पधराई सेवाकी सब रीति जानि अपने गाम आई. सो दोउ बोहोत प्रीतिसों सेवा करन लागी. सो सिरोहीकौ रामानो महाशैवी हतो. सो ब्राह्मननने उनसों कह्यो, जो तुम्हारे रहत ए सेवा करत हैं, सो सौभाग्यवतीकों कही नाहीं है. सौभाग्यवतीकों तो भर्तारकी सेवा कही है. तब रानाने लाड़बाई धारबाईकों मारिवेकौ विचार कियो. सो ये बात लाड़बाई, धारबाईने सुनी. तब तीनसौ तरवार ले कै एकमते होइ रही. जब आवत देख्यो तब ही कह्यो जो ‘‘आघा सम्भालकै अइओ, मैं हें रजपूतानी छां’’ पाछें झख मारिकै ठठक रह्यो. उहां न गयो. सो लाड़बाई, धारबाईने अपनी टेक छोड़ी नाहीं. पाछें अपनो द्रव्य लै कै कासीमें आइ रही. सो श्रीठाकुरजीकी सेवा नीकी भांतिसों करती. सो श्रीठाकुरजी उनकों सानुभावता जनावते.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समय श्रीगुसांईजी आपु कासी पधारे हते. सो इन लाड़बाई, धारबाईके मनमें मनोरथ भयो. सो एक रथ मखमली साजकौ

बनवायो. सो वाके लिये बोहोत सुन्दर बेलनकी जोड़ी आछी मंगायकै पाछें श्रीगुसांईजीकी भेट कियो. सो आपु न लिये. पाछें श्रीगुसांईजी आपुसों बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! आपु या रथ पर बिराजिये. तब श्रीगुसांईजी आप तो रथ पर बिराजे नाहीं. तब इन लाड़बाई, धारबाईने बोहोत बिनती कीनी, तब आपु वा रथकों चरनारविन्दकौ स्पर्श करायो.

भावप्रकाश :

सो यातें जो यह राज्य द्रव्य है. ता पर रानाकी सत्ता है, सो राना तो बहिर्मुख हैं. तातें कदाचित् वाकों खबरि परे तो मांगे, झघरो करे, तातें रथ लियो नाहीं. और राज्य द्रव्य प्रभु अङ्गीकार करत नाहीं, यहू कहे.

ता पाछें श्रीगुसांईजी आपु तो श्रीजगन्नाथरायजीके दरसनकों पधारे. तब कितनेक दिन उहां रहिकै श्रीजगन्नाथरायजीसों बिदा होंइकै उहांतें चले. सो कितनेक दिनमें श्रीगोकुल आए.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

और एक समय लाड़बाई, धारबाई दोउ जनी कासी तें नवलक्ष रुपया ले कै भेटके आई. सो श्रीगोकुल आई. सो श्रीगुसांईजी आपके लिए भेट लाई हती. तब श्रीगुसांईजी आपुसों वा बाईने बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! यह भेट अङ्गीकार करिए. तब आपुने नाहीं करी. तब वैष्णवनने बिनती कीनी, जो महाराज ! उह द्रव्य अङ्गीकार क्यों नाहीं किये ? तब आपु श्रीमुखसों कहे, जो उह द्रव्य आसुरी है. पाछें उह द्रव्य श्रीगोकुलनाथजीकी भेट कर्यो. तब श्रीगोकुलनाथजी आप हू नाहीं राखे. तब अधिकारीने श्रीगोकुलनाथजीकी आज्ञा बिना उह द्रव्य राखि लीनो. सो छांतन उपर बिछवाइकै चुनो लगवाइ दियो. तब वह छांत आछी भांतिसों पटवाय दीनी. ता पाछें एक समय श्रीगोकुलमें एक म्लेच्छ आयो. तब श्रीगोकुलके लोग सब भाजि गए. तब वे छांति आपसों आपु टूट परी. तब उन छांतनमें सों द्रव्य निकस्यो. तब उह द्रव्य सब म्लेच्छ ले गए.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो राजसत्ताकौ द्रव्य आसुरी है, तातें वैष्णवकों लेनो नाहीं. नांतर अनीष्ट होंई, यह जताए.

सो वे लाड़बाई, धारबाई श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय ही. इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२२९।।

२३०-एक राजा, जाकों चारिपुत्र भए

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक राजा, गुजरातिको, जाकों चारि पुत्र भए, ताकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'पीपासादेवी' है. ये 'शीला' तें प्रगटी है. तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वा राजाके गाममें एक ब्राह्मन वैष्णव रहत हुतो. सो उह श्रीगुसांईजीकौ सेवक हुतो. सो वाने अपने गामके राजासों कह्यो, जो राजा ! तिहारी कहा इच्छा है ? तब राजाने कही, जो मेरे पुत्रकी वांछना है. तब या ब्राह्मन वैष्णवने कही, जो राजा ! तिहारे चारि बेटा होइंगे. पाछें आशीर्वाद दे कै यह ब्राह्मन वैष्णव तो अपने घर आयो. ता पाछें चारि रानीनके गर्भ रह्यो. सो चार्योनकों पुत्र भए. सो राजाके चार पुत्र भए. सो सब बात उपर तीन तुम्बावारे वैष्णवकी वार्तामें कहि आए हैं.

पाछें राजा श्रीगुसांईजीकों अपने गाममें पधराय सेवक भयो. पाछें राजाके माथे श्रीगुसांईजी आपु वस्त्र सेवा पधराय. सेवाकी रीति सिखाए. तब राजाने सगरे कुटुम्बकों सेवक करवाये. पाछें श्रीगुसांईजी आपु तो श्रीगोकुल पधारे. ता पाछें केतेक दिनमें उह राजा हू अपने कुटुम्ब

सहित वा ब्राह्मन वैष्णवकों सङ्ग ले श्रीगोकुल आयो. सो सातों स्वरूपनके दरसन किये. पाछें श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मांगि ब्रजयात्रा करी. पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. सो बोहोत भेट करी. फेरि श्रीगोकुल आयो. सो उहां कछुक दिन रह्यो. सो नित्य श्रीगुसांईजीके पंखाकी टहल करतो और श्रीनवनीतप्रियजीके इहां मनोरथ करावे. या प्रकार राजाकौ भाव बढ्यो. सो श्रीठाकुरजी सानुभावता जनावन लागे. पाछें कछूक दिन श्रीगोकुल रहिकै ता पाछें श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मांगि अपने देस - घर आयो. सो भाव - प्रीतिपूर्वक श्रीठाकुरजीकी सेवा करन लाग्यो. और कछू सन्देह होइ तो वा ब्राह्मन वैष्णवकों पूछतो.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णव चाहे सोई करे. उनमें सर्व सामर्थ्य हैं. तातें उनके वचनकों सत्य करि जानने. और वैष्णवकौ नितन्तर सङ्ग करनो, यहू कहे.

सो वह राजा श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय भयो. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए वार्ता ।।२३०।।

२३१-मदनगोपाल कायस्थ

अब श्रीगुसांईजीके सेवक एक मदनगोपाल कायस्थ, महावनमें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'मनोरमा' है. ये 'शीला' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं. सो ये महावनमें एक कायस्थके जन्मे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो एक समय मदनगोपाल कायस्थने श्रीगुसांईजीके पास नाम पायो हतो. तब मदनगोपालदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! मोकों कृपा करिकै सेवा पधराय दीजे. तब श्रीगुसांईजी आपु कृपा करिकै मदनगोपालदास कायस्थके माथे सेवा पधराय दिए. सो मदनगोपालदास श्रीठाकुरजीकी सेवा भली भांतिसों करन लागे. जो मारगकी रीति श्रीगुसांईजीकी आज्ञा प्रमान सेवा करते. सो नित्य प्रातःकाल उठिकै देहकृत्य करिकै दन्तधावन करि, मदनगोपालदास अपने घर जाई, फेरि न्हाइकै श्रीठाकुरजीकों सेवा शृङ्गार करि, राजभोग समर्पि आर्ति अनोसर करि, महाप्रसाद लेई. ता पाछें मदनगोपालदास श्रीगोकुल आवते. सो श्रीगुसांईजी आपु नित्य श्रीसुबोधिनीजीकी कथा कहते. सो मदनगोपालदास सुनते. सो ताकौ भाव अहर्निश मदनगोपालदास अपने मनमें विचार करते. सो श्रीगुसांईजी श्रीनाथजी इन पर बोहोत प्रसन्न रहते. और गोप्य वार्ता होती सो सब करते. तब ऐसे करत श्रीठाकुरजी आपु सानुभावता जतावन लागे. और मदनगोपालदास गोविन्दस्वामीके पाछें - पाछें फिरते. सो पद सुनते. सो सब लिखि लेते. ऐसो उनकों पद सुनिवेकौ व्यसन हतो.

पाछें एक दिन मदनगोपालदासकी स्त्रीने अपने पतिसों कही, जो आज लरिकाकों ज्वर आयो है. तब मदनगोपालदासजीने कही, भगवदीच्छा. पाछें वा स्त्रीने अपने पतिसों गोप्य ज्वरकौ डोरा बन्धायो. तब मदनगोपालदास न्हाइकै अपने श्रीठाकुरजीके मन्दिरमें गए. तब मदनगोपालदास आयकै देखे तो श्रीठाकुरजी पीठि दे कै बैठे हैं. और भोगकौ थार लात मारिकै डारि दियो है. तब मदनगोपालदासने अपने मनमें बोहोत खेद करन लागे. जो न जाने आज मो तें कहा अपराध पर्यो है ? सो श्रीठाकुरजी आपु पीठि दे कै बैठे हैं. पाछें मदनगोपालदासने बिलबिलायकै भूमिमें नाक घीसिकै बोहोत मनुहार करिकै श्रीठाकुरजीसों कह्यो, जो महाराज ! अपराध जानिये तो भलो है. जो हों तो कछू जानत नाहीं हों. सो मदनगोपालदासने बोहोत ही ताप - क्लेश कर्यो. तब श्रीठाकुरजीने सर्व समाचार कहे. तब तो मदनगोपालदास चोंकि उठे. सो सावधान होंइकै श्रीगोकुल आए. तब श्रीगुसांईजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै चरन छूवन लागे. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो सुनि ! तेरी स्त्रीने ज्वरकौ डोरा बंधायो है. तब मदनगोपालदासने बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! अब कहा करिये ? जो स्त्री मेरे कहेमें नाहीं. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो स्त्री तेरे कहेमें नाहीं है तो स्त्रीकौ त्याग करि. तब मदनगोपालदासने कही, जो आज्ञा. तब वे दण्डवत् करिकै घर आए. घरमें आएकै स्त्रीसों पूछी, जो तुमने यह कहा काम कियो है ? पाछें वा स्त्रीकों न्यारी राखी. पाछें और विवाह मदनगोपालदासने कियो. ता पाछें फेरि श्रीठाकुरजीकी सेवा मदनगोपालदास श्रीगुसांईजीकी आज्ञा प्रमान करन

लागे. पाछें स्त्रीसों कछू बोले नाहीं. और स्पर्श हू न किए. तोऊ श्रीठाकुरजी तो बरस एक लों बोले नाहीं. पाछें मदनगोपालदासने बोहोत मनुहार करी. तब बोलन लागे.

भावप्रकाश :
तातें वैष्णवकों अन्याश्रय ते सर्वथा डरपत रहनो.

सो वे मदनगोपालदास श्रीगुसांईजीके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हे. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२३१।।

२३२-रूपमञ्जरी

अब श्रीगुसांईजीकी सेवकिनी रूपमञ्जरी, ग्वालियरकी बेटी, जाकौ नन्ददासजीसों स्नेह हुतो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये रूपमञ्जरी सात्विक भक्त है. लीलामें हू इनकौ नाम 'रूपमञ्जरी' है. सो याकौ रूप बोहोत ही सुन्दर है. ये 'चन्द्ररेखा'की अन्तरङ्ग सखी है. तातें चन्द्ररेखा उनकों श्रीठाकुरजीकी रहस्य वार्ता कहति है. ये 'रूपा' तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप है.

ये ग्वालियरमें एक क्षत्रीके प्रगटी. सो रूपमञ्जरीकौ रूप बोहोत ही सुन्दर हतो. धरती पर छाया परे. ऐसो वाकौ रूप. सो उह क्षत्री श्रीगुसांईजीकौ सेवक हुतो. सो वाने रूपमञ्जरी हू कों श्रीगुसांईजीकी सेवक कराई है. पाछें रूपमञ्जरी बड़ी भई तब एक क्षत्रीसों वाकौ विवाह कियो. सो उह क्षत्री पृथ्वीपतिको चाकर हुतो. पृथ्वीपतिके पास रहतो, महलनमें. सो उह जो कहे, सो पृथ्वीपति करे, ऐसो पृथ्वीपतिकौ वापै प्रेम हतो. सो रूपमञ्जरी हू महलनमें रहिवे लागी. सो रूपमञ्जरीकौ स्वरूप देखि पृथ्वीपति आसक्त भयो. तब पृथ्वीपतिने रूपमञ्जरीकों लोंडी करिकै अपने पास राखे, सो न्यारो महल

दियो. सो रूपमञ्जरी धर्मसील हुती. सो रूपमञ्जरीने कही, जो तुम मेरो परस करोगे तो हों जहर खाइकै मरूंगी. सो पृथ्वीपति समझत हुतो, सो वाने कही, जो मैं तोकों वचन देत हों, जो हों तेरो परस सर्वथा न करूंगो. परि तू मोकों तेरो मुख एक बेर दिखाइ दियो करि. और मेरे पास रहि. तब रूपमञ्जरी तैसे ही करन लागी. सो पृथ्वीपति वाकौ रूप देखि प्रसन्न रहतो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो रूपमञ्जरी पृथ्वीपतिकी लोंडी हुती. परि पात्साहकौ स्पर्श करती नाहीं. सो वासों कहे, जो तुम मेरो स्पर्श करोगे तो हों प्रान त्यागूंगी. सो पात्साह वाकों मुख देखिकै प्रसन्न रहतो. स्पर्श न करतो.

सो रूपमञ्जरीके पास एक गुटका हतो. सो वा गुटकाकों मुखमें राखि वह नित्य श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों आवती. ऐसी वा गुटकामैं सामर्थ्य हती. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करिकै नन्ददासजीकै पास आवती. सो नन्ददासजीसों वाकौ बोहोत स्नेह हतो.

भावप्रकाश :

काहे तें ? जो लीलाकौ सम्बन्ध दृढ हैं.

सो नन्ददासजीसों भागवत सुनती और रसके ग्रन्थ सुनती. और नन्ददासजीने रूपमञ्जरीके तांई भाषामें बोहोत ग्रन्थ किये हैं. सो रूपमञ्जरी नन्ददासजीसों गान हू सिखी. सो बोहोत सुन्दर गावती. और बीन हू आछी बजावती. सो या प्रकार नन्ददासजीके सङ्गसों रूपमञ्जरीकी प्रीति श्रीगोवर्द्धननाथजीमें बोहोत बढ़ी. सो श्रीगोवर्द्धननाथजी वाकों नित्य महलमें दरसन देन लागे. पाछें जब श्रीगोवर्द्धननाथजी कबहूक वाके महलमें न पधार सके तो वाकों बोहोत विरह होतो. सो विकल होइ जाती. तब वाही छिनु श्रीगोवर्द्धननाथजी आप वाके महलनमें पधारि वाकों दरसन देते. तब वह प्रसन्न होती. ऐसो प्रेम वाकौ श्रीगोवर्द्धननाथजीमें हतो. सो श्रीगोवर्द्धननाथजी वासों रात्रिको चोपड़ खेलते. सो चार प्रहर तांई चोपड़ खेलते. या प्रकार कृपा करते.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो भगवदीय वैष्णवकौ सङ्ग निरन्तर करनो. तातें श्रीठाकुरजीमें प्रीति बढ़े.

सो रूपमञ्जरी श्रीगुसांईजीकी ऐसी कृपापात्र भगवदीय ही. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२३२।।

२३३-जाड़ा कृष्णदास क्षत्री

अब श्रीगुसांईजीके सेवक जाड़ा कृष्णदास क्षत्री, गुजरातके, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त है. लीलामें इनकौ नाम 'कृष्णप्रवीना' है. ये 'रूपा' तें प्रगटी है. तातें उनके भावरूप है. ये गुजरातमें एक क्षत्रीके जन्मे. सो उनको देह स्थूल हतो. सो ये बोहोत वृद्ध भए. तब ब्रजमें आए.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो इनकों सब कोऊ 'जाड़ा' चाचा कहते. ये चतुर बोहोत हुते. सो संत - महंतनकी परीक्षा लेते. सो एक दिन जाड़ा कृष्णदास श्रीगोकुल आये. सो इनने मनमें विचार कियो, जो श्रीगुसांईजीकी परीक्षा लेनी. सो श्रीनवनीतप्रियजीके मन्दिरमें आए. सो ता समै श्रीनवनीतप्रियजी पालने झूलि रहे हुते. श्रीगुसांईजी आपु झूलाय रहे हुते. सो जाड़ा कृष्णदासकों ऐसे दरसन भए, जो कबहू तो श्रीगुसांईजी झूलावे हैं और श्रीनवनीतप्रियजी झूले हैं और कबहू श्रीगुसांईजी झूले हैं और श्रीनवनीतप्रियजी झूलावे हैं. तब जाड़ा कृष्णदास चक्रतसे व्है रहे. और मनमें सन्देह भयो, जो ये दोउनमें श्रीठाकुरजी कौन हैं ? ऐसे बोहोत ही सन्देह भयो. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजीकों

राजभोग धरिकै बाहिर आए. तब जाड़ा कृष्णदासकों श्रीगुसांईजीके रोम - रोममें श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन भए. तब श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिकै बिनती किये, जो महाराजाधिराज ! मैं आपकी परीक्षा लेइवेकों आयो हुतो. परि आप मेरी परीक्षा लिये. अब मेरो सन्देह मिट्यो. जासों कृपा करि मोकों सेवक कीजिये. मैं तो अधम जीव हों. तब श्रीगुसांईजी जाड़ा कृष्णदासकी दीनता देखि प्रसन्न भए. पाछें कृपा करि जाड़ा कृष्णदासकों सेवक किए, नाम सुनाए. पाछें दूसरे दिन निवेदन कराए. तब तत्काल ही जाड़ा कृष्णदासकों लीलाकौ अनुभव होंन लाग्यो. सो ता समै वसन्तके दिन हुते. सो जाड़ा कृष्णदासने वसन्तकौ पद करिकै गायो. सो पद

राग : वसन्त
खेलत फाग यमुनातट नन्दकुमार । द्रुम मौरे विपिन अठार भार ।
हलधर - गिरधर ग्वाल सङ्ग । मिलि भरत परस्पर करत रंग ।
बाजे मृदङ्ग उपङ्ग चङ्ग । राजे सुन्दर विचित्र अङ्ग ।।
ताल मुरज उपङ्ग ढौल । बहु बन्दन उड़त गुलाल रौल ।
वासलुब्ध आए मधुप टोल । तेऊ अरुन भए अलीवर निचोल ।
बहुरि मधुप गए अपने ठांय । भरे तान परि भमरी नहीं पत्याय ।
तुम राते भए पति कौन भाव ? कोऊ कपट रूप मति बैठो आय ।
खटपद कहे तुम भूली बाल । जहां धरा गिरि अम्बर भयो गुलाल ।
तहां ऋतु वसन्त विहरत गुपाल । 'जाड़ा कृष्ण' कौ प्रभु मोहनलाल ।।

सो यह पद सुनिकै श्रीगुसांईजी आपु बोहोत प्रसन्न भए. पाछें श्रीगुसांईजी आपु आज्ञा किए, जो अब तुमकों लीला स्फुर्द भई. तातें ब्रजमें फिरो. और मानसीमें मगन रहो. तब जाड़ा कृष्णदास श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मांगि श्रीगोवर्द्धन आए. सो तहां श्रीनाथजीके दरसन किए. सो बोहोत प्रसन्न भए. सो श्रीनाथजीके स्वरूपकों हृदयमें धारन किए. पाछें ब्रजमें फिर्यो करते.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

सो जाड़ा कृष्णदास एक समै वृन्दावन आए. सो रूपसनातन इनसों मिले. तब रूपसनातनसों जाड़ा कृष्णदास पूछे, जो श्रीठाकुरजी कहा करे हैं ? तब रूपसनातनने कही, जो श्रीठाकुरजी भोजन करे हैं. तब जाड़ा कृष्णदासने कही, जो श्रीठाकुरजी तो एक कालावच्छिन्न अनेक लीला करत हैं. तातें तुम ऐसे क्यों कहे, जो भोजन करत हैं ? तब रूपसनातनने कही, जो ऐसे दरसन तो श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजीके उहां होत हैं. और श्रीगुसांईजी जाकों करावे वाकों होंई. यह बात सुनिकै जाड़ा कृष्णदास प्रसन्न भए.

वार्ता प्रसङ्ग ३ :

सो जाड़ा कृष्णदासने भगवदगुनानुवाद बहोत गायो है. सो इनके 'इन्द्रकोप' कौ चरित्र और 'रासपञ्चाध्याई' कीनी हैं. और 'रुक्मनीमङ्गल' गायो है. सो वाकों सब कोउ 'माधवरुक्मनी' केलि हू कहत हैं. और भोजनके पद आदि नए बनाए हैं. सो जाड़ा कृष्णदासकौ जा जासों वार्ता प्रसङ्ग भयो ता ताकी जड़ता मिट गई. ऐसे जाड़ा कृष्णदास श्रीगुसांईजीके परम कृपापात्र भगवदीय हे.

वार्ता प्रसङ्ग ४ :

सो एक दिन जाड़ा कृष्णदास द्वारिकाजी गए. सो मार्गमें एक गाम आयो. सो उहां देवीकौ देवालय हतो. सो देवीके देवालयमें रातकों सोए. पाछें बहोत बेगि सवेरमें एक मनुष्य बकरा ले कै देवी पर चढ़ाइवेकों आयो. सो तिनके सङ्ग और हू मनुष्य हते. तब जाड़ा कृष्णदासने कही, जो सब कोऊ देवीकों बकरा क्यों चढावत है, सिंह क्यों नाहीं चढावत ? तब वह मनुष्य बोल्यो, जो सिंह कैसे पकर्यो जाइ ? तब जाड़ा कृष्णदासने कही, मैं तोकों सिंह पकरि देत हूं. तू बकराकों छोड़ि दे. तब वाने बकरा छोड़ि दियो. फेरि जाड़ा कृष्णदास जङ्गलमें जाइकै सिंह पकरि ल्याये. वा सिंहको देखिकै मनुष्य सब भाजि गए. तब जाड़ा कृष्णदासने सिंहकों छोरि दियो. तब सब मनुष्य फेरि उहां आए. और उनके पांवन परे. तब जाड़ा कृष्णदास कहे, जो आज पाछें जीव हिंसा मति करियो. सो जाड़ा कृष्णदासमें अलौकिक सामर्थ्य हुती.

वार्ता प्रसङ्ग ५ :
बहोरि एक समै जाड़ा कृष्णदासकौ चाचा हरिवंशजीसों मिलाप भयो. तब चाचा हरिवंशजीसों जाड़ा कृष्णदास पूछे, जो मार्गमें प्रमान कहा है ? तब चाचा हरिवंशजी कहे, जो श्रीआचार्यजी महाप्रभुजीने चार प्रमान मुख्य माने हैं, सो 'निबन्ध'में आप आज्ञा किये हैं

वेदाः श्रीकृष्णवाक्यानि व्यास सूत्राणि चैव हि ।
समाधिभाषा व्यासस्य प्रमाणं तच्चतुष्टयम् ।
उत्तरं पूर्वसन्देह वारकं परिकीर्तितम् ।
अविरुद्धं तु यत्त्वस्य प्रमाण तच्च नान्यथा ।
एतद्विरुद्धं यत्सर्वं न तन्मानं कथञ्चन ।

सो यामें कहे हैं, जो वेद, गीतामें श्रीकृष्णवाक्य, व्याससूत्र और श्रीमद्भागवतमें समाधिभाषा ये चार मुख्य प्रमान हैं. सो वेदमें जो सन्देह रहे सो श्रीकृष्णवाक्यसों निवृत्त करनो. और तामें हू जो सन्देह रहे ताकों ब्रह्मसूत्रसों दूरि करनो. और तोहू सन्देह रहे तो ताकौ श्रीमद्भागवत समाधिभाषासों निवारन करनो. और इनतें विरुद्ध जो होंई ताकों नाहीं मानने. या प्रकार श्रीआचार्यजी आप 'निबन्ध' में लिखे हैं. तब यह सुनिहै जाड़ा कृष्णदास बोहोत प्रसन्न भए.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो वैष्णवनकों श्रीगुसांईजीकौ दृढ आश्रय राखनो. तातें लीलानकौ अनुभव होंई. और जीवहिंसा तें सर्वथा डरपत रहनो. और वैष्णवनकौ सङ्ग करनो. और श्रीआचार्यजीके मार्गमें जो प्रमाण - ग्रन्थ हैं वाके विरुद्ध जो कोऊ कछू कहे सो नाहीं माननो. तब पुष्टि भक्ति दृढ होंई. एक आश्रय होंई.

सो वे जाड़ा कृष्णदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२३३।।

२३४-राघौदास चतुर्भुजदासके बेटा

अब श्रीगुसांईजीके सेवक राघौदास, चतुर्भुजदासके बेटा, गौरवा क्षत्री, जमुनावतामें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'अधीरा' है. ये 'रूपा' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
ये चतुर्भुजदासके उहां जमुनावतामें प्रगटे. सो चतुर्भुजदास राघौदासकों श्रीगुसांईजीके पास नाम सुनायवेकों लाये. तब श्रीगुसांईजी राघौदासकों नाम सुनाए. सो राघौदास श्रीगुसांईजीकी कृपा तें आछे वैष्णव भये. सील - स्वभाव संयुक्त.

सो एक समै फागुन महिनाके दिन हते. तिन दिननमें राघौदास गांठ्यौलीकी और आए. सो तहां कदमखण्डीमें श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन भए. सो ब्रजभक्तन सहित होरी खेलत हते. सो राघौदासने साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै एक धमार गाई. सो धमार

राग : गोरी
अरी चलि जांय जहां हरि खेलत गोपिन सङ्गा ।
आनक बहु बाजे ताल मुरज मुखचङ्गा ।

गावत सुनि भावत मन्द मधुर स्वरबानी ।
जानों हरख परस्पर मानों मदन गति ठानी ।। ..अरी चलि जांय
जहां क्रीडत नन्दनन्दन झांझ प्रणव डफ भारी ।
बीन मृदङ्ग उपङ्ग चङ्ग बहु देत परस्पर गारी ।।१।।
कर पिचक बिचक मुख कटिपट भेष बनायो ।
जानो गुदर देन गुन बन बसन्त ब्रज आयो ।।
हाटकमनिगन खचित विविध कर जेरी साजें ।
रुंझ मुरज सहनाई ढोल - ढोलक छबि छाजें ।
आवज अति आतुर बजे गावत ब्रजजन फाग ।
तान तरङ्गन बाहुन बांध्यो छाय रह्यो अनुराग ।।२।।
ध्वनि सुनत पियारी कुङ्कम मञ्जन कीनो ।
बहुरङ्ग बसन तन यावक चरनन दीनो ।
कबरी करजु संवारि निरख उपमाकों हारी ।
मानो हाटक लता रही खग पन्नग नारी ।
श्रवनतार उरहार छबि उर मुक्ता सजल सुढार ।
जनु युग गिरि बिच देखिये छबि धसी सुरसरी धार ।।३।।
रचि तिलक भालपर मृगमद रेख संवारी ।
जानों युगल जीभ धरि पन्नग पीवत सुधारी ।
खंजन मीन आधीन देखि दृग सारङ्ग लाजे ।
वदनचन्द भुव चांप स्वांति सुत नासा राजैं ।

उपमाकों अवलोकिकै छबि या समान नहीं और ।
मानों कीर उडुगन गहें चुगत नहीं सुनि बौर ।।४।।
अति अरुन अधर छबि अरु दरसनन द्युतिपाई ।
जनु बिज्ज्वल बीजकी विद्रुम वार बनाई ।
कण्ठ कपोत लजात करन अङ्गद जगमगयो ।
मानों जलद मृणाल सरद ससि बालक लजयो ।
पोंहोंचन अति पोंहोंची सघन सुन्दर स्याम सुपास ।
मानों कंजके कण्ठ लागिकै भृङ्ग रहे मधुआस ।।५।।
बनि चली सकल त्रिय पग नूपुर स्वर भारी ।
जानों विविध केलि कलहंस करत किलकारी ।।
साख जवाद सुगन्ध कुङ्कमा केसर घोरी ।
भाजन भरि ले चली सकल त्रिय गावत होरी ।।
नख सिख तें अवलोकि छबि नागर रीझे गान ।
मानों सङ्गीतशाला पढ़ी घटबढ़ परत न तान ।।६।।
छबि सिन्धु ललन तन देखत लोचन भूले ।
चितवत चित चोरत अङ्ग - अङ्ग अनुकूले ।
बरन - बरन सिर पाग श्रवन कुण्डल मनिमय अति ।
मन हू स्याम नग सिख तरनि युग रमत तरल गति ।
उर बनमाल विसाल अति विविध सुमन बहुवेष ।
मानों जलद मैं प्रगट देखियत शतमख - सारङ्गरेख ।।७।।

रचि तिलक मलयकौ पिय कर खोर बनाई ।
मानों युगल अहिनरासि घन पर दई दिखाई ।
घन तन देखि लजात कञ्ज दृग क्यों सम पावें ।
मुख छबि स्याम भुजान देखि अहि वपुहि लजावें ।
नख सिख तें अवलोकिकै छबि कटिपट पीत सुदेस ।
मानो जलद धुरवा सखीरि दामिनी रही प्रवेस ।।८।।
छबिसिन्धु मोहन तन लघुमति बरनी न जाई ।
चितवत चित चोरत मन्मथ रह्यो लजाई ।
त्रियन परस्पर हरखि विविध कर डाग न राजें ।
गोप उठे किलकार दुहुंदिस तें बाजत बाजें ।
एकन कर कुङ्कुम लियो एकन घोर गुलाल ।
चली सकल ब्रजसुन्दरी पकरन मदन गुपाल ।।९।।
सेनन स्यामाजु हलधर दिए हैं बताए ।
गहि नील बसन तन दोउ बन्द दिए छटकाय ।।
सब मिलि पकरे स्याम मुरलिका लई छिनाई ।
तबहि तरुनी मुसिकाय साख भर भाजन लाई ।
छांटत छिरकत हसत परस्पर प्रेम छके नन्द नन्द ।
मानो अवनिपर मेघकों घेर रहे बहु चन्द ।।१०।।
निरखत बिथकित भए जहां तहां अमर विमान ।
बरखत सुर कुसुमन और बजाये निसान ।

रह्यो परस्पर रङ्ग सकल त्रिय भवनन आई ।
तबहि तिनें ब्रजराज विविध पट दई मिठाई ।
बहुरि तरनि - तनया सलिल मञ्जन कर बलवीर ।
पहरि बसन आये घरे सङ्ग सकल आभीर ।।११।।
दुतिया मोहन तन राजत सुन्दर पीत सुवास ।
बैठे कनक सिंघासन बलबल 'राघौदास' ।।१२।।

सो यह धमार राघौदासने गाई. ता पाछें उहांई राघौदासने देह छोडी. तब तहां जो गांठौलीके वैष्णव हते तिन सुनी, सो सबन मिलिकै राघौदासकौ अग्नि संस्कार कीनो. ता पाछें वे वैष्णव श्रीनाथजीद्वार आए. सो ता समै श्रीगिरिधरजी आप अपनी बैठकमें गादी तकियानके उपर बिराजे हुते. और हू सब वैष्णव टहलूवा बैठे हुते. सो वा समय एक वैष्णवने श्रीगिरिधरजीसों डरपते - डरपते बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! राघौदासने या प्रकारसों यह धमार गाइकै अपनी देह छोड़ी. तब श्रीगिरिधरजी आप यह सुनिकै हंसे. तब सब वैष्णव बैठे हते तिन सबनकों आश्चर्य भयो. तब श्रीगिरिधरजी आपु तहां सब वैष्णवनकी साम्हे देखिकै मुसिकाने. तब उन वैष्णवनमें तें एक वैष्णवने बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! इन राघौदासकी ऐसें देह क्यों छूटी ? तब श्रीगिरिधरजी आपु उन वैष्णवकों आज्ञा किये, जो राघौदास बड़े भगवदीय भए. सो उनकों श्रीगोवर्द्धननाथजीने होरी खेलके दरसन दिये, गोपिन सहित.

भावप्रकाश :
और ता समैं राघौदासने यह धमार गाइकै अपनी देह छोड़ी. सो ताको कारन यह है, जो श्रीगोवर्द्धननाथजीके लीला सुखकौ अनुभव राघौदास या देहसों ताकौ प्रकार सह्यो न गयो. तातें या देह छोड़िकै राघौदास हू जाइकै लीलामें प्राप्त भये.

और श्रीगिरिधरजी हंसे ताकौ कारन यह, जो जिनके बापदादानने या देहसों लीला सुखकौ हृदयमें अनुभव करि दुसरेनकों हू ताके पद गाइकै अनुभव

करायो ताकौ बेटा यह राघौदास ! तासों इतनो सुख हू हृदयमें धारन कियो न गयो ?

सो राघौदासने पदमें अपनी छाप नहीं धरी हती. तातें राघौदासकी बेटीने डेढ़ तुक बनाइकै धमारकों पूरी करी. सो वे राघौदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२३४।।

२३५-कटहरिया क्षत्री

अब श्रीगुसांईजीके सेवक कटहरिया क्षत्री, गुजरातमें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त है. लीलामें इनकौ नाम 'स्यामगोप' है. ये 'जशवन्त' तें प्रगट्यो है, तातें उनके भावरूप है. सो ये गुजरातमें एक क्षत्रीके प्रगट्यो. सो बालपनेसों वाट मारे. जो कोऊ सङ्ग जाई वाकों लूटे. ऐसो कर्म करे. सो उनके पास तीनसैं मनुष्य रहते. सो सब घोड़ापैं असवार होई चारों ओर फिरें. जो कोऊ वा गेल जाई वाकों लूटे. सो कटहरिया उन सबनको सिरदार हतो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै श्रीगुसांईजी गुजरात तें ब्रजकों पधारत हुते. सो मारगमें तीनसैं असवार ले कै कटहरिया लूटतो. सो उन श्रीगुसांईजीकी असवारीकों देखिकै पास आय घेरा दियो. सो श्रीगुसांईजीके सङ्ग पन्द्रह बीस भारकस हते. सबकों रोकि लीने. तब श्रीगुसांईजीके मनुष्य एक - एक भारकसपै ठाढ़े होंइ गए. सो उन लोगनकों ऐसे दीसे मानो सिंघ ठाढ़े हैं. और वह कटहरिया श्रीगुसांईजीके रथके पास आयो. सो देखे तो साक्षात् पूरनपुरुषोत्तम बिराजे हैं. तब तो कटहरिया हथियार डारि दण्डवत् करि ठाढ़ो व्है रह्यो. और बिनती करी, जो महाराज ! मैं अपराधी हौं, आप कृपा करिकै मोकों पावन कीजिये. आपके बिनु मेरो कोई उद्धार करे ऐसो या संसारमें दीसत नाहीं. सो

कटहरियाकी दीनता देखि श्रीगुसांईजी आप वाकी ओर देखे. पाछें वाकौं दैवी जानि नाम सुनाए. तब कटहरियाने अपने सङ्गके मनुष्यनकों बिदा किये. और आप श्रीगुसांईजीके साथ चल्यो. सो श्रीगोकुल आयो. तब श्रीगुसांईजीसों फेरि बिनती कीनी, जो महाराज ! कृपा करि ब्रह्मसम्बन्ध कराइए. तब श्रीगुसांईजीने एक ब्रत करायो. पाछें दूसरे दिन कटहरियाकों श्रीनवनीतप्रियजीके सन्निधान ब्रह्मसम्बन्ध कराए. तब इनकों भगवद्लीला स्फूर्ति भई. सो वाने बोहोत पद गाए हैं. सो कटहरिया श्रीगुसांईजीकौ ऐसो कृपापात्र भगवदीय हतो.

और एक समें कटहरिया श्रीगोकुल तें श्रीनाथजीद्वार आए. सो ता दिन जन्माष्टमी हती. सो वाने एक बधाई श्रीगोवर्द्धननाथजीके सन्मुख गाई. सो बधाई

राग : सारङ्ग
आज महामङ्गल महरानें ।
पञ्च सब्द धुनि भीर बधाई घर - घर बेरखवाने ।
ग्वाल भरे कांवरि गोरसकी बधू सिंगारत बाने ।
गोपी गोप परस्पर छिरकत दधिके माट ढराने ।
नाम करन जब कियो गर्ग मुनि नन्द देत बहु दानें ।
पावन जस गावत 'कटहरिया' जाहि परमेश्वर मानें ।

ऐसे और हू बोहोत पद गाए. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी आप बोहोत प्रसन्न भए. सो श्रीगुसांईजीकी कृपा तें कटहरियाकों श्रीनाथजी सानुभावता जतावन लागे. सो कटहरिया श्रीगुसांईजीकों छोरिकै कहूं गये नाहीं. जन्म भरि श्रीगुसांईजीके चरनारविन्दमें रहे.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो श्रीगुसांईजीकौ द्दढ आश्रय किये तें श्रीठाकुरजी आप या भांति कृपा करि अपनी लीलाकौ अनुभव करावत हैं.

सो वह कटहरिया श्रीगुसांईजीके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते. सो इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२३५।।

२३६-ब्रह्मदास, गौरवा क्षत्री

अब श्रीगुसांईजीके सेवक ब्रह्मदास गौरवा क्षत्री, गोपालपुरमें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'मनमोहिनी' है. इनमें सदा संयोगरस झलकत हैं. तातें ये मनमें प्रसन्न रहति हैं. ये श्रीयमुनाजीके यूथकी है. ये 'जशवन्त' गोपकी बेटी है. उन तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप है.

ये रावलके आगें गोपालपुर गाम है. तहां एक गौरवा क्षत्रीके जन्मे. सो ये बालपनेसों साधु - संतकी सेवा करते. घर तें रोटी ल्याइ खवावते. उनके पास बैठते, सोते. उन ते भगवद्चर्चा सुनते. या प्रकार रहते. ऐसे करत ये बरस बीसके भए. तब उनके माता - पिता मरे. पाछें उनकों एक गौडियाकौ सङ्ग भयो. सो दोउनमें बोहोत मित्राचारी भई. सो वा गौडियाके सङ्ग रहे. सो वह गौडिया गोवर्द्धन - ङ्कॐ'मानसी गङ्गा पर आई रह्यो. तब येहू उनके सङ्ग गोवर्द्धन आए. ता पाछें ये नित्य श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों श्रीनाथजीद्वार आवते. सो पौष कृष्ण ८ कों ब्रह्मदास श्रीनाथजीके दरसन करि गोवर्द्धन आए. तब रात्रिकों श्रीगोवर्द्धननाथजीने ब्रह्मदासकों स्वप्नमें अलौकिक रीतिसों दरसन दिए. ता पाछें आज्ञा किये, जो तू काल्हि श्रीगुसांईजीकौ सेवक हूजियो. सो ब्रह्मदास दूसरे दिन श्रीनाथजीद्वार आए. सो ता दिन श्रीगुसांईजीकौ जन्मदिन हतो. सो श्रीगुसांईजी आपु मन्दिरमें श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ शृङ्गार करत हते. ता समै ब्रह्मदास उहां आए. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ शृङ्गार करि गोपीवल्लभ भोग धरि बाहिर पधारे. तब ब्रह्मदासकों श्रीगुसांईजी आपु देखे. तब

श्रीगुसांईजी प्रसन्न होंई कहे, जो ब्रह्मदास ! तोकों श्रीनाथजीने आज्ञा कीनी है सो हम जानत हैं, तातें बेगि अपरसमें न्हाइके आउ. हम तोकों सेवक करेंगे. यह सुनत ही ब्रह्मदास चक्रत से व्है रहे. कहे, ये निश्चै ईश्वर हैं. मेरे मनकी जाने. पाछें बेगि - बेगि अपरसमें न्हायकै मन्दिरमें आये. तब राजभोग सरे हते. तब श्रीगुसांईजी कृपा करि वाकों नाम - निवेदन कराए. ताही समै ब्रह्मदासकों श्रीगुसांईजीकी जन्मलीलाकौ अनुभव भयो. तब यह पद गायो

राग : धनाश्री

आजु बधाई लाल वल्लभ गृह आयो ।
बाजत ढोल दमामा भेरी धन्य अक्काजु बालक जायो ।
धन्य धन्य मेरो भागवत निरखेगो सुकमुनि व्यास महासुख पायो ।
धन्य गोवर्द्धन धन्य जमुनातट अब सब गोकुल सुबस बसायो ।
देति असीस सकल ब्रज सुन्दरि चिरजियो ढोटा भक्तन मन भायो ।
फूले ब्रजजन निरखि महानिधि 'ब्रह्मदास' तहां नाच्यो गायो ।

सो यह पद सुनिकै श्रीगुसांईजी आपु बोहोत प्रसन्न भए. पाछें आज्ञा किए, जो तोकों यह मार्ग स्फुर्त भयो. ता दिन तें ब्रह्मदास सदा मानसीमें मगन रहते, ब्रजमें फिर्यो करते. सब लीलाकौ मानसीमें ही अनुभव करते. ऐसी कृपा श्रीगुसांईजी आपु ब्रह्मदास पर किये.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो ये ब्रह्मदास गोपालपुरमें रहत हुते. सो ब्रजमें फिर्यो करते. मानसी सेवा सदा करते. सो उनकों श्रीगुसांईजीकी कृपा तें मानसी सिद्ध हुती. और गोवर्द्धन मानसी गङ्गा पर एक गौडिया कृष्णचैतन्यकौ शिष्य रहत हुतो. सो वे ब्रह्मदासकौ मित्र हतो. सो येहू मानसी सेवा करे और सदा दूध पीके रहे. पाछें केतेक दिन पाछें उह छाछ पीवे लग्यो. सो वाने दूध छोरि दियो. तब एक दिन वा गौडियाने मानसीमें

ठाकुरकौ दूध भोग धर्यो. पाछें उह प्रसादी दूध मानसीमें ही पीयो. ता पाछें नित्यकी छाछ लेवेकौ समै भयो. सो वाने नहीं लीनी. तब वाके शिष्यने आग्रह करि छाछ प्याई. तब वा गौडियाकों ज्वर चढ़ि आयो. सो ताही समै ब्रह्मदास उहां आए. सो ब्रह्मदासने वा गौडियाकों देखिकै कही, जो तुमने दूधके उपर छाछ पी है. तातें तुमकों ज्वर आयो है. तब वा गौडियाकौ शिष्य बोल्यो, जो इनने तो दूध नहीं पीयो है. तब वह गौडिया अपने शिष्य तें कहे, जो तू कहा जाने ! जा घरकौ हमने दूध पीयो है ये वाही घरके सदा रहिवेवारे हैं. और जब हमने दूध पीयो तब ये देखत हुते.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो जाकों मानसी सिद्ध होंई वाकों दूसरेनकी सब बात खबरि परे. तातें मानसी सेवा सर्वोपरि है. सो वैष्णवकों सदा मानसी सेवा करनी.

सो वे ब्रह्मदासजी श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते. सो मानसी सेवाके प्रताप तें सबके मनकी जानते. और ये मानसीमें जो अनुभव करते सो पदनमें गाते. सो वे ऐसे भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिये. वार्ता ।।२३६।।

२३७-रानीने झारीकौ फल मांग्यो

अब श्रीगुसांईजीके सेवक राजा, जाकी रानीने झारीकौ फल मांग्यो, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये दोउ राजस भक्त है. लीलामें ‘हरिदेवी’ ‘हरिप्रिया’ इनके नाम हैं. सो ‘हरिदेवी’ तो राजा भयो और ‘हरिप्रिया’ रानी जानननी. सो इन दोउनकी दो सखी हैं. एककौ नाम ‘बोधिनी’ एककौ नाम ‘प्रबोधिनी’. सो ‘बोधिनी’ यहां साहूकार भयो, और ‘प्रबोधिनी’ साहूकारकी स्त्री भई. ये ‘जशवन्त’ ते प्रगटी हैं, तातें

उनके भावरूप है.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वा राजा - रानी वैष्णव हते. उनके एक बेटी हती. सोउ वैष्णव हती. सो वा राजाने कही, जो कोउ वैष्णव राजा मिले तो वासों या बेटीकौ विवाह करें. पाछें एक वैष्णव राजा मिलि गयो. सो वासों कह्यो, जो ब्याहिवेकों आवो. तब वह अपने घर तें चल्यो. तब या राजाकी बेटीने साम्हें वैष्णव भेजे. उनकी वैष्णवता देखिवेके लिए. सो उन वैष्णवनकों देखिकै राजा बोहोत प्रसन्न भयो. लग्नकी कछू सूधि रही नाहीं. सो लग्न चूकि गयो. तब फेरि दूसरो मुहूर्त निकास्यो. तामें ब्याह कियो. पाछें राजा ब्याहकै अपने घरकों आयो. सो राजा और रानी दोउ न्यारे - न्यारे अपने - अपने श्रीठाकुरजीकी सेवा करें. तब राजाने कही, जो मिलिकै सेवा करे. तब रानीके कही, जो आछौ. पाछें मिलिके सेवा करन लागे. सो राजाके और हू रानी हती. सो या वैष्णव रानीके पास आइकै कही, जो हमतो ऐश करे हैं और तू तो आठ पहर या धंधा ही में लगी रहति हैं. सो उन रानीनके सङ्ग करि या वैष्णव रानीके मनमें हू आई, जो मैं हू ऐश करों. तब राजासों कही, जो मैं हू कछू ऐश करों. तब राजाने कही, जो आछौ एक काम करि. यह अपने पास साहूकार वैष्णव रहत है. ताके घर एक जलकी गागरि डारि आउ. और वाकौ मोल ले आउ. तब रानी साहूकारके घर आई. पाछें सेठानीसों कहे, जो ल्याओ तुम्हारे श्रीठाकुरजीके जलकी गागरि भरि ल्याउं. तब सेठानीने गागरि दीनी. सो जल भरि ल्याई. तब वा सेठानीने वामें सो एक झारी मङ्गलाकी भरी. पाछें रानीने कही, जो याकौ मोल मोकों देउ. तब सेठानीने कही, जो दरसन करि. तब वाने दरसन करे. तब सेठानीने रानीसों कही, जो हमारे घरमें हैं सो सब तू ले. परि मोल तो न दियो जाय. तब रानीने कही, मैं राजासों पूछि आऊं. तब जायकै राजासों पूछी. तब राजाने कही, जो अब तू ही अपने मनमें समझि ले, जो झारी भरिवेकौ, सेवा करिवेकौ कहा फल है ? अब तेरी इच्छामें आवे सो करि. इच्छामें आवे तो सेवा करि, झारि भरि, इच्छामें आवे तो ऐश करि. तब रानीने कही, जो मैं तो झारि ही भरिवो करूंगी. सो वे राजा - रानी सदैव सेवा करते. सो प्रभुजी अनुभव जतावते.

भावप्रकाश :

सो या वार्तामें सेवाकौ स्वरूप जताए, जो सेवाकी बरोबरि तीन लोकमें कोई पदार्थ फल नाहीं. तातें वैष्णवकों सेवा न छोरनी.

सो वे राजा - रानी श्रीगुसांईजीके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते. सो इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२३७।।

२३८-पृथ्वीसिंहजी, राजा कल्याणसिंहजीके बेटा

अब श्रीगुसांईजीके सेवक पृथ्वीसिंहजी, बीकानेरके राजा कल्याणसिंहजीके बेटा, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'प्रभावती' है. ये 'श्रुतिरूपा' तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप हैं.

ये पृथ्वीसिंहजी बीकानेरके राजा कल्याणसिंहजीके उहां जन्मे. सो बालपनेसों इनकौ चित्त साधु - सङ्गतिमें रहे. देस - देसके साधु उहां आवते. तिनसों ये मिलें. सो ये राजा भए. तब प्रथम ही ये गोकुल - मथुराकी यात्राकों चले. सो मथुराजीमें आए. तब चोबेनसों पूछे, जो ऐसे कोई महापुरुष बतावो जासों मिलिये. तब चोबेनने कही, जो राजा ! यों तो बड़े - बड़े महापुरुष या ब्रजमण्डलमें हैं, परि गोकुलमें श्रीगुसांईजी विटठलनाथजी बड़े प्रसिद्ध हैं. बड़े - बड़े राजा, संत, महात्मा, गुनी, स्वामी सब इनकी वन्दना करत हैं. तातें उन तें मिलो तो आछौ है. तब राजा तत्काल श्रीगोकुल आए. सो ता समै श्रीगुसांईजी आपु ठकुरानी घाट पर सन्ध्यावन्दन करि रहे हे. सो राजाकों श्रीगुसांईजीके दरसन भए. सो तेजःपुंज अति उज्ज्वल अलौकिक दरसन भए. सो राजा दरसन करिकै विस्मित होइ रह्यो. पाछें अपने मनमें कहे, जो ऐसे तेजस्वी पुरुषके दरसन तो आज तांई या पृथ्वी मण्डलपें भए नाहीं. इतनेमें श्रीगुसांईजी आपु सन्ध्यावन्दन करि चूके. तब आपु राजाकी ओर देखे. तब राजा श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि बिनती किये, जो महाराजाधिराज ! कृपा करि मोकों सेवक कीजिए. आज मेरो जन्म सुफल भयो. तब श्रीगुसांईजी कृपा करि राजाकों नाम सुनाइ सेवक किये. पाछें एक ब्रत कराय निवेदन करवाए. पाछें राजाको आप कहे, जो राजा ! अब तुम घर जाय भगवत्सेवा करो. पाछें श्रीगुसांईजी आप राजाकों श्रीबालकृष्णजीकौ स्वरूप पधराय सेवाकी सब रीति बताए. और

आशीर्वाद दिए, जो तुमकों काल कबहू बाधा न करेगो. श्रीठाकुरजीके सदा सन्मुख रहोगे. पाछें राजा प्रसन्न होंई अपने देस आए. सो भगवत्सेवा प्रीतिपूर्वक करन लागे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वे पृथ्वीसिंहजी कविता बोहोत करते. सो उनने कवित्त, सवैया, दोहा, चोपाई, ऐसे अनेक प्रकारकी कविता रची हैं. और 'रुक्मनिबेल' और 'स्यामलता' इत्यादि ग्रन्थ हू बनाए हैं. सो राजाकौ मन श्रीठाकुरजीके सिवाय और ठौर जातो नाहीं. इनकौ चित्त ठाकुरमें ऐसो गढ़ि गयो जो संसारके विषय सब छूटे. सो अपनी रानिकों हू पहचानि न सकै. ऐसो सेवामें राजा मगन रहे, और परदेस जाइ तब मानसी करे.

सो एक समै राजा परदेस गए. तब बीकानेरके उपर शत्रु चढि आए. तब दोनों ओर ते शत्रुने घेर लिए. तब श्रीठाकुरजीने तीन दिन तांई शत्रुन तें लड़ाई करी. सो ठाकुरके मन्दिरके किवाड़ तीन दिन तांई भीतर ते बन्द रहे. काहू तें खुले नाहीं. पाछें चौथे दिन जब शत्रु भाजि गए तब मन्दिरके किवाड़ खुले. सो यह बात राजाने परदेसमें मानसी करत में जानी. सो उनने दीवानकों लिखि पठाई. सो दीवान पत्र बांचिके चकित व्है रह्यो. सो राजा पृथ्वीसिंहजी ऐसे श्रीगुसांईजीके कृपापात्र भगवदीय भए.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

बोहोरि राजा पृथ्वीसिंहजीकों पृथ्वीपति दिल्ली बुलाए. सो राजा पृथ्वीपतिके पास दिल्ही आए. तब माला - तिलक छापा सब करिकै आए. तब बादशाह पृथ्वीसिंहजीकों देखिकै मनमें बहोत प्रसन्न भयो. कहे, जो देखो ! इनकों अपने गुरुपै कैसो विश्वास है. पाछें बादशाह राजाकों काबुलकी और लड़ाईमें जाइवेकी कही. तब राजाने विचार कियो, जो मेरी मृत्यु तो अमुक दिन मथुरामें विश्रान्त घाट पे होइवे वारी है. सो अब कैसें करे ? फेरि श्रीगुसांईजीकै चरनारविन्दकौ ध्यान करि राजा काबूल गयो. सो उहां थोरे ही दिनमें लड़ाई जीतिकै सांढनीपें बैठिकै उहां ते चले. सो दोई दिनमें मथुरा आईकै वाहि दिना देह छोड़ी. सो यह बात बादशाहने सुनी. तब बादशाहने बोहोत खेद कियो, जो ऐसे राजा मोकों मिलने कठिन हैं.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो जिनकों गुरुकौ आश्रय दृढ होंई, तिनकौ सर्व कार्य सिद्ध होंई. तातें वैष्णवकों गुरुकौ दृढ आश्रय राखनो.

सो वे पृथ्वीसिंहजी श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते, तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए वार्ता ।।२३८।।

२३९-तुलसीदासजी, सारस्वत ब्राह्मन

अब श्रीगुसांईजीके सेवक तुलसीदासजी सारस्वत ब्राह्मन, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'तुलसां' है. सो चन्द्रावलीजीकी अन्तरङ्ग सखी है. ये श्रीचन्द्रावलीजीकी सेवामें सदा तत्पर रहत हैं. दुती कार्यमें प्रवीन हैं. तातें श्रीचन्द्रावलीजीकी इन पर बोहोत प्रीति है. ये 'श्रुतिरूपा' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप है.

ये तुलसीदास दिल्ही तें उरेमें कोस बीस पर एक सारस्वत ब्राह्मनके जन्मे. सो एक समै वह ब्राह्मन अपने स्त्री - बेटा सहित ब्रजके दरसनकों मथुराजी आयो. सो ता समय श्रीगुसांईजी आप मथुराजीमें बिराजत हुते. सो या ब्राह्मनकों भागजोगि तें श्रीगुसांईजीके दरसन भए. तब ये जान्यों, जो ये कोई महापुरुष हैं. तातें उनकी सरनि जइये तो आछो. पाछें वा ब्राह्मनने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! कृपा करि मोकों सरनि लीजिए. तब श्रीगुसांईजी आप वाकों दैवी जीव जानि सरनि लिये. नाम सुनाइ सेवक किये. पाछें वा ब्राह्मनने अपनी स्त्री - बेटाकों हू सेवक करवाए. ता पाछें वा ब्राह्मनने बिनती करी, जो महाराज. हों गरीब ब्राह्मन हों, तातें कछू सेवा टहल दीजे तो आछौ है. तब श्रीगुसांईजी आप कृपा करि वाकों जलघराकी सेवा दिए. ता पाछें केतेक दिनमें वह ब्राह्मन और वाकी स्त्री दोउ मरे. तब तुलसीदास बालक हुते. वर्ष पांचके. सो श्रीगुसांईजी वाकौ लालन - पालन किए.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वे तुलसीदासके पिता श्रीगुसांईजीके जलघरिया हते. और तुलसीदास छोटे हुते. तब श्रीगिरिधरजी आदि बालकनके सङ्ग खेलते. और श्रीगुसांईजी सब लालजीनकों बुलावते तब एहू दोरिकै श्रीगुसांईजीके पास जाते. तब श्रीगुसांईजी विनकों बालक जानिकै लालजी कहते. काहेतें, जो उनके माता - पिता पहिले ही सों उनकों बालक छोरिकै मरे हते. तातें श्रीगुसांईजी वाकों बड़े किए हते. तातें लालजी कहते. और तुलसीदास हू अपने मनमें यही जानते, जो हों इनकौ बालक हूं. पाछें सब लालजी बड़े भए तब श्रीगुसांईजीने सबकों श्रीठाकुरजी सेवाकों पधराइ दिए. तब तुलसीदासके मनमें आई, जो श्रीगुसांईजीने मोकों कछू सेवा पधराई दिए नाहीं. सो उनकौ ताप जानिकै श्रीठाकुरजी आप श्रीगुसांईजीसों आज्ञा किये, जो इनहूकों कछू सेवा पधराइ दीजिए. काहेतें, जो इनके द्वारा बोहोत जीवनकौ उद्धार होइगो. तब श्रीगुसांईजीने उनकों श्रीगोपीनाथजी ठाकुर पधराइ दिए. और आप आज्ञा किये, जो तुम सिंघ देसमें जाउ. उहां जीवनकों नाम सुनाइओ. और पुष्टिमार्गकौ उपदेस करियो. तब लालजी नाम धरायकै और श्रीठाकुरजीकों पधरायकै तुलसीदास सिंघ देसकों चले. सो एक दिन मारगमें श्रीठाकुरजीकी रसोई करी. सो घी न हतो. सो रोटी चुपरी नाहीं. सो वैसे ही भावनासों घी धरि श्रीठाकुरजीकों रोटी भोग धरे. पाछें बिनती करी, जो महाराज ! ये रोटी अरोगियो. और जो नाहीं अरोगोगे तो हों श्रीगुसांईजीसों कहि दउंगो. तब श्रीठाकुरजी प्रसन्न होंई अरोगे. और कही, जो मैं रोटी अरोग्यो हूं, तातें तू श्रीगुसांईजीसों कछू कहियो मति. काहेतें, जो हों श्रीगुसांईजीसों डरपत हूं. तब तुलसीदास जाने, जो श्रीठाकुरजी श्रीगुसांईजीसों डरे हैं. ऐसे भोले हते. पाछें सिंघमें आइ सेवा करन लागे. सो श्रीठाकुरजी हू उनकों लालजी कहते. और उनके मनमें हू लालजीपनेकी बुद्धि सदैव रहती. और उनने बोहोत पद किये हैं. तामें उनने अपनी छाप ‘लालदास’ राखी है. सो कितनेक लोग उनकों ‘लालमति’ हू कहत हैं. सो इनकौ चित्त सदा ब्रजभूमि, श्रीयमुनाजी, श्रीगोकुल, श्रीगुसांईजीमें रहतो. सो इनने जीवन भरि भगवत्सेवा करी. सो जगतमें ये आठमें लालजीके नामसों प्रसिद्ध भए. सो अज हू इनकौ बंस है. सो सिंघमें नाम देत है.

भावप्रकाश :

या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो श्रीगुसांईजी जाकौ हाथ पकरे, अपनो करे ताके भाग्यकौ कहा कहिए ? ताकौ कल्यान ही होंई. वाकी जगतमें पूजा होंई तामें कहा कहिए ? सो श्रीगुसांईजी ऐसे परम दयाल हैं, तातें उनकौ आश्रय दृढ राखे ते जीवकौ सदा कल्यान ही है.

सो वे तुलसीदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२३९।।

२४०-वृन्दावनदास, चतुरबिहारीके भतीजा

अब श्रीगुसांईजीके सेवक वृन्दावनदास, चतुरबिहारीके भतीजा, आगरेमें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त है. लीलामें इनकौ नाम 'गोकुला' है. ये 'श्रुतिरूपा' तें प्रगटी है. तातें उनके भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै वृन्दावनदास, चतुरबिहारीके भतीजा आगरे तें श्रीगुसांईजीके दरसनकों श्रीगोकुल आए हते. सो श्रीगुसांईजीके दरसन किए. सो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तमके दरसन भए. तब श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! कृपा करिकै मोकों सेवक कीजिए. मैं आपकी सरनि आयो हूं. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा किए, जो श्रीयमुनाजीमें स्नान करि आउ. तब वृन्दावनदास श्रीयमुनाजीमें स्नान करिकै आए. पाछें बिनती करी, जो महाराज ! मैं स्नान करि आयो. तब श्रीगुसांईजी आपु कृपा करि वाकों नाम सुनाय निवेदन कराये. तब वृन्दावनदासने यथासक्ति भेट करी. ता पाछें श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन करे. पाछें कछूक दिन श्रीगोकुलमें रहे. सो नित्य श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतप्रियजी सात स्वरूपनके दरसन करे. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार पधारे तब वृन्दावनदास हू श्रीनाथजीद्वार गए. सो वृन्दावनदास श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किए. सो चित्त बोहोत प्रसन्न भयो. पाछें श्रीगुसांईजी अपनी बैठकमें पधारे तब वृन्दावनदासने बिनती करी, जो

महाराज ! आपकी कृपासों श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन बोहोत ही भली भांतिसों भए. पाछें श्रीगुसांईजीने वृन्दावनदासकों अपनी जूंठनिकी पातरि धरी. सो वृन्दावनदासने महाप्रसाद लियो. पाछें श्रीगुसांईजीके सङ्ग फेरि श्रीगोकुल आए. सो कछूक दिन श्रीगोकुलमें रहे. सो इनकों श्रीगोकुलकौ स्वरूप हृदयारूढ भयो. पाछें श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मांगि आगरे आए. सो उहां चतुरबिहारीसों श्रीगोकुलके सब समाचार कहे. और श्रीगुसांईजीने कृपा कीनी सो सब कहे. तब चतुरबिहारी जाने, जो अब इनकी श्रीगुसांईजीमें दृढ़ प्रीति भई.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
पाछें केतेक दिनमें श्रीगुसांईजीने आसुरव्यामोह लीला करी. सो सुनिकै वृन्दावनदास विकल व्है गए. तब श्रीगोकुल आए. सो ता समै श्रीगोकुलनाथजी श्रीगोकुल बिराजत हुते. सो श्रीगोकुलनाथजीने वृन्दावनदासकों कृपा करि श्रीगुसांईजीके स्वरूपकौ दरसन कराए. तब वृन्दावनदास जाने, जो श्रीगुसांईजी और श्रीगोकुलनाथजी दोउ एक ही स्वरूप हैं. ता दिनतें वृन्दावनदास श्रीगोकुलनाथजीके पास रहते. पद गावते.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो वल्लभकुलमें श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी, आपु या प्रकार बिराजत हैं. तातें उनके भावसों वल्लभकुलके दरसन - चरनपरस, आदि सब करनो.

सो वृन्दावनदास श्रीगुसांईजीके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हे. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२४०।।

२४१-नन्ददासजी सनाढ्य ब्राह्मण

अब श्रीगुसांईजीके सेवक नन्ददासजी, सनाढ्य ब्राह्मण, रामपुरमें रहते, जिनके पद अष्टछापमें गाइयत हैं, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये नन्ददासजी लीलामें श्रीठाकुरजीके ‘भोज’ सखा अन्तरङ्ग, तिनकौ प्राकट्य हैं. सो दिवसकी लीलामें तो ये ‘भोज’ सखा हैं, और रात्रिकी लीलामें श्रीचन्द्रावलीजीकी सखी ‘चन्द्ररेखा’ इनको नाम है. सो ‘चन्द्ररेखा’ ‘चम्पकलता’ तें प्रगटी है. तातें उनके सात्विक भावरूप है. सो ये पूरवमें ‘रामपुर’ गाममें जन्मे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वे तुलसीदासजीके भाई सनोढ़िया ब्राह्मन हते. सो तुलसीदासजी तो बड़े भाई, और छोटे भाई नन्ददासजी हते. सो वे नन्ददासजी पढ़े बहुत हते.

तुलसीदासजी तो रामानन्दीनके सेवक हते. सो नन्ददास हू कों रामानन्दीनकौ सेवक करवायो. उन नन्ददासकों लौकिक विषयमें प्रीति बोहोत हती. जो कहूं भवैया नांचे तो तहां जायकै ठाढ़े रहें, सुनवे लगैं. सो तुलसीदासजी नन्ददासकों बहोत समुझावें जो जहां तहां तू मति बेठ्यौ करे. सो वे नन्ददास मानतो नाहीं.

सो कछुक दिनमें एक सङ्ग पूरवकौ चल्यो तहांतें, श्रीरनछोड़जीके दरसनकों श्रीद्वारकाजीकों चल्यो. तब नन्ददासने मनमें विचारी, जो बने तो मैं ऐसे सङ्गमें श्रीरनछोड़जीके दरसन करि आऊं. तब नन्ददासने तुलसीदासजीसों कह्यो, जो तुम कहो तो मैं या सङ्गमें श्रीरनछोड़जीके दरसन करि आऊं. तब तुलसीदासजीने नन्ददासकों बोहोत समझायो, जो कहूं मति जाय, मारगमें दुःख बोहोत हैं. अनेक दुःसङ्ग हैं. जो जायगो तो तू भ्रष्ट होय जायगो. तातें तू रनछोरजी तांई न पहुंच सकेगो, बीच ही में रहेगो. तातें श्रीरघुनाथजीकौ स्मरन कर और अपने घरमें बैठ्यो रहे. तब नन्ददासने तुलसीदासजीसों कह्यो, जो मेरे तो श्रीरघुनाथजी हैं, परि मैं एकबार श्रीरनछोरजीके दरसनकों अवश्य करिकै जाउंगो. तुम कोटि उपाय करो परि मैं न रहूंगो. तब तुलसीदासजीने जान्यो, जो यह न रहेगो, तब सङ्गमें जो मुखिया सिरदार हतो, ताके

पास नन्ददासकों लै कै तुलसीदासजी गये. और मुखियासों नन्ददासकी भलामन तुलसीदासजीने दीनी, जो यह नन्ददास तुम्हारे सङ्ग आवत है. तातें तुम मारगमें याकी खबरि राखियो. ऐसो करियो, जो इहां फेरि नन्ददास आवे काहु गाममैं रहि न जाय. तब वा मुखियाने कह्यो, जो आछे, या बातकी चिन्ता मति करो. ता पाछें वह सङ्ग चल्यो, सो वाके सङ्ग नन्ददास हू चले. सो कछुक दिनमें वह सङ्ग मथुराजीमें आय पहुंच्यो. तब सङ्ग मधुपुरीमें रह्यो, और नन्ददास तो मधुपुरीकी सोभा देखत - देखत विश्रान्त उपर आये. सो तहां अनेक स्त्री - पुरुष स्नान करत देखे, और सुन्दर स्वरूपके देखे. सो नन्ददास तो मनमें देखिकै बहुत ही मोहित भये. मनमें विचार कियो, जो ऐसी जगहमें कछुक दिन रहिये तो आछो है. सो या भांति नन्ददास अपने मनमें लुभाये. ता पाछें नन्ददासने अपने मनमें यह विचार कियो, जो एक बार श्रीरनछोरजीके दरसन करि आऊं. ता पाछें आयकै विश्रान्त घाट उपर रहेंगे. पाछें नन्ददासने सुनी, जो सङ्ग तो मथुराजीमें दस दिन और रहेगो. तब इनने विचार कियो, जो सङ्ग तो अब मथुराजीमें बहुत दिन लों रहेगो. तो मैं इनतें अकेलो होयकै श्रीरनछोरजीके दरसनकों जाऊंगो. ऐसो विचार अपने मनमें नन्ददास करिकै रात्रिकों तो रहे. ता पाछें नन्ददास प्रातःकाल उठिकै चले, सो काहू तें कछु कही नाहीं. पाछें वा सङ्गमें जो मुखिया हतो, ताने अपने सङ्गमें नन्ददासकों जब न देख्यो, तब सगरी मथुराजीमें ढूंढ्यो. जब नन्ददास कहूं नजर न पड़े, तब ढूंढिकै बैठि रहे. और नन्ददासने तो काहूसों पूछी हू नाहीं. वे तो अकेले चले ही गये. सो श्रीद्वारिकाजीकौ मारग भूलि गये, और चले - चले सिंहनन्द जाइ निकसे. सो गामके भीतर चले जात हते. तहां एक क्षत्री श्रीगुसांईजीकौ सेवक रहत हुतो. सो ताकी बहू अत्यन्त सुन्दर हती. सो वह स्त्री अपने घरमें नहायकै उपर ठाड़ी - ठाड़ी केस सुखावत हुती. सो चले जात में वह स्त्री नन्ददासकी दृष्टि परी. सो नन्ददास तो वाकों देखिकै मोहित भये. और मनमें कह्यो, जो या पृथ्वी उपर ऐसे हू मनुष्य हैं ? और वह स्त्री तो उतरिकै अपने घरके कामकाजमें लगी. और नन्ददास तो तहीं ठाड़े - ठाड़े मनमें विचार करन लागे, जो अब तो एक बार याकौ मुख देखों तब जलपान करूंगो. पाछें ता दिन तो नन्ददास गये सो कोउ स्थमें जायकै सोय रहे, रात्रिकों. ता पाछें दूसरे दिन नन्ददास प्रातःकाल उठिकै वा स्त्रीके द्वार पर आयकैं बैठे. सो नन्ददासकों तो बैठे - बैठे तीन प्रहर व्यतीत होय गये. तब वा क्षत्रीके एक लोंड़ी हती, ताने बहूसों कह्यो, जो एक ब्राह्मन प्रातःकालकौ अपने घरके द्वार पर बैठ्यो है. सो वाने पानी हू नाहीं पियो. तब बहूने लोंड़ीसों कह्यो, जो वा ब्राह्मनसों पूछो तो सही, जो तुम द्वार उपर काहेकों बैठे हो ? तब लोंड़ीने आइकैं नन्ददाससों कह्यो, जो तुम इहां हमारे द्वारपै क्यों बैठे हो ? तब नन्ददासने वा लोंड़ीसों कह्यो, जो मैं तो तेरी बहूकौ एक बार मुख देखूंगो, ता पाछें जलपान करूंगो, तब जाऊंगो. तब वह

लोंड़ी यह सुनिकै अपनी बहू पास गई. और वह सब बात बहूसों कही, जो वह ब्राह्मन तो तिहारी मुख देखिकै जायगो. तब बहूनें लोंड़ीसों कह्यो, जो मैं ता वाकों अपनो मुख दिखाउंगी नाहीं. वह तो आपही तें उठि जायगो. सो ऐसे ही नन्ददासकों हू साज (हठ ?) पड़ि गई. तब वा लोंड़ीने बहू तें फेरि कही, जो तुम मेरी एक बात सुनो. जो ''एक समै श्रीगोकुल श्रीगुसांईजीके दरसनकों अपनो सगरो घर गयो हो. तब सङ्गमें मैं हुती और तुमही हे. सो श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल तें श्रीजीद्वार पधारत हते. और मैं, तुम, तुम्हारो ससुर, सब सङ्ग हते. ज्येष्ठकौ महीना हतो. सो मारगमें एक म्लेच्छानी प्यासी होयकै विकल भई परी हती. वह मेवा फरोसनी हती. सो ताही मारगमें होयकैं श्रीगुसांईजी पधारे. श्रीगुसांईजी निकट आये, तब खवासनें वासों कह्यो, तू मारग छोड़िकै न्यारी उठि बैठि. सो वाकों ता उठिवेकी सक्ति नाहीं. याकौ तो कण्ठ पानी बिना सूखि गयो, सो नेत्रनमें प्रान आय रहे हते. सो वापै बोल्यो हू न जाय. तब श्रीगुसांईजी पूछें, जो यह कहा है ? तब खवासने श्रीगुसांईजीसौं कह्यो, जो महाराज ! एक म्लेच्छानी है, सो मारगमें परी है. जो बहोतेरो वासों कहत है परि वह उठत नाहीं ? तब श्रीगुसांईजीने वा म्लेच्छानीकी ओर देख्यो. तब म्लेच्छानीने श्रीगुसांईजीकी ओर हाथसों बतायो, जो मैं तो प्यासी हों. तब श्रीगुसांईजीने खवाससों कह्यो, जो याकों बेग ही जल प्यावो. तब खवासने श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो महाराज ! इहां तो काहूके पास पानी नाहीं है, और तलाव कूआ हू निकट नाहीं है, सो पानी कहांते पाइये ? तब श्रीगुसांईजीने खवाससों कह्यो, जो हमारी झारीमें जल होयगो. तब खवासने कही, महाराज ! झारी छुइ जायगी. तब श्रीगुसांईजीने खवास तें कह्यो, झारी तो और आवेगी, परन्तु फेरि या म्लेच्छानीके प्रान कहांते आवेंगे ? तातें बेगि जल प्यावा, जीवमात्र पर दया राखनी. सो वह श्रीनवनीतप्रियजीकौ महाप्रसाद जल हतो. जो वा म्लेच्छानीकों प्यायो, सो वह जल पी गई. तब वा म्लेच्छानीके अङ्ग - अङ्गमें सीतलता होय गई. तब वा म्लेच्छानीनें उठिकै श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो महाराज ! मैंने कन्हैयाजी सुने हते, सो आज मैंने नैननसों देखे. तातें तुम 'गुसांईया' सांचे हो, सो मोकों जिवाई. ता पाछें वह गोकुल रही. सो वह सुन्दर मेवा लायकै श्रीगुसांईजीकै द्वार लैकैं आवे. सो वह म्लेच्छानी श्रीगुसांईजीके मनुष्यतें कहे, जो ए मेवा तुम राखो. तब वे मनुष्य कहे, जो तू मोल कहै तो लेंय. तो वह हमारे काम आवे. तब वह थोरे पैसा कहे. सो या भांतिसों वाने अपनो जनम व्यतीत कियो. सो वा म्लेच्छानीके उपर श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न रहते. ता पाछें वह म्लेच्छानीने देह छोड़ी. सो वाने महावनमें जायकै ब्राह्मनकै घर जनम पायो. सो फेर वे श्रीगुसांईजीकी सेवकनी भई, और वह कृतार्थ भई.

सो या भांतिसों लोंड़ीने अपनी बहूसों कह्यो, जो जीव मात्र उपर दया राखनी. तातें ब्राह्मन प्रातःकालकौ भूख्यो प्यासो बैठ्यो है, सो वह बात आछी नाहीं है. तब वह बात बहूके ह्रदेमें आई. पाछें वा लोंडीके सङ्ग बहू द्वार उपर गई. तब नन्ददास वाकौ मुख देखिकै उठि गये. सो या भांतिसों वे नन्ददास नित्य आवे. सो वाकौ मुख देखिकै चले जांय. तब पाछें वाके घरके धनी क्षत्रीने सुनी, जो यह ब्राह्मन हमारे घर याकों देखवेकों आवत है. तब वा क्षत्रीने आयकै नन्ददाससों कह्यो, जो तुम हमारे घरके द्वार पर नित्य आवत हों, सो हमारी जगतमें हांसी बोहोत होत हैं. तब नन्ददासने वा क्षत्रीसों कह्यो, जो मैं तुम तें मांगत नाहीं, कछु तुमारो बिगारत नाहीं. ता पाछें और तुम कहत हो मोसों, तो मैं तुम्हारे माथे मरूंगो. तब यह नन्ददासके बचन सुनिकै यह क्षत्री डरप्यो, जो अब यातें मैं बोलूंगो तो यह ब्राह्मन हत्या देयगो, सो कछू कहे नाहीं. और नन्ददास तो वेसेई नित्य आवें सो वाकौ मुख देखिकै चले जांय. ता पाछें कितेक दिनमें यह बात सगरे गाममें भई. जो फलाने क्षत्रीकी बहूकों एक ब्राह्मन देखिवेकों नित्य आवत है. सो यह बात सुनिकै वा क्षत्रीकों लाज आई. जब क्षत्रीने अपने पुत्रसों कह्यो, जो अब हमकों यह गाम छोड़नो आयो. ता पाछें घरमें की सब वस्तु बेचिकै सबकी हुंडी कराई. ता पाछें एक गाड़ी भाड़े करी, दस पांच मनुष्य मारगके लिए चाकर राखे. प्रातःकाल तें नन्ददास वा बहूकौ म्होडो देखिके गये हते. ता पाछें वह क्षत्री, क्षत्रीकौ बेटा, क्षत्रीकी बहू और चोथी लोंडी, सो वे चारों जनै वा गाड़ीमैं बैठिकै श्रीगोकुलकौं चले. ता पाछें दूसरे दिन नन्ददास वाके घर आये. सो देखे तो वाके घरकौ ताला लाग्यो है. तब नन्ददासने वाके परोसीनसों पूछी, जो आज या घरके ताला लाग्यो है, सो या क्षत्रीके घरके लोग कहां गये ? तब और लोगनने कही, जो जा भले आदमी ! तेरे दुःख तें तो वा क्षत्रीने अपनो गाम हू छोड़ि दीनो है. सो वह तो काल प्रातः ही कों श्रीगोकुलकों गयो है. यह वचन सुनत ही नन्ददास तो अपने डेरामें आये. जो अपनी वस्तुभाव लै कैं ताही समैं श्रीगोकुलकों चले. सो चलत - चलत सांझके समय जहां वा क्षत्रीकी गाड़ी उतर रही, तहां नन्ददास हू जाय पहोंचे. सो जायकै वा क्षत्रीकी गाड़ीके निकट ही बैठि गये. तब वा क्षत्रीने नन्ददासकों देखिकै कह्यो, जो जा दुख तें हमने अपनो घर छोड्यो, देस छोड्यो, सो दुख तो हमारे सङ्ग ही लग्यो आयो. ता पाछें वा क्षत्रीके मनुष्य वासों लरन लागे, जो तू हमारे सङ्ग काहेकों आवत है ? तब नन्ददास उठिकै दूरि जाय बैठे, और कह्यो, जो हम तुमसों मांगत तो नाहीं कछू, और यह गामहू तुमारो नाहीं, ता पाछें रात्रिकों तो तहां सोय रहे. पाछें प्रातःकाल होत ही वह क्षत्री तो गाड़ीमें बैठिकै तहां तै चल्यो. तब वासों नेक दूरिकै नन्ददास हू चले. सो याही भांति कछूक दिनमें श्रीगोकुलके घाट उपर आये. तब उन क्षत्रीने विचार कियो, जो हम तो या ब्राह्मनके दुःखके मारे गाम छोड़िकै आये. तोहू

वह तो हमारे सङ्ग ही आयो है. तातें ऐसो जतन होई, जो यह हमारे सङ्ग श्रीयमुनाजी उतरिकै श्रीगोकुल न चले तो आछो है. नाहीं (तो) हमारी हांसी श्रीगोकुलमें हू होयगी. और श्रीगुसांईजी यह बात सुनेंगे, तो यह बात आछी नाहीं है. तब उन मलाहनसों कहे (और) घटवारने सों वा क्षत्रीने कह्यो, जो हम तुमकों कछुक द्रव्य देंयगे, परि या ब्राह्मनकों पार मति उतारो. पाछें वह क्षत्री नावमें बैठ्यो, तब नन्ददास हू नाव पर बैठन लागै, तब उन मलाहनने हाथ पकरिकै उतार दियो, नाव पें तें. तब नन्ददास तो श्रीयमुनाजीके तीर ठाड़े - ठाड़े विचार करन लागै. और वह क्षत्री तो नावमें बैठिकै श्रीयमुनाजीके पार भयो. ता पाछें वह क्षत्री श्रीगोकुलमें आयकै, लोंडीकों एक ठौर बैठायकै वाके पास सब वस्तुभाव धरिकै आप तीनों जनें श्रीगसांईजीके दरसनकों आये. सो श्रीनवनीतप्रियजीके राजभोगके दरसन किये. ता पाछें अनोसर करायकै श्रीगुसांईजी अपनी बैठकमें पधारे. तब इन तीनों जनेंनने भेंट धरी, और दण्डवत् कीनी. तब श्रीगुसांईजीने पूछी, जो वैष्णव ! कबके आये हो ? तब इन कही, जो महाराज ! अब ही आये हैं. श्रीनवनीतप्रियजीकै राजभोगकी आरतीकै दरसन आपकी दयातें करे हैं. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो आज तुम प्रसाद इहांई लीजो, अब बैठो. ऐसे आज्ञा दे कै श्रीगुसांईजी आप तो भोजनकों पधारे. ता पाछें आचमन करिकै अपनी जूठनिकी पातरी वा क्षत्रीकों धरी. ‘‘सो चारि पातर श्रीगुसांईजीने उनके आगें धरी. तब वा वैष्णवने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! हम तो तीन ही जनें हैं. और आपने चार पातरि कौनकी धरी हैं. इहां तो और वैष्णव कोई दीसत नाहीं. तब श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो वह तुम्हारे सङ्ग ब्राह्मन आयो है, जाकों तुम पार छोड़ि आये हो, सो वे कौनके घर जायगो ? तब ए बचन श्रीगुसांईजीकै सुनिकै तीनौं जनें लजिजत भये. और कहे, जो जा बात तें देखो हम डरपत हते, जो हमारी हांसी श्रीगोकुलमें न होय तो आछो है, सो यहां तो सब पहले ही प्रसिद्ध होय रही है. ऐसे कहिकै वे तीनौं जनै अत्यन्त सोच करन लागे. सो श्रीगुसांईजी वा क्षत्रीसों कहे, जो तुम सोच काहेकों करत हो. वह तो दैवी जीव है, जो तुम्हारे सङ्ग पाइकै इहां आयो है. सो अब तुमकों दुःख न देइगो. ऐसे वासों कहिकै एक ब्रजवासीकों बुलायकै आज्ञा दीनी जो तू पार जायकै तहां श्रीजमुनाजीकै तीर एक नन्ददास ब्राह्मन बैठ्यो है ताकों बुलाय लाव. तब वह ब्रजवासी तत्काल आइकै नावमें बैठिकै पारकों चल्यो. और नन्ददासकों तो उन मलाहनने नावपैं ते उतारि दिये. सो श्रीजमुनाजीके तीर बैठे - बैठे श्रीजमुनाजीके आगें विज्ञप्तिके पद गावन लागे. सो पद

राग : रामकली

नेह कारन श्रीयमुने प्रथम आई ।
भक्तके चित्तकी वृत्ति सब जानिकै ताही तें अति आतुर जु धाई ।
जाहि जैसी मन हुती कामना ताहि तेसी साध जो पूजाई ।
'नन्ददासनि नाथ' ताहीपै रीझ रहे जोई श्रीयमुनाजीकौ जस जु गाई ।।१।।

भक्त पर करि कृपा श्रीजमनाजू ऐसी ।
छांडि निज धाम विश्राम भूतल कियो प्रगट लीला दिखाई जू तैसी ।
परम परमारथ करत हैं सबनकों देंति रूप अद्भुत आप जैसी ।
'नन्ददास' यों जानि दृढ करि चरन गृहे एक रसना कहा कहों विसेखी ।।२।।

श्रीजमुने श्रीजमुने श्रीजमुने जु गावे ।
सेस सहस्त्र मुख जाही गावत निसदिन पार न पावे ।
सकल सुख देनहारि तातें करहु उच्चार कहत हों बारंबार जिनि भुलावो ।
'नन्ददास' की आस श्रीजमुने पूरन करी, तातें कहों घरी घरी चित्त लावो ।।३।।

सो या भांति नन्ददास तो श्रीजमुनाजीके तीर बैठे - बैठे श्रीजमुनाजीकी स्तुति करत हैं. इतनेमें वह ब्रजवासी जाकों श्रीगुसांईजीने नन्ददासकों लेवे पठायो हतो, सो नाव लै कै पार जाय पहुंच्यो. सो तहां जायकै पूछ्यो, जो नन्ददास ब्राह्मन कहां है ? तब इन कही जो नन्ददास ब्राह्मन तो मैं ही हूं. तब वा ब्रजवासीने नन्ददाससों कह्यो, जो तुमकों श्रीगुसांईजीने बुलाय हैं, और यह नाव पठाई हैं, तामें तुम बेठिकै बेगि चलो. तब तो नन्ददास प्रसन्न होइकै श्रीजुनाजीकों दण्डवत् करिकै श्रीगोकुलकों दण्डवत् करि पाछें नावमें बैठकै पार आये. और आयकै श्रीगुसांईजीके दरसन करिकै साष्टाङ्ग दण्डवत् करी. सो दरसन करत ही नन्ददासकी बुद्धि निरमल होय गई. तब तो

श्रीगुसांईजसों हाथ जोरि बिनती करी, जो महाराज ! मैं जब तें जनम पायो, तब तें विषय करत ही जनम गयो. और आप तो परम कृपालु हो, मेरे उपर करिकै मोकों अपनी सरनि लीजे. सो ऐसे दैन्यताके वचन नन्ददासकै सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भये. तब श्रीगुसांईजी श्रीमुख तें आज्ञा किये, जो नन्ददास ! जाओ, स्नान करिकै अपरस ही में इहां आइयो. तब नन्ददास वैसे ही स्नान करिकै अपरस ही में श्रीगुसांईजीके पास आये. पाछें श्रीगुसांईजीने नन्ददासकों नामनिवेदन (भावात्मक रूपसों) करवायो. तब श्रीगुसांईजीको स्वरूप नन्ददासके हृदयारूढ भयो, ता समें नन्ददासने यह कीर्तन गायो. सो पद

राग : बिलावल

जयति रुक्मनिनाथ पद्मावति प्रानपति विप्रकुल छत्र आनन्दकारी ।
दीप वल्लभवंस जगत निस्तम करन कोटि उडडुराज सम ताप हारी ।
जयति भक्त जनपति पतितपावन करन कामीजन कामना पूरन चारी ।
मुक्ति कांक्षीय जन भक्तिदायक प्रभु सकल सामर्थ्य गुन गनन भारी ।
जयति सकल तीर्थ फलित नाम स्मरन मात्र बास ब्रज नित्य गोकुल बिहारी ।
'नन्ददासनिनाथ' पिता गिरिधर आदि प्रगट अवतार गिरिराजधारी ।।

सो नन्ददासने यह कीर्तन गायो. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत ही प्रसन्न भए. ता पाछें श्रीगुसांईजी नन्ददासकों आज्ञा दीनी, जो तेरी महाप्रसादकी पातरि धरि है, सो जाइकै महाप्रसाद लेवो. सो नन्ददास आइकै महाप्रसादी रसोई घरमें जायकै श्रीगुसांईजीकी जूठनिको प्रसाद लेन लागे. सो लेत ही स्वरूपानन्दकौ अनुभव होन लाग्यो. सो नन्ददास तो देहकौ अनुसन्धान भूलि गये, और जहांके तहां बैठे रहि गये. सो हाथ धोयवेकी सुधि न रही. पाछें जब उत्थापनकौ समय भयो, तब भीतरियाने आइकै श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो महाराजाधिराज ! नन्ददासजी तो महाप्रसाद ले कै उहांई बैठि रहे हैं, उठे नाहीं हैं. तब श्रीगुसांईजीने उन भीतरियासों कह्यो, जो उहां तुम नन्ददास तें कोऊ बोलो मति. ता पाछें चारि प्रहर रात्रि गई तोऊ नन्ददासकों देहकी सुधि न रही. ता पाछें दूसरे दिन प्रातःकाल नन्ददासके पास श्रीगुसांईजी

पधारे. तब श्रीगुसांईजीने नन्ददासके कानमें कह्यो, जो उठो नन्ददास ! दरसनकौ समय भयो हे, तब नन्ददास उठिकै श्रीगुसांईजीकों साष्टाङ्ग दण्डवत् करी. ता समें नन्ददासने यह कीर्तन गायो. सो पद -

राग : बिभास

प्रात समै श्रीवल्लभसुतकौ पून्य पवित्र बिमल जस गाऊं ।
सुन्दर सुभग बदन गिरिधरकौ निरखि निरखि दोउ नयन सिराउं ।
मोहन बचन मधुर श्रीमुखके श्रवनन सुनि - सुनि हृदै बसाऊं ।
तनमनप्रान निवेद यही विधि अपनकों सुफल कराऊं ।
रहों सदा चरननके आगे महाप्रसाद उच्छिष्ट जों पाऊं ।
'नन्ददास' प्रभु यह मांगत हों श्रीवल्लभ कुलकौ दास कहाऊं ।।१।।

प्रात समय श्रीवल्लभ सुतकौ उठत ही रसना लीजे नाम ।
आनन्दकारी प्रभु मङ्गलकारी अशुभ हरन जन पूरन काम ।
यही लोक - परलोकके बंधुको कहि सके तिहारे गुनग्राम ।
'नन्ददास' प्रभु रसिक सिरोमनि राज करो पिय गोकुल सुखधाम ।।२।।

सो सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भये. ता पाछें श्रीगुसांईजी तो मन्दिरमें पधारे और नन्ददास आप देहकृत्य करिवे गये. ता पाछें श्रीनवनीतप्रियजीके दरसनकौ समय भयो. सो नन्ददास श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन करिकै बोहोत प्रसन्न भये. तब नन्ददासने यह पद गायो. सो पद -

राग : बिलावल

बालगोपाल ललनकों मोद भरि जसुमति हुलरावति ।
मुख चूमत देखत सुन्दर तन आनन्द भरि भरि गावति ।
कबहूक पलना मेलि झूलावति कबहू स्तनपान करावति ।
'नन्ददास' प्रभु गिरिधरकों रानी निरखि निरखि सुख पावति ।।१।।

यह कीर्तन नन्ददासने तहां गायो. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भये. तब नन्ददासने श्रीगुसांईजीसों हाथ जोरि साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै कह्यो, जो महाराज ! मोसे पतितको उद्धार करोगे ? सो वे नन्ददास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

और एक समय श्रीगुसांईजी रात्रिकों अपनी बैठकमें बिराजे हुते. तब आप आज्ञा करें, जो काल्हि श्रीनाथजीद्वार अवश्य जानो. तब नन्ददासने बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! जैसे आपु कृपा करिकै श्रीनवनीतप्रियजीकै दरसन करवाये, तैसे श्रीनाथजीकै दरसन करवावो. ता पाछें प्रातः भये श्रीनवनीप्रियजीकै मङ्गलाकै दरसन करिकै, शृङ्गार राजभोग करिकै श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार पधारे, और नन्ददासकों हू सङ्ग लिये. सो उत्थापनके समय श्रीगिरिराज आइ पहोंचे. सो श्रीगुसांईजी तो न्हायकै मन्दिरमें पधारे. समो भयो तब दरसनकौ टेरा खुल्यो. सो नन्ददास श्रीगोवर्द्धननाथजीकै दरसन करिकै बोहोत प्रसन्न भये. ता समैं नन्ददासने यह कीर्तन गायो. सो पद -

राग : नट

सोहत सुरङ्ग दुरङ्ग पाग कुरङ्ग ललना कैसे लोयन लोने ।

कपोल विलोलनमें झलके कल कुण्डल कानन कोने ।
रङ्गरङ्गीलेके अङ्ग सबे नवरङ्ग रङ्गे ऐसे भए न होने ।
'नन्ददास' सखी मेरी कहा चली कामके आये टटावक टोने !

यह कीर्तन नन्ददासने गायो, सो श्रीगुसांईजी मन्दिरमें सुने, पाछें टेरा खेंचि लियो. ता पाछें परमानन्दमें नन्ददासने बैठे - बैठे और हू कीर्तन किये पाछें सन्ध्यार्तिकै दरसन खुले तब नन्ददासने दरसन करिकै यह कीर्तन गायो. सो पद

राग : गोरी
बन तें सखान सङ्ग गायनके पाछें - पाछें आवत मोहनलाल कन्हाई ।
गोरज छुरित अलकन की छबि मोहे यह छबि बरनत बरनी न जाई ।
पीत बसन कटि सोहे किङ्किनी धुनि मोहे तामें फिरत मधुर धुनिमुरली शब्द सुहाई ।
'नन्ददास' प्रभु अञ्चलसों जसुमति वदन पोंछि कर मुख चूम्बति न अघाई ।।१।।
बनतें आवत गावत गोरी ।
हाथ लकुट गायके पाछें ढोटा जसुमति कोरी ।
मुरली अधर धरे नन्दनन्दन मानों लगी ठगोरी ।
याहीतें कुल कान हरी हें ओढ़े पीतपिछोरी ।
अटन चढ़ि देखत रूप निरख भई बोरी ।
'नन्ददास' जिनि हरिमुख निरख्यो तिनकौ भाग बड़ोरी ।।२।।
देखि सखी हरिकौ बदन सरोज ।
प्रफुलित बदनसुधा सरवरमें लुब्धे मधुप मनोज ।

गौरज छुरित पराग रह्यो फबि सुन्दर अधर सुकोस ।
‘नन्ददास’ नासा मुक्ता मानो रहि है एकत्रन ओस ।।३।।
घर नन्द महरिके मिस ही मिस आवे गोकुलकी नारि ।
सुन्दर बदन बिनु देखे कल न परत है भूल्यो धाम - काम आछौ बदन निहारि ।।
दीपक ले चली बारि बाटमें बड़ो करि डारि
फिरि आप छबिसों बयारि कों देत गारि ।
‘नन्ददास’ नन्दलालसों लागे है नैन पलककी ओट मानों बीते जुग चारि ।।४।।

सो या भांतिसों नन्ददासने बोहोत कीर्तन किये. ता पाछें नन्ददास छै मास पर्यन्त सूरदासजीके सङ्ग परासोलीमें रहे. सो श्रीगुसांईजी नन्ददास उपर सदा प्रसन्न रहते. वे नन्ददास ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये.

वार्ता प्रसङ्ग ३ :
और एक समय श्रीमथुराजीकौ एक सङ्ग पूरवकों चल्यो, गया श्राद्ध करिवेकों. ता सङ्ग दस - पांच वैष्णव हू हते. तब तुलसीदासने सुन्यो जो सङ्ग आयो है. तब वा सङ्गमें तुलसीदासने आइकै पूछी, जो एक नन्ददास ब्राह्मन इहां तें गयो है, सो मथुराजीमें सुन्यो है. सो तुमने कहुं देख्यो होय तो कहो. तब एक वैष्णवने कही, जो तुलसीदासजी ! एक नन्ददास तो श्रीगुसांईजीकौ सेवक भयो है. सो वह नन्ददास पहले तो अत्यन्त विषयी हतो, सो अब तो बड़ो कृपापात्र भगवदीय भयो है. तब तुलसीदासजी अपने मनमें बिचारे, जो ऐसो तो वही नन्ददास है, सो श्रीगुसांईजीकौ सेवक भयो है. जो अब तो उनकों मेरी शिक्षा न लगेगी. तब तुलसीदासजीने उन वैष्णवनसों कह्यो, जो मैं तुमकों एक पत्र देउ. ताकौ जुवाब तुम मोकों मंगाय देउगे ? तब उन वैष्णवनने तुलसीदासजीसों कही, जो काल्हि मेरो मनुष्य श्रीगोकुलकों चलेगो. जो तुमकों पत्र देनो होय तो लिखकै बेगि तैयार करियो. तब तुलसीदासजीने ताही समें पत्र लिखिकै तैयार कियो.

तामें लिख्यो. जो तू पतिव्रत धर्म छोड़ि व्यभिचार धर्म लियो, सो आछौ नाहीं कियो. अब तू आवे तो फेरि तोकों पतिव्रत धर्म बताउं. सो यह पत्र तुलसीदासजीने वा वैष्णवके हाथ दियो. सो वह पत्र अपने पत्रनमें धरिकै वा वैष्णवने कासिदके हाथ दियो. सो वह पत्र लेकै श्रीगोकुल आयो. तब कासिदने दण्डवत् करिकै वे पत्र श्रीगुसांईजीकै आगे धरे. तब उन पत्रनमें नन्ददासकै नामको जो पत्र हतो सो निकस्यो. तब श्रीगुसांईजीने वह पत्र बांचिकै नन्ददासकौं बुलायकै दियो. तब नन्ददासने वह पत्र लेकै बांच्यो. पाछें वा पत्रकौ प्रतिउत्तर लिख्यो, जो मेरो तो प्रथम रामचन्द्रजीसों विवाह भयो हतो. सो बीचमें श्रीकृष्ण दौरि आइकै लूटि ले गये. सो रामचन्द्रजीमें जो बल होतो तो मोकों श्रीकृष्ण कैसे ले जाते ? और रामचन्द्रजी तो एक पत्नीव्रत हैं. सो दूसरी पत्नीकों कैसे संभार सकेंगे ? एक पत्नी हू बराबरि संभारि न सकें, सो रावण हरिकै ले गयो. और श्रीकृष्ण तो अनन्त अबलानकै स्वामी हैं, और इनकी पत्नी भये, पाछें कोई प्रकारकौ भय रहे नाहीं हैं. एक कालावच्छिन्न अनन्त पत्नीनकों सुख देत हैं. जासों मैंने श्रीकृष्ण पति कीने हैं. सो जानोगे. सो मैं तो अब तन, मन, धन यह लोक, परलोक श्रीकृष्णकों दीनो है. (और) अब तो मैं परवस होइकै पर्यो हूं. ऐसो नन्ददासने तुलसीदासजीकों पत्र लिख्यो. तामें एक पद यह लिख्यो. सो पद

राग : आसावरी

कृष्ण नाम जब तें श्रवन सुन्योरी आली भूलीरी भवन हों तो बावरी भई री ।।
भरि भरि आवे नैन चित्त न परत चैन मुख हू न आवे बैन तनकी दसा कछुऔर ही भई री ।।
जेतेक नेम धरम ब्रत कीनेरी मैं बहु बिधि अङ्ग अङ्ग भई हों तो श्रवन भइ री ।।
'नन्ददास' जाके श्रवन सुने यह गति माधुरी मूरतिके धों कैसी दई री ।।

यह कीर्तन नन्ददासने पत्रमें लिखिकै वह पत्र कासिदकों दियो. सो वह कासिद कितेक दिननमें आयो. सो वे पत्र सब वैष्णवकों दिये. तब उन वैष्णवने वह नन्ददासकौ पत्र बांचिके तुलसीदासकों बुलायकै दीनो. पाछें तुलसीदासजीने नन्ददासकौ पत्र बांचिकै अपने मनमें जान्यो, जो अब नन्ददास इहां कबहू न आवेगो. ऐसो जानिकै तुलसीदासजी अपने घर आए. सो वे नन्ददासजी श्रीगुसांईजीके ऐसे

कृपापात्र भगवदीय भए, जिनकौ श्रीगुसांईजीके स्वरूपमें ऐसो दृढ भाव हतो.

वार्ता प्रसङ्ग ४ :
और एक समै तुलसीदासजीने विचार कियो, जो नन्ददास श्रीगोकुलमें हैं, सो मैं जाइकै लिवाय लाऊं. यह विचारिकै तुलसीदास कासी तें चले, सो कितेन दिनमें श्रीमथुराजीमें आइ पहोंचे. तब श्रीमथुराजीमें पूछें, जो इहां नन्ददास ब्राह्मन कासी तें आयो है, सो तुम जानत होउ तो बताओ, जो वह कहां होयगो ? तब काहूने कह्यो, जो एक नन्ददास तो आइकै श्रीगुसांईजीकौ सेवक भयो है, सो तो गोकुल होयगो, कै गिरिराज होयगो. तब तुलसीदासजी प्रथम तो श्रीगोकुल आये. सो श्रीगोकुलकी शोभा देखिकै तुलसीदासजीकौ मन बोहोत ही प्रसन्न भयो. पाछें तुलसीदासजी मनमें बिचारे जो ऐसो स्थल छोड़िकै नन्ददास कैसे चलेगो ? तब तुलसीदासजीने तहां पूछ्यो, जो एक - नन्ददास ब्राह्मन ब्राह्मन है, सो कहां होयगो ? तब काहूने कही, जो एक नन्ददास तो श्रीगुसांईजीकौ सेवक भयो है. सो तो श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार गये हैं, सो उहांही होयगो. तब तुलसीदासजी फेर मथुरामें आयकै श्रीजमुनाजीके दरसन करे, पाछें तहां ते श्रीगिरिराजजी गये. सो उहा परासोलीमें तुलसीदासजी नन्ददासजीकों मिले. तब तुलसीदासजीने नन्ददाससों कही, जो तुम हमारे सङ्ग चलो. सो गाम रुचे तो अयोध्यामें रहो, पुरी रुचे तो कासीमें रहो, पर्वत रुचे तो चित्रकूटमें रहो, बन रुचे तो दण्डकारण्यमें रहो. ऐसे बड़े - बड़े धाम श्रीरामचन्द्रजीने पवित्र करे हैं. तब नन्ददासने उत्तर देयवेकों यह पद गायो. सो पद

राग : सारङ्ग

जो गिरि रुचे तो बसो श्रीगोवर्द्धन, गाम रुचे तो बसो नन्दगाम ।।
नगर रुचे तो बसो श्रीमधुपुरी शोभा सागर अति अभिराम ।।१।।
सरिता रुचे तो बसो श्रीयमुनातट, सकल मनोरथ पूरन काम ।।
'नन्ददास' कानन रुचे तो बसो भूमि वृन्दावन धाम ।।२।।

पाछें नन्ददास सूरदासजीसों मिलिकै नाथजीके दरसन करवेकों गये. तब तुलसीदासजी हू उनके पाछें - पाछें गये. जब श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करे तब तुलसीदासजीने माथो नंवायो. नाहीं. तब नन्ददास जानि गये, जो ये श्रीरामचन्द्रजी बिना और दूसरेकों नहीं नमे हैं. तब नन्ददासने मनमें बिचार कीनो, जो यहां और श्रीगोकुलमें इनकों श्रीरामचन्द्रजीके दरसन कराउ. तब ये श्रीकृष्णकौ प्रभाव जानेंगे. पाछें नन्ददासने श्रीगोवर्द्धननाथजीसों बिनती करी. सो दाहा

कहा कहों छबि आजकी, भले बने हो नाथ ।।
तुलसी - मस्तक तब नमे, धनुषबान लेहू हाथ ।।

यह बात सुनिकै श्रीनाथजीकों श्रीगुसांईजीकी का'नि तें बिचार भयो, जो श्रीगुसांईजीके सेवक कहे सो हमकों मान्यो चहिये. पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीने श्रीरामचन्द्रजीकौ रूप धरिकै तुलसीदासजीकों दरसन दिए. तब तुलसीदासजीने श्रीगोवर्द्धननाथजीकों साष्टाङ्ग करी. जब पाछें तुलसीदासजी दरसन करिकै बाहर आये, तब नन्ददास श्रीगोकुल चले. तब तुलसीदासजी हू सङ्ग - सङ्ग आये. तब आयकै नन्ददासने श्रीगुसांईजीके दरसन करि साष्टाङ्ग दण्डवत् करी. और तुलसीदासजीने दण्डवत् करी नाहीं. पाछें नन्ददासकों तुलसीदासनें कही, जो जैसे दरसन तुमने वहां कराये वैसे ही यहां करावो. तब नन्ददासने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, ये मेरे भाई तुलसीदास हैं, सो श्रीरामचन्द्र बिना औरकों नहीं नमे हैं. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो तुलसीदासजी ! बैठो. ता समै श्रीगुसांईजीकै पांचमें पुत्र श्रीरघुनाथजी वहां ठाड़े हुते और उन दिननमें श्रीरघुनाथजीकौ विवाह भयो हुतो. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो श्रीरामचन्द्रजी ! तुम्हारे सेवक आये हैं, इनकों दरसन देहु. तब श्रीरघुनाथलालजीने तथा श्रीजानकी बहूजीने श्रीरामचन्द्रकौ तथा श्रीजानकीजीकौ स्वरूप धरिकै दरसन दिये. तब तुलसीदासजीने साष्टाङ्ग दण्डवत् करी. पाछें तुलसीदासजी दरसन करिकै बोहोत प्रसन्न भये. और यह पद गायो. सो पद

राग : सारङ्ग
बरनौं अवध श्रीगोकुल गाम ।

उत बिराजत जानकीवर इतहि स्यामा - स्याम ।।
उहां सरजू बहत अद्‌भूत इहां श्रीजमुना नीर ।।
हरत कलिमलि दोउ मूरत सकल जनकी पीर ।।
मनि जटित सिर क्रीट राजत सङ्ग लक्ष्मन बाल ।
मोर मुकुट रु बैन कर इहां निकट हलधर ग्वाल ।
उहां केवट सखा तारे बिहंसिकै रघुनाथ ।
इहां नृप जदुनाथ तारयौ कूप गहि निज हाथ ।
उहां सिबरी स्वर्ग दीनो सील - सागर राम ।
इहां कुब्जा ल्याय चन्दन किये पूरन काम ।
भक्त हित श्रीराम कृष्ण सु धर्यो नर अवतार ।
दास 'तुलसी' दोउ आसा कोउ उबारो पार ।

ता पाछें तुलसीदासजीने श्रीगुसांईजीसों दण्डवत् करिकै कह्यो, जो महाराज ! नन्ददास तो पहले बड़ो विषयी हतो, सो अब तो याकों बड़ी अनन्य भक्तिभई है, ताकौ कारन कहा है ? तब श्रीगुसांईजीने तुलसीदासजीकों कह्यो, जो नन्ददास उत्तम पात्र हुते, यातें पुष्टिमार्गमें आयकै प्रवृत्त भये. और अब व्यसन अवस्था याकों सिद्ध भई है. सो अब वे द्दढ़ भये हैं. तब श्रीगुसांईजीके श्रीमुखके वचन सुनिकै तुलसीदासजी प्रसन्न होय श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिकै पाछें आप बिदा होय कासी आये. सो वे नन्ददासजी श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते. जिनके कहेतें श्रीगोवर्द्धननाथजीकों तथा श्रीरघुनाथलालजीकों श्रीरामचन्द्रजीकौ स्वरूप धरिकै दरसन देने पड़े.

वार्ता प्रसङ्ग ५ :
सो एक दिन नन्ददासके मनमें ऐसी आई, जो जैसे तुलसीदासजीने 'रामायण' भाषा किये है. तैसे हमहू श्रीमद्‌भागवत भाषा करें. पछें

नन्ददासने ‘श्रीमद्‌भागवत दशम’ भाषा सम्पूरन कियो. तब मथुराके सब पण्डित मिलिकै श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! हम श्रीभागवतकी कथा कहिकै निरवाह करत हते. सो तुम्हारे सेवक नन्ददासजीने भाषामें श्रीभागवत कही है. सो अब हमारी कथा कोई न सुनेगो, तातें अब हमारी जीविका तो गई सो अब आपके हाथ उपाय है. तब श्रीगुसांईजीने नन्ददासकों बुलायकै कह्यो, जो नन्ददास ! तुमने जो श्रीमद्‌भागवत भाषामें कीनो है, सो इन ब्राह्मनकी जीविकामें हानि होत है. तासों तुम ब्रजलीला तो पञ्चाध्याई तांईकी राखो, और श्रीजमुनाजीमें पधराय देउ. सो नन्ददासने श्रीगुसांईजीकी आज्ञा प्रमान मानिकै ब्रजलीला तांई (भागवत) राखी, और सब श्रीजमुनाजीमें पधराय दीनो. सो वे नन्ददासजी श्रीगुसांईजीके ऐसे आज्ञाकारी और बड़े कृपापात्र हते.

वार्ता प्रसङ्ग ६ :

और एक समैं अकबर बादशाह और बीरबल श्रीमथुराजी आये. सो बीरबल श्रीगुसांईजीके दरसनकों आयो. सो श्रीनाथजीद्वार श्रीगुसांईजी पधारे हते और श्रीगिरिधरजी घर हते. सो बीरबल श्रीगिरिधरजीके दरसन करिकै अकबर पात्साहके पास आये. तब पात्साहने पूछी, जो बीरबल ! तू कहां गयो हतो ? तब बीरबलने कह्यो, जो दीक्षितजीके दरसनकों श्रीगोकुल गयो हतो. सो श्रीगुसांईजी तो श्रीनाथजीके दरसनकों श्रीगोवर्द्धन पधारे हैं, और उनके पुत्र श्रीगिरिधरजी घर हैं, सो उनके दरसन करकै आयो हूं. तब पात्साहने बीरबलसों कह्यो, जो दिन दो में हमहू श्रीगोवर्द्धन चलेंगे वहां सों तुम जाइकै दीक्षितजीके दरसन करि आइयो. ता पाछें दिन दोयमें अकबर पात्साहके डेरा गोवर्द्धन मानसी गङ्गा पर भये. तब बीरबल श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों गोपालपुर आयो. सो दरसन करिकै श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिकै ता पाछें अपने डेरा आयो. पाछें नन्ददासने सुनी, जो अकबर पात्साहके डेरा गोवर्द्धनमें मानसी गङ्गापै भये हैं.

सो अकबर पात्साहके एक लोंडी हती. सो वह श्रीगुसांईजीकी सेवक हुती. ताके उपर श्रीगोवर्द्धननाथजी बड़ी कृपा करते, वाकों दरसन देते. वा लोंडीसों नन्ददाससों बड़ी प्रीति हती सो नन्ददास वा लोंडीसों मिलिवेकों मानसी गङ्गापै आये. सो तहां वा लोंडीकों ढूंढन लागे. सो वह लोंडी एक एकान्त ठौरमें बिलछूपै वृक्षनकी लतानकी तरें रसोई करत हती. सो रसोई करिकै भोग धर्यो हो. तहां श्रीगोवर्द्धननाथजी आपु पधारे हुते. सो नन्ददास ता समैं श्रीगोवर्द्धननाथजीकों देखे. सो दरसन करिकै नन्ददास बोहोत ही प्रसन्न भये. और कह्यो, जो याके

बड़े भाग्य है. ता पाछें नन्ददास एक वृक्षकी ओटमैं ठाड़े रहिकै यह कीर्तन गायो. सो पद -

राग : टोडी
चित्र सराहत चितवत दुरि मुरि गोप बहोत सयानी ।
एकटक में झूकि बदन निहारति पलक न मारति
अलक समारति जानि गई नन्दरानी ।
परि गये परदा ललित तिवारी कञ्चन थार जब आनी ।
'नन्ददास प्रभु' भोजन घरमें उर पर कर धर्यो
सेन दई तब उह उततें मुसिकानी ।

यह कीर्तन तहां नन्ददासने गायो. तब जाने, जो इहां नन्ददास आये हैं. तब वा लोंडीने चारों ओर देख्यो. तब देखे तो एक वृक्षकी ओटमें नन्ददास ठाड़े हैं. तब वा लोंडीने नन्ददासकों कह्यो, जो तुम ऐसे छिपके क्यों ठाड़े हो ? मेरे पास क्यों नाहीं आवत हो ? तब नन्ददासने कही, जो राजभोगकौ समो हतो श्रीगोवर्द्धननाथजी अरोगवे पधारे हते. तातें हों इहां ठाड़ो होय रह्यो. ता पाछें भोग सरायकै अनोसर करायकै कह्यो, जो मैं तुम तें कही नाहीं सकत हो, परि श्रीनाथजीकौ महाप्रसाद है, तामें हू दूधकी सामग्री है. तातै तुम्हारो मन प्रसन्न होय सो लेउ. काहेतें, जो तुम ब्राह्मन हो. तब नन्ददासने कह्यो, जो अब तो मैं रञ्चक - रञ्चक सब सामग्री लेउंगो. तब उन दोउ जनैनने प्रसन्नतासों महाप्रसाद लियो. ता पाछें आचमन करिकै बैठे. तब वा लोंडींने नन्ददाससों कह्यो, जो अब इहां तें कहू न जानो होय तो आछो है. यहां जो मानसीगङ्गा है. यह श्रीगिरिराज प्रभुनकी कृपातें स्थल प्राप्त भयो है. तातें अब में काहू देसमें न जाउं तो आछौ है, और अब सदा तुम्हारो सङ्ग होय तो आछो. तब नन्ददासने लोंडीसों कह्यो, जो प्रभु ऐसे ही करेंगे. ता पाछें लोंडीने कह्यो, जो अब इन आंखनिसों लौकिककौ देखनो उचित नाहीं है. पाछें नन्ददास रात्रिकों अपने स्थान मानसी गङ्गापै जाय रहे. और प्रातःकाल श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों आये, सो श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. ता पाछें अकबर पात्साहके आगे तानसेन रात्रिकों गायवेकों

आये. सो तहां नन्ददासकौ कियो पद तानसेनने गायो.सो पद -

राग : केदारो

देखो री देखो नागर नट निर्तत कालिन्दी तट गोपिनके मध्य राजे मुकुटकी लटक ।
काछिनी किङ्किनी कटि पीताम्बरकी चटक कुण्डल किरन मानो रवि रथकी अटक ।
तत थेई ताता थेई सब्द उघटत उतर तिरप गति लेत मान पगकी पटक ।
रासमें श्रीराधे राधे मुरलीमें एही रट 'नन्ददास' गावे तहां निपट निकट ।।

यह नन्ददासकौ कियो पद सुनिकै अकबर पात्साहने तानसेनसों पूछी, जो जिनने यह पद बनायो है, वह कहां है ? तब बीरबलने अकबर पात्साहसों कह्यो, जो साहब ! वे तो यहां ही हैं, श्रीनाथजीद्वारमें रहत हैं. बड़े कवि ओर भगवदीय हैं. तब देसाधिपतिने बीरबलसों कह्यो, जो याही समैं उनकों इहां बुलावो. तब बीरबलने पात्साहसों कह्यो, जो साहब, वे या भांतिसों तो यहां न आवेगें. मैं काल्हि उहां जायकै लिवाइ लाऊंगो. ता पाछें दूसरे दिन बीरबल गोपालपुर आयो. तब श्रीगुसांईजीके दरसन किये. ता पाछें नन्ददाससों बीरबलने कह्यो, जो नन्ददासजी ! तुमकों अकबर पात्साहने बुलाये हैं. तब नन्ददासने बीरबलसों कह्यो, जो मोकों अकबर पात्साहसों कहा प्रयोजन है ? मोकों कछु द्रव्यकी चाहना नाहीं. जो मैं जाऊं. और मेरे कछु द्रव्य नाहीं. जो अकबर पात्साह लेइगो. तातें हमारो कहा काम हैं. तब बीरबलने कह्यो, जो तुम न चलोगे तो अकबर पात्साह ही तुम्हारे पास आवेगो. तब नन्ददासने कही, जो तुम इहां वाकों मति लावो. इहां भीड़कौ काम नाहीं है. तातें मैं सेन आरती पाछें श्रीगुसांईजीसों दण्डवत् करिकै बिदा होयकै मानसीगङ्गा आउंगो. पाछें नन्ददास सेन आरतीके दरसन करि, श्रीगुसांईजीसों दण्डवत् करिकै बिदा होयकै मानसी गङ्गा आये. सो तहां अकबर पात्साह और बीरबल दोउ जनें बैठे हते. सो नन्ददासकों देखिकै पात्साहने सन्मान करिकै बैठाये. ता पाछें अकबर पात्साहने नन्ददाससों कह्यो, जो तुमने रासकौ पद बनायो है, तामें तुमने कह्यो है, जो ''नन्ददास गावे तहां निपट निकट' सो इतनो झूठ क्यों बोलत हो ? जो तुम कहो, जो कौन भांतिसों निकट आये ? तब नन्ददासने पात्साहसों कह्यो, जो मेरे कहेकौ तुमकों विश्वास न होयगो. सो तुम्हारे घरमें फलानी (रूपमञ्जरी) लोंडी है तासों तुम

पूछि लेउ, वो जानत हैं. तब अकबर पात्साहने बीरबलकों तो नन्ददासके पास बैठाये, और आप अपने डेरामें जायकै वा लोंडीसों पूछी, जो यह रासकौ पद नन्ददासने गायो है, सो ताकौ अभिप्राय कहा है ? तब यह वचन पात्साहके सुनिकै वह लोंडी पछाड़ खायकै गिरि परी, सो देह छूटि गई. सो वह लीलामें जायकै प्राप्त भई. तब देशाधिपति नन्ददासके पास दौरे आये. सो इहां आयकै देखे तो नन्ददासकी हू देह छूटि गई है. सो एउ लीलामें जायकै प्राप्त भये. तब अकबर पात्साहकों बड़ो आश्चर्य भयो. तब वाने बीरबलसों पूछी, जो इन दोउनकी देह क्यों छूटि गई ? तब बीरबलने पात्साहसों कह्यो, जो साहिब इन (नें) अपनो धर्म राख्यो. काहेतें, यह बात बतायवेमें न आवे, कहिवेमें न आवे. तासों या बातकौ तो यही उपाय है. ता पाछें अकबर पात्साह अपने डेरानमें आयो. ता पाछें यह बात वैष्णवनने सुनी. सो आयकै यह समाचार सब श्रीगुसांईजीसों कहे, जो महाराज ! नन्ददासजीने मानसीगङ्गापै या रीतिसों देह छोड़ी. तब श्रीगुसांईजीने बोहोत ही सराहना करी. जो वैष्णवकों ऐसे ही अपनो धर्म (गुप्त) राख्यो चहिये. जो औरके आगे कहनो नाहीं. सो वह नन्ददासजी और वह लोंडी ऐसे भगवदीय हते. सो दोउ जनेननें अपनो धर्म गोप्य राख्यो.

सो नन्ददासजी श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते, जिनके उपर श्रीगुसांईजी सदा प्रसन्न रहते. और अपने स्वरूपानन्दकौ वैभव दिखायो. तातें उनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२४१।।

२४२-सगुनदास

अब श्रीगुसांईजीके सेवक सगुनदास विरक्त, पूर्वके ब्राह्मन हते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये लीलामें श्रीचन्द्रावलीजीकी प्रिय सखी हैं. ‘चम्पा’ इनकौ नाम है. ये ‘चम्पकलता’ तें प्रगटी हैं, तातें उनके राजस भावरूप हैं.

ये सगुनदास पूर्वमै बंगालेमें एक ब्राह्मनके जन्मे. सो वे बड़े भए बरस तीसके तब वृन्दावनमें आए. तहां रूपसनातनके सेवक भए. पाछें उहांई रहे. देसकों गये नाहीं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वे सगुनदास प्रथम रूपसनातनके सेवक भये हते. सो एक समय रूपसनातनके साथ सगुनदास श्रीगोकुल आए. सो सगुनदासने श्रीगुसांईजीके दरसन किए. सो इनकों अलौकिक स्वरूपके दरसन भये. तब सगुनदासने अपने मनमें विचार कियो, जो भाई ! स्वामी, पण्डित, ब्राह्मन तो बोहोत ही देखे होइंगे परि ऐसें तेजस्वी पुरुष तो कबहू देखे नाहीं. तब श्रीगुसांईजी आप कीर्तन करत हते. तब सगुनदास तहां जाय बैठे. तब सगुनदासने कीर्तन सुने. सो सुनिकै बोहोत प्रसन्न भये. तब सगुनदासने अपने मनमें विचार कियो, जो ये कीर्तन हू श्रीभागवतके अनुसन्धानसों मार्गकी रीतिसों गावत हैं. सो ऐसे कीर्तन और कहूं नहीं सुने. सो ऐसें सगुनदासने अपने मनमें विचार कियो. पाछें सगुनदासके मनमें ऐसी आई, जो इहां ते और ठौर कहूं नहीं जाइये. और कीर्तन सुनिवोई करिये. ता पाछें सब वैष्णव अपने - अपने डेराकों आए. तब सगुनदास हू अपने डेराकों आए. तब अपने साथके लोगनसों कह्यो जो भाई ! हों तो सवारे श्रीगुसांईजीकौ सेवक होउंगो. जो इनकौ मार्ग सत्य है. सो सर्वोपरि दीसत है. ता पाछें दूसरे दिन सगुनदास स्नान करिकै श्रीगुसांईजीके दरसन करिवेकों आए. सो ता समय और हू पांच - सात वैष्णव बैठे हते. सो सगुनदासकौ आगें उन ही सों मिलाप भयो हतो. सो उनहीके साथ चले गये. पाछें सगुनदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! हमकों कृपा करिकै नाम दीजिये. जो हों अब राजकी सरनि आयो हूं. तब सगुनदासकों श्रीगुसांईजीने नाम दियो. पाछें मार्गकी सब रीति सीखे. तब सगुनदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मोकों कृपा करिकै निवेदन करवाइये. तब श्रीगुसांईजी आज्ञा दिए, जो सगुनदासजी ! काल्हि तुमकों निवेदन करवावेंगे. आज तुम उपवास करो. तब सगुनदासने एक व्रत कियो. ता पाछें सगुनदास प्रातःकाल उठिकै देहकृत्य करिकै दन्तधावन करि स्नान करि बिनती करी, जो महाराजाधिराज ! मोकों निवेदन करवाइए. तब श्रीगुसांईजीने श्रीनवनीतप्रियजीके सन्निधान निवेदन करवायो. तब सगुनदासने यथासक्ति भेट धरी. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप भोजनकों पधारे. तब सगुनदासकों श्रीमुख तें आज्ञा करी, जो सगुनदास ! तुम आज महाप्रसाद यहांई लीजियो. तब श्रीगुसांईजी भोजन करि मुख शुद्धार्थ आचमन करि बीरा अरोगिकै अपनी जूठनिकी पातरि

सगुनदासकों धरी. तब सगुनदासने महाप्रसाद लियो. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप पोढें. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप नित्य कथा कहते. सो सगुनदास नित्य कथा सुनिवेकों आवते. सो श्रीगुसांईजीके श्रीमुखके वचन सुनिकै अपने हृदयमें ल्यावत भए. सो तब सब सिद्धान्त सगुनदासके हृदयमें स्फुर्द भयो. सो कीर्तन करन लागे. जो श्रीगुसांईजीके, श्रीआचार्यजी महाप्रभुनके तथा श्रीनाथजीके कीर्तन बोहोत किये.

पाछें जब श्रीगुसांईजीकौ जन्मदिवस आयो तब यह कीर्तन बधाईकौ करिकै गायो. सो पद

राग : बिलावल

श्रीवल्लभगृह मङ्गल चार ।
पूरन पुरुषोत्तम प्रगटे हैं श्रीविटठल अवतार ।
आवहु जीवनि करहू बधाई ब्रजलीला विस्तार ।
पञ्च सब्द मिलि बाजें बाजत प्रगटे नन्ददुवार ।
आङ्गन मोतिन चौक पूराए भयो जस जैजैकार ।
'सगुनदास' प्रभु गोकुल जीवनि सदासर्वदा करत विहार ।

सो ऐसें पद सगुनदासने बोहोत ही गाए. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी सगुनदासके उपर बोहोत प्रसन्न भए. सो वे सगुनदास विरक्त हते. सो वे ब्रजमें फिर्यो करते. जो एकान्त स्थलमें बैठि कीर्तन करते. और कोई समय श्रीठाकुरजी आप उनकों दरसन देते. सो ऐसी कृपा सगुनदासके उपर करते. सो ऐसे करत श्रीमहाप्रभुजीकौ उत्सव आयो. सो ता दिन श्रीगुसांईजी आगें यह बधाई गाई

राग : बिलावल

प्रगट भए तैलंग कुल दीप ।

श्रीलछ्मन भट अति आनन्दित सुतमुख निरखत आय समीप ।
माय(त) इल्लम्मा कूखि प्रगट भयो, ज्यों उपज्यो मुक्ताफल सीप ।
'सगुनदास' गुन कहत न आवे गुन गावत नवखण्ड सप्तद्वीप ।।१।।

आए देव विमानि चढ़ि चढ़ि ।
महामहोच्छव दरसन कारन एक एक तें आगें बढ़ि बढ़ि ।
बिनु गिरिधर इन सम कोऊ नाहीं कहो कोऊ बातन गढ़ि गढ़ि ।
'सगुनदास' प्रभु सदा बिराजो देत असीस मुनि मन्त्रन पढ़ि पढ़ि ।२।

श्रीलक्ष्मनगृह आई नवनिधि ।
प्रगटे जानि पूरन पुरुषोत्तम द्वार बुहारत फिरत अष्ट सिद्धि ।
बजत निसान भेरी सहनाई देखियत तहां सकल रिद्धि ।
'सगुनदास' गुन कहत न आवे गुन गावत सिव विधि ।।३।।

द्वारें आय गुनीजन ठाढ़े ।
प्रगटे पुरुषोत्तम श्रीवल्लभ सब दिन आनन्द मङ्गल बाढ़े ।
श्रीलछ्मन भट दान देनकों पट भूखन मनि मानिक काढ़े ।
'सगुनदास' आस सब पूजी मान हू बरखत इन्द्र अषाढ़े ।।४।।

नांतर लीला होती जूनी।

जो पै श्रीवल्लभ प्रगट न होते तो वसुधा रहेती सूनी ।
दिन दिन नव छबि यों राजत हैं ज्यों कञ्चनमें चुनी ।
'सगुनदास' या घरकौ सेवक जस गावत जाकौ वेद मुनी ।।५।।

सो ऐसे पद सगुनदासने बोहोत गाए. सो इनके कीर्तन सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए. सो वे सगुनदास श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी, श्रीगोवर्द्धननाथजीकों एक करि जानते.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो श्रीआचार्यजी, श्रीगुसांईजी और श्रीगोवर्द्धननाथजी में वैष्णवनकों भेद बुद्धि न राखनी.

सो वे सगुनदास विरक्त श्रीगुसांईजीके ऐसें कृपापात्र भगवदीय हते, तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२४२।।

२४३-धोंधी

अब श्रीगुसांईजीकौ सेवक एक धोंधी, जाने पद गायो और श्रीनवनीतप्रियजीने ताल दीनी, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये तामस भक्त हैं. लीलामें इनकौ नाम 'धरा' है. ये 'चम्पकलता' तें प्रगटे हैं, तातें उनके भावरूप है.

ये आगरा दिल्लीके बीच एक गांव हैं, तहां एक बड़ी जातिवारेके जन्म्यो सो बरस दसकौ भयो. तब इनकों एक गवैयाको सङ्ग भयो. सो धोंधीकौ

कण्ठ सुन्दर हतो. तातें वा गवैयाने वाकों अपने पास राख्यो. सो धोंधी कछूक दिनमें गायवे बजायवे लग्यो. सो यह बहोत सुन्दर गावे. और मृदङ्ग हू आछी बजावे. ऐसे करत ये बरस तीसकौ भयो. तब इनके मा - बाप मरे. पाछें ये आगरा आय रह्यो. सो उहां गायके अपनो निर्वाह करे.

सो एक दिन उह महावनमें इनकी जातिके बोहोत रहत हुते, तहां कछू कार्यार्थ आयो. पाछें उहां कछूक दिन रहिकै श्रीगोकुल आयो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो या धोंधीकी बड़ी जाति हती. सो यह श्रीगोकुल आयो. तहां ठकुरानी घाटपे इनकों श्रीगुसांईजीके दरसन भए. सो महा अलौकिक दरसन भए. तब याने अपने मनमें विचार्यो, जो हों तो श्रीगुसांईजीकौ सेवक होउंगो. तब श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मोकों कृपा करिकै सरनि लीजिए. तब श्रीगुसांईजी धोंधीकों सरनि लिये. नाम सुनाये. सो नाम सुनत ही धोंधीकों सगरी लीला स्फुर्त भई. तब धोंधीने श्रीगुसांईजीसों बिनती करिकै यह पद गायो, सो पद

राग : सारङ्ग
दुपहरी झनक भई तामें आये पिय मेरे मैं उठि कीनो आदर, दुपहरी झनक. ।
आंको भरि ले गई तनकी तपत सब ठौर - ठौर बूंदन चमक ।
रोम - रोम सुख सन्तोष भयो गयो अनङ्ग तन तें न रह्यो तनक ।
मोहि मिल्यो अब चतुर 'धोंधीकौ प्रभु' मिट गई बिरहकी खनक ।।

सो यह पद सुनिकै श्रीगुसांईजी आप बोहोत प्रसन्न भए. जानें, जो इनकों लीलाकौ अभ्यास भयो. पाछें श्रीगुसांईजी आप धोंधीकों आज्ञा दिए, जो तुम नित्य श्रीनवनीतप्रियजीके सन्निधान कीर्तन गायो करो. तब तें धोंधी श्रीनवनीतप्रियजीके सन्निधान नित्य कीर्तन गावते.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
पाछें एक समय श्रीगुसांईजी आप श्रीनाथजीद्वार हते. तब धोंधीने श्रीनवनीतप्रियजीके सन्निधान एक पद गायो. सो सुनिकै श्रीनवनीतप्रियजी बोहोत प्रसन्न होंई ताल दिये. सो ता समै श्रीगिरधरजी उहां ठाढ़े हते. सो श्रीगिरिधरजीके श्रीहस्तमें सोनेके कड़े हते. सो ताही छिनु उतारि श्रीनवनीतप्रियजीकी न्योछावरि करि धोंधीकों पहराए.

पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीनाथजीद्वार तें पधारे. तब यह बात सुने. तब आप श्रीगिरिदरजी उपर बोहोत प्रसन्न भए. और कहे, और हू देते.

भावप्रकाश :
काहेतें, जो श्रीनवनीतप्रियजी प्रसन्न भए तब और कहा चहिए ? सर्वस्व न्योछावरि करि दे तऊ थोरो है. या प्रकार श्रीगुसांईजीकौ श्रीनवनीतप्रियजीपै स्नेह हतो.

सो उह धोंधी श्रीगुसांईजीकौ सेवक ऐसो कृपापात्र भगवदीय भयो. सो उनने बोहोत पद किये हैं, लीलाके. श्रीगुसांईजीकी कृपातें उनकों श्रीठाकुरजी अनुभव जनावते. सो वा धोंधीकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२४३।।

२४४-छीतस्वामी

अब श्रीगुसांईजीके सेवक छीतस्वामी मथुरिया चौबे, अष्टछापमें जिनके पद गाइयत है, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये छीतस्वामी लीलामें श्रीठाकुरजीके ‘सुबल’ सखा, तिनकौ प्रागट्य है. सो दिवसकी लीलामें तो ये ‘सुबल’ सखा है, और रात्रिकी लीलामें ‘पद्मा’ है. सो

पद्माकी श्रीचन्द्रावलीजी उपर बोहोत आसक्ति है, सो इहां हू छीतस्वामीकौ श्रीगुसांईजीपै बोहोत ही भरभाव है. ये ‘चन्द्रभागा’ तें प्रगटी है, तातें उनके तामस भावरूप है.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वे छीतस्वामी मथुरिया चौबे हते. तिनसों सब कोउ ‘छीतू’ कहते. सो सब मथुरामें पांच चौबे सिरनाम हते. सो पांचनहू में छीतू बड़े सिरनाम हे. सो वे स्त्रिनकों देखते, उनकी मसखरी करते. सो एक दिन पांचो चौबेननें मिलिकै विचार कियो, जो भाई ! गोकुलके गुसांई टोंना बोहोत करत हैं. जो कोउ उनके पास जात है, सो उनके बस होय जात हैं. सो चलो, जो उनकों देखिये, जो वे कैसे टोंना करत हैं ? सो ये पांचो आपुसमें मित्र हते, परि वे गुंडा हते. तब उन पांचोंनने मिलिकै एक खोटो रुपैया लियो, और एक थोथो नारियल लियो, तामें राख भरी. और यह विचार कियो, जो भाई ! गोकुल जायकै श्रीगुसांईजीसों आपुन कुटिल विद्या करिये. तब उन चारोंनसों छीतूने कही, जो सगरेनके पहिले मैं जायके अपनी कुटिल विद्या करि आऊं. ता पाछें तुम जइयो. तब उन चौबेनने कही, जो आछी बात है. तब छीतूने कुटिल विद्याकौ ठाठ ठठ्यो. सो वा थोथे नारियलकों गांठिमें बांधिकै और वह खोटो रुपैया लेके पांचो जने मथुरातें चले, सो नावमें बैठिकै श्रीगोकुलमें आये. तब छीतस्वामी कहे, जो तुम तो सब बाहिर रहो, बैठो. और मैं भीतर जात हों, सो जायके उनके टोना टमना देखों, पाछें तुम भीतर आइयो. सो छीतू तो थोथो नारियल लेके अरु खोटो रुपैया लेकै भीतर गये और साथके चोबे बाहिर रहे. सो उत्थापनके समै पहिले श्रीगुसांईजी पोंढ़िकै उठे हते, सो गादी उपर बिराजे हते, हाथमें पुस्तक हतो, सो देखत हते. सो ता समै छीतस्वामी आये. सो श्रीगुसांईजीकों देखे तो श्रीगिरधारीजी होयकै बैठे हैं. तब तो ये मनमें पश्चाताप करन लागे. (क्यों, जो) मैं तो इनसों मसखरी करन आयो हो. सो ए साक्षात् पूरन पुरुषोत्तम हैं. मोकों धिक्कार है, जो मैं ईश्वरसों कुटिल विद्या करन आयो. या भांतिसों सोच करत रहे. ता पाछें छीतस्वामी वह नारियल लाये हते सो दुबकायकै श्रीगुसांईजीसों दण्डवत् करी. सो इतने छीतस्वामीसों श्रीगुसांईजी बोले छीतस्वामी ! तुम नीके हो ? आवो, तुम तो बोहोत दिननमें दीखे हो. तब छीतस्वामीने हाथ जोड़िकै बिनती कीनी, जो महाराज ! हम आपके हैं. ऐसे कहिकै साष्टाङ्ग दण्डवत् करी. और श्रीगुसांईजीसों फेरि बिनती कीनी, जो महाराज ! मोकों आपनी सरनि लीजे, अब तो आप मेरो अङ्गीकार करोगे. तब श्रीगुसांईजीने छीतस्वामीसों कह्यो, जो तुम तो चौबे हो, हमारे पूजनीक हो ! तुमकों तो

सब आपही तें सिद्ध है. तुम हमकों दण्डवत् काहेकों करत हो ? और ऐसे कहा कहत हो ? तब छीतस्वामी फेरि हाथ जोरिके बिनती करी, जो महाराज ! मेरो अपराध क्षमा करो. और मोकों सरनि लीजे. हम नाहीं जानत जो कौन अपराध तें स्वामी भये हैं. हमारे भाग्य खुले हैं, जो आपके दरसन पाये. अब ऐसी कृपा करो, जो स्वामित्व छूटे ! जो आपके कहायवेकी इच्छा है. और मनकी कुटिलता तो बहोत हुती, परि आपके दरसन करत ही सब कुटिलता दूरि भाजि गई. तातें अब हों आपके हाथ बिकानो हों, तातें अब तो आप जो चाहो सोई करो. आप तो दाता हो, प्रभु हो, दीनानाथ हो, दयासिन्धु हो. या जीवकी ओर प्रभुनकों कहा देखनो ? तातें महाराज ! अब मोकों आपकौ ही करि जानिये, आपुनो सेवक करिये. तब छीतस्वामीकौ शुद्ध भाव जानिकै श्रीगुसांईजी तो परम दयालु है, सो आप कृपा करिकै कहे, जो छीतस्वामी ! आगे आवो. तब ये दण्डवत् करिकै आगे आय बैठे. ताही समै श्रीगुसांईजीने छीतस्वामीकों नाम सुनायो. ता समै छीतस्वामीने यह पद गायो

राग : नट
'भई अब गिरधरसों पहिचान ।
कपटरूप धरि छलिवे आयो, पुरुषोत्तम नहिं जान ।
छोडो बड़ो कछू नहिं जान्यो, छाय रह्यो अज्ञान ।
'छीतस्वामी' देखत अपनायो, श्रीविटठल कृपानिधान ।।

तब तो और वे चारों जने, जो बाहिर ठाड़े हते, वे आपुसमें विचार करन लागे, जो भाई ! छीतूकों तो टोना लग्यो, जो अब आपुन रहेंगे तो आपुन हू कों टोना लगेगो, तातें अब इहां ते भाजो. सो वे चारों जनें उहां तें भाजे सो मथुराजीमें आये. ता पाछें श्रीगुसांईजीने छीतस्वामीसों कह्यो, जो तुम हमारी भेट लाये हो सो लावो. तब छीतस्वामी अपने मनमें विचारे, जो नारियल रुपैया तो खोटे हैं, सो भेट कैसे धरों ? पाछें विचारे, जो भण्डारमें पर्यो रहेगो कहा मालुम होयगो, जो कहां ते आयो है ? और फेरि आपु कहे श्रीमुख तें, जो छीतस्वामी ! भेटकौ नारियल लाये हो, सो तुम काहेकों दुबकाये हो ? तब तो छीतस्वामीकौ मुख सुकाय गयो, और यह विचार्यो, जो

यह तो प्रभु है. मैं नारियल लायो, सो जानि गये तो नारियलकी क्रिया क्यों न जाने होइंगे ? तब श्रीगुसांईजीसों छीतस्वामीनें बिनती करी, जो महाराज ! आप तो सब मेरो कृत्य जानत हो ! सो वह बात तो मेरी अब छानी राखो. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो छीतस्वामी ! तुमारो जस तो जगतमें विख्यात है. तुम कछू अपने मनमें सन्देह मति करो, तुम तो अब हमारे हो. तातें डरपत क्यों हो ? वह नारियल ले आवो. तब छीतस्वामी तो सोच करत रहे. और श्रीगुसांईजीने हरिदास खवाससों आज्ञा करी, जो हरिदास ! इनकी गांठिमें सों वह नारियल है सो खोलि लाऊ. सो श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मानिकै हरिदासने वह नारियल और खोटो रुपैया छीतस्वामीकी गांठिमें ते लेकै श्रीगुसांईजीके आगें धर्यो. ता पाछें श्रीगुसांईजीने हरिदास खवाससों कह्यो, जो आधो नारियल तो इन छीतस्वामीकों देउ. तब हरिदास खवासने वा नारियलकी गरीकी दोय फाड़ करी, सो एक फाड़ तो छीतस्वामीकों दीनी, और एक फाड़में से रञ्चक - रञ्चक सबनकों बांट दीनी. इतनेमें श्रीगुसांईजीने छीतस्वामीकों आज्ञा दीनी, जो छीतस्वामी ! तुमहारे साथके जो चारों जने हैं तिनकों यामें थोरी - थोरी बांटि दीजो. तब छीतस्वामीने दण्डवत् करिकै वह गठरीमें बांधि राखी. सो ऐसी कृपा श्रीगुसांईजीकी देखिकै छीतस्वामी मनमें विचारे जो मैं संसार समुद्रमें बह्यो जात हतो, सो मोकों बांह पकरिकै काढ़े. और मेरे मनमें खोटे नारियलकौ और खोटे रुपैयाकौ पश्चाताप हतो सोउ ताप मेरो दूर कर्यो. जो मो पर तो श्रीगुसांईजीने बड़ी कृपा करी. पाछें छीतस्वामीने प्रसन्न होयके एक नयो पद ता समै बनायो. सो पद

राग : गोरी

'हौं चरणातपत्रकी छैया ।
कृपासिन्धु श्रीवल्लभनन्दन बह्यो जात राख्यो गहि बहियां ।
नख नख शरद चन्द्रमा मण्डल त्रिविध ताप मेटत छिन महियां ।
'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविटठल सुजस बखान सकत श्रुति नहियां ।।

यह कीर्तन वाही समै श्रीगुसांईजीके आगे छीतस्वामीने गायो. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भये. तब छीतस्वामीने दण्डवत् करिकै

कही, जो महाराज ! आप तो प्रभु हो. आपको श्रुति जो वेद है सोउ पार पावत नाहीं, तो और की कहा सामर्थ्य है, जो आपकौ जस गान करे ? ता पाछें सन्ध्यार्तिकौ समय भयो तब श्रीगुसांईजी छीतस्वामीसों कहे, जो जाओ, दरसन करो. तब छीतस्वामी मन्दिरमें जायकै तिवारीमें ते श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन किये. तब देखे तो मन्दिरमें श्रीगुसांईजी ठाड़े हैं. तब छीतस्वामी मनमें कहे, जो श्रीगुसांईजीकों तो मैं बैठक में छोड़ि आयो हतो और ये मन्दिरमें कहां ते ठाड़े है ? बहुरि मनमें कहे, जो भीतर और राह होयगी, ता राह पांव धारे होइगे. ता पाछें सन्ध्या आरतिके दरसन करिकै छीतस्वामी बाहर आये, तहां देखे तो श्रीगुसांईजी गादी उपर बिराजे हैं. तब तो छीतस्वामीको बड़ो आश्चर्य भयो, परि ठीक न परि. ता पाछें सेन आरति भई. तब छीतस्वामीको महाप्रसाद लिवाये. पाछें श्रीगुसांईजीने आज्ञा करी, जो सवारे ही तुम श्रीगिरिराज जायकै श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करि आवो. तब छीतस्वामी रातमें सोय रहे. प्रातःकाल होत ही सातों स्वरूपनके मङ्गलाके दरसन करिकै श्रीगुसांईजीके दरसन किये, पाछें श्रीयमुना उतरिकै सूधे ही श्रीगिरिराजकों चले, सो राजभोगके समय जाय पहोंचे, श्रीगोवर्द्धननाथजीके राजभोग आरतिके दरसन किये. तब देखे तो उहां श्रीगुसांईजी ठाड़े हैं, सो श्रीगोवर्द्धननाथजीके पास ही देखे. तब छीतस्वामी मनमें विचारे, जो श्रीगुसांईजी कब पधारे हैं ? ता पाछें छीतस्वामी श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करिकै नीचे उतरे. तब उहां लोगन तें पूछे, जो श्रीगुसांईजी इहां कब पधारे हैं ? तब उन सेवकनने कही, जो श्रीगुसांईजी तो श्रीगोकुलमें हैं, इहां तो नाहीं पधारे हैं. तब छीतस्वामी मनमें विचारे, जो मैं तो श्रीगुसांईजीकों श्रीगोवर्द्धननाथजीके पास ही देखे हैं, और काल्हि हू श्रीनवनीतप्रियजीके पास ही ठाड़े देखे हैं. और बैठक हू में बिराजे देखे. सो सब ठौर येही दरसन देत हैं, तातें ये ईश्वर हैं. यह विचारिकै छीतस्वामी श्रीगोकुलकी सुरति बांधि चले, सो उत्थापन भोगके समय श्रीगोकुल आय पहुंचे. सो श्रीगुसांईजी अपनी बैठकमें गादी उपर बिराजे हे. तब छीतस्वामीने आयके दण्डवत् कीनी. तब श्रीगुसांईजीने पूछी, जो छीतस्वामी ! तुम श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करि आये ? तब छीतस्वामीने कही, जो महाराज ! श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये, और उनके पास ठाढ़े आपहूके दरसन किये. तब श्रीगुसांईजी मुसिकाये. तब छीतस्वामी अपने मनमें विचारि यह निश्चय कियो, जो श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ और श्रीगुसांईजीकौ स्वरूप एक है. यह जानिकै ताही समै छीतस्वामीने यह पद करिकै गायो. सो पद

राग : सारङ्ग

जे वसुदेव किये पूरन तप सो फल फलित श्रीवल्लभ देह।
जे गोपाल हुते गोकुल में सोई अब अइ बसे निज गेह ।
जे वे गोपबधू ही ब्रजमें सो अब वेद ऋचा भई तेह ।
'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविटठल तेई एई एई तेई कछु न सन्देह ।।

यह कीर्तन सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भये. पाछें श्रीगुसांईजीने सेन आर्ति उपरांत वाहू दिन छीतस्वामीकों अपने यहां महाप्रसाद लिवायो. ता पाछें तीसरे दिन छीतस्वामी देहकृत्य करि श्रीयमुनाजीमें स्नान करिकै अपरस ही में आय श्रीगुसांईजीके आगे हाथ जोरिकै ठाड़े भये. और श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! मोकों कृपा करिकै समर्पन करावो. तब श्रीगुसांईजीने श्रीनवनीतप्रियजीके आगे समर्पन करवायो. ता पाछें छीतस्वामीने बिनती कीनी, जो महाराज ! आज्ञा होय तो मैं अपने घर जाऊं. तब श्रीगुसांईजी आपु आज्ञा किये, जो राजभोग आर्तिके दरसन करिकै पाछें तुमकों बिदा करेंगे. ता पाछें राजभोग आरति भई. पाछें श्रीगुसांईजी अपनी बैठकमें अपरस ही में बिराजे, तब छीतस्वामीने आयकै दण्डवत् करी. पाछें बिनती करी, जो महाराज ! आज्ञा होय तो मैं अपने घर जाऊं. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो महाप्रसाद लेकै अपने घर जइयो. ता पाछें श्रीगुसांईजी बालकन सहित आपु भोजनकों पधारे. सो छीतस्वामीकों अपने श्रीहस्तसों पातर धरी. ता पाछें आपु भोजनकों पधारे. पाछें सब भोजन करिकै आचमन ले कै श्रीगुसांईजी अपनी बैठकमें बिराजे. तब छीतस्वामी हू आचमन करिकै श्रीगुसांईजीके पास आये. तब श्रीगुसांईजीने छीतस्वामीकों महाप्रसादी बीड़ा दिये. और कह्यो, जो छीतस्वामी अपने घर जाओ. तब श्रीगुसांईजीकों छीतस्वामी दण्डवत् करकै चले, सो मथुरा आये. तब वे चारों कुटिल हते, सो छीतस्वामीसों मिले. तब उन (ने) छीतस्वामीसों पूछी, जो तुमने उहां कहा कियो ? और हम तो सब ही जान्यो, जो तुमकों टोंना लग्यो. तब छीतस्वामीने कह्यो, जो अब तो मैं श्रीगुसांईजीकौ सेवक भयो, तातें अब तो मैं तुमारे काम तें गयो. यह बात छीतस्वामीकी उन चारों जनेनने सुनी. ता पाछें वे चुप होय रहे. तातें श्रीगुसांईजीकौ ऐसो प्रताप है. सो वे श्रीगुसांईजीकी कृपा तें बड़े कविश्वर भये, सो बहुत कीर्तन किये. सो वे छीतस्वामी ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
और एक समै छीतस्वामी बीरबलके घर गये. छीतस्वामी बीरबलके प्रोहित हते. सो अपनी बरसोंड लेवेकों गये हते. सो बीरबलने अपने घरमें रहवेकौ स्थल दियो, सो छीतस्वामी तहां रहे. सो पिछली घड़ी एक रात्रि रही, तब छीतस्वामी उठिकै प्रभुनकौ नाम लेके एक पद गायो. सो पद

राग : देवगंधार
जै जै जै श्रीवल्लभराजकुमार ।
परमानन्द कपट खण्डन करि सकल वेद उद्धार ।
परम पुनीत तपोनिधि पावन तन सोभा जुत सार ।
निगम सुकमुख कथित कृष्णलीलामृत सकल जीव निस्तार ।
निजफल सुद्दढ सुक्रुत सबकौ फल नवधा भक्तिप्रकार ।
दुरत दुरित अचेत प्रेत गति हतित पतित उद्धार ।
नहीं मति नाथ कहां लों बरनों अगनित गुन विस्तार ।
'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविटठल प्रगट कृष्ण अवतार ।।

यह छीतस्वामीने गायो, सो बीरबलने सुन्यो. सो बीरबलकों आछी न लगी. (और) मनमें कह्यो, जो देखो इन (ने) कहा बरनन कियो है ? परि बीरबलने छीतस्वामीसों कछू कह्यो नाहीं. जो यह बात मनमें धरि राखी. ता पाछें छीतस्वामी उठि देहकृत्य करि श्रीयमुनाजीमें स्नान करि, श्रीठाकुरजीकों भोग समर्प्यो. ता पाछें भोग सरायके आप प्रसाद लिये. पाछें बैठे - बैठे छीतस्वामी कीर्तन गावत हते 'जे वसुदेव किये पूरन तप.' तामें छेली कड़ीमें कह्यो, जो ''छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविटठल येई तेई तेई येई कछू न सन्देह'' यह पद छीतस्वामीने गायो सो सुनिकै बीरबलकों बोहोत बुरी लगी. तब तो बीरबलने छीतस्वामीसों कह्यो, जो छीतस्वामी ! तुम (ने) अब तो

यह पद गायो ‘‘येई तेई तेई येई कछु न सन्देह’’ और सवारे गाये जो ‘‘प्रगट कृष्ण अवतार’’ सो यह तुमने गायो, सो देशाधिपति म्लेच्छ है, जो यह सुन पावेगो तो तुम कहा जुवाब दोगे ? तब बीरबलसों छीतस्वामीने कही, जो मोसों देशाधिपति पूछेगो तब मैं जुवाब देउंगो. परि अब तो मेरे भाये तुई म्लेच्छ है. (क्यों) जो तेरे मनमें यह दुर्बुद्धि उपजी. तातें मैं तो आज तें तेरो मुंह न देखूंगो. ऐसे बीरबलकौ तिरस्कार करिकै उहां तें छीतस्वामी श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजीके पास आये. सो यह बात देशाधिपतिसों जायके हलकारेने कही, जो साहिब ! बीरबलकौ प्रोहित मथुरासों आयो हतो, सो कोई बातके उपर बीरबलसों रूठकै गयो है. ऐसे सब समाचार विस्तारसों देसाधिपतिके आगे हलकारेने कहे. ता पाछें जब बीरबल दरबारमें आयो तब देशाधिपतिने कह्यो, जो बीरबल ! तेरो प्रोहित तेरेसों क्यों रूठ गयो है ? तब बीरबलने देशाधिपतिसों कही, जो साहिब ! ब्राह्मन ऐसे ही होते हैं. जो सहजकी बात उपर रूठ जाते हैं. तब देसाधिपतिने बीरबलसों कह्यो, जो बात तो कहो कहा हती ? तब बीरबल कही, जो साहिब ! उनने दो पद दीक्षितजीके गाये हे. सो मैंने इतनों कह्यो, जो जब देसाधिपति सुन पावेंगे तब कहा जवाब दोगे ? यापै वे रूठ गये. तब देसाधिपतिने बीरबलसों कही, जो बीरबल ! तेरे प्रोहितने झूठ कहा कह्यो ? तोकों वा बातकी सुधि आवे है, जो मैं नावड़ेमें बैठिकै जातो हतो, सो नावड़ा गोकुलके नीचे जाइ निकर्यो, ता समय दीक्षितजी उहां घाटके उपर बैठे हते. तब दीक्षितजीने मोकों आशीर्वाद दियो. तब मेरे पास मनि हती जासों पांच तोला सोना नित्य होतो हतो, उह मनि मैंने दीक्षितजीकों दीनी. सो दीक्षितजीने वह मनि हाथमें लेकै मोसों पूछ्यो, जो तुमने मनि हमकों दीनी ? ऐसे तीन बार पूछ्यो, तब मैंने तीन बार कह्यो, जो मनि दीनी. तब दीक्षितजीने वह मनि ले कै जमनामें डारि दीनी. तब मैं फिर बैठ्यो (और कह्यो), जो मेरी मनि मोकों पीछे देउ. तब दीक्षितजीने यमुनामें हाथ डारिकै दीनों सो हाथकी अञ्जलि भरकै मनि लायकै मोकों दीनी. और कह्यो, जो इनमें तुम्हारी मनि होय सो काढ़ लो. जम मैंने नाहीं लीनी, तब फिर मोकों तीन बेर पूछ्यो, जो अब तो फेर न लोगे ? तब मैंने तीन बार नाहीं कीनी. तब तो दीक्षितजीने अञ्जलि भरी मनि फिर यमुनामें डारि दीनी, जो बीरबल ! यह बात तो तू भूल गयो. सो यह बात ईश्वरकी कृपा बिना नाहीं होई. तातें तुमको ऐसो सन्देह न करनो चाहिये. जो तुमने अपने प्रोहितसों ऐसो कह्यो, सो दीक्षितजी तो साक्षात् ईश्वर हैं. यामें कछु सन्देह नाहीं. या भांतिसों देसाधिपतिने बीरबलसों कह्यो, सो सुनिकै बीरबल चुप होय रह्यो, सो कहा उत्तर देय ?

भावप्रकाश :

तातें श्रीगुसांईजीकौ ऐसो प्रताप है. जो देसाधिपति म्लेच्छ है, सोऊ जानत है, जो श्रीगुसांईजी तो साक्षात् ईश्वर हैं. और बीरबल तो बहिर्मुख है. तातें श्रीगुसांईजीके स्वरूपकौ ज्ञान नाहीं है. सो श्रीगुसांईजी हू कबहूं, कबहूं कहते, जो बीरबल तो बहिर्मुख है.

सो वे छीतस्वामी श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते.

वार्ता प्रसङ्ग ३ :

और जब बीरबलकौ तिरस्कार करिकै छीतस्वामी श्रीगोकुल आये, ता दिन श्रीगुसांईजी श्रीगिरिधरजी श्रीनाथजीद्वार हते. सो जब छीतस्वामी आये सो बात श्रीगुसांईजीने सुनी, जो छीतस्वामी या प्रकार अपनी वृत्ति छोड़िकै श्रीगोकुल आये हैं, बैठे हैं. और यह हू बात श्रीगुसांईजीने पहले ही सुनी (हती) जो छीतस्वामी बीरबलके पास बरसोंड़ लेवेकों गये हते, सो अब या तरहसों बीरबलकों तिरस्कार करिकै छोंड़ि आये है. सो तहां श्रीनाथजीद्वारमें श्रीगोवर्द्धननाथजीके तथा श्रीगुसांईजीके दरसनकों दूरके वैष्णव जो आये हे, तिनसों श्रीगुसांईजी आपु कह्यो, जो तुमारे पास मैं छीतस्वामीकों पठावत हों, सो तुम इनकी भली भांतिसों सेवा कीजो. ता पाछें वे वैष्णव तो श्रीगुसांईजीसों बिदा होयकै अपने देसकों चले. ता पाछें बीरबलसों रिसायकै छीतस्वामी श्रीगोकुल आये हते, सो उहां श्रीगुसांईजीके दरसन श्रीगोकुलमें न पाये, तब दोय चार दिन तांई रहिकै फेरि छीतस्वामी तरहटीमें आये, श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. सो अपने मनमें बोहोत आनन्द पाये. ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजीकों अनोसर करवायकै पर्वत ते नीचे उतरे, सो अपनी बैठकमें बिराजे. तब श्रीगुसांईजीकी आगे आयकै छीतस्वामीने सब समाचार विस्तारपूर्वक बीरबलके कहे. तब श्रीगुसांईजी छीतस्वामीके वचन सुनिकै बहोत प्रसन्न भये. ता पाछें श्रीगुसांईजीने लाहोरके जो वैष्णव आये हते, तिनकों एक पत्र लिख्यो, अपने श्रीहस्तसों, जो ये छीतस्वामी (कों) हमने तुम्हारे पास पठाये हैं सो इनकी टहल तुम आछी भांतिसों कीजो. सो वह पत्र श्रीगुसांईजीने छीतस्वामीकों दियो, और कह्यो, जो छीतस्वामी ! तुम लाहोर जाउ. तब छीतस्वामीने कही, जो महाराज ! मैं लाहोर जायके कहा करूंगो ? तब श्रीगुसांईजीने छीतस्वामीसों कह्यो, जो मैंने उन सब वैष्णवनसों कही है, सो वैष्णव तुम्हारी बिदा आछी तरहसों करेंगे. तब श्रीगुसांईजीके बचन सुनिकै छीतस्वामीने यह पद गायो सो पद

राग : नट

हम तो श्रीविटठलनाथ उपासी ।
सदा सेवों श्रीवल्लभ नन्दन कहा करों जाय कासी ।
छांडि नाथ ज और रुचि उपजत सो कहियत असुरासी ।
'छीतस्वामी' गिरिधरन श्रीविटठल बानी निगम प्रकासी ।

जो यह पद छीतस्वामीने गायो. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी (ने) छीतस्वामीके हृदयकी जानी, जो ए ते कहूं जानहार नाहीं हैं. तब छीतस्वामीने श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो महाराज ! मैं वैष्णव भयो, सो कछु वैष्णवके पास तें भीख मांगनकों नाहीं भयो. और बीरबलपें तो मेरी बरसोंड़ हती सो मैं वाकों मुंह तोड़िके लेतो. परि महाराज ! वाने तो म्लेच्छ बुद्धिको जुवाब दियो, तातें मैं यहां उठि आयो. जो महाराज ! मेरे तो राजाके चरण कमल छांड़िकै कछू काम नाहीं, और कहूं न जाउंगो. और अब कहा ऐसे कर्म करूंगो ? जो वैष्णव होयकै कहा भीख मांगुगो ? सो छीतस्वामीके बचन सुनिके श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये, और कह्यो, जो वैष्णवको यही धर्म है, जो ऐसे ही चाहिये. ता पाछें श्रीगुसांईजीने वह पत्र लाहोरके वैष्णवनकों लिख पठायो, जो छीतस्वामी तो इहां ते आय सकत नाहीं है, तासों यह ब्राह्मन गरीब है, जो तुमतें याकी टहल बनि आवे तो इहां ही मनुष्यके हाथ हुंडी कराय पठाय दीजो. सो वह पत्र श्रीगुसांईजीको एक मनुष्य लाहोर ले जायकै उन वैष्णवनकों दियो. तब उन वैष्णवनने वह पत्र बांचिके रुपैया १००) की हुंडी करायके पठाई. और उन वैष्णवनने श्रीगुसांईजीकों यह पत्र बिनतीकौ लिख्यो, जो महाराज ! इतनी हुंडी तो हम वर्ष पर्यन्त पठावेंगे, आपकी हुंडीके साथ इनकी हुंडी पठावेंगे सदा. सो पत्र श्रीगुसांईजीके पास आयो तब बांचिके श्रीगुसांईजीने वा पत्रके समाचार सब छीतस्वामीसों कहे. तब छीतस्वामी अपने मनमें बहोत प्रसन्न भये, और श्रीगुसांईजी हू उन वैष्णवन पर बहोत प्रसन्न भये.

भावप्रकाश :

तातें छीतस्वामी उन बीरबलको त्याग करिकै श्रीगुसांईजीकौ जस बढ़ायो. तो आपने हू बीरबलकी बरसोंड़ जितनो छीतस्वामीकों कराय दीनो. तातें वैष्णवनकों

दृढ़ विश्वास राखनो श्रीगोवर्द्धननाथजीकी उपर. जो विश्वास राखे तो प्रभु वाकी क्यों न खबर राखें ? तातें वैष्णवकों तो ऐसी अनन्यता राखी चाहिए. और छीतस्वामी जो श्रीगुसांईजीकी आज्ञा मानिकै लाहोर जाते, तो एक ही बार द्रव्य लावते. परि आगे कहा करते ? सो उन छीतस्वामीने जो विश्वास राख्यो, जो जनम भरिकौ द्रव्य और ठोर जाचनो न पड्यो. तातें या जीवकों ऐसो एक प्रभुनको आश्रय राखनो. एक आश्रय श्रीवल्लभाधीशकौ करनो, जातें सब फलकी प्राप्ति होय.

पाछें वे लाहोरके वैष्णव छीतस्वामीकों प्रतिवर्ष श्रीगुसांईजीकी हुंडीके साथ न्यारी हुंडी पठावते, सो वे वैष्णव हू श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये. सो उनकी वार्ता कहां तांई कहिये. वार्ता ।।२४४।।

२४५-रसखान सैयद पठान

अब श्रीगुसांईजीके सेवक रसखान सैयद पठान, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं.

भावप्रकाश :
ये राजस भक्त है. लीलामें 'रससिद्धा' इनकौ नाम है. ये 'चन्द्रभागा' तें प्रगटी हैं, तातें उनके भावरूप हैं. ये दिल्लीमें एक पठानके जन्मे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वह रसखान दिल्लीमें रहत हतो. सो वह एक साहूकारके बेटाके उपर बोहोत आसक्त भयो. सो वाकों अहर्निश देखे. और वह छोरा कछू खातो तो वाकी जूंठनि लेई. और पानी पीवतो तोहू वाकौ झूठो पीवे. सो ऐसो आसक्त भयो. सो रसखानकी जातिके जो हते सो रसखानके उपर बोहोत ईर्षा करते और कहते, जे तू हिंदूकौ जूठौ क्यों खात है ? अब तू काफर भयो है. तब रसखानने कही, जो हों जैसो हूं ऐसो हों, परि अब तुम मोसों कछु बोलोगे तो मैं ठौर मारूंगो. तब इनसों सब डरपत रहते. सो ऐसो आसक्त हतो. तब ऐसें

करत बहोत दिन बीते.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

तब बहोरि एक दिन दो वैष्णव आपसमें बतरात हुते. सो कहत हुते, जो भाई देखो ! आसक्ति होंई तो ऐसी होंई. जैसी या रसखानकी वा बनियाके छोरा पर है. सो वाके पाछें डोलत है. लोक लाज, जाति डर सब कछू छूट्यो. ऐसी प्रभुनमें होंई तो कहा चहिए ? ता समै रसखान नेक दूरिं उन्मत्त सो ठाढ़ो हुतो. सो इनकी ऐसी अवस्था देखिकै दूसरे वैष्णवने दूरि तें इनकों देखिकै माथो धुनायो. और नाक चढाई. तब रसखानने जान्यो, जो याने मेरे उपर माथो धुनायो है. तब रसखानने वासों पूछ्यो, जो तेने मेरे पर माथो क्यों धुनायो है ? तब वा वैष्णवने डरपिकै कही, जो मैंने तोकों देखि माथो नहीं धुनायो है. हम तो आपुसमें बतरात हुते. तब रसखानने कही, जो तू सांच कहि, मैं तोकों छोरि देउंगो. नहीं तो ठौर मारूंगो. तब ऐसे कहिकै खडग उठाय लियो. तब वह वैष्णव डरप्यो. और वासों कह्यो, जो तेरो मन वा छोरामें आसक्त है तैसो मन प्रभुमें लगावे तो तेरो काम होंइ जाय. तब रसखानने कही, जो प्रभु तू कौनसों कहत है ? मैं तो कछू जानत नाहीं. तब वा वैष्णवने कही, जो प्रभु वासों कहियत है जिनकौ यह सारो जगत विभूति है तब रसखानने कही जो यह सगरों उनकी विभूति हैं तो मैं उनकें कैसे जानों ? तब वा वैष्णवकी पागमें श्रीनाथजीकौ चित्र हतो. तामें मुकुट काछनीकौ सिंगार हतो. सो काढ़िकै रसखानकों दिखायो. तब चित्र देखत ही रसखानकौ मन फिरि गयो. और आंखिनिमें जलकौ प्रवाह चल्यो. सो वा छोरामें स्नेह हतो सो तो मिटि गयो.

भावप्रकाश :

यह कहि यह जनाए, जे आसक्ति भगवद्धर्म है, तातें लौकिकमें होंई तोऊ अन्तमें जीवकों प्रभुनकी ओर ले जात है, तातें आसक्ति सांची चाहिए. सो या रसखानकी आसक्ति वा छोरामें सांची हती तो वाकौ मन प्रभुने फेर्यो. सो वा छोरामें तें स्नेह मिटिकै प्रभुनमें भयो.

तब वा वैष्णवसों कही, जो यह महबूब कहां रहत है ? तब वा वैष्णवने कही, यह महबूब तो ब्रजमें रहत है. तब रसखानने कही, जो

यह मूरति हमको देउ. मति कहुं भूलि जाउं. तब वैष्णवने विचार्यो, जो यह जीव तो दैवी दीसत है. जो यह दैवी जीव न होतो तो याकौ मन ऐसो फिरतो नाहीं. सो यह विचारिकै वह चित्र रसखानकों दियो. तब रसखान चित्र लेत ही ब्रजकों उठि चल्यो. सो मार्गमें जहां देवालय आवे तहां दरसन करतो फिरे. सो दरसन करिकै वा चित्रके दरसन करे. परि वा चित्र समान स्वरूप कहूं दीसे नाहीं. तब ऐसे करत ब्रजमें आयो. सो श्रीवृन्दावन तथा मथुराजी तथा और हू सब ठिकाने दरसन किये. परि ऐसो स्वरूप कहूं दीसे नाहीं. तब फिरत - फिरत एक दिन गोवर्द्धनपर्वतपैं यह चढ्यो. सो ता समै श्रीनाथजीकी माला बोली हती. तब सब वैष्णव पर्वत उपर चढन लागे. तब यह रसखान हू दौरिकै मन्दिरमें जान लाग्यो. तब सिंघपोरिकैं पोरिया ब्रजवासी हतो. सो वाने रसखानिकों धक्का मारिकै बाहिर काढि दीनो. तब रसखान गोविन्दकुण्डपें जाय बैठ्यो. और मनमें विचारी, जो जितने हिन्दुके देवालयमें गयो हतो सो कहूं मोकों काहूने धक्का मार्यो नाहीं. और यहां मोको धक्का दिए. सो ऐसे जानिये, जो जहां ऐसें महबूब रहत हैं. तहां ऐसी करड़ी चौकी रहत होगी. सो ऐसें विचारिकै रसखान गोविन्दकुण्ड उपर जाय बैठ्यो. और श्रीनाथजीके मन्दिरसों टक - टकी लगाई दीनी. और मुखसों ऐसें कह्यो करे, जो या घरमें महबूब रहत हैं. तिनके दरसन किए बिना कहुं न जाउंगो. सो ऐसें निश्चय करिकै बैठ्यो रह्यो. भूख प्यासकी कछू सूधि नाहीं रही. सो ऐसें बैठे - बैठे दिन दोइ होइ गए. फेरि तीसरे दिन राजभोग आर्ति होय चुकी. अनोसर होय चुके. तब श्रीनाथजी मनमें विचारे, जो रसखानकों तो कछु देहानुसन्धान है नाहीं. तीनि दिन याकों भूखे होइ गए है. सो याके भूखे प्रान निकसि जाइंगे. सो यह दसा देखिकै श्रीनाथजीकों मनमें दया आई. तब वाही समै श्रीगोवर्द्धननाथजीने अपनो सिंगार हतो सो बडो करके जैसो सिंगार वह चित्रमें हतो तैसेई वस्त्र आभूषन अपने श्रीहस्तसों धारन किये. गाय ग्वाल सखा सब साथ ले कै आप पधारे. सो श्रीगिरिधरजीकी सिखिर पर चढिकै वेणुनाद किये. तब यह वेणुनाद सुनत ही रसखानकों यह निश्चै भयो, जो मूरतिमें महबूब देखे हैं सो महबूब ये हैं. सो ऐसो निरधार करिकै श्रीनाथजीकों पकरनकों दोर्यो. तब श्रीनाथजी तो ताही समय अन्तर्धान होई गए. सो श्रीगोकुल पधारे. सो ता समै श्रीगुसांईजी आप भोजन करिकै पोढे हते. सो श्रीनाथजीने श्रीगुसांईजीके केस पर श्रीहस्त फेरिकै जगाए. तब श्रीगुसांईजी जागिकै श्रीनाथजीके दरसन किये सो श्रीमुख पर हाथ फेरिकै कह्यो, जो 'भक्ततापनिवारकाय नमः' तब श्रीगुसांईजीसों श्रीनाथजीने कही, जो एक दैवी जीव है, परि वाकौ जन्म बड़ी जातिमें है. और या प्रकारसों वह आयो है. सो प्रकार सब कहे, और तीन दिनकौ भूखो बैठो है. सो आज मैंने उनको दरसन दीनो है. परि वह मोकों पकरनकों आयो. तब मैं उहांसों आयो हूं. सो अब तुम श्रीगोवर्द्धनपर्वतके उपर पधारो और वाकों नाम देउ. तब

मैं वाकों अङ्गीकार करूंगो. तब श्रीगुसांईजीने श्रीनाथजीसों कही, जो तुम कहां सो भाजि काहेकों आए हो ? तब श्रीनाथजीने कही, जो मोकों स्पर्श करिवेकों दोर्यो. तब मैं उहांसों भाजि आयो हूं. सो मेरे तो यह प्रतिज्ञा है, जो जा जीवकों तुम ब्रह्मसम्बन्ध करावोगे तिनसों हों बोलूंगो (१). तथा तिनहीके अङ्गसों अपनो अङ्ग स्पर्श करूंगो (२). और तिनहीके हाथकौ अरोगुंगो (३). सो ये तीन बस्तू तिहारे सम्बन्ध बिना काहूकों सिद्ध न होइगी.

तब यह बचन सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत हरखे. और तहां तें बेगि उठिकै श्रीयमुनाजीके तट आये. सो आप नावमें बैठिकै श्रीयमुनाजीके पार उतरिकै घोड़ा उपर असवार होंइकै तहां तें बेगि ही श्रीनाथजीद्वार पधारे. सो सूधे गोविन्दकुण्ड जाइ उतरे. तब रसखानने श्रीगुसांईजीके दरसन किये. और मनमें विचारी, जो ये घोड़ापे तें उतरे हैं सो तो महबूबके मित्र दीसत हैं. तब श्रीगुसांईजीके पास बिनती करी, जो साहिब ! या घरमें महबूब रहत हैं. तासों मेरो मन बोहोत आसक्त भयो है. सो मैं जानत हूं, जो यह तुम्हारो मित्र है. सो अब तुम मोकों मिलाय देउ तो बोहोत आछौ है. तब श्रीगुसांईजी वासों बोहोत प्रसन्न होंयकै पूछे, जो तेने हमारी मित्रता कैसे जानी ? तब रसखानने कही, जो तुम आए हो ताही समय तें तुम्हारी आंखि याही घरकी ओर लागी है. तब श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न होंइकै रसखानसों कहे, जो तू न्हाय आउ. तब वह रसखान न्हायकै श्रीगुसांईजीके आगें आयकै ठाड़ो भयो. तब श्रीगुसांईजीने कृपा करिकै वाकों नाम सुनायो. पाछें खवाससों कही, जो इनकों मन्दिरमें ले आइयो. तब श्रीगुसांईजीने मन्दिरमें जायकै संखनाद करवायकै श्रीनाथजीकों उत्थापन भोग धर्यो. तब समय भए भोग सरायो. सो ता समय खवास याको मन्दिरमें ले आयो. तब रसखानने श्रीनाथजीके दरसन किये, सो बहोत प्रसन्न भयो. पाछें वह रसखान बाहिर जाइवे लाग्यो. तब श्रीजीने वाकी बांह पकरिकै कह्यो, जो अरे सारे ! अब ! कहां जात है ? सो ता दिन तें श्रीजी गोचारनकों पधारते तब रसखानकों सङ्ग ले पधारते. सो जहां जा लीलाके दरसन करते तहां ता लीलाके कवित्त दोहा चौपाई सवैया करते. सो इनकों गोपीभाव सिद्ध भयो.

सो वे रसखान श्रीगुसांईजीके ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते, इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२४५।।

२४६-यादवेन्द्रदास क्षत्री

अब श्रीगुसांईजीके सेवक यादवेन्द्रदास क्षत्री, सो वे आगरे में रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये सात्विक भक्त है. लीलामें इनकौ नाम 'यादवी' है. ये 'चन्द्रभागा' तें प्रगटी है, तातें उनके भावरूप है.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो ये यादवेन्द्रदास आगरेमें रहते. सो इनकों संतदासजीकौ सङ्ग भयो. तब वे अडेलमें श्रीगुसांईजीके पास जाइकै बिनती कीनी, जो महाराज ! मेरे उपर कृपा करिकै मोकों नाम सुनाइये. तब श्रीगुसांईजी यादवेन्द्रदासकों कहे, जो स्नान करि आउ. तब यादवेन्द्रदास स्नान करिवेकों गये. सो स्नान करि आये. तब यादवेन्द्रदासने बिनती करी, जो महाराज ! आप कृपा करिकै मोकों नाम सुनाइये. तब श्रीगुसांईजीने कृपा करिकै वाकों नाम सुनायो. पाछें निवेदन करवायो. तब फेरि वाने यथासक्तिभेट करी. पाछें कछूक दिन यादवेन्द्रदास उहांई रहे. ता पाछें श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! मेरो मनोरथ तो सेवा करिवेकौ है. सो आप कृपा करिकै सेवा बताइये. सो मैं करूं. तब श्रीगुसांईजी आप बोहोत प्रसन्न होइकै उनकों सेवामें राखे. सो वे श्रीगुसांईजीकी सेवा करते. सो श्रीगुसांईजी यादवेन्द्रदासकी उपर बोहोत प्रसन्न रहते. और मार्गकी गोप्यवार्ता होई सो सब यादवेन्द्रदासकों कहते. सो उन यादवेन्द्रदास तें श्रीगुसांईजी आप श्रीसुबोधिनीजीकी बातें और कारिकाकी बात कछू गोप्य न राखते. सो सब यादवेन्द्रदासकों विस्तार करिकै कहते. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकों पधारे. सो यादवेन्द्रदास साथ आए. सो नित्य या प्रकार सङ्ग आवते.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
सो मारगमें एक दिना श्रीगुसांईजी आप पोढें. सो ताही समै यादवेन्द्रदास देखे तो श्रीस्वामिनीजी और श्रीगोवर्द्धननाथजी आप भुजा परस्पर

श्रीकण्ठमें मेलिकै पोढे हैं. और सब सिंगार सहित हास्य विनोदकौ दरसन भयो.

भावप्रकाश :
यह कहि यह जताए, जो श्रीगुसांईजी आपुमें स्वामिनी भाव और पुरुषोत्तम भाव दोनों भाव हैं. सो आपने कृपा करिकै यादवेन्द्रदासकों दरसन करवाए.

तब यादवेन्द्रदास तो चक्रत होइ रहे. और मनमें कह्यो, जो यह कहा है ? ता पाछें श्रीगुसांईजी आप जागे. तब यादवेन्द्रदाससों श्रीगुसांईजीने पूछ्यो, जो आज तू ऐसे चक्रत सो क्यों होई रह्यो है. तब यादवेन्द्रदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! आज तो यह देख्यो और ऐसो दरसन भयो है. तब श्रीगुसांईजी आप मुसिक्याये. सो उन यादवेन्द्रदासके उपर ऐसी कृपा करते. सो उन यादवेन्द्रदास क्षत्रीकी ऐसी - ऐसी कितनीक वार्ता हैं. सो उन यादवेन्द्रदासकों जैसो श्रीगुसांईजीकौ तथा श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ दरसन होंई सो तेसोई पद करिकै गावते. सो श्रीगुसांईजीकौ जन्मदिन आयो. सों ताहि समै पद करिकै गायो.

राग : देवगंधार
श्रीगोकुल घर घर अति आनन्द ।
पौष कृष्ण नौमी दिन प्रगटे पूरन परमानन्द ।।१।।
श्रीवल्लभकुल उदै भयो है मानौ पूरन चन्द ।
भक्तनकाज धरी नर देही सुन्दर आनन्द कन्द ।।२।।
जहां तहां नाचत नरनारी गावत गीत सुछन्द ।
‘यादों’ श्रीविटठलनाथ भैया हो दूरि किये दुःख द्वंद ।।३।।

सो ऐसे पद यादवेन्द्रदासने बोहोत ही गाए. सो जैसी लीला देखते तैसो ही गावते. सो यह कीर्तन श्रीगुसांईजीके सन्निधान होंइकै

यादवेन्द्रदासने गायो. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी आप बोहोत प्रसन्न भए. ता पाछें एक दिन यादवेन्द्रदासने जन्माष्टमीकी बधाईकौ पद गायो. सो पद

राग : धनाश्री
जसोदा जायो है सुत नीको ।
आनन्द भयो सकल गोकुलमें गोप वधू लाई टीको ।
अक्षत दूब रोचना वन्दन नन्दे तिलक दहीं को ।
अञ्चल वारि वारि मुख निरखत कमल नैन प्यारो जीकौ ।
अपने - अपने भवन तें निकसी पहरि चीर कसूंभी कौ ।
'यादवेन्द्र' ब्रजकुल प्रतिपालक कंस काल भय भीको ।

सो यह बधाई तिलकके समै यादवेन्द्रने गाई. सो सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए. ता पाछें यादवेन्द्रदासने ऐसे बोहोत पद किए. सो लीला हृदयारूढ भई. सो जैसी लीलाकौ अनुभव होई तेसोई पद गावते. और श्रीगोवर्द्धननाथजी आप सानुभाव हते. सो वे यादवेन्द्रदास क्षत्री श्रीगुसांईजीके ऐसें परम कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ताकौ पार नाहीं. सो कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२४६।।

२४७-गोविन्दस्वामी सनोढ़िया ब्राह्मण

अब श्रीगुसांईजीके सेवक गोविन्ददस्वामी सनोढ़िया ब्राह्मन, महावनमें रहते, अष्टछापमें जिनके पद गाइयत हैं, तिनकी वार्ताको भाव कहत हैं

भावप्रकाश :

ये गोविन्दस्वामी लीलामें श्रीठाकुरजीके 'श्रीदामा सखा' तिनकौ प्राकट्य हैं. सो दिवसकी लीलामें तो ये श्रीदामा सखा हैं, और रात्रिकी लीलामें ये 'भामा' सखी है, श्रीचन्द्रावलीजीकी. तातें यहां हू ये श्रीगुसांईजीके स्वरूपमें आसक्त हैं. ये विसाखाजी ते प्रगटी हैं. ताते उनके सात्विक भावरूप है.

वार्ता प्रसङ्ग १ :

सो वे प्रथम आन्तरी गाममें रहते. तहां वे स्वामी कहावते, सो वे सेवक करते. परि गोविन्दस्वामी परम भगवदीय हते. सो वे गोविन्दस्वामी आन्तरी ते ब्रजमें आये. तब महावनमें रहे, जो यह ब्रजधाम है. यहां श्रीभागवानके चरणारविन्दकी प्राप्ति कैसे न होइगी ? सो गोविन्दस्वामी कवीश्वर हते, सो आप पद करते. जो कोई इनके पद सीखिके श्रीगुसांईजीके आगे गावतो, ताकों श्रीगुसांईजी प्रसाद दिवावते, और बोहोत प्रसन्न होते. सो वे गावनहारे गोविन्दस्वामीके आगे जायकै कहते, जो तुमारे किये पद हम श्रीगोकुलके श्रीगुसांईजीके आगे गावत हैं, सो वे बहुत प्रसन्न होत हैं, और हमकों प्रसाद दिवावत हैं. तातें तुम अपने किये पद हमकों और सिखावो. सो यह सुनिकै गोविन्दस्वामी अपने मनमें कहते, जो जो कछु है, सो श्रीगोकुल है, और श्रीगोकुलके श्रीगुसांईजी हैं. परि मिलनो बनत नाहीं. सो ऐसे करत कितनेक दिन भये तब एक समै कोऊ एक श्रीगुसांईजीकौ सेवक कछु कार्यार्थ श्रीवृन्दावनमें जाय निकस्यो. सो भगवद्इच्छासों गोविन्दस्वामीकौ मिलाप भयो. सो गोविन्दस्वामी और वह वैष्णव एकान्त ठौरमें बैठे हते, तहां कोई वार्ताके प्रसङ्गमें गोविन्दस्वामीने कह्यो, जो श्रीठाकुरजीकी साक्षात् लीला कैसे जानि परे ? तब वा वैष्णवनें कह्यो, जो पाछें कहूंगो. तब गोविन्दस्वामीने वा वैष्णवसों कह्यो, जो मोकों बहुत दिनन तें या बातकी आतुरता है, और तुम कहत हो, जो पाछें कहूंगो. जो याहूतें फेर एकान्त कहां मिलेगी ? तातें मेरे उपर कृपा करिकै अब ही कहो. तब वा वैष्णवनें गोविन्दस्वामीकी बहुत आतुरता देखिकै इनतें कह्यो, जो आजके समे तो श्रीठाकुरजीकों श्रीगुसांईजी श्रीविटठलनाथजीनें बस करि राखे हैं. तातें श्रीठाकुरजीके चरणारविन्दकी प्राप्ति तो इनही तें पाइये, और कौ आश्रय करनो वृथा है. सो यह बात सुनिकै गोविन्दस्वामीको अत्यन्त आतुरता भई, और अति उत्साह भयो. तब तो गोविन्दस्वामीने उन वैष्णवसों कह्यो, जो तुम मेरे साथ चलो. तब रात्रि तो उहांई सोय रहे. पाछें प्रातःकाल भयो. तब तहांतें दोउ जने चले सो श्रीगोकुल आये. ता समें श्रीगुसांईजी श्रीठाकुरजीकों राजभोग धरिकै श्रीयमुनाजीपैं सन्ध्यावन्दन करत है. सो ताही समय ये आय पहुंचे. तब वा वैष्णवने कही, जो श्रीगुसांईजी यही हैं. तब देखिकै गोविन्दस्वामीके मनमें आई, जो ये कोई बड़े कर्मिष्ट हैं. कर्मकाण्ड करत हैं, इनकों

श्रीठाकुरजी क्यों कर मिलत होंयगे ? ऐसे चित्तमें सोच विचार करन लागे. इतनेमें श्रीगुसांईजी सन्ध्यावन्दन तर्पण करि चूके. तब श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो गोविन्ददास ! कब आये ? तब इन (ने) कही, जो प्रभु ! अब ही आयो हों. ता पाछें श्रीगुसांईजी उहांतें मन्दिरमें पधारे, सो साथ गोविन्दस्वामी हू चले. पर गोविन्दस्वामी अपने मनमें विचार करत हुते, जो इन (ने) मोकों कबहू देख्यो नाहीं, जो इन (ने) मोकों कैसे पहिचान्यो ? तातें कछुक कारन दीसत है. ता पाछें श्रीगुसांईजी तो जाइकै मन्दिरमें भोग सराये. ता पाछें दरसनके किंवाड खुले. तब गोविन्दस्वामीने राजभोग आरतीके दरसन किये. सो साक्षात् बाललीला रसमय रसात्मक स्वरूपकौ दरसन कराये. ता समै श्रीगुसांईजीने गोविन्ददासकों यह दान किये. ता पाछें श्रीगुसांईजी बाहिर आये. तब गोविन्दस्वामीने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराज ! आप तो कपट रूप दिखावत हो. और आपके यहां तो साक्षात् प्रभु बिराजत हैं. (और) बाहिर तो वेदोक्त कर्म करत हो. तब श्रीगुसांईजीने गोविन्दस्वामीसों कह्यो, जो भक्तिमार्ग है, सो तो फूलरूपी है, और कर्ममार्ग कांटारूपी है.

भावप्रकाश :
सो फूल तो रक्षा बिना फूले न रहे. तातें वेदोक्त कर्ममार्ग है सो भक्तिरूपी फूलनकों कांटेनकी बाड़ है. तातें कर्ममार्गकी बाड़ बिना भक्तिरूपी फूलको जतन न होय, तब जतन बिना फूल हु न रहें. तातें यह वस्तु है सो गोप्य है. तातें प्रगट प्रमान त्योंही है.

तब ये बचन सुनिकै गोविन्दस्वामी बहोत प्रसन्न भये. तब गोविन्दस्वामीने श्रीगुसांईजीसों फेरि बिनती कीनी, जो महाराज ! कृपा करिये. तब श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो तू स्नान करि आउ. तब गोविन्दस्वामी तत्काल स्नान करिकै अपरस ही में आये. तब श्रीगुसांईजीने इन उपर कृपा करिकै नाम सुनायो, ता पाछें समर्पन करवायो. पाछें अनोसर कराये. श्रीगुसांईजी तो भोजनकों पधारे. तब गोविन्दस्वामीकों हू महाप्रसादकी पातर श्रीगुसांईजीने अपने श्रीहस्तसों धरी. पाछें प्रसाद ले कै गोविन्दस्वामीने आचमन करकै श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करी. ता पाछें गोविन्दस्वामी श्रीगोकुल ही में आय रहे. सो वे गोविन्दस्वामीपे श्रीगुसांईजी सदा प्रसन्न रहते. इन उपर बहुत कृपा करते. सो गोविन्दस्वामी ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

सो पहिले गोविन्दस्वामी आन्तरीमें सेवक करते सो, उहां गोविन्दस्वामी कहावते. आन्तरीमें इनके सेवक बहोत हते. एक समै आन्तरीके लोग श्रीगोकुलमें आये. सो गोविन्दस्वामी जसोदा घाटके उपर बैठे हते. सो उन सुनी ही, जो गोविन्दस्वामी श्रीगोकुलमें रहे हैं. सो सुनिकै नाम पायवेके लिए आये हें. तब उन लोगनने पूछी, जो गोविन्दस्वामी कहां रहत हैं ? तब वे लोग पूछत - पूछत गोविन्दस्वामीके घर आये, तब गोविन्दस्वामीकी बहिन कान्हबाईने कही, जो गोविन्ददास तो स्नान करनकों गये हैं. तब वे लोग जसोदाघाटपे आये, सो गोविन्ददाससों पूछी, जो गोविन्दस्वामी कहां हैं ? तब गोविन्ददासने कही, जो वे तो मरे बहोत दिन भये. तब वे लोग फेर घर आये. इतनेमें गोविन्ददास हू घर आये. तब लोगनने उनकों पहिचाने, जो इनतो हमसों ऐसे कही, जो वे तो मरे. सो एसो आप ही हैं. तब उन लोगनसों कही, जो स्वामी ! तुम हमसों यह क्यों कहे, जो वे तो मरे. तब उन गोविन्दस्वामीने कही, जो मरे नाहीं तो अब मरेंगे.

भावप्रकाश :

जो या भांतिसों गोविन्ददासने कही, ताको कारन कहा ? (क्यों) जो भगवदीयकों मिथ्या न बोलनो. ताको हेतु यह, जो उन लोगनने तो इनसों पूछ्यो सो गोविन्दस्वामी कहिके पूछ्यो. तासों इन (ने) कही, जो वे स्वामी तो मरे (क्यों) जो अब तो हम ‘दास’ हैं.

पाछें गोविन्ददासने कही, जो तुम अब श्रीगुसांईजीके पास नाम पावो. तब उनने कही, जो हमकों श्रीगुसांईजीकी पास ले चलो. तब उन लोगनकों गोविन्ददास अपने साथ ले जायकै श्रीगुसांईजीके पास नाम दिवायो. तब वे लोग दिन चार श्रीगोकुल रहिकै पाछें आन्तरीकों गये. सो वे गोविन्ददासजी श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये.

वार्ता प्रसङ्ग ३ :

और गोविन्ददास श्रीयमुनाजीमें कबहूं न्हाते नाहीं, पांव हू श्रीयमुनाजीमें बुड़ावते नाहीं, कूपके जलसों स्नान करते, श्रीयमुनाजीकी रेतीमें लोटते, अञ्जुली भरि जल लेते सो पी जाते, और आचमन हू न करते. जो उनको श्रीयमुनाजी पर ऐसो भाव हतो. श्रीयमुनाजीकों साक्षात्

स्वामिनीको स्वरूप जानते. और यह कहते, जो यह अप्रयोजक सरीर यामें मैं कैसे करि डारों ? ऐसे श्रीयमुनाजीको स्वरूप अगाध भाव संयुक्त है, ताकों विचार करते. सो वे गोविन्ददास ऐसे भावसम्पन्न हते. सो एक दिन श्रीबालकृष्णजी और श्रीगोकुलनाथजी एक दोउ भाई श्रीयमुनाजीमें स्नान करत हते. ता समे श्रीयुमनाजीके तीर गोविन्ददास ठाढ़े हते. तब श्रीबालकृष्णजी और श्रीगोकुलनाथजी दोउ भाई आपुसमें विचार करन लागे, जो आज तो गोविन्ददासकों यमुनामें स्नान कराइये. सो इन दोउ भाई गोविन्ददासकों पकरिके श्रीयमुनाजीमें ले जान लागे. तब गोविन्ददासने कह्यो, जो महाराज ! मोकों श्रीयमुनाजीमें मति डारो, मोकों श्रीयमुनाजीमें डारोगे तो मेरो दोष नाहीं है, आप जानो. ये श्रीयमुनाजी हैं, साक्षात् श्रीस्वामिनीजी हैं. ये लीलात्मक स्वरूप हैं. तातें यह मेरो अप्रयोजक सरीर मैं यामें कैसें डारों ? सो गोविन्ददासजीने जब ऐसें कह्यो, तब इनने उनकों छोड़ि दिये. तब इन दोउ भाईनकों श्रीयमुनाजीके लीलात्मक स्वरूपको ता समय दरसन भयो. तब गोविन्ददासने कह्यो, जो महाराज ! इहां तो उत्तम ते उत्तम सामग्री होय सो समर्पिये. सो निजस्वरूप जानिकै कह्यो. सो वे गोविन्ददास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते.

वार्ता प्रसङ्ग ४ :
और एक समय रात्रिको श्रीभागवत दशमसकन्धके अष्टादश अध्याय वेणुगीतके अन्तके श्लोकको व्याख्यान श्रीगुसांईजी करत हते. सो श्लोक -

गा गोपकैरनुवनं नयतोरुदारवेणुस्वनैः कलपदैस्तनुभृत्सु सख्यः ।
अस्पन्दनं गतिमतां पुलकस्तरूणां निर्योगपाशकृतलक्षणयोर्विचित्रम् ।।

सो या श्लोकको व्याख्यान गोविन्ददासके आगे श्रीगुसांईजी करत हते. सो करत - करत अर्द्धरात्रि गई. ता पाछें श्रीगुसांईजी तो आप पोंढ़िवेकों उठे. तब गोविन्ददासकों आज्ञा दीनी, जो अब तुम ही जाय कै सोय रहो. तब गोविन्ददास श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करि कै उठि चले. सो अपनी बैठकमें श्रीबालकृष्णजी और श्रीगोकुलनाथजी और श्रीगोविन्दरायजी बैठे हते, सो आपुसमें खेलत - हसत हते. और हू

वैष्णव पास बैठे हते. सो तहां गोविन्ददास हू आये. तब गोविन्ददास तें श्रीगोकुलनाथजीने पूछी, जो गोविन्ददास ! या बिरियां कहां ते आये हो ? तब गोविन्ददासने कही, जो महाराज ! श्रीगुसांईजीके पास हो, तहां ते आयो हूं. तब गोविन्ददास तें श्रीगोकुलनाथजीने कही, उहां कहा प्रसङ्ग होत हतो ? तब गोविन्ददासने कह्यो, जो महाराज ! वेणुगीतके अन्तके श्लोकको व्याख्यान भयो. तब श्रीगोकुलनाथजीने गोविन्ददास तें कह्यो, जो कहा व्याख्यान भयो हो ? तब गोविन्ददासने कह्यो, जो महाराज ! अपनी बात आपु कहे, ताको कहा कहिये, ताकी पटतर कहा दीजिये ? तब श्रीगोकुलनाथजीने कह्यो, जो श्रीगुसांईजीकौ स्वरूप गोविन्ददासने नीके जान्यो है. ता पाछें गोविन्ददास तो अपने घरकों आये. सो वे गोविन्ददास ऐसे भगवदीय भये.

वार्ता प्रसङ्ग ५ :

और एक दिवस श्रीनाथजी और गोविन्ददास दोउ अप्सरा कुण्डके उपर साथ ही खेलत हते. सो तहां तें गोविन्ददास तो श्रीगिरिराज पर्वत पर आये. तब उहां देखे तो राजभोग आरती होय चुकी है. तब गोविन्ददासने कही, जो इहां राजभोग कौनने आरोग्यो है ? श्रीनाथजी तो अब ही आवत हैं, ऐसें कह्यो. तब श्रीगुसांईजीने फेरि सामग्री कराई और फेर राजभोग धर्यो. फेर आरती भई पाछें अनोसर भयो.

भावप्रकाश :

यहां यह सन्देह होय, जो श्रीनाथजी तहां हते नाहीं तो सेवा कोनकी भई ? तहां कहत हैं, जो श्रीआचार्यजीके पुष्टिमार्गमें श्रीठाकुरजी मर्यादापुष्टि रीतिसों बिराजत हैं. (तोहू) सगरे (सब स्थलमें) पुष्टि पुरुषोत्तमके भावसों सगरी वस्तु वस्त्र - आभूषनकों अङ्गीकार करत हैं. और दर्शन देवेमें मर्यादा रीतिसों बिराजत हैं, बोलत नाहीं. सो भगवत्स्वरूपमें दोय प्रकारकौ स्वरूप है. एक भक्तोद्धारक और एक मर्यादा पुष्टिरीतिसों सबकों दर्शन दे सो सर्वोद्धारक. सो भक्तोद्धारक स्वरूपके विषे सबकों दर्शन नाहीं. जो जहां तांई वैष्णवको प्रेम न होय तहां तांई मर्यादा पुष्टिरीतिसों अङ्गीकार (और) दर्शन है. भक्तोद्धारक स्वरूप, सर्वोद्धारक मर्यादा पुष्टिरूपसों सिंहासनपे बिराजिके सबकों दर्शन देत हैं. सो स्वरूपमें ते बाहर प्रकट होय. सो जहां तरुन, वृद्ध, गाय आदि. जैसी कार्य करनो होय ता प्रकारकौ रूप करि उह भक्तसों बोलें, अनुभव करावें. तथा मर्यादापुष्टि स्वरूप है, उनहीं के मुखसों बोलें, अनुभव जतावें.

सो यहां भक्तोद्धारक स्वरूपको अनुभव गोविन्दस्वामीकों है. और श्रीगुसांईजीने, जो राजभोग धर्यो सो श्रीआचार्यजीकी मर्यादा अनुसार श्रीनाथजीने सर्वोद्धारक रूपसों अरोग्यो. तोहू गोविन्दस्वामी जैसे भक्तके विशेष अनुभवसों श्रीगुसांईजीने फेरि राजभोग धर्यो, ऐसे जाननो. तातें प्रत्यक्ष अथवा वैष्णवद्वारा विशेष आज्ञा होवे तो भगवत्कृपा भई जाननी. सो यातें श्रीगुसांईजी हू भगवद् इच्छा समझके फेरि राजभोग धर्यो.

और गोविन्दस्वामी, कुम्भनदासजी और गोपीनाथदास ग्वाल ये तीनों जने श्रीनाथजीके एकान्तके सखा हैं. श्रीगुसांईजी इनकों सब बात दिखाई ही. सो एकान्तके समै श्रीनाथजी और गोविन्ददास पूंछरीकी ओर खेलत हैं. सो गोविन्ददास सदैव श्रीनाथजीके साथ रहते.

सो एक दिन राजभोगको समो हतो. तातें श्रीनाथजी राजभोग अरोगवेकों पधारे. सो पूंछरीकी ओर तें आवत हते, गोविन्ददास साथ है. सो गोपालदास भीतरिया अप्सरा कुण्डतें स्नान करिकै आवत हते गिरिराज उपर, सो उनने देखे. तब गोपालदासने श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो महाराज ! गोविन्ददास और श्रीगोवर्द्धननाथजी पूंछरीकी ओर तें आये सो तो मैंने देखे. तब श्रीगुसांईजी सुनिकै चुप करि रहे. ता पाछें राजभोग समर्प्यो. सो वे गोविन्ददास श्रीनाथजीके एकान्तके ऐसे सखा है. सो वे श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये.

वार्ता प्रसङ्ग ६ :

और एक समै श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वारमें अपनी बैठकमें बिराजे हते. ता समय श्रीनाथजीके उत्थापनको समय भयो. सो गोविन्ददास तो उपर दर्शनकों गये. सो जायकै देखे तो श्रीनाथजीके पागके पेच खूट रहे हैं. सो वा समै श्रीनाथजीने पाग साधिकर बांधी है. सो वे गोविन्ददास पाग आछी बांधत हुते. तब गोविन्ददासने श्रीनाथजीसों पूछी, जो महाराज ! पागके पेच क्यों खुलि रहे हैं ? तब श्रीनाथजीने गोविन्ददास सों कह्यो, जो तू पागके पेच संवारि दे. तब गोविन्ददास भीतर जायकै पागके पेच संवारे. श्रीगोवर्द्धननाथजीकी पाग ढीली, सो संवार दी. इतनेमें श्रीगुसांईजी उपर पधारे. तब भीतरियाने श्रीगुसांईजीतें कही, जो महाराज ! गोविन्ददास श्रीनाथजीकों छुये हैं. (जो) मन्दिरके भीतर जायकै श्रीनाथजीके पागके पेच संवारे हैं. तब श्रीगुसांईजी सुनिकै चुप होय रहे, कछु बोले नाहीं. तब तो भीतरीयाने फेरि कही, जो महाराज ! अपरस छुइ गई. तब श्रीगुसांईजीने कही गोविन्ददासके छुये तें श्रीनाथजी छुये न जांय, तातें सन्ध्याभोग धरो. या

भांतिसों श्रीगुसांईजीने आज्ञा दीनी.

भावप्रकाश :
ताको हेतु कहा ? जो अनोसरमें श्रीनाथजी गोविन्ददासजीसों खेलत हैं, लिपटत हैं, उपर चढ़त हैं. यातें उनके छुये तें अपरस छुई जाय नाहीं. और वैसे हू ब्राह्मन हैं, तातें वेद मर्यादा हू में हानि आवत नाहीं.

सो वे गोविन्ददास ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते.

वार्ता प्रसङ्ग ७ :
और एक समय गोविन्ददास जगमोहनमें ठाड़े - ठाड़े कीर्तन करत हते. तब श्रीगोवर्द्धननाथजीने गोविन्ददासकी पीठमें कांकरीकी मारी. सो एक बेर दीनी, दोय बेर दीनी. तब गोविन्ददासने एक बेर अङ्गुरनितें फेर कै दीनी. तब तो श्रीनाथजी चोंकि उठे. तब श्रीगुसांईजी फिरिकैं देखे, तो गोविन्ददास जगमोहनमें ठाड़े हैं और दूसरो कोऊ नाहीं है. तब श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो गोविन्ददास ! यह तुमने कहा कियो ? तब गोविन्ददासने कही, जो महाराज ! ''अपनो सो पूत, परायो ढढींगर'' मोकों इननें जब तें तीन कांकरी मारी हैं. आप मेरी पीठ तो देखो. पाछें गोविन्ददासने अपनी पीठ दिखाई. और कह्यो, जो ''खेलतमें को काको गुसैयां'' तब श्रीगुसांईजी सुनिकै चुप होय रहे. ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीकों शृङ्गार करन लागे. तब गोविन्ददास कीर्तन करन लागे. या भांति गोविन्ददास सदैव श्रीगोवर्द्धननाथजीके साथ खेलते, सो वे गोविन्ददास श्रीनाथजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते.

वार्ता प्रसङ्ग ८ :
और एक समै वसन्तके दिन हते. सो श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीकों सेनभोग सरायकै बीड़ी अरोगावत हते. और गोविन्ददास ठाड़े ठाड़े मणिकोठामें कीर्तन करत धमार गावत हते. सो एक नई धमार करिकै गावन लागे. सो धमार -

राग कल्यान -

श्रीगोवर्द्धनराय लाला, तिहारे चंचल नैन विसाला ।
तिहारे उर सोहे बनमाला, तातें मोही सकल ब्रजबाला ।।ध्रु. ।।
खेलत खेलत तहां गए जहां पनिहारिनिकी बाट ।
गागर ढोरी सीसतें कोऊ भरन न पाये घाट ।।१।।
नन्दरायके लाड़िले बलि ऐसो खेल निवारि ।
मनमें आनन्द भरि रह्यो मुख जोवति सकल ब्रजनारि ।।२।।
अरगजा कुंकुम घोरि कै प्यारी लीनो कर लपटाय ।
अचका अचका आइ कै भाजी गिरिधर गाल लगाय ।।३।।

सो याकी तीन तुक करिकै चुप होय रहे. गोविन्ददासतें आगे कही न गई. तब श्रीगुसांईजीने कह्यो, जो गोविन्ददास ! धमार क्यों नहीं गावत हो ? तब गोविन्ददासने कही, जो महाराज ! धमार तो भाजि गई अरु मन उरझाय गयो. ''अचका अचका आयकैं भाजि गिरिधर गाल लगाय''. सो वह तो भाजि गये, तातें ख्याल उतनो ही रह्यो. जो महाराज ! भाजि गये तो आगे खेल कहां तें होय ? तब श्रीगुसांईजी सुनिकै बहुत प्रसन्न भये. ता पाछें सेन आरती करिकै श्रीनाथजीकों पोढ़ायकै श्रीगुसांईजी आपु तो नीचे उतरे. ता पाछें धमारिकी एक तुक रही हती सो, श्रीगुसांईजीने पूरी करी. सो तुक -

इहि विधि होरी खेलिहीं ब्रजवासिन सङ्ग लाइ, लाला ।
श्रीगोवर्द्धनधर रूप पर 'जन गोविन्द' बलि बलि जाइ, लाला ।।

सो वे गोविन्ददास ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते.

वार्ता प्रसङ्ग ९ :

बहुरि सीतकालमें श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार पधारे हते. तब एक समै श्रीगोवर्द्धननाथजी और गोविन्ददास पूंछरीकी ओर श्यामढाक है, तहां ढाककी नीचे श्रीनाथजी और ग्वाल बाल सब मिलकै खेलत है. सो कबहूं वा ढाक पर चढ़िकै मुरली बजावते, सब ग्वाल बालनकों बुलावते. तहां श्यामढाकतें थोरी सी दूर एक चोंतरा है, तहां गोविन्ददास बैठे - बैठे कीर्तन करत हते. सो श्रीठाकुरजी श्यामढाकके उपर बैठे हते. गाय सब आपपास गदेला घास चरत हती, बनमें. ता समै श्रीगुसांईजी स्नान करिकै उत्थापन करिवेकों उपर पधारे. तब श्रीनाथजीने गोविन्ददास तें कही, जो मैं तो अब अपने मन्दिरमें जात हों. तहां उत्थापनको समय भयो है. श्रीगुसांईजी मोकों मन्दिरमें न देखेंगे तो मोसों कहा कहेंगे, जो तुम कहां गये हे ? तातें मैं तो जात हों. ऐसे गोविन्ददाससो कहिकै श्रीनाथजी वा ढाकपे तें उतावले ही कूदे. सो कवायको दांवन तहां ढाकमें अरुझो. सो दांवनको टूक तहां ही फटिकै रहि गयो. सो श्रीनाथजीने न जानी. सो गोविन्ददासने दूरसों देख्यो, जो श्रीनाथजीकी कवायको दांवन काटिकै अरुझि रह्यो है. पाछें श्रीनाथजी तो जायकै अपने मन्दिरमें सिंहासन पर बिराजे, और श्रीगुसांईजीने जायकै श्रीनाथजीके मन्दिरके किवाड़ खोले. उत्थापन किये. सो जब झारी भरन लागे ता समै श्रीगुसांईजी देखे तो श्रीनाथजीको दांवन फटि रह्यो है, तब श्रीगुसांईजी झारी भरिकै उत्थापन भोग धरिकै बाहिर आये. तब रूपा पोरियाकों बुलायकै श्रीगुसांईजीने पूछी, जो रूपा ! इहां कोउ आयो तो नाहीं ? तब रूपा पोरियाने कही, जो महाराज ! इहां तो कोउ आयो नाहीं. तब श्रीगुसांईजी चुप करि रहे. पाछें श्रीनाथजीके उत्थापन भोग सरायकै श्रीगुसांईजी श्रीगिरिराज तें नीचे उतरे, सो अपनी बैठकमें आये. और भीतरियानकों आज्ञा दीनी, जो तुम आरती करियो. और सब सेवा तें पहुंचियो, तुम मेरो पेंडो मति देखियो. इतनो कहि कै आप तो नीचे आय अपनी बैठकमें बिराजे. तब सब वैष्णव दरसनकों आये. सो आप काहू सों बोले नाहीं. इतने में ही गोविन्ददास आये. तब गोविन्ददासने श्रीगुसांईजीसों कही, जो महाराज ! आपु अनमने क्यों बैठे हो ? तब श्रीगुसांईजीने कही, जो कछु नाहीं. तब गोविन्ददासने कही, जो महाराज ! कछु तो मनमें भ्रम है. तातें यह बात तो कही चाहिये. तब श्रीगुसांईजीने गोविन्ददाससों कही, जो श्रीनाथजीको कवायको दांवन फट्यो है. जो न जानियो कौन अपराध पड्यो है ? तब गोविन्ददासने हंसिकै कह्यो, जो महाराज ! या बातके लिये तो

राज भले अनमने होत हो. (क्यों, जो) तुम कहा लरिकाको सुभाव जानत नाहीं हो ? तुम्हारो लरिका ढाकके उपर बैठ्यो हतो. सो तुम जब न्हायके गिरिराज उपर पधारे तब लरिका वा ढाक उपर तें कूद्यो, सो वा ढाकमें वा दांवनको टूक फटिकै अरुझि रह्यो है. जो महाराज ! आपु पधारो तो मैं दिखाउं. तब तो श्रीगुसांईजी गोविन्ददासकी बांह पकरिकै पूछरीकी ओर चले. परि काहू सेवककों सङ्ग न लीने. सो जब ढाकके नीचे आये तब श्रीगुसांईजी देखे तो वा कवायकी लीर लटकत है. तब श्रीगुसांईजीने अपने श्रीहस्तसों उतारि लीनी. ता पाछें आप उहां तें 'अप्सराकुण्ड' उपर आये. सो स्नान करिकै अपरस ही गिरिराज उपर पधारे. तब वह लीर श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीकी कवायके उपर धरिकै देखे तो वह कवाय साजी होय गई. तब श्रीगुसांईजी गोविन्ददासके उपर बहुत ही प्रसन्न भये. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीकी साम्हें देखिकै मुसिकाये. तब श्रीनाथजी हू मुसिकाए. ता पाछें श्रीगुसांईजी सेन आरती करिकै सेवातें पहोंचिकै आपु नीचे पधारे, सो अपुनी बैठकमें बिराजे. तब और वैष्णव हू श्रीगुसांईजीकी पास आयकै बैठे. तब गोविन्ददास हू श्रीगुसांईजीके पास आये. तब श्रीगुसांईजीने उन वैष्णवनसों कही, जो अब कछु तुम्हारे मनमें रह्यो है ? तब सब वैष्णन चुप करि रहे. तब श्रीगुसांईजीने कही, जो अब कछु उपाय करिये, जो श्रीगोवर्द्धननाथजीकों श्रम न करनो पडे. तब श्रीगुसांईजी आप ही मनमें विचारिकै भीतरियानसों कही, और सब सेवकनकों आज्ञा दीनी, जो आज पाछें संखनाद तीन बेर करिकै, ता पाछें क्षण एक रहिकै श्रीनाथजीके मन्दिरके किंवाड खोलने. यह सुनत ही गोविन्ददास बहुत ही प्रसन्न भये. सो गोविन्ददास ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये.

वार्ता प्रसङ्ग १० :

और श्रीगोवर्द्धननाथजी गोविन्ददासकों घोड़ा करते. और आप गोविन्ददासकी पीठ उपर असवार होय बनमें पधारते. सो एक दिन श्रीगोवर्द्धननाथजी गोविन्ददासके उपर चढे चले जात हे, ता समैं गोविन्ददासकों लंघीकी शङ्का आई, सो मारगमें ठाड़े - ठाड़े लंघी करे जात हे. सो ता समै एक वैष्णवने कह्यो, जो गोविन्ददास ! यह कहा है ? तब गोविन्ददास कछु बोले हू नाहीं, वाकों उत्तर हू न दियो. सो प्याऊके ढाककी ओर चले ही गये. सो आरती उपरांत श्रीगुसांईजी अपनी बैठकमें बिराजे हते, तब उहां वा वैष्णवने कही, जो महाराज ! गोविन्ददास तो आज ठाढ़े - ठाढ़े निहोरे - निहोरे जात हते. और लंघी करत जात हते. इतनेमें श्रीगुसांईजीके पास गोविन्ददास हू आये. तब श्रीगुसांईजीने गोविन्ददास तें पूछी, जो यह वैष्णव कहा कहत है ? जो तुम मारगमें निहोरे - निहोरे ठाढ़े - ठाढ़े लंघी करत

जात हते ? तब गोविन्ददासने कही, जो महाराज ! घोड़ा हू कहुं बैठिकै लंघी करत है ? और याकों तो सूझे नाहीं (जो) श्रीनाथजी तो मोकों घोड़ा करिकै मेरी पीठ पर असवार होत हैं. और ता समै जो मोकों लंघी आई तब मैं बैठीके कैसे लंघी करूं ? तातें मैं ठाढ़े ही लंघी करी. सो तो वाने देखी, परि श्रीनाथजी मेरी पीठ उपर असवार हते सो याकों सूझे नाहीं ! तब वा वैष्णवने श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिकै कही, जो धन्य ! ए गोविन्ददास ! जिनपै महाराजकी ऐसी कृपा है. सो वे गोविन्ददास श्रीगोवर्द्धननाथजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये.

वार्ता प्रसङ्ग ११ :
और एक समै श्रीगुसांईजी तो श्रीनाथजीद्वार पधारे हते. सो श्रीनाथजीकी सेन आरति करिकै श्रीनाथजीकों पोढ़ाय आपु नीचे अपनी बैठकमें पधारे. पाछें गादी उपर बिराजे और वैष्णव सब आगे बैठे. तब श्रीगुसांईजीसों सब वैष्णवनने बिनती करी, जो महाराज ! गोविन्ददास तो श्रीनाथजीके राजभोग आरतीके पहेले महाप्रसाद लेत हैं ? तब इतनेमें ही गोविन्ददास तहां आए. तब श्रीगुसांईजीने पूछी जो गोविन्ददास ! ये वैष्णव कहत हैं, जो तुम राजभोगकी आरतीके पहेले महाप्रसाद लेत हो ? तब गोविन्ददासने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! मैं परवस लेत हों, काहे तें, जो आप तो राजभोग आरती करिकैं अनोसर करत हो, और तुम्हारो लरिका आयकै ठाड़ो होय हैं, और कहत हैं, जो गोविन्ददास ! खेलिवेकों चलि. तातें हों पहेले ही प्रसाद लेत हों. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो राजभोग पहेले तो महाप्रसाद लीजे नाहीं. तातें राजभोगकी आरती उपरांत प्रसाद लेवेकों आयो करि. तब गोविन्ददासने कही, जो महाराज ! जो आज्ञा. तब दूसरे दिन गोविन्ददास राजभोग आरती श्रीनाथजीकी होय चुकी तब दरसन करिकै ही तुरत आये. सो गोविन्ददास तो महाप्रसाद लेवेकों बैठे. और इहां श्रीगोवर्द्धननाथजी अनोसर भये पाछें जगमोहनमें आयकै ठाड़े भये, और गोविन्ददासकी राह देखत भये, इतने ही (में) महाप्रसाद ले कै गोविन्ददास आये. तब श्रीगोवर्द्धननाथजीने गोविन्ददासकों पूछ्यो, जो गोविन्ददास ! तू इतनी बार लों कहां गयो ? मैं तीन बेर जगमोहनमें गयो, और तीन ही बेर पाछो आयो. और आयकै तेरी राह देखत हों. तब गोविन्ददासने कह्यो, जो महाराज ! मैं तो तुम्हारो राजभोग सरतो तब तुरत ही महाप्रसाद लेत हतो. सो काल्हि रात्रिकों श्रीगुसांईजीने यह आज्ञा दीनी है, जो राजभोगकी आरती पाछें महाप्रसाद लियो कर. सो अबही आरती पाछें आयो हों. सो सुनिकै श्रीनाथजी चुप करि रहे. ता पाछें गोविन्ददासकी पीठ पर असवार

होयकै श्रीनाथजी तो बनकों पधारे. ता पाछें उत्थापनकौ समय भयो तब श्रीगुसांईजी स्नान करिकै श्रीगिरिराज उपर जायकै संखनाद कराये. ता पाछें मन्दिरमें पधारे, तब गडुवा भरन लागे. तब श्रीनाथजीने श्रीगुसांईजीसों कही, जो तुमने गोविन्ददासकों राजभोग आरती भये पाछें प्रसाद लेवेकी आज्ञा दीनी है, सो मोकों आज बनमें खेलवेकों अवार भई. सो तीन बेर जगमोहनमें आयकै फिरि गयो. ता पाछें कितनीक बेर लों जगमोहनमें ठाड़ो रह्यो. जब गोविन्ददास प्रसाद ले कै आयो तब याकी पीठ पर असवार होयकै खेलनकों गयो. तातें याकों आज्ञा दीजो, जो जा भांति नित्य प्रसाद लेत है तैसे ही लियो करे. ता पाछें उत्थापन भोग धरे. सो भोग धरिकै अपरस ही में श्रीगुसांईजी नीचे पधारे, पाछें तुरत ही गोविन्ददासकों नीचे बुलाये. तब गोविन्ददासने आयकै श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करी. तब श्रीगुसांईजी गोवन्दिदासकों देखिकै मुसिकाने. पाछें गोविन्ददाससों कह्यो, जो गोविन्ददास ! तुम नित्य प्रसाद लेत हो तैसे ही ताही भांतिसों प्रसाद लियो करो, तुमकों कछु दोष नाहीं है. तुमकों प्रसाद लेत अवार भई तासों श्रीनाथजीकों गेल देखनी परी. तब गोविन्ददासने श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिकै कही, जो आज्ञा. ता पाछें श्रीगुसांईजी फेरि श्रीगिरिराजपें पधारिकै श्रीनाथजीकौ भोग सरायो. ता पाछें आरती करिकै अनोसर कराये. सो वे गोविन्ददास श्रीनाथजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय अन्तरङ्गी सखा हुते.

वार्ता प्रसङ्ग १२ :

और एक समै गोविन्ददास जसोदा घाट उपर बैठे हते. तहां प्रातःकालको समो हतो. सो गोविन्ददासने भैरव राग अलाप्यो. सो गोविन्ददासको गरो बहोत आछो हतो. और आप गावत ही बहोत आछे हते. सो भैरव राग ऐसो जम्यो, जो कछु कहिवेमें नाहीं आवे. सो एक म्लेच्छ चल्यो जात हुतो सो वाने गोविन्ददासकौ अलाप सुनिकै माथो धुन्यो. और कह्यो, जो वाह वाह ! कैसो भैरव अलाप्यो है ? जो ऐसे वा म्लेच्छने कह्यो. सो वा म्लेच्छकी बात गोविन्ददासने सुनी. तब सुनिकै गोविन्ददास कह्यो, जो अरे राग तो छी गयो. (और) कह्यो, जो म्लेच्छने सराह्यो है, सो राग श्रीगोवर्द्धननाथजीके आगे कैसे गाऊं ? राग तो छी गयो सो ता दिन तें गोविन्ददासने भैरव रागमें कोई पद कियो नाहीं. जो वे गोविन्ददास ऐसे टेकके कृपापात्र भगवदीय भये.

वार्ता प्रसङ्ग १३ :

और एक समै गोविन्ददास जसोदा घाट उपर बैठे हते. सो कोउ जल भरिवेकों आवतो तासों बतरावते. और अपने हृदय विषे भगवद्भाव, तातें जो चतुर होय तासों टोक करते. सो एक दिन गोविन्ददास बैठे हते तहां एक बैरागी आयकै बैठ्यो, और गावन लाग्यो. सो कहूं तो सुर, कहूं ताल, कहूं अक्षर, कहूं राग. तब गोविन्ददासने सुनिकै वा वैरागीसों कह्यो, जो अरे वैरागी ! तू मति गावै. गायवेकों खराब मति करे, न तो तेरो सुर शुद्ध, न तेरो राग शुद्ध, न तेरो गायवेको ठिकानो. ऐसे काहेकों गावत है ? तो पें गायवो न आवे तो मति गावें. तब उन बैरागीने कह्यो, जो हों तो अपने रामकों रिझावत हूं. मोकों गायवो नाहीं आवे तो कहा भयो ? मेरे रागसों मेरो राम तो रिझत हैं ? तब गोविन्ददासने कही, जो तेरो राम कछू मूरख नाहीं, जो तेरे गायवेपै रिझेगो, तातें तू मति गावे. तब वह वैरागी चुप करि रह्यो. जो उन गोविन्ददासके उपर ऐसी कृपा हती, जो सबसों निशङ्क बोलते. वे गोविन्ददास ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते.

वार्ता प्रसङ्ग १४ :
और वे गोविन्ददास पाग आछी बांधते. सो एक दिन महावन ते श्रीगोकुल आवत हते. सो मारगमें काहू ब्रजवासीने माथे पैं ते पाग उतार लीनी. तब तासों गोविन्ददासने कही, जो सारे ! सोलह टूक है, समारि लीजो, हों सकारे तेरे घर आयकै ले जाउंगो. पाछें वह ब्रजवासी पांयन परिकै गोविन्ददासकों पाग दे गयो. सो वे गोविन्ददास ऐसे भगवदीय भये.

वार्ता प्रसङ्ग १५ :
और गोविन्ददास महावनमें महावनके टीलेन पर एक समै कीर्तन करत हते. सो तहां श्रीगोकुलनाथजी कीर्तन सुनिवेकों आवते. तब आपने अपने खवाससों कही, जो सावधान रहियो. जब श्रीगुसांईजी भोजन करिवेकों पधारे (तब) समै होय तब तू मोकों बुलाय लीजो. सो भीतर राजभोग आवते ता समय आप तहां पधारते, और इहां सावधान मनुष्य जो बेठार्यो हतो, सो जब समो होय तब बुलावनकों आवतो, ऐसे नित्य करते. सो उहां एक दिन जो मनुष्य रहतो सो कछु कामकों गयो हतो, सो जब श्रीगुसांईजी भोजनकों पधारन लागे. तब सब बेटानकों बुलाये, तब तहां श्रीवल्लभ नाहीं हते. तब आप श्रीगुसांईजी कहे, जो महावनकी ओर जाउ, तहां गोविन्ददास कीर्तन करत हैं, तहां तें श्रीवल्लभकों बुलायकै ले आवो. ता पाछें मनुष्य दोरे, सो तहांते श्रीगोकुलनाथजीकों ले आये. तब श्रीगुसांईजी भोजनको पधारे.

सो गोविन्ददास गावत आछे हते. तातें श्रीगोकुलनाथजी सुनिवेकों जाते. सो वे गोविन्ददास ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये.

वार्ता प्रसङ्ग १६ :

और एक दिन श्रीगुसांईजी मथुराजीमें केशोरायजीके दर्शनकों पधारे, सो साथमें गोविन्ददास हू हते. सो उहां केशोरायजीकौ शृङ्गार बहुत ही भारी भयो हतो, सो जरीकौ वागा, चीरा ताके उपर जरीकी ओढ़नी उढ़ाये. सो श्रीगुसांईजी तो केशोरायजीके (निज) मन्दिरमें ठाड़े भये. और गोविन्ददास द्वारसों लागे दरसन करत हते. (सो) वागा जरीकौ ताके उपर ओढ़नी जरीकी ओढ़ी देखिकै गोविन्ददासने केशोरायजीसों कह्यो, जो महाराज ! नीके तो हो ? तब श्रीगुसांईजी गोविन्ददासकी ओर देखिकै मुसिकाये. ता पाछें श्रीगुसांईजी तो केशोरायजीके दरसन करिकै बाहिर आये, तब श्रीगुसांईजी गोविन्ददाससों कहे, जो गोविन्ददास ! ऐसे न कहिये. तब गोविन्ददासने कही, जो महाराज ! उष्णकालके तो दिन और तैसी गरमी पडै, और जरीनको वागा, उपर जरीनकी ओढ़नी उढाई है, जब कहा कहूं ? तब श्रीगुसांईजी मुसिक्यायकै चुप होय रहै. सो वे गोविन्ददास ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये.

वार्ता प्रसङ्ग १७ :

और एक समै गोविन्ददासकी बेटी आन्तरी तें आई. जो वह थोरीसी रही, परि गोविन्ददासने कबहू वासों सम्भाषन हू न कर्यो, जो कानबाई गोविन्ददासकी बहिन हती तानै कही, जो गोविन्ददास ! तू कबहू बेटीसों बोलत ही नाहीं, कबहू कछु कहत ही नाहीं. योंहू न पूछे, जो तू कब आई है, सो यह कहा '? तब गोविन्ददासने कानबाईसों कही, जो कन्हीयां ! मन तो एक है. सो श्रीठाकुरजीमें लगाउंके बेटीमें लगाउं ? तब कान्हबाई सुनिकै चुप होय रही. पाछें कितनेक दिन रहीकै जब गोविन्ददासकी बेटी आन्तरीकों चली, तब कान्हबाई वाकों बहू बेटिनके पास ले गई. तब बहू बेटीने गोविन्ददासकी बेटी जानिकै कछु चोली साडी लहेंगा, श्रीपारवती बहूजीने दियो. और घरन तें औरन ने हूं थोरो - थोरो दीनो.. ता पाछें बहू बेटीनसों बिदा होयकै गोविन्ददासकी बेटी चली. ता पाछें गोविन्ददास जब घर आये तब कान्हबाईने कही, जो गोविन्ददास ! बेटी तो चली गई. तब गोविन्ददासने कही, जो काहूने कछु दीनो ? तब कान्हबाईने कही, जो बहू बेटीनने साडी चोली दीनी हैं. तब तो यह बात सुनिकै गोविन्ददास बेटीके पाछें दौरें, सो कोस एक उपर जाय पहोंचे. तब

बेटीसों गोविन्ददासने कही, जो तोकों बहू बेटीनने जो कछू दीनो है, सो फेरि दे आऊ, याके लिये तें आपुनो बुरो होयगो. तब बेटी, जो लाई हती सो सब फेरि दे आई. ता पाछें कान्हबाईसों आयकै गोविन्ददासने कह्यो, जो कन्हीयां ! तैंने घरसों क्यों न दीनो ? ऐसे न करिये. तब कान्हबाई सुनिकै चुप होय रही. सो वे गोविन्ददास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते.
वार्ता ।।२४७।।

२४८-चतुरबिहारी क्षत्री

अब श्रीगुसांईजीके सेवक चतुरबिहारी क्षत्री कवि, आगरेमें रहते, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये लीलामें श्रीचन्द्रावलीजीकी सहचरी है. इनकौ नाम 'चतुरा' है. ये विसाखाजी तें प्रगटी हैं, तातें इनके राजस भावरूप हैं.

ये आगरामें एक क्षत्रीके जन्मे. सो वा क्षत्रीकौ घर संतदासजीकी बाखरिमें हतो. सो चतुरबिहारी वर्ष आठके भये तबसों ये कवित्त करते. सो बोहोत आछे करते. सो संतदासजी वाकों दैवी जीव जानि अपने इहां बुलावते. वाकों महाप्रसाद देते. पाछें चतुरबिहारी संतदासजीके इहां नित्य भगवन्मण्डलीमें जाइवे लगे, रात्रिकों सो भगवद्वार्ता सुने. तब इनको भाव श्रीगुसांईजीमें बढ्यो. ता पाछें एक दिन चतुरबिहारीके मनमें आई, जो हों श्रीगोकुल जांई श्रीगुसांईजीकौ सेवक होऊं तो आछो.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो एक समै चतुरबिहारी श्रीगोकुल आए. तो श्रीगुसांईजीके दरसन करिकै बोहोत प्रसन्न भये. सो साक्षात् कोटि कन्दर्प लावण्य श्रीयशोदोत्सङ्गलालित ऐसें दरसन भए. तब चतुरबिहारीने अपने मनमें विचार कियो, जो श्रीगुसांईजीकी सरनि जैये तो आछो है. सो ए तो

साक्षात् ईश्वर हैं. तब चतुरबिहारीने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी, जो महाराज ! मोकों सरनि लीजिए. तब श्रीगुसांईजी आप आज्ञा किए, जो श्रीयमुनाजीमें स्नान करि आओ. तब चतुरबिहारी श्रीयमुनाजीमें स्नान करि दोउ हाथ जोरिकै आयकै ठाढ़े भए. तब श्रीगुसांईजी चतुरबिहारीकों नाम सुनाए. सो नाम सुनत ही श्रीगुसांईजीकौ स्वरूप स्फुर्द भयो. सो चतुरबिहारीके उपर ऐसो अनुग्रह किये. सो चतुरबिहारी तत्काल यह पद गाये, नयों करिकै

राग : सारङ्ग

श्रीविटठल चरन सरन, सुभ करन, हरन दुख, सौभग वैभव विमल उद्यौत ।
सुधा समुद्र तरङ्ग अङ्ग छबि, राजत नैन रसाल रसमसे, चितवन ही सुख होत ।
'नाम' प्रताप त्रैताप अघमोचन, मनरोचन, गिरिराजधरन तातें कहियत ओतप्रोत ।
'चतुर' कहे ये भज, नांचे क्यों साधत जप तप तीरथ साधन तें सब आपु बिगोत ।

ता पाछें चतुरबिहारीने प्रार्थनाकौ एक और पद गायो, सो पद

राग : ईमन

बलि बलि हों तनक तनक करि डारों तिन पर जे रहे निसदिन चरनन नेरे ।
जीवन्मुक्तसदा तेही जन जो श्रीवल्लभानन्दनके हैं चेरे ।।१।।
इनकी महिमा मोपें बरनी न जाई जिन तन हंसि हंसि हेरे ।
'चतुर' कहे श्रीविटठलनाथ प्रभुसों हमे हू गिनिये तिनमें भले बूरे तोऊ तेरे ।।२।।

यह सुनिकै श्रीगुसांईजी आप बोहोत प्रसन्न भये. पाछें श्रीगुसांईजी आप चतुरबिहारीसों कहे, जो अब तुमकों काल्हि ही ब्रह्मसम्बन्ध

श्रीनवनीतप्रियजीके सन्निधान करावेंगे. तातें न्हायकै बेगि अइयो. पाछें दूसरे दिन चतुरबिहारी श्रीयमुनाजीमें स्नान करि बेगि ही श्रीनवनीतप्रियजीके मन्दिरमें आय बैठे. तब शृङ्गारके समै श्रीगुसांईजी आप चतुरबिहारीकों श्रीनवनीतप्रियजीके सन्निधान ब्रह्मसम्बन्ध करवाए. तब सगरी लीला स्फूर्द भई. सो दानके दिन हते. सो चतुरबिहारीने तत्काल यह पद गायो -

राग : बिलावल

हम दधि बेचन जात याही मारग भये हो इजारदार तुम राह वाटके ।
हमसों क्यों करत फेल भये हो अनोखे छेल हुकम करो तो जाय ग्वाल गोप ठाटके ।
भये यदुवंश कुल - फल, फल गावत ही भयो तुह्मे साप नहीं रहे राज पाटके ।
'चतुरबिहारी' गिरिधारी छल छिद्र भरे गोकुलकी गलियनमें दलाल बड़े हाटके ।।

सो यह पद सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भए. पाछें जानें जो अब इनकों सगरी लीला स्फुर्द भई. ता पाछें चतुरबिहारी रात्रिदिन श्रीगुसांईजीके आगे लीलाके पद गावते. सो जब श्रीगुसांईजी राजभोग आरती, सेन आरती, उपरांत अपनी बैठकमें बिराजते तब ही ये नये पद सुनावते. सो समय चूकते नाहीं.

ता पाछें श्रीगुसांईजी जब आप पोढते तब चतुरबिहारी वैष्णवनसों मिलिकै हांसी करते. और चौकाके समय जायकै पहोंचते. ता पाछें रात्रिकों उहांई जायकै सोय रहते. ऐसे करत कितेक दिन भए तब श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसनकौ विचार श्रीगुसांईजी आप किये.

सो श्रीनाथजीद्वार पधारे. तब चतुरबिहारी श्रीगुसांईजीके सङ्ग गये. पाछें श्रीगुसांईजी तो आप स्नान करि मन्दिरमें पधारे. तब श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ राजभोगकौ समय हतो. सो आपने राजभोग समर्प्यो. समय भये तब भोग सराय आरती करिकै अनोसर करिकै अपनी सेवा तें पहोंचि श्रीगिरिराज तें नीचे पधारे. सो अपनी बैठकमें पधारे. सो चतुरबिहारी श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करिकै बोहोत

प्रसन्न भये. पाछें बैठकमें आय श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् किये. तब श्रीगुसांईजी चतुरबिहारीसों पूछें, जो तेनें श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये ? तब चतुरबिहारीने बिनती करी, जो महाराज ! दरसन किये तो सही. परि या सुखको कहा कहिए ? कहां तांई वरनन करिए ? पाछें श्रीगुसांईजी भोजनको पधारे. ता पाछें चतुरबिहारीकों महाप्रसादकी पातरि धरी. तब चतुरबिहारीने महाप्रसाद लियो. तब श्रीगुसांईजी आप अपनी बैठकमें पधारे. तब चतुरबिहारी महाप्रसाद ले कै ठाढ़े - ठाढ़े पंखा करन लागे. और कीर्तन गावन लागे. सो ऐसे करत कितनेक दिन बीते. सो जहां तांई चतुरबिहारीकी देह चली तहां तांई श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन तथा श्रीगोकुल छोडिकै कहू न गए. ता पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल पधारे. तब चतुरबिहारी हू श्रीगुसांईजीके सङ्ग श्रीगोकुल आए. सो श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन किये. पाछें उहांई बैठे. सो ऐसे नित्यप्रति दरसन करिकै बैठे रहते. और जब श्रीगुसांईजी श्रीगिरिराज उपर पधारते तब चतुरबिहारी श्रीगुसांईजीके सङ्ग दरसनकों जाते. सो श्रीगोवर्द्धननाथजी हू अनुभव जतावते. तब चतुरबिहारी श्रीगोवर्द्धननाथजीकों पद सुनावते.

भावप्रकाश :
तातें वैष्णवकौ ऐसो दृढ़ आश्रय होइ तो श्रीठाकुरजी सर्व मनोरथ पूरन करे. या संसारमें श्रीठाकुरजीकी सेवा और भगवदीयनकौ सङ्ग ही सार है. तातें दृढ़ आश्रयपूर्वक भगवद् भजन सर्वथा करनो. यह सिद्धान्त जताए.

सो वे चतुरबिहारी श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिये. वार्ता ।।२४८।।

२४९-चतुर्भुजदास मिश्र

अब श्रीगुसांईजीके सेवक चतुर्भुजदास मिश्र सारस्वत ब्राह्मन, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :

ये चन्द्रावलीजीकी अन्तरङ्ग सखीनमें हैं. लीलामें इनकौ नाम 'चारुमति' है. ये 'विसाखाजी' ते प्रगटी हैं, तातें इनके तामस भावरूप है.

ये पूर्वमें सारस्वत ब्राह्मनके जन्मे. सो बरस पांचके भए. तब तें विद्या पढ़न लागे. सो बरस तीसलों विद्या पढ़े. सो गीता, भागवत, व्याकरण, सब पढ़े. बड़े पण्डित भए. पाछें ये आगरा आय रहे. सो बीरबलसों इनकौ मिलाप भयो. सो बीरबलने इनकों पण्डित जानि अपने इहां राखे. सो केतेक दिन बीरबलकी पास रहे. ता पाछें इनकौ पात्साहसों मिलाप भयो. तब तें ये पात्साहके उहां रहिवे लगे.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो वे चतुर्भुजदास बड़े पण्डित हते. विद्या बोहोत पढ़े हुते. इनकों पात्साहसों बोहोत मिलाप रहतो. सो पात्साह जो कछू पूछतो वाकौ ताही समै उत्तर देते. सो पात्साह इनपै बोहोत प्रसन्न रहतो. सो एक समै पात्साहने बीरबल आगे चतुर्भुजदासकी बोहोत सराहना करी. तब बीरबलने कह्यो, जो ये तो मेरो चाकर हुतो. सो ये बात पात्साहने चतुर्भुजदाससों कही. तब चतुर्भुजदासने पात्साहसों कह्यो, जो साहब ! आपके मिलिवेके तांई किन - किनकी चाकरी न करी चाहिए. सो ये बात सुनिकै पात्साह बोहोत प्रसन्न भयो. सो पात्साहने चतुर्भुजदासकों एक हजार रुपैया महिना कर दिए. सो वे चतुभुर्जदास पण्डितनकों वादमें जीत लेते. ऐसे पण्डित हते.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
सो एक समै चतुर्भुजदास मथुरामें आये. सो विश्रान्त घाट पर न्हाये. सो तहां एक वैष्णव पण्डित न्हात हतो. सो ताके आगे चतुर्भुजदासने कह्यो, जो 'विद्या भागवतावधि' यह सुनिकै वह वैष्णव पण्डित बोल्यो, जो 'चातुरी विटठलेशावधि' तब चतुर्भुजदास वा वैष्णव पण्डितसों कहे, जो तुम मोकों श्रीविटठलनाथजीसों मिलाप कराय देउ. तब वह वैष्णव पण्डित चतुर्भुजदासकों श्रीगोकुलमें श्रीगुसांईजीके पास ले गयो. तब चतुर्भुजदासने श्रीगुसांईजीके दरसन किए. सो साक्षात् पूरन पुरुषोत्तमके दरसन भए. तब चतुर्भुजदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती कीनी, जो महाराजाधिराज ! कृपा करिकै मोकों सेवक कीजिए. तब श्रीगुसांईजीने कृपा करिकै चतुर्भुजदासकों कह्यो, जो बैठो. पाछें श्रीगुसांईजीने उनकों नाम सुनाए. ता पाछें दूसरे दिन श्रीनवनीतप्रियजीके सन्मुख निवेदन कराये. सो सब लीला स्फुर्द भई. कवीश्वर भए.

सो इन श्रीगुसांईजी तथा श्रीगोवर्द्धननाथजीके कवित्त बोहोत किये हैं. पाछें श्रीगुसांईजी चतुर्भुजदासकों सङ्ग ले श्रीनाथजी द्वार आए. सो चतुर्भुजदासजीने श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये. सो चतुर्भुजदासजीको मन श्रीगोवर्द्धननाथजीमें लगि गयो. तब ये गोपालपुरमें रहे. पाछें पात्साहके पास गए नाहीं. सो पात्साहको खबरि पड़ी, जो चतुर्भुजदास गोपालपुरमें है. तब पात्साहने पत्र लिखिकै मनुष्य पठायो. सो वह मनुष्य गोपालपुरमें आयो. सो चतुर्भुजदासकों पात्साहकौ पत्र दियो. सो पत्र बांचिके चतुर्भुजदासने पात्साहकों एक पत्र लिख्यो. तामें लिख्यो, जो

जाको मन नन्दनन्दनसों लाग्यो नीको ।
सुखसम्पत्तिकी कहां लगि बरनों सब जग लागत पीको ।

ये पत्र लिखिकै वा मनुष्यकों दियो. सो वह मनुष्य आगरा आई पात्साहकों वह पत्र दिये. सो पात्साह बांचिकै कहे, जो जिनकों जगत फीको लग्यो ताकों अपन कैसे मीठे लगेंगे ?

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ भाव यह है, जो भगवानमें मन लाग्यो कब जानिये जब सगरो जगत् तुच्छ दीसे. सबमें तें ममता छूटि जाइ. एक भगवानके चरनारविन्दमें ही प्रीति होई.

सो वे चतुर्भुजदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हे. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२४९।।

२५०-चतुर्भुजदास कुम्भनदासजीके बेटा

अब श्रीगुसांईजीके सेवक चतुर्भुजदास, कुम्भनदासजीके बेटा, अष्टछापमें जिनके पद गाइयत हैं, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये चतुर्भुजदास लीलामें श्रीठाकुरजीके 'विशाल' सखाको प्रागट्य हैं. सो दिवसकी लीलामें तो ये 'विशाल' सखा हैं, और रात्रिकी लीलामें 'विमला' सखी हैं. ये 'ललिताजी' तें प्रगटी हैं. तातें उनके तामस भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो ये चतुर्भुजदास जमुनावतमें कुम्भनदासजीके यहां जन्मे. सो कुम्भनदासजीके प्रथम पांच बेटा हुते, तिनको मन लौकिकमें बहोत आसक्त देखिकै कुम्भनदासजीके मनमें बहुत ही दुःख भयो. और मनमें विचारे, जो मेरे कोऊ ऐसो पुत्र न भयो, जातें हों अपने मनको भेद कहों. पाछें कुम्भनदासजीने पांचों बेटानकों न्यारे करि दिये. और कुम्भनदासजीकी बहू श्रीआचार्यजी महाप्रभुकी सेवक हती और एक बेटी, सोउ परम भगवदीय हती, सो वह बेटी हू श्रीआचार्यजी महाप्रभुकी सेवक हती. ब्याह होत ही याको पुरुष तो मरि गयो. तातें वह बेटी हू (भतीजी ?) कुम्भनदासजीके घर रहती. सो तीनों जने जमुनावते गाममें रहतें. ता पाछें एक बेटा कुम्भनदासजीके और भयो. ताको नाम कुम्भनदासजीने कृष्णदास धर्यो. सो कृष्णदास बड़े भये. तब श्रीनाथजीकी गायनकी सेवा करते. और कीर्तन कोई न आवते. सो कृष्णदासने श्रीनाथजीकी गाय बचाई, और आपु नहारके सन्मुख होयकै अपनो सरीर दियो. सो उनकी वार्तामें प्रसिद्ध है. परि कुम्भनदासजीके मनमें यह मनोरथ जो कोई ऐसो पुत्र न भयो, जासों मैं अपने मनको भाव सब कहों, और सब भगवद्वार्ता करों. तासों कुम्भनदासजी उदास रहते. ता पाछें एक दिन श्रीगोवर्द्धननाथजीने परासोलीमें कुम्भनदाससों पूछी, जो कुम्भना ! तू ! उदास क्यों है ? तब कुम्भनदासने कही, महाराज ! सत्सङ्ग नाहीं है. फेरि श्रीगोवर्द्धननाथजीने मुसिक्यायकै कह्यो, जो अरे कुम्भना ! सत्सङ्गको फल जो 'मैं' सो तेरे पाछें - पाछें डोलत हों, तोहू तोकों सत्सङ्गकी चाहना है ? तब कुम्भनदासने कही, जो महाराज ! भगवदीयनके सङ्ग बिना जीव आपके स्वरूपानन्दकों कैसे जाने ? आपके स्वरूपमें रह्यो, जो आनन्द, सो तो भगवदीय ही जानत हैं, और जानत नाहीं. तातें भगवदीयके सङ्ग बिना आपके स्वरूपमें मन उरझत नाहीं है. तब श्रीगोवर्द्धननाथजीने हंसिकै आज्ञा करी, जो कुम्भना ! तू धन्य है, जा मैंने तोकों

सत्सङ्गके लिए भगवदीय पुत्र दियो. तो हू कुम्भनदासजी यह विचारिकै उदास रहते, जो कब पुत्र होयगो, फेरि कब तो बड़ो होयगो ? और न जाने वो कौनसे भावमें मगन रहेगो ? ऐसे करत - करत पुत्र होयवेको फेर समय भयो. सो कुम्भनदासजीकी स्त्रीकों फेर गर्भ स्थिति भई. सो एक दिन श्रीगोवर्द्धननाथजीने आयकै श्रीमुख तें कुम्भनदासजीसों कही, जो कुम्भनदास ! तू मेरे सङ्ग चलि. तब कुम्भनदासजी श्रीगोवर्द्धननाथजीकै सङ्ग चले, सो एक ब्रजभक्तके घरमें श्रीनाथजी पधारें. ये ब्रजभक्त दहीं माखनकी मथनियां दोउ उंचे छींकापें धरिकै आपु कछु कार्यकों गई हती. सो ताही समै श्रीगोवर्द्धननाथजी तहां आयकै आप एक हाथ तें दहींकी मथनिया लई. तब ही श्रीगोवर्द्धननाथजीकों पीताम्बर खुलि गयो, सो भूमिमें गिरन लाग्यो. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीनें आप तत्काल दोय भुजा और नीचे प्रगट करिकै पीताम्बर थांभ्यो. और दोय भुजानमें माखन दहींकी मथनियां लिये रहे, ता समै चतुर्भुज स्वरूपको कुम्भनदासजीकों दरसन भयो. ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी तो सखान सहित दूध दहीं माखन सब अरोगे, बच्यो सों बनचरनकों खवाय दियो. ताही समै वह गोपिका अपने घरमें दौरि आई, सो उहां देखे तो दहीं माखन श्रीठाकुरजी अरोगत हैं. तब वह गोपिका श्रीठाकुरजीकों पकरिवेकों दौरी. तब सखा तो सब भाजि गए. तब कुम्भनदासजी और श्रीगोवर्द्धननाथजी ठाढ़े रहि गये. सो जब वह गोपिका निकट आई तब श्रीगोवर्द्धननाथजी अपने श्रीमुखमें दूध भरिकै वा गोपिकाके मुख उपर डारे. सो या प्रकार वा गोपिकाके मुख उपर डारे, तो वाके सगरे मुख नेत्रनमें दूध भरि दियो. सो वह ठाड़ी होय रही. तब कुम्भनदासजी और श्रीगोवर्द्धननाथजी वहां तै भाजे. सो श्रीगोवर्द्धननाथजी आप तो अपने मन्दिरमें पधारे, और कुम्भनदासजी जमनावते गाममें अपने घर गये. ता समै मारगमें जात यह पद कुम्भनदासजीने गायो.

राग : सारङ्ग

आनि पाये हो हरि नीके ।
चोरि चोरि दधि माखन खायो गिरिधर दिन प्रतिही के ।।
रोक्यो भवन द्वार ब्रज सुन्दरि नूपुर मोर अचानक ही के ।
अब कैसे जइयत घर अपने में, भाजन फोरि दूध दधि पीके ।।
'कुम्भनदास' प्रभु भले परे फंद जान न देहों भावतें जी के ।

भरि गंडूष छींट दे नैननमें गिरिधर धाय चले दे कीके ।।

यह कीर्तन कुम्भनदासजी करत चले. चतुर्भुज स्वरूपको जो दरसन भयो हतो, सो कुम्भनदासजी ताके भावमें रससों भरे अपने आप घर आये. ताही समै कुम्भनदासकी स्त्रीके बेटा भयो. सो सुनिकै कुम्भनदासने कह्यो, जो या लरिकाका नाम चतुर्भुजदास है. पाछें उत्थापनके समै श्रीगुसांईजीके पास आयकै कुम्भनदासजीने दण्डवत् कियो, तब श्रीगुसांईजी मुसिक्यायकै कुम्भनदासजीसों पूछे, जो चतुर्भुजदास आछे है ? तब कुम्भनदासजीने बिनती कीनी, जो महाराज ! जाकै उपर आप ऐसीं कृपा करत हो सो तो सदा ही आछे हैं. ताको सब ठौर कल्यान ही है. तब श्रीगुसांईजी कुम्भनदासजीसों कहे, जो या पुत्रसों तुमकों बोहोत ही सुख होयगो. सो तुमारे मनमें जैसो मनोरथ हतो ताही भांतिसों तुमारे मनोरथ सब सिद्ध भये हैं. पाछें पिंडरु होय चुक्यो, तब कुम्भनदासजी आछे शुद्धि होय पुत्रकों स्नान करायो. और वाकों अपनी गोदिमें ले, श्रीगुसांईजीकों आयकै कुम्भनदासजीने दण्डवत् करी. पाछें चतुर्भुजदासकौ मस्तक श्रीगुसांईजीके चरनकमलसों परस करायकै कुम्भनदासजीने बिनती करी, जो महाराज ! कृपा करिकै चतुर्भुजदासको नाम सुनाइये. तब श्रीगुसांईजी आप मुसिक्यायकै कहे, जो राजभोग सरे पाछें नाम निवेदन दोइ सङ्ग करवावेंगे. यह सुनिकै चतुर्भुजदास ताही समै किलककै हंसे. तब कुम्भनदासजी हू मनमें बोहोत प्रसन्न भये. पाछें राजभोग सराइवेकौ समय भयो तब 'माला' बोली. तब श्रीगुसांईजीने भीतरियानकों आज्ञा दीनी, जो तुम बाहिर जाओ. तब सब भीतरिया, पौरिया सब बाहिर जाय बैठे. ता समैं मन्दिरमें श्रीगोवर्द्धननाथजी और कुम्भनदासजी (रहे). ता समय श्रीगुसांईजी चतुर्भुजदासकों नाम सुनाय, पाछें तुलसी ले कै कुम्भनदास तें कहे, जो चतुर्भुजदासकों (आगे) लाओ. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीके सन्मुख चतुर्भुजदासकों ब्रह्मसम्बन्ध करवायो. पाछें तुलसी श्रीगोवर्द्धननाथजीके चरणकमल पर समर्पे. सो ताही समय सगरी लीलाकी स्फुरति चतुर्भुजदासकों भई, और श्रीगुसांईजीकौ स्वरूप हृदयारूढ़ भयो. तब ताही समै चतुर्भुजदासने यह कीर्तन गायो. सो पद

राग : सारङ्ग

सेवककी सुखरासि सदा श्रीवल्लभराजकुमार ।

दरसन ही तें होत प्रसन्न मन श्रीपुरुषोत्तम लीला अवतार ।।
सुदृष्टि चितें सिद्धान्त बतायो लीला एक अनुसार ।
यह त्यजि आन ज्ञानकों धावत भूले कुमति विचार ।।
जाके कहे गही भुज दृढ करि श्रीगिरिधर नन्ददुलार ।
'चतुर्भुज' प्रभु उद्धरे पतित श्रीविटठल कृपा उदार ।।

यह कीर्तन चतुर्भुजदासने गायो, सो सुनिकै श्रीगुसांईजी बहोत प्रसन्न भये. और कुम्भनदासजी हू प्रसन्न भये. अपने मनमें आनन्द पाये, और कहे, जो मोकों जैसो मनोरथ हतो तैसे ही भगवदीयकौ सङ्ग मिल्यो. ता पाछें मन्दिरके किंवाड खुले. सब लोगनकों दरसन भये. पाछें श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धननाथजीकी आरती उतारिकै श्रीगोवर्द्धननाथजीकों अनोसर करवाये. और माला बीडा ले कै श्रीगुसांईजी परवत तें नीचे उतरि, अपनी बैठकमें पधारे. तहां सब वैष्णव हू आये. तहां कुम्भनदासजी हू चतुर्भुजदासकों ले के आये. तब सबनके आगे चतुर्भुजदास मुग्ध बालक होय चुप करि रहे. ता पाछें श्रीगुसांईजी सब वैष्णवनकों बिदा किये. पाछें आप श्रीगुसांईजी भोजन करिवेको पधारे. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप कृपा करिकै अपने श्रीहस्तसों कुम्भनदास, चतुर्भुजदासकों अपनी जूठनकी पातर धरी. सो उन दोउ जनेंनने महाप्रसाद लियो. पाछें श्रीगुसांईजी गादी उपर विराजे. सो आप बीड़ा अरोगत हतै, तब कुम्भनदासजी, चतुर्भुजदासजी आचमन करिकै श्रीगुसांईजीके पास आये. तब श्रीगुसांईजी कृपा करिकै दोउनकों न्यारो - न्यारो उगार दिये, सो कुम्भनदास चतुर्भुजदासने लियो. ता पाछें श्रीगुसांईजी विसराम करनकों पधारे. तब कुम्भनदासजी चतुर्भुजदासकों गोदिमें ले कै श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिकै जमनावते गाममें अपने घरमें आये. सो जब एकान्तमें कुम्भनदासजी बैठे होई तब चतुर्भुजदास श्रीगोवर्द्धननाथजीकी वार्ता, लीलाकौ भाव और श्रीआचार्यजी श्रीगुसांईजीकी वार्ता करें. तब दोउ जनें परस्पर आनन्दकों पावे. और जब कोऊ तीसरो जनो आवे तब चतुर्भुजदास बालककी नांई मुग्ध होय रहे. और जा दिन तें चतुर्भुजदास नाम - समर्पन पाये हते ता दिन तें श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन किये बिना चतुर्भुजदास दुध हू न पीवते. ऐसे करत - करत बरस पांचके भये. सो चतुर्भुजदास नेमसों दरसन करते. सों वे चतुर्भुजदास ऐसे भगवदीय हते.

वार्ता प्रसङ्ग २ :

और एक दिन श्रीनाथजीने कह्यो, जो चतुर्भुजदास ! आज तू मेरे साथ गाय चरावनकों चलियो. तब चतुर्भुजदास राजभोग आरतीके दरसन करिकै आप गोविन्दकुण्ड उपर जायकै बैठि रहे. तब मन्दिरमें कुम्भनदासजीने सबनसों पूछी, जो चतुर्भुजदास आज कहां गयो ? तब सबनने कह्यो, जो दर्शनमें तो देखे हे, और पाछें तो हमने देखे नाहीं. तब कुम्भनदासजी अपने मनमें विचार करन लागे, जो चतुर्भुजदास कहां गयो ? पाछें श्रीगुसांईजी (जब) श्रीगोवर्द्धननाथजीकों अनोसर करायकै अपनी बैठकमें बिराजे. तब कुम्भनदासजीने आयकै दण्डवत् कीनी. तब श्रीगुसांईजीने कुम्भनदाससों कह्यो, जो कुम्भनदास ! तुम उदास क्यों हो ? तब कुम्भनदासजीने कह्यो, जो महाराज ! चतुर्भुजदास आज दर्शनमें तो हतो, सो अब नाहीं देखियत है, सो कहां गयो ? तब श्रीगुसांईजीने कुम्भनदाससों कह्यो, जो तुम आज पाछें चतुर्भुजदासकी चिन्ता मति करो. श्रीगोवर्द्धननाथजी वाकों आज्ञा किये हैं, जो तू मेरे सङ्ग गाय चरावनकों चलि हो. तातें चतुर्भुजदास श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करिकै तत्काल गोविन्दकुण्डके उपर जायकै बैठ्यो है. सो अब श्रीगोवर्द्धननाथजी गायनकों, चतुर्भुजदासकों सङ्ग ले कै बनमें पधारत हैं, श्रीबलदेवजी सखान सहित. सो अब कोई घड़ी एकमें श्यामढाककों पधारेंगे. सो तुमकों जानो होय तो सूधे श्यामढाककों जाओ. तहां श्रीगोवर्द्धननाथजी, चतुर्भुजदास समाज सहित मिलेंगे. यह सुनिकै कुम्भनदास तहां तें चले, सो सूधे श्यामढाककों आये. तहां देखै, तो श्रीठाकुरजी, श्रीबलदेवजी सहित बिराजत हैं. सो सखा तो सब बैठे हैं, और चहुं दिस गाय सब चरत हैं. तब कुम्भनदासजीने जायकै दण्डवत् कीनी. तब श्रीगोवर्द्धननाथजीने कुम्भनदासजी ते हंसिकै कह्यो, जो कुम्भनदास ! आऔ बैठो. तब कुम्भनदासजीने श्रीगोवर्द्धननाथजीकों दण्डवत् कीनी, फेर बिनती कीनी, जो महाराज ! आज चतुर्भुजदास पर बड़ी कृपा करी. तातें याके परम भाग्य हैं. यह सुनिकै श्रीगोवर्द्धननाथजी चुप होय रहै. सो या भांति श्रीगोवर्द्धननाथजी चतुर्भुजदासके उपर कृपा करन लागे.

वार्ता प्रसङ्ग ३ :

और एक समै श्रीगोवर्द्धननाथजी ब्रजवासिनके घर दुध, दहीं, माखनकी चोरी करनकों पधारे. तब चतुर्भुजदासकों यह आज्ञा करे, जो

कुम्भनाके ! तू हू चलियो. सो जायकै एक ब्रजवासीके घरमें पैठे. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी दुध दहीं माखन सब खाये. ता पाछें वा ब्रजवासीकी बेटीने चतुर्भुजदासकों देखे. श्रीठाकुरजी तो वासों दीसे नाहीं. तब वह अपने बापकों पुकारी, जो या कुम्भनाके बेटाने हमारो दुध, दहीं माखन सब खायो है. तब यह बात सुनिकै दस पांच ब्रजवासी दौरि आये. तब श्रीठाकुरजी तो सखान सहित भाजि गये, वे तो चोरीकी रीत जानत हते. और चतुर्भुजदास तो प्रथम ही इनके सङ्ग आये हते. सो ये तो कछु जानत नाहीं. तातें उहां ठाड़े होय रहें. सो सब ब्रजवासी आयकै चतुर्भुजदासकों पकरिकै भली भांतिसों मार्यो. पाछें वे ब्रजवासी चतुर्भुजदास तें कहें, जो आज पाछें कबहू चोरी करनकों पैठेगो तो हम तेरे बाप कुम्भनाकों पकरि लावेंगे. ऐसे कहिकै ब्रजवासिनने चतुर्भुजदासकों छोड़ि दियो. तब चतुर्भुजदास श्रीगोवर्द्धननाथजीके पास आये. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी सखान सहित बोहोत ही हंसे. तब चतुर्भुजदासने श्रीगोवर्द्धननाथजीसों कह्यो, जो महाराज ! दुध, दहीं, माखन तो सखान सहित आप अरोगे, और मोकों खवाई ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजीने चतुर्भुजदाससों कह्यो, जो तैंने हू दूध, दही, माखन क्यों न खायो ? और जहां मैं भाज्यो और सब सखा भाजे, तहां तू हू क्यों न भाज्यो ? तू क्यों मार खाय रह्यो ? तब चतुर्भुजदास सुनिकै चुप होय रहे. सो वे चतुर्भुजदास श्रीगोवर्द्धननाथजीके तथा श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये.

वार्ता प्रसङ्ग ४ :

और एक समै कुम्भनदासजी और चतुर्भुजदास 'जमुनावता' गाममें अपने घरमें बैठे हुते, सो अर्द्ध रात्रिके समय श्रीगोवर्द्धननाथजीके मन्दिरमें दीया बरत देखे. तब कुम्भनदासजीने चतुर्भुजदाससों यह सुनायकै कही, जो

वे देखो बरत झरोखन दीपक हरि पोढ़े उंची चित्रसारी ।

सो कुम्भनदासजी इतनोक कहिकै चुप होय रहे. तब यह सुनिकै चतुर्भुजदासने कह्यो, जो-

सुन्दर बदन निहारन कारन राखे हैं बहुत जतन करि प्यारी

यह सुनिकै कुम्भनदासजी बोहोत प्रसन्न भये. और पूछ्यो, जो तोकों या लीलाकौ अनुभव भयो ? तब चतुर्भुजदासने कुम्भनदासजी तें कह्यो, जो श्रीगुसांईजीकी कृपा तें और श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकी कानि ते यह लीलाकौ अनुभव श्रीगोवर्द्धननाथजी आप जतावत है. तब कुम्भनदासजी यह सुनिकै आपु बहोत प्रसन्न भये. और यह कीर्तन सम्पूर्ण करिकै भाव सहित चतुर्भुजदासकों सुनायो. सो पद

राग : बिहाग
वे देखो बरत झरोखन दीपक हरि पोढ़े उंची चित्रसारी ।
सुन्दर बदन निहारन कारन राखे हैं बोहोत जतन करि प्यारी ।।
कण्ठ लगाय भुज दे सिरहाने अधर अमृत पीवत पिय प्यारी ।
तन मन मिली प्रान प्यारे सौं नौतन छबि बाढी अति भारी ।।
'कुम्भनदास' प्रभु सौभग सींवा जोरी भली बनी इकसारी ।
नवनागरी मनोहर राधे नवल लाल श्रीगोवर्द्धनधारी ।।

और चतुर्भुजदाससों कुम्भनदासने कह्यो, जो श्रीगोवर्द्धननाथजी आप तोसों छिपाये नाहीं तो मैं हूं तोसों न छिपाउंगो. ता दिनतें कुम्भनदासजी रहस्य लीला वार्ता सब चतुर्भुजदाससों करते. कछु गोप्य न राखते. सो वे कुम्भनदासजी, चतुर्भुजदास श्रीगोवर्द्धननाथजीके ऐसे अन्तरङ्गी सखा हते, कृपापात्र भगवदीय हते.

वार्ता प्रसङ्ग ५ :
और एक दिवस श्रीआचार्य महाप्रभुनको जनम दिवस आयो. तब श्रीगुसांईजी श्रीनाथजीद्वार हते सो नाना प्रकारकी सामग्री सिंगार सब जन्माष्टमीकी रीत करी. ता समय श्रीगोवर्द्धननाथजीके सिंगारके दर्शन करिकै चतुर्भुजदासने यह कीर्तन सुनायो, सो पद

राग : बिलावल

सुभग सिंगार निरखि मोहनकौ ले दरपन कर पिय ही दिखावे ।
आपुन नेक निहारिए बलि जाऊं आजकी छबि कछु कहत न आवे ।।
भूषन बसन रहे फबि ठांय ठांय अङ्ग अङ्ग शोभा चित्त हि चुरावे ।
रोम रोम प्रफुलित ब्रजसुन्दरि फूलन रचि रचि माल बनावे ।
अञ्चल वारि करति नोछावरि तनमन अति अभिलाख बढावे ।
'चतुर्भुज प्रभु' गिरिधरका स्वरूप सुधा पीवत नेनन पुट तृपति न पावे ।।

यह कीर्तन चतुर्भुजदासने गायो, सो सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत ही प्रसन्न भये. ता पाछें श्रीगुसांइजी राजभोग धरिकै गोविन्दकुण्डपै सन्ध्यावन्दन करिवेकों पधारे. तब चतुर्भुजदास और एक वैष्णव श्रीगुसांईजीके साथ हते. तब श्रीगुसांईजीसों वा वैष्णवने पूछ्यो, जो महाराज ! आप तो नित्य ही भांति - भांति सों सिंगार करत हो, दरसन करावत हो, दरसन दिखावत हो. और चतुर्भुजदासने तो आज कीर्तनमें कह्यो, जो ''आजकी छबि कछु कहत न आवे'' जो महाराज ताको कारन कहा ? तब श्रीगुसांईजीने आप श्रीमुख तें वा वैष्णवसों कह्यो, जो तुम यह बात चतुर्भुजदास ही तें पूछो. तब वा वैष्णवने चतुर्भुजदाससों पुछ्यो, जो तुम आज यह कीर्तन किये, ताको कारन कहा ? तब चतुर्भुजदासने वा वैष्णवसों कह्यो, जो सुनो ! ता पाछें चतुर्भुजदासने तहां गोविन्दकुण्ड उपर दूसरो पद गायो, सो पद

राग : बिलावल

माईरी आज और काल्हि और दिनप्रति और और देखिए रसिक श्रीगिरिराजधरन ।
छिन प्रति नव छबि बरनेसो कौन कवि नित ही सिंगार बागे बरन बरन ।।१।।
सोभा सिन्धु अङ्ग अङ्ग मोहित कोटि अनङ्ग छबिकी उठत तरङ्ग विश्वकौ मन हरन ।
'चतुर्भुजप्रभु' गिरिधरकौ स्वरूप सुधा पान कीजे जीजे रहिए सदा ही सरन ।।२।।

यह कीर्तन चतुर्भुजदासने गायो, तब श्रीगुसांईजी आप चतुर्भुजदासकी ओर देखिकै मुसिकाये. ता पाछें वह वैष्णवकों और हू सन्देह भयो. जो चतुर्भुजदासजीने दोय कीर्तन किये ताको भेद मैंने न जान्यो. पाछें श्रीगुसांईजी आप सन्ध्यावन्दन करि चुके तब राजभोगकौ समय भयो हतो. सो श्रीगुसांईजी तो मन्दिरमें पधारे. ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ राजभोग सरायकै राजभोग आरति करिकै श्रीगोवर्द्धन पर्वततें नीचे उतरे. पाछें बैठकमें आयकै श्रीगुसांईजी आप गादी उपर बिराजे. पाछें सब वैष्णवनकों बिदा करिकै श्रीगुसांईजी आपु भोजनकों पधारे. सो भोजन करिकै आचमन ले कै श्रीगुसांईजी आप गादी उपर बिराजे, बीड़ा अरोगत हते. तब सब वैष्णव तो अपने - अपने डेरा गये हुते, और श्रीगुसांईजीसों वा वैष्णवने बिनती करी, जो महाराज ! आज चतुर्भुजदासने दोय कीर्तन सिंगारके समै किये तिनकौ भेद मैं न समझ्यो, जो आप कृपा करिकै मेरो सन्देह दूरि करो. तब श्रीगुसांईजी आप वा वैष्णवसों कहे, जो आज श्रीआचार्यजी महाप्रभुनकौ जनम उत्सव हतो. तातें आज श्रीस्वामिनीजी अपने - अपने मनोरथकी सामग्री, सब सिंगार अपने हाथसों धराये हैं. तातें श्रीगोवर्द्धननाथजी आप बोहोत ही प्रसन्न भये हैं. यातें चतुर्भुजदासने कह्यो, जो ''आज और काल और, जो आजकी छबि कछु कहत न आवे''. और गोविन्दकुण्डपै दूसरो कीर्तन कियो, ताकौ भाव ये है, जो नित्य जितने ब्रजभक्त हैं सो अपने - अपने मनोरथकी सामग्री धरावत हैं. अपने - अपने वस्त्र आभूषन धरावत हैं. तातें 'आज और' सो क्षण - क्षण में अनेक ब्रजभक्तनकौ सनमान करत हैं. सो जैसो ब्रजभक्तकौ भाव है, जो उनके मनोरथ हैं, तैसे श्रीगोवर्द्धननाथजी आप हु उनके मनोरथ सिद्ध करत हैं. तातें क्षण - क्षण में श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सोभा होत है. जो या भांतिसों श्रीगुसांईजी वा वैष्णवसों कहे. तब वा वैष्णवने अपने मनमें कही, जो या चतुर्भुजदासकौ बड़ो भाग्य है, जो श्रीगोवर्द्धननाथजी सब लीला सहित दरसन देत हैं. सो वे चतुर्भुजदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये.

वार्ता प्रसङ्ग ६ :

और एक समय 'आन्योर' में रासधारी आये हते. सो श्रीगुसांईजी तो श्रीगोकुल हते. और श्रीगिरिधरजी, श्रीगोविन्दरायजी, श्रीबालकृष्णजी, श्रीगोकुलनाथजी और श्रीरघुनाथजी ए पांचो बालक श्रीनाथजीद्वार हते. और जदुनाथजी, श्रीगोकुलमें हे और श्रीघनश्यामजीकौ प्रागट्य भयो

न हतो. सो ए रासधारी श्रीगोकुलनाथजीके पास आए. और बहोत बिनती कीनी, जो आप पधारो तो हम रास करें. तब श्रीगोकुलनाथजीने रासधारीन तें कह्यो, जो मैं श्रीगिरिधरजी तें पूछिकै कहुंगो. ता पाछें जब श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेन आरती होय चुकी और अनोसर भये, पाछें श्रीगोकुलनाथजी श्रीगिरिधरजीसों पूछ्यो, जो तुम कहो तो मैं रास कराउं, और हू बालकनकौ मन है, और तुम हू रासमें आओ तो आछो है. तब श्रीगिरिधरजीने कह्यो, जो इहां श्रीगुसांईजी तो है नाहीं, होते तो उनते पूछिकै रास करावते. तातें मति (कहुं) मेरे उपर श्रीगुसांईजी आप खीजे तो. तातें तुमारो मन होय तो परासोली चन्द्रसरोवरके उपर रास करावो. और मेरो आवनो तो न होयगो. तब श्रीगोकुलनाथजी आदि दे कै सब बालक रासधारीनकों लै कै सङ्ग, परासोली चन्द्रसरोवरपें आये. सो श्रीगोकुलनाथजी चतुर्भुजदास हू कों अपने सङ्ग लै गये हते. और श्रीगिरिधरजी तो आप श्रीगुसांईजीकी बैठकमें सेन कर रहे हते. सो जब प्रहर एक रात्रि गये तब चन्द्रसरोवरपै रासका मण्डान भयो. चैत्र सुदी पूर्णिमाकौ दिन हुतो. सो जब तीन प्रहर रात्रि गई और एक प्रहर रात्रि रही, तब श्रीगोकुलनाथजी चतुर्भुजदाससों कह्यो, जो चतुर्भुजदास ! कछु गाओ. तब चतुर्भुजदासने कह्यो, जो मैं तो श्रीगोवर्द्धननाथजीकों रास करत देखों तब गाऊं, जो रासके करनवारे तो श्रीगिरिधरजीके निकट हैं. तब श्रीगोकुलनाथजीने चतुर्भुजदाससों कही, जो अब कहा करिये ? रात्रि प्रहर तो एक बाकी रही है, और अब, जो बुलायवे जइये तो जात आवत ही में भोर होय जाय. फेर उनके मनमें आवे तो वे आवें, नांतरु नाहीं आवें. जो अब कहा करिये ? तब चतुर्भुजदासने कह्यो, जा चिन्ता मति करो. कोई एक घड़ीमें श्रीगोवर्द्धननाथजी और श्रीगिरिधरजी इहां पधारत हैं. ताही समै श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीगिरिधरजीकी बैठकमें श्रीगिरिधरजीके पास पधारे, और उनसों कह्यो, जो परासोली चन्द्रसरोवर उपर चलें, जो उहां रास करिये. तब श्रीगिरिधरजी तहां तैं अकेले ही चलै, सो दोऊ जने चन्द्रसरोवर उपर आये. तब रासधारीनकों श्रीगिरिधरजीके दर्शन भये, और श्रीगोवर्द्धननाथजीके दर्शन भये. और सब बालकनकों दर्शन भये. पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी अपने ब्रजभक्तनके सङ्ग रासलीला करी, सो रात्रि हू बढ़ि गई, और चन्द्रमा हू और भांतिसों सोभा देन लाग्यो ता समय चतुर्भुजदासने यह कीर्तन गायो. सो पद -

राग : केदारो

अद्भुत नट भेख धरे जमुना तट स्यामसुन्दर गुन - निधानि गिरिवरधरन रासरङ्ग राचे ।

जूवती जूथ सङ्ग मिलि गावत केदारो राग अधर बेनु मधुर - मधुर सप्त सुर सांचे ।।
उरप तिरप लाग डाट ततततततथेई उघटत सब्दावली गति भेद कोऊ न बांचे ।
'चतुर्भुज प्रभु' बन बिलास मोहे सब सुर आकास निरखि थक्यो चन्दरथ पश्चिमके खांचे ।।

यह कीर्तन चतुर्भुजदासने गायो, तब सुनिकै श्रीगोवर्द्धननाथजी आज्ञा करे, जो चतुर्भुजदास ! यह बिरियां कौन है ? तब चतुर्भुजदासने वह दूसरो पद गायो. सो पद

राग : भैरव
प्यारी भुज ग्रीवा मेलि निर्तत पिय सुजान ।
मुदित परस्पर लेत गति मै सुगति गुण रास राधे गिरिधर गुन निधान ।।
सरस मुरली धुनि मिले मधुर सुर रासरङ्ग भीने गावे ओघट तान बन्धान ।
'चतुर्भुज प्रभु' स्याम स्यामा की नटनि देखि मोहे खग मृग वन थकित व्योम विमान ।

यह कीर्तन चतुर्भुजदासने गायो, सो सुनिकै श्रीगोवर्द्धननाथजी बोहोत प्रसन्न भये, और चतुर्भुजदासके सामने मुसिक्याए. तब चतुर्भुजदासने जान्यो, जो मेरो भाग्य है. सो ऐसे - ऐसे बहोत कीर्तन चतुर्भुजदासने रासके गाये. ता पाछें रात्रि घड़ी दोय रही, तब श्रीगोवर्द्धननाथजी आप मन्दिरमें पधारे. पाछें श्रीगिरिधरजी चतुर्भुजदासकों सङ्ग लै कै गोपालपुर आये. ता पाछें रासधारीनकों श्रीगोकुलनाथजीने कछु द्रव्य देकै विदा किये, पाछें सब बालकन सहित आप गोपालपुर आये. ता पाछें कछुक दिन रहिकै श्रीगोकुल पधारे. ता पाछें जब श्रीगुसांईजी श्रीगोकुल तें श्रीनाथजीद्वार पधारे, तब श्रीगिरिधरजीने रासकै समाचार सब कहे, श्रीगुसांईजीसों. तब श्रीगुसांईजी आप आज्ञा किये, जो आपुनकों श्रीगोवर्द्धननाथजीसों हठ करनो योग्य नाहीं. श्रीगोवर्द्धननाथजीकों श्रम होत है, और श्रीगोवर्द्धननाथजी तो अपनी इच्छा तें नित्य रास करत हैं. सो या भांतिसों श्रीगुसांईजी श्रीगिरिधरजीसों कह्यो. तब सुनिकै श्रीगिरधरजी चुप करि रहे. सो वे चतुर्भुजदास

श्रीगोवर्द्धननाथजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते.

वार्ता प्रसङ्ग ७ :
और एक दिन श्रीगुसांईजी चतुर्भुजदाससों कहै, जो तुम 'अपछरा' कुण्ड उपर जायकै रामदासजीकों इहां पठाय दीजो, और तुम रामदासकों पठायकै कछु फूल मिले तो लेते आइयो. तब चतुर्भुजदास आप अपछराकुण्ड उपर आये, तहां इनकों रामदासजी मिले. तिनसों चतुर्भजदासने कही, जो तुमकों श्रीगुसांईजी बुलावत हैं, सो तुम बैगे जाओ. यह सुनिकै रामदासजी श्रीगुसांईजीके पास चले, सो चतुर्भुजदास अकेले ही फूल बीनत बीनत श्रीगोवर्द्धनकी कन्दराके पास आय निकसे. तहां देखे तो श्रीगोवर्द्धननाथजी और श्रीस्वामिनीजी कन्दरामें तें उनींदे पधारे हैं. सो चतुर्भुजदासकों ता समय ऐसे दरसन भये. तब यह पद चतुर्भुजदासने गायो, सो पद

राग : बिभास
श्रीगोवर्द्धन गिरिसघनकन्दरा रैन निवास कियो पिय प्यारी ।
उठि चले भोर सुरत रङ्ग भीने नन्दनन्दन वृषभानदुलारी ।।
इत विगलित कच माल मरगजी अटपटे भूखन रगमगी सारी ।
उतही अधर मसि पाग रही धसि दुहुं दिस सोभा बाढ़ी अति भारी ।।
घूमत आवत रतिरन जीते करनी सङ्ग गजवर गिरिधारी ।
'चतुर्भुज प्रभु' निरखि दम्पति छबि तन मन धन कीनो बलिहारी ।।

यह कीर्तन श्रीगोवर्द्धननाथजी आप सुनिकै आज्ञा किये, जो चतुर्भुजदास कछु और गावो. तब चतुर्भुजदासने यह दूसरो कीर्तन ताही समै गायो. सो पद

राग : ललित

रजनीराज लियो निकुञ्ज नगरकी रानी ।
मदन महिपति जीत महारन श्रम - जल सहित जृम्भानी ।।१।।
परम सूर - सौन्दर्य भ्रकुटी - धनुष अनियारे नयन - बाण संधानी ।
'दास चतुर्भुज प्रभु' गिरिधर रससम्पत्ति विलसत ज्यों मनमानी ।।२।।

यह कीर्तन चतुर्भुजदासने गायो. पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीकों दण्डवत् करिकै ताही समै चतुर्भुजदास आनन्दमें फूल लेकै, श्रीगुसांईजीकों आयकै दण्डवत् करे. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो चतुर्भुजदास ! तू फूल लेनकों गयो सो अब तांई कहां रह्यो ? तब चतुर्भुजदासने सब समाचार श्रीगुसांईजीसों कहे. तब श्रीगुसांईजी सुनिकै चतुर्भुजदासके उपर बहोत प्रसन्न भये. ता दिन तें श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख तें आज्ञा किये, जो चतुर्भुजदास ! जब श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ शृङ्गार होय, ता समै तू नित्य दरसनकों आयो करि. पाछें जब श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ शृङ्गार होतो तब चतुर्भुजदास ठाड़े दरसन करते.

वार्ता प्रसङ्ग ८ :

फेर पाछें चतुर्भुजदास ब्याह न करते. तब श्रीगोवर्द्धननाथजीने चतुर्भुजदाससों कह्यो, जो चतुर्भुजदास ! तू ब्याह करि. तब चतुर्भुजदासने कही, जो महाराज ! मैं यह सुख छांड़िकै आपदामें क्यों परौं ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजीने फेर आज्ञा करी, जो बेगि ब्याह करि. तब श्रीगोवर्द्धननाथजीकी आज्ञा मानिकै चतुर्भुजदासने ब्याह कर्यो. सो कछुक दिन पाछें चतुर्भुजदासकी बहू मरि गई. तब चतुर्भुजदासकों अटकाव (सूतक) भयो, तब वे अत्यन्त विरह करिकै आतुर भये. तब चतुर्भुजदासके अन्तःकरणकी श्रीगोवर्द्धननाथजीने जानी. सो बनमें चतुर्भुजदास बैठे - बैठे विरह करते. सो कीर्तन करिकै दिन बितीत किये. ता समै चतुर्भुजदासने कीर्तन गाये. सो पद

राग : भैरव

भोर भांवतो श्रीगिरिधर देखों ।
सुभग कपोल लोल लोचन छबि निरखि नैन सुफल करि लेखों ।।१।।
नखसिख रूप अनूप बिराजत सोभा मन्मथ कोटि विसेखों ।
'चतुर्भुज' प्रभु रसरास रसिककौ परम भाग बलि झकटक पेखों ।।२।।

राग : ललित
स्याम सुन्दर प्रान प्यारे छिन जिनि होऊ न्यारे ।
नेनकी ओट मीन ज्यों तलफत इन नैननके तारे ।।१।।
मृदुमुसिकान बंक बिलोकत डगमग चलत सहज में सुढ़ारे ।
'चतुर्भुज प्रभु' गिरिधरकी बानिक पर कोटिक मन्मथ वारे ।।२।।

राग : धनाश्री
गौपालकौ मुखारविन्द जियमें विचारों । कोटि भान कोटि चन्द मदन कोटि वारों ।।१।।
सरस सरोज सुधा नैन भर पाई । सुख समुद्र सो कापे कहिय जाई ।।२।।*
धर्म अर्थ काम मोक्ष सबही जाके हाथ ।
'चतुर्भुज प्रभु' गोवर्द्धनधर श्रीगोकुलके नाथ ।।३।।

(* कमल नैन चारु बैन मधुर हास सोहे । बंकन अवलोकन पर जुवती सब मोहे । एसो हू पाठ है.)

ऐसे - ऐसे प्रार्थनाके चतुर्भुजदासने बहोत कीर्तन करिकै सूतकके दिन बितीत किये, ता पाछें शुद्ध होईकै श्रीनाथजीके शृङ्गारके दरसन

चतुर्भुजदासने किये. तब साष्टाङ्ग दण्डवत् करिकै हाथ जोरिकै श्रीगोवर्द्धननाथजीके साम्हैं चतुर्भुजदास ठाढ़े भये. तब श्रीनाथजी उनकी सामने देखिकै मुसिक्याये. ता पाछें ग्वालके, राजभोगके दरसन करिकै चतुर्भुजदास मनमें विचारे, जो घर चलिये. तब फेर श्रीगोवर्द्धननाथजी चतुर्भुजदाससों कहें, जो चतुर्भुजदास ! तू दूसरो विवाह करि. तब चतुर्भुजदास तो ने कही, जो महाराज ! जातिमें लरिकिनी कोई नाहीं है. तब श्रीगोवर्द्धननाथजीने चतुर्भुजदाससों फेरि कह्यो, जो तू धरेजा करि. तब वह बात सुनिकै चतुर्भुजदास कछु बोले नाहीं. ता पाछें नित्य दिन ५ - ७ लों आप श्रीगोवर्द्धननाथजी कहे, परन्तु चतुर्भुजदासके मनमें यह बात न आई. तब यह बात श्रीनाथजीने सदूपांडेसों जताई, जो तुम ढूंढिकै चतुर्भुजदासकौ धरेजो कराय देउ. तब सदूपांडेने चतुर्भुजदास तें कही, जो श्रीगोवर्द्धननाथजीने यह आज्ञा करी है, तातें अवश्य श्रीप्रभुजीकी आज्ञा करी चहिये. तब चतुर्भुजदासने कही, जो वे तो मेरे पाछें परे हैं, अब कहा करें ? ता पाछें एक मुकदमकी बेटी रांड हती, सो वासों सदूपांडेने कहिकै चतुर्भुजदासकौ धरेजो करायो. ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजी चतुर्भुजदाससों हसन लागे, जो यह देखो कुम्भनदासजी सरिखेकौ बेटा होयकै, स्त्री मरि गई तोऊ दोई च्यारि महिना हू न रह्यो गयो, सो तुरत ही धरेजो कियो, और तोहू सन्तोष नाहीं. सो या भांतिसों चतुर्भुजदासकी हांसी श्रीगोवर्द्धननाथजी सखा सहित नित्य करते. सो एक दिन चतुर्भुजदासने हू यह सुनी, सो श्रीगोवर्द्धननाथजीसों कह्यो, जो मोकों तो तुम नित्य ऐसे कहत हो, परन्तु तुम हू तो घर - घर ब्रजवधूनके सङ्ग लागे रहत हो, (और) सङ्ग डोलत हो. यह सुनिकै श्रीगोवर्द्धननाथजी लज्ज्या पाये. सो चतुर्भुजदास तें तो कछु बाले नाहीं, परि श्रीगोवर्द्धननाथजी (ने) श्रीगुसांईजीसों जायकै कह्यो, जो मोकों चतुर्भुजदास या भांतिसों कहत है. तातें तुम वाकों बरजि दीजो, जो अब ऐसे कबहु न कहे. पाछें जब चतुर्भुजदास मन्दिरमें दरसन करनकों आये तब श्रीगुसांईजी चतुर्भुजदासकों बुलायकै कहे, जो तू श्रीगोवर्द्धननाथजीसों ऐसे क्यों कह्यो ? तब चतुर्भुजदासने श्रीगोवर्द्धननाथजीकी बात सब श्रीगुसांईजीके आगे कही, जो महाराज ! ये मेरी नित्य हांसी करत हैं, जो एक बार मैंने हू ऐसे कह्यो. तब श्रीगुसांईजीने चतुर्भुजदाससों कह्यो, जो आज पाछें ऐसे तुम मति कहियो. ता दिन तें श्रीगोवर्द्धननाथजी कहते, परि चतुर्भुजदास कछु न कहते. और श्रीनाथजी आप तो हांसी करते. ऐसी कृपा श्रीगोवर्द्धननाथजी चतुर्भुजदासकी उपर करते. सो वे चतुर्भुजदास श्रीगोवर्द्धननाथजीसों ऐसे सानुभावतासों बातें करते. तातें वे चतुर्भुजदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते.

वार्ता प्रसङ्ग ९ :

और एक समय श्रीगुसांईजी आप परदेस पधारे. सो फागुन वद ७ कों श्रीगोवर्द्धननाथजी आप मथुरामें श्रीगुसांईजीके घर पधारे हते. तब श्रीगिरिधरजी आदि सब बालक बहू - बेटीन ने सगरो घर, गहेना, वस्त्रादि सब श्रीगोवर्द्धननाथजीकी भेंट करि दियो. तब एक बेटीजीने सोनीकी मुंदरी छिपाय राखी हती. तब श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीगिरिधरजीसों कहे, जो मेरी भेंट फलानी बेटीके पास है, सो तुम लै आओ. तब गिरिधरजीने आयकै कह्यो, जो अपनो घर श्रीगोवर्द्धननाथजीकी भेंट कर्यो है, तामें तें तुम कछु राख्यो है, सो देहु. तब उनने मुन्दरी राखी हती सो दीनी. ता पाछें सब बहू बेटी बोहोत ही प्रसन्न भये, जे हमारी सत्ताकी वस्तु श्रीगोवर्द्धननाथजीने अत्यन्त प्रीतिसों मांगिकै अङ्गीकार कीनी, सो अपनो बड़ो भाग्य है. सो जा समै श्रीगोवर्द्धननाथजी मथुरा पधारे, ता समै चतुर्भुजदास जमुनावता अपने घर हते. सो जान्यो नांही, जो श्रीगोवर्द्धननाथजी आप मथुरा पधारे हैं. सो चतुर्भुजदास उत्थापनके समै श्रीनाथजीके मन्दिरमें आये. तब श्रीगिरिराज पर्वतके उपर श्रीनाथजीकों न देखे. तब सबनसों पूछे, जो श्रीगोवर्द्धननाथजी आप कहां पधारे हैं ? तब पौरियाने और सब सेवकनने कह्यो, जो श्रीनाथजी तो मथुराजी पधारे हैं. यह सुनिकै चतुर्भुजदासके मनमें बोहोत विरह भयो तब श्रीगिरिराजके उपर बैठिकै विरहके कीर्तन करन लागे. सो पद

राग : गौरी

बात हिलगकी कासों कहिए ।
सुनरी सखी बिबस्था या तनकी समझ समझ मन चुप करि रहिए ।
मरमी बिना मरमको जाने यह उपहास जानि जग सहिए ।
'चतुर्भुजप्रभु' गिरिधरन मिले जब तब ही सब सुख लहिए ।।

राग : गोरी

मोहन मोहनी पढ़ि मेली ।

मुख देखत तनदसा भुलानीको घर जाय सहेली ।
काके तात भ्रात अरु माताको पति नेह नवेली ।
काके लोक - लाज और कुल - डरको बन फिरत अकेली ।
याही ते कहति मूल मन्त्र तोसों एक सङ्ग मिलि खेली ।
'चतुर्भुजप्रभु' गिरिधर रस अटकी श्रुति मरजादा पेली ।

ऐसे ऐसे कीर्तन चतुर्भुजदासने बोहोत किये ।

ता पाछें नृसिंह चतुर्दशीको एक दिवस बाकी रह्यो, तब तेरसके दिन सन्ध्याआर्तिके समय चतुर्भुजदास गिरिराज पर्वतके उपर आये. सो श्रीगोवर्द्धननाथजी बिना मन्दिर देख्यो न गयो. तब चतुर्भुजदासके मनमें अत्यन्त विरह भयो. तब यह कीर्तन चतुर्भुजदासने कियो. सो पद

राग : गोरी
श्रीगोवर्द्धनवासी सांवरे लाला, तुम बिनु रह्यो न जाय हो ।
ब्रजराज लडेतें लाडिले ।।ध्रुव.।।
बंक चिते मुसिकाइकै लाल, सुन्दर बदन दिखाय ।
लोचन तलफे मीन ज्यों लाल, पल छिनु कल्प बिहाय हो ।।ब्रज.१।
सप्त सुरन बंधान तें लाल, मोहन बेनु बजाउ ।
सुरत सुहाई बांधिकैनेक, मीठे मधुरे स्वर गाउ हो ।।ब्रज.२।
रसिक रसिली बोलनी लाल, गिरि चढ़ि गैयां बुलाउ ।
गांग बुलाई धुमरी नेक, उंची टेर सुनाउ हो ।।ब्रज.३।

दृष्टि परे जा दिवस तें लाल, तब तें रुचे नहीं आन ।
रजनी नींद न आवही, मोहि बिसर्यो भोजन पान हो ।।ब्रज.४।
दरसनकों नैनां तपे लाल, बचन सुननकों कान ।
मिलिवेकों हियरा तपे, मेरे जियके जीवन प्रान हो ।।ब्रज.५।
मन अभिलाखा यह रहे लाल, लागे न नयन निमेष ।
इक टक देखों आंवतो प्यारो, नागर नटवर भेष ।।ब्रज.६।
पूरन ससी मुख देखिकै लाल, चित्त चोट्यो वाही ओर ।
रूप सुधारस पानकै लाल, सागर कुमुद चकोर हो ।।ब्रज.७।
लोक लाज कुल वेदकी लाल, छांड्यो सकल विवेक ।
कमल कली रवि ज्यों बढ़े लाल, छिनु छिनु प्रीति बिसेस ।।ब्रज.८।
मनमथ कोटिक वारने लाल, निरखि डगमगी चाल ।
जुवती जन मन फंदना लाल, अम्बुज नैन विसाल ।।ब्रज.९।
यह रट लागि लाडिले लाल, जैसे चातक मोर ।
प्रेम नीर बरखा करो पिय, नवघन नन्दकिसोर ।।ब्रज.१०।
कुंज भवन क्रीडा करो लाल, सुखनिधि मदन गोपाल ।
हम श्रीवृन्दावन मालती, तुम भोगी भंवर भूपाल ।।ब्रज.११।
जुग - जुग अविचल राजिए लाल, यह सुख शैल निवास ।
श्रीगोवर्द्धनधर रूप पर, बलिहारी 'चतुर्भुजदास' ।।ब्रज.१२।।

या भांतिसों अत्यन्त विरहके कीर्तन चतुर्भुजदासने किये. सो प्रथम तो गायनके झुंडनके दर्शन चतुर्भुजदासकों भये. ता पाछें सखानके मध्य

श्रीगोवर्द्धननाथजी श्रीबलदेवजीके दरसन भये. तब चतुर्भुजदासने निकट जायकै दण्डवत् करिकै श्रीनाथजीसो बिनती कीनी, जो महाराज ! आप कृपा करिकै मोकों श्रीगोवर्द्धनपर्वत उपर दरसन कब देउगे ? तब श्रीगोवर्द्धननाथजी चतुर्भुजदाससों कहें, जो मैं काल्हि श्रीगोवर्द्धनपर्वत उपर पधारूंगो. ऐसे चतुर्भुजदासकों धीरज दे कै श्रीनाथजी आप तो अन्तर्धान भये. सो चतुर्भुजदासने सगरी रात्रि विरहके पद गाये. ता पाछें प्रहर एक रात्रि गई. तब श्रीगोवर्द्धननाथजीने श्रीगिरिधरजीसों जताई, जो काल्हि प्रात मोकों गोवर्द्धन पर्वतके उपर पधरावो. जो काल्हि श्रीगुसांईजी उहां पधारेंगे, तातें तुम अब ढील मति करो. पाछें श्रीगोकुलनाथजीने श्रीगिरिधरजीसों कह्यो, जो श्रीगुसांईजी दोय चारि दिनमें पधारिवे वारे हैं, सो अपने घरमें श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ दरसन श्रीगुसांईजी करें तो आछो. तातें श्रीनाथजीकों चारि दिन और राखो. तब श्रीगिरिधरजीने कह्यो, जो तुम कहो सो तो सांच, परन्तु श्रीगोवर्द्धननाथजीकी इच्चा ऐसी है, तातें प्रातःकाल अवश्य श्रीगोवर्द्धननाथजीकों श्रीगोवर्द्धनपर्वत उपर पधरावने. पाछें रात्रिकों सब तैयारी करि राखी. ता पाछें रात्रि घड़ी ४ रही, तब श्रीनाथजीकों जगायकै मङ्गल भोग समर्पे. पाछें मङ्गला आरती करि रथ पर श्रीगोवर्द्धननाथजीकों पधरायकै सब बालक, बहू बेटी सब सङ्ग चले. और इहां चतुर्भुजदास गिरिराज पर्वतके उपर चढिकै बारंबार देखत हैं, जो अब श्रीगोवर्द्धननाथजी पधारेंगे. तब चतुर्भुजदासने ता समय यह कीर्तन गायो.

राग : सारङ्ग

तब तें जुग समान पल जात ।
जा दिन तें देखे सखी मोहन मोतन मुरि मुसिकात ।।
दरसन देते ठगोरी मेली तब तें कछु न सुहात ।।
बीतत घरी घरी क्रम क्रम अब कर मीडत पछितात ।
मनमें गड़ी मदन मूरति वह मन अटक्यो सामल गात ।
'चतुर्भुज' प्रभु गिरिधरन मिलनकों नैन बहोत अकुलात ।

यह कीर्तन चतुर्भुजदासने कह्यो. इतनेमें श्रीगोवर्द्धननाथजीकै दरसन चतुर्भुजदासकों भये. ता पाछें श्रीगिरिधरजी आदि सब बालकनकों दण्डवत् किये. पाछें श्रीगिरिधरजीने श्रीगोवर्द्धननाथजीकौ शृङ्गार कियो और राजभोगकी तैयारी होन लागी. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप गुजरातके परदेस तें पधारे, सो श्रीगोवर्द्धननाथजीके उत्थापन भोगको समो हतो. तब श्रीगुसांईजी आयकै अपनी बैठकमें पधारे, सो श्रीगिरिधरजी आदि सब बालक आयकै मिले. ताही समय श्रीगोवर्द्धननाथजीके राजभोगकी माला बोली. तब श्रीगुसांईजीने श्रीगिरिधरजीसों पूछी, जो श्रीगोवर्द्धननाथजीके इहां राजभोगकी इतनी अवार काहेकों है ? तब श्रीगिरिधरजीने श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो आज श्रीगोवर्द्धननाथजी मध्याह्न समै मथुरा तें इहां पधारे हैं. तातें आज इतनी ढील भई है. तब श्रीगोकुलनाथजीने श्रीगुसांईजीसों कह्यो, जो हम तो दादा तें कहे हुते, जो दोय दिन श्रीगोवर्द्धननाथजीकों अपने घर और राखो, तातें श्रीगुसांईजी आपु अपने घरमें श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करें तो आछो. परि दादाने न मानी, सो आज ही श्रीगोवर्द्धननाथजीकों पधराये हैं. तब श्रीगुसांईजी श्रीगिरिधरजीके उपर बोहोत प्रसन्न भये. और श्रीगिरिधरजीसों कहे, जो तुमने मेरे मनकौ अभिप्राय जान्यो, जो मैं श्रीगोवर्द्धननाथजीकों श्रीगिरिराजपर्वत उपर न देखतो तो मोसों रह्यो न जातो. ता पाछें श्रीगुसांईजी तुरत ही स्नान करिकै श्रीनाथजीके मन्दिरमें पदारे, सो नृसिंहजयन्तीके दिन सेन आरतीके समय श्रीगोवर्द्धननाथजीकों राजभोग आवे, फेरि माला बोले, जो यह रीत भई. सो चतुर्भुजदासकों श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन करिकै बड़ो आनन्द भयो. ता पाछें अनोसर करिकै श्रीगुसांईजी अपनी बैठकमें पधारे. तब चतुर्भुजदासने श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् करिकै सब समाचार कहे, जो या भांतिसों श्रीगोवर्द्धननाथजी मथुरा पधारे. ता पाछें आज यहां श्रीगोवर्द्धनपर्वतपै पधारे हैं. तब श्रीगुसांईजी आप श्रीमुख तें कहे, जो श्रीगोवर्द्धननाथजी परम दयाल हैं. अपने जनकी आरति सहि सकत नाहीं है. पाछें आप श्रीगुसांईजी पोढि रहे. सो वे चतुर्भुजदास श्रीनाथजी तथा श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते.

वार्ता प्रसङ्गल १० :

और एक समय श्रीगोकुलनाथजीने श्रीगुसांईजीसों पूछ्यो, जो आप आज्ञा करो तो एक बार चतुर्भुजदासकों श्रीगोकुल लै जाउं. तब श्रीगुसांईजी कहैं, जो चतुर्भुजदास आवे तो ले जाऊ. ता पाछें श्रीगोकुलनाथजी चतुर्भुजदाससों कह्यो, जो पेंठ्यो गाम है (तहां) हमकों कछु काम है, सो तुम हमारे सङ्ग चलो. तब चतुर्भुजदास श्रीगोकुलनाथजीके साथ चले. जब पेंठ्यो गाममें श्रीगोकुलनाथजी आये तब

चतुर्भुजदाससों यों कह्यो, जो हमकों श्रीगोकुल जानो है, जो हमारे सङ्ग खवास कोऊ नाहीं है, तातें तुम हमारे सङ्ग श्रीगोकुल तांई चलो. तहां श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन करिकै तुमकों फेरि हम यहां लै आवेंगे. तब श्रीगोकुलनाथजी घोड़ा उपर असवार होयकै पधारे. तब चतुर्भुजदास हू सङ्ग चलै. पाछें श्रीगुसांईजी यह सुनिकै श्रीगिरिधरजीकों श्रीनाथजीके पास राखिकै आप हू घोड़ा उपर असवार होयकै श्रीगोकुल पधारे. सो उत्थापनकौ समय हतो. सो श्रीगुसांईजी स्नान करिकै श्रीनवनीतप्रियजीकों जगाये. ता पाछें सन्ध्यार्तिके समय श्रीगोकुलनाथजीने और चतुर्भुजदासनें सुन्यो, जो श्रीगुसांईजी आप यहां पधारे हैं. तब श्रीगोकुलनाथजी और चतुर्भुजदास बोहोत प्रसन्न भये. सो तत्काल श्रीनवनीतप्रियजीके मन्दिरमें आये. तब श्रीगुसांईजी श्रीनवनीतपियजीके मन्दिरमें पधारे, और चतुर्भुजदासकों बुलायकै श्रीनवनीतप्रियजीके दरसन करवाये. सो दरसन करिकै ता समै चतुर्भुजदासने गायो. सो पद

राग : बिलावल

महामहोच्छव श्रीगोकुल गाम ।
प्रेम मुदित गोपी जस गावति ले ले स्याम सुन्दरकौ नाम ।
जहां तहां लीला अवगाहत खरिक खोर दधि मथनं धाम ।
परम कौतुहल निस और बासर आनन्द ही में बीतत जाम ।
नन्द गोप सुत सब सुखदायक मोहन मूरति पूरन काम ।
'चतुर्भुज प्रभु' गिरिधर आनन्द निधि नखसिखरूप सुभग अभिराम ।।

राग : रामकली

अंगुरी छांडि रेंगत अरग थरग । नूपुर बाजत त्यों त्यों धरनी धरत पग ।।१।।
कबहू वसुधा मांहि भुजा पसारि हंसि डगमगायकै उलटि भरत डग ।
जननी मुदित मन चिते सिसुतन कण्ठ लाय सुन्दर स्याम सुभग ।।२।।

मृदु बानी तुतरात मांगि नवनीत खात भोजन जनावत जैसें बाल खग ।
'चतुर्भुज प्रभु' गिरिधरके बाल विनोद नन्द आनन्द देखें ठाढ़े टग - टग ।।३।।

या भांतिसों लीला सहित चतुर्भुजदासने और हू कीर्तन गाये. सो सुनिकै श्रीगुसांईजीने चतुर्भुजदास तें कह्यो, जो चतुर्भुजदास ! तोकों चहिये सो मांगि. तब चतुर्भुजदासने श्रीगुसांईजीसों हाथ जोरिकै बिनती कीनी, जो महाराज ! आप ता अन्तरगतकी जानत हो, तातें आप मोकों कृपा करिकै श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन कराओ. तब श्रीगुसांईजीने चतुर्भुजदाससों कह्यो, जो कांल्हि श्रीनवनीतप्रियजीकौ शृङ्गार करिकै, पालना झुलायकै हम हू चलेंगे, तब तुम हू सङ्ग चलियो. तब तो चतुर्भुजदास मनमें बोहोत प्रसन्न भये. ता पाछें रात्रिकों तो चतुर्भुजदास सोय रहे. पाछें प्रातःकाल होत ही चतुर्भुजदासने आयकै श्रीगुसांईजीकों दण्डवत् किये. ता समै मङ्गलाके दरसन भये, तहां चतुर्भुजदासने यह पद गायो. सो पद

राग : बिलावल
हों वारी नवनीतप्रिया ।
नित उठि देन उराहने आवत चोरी लगावत धोखतिया ।
तुम बलिराम सङ्ग मिलिकै इन आंगन खेलो दोऊ भैया ।
निरखि निरखि नैनन सचु पाउं प्रान जीवन धन सांवलिया ।
जो भावे सा लेउ मेरे मोहन मधु मेवा दधि दूध घैया ।
'चतुर्भुजप्रभु' गिरिधर काके घर तुम हू ते कछू बोहोत श्रिया ।।

राग : देवगंधार
दिन दिन देन उराहनो आवें ।

यह ग्वालिनि जोबन मदमाती झूंठे हि दोष लगावें ।।१।।
कहां धों बासन घरे पराए कहां मेरो मोहन पावें ।
लरिका अति सुकुमार गहें कर हलधर सङ्ग खिलावें ।।२।।
कबहूक कहति कञ्चुकी फारी कबहूक ओर बतावें ।
कबहूक रई मथनियां ले कै आंगन हाथ नचावें ।।३।।
मन लाग्यो कान्ह कमल दल लोचन उत्तर बोहोत बनावें ।
'चतुर्भुज प्रभु' गिरिधर याही मिस छिन छिन देख्यो भावें ।।४।।

ऐसे ऐसे कीर्तन चतुर्भुजदासने तहां गाये.

पाछें श्रीगुसांईजी आपु श्रीनवनीतप्रियजीकों भोग सरायकै शृङ्गार करिकै पालने झुलाये. ता समय चतुर्भुजदासने यह पालनाकौ पद गायो

राग : रामकली
अपने री बाल गोपाले हो, रानी जू पालने झुलावे ।
वारंवार निहारि कमल मुख प्रमुदित मङ्गल गावे ।।१।।
लटकन भाल भ्रुकुटी मसि बिन्दुका कठुला कण्ठ बनावे ।
सद माखन मधु सानि अधिक रुचि अङ्गुरिन करिकै चटावे ।।२।।
कबहूक सुरङ्ग खिलौना ले ले नानाभांति खिलावे ।
देखि देखि मुसिकाय सांवरो द्वे दतियां दरसावे ।।३।।
साय कुमुद चकोर चन्द ज्यों रूपसुधा रस प्यावें ।

'चतुर्भुजप्रभु' गिरिधरन चन्दकों हंसि हंसि कण्ठ लगावे ।।४।।

राग : रामकली
झुलो पालने गोविन्द ।
दधि मथों नवनीत काढों तुमकों आनन्द कन्द ।।१।।
कण्ठ कठुला ललित लटकन भ्रकुटि मनके फंद ।
निरखि छबि छिनु छिनु झुलाऊं गाऊं लीला छन्द ।।२।।
दूधकी दतियां सुखकी निधियां हसत जब कछु मन्द ।
'चतुर्भुजप्रभु' जननी जु बलि गिरिधरन गोकुलचन्द ।।३।।

यह पालना चतुर्भुजदासने गाये, सो सुनिकै श्रीगुसांईजी बोहोत प्रसन्न भये. ता पाछें श्रीगुसांईजी घोड़ा मंगाय, ता उपर सवार होयकै चतुर्भुजदासकों सङ्ग लै कै गिरिराज पधारे. उहां श्रीगोवर्द्धननाथजीके राजभोगकौ समय हतो. सो श्रीगुसांईजी आप तत्काल स्नान करिकै श्रीगोवर्द्धननाथजीकों राजभोग समर्प्यो. पाछें समो भयो भोग सरायो. जब दरसनके किंवाड़ खुले, तब चतुर्भुजदाससों कुम्भनदासने कही, जो कछु कीर्तन गाऊ. तब चतुर्भुजदासने यह कीर्तन गायो. सो पद

राग : सारङ्ग
तब तें और कछू न सुहाय ।
सुन्दर स्याम जबहि तें देखे खिरक दुहावत गाय ।।१।।
आवत हुती चली मारगमें सखी हौं अपने सत भाय ।
मदनगोपाल देखिकै एकटक रही ठगी मुरझाय ।।२।।

बिसरी लोक लाज गृह कुल ब्रत बन्धु पिता और माय ।।
'चतुर्भुजप्रभु' गिरिवरधर तनमन लियो है चुराय ।।३।।

यह सुनिकै श्रीगोवर्द्धननाथजी चतुर्भुजदासके साम्हे देखिकै मुसिक्याये. तब चतुर्भुजदासने दण्डवत् करिकै कह्यो, जो आज मेरो धन्य भाग्य है, जो श्रीगोवर्द्धननाथजीके दर्शन भये. पाछें इतनेमें टेरा आयो. तब चतुर्भुजदास दण्डवत् करिकै बाहिर आये. तब कुम्भनदास तें पूछे, जो चुतुर्भुजदास ! तू कहां गयो हतो ? तब चतुर्भुदासने कुम्भनदाससों कह्यो, जो श्रीगोकुलनाथजी श्रीगोकुल लिवाय गये हते. सों अब हि श्रीगुसांईजीके सङ्ग आयो हूं ! तब चतुर्भुजदास तें कुम्भनदासजीनें कह्यो, जो तू प्रमानमें जाय पर्यो. तब यह बात कुम्भनदासके मुखते सुनिकै श्रीगुसांईजी आप मन्दिरमें हंसे. तो पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीकों अनोसर करिकै श्रीगुसांईजी आप अपनी बैठकमें पधारे. तब चतुर्भुजदासने श्रीगुसांईजीसों बिनती करी. जो महाराज ! कुम्भनदासजीने मोतैं कह्यो, जो तू कहां गयो हतो ? तब मैं कह्यो, जो श्रीगोकुलनाथजीके सङ्ग श्रीगोकुल गयो हतो. तब उन मोतैं कह्यो, जो तू प्रमानमें जाय पर्यो. सो श्रीगोकुलकों प्रमान क्यों गिने ? तब श्रीगुसांईजी आपु चतुर्भुजदास सों कहे, जो कुम्भनदासकौ मन श्रीगोवर्द्धननाथजीमें लाग्यो है, जो एक क्षण हू न्यारे नाहीं होत हैं. तातें ए और लीलाकों प्रमान जानत हैं, और हैं तो दोउ लीला एक ही. ता दिन तैं चतुर्भुजदास श्रीगिरिराजजीकी तरहटी छांड़ीकै कहूं न जाते. ता पाछें श्रीगुसांईजी आप तो भोजन करिकै विसराम किये. तब चतुर्भुजदास दण्डवत् करिकै अपने घर आये. श्रीगोवर्द्धननाथजी हू चतुर्भुजदास पै परम कृपा करते. सो ये चतुर्भुजदास ऐसे परम कृपापात्र भगवदीय हते.

वार्ता प्रसङ्ग ११ :

और कितके दिन पाछें श्रीगुसांईजी आप श्रीगिरिधरजीकी कन्दरामें होयकै, लीलामें पधारे, तब श्रीगिरिधरजीकों अपनो उपरेना दिये. और यह कहे, जो श्रीगोवर्द्धननाथजीकी आज्ञामें रहियो. जामें श्रीगोवर्द्धननाथजी प्रसन्न रहे सोई कीजो, और सब बालकनकौ समाधान राखियो. श्रीनाथजीके सेवक, और जो वैष्णव हैं इन सबनकौ सबाधान राखियो. और ये जो मेरे अङ्गकौ उपरेना है, ताकौं सब लौकिक संस्कार करियो. काहेंते, जो संस्कार न करोगे, तो फिरि कोई कर्म - संस्कार न करेगो. तातें तुम अवश्य करियो और काहू बातकी चिंता मति

करियो. सब वस्तुके कर्ता श्रीगोवर्द्धननाथजी हैं. ऐसे श्रीगिरिधरजीकौ समाधान करिकै श्रीगुसांईजी आप तो गिरिराजकी कन्दरामें होयकै लीलामें पधारे. ता पाछें श्रीगिरिधरजी आदि दे सब बालकन सहित, सब सेवकन सहित, महाविरह करिकै महाव्याकुल भये. सो ता समयकौ विरह कछु कहिवेमें न आवे. पाछें फेर धीरज धरिकै श्रीगुसांईजीने जा उपरेनाकी जैसे आज्ञा कीनी हती, तैसेई श्रीगिरिधरजीने वा उपरेनाकौ अग्निसंस्कार कियो. पाछें वेदोक्तविधि सों सब कर्म दस गात्र विधान कियो. और हू लौकिक विधिसों सब करि शुद्ध होये. ता पाछें श्रीगोवर्द्धननाथजीकी सेवामें सावधान भये. सो जा समय श्रीगुसांईजी श्रीगोवर्द्धन पर्वतकी कन्दरामें होयकै लीलामें पधारे, ता समै चतुर्भुजदास जमुनावता गाममें अपने घरमें हुते. सो सुनिकै चतुर्भुजदास दौरे ही आये, सो आयकै महाव्याकुल होय कन्दराके आगे गिरि परे, और महाविलाप करन लागे. जो महाराज ! पधारत समै मोकों आपके दरसन हू न भये. और मैं आप बिना पृथ्वी उपर कौनकों देखूंगो ? तातें अब या पृथ्वी उपर मोकों मति राखो. मोहूकों आपके चरनारविन्दकै पास निकट ही राखो, मोहूंकों बुलाय लीजे. ऐसे महाबिरह संयुक्त होयकै चतुर्भुजदासने तहां यह कीर्तन गायो. सो पद

राग : केदारो

फिर ब्रज बसहू श्रीविटठलेश ।
कृपा करिकै दरस दिखावहु वह लीला वह वेस ।।
सङ्ग गाय अरु ग्वाल लै गोकुल गांव करहु प्रवेस ।
नन्दराय ज्यों बिलसी सम्पति बहु उदार नरेस ।।
भक्ति - मारग प्रकट करि कलिजन देहु उपदेस ।
रचो रास विलास वह सब गिरि गोवरधन देस ।।
वदन इदुं तें विमुख नैन चकोर तपत विसेस ।
सुधापान कराई मेटहु विरहकौ लवलेस ।।
श्रीवल्लभनन्दन, दुःख निकन्दन, सुनहु चित्त सन्देस ।

'चतुर्भुज' प्रभु घोखकुलके हरहु सकल कलेस ।।

जो ऐसे विरके कीर्तन चतुर्भुजदासने बहुत किये. तब श्रीगुसांईजीने चतुर्भुजदासकी बोहोत आरति जानिकै महा अनन्द स्वरूप (सों) चतुर्भुजदासके हृदयमें आयकै आपु दरसन दिये. और कहे, जो चतुर्भुजदास ! तू इतनो विरह काहेकों करत है ? मैं सदा, तेरे पास ही हूं. तातें तू अब इतनो खेद मनमें मति करे. और अब तो मेरो दरसन तू श्रीगोवर्द्धननाथजीके निकट ही कर्यो करि. जहां श्रीगोवर्द्धननाथजी है (वहां) सदैव मोहूकों तिनके पास जान्यो करि, तहां ही मैं रहत हों. ऐसे चतुर्भुजदासको समाधान करिकै श्रीगुसांईजी तो आप अन्तर्धान भये. पाछें चतुर्भुजदास ताही स्वरूपानन्दमें मगन होयकै तहां यह कीर्तन गाये. सो पद -

राग : केदारो

श्रीविटठल भये न ह्वै हैं ।
पाछें सुनै न आगे देखै यह छबि फेर न बनि हैं ।।१।।
मनुष देह धरि भक्त हेत कलिकाल जनमको लै हैं ।।
को फिरि नन्दरायकौ वैभव ब्रजवासिन बिलसै हैं ।।२।।
को कृतज्ञ करुणा सेवक तन कृपा सुद्दष्टि चित्तै हैं ।।
ग्वाल गाय सब सङ्ग लेकै को फिरि गोकुल गाम वसै हैं ।।३।।
धर्मखंभ होय ज्ञान कर्म, को जगत भक्तिप्रगटै हैं ।।
को करकमल सीस धरिकै अधमनि वैकुण्ठ पठैं हैं ।।४।।
रासविलास महोच्छव करिको राग भोग सुख दैहैं ।।
को सादर गिरिराजधरनकी सेवा सार द्दढै हैं ।।५।।
भूषन बसन गोपाललालके को सिंगार सिखै हैं ।।

को आरति वारत श्रीमुख पर आनन्द प्रेम बढै हैं ।।६।।
मथुरा - मण्डल खग मृगकी को महिमा कहि बरनै हैं ।।
को वृन्दावनचन्द गोविन्दकौ प्रकट स्वरूप दिखै हैं ।।७।।
का कौ बहोरि प्रताप जु ऐसो प्रकट पुहुमि में छै हैं ।।
का के गुन कीरत लीला जसु सकल लोक चलि जै हैं ।।८।।
श्रीवल्लभसुत दरसन कारन अब सब कोउ पछितै हैं ।।
'चतुर्भुजदास' आस इतनी जो यह सुमिरित जन्म सिरै हैं ।।९।।

ऐसे - ऐसे बोहोत कीर्तन चतुर्भुजदासने करिकै श्रीगुसांईजीके चरणारविन्दमें मन राखि, अपनी देह छोड़िकै आप हू लीलामें जाय प्राप्त भये. सो चतुर्भुजदासकी यह लीला देखिकै और जो वैष्णव हते तिनकै (और) सेवकनके मनमें बोहोत दुःख भयो. ता पाछें चतुर्भुजदासके एक बेटा हतो राघौदास सो आयो, और वैष्णव सब आये. तिन सबनने मिलिकै चतुर्भुजदासकौ अग्निसंस्कार कियो. और क्रिया कर्म दसगात्र करि शुद्ध होये.

सो वे चतुर्भुजदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते. तातें इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२५०।।

२५१-माधवदास दलाल

अब श्रीगुसांईजीके सेवक माधवदास दलाल, खलाइचके, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं.

भावप्रकाश :

लीलामें इनकौ नाम ‘कोकिलकण्ठी’ हैं, सो उपर कहि आए हैं. ये ‘ललिताजी’ तें प्रगटी हैं. तातें उनके सात्विक भाव रूप है.

सो माधवदास खम्भाइमें एक बनियाके प्रगटे. सो माधवदासकौ पिता दलाली करतो. सो माधवदास हू बड़े भए तब दलाली करन लागे. सो माधवदासकों सहजपाल दोसी, और जीवा पारखकौ सङ्ग भयो. सो ये तीनों गाढ़े मित्र हे. सो ये तीनों चाचा हरिवंशजीके सङ्ग तें श्रीगुसांईजीकी सरनि आये हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो माधवदास पर चाचा हरिवंशजीकी कृपा भई है. सो इनकी बानी अचल भई. सो श्रीगुसांईजी माधवदासकी बानी सुने पाछें श्रीगोकुल बास किये.

पाछें एक समै श्रीगुसांईजी राजनगर पधारे. तब इन तीनों जनेंन आपुसमें विचार किये, जो श्रीगुसांईजीकों खम्भाइच अवश्य पधरावने. तब ये तीनों जनें राजनगर आए. सो श्रीगुसांईजीसों बिनती करि राजनगर तें खम्भाइच पधराए. पाछें तीनों श्रीठाकुरजीकी सेवा पधराए. सो प्रीतिपूर्वक सेवा करते. सो एक दिन श्रीगुसांईजी आप भोजन करि प्रसन्नतामें गादी - तकियानपै बिराजे हते तब सहजपाल दोषी और माधवदासने बिनती कीनी, जो महाराज ! हम व्यौपारमें झूंठ बोले हैं. सो दोष लगे के नाहीं ? तब श्रीगुसांईजी कहे, जो ‘‘नानृतात्पातकं परमिति’ झूंठसों बढकर और कोई पाप नाहीं. तब माधवदासने बिनती करी, जो महाराज ! आज पाछें मैं झूंठ सर्वथा न बोलुंगो. और ग्राहककों आछी रीतिसों माल दिवाउंगो. पाछें सहजपाल दोषीने कही, जो मैं एक आना नफा लउंगो, कहिकै. जाकों लेनो होइ सो ले. या प्रकार वे तीनों सत्य बोलते. सो श्रीठाकुरजी आप बहुत प्रसन्न रहते. और तीनों मिलिकै श्रीठाकुरजीके गुणानुवाद गाते, सो गदगद होइ जाते.

सो एक दिन माधवदास दलालसों जीवा पारखने पूछी, जो अन्याश्रय कहेतें कहे ? तब जीवा पारख तें माधवदासने कही, जो श्रीकृष्ण

बिना और काहूकौ भजन करे सो अन्याश्रय. तातें अंश अवतारनकौ हू भजन कर्तव्य नाहीं. करे तो निश्चै अन्याश्रय होई. और सर्वत्र व्यापक मानिकै जो दूसरे देवकी पूजा करे तोहू बाधक है. पतिव्रता धर्मकी हानि होई. तातें एक पूर्ण पुरुषोत्तम ही की सेवा करे. पाछें सहजपाल दोषीने पूछी, जो श्रीठाकुरजीने सात दिन तांई श्रीगिरिराजजी धारन किये, ताकौ कारन कहा ? तब माधवदास कहे, जो श्रीनन्दरायजी, प्रभृति सब ब्रजवासीनमें सात प्रकारके अन्याश्रय हते, सो गिरिराज पूजन आदि करिकै सात प्रकारकौ अन्याश्रय मिटायो. सो सात प्रकारके अन्याश्रय कहत हैं. १. देवऋण, २. ऋषिऋण, ३. पितृऋण ४. देहके बलकौ अभिमान, ५. कुटुम्बीनकौ अभिमान, ६. लोकनिन्दा तें कियो अहङ्कार - कार्य, ७. तीनों ऋण तें मेरो परलोक बिगरेगो. या प्रकारके अन्याश्रयकौ आप निवारन किये. पाछें निःसाधन करि भगवदाश्रय दृढ कराए. यह सुनिकै सहजपाल दोषी बोहोत प्रसन्न भए.

पाछें माधवदास श्रीगोकुल आए. सो श्रीगोकुलकौ वैभव देखि माधवदासकौ मन श्रीगोकुलमें लगि गयो. तब इनने विचार कियो, जो अब तो श्रीगोकुल छोरिकै कहूं न जानो. सो श्रीगुसांईजी पास आय माधवदास बिनती किये, जो महाराज ! आपकी कृपा तें श्रीगोकुलबास पायो है. सो अब ऐसी कृपा कीजिये जो श्रीगोकुल न छूटे. तब श्रीगुसांईजी कहे, तथास्तु. ऐसेंई होइगो. पाछें माधवदासने श्रीगुसांईजीके सन्निधान श्रीगोकुलके नये पद करिकै गाये. सो पद

राग : रामकली

श्रीगोकुल अति सुख बास बसीजे ।
दिन दिन को मज्जन अघ गंजन अति पुनीत जमुना जल पीजे ।
श्रीविटठल सह कुटुम्ब बिराजत छिनु छिनु नैनन दरसन कीजे ।
'माधोदास' श्रीवल्लभ सुत पर सर्वसु नित न्योछावर कीजे ।

राग : रामकली

सुखनिधि श्रीगोकुलकौ बसिवो ।
छिन छिन वारंवार सखी री श्रीवल्लभ सुत सदन बिलसिवो ।
गृह गृह कुञ्ज कुञ्ज नाना विधि पिया सङ्ग केलि परस्पर हसिवो ।
श्रीजमुना कुल महा गज सों मिलि भावे अङ्ग - अङ्ग को परसिवो ।
ऐसी सरस कसोटी ऊपर सुन्दर सुभग कनक तन कसिवो ।
दम्पति रूप रासि तन सींवा 'माधोदास' यही रंग रसिवो ।

राग : रामकली
गोकुल गामकौ पेंडोई न्यारो ।
मङ्गल रूप सदा सुखदायक देखियत तीन लोक उजियारो ।
श्रीवल्लभसुत निर्भय बिराजत भृत्य जननके प्रानन प्यारो ।
'माधवदास' बलि बलि प्रताप बलि श्रीविटठल सर्वस्व हमारो ।

सो माधवदास ऐसे बोहोत पद गाए. तब श्रीगुसांईजी कहे, जो तोकों श्रीगोकुलकौ स्वरूप स्फुर्द भयो. ता पाछें माधोदासको आप श्रीनवनीतप्रियजीके सन्निधान कीर्तन गाइवेकी आज्ञा कीनी. सो माधोदास श्रीनवनीतप्रियजीके सन्निधान नए पद करि गावते. पाछें श्रीगुसांईजी माधवदासको सङ्ग ले कै श्रीनाथजीद्वार पधारे. सो श्रीगोवर्द्धननाथजीके दरसन माधवदासने किये. तब श्रीगुसांईजी माधवदासकों कहे, जो माधवदास ! श्रीगोवर्द्धननाथजीको कछु कीर्तन सुनावो. तब माधवदासने श्रीगोवर्द्धननाथजीकों पद सुनाए. सो श्रीगोवर्द्धननाथजी पद सुनिकै बोहोत प्रसन्न भये. सो माधवदासने श्रीठाकुरजीके, श्रीआचार्यजीके, श्रीगुसांईजीके, सात बालकनके और श्रीगोकुलके बोहोत पद किये हैं.

भावप्रकाश :
या वार्ताकौ अभिप्राय यह है, जो भगवदीयकौ सङ्ग ऐसो फलदायी है, जो चाचाजीके रञ्च सङ्ग तें माधोदास पर या प्रकार कृपा भई. तातें भगवदीयकौ सङ्ग सर्वथा करनो.

सो माधवदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय भये. सो इनकी वार्ता कहां तांई कहिए. वार्ता ।।२५१।।

२५२-रामराय हित भगवानदास

अब श्रीगुसांईजीके सेवक रामराय हित भगवानदास आगराके, तिनकी वार्ताकौ भाव कहत हैं

भावप्रकाश :
ये रामराय श्रीचन्द्रावलीजीकी अन्तरङ्ग सखी है. लीलामें इनकौ नाम 'मुक्तेश्वरी' है. और 'मुक्तेश्वरी' की एक सखी और है. ताकौ नाम 'वरदेश्वरी'. सो इहां भगवानदास भए. ये दोउ ललिताजी तें प्रगटी हैं, तातें इनके राजस भावरूप हैं.

वार्ता प्रसङ्ग १ :
सो भगवानदास आगरामें सुबाकी दीवानगिरि करते. सो पहले ये गोविन्ददेवके सेवक हुते. सो कछुक दिन वृन्दावनमें आयकै रहते. गोविन्ददेवकी सेवा करते. सो भगवानदास रामराय सारस्वत ब्राह्मनके यजमान हते. सो रामरायजी श्रीगुसांईजीके सेवक हते. सो एक समै रामरायजी वृन्दावनमें भगवानदासके उहां आये. तब रामरायजीने श्रीगुसांईजीकौ एक पद करिकै गायो, सो पद

राग : सारङ्ग

जयति वल्लभसुवन श्रुति उद्धार, फेरि नन्दके भवनकी केलि ठानी ।
इष्ट गिरिवरधरन सदा सेवत चरन, द्वार चारों बरन, भरत पानी ।।
वेद - पथ व्याससे हनुमान दाससे ज्ञानकों कपिलसे कर्मयोगी ।
साधु लच्छमन निपुन, मनहु ब्रजराज सुत, प्रगट सुखरास मानो इन्द्रभोगी ।।
सिन्धुसम गम्भीर, विमन मन अति धीर, प्रीतिकों जल - क्षीर, ब्रज उपासी ।
ध्यानकों सनकसे, भक्तिकों फनिगसे, याही तें सद्य किये ब्रजमें बासी ।
मनहु इन्द्रिय जीति, कृष्णासों करी प्रीति, निगमकी चली नीति अति विसेसी ।
रहित अभिमान तें, बड़े सन्मान तें, सील और दाम गोविन्द टेकी ।
सदा निर्मल बुद्धि, अष्ट सिद्धि नवनिधि, द्वार सेवत तहां मुक्तिदासी ।
'रामराय' गिरिधरन जानि आयो सरनि, दीनके दुःख हरन घोखबासी ।।

सो यह पद रामरायजीने गायो. सो ता समय भगवानदास उहां ठाढ़े हते. सो पद सुनिकै चक्रत व्है रहे. पाछें रामरायजीसों कहे, जो कृपा करि मोकों उनकौ सेवक कराओ. तब रामरायजी कहे, तुम तो गोविन्ददेवजीके सेवक हो. तब भगवानदासने कही, इनमें और गोविन्ददेवमें कहा भेद है ? गोविन्ददेवजीकी कृपा तें तुम मिले हो. और अब तुम्हारी कृपातें श्रीगुसांईजी मिलेंगे. तातें अब तुम मोकों बेगि ही श्रीगुसांईजीकौ सेवक कराउ तो भलो है. तब रामरायजी भगवानदासकों सङ्ग ले गोपालपुरमें आये. सो श्रीगुसांईजीके दरसन किये. सो जैसे रामरायजीने पद गायो हतो, तैसे ही दरसन भगवानदासकों श्रीगुसांईजीके भये. सो भगवानदास तो दरसन करिकै थकित होंई रहे. पाछें श्रीगुसांईजीसों रामरायने बिनती करी, जो महाराज ! भगवानदासकों सरनि लीजिए. सो वा दिन जन्माष्टमी हती. सो भगवानदासकों श्रीगुसांईजी आपु राजभोगके समै नाम - निवेदन कराए. सो उनकों श्रीगोवर्द्धननाथजीके सन्मुख निवेदन भयो. सो निवेदन होत मात्र ही भगवानदासकों भगवद्लीला स्फुर्द भई. सो जन्माष्टमीकी लीलामें मगन होइ गए. तब भगवानदासने एक पद नयो करिकै गायो, सो पद

राग : बिहाग

श्रवन सुनि सजनी ! बाजे मन्दिलरा आज निस लागत परम सुहाई ।
अति आवेस होत तन मन में श्रीगोकुल बजत बधाई ।।१।।
दे दे कान सुनत अरु फूलत रावलके नरनारी ।
नन्दरानी ढोटा जायो है होत कुलाहल भारी ।।२।।
अति ऊंचे चढि टेर सुनावत पसरि उठे जे ग्वाल ।
गैया बगदावो रे भैया भयौ नन्दके लाल ।।३।।
आनन्द भरि अकुलाय चली सब सहज सुन्दरी गोपी ।
प्रादुर्भाव जसोदा सुतकौ तामें तन मन ओपी ।।४।।
चञ्चल साजि शृङ्गार चंदमुखी, चञ्चल कुण्डल हारा ।
हाथन कञ्चन थार बिराजत, पद नूपुर झनकारा ।।५।।
बरखत कच कुसुमन शोभित गली दरस चोंप जिय भाई ।
गावत गीत पुनीत करत जग जसुमति मन्दिर आई ।।६।।
धन्य दिवस धन्य राति आजकी धन्य धन्य यह सब गोरी ।
स्यामसुन्दर चन्दे निरखत मानों अंखियां तृषित चकोरी ।।७।।
सोभा युत आई कीरति अपने गृह मानि बधाये ।
याचक जन घन घन ज्यों बरखत भाग गोप तहां आये ।।८।।
आय जुरे सब गोप ओप सों भयो जो मनकौ भायो ।
पञ्चामृत सीसन तें ढारत नाचत नन्द नचायो ।।९।।

नाचत ग्वाल बाल रस भीने हरद दहीं भरि राजे ।
इत निसान उत भेरि दुदुम्भी हरखि परस्पर बाजे ।।१०।।
खग मृग द्रुम दिस दिस भवननमें देखियत है सरसाने ।
प्राननके आये इन्द्रिय ज्यों यों ब्रजजन हुलसाने ।।११।।
ध्वजा वन्दन मालालङ्कृत नन्दभवन में सोहे ।
व्योम विमानन भीर भई लखि अमरनकौ मन मोहे ।।१२।।
महाराज ब्रजराज नन्दपे जो मांग्यो सो पायो ।
जाके ऐसो पूत भयो ताकौ न्याय जगत यस छायो ।।१३।।
जिनकौ सुख सुमिरत ब्रह्मादिक यों हुलसे ब्रजगेही ।
‘कहि भगवान हित रामराय’ प्रभु प्रगटे प्रान सनेही ।।१४।।

सो भगवानदासकों समयकी सुधि रही नाहीं. तब श्रीगुसांईजी भगवानदासकी ओर देखि कहे, जो भगवानदास ! यह कौन समय है ? तब भगवानदास सावधान भए. पाछें सारङ्गमें और हू बधाई गाई. सो ता दिन तें भगवानदास जो पद गावते, तामें ‘कहि भगवान हित रामराय’ या प्रकार छाप धरते.

सो भगवानदासने रामरायजीकी कृपा मुख्य मानी. सो उनने हजारन पद किये परि सबमें रामरायजीकौ नाम सङ्ग धरे हैं.

वार्ता प्रसङ्ग २ :
पाछें भगवानदास वृन्दावन आये. तब यह बात गोविन्ददेवजीके अधिकारीने सुनी. जो भगवानदास श्रीगुसांईजीके सेवक भए हैं. तब वाने भगवानदासकों गोविन्ददेवजीके दरसनकों न आयवे दिए. तब गोविन्ददेवजीके शयन भोग धर्यो तब गोविन्ददेवजीने आज्ञा करी, जो

भगवानदास भोग धरेगो तब ही अरोगूंगो. यह सुनिकै अधिकारी भगवानदासके घर आई भगवानदासके पांवन पर्यो. फेरि बिनती करिकै ले आयो, मन्दिरमें. तब भगवानदासने गोविन्ददेवजीकों भोग धर्यो और कह्यो जो महाराज ! भोग अरोगो. तब अरोगे. सो भगवानदास श्रीगुसांईजीके ऐसे कृपापात्र भगवदीय हते. वार्ता ।।२५२।।

।। इति तृतीय खण्ड समाप्त ।।